शिमला व दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

ॐ गणेशाय नमः

स्थापित वि. संवत् १९३२
( १८७५ ई. )

गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र पं. पन्ना लाल ज्योतिषी की असली व प्रामाणिक पंचाँग 2024-25 ई.

तिमिर हरण मंगल करण सूर्य भयो प्रकाश। सकल अंधेरा मिट गयो धरती धवल आकाश॥

# पंचांगदिवाकर

राजा मंगल
मंत्री शनि
वि.२०
पं० शिव राम दत्त ज्यो०
पं० देवी दयालु मशहूरे आलम ज्योतिषी
पंचाँग दिवाकर कर्त्ता लाहौर वाले
पं० मोहन लाल ज्यो०

इस पंचाँग का कापी राइट नं. A 27587/80 तथा Trade Mark No. 472584 भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है।

कुण्डली फलादेश एवं कुम्भ महापर्व ( प्रयाग ) विशेषांक

मशहूरे आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी की असली, प्रामाणिक व शुद्ध पंचाँगदिवाकर, जालन्धर।

गौरवशाली 149 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९३२

मशहूरे आलम
**पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़**
माई हीरां गेट ( अड्डा होशियारपुर ), जालन्धर शहर — 144008 ( पंजाब )

एकमात्र वितरक :
**जनरल बुक डिपो**
चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर
94172-91325, 97799-13583

मूल्य: ₹130/-

卐 श्रीगणेशाय नमः 卐

# 'पंचाँगदिवाकर' सम्बन्धी आवश्यक निर्देशन

यस्मिन् काले यत: खेटा यान्ति दृग्गणितैक्यताम्।
तत् एव स्फुटा: कार्या: दिक्कालौ स्फुटौ विदा।। (वृहत् पाराशर)

**अर्थात्**–जिस पद्धति या सिद्धान्त से दृक्–गणितैक्य युक्त वेध–सिद्ध ग्रह स्पष्ट प्राप्त हों, उसी पद्धति का अनुसरण करना चाहिए। उसी के द्वारा स्पष्ट दिशा एवं ग्रह–स्पष्ट, कालादि साधन करने चाहिएं।

(1) इस पंचाँग का निर्माण ग्रीनविच से पूर्व रेखांश (Longitude) 75°/34'E तथा अक्षांश (Latitude) 31°/19'N, उत्तर के आधार पर किया गया है। पंचाँग में दिए गए तिथि, नक्षत्र, योगादि के मान एवं सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राशि–परिवर्तन (घड़ी–पलादि) में जालन्धर नगर के सूर्योदय अस्तादि का प्रयोग किया गया है।

(2) इस पंचाँग की गणित प्रक्रिया में सूक्ष्म दृक्–गणित एवं चित्रा–पक्षीय निरयण पद्धति का आश्रय लिया गया है। जोकि महर्षि पाराशर, केतकर, वसिष्ठ, भास्कराचार्य, पं. बापूदेव शास्त्री आदि प्राचीन एवं अर्वाचीन मनीषियों/ज्योतिष आचार्यों द्वारा अनुमोदित है। पंचाँग में दिए गए व्रत, पर्व एवं मुहूर्त्तों में प्रयुक्त तिथि, नक्षत्रादि की गणित शास्त्र सम्मत है तथा यह भारत सरकार द्वारा भी प्रमाणित एवं अनुमोदित है।

(3) पक्ष वाले पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय, सूर्यास्त भारतीय समयानुसार जालन्धर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण वक्री भवन–संस्कार सहित होने से सूर्योदयादिष्टादि बनाने में यही ग्राह्य होते हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में 3 मिनट घटावें और सूर्यास्त में जमा कर लेवें।

(4) तिथि, नक्षत्र, योग एवं करणों के सामने दिए गए घड़ी पल उनका सूर्योदय से समासिकाल बतलाते हैं। उनके घड़ी पलों के घण्टे–मिनट बनाकर उसमें स्थानीय (अपने नगर) का सूर्योदय जमा कर देने तिथि–नक्षत्रों आदि का समासिकाल भा. स्टैं. टाईम में निकल आएगा। पाठकों की सुविधा हेतु तिथि–नक्षत्रों एवं ग्रहों आदि के समासिकाल भा. स्टै. टा. घंटा मिंटों में अलग से दिए गए हैं। जहाँ पर 24, 25, 26 आदि अंक लिखे हैं। वहाँ 24 की रात्रि 12 बजे, 25 को रात्रि के 1 बजे, 26 को रात्रि के 2 बजे जानें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी 24 घटा करके अर्ध रात्रि के बाद का समय जानें। जब तक आगामी दिवसीय सूर्योदय न हो, तब तक **भारतीय ज्योतिष शास्त्रानुसार पिछली तारीख** का दिन ही माना जाता है।

(5) दिनमान घड़ी पलों में है तथा दाएँ अंग्रेज़ी तारीख एवं देशीय प्रविष्टों के पश्चात् लस्टर में चन्द्र राशि–संचार भद्रा, पंचक आदि व सूर्यादि ग्रहों के नक्षत्र राशि प्रवेश, उदयास्तादि घड़ी पलों में दिए गए हैं। निर्दिष्ट घड़ी पलों को घण्टे मिनट बनाकर उन में स्थानीय सूर्योदय जमा करके उनको घं. मिं. भा. स्टै. टा. में परिवर्तित किया जा सकता है। **ध्यान रखें**, चंद्र संचार व सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र प्रवेश सूर्योदयात् प्रवेश काल है, न कि समासि काल हैं। पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि, नक्षत्रादि के घंटा मिनट एवं **दैनिक ग्रह स्पष्ट भू-केन्द्रीय होने से भा. स्टैं. टा. में सर्वत्र भारतोपयोगी होंगे।** घण्टे–मिनटों वाले पृष्ठों के बाद भारत के मुख्य शहरों के भी सूर्योदयास्त दिए गए हैं। प्रतिवर्ष नए–नए विषयों का समावेश किया जाता है।

---

पंचांगदिवाकर के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह–नक्षत्र प्रवेश आदि की गणित **पं. पंकज शर्मा** द्वारा विकसित **Computer Programme** से की जाती है।

(6) पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि के नीचे 15 तिथि को पूर्णिमा तथा अमावस तिथि को 30 के अंकों से संकेत किया गया है। तिथि क्षय के आगे शून्य (०) के चिन्ह लगाए गए हैं तथा जहाँ कहीं, **नक्षत्र** या **योग का क्षय** हुआ है, उसे क्षय सहित दोनों नक्षत्रों (या योगों) को बारीक करके लिख दिया है। जहाँ तिथि, नक्षत्र या योग के आगे ६०। ०० घड़ी लिखा है, उससे तिथि, नक्षत्रादि की वृद्धि समझें। वह तिथि, नक्षत्रादि अगले दिन तक व्याप्त रहेगा।

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि। विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सर्वदा।।

# क्या आप ज्योतिष सीखना चाहते हैं ?

## (अनुपम ग्रन्थ माला)

हमारे संस्थान पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ द्वारा ज्योतिष सीखने तथा ज्योतिषीयों के लिए परम उपयोगी ज्योतिष ग्रंथ तैयार किया है, जिन्हें पढ़कर एक सामान्य पढ़ा–लिखा व्यक्ति बिना गुरू के भी अच्छा ज्योतिषी बन सकता है। अत्यन्त सरल भाषा में पंचाँग दिवाकर के अनुभवी लेखकों द्वारा किया गया है। इनमें प्रत्येक लग्न उदाहरण कुण्डलियाँ के साथ समझाया गया है।

(1) **ज्योतिष तत्त्व (गणित)**–प्रारम्भिक इतिहास से लेकर ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान–सम्पूर्ण बड़ी जन्मपत्री निर्माण शैली अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। **मूल्य 225/- रु.**

(2) **ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड–भाग-I)**–फलित सम्बन्धी आरम्भिक तथा विशेष सूत्र, मेष से कन्या लग्न तक प्रत्येक ग्रह का प्रत्येक भाव में फल, दो–तीन चार ग्रहों का फल, दृष्टि फल तथा अनेक योगों को सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। **मूल्य 400/-**

(3) **ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड–भाग-II)**–तुला से मीन लग्न तक प्रत्येक ग्रह का प्रत्येक भाव में फल, दो–तीन-चार-पंच-षड्ग्रही योगों का फल, ज्योतिष सम्बन्धी विशेष योगों का फल, मंगलीक दोष पर विश्लेषण, ज्यो. द्वारा क्लिष्ट रोग विचार तथा विंशोत्तरी एवं योगिनी दशा–अन्तर्दशाओं का फल आदि अनेक विषयों का समावेश किया गया है। **मूल्य 400/-**

(4) **अनिष्ट ग्रहों के चामत्कारी उपाय व टोटके**–शास्त्र सम्मत् तथा वैदिक उपायों एवं लाल किताब के सरल उपायों का विशद वर्णन किया गया है। प्रत्येक ज्योतिषी भाई के लिए अति उपयोगी पुस्तक है। **मूल्य 250/-** (लेखक–पं. पन्ना लाल ज्यो.)

इन चारों पुस्तकों को पढ़कर आपको फलित सम्बन्धी कई नई एवं गुप्त बातों का सरल, स्पष्ट शब्दों में ज्ञान होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। अत: आज ही मंगवाएँ। फोन–**94172-91325, 97799-13583**

इस पंचाँग का कापी राइट नं. A 27587/80 तथा Trade Mark No. 472584 भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है।

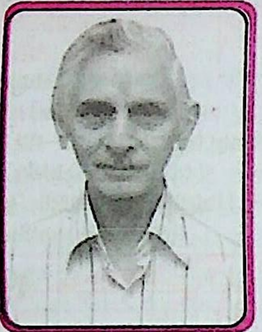
स्वर्गीयः पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

श्री गणेशाय नमः

संस्थापक : पं. देवीदयालु ज्योतिषी

श्री सरस्वत्यै नमः

स्वर्गीय: पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

# पंचाँग दिवाकर

नया "कालयुक्त" नामक संवत्सर पंचाँगदिवाकर के पाठकों के लिए शुभ एवं मंगलमय हो

## वि. संवत् २०८१ (सन् 2024-25 ई.)

असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग

**राजा**
**मंगल**

**मन्त्री**
**शनि**

मशहूरे आलम

## पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

लेखक एवं गणितकर्त्ता : पं. विवेक शर्मा (एम. ए. एल एल. बी.), सह-संपादक : पं. पंकज शर्मा (एम. कॉम)

सुपुत्रः स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी

(ज्योतिष, कर्मकाण्ड सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों के यशस्वी लेखक)

गौरवशाली
प्रकाशन वर्ष
१४९ वां

स्थापित
वि. संवत्
१९३२

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-144008 (पं.) (भारत) फोन नं. 0181-2457959

**प्रकाशक** : जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पं.)। मोबाईल 94172-91325, 97799-13583

नोट—सर्वाधिकार लेखकाधीन सुरक्षित हैं; —हमारी मुफीद आलम जंत्री उर्दू, हिन्दी व पंजाबी भाषाओं में 2024 ई. की भी छपकर तैयार हैं।

Printed at : Choice Books & Printers (P) Ltd., Focal Point, Extension, Jalandhar.

सूचना—इस पंचाँग का टाईटल व विषय सामग्री ट्रेड मार्क एवं कापीराईट Act के अन्तर्गत भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है। इसके किसी भी अंश की नकल करना गैर कानूनी होगा।

आवश्यक नोट—टाईटल पर होलोग्राम देखकर ही असली 'पंचाँगदिवाकर' खरीदें।

# विषय-सूची-पंचांगदिवाकर-संवत् २०८१ (सन् 2024-25 ई.)

विषय .................... पृष्ठ

पर्व, त्यौहार व छुट्टियाँ 3-6
हिमाचल, जम्मू, पंजाबादि के मेले 7-8
सरकारी छुट्टियाँ, सिक्ख, मुस्लि., जैन पर्व 9
संक्रान्ति, एकादशी व्रत-एक दृष्टि में 10
**गण्डमूल, पंचक विचार** 11
गणेश चतुर्थी, जन्माष्टमी चन्द्रोदय 12-15
**संदिग्ध व्रत-पर्वों का निर्णय** 21-29
**महालक्ष्मी ( दीपावली ) पूजन मुहूर्त्त** 30
**ग्रहण-विवरण** 31-33
शनि-साढ़ेसाती व पायाविचार } 34-39
गुरु व राहु-केतु गोचरफल }
होमादि में अग्निवास चक्र 42
**अनिष्ट ग्रहों के उपाय-विवरण** 43-46
**कालसर्प दोष के उपाय** 52
सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि योग 53-54
द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योग 55
ज्वालामुखी, यमघण्टक योग, लाभहानि चक्र 55
व्यापारिक मन्दा-तेजी ज्ञान, आज का दिन ?56-63
चमत्कारिक मन्त्र-यन्त्र एवं टोटके 64-69
बारह राशियों का मासिक फलादेश 77-83
राजा-मन्त्री, आर्द्रा प्रवेश फल 84-90

विषय .................... पृष्ठ

आकाशी कौंसिल, प्रमुख भविष्यवाणियां 91-103
सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश 104-107
**चैत्रादि पक्ष ( घड़ी-पलों में )** 115-138
**तिथ्यादि पंचांग घण्टा मिंटों में** 139-150
भारत के प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त 151-158
चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश 159-162
**दैनिक ग्रहस्पष्ट, सम्पातिक काल** 164-175
जालंधर-दिल्ली के दैनिक चं.उ.-चं.अ. 176-177
**शुद्ध विवाह मुहूर्त्त, राहुकालम्** 178-183
अशुद्ध विवाह मुहूर्त 184-185
कांवड़ जलाभिषेक मुहूर्त्त 185
**राशियों के अनुसार विवाह मुहूर्त्त** 186-189
**मध्याह्न, अपराह्ण-प्रदोषकाल जानें** 189
**मुण्डन, गृहप्रवेश, वाहनादि मुहूर्त्त** 190-196
विवाह लग्नशुद्धि, परिहार वाक्य 197-198
भद्रा, गोधूलि विचार, यात्रा-मुहूर्त्त 198-199
विवाह सम्बन्धी शास्त्रीय विचार 200
**आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय** 202-210
लत्तादि दस दोष विचार 211-213
घाती-नक्षत्र, राशि, वर्ण योनि चक्र 213-214
वर्णादि अष्टकूट, मंगलीक परिहार 215-219

विषय .................... पृष्ठ

**वर-कन्या मिलान सारिणी** 220-223
मेलापक में मंगलीक योग/परिहार 224
षोडश संस्कारों के मुहूर्त्त 226-228
अशौच व्यवस्था, प्रसूति लग्नादि विचार 228-229
प्रमुख लग्न सारिणीयां 230-236
षड्वर्ग सारिणी 237
भारत के नगरों के अक्षांश-रेखांश 238-246
विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश 247-250
किसी भी नगर का सूर्योदय निकालें 251-255
हि.प्र. के नगरों के सूर्योदयास्त-2024 256-259
शिमला (हि.प्र.) की दैनिक लग्न-सारणी 260-265
चन्द्रस्पष्ट द्वारा भोग्यदशा जानना 266-267
दशाऽन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा चक्र 268-271
नक्षत्र एवं बाल-कष्टावली 272-274
**वर्षफल सारिणी ( घण्टा-मिनटों में )** 276
दैनिक लग्न सारिणी-दिल्ली 277-282
होरा ज्ञान, चौघड़ियां मुहूर्त्त 283
दैनिक लग्न सारिणी-जालन्धर 285-292
उपयोगी रत्न एवं उपरत्न 297-299
द्वादश लग्नों का फल 300-301
पुस्तक सूची 302-304

## ★ इस वर्ष के कुछ नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय ★

कुम्भ-महापर्व (प्रयागराज) (उद्गम, माहात्म्य, स्नानतिथियां) (29 जनवरी, 2025 ई०) 16-20
संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय 21-29
दीपावली (महालक्ष्मीपूजन) कब ? 27
ग्रहण-विवरण 31-33
जन्मकुण्डली में फलादेश हेतु-विशेष उपयोगी नियम 47-51
पितृदोष शान्ति हेतु उपाय 51

ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड सम्बन्धी 'समस्याएं एवं समाधान' 70-73
'दीपावली-निर्णय' पर विशेष लेख 73
बारह राशियों का वर्षफल व उपाय 74-76
त्रयोदश दिनात्मक (13 दिन) पक्ष का फल 103
चान्द्र परम्परानुसार 'आश्विन' शुक्लपक्ष के पर्वों का निर्णय/माहात्म्य 108-113
नवसंवत्सर-फल/माहात्म्य 113
कुरुक्षेत्र, हिसार, करनाल के सूर्योदयास्त 151-158

### आगामी वर्ष के आकर्षक विषय

- कुम्भ-महापर्व पर जपनीय गंगास्तोत्र, गंगाष्टकादि स्तोत्र
- ज्योतिष शास्त्र अनुसार आजीविका चयन
- सन्तान सुख बाधाकारक योग/उपाय आदि
- पटियाला (पं.), पांओटा साहिब, सहारनपुर आदि नगरों के दैनिक सूर्योदयास्त
- अन्य अनेक उपयोगी विषयों को सम्मिलित

## पंचाँग दिवाकर के १४९वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

### श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर जगद् गुरु शंकराचार्य स्वामी नारायणानन्द तीर्थ महाराज जी का शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दु-सभ्यताया: गौरवान्वितायाः समृद्धयाश्च संस्कृतेर-भिव्यंजनां करोति।

शताधिकवर्षेभ्यः प्राक् गणिताचार्येण सुप्रसिद्धेन ज्योतिर्विद पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्रः गणिताचार्यः पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्ययेन पञ्चाङ्ग कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्म-गणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्ग दिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नस्ति। नवीने पञ्चाङ्गदिवाकरे ज्योतिषः व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामुपयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामुपयोगी प्रतीयते।

आशस्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज सुपुत्रयोः सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुरः प्रचारः प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामय-मानः शुभाशीरपि कामये। तिथौ
वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासरः
प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी
श्री हस्त-मुद्रा-
१००८ स्वामी नारायणानन्द तीर्थ रामेश्वर मठः
श्री काशी धर्म पीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम्( वाराणसी )

सूचना-इस पंचांग में किसी प्रकार की प्रिंटिंग, लेखकीय, बाईडिंग आदि त्रुटि के लिए लेखक, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक

पितृदोष शान्ति हेतु उपाय 51
कुरुक्षेत्र, हिसार, करनाल के सूर्योदयास्त 151–158
अन्य अनेक उपयोगी विषयों को सम्मिलित
लिए लेखक, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक

# प्रमुख व्रत, पर्व, त्योहार एवं छुट्टियां (सन् 2024–25 ई.)

### ○ जनवरी–(सन् 2024 ई.) ○

| | |
|---|---|
| इंग्लिश नववर्ष 2024 ई. प्रा. | 1 जन. सोम |
| रूक्मिणी-अष्टमी | 4 जन. गुरु |
| लोहड़ी पर्व | 13 जन. शनि |
| मकर संक्रान्ति | 14 जन. रवि |
| पुण्य मकर संक्रान्ति | 15 जन. सोम |
| श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जयं. | 17 जन. बुध |
| मार्तण्ड-सप्तमी | 17 जन. बुध |
| पुत्रदा एकादशी व्रत | 21 जन. रवि |
| पौष पूर्णिमा | 25 जन. गुरु |
| माघस्नान प्रारम्भ | 25 जन. गुरु |
| गणतन्त्र दिवस (75वाँ) | 26 जन. शुक्र |
| श्रीगणेशसंकष्ट चतुर्थी | 29 जन. सोम |

### ○ फरवरी ○

| | |
|---|---|
| माघ (मौनी) अमावस | 9 फर. शुक्र |
| महोदय योग (8:03 बाद) | 9 फर. शुक्र |
| गुप्त नवरात्र प्रारम्भ | 10 फर. शनि |
| बाबा श्रीलाल दयाल-जयन्ती (ध्यानपुर, पं.) | 11 फर. रवि |
| गौरी तृतीया (गोंतरी) | 12 फर. सोम |
| तिल-कुन्द चतुर्थी | 12 फर. सोम |
| वसन्त (श्री) पंचमी | 14 फर. बुध |
| लक्ष्मी-सरस्वती पूजन | 14 फर. बुध |
| रथसप्तमी (पूर्वारुणोदयवाली) | 16 फर. शुक्र |
| आरोग्य-पुत्र सप्तमी | 16 फर. शुक्र |
| भीष्माष्टमी | 16 फर. शुक्र |
| गुप्त नवरात्र समाप्त | 18 फर. रवि |
| भीष्म द्वादशी | 20 फर. मंग |
| माघ पूर्णिमा | 24 फर. शनि |
| माघस्नान समाप्त | 24 फर. शनि |
| श्रीगुरु रविदास जयंती | 24 फर. शनि |

### ○ मार्च ○

| | |
|---|---|
| स्वा. दयानन्द सरस्वती जयं. | 5 मार्च मंग |
| श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च शुक्र |
| होलाष्टक प्रारम्भ | 17 मार्च रवि |
| अन्नपूर्णा-अष्टमी | 17 मार्च रवि |
| महाविषुव दिवस | 20 मार्च बुध |
| गोविन्द द्वादशी | 21 मार्च गुरु |
| होलिकादहन (भद्रा-बाद) | 24 मार्च रवि |
| होलाष्टक समाप्त | 25 मार्च सोम |
| होली पर्व | 25 मार्च सोम |
| वसन्तोत्सव | 26 मार्च मंग |
| होला मेला (श्रीआनन्दपुर-व पांओटा साहिब) | 26 मार्च मंग |
| गुड फ्राइडे (क्रिश्चि.) | 29 मार्च शुक्र |
| श्रीरंग-पंचमी | 30 मार्च शनि |

### ○ अप्रैल ○

| | |
|---|---|
| शीतलाष्टमी व्रत | 2 अप्रै. मंग |
| महावारुणी पर्व | 6 अप्रै. शनि |
| मेला पिहोवातीर्थ (हरि.) | 7 अप्रै. रवि |
| सोमवती अमावस | 8 अप्रै. सोम |
| वि. संवत् 2080 पूर्ण | 8 अप्रै. सोम |
| वि. संवत् 2081 शुरु | 9 अप्रै. मंग. |
| चैत्र (वासन्त) नवरात्र शुरु | 9 अप्रै. मंग. |
| तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण | 9 अप्रै. मंग |
| गौरी तृतीया (गणगौर) | 11 अप्रै. गुरु |
| श्री (लक्ष्मी) पंचमी | 12 अप्रै. शुक्र |
| हय-व्रत | 12 अप्रै. शुक्र |
| वैशाखी पर्व | 13 अप्रै. शनि |
| नाग-पंचमी | 13 अप्रै. शनि |
| स्कन्द षष्ठी व्रत | 13 अप्रै. शनि |
| अशोकाष्टमी | 15 अप्रै. सोम |
| श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति | 16 अप्रै. मंग |
| वासन्त नवरात्र समाप्त | 17 अप्रै. बुध |
| श्रीरामनवमी | 17 अप्रै. बुध |
| नवरात्र व्रत पारणा | 18 अप्रै. गुरु |
| लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव | 19 अप्रै. शुक्र |
| श्रीविष्णु दमनोत्सव | 20 अप्रै. शनि |
| अनङ्ग त्रयोदशी | 21 अप्रै. रवि |
| श्रीमहावीर जयं. (जैन) | 21 अप्रै. रवि |
| शिव-दमनोत्सव | 22 अप्रै. सोम |
| श्रीहनुमान जयं. (दक्षिण) | 23 अप्रै. मंग. |
| वैशाखस्नान प्रारम्भ | 23 अप्रै. मंग |

### ○ मई ○

| | |
|---|---|
| भगवान् परशुराम जयं. | 10 मई शुक्र |
| अक्षय-तृतीया | 10 मई शुक्र |
| आद्यगुरु शंकराचार्य जयं. | 12 मई रवि |
| श्रीगङ्गा-जयन्ती | 14 मई मंग |
| श्रीबगुलामुखी जयन्ती | 16 मई गुरु |
| जानकी-जयन्ती | 16 मई गुरु |
| श्रीनृसिंह-जयन्ती | 21 मई मंग |
| श्रीकूर्म-जयन्ती | 23 मई गुरु |
| वैशाख-बुद्ध पूर्णिमा | 23 मई गुरु |
| वैशाखस्नान समाप्त | 23 मई गुरु |

### ○ जून ○

| | |
|---|---|
| भद्रकाली एकादशी (स्मा.) | 2 जून रवि |
| वटसावित्री व्रत (अमा. पक्ष) | 6 जून गुरु |
| ज्येष्ठ, भावुका अमावस | 6 जून गुरु |
| शनैश्चर-जयन्ती | 6 जून गुरु |
| रम्भा तृतीया व्रत | 8 जून शनि |
| अरण्य षष्ठी | 12 जून बुध |
| विन्ध्यवासिनी पूजा | 12 जून बुध |
| श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयं. | 14 जून शुक्र |
| मेला क्षीर-भवानी (काश्मीर) | 14 जून शुक्र |
| श्रीगङ्गा दशहरा पर्व | 16 जून रवि |
| निर्जला एकादशी व्रत | 18 जून मंग |
| सायन दक्षिणायन शुरु | 20 जून गुरु |
| वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा) | 21 जून शुक्र |
| सन्त कबीर जयन्ती | 22 जून शनि |
| ज्येष्ठ पूर्णिमा | 22 जून शनि |

### ○ जुलाई ○

| | |
|---|---|
| गुप्त नवरात्र प्रारम्भ | 6 जुला. शनि |
| श्रीजगन्नाथ रथयात्रा-पुरी | 7 जुला. रवि |
| कुमार-षष्ठी | 11 जुला. गुरु |
| विवस्वत् सप्तमी | 12 जुला. शुक्र |
| गुप्त नवरात्र समाप्त | 15 जुला. सोम |
| हरिशयनी एकादशी व्रत | 17 जुला. बुध |
| श्रीविष्णुशयनोत्सव | 17 जुला. बुध |
| श्रीशिव-शयनोत्सव | 20 जुला. शनि |
| कोकिला व्रत | 20 जुला. शनि |
| गुरु पूर्णिमा, व्यासपूजा | 21 जुला. रवि |
| श्रावण सोमवार व्रत शुरु | 22 जुला. सोम |

### ○ अगस्त ○

| | |
|---|---|
| श्रावण-शिवरात्रि | 2 अग. शुक्र |
| हरियाली अमावस | 4 अग. रवि |
| मे. चिन्तपूर्णी-हि.प्र. शुरु | 5 अग. सोम |
| मधुस्रवा-हरियाली तीज | 7 अग. बुध |
| नाग-पञ्चमी | 9 अग. शुक्र |
| श्रीकल्कि जयन्ती | 10 अग. शनि |
| श्रीदुर्गाष्टमी (मेला-चिन्तपूर्णी-हि.प्र. समाप्त) | 13 अग. मंग |
| स्वतन्त्रता दिवस (78वाँ) | 15 अग. गुरु |
| ऋक्-उपाकर्म | 19 अग. सोम |
| यजु-अथर्ववेदि उपाकर्म | 19 अग. सोम |
| श्रावण पूर्णिमा | 19 अग. सोम |
| रक्षाबन्धन (राखी) भद्राबाद | 19 अग. सोम |
| श्रीअमरनाथ यात्रा समा. | 19 अग. सोम |
| कज्जली तृतीया | 21 अग. बुध |
| श्रीगणेश बहुला चतुर्थी | 22 अग. गुरु |
| चन्दन षष्ठी व्रत | 24 अग. शनि |
| श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत | 26 अग. सोम |
| श्रीकृष्ण-जयन्ती योग | 26 अग. सोम |
| गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव | 27 अग. मंग |
| श्रीगुग्गा-नवमी | 27 अग. मंग |
| वत्स द्वादशी (पूजा) | 30 अग. शुक्र |

### ○ सितम्बर ○

| | |
|---|---|
| कुशाग्रहणी अमावस | 2 सितं. सोम |
| पिठोरी अमावस | 2 सितं. सोम |
| सोमवती अमावस | 2 सितं. सोम |
| सामवेदि उपाकर्म | 5 सितं. गुरु |
| हरितालिका तृतीया | 6 सितं. शुक्र |
| कलंक-चतुर्थी | 6 सितं. शुक्र |
| सिद्धि विनायक व्रत | 7 सितं. शनि |
| ऋषि पंचमी व्रत | 8 सितं. रवि |
| मुक्ताभरण-संतान सप्तमी | 10 सितं. मंग |
| श्रीमहालक्ष्मी व्रत शुरु | 11 सितं. बुध |
| श्रीराधाष्टमी | 11 सितं. बुध |
| श्रीचन्दनवमी (उदासीन) | 12 सितं. गुरु |
| श्रीवामन-जयन्ती | 15 सितं. रवि |
| श्रवण-द्वादशी | 15 सितं. रवि |
| विष्णुश्रृंखल योग | 15 सितं. रवि |
| अनन्त चतुर्दशी व्रत | 17 सितं. मंग |
| मेला सोढल, जालन्धर, पंजा. | 17 सितं. मंग |
| प्रोष्ठपदी-पूर्णिमा श्राद्ध | 17 सितं. मंग |
| महालय प्रारम्भ | 17 सितं. मंग |
| पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारंभ | 18 सितं. बुध |
| श्रीमहालक्ष्मी व्रत समा. | 24 सितं. मंग. |

### ○ अक्तूबर ○

| | |
|---|---|
| महालय/श्राद्ध समाप्त | 2 अक्तू. बुध |
| सर्वपितृ श्राद्ध | 2 अक्तू. बुध |
| गजच्छाया योग | 2 अक्तू. बुध |
| महात्मा गाँधी जयन्ती | 2 अक्तू. बुध |
| शरद् नवरात्र प्रारम्भ | 3 अक्तू. गुरु |
| उपाङ्ग ललिता व्रत | 7 अक्तू. सोम |
| सरस्वती आवाहन | 9 अक्तू. बुध |
| सरस्वती पूजन | 10 अक्तू. गुरु |
| श्रीदुर्गाष्टमी | 11 अक्तू. शुक्र |
| महानवमी (व्रत, पूजा हेतु) | 11 अक्तू. शुक्र |
| सरस्वती बलिदान | 11 अक्तू. शुक्र |
| महानवमी (बलिदान-व होम हेतु) | 12 अक्तू. शनि |
| नवरात्र समाप्त | 12 अक्तू. शनि |
| विजयादशमी (दशहरा) | 12 अक्तू. शनि |
| आयुध (शस्त्र) पूजा | 12 अक्तू. शनि |
| सरस्वती विसर्जन | 12 अक्तू. शनि |
| नवरात्र व्रत पारणा | 13 अक्तू. रवि |

| | | |
|---|---|---|
| भरत-मिलाप | 13 अक्तू. | रवि |
| कोजागर व्रत | 16 अक्तू. | बुध |
| शरद् पूर्णिमा व्रत | 16 अक्तू. | बुध |
| महर्षि श्रीवाल्मीकि जयं. | 17 अक्तू. | गुरु |
| कार्तिकस्नान प्रारम्भ | 17 अक्तू. | गुरु |
| व्रत करवा-चौथ | 20 अक्तू. | रवि |
| अहोई अष्टमी व्रत | 24 अक्तू. | गुरु |
| गोवत्स द्वादशी | 28 अक्तू. | सोम |
| यम प्रीत्यर्थं दीपदान | 29 अक्तू. | मंग |
| धन त्रयोदशी | 29 अक्तू. | मंग |
| श्रीहनुमान जयं.( उ.भारत ) | 30 अक्तू. | बुध |
| नरक-चतुर्दशी | 31 अक्तू. | गुरु |

### ○ नवम्बर ○

| | | |
|---|---|---|
| दीपावली, महालक्ष्मी पूजन | 1 नवं. | शुक्र |
| विश्वकर्मा दिवस ( पं. ) | 2 नवं. | शनि |
| अन्नकूट-गोवर्धन पूजा | 2 नवं. | शनि |
| भाई-दूज, यमद्वितीया | 3 नवं. | रवि |
| श्रीविश्वकर्मा-पूजन | 3 नवं. | रवि |
| सूर्य षष्ठी पर्व ( बिहार ) | 7 नवं. | गुरु |
| गोपाष्टमी | 9 नवं. | शनि |
| अक्षय-कूष्माण्ड नवमी | 10 नवं. | रवि |
| भीष्मपंचक प्रारम्भ | 11 नवं. | सोम |
| हरिप्रबोधिनी एकादशी | 12 नवं. | मंग |
| तुलसी विवाह | 12 नवं. | मंग |
| हरिप्रबोधोत्सव | 13 नवं. | बुध |
| वैकुण्ठ चतुर्दशी | 14 नवं. | गुरु |
| कार्तिक पूर्णिमा | 15 नवं. | शुक्र |
| भीष्मपंचक समाप्त | 15 नवं. | शुक्र |
| श्रीगुरु नानक जयन्ती | 15 नवं. | शुक्र |
| त्रिपुरोत्सव | 15 नवं. | शुक्र |
| कार्तिक स्नान समाप्त | 15 नवं. | शुक्र |
| पद्मक योग | 15 नवं. | शुक्र |
| श्रीकालभैरवाष्टमी | 23 नवं. | शनि |

### ○ दिसम्बर ○

| | | |
|---|---|---|
| स्कन्द-गुह षष्ठी | 6 दिसं. | शुक्र |
| चम्पा-षष्ठी( महाराष्ट्र ) | 7 दिसं. | शनि |
| मित्र ( विष्णु ) सप्तमी | 7 दिसं. | शनि |
| मोक्षदा एकादशी व्रत | 11 दिसं. | बुध |
| श्रीगीता-जयन्ती | 11 दिसं. | बुध |
| श्रीदत्तात्रेय जयन्ती | 14 दिसं. | शनि |
| रुक्मिणी-अष्टमी | 23 दिसं. | सोम |
| क्रिसमिस-डे ( क्रिश्चि. ) | 25 दिसं. | बुध |
| सोमवती(पौष)अमा. | 30 दिसं. | सोम |

### » जनवरी–2025 ई. »

| | | |
|---|---|---|
| इंग्लिश नववर्ष 2025 ई. प्रा. | 1 जन. | बुध |
| मार्त्तण्ड सप्तमी | 6 जन. | सोम |
| श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं. | 6 जन. | सोम |
| पुत्रदा एकादशी व्रत | 10 जन. | शुक्र |
| पौष-पूर्णिमा | 13 जन. | सोम |
| लोहड़ी पर्व | 13 जन. | सोम |
| माघस्नान प्रारम्भ | 13 जन. | सोम |
| मकर ( माघ ) संक्रांति | 14 जन. | सोम |
| प्रथम शाही स्नान-<br>-कुम्भ महापर्व (प्रयागराज) | 14 जन. | मंग |
| श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी | 17 जन. | शुक्र |
| गणतन्त्र दिवस (76वाँ) | 26 जन. | रवि |
| माघ (मौनी) अमावस | 29 जन. | बुध |
| द्वितीय ( प्रमुख ) शाही स्नान<br>कुम्भ महापर्व ( प्रयागराज ) | 29 जन. | बुध |
| गुप्त नवरात्र प्रारम्भ | 30 जन. | गुरु |
| बाबा श्रीलाल दयाल-<br>-जयन्ती ( ध्यानपुर, पं. ) | 31 जन. | शुक्र |

### » फरवरी–2025 ई० »

| | | |
|---|---|---|
| गौरी तृतीया ( गोंतरी ) | 1 फर. | शनि |
| तिल-कुन्द चतुर्थी | 1 फर. | शनि |
| वसन्त ( श्री ) पंचमी | 2 फर. | रवि |
| लक्ष्मी-सरस्वती पूजन | 2 फर. | रवि |
| तृतीय ( अन्तिम ) शाही स्नान<br>कुम्भ महापर्व ( प्रयागराज ) | 2/3 फर. | |
| रथसप्तमी( पूर्वारुणोदय वाली ) | 4 फर. | मंग |
| आरोग्य-पुत्र सप्तमी | 4 फर. | मंग |
| भीष्माष्टमी | 5 फर. | बुध |
| गुप्त नवरात्र समाप्त | 6 फर. | गुरु |
| भीष्म द्वादशी, तिल १२ | 9 फर. | रवि |
| माघ पूर्णिमा | 12 फर. | बुध |
| माघस्नान समाप्त | 12 फर. | बुध |
| श्रीगुरु रविदास जयन्ती | 12 फर. | बुध |
| स्वा. दयानन्द सरस्वती जयं. | 23 फर. | रवि |

### » मार्च–2025 ई० »

| | | |
|---|---|---|
| होलाष्टक प्रारम्भ | 7 मार्च | शुक्र |
| अन्नपूर्णा-अष्टमी | 7 मार्च | शुक्र |
| गोविन्द द्वादशी | 10 मार्च | सोम |
| होलिका-दहन ( भद्रा-बाद ) | 13 मार्च | गुरु |
| होलाष्टक समाप्त | 14 मार्च | शुक्र |
| होली-पर्व | 14 मार्च | शुक्र |
| वसन्तोत्सव | 15 मार्च | शनि |
| होला मेला ( श्रीआनन्दपुर-<br>-व पांओटा साहिब ) | 15 मार्च | शनि |
| श्रीरंग-पंचमी | 19 मार्च | बुध |
| महाविषुव दिवस | 20 मार्च | गुरु |
| शीतलाष्टमी व्रत | 22 मार्च | शनि |
| वारुणी पर्व | 27 मार्च | गुरु |
| मेला पिहोवातीर्थ ( हरि. ) | 28 मार्च | शुक्र |
| वि. संवत् 2081 पूर्ण | 29 मार्च | शनि |

## श्रीसत्यनारायण व्रत

### (सन् 2024-25 ई.)

श्रीसत्यनारायण व्रत का उदयकालिक पूर्णमाशी की तिथि से कभी-कभी एक दिन का अन्तर आ जाता है, क्योंकि चन्द्रोदयकालिक एवं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ही व्रत हेतु ग्रहण करनी चाहिए।

| | | |
|---|---|---|
| पौष | 25 जन. | गुरु |
| माघ | 23 फर. | शुक्र |
| फाल्गुन | 24 मार्च | रवि |
| चैत्र | 23 अप्रै. | मंग |
| वैशाख ( देखें पृ.21 ) | 23 मई | गुरु |
| ज्येष्ठ | 21 जून | शुक्र |
| आषाढ़ ( देखें पृष्ठ22 ) | 20 जुला. | शनि |
| श्रावण | 19 अग. | सोम |
| भाद्रपद | 17 सितं. | मंग |
| आश्विन ( देखें पृ.26 ) | 17 अक्तू. | गुरु |
| कार्तिक | 15 नवं. | शुक्र |
| मार्गशीर्ष | 14 दिसं. | शनि |
| पौष ( सन् 2025 ई. ) | 13 जन. | सोम |
| माघ | 12 फर. | बुध |

## पूर्णिमा व्रत (2024-25 ई.)

### ( उदय-व्यापिनी, स्नानदानार्थ )

| | | |
|---|---|---|
| पौष | 25 जन. | गुरु |
| माघ | 24 फर. | शनि |
| फाल्गुन | 25 मार्च | सोम |
| चैत्र | 23 अप्रै. | मंग |
| वैशाख | 23 मई | गुरु |
| ज्येष्ठ | 22 जून | शनि |
| आषाढ़ | 21 जुला. | रवि |
| श्रावण | 19 अग. | सोम |
| भाद्रपद | 18 सितं. | बुध |
| आश्विन | 17 अक्तू. | गुरु |
| कार्तिक | 15 नवं. | शुक्र |
| मार्गशीर्ष | 15 दिसं. | रवि |

( सन् 2025 ई. )

| | | |
|---|---|---|
| पौष | 13 जन. | सोम |
| माघ | 12 फर. | बुध |
| फाल्गुन | 14 मार्च | शुक्र |

## अमावस्याएँ

### (स्नानदानार्थ) (सन् 2024-25 ई.)

| | | |
|---|---|---|
| पौष | 11 जन. | गुरु |
| माघ ( मौनी ) 8:03 बाद | 9 फर. | शुक्र |
| फाल्गुन | 10 मार्च | रवि |
| चैत्र ( सोमवती ) | 8 अप्रै. | सोम |
| वैशाख | 8 मई | बुध |
| ज्येष्ठ | 6 जून | गुरु |
| आषाढ़ | 5 जुला. | शुक्र |
| श्रावण | 4 अग. | रवि |
| भाद्रपद ( सोमवती ) | 2 सितं. | सोम |
| आश्विन | 2 अक्तू. | बुध |
| कार्तिक | 1 नवं. | शुक्र |
| मार्गशीर्ष | 1 दिसं. | रवि |
| पौष ( सोमवती ) | 30 दिसं. | सोम |

( सन् 2025 ई. )

| | | |
|---|---|---|
| माघ | 29 जन. | बुध |
| फाल्गुन ( 8:55 बाद ) | 27 फर. | गुरु |

## श्रीगणेश चतुर्थी व्रत

| | | |
|---|---|---|
| माघ | 29 जन. | सोम |
| फाल्गुन | 28 फर. | बुध |
| चैत्र | 28 मार्च | गुरु |
| वैशाख | 27 अप्रै. | शनि |
| ज्येष्ठ | 26 मई | रवि |
| आषाढ़ ( अङ्गारकी ) | 25 जून | मंग |
| श्रावण | 24 जुला. | बुध |
| भाद्रपद | 22 अग. | गुरु |
| आश्विन (देखें पृष्ठ 24) | 21 सितं. | शनि |
| कार्तिक | 20 अक्तू. | रवि |
| मार्गशीर्ष | 18 नवं. | सोम |
| पौष | 18 दिसं. | बुध |

( सन् 2025 ई. )

| | | |
|---|---|---|
| माघ ( संकष्ट ) | 17 जन. | शुक्र |
| फाल्गुन | 16 फर. | रवि |
| चैत्र (देखें पृष्ठ 29) | 17 मार्च | सोम |

## श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

| | | |
|---|---|---|
| पौष | 14 जन. | रवि |
| माघ | 13 फर. | मंग |
| फाल्गुन | 13 मार्च | बुध |
| चैत्र | 12 अप्रै. | शुक्र |
| वैशाख | 11 मई | शनि |
| ज्येष्ठ | 10 जून | सोम |
| आषाढ़ | 9 जुला. | मंग |
| श्रावण | 8 अग. | गुरु |
| भाद्रपद | 7 सितं. | शनि |
| आश्विन | 6 अक्तू. | रवि |
| कार्तिक | 5 नवं. | मंग |
| मार्गशीर्ष ( देखें पृष्ठ 28 ) | 5 दिसं. | गुरु |

( सन् 2025 ई. )

| | | |
|---|---|---|
| पौष | 3 जन. | शुक्र |
| माघ | 1 फर. | शनि |

## पितृपक्ष में श्राद्ध–सन् 2024 ई.

## प्रदोष व्रत (सन् 2024-25 ई.)

## मासिक शिवरात्र व्रत

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| श्रीदत्तात्रेय जयन्ती | 14 दिसं. शनि | स्वा. दयानन्द सरस्वती जयं. | 23 फर. रवि | माघ | 12 फर. बुध | फाल्गुन (8:55 बाद) | 27 फर. गुरु | माघ | 7 फर. शनि |

## पितृपक्ष में श्राद्ध–सन् 2024 ई.

### (आश्विन कृष्ण पक्ष में श्राद्ध तिथियों का निर्णय)

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए आश्विन कृष्ण पक्ष में पितृ-तर्पण एवं श्राद्धकर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि, आयु, सुख-शान्ति, वंशवृद्धि एवं उत्तम सन्तान की प्राप्ति होती है। श्रद्धापूर्वक किए जाने के कारण ही इसका नाम '**श्राद्ध**' है। इस बात का भी ध्यान रहे कि श्राद्धकृत्य '**अपराह्नकाल**' व्यापिनी तिथि में किए जाते हैं।

|  |  |
|---|---|
| प्रोष्ठपदी/पूर्णिमा श्राद्ध | 17 सितं. मंग |
| प्रतिपदा का श्राद्ध | 18 सितं. बुध |
| द्वितीया का श्राद्ध | 19 सितं. गुरु |
| तृतीया का श्राद्ध | 20 सितं. शुक्र |
| चतुर्थी/भरणी श्राद्ध | 21 सितं. शनि |
| पंचमी का श्राद्ध | 22 सितं. रवि |
| षष्ठी का श्राद्ध<br>सप्तमी का श्राद्ध | 23 सितं. सोम |
| अष्टमी का श्राद्ध | 24 सितं. मंग |
| नवमी/सौभाग्यवतीनां श्राद्ध | 25 सितं. बुध |
| दशमी का श्राद्ध | 26 सितं. गुरु |
| एकादशी का श्राद्ध[A] | 27 सितं. शुक्र |
| द्वादशी/संन्यासीनां श्राद्ध | 29 सितं. रवि |
| मघा श्राद्ध | 29 सितं. रवि |
| त्रयोदशी का श्राद्ध | 30 सितं. सोम |
| ✤चतुर्दशी/अपमृत्यु श्राद्ध | 1 अक्तू. मंग |
| अमावस, सर्वपितृ, अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध | 2 अक्तू. बुध |

**A**=28 सितं. को किसी तिथि का श्राद्ध नहीं होगा। (देखें पृष्ठ 24) ✤ चतुर्दशी तिथि को केवल शस्त्र, विष, दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध होता है। उनकी मृत्यु चाहे किसी अन्य तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में सामान्य मृत्यु वालों का श्राद्ध अमावस्या तिथि में करने का शास्त्र विधान है।

## निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल (सन् 2024–25 ई.)

| नाम संक्रान्ति | ता. मास वार | प्रवेशकाल (घं. मिं.) | पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.) |
|---|---|---|---|
| माघ संक्रान्ति | 14 जन., रवि | 26:43 | अगले दिन प्रात: 9:07 तक |
| फाल्गुन संक्रान्ति | 13 फर., मंग | 15:43 | प्रात: 9:19 बाद सारा दिन |
| चैत्र संक्रान्ति | 14 मार्च, गुरु | 12:36 | सू.उ. बाद सारा दिन |
| वैशाख संक्रान्ति | 13 अप्रै., शनि | 21:04 | मध्याह्न बाद से |
| ज्येष्ठ संक्रान्ति | 14 मई, मंग | 17:54 | दोपहर 11:30 बाद से |
| आषाढ़ संक्रान्ति | 14 जून, शुक्र | 24:27 | अगले दिन प्रात: 6:52 तक |
| श्रावण संक्रान्ति | 16 जुला., मंग | 11:19 | सूर्योदय से सायं 17:43 तक |
| भाद्र. संक्रान्ति | 16 अग., शुक्र | 19:44 | मध्याह्न बाद से |
| आश्विन संक्रान्ति | 16 सितं., सोम | 19:43 | मध्याह्न बाद से |
| कार्तिक संक्रान्ति | 17 अक्तू., गुरु | 7:42 | दोपहर 14:06 तक |
| मार्ग. संक्रान्ति | 16 नवं., शनि | 7:32 | दोपहर 13:56 तक |
| पौष संक्रान्ति | 15 दिसं., रवि | 22:10 | मध्याह्न बाद से |
| माघ संक्रान्ति(25) | 14 जन., मंग | 8:55 | सू.उ. से दोपहर 15:19 तक |
| फाल्गुन संक्रान्ति | 12 फर., बुध | 21:56 | मध्याह्न बाद से |
| चैत्र संक्रान्ति | 14 मार्च, शुक्र | 18:50 | दोपहर 12:26 से |

## प्रदोष व्रत (सन् 2024–25 ई.)

प्रदोष व्रत भगवान् शिव की प्रसन्नता और प्रभुत्व की प्राप्ति हेतु किया जाता है। वैसे तो सभी प्रदोष व्रत अत्यन्त कल्याणप्रद होते हैं, परन्तु **शनिप्रदोष** सन्तान प्राप्ति के लिए, **भौम-प्रदोष** ऋणमोचन हेतु ; **सोमप्रदोष** मन:शान्ति एवं सुरक्षा हेतु, **रवि प्रदोष व्रत** आरोग्य प्राप्ति एवं आयुवृद्धि के लिए विशेष अधिक फलदायी होता है। व्रती को चाहिए कि व्रत वाले दिन सूर्यास्त के समय पुन: स्नान करके शिवपूजन एवं कथा करें और तत्पश्चात् "**भवाय भवनाशाय, महादेवाय धीमते। रूद्राय नीलकण्ठाय शर्वाय शशि मौलिने। उग्रायोग्राघनाशाय भीमाय भय हारिणे। ईशानाय नमस्तुभ्यं पशूनां पतये नम:।।**" से प्रार्थना करके भोजन करें।

|  |  |
|---|---|
| पौष कृष्ण (भौम) | 9 जन. मंग |
| पौष शुक्ल (भौम) | 23 जन. मंग |
| माघ कृष्ण | 7 फर. बुध |
| माघ शुक्ल | 21 फर. बुध |
| फाल्गुन कृष्ण | 8 मार्च शुक्र |
| फाल्गुन शुक्ल | 22 मार्च शुक्र |
| चैत्र कृष्ण (शनि) | 6 अप्रै. शनि |
| चैत्र शुक्ल | 21 अप्रै. रवि |
| वैशाख कृष्ण | 5 मई रवि |
| वैशाख शुक्ल (सोम) | 20 मई चन्द्र |
| ज्येष्ठ कृष्ण (भौम) | 4 जून मंग |
| ज्येष्ठ शुक्ल | 19 जून बुध |
| आषाढ़ कृष्ण | 3 जुला. बुध |
| आषाढ़ शुक्ल | 19 जुला. शुक्र |
| श्रावण कृष्ण | 1 अग. गुरु |
| श्रावणशुक्ल (शनि) | 17 अग. शनि |
| भाद्रपद कृष्ण | 31 अग. शनि |
| भाद्रपद शुक्ल | 15 सितं. रवि |
| आश्विनकृष्ण(सोम) | 30 सितं. चंद्र |
| आश्विन शुक्ल | 15 अक्तू. मंग |
| कार्तिक कृष्ण(भौम) | 29 अक्तू. मंग |
| कार्तिक शुक्ल | 13 नवं. बुध |
| मार्गशीर्ष कृष्ण | 28 नवं. गुरु |
| मार्गशीर्ष शुक्ल | 13 दिसं. शुक्र |
| पौष कृष्ण | 28 दिसं. शनि |

### (सन् 2025 ई.)

|  |  |
|---|---|
| पौष शुक्ल | 11 जन. शनि |
| माघ कृष्ण (सोम) | 27 जन. चंद्र |
| माघ शुक्ल (सोम) | 10 फर. चंद्र |
| फाल्गुनकृष्ण (भौम) | 25 फर. मंग |
| फाल्गुनशुक्ल (भौम) | 11 मार्च मंग |
| चैत्र कृष्ण | 27 मार्च गुरु |

## मासिक कालाष्टमी व्रत

### (सन् 2024 ई.)

|  |  |
|---|---|
| पौष | 4 जन. गुरु |
| माघ (प्रदोषव्यापिनी) | 2 फर. शुक्र |
| फाल्गुन | 3 मार्च रवि |
| चैत्र | 2 अप्रै. मंग |
| वैशाख | 1 मई बुध |
| ज्येष्ठ | 30 मई गुरु |
| आषाढ़ | 28 जून शुक्र |
| श्रावण | 28 जुला. रवि |
| भाद्रपद | 26 अग. सोम |
| आश्विन | 24 सितं. मंग |
| कार्तिक | 24 अक्तू. गुरु |
| मार्गशीर्ष | 23 नवं. शनि |
| पौष | 22 दिसं. रवि |

### (सन् 2025 ई.)

|  |  |
|---|---|
| माघ | 21 जन. मंग |
| फाल्गुन | 20 फर. गुरु |
| चैत्र | 22 मार्च शनि |

## मासिक शिवरात्र व्रत

### (सन् 2024 ई.)

|  |  |
|---|---|
| पौष | 9 जन. मंग |
| माघ | 8 फर. गुरु |
| फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि) | 8 मार्च शुक्र |
| चैत्र | 7 अप्रै. रवि |
| वैशाख | 6 मई सोम |
| ज्येष्ठ | 4 जून मंग |
| आषाढ़ | 4 जुला. गुरु |
| श्रावण | 2 अग. शुक्र |
| भाद्रपद | 1 सितं. रवि |
| आश्विन | 30 सितं. सोम |
| कार्तिक | 30 अक्तू. बुध |
| मार्गशीर्ष | 29 नवं. शुक्र |
| पौष | 29 दिसं. रवि |

### (सन् 2025 ई.)

|  |  |
|---|---|
| माघ | 27 जन. सोम |
| फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि) | 26 फर. बुध |
| चैत्र | 27 मार्च गुरु |

## मासिक दुर्गाष्टमी व्रत

### (सन् 2024 ई.)

|  |  |
|---|---|
| पौष | 18 जन. गुरु |
| माघ (8:55 बाद) | 16 फर. शुक्र |
| फाल्गुन | 17 मार्च रवि |
| चैत्र | 16 अप्रै. मंग |
| वैशाख | 15 मई बुध |
| ज्येष्ठ | 14 जून शुक्र |
| आषाढ़ | 14 जुला. रवि |
| श्रावण | 13 अग. मंग |
| भाद्रपद | 11 सितं. बुध |
| आश्विन | 11 अक्तू. शुक्र |
| कार्तिक | 9 नवं. शनि |
| मार्गशीर्ष | 8 दिसं. रवि |

### (सन् 2025 ई.)

|  |  |
|---|---|
| पौष | 7 जन. मंग |
| माघ | 5 फर. बुध |
| फाल्गुन | 7 मार्च शुक्र |

## एकादशी व्रत (सन् 2024-25 ई.)

'धर्मसिन्धु' ग्रन्थानुसार एकादशी दो प्रकार की होती है। विद्धा और शुद्धा॥

1. दशमी तिथि से युक्त एकादशी तिथि विद्धा एकादशी कहलाती है।

2. सूर्योदयकालिक एकादशी तिथि द्वादशी तिथि से युक्त हो तो वह शुद्धा एकादशी कहलाती है।

यद्यपि धर्मग्रन्थों में गृहस्थों को दशमीयुता एकादशी में व्रत करने की आज्ञा दी गई है, परन्तु परम्पराया 'स्मार्त्त' (अर्थात् साधारण गृहस्थी) लोग भी वैष्णव सम्प्रदाय (संन्यासी, यति, दीक्षित) द्वारा पालनीय वैष्णव एकादशी वाला व्रत ही रख लेते हैं।

| | |
|---|---|
| सफला ( पौष कृष्ण ) | 7 जन. रवि |
| पुत्रदा ( पौष शुक्ल ) | 21 जन. रवि |
| षट्तिला ( माघ कृष्ण ) | 6 फर. मंग |
| जया ( माघ शुक्ल ) | 20 फर. मंग |
| विजया ( फाल्गुन कृष्ण ) वैष्णव | 7 मार्च गुरु |
| आमलकी ( फाल्गुन शुक्ल ) | 20 मार्च बुध |
| पापमोचनी ( चैत्र कृष्ण ) | 5 अप्रै. शुक्र |
| कामदा ( चैत्र शुक्ल ) | 19 अप्रै. शुक्र |
| वरुथिनी ( वैशाख कृष्ण ) | 4 मई शनि |
| मोहिनी ( वैशाख शुक्ल ) | 19 मई रवि |
| अपरा ( ज्येष्ठा कृष्ण ) वैष्णव | 3 जून सोम |
| निर्जला ( ज्येष्ठ शुक्ल ) | 18 जून मंग |
| योगिनी ( आषाढ़ कृष्ण ) | 2 जुला. मंग |
| हरिशयनी ( आषाढ़ शुक्ल ) | 17 जुला. बुध |
| कामिका ( श्रावण कृष्ण ) | 31 जुला. बुध |
| पवित्रा ( श्रावण शुक्ल ) | 16 अग. शुक्र |
| अजा ( भाद्रपद कृष्ण ) | 29 अग. गुरु |
| पद्मा ( भाद्रपद शुक्ल ) | 14 सितं. शनि |
| इन्दिरा ( आश्विन कृष्ण ) | 28 सितं. शनि |
| पापांकुशा ( आश्विन शुक्ल )वैष्ण. | 14 अक्तू. सोम |
| रमा ( कार्तिक कृष्ण ) | 28 अक्तू. सोम |
| हरिप्रबोधिनी ( कार्तिक शुक्ल ) | 12 नवं. मंग |
| उत्पन्ना ( मार्गशीर्ष कृष्ण ) | 26 नवं. मंग |
| मोक्षदा ( मार्गशीर्ष शुक्ल ) | 11 दिसं. बुध |

### ( सन् 2025 ई. )

| | |
|---|---|
| पुत्रदा ( पौष शुक्ल ) | 10 जन. शुक्र |
| षट्तिला ( माघ कृष्ण ) | 25 जन. शनि |
| जया ( माघ शुक्ल ) | 8 फर. शनि |
| विजया ( फाल्गुन कृष्ण ) | 24 फर. सोम |
| आमलकी ( फाल्गुन शुक्ल ) | 10 मार्च सोम |
| पापमोचनी ( चैत्र कृष्ण ) वैष्णव | 26 मार्च बुध |

## दशमहाविद्या जयन्तियां–सं. २०८१

| | |
|---|---|
| श्रीमहातारा जयन्ती | 17 अप्रै. बुध |
| श्रीमातङ्गी जयन्ती | 10 मई शुक्र |
| श्रीबगुलामुखी जयन्ती | 16 मई गुरु |
| श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती | 22 मई बुध |
| श्रीधूमावती जयन्ती | 14 जून शुक्र |
| श्रीमहाकाली जयन्ती | 26 अग. सोम |
| श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती | 15 सितं. रवि |
| श्रीकमला जयन्ती ( 9:49 बाद ) | 19 अक्तू. शनि |
| श्रीत्रिपुरभैरवी जयन्ती | 14 दिसं. शनि |
| श्रीललिता जयन्ती ( 2025 ई. ) | 12 फर. बुध |

## दशावतार जयन्तियां-(सन् 2024 ई.)

| | |
|---|---|
| श्रीमत्स्य जयन्ती | 11 अप्रै. गुरु |
| श्रीराम जयन्ती ( नवमी ) | 17 अप्रै. बुध |
| श्रीपरशुराम जयन्ती | 10 मई शुक्र |
| श्रीनृसिंह जयन्ती | 21 मई मंग |
| श्रीकूर्म जयन्ती | 23 मई गुरु |
| श्रीबुद्ध जयन्ती | 23 मई गुरु |
| श्रीकल्कि जयन्ती | 10 अग. शनि |
| श्रीकृष्ण जयन्ती | 26 अग. सोम |
| श्रीवराह जयन्ती | 6 सितं. शुक्र |
| श्रीवामन जयन्ती | 15 सितं. रवि |

## पर्व श्रीपिण्डोरीधाम ( गुरदासपुर )-2024 ई.

| | |
|---|---|
| श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती | 16 फर. शुक्र |
| श्रीहोलिका दहन | 24 मार्च रवि |
| श्रीभगवत्नारायण जयंती | 29 मार्च शुक्र |
| वैशाखी पर्व | 13 अप्रै. शनि |
| रामनवमी पर्व | 17 अप्रै. बुध |
| जानकी जयन्ती | 16 मई गुरु |
| गंगा दशहरा पर्व | 16 जून रवि |
| गुरु पूर्णिमा | 21 जुला. रवि |
| तुलसी जयन्ती पर्व | 11 अग. रवि |
| कृष्ण जयन्ती पर्व | 26-27 अग. सो/मं. |

## सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन/स्मरणोत्सव

| | |
|---|---|
| स्वामी विवेकानन्द जी | 12 जन. शुक्र |
| नेताजी सुभाषचन्द्र बोस | 23 जन. मंग |
| लाला लाजपतराय जयंती | 28 जन. रवि |
| स्वामी विवेकानन्द ( प्राचीनमतेन ) | 2 फर. शुक्र |
| स्वामी रामानन्दाचार्य जी | 2 फर. शुक्र |
| सिद्ध बाबा लालदयाल जी | 11 फर. रवि |
| श्रीगुरु रविदास जयंती | 24 फर. शनि |
| डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्मरणोत्सव | 28 फर. बुध |
| महर्षि दयानन्द सरस्वती | 5 मार्च मंग |
| समर्थ गुरुरामदास जयन्ती | 5 मार्च मंग |
| श्रीवैद्यनाथ जयन्ती | 8 मार्च शुक्र |
| श्रीरामकृष्ण परमहंस | 12 मार्च मंग |
| शहीदी सः भगत सिंह | 23 मार्च शनि |
| श्रीचैतन्य महाप्रभु | 25 मार्च चंद्र |
| सन्त तुकाराम जी | 27 मार्च बुध |
| श्रीझूलेलाल जयन्ती | 10 अप्रै. बुध |
| डॉ. बी.आर. अम्बेदकर | 14 अप्रै. रवि |
| श्रीमहावीर जयन्ती ( जैन ) | 21 अप्रै. रवि |
| श्रीहनुमान जयन्ती ( दक्षिण-भारत ) | 23 अप्रै. मंग |
| सती अनुसूइया जयन्ती | 28 अप्रै. रवि |
| श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती | 4 मई शनि |
| श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर | 7 मई मंग |
| श्रीशुकदेव जयन्ती | 8 मई बुध |
| छत्रपति शिवाजी ( प्राचीनमतेन ) | 9 मई गुरु |
| भगवान् परशुराम जयन्ती | 10 मई शुक्र |
| आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य | 12 मई रवि |
| श्रीसूरदास जयन्ती | 12 मई रवि |
| श्री रामानुजाचार्य जयं. | 13 मई सोम |
| श्रीगङ्गा-जयन्ती | 14 मई मंग |
| महात्मा बुद्ध | 23 मई गुरु |
| श्रीनारद-जयन्ती | 25 मई शनि |
| श्रीमहाराणा प्रताप | 9 जून रवि |
| सन्त कबीर जयन्ती | 22 जून शनि |
| श्रीध्यानू भगत | 24 जून सोम |
| ऋषि वेदव्यास जयन्ती | 21 जुला. रवि |
| लोकमान्य गंगाधर तिलक | 23 जुला. मंग |
| लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव | 1 अग. गुरु |
| गोस्वामी तुलसीदास जी | 11 अग. रवि |
| हयग्रीव जयन्ती | 18 अग. रवि |
| सन्त ज्ञानेश्वर जयन्ती | 26 अग. सोम |
| भक्त नवल ( जोधपुर ) | 26 अग. सोम |
| माँ काली जयन्ती | 26 अग. सोम |
| स्वामी शिवानन्द जी | 8 सितं. रवि |
| श्रीचन्द महाराज ( उदासीन ) | 12 सितं. गुरु |
| श्रीकात्यायनी जयन्ती | 1 अक्तू. मंग |
| महात्मा गाँधी, शास्त्री जी | 2 अक्तू. बुध |
| महाराजा अग्रसेन | 3 अक्तू. गुरु |
| श्री माधवाचार्य जयन्ती | 13 अक्तू. रवि |
| स्वामी रामतीर्थ जयन्ती | 22 अक्तू. मंग |
| श्रीधनवन्तरी जयन्ती | 30 अक्तू. बुध |
| महाराजा रणजीत सिंह | 13 नवं. बुध |
| महाकवि कालीदास जयन्ती | 13 नवं. बुध |
| जवाहर लाल नेहरू जयन्ती | 14 नवं. गुरु |
| श्रीवीर वैरागी जयन्ती | 14 नवं. गुरु |
| श्री गुरु नानकदेव जी | 15 नवं. शुक्र |
| शहीदी लाला लाजपतराय | 17 नवं. रवि |
| श्रीसत्यसाईं बाबा जयन्ती | 23 नवं. शनि |
| डॉ० राजेन्द्र प्रसाद | 3 दिसं. मंग |
| श्रीदत्तात्रेय जयन्ती | 14 दिसं. शनि |
| शहीद सः ऊधम सिंह जयं. | 26 दिसं. गुरु |

### ( सन् 2025 ई. )

| | |
|---|---|
| स्वामी विवेकानन्द जी | 12 जन. रवि |
| स्वामी रामानन्दाचार्य जी | 21 जन. मंग |
| नेताजी सुभाषचन्द्र बोस | 23 जन. गुरु |
| लाला लाजपतराय जयंती | 28 जन. मंग |
| सिद्ध बाबा लालदयाल जी | 31 जन. शुक्र |
| श्रीगुरु रविदास जी | 12 फर. बुध |
| छत्रपति शिवाजी जयन्ती | 19 फर. बुध |
| समर्थ गुरु रामदास जी | 22 फर. शनि |
| महर्षि दयानन्द सरस्वती | 23 फर. रवि |
| डॉ० राजेन्द्र प्रसाद स्मरणोत्सव | 28 फर. शुक्र |
| श्रीरामकृष्ण परमहंस | 1 मार्च शनि |
| याज्ञवलक्य जयंती | 4 मार्च मंग |
| श्रीचैतन्य महाप्रभु | 14 मार्च शुक्र |
| सन्त तुकाराम जी | 16 मार्च रवि |

## दरबार श्रीध्यानपुर ( गुरदासपुर ) के पर्व–2024 ई.

| | |
|---|---|
| बाबा श्रीलालदयाल जयन्ती | 11 फर. रवि |
| वसंतपंचमी ( पं. द्वारकादास जयं. ) | 14 फर. बुध |
| होलिका-दहन | 24 मार्च रवि |
| श्रीरामनवमी पर्व | 17 अप्रै. बुध |
| महंत श्रीनारायणदास जयंती | 29 मई बुध |
| व्यास-पूजा पर्व | 21 जुला. रवि |
| श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व | 26 अग. सोम |
| गद्दी स्वा. रामसुन्दरदास जी | 1 नवं. शुक्र |

## पंजाब हरियाणा राजस्थान दिल्ली उत्तराखण्ड व उत्तरप्रदेश के मुख्य मेले–सन 2024 ई.

# ◎ पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तराखण्ड व उत्तरप्रदेश के मुख्य मेले-सन् 2024 ई. ◎

| | |
|---|---|
| **ऊँट उत्सव** (बीकानेर, राज.) | 12-15 जन. |
| **मरोज पर्व** (जौनसार, उत्तराखण्ड) | 12 जन. |
| **मेला लोहड़ी** (पं., हरि., जम्मू आदि) | 13 जन. |
| **मेला दाऊँ** (मोहाली, पं.) | 13-14 जन. |
| **मेला माघी** (मुक्तसर, पं.) | 14-15 जन. |
| **मेला पोंगल** (दक्षिण-भारत) | 14 जन. |
| **मेला मस्तुआणा** (पंजाब) शुरु | 30 जन |
| **मेला मौनी अमावस** (हरिद्वार, प्रयागराजादि) | 9 फर. |
| **मेला वसन्त पंचमी** | 14 फर. |
| **मेला पशु** (नागौर, राजस्थान) | 15-18 फर. |
| **मेला जैसलमेर** (राजस्थान) | 22-24 फर. |
| **जयन्ती-देवी** (चण्डीगढ़) | 23-24 फर. |
| **माघी पूर्णिमा** (प्रयागराज, उ.प्र.) | 24 फर. |
| **मेला श्रीमहाशिवरात्रि** | 8 मार्च |
| **नीलकण्ठ महादेव** (गढ़वाल, उ.खण्ड) | 8 मार्च |
| **मेला फूलेरा-दूज** (मथुरा, उ.प्र.) | 12 मार्च |
| **मेला नानकसर चीमा** (पं.) शुरु | 15 मार्च |
| **मे. बाबा-मस्तनाथ** (अस्थल बोहर, रोहतक, हरि.) | 16-18 मार्च |
| **होलियां-होलाष्टक** (उ.प्र.) | 17-25 मार्च |
| **मेला श्रीखाटू श्याम जी** (सीकर, रा.) | 20-21 मार्च |
| **मेला सावातिल्ला** | 22 मार्च |
| **मेला वीरमदास** (बधौछी, पटि., पं.) | 26 मार्च |
| **होला मेला** (श्रीआनन्दपुर सा., पं.) | 26 मार्च |
| **मेला नवचण्डी** (मेरठ, उ.प्र.) प्रा. | 30 मार्च |
| **भण्डा. सं. प्रीतमदास** (जालं., पं.) | 30 मार्च |
| **मेला गुरु रामराय** (देहरादून, उ.खण्ड) | 30 मार्च |
| **मेला शीतलामाता शुरु** (सर्वत्र) | 1-2 अप्रै. |
| **वैशाखी मेला, श्रीलक्ष्मण चोंतरा** (हांसी, हरियाणा) | 4-13 अप्रै. |
| **मे. पृथूदक** (पिहोवातीर्थ, हरियाणा) | 7 अप्रै. |
| **मेला हथीरा** (थानेसर, कुरुक्षेत्र, हरि.) | 7-17 अप्रै. |
| **मेला चीमा** (नानकसर, पंजाब) | 9 अप्रै. |
| **मेला झंडेवाला** (करोलबाग, दिल्ली) | 9-17 अप्रै. |
| **मेला नवरात्रे-मनसादेवी** (हरिद्वार व पंचकूला, हरि.) | 9-17 अप्रै. |
| **मेला कालका जी** (दिल्ली) | 9-17 अप्रै. |
| **गणगौरी तृतीया** (जयपुर, राजस्थान) | 11 अप्रै. |
| **मेला वैशाखी** (पंजाब) | 13 अप्रै. |
| **मे. रामथनदास** (फाज़िल्का, पं.) | 13 अप्रै. |
| **मे. वैशाखी-गंगभेवा** (बावड़ी) ढकराना, देहरादून, उत्तराखण्ड | 13-18 अप्रै. |
| **मेला माईसरखाना** (बठिण्डा, पं.) | 14 अप्रै. |
| **मेला नरीसैंभरी** (मथुरा, उ.प्र.) | 16 अप्रै. |
| **मेला ठाणा डांडा, नागी-बागीधार** (उत्तराखण्ड) | 16 अप्रै. |
| **मेला रामनवमी** (जालंधर, पं.) | 17 अप्रै. |
| **मेला कांसा देवी** (चण्डीगढ़) | 22-23 अप्रै. |
| **देवी-मेला** (हथीहरा, कुरुक्षेत्र) | 22 अप्रै. |
| **मेला चकराता** (देहरादून, उ.खण्ड) | 3 मई |
| **मेला पिंजौर** (कालका, हरियाणा) | 8 मई |
| **मेला गंगा-सप्तमी** (हरिद्वार) | 14 मई |
| **जोड़ मेला-संत खुशीराम जी** गाँव-भरोमज़ारा, नवांशहर, पंजाब | 23-24 मई |
| **मेला भद्रकाली** (कपूरथला, पं.) | 2 जून |
| **मेला जखोली** (उत्तराखण्ड) | 2 जून |
| **यज्ञ ओमदरबार, नन्दाचौर** (होशियारपुर, पंजाब) | 5-7 जून |
| **साईं टेऊंराम पुण्यतिथि** (हरिद्वार) | 11 जून |
| **मेला शीलावन्ती जी** (भवानी, पठानकोट, पंजा.) | 15 जून |
| **मे. गङ्गा-दशहरा** (हरिद्वार) | 16 जून |
| **रथयात्रा उत्सव** (पुरी, उड़ीसा) | 7 जुला. |
| **साईं टेऊंराम जयन्ती,** सप्तसरोवर, भूपतवाला रोड, हरिद्वार, उ. खण्ड | 11 जुला. |
| **गुरु पूर्णिमा उत्सव** | 21 जुला. |
| **मेला काहनूवाल** (गुरदासपुर, पंजाब) | 21 जुला. |
| **मेला पं. जोगराज** (जंडियाला, पंजाब) | 3-4 अग. |
| **मे. नुणाई** (जौनसार बावर, उ.खण्ड) | 4 अग. |
| **मेला सिंघारा तीज** (पंजाब) | 7 अग. |
| **मेला गौरी-तीज** (जयपुर, राज.) | 7 अग. |
| **मेला भद्रराज** (जौनसार, उत्तराखण्ड) | 16 अग. |
| **मेला जयन्ती-देवी** (मुल्लापुर-गरीबदास, चण्डीगढ़) | 18-19 अग. |
| **मेला बग्गी-देहरी** (कण्डेलालोवाल, गुरदासपुर, पं.) | 19 अग. |
| **जोड़ मेला सन्त मेलाराम जी** (गाँव-भरोमज़ारा राणुआं, नवांशहर पं.) | 27-28 अग. |
| **कृष्ण जन्माष्टमी पर्व** (मथुरा, उ.प्र.) | 26 अग. |
| **गुग्गा जाहिरपीर** (नकोदर, पंजाब) | 27 अग. |
| **मे. गोगामेड़ी** (श्रीगंगानगर, राज.) | 27 अग. |
| **मेला बाबा सुथरेशाह** (दिल्ली) | 2-3 सितं. |
| **रानी सती मेला** (झुंझुनूं, राजस्थान) | 2-3 सितं. |
| **मेला श्रीगोसाईंआणा** (कुराली, पं.) | 5 सितं. |
| **मेला महासू देवता** (ढुंगरा, जागड़ा, जौनसार, उ.खण्ड) | 6 सितं. |
| **मेला रामदेव रोणेचा** (जोधपुर, राज.) | 13 सितं. |
| **मेला वामन-द्वादशी** (अम्बाला, हरि.) | 15 सितं. |
| **मे. छपार** (मलेरकोटला, पं.) | 16-19 सितं. |
| **मेला बाबा सोढल** (जालन्धर, पंजाब) | 17 सितं. |
| **मे. गोइंदवाल सा.** (तरनतारन, पं.) | 18 सितं. |
| **तपा बाबा गोपीचन्द जी-** (राहों, नवांशहर, पं.) | 25-27 सितं. |
| **देवीमेला** (हथीर, थानेसर, हरि.) | 1-11 अक्तू. |
| **मेला आशापूर्णी** (पठानकोट, पं.) | 3-12 अक्तू. |
| **मे. अगरोहाधाम** (हरियाणा) | 3-11 अक्तू. |
| **मेला नवरात्रे-मनसादेवी** (हरिद्वार व पंचकूला, हरियाणा) | 3-11 अक्तू. |
| **मे. पुष्करतीर्थ** (राजस्थान) | 9-15 नवं. |
| **मे. अचलेश्वर** (बटाला, पं.) | 10-11 नवं. |
| **मे. वीर-वैरागी** (नकोदर, पंजाब) | 14 नवं. |
| **मे. बग्गी-देहरी** (कण्डे-लालोवाल, गुरदासपुर, पं.) | 14-15 नवं. |
| **मेला रामतीर्थ** (अमृतसर, पंजाब) | 15 नवं. |
| **मे. कपालमोचन** (जगाधरी, हरि.) | 15 नवं. |
| **भण्डारा सन्त प्रीतमदास** (जालन्धर, पं.) | 30 नवं. |
| **पुरानी दीपावली** (जौनसार, जौनपुर, उ. खण्ड) | 1 दिसं. |
| **वार्षिक महायज्ञ श्रीओमदरबार** (नन्दाचौरधाम, होशियारपुर, पं.) | 2-4 दिसं. |
| **कुरुक्षेत्र गीता महोत्सव** (हरियाणा) | 9-11 दिसं. |
| **सिद्ध बाबा कैलाशनाथ जयंती** (बस्तीशेखरोड, जालन्धर, पंजाब) | 14 दिसं. |
| **मेला जोड़** (फतेहगढ़ साहिब, पं.)शुरु | 26 दिसं. |

## श्री बदरीनाथ धाम के मुख्य उत्सव (2024-25 ई.)

| | |
|---|---|
| श्रीबदरीनाथ के कपाट खुलने की तिथि-निर्धारण | 14 फर. बुध |
| श्रीबदरी यात्रा प्रारंभ | 10 मई शुक्र |
| घण्टाकर्ण उत्सव | 14 जून शुक्र |
| श्रीगङ्गा-दशहरा | 16 जून रवि |
| गुरु पूर्णिमा | 21 जुला. रवि |
| नर-नारायण जयंती | 9 अग. शुक्र |
| श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व | 26 अग. सोम |
| नन्दा-अष्टमी | 11 सितं. बुध |
| माता-मूर्त्ति उत्सव | 15 सितं. रवि |
| नारद-उत्सव | 16 सितं. सोम |
| पितृ-श्राद्ध पर्व | 17 सितं.-2 अक्तू. |
| श्रीबदरीनाथ के कपाट बन्द करने की तिथि | 12 अक्तू. शनि |
| श्रीबदरीनाथ के कपाट खुलने की तिथि निर्धारण | 2 फर. (25 ई.) |

# हिमाचल प्रदेश के मेले व उत्सव (सन् 2024-25 ई.)

| | |
|---|---|
| श्रीदेवता खुड्डी-जल, (देहूरी, आनी, कुल्लू) | 14 जन. |
| मे. श्रीब्रह्मा (न्यूल, कुल्लू) | 20 जन. |
| मे. वसन्त पंचमी (बिलासपुर) | 14 फर. |
| मे. श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी) | 8-16 मार्च |
| मेला काठगढ़ (कांगड़ा) | 8 मार्च |
| मे. रिवालसर (मण्डी) | 8 मार्च |
| मे. बैजनाथ (कांगड़ा) | 8-10 मार्च |
| मे. स्वर्गाश्रम (नूरपुर) | 9 मार्च |
| मेला बाबा बालकनाथ शुरु | 14 मार्च |
| मेला कनिहारा (धर्मशाला) शुरु | 14 मार्च |
| मे. नलवाड़ (बिलासपुर) | 17-22 मार्च |
| मे. बड़भाग सिंह (ऊना) | 17-25 मार्च |
| मे. नलवाड़ (सुन्दरनगर) | 22-29 मार्च |
| मेला सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर) | 25-28 मार्च |
| होला मेला (पांओटा साहिब) | 26 मार्च |
| मे. नलवाड़ (बरच्छवाड़, सरकाघाट) | 28 मा.-3 अप्रै. |
| मे. नलवाड़ (घुमारवीं) | 5-9 अप्रै. |
| मे. बालासुन्दरी (सिरमौर) | 9-17 अप्रै. |
| मे. नयनादेवी (बिलासपुर) | 9-17 अप्रै. |
| मे. ललवाड़ (सुन्दरनगर) | 11-16 अप्रै. |
| मेला नैनादेवी (धर्मपुर, बनवार) | 12 अप्रै. |
| मे. मारकण्डा (बिलासपुर) | 12-15 अप्रै. |
| कालेश्वर महादेव (देहरा, काँगड़ा) | 13 अप्रै. |
| मेला बिशू (सिरमौर) प्रारम्भ | 13 अप्रै. |
| मे. राजगढ़ (सिरमौर) | 13-15 अप्रै. |
| मे. रिवालसर (मण्डी) | 13 अप्रै. |
| मे. चचौहली (जगतसुख, कुल्लू) | 14-16 अप्रै. |
| मे. लाहौल (मण्डी) | 15 अप्रै. |
| मे. त्राम्बली (वारी, कुल्लू) | 16-17 अप्रै. |
| मे. श्रीदुर्गाष्टमी (कांगड़ादेवी) | 16 अप्रै. |
| मे. हुरला (कुल्लू) | 16-17 अप्रै. |
| मे. खनाणी (शिम., कुल्लू) | 19-20 अप्रै. |
| मे. रोहरू (महासू) | 19-20 अप्रै. |
| मे. पीपल-जातर (कुल्लू) | 28-30 अप्रै. |
| मेला स्वीटी | 30 अप्रै. |
| मे. घाघरस (बिलासपुर) | 14 मई |
| मेला बंजार (कुल्लू) | 14-18 मई |
| मे. माहूनाग (करसोग) | 14 मई |
| मे. ढुंगरी जातर (मनाली) | 14-15 मई |
| मे. मनीकरण (कुल्लू) | 18-23 मई |
| मे. शाढ़ी जातर (नगर) | 18-23 मई |
| मे. कमलाहिया (धर्मपुर) | 19 मई |
| मे. धारावाले सूढ़देवता (सेरीघाट, कण्डाघाट, सोलन) | 19 मई |
| पशु-मेला (हमीरपुर) शुरु | 20 मई |
| मे. लगदेवी (हमीरपुर) | 22 मई |
| मे. शीतलादेवी (सुन्दरनगर) | 22-24 मई |
| मे. मिरपरी (मण्डी) | 24-25 मई |
| मे. मुरारीदेवी (सरकाघाट) | 25-27 मई |
| मे. ग्राम पंजगाई (बिलासपुर) | 29-30 मई |
| मे. श्यामाकाली (सरकाघाट) | 31 मई |
| मे. स्थूल मढोल | 1-4 जून |
| मे. क्यालू जी (गंगथ, नूरपुर) | 3-6 जून |
| मे. नौवाही देवी (सरकाघाट) | 14 जून |
| मेला बाड़ी (सोलन) | 14 जून |
| मेला उहल (हमीरपुर) | 14 जून |
| भुन्तर मेला (कुल्लू) | 15-17 जून |
| मे. पीपलू (हमीरपुर) | 17-18 जून |
| मे. माँ शूलिनी (सोलन) | 21-23 जून |
| मे. टौणी देवी (हमीरपुर) | 23 जून |
| मेला त्रिमौणी (सिरमौर) | 7 जुला. |
| वन महोत्सव प्रारम्भ | 10 जुला. |
| मेला नागनी (नूरपुर) | 16 जुला. |
| मे. सिद्ध बाबा शिव्वो (ज्वाली) | 21 जुला. |
| मेला मिंजर (चम्बा) | 28 जुला. |
| मेला छिन्नमस्तिका(चिन्तपूर्णी) | 5-13 अग. |
| मे. नयनादेवी (बिलासपुर) | 5-13 अग. |
| मेला चामुण्डादेवी | 5-13 अग. |
| श्रीदेवता खुड्डी जल, देहूरी, कुल्लू | 19-27 अग. |
| मेला गुग्गा-नवमी (बिलासपुर) | 27 अग. |
| मे. बंद्राल (कुल्लू) | 27 अग. |
| मे. अम्बिकादेवी (सदर, मण्डी) | 1 सितं. |
| गणपति उत्सव (मण्डी) | 7-17 सितं. |
| हिमाचल गणेश-उत्सव अम्बिकानगर, अम्ब (ऊना) | 7-17 सितं. |
| यात्रा मनीमहेश (चम्बा) शुरु | 9 सितं. |
| रूद्र घड़ीकूपड़ (रोहड़ू) | 9 सितं. |
| मे. गुग्गामाड़ी (सुबाथू) | 11-13 सितं. |
| मे. वामन द्वादशी (नाहन) | 15 सितं. |
| मेला नलवाड़ (चिच्चोट) | 16-23 सितं. |
| मे. लदरौर (हमीरपुर) | 16 सितं. |
| मे. सायर (अर्की) | 16-17 सितं. |
| मेला चामुण्डादेवी (कांगड़ा) | 3-12 अक्तू. |
| मेला बगुलामुखी (वनखण्डी) | 3-12 अक्तू. |
| मेला रामलीला | 3-12 अक्तू. |
| मेला तारादेवी (शिमला) | 11-13 अक्तू. |
| मेला ज्वालामुखी | 11-12 अक्तू. |
| मेला शीतलामाता(मच्छि भवन, कांगड़ा) | 11 अक्तू. |
| मेला दशहरा (अर्की) | 12 अक्तू. |
| मेला दशहरा (कुल्लू) | 12-17 अक्तू. |
| मेला काली-बाड़ी (शिमला) | 31 अक्तू.-1 नवं. |
| मेला रेणुका (सिरमौर) | 12-13 नवं. |
| मे. बाबा रुद्रीनन्दनारी (ऊना) | 11-15 नवं. |
| मे. जोगी पांगा (ऊना) | 15 नवं. |
| बुढ़ी दीपावली (शिलाई, सिरमौर) | 1-4 दिसं. |

### (सन् 2025 ई०)

| | |
|---|---|
| मे. ब्रह्मा (न्यूल, कुल्लू) | 20 जन. |
| मे. वसन्त पंचमी (बिलासपुर) | 2 फर. |
| श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी) | 26 फर.-6 मार्च |
| मेला काठगढ़ (कांगड़ा) | 26 फर. |
| मे. रिवालसर (मण्डी) | 26 फर. |
| मे. बैजनाथ (कांगड़ा) | 26-27 फर. |
| मे. स्वर्गाश्रम (नूरपुर) | 26-27 फर. |
| मे. बड़भाग सिंह (ऊना) | 7-14 मार्च |
| मेला बाबा बालकनाथ शुरु | 14 मार्च |
| मे. कनिहारा (धर्मशाला) शुरु | 14 मार्च |
| मेला सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर) | 14-18 मार्च |
| मेला नलवाड़ (बिलासपुर) | 17-22 मार्च |
| मेला नलवाड़ (सुन्दरनगर) | 22-29 मार्च |

# जम्मू-कश्मीर के मेले

| | |
|---|---|
| लोहड़ी पर्व | 13 जन. |
| मार्तण्ड तीर्थयात्रा | 16 फर. |
| मे. शिवरात्रि (पंचवटी, दवलैहड़, जम्मू) | 8 मार्च |
| देविका स्नान (ऊधमपुर) | 8 मार्च |
| मेला पुरमण्डल (जम्मू) | 6-7 अप्रै. |
| मेला गुप्तगंगा (कफी, अखनूर) | 7 अप्रै. |
| नवरात्र-पर्व (वैष्णोदेवी) | 9-17 अप्रै. |
| मे. वैशाखी-हरिमन्दिर -चक रामचन्द, साम्बा | 13 अप्रै. |
| सत्गुरु बाबा कांशीगिरी जी महाराज (सुन्दरबनी) | 13-14 अप्रै. |
| देविका-स्नान (ऊधमपुर) | 13 अप्रै. |
| मेला मानसर (जम्मू) | 12-13 जून |
| मे. क्षीर (खीर) भवानी (तलमुल) | 14 जून |
| सपोरयात्रा (धारलदा, ऊधमपुर) | 16 जून |
| मे. शुद्ध महादेव (ऊधमपुर) | 22 जून |
| वानसुल देवता (चब्बा, रामबन) | 20-27 जून |
| मेला चमलियाल | 27 जून |
| सरथलदेवी यात्रा | 14 जुला. |
| मेला शरीक-भवानी | 15 जुला. |
| मेला हरिप्रयाग (बनी) | 17 जुला. |
| मे. ज्वालामुखी (काश्मीर) | 20 जुला. |
| मेला रुद्रगंगा (चंद्रेणीदेसा, डोडा) | 21 जुला. |
| श्रावण शिवरात्रि (गाँव चलाई, शिवपुरी, राजगढ़, रामबन) | 2 अग. |
| मेला नागपंचमी (कास्तीगढ़, डोडा) | 9 अग. |
| शोपियान यात्रा शुरु | 17 अग. |
| यात्रा श्रीअमरनाथ गुफा समाप्त | 19 अग. |
| मे. स्वामी शंकराचार्य (श्रीनगर) | 19 अग. |
| श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी (रामबन) | 26 अग. |
| कैलाश यात्रा प्रारम्भ | 31 अग.-1 सितं. |
| मेला पात (भद्रवाह) | 8-10 सितं. |
| मेला आशापति (मार्तण्ड) | 1-2 अक्तू. |
| मेला झिड़ी बाबा | 15 नवं. |
| मेला पुरमण्डल (जम्मू) | 30 नवं. |

## जैन व्रत-पर्व व उत्सव

| | |
|---|---|
| आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा | 1 जन. चंद्र |
| श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती | 6 जन. शनि |
| मेरू त्रयोदशी | 8 फर. गुरु |
| मर्यादा महोत्सव | 16 फर. शुक्र |
| जैन महोत्सव ( कांगड़ा ) | 5-7 मार्च |
| ऋषभदेव जयन्ती | 1 अप्रै. चंद्र |
| वरसी तप प्रारम्भ | 2 अप्रै. मंग |
| ओली तप प्रारम्भ | 15 अप्रै. चंद्र |
| आचार्यभिक्षु अभिनिष्क्रमण | 17 अप्रै. बुध |
| श्रीमहावीर जयन्ती | 21 अप्रै. रवि |
| ओली तप समाप्त | 23 अप्रै. मंग |
| वरसी तप समाप्त | 11 मई शनि |
| केवलज्ञान दिवस | 18 मई शनि |
| मे. चक्रेश्वरी देवी ( सरहिन्द ) | 5-7 जून |
| चातुर्मास्य नियम शुरु | 21 जुला. रवि |
| तेरापन्थ स्थापना दिवस | 21 जुला. रवि |
| जैन महोत्सव | 2-4 अग. |
| पर्युषण पर्व प्रारम्भ | 1 सितं. रवि |
| सम्वत्सरी महापर्व ( पंचमीपक्ष ) | 8 सितं. रवि |
| श्रीकालू निर्वाण दिवस | 9 सितं. चंद्र |
| आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण | 12 सितं. गुरु |
| आचार्य भिक्षुनिर्वाण दिवस | 16 सितं. चंद्र |
| श्रीमहावीर निर्वाण दिवस | 1 नवं. शुक्र |
| श्रीवीर संवत् 2551 शुरु | 2 नवं. शनि |
| आचार्य श्रीतुलसी जन्म | 3 नवं. रवि |
| ज्ञान पंचमी | 6 नवं. बुध |
| चातुर्मास्य व्रत समाप्त | 15 नवं. शुक्र |
| श्रीमहावीर दीक्षा दिवस | 25 नवं. चन्द्र |
| मौनी एकादशी | 11 दिसं. बुध |
| आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा | 20 दिसं. शुक्र |
| श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती | 25 दिसं. बुध |
| —(सन् 2025 ई.)— | |
| मेरू त्रयोदशी | 27 जन. चन्द्र |
| मर्यादा महोत्सव | 4 फर. मंग |
| जैन महोत्सव ( कांगड़ा ) | 12-14 मार्च |
| ऋषभदेव जयन्ती | 21 मार्च शुक्र |
| वरसी तप प्रारम्भ | 22 मार्च शनि |

## मुस्लिम त्यौहार

| | |
|---|---|
| उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर) | 14-19 जन. |
| जन्म श्रीहजरत अली* | 25 जन. गुरु |
| शबे-मिराज* | 8 फर. गुरु |
| शब-ए-बरात | 26 फर. चन्द्र |
| रमज़ान ( रोज़े शुरु ) | 12 मार्च मंग |
| शहादत-ए-हजरत अली | 1 अप्रै. चंद्र |
| जमातुल-विदा | 5 अप्रै. शुक्र |
| शबे-कदर | 7 अप्रै. रवि |
| ईद-उल-फितर (मीठी ईद) | 11 अप्रै. गुरु |
| ईदुलजुहा ( बकरीद ) | 17 जून सोम |
| मुहर्रम ( हिजरी 1446 शुरु ) | 8 जुला. सोम |
| मुहर्रम ( ताजिया ) | 17 जुला. बुध |
| चेहलुम | 25 अग. रवि |
| शहादत-ए-इमामहसन* | 3 सितं. मंग |
| आखिरी-चहार शम्बा | 4 सितं. बुध |
| ईद-ए-मिलाद | 16 सितं. सोम |
| ईद-ए-मौलाद | 21 सितं. शनि |
| ग्यारहवीं शरीफ़ | 15 अक्तू. मंग |
| —(सन् 2025 ई.)— | |
| उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर) | 2-7 जन. |
| जन्म श्रीहजरत अली | 14 जन. मंग |
| शबे-मिराज | 28 जन. मंग |
| शब-ए-बरात | 14 फर. शुक्र |
| रमज़ान ( रोज़े शुरु ) | 2 मार्च रवि |
| शहादत-ए-हज़रतअली | 22 मार्च शनि |
| शबे-कदर | 28 मार्च शुक्र |
| जमातुलविदा | 28 मार्च शुक्र |
| ईद-उल-फितर(मीठी ईद) | 31 मार्च सोम |

*नोट—स्थानभेद एवं अक्षांशभेद के कारण चन्द्रदर्शन (नया चाँद दिखाई देने) की तारीख में अन्तर आ जाने से मुस्लिम त्यौहारों की तारीखों में एक दिन का अन्तर सम्भव है।

## क्रिश्चियन त्यौहार

| | |
|---|---|
| नववर्ष प्रारम्भ | 1 जन. चंद्र |
| पाम सण्डे | 24 मार्च र. |
| गुड फ्राइडे | 29 मार्च शु. |
| ईस्टर सण्डे | 31 मार्च र. |
| रोगेशन सण्डे | 5 मई र. |
| क्रिसमिस डे | 25 दिसं. बु. |
| नववर्ष प्रारम्भ (2025 ई.) | 1 जन. बु. |

## भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों के अवकाश (सन् 2024-25 ई.)

(इस अवकाश सूची को भारत सरकार की गज़ट-सूची से अवश्य मिला लें।)

| | |
|---|---|
| मकर संक्रान्ति | 14 जन. र. |
| श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयंती | 17 जन. बु. |
| स्टेटहुड डे (हिमाचल प्रदेश) | 25 जन. गु. |
| जन्म श्रीहजरत अली | 25 जन. गु. |
| गणतन्त्र दिवस (76वाँ) | 26 जन. शु. |
| वसन्त-पञ्चमी | 14 फर. बु. |
| श्रीगुरु रविदास जयन्ती | 24 फर. श. |
| श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च शु. |
| होली पर्व | 25 मार्च चं. |
| होला (पंजाव) | 26 मार्च मं. |
| गुड फ्राइडे | 29 मार्च शु. |
| वैशाखी (पंजाव) | 13 अप्रै. श. |
| जमातुलविदा (ज.का.) | 5 अप्रै. शु. |
| डॉ. अम्बेदकर जयन्ती | 14 अप्रै. र. |
| हिमाचल प्रदेश डे | 15 अप्रै. चं. |
| श्रीरामनवमी | 17 अप्रै. बु. |
| श्रीमहावीर जयन्ती (जैन) | 21 अप्रै. र. |
| श्रम-दिवस | 1 मई बु. |

| | |
|---|---|
| भगवान् परशुराम जयं. | 10 मई शु. |
| श्रीबुद्ध-जयन्ती | 23 मई गु. |
| महाराणा प्रताप जयन्ती | 9 जून र. |
| ईदुलजुहा (बकरीद) | 17 जून चं. |
| सन्त कबीर जयन्ती | 22 जून श. |
| महा. रणजीत सिंह पुण्यतिथि | 29 जून श. |
| रथयात्रा (पुरी, उड़ीसा) | 7 जुला. र. |
| मुहर्रम (ताजिया) | 17 जुला. बु. |
| शही. स. ऊधमसिंह (पं.) | 31 जुला. बु. |
| स्वतन्त्रता दिवस (78वाँ) | 15 अग. गु. |
| रक्षा बन्धन | 19 अग. चं. |
| श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी | 26 अग. चं. |
| शिक्षक-दिवस | 5 सितं. गु. |
| सिद्धि विनायक व्रत (महाराष्ट्र) | 7 सितं. श. |
| बाबा श्रीचन्द जयन्ती (पं.) | 12 सितं. गु. |
| ईद-ए-मिलाद (ज.का.) | 16 सितं. चं. |
| शहीद भगत सिंह जयं. (पं.) | 28 सितं. श. |
| महात्मा गाँधी जयन्ती | 2 अक्तू. बु. |
| महाराजा अग्रसेन जयन्ती | 3 अक्तू. गु. |

| | |
|---|---|
| विजयादशमी | 12 अक्तू. श. |
| महर्षि श्रीवाल्मीकि जयं. | 17 अक्तू. गु. |
| दीपावली | 1 नवं. शु. |
| श्रीविश्वकर्मा दिवस (पं.) | 2 नवं. श. |
| भाई-दूज | 3 नवं. र. |
| श्रीगुरु नानकदेव जयन्ती | 15 नवं. शु. |
| क्रिसमिस डे | 25 दिसं. बु. |
| ( सन् 2025 ई. ) | |
| श्रीगुरुगोबिन्द सिंह जयं. | 6 जन. चं. |
| मकर संक्रान्ति | 14 जन. मं. |
| जन्म श्रीहजरत अली | 14 जन. मं. |
| स्टेटहुड डे (हि.प्र.) | 25 जन. श. |
| गणतन्त्र दिवस (76वाँ) | 26 जन. र. |
| वसन्त-पंचमी | 2 फर. र. |
| श्रीगुरु रविदास जयन्ती | 12 फर. बु. |
| श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 26 फर. बु. |
| होली पर्व | 14 मार्च शु. |
| होला (पंजाब) | 15 मार्च श. |
| जमातुलविदा | 28 मार्च शु. |

## सिक्ख गुरुपर्व (सन् 2024-25 ई.)

| नाम गुरु साहिबान | ( प्राचीन परम्परा अनुसार ) | | |
|---|---|---|---|
| | जन्मदिन | गुरयाई | ज्योतिजोत |
| 1. श्रीगुरु नानक देव जी | 15 नवं. | जन्म से | 27 सितं. |
| 2. श्रीगुरु अंगददेव जी | 9 मई | 22 सितं. | 12 अप्रै. |
| 3. श्रीगुरु अमरदास जी | 22 मई | 9 अप्रै. | 18 सितं. |
| 4. श्रीगुरु रामदास जी | 19 अक्तू. | 16 सितं. | 6 सितं. |
| 5. श्रीगुरु अर्जुनदेव जी | 30 अप्रै. | 5 सितं. | 10 जून |
| 6. श्रीगुरु हरगोबिन्द जी | 22 जून | 31 मई | 13 अप्रै. |
| 7. श्रीगुरु हरिराय जी | 22 फर., 24 ई.<br>10 फर. 25 ई. | 7 अप्रै. 24 ई.<br>27 मार्च, 25 ई. | 25 अक्तू. |
| 8. श्रीगुरु हरकिशन जी | 29 जुला. | 25 अक्तू. | 22 अप्रै. |
| 9. श्रीगुरु तेग़ बहादुर जी | 29 अप्रै. | 21 अप्रै. | 6 दिसं. |
| 10. श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी | 17 जन., 24 ई.<br>6 जन.. 25 ई. | 4 दिसं. | 6 नवं. |

I. श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश = 4 सितं. 2024 ई.

II. गुरयाई—श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी = 3 नवं., 2024 ई.

III. खालसा पंथ साजना दिवस = 13 अप्रैल, 2024 ई.

## श्रीनिजात्म प्रेमधाम आश्रम

भूपतवाला (हरिद्वार)-2024 ई.

| | |
|---|---|
| स्वा. स्वरूपानन्द जयन्ती | 14 फर. बु. |
| निर्वाण स्वा. निजात्मानन्द जी | 28 मार्च गु. |
| श्रीअद्वैत-जयन्ती | 17 अप्रै. बु. |
| निर्वाण स्वा. स्वरूपानन्द जी | 26 अप्रै. शु. |
| स्वा. निजात्मानन्द जयन्ती | 9 मई गु. |
| निर्वाण स्व. अद्वैतानन्द जी | 18 जुला. गु. |
| गुरु प्रेमानन्द जी जयन्ती | 21 जुला. र. |
| निर्वाण गुरु प्रेमानन्द जी | 8 अग. गु. |

**शास्त्रवचन**—जो स्त्री अपने पति की आज्ञा लिए बिना ही व्रत-उपवास करती है, वह पति की आयु हरती है, जीते-जी दुःख पाती है और मरने पर नरक में जाती है। —स्कन्दपुराण

## वि. संवत् २०८१ में विभिन्न सम्वतों का प्रारम्भ

**वर्ष का राजा–'मंगल'** **वर्ष का मन्त्री-'शनि'**

- वि. संवत् (कालयुक्त) २०८१ का शुभारम्भ = 9 अप्रैल, मंगलवार, 2024 ई.
- कल्पादि से गत वर्ष = 1,97,29,49,125 वर्ष
- सृष्टि से आरम्भ संवत् = 1,95,58,85,125 वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = 17,28,000 वर्ष
- ☛ त्रेतायुग की कुल समय अवधि = 12,96,000 वर्ष
- ☛ द्वापर युग की कुल समय अवधि = 8,64,000 वर्ष
- ☛ कलियुग की कुल समय अवधि = 4,32,000 वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष (Balance) = 4,26,875 वर्ष
- २०८१ में कलि वर्ष = 5125वां वर्ष (10 अगस्त, शनिवार, 2024 ई.)
- श्रीकृष्ण जन्म संवत् = 5260 प्रा. (26 अग., सोमवार, 2024 ई.)
- सप्तर्षि संवत् 5100 प्रारम्भ = 9 अप्रैल, मंगलवार, 2024 ई.
- महात्मा बुद्ध सम्वत् 2648 प्रा. = 23 मई, बृहस्पतिवार, 2024 ई.
- महावीर निर्वाण संवत् 2551 प्रा. = 2 नवं. शनिवार, 2024 ई.
- सन् ईस्वी (क्रिश्चियन) 2025 प्रारम्भ = 1 जनवरी, बुधवार, 2025 ई.
- (i) शाका संवत् 1946 प्रारम्भ = 21 मार्च, गुरुवार, 2024 ई.
  (ii) शाका संवत् 1947 प्रारम्भ = 22 मार्च, शनिवार, 2025 ई.
- हिजरी सन् 1446 (मुस्लिम) प्रा. = 8 जुलाई, सोमवार, 2024 ई.
- बंगाली सन् 1431 प्रारम्भ = 13 अप्रैल, शनिवार, 2024 ई.
- नानकशाही संवत् 557 प्रारम्भ = 14 मार्च, शुक्रवार, 2025 ई.
- खालसा संवत् 326 प्रारम्भ = 13 अप्रैल, शनिवार, 2024 ई.
- जय हिन्द संवत् 78वाँ प्रारम्भ = 15 अगस्त, बृहस्पतिवार, 2024 ई.
- 'पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष 149वाँ = 9 अप्रैल, मंगलवार, 2024 ई.

## सन् 2024–25 ई. में संक्रान्ति, पूर्णिमा, अमावसादि—एक दृष्टि में

| (मास) 2024–25↓ | संक्रान्ति | एकादशी व्रत | प्रदोष व्रत | सत्य–नारायण व्रत | पूर्णिमा (उदय व्या.) | श्रीगणेश चतुर्थी | अमावस (स्नानदानार्थ) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जनवरी | 14 (माघ) | 7, 21 | 9, 23 | 25 | 25 | 29 | 11 |
| फरवरी | 13 (फाल्गु.) | 6, 20 | 7, 21 | 23 | 24 | 28 | 9 |
| मार्च | 14 (चैत्र) | 7(वै.)20 | 8, 22 | 24 | 25 | 28 | 10 |
| अप्रैल | 13 (वैशा.) | 5, 19 | 6, 21 | 23 | 23 | 27 | 8 |
| मई | 14 (ज्येष्ठ) | 4, 19 | 5, 20 | 23 | 23 | 26 | 8 |
| जून | 14 (आषा.) | 3(वै.),18 | 4, 19 | 21 | 22 | 25 | 6 |
| जुलाई | 16 (श्राव.) | 2, 17, 31 | 3, 19 | 20 | 21 | 24 | 5 |
| अगस्त | 16 (भाद्र.) | 16, 29 | 1, 17, 31 | 19 | 19 | 22 | 4 |
| सितम्बर | 16 (आश्वि.) | 14, 28 | 15, 30 | 17 | 18 | 21 | 2-3 |
| अक्तूबर | 17 (कार्ति.) | 14(वै.),28 | 15, 29 | 17 | 17 | 20 | 2 |
| नवम्बर | 16 (मार्ग.) | 12, 26 | 13, 28 | 15 | 15 | 18 | 1 |
| दिसम्बर | 15 (पौष) | 11, 26 | 13, 28 | 14 | 15 | 18 | 1, 30 |
| जनवरी( 25 ) | 14 (माघ) | 10, 25 | 11, 27 | 13 | 13 | 17 | 29 |
| फरवरी( 25 ) | 12 (फाल्गु.) | 8, 24 | 10, 25 | 12 | 12 | 16 | 27 |
| मार्च ( 25 ) | 14 (चैत्र) | 10,26(वै.) | 11, 27 | 13 | 14 | 17 | 29 |

## आगामी वि. संवत् २०८२ के सम्भावित व्रत-पर्व

(सन् 2025–26 ई.)

| | |
|---|---|
| चैत्र नवरात्र शुरु | 30 मार्च र. |
| श्रीदुर्गाष्टमी | 5 अप्रै. श. |
| श्रीरामनवमी | 6 अप्रै. र. |
| श्रीमहावीर जयं. (जैन) | 10 अप्रै. गु. |
| वैशाख संक्रान्ति | 13 अप्रै. र. |
| अक्षय–तृतीया | 30 अप्रै. बु. |
| श्रीबुद्ध–जयन्ती | 12 मई चं. |
| श्रीगङ्गा–दशहरा पर्व | 5 जून गु. |
| गुरु–पूर्णिमा | 10 जुला. गु. |
| दुर्गाष्टमी (मेला चिंतपूर्णी) | 1 अग. शु. |
| रक्षा–बन्धन | 9 अग. श. |
| श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रत (स्मा.) | 15 अग. शु. |
| सिद्धि विनायक व्रत | 27 अग. बु. |
| श्राद्ध प्रारम्भ | 8 सितं. चं. |
| श्राद्ध समाप्त | 21 सितं. र. |
| शरद् नवरात्र प्रारम्भ | 22 सितं. चं. |
| श्रीदुर्गाष्टमी | 30 सितं. मं. |
| विजयादशमी | 2 अक्तू. गु. |
| शरद् पूर्णिमा व्रत | 6 अक्तू. चं. |
| करवा–चौथ व्रत | 10 अक्तू. शु. |
| दीपावली | 21 अक्तू. मं. |
| भाई–दूज | 23 अक्तू. गु. |
| श्रीगुरु नानक जयं. | 5 नवं. बु. |
| श्रीगीता–जयन्ती | 1 दिसं. चं. |

(सन् 2026 ई.)

| | |
|---|---|
| मकर संक्रान्ति | 14 जन. बु. |
| माघ(मौनी)अमावस | 18 जन. र. |
| वसन्त पंचमी | 23 जन. शु. |
| श्रीगुरु रविदास जयं. | 1 फर. र. |
| श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 15 फर. र. |
| *होलिका दहन* | *2 मार्च चं.* |

## 'लघु दिवाकर पंचाँग'—वि. संवत् २०८१

गतवर्षों की भान्ति इस वर्ष भी लघु दिवाकर पंचांग प्रकाशित हो चुका है, जिसमें **'पंचांगदिवाकर'** की आवश्यक बहुमूल्य सामग्री जैसे–जैसे 24 पक्ष, घण्टे मिण्टों में तिथ्यादि पंचांग, विवाह–मुण्डनादि मुहूर्त्त, व्रत–पर्व, ग्रहण, मिलान सारिणी आदि सम्मिलित रहती है। आज ही स्थानीय बुकसेलर से अपनी प्रति प्राप्त करें अथवा हमारे कार्यालय से वी.पी.पी. द्वारा मंगवाएं– **मूल्य–50 रु.**

—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर–144008 (पंजाब)

# गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) संवत् २०८१ वि.

## (1 जनवरी, सन् 2024 ई. से 31 मार्च, 2025 ई. तक)

**रेवती, अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एवं मूल**—ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्रकाल में विद्वान् एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

**नोट—हमारे कार्यालय से छपी 'सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग'** पुस्तक पूजनादि कार्यों के लिए मंगवा सकते हैं। मूल्य 100/- रु.

**पता—जनरल बुक डिपो, चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पं.)**

| प्रारम्भ काल | | | | समाप्ति काल | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता. मास | नक्षत्र | घं. | मिं. | ता. मास | नक्षत्र | घं. | मिं. |
| 30 दिसं.(23) | आश्लेषा | 3 | 10 | 1 जन. | मघा | 8 | 36 |
| 8 जन. | ज्येष्ठा | 22 | 03 | 10 जन. | मूल | 19 | 40 |
| 17 जन. | रेवती | 4 | 38 | 19 जन. | अश्विनी | 2 | 58 |
| 26 जन. | आश्लेषा | 10 | 28 | 28 जन. | मघा | 15 | 53 |
| 5 फर. | ज्येष्ठा | 7 | 54 | 7 फर. | मूल | 6 | 27 |
| 13 फर. | रेवती | 12 | 36 | 15 फर. | अश्विनी | 9 | 26 |
| 22 फर. | आश्लेषा | 16 | 43 | 24 फर. | मघा | 22 | 21 |
| 3 मार्च | ज्येष्ठा | 15 | 55 | 5 मार्च | मूल | 16 | 00 |
| 11 मार्च | रेवती | 23 | 03 | 13 मार्च | अश्विनी | 18 | 25 |
| 20 मार्च | आश्लेषा | 22 | 38 | 23 मार्च | मघा | 4 | 28 |
| 30 मार्च | ज्येष्ठा | 22 | 04 | 1 अप्रैल | मूल | 23 | 12 |
| 8 अप्रै. | रेवती | 10 | 13 | 10 अप्रैल | अश्विनी | 5 | 07 |
| 17 अप्रै. | आश्लेषा | 5 | 16 | 19 अप्रैल | मघा | 10 | 57 |
| 27 अप्रै. | ज्येष्ठा | 3 | 40 | 29 अप्रैल | मूल | 4 | 49 |
| 5 मई | रेवती | 19 | 57 | 7 मई | अश्विनी | 15 | 32 |
| 14 मई | आश्लेषा | 13 | 05 | 16 मई | मघा | 18 | 14 |
| 24 मई | ज्येष्ठा | 10 | 10 | 26 मई | मूल | 10 | 36 |
| 2 जून | रेवती | 3 | 16 | 3 जून | अश्विनी | 24 | 05 |
| 10 जून | आश्लेषा | 21 | 40 | 12 जून | मघा | 26 | 12 |
| 20 जून | ज्येष्ठा | 18 | 10 | 22 जून | मूल | 17 | 54 |
| 29 जून | रेवती | 8 | 49 | 1 जुला. | अश्विनी | 6 | 26 |
| 8 जुला | आश्लेषा | 6 | 03 | 10 जुला. | मघा | 10 | 15 |
| 18 जुला | ज्येष्ठा | 3 | 13 | 20 जुला | मूल | 2 | 55 |
| 26 जुला | रेवती | 14 | 30 | 28 जुला | अश्विनी | 11 | 48 |
| 4 अग. | आश्लेषा | 13 | 26 | 6 अग. | मघा | 17 | 44 |
| 14 अग. | ज्येष्ठा | 12 | 13 | 16 अग. | मूल | 12 | 44 |
| 22 अग. | रेवती | 22 | 06 | 24 अग. | अश्विनी | 18 | 06 |

| प्रारम्भ काल | | | | समाप्ति काल | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता. मास | नक्षत्र | घं. | मिं. | ता. मास | नक्षत्र | घं. | मिं. |
| 31 अग. | आश्लेषा | 19 | 40 | 2 सितं. | मघा | 24 | 20 |
| 10 सितं. | ज्येष्ठा | 20 | 04 | 12 सितं. | मूल | 21 | 53 |
| 19 सितं. | रेवती | 8 | 04 | 21 सितं. | अश्विनी | 2 | 43 |
| 28 सितं. | आश्लेषा | 1 | 21 | 30 सितं. | मघा | 6 | 19 |
| 8 अक्तू. | ज्येष्ठा | 2 | 25 | 10 अक्तू. | मूल | 5 | 15 |
| 16 अक्तू. | रेवती | 19 | 18 | 18 अक्तू. | अश्विनी | 13 | 26 |
| 25 अक्तू. | आश्लेषा | 7 | 40 | 27 अक्तू. | मघा | 12 | 24 |
| 4 नवं. | ज्येष्ठा | 8 | 04 | 6 नवं. | मूल | 11 | 00 |
| 13 नवं. | रेवती | 5 | 40 | 14 नवं. | अश्विनी | 24 | 33 |
| 21 नवं. | आश्लेषा | 15 | 36 | 23 नवं. | मघा | 19 | 27 |
| 1 दिसं. | ज्येष्ठा | 14 | 24 | 3 दिसं. | मूल | 16 | 42 |
| 10 दिसं. | रेवती | 13 | 30 | 12 दिसं. | अश्विनी | 9 | 53 |
| 18 दिसं. | आश्लेषा | 24 | 59 | 21 दिसं. | मघा | 3 | 47 |
| 28 दिसं. | ज्येष्ठा | 22 | 13 | 30 दिसं. | मूल | 23 | 58 |
| (सन् 2025 ई.) | | | | | | | |
| 6 जन. | रेवती | 19 | 07 | 8 जन. | अश्विनी | 16 | 30 |
| 15 जन. | आश्लेषा | 10 | 28 | 17 जन. | मघा | 12 | 45 |
| 25 जन. | ज्येष्ठा | 7 | 08 | 27 जन. | मूल | 9 | 02 |
| 2 फर. | रेवती | 24 | 53 | 4 फर. | अश्विनी | 21 | 50 |
| 11 फर. | आश्लेषा | 18 | 34 | 13 फर. | मघा | 21 | 07 |
| 21 फर. | ज्येष्ठा | 15 | 54 | 23 फर. | मूल | 18 | 43 |
| 2 मार्च | रेवती | 9 | 00 | 4 मार्च | अश्विनी | 4 | 30 |
| 10 मार्च | आश्लेषा | 24 | 52 | 13 मार्च | मघा | 4 | 06 |
| 20 मार्च | ज्येष्ठा | 23 | 32 | 23 मार्च | मूल | 3 | 24 |
| 29 मार्च | रेवती | 19 | 27 | 31 मार्च | अश्विनी | 13 | 45 |

## पंचक—आरम्भ एवं समाप्तिकाल

## (सन् 2024-25 ई.)

**पंचक नक्षत्र** (धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण से रेवती नक्षत्र तक) कालीन दक्षिण दिशा की ओर यात्रा करना, मकान, दुकानादि की छत डालना, चारपाई-पलंगादि बुनना, शव का दाह (मुर्दा जलाना), बाँस की चटाई, दीवार प्रारम्भ करना आदि स्तम्भारोपण, ताँबा, पीतल, तृण-काष्ठादि का संचय करना आदि कृत्यों का निषेध माना जाता है। समुचित उपाय एवं पंचक-शान्ति करवाकर ही उक्त कार्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होगा। ध्यान रहे, पंचक नक्षत्रों का विचार मात्र उपरोक्त विशेष कृत्यों के लिए ही किया जाता है। विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू-प्रवेश, उपनयन, विपणि आदि मुहूर्त्तों में तो पंचक नक्षत्रों का प्रयोग शुभ माना गया है।

| प्रारम्भ काल | | | समाप्ति काल | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ता. मास | घं. | मिं. | ता. मास | घं. | मिं. |
| 13 जन. | 23 | 35 | 18 जन. | 3 | 34 |
| 10 फर. | 10 | 02 | 14 फर. | 10 | 43 |
| 8 मार्च | 21 | 20 | 12 मार्च | 20 | 30 |
| 5 अप्रै. | 7 | 13 | 9 अप्रै. | 7 | 32 |
| 2 मई | 14 | 33 | 6 मई | 17 | 43 |
| 29 मई | 20 | 06 | 2 जून | 25 | 40 |
| 25 जून | 25 | 49 | 30 जून | 7 | 34 |
| 23 जुला | 9 | 21 | 27 जुला | 13 | 00 |
| 19 अग. | 19 | 00 | 23 अग. | 19 | 54 |
| 16 सितं. | 5 | 45 | 20 सितं. | 5 | 15 |
| 13 अक्तू | 15 | 44 | 17 अक्तू | 16 | 20 |
| 9 नवं. | 23 | 28 | 14 नवं. | 3 | 11 |
| 7 दिसं. | 5 | 07 | 11 दिसं. | 11 | 48 |
| (सन् 2025 ई.) | | | | | |
| 3 जन. | 10 | 48 | 7 जन. | 17 | 50 |
| 30 जन. | 18 | 35 | 3 फर. | 23 | 17 |
| 27 फर. | 4 | 37 | 3 मार्च | 6 | 39 |
| 26 मार्च | 15 | 15 | 30 मार्च | 16 | 35 |

# श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत का चंद्रोदय समय एवं कलंक-चतुर्थी का चन्द्रास्त काल

## भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2081) (भा.स्टैं.टा.)

| | श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल | | | | | | | | | | | | श्रीकृष्ण जन्माष्टमी | कलंकचौथ चंद्रदर्शन निषेध | सिद्धि विनायक व्रत | श्री महालक्ष्मी व्रत |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नगर | 27अप्रै. 2024 ई. घं. मिं. | 26 मई 2024 ई. घं. मिं. | 25 जून 2024 ई. घं. मिं. | 24जुला. 2024 ई. घं. मिं. | 22अग. 2024 ई. घं. मिं. | 21सितं. 2024 ई. घं. मिं. | 20अक्तू 2024 ई. करवाचौथ | 18 नवं. 2024 ई. घं. मिं. | 18दिसं. 2024 ई. घं. मिं. | 17 जन. 2025 ई. संकटचौथ | 16 फर. 2025 ई. घं. मिं. | 17 मार्च 2025 ई. घं. मिं. | 26 अग. घं. मिं. | 6 सितं. चन्द्रास्त | 7 सितं. चन्द्रास्त | 24 सितं. चन्द्रोदय |
| अमृतसर | 22:42 | 22:31 | 22:43 | 21:50 | 20:51 | 20:33 | 19:55 | 19:34 | 20:30 | 21:16 | 21:50 | 21:32 | 23:22 | 20:22 | 20:49 | 23:03 |
| अजमेर | 22:27 | 22:17 | 22:35 | 21:48 | 20:54 | 20:45 | 20:11 | 19:51 | 20:43 | 21:21 | 21:48 | 21:25 | 23:37 | 20:28 | 20:58 | 23:20 |
| अम्बाला | 22:30 | 22:20 | 22:33 | 21:42 | 20:44 | 20:28 | 19:51 | 19:31 | 20:25 | 21:09 | 21:42 | 21:22 | 23:18 | 20:16 | 20:43 | 22:59 |
| अहमदाबाद(गु.) | 22:26 | 22:16 | 22:37 | 21:53 | 21:04 | 20:59 | 20:28 | 20:09 | 20:58 | 21:32 | 21:54 | 21:28 | 23:54 | 20:39 | 21:11 | 23:38 |
| अलवर (राज.) | 22:22 | 22:12 | 22:29 | 21:40 | 20:46 | 20:34 | 20:00 | 19:40 | 20:32 | 21:12 | 21:40 | 21:19 | 23:26 | 20:19 | 20:48 | 23:08 |
| आगरा | 22:15 | 22:05 | 22:22 | 21:34 | 20:40 | 20:29 | 19:55 | 19:35 | 20:27 | 21:06 | 21:34 | 21:12 | 23:21 | 20:14 | 20:43 | 23:04 |
| इन्दौर (म.प्र.) | 22:12 | 22:02 | 22:24 | 21:40 | 20:51 | 20:47 | 20:16 | 19:57 | 20:46 | 21:19 | 21:40 | 21:15 | 23:42 | 20:27 | 20:58 | 23:26 |
| ऊना (हि.प्र.) | 22:35 | 22:25 | 22:37 | 21:44 | 20:46 | 20:28 | 19:50 | 19:29 | 20:25 | 21:10 | 21:44 | 21:26 | 23:17 | 20:17 | 20:44 | 22:58 |
| उदयपुर (राज.) | 22:26 | 22:16 | 22:36 | 21:50 | 20:59 | 20:52 | 20:20 | 20:01 | 20:51 | 21:26 | 21:51 | 21:26 | 23:46 | 20:34 | 21:04 | 23:29 |
| ऊधमपुर (का.) | 22:45 | 22:35 | 22:44 | 21:50 | 20:50 | 20:29 | 19:50 | 19:29 | 20:26 | 21:14 | 21:50 | 21:33 | 23:17 | 20:20 | 20:46 | 22:58 |
| उज्जैन | 22:13 | 22:03 | 22:25 | 21:41 | 20:51 | 20:46 | 20:15 | 19:56 | 20:45 | 21:19 | 21:41 | 21:16 | 23:41 | 20:27 | 20:58 | 23:25 |
| कठुआ (ज.का.) | 22:42 | 22:31 | 22:42 | 21:48 | 20:49 | 20:29 | 19:50 | 19:29 | 20:26 | 21:13 | 21:48 | 21:31 | 23:17 | 20:19 | 20:45 | 22:58 |
| कपूरथला | 22:39 | 22:29 | 22:40 | 21:48 | 20:50 | 20:31 | 19:54 | 19:33 | 20:29 | 21:14 | 21:48 | 21:30 | 23:21 | 20:21 | 20:47 | 23:02 |
| करनाल | 22:27 | 22:17 | 22:31 | 21:40 | 20:44 | 20:28 | 19:52 | 19:32 | 20:26 | 21:09 | 21:40 | 21:20 | 23:19 | 20:16 | 20:43 | 23:00 |
| काँगडा(हि.प्र.) | 22:37 | 22:27 | 22:38 | 21:45 | 20:46 | 20:26 | 19:48 | 19:27 | 20:23 | 21:10 | 21:45 | 21:27 | 23:15 | 20:16 | 20:43 | 22:56 |
| कानपुर | 22:03 | 21:53 | 22:11 | 21:24 | 20:31 | 20:21 | 19:47 | 19:28 | 20:19 | 20:57 | 21:24 | 21:02 | 23:14 | 20:05 | 20:35 | 22:56 |
| कैथल (हरि.) | 22:30 | 22:20 | 22:33 | 21:43 | 20:46 | 20:31 | 19:54 | 19:34 | 20:28 | 21:11 | 21:43 | 21:23 | 23:21 | 20:18 | 20:46 | 23:03 |
| कुल्लू (हि.प्र.) | 22:34 | 22:23 | 22:34 | 21:41 | 20:42 | 20:23 | 19:45 | 19:24 | 20:20 | 21:06 | 21:41 | 21:24 | 23:12 | 20:13 | 20:40 | 22:53 |
| कुराली (पं.) | 22:32 | 22:22 | 22:34 | 21:43 | 20:45 | 20:28 | 19:51 | 19:30 | 20:25 | 21:09 | 21:43 | 21:24 | 23:17 | 20:16 | 20:43 | 22:58 |
| कुरुक्षेत्र | 22:28 | 22:18 | 22:32 | 21:41 | 20:44 | 20:28 | 19:52 | 19:31 | 20:26 | 21:09 | 21:41 | 21:21 | 23:19 | 20:16 | 20:44 | 23:00 |
| कालका (हरि.) | 22:31 | 22:21 | 22:33 | 21:41 | 20:43 | 20:26 | 19:49 | 19:28 | 20:23 | 21:08 | 21:41 | 21:22 | 23:16 | 20:15 | 20:42 | 22:57 |
| करसोग (हि.प्र.) | 22:31 | 22:21 | 22:33 | 21:40 | 20:42 | 20:24 | 19:47 | 19:25 | 20:21 | 21:06 | 21:40 | 21:22 | 23:13 | 20:13 | 20:40 | 22:54 |
| कोलकाता | 21:19 | 21:09 | 21:32 | 20:49 | 20:00 | 19:55 | 19:24 | 19:05 | 19:54 | 20:27 | 20:49 | 20:23 | 22:50 | 19:36 | 20:07 | 22:34 |
| खरड़ (पं.) | 22:32 | 22:22 | 22:34 | 21:42 | 20:45 | 20:28 | 19:51 | 19:30 | 20:25 | 21:09 | 21:42 | 21:24 | 23:17 | 20:16 | 20:43 | 22:59 |
| खन्ना (पं.) | 22:33 | 22:23 | 22:36 | 21:44 | 20:46 | 20:29 | 19:53 | 19:32 | 20:27 | 21:11 | 21:44 | 21:25 | 23:19 | 20:18 | 20:45 | 23:00 |
| गाज़ियाबाद | 22:22 | 22:12 | 22:27 | 21:38 | 20:42 | 20:29 | 19:53 | 19:33 | 20:26 | 21:08 | 21:38 | 21:17 | 23:20 | 20:15 | 20:43 | 23:02 |
| ग्वालियर | 22:12 | 22:02 | 22:20 | 21:33 | 20:40 | 20:31 | 19:57 | 19:37 | 20:29 | 21:07 | 21:33 | 21:10 | 23:23 | 20:14 | 20:44 | 23:06 |
| गुरदासपुर (पं.) | 22:41 | 22:31 | 22:41 | 21:48 | 20:49 | 20:30 | 19:52 | 19:31 | 20:27 | 21:13 | 21:48 | 21:31 | 23:19 | 20:20 | 20:46 | 22:59 |
| गुरुग्राम | 22:23 | 22:13 | 22:28 | 21:39 | 20:44 | 20:31 | 19:56 | 19:35 | 20:28 | 21:09 | 21:39 | 21:18 | 23:22 | 20:17 | 20:45 | 23:04 |
| चण्डीगढ़ | 22:31 | 22:21 | 22:33 | 21:42 | 20:44 | 20:27 | 19:50 | 19:29 | 20:24 | 21:09 | 21:42 | 21:23 | 23:17 | 20:15 | 20:43 | 22:58 |
| चम्बा | 22:40 | 22:30 | 22:40 | 21:46 | 20:46 | 20:26 | 19:47 | 19:26 | 20:23 | 21:10 | 21:46 | 21:29 | 23:14 | 20:16 | 20:43 | 22:55 |

श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत का चंद्रोदय समय एवं कलंक-चतुर्थी का चन्द्रास्त काल

# श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत का चन्द्रोदय समय एवं कलंक-चतुर्थी का चन्द्रास्त काल

## भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2081) (भा.स्टैं.टा.)

| नगर | श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल | | | | | | | | | | | | श्रीकृष्ण जन्माष्टमी | कलंकचौथ चंद्रदर्शन निषेध | सिद्धि विनायक व्रत | श्री महालक्ष्मी व्रत |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 27अप्रै. 2024 ई. घं. मिं. | 26 मई 2024 ई. घं. मिं. | 25 जून 2024 ई. घं. मिं. | 24जुला. 2024 ई. घं. मिं. | 22अग. 2024 ई. घं. मिं. | 21सितं. 2024 ई. घं. मिं. | 20अक्तू 2024 ई. करवाचौथ | 18 नवं. 2024 ई. घं. मिं. | 18दिसं. 2024 ई. घं. मिं. | 17 जन. 2025 ई. संकटचौथ | 16 फर. 2025 ई. घं. मिं. | 17 मार्च 2025 ई. घं. मिं. | 26 अग. घं. मिं. | 6 सितं. चन्द्रास्त | 7 सितं. चन्द्रास्त | 24 सितं. चन्द्रोदय |
| चेन्नई | 21:29 | 21:20 | 21:51 | 21:16 | 20:36 | 20:45 | 20:20 | 20:03 | 20:45 | 21:07 | 21:17 | 20:44 | 23:46 | 20:17 | 20:52 | 23:32 |
| जयपुर (राज.) | 22:23 | 22:13 | 22:31 | 21:43 | 20:49 | 20:39 | 20:05 | 19:45 | 20:37 | 21:16 | 21:43 | 21:21 | 23:31 | 20:23 | 20:53 | 23:14 |
| जम्मू | 22:45 | 22:35 | 22:45 | 21:51 | 20:51 | 20:31 | 19:52 | 19:31 | 20:28 | 21:15 | 21:51 | 21:34 | 23:19 | 20:21 | 20:47 | 22:59 |
| जलालाबाद(पं.) | 22:41 | 22:31 | 22:44 | 21:52 | 20:55 | 20:38 | 20:01 | 19:40 | 20:35 | 21:19 | 21:52 | 21:33 | 23:28 | 20:26 | 20:53 | 23:09 |
| जलगांव(महा.) | 22:08 | 21:59 | 22:22 | 21:40 | 20:53 | 20:51 | 20:21 | 20:03 | 20:50 | 21:21 | 21:41 | 21:14 | 23:47 | 20:29 | 21:02 | 23:32 |
| ज्वाली (हि.प्र.) | 22:39 | 22:29 | 22:39 | 21:46 | 20:47 | 20:27 | 19:49 | 19:28 | 20:24 | 21:11 | 21:46 | 21:28 | 23:16 | 20:17 | 20:44 | 22:56 |
| जालन्धर | 22:38 | 22:28 | 22:39 | 21:47 | 20:49 | 20:31 | 19:54 | 19:32 | 20:28 | 21:13 | 21:47 | 21:29 | 23:20 | 20:20 | 20:47 | 23:01 |
| ज्वालामुखी | 22:36 | 22:26 | 22:37 | 21:44 | 20:45 | 20:26 | 19:49 | 19:27 | 20:23 | 21:10 | 21:44 | 21:27 | 23:15 | 20:16 | 20:43 | 22:56 |
| जीन्द (हरि.) | 22:29 | 22:19 | 22:33 | 21:43 | 20:47 | 20:32 | 19:56 | 19:36 | 20:30 | 21:12 | 21:43 | 21:23 | 23:23 | 20:19 | 20:47 | 23:04 |
| जोधपुर (राज.) | 22:33 | 22:23 | 22:41 | 21:54 | 21:01 | 20:51 | 20:18 | 19:58 | 20:50 | 21:28 | 21:54 | 21:31 | 23:44 | 20:35 | 21:05 | 23:27 |
| तलवाड़ा (पं.) | 22:39 | 22:28 | 22:39 | 21:46 | 20:47 | 20:28 | 19:50 | 19:29 | 20:25 | 21:11 | 21:46 | 21:29 | 23:17 | 20:18 | 20:45 | 22:58 |
| टोहाना (हरि.) | 22:31 | 22:21 | 22:35 | 21:45 | 20:48 | 20:33 | 19:57 | 19:36 | 20:30 | 21:13 | 21:45 | 21:25 | 23:23 | 20:20 | 20:48 | 23:05 |
| दिल्ली | 22:23 | 22:13 | 22:28 | 21:39 | 20:43 | 20:30 | 19:56 | 19:34 | 20:27 | 21:09 | 21:39 | 21:18 | 23:21 | 20:16 | 20:44 | 23:03 |
| दीनानगर (पं.) | 22:41 | 22:31 | 22:41 | 21:48 | 20:49 | 20:29 | 19:51 | 19:30 | 20:26 | 21:13 | 21:48 | 21:31 | 23:18 | 20:19 | 20:46 | 22:59 |
| देहरादून | 22:24 | 22:14 | 22:28 | 21:36 | 20:39 | 20:23 | 19:46 | 19:25 | 20:20 | 21:04 | 21:36 | 21:17 | 23:13 | 20:11 | 20:38 | 22:54 |
| धर्मशाला | 22:38 | 22:27 | 22:38 | 21:44 | 20:45 | 20:25 | 19:47 | 19:26 | 20:22 | 21:09 | 21:44 | 21:27 | 23:14 | 20:16 | 20:42 | 22:54 |
| धारीवाल (पं.) | 22:41 | 22:31 | 22:42 | 21:49 | 20:50 | 20:30 | 19:53 | 19:31 | 20:28 | 21:14 | 21:49 | 21:31 | 23:19 | 20:20 | 20:47 | 23:00 |
| नंगल (पं.) | 22:35 | 22:25 | 22:36 | 21:44 | 20:46 | 20:27 | 19:50 | 19:29 | 20:24 | 21:10 | 21:44 | 21:26 | 23:17 | 20:17 | 20:43 | 22:58 |
| नादौन (हि.प्र.) | 22:36 | 22:26 | 22:37 | 21:44 | 20:45 | 20:27 | 19:49 | 19:28 | 20:24 | 21:10 | 21:44 | 21:26 | 23:16 | 20:16 | 20:43 | 22:56 |
| नाहन ( हि.प्र. ) | 22:28 | 22:18 | 22:31 | 21:39 | 20:42 | 20:25 | 19:49 | 19:28 | 20:23 | 21:07 | 21:39 | 21:21 | 23:15 | 20:14 | 20:41 | 22:56 |
| नवांशहर (पं.) | 22:35 | 22:25 | 22:37 | 21:45 | 20:47 | 20:29 | 19:52 | 19:31 | 20:26 | 21:11 | 21:45 | 21:26 | 23:18 | 20:18 | 20:45 | 22:59 |
| नालागढ़ (हि.प्र.) | 22:32 | 22:22 | 22:34 | 21:42 | 20:44 | 20:27 | 19:50 | 19:29 | 20:24 | 21:09 | 21:42 | 21:24 | 23:16 | 20:16 | 20:43 | 22:57 |
| नूरपुर (हि.प्र.) | 22:40 | 22:30 | 22:40 | 21:47 | 20:47 | 20:27 | 19:49 | 19:28 | 20:24 | 21:11 | 21:47 | 21:29 | 23:16 | 20:18 | 20:44 | 22:57 |
| पठानकोट (पं.) | 22:41 | 22:31 | 22:41 | 21:47 | 20:48 | 20:28 | 19:50 | 19:29 | 20:25 | 21:12 | 21:48 | 21:30 | 23:17 | 20:19 | 20:45 | 22:58 |
| पटियाला ( पं. ) | 22:31 | 22:21 | 22:34 | 21:43 | 20:46 | 20:30 | 19:53 | 19:32 | 20:27 | 21:11 | 21:43 | 21:24 | 23:19 | 20:17 | 20:45 | 23:01 |
| पंचकूला | 22:31 | 22:20 | 22:33 | 21:41 | 20:44 | 20:27 | 19:50 | 19:29 | 20:24 | 21:08 | 21:41 | 21:23 | 23:17 | 20:15 | 20:43 | 22:58 |
| पटना | 21:41 | 21:31 | 21:50 | 21:04 | 20:12 | 20:03 | 19:30 | 19:10 | 20:01 | 20:38 | 21:04 | 20:40 | 22:56 | 19:46 | 20:16 | 22:39 |
| प्रयागराज | 21:54 | 21:44 | 22:03 | 21:17 | 20:25 | 20:17 | 19:44 | 19:24 | 20:15 | 20:52 | 21:17 | 20:54 | 23:10 | 20:00 | 20:30 | 22:53 |
| पालमपुर(हि.प्र.) | 22:36 | 22:26 | 22:37 | 21:44 | 20:45 | 20:25 | 19:47 | 19:26 | 20:22 | 21:09 | 21:44 | 21:26 | 23:14 | 20:15 | 20:42 | 22:54 |
| पानीपत | 22:26 | 22:16 | 22:30 | 21:40 | 20:44 | 20:29 | 19:53 | 19:33 | 20:27 | 21:09 | 21:40 | 21:20 | 23:20 | 20:16 | 20:44 | 23:02 |
| पूना (महा.) | 22:09 | 21:59 | 22:26 | 21:46 | 21:01 | 21:03 | 20:34 | 20:16 | 21:02 | 21:30 | 21:46 | 21:17 | 24:01 | 20:39 | 21:12 | 23:45 |

# श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत का चंद्रोदय समय एवं कलंक-चतुर्थी का चन्द्रास्त काल

## भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2081) (भा.स्टैं.टा.)

| नगर | श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल | | | | | | | | | | | | श्रीकृष्ण जन्माष्टमी | कलंकचौथ चंद्रदर्शन निषेध | सिद्धि विनायक व्रत | श्री महालक्ष्मी व्रत |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 27अप्रै. 2024 ई. घं. मिं. | 26 मई 2024 ई. घं. मिं. | 25 जून 2024 ई. घं. मिं. | 24जुला. 2024 ई. घं. मिं. | 22अग. 2024 ई. घं. मिं. | 21सितं. 2024 ई. घं. मिं. | 20अक्तू 2024 ई. करवाचौथ | 18 नवं. 2024 ई. घं. मिं. | 18दिसं. 2024 ई. घं. मिं. | 17 जन. 2025 ई. संकटचौथ | 16 फर. 2025 ई. घं. मिं. | 17 मार्च 2025 ई. घं. मिं. | 26 अग. घं. मिं. | 6 सितं. चन्द्रास्त | 7 सितं. चन्द्रास्त | 24 सितं. चन्द्रोदय |
| पिहोवा (हरि.) | 22:29 | 22:19 | 22:33 | 21:42 | 20:45 | 20:30 | 19:53 | 19:33 | 20:27 | 21:10 | 21:42 | 21:23 | 23:20 | 20:17 | 20:45 | 23:01 |
| पांओटा साहिब | 22:27 | 22:17 | 22:30 | 21:38 | 20:41 | 20:24 | 19:48 | 19:27 | 20:22 | 21:05 | 21:38 | 21:19 | 23:14 | 20:12 | 20:40 | 22:55 |
| परवाणू(हि.प्र.) | 22:31 | 22:21 | 22:33 | 21:41 | 20:43 | 20:26 | 19:49 | 19:28 | 20:23 | 21:08 | 21:41 | 21:22 | 23:16 | 20:15 | 20:42 | 22:57 |
| फगवाड़ा (पं.) | 22:37 | 22:27 | 22:39 | 21:46 | 20:48 | 20:30 | 19:53 | 19:32 | 20:27 | 21:13 | 21:46 | 21:28 | 23:20 | 20:19 | 20:46 | 23:01 |
| फरीदकोट | 22:39 | 22:29 | 22:42 | 21:50 | 20:52 | 20:36 | 19:59 | 19:38 | 20:33 | 21:17 | 21:50 | 21:31 | 23:25 | 20:24 | 20:51 | 23:07 |
| फरीदाबाद | 22:22 | 22:12 | 22:27 | 21:38 | 20:43 | 20:30 | 19:55 | 19:34 | 20:27 | 21:08 | 21:38 | 21:17 | 23:21 | 20:16 | 20:44 | 23:03 |
| फाज़िल्का | 22:41 | 22:31 | 22:44 | 21:53 | 20:55 | 20:39 | 20:03 | 19:42 | 20:37 | 21:20 | 21:53 | 21:34 | 23:29 | 20:27 | 20:54 | 23:10 |
| फिरोज़पुर | 22:40 | 22:30 | 22:43 | 21:51 | 20:53 | 20:35 | 19:58 | 19:38 | 20:33 | 21:17 | 21:51 | 21:32 | 23:25 | 20:24 | 20:51 | 23:06 |
| फतेहाबाद(हरि.) | 22:33 | 22:23 | 22:37 | 21:46 | 20:50 | 20:35 | 19:59 | 19:39 | 20:33 | 21:15 | 21:46 | 21:27 | 23:26 | 20:22 | 20:50 | 23:07 |
| बरनाला(पं.) | 22:35 | 22:25 | 22:38 | 21:46 | 20:49 | 20:33 | 19:56 | 19:36 | 20:30 | 21:14 | 21:47 | 21:27 | 23:23 | 20:21 | 20:48 | 23:04 |
| बीकानेर (राज.) | 22:37 | 22:27 | 22:43 | 21:54 | 20:59 | 20:47 | 20:12 | 19:52 | 20:45 | 21:25 | 21:54 | 21:33 | 23:38 | 20:32 | 21:01 | 23:21 |
| बनीखेत(हि.प्र.) | 22:40 | 22:30 | 22:40 | 21:46 | 20:47 | 20:26 | 19:48 | 19:27 | 20:23 | 21:11 | 21:46 | 21:29 | 23:15 | 20:17 | 20:43 | 22:55 |
| बरेली (उ.प्र.) | 22:13 | 22:03 | 22:18 | 21:29 | 20:34 | 20:21 | 19:46 | 19:26 | 20:19 | 21:00 | 21:29 | 21:08 | 23:12 | 20:07 | 20:36 | 22:54 |
| बैजनाथ(हि.प्र.) | 22:36 | 22:26 | 22:36 | 21:43 | 20:44 | 20:25 | 19:47 | 19:26 | 20:22 | 21:08 | 21:43 | 21:26 | 23:13 | 20:15 | 20:41 | 22:54 |
| बिलासपुर(हि.प्र.) | 22:33 | 22:23 | 22:35 | 21:42 | 20:44 | 20:26 | 19:49 | 19:27 | 20:23 | 21:08 | 21:42 | 21:24 | 23:15 | 20:15 | 20:42 | 22:56 |
| बैंगलूरु | 21:40 | 21:31 | 22:02 | 21:27 | 20:47 | 20:57 | 20:32 | 20:14 | 20:57 | 21:18 | 21:28 | 20:55 | 23:57 | 20:28 | 21:03 | 23:43 |
| भटिण्डा | 22:37 | 22:27 | 22:40 | 21:49 | 20:52 | 20:36 | 19:59 | 19:39 | 20:33 | 21:17 | 21:49 | 21:30 | 23:26 | 20:23 | 20:51 | 23:07 |
| मथुरा | 22:17 | 22:07 | 22:24 | 21:36 | 20:42 | 20:30 | 19:56 | 19:36 | 20:28 | 21:08 | 21:36 | 21:14 | 23:22 | 20:15 | 20:44 | 23:04 |
| मण्डी (हि.प्र.) | 22:33 | 22:23 | 22:35 | 21:42 | 20:43 | 20:24 | 19:47 | 19:25 | 20:21 | 21:07 | 21:42 | 21:24 | 23:13 | 20:14 | 20:41 | 22:54 |
| मुकेरियां (पं.) | 22:40 | 22:30 | 22:40 | 21:47 | 20:48 | 20:29 | 19:51 | 19:30 | 20:26 | 21:13 | 21:47 | 21:30 | 23:18 | 20:19 | 20:46 | 22:59 |
| मोहाली (पं.) | 22:31 | 22:21 | 22:34 | 21:42 | 20:44 | 20:27 | 19:51 | 19:30 | 20:25 | 21:09 | 21:42 | 21:23 | 23:17 | 20:16 | 20:43 | 22:58 |
| मेरठ (उ.प्र.) | 22:22 | 22:12 | 22:27 | 21:37 | 20:41 | 20:27 | 19:51 | 19:31 | 20:25 | 21:06 | 21:37 | 21:16 | 23:18 | 20:13 | 20:42 | 23:00 |
| मुम्बई | 22:15 | 22:05 | 22:31 | 21:50 | 21:05 | 21:06 | 20:37 | 20:19 | 21:05 | 21:34 | 21:51 | 21:22 | 24:03 | 20:42 | 21:15 | 23:48 |
| मनाली(हि.प्र.) | 22:34 | 22:24 | 22:35 | 21:41 | 20:42 | 20:22 | 19:44 | 19:23 | 20:19 | 21:06 | 21:41 | 21:24 | 23:11 | 20:12 | 20:39 | 22:51 |
| मुक्तसर (पं.) | 22:40 | 22:30 | 22:42 | 21:51 | 20:53 | 20:37 | 20:00 | 19:40 | 20:34 | 21:18 | 21:51 | 21:32 | 23:27 | 20:25 | 20:52 | 23:08 |
| मोगा(पं.) | 22:38 | 22:28 | 22:40 | 21:48 | 20:51 | 20:34 | 19:57 | 19:36 | 20:31 | 21:15 | 21:48 | 21:30 | 23:23 | 20:22 | 20:49 | 23:04 |
| मलेरकोटला | 22:34 | 22:24 | 22:37 | 21:45 | 20:48 | 20:31 | 19:55 | 19:34 | 20:29 | 21:13 | 21:45 | 21:26 | 23:21 | 20:19 | 20:47 | 23:02 |
| महेन्द्रगढ़(हरि.) | 22:26 | 22:16 | 22:32 | 21:43 | 20:48 | 20:35 | 20:00 | 19:40 | 20:33 | 21:13 | 21:43 | 21:22 | 23:26 | 20:21 | 20:49 | 23:08 |
| यमुनानगर | 22:27 | 22:17 | 22:30 | 21:39 | 20:42 | 20:26 | 19:50 | 19:29 | 20:24 | 21:07 | 21:39 | 21:20 | 23:16 | 20:14 | 20:42 | 22:58 |
| रिवाड़ी (हरि.) | 22:24 | 22:14 | 22:30 | 21:41 | 20:46 | 20:33 | 19:58 | 19:38 | 20:31 | 21:11 | 21:41 | 21:20 | 23:24 | 20:19 | 20:47 | 23:07 |

# श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत का चंद्रोदय समय एवं कलंक-चतुर्थी का चन्द्रास्त काल

## भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2081) (भा.स्टैं.टा.)

| नगर | श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल | | | | | | | | | | | | श्रीकृष्ण जन्माष्टमी | कलंकचौथ चंद्रदर्शन निषेध | सिद्धि विनायक व्रत | श्री महालक्ष्मी व्रत |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 27अप्रै. 2024 ई. घं. मिं. | 26 मई 2024 ई. घं. मिं. | 25 जून 2024 ई. घं. मिं. | 24जुला. 2024 ई. घं. मिं. | 22अग. 2024 ई. घं. मिं. | 21सितं. 2024 ई. घं. मिं. | 20अक्तू 2024 ई. करवाचौथ | 18 नवं. 2024 ई. घं. मिं. | 18दिसं. 2024 ई. घं. मिं. | 17 जन. 2025 ई. संकटचौथ | 16 फर. 2025 ई. घं. मिं. | 17 मार्च 2025 ई. घं. मिं. | 26 अग. घं. मिं. | 6 सितं. चन्द्रास्त | 7 सितं. चन्द्रास्त | 24 सितं. चन्द्रोदय |
| रोहतक (हरि.) | 22:26 | 22:16 | 22:31 | 21:41 | 20:45 | 20:32 | 19:56 | 19:36 | 20:29 | 21:11 | 21:41 | 21:21 | 23:23 | 20:18 | 20:46 | 23:04 |
| रोहडू (हि.प्र.) | 22:28 | 22:18 | 22:30 | 21:38 | 20:40 | 20:22 | 19:45 | 19:24 | 20:19 | 21:04 | 21:38 | 21:20 | 23:11 | 20:11 | 20:38 | 22:52 |
| रोपड़ (पं.) | 22:33 | 22:23 | 22:35 | 21:43 | 20:45 | 20:28 | 19:51 | 19:30 | 20:25 | 21:10 | 21:43 | 21:24 | 23:17 | 20:16 | 20:43 | 22:58 |
| राजपुरा (पं.) | 22:31 | 22:21 | 22:34 | 21:42 | 20:45 | 20:28 | 19:52 | 19:31 | 20:26 | 20:10 | 21:42 | 21:23 | 23:18 | 20:16 | 20:44 | 23:00 |
| रायपुर(३६गढ़) | 21:44 | 21:34 | 21:58 | 21:16 | 20:28 | 20:26 | 19:56 | 19:37 | 20:24 | 20:56 | 21:16 | 20:49 | 23:21 | 20:04 | 20:36 | 23:06 |
| रामपुर बुशैहर | 22:30 | 22:20 | 22:31 | 21:39 | 20:40 | 20:22 | 19:45 | 19:23 | 20:19 | 21:05 | 21:39 | 21:21 | 23:11 | 20:11 | 20:38 | 22:52 |
| रूड़की (उ.खण्ड) | 22:24 | 22:14 | 22:27 | 21:37 | 20:40 | 20:24 | 19:48 | 19:27 | 20:22 | 21:05 | 21:37 | 21:17 | 23:15 | 20:12 | 20:40 | 22:56 |
| राजौरी(ज.का.) | 22:50 | 22:40 | 22:49 | 21:54 | 20:53 | 20:31 | 19:52 | 19:31 | 20:28 | 21:17 | 21:54 | 21:38 | 23:19 | 20:23 | 20:49 | 22:59 |
| लुधियाना(पं.) | 22:35 | 22:25 | 22:37 | 21:45 | 20:48 | 20:30 | 19:53 | 19:32 | 20:28 | 21:12 | 21:46 | 21:27 | 23:20 | 20:19 | 20:46 | 23:01 |
| लखनऊ | 22:02 | 21:52 | 22:10 | 21:22 | 20:29 | 20:18 | 19:44 | 19:24 | 20:16 | 20:55 | 21:22 | 21:00 | 23:10 | 20:02 | 20:32 | 22:53 |
| वाराणसी | 21:49 | 21:39 | 21:59 | 21:13 | 20:21 | 20:12 | 19:39 | 19:20 | 20:10 | 20:47 | 21:13 | 20:50 | 23:07 | 19:55 | 20:25 | 22:49 |
| शिमला | 22:31 | 22:20 | 22:33 | 21:40 | 20:42 | 20:25 | 19:47 | 19:27 | 20:22 | 21:07 | 21:40 | 21:22 | 23:14 | 20:14 | 20:41 | 22:55 |
| श्रीनगर (का.) | 22:50 | 22:40 | 22:48 | 21:52 | 20:51 | 20:28 | 19:48 | 19:26 | 20:24 | 21:14 | 21:52 | 21:37 | 23:15 | 20:20 | 20:45 | 22:56 |
| श्रीगंगानगर | 22:41 | 22:30 | 22:44 | 21:53 | 20:57 | 20:41 | 20:05 | 19:44 | 20:39 | 21:22 | 21:53 | 21:34 | 23:31 | 20:28 | 20:56 | 23:13 |
| संगरूर | 22:33 | 22:23 | 22:36 | 21:45 | 20:48 | 20:32 | 19:55 | 19:35 | 20:29 | 21:13 | 21:45 | 21:26 | 23:22 | 20:20 | 20:47 | 23:03 |
| सरकाघाट(हि.प्र.) | 22:34 | 22:24 | 22:35 | 21:43 | 20:44 | 20:25 | 19:48 | 19:26 | 20:22 | 21:08 | 21:43 | 21:25 | 23:14 | 20:15 | 20:41 | 22:55 |
| सहारनपुर | 22:25 | 22:15 | 22:29 | 21:38 | 20:41 | 20:26 | 19:49 | 19:29 | 20:23 | 21:06 | 21:38 | 21:19 | 23:16 | 20:13 | 20:41 | 22:57 |
| सागर (म.प्र.) | 22:03 | 21:53 | 22:14 | 21:29 | 20:39 | 20:33 | 20:01 | 19:42 | 20:31 | 21:06 | 21:29 | 21:04 | 23:27 | 20:14 | 20:45 | 23:11 |
| सोनीपत | 22:25 | 22:15 | 22:29 | 21:40 | 20:44 | 20:30 | 19:54 | 19:34 | 20:27 | 21:09 | 21:40 | 21:19 | 23:21 | 20:16 | 20:45 | 23:03 |
| सिरसा (हरि.) | 22:35 | 22:24 | 22:39 | 21:48 | 20:52 | 20:37 | 20:01 | 19:40 | 20:34 | 21:17 | 21:48 | 21:28 | 23:27 | 20:24 | 20:52 | 23:09 |
| सोलन (हि.प्र.) | 22:30 | 22:20 | 22:32 | 21:40 | 20:43 | 20:25 | 19:48 | 19:27 | 20:22 | 21:07 | 21:40 | 21:22 | 23:15 | 20:14 | 20:41 | 22:56 |
| सुन्दरनगर | 22:33 | 22:23 | 22:34 | 21:42 | 20:43 | 20:25 | 19:47 | 19:26 | 20:22 | 21:08 | 21:42 | 21:24 | 23:14 | 20:14 | 20:41 | 22:55 |
| सुजानपुर टिहरा | 22:36 | 22:26 | 22:37 | 21:44 | 20:45 | 20:26 | 19:48 | 19:27 | 20:23 | 21:09 | 21:44 | 21:26 | 23:15 | 20:16 | 20:42 | 22:56 |
| सुन्दरबनी (का.) | 22:48 | 22:38 | 22:47 | 21:53 | 20:53 | 20:31 | 19:53 | 19:31 | 20:28 | 21:16 | 21:53 | 21:36 | 23:19 | 20:22 | 20:48 | 23:00 |
| सुनाम (पं.) | 22:33 | 22:23 | 22:36 | 21:45 | 20:48 | 20:32 | 19:56 | 19:35 | 20:30 | 21:13 | 21:45 | 21:26 | 23:23 | 20:20 | 20:48 | 23:04 |
| हमीरपुर(हि.प्र.) | 22:35 | 22:25 | 22:36 | 21:43 | 20:45 | 20:26 | 19:48 | 19:27 | 20:23 | 21:09 | 21:43 | 21:26 | 23:15 | 20:16 | 20:42 | 22:56 |
| हरिद्वार | 22:23 | 22:13 | 22:26 | 21:35 | 20:39 | 20:23 | 19:47 | 19:26 | 20:20 | 21:04 | 21:35 | 21:16 | 23:13 | 20:11 | 20:38 | 22:55 |
| हिसार (हरि.) | 22:30 | 22:20 | 22:35 | 21:45 | 20:49 | 20:35 | 19:59 | 19:39 | 20:32 | 21:14 | 21:45 | 21:25 | 23:25 | 20:21 | 20:49 | 23:07 |
| होशियारपुर | 22:37 | 22:27 | 22:38 | 21:46 | 20:47 | 20:29 | 19:51 | 19:30 | 20:26 | 21:12 | 21:46 | 21:28 | 23:18 | 20:18 | 20:45 | 22:59 |
| हाँसी (हरि.) | 22:29 | 22:19 | 22:34 | 21:44 | 20:48 | 20:34 | 19:58 | 19:38 | 20:32 | 21:13 | 21:44 | 21:24 | 23:25 | 20:20 | 20:49 | 23:07 |

# ○ आलौकिक एवं महादिव्य 'कुम्भ-महापर्व-प्रयागराज' (29 जनवरी, 2025 ई.) ○

## [कुम्भपर्व का उद्गम, माहात्म्य, स्नान-तिथियां एवं स्नानविधि आदि]

–[लेखक : पं. विवेक शर्मा]

मानव-जीवन का परम एवं चरम लक्ष्य है–अमृतत्व की प्राप्ति। '**अमृत**' परम व्योम में व्याप्त है। '**कुम्भ-रूपी**' जीवात्मा में '**सहस्रार**' ही परम व्योम है। '**कुम्भी**'-साधक प्राण-अपान की एकता सम्पादन कर **परम व्योम ( सहस्रार )** में स्थित '**अमृत**' की प्राप्ति करते हैं। यह '**अमृत**' प्राप्ति ही '**कुम्भी**'-साधक का परम लक्ष्य है, क्योंकि (अथर्ववेद, १०-८-४४)-

**अकामो धीरो अमृतः स्वयम्भूः, रसेन तृप्तो न कुताश्चनोनः।**
**तमेव विद्वान् न विभाय, मृत्योः आत्मानं धीरमजरं युवानम्॥**

अर्थात् कामनाओं को मथनेवाला-कामनाओं से रहित–धीर-अमृत-स्वयम्भू-स्वरूप होता हुआ-ब्रह्म-रस से तृप्त होकर निश्चल जरा-व्याधि-रहित सर्वदा युवा रूप वाला होकर मृत्यु के भय से मुक्त हो जाता है।

'**कुम्भ-पर्व**' की परम्परा भारत में अत्यन्त प्राचीन है। यह महापर्व भारत की प्राचीन गौरवमयी वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता का प्रतीक है। वैसे '**कुम्भ**' शब्द का अर्थ साधारणतः घड़ा ही है, किन्तु इसके पीछे जनसमुदाय में पात्रता के निर्माण की रचनात्मक शुभभावना, मङ्गलकामना एवं जनमानस के उद्धार की प्रेरणा निहित है। यथार्थतः '**कुम्भ**' शब्द समग्र सृष्टि के कल्याणकारी अर्थ को अपने-आप में समेटे हुए है। पृथ्वी को कल्याण की आगामी सूचना देने के लिए या शुभ भविष्य के संकेत के लिए हरिद्वार, प्रयाग आदि पुण्य-स्थान विशेष के उद्देश्य से निर्मल महाकाश में बृहस्पति आदि ग्रहराशि उपस्थित हों जिसमें, उसे '**कुम्भ**' कहते हैं।

भूमण्डल के मनुष्य मात्र के पाप को दूर करना ही कुम्भ की उत्पत्ति का हेतु है। यह पर्व प्रत्येक बारहवें वर्ष हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक–इन चारों स्थानों में होता रहता है। इस महापर्व के अवसर पर समस्त भारतवर्ष से ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व से करोड़ों धर्मपरायण श्रद्धालु लोग कुम्भ-स्थली पर स्नान, दान, जपादि हेतु इकट्ठे होकर भव्य एवं विराट मेले (उत्सव) का समायोजन करते हैं। '**कुम्भ**' शब्द का अर्थ विश्व ब्रह्माण्ड भी है। जहाँ पर विश्वभर के धर्म, जाति, भाषा, संस्कृति, महात्माओं एवं सामान्य **श्रद्धालुजनों** का समागम हो, वही **कुम्भ महापर्व** कहलाता है।

कुम्भ-पर्व के सम्बन्ध में वेद-पुराणों में अनेक महत्त्वपूर्ण मन्त्र एवं प्रसंग मिलते हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि कुम्भ-महापर्व अत्यन्त प्राचीन और वैदिक धर्म से ओत-प्रोत है। ऋग्वेद अनुसार '**कुम्भ**'-पर्व में जाने वाला मनुष्य स्वयं दान-होमादि सत्कर्मों के फलस्वरूप अपने पापों को वैसे ही नष्ट करता है जैसे कुठार वन को काट देता है। जिस प्रकार गङ्गा नदी अपने तटों को काटती हुई प्रवाहित होती है, उसी प्रकार कुम्भ-पर्व मनुष्य के पूर्वसञ्चित कर्मों से प्राप्त हुए शारीरिक पापों को नष्ट करता है और नूतन (कच्चे) घड़े की तरह बादल को नष्ट-भ्रष्ट कर संसार में सुवृष्टि प्रदान करता है।

### अमृत–कुम्भ का स्वरूप

**कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।**
**मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्थिताः॥**
**कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।**
**ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।**
**अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥**

'कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र, मूल भाग में ब्रह्मा, मध्य भाग में मातृगण, कुक्षि में समस्त समुद्र, पहाड़ और पृथ्वी रहते हैं और अङ्गों के सहित ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद भी रहते हैं।'

### अमृत–कुम्भ की अवधारणा

कालचक्र न केवल जीवन के क्रिया-कलाप का मूलाधार है ; अपितु समस्त यज्ञकर्म, अनुष्ठान एवं संस्कार आदि भी कालचक्र पर आधारित हैं। कालचक्र में सूर्य, चन्द्रमा एवं देवगुरु बृहस्पति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन एवं नासिक–इन सभी चार तीर्थों पर हर बारह (12) वर्षों के पश्चात् **सूर्य, चन्द्र** व **बृहस्पति**–इन तीनों का विशेष योग बनने पर **कुम्भ महापर्व** का समागम होता है। माघ मास की अमावस पर जब सूर्य और चन्द्रमा मकर राशि पर तथा बृहस्पति वृष राशि पर स्थित हों, तो उस समय तीर्थराज प्रयागराज में कुम्भ महापर्व का शुभ योग बनता है। यथा–

**मकरे च दिवानाथे वृषगे च बृहस्पतौ।**
**कुम्भयोगो भवेत् तत्र प्रयागे हि अतिदुर्लभे॥** (स्कन्दपुराण)

वि संवत् 2081 में माघ (मौनी) अमावस के दिन अर्थात् 29 जनवरी, 2025 ई. को सूर्य-चन्द्र मकर में और गुरु वृष राशि में होगा। अतः इस दिन प्रयागराज में कुम्भपर्व का

जिनसे सिद्ध होता है कि कुम्भ-महापर्व अत्यन्त प्राचीन और वैदिक धर्म से ओत-प्रोत है। सूर्य-चन्द्र मकर में और गुरु वृष राशि में होगा। अतः इस दिन प्रयागराज में कुम्भपर्व का

योग है। घंटा-घड़ियालों के साथ गूंजते वेद मन्त्र और धूप-दीप की सुगंध, रोशनी से नहाए पंडालों, धूनी जमाए साधना में लीन साधुओं के साथ संगम नगरी प्रयागराज में कुम्भ-महापर्व के दौरान आस्था का ऐसा जमघट लगेगा, जिसे देखने के लिए न सिर्फ भारत बल्कि सात समंदर पार से भी श्रद्धालु और सैलानी आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति एवं आधिभौतिक दुःखों से मुक्ति हेतु यहाँ खींचे चले आएंगे। उत्तरप्रदेश तथा केन्द्रीय सरकार इस कुम्भ मेले पर श्रद्धालुओं के आवास, स्नान, स्वास्थ्य, सुरक्षा, सुविधा आदि हेतु करोड़ों रुपये व्यय करेंगी। त्याग, समर्पण तथा श्रद्धा के केन्द्र इस महापर्व पर रिकॉर्ड-तोड़ करोड़ों श्रद्धालुओं के आने का अनुमान है। इसीलिए हम श्रद्धालु पाठकों के लिए इस कुम्भपर्व के उद्गम, स्नानदिन तथा कुम्भपर्व के अवसर पर किए जाने योग्य दानादि धर्मकृत्यों पर विस्तृत प्रकाश डाल रहे हैं।

## कुम्भपर्व क्यों लगातार मनाए जाते हैं ?

### ( कुम्भोत्पत्ति की अमरकथा )

कुम्भ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में पुराणों में अनेक आख्यान मिलते हैं। इनमें स्कन्द पुराण में **समुद्र मन्थन** की कथा सर्वाधिक प्रचलित है। इस कथा के अनुसार **'हिमालय'** के समीप **'क्षीरोद'** नाम का एक सागर है। एक समय देवताओं और दानवों के बीच **अमृत कुम्भ** की प्राप्ति के लिए सागर के मूल में कूर्म (कच्छप) और उसके ऊपर **मन्दरांचल पर्वत** को स्थापित करके उस पर **'वासुकि'** नाग की रस्सी बनाकर मन्थन किया गया। समुद्र-मन्थन द्वारा क्षीरसागर से चौदह (14) रत्न निकले। **जैसे**—(1) कालकूट विष, (2) पुष्पक विमान, (3) ऐरावत हाथी, (4) पारिजात वृक्ष, (5) अप्सरा रम्भा, (6) कौस्तुभ मणि, (7) बाल चन्द्रमा, (8) कुण्डल धनुष, (9) शार्ग धनुष, (10) कामधेनु गाय, (11) उच्चैश्रवा घोड़ा, (12) समस्त ऐश्वर्यों की अधिष्ठातृ लक्ष्मी, (13) विश्वकर्मा (14) अन्त में महाविष्णु धनवन्तरि के हाथों में शोभायमान अमृत से आपूरित कुम्भ (कलश) उत्पन्न हुआ। देवताओं के संकेत पर इन्द्र पुत्र जयन्त **अमृत-कुम्भ** लेकर बड़े वेग से भागने लगे। दैत्यगण जयन्त का पीछा करने लगे। अमृत प्राप्ति के लिए देवताओं और राक्षसों के मध्य बारह दिव्य दिन (मानुषी बारह वर्ष) तक भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध के समय जिन-जिन स्थानों पर **'कुम्भ'** से अमृत की बूंदे गिरी थी, उन-उन स्थानों (प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक) पर कुम्भ-महापर्व मनाया जाता है। तत्पश्चात् भगवान् श्रीविष्णु ने मोहिनी रूप धारण करके अमृत को देवताओं में बांटा।

पुराणानुसार **'अमृत-कुम्भ'** की रक्षा में **बृहस्पति, सूर्य** व **चन्द्रमा** ने विशेष सहायता की थी। **'चन्द्रमा'** ने अमृत को कुम्भ में से गिरने से, **'सूर्य'** ने कुम्भ को फूटने से और **'बृहस्पति'** ने असुरों द्वारा अमृत के अपहरण होने से तथा **'शनि'** ने देवराज इन्द्र के भय से **अमृत-कुम्भ** की रक्षा की थी। इसी कारण सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति-तीनों ग्रहों के विशेष योग में ही **कुम्भ महापर्व** मनाया जाता है।

## कुम्भ-महापर्व 12वें वर्ष क्यों ?

जिस समय में चन्द्रादि ग्रहों ने कलश की रक्षा की थी, उस समय की वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले सूर्य-चन्द्रादि ग्रह जब वही आते हैं, उस समय कुम्भ का योग होता है। अर्थात् जिस वर्ष, जिस राशि पर सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति का संयोग होता है, उसी वर्ष, उसी राशि के योग में जहाँ-जहाँ अमृत कुम्भ सुधा-बिन्दु गिरा था, वहाँ-वहाँ कुम्भ-पर्व होता है।

क्योंकि सन् 2025 ई. में माघी अमावस के दिन सूर्य-चन्द्रमा मकर राशि में तथा बृहस्पति वृष राशि में होंगे, **तद्नुसार कुम्भ-महापर्व का मुख्य स्नान 29 जनवरी, 2025 ई. को ही होगा।**

**निष्कर्ष**—गंगा-यमुना की रेती सनातन मतावलंबियों से पहली बार कब गुलज़ार हुई, इसका कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है, लेकिन त्रेतायुग में भी कल्पवास जैसी परम्परा थी। रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने इस बात का प्रमाण इस चौपाई से दिया है—

**माघ मकरगत रबि जब होई, तीरथपतिहिं आव सब कोई।**
**देव दनुज किन्नर नर श्रेनीं। सादर मज्जहि सकल त्रिबेनी।**

वस्तुतः कुम्भ-पर्व केवल देव-दानवों के कुम्भ-कलश के लिए उत्पन्न झगड़े की कहानी नहीं है, अपितु इस पर्व के माध्यम से भारतीय संस्कृति और धर्म से अनुप्राणित सभी सम्प्रदायों के धर्मानुयायी एकत्रित होकर अपने समाज, धर्म एवं राष्ट्र की एकता, अखण्डता, अक्षुण्णता के लिए विचार विमर्श करते हैं। स्नान, दान, तर्पण तथा यज्ञ का पवित्र वातावरण देवताओं को भी आकृष्ट किए बिना नहीं रहता। ऐसी मान्यता है कि इस महापर्व पर सभी देवगण तथा अन्य पितर-यक्ष-गन्धर्व आदि पृथ्वी पर उपस्थित होकर न केवल मनुष्यमात्र, अपितु जीवमात्र को अपनी पावन उपस्थिति से पवित्र करते हैं।

## प्रयाग-कुम्भपर्व में स्नान का माहात्म्य

त्रिवेणी अर्थात् गंगा, यमुना व सरस्वती-तीनों पावन नदियों के संगम पर माघ मास एवं कुम्भ पर्व पर स्नान, जप-पाठ एवं दानादि का धर्मशास्त्रों में विशेष माहात्म्य वर्णित किया गया है। विधिपूर्वक माघ स्नान से बढ़कर कोई पवित्र और पापनाशक पर्व नहीं। माघ मास में कुम्भ पर्व पर प्रयागराज में व्यक्ति तीन दिन भी नियमपूर्वक स्नान कर लेता है, तो उसे एक सहस्र अश्वमेघ यज्ञों को करने के बराबर पुण्य प्राप्त हो जाता है—

**प्रयागे माघमासे, कुम्भपर्वे तु, त्र्यह-स्नानस्य यत् फलम्।।**
**अश्व-मेघ-सहस्रेण, तत्, फलं लभते भुवि।।**

तीर्थराज प्रयाग में गङ्गा, यमुना एवं सरस्वती (त्रिवेणी) के संगम में स्नान करके प्राणी अनेक पापों से मुक्त होकर स्वर्गिक सुखों का अधिकारी हो जाता है।

प्रयाग के माहात्म्य से सारा वैदिक साहित्य भरा पड़ा है। पद्मपुराण का वचन है–

**'ग्रहाणां च यथा सूर्यो नक्षत्राणां यथा शशी।**
**तीर्थानामुत्तमं तीर्थं प्रयागाख्यमनुत्तमम्।।**

'जैसे ग्रहों में सूर्य तथा ताराओं में चन्द्रमा हैं, वैसे ही तीर्थों में प्रयाग सर्वोत्तम है।'

## प्रयाग-कुम्भपर्व ( 29 जन., 2025 ई. ) की पुण्य स्नानतिथियाँ

यद्यपि कुम्भ-पर्व का मुख्य योग माघ अमावस, 29 जनवरी, 2025 ई. को है, परन्तु पौष पूर्णिमा से माघ पूर्णिमा (चान्द्र माघ मास) अथवा मकर-संक्रान्ति से कुम्भ-संक्रान्ति (सौर माघ मास) प्रतिदिन प्रातः किसी भी नदी, तालाब, तीर्थ पर नियमपूर्वक स्नान किया जाए तो उसका शास्त्रों में बहुत माहात्म्य लिखा है–

**'माघमासे च यः स्नायान्नैरन्तर्येण भारत।**
**पौण्डरीक-फलं तस्य दिवसे दिवसे भवेत्।।'**

इस मासावधि चलने वाले माघस्नान की कुछ तिथियां तो विशेष योगों के साथ सम्बन्ध होने से बहुत पवित्र मानी गई हैं। कुम्भ मेले में एक मास तक कल्पवास (प्रयागवास) करने वाले सन्तों अथवा साधारण श्रद्धालुओं को भी इन विशेष पुण्यदायक तिथियों में त्रिवेणीसंगम पर स्नान, दान करने से विशेष पुण्य लाभ होगा। यहाँ हम उन सभी पावन-पुण्यदायक तिथियों का विवरण दे रहे हैं, जिनमें त्रिवेणी-संगम में स्नानदान करने का विशेष माहात्म्य होता है। प्रयाग-कुम्भपर्व की मुख्य स्नानतिथियां इस प्रकार हैं–

**( 1 ) पौष शुक्ल एकादशी, शुक्रवार ( 10 जनवरी, 2025 ई. )**–इस पुत्रदा एकादशी वाले दिन कुम्भ-महापर्व के स्नान, दान का विशेष पुण्य होगा। एक परम्परा के अनुसार माघस्नान का प्रारम्भ इसी तिथि से किया जाता है।

**( 2 ) पौष-पूर्णिमा, सोमवार ( 13 जनवरी, 2025 ई. )**–पौषी पूर्णिमा के दिन तीर्थराज प्रयाग के त्रिवेणी-सङ्गम में स्नान से विशेष पुण्यलाभ होगा। वैसे भी पौष-पूर्णिमा में स्नान-दान की विशेष महिमा मानी गई है। चान्द्रगणनानुसार पौष-पूर्णिमा से ही अति पावन **'माघस्नान'** का श्रीगणेश होता है। प्रायः सभी पञ्चाङ्गों में **'पौष-पूर्णिमा'** के दिन ही माघस्नान का सङ्कल्प लिखा रहता है।

तीर्थराज प्रयाग के त्रिवेणी-सङ्गम के पवित्र वातावरण में निवास करते हुए **'पौष-पूर्णिमा'** के महापर्व-काल में स्नान करना निःसन्देह अमोघ फलदायक है। **यह कुम्भ-मेले का प्रथम 'स्नानपर्व' होगा।**

**( 3 ) मकर संक्रान्ति ( माघ कृष्ण प्रतिपदा ), मंगलवार ( 14 जन., 2025 ई. ) ( प्रथम शाही-स्नान )**–14 जनवरी, 2025 ई. को सारा दिन प्रातः से सूर्यास्त तक मकर संक्रान्ति का पुण्यकाल होगा। इसदिन सूर्य मकर राशि में प्रातः $8^{\text{घं.}}$–$55^{\text{मिं.}}$ पर प्रवेश करेंगे। यह निरयण उत्तरायण दिन है। अतएव यह दिन संक्रमण काल होने से स्नान-दान के लिए पुण्यदायक होता है। सरकार एवं कुम्भ उत्सव (मेला) प्राधिकरण द्वारा इसदिन से ही कुम्भ महापर्व (प्रयाग) का विधिवत् श्रीगणेश किया जाएगा।

**यह कुम्भ-महापर्व ( प्रयागराज ) का प्रथम शाही स्नान दिन होगा। जिसमें दशनाम अखाड़े के संन्यासी क्रमानुसार स्नान करेंगे।**

**( 4 ) माघकृष्ण एकादशी, शनिवार ( 25 जनवरी, 2025 ई. )**–षट्तिला एकादशी वाले दिन तीर्थराज प्रयाग में कुम्भ-स्नान, तिलदान, तिल का भोजन, तिलयुक्त जल से ऋषियों-देवताओं का तर्पण करने का विशेष विधान रहेगा तथा अक्षय पुण्य प्राप्त होगा।

**( 5 ) माघ कृष्ण त्रयोदशी, सोमवार ( 27 जनवरी, 2025 ई. )**–सोम-प्रदोष व्रत, शिव-जलाभिषेक तथा तिलयुक्त वस्तुओं के दान के साथ-साथ स्नान का विशेष माहात्म्य होगा।

### ( 6 ) कुम्भ महापर्व की प्रमुख स्नानतिथि

### माघ ( मौनी ) अमावस, बुधवार ( 29 जनवरी, 2025 ई. )–

माघ (मौनी) अमावस के दिन गुरु वृष में तथा सूर्य-चन्द्र मकर राशि में होंगे। इसलिए इस दिन प्रयागराज में कुम्भ महापर्व का योग बन रहा है। **यह इस कुम्भ महापर्व की प्रमुख ( शाही ) स्नानतिथि है, जिस दिन द्वितीय ( प्रमुख ) शाही स्नान होगा।** इस दुर्लभ महापर्व में त्रिवेणी-संगम पर स्नान करने से अक्षय पुण्य लाभ होगा। इसीदिन षड्दर्शन के शंकराचार्यादि सन्त महात्मा (संन्यासी, उदासीन, निर्मल, वैष्णव, अग्नि व खालसे अखाड़े) अपने शिष्यों सहित प्रमुख शाही यात्रा निकालकर त्रिवेणी-संगम में स्नान करेंगे। शास्त्रों का कहना है कि–'कार्तिक महीने में एक हजार बार [गंगा में] स्नान करने से, माघ में सौ बार (गंगा में) स्नान करने से और वैशाख में करोड़ बार नर्मदा में स्नान करने से जो फल होता है, वह प्रयाग में कुम्भ-पर्व पर केवल एक ही बार स्नान करने से प्राप्त होता है।

**सहस्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नानशतानि च।**
**वैशाखे नर्मदा कोटिः कुम्भस्नानेन तत्फलम्।।** (स्कन्दपुराण)

इस परमपावन महापर्व पर त्रिवेणी में स्नान करके महापुण्य अर्जित किया जा सकता है। यदि अत्यधिक भीड़ के कारण इस योग की कालावधि में त्रिवेणी में स्नान का अवसर न मिल सके तो किसी अन्य पवित्र धारा (गङ्गा, यमुना, नर्मदा) में भी स्नान-दानादि से इस योग के माहात्म्य का लाभ अर्जित किया जा सकता है।

इसदिन प्रयागराज में सूर्योदय *$6^{\text{घं.}}$–$47^{\text{मिं.}}$ से लगभग $1^{\text{घं.}}$–$36^{\text{मिं.}}$ पहिले प्रातः $5^{\text{घं.}}$–$11^{\text{मिं.}}$*

से अरुणोदयकाल प्रारम्भ हो जाएगा। अरुणोदय समय ($5^{\text{घं.}}$–$11^{\text{मिं.}}$) से कुम्भ-पर्व का

**( 10 ) माघ शुक्ल एकादशी, शनिवार ( 8 फरवरी, 2025 ई. )**–जया-एकादशी

( 3 ) मकर संक्रान्ति ( माघ कृष्ण प्रतिपदा ), मंगलवार ( 14 जन., 2025 इसीदिन प्रयागराज में सूर्योदय 6घं.–47मिं. से लगभग 1घं.–38मिं. पहिले प्रातः 5घं.–11मिं.

से अरुणोदयकाल प्रारम्भ हो जाएगा। अरुणोदय समय (5घं.–11मिं.) से कुम्भ-पर्व का स्नान-माहात्म्य प्रारम्भ हो जाएगा। माघी अमावस के दिन श्रवण-नक्षत्र भी विद्यमान् रहने से कुम्भ-पर्व का माहात्म्य अनन्त गुणा अधिक रहेगा।

**( 7 ) वसन्त-पञ्चमी ( माघशुक्ल पंचमी ), रवि/सोम ( 2/3 फरवरी, 2025 ई. ) तृतीय ( अन्तिम ) शाही-स्नान**—को प्रातः 9घं.–15मिं. बाद पंचमी तिथि पूर्वाह्न-कालिक रहने से **वसन्त-पंचमी** के दिन स्नान-दान का अनूठा महत्त्व रहेगा। **इस दिन तीसरा ( अन्तिम ) शाही स्नान होगा।**

यद्यपि प्रयागराज में 3 फरवरी, 2025 ई. को सूर्योदय 6घं.–45मिं. पर होने से, माघशुक्ल पंचमी तिथि उदय-व्यापिनी 3 फरवरी, 2025 ई. को होगी। परन्तु त्रिमुहूर्त्त न्यून होने से तथा पहिले दिन (2 फरवरी) पंचमी तिथि पूर्वाहण-व्यापिनी होने से वसन्त-पंचमी प्रयागराज में भी 2 फरवरी, 2025 ई. को ही शास्त्र-सम्मत होगी।

[यद्यपि अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद् द्वारा सम्भव है कि 2 फरवरी, 2025 ई. की बजाए **3 फरवरी, 2025 ई. को सूर्योदय-व्यापिनी पंचमी-तिथि** (6घं.–45मिं. से 6घं.–53मिं. तक) के दिन ही **शाही-यात्रा-स्नान की उद्घोषणा कर दी जाए**]

[इसलिए पाठकों को 2-3 मास पूर्व ही सरकार अथवा अखाड़ा परिषद् द्वारा उद्घोषित तारीखों से मिलान कर लेना चाहिए।]

ज्योतिष-शास्त्र अनुसार तो 2 फरवरी, 2025 ई. को ही प्रातः 9घं.–15मिं. बाद स्नान-योग होना चाहिए।

**( 8 ) माघ शुक्ल सप्तमी, मंगलवार ( 4 फरवरी, 2025 ई. ) ( आरोग्य-रथ सप्तमी )**—इस दिन त्रिवेणी संगम में स्वस्थ शरीर की कामना हेतु स्नान, दानादि कर भगवान् सूर्य का पूजन अर्घ्य-दान देकर एवं दीपक बहाना चाहिए। पूर्वारुणोदय वाली आरोग्य सप्तमी प्राणिमात्र की जीवनशक्ति को जीवित रखने वाले प्रत्यक्ष ईश्वर सूर्य-नारायण ने मन्वन्तर के आदि में इसीदिन अपना प्रकाश प्रकाशित किया था। इसदिन सूर्योदय से पहिले (1घं.–36मिं. पूर्व) अरुणोदयकाल में स्नान-दान से करोड़ों सूर्यग्रहण के समय किए गए स्नानादि तुल्य पुण्य की प्राप्ति होती है। शास्त्रानुसार—

**''अरुणोदयवेलायां शुक्ला माघस्य सप्तमी।**
**प्रयागे यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा।।'**

**[ यह कुम्भ-महापर्व ( प्रयाग ) की द्वितीय मुख्य स्नान-पर्व तिथि भी होगी। ]**

**( 9 ) माघ शुक्ल अष्टमी, बुधवार ( 5 फरवरी, 2025 ई. )**—को भीष्माष्टमी होगी। अतः इसदिनस्नान-दानादि पश्चात् भीष्म-पितामह निमित्त एवं पित्तरों निमित्त तिलयुक्त तर्पण करना चाहिए। '**वसूनामवताराय शंतनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय आवाल्य-ब्रह्मचारिणे।**' इस मन्त्र से अर्घ्य दें।

**( 10 ) माघ शुक्ल एकादशी, शनिवार ( 8 फरवरी, 2025 ई. )**—जया-एकादशी का पुण्य व्रत धारण कर त्रिवेणी में स्नान-दान करने का पुण्यतम् अवसर होगा।

**( 11 ) माघशुक्ल त्रयोदशी, सोमवार ( 10 फरवरी, 2025 ई. )**—सोम प्रदोष व्रत वाले दिन पावन त्रिवेणी में स्नानादि के पश्चात् शिवार्चन तथा शिव-अभिषेक करने से अक्षय पुण्यों की प्राप्ति का सुअवसर गंवाना नहीं चाहिए।

**( 12 ) माघ पूर्णिमा, बुधवार ( 12 फरवरी, 2025 ई. )**—माघ पूर्णिमा कुम्भ-महापर्व (प्रयाग) की मुख्य तृतीय स्नानपर्व तिथि माना जाएगा। माघ पूर्णिमा के दिन तीर्थस्थल पर स्नान-दान का शास्त्रों में अनन्त माहात्म्य वर्णित है। चान्द्रगणनानुसार माघी पूर्णिमा को माघस्नान की अन्तिम तिथि मानी जाती है।

'**पूर्णिमा**' तिथि की महिमा उसके नाम से ही स्पष्ट है। '**पूर्णा**' शब्द के लिए यह प्रसिद्ध है कि—

**पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते।**

अर्थात् यह सारा बाह्य स्वरुप '**पूर्ण**' है, इसका अन्तः स्वरूप भी '**पूर्ण**' है, '**पूर्ण**' से '**पूर्ण**' का विकास है। यहाँ तक कि '**पूर्ण**' से '**पूर्ण**' को निकाल लेने पर भी '**पूर्ण**' ही शेष रहता है।

अतः श्रद्धालु जनों को इस पुण्यतम् अवसर का लाभ उठाना चाहिए। इसीदिन फाल्गुन संक्रान्ति भी होने से इस तिथि में पुण्यार्जन का अवसर खोना नहीं चाहिए।

**( 13 ) फाल्गुन कृष्ण एकादशी, सोमवार ( 24 फरवरी, 2025 ई. )**—को विजया एकादशी का व्रत रखकर, त्रिवेणी में स्नानकर दानादि का अकल्पनीय माहात्म्य होता है।

**( 14 ) फाल्गुन कृष्ण त्रयो./चतुर्दशी, बुधवार ( 26 फर., बुधवार )**—को **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत तिथि है। यह तिथि भी चतुर्थ ( अन्तिम ) स्नान पर्व होगा।** इस दिन तीर्थराज प्रयागराज में स्नान-दान, व्रत धारण करना परम पुण्यप्रद माना गया है।

ऊपर हमने मुख्य सभी स्नानतिथियों का विवरण लिख दिया है। इन स्नानतिथियों के अतिरिक्त माघ कृष्ण चतुर्थी, शुक्रवार (17 जनवरी, 2025 ई.) को संकष्ट-चतुर्थी एवं सभी एकादशी-व्रतों के दिनों में भी त्रिवेणी में स्नान करना पुण्यदायक होगा। जहाँ तक सम्भव हो तो उपरोक्त सभी स्नानतिथियों के दिन त्रिवेणी संगम-स्थल पर स्नान करने का प्रयत्न करना चाहिए। प्रयागराज निवासी तथा जो लोग इस कुम्भमहापर्व पर एक मास तक कल्पवास प्रयाग में करेंगे, वे पूरा माघमास प्रतिदिन त्रिवेणी में स्नान करेंगे ही।

## ⁂ कुम्भ महापर्व पर त्रिवेणी में स्नान, दानादि की विधि ⁂

प्रयागराज में त्रिवेणी संगम स्थल पर माघ (मौनी) अमावस (29 जनवरी, 2025 ई.) के दिन प्रातः स्नान-सन्ध्यादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर अरुणोदयकाल या सूर्योदयकाल के समय संकल्पपूर्वक स्नान करने से विशेष पुण्यफल मिलता है—

**ॐ विष्णुर्विष्णु र्विष्णुः। ॐ तत्सद् अद्य श्री भगवतो महापुरुषस्य विष्णुराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराह–कल्पे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे प्रयागक्षेत्रे कालयुक्त नाम–संवतसरे २०८१ संख्यके–संवत्सरे मकरस्थे सूर्ये वृषस्थे गुरौ मासानां उत्तमे माघ मासे कृष्णपक्षे माघ अमावस्यां तिथौ, बुधवासरे ...... अमुकगोत्रः अनुकनामाऽहम् सर्वविधपीडा निवृत्तिपूर्वकं आरोग्य–दीर्घायुः धनधान्य पुष्टि समृद्ध्यार्थं, बोधाबोधपूर्वं कृतानां सर्वपापनिवृत्तिपूर्वकं सर्वाभीष्ट फलावाप्ति धर्मार्थ काममोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं भगवत्या गङ्गायाः गङ्गा–यमुना–सरस्वती–त्रय्याः–भगवान् विष्णुः–शिवस्य च षोडशोपचारपूजनं च विधाय गंगा–यमुना–पावन धारायां इय प्रयाग पुण्यतीर्थे स्नान–पूजनं–दानं च करिष्ये।।**

उपरोक्त संकल्पानुसार पूजन करने के पश्चात् त्रिवेणी अर्थात् संगम में प्रवेश करने से पूर्व पुष्पाक्षत, नारियल एवं रुपया/मुद्रा सहित अर्पित करते हुए यह मन्त्र पढ़ें–

**गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।**
**नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु।।**

**ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।। ॐ तीर्थ–राजाय प्रयागाय नमः। ॐ अक्षय–वट–शोभित–त्रिवेणी–सङ्गमाय नमः।।**

फिर निम्न मन्त्रों से दोनों हाथों में जल लेकर भगवान् सूर्य से प्रार्थना करें–

**अपस्त्वमसि देवेश ज्योतिषां पतिरेव च।**
**पापं नाशय मे देव वाङ्मनः कर्मभिः कृतम्।।**

फिर दोनों हाथों द्वारा कुम्भ मुद्रा बनाकर भगवान् विष्णु एवं सूर्यादि देवों का ध्यान करते हुए निम्न मन्त्र पढ़ें–

**'दुःख–दारिद्रय नाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च।**
**प्रातः स्नानं करोमि अद्य माघे पापविनाशनम्।।**
**मकरस्थे रवौ माघे, गोविन्दाच्युत माधव।**
**स्नानेनानेव मे देव यथोक्त–फलदो भव।।**

फिर सूर्यदेव को ताम्र–बर्तन में लाल चंदन/पुष्पाक्षत डालकर मन्त्रपूर्वक अर्घ्य देवें। मन्त्र–

**'ऐहि सूर्य सहस्रांशो'** .....अथवा **'ॐ घृणिः सूर्याय नमः।।'** अथवा भगवान् सूर्य के द्वादश नाम–मन्त्रों का उच्चारण करें।

तदुपरान्त ब्रह्मा, विष्णु, महेश, भगवती देवी, गंगा–सरस्वती एवं सूर्यादि देवों को जलांजली देकर नमस्कार करें।

**स्नान का समय**—प्रयागादि तीर्थ पर स्नान का सर्वोत्तम काल अरुणोदयकाल है (सूर्योदय से पहले पूर्वक्षितिज में जो प्रकाश दिखाई देता है, उसे अरुणोदयकाल कहते हैं।) जनवरी, 2025 ई. में माघमास में यह समय सूर्योदय से लगभग $1^{\text{घं.}}$–$36^{\text{मिं.}}$ पहिले शुरु होगा। अरुणोदयकाल में भी स्नान के लिए वह समय सर्वोत्कृष्ट है जब तारे दिखाई दे रहे हों, उसके बाद जितना विलम्ब होता जाए कम महत्त्व का माना जाता है। ताराओं के छिपने से लेकर सूर्योदयकाल तक मध्यम है। सूर्योदय के पश्चात् का स्नान क्षणः क्षणः सामान्य माना जाता है–

**'उत्तमं तु सनक्षत्रं लुप्ततारं तु मध्यमम्। सवितुर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्तितम्।।**

परन्तु नारदपुराण में तो सूर्योदय के बाद भी स्नान का माहात्म्य लिखा है–

**'सम्प्राप्ते माघमासे तु तपस्विजनवल्लभे।**
**क्रोशन्ति सर्ववारीणि समुद्गच्छति भास्करे।।**
**पुनीमस्तस्य पापानि त्रिविधानि न संशयः।।'**

इसलिए कुम्भ–पर्व के मुख्य स्नान के विशेष दिन ( **29 जनवरी, 2025 ई.** ) को अरुणोदयकाल से लेकर सूर्यास्त काल तक त्रिवेणी (संगम) में स्नान, दानादि का माहात्म्य रहेगा। अतः सारा दिन किसी भी समय स्नान किया जा सकता है क्योंकि कुम्भ योग के कारण वह पूरा दिन पवित्र माना जाता है।

**दानादि**—स्नानोपरान्त घृत सहित अन्नादि से आपूरित कुम्भ (घड़े) को वस्त्र, अलंकार, पुष्पपत्रों से सुसज्जित कर उसकी षोडश या पंचोपचार पूर्वक पूजन करके सुवर्ण, चाँदी या वस्त्र, धनादि की दक्षिणा सहित किसी सुपात्र ब्राह्मण को संकल्पपूर्वक दान करके, तदुपरान्त धर्म–परायण श्रद्धालुओं तथा साधु महात्माओं को यथाशक्ति दक्षिणा सहित भोजन कराने से अनेकों तीर्थों में जाने का तथा सैंकड़ों गोदान करने का फल मिलता है तथा मनुष्य के पितरों की आत्माएं सन्तुष्ट होती हैं।

## ❋ जो प्रयागराज न जा सके, वे पुण्यलाभ कैसे अर्जित करें ? ❋

जो लोग किसी कारणवश प्रयागराज तीर्थ पर जाने में असमर्थ हों, वे लोग अपने निवास स्थान (घर) पर ही स्नान के पात्र में गंगा एवं यमुना का निर्मल जल डालकर भगवान् विष्णु, सूर्य एवं वरुण मन्त्र पढ़कर एवं प्रार्थनापूर्वक अन्न, वस्त्र, कलश, तिल, गुड़, फलों का दान तथा **श्रीविष्णु सहस्रनाम, श्रीगङ्गा–स्तोत्र, श्रीगङ्गाष्टकम्, श्रीयमुनाष्टकम्, श्रीसरस्वतीस्तोत्र, आदित्यहृदय स्तोत्र, सूर्य के द्वादशनाम, श्रीशिव–स्तोत्र** आदि स्तोत्रों का पाठ करना शुभ होता है। इस प्रकार विधिपूर्वक स्नान, जप–पाठ करने से अनेकशः कायिक एवं मानसिक पापों का क्षय होता है। श्रीविष्णु पुराण में कहा गया है कि 'हजारों अश्वमेघ यज्ञ करने से, सौ वाजपेय–यज्ञ करने से और लाख बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से जो फल प्राप्त होते हैं, वह फल केवल प्रयाग के कुम्भ के स्नान–दानादि से प्राप्त हो जाते हैं–

**अश्वमेध सहस्राणि वाजपेय शतानि च। लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नानेन तत्फलम्।।**

# संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्र-सम्मत निर्णय-वि.संवत् २०८१

( लेखक :-पं. विवेक शर्मा, जालन्धर ( पं. )-144008 ) ✆ 9417291325

## (1) श्री (लक्ष्मी) पंचमी (12 अप्रैल, शुक्रवार)

यह व्रत चतुर्थी विद्धा चैत्रशुक्ल-पंचमी को किया जाता है। धर्मसिन्धु अनुसार-

**''पंचमी शुक्लपक्षे कृष्णपक्षे कर्ममात्रेऽपि चतुर्थीविद्धा ग्राह्या।।''**

पुरुषार्थ-चिन्तामणि अनुसार भी स्कन्द व्रत के अतिरिक्त सभी व्रतों में पंचमी चतुर्थीविद्धा ली जाए। यथा-

**''सा (पंचमी) च स्कन्दोपवासाति-रिक्तोपवासे पूर्व (चतुर्थी) विद्धा ग्राह्या।।''**

इसी कारण **'श्री ( लक्ष्मी ) पंचमी'** व्रत चतुर्थीविद्धा पंचमी 12 अप्रैल, 2024 ई. को लिखा गया है।

## (2) स्कन्द-षष्ठी (13 अप्रैल, शनिवार)

पंचमीविद्धा चैत्र शुक्ल षष्ठी के दिन यह व्रत किया जाता है। **इस वर्ष चैत्र शुक्ल पंचमी षष्ठी तिथि को विद्ध कर रही है। अतः स्कन्द-षष्ठी का व्रत 13 अप्रैल, 2024 ई. को होगा।**

## (3) श्रीजानकी (सीता) जयन्ती (16 मई, बृहस्पतिवार)

श्री सीता जी का जन्म वैशाख शुक्ल नवमी, मंगलवार, पुष्य-नक्षत्र कालीन तथा मध्याह्न के समय हुआ था-

**''पुष्यान्वितायां तु कुजे नवम्यां श्रीमाधवे मासि सिते हलाग्रतः।।**
**भुवोऽर्चयित्वा जनकेन कर्षणे सीता-विरासीत् व्रतमत्र कुर्यात्।।''**

अतएव इसदिन व्रत रखकर श्रीजानकी-राम का संकल्पपूर्वक जन्मोत्सव तथा पूजन करना चाहिए।

इस वर्ष यह नवमी अष्टमीयुता वाले दिन ( **16 मई, 2024 ई.** ) मध्याह्न-काल को व्याप्त है। 17 मई, शुक्रवार को यह मध्याह्न-व्यापिनी नहीं है। अतः शास्त्र-नियमानुसार यह पर्व अष्टमीयुता तथा मध्याह्न-व्यापिनी नवमी वाले दिन **16 मई, बृहस्पतिवार** को मनाया जाएगा।

## (4) श्रीनृसिंह-जयन्ती (21 मई, मंगलवार)

**'धर्मसिन्धु'** नामक ग्रन्थानुसार सूर्यास्तकाल-व्यापिनी वैशाख शुक्ल चतुर्दशी के दिन **'नृसिंह जयन्ती'** मनाई जाती है-

**''वैशाखशुक्ल चतुर्दशी नृसिंहजयन्ती। सा सूर्यास्तमयकालव्यापिनी ग्राह्या।। दिन-द्वये तव्याप्तौ तदव्याप्तौ वा परैव।। स्वाती-नक्षत्र-शनिवारादियोगे सातीव-प्रशस्ता।।'**

(दोनों दिन सूर्यास्त काल में चतुर्दशी की व्याप्ति या अव्याप्ति की स्थिति में यह जयन्ती दूसरे दिन होगी।)

इस वर्ष वैशाखशुक्ल चतुर्दशी **21 मई, मंगलवार** को ही सूर्यास्त-व्यापिनी है, अतः यह जयन्ती इसी दिन मनाई जाएगी।

## (5) श्रीसत्यनारायण व्रत (वैशाख-पूर्णिमा) (23 मई, गुरुवार)

श्रीसत्यनारायण व्रत प्रत्येक मास की प्रदोषव्यापिनी एवं चन्द्रोदय-व्यापिनी पूर्णिमा में किया जाता है। क्योंकि यह नक्तव्रत है, इसे नक्तव्रत की भान्ति प्रदोषकाल में करने का विधान है। दोनों दिन प्रदोषकाल की व्याप्ति अथवा अव्याप्ति की परिस्थिति में यह व्रत दूसरे दिन ग्राह्य होगा। यथा-

**सूर्यास्तोत्तर-त्रिमुहूर्त्तात्मक प्रदोषव्यापिनी तिथिर्नक्ते ग्राह्या। अन्यतरदिने तद्याप्तौ तदेकदेशस्पर्शे वा सैव ग्राह्या।।..........दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ परा।। दिनद्वये प्रदोषव्याप्त्यभावे परत्रैव।।**

अर्थात् पूर्णिमा की दोनों दिन प्रदोष में व्याप्ति हो, तो अगले दिन तथा दोनों दिन प्रदोषकाल की व्याप्ति के अभाव में भी अगले दिन ही व्रत हेतु ग्रहण करें।

इस वर्ष वैशाखपूर्णिमा दो दिन-22 मई, 2024 ई. को पूर्ण रूप से तथा 23 मई, 2024 ई. को प्रदोष के प्रारम्भक्षण (सूर्यास्तकाल) को स्पर्शमात्र कर रही है। लेकिन पूर्णिमा अगले दिन (23 मई, 2024 ई.) गौण प्रदोषकाल-सायाह्न को पूरा व्याप्त कर रही है। अतः यह व्रत इस दिन ही होगा। **कालमाधवकार** ने तो नक्तव्रत की तिथि की दोनों दिन प्रदोष में अव्याप्ति होने पर भी यह व्रत दूसरे दिन ही करने का आग्रह किया है-

**''प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथिः व्याप्तिर्दिनद्वये।**
**अव्याप्तिर्वाथवांशेन व्याप्तिः स्यात्सर्वथोत्तरा।।''**

## (6) श्रीकूर्म-जयन्ती (23 मई, बृहस्पतिवार, 2024 ई.)

सायं व्यापिनी वैशाख-पूर्णिमा के दिन यह जयन्ती मनाई जाती है। यदि पूर्णिमा दोनों दिन सायं-व्यापिनी हो या दोनों दिन ही दिन सायंव्यापिनी न हो तो दूसरे दिन यह जयन्ती (पर्व) होगी।

इस वर्ष वैशाख पूर्णिमा दो दिन-सायं-व्यापिनी होने (22 एवं 23 मई) के बावजूद **'श्रीकूर्म-जयन्ती'** पर्व **23 मई, 2024 ई.** को मनाया जाएगा।

## (7) अपरा एकादशी व्रत (ज्येष्ठ कृष्ण ११) (2/3 जून)

यह एकादशी 2 जून, 2024 ई. को अरुणोदय के समय दशमी तिथि से विद्धा है, अतः वैष्णव लोग 2 जून, 2024 ई. के दिन एकादशी व्रत न करके 3 जून, 2024 ई. को करेंगे। लेकिन स्मार्त्त लोग, जो '**अरुणोदये दशमीवेध**' वर्जित नहीं करते (मानते), वे तो 2 जून, 2024 ई. को ही यह व्रत रखेंगे। **गरुड़पुराण** का वाक्य है–

**''दशमीशेष–संयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः।**
**नैवोयोष्यं वैष्णवेन तद्दिनैकादशीव्रतम्।।''**

1 जून को पंजाब, हिमाचल आदि में अरुणोदयकाल 2 जून के सूर्योदय से 1घं.–36मिं. पहले 3घं.–52मिं. (भा.स्टैं.टा.) पर प्रारम्भ हो जाएगा।

## (8) रम्भा-तृतीया व्रत (8 जून, शनिवार)

ज्येष्ठ शुक्ल 'पूर्व (द्वितीया) विद्धा' तृतीया तिथि के दिन रम्भा-तृतीया व्रत किया जाता है–'**ज्येष्ठ शुक्ल तृतीयायां रम्भाव्रतम्। सा पूर्व-विद्धा ग्राह्या।।**'–(धर्मसिन्धुः)

इस वर्ष 8 जून, शनिवार, 2024 ई. को तृतीया द्वितीयविद्धा है, **अतः यह व्रत 8 जून, शनिवार को ही शास्त्रसम्मत है।**

## (9) निर्जला एकादशी व्रत (ज्येष्ठ शुक्ल ११)–(18 जून)

इस वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी पहले दिन षष्टि–घट्यात्मक (पूरा दिन–६० घड़ी) है और दूसरे दिन भी वह (एकादशी) विद्यमान् है। यहां द्वादशी का क्षय भी नहीं है। इस स्थिति में नारद के निम्न वाक्यानुसार स्मार्त्त और वैष्णव–दोनों को उत्तरवर्त्ती द्वादशीयुता एकादशी के दिन ही **निर्जला एकादशी** का व्रत करना चाहिए–

**''सम्पूर्णेकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा।**
**सर्वैरेवोत्तरा कार्या परतो द्वादशी यदि।।''**

**इस शास्त्र-निर्णयानुसार इस वर्ष 18 जून, 2024 ई. को ही स्मार्त्त और वैष्णव–दोनों का ही एकादशी व्रत लगाया गया है।**

## (10) कुमार-षष्ठी (11 जुलाई, बृहस्पतिवार)

कुमार (स्कन्द) षष्ठी व्रत पूर्व (पंचमी) विद्धा षष्ठी के दिन किया जाता है।–'**षष्ठी स्कन्दव्रते पूर्वविद्धा।।**'–(धर्मसिन्धु)।। वसिष्ठ जी अनुसार भी–

''कृष्णाष्टमी स्कन्दषष्ठी शिवरात्रिश्चतुर्दशी।
एता पूर्वयुताः कार्याः तिथ्यन्ते पारणं भवेत्।।

**इस वर्ष आषाढ़ शुक्ल षष्ठी 11 जुलाई, बृहस्पतिवार, सन् 2024 ई. को पंचमीविद्धा है, अतः यह व्रत इसी दिन शास्त्र-सम्मत है।**

## (11) विवस्वत सप्तमी (12 जुलाई, शुक्रवार)

यह पर्व पूर्वविद्धा आषाढ़ शुक्ल सप्तमी में मनाया जाता है। '**ब्रह्मपुराण**' का वाक्य है–'**पूर्वविद्धा द्विजश्रेष्ठ, कर्त्तव्या सप्तमीतिथिः।**'

इस वर्ष यह सप्तमी 12 जुलाई, 2024 ई. को पूर्व (षष्ठी) विद्धा है, **अतः इस वर्ष यह पर्व 12 जुलाई, शुक्रवार को ही मनाया जाएगा।**

## (12) श्रीसत्यनारायण व्रत (आषाढ़ शुक्ल)
### (20 जुलाई, शनिवार)

श्रीसत्यनारायण व्रत प्रदोषव्यापिनी एवं चन्द्रोदय–व्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है। इस वर्ष आषाढ़ पूर्णिमा 21 जुलाई, 2024 ई. को दुपैहर बाद 15घं.–47मिं. पर समाप्त हो रही है, जिस कारण यह इस दिन (सूर्यास्त से पहिले) प्रदोष–व्यापिनी नहीं होगी। इस दिन या एक दिन पहिले (20 जुलाई) को पंजाब हिमाचल, जम्मू आदि पश्चिमोत्तर प्रान्तों में **प्रदोषकाल लगभग 19घं.–27मिं. से 21घं.–30मिं. तक रहेगा।**

ता. 20 जुलाई को पूर्णिमा 18घं.–00मिं. से प्रारम्भ हो रही है, जिससे इसी दिन प्रदोषव्यापिनी एवं रात्रि–व्यापिनी (चन्द्रोदय) पूर्णिमा होगी। अतएव इस मास का **श्रीसत्यनारायण व्रत 20 जुलाई, शनिवार को ही रखना प्रशस्त होगा।**

## (13) ऋक् उपाकर्म (19 अगस्त, सोमवार)

ऋग्वेदियों के उपाकर्म के तीन मुख्य काल माने गए हैं–( 1 ) **श्रावण शुक्ल में श्रवण नक्षत्र, ( 2 ) श्रावण शुक्ल पंचमी, ( 3 ) श्रावण शुक्ल में हस्त नक्षत्र।**

यदि श्रवण नक्षत्र दो दिन हो और यदि पहिले दिन सूर्योदय से प्रवृत्त हुआ श्रवण दूसरे दिन सूर्योदय के अनन्तर तीन मुहूर्त्त तक हो, तो उपाकर्म दूसरे दिन ही करना चाहिए। क्योंकि यहाँ धनिष्ठा नक्षत्र का योग (सम्पर्क) श्रेष्ठ माना गया है, परन्तु यदि श्रवण दूसरे दिन त्रिमुहूर्त्तन्यून और पहिले दिन श्रवण पूरा दिन व्याप्त हो, तो पहिले दिन ही उपाकर्म किया जाता है। यदि पहिले दिन सूर्योदय के समय श्रवण नक्षत्र न हो तथा दूसरे दिन सूर्योदय के बाद दो मुहूर्त्त भी श्रवण–नक्षत्र हो, तो दूसरे दिन ही उपाकर्म करना होगा, क्योंकि उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का वेध निषिद्ध है। यथा–'...... **पूर्वदिने सूर्योदये नास्ति परदिने सूर्योदयोत्तरं मुहूर्त्तद्वयं वर्तते तदोत्तरदिने एवं।।**'

इस वर्ष श्रावण पूर्णिमा के दिन श्रवण नक्षत्र यद्यपि त्रिमुहूर्त्तन्यून है तथा पहिले दिन (18 अगस्त) उत्तराषाढ़ा नक्षत्र से विद्ध है, परन्तु 19 अगस्त (अगले दिन) दो मुहूर्त्त से अधिक होने के कारण ऋग्वेदियों के श्रावणी उपाकर्म इसी दिन ( **19 अगस्त, सोमवार** ) होंगे। गर्ग का भी यह वाक्य है–

**'उदयव्यापिनी त्वेव विष्ण्वर्क्षे घटिकाद्वयम्। तत्कर्म सकलं ज्ञेयं–तस्य पुण्यं त्वनन्तकम्।।'**

(अर्थात् यदि सूर्योदय में श्रवण की दो घड़ी हो, तो वह कर्म सफल जानना चाहिए और उसका अनन्त फल जानना चाहिए।)

**अतः 19 अगस्त, सोमवार को त्रिमुहूर्त्तन्यून होने के बावजूद परन्तु द्विमुहूर्त्त से अधिक होने से ऋक् आदि उपाकर्म इसी दिन होंगे।**

## (14) रक्षा-बन्धन (19 अगस्त, सोमवार)

रक्षाबन्धन का पवित्र कार्य भद्रारहित अपराह्ण व्यापिनी पूर्णिमा में करने का शास्त्र विधान है–

**'भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा·······।'**

इस वर्ष 19 अगस्त, 2024 ई., सोमवार को श्रावण-पूर्णिमा के दिन रक्षाबन्धन का पवित्र कार्य होगा, परन्तु इस दिन दोपहर $1^{\text{घं.}}$–$31^{\text{मिं.}}$ ($13^{\text{घं.}}$–$31^{\text{मिं.}}$) तक भद्रा व्याप्ति (पाताल में) रहेगी।

**स्पष्ट है–शास्त्रानुसार तो 19 अगस्त को दोपहर 1 बजकर 31 मिनट ( $13^{\text{घं.}}$–$31^{\text{मिं.}}$ ) के बाद ही अपराह्ण-काल में रक्षाबन्धन का शुभ कार्य करना प्रशस्त होगा।**

**[ पंजाब, हिमाचल, जम्मू आदि प्रदेशों में 19 अगस्त, 2024 ई. को दोपहर $13^{\text{घं.}}$–$48^{\text{मिं.}}$ से $16^{\text{घं.}}$–$25^{\text{मिं.}}$ तक अपराह्ण-काल रहेगा। ]**

***ध्यान दें***–*पंजाब, हरियाणा, जम्मू आदि कुछ प्रान्तों में प्राचीन समय से ही परम्परा-स्वरूप उदय-व्यापिनी पूर्णिमा के दिन प्रातःकाल ही भद्रा आदि किसी अशुभ समय का विचार न करते हुए रक्षाबन्धन पर्व मनाने का प्रचलन है। जोकि किसी भी रूप से शास्त्र सम्मत नहीं है। भद्रा का विचार तो रक्षाबन्धन में करना ही चाहिए, जिसे हमारे शास्त्रों ने अशुभ एवं त्याज्य माना है।*

***परन्तु अति आवश्यक परिस्थितिवश*** *(यात्रा-भ्रमण सुविधा उपलब्ध न होने पर, फौज आदि में, ड्यूटी आदि कार्यों में आदि) यदि भद्राकाल में ही रक्षाबन्धन आदि शुभ कार्य करने पड़ें, तो शास्त्रकारों ने भद्रा मुखकाल को छोड़कर भद्रा पुच्छकाल में रक्षाबन्धनादि शुभ कार्य करने की आज्ञा दी है। भविष्य-पुराणानुसार भद्रा-पुच्छकाल में किए गए कृत्य में सिद्धि एवं विजय प्राप्त होती है, जबकि भद्रामुख में कार्य का नाश होता है–*

**'पुच्छे जयावहाः, मुखे कार्य विनाशाय··········।'**

*यहां यह समझ लेना चाहिए कि मुहूर्त्त एवं संहिता ग्रन्थों में जो 'भद्रा के मुख को अशुभ और पुच्छ को शुभ लिखा गया है' वह आपात् स्थिति (अन्य विकल्प न उपलब्ध होने पर) के लिए ही है, अन्यथा तो भद्रा का मुख के अतिरिक्त शेष सारा भाग निर्दोष मानना पड़ेगा, जोकि पूरी भद्रा को सदोष बतलाने वाले असंख्य वाक्यों के प्रतिकूल होगा। इसलिए यह* ***स्पष्ट है*** *कि भद्रा के मुखमात्र को अशुभ और शेष भाग को निर्दोष मानने वाला नियम केवल अत्यावश्यकता की स्थिति में ही ग्राह्य है। आपात्स्थिति में भद्रामुख के अलावा शेष पूरा भाग यद्यपि ग्राह्य है, फिर भी शास्त्रकारों ने भद्रापुच्छ को प्राथमिकता दी है–***'पुच्छे ध्रुवो जयः'***। आदि वाक्यों से यही अभिप्राय निकलता है कि भद्रा के पुच्छकाल को हमेशा शुभ माना जाए।*

*इसी कारण यदि अत्यन्त आवश्यक परिस्थिति हो, तो 19 अगस्त को प्रातः 9घं.–51मिं. से 10घं.–54मिं. तक–भद्रापुच्छ काल में यह शुभ कार्य किया जा सकता है, परन्तु 10घं.–54मिं. से 12घं.–38मिं. तक का समय–भद्रामुख-काल (रक्षाबन्धन कृत्य में) का विशेष रूप से त्याग करें।*

*रक्षा-सूत्र (राखी) बान्धते समय निम्नलिखित मन्त्र पढ़ना चाहिए–*

***येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।***
***तेन् त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।***

## (15) श्रीकृष्ण-जयन्ती योग (भाद्र. कृष्ण ८) (26 अगस्त, 2024 ई.)

अर्धरात्रिव्यापिनी भाद्र. कृष्ण अष्टमी को चन्द्रोदय के समय रोहिणी नक्षत्र से संयोग होने पर श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी को **'श्रीकृष्ण-जयन्ती'** के नाम से भी संबोधित किया जाता है। **इस वर्ष 26 अगस्त, सोमवार को अर्धरात्रिव्यापिनी चन्द्रोदयकालीन अष्टमी रोहिणीयुता है। अतएव यहाँ 'श्रीकृष्ण-जयन्ती' नामक पुण्यतम योग बना है।**

अधिक विस्तार से माहात्म्य आदि जानने के लिए कृपया गतवर्षीय पंचांगदिवाकर (वि. संवत् 2080) के पृष्ठ संख्या 23 का अवलोकन करें।

## (16) दूर्वाष्टमी व्रत (26 अगस्त, सोमवार)

सिंहस्थ सूर्य की कालावधि में रौहिण मुहूर्त्त भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को सन्तान सुख एवं वंशवृद्धि की कामना से यह व्रत किया जाता है। शास्त्रानुसार जिस किसी वर्ष में भाद्र. शुक्ल-अष्टमी के समय कन्या का सूर्य (आश्विन मास) आ जाए अथवा अगस्त्य तारा का उदय हो जाए, तो उस स्थिति में इस व्रत का पालन पूर्ववर्त्ती किसी अन्य मास की अष्टमी में (भाद्रपद कृष्ण या श्रावण शुक्लाष्टमी) करना चाहिए, जब अगस्त्य तारा अदृश्य (अस्त) हुआ हो।

**इदं दूर्वापूजनं व्रतं कन्याऽर्केऽगस्त्योदये च वर्ज्यम्।।** (धर्मसिन्धु)
**भाद्रशुक्लाष्टम्यां अगस्त्योदये भाविनी सति पूर्व कृष्णाष्टम्यामेव कूर्यात्।।**
(हेमाद्रि)

इस वर्ष भाद्र. शुक्लाष्टमी 11 सितम्बर (सिंहऽर्के) को है, परन्तु भारत के अधिकतर क्षेत्रों में 4 सितम्बर या इससे पहिले ही अगस्त्योदय हो चुका होगा। **अतएव शास्त्र-निर्देशानुसार दूर्वाष्टमी का व्रत पूर्ववर्त्ती भाद्र. कृष्ण की रोहिण-व्याप्त अष्टमी के दिन 26 अगस्त, सोमवार को करना शुभ एवं शास्त्र-सम्मत होगा।**

## (17) साम-उपाकर्म (5 सितम्बर, बृहस्पतिवार)

सामवेदियों का भाद्रपद शुक्ल पक्ष में अपराह्ण-व्यापिनी हस्तनक्षत्र में उपाकर्म का मुख्यकाल है। शास्त्रानुसार यदि हस्तनक्षत्र केवल पहले ही दिन अपराह्ण-काल को

पूर्णरूपेण या आंशिकरूपेण व्याप्त करे तो उपाकर्म पहले दिन ही होगा। यथा–

**'पूर्वदिन एवापराह्ण-पूर्णव्याप्तौ पूर्वत्रैव।।'**

इस वर्ष भाद्रपद शुक्लपक्ष में हस्त नक्षत्र केवल **5 सितम्बर, बृहस्पतिवार** को ही अपराह्ण-व्यापिनी है। **अतः सामवेदियों का उपाकर्म इसी दिन होगा।**

## (18) श्रीवराह-जयन्ती (6 सितम्बर, शुक्रवार)

भाद्र. शुक्ल तृतीया जिस दिन अपराह्ण-व्यापिनी हो, उस दिन 'श्रीवराह-जयन्ती' मनाई जाती है। तृतीया तिथि यदि दो दिन अपराह्णव्यापिनी हो अथवा न हो तो दूसरे दिन यह जयन्ती होगी–**'रम्भाख्यां वर्जयित्वा तु तृतीयां द्विजसत्तम। अन्येषु सर्वकार्येषु गणयुक्ता प्रशस्यते।।'** (ब्रह्मवैवर्त पुराण)

इस वर्ष भाद्र. शुक्ल तृतीया दो दिन–5 एवं 6 सितम्बर को अपराह्णव्यापिनी है। **अतः शास्त्रनिर्देशानुसार यह जयन्ती 6 सितम्बर, शुक्रवार को मनाई जाएगी।**

**(5/6 सितम्बर को पंजाब, हिमाचल आदि में अपराह्ण-काल लगभग 13$^{\text{घं.}}$–41$^{\text{मिं.}}$ से 16$^{\text{घं.}}$–11$^{\text{मिं.}}$ तक रहेगा।)**

## (19) कलंक-चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषेध) (6 या 7 सितम्बर)

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी के दिन चन्द्रदर्शन होने पर मिथ्याकलंक लगता है। इसका अभिप्राय यह है कि यदि चतुर्थी तिथि में चन्द्र-उदय होकर पंचमी-तिथि तक वर्तमान हो (अर्थात् चन्द्र-अस्त पंचमी तिथि में हो), तो सिद्धिविनायक व्रत के दिन चन्द्रदर्शन करना या होना दोषकारक नहीं होता तथा यदि पहिले दिन सायंकाल से चतुर्थी तिथि की व्याप्ति हो जाए अर्थात् तृतीया में चन्द्रोदय होकर चतुर्थी तिथि व्याप्ति तक चन्द्रदर्शन हो (चन्द्र अस्त चतुर्थी तिथि में हो), तो चन्द्रदर्शन का दोष पहिले दिन होगा, चाहे उस दिन सिद्धिविनायक व्रत न भी हो। **निष्कर्ष यह है कि चतुर्थी में ही चन्द्रदर्शन का दोष है।** सिद्धिविनायक व्रत का इससे सम्बन्ध नहीं है जोकि मध्याह्न-व्यापिनी ग्राह्य होता है।

**चतुर्थ्यामुदितस्य पंचम्यां दर्शनं विनायकव्रत दिनेपि न दोषाय पूर्वदिने सायाह्नमारभ्य प्रवृत्तायां चतुर्थ्यां विनायकव्रताभावेपि पूर्वेद्युरेव चंद्रदर्शने दोष इति सिध्यति।..........इदानीं लोकास्तवेकतरपक्षाश्रयेण विनायक व्रतदिने एवं चंद्रं न पश्चयन्ति न तदयकाले दर्शनकाले वा चतुर्थीसत्त्वासत्त्वे नियमेनाश्रयन्ति।**

परन्तु इस उपरोक्त नियम की उपेक्षा करते हुए प्रचलित लोकमतानुसार महाराष्ट्र, गुजरातादि में लोग सिद्धिविनायक व्रत वाले दिन ही चन्द्रदर्शन का निषेध मानते हैं। चाहे उस दिन सायंकाल पंचमी तिथि व्याप्ति में ही चन्द्रास्त हो अर्थात् पंचमी तिथि तक चन्द्रदर्शन हो रहे हों। वे उदयकाल या दर्शनकाल में चतुर्थी होने या न होने पर चन्द्रदर्शन के नियम को नहीं मानते। जबकि पंजाब, हिमाचल, जम्मू, हरियाणादि उत्तरी भारत में चतुर्थी तिथि व्यापिनी में ही चन्द्रदर्शन का दोष मानते हैं।

इस वर्ष (वि. संवत् 2081) **'सिद्धि विनायक व्रत'** मध्याह्न-व्यापिनी **7 सितम्बर, शनिवार को है।** परन्तु चतुर्थी तिथि 6 सितम्बर, शुक्रवार की दोपहर 15$^{\text{घं.}}$–02$^{\text{मिं.}}$ से प्रारम्भ हो रही है तथा इसदिन चतुर्थी के समय ही रात्रि 20$^{\text{घं.}}$–20$^{\text{मिं.}}$ पर चन्द्रास्त होगा। जबकि 7 सितम्बर को चतुर्थी तिथि सायं 17$^{\text{घं.}}$–38$^{\text{मिं.}}$ तक ही है तथा इस दिन चन्द्रास्त 20$^{\text{घं.}}$–47$^{\text{मिं.}}$ पर होगा, जबकि उस समय पंचमी तिथि व्याप्त होगी। **इस प्रकार उत्तरी भारत में तो लोग शास्त्रनिर्देशानुसार 6 सितम्बर, शुक्रवार को ही चन्द्रदर्शन का निषेध मानेंगे।** परन्तु महाराष्ट्र आदि कुछ राज्यों में 7 सितम्बर, शनिवार को चन्द्रदर्शन निषेध का विचार करेंगे तथा कलंक चतुर्थी, पत्थर-चौथ आदि इसीदिन मनाई जाएगी।

## (20) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (आश्विन कृष्ण चतुर्थी)

चन्द्रोदय-व्यापिनी कृष्ण चतुर्थी को श्रीगणेश-चतुर्थी व्रत होता है। दोनों दिन चतुर्थी चन्द्रोदयव्यापिनी न हो तो यह व्रत दूसरे दिन होता है। इस वर्ष आश्विन कृष्ण चतुर्थी दोनों दिन चन्द्रोदयव्यापिनी नहीं है। इसलिए यहाँ **श्रीगणेशचतुर्थी व्रत दूसरे दिन 21 सितम्बर, 2024 ई., शनिवार को लिखा गया है।**

## (21) आश्विन कृष्ण षष्ठी/सप्तमी का महालयश्राद्ध

आश्विन कृष्णपक्ष (पितृपक्ष) में किए जाने वाले सभी श्राद्ध **'पार्वण-श्राद्ध'** कहलाते हैं। पित्तरों के निमित्त किए जाने वाले मृत्यु-तिथ्यनुसार सभी श्राद्ध अपराह्ण-व्यापिनी तिथि में करने की शास्त्राज्ञा है–

**पूर्वाह्णो वै देवानां मध्याह्ने मनुष्यणामपराह्ण पितृणाम्–श्रुति पूर्वाह्णे दैविकं श्राद्दमपराह्णे तु पार्वणम्।।** (याज्ञवल्क्य)

इस वर्ष षष्ठी एवम् सप्तमी–दोनों तिथियां 23 सितम्बर, 2024 ई. को ही अपराह्ण-व्यापिनी है। अतः स्पष्ट है–**इस वर्ष षष्ठी एवं सप्तमी–दोनों का महालय श्राद्ध 23 सितम्बर, सोमवार को ही होगा।**

[23 सितम्बर, 2024 ई. को पंजाब, हरियाणा आदि प्रान्तों में अपराह्ण-काल लगभग 13$^{\text{घं.}}$–32$^{\text{मिं.}}$ से 15$^{\text{घं.}}$–56$^{\text{मिं.}}$ तक रहेगा।]

## (22) एकादशी तिथि का महालय श्राद्ध (27 सितंबर, शुक्रवार)

जैसा कि ऊपर 'सप्तमी तिथि के महालय' के निर्णय में भी लिख चुके हैं कि पितृश्राद्ध (आश्विन कृष्णपक्ष) में किए जाने वाले श्राद्ध पार्वण-श्राद्ध हैं। इन श्राद्धों को अपराह्णव्यापिनी मृत्युतिथि में किया जाता है। यदि मृत्युतिथि दोनों दिन अपराह्ण में व्याप्त न हो तो पहले दिन श्राद्ध किया जाता है। यदि दोनों दिन मृत्युतिथि अपराह्ण को असमान रूप से व्याप्त करे (अर्थात् एक दिन कम और दूसरे दिन ज़्यादा अपराह्ण को व्याप्त करे) तो श्राद्ध उस दिन होगा जिस दिन तिथि अपराह्ण को ज़्यादा व्याप्त कर रही हो।

इस वर्ष आश्विन-कृष्ण एकादशी तिथि दो दिन (27 और 28 सितम्बर, 2024 ई. को) अपराह्नव्यापिनी है, अतः उपरोक्त नियमानुसार इस तिथि का श्राद्ध 27 सितम्बर, 2024 ई. को किया जाएगा, क्योंकि एकादशी इस दिन अपराह्नकाल के सम्पूर्ण भाग को व्याप्त कर रही है, जबकि 28 सितम्बर को अपेक्षाकृत कम भाग को व्याप्त कर रही है।

**ध्यान दें–इस वर्ष (सं. 2081 में) श्राद्धपक्ष में 28 सितम्बर, 2024 ई. को कोई तिथि श्राद्ध नहीं होगा।**

## (23) सोम प्रदोष व्रत (आश्विन कृष्ण)

प्रत्येक पक्ष की प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी वाले दिन '**प्रदोष व्रत**' किया जाता है। सूर्यास्त के बाद त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी त्रयोदशी ग्रहण करनी चाहिए। प्रदोषव्रत नक्तव्रत है। यदि दो दिन त्रयोदशी प्रदोषव्यापिनी हो तो यह व्रत दूसरे दिन ग्रहण करना चाहिए। यथा–**दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ साम्येन तदेकदेशस्पर्शे वा उत्तरा।।**

'**कालमाधव**' आदि के अनुसार भी त्रयोदशी दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी हो तो यह व्रत दूसरे ही दिन किया जाएगा–

**प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथिः व्याप्तिः दिनद्वये।**
**अव्याप्तिर्वाथवांशेन व्याप्तिः स्यात्सर्वथोत्तरा।।**

इस वर्ष (सं. 2081 में) आश्विन कृष्ण त्रयोदशी 29 और 30 सितम्बर, 2024 ई.– दोनों दिन प्रदोष में विद्यमान् है (इन दिनों प्रदोषकाल लगभग 18$^{घं.}$–10$^{मिं.}$ से 20$^{घं.}$–37$^{मिं.}$ तक है)। यद्यपि दूसरे दिन 30 सितम्बर, 2024 ई. को त्रयोदशी प्रदोष को अपेक्षाकृत कम व्याप्त कर रही है, तथापि ''**दिनद्वये वाथवांशेन व्याप्तिः**'–निर्देशानुसार **यहाँ इस वर्ष त्रयोदशी-प्रदोष व्रत 30 सितम्बर को ही किया जाएगा। अपि च**–इसदिन त्रयोदशी '**गौण प्रदोषकाल**' माने जाने वाले सायाह्न को तो पूर्णतया व्याप्त कर ही रही है।

## (24) गजच्छाया योग (2 अक्तूबर, 2024 ई.)

आश्विन अमावस के दिन सूर्य एवं चन्द्रमा–दोनों हस्त नक्षत्र में होने से '**गजच्छाया योग**' बन रहा है। इस योग में श्राद्ध, दानादि करने से महान् फल की प्राप्ति होती है। यथा–

'**हस्तनक्षत्रे सूर्ये साति चान्द्रहस्त नक्षत्रयुतामावस्या गजच्छाया तस्यां श्राद्धदानादि कार्यम्।।** (धर्मसिन्धुः)

## (25) उपाङ्ग ललिता व्रत (7 अक्तूबर, सोमवार)

यह व्रत अपराह्णव्यापिनी आश्विन शुक्ल पंचमी के दिन किया जाता है–

''**अत्र पंचमी अपराह्नव्यापिनी ग्राह्या, अपराह्नस्यैव तत्पूजाकालत्वोपपत्तेः।**' (धर्मसिन्धु)

**इस वर्ष पंचमी 7 अक्तूबर, सोमवार को ही अपराह्ण-व्यापिनी है। अतः यह व्रत इसी दिन होगा।**

## (26) महानवमी (आश्विन शुक्ल ९)

आश्विन शुक्ल नवमी के दिन महानवमी होती है। यह दो प्रकार की है–(1) पूजा एवं उपवास के लिए, (2) बलिदान एवं होम हेतु।

पूजा-उपवासार्थ अष्टमीविद्धा नवमी और बलिदान/होमादि हेतु दशमीविद्धा नवमी ली जाती है। धर्मसिन्धु का यह वाक्य देखिए–''**महानवमी तु बलिदान व्यतिरिक्तविषये पूजोपोषणादौ अष्टमीविद्धा ग्राह्या।।**''''**नवमीप्रयुक्त महाबलिदाने तु दशमीविद्धा।।**''

इस वर्ष 11 अक्तू., 2024 ई. को नवमी अष्टमीविद्धा और 12 अक्तूबर, 2024 ई. को दशमीविद्धा है। अतः शास्त्रनिर्देशानुसार **इस वर्ष पूजा-व्रत-उपवासार्थ महानवमी 11 अक्तूबर, 2024 ई. को और बलिदान-होमादि के लिए 12 अक्तू., 2024 ई. को होगी।**

## (27) पापांकुशा एकादशी व्रत (आश्विन शुक्ल ११)

'धर्मसिन्धुकार' अनुसार एकादशी तिथि मुख्यतः दो प्रकार की होती है–(1) **विद्धा** और (2) **शुद्धा**। (1) सूर्योदय काल में दशमी का वेध हो अथवा अरुणोदयकाल (सूर्योदय से लगभग 4 घड़ी पूर्व) में एकादशी तिथि दशमी द्वारा विद्ध हो, तो वह (एकादशी) विद्धा कहलाती है। (2) अरुणोदय-काल में दशमी तिथि के वेध से रहित एकादशी हो तो उसे शुद्धा तिथि माना जाता है।

प्रायः अधिकांश शास्त्रों में दशमी से युक्त एकादशी का व्रत करने का निषेध माना गया है। परन्तु द्वादशी का क्षय हो जाने पर स्मार्त्तों (गृहस्थियों) को दशमीयुता एवं वैष्णव सम्प्रदाय वालों को द्वादशी-त्रयोदशीयुता एकादशी के दिन व्रत करना चाहिए। इस सम्बन्ध में पद्मपुराण का वाक्य है–

**''एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी।**
**त्र्यहःस्पृक् तदहोरात्रं नोपोष्यं तत्सुतार्थिभिः।।''**

उपरोक्त प्रमाणानुसार 11, 12, 13 तिथियों से मिश्रित दिन में स्मार्त्तों (गृहस्थियों) के व्रत का निषेध और वैष्णवों के व्रत का विधान है। इस स्थिति में दशमीमिश्रित एकादशी में व्रत करने का स्पष्ट निर्देश 'निर्णयसिन्धुः' के इस वाक्य में भी है–

'**दशम्यैकादशीविद्धा द्वादशी च क्षयं गता। क्षीणा सा द्वादशी.........। गृहिणः पूर्वत्रोपवासः।।**'

अतः शास्त्रों में प्रकारान्तरेण स्मार्त्तों को सूर्योदयवेधवती दशमी के दिन एकादशी व्रत करने की आज्ञा दी है, जोकि कण्वस्मृति के सामान्य नियम '**अरुणोदयवेलायां दशमीसंयुता यदि। तत्रोपोष्या द्वादशी स्यात् त्रयोदश्यां तु पारणम्।**' के विरुद्ध है।

परन्तु शास्त्रों में स्मार्त्तों के लिए त्रयोदशी में पारणा भी सर्वथा वर्जित मानी गई है। **यदि द्वादशी तिथि के क्षय की स्थिति में स्मार्त्त ( गृहस्थियों )–वैष्णवों का व्रत एक ही दिन कर दिया जाए तो स्मार्त्तों को भी व्रत की पारणा त्रयोदशी में करनी पड़ेगी।**

निर्णयसिन्धु में भी '**ऋष्यशृंग**' ने अन्य विकल्प के अभाव में स्मार्त्तों को दशमीयुता एकादशी में व्रत करने की अनुमति दी है–

**''पारणाहे न लभ्येत द्वादशी कलयाऽपि चेत्।**
**तदानीं दशमीविद्धापि–उपोष्यै एकादशी तिथिः।।''**

**इस प्रकार उपरोक्त शास्त्रविवेचन से स्पष्ट है कि द्वादशी तिथि का क्षय होने के कारण ही स्मार्त्तों ( गृहस्थियों ) का 'पापांकुशा एकादशी व्रत' 13 अक्तू., 2024 ई. को तथा वैष्णवों का एकादशी व्रत 14 अक्तू., 2024 ई. को लिखा गया है।**

## (28) शरद् पूर्णिमा व्रत (16 अक्तूबर, बुधवार)

प्रदोष एवं निशीथव्यापिनी आश्विन पूर्णिमा में शरद् पूर्णिमा व कोजागर व्रत होता है। यदि पहले दिन निशीथव्यापिनी हो और दूसरे दिन प्रदोषव्यापिनी न हो तो यह व्रत पहले दिन ही करना चाहिए। यथा–

**आश्विनपौर्णमास्यां कोजागर व्रतम्।। सा पूर्वत्रैव निशीथव्याप्तौ पूर्वा।।**

इस वर्ष यह तिथि 16 अक्तूबर, 2024 ई. को पूर्णतया निशीथ (अर्धरात्रि) को व्याप्त करती है। 17 अक्तूबर, 2024 ई. को तो यह प्रदोष को स्पर्श भी नहीं कर रही। **अत: 16 अक्तूबर, 2024 ई. को ही ये दोनों पर्व होंगे।**

## (29) श्रीसत्यनारायण व्रत (आश्विन पूर्णिमा)

सत्यनारायण व्रत नक्तव्रत है। यह प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा के दिन होता है। इस वर्ष आश्विन पूर्णिमा किसी भी दिन (16 या 17 अक्तूबर, 2024 ई. को) प्रदोष काल (सूर्यास्तकाल) को स्पर्श तक नहीं कर रही। लेकिन अगले दिन 17 अक्तूबर, 2024 ई. को गौण प्रदोषकाल सायाह्न को कुछ समय के लिए व्याप्त कर रही है। अत: यह व्रत इस दिन ( **17 अक्तूबर** ) ही होगा। '**कालमाधवकार**' ने भी नक्तव्रत की तिथि की दोनों दिन प्रदोष में अव्याप्ति होने पर यह व्रत दूसरे दिन ही माना है–

**'प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथिः व्याप्तिर्दिनद्वये।**
**अव्याप्तिर्वाथर्वांशेन व्याप्तिः स्यात्सर्वथोत्तरा।।'**

## (30) गोवत्स–द्वादशी (28 अक्तूबर, सोमवार)

प्रदोषव्यापिनी कार्तिक कृष्ण द्वादशी में '**गोवत्स–द्वादशी**' मनाई जाती है। इस वर्ष कार्तिक कृष्ण द्वादशी **28 अक्तूबर, 2024 ई.** को ही '**प्रदोषव्यापिनी**' है। अत: यह व्रत/पूजन इसीदिन होगा।

## (31) दीपावली (महालक्ष्मी पूजन) निर्णय (1 नवं., शुक्रवार)

कृपया इसका विस्तृत निर्णय हेतु आगामी पृष्ठ नं. 27 का अवलोकन करें।

## (32) भीष्मपंचक प्रारम्भ (कार्तिक शुक्ल एकादशी)

कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक का काल '**भीष्मपंचक**' कहलाता है। शास्त्रों में भीष्मपंचक व्रत का अनुष्ठान केवल पाँच दिन (का.शु. ११ से पूर्णिमा तक) निर्दिष्ट है। इन पाँच दिनों में व्रताचरणपूर्वक पूर्वाह्ण में विष्णुपूजा और मध्याह्न में भीष्मपितामह के लिए एकोद्दिष्टश्राद्ध किया जाता है। यदि शुद्धा एकादशी से उदयकालिक पूर्णिमा तक की अवधि में कोई तिथि क्षय हो जाए और भीष्मपंचकों के दिनों की संख्या चार ही रह जाए, तब शास्त्रकारों ने यह परामर्श दिया है कि दशमीविद्धा एकादशी से ही यह व्रत प्रारम्भ करके शुद्ध (जिससे चतुर्दशी का वेध न हो) उदयकालिक पूर्णिमा के दिन ही इसे समाप्त कर लेना चाहिए। इसी प्रकार, यदि इन पाँच तिथियों (एका. से पूर्णिमा तक) में से किसी एक तिथि की वृद्धि हो जाने से भीष्मपंचकों के 6 दिन बनते हो, तो शुद्ध एकादशी वाले दिन से प्रारम्भ करके चतुर्दशी–विद्धा पूर्णिमा के दिन ही भीष्मपंचकों को समाप्त करना चाहिए।–''.......**यदि क्षयवशेन शुद्धैकादश्यामारम्भे पौर्णमास्यां पंचदिनात्मकव्रत–समाप्तिर्न घटते तदा विद्धैकादश्यामपि–आरम्भः**'। (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष कार्तिक शुक्लपक्ष में चतुर्दशी का क्षय है। अत: इस नियमानुसार **भीष्मपंचक का प्रारम्भ यहाँ दशमीयुता एकादशी के दिन 11 नवम्बर, 2024 ई. को लिखा गया है।**

## (33) पद्मक योग (15 नवम्बर)

कार्तिक पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र पर और सूर्य विशाखा नक्षत्र पर हो, तो '**पद्मक**' नामक योग बनता है, इस योग में किसी भी तीर्थस्थान परन्तु विशेषत: तीर्थराज **पुष्कर ( राजस्थान )** पर स्नान–दान का विशेष माहात्म्य माना गया है।

**विशाखासु यदा भानुः कृतिकासु च चन्द्रमा।**
**स योगः पद्मको नाम पुष्करे स्वाति दुर्लभः।।** (पद्मपुराण)

इसदिन सूर्य एवं गुरु–स्तोत्र, सूर्यगायत्री एवं गुरुगायत्री मन्त्रों का पाठ तथा दोनों ग्रहों के सम्बन्ध में यथाशक्ति दान, जप तथा कृतिकास्वामी (विश्वस्वामी सूर्य) के दर्शन किए जाएं, तो ब्राह्मण सात जन्म तक वेद परायण और धनाढ्य होता है–

**कार्तिक्यां कृतिका योगे च कुर्यात् स्वामिदर्शनम्।**
**सप्तजन्म भवेद् विप्रो धनाढ्यो वेदपारगः।।** (काशीखण्ड)

वि. संवत् 2081 अर्थात् सन् 2024 ई. में इस कार्तिक पूर्णिमा, 15 नवम्बर, 2024 ई. कृतिका नक्षत्र, वरियान योग, सूर्य के विशाखा नक्षत्र रहते–यह प्रशस्त '**पद्मक योग**' बना है। रात्रि $21^{\text{घं.}}$–$55^{\text{मिं.}}$ से $26^{\text{घं.}}$–$59^{\text{मिं.}}$ तक इसका विशेष माहात्म्य रहेगा। *रात्रि में यह योग घटित होने से जप, पाठ पर विशेष ध्यान देना चाहिए।*

रात्रि में यह योग घटित होने से जप, पाठ पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

# (31) दीपावली (महालक्ष्मी-पूजन) निर्णय (1 नवम्बर, शुक्रवार, 2024 ई.)

प्रदोषव्यापिनी (सूर्यास्त के बाद त्रिमुहूर्त्त) कार्तिक अमावस्या के दिन ही दीपावली (महालक्ष्मी-पूजन) मनाने की शास्त्राज्ञा है। इसवर्ष (वि. संवत् २०८१ में) 31 अक्तूबर, 2024 ई. के दिन कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी तिथि का समाप्तिकाल $15^{\text{घं.}}$–$53^{\text{मिं.}}$ है। अतः चतुर्दशी समाप्ति के साथ ही कार्तिक अमावस्या शुरु होकर अगले दिन (1 नवम्बर, शुक्रवार) सायं $18^{\text{घं.}}$–$17^{\text{मिं.}}$ तक व्याप्त है। **स्पष्ट है**–अगले दिन (**1 नवम्बर**) प्रदोषकाल में अमावस तिथि की व्याप्ति कम समय के लिए है। (क्योंकि पंजाब, हिमाचल, जम्मू आदि राज्यों में सूर्यास्त लगभग $17^{\text{घं.}}$–$35^{\text{मिं.}}$ पर होगा।), जबकि 31 अक्तूबर, 2024 ई. को अमावस्या पूर्णतया प्रदोष एवं निशीथकाल को व्याप्त कर रही है। **परन्तु फिर भी शास्त्रनिर्देशानुसार 'दीपावली पर्व' (महालक्ष्मी-पूजन) 1 नवम्बर, शुक्रवार, 2024 ई. को ही मनाना शास्त्रसम्मत होगा।**

***यथा शास्त्र वाक्य–***

☐ **'अथाश्विनामावस्यायां प्रातरभ्यंगः प्रदोषे दीपदानलक्ष्मी-पूजनादि विहितम्। तत्र सूर्योदयं व्याप्ति-अस्तोत्तरं घटिकाधिकरात्रिव्यापिनी दर्शे सति न संदेहः।।'**

(धर्मसिन्धु)

**(अर्थात् कार्तिक अमावस्या को प्रदोष के समय लक्ष्मीपूजनादि कहा गया है।** उसमें यदि सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त के अनन्तर 1 घड़ी (24 मिनट) से अधिक रात्रि तक (प्रदोषकाल) अमावस्या हो, तो कुछ सन्देह की बात नहीं है।)

☐ **परदिने एव दिनद्वयेपि वा प्रदोषव्याप्तौ परा। पूर्वत्रैव प्रदोषव्याप्तौ लक्ष्मीपूजनादौ पूर्वा।।** (धर्मसिन्धुः)।

(अर्थात् परले दिन ही अथवा दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी होय तो परलीलेनी होगी।)

☐ तिथिनिर्णय (भट्टोजिदीक्षितकृत) पुरुषार्थ चिन्तामणि में तो यहाँ तक लिखा है कि यदि दोनों दिन अमावस प्रदोष का स्पर्श न करे तो दूसरे दिन ही लक्ष्मी पूजन करना चाहिए। **'इयं प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या। दिनद्वये सत्त्वासत्त्वे परा।।'** (तिथिनिर्णयः)

☐ **पूर्वत्रैव व्याप्तिरिति पक्षे परत्र यामत्रयाधिकव्यापिदर्शे दर्शापेक्षया प्रतिपद्वृद्धिसत्त्वे लक्ष्मीपूजादिकमपि परत्रैवेत्युक्तम्।। एतन्मते उभयत्र प्रदोषाव्याप्ति-पक्षेपि परत्र दर्शस्य सार्धयामत्रयाधिक-व्याप्ति-त्वात्परैव युक्तेति भाति।।** (पुरुषार्थ-चिन्तामणि)

[अर्थात् यदि अमावस्या केवल पहिले दिन ही प्रदोषव्याप्त हो, तथा यदि अगले दिन अमावस्या तीन प्रहर से अधिक व्याप्त हो तथा दूसरे दिन भी प्रतिपदा वृद्धिगामिनी होकर तीन प्रहर के उपरान्त समाप्त हो रही हो, तो लक्ष्मीपूजन अगले दिन (अमावस) ही करें। इसी प्रकार यदि दोनों दिन अमावस्या प्रदोषव्याप्त होने से अगले दिन लक्ष्मीपूजन युक्तियुक्त होगा।]

☐ **उभयदिने प्रदोषव्याप्तौ परा ग्राह्या। 'दण्डैकरजनीयोगे दर्शः स्यात्तु परेऽहनि। तदा विहाय पूर्वेद्यु परेऽह्नि सुखरात्रिकाः।'** (तिथितत्त्व)

अर्थात् यदि दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी होय, तो अगले दिन करें–क्योंकि तिथितत्त्व में ज्योतिष का वाक्य है–एक घड़ी रात्रि (प्रदोष) का योग होय तो अमावस्या दूसरे दिन होती है, तब प्रथम दिन छोड़कर अगले दिन सुखरात्रि होती है।)

**यद्यपि**–दीपावली के दिन निशीथकाल में लक्ष्मी का आगमन शास्त्रों में अवश्य वर्णित है, लेकिन कर्मकाल (लक्ष्मी पूजन, दीपदान-आदि का काल) तो प्रदोष ही माना जाता है। लक्ष्मीपूजन, दीपदान के लिए प्रदोषकाल ही शास्त्र प्रतिपादित है–

**प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा ततः क्रमात्।**
**दीपवृक्षाश्च दातव्याः शक्त्या देवगृहेषु च।।**

निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु, पुरुषार्थ-चिन्तामणि, तिथि-निर्णय आदि ग्रन्थों में दिए गए शास्त्रवचनों के अनुसार दोनों दिन प्रदोषकाल में अमावस्या की व्याप्ति कम या अधिक होने पर दूसरे दिन ही अर्थात् सूर्योदय से सूर्यास्त (प्रदोषव्यापिनी) वाली अमावस्या के दिन लक्ष्मीपूजन करना शास्त्रसम्मत होगा।

**अतएव सभी शास्त्र-वचनों पर विचार कर हमारे मतानुसार 1 नवम्बर, 2024 ई., शुक्रवार को ही दीपावली पर्व तथा लक्ष्मीपूजन करना शास्त्रसम्मत होगा। सम्पूर्ण भारत में यह पर्व इसी दिन होगा। यही निर्णय भारत के अधिकतर पंचाङ्गकारों को मान्य है। परम्परा अनुसार तथा गत अनेक उदाहरण भी इसी मत को मान्यता देते हैं।**

[**ध्यान दें**, कुछ विद्वानों/पंचांगकारों के मतानुसार पश्चिमी राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरला आदि राज्यों में जहाँ अमावस्या तिथि 1 नवम्बर के दिन प्रदोषकाल को 1 घड़ी से कम (अर्थात् जहाँ सूर्यास्त 17:53 के बाद होगा) अथवा प्रदोष से पूर्व ही समाप्त (18:17 के बाद सूर्यास्त होगा।) हो जाएगी, वहाँ दीपावली पर्व 31 अक्तूबर, बृहस्पतिवार को करना चाहिए–तर्कसंगत नहीं है। क्योंकि]

**'यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः।**
**सा तिथि सकला ज्ञेया स्नान–दान–व्रतादिषु।।**

इस शास्त्रवचनानुसार इसी दिन (1 नवम्बर, 2024 ई.) प्रदोषकाल में साकल्यापादित अमावस तो विद्यमान् रहेगी ही। इसका अभिप्राय यह भी है कि भले ही गणितागत तिथि किसी दिन कर्मकाल के एक ही पल को व्याप्त क्यों न करे, उसका पूर्ण कर्मकाल धर्मशास्त्रानुसार साकल्यापादिता तिथि से व्याप्त होने के कारण व्रत-पूजानुष्ठान के योग्य होता है। **अतः इस वर्ष 1 नवम्बर, शुक्रवार को ही प्रदोष में महालक्ष्मी पूजन होगा।**

**इसीदिन ( 1 नवम्बर, शुक्रवार ) धर्मनिष्ठ लोग सूर्यास्त के पश्चात् अल्पकालिक प्रदोषकाल-व्याप्त अमावस्या के बावजूद सायाह्नकाल से प्रदोषकाल समाप्ति तक अर्थात् सूर्यास्त से आधा घण्टा पहिले अथवा सूर्यास्त के बाद लगभग $2^{\text{घं.}}$–$24^{\text{मिं.}}$ तक की कालावधि में निःसन्देह होकर लक्ष्मीपूजन कर सकते हैं।**

**–पं. विवेक शर्मा, जालन्धर ( पंजाब )**

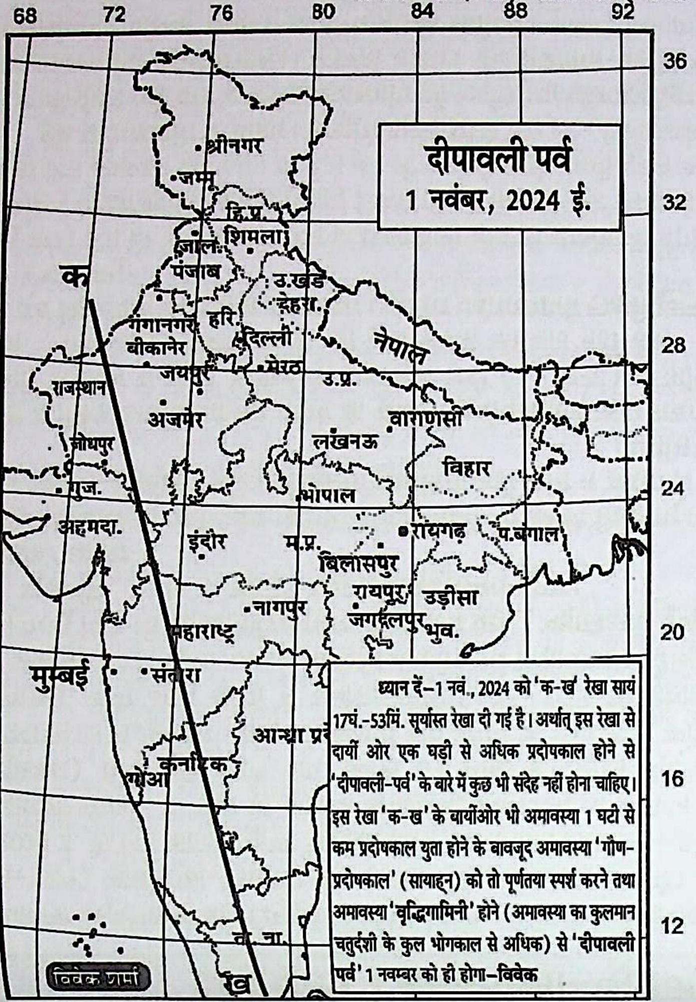
68
72
76
80
84
88
92
36
32
28
24
20
16
12
दीपावली पर्व
1 नवंबर, 2024 ई.
श्रीनगर
जम्मू
हि.प्र.
शिमला
जाल.
पंजाब
उ.खंड
देहरा.
हरि.
गंगानगर
बीकानेर
दिल्ली
नेपाल
मेरठ
जयपुर
राजस्थान
उ.प्र.
अजमेर
वाराणसी
जोधपुर
लखनऊ
बिहार
गुज.
भोपाल
अहमदा.
इंदौर
म.प्र.
रायगढ़
प.बंगाल
बिलासपुर
रायपुर
उड़ीसा
नागपुर
जगदलपुर
भुव.
महाराष्ट्र
मुम्बई
संतरा
आन्ध्रा प्र
कर्नाटक
गोआ
त. ना.
क
ख
विवेक शर्मा

ध्यान दें–1 नवं., 2024 को 'क-ख' रेखा सायं 17घं.-53मिं. सूर्यास्त रेखा दी गई है। अर्थात् इस रेखा से दायीं ओर एक घड़ी से अधिक प्रदोपकाल होने से 'दीपावली-पर्व' के बारे में कुछ भी संदेह नहीं होना चाहिए। इस रेखा 'क-ख' के बायींओर भी अमावस्या 1 घटी से कम प्रदोपकाल युता होने के बावजूद अमावस्या 'गौण-प्रदोपकाल' (सायाह्न) को तो पूर्णतया स्पर्श करने तथा अमावस्या 'वृद्धिगामिनी' होने (अमावस्या का कुलमान चतुर्दशी के कुल भोगकाल से अधिक) से 'दीपावली पर्व' 1 नवम्बर को ही होगा–विवेक

## (34) श्रीसिद्धिविनायक व्रत (मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष)

### (5 दिसम्बर, गुरुवार)

यह व्रत प्रत्येक शुक्लपक्ष की मध्याह्न-व्यापिनी चतुर्थी में किया जाता है। यदि चतुर्थी पहले दिन मध्याह्न के एकभाग को स्पशळ करें और दूसरे दिन सम्पूर्ण मध्याह्न को स्पर्श करें, तब यह व्रत दूसरे दिन ही किया जाता है।

**'पूर्वदिने एकदेशेन मध्याह्नव्यापिनी परदिने सम्पूर्ण मध्याह्नव्यापिनी तदा परैव।'**

(धर्मसिन्धु)

4 दिसम्बर, 2024 ई. को मार्गशीर्ष चतुर्थी मध्याह्न-काल को केवल स्पर्श मात्र (13:11 से 13:18 तक) कर रही है, जबकि 5 दिसम्बर, 2024 ई. को उदय-व्यापिनी चतुर्थी अधिक समय तक मध्याह्न-व्यापिनी है। **अतः यह व्रत 5 दिसम्बर, 2024 को होगा।**

**[ 4/5 दिसम्बर, 2024 ई. को मध्याह्नकाल लगभग $11^{\text{घं.}}$–$17^{\text{मिं.}}$ से 13घं.-18मिं. तक रहेगा। ]**

## (35) स्कन्द (गुह) षष्ठी (मार्ग शुक्ल षष्ठी) ( 6 दिसम्बर)

'पूर्व (पंचमी) विद्धा' मार्ग. शुक्ल षष्ठी में स्कन्द (गुह) षष्ठी का व्रत किया जाता है।–'**इयमेव स्कन्द षष्ठी, सा पूर्वा ग्राह्या।।**'

इस वर्ष (वि. संवत् 2081 में) 6 दिसम्बर, 2024 ई. को षष्ठी पञ्चमीविद्धा है क्योंकि इसदिन पंचमी सूर्योदयानन्तर 6 मुहूर्त्त से अधिक है। (यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि–पञ्चमी पाँच मुहूर्त्तों से नहीं, अपितु छः मुहूर्त्तों से वेध करती है–( **नागो द्वादशनाड़ीभिः विध्यति** )। इसलिए स्कन्द (गुह) षष्ठी का व्रत इसीदिन होगा।

किञ्च, भृगु के वचनानुसार, '**कृष्णाष्टमी स्कन्दषष्ठी शिवरात्रिचतुर्दशी। एताः पूर्वयुताः कार्यास्तिथ्यन्ते पारणं भवेत्।।**' अतः इस व्रत की पारणा तथा पूजन अगले दिन 7 दिसम्बर, 2024 ई. को तिथि के अन्त में ही करना शास्त्रसम्मत होगा।

## (36) मित्र-सप्तमी (मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी)

षष्ठीविद्धा मार्ग. शुक्ल सप्तमी के दिन '**मित्रसप्तमी**' होती है। इस वर्ष यह सप्तमी **7 दिसम्बर, 2024 ई.** को षष्ठीविद्धा है। इसलिए यह पर्व इसीदिन लिखा गया है।

## (37) वरद्-तिल-कुन्द चतुर्थी (1 फरवरी, 2025 ई.)

माघ शुक्ल चतुर्थी जिस दिन प्रदोषव्यापिनी हो, उस दिन यह व्रत किया जाता है। इस वर्ष माघ शुक्ल चतुर्थी **1 फरवरी, 2025 ई.** को ही प्रदोषव्यापिनी है। अतः तिल कुन्द-वरद् चतुर्थी आदि सभी व्रत इसीदिन होंगे। ***ध्यान दें,*** चतुर्थीयुता '***गौरी तृतीया***' (गोंतरी) व्रत भी इसीदिन होगा।

## (38) होलिका-दहन का समय (13 मार्च, 2025 ई.)

इसवर्ष (वि. संवत् 2081 में) भी गतवर्ष की भान्ति होलिका-दहन के समय सम्बन्धी संशय रहेगा। लगभग गतवर्ष जैसी परिस्थितियां बन रही हैं। पुनः स्पष्टीकरण लिख रहे हैं–

प्रदोष-व्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा के दिन भद्रा-रहितकाल में होलिका-दहन किया जाता है। यथा–**'सा प्रदोषव्यापिनी भद्रारहित ग्राह्या।।** (धर्मसिन्धुः)

यदि प्रदोषकाल के समय भद्रा हो तो दूसरे दिन प्रदोष-व्यापिनी पूर्णिमा में होलिका-दहन करना चाहिए। यदि दूसरे दिन पूर्णिमा प्रदोष-व्यापिनी न हो, तो पहिले दिन भद्रा समाप्ति के बाद होलिका दहन करें। परन्तु यदि उस दिन (पहिले दिन) भद्रा निशीथ (अर्द्धरात्रि) के बाद या निशीथ में समाप्त हो रही हो, तो भद्रा के मुखकाल को छोड़कर भद्राकाल में ही निशीथ से पहिले होलिकादहन कर लेना चाहिए, क्योंकि निशीथ के अनन्तर होलिकादहन करने का निषेध है–

**'परदिने प्रदोष–स्पर्शाभावे पूर्वदिने यदि निशीथात्प्राक्–भद्रासमाप्तिः तदा भद्रावसानोत्तरमेव होलिका–दीपनम्। निशीथोत्तरं भद्रा–समाप्तौ भद्रामुखं त्यक्त्वा भद्रायामेव।'** (धर्मसिन्धुः)

इस वर्ष फाल्गुन पूर्णिमा (सं. 2081 वि.) केवल 13 मार्च, 2025 ई. को ही प्रदोषव्यापिनी है। 14 मार्च को तो वह प्रदोषकाल को बिल्कुल भी स्पर्श नहीं कर रही। 13 मार्च को भद्रा अर्द्धरात्रि (24$^{\text{घं.}}$–37$^{\text{मिं.}}$) से पहिले 23$^{\text{घं.}}$–31$^{\text{मिं.}}$ पर समाप्त हो रही है। **अतः होलिकादीपन 13 मार्च, बृहस्पतिवार, 2025 ई. को रात्रि 23$^{\text{घं.}}$–31$^{\text{मिं.}}$ के बाद और निशीथ (24घं.–37मिं.) से पहिले ही करना शास्त्रसम्मत होगा।**

**ध्यान दें–इसदिन (13 मार्च, 2025 ई.) भद्रामुखकाल 20$^{\text{घं}}$–18$^{\text{मिं.}}$ से 22$^{\text{घं}}$–27$^{\text{मिं.}}$ तक रहेगा तथा भद्रा–पुच्छकाल 19$^{\text{घं}}$–00$^{\text{मिं.}}$ से 20$^{\text{घं}}$–18$^{\text{मिं.}}$ तक रहेगा। अतएव आवश्यक परिस्थितिवश भद्रामुखकाल को त्यागकर भद्रापुच्छकाल में होलिका–दहन किया जा सकता है। परन्तु शास्त्र–निर्देशानुसार भद्रा बाद (23$^{\text{घं}}$–31$^{\text{मिं.}}$) तथा निशीथकाल से पहिले (24$^{\text{घं}}$–37$^{\text{मिं.}}$ तक) ही होलिका–दहन करना चाहिए।**

## (39) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (चैत्र कृष्णपक्ष) (17 मार्च, 2025 ई.)

यह व्रत प्रत्येक मास के कृष्णपक्ष की चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी में किया जाता है। यदि चतुर्थी दो दिन चन्द्रोदयव्यापिनी हो तो पहले दिन (तृतीयायुता तिथि में) यह व्रत करना चाहिए, क्योंकि चतुर्थी सदैव तृतीयाविद्धा लेनी चाहिए। यथा–'**चतुर्थी गणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते।**' यदि चतुर्थी दोनों दिन चन्द्रोदयव्यापिनी न हो तो यह व्रत दूसरे दिन करना चाहिए।

**'संकष्टचतुर्थी तु चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या। पर दिन एव चन्द्रोदयव्याप्तौ परैव। उभयदिने चन्द्रोदयव्याप्तौ तृतीयायुतैव ग्राह्या। दिनद्वये चन्द्रोदयव्याप्त्यभावे परैव।।'**
(धर्मसिन्धुः)

इस वर्ष चैत्र कृष्ण चतुर्थी 17 मार्च, 2025 ई. को रात्रि 19$^{\text{घं.}}$–34$^{\text{मिं.}}$ बाद प्रारम्भ होकर 18 मार्च, 2025 ई. को रात्रि 22$^{\text{घं.}}$–10$^{\text{मिं.}}$ तक व्याप्त रहेगी। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू आदि राज्यों में तो तृतीयायुता चतुर्थी वाले दिन ही (17 मार्च) चतुर्थी व्याप्ति के समय ही चन्द्रोदय होगा, अतः इन क्षेत्रों में निर्विवाद रूप से गणेश चतुर्थी व्रत इसीदिन होगा। जिन प्रान्तों में (उ.प्र., बिहार आदि पूर्वी राज्यों में) अगले दिन (18 मार्च) चतुर्थी व्याप्ति में भी चन्द्रोदय होगा, वहाँ भी यह व्रत (उपरोक्त शास्त्रनियमानुसार) 17 मार्च, 2025 ई. को करना प्रशस्त होगा। (क्योंकि दोनों दिन चतुर्थी चन्द्रोदय व्याप्त हो, तो गणेश चतुर्थी व्रत पहले दिन करना प्रशस्त होता है।

## (40) पापमोचनी एकादशी व्रत (25/26 मार्च, 2025 ई.)

जैसा कि पहले भी (अपरा एकादशी–2/3 जून, 2024 ई.) लिख चुके हैं कि वैष्णव लोग अरुणोदय काल में दशमी के वेध से एकादशी को दोष मानते हैं तथा अगले दिन द्वादशी में ही एकादशी का व्रत करते हैं।

इस वर्ष **चैत्र कृष्ण एकादशी** तिथि अरुणोदय काल में (25 मार्च, 2025 ई. को) दशमी से विद्ध है। (५६ घड़ी से अधिक होने के कारण)। अतः वैष्णव लोग 25 मार्च, 2025 ई. के दिन एकादशी व्रत न करके 26 मार्च, 2025 ई. को करेंगे। लेकिन स्मार्त्त लोग, जो '**अरुणोदये दशमीवेध**' वर्जित नहीं करते, वे तो 25 मार्च, 2025 ई. को ही यह व्रत रखेंगे।

24 मार्च को पंजाब, हिमाचल आदि में अरुणोदय-काल 25 मार्च के सूर्योदय से लगभग 1$^{\text{घं.}}$–36$^{\text{मिं.}}$ पहिले 4$^{\text{घं.}}$–53$^{\text{मिं.}}$ (भा.स्टैं.टा.) पर प्रारम्भ हो जाएगा।

**पं. देवीदयालु संस्थान का कर्मकाण्ड सम्बन्धी नवीन प्रकाशन**
**'वार्षिक (एकोदिष्ट) एवं चातुर्वार्षिक श्राद्ध पद्धति'**
**[ देवर्षि-पितृ-तर्पण, शय्या दान, गोदान, बलिवैश्वदेव विधि, पितृस्तोत्र, पितृसूक्त आदि सहित ] [ लेखक/सम्पादक :–पं. विवेक शर्मा ( पंचांगकर्त्ता ]**
**आज ही स्थानीय पुस्तक विक्रेता से मांग करें अथवा मंगवाएं–**
**जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर ( पं. ) पिन–144008,**
**मूल्य–80/–** **मो. 94172-91325, 97799-13583**

# ★ श्रीमहालक्ष्मी पूजन (दीपावली) के शुभकाल (मुहूर्त्त) (1 नवम्बर, शुक्रवार , सन् 2024 ई.) ★

श्रीमहालक्ष्मी पूजन एवं दीपावली का महापर्व कार्तिक अमावस में प्रदोष–काल हो तो विशेष रूप से शुभ होती है। **कार्तिक स्यासिते पक्षे लक्ष्मीर्निदां विमुञ्चति।**

**स च दीपावली प्रोक्ता: सर्वकल्याणरूपिणी।।** ज्योतिर्निबन्ध

लक्ष्मीपूजन, दीपदानादि के लिए प्रदोषकाल ही विशेषतया प्रशस्त माना गया है–

**कार्तिके प्रदोषे तु विशेषेण अमावस्या निशावर्धके।**
**तस्यां सम्पूज्येत् देवीं भोगमोक्ष प्रदायिनीम्।।** (भविष्यपुराण)

प्रस्तुत वर्ष कार्तिक अमावस का प्रदोषकाल के साथ संयोग दो दिन हो रहा है। ता. 31 अक्तू., 2024 ई. को अमावस तिथि अपराह्ण–काले 3 बजकर 53 मिंट ($15^{\text{घं.}}$–$53^{\text{मिं.}}$) से प्रारम्भ होकर 1 नवम्बर, 2024 ई. को सायं 6 बजकर 17 मिंट ($18^{\text{घं.}}$–$17^{\text{मिं.}}$) तक व्याप्त रहेगी। इस प्रकार 31 अक्तू., 2024 ई. को अमावस्या प्रदोष एवं अर्द्धरात्रि–व्यापिनी होगी तथा 1 नवम्बर, 2024 ई. को केवल प्रदोष व्यापिनी रहेगी। **परन्तु शास्त्र–निर्देशानुसार दो दिन प्रदोष–व्यापिनी कार्तिक अमावस्या होने पर अगले दिन ही 'दीपावली' ( महालक्ष्मी–पूजन ) पर्व मनाया जाना चाहिए।** अत: **'दीपावली–पर्व'** 1 नवम्बर, शुक्रवार, 2024 ई. के दिन ही होगा। सायं दीपावली पर्व स्वाती नक्षत्र, प्रीति व आयुष्मान योग, तुला राशिस्थ चन्द्र युक्त होने से सारा दिन ग्रहणीय होगा। (**शास्त्रोक्त 'दीपावली–निर्णय'** पृष्ठ–27 पर पढ़ें।)

**दीपावली–दिन के कृत्य**–इस दिन प्रात: ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर दैनिक कृत्यों से निवृत्त हो पितृगण तथा देवताओं का पूजन करना चाहिए। सम्भव हो तो दूध, दही और घृत से पितरों का पार्वण–श्राद्ध करना चाहिए। यदि सम्भव हो तो एकभुक्त उपवास कर गोधूलि वेला (सूर्यास्त के समय) में अथवा कुम्भ, वृष, सिंह आदि स्थिर लग्न में श्रीगणेश, कलश, षोडशमातृका एवं ग्रहपूजनपूर्वक भगवती लक्ष्मी का षोडशोपचार पूजन करना चाहिए। इसके अनन्तर **महाकाली** का दावात के रूप में, **महासरस्वती** का कलम, बही आदि के रूप में तथा **कुबेर** का तुला के रूप में सविधि पूजन करना चाहिए। दीपावली पूजन के पश्चात् गृह में चौमुखा दीपक रात्रिभर प्रज्वलित रहना सौभाग्य एवं लक्ष्मी वृद्धि का द्योतक माना जाता है।

दीपावली–पर्व पर भगवती लक्ष्मी का समारोहपूर्वक आवाहन, षोडशोपचार सहित पूजा की जाती है। शुभ मुहूर्त्त में किसी स्वच्छ एवं पवित्र स्थान पर आटा, हल्दी, अक्षत एवं पुष्पादि से अष्टदल कमल बनाकर श्रीलक्ष्मी का आवाहन एवं स्थापना करके देवों की विधिवत् पूजार्चन करनी चाहिए।

***आवाहन मन्त्र***–**'कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।**
**पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।।**

**'ॐ गं गणपतये नम:।। लक्ष्म्यै नम:।। नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरे: प्रिया। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।।'** से लक्ष्मी ; **'एरावतसमारूढो वज्रहस्तो महाबल:। शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मा इन्द्राय ते नम:।'** मन्त्र से इन्द्र की और कुबेर की निम्न मन्त्र से पूजा करें– **'कुबेराय नम:, धनदाय नमस्तुभ्यं निधपद्माधिपाय च।**
**भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यादि सम्पद:।।'**

पूजन सामग्री में विभिन्न प्रकार की मिठाई, फल–पुष्पाक्षत, धूप, दीपादि सुगन्धित वस्तुएं सम्मिलित करनी चाहिए। दीपावली पूजन में प्रदोष, निशीथ एवं महानिशीथ काल के अतिरिक्त चौघड़ियां मुहूर्त्त भी पूजन, बही–खाता पूजन, कुबेर–पूजा, जपादि अनुष्ठान की दृष्टि से विशेष

## 1 नवम्बर, 2024 ई. के चौघड़िया मुहूर्त्त

| दिन की चौघड़ियां ( घं. मिं. ) | | रात्रि की चौघड़ियां ( घं.-मिं. ) | |
|---|---|---|---|
| चर | 6:47 से 8:08 तक | रोग | 17:35 से 19:14 तक |
| लाभ | 8:08 से 9:29 तक | काल | 19:14 से 20:53 तक |
| अमृत | 9:29 से 10:50 तक | लाभ | 20:53 से 22:32 तक |
| काल | 10:50 से 12:11 तक | उद्वेग | 22:32 से 24:11 तक |
| शुभ | 12:11 से 13:32 तक | शुभ | 24:11 से 25:50 तक |
| रोग | 13:32 से 14:53 तक | अमृत | 25:50 से 27:29 तक |
| उद्वेग | 14:53 से 16:14 तक | चर | 27:29 से 29:08 तक |
| चर | 16:14 से 17:35 तक | रोग | 29:08 से 30:48 तक |

**नोट**–(1) चर, लाभ, अमृत और शुभ की चौघड़ियां ग्राह्य होती हैं। (2) 25 बजे का अर्थ अर्द्धरात्रि 1 बजे से है तथा 30 बजे का अर्थ आगामी दिन प्रात: 6 बजे से है। (3) यहाँ चौघड़ियां मुहूर्त्त 1 नवंबर, 2024 ई. को जालन्धर के दिनमान व रात्रिमान के अनुसार है। अपने स्थानीय नगर के चौघड़ियां मुहूर्त्त के लिए इसी पंचांग में दी गई मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में से स्थानीय सूर्योदयास्त निकालकर पंचांग–दिवाकर के पृष्ठ नं. 283 का अवलोकन कर चौघड़ियां मुहूर्त्त निकालें।

**प्रदोष काल**–1 नवम्बर, 2024 ई. को जालन्धर एवं निकटवर्त्ती नगरों में सूर्यास्त $17^{\text{घं.}}$–$35^{\text{मिं.}}$ से लेकर $2^{\text{घं.}}$–$39^{\text{मिं.}}$ पर्यन्त $20^{\text{घं.}}$–$14^{\text{मिं.}}$ तक प्रदोषकाल व्याप्त रहेगा। (प्रत्येक नगर के रात्रिमान अनुसार प्रदोषकाल निर्धारित करें। (देखें पृष्ठ नं. 189 इसी पंचांग में)

क्योंकि सायं $16^{\text{घं.}}$–$50^{\text{मिं.}}$ से $18^{\text{घं.}}$–$22^{\text{मिं.}}$ तक **'मेष'** ( **चर** ) लग्न, तदुपरान्त $18^{\text{घं.}}$–$22^{\text{मिं.}}$ से $20^{\text{घं.}}$–$17^{\text{मिं.}}$ तक वृष (स्थिर) लग्न रहेगा, तथा $19^{\text{घं.}}$–$14^{\text{मिं.}}$ तक **'रोग'** की चौघड़ियां रहेंगी। अतएव प्रदोषकाल से पूर्व (पहिले) ही **'गौण–प्रदोषकाल'** में श्रीगणेश–**लक्ष्मी पूजन प्रारम्भ कर लेना चाहिए।** इसी काल में दीपदान, श्रीमहालक्ष्मी–पूजन, कुबेर–पूजन, बही–खाता पूजन, धर्म एवं गृह–स्थलों पर दीप प्रज्वलित करना, ब्राह्मणों तथा अपने आश्रितों को भेंट, मिष्ठान्नादि बांटना शुभ होगा।

**निशीथ काल**–1 नवम्बर, 2024 ई. को जालन्धर व समीपस्थ नगरों में **निशीथकाल** रात्रि $20^{\text{घं.}}$–$14^{\text{मिं.}}$ से $22^{\text{घं.}}$–$52^{\text{मिं.}}$ तक रहेगा। निशीथकाल में $20^{\text{घं.}}$–$17^{\text{मिं.}}$ से $22^{\text{घं.}}$–$31^{\text{मिं.}}$ तक मिथुन (द्वि–स्वभाव) लग्न, $20^{\text{घं.}}$–$53^{\text{मिं.}}$ से $22^{\text{घं.}}$–$32^{\text{मिं.}}$ तक **'लाभ'** की चौघड़ियां भी रहेंगी। $22^{\text{घं.}}$–$31^{\text{मिं.}}$ से **'कर्क'** लग्न भी प्रशस्त है।

अत: जो लोग प्रदोष–काल से पूर्व पूजन न प्रारम्भ कर सकें, उन्हें, रात्रि लगभग $20^{\text{घं.}}$–$53^{\text{मिं.}}$ से पूजन प्रारम्भ करना चाहिए। इस अवधि में श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त, पुरुषसूक्त, कनकधारा–स्तोत्र तथा अन्य सिद्धिदायक स्तोत्रों का पाठ करना चाहिए।

**महानिशीथ काल**–रात्रि $22^{\text{घं.}}$–$52^{\text{मिं.}}$ से अर्द्धरात्रि $25^{\text{घं.}}$–$30^{\text{मिं.}}$ तक **'महानिशीथ काल'** रहेगा। इस समयावधि में $22^{\text{घं.}}$–$32^{\text{मिं.}}$ से $24^{\text{घं.}}$–$11^{\text{मिं.}}$ तक **'उद्वेग'** की अशुभ चौघड़िया रहेगी। $24^{\text{घं.}}$–$11^{\text{मिं.}}$ से $25^{\text{घं.}}$–$50^{\text{मिं.}}$ तक **'शुभ'** की चौघड़िया श्रेष्ठ रहेगी। अत: इस अवधि में काली–उपासना, तन्त्रादि क्रियाएं, विशेष काम्य–प्रयोग, तन्त्र–अनुष्ठान, साधनाएं एवं यज्ञादि किए जाते हैं। अतएव इनका प्रारम्भ $22^{\text{घं.}}$–$32^{\text{मिं.}}$ से पहिले **'लाभ'** की चौघड़िया में कर लेना चाहिए।

**नोट**–अपने स्थानीय नगर में महालक्ष्मी पूजन एवं साधना के लिए प्रशस्त वृष, कर्क व सिंह लग्नों के लिए पृष्ठ 285 का अवलोकन कर निकालें। साधारण जमा/ऋण कर आप निकाल सकते हैं। *अथवा स्थानीय ब्राह्मण से 'पंचांग' दिखाकर सम्पर्क करें–* ***–पं. विवेक शर्मा।***

# विस्तृत "ग्रहण-विवरण" (वि. संवत् २०८१)

परिलेख—
—पं. विवेक शर्मा

वि. संवत् २०८१ (सन् 2024–25 ई.) में पृथ्वी (भूलोक) पर चार ग्रहण दिखाई देंगे—

(1) **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** (18 सितंबर, 2024 ई., बुधवार) (भारत में लगभग अदृश्य)
(2) **कंकण सूर्यग्रहण** (2/3 अक्तू., 2024 ई., बुध/गुरु) (भारत में अदृश्य)
(3) **खग्रास चन्द्रग्रहण** (14 मार्च, 2025 ई., शुक्रवार) (भारत में अदृश्य)
(4) **खण्डग्रास सूर्यग्रहण** (29 मार्च, 2025 ई., शनिवार) (भारत में अदृश्य)

इस वर्ष पृथ्वी पर दिखाई देने वाले चारों ग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देंगे।

## भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण

### (1) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (18 सितम्बर, 2024 ई., बुधवार)—

यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण भाद्रपद पूर्णिमा, बुधवार को भा.स्टैं.टा. अनुसार $7^{\text{घं.}}$–$43^{\text{मिं.}}$ से $8^{\text{घं.}}$–$46^{\text{मिं.}}$ तक दिखाई देगा।

यह खण्ड चन्द्रग्रहण दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका के पश्चिमी देशों तथा पश्चिमी यूरोप के देशों में पूर्ण रूप से दिखाई देगा।

जबकि यूरोप के अधिकतर देशों में, पूर्वी अफ्रीका में चन्द्र-अस्त के समय आंशिक रूप (अर्थात् ग्रस्तास्त रूप में) में तथा उत्तरी अमरीका के दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्र में चन्द्रोदय के समय इस ग्रहण को ग्रस्तोदय रूप में देखा जा सकेगा।

भा.स्टैं.टा. अनुसार इसके प्रारम्भादि काल इस प्रकार हैं—

| यह ग्रहण भारत में अदृश्य है। | | | |
|---|---|---|---|
| | ग्रहण प्रारम्भ | $07^{\text{घं.}}$–$43^{\text{मिं.}}$ | 18 सितम्बर, 2024 ई.<br>(भा.स्टैं.टा. अनुसार) |
| | परमग्रास (मध्य) | $08^{\text{घं.}}$–$14^{\text{मिं.}}$ | |
| | ग्रहण समाप्त | $08^{\text{घं.}}$–$46^{\text{मिं.}}$ | |

[ ग्रहण का ग्रासमान = 0.085( % ), ग्रहण की अवधि = $1^{\text{घं.}}$–$03^{\text{मिं.}}$ ]

चंद्र मालिन्य प्रारम्भ (Moon Enter's Penumbra) = $6^{\text{घं.}}$–$11^{\text{मिं.}}$
चंद्र मालिन्य समाप्त (Moon Leave's Penumbra) = $10^{\text{घं.}}$–$17^{\text{मिं.}}$ (भा.स्टैं.टा.)

**कृपया ध्यान दें, यह खण्डग्रास (आंशिक) चन्द्रग्रहण जब प्रारम्भ होगा, तब तक सम्पूर्ण भारत में चन्द्र-अस्त हो चुका होगा। इसलिए भारत में यह ग्रहण अदृश्य रहेगा।**

हाँ, जब इस खण्ड चन्द्रग्रहण का मालिन्य (Moon's Shadow) (उपच्छाया) प्रारम्भ होगी ($6^{\text{घं.}}$–$11^{\text{मिं.}}$), उसके बाद भारत के उत्तर-पश्चिमी तथा उत्तर-दक्षिणी अनेक शहरों में चन्द्र अस्त होगा। उस समय चन्द्रमा की चाँदनी में केवल कुछ धुन्धलापन आएगा। शास्त्रकारों ने इस चन्द्र बिम्ब पर मालिन्य मात्र छाया आने के कारण इन्हें ग्रहण की कोटि में नहीं रखा। अत: धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धालुजनों को इसे ग्रहण की कोटि में न मानते हुए एवं ग्रहण सम्बन्धी पथ्य-अपथ्य का विचार न करते हुए केवल पूर्णिमा सम्बन्धी ही व्रत, दानादि का अनुष्ठान करना चाहिए।

## भारत के कुछ मुख्य शहर जहाँ चंद्र मालिन्य दिखेगा
## खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (18 सितम्बर, 2024 ई.)

[अर्थात् जहाँ चन्द्रास्त $6^{\text{घं.}}$–$11^{\text{मिं.}}$ बाद होगा वहाँ चंद्र बिम्ब कुछ समय के लिए धुन्धला मात्र होगा]

| नगर | चंद्रास्त घं.-मिं. | चंद्र मालिन्य अवधि मिंट | नगर | चंद्रास्त घं.-मिं. | चंद्र मालिन्य अवधि मिंट | नगर | चंद्रास्त घं.-मिं. | चंद्र मालिन्य अवधि मिंट |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अमृतसर | 6–13 | 2 | द्वारिका (गु.) | 6–41 | 30 | बीकानेर | 6–21 | 10 |
| अजमेर | 6–16 | 5 | दिल्ली | 6–05 | – | भठिण्डा | 6–14 | 3 |
| अम्बाला | 6–06 | – | दीनानगर | 6–11 | – | भद्रवाह(का.) | 6–10 | – |
| कठुआ | 6–11 | – | धर्मशाला | 6–07 | – | महेन्द्रगढ़ | 6–09 | – |
| कुरुक्षेत्र | 6–06 | – | नकोदर(पं.) | 6–11 | – | माऊँट-आबू | 6–24 | 14 |
| कोल्हापुर | 6–21 | 10 | नंगल(पं.) | 6–07 | – | मुकेरिया | 6–10 | – |
| कपूरथला | 6–11 | – | नवलगढ़(रा.) | 6–13 | 2 | मुक्तसर | 6–15 | 4 |
| करनाल | 6–05 | – | नारनौल(हरि.) | 6–09 | – | मुम्बई | 6–26 | 15 |
| कुराली | 6–07 | – | नागपुर | 5–59 | – | राजकोट(गु.) | 6–33 | 22 |
| कुल्लू | 6–04 | – | नासिक | 6–22 | 11 | राजौरी(का.) | 6–15 | 4 |
| कैथल | 6–08 | – | पटियाला | 6–08 | | रामबन(का.) | 6–12 | 1 |
| कोच्वी | 6–14 | 3 | पठानकोट | 6–10 | – | रियासी(का.) | 6–13 | 2 |
| खन्ना | 6–08 | – | पुँछ(ज.का.) | 6–16 | 5 | लुधियाना | 6–10 | – |
| गुरदासपुर | 6–11 | – | पूना | 6–22 | 11 | श्रीनगर | 6–13 | 2 |
| गोहाना | 6–07 | – | फरीदकोट | 6–14 | 3 | श्रीगंगानगर | 6–18 | 7 |
| गोवा | 6–23 | 12 | फगवाड़ा | 6–10 | – | संगरूर | 6–10 | – |
| चण्डीगढ़ | 6–06 | – | फतेहाबाद(हरि.) | 6–12 | 1 | सिलवासा | 6–25 | 14 |
| चिन्तपूर्णी | 6–08 | – | फाज़िल्का | 6–17 | 6 | सिरसा | 6–14 | 3 |
| जम्मू | 6–13 | 2 | फिरोज़पुर | 6–15 | 4 | सिरोही(राज.) | 6–24 | 13 |
| जयपुर | 6–11 | – | बरनाला | 6–11 | – | सूरत | 6–25 | 14 |
| जलगांव(महा.) | 6–14 | – | बटाला | 6–12 | 1 | हनुमानगढ़ | 6–16 | 5 |
| जालन्धर | 6–11 | – | बंगा | 6–09 | – | हाजीपुर(पं.) | 6–10 | – |
| जीन्द | 6–08 | – | बनिहाल(का.) | 6–12 | 1 | हांसी | 6–10 | – |
| जोधपुर | 6–23 | 12 | बसौली(का.) | 6–09 | – | हिसार | 6–11 | – |
| तरनतारन | 6–13 | 2 | बड़ौदरा | 6–23 | 12 | होशियारपुर | 6–09 | – |
| तलवाड़ा | 6–09 | – | बिशनाह(का.) | 6–13 | 2 | | | |

[नोट–यह ग्रहण अमरीका के Newyork, Michigan, वाशिंगटन, लॉस एजलन्स में चंद्रोदय के समय तथा रोम (इटली), पैरिस आदि पश्चिमी यूरोप में चन्द्रास्त के समय दिखाई देगा।]

## खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (18 सितम्बर, 2024 ई.)

### विश्व परिदृश्य

**(अर्थात् यह चन्द्रग्रहण भूगोल पर कहाँ-कहाँ ग्रस्तोदय, कहाँ ग्रस्तास्त, कहाँ सर्वथा अदृश्य और कहाँ सम्पूर्ण काल के लिए दृश्य होगा ?)**

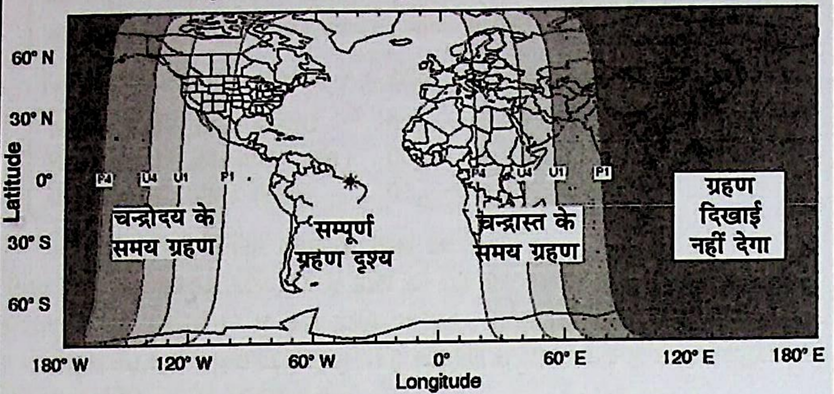

**विशेष**–पुन: सभी पाठकों एवं विद्वानों से प्रार्थना है कि उत्तर-पश्चिमी एवं दक्षिण-पश्चिमी भारत के जिन नगरों में 18 सितम्बर, 2024 ई. को प्रात: $6^{\text{घं.}}$–$11^{\text{मिं.}}$ के बाद भी चन्द्रास्त हो रहा है, वहाँ इस चन्द्र बिम्ब के मालिन्य को ग्रहण की कोटि में न मानकर केवल उपच्छाया ग्रहण ही मानें। **क्योंकि ग्रहण प्रारम्भ ($7^{\text{घं.}}$–$43^{\text{मिं.}}$) से पहले-पहले सम्पूर्ण भारत में चन्द्रास्त हो चुका होगा।**

## (2) कंकण सूर्यग्रहण (2/3 अक्तूबर, 2024 ई., बुध/गुरु)

यह कंकण सूर्यग्रहण आश्विन अमावस, बुधवार की रात्रि $21^{\text{घं.}}$–$13^{\text{मिं.}}$ से $27^{\text{घं.}}$–$17^{\text{मिं.}}$ (2/3 अक्तूबर की मध्यरात्रि) घटित होगा।

यह ग्रहण दक्षिणी अमरीका, उत्तरी-अमरीका के दक्षिणी भागों, प्रशान्त महासागर, एटलांटिक महासागर तथा न्यूज़ीलैंड, फिजी आदि देशों में कुछ समय के लिए दिखाई देगा। दिखाई देने वाले मुख्य देश होंगे–चिली, अर्जन्टीना, ब्राज़ील, मैक्सिको, पेरू। न्यूज़ीलैण्ड तथा फिजी में बहुत कम समय के लिए दिखाई देगा। इस ग्रहण की कंकणकृति केवल दक्षिणी चिली तथा दक्षिणी अर्जन्टीना में ही दिखाई देगी।

भा.स्टैं.टा. अनुसार इसके स्पर्शादिकाल इस प्रकार हैं–

| | | |
|---|---|---|
| ग्रहण प्रारम्भ | $21^{\text{घं.}}$–$13^{\text{मिं.}}$ | 2/3 अक्तू., 2024 ई. |
| कंकण प्रारम्भ | $22^{\text{घं.}}$–$21^{\text{मिं.}}$ | की मध्यरात्रि |
| परमग्रास | $24^{\text{घं.}}$–$15^{\text{मिं.}}$ | (भा.स्टै.टा.) |
| कंकण समाप्त | $26^{\text{घं.}}$–$09^{\text{मिं.}}$ | भारत में अदृश्य |
| ग्रहण समाप्त | $27^{\text{घं.}}$–$17^{\text{मिं.}}$ | |

[ग्रहण का ग्रासमान = 0.933%,

कंकण की अवधि = $7^{\text{मिं.}}$–$25^{\text{सैं.}}$]

### विश्व परिदृश्य-कंकण सूर्यग्रहण
### (2/3 अक्तू., 2024 ई.)

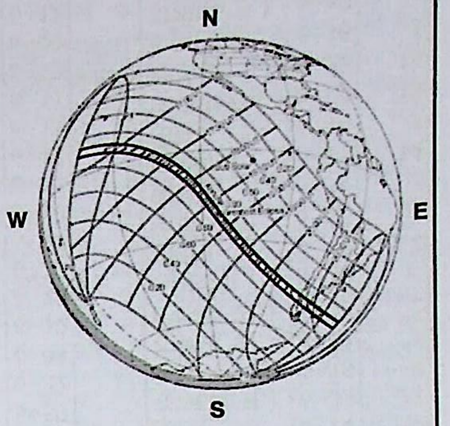

## (3) खग्रास चन्द्रग्रहण (14 मार्च, 2025 ई., शुक्रवार)

यह खग्रास चन्द्रग्रहण फाल्गुन पूर्णिमा, शुक्रवार के दिन प्रात: $10^{\text{घं.}}$–$40^{\text{मिं.}}$ से दोपहर $14^{\text{घं.}}$–$18^{\text{मिं.}}$ तक व्याप्त रहेगा।

**भारत में यह ग्रहण भी दृश्यमान नहीं होगा।** यह ग्रहण यूरोप, अधिकतर ऑस्ट्रेलिया, अधिकतर अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, प्रशान्त-एटलांटिक, आकर्टिक महासागर तथा अर्न्टाटिका, पूर्वी एशिया में देखा जा सकेगा।

(1) **उत्तरी अमेरिका (कैनेडा, अमरीका), दक्षिणी अमरीका** में इस ग्रहण की खग्रास आकृति देखी जा सकेगी **अर्थात् यह ग्रहण आरम्भ से समाप्ति तक देखा जा सकेगा।**

**इस क्षेत्र के मुख्य शहर होंगे**–सॉन फ्रांसिसको, शिकागो (U.S.A.), न्यूयार्क (U.S.A.), मॉन्ट्रियाल (कैनेडा), लॉस एंजलस (U.S.A.), वांशिगटन (U.S.A.), मैक्सिको, चिली, ब्राज़ील आदि।

(2) यूरोप के अधिकतर देशों (ब्रिटेन, इटली, फ्रांस, जर्मनी, ऑयरलैण्ड, पुर्तगाल, स्पेन आदि), पूर्वी दक्षिणी अमेरिका तथा अधिकतर पश्चि. अफ्रीका में यह ग्रहण खण्डग्रास रूप में चन्द्रास्त के समय दिखाई देगा। (अर्थात् ग्रस्तास्त रूप में)

(3) जबकि अधिकतर ऑस्ट्रेलिया (मेलबोर्न, सिडनी आदि), पूर्वी एशिया (जापान, दक्षिणी कोरिया), फिजी आदि में यह ग्रहण खण्डग्रास रूप में चन्द्रदय के समय देखा जा सकेगा। (अर्थात् ग्रस्तोदय रूप में)

भा.स्टैं.टा. अनुसार इसके स्पर्शादि का समय इस प्रकार रहेगा–

हालैण्ड, नौर्वे, पौलैण्ड, पुर्तगाल, रोमानिया, उत्तरी रूस, स्पेन, सूरीनाम, स्वीडन

भा.स्टैं.टा. अनुसार इसके स्पर्शादि का समय इस प्रकार रहेगा–

| | | |
|---|---|---|
| ग्रहण प्रारम्भ | $10^{\text{घं.}}$–$40^{\text{मिं.}}$ | 14 मार्च, 2025 ई. (भा.स्टैं.टा.) |
| खग्रास प्रारम्भ | $11^{\text{घं.}}$–$56^{\text{मिं.}}$ | |
| परमग्रास | $12^{\text{घं.}}$–$29^{\text{मिं.}}$ | |
| खग्रास समाप्त | $13^{\text{घं.}}$–$01^{\text{मिं.}}$ | |
| ग्रहण समाप्त | $14^{\text{घं.}}$–$18^{\text{मिं.}}$ | |

[ग्रहण का ग्रासमान = 1.178%, खग्रास की अवधि = $1^{\text{घं.}}$–$05^{\text{मिं.}}$]

[चंद्र मालिन्य प्रारम्भ = $9^{\text{घं.}}$-$27^{\text{मिं.}}$, चंद्र मालिन्य समाप्त = $15^{\text{घं.}}$-$30^{\text{मिं.}}$]

## विश्व परिदृश्य-खग्रास चन्द्रग्रहण (14 मार्च, 2025 ई.)

(अर्थात् यह चन्द्रग्रहण भूगोल पर कहाँ-कहाँ ग्रस्तोदय, कहाँ ग्रस्तास्त, कहाँ सर्वथा अदृश्य और कहाँ सम्पूर्ण काल के लिए दृश्य होगा ?)

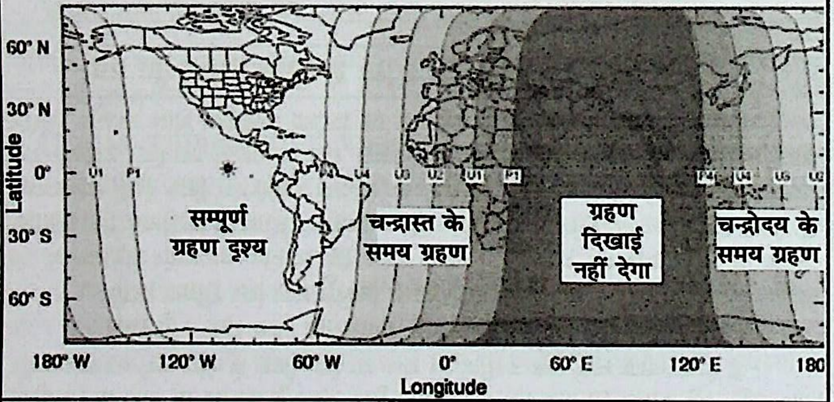
60° N
30° N
Latitude
0°
30° S
60° S
U1
P1
U4
U3
U2
U1
P1
P4
U4
U3
U2
सम्पूर्ण ग्रहण दृश्य
चन्द्रास्त के समय ग्रहण
ग्रहण दिखाई नहीं देगा
चन्द्रोदय के समय ग्रहण
180° W
120° W
60° W
0°
60° E
120° E
180
Longitude

## (4) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (29 मार्च, 2025 ई., शनिवार)

यह खण्डग्रास सूर्यग्रहण चैत्र अमावस, शनिवार तद्नुसार 29 मार्च, 2025 ई. को भा.स्टैं.टा. अनुसार दुपैहर $14^{\text{घं.}}$–$21^{\text{मिं.}}$ से सायं $18^{\text{घं.}}$–$14^{\text{मिं.}}$ तक घटित होगा।

यह खण्ड सूर्यग्रहण यूरोप के अधिकतर देशों, उत्तर-पश्चिमी अफ्रीका के देशों, उत्तरी अमरीका के पूर्वी क्षेत्रों, उत्तरी रूस, दक्षिणी अमरीका के उत्तरी भाग, एटलांटिक तथा आर्कटिक महासागर में दिखाई देगा।

### मुख्य देश जहाँ यह खण्ड सूर्यग्रहण दिखाई देगा

ऑस्ट्रिया, बारबाडोस (W. Endies), बैल्जियम, बारमूडा (W. Endies), उ. ब्राज़ील, कैनेडा के पूर्वी भाग [मांट्रियाल, St. John's (New Foundland) आदि], डेनमार्क, फिनलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, ग्रीनलैण्ड, हंगरी, ऑयरलैण्ड, इटली, लिथुआनिया, मौरक्को, हालैण्ड, नॉर्वे, पौलैण्ड, पुर्तगाल, रोमानिया, उत्तरी रूस, स्पेन सूरीनाम, स्वीडन, Switzerland, यूक्रेन, अमरीका के पूर्वी क्षेत्रों (New York आदि), तथा इंगलैण्ड आदि देशों में इस ग्रहण की खण्डग्रास आकृति दिखाई देगी। भा.स्टैं.टा. अनुसार इस ग्रहण का समय इस प्रकार रहेगा–

| | | |
|---|---|---|
| ग्रहण प्रारम्भ | $14^{\text{घं.}}$–$21^{\text{मिं.}}$ | 29 मार्च, 2025 ई. (भा.स्टैं.टा.) |
| ग्रहण मध्य | $16^{\text{घं.}}$–$17^{\text{मिं.}}$ | |
| ग्रहण समाप्त | $18^{\text{घं.}}$–$14^{\text{मिं.}}$ | |

[ग्रहण का ग्रासमान = 0.938%]

## विश्व परिदृश्य-खण्ड सूर्यग्रहण (29 मार्च, 2025 ई.)

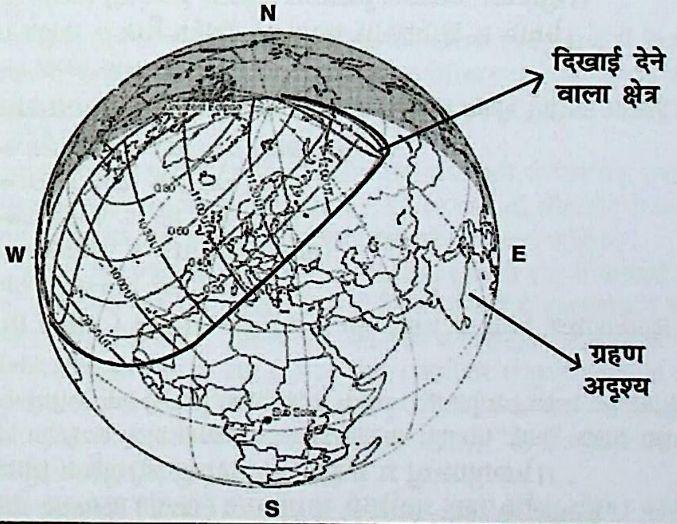
N
दिखाई देने वाला क्षेत्र
W
E
ग्रहण अदृश्य
S

## आगामी वि. संवत् 2082 में घटित होने वाले ग्रहणों का विवरण

(1) खग्रास चन्द्रग्रहण (7/8 सितम्बर, 2025 ई.) (भारत में दृश्य)
(2) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (21 सितम्बर, 2025 ई.) (भारत में अदृश्य)
(3) कंकण सूर्यग्रहण (17 फरवरी, 2026 ई.) (भारत में अदृश्य)
(4) खग्रास चन्द्रग्रहण (3 मार्च, 2026 ई.) (भारत में दृश्य)

[आगामी वि. संवत् में पृथ्वी पर दो सूर्यग्रहण तथा दो चन्द्रग्रहण घटित होंगे। इनमें से भारतवर्ष में केवल दोनों चन्द्रग्रहण ही दृश्यमान होंगे। दोनों सूर्यग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देंगे।]

# शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल विचार-सं. २०८१ (सन् 2024-25 ई.)

गतवर्ष से (17 जनवरी, 2023 ई.) **कुम्भ राशि** में संचरणशील **शनि-देव** आगामी वि. संवत् २०८१ **( 9 अप्रैल, 2024 ई. से 29 मार्च 2025 ई. तक )** के लगभग सम्पूर्ण कालावधि में **कुम्भ राशि** में ही संचार करेंगे।

ता. 29 जून, 2024 ई. को कुम्भ राशि में ही वक्री होकर 15 नवम्बर, 2024 ई. से मार्गी होकर संचार करेंगे।

→[संवत् के अन्त में अन्तिम तिथि को अर्थात् 29 मार्च, 2025 ई. के दिन शनिदेव मीन राशि में प्रवेश करेंगे, जिसका विवरण आगामी वर्ष के पंचांगदिवाकर में दिया जाएगा।]

**ध्यान रहे !** शनि, मंगल आदि क्रूर ग्रह जब किसी राशि में गोचरवश वक्री होकर संचार करते हैं, तो और भी अधिक क्रूर एवं अशुभफलदायक बन जाते हैं, जबकि गुरु, शुक्र आदि सौम्य ग्रह स्व/मित्र राशि में वक्री होने पर और भी अधिक शुभ फल प्रदान करते हैं–

**यदा क्रूर ग्रहो वक्री अतिचारी तु सौम्यकः।**
**पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्यं विग्रहम्।।**

फलस्वरूप गोचरवश शनिदेव की वक्री अवस्था में संचार की समयावधि में जातक/जातिका को मानसिक व शारीरिक कष्ट, आर्थिक परेशानियां, रोगादि प्रकट होने लगते हैं। समाज/देश में भी कहीं राजनीतिक टकराव, अव्यवस्था, अत्यधिक महँगाई, राजनैतिक उलट-फेर, क्लिष्ट रोगों का फैलाव व भय, उपद्रव, हिंसक घटनाएँ, अस्थिरता, असन्तोष, बाढ़, दुर्भिक्ष, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय एवं असुरक्षा का वातावरण बनता है।

## कब और क्यों होती है शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या ?

बारह राशियों पर शनिदेव की साढ़ेसाती एवं ढैय्या का प्रभाव कब और कैसे होता है, यह समझ लेना आवश्यक है। सौरमण्डल में नवग्रहों के मध्य शनि पृथ्वी से सबसे अधिक दूरी पर संचरणशील ग्रह है। शनि एक राशि में लगभग अढ़ाई वर्ष के काल तक संचरित रहता है। शनि की वक्री-मार्गी आदि गति की समयावधि में परिवर्तन के कारण अढ़ाई वर्षों के काल की न्यून-अधिकता भी होती रहती है। परन्तु शनि सम्पूर्ण राशिचक्र का परिभ्रमण (360°) 29 वर्ष, 5 मास, 17 दिन एवं 5 घण्टों में तय करता है। गोचरवश शनि जब किसी राशि में प्रवेश करता है, तभी शनि उस राशि से 12वीं राशि को आगामी अढ़ाई वर्ष तक, पहिली (1) अर्थात् जिस राशि में प्रवेश किया गया हो, उसे लगभग 5 (पाँच) वर्ष तक तथा अपनी से दूसरी (2 री) राशि को लगभग साढ़ेसात वर्ष तक (आगामी 7½) वर्षों) अशुभ प्रभाव करेगा। इस प्रकार **पहिली (1), दूसरी एवं 12वीं** राशि पर लगभग साढ़ेसात वर्षों तक प्रभावित करने के कारण शनि की यह चक्र-प्रक्रिया ही **शनि-साढ़ेसाती** कहलाती है–

**द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः।**
**सार्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुखैः युतो भवेत्।।**

शनि-साढ़ेसाती के प्रभावस्वरूप मानसिक संताप, शरीर, कष्ट, गृह कलह-क्लेश, धन सम्बन्धी आर्थिक उलझनें, आय-सीमित तथा खर्च की अधिकता रहे। रोग व शत्रु भय, बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएँ, सन्तान एवं परिवार सम्बन्धी परेशानियां उत्पन्न होती हैं।

**शनि की ढैय्या ( लघु कल्याणी )**–गोचरवश शनि जब चन्द्रराशि (या नामराशि) से **चौथे** या **आठवें** स्थान पर संचार करता है, तब शनि की ढैय्या कहलाती है। यह लगभग अढ़ाई (2½) वर्ष के लिए होती है। इसका प्रभाव भी अशुभ माना गया है–

**"लघु कल्याणी (ढैय्या) प्रददाति वै रविसुतोः राशे चतुर्थाष्टमे,**
**व्याधिं बन्धुविरोधं विदेशगमनं, क्लेशं च चिन्ताधिकम्।।"**

अर्थात् शनि की ढैय्या के प्रभावस्वरूप जातक/जातिका को रोग, शोक, कलह-क्लेश, धन-हानि, बन्धु-विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएँ व विलम्ब एवं आर्थिक उलझनों का सामना रहता है।

**शनि पाया ( पाद ) विचार**–शनिदेव के राशि प्रवेश के समय जन्म/नामराशि से चन्द्रमा की स्थिति के अनुसार होता है।

**स्वर्णपाद**→चन्द्रमा 1, 6, 11वें भाव (स्थान)
**रजतपाद**→चन्द्रमा 2, 5, 9वें भाव (स्थान)
**ताम्रपाद**→चन्द्रमा 3, 7, 10वें भाव (स्थान)
**लौहपाद**→चन्द्रमा 4, 8, 12वें भाव (स्थान) में हो।

**शनि संचार का फल**–शनि के राशि परिवर्तन होने पर मेषादि विभिन्न राशियों पर उसका प्रभाव भी अलग-अलग होता है–

**भ्रंशं क्लेशं च शत्रु प्रवृद्धिं पुत्रसौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम्।**
**पीड़ा सौख्यं निर्धनत्वं धनाप्तिं नानानर्थं भानुसूनु-स्तनोति।।**

अर्थात् गोचर में शनि जन्म राशि से पहले स्थान में हो तो मानसिक व्यथा एवं स्थान-हानि, दूसरे में कलह-क्लेश, तीसरे में पराक्रम एवं सुख में वृद्धि, चौथे में शत्रु वृद्धि, पंचम में सन्तान सम्बन्धी दुःख, षष्ठ में सुख-साधनों में वृद्धि, सप्तम में रोग व शत्रु-भय, अष्टम में दुःख-पीड़ा, नवम में सुख, दशम में धन-हानि व खर्च, एकादश में धन लाभ तथा 12वें में शनि आए तो अनेक प्रकार के अनर्थ होते हैं।

## कुम्भ राशिस्थ शनि में सुवर्णादि पाया फल विचार

शनि गतवर्ष 17 जनवरी, 2023 ई. को सायं 18$^{\text{घं.}}$-02$^{\text{मिं.}}$ पर वृश्चिक राशिस्थ चंद्रकालीन कुम्भ राशि में प्रवेश कर चुके हैं। तदनुसार मेषादि राशियों पर ताम्रादि पाया इस प्रकार से होगा–

***( 1 ) मेष, सिंह तथा धनु राशियों पर लौहपाद होने से जातक को आर्थिक, घरेलू एवं***

व्यवसायिक परेशानियाँ/उलझनें अधिक होती हैं। व्यवसाय में विघ्न-बाधाएँ रहें, प्रयत्न करने

सदा दुखः युता भवेत्।।

**( 1 ) मेष, सिंह तथा धनु राशियों पर लौहपाद होने से जातक को आर्थिक, घरेलू एवं** व्यवसायिक परेशानियाँ/उलझनें अधिक होती हैं। व्यवसाय में विघ्न-बाधाएँ रहें, प्रयत्न करने पर भी लाभ कम व खर्च अधिक रहें। स्वास्थ्य में गड़बड़, तनाव एवं उलझनें बढ़ेंगी। दुर्घटना से चोटादि का भय रहता है।

**( 2 ) वृष, कन्या** तथा **कुम्भ** राशियों पर ताम्र-पाद (पाया) होने से शुभ फल प्राप्त होंगे। कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क व पदोन्नति प्राप्त हो। उच्च-विद्या में सफलता, विवाह, सन्तान आदि पारिवारिक तथा आरोग्यादि सुखों की प्राप्ति, सवारी (वाहनादि) सुख-सुविधाओं एवं च धन-सम्पदा की प्राप्ति होगी। देश-विदेश की यात्राओं के भी अवसर प्राप्त होंगे।

**( 3 ) मिथुन, वृश्चिक** तथा **मकर** राशियों पर सुवर्ण-पाद रहने से इन राशि के जातकों को संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। पारिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनें, आय सम्बन्धी चिन्ता बनी रहती है। शत्रु भय, शरीर कष्ट, क्लिष्ट रोग तथा मानसिक तनाव अधिक रहे। वृथा खर्च तथा भाई-बन्धुओं के साथ मनमुटाव भी रहे।

**( 4 ) कर्क, तुला** तथा **मीन** राशियों पर रजतपाद शुभफल प्रदायक होगा। नौकरी में पदोन्नति, विदेशगमन तथा आकस्मिक धन लाभ होगा। गत किए गए प्रयासों में सफलता मिलेगी। आकस्मिक धन लाभ, उच्च प्रतिष्ठा, भूमि-वाहनादि सुख, स्त्री-सन्तान आदि पारिवारिक सुखों की प्राप्ति होगी।

## ✪ कुम्भ राशिस्थ शनि-साढ़ेसाती एवं ढैय्या फल विचार ✪

### [ सम्पूर्ण सम्वत् ( 9 अप्रैल, 2024 ई. से 29 मार्च, 2025 ई. तक) ]

✤ **साढ़ेसाती→मकर, कुम्भ** व **मीन** राशि वाले जातक/जातिकाओं को शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

*(i)* **मकर** राशि वाले जातक/जातिकाओं को साढ़ेसाती पाँव पर उतरती हुई अर्थात् अन्तिम चरण में होगी।

*(ii)* **कुम्भ** राशि वालों को शनि-साढ़ेसाती हृदय पर चढ़ती हुई अर्थात् मध्य अवस्था में होगी।

*(iii)* मीन राशि वालों को शनि-साढ़ेसाती सिर पर चढ़ती अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था में होगी।

मकर राशि वालों को प्रारम्भ के अढ़ाई, कुम्भ व मीन राशि वालों को अन्त के अढ़ाई वर्ष विशेषतः अशुभ फलकारक रहते हैं।

**ढैय्या विचार-'कर्क'** तथा **'वृश्चिक'** राशि वाले जातकों को शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा।

## ✻ कुम्भ राशिस्थ शनि का द्वादश राशियों पर गोचरफल-सं. २०८१ ✻

### (9 अप्रैल, 2024 ई. से संवतान्त तक)

शनि का कुम्भ राशि में गोचर फलादेश यद्यपि गतवर्षीय पंचांगदिवाकर में लिख चुके हैं, परन्तु सन् 2024-25 ई. में मंगल, गुरु आदि ग्रहों का राशि परिवर्तन होने से शनि के गोचरफल का भी न्यूनाधिक रुपेण अन्तर पड़ जाएगा।

✤ **मेष**-एकादशस्थ शनि यद्यपि शुभ फलदायक होता है। व्यवसाय में वृद्धि तथा कार्यों में कुछ सफलता प्राप्त होती रहेगी। परन्तु इस राशि पर शनि की नीच दृष्टि तथा पाया भी लौह होने से भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाएँ रहें। ता. 20 अक्तू. से 20 जन., (2025 ई०) तक राशिस्वामी मंगल की शनि पर विशेष शत्रु दृष्टि रहने से निकटस्थ सम्बन्धियों से तनाव, क्रोध व शरीर कष्ट रहे।

✤ **वृष**-दशमस्थ शनि शुभ है। संघर्ष एवं परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। पाया ताम्र होने से भी परिस्थितियों में धीरे-धीरे सुधार होता जाएगा। आकस्मिक धन लाभ तथा भूमि-वाहनादि सुखों में वृद्धि होगी।

✤ **मिथुन**-नवमस्थ शनि बाधाकारक है। पारिवारिक तनाव एवं उलझनें बढ़ेंगी। बन्धुओं से विरोध तथा संघर्षपूर्ण परिस्थितियां रहेगी। इस राशि पर शनि का पाया सुवर्ण होने से भी निकट-बन्धुओं से मतभेद पैदा हों। सितं.-अक्तू. में बुध उच्चस्थ रहने से कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी।

✤ **कर्क**-राशि से शनि अष्टमस्थ (ढैय्या) होने से अनावश्यक खर्च, कार्यों में विघ्न-बाधाएं एवं आर्थिक उलझनों का सामना रहेगा। गृह-कलह, शारीरिक कष्ट, दुर्घटनादि के प्रति सतर्क रहे। परन्तु शनि का पाया चाँदी होने से बीच-बीच में धन लाभ, पदोन्नति व विदेश-भ्रमण के चाँस बनेंगे।

✤ **सिंह**-सप्तमस्थ शनि पूज्य है। शनि की विशेष शत्रु दृष्टि रहने से मानसिक तनाव, क्रोध अधिक, कार्य-व्यवसाय में संघर्ष तथा हानि रहेगी। शनि का पाया भी लौह होने से धन-हानि, बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी तथा शत्रु हानि पहुँचाने का प्रयास करेंगे।

✤ **कन्या**-षष्ठस्थ शनि अशुभ है, परन्तु शनि का पाया ताम्र (ताँबा) होने से बाधाओं के साथ-साथ कार्यों में आंशिक लाभ एवं सफलता प्राप्त होगी। सम्बन्धियों से अनुकूलता व गृह में शुभ कार्य सम्पन्न होंगे। बीच-बीच में स्वास्थ्य कष्ट, धन-हानि व अनावश्यक खर्च भी बढ़ेंगे।

✤ **तुला**-राशि से शनि पंचमस्थ होने से पूज्य रहेगा। कारोबार में कुछ अस्थिरता के हालात रहेंगे। वृथा कलह तथा बन्धुओं से विरोध रहे। परन्तु शनि का पाया रजत (चाँदी) होने से धन लाभ, पदोन्नति, मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि व कार्यों में सफलता के योग हैं। ता. 1 मई के बाद स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

✤ **वृश्चिक**-चतुर्थस्थ शनि होने से शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा। कार्य-व्यवसाय अथवा निवास स्थान में कुछ परिवर्तन की योजना बनेगी। अप्रैल के बाद धर्म-कर्म की भी प्रवृत्ति बढ़ेगी। शनि का पाया सुवर्ण होने से संघर्ष अधिक व आय सम्बन्धी चिन्ता बनी रहे व बन्धु विरोध भी रहे।

✤ **धनु**-तृतीयस्थ शनि शुभ है। कठिन समस्याओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु शनि-पाया लौह होने से मानसिक तनाव व आशाओं में विफलताएं रहें। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता व व्यय भी अधिक रहे।

✤ **मकर**-शनि द्वितीयस्थ रहने से शनि-साढ़ेसाती का अशुभ प्रभाव रहेगा। पारिवारिक उलझनें, माता को कष्ट, स्वयं को भी स्वास्थ्य-कष्ट, व्यवसाय में लाभ कम रहे। शनि-पाया भी सुवर्ण होने से धन लाभ अल्प तथा सोची योजनाओं के क्रियान्वयन में विघ्न-बाधाएँ रहेंगी।

✤ **कुम्भ**—लग्नस्थ शनि (साढ़ेसाती) पूज्य है। निकट बन्धुओं से वृथा कलह, व्यवसाय एवं धन लाभ प्राप्ति में रुकावटें उत्पन्न होंगी। शरीर कष्ट व चिन्ता बढ़ेगी। परन्तु शनि-पाया ताम्र होने से प्रगतिपद योजनाएं बनें, अकस्मात् धन लाभ तथा परिवार में मंगल कार्य भी सम्पन्न हो।

✤ **मीन**—शनि द्वादशस्थ (साढ़ेसाती) अशुभ है। पारिवारिक एवं व्यवसायिक जीवन में बड़ी उथल-पुथल वाली परिस्थितियां बनेंगी। परन्तु इस राशि पर शनि पाया चाँदी होने से अत्यधिक संघर्ष व कठिनाइयों के बावजूद मनोकामनाओं की पूर्त्ति, बिगड़े कार्यों में सुधार तथा आकस्मिक धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

## शनि–साढ़ेसाती एवं ढैय्या सम्बन्धी विशेष उपाय

शनि साढ़ेसाती अथवा शनि ढैय्या का फल सदा अनिष्टकारी ही होगा–ऐसा आवश्यक नहीं। **ध्यान रहे**, शनि सभी राशियों पर एक जैसा प्रभाव नहीं करता है, बल्कि स्वराशि, उच्च-मित्रादि स्थिति से एवं शुभाशुभ दृष्टियों के प्रभावस्वरूप इसके फल में न्यूनाधिक अन्तर पड़ना भी सम्भव है। जन्मकुण्डली एवं नवांश में शनि की स्थिति अच्छी हो एवं जातक की ग्रह-दशा भी शुभ हो, तो शनि की साढ़ेसति या ढैय्या का अशुभ प्रभाव भी अपेक्षाकृत कुछ कम होगा। इसके अतिरिक्त वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ राशि पर शनि की स्थिति या दृष्टि शुभ, लाभदायक एवं योगकारक भी हो सकती है। किसी विशेष राशि पर शनि साढ़ेसाती का विचार करते समय उस राशि पर अन्य ग्रहों की स्थिति, दृष्टि आदि का प्रभाव, सुवर्णादि पाया का अवश्य विचार करना चाहिए।

कुण्डली में शनि की स्थिति एवं दशाऽन्तर्दशा शुभ होने पर कार्य-व्यवहार व योजनाओं में सफलता, लाभ, व्यवसायिक विद्याओं में उन्नति, क्रय-विक्रय विशेषकर लोहे, तेल के कार्य-व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

शनि की दशाऽन्तर्दशा अथवा साढ़ेसाती अशुभ स्थिति में होने से व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगता अथवा परिश्रम करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होती। वह कुछ चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है, उसके प्रत्येक कार्य में विघ्न पैदा होते हैं। निकट सहयोगी भी परायों जैसे व्यवहार करने लगते हैं। अतएव ऐसी स्थिति में जातक को शनि का पूजन, दान, मन्त्र-जाप तथा औषधि स्नान आदि करने से शनि के अरिष्ट की शान्ति होती है।

जन्म कुं. में शनि यदि अशुभ हो अथवा जन्म-नक्षत्र पर शनि का संचार हो, तो जातक/जातिका को वायु-विकार, त्वचा रोग, घुटनों में दर्द, उच्च या निम्न रक्तचाप आदि रोग होते हैं।

शनि प्रायः क्लिष्ट रोग एवं दुःख देकर दुष्ट-कर्मों का भुगतान करवाता है। शनि के अरिष्टकाल में कोई-न-कोई झंझट चलता रहता है। आर्थिक संकट एवं घरेलू कलह का भय होता है। वायु प्रकोप आदि शरीर कष्ट, मानसिक अशान्ति रहती है। अपने भी पराये होने लगते हैं। आय कम तथा खर्चों में अधिकता होने लगती है।

**उपाय**—शास्त्रों में प्रतिपादित उपायों को विधिपूर्वक करने से अवश्य लाभ पहुँचेगा–

(1) प्रत्येक शनिवार को शनि के बीज मन्त्र का संकल्पपूर्वक पाठ करें–

**'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः'**

कम-से-कम 3 माला अवश्य करें। पाठ उपरान्त निम्न शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा–

**नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च। नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः॥**

(2) शनिवासरी अमावस्या हो, तो उस दिन सायं, सूर्यास्त के बाद शनि पूजन, मन्त्र-जाप एवं स्तोत्र पाठ करना विशेष लाभकारी होगा।

**विधि**—सायं सूर्यास्त के बाद, स्नानादि उपरान्त पश्चिम दिशा की ओर मुख करके काले रेशमी आसन (कम्बलादि) पर बैठ जाएँ। सामने स्टील की थाली में लगभग 100 ग्राम जौं, 100 ग्राम काले तिल, काले वर्ण के कुछ फूल, 1 मुट्ठी चावल, 5 साबुत सुपारी, मौली, धूपबत्ती, रोली, लाल चंदन, काली मिठाई जैसे-गुलाब जामुन भी रख लें।

स्टील की कटोरी में सरसों के तेल का दीपक जलाकर रखें। सामने एक नारियल तिलक लगाकर, स्टील का लोटा शुद्ध जल भरकर रखें। शनि के बीज मन्त्र की 1 या 3 माला करके उसे पूजन सामग्री के साथ बहते पानी में विसर्जित कर देवें।

(3) शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ या श्रवण करना शुभ होगा।

(4) श्रवण नक्षत्र में शनिवार के दिन काले रंग के धागे में शमी की अभिमंत्रित जड़ धारण करने से, शनि से सम्बन्धित वस्तुएं तथा तेल, लोहा, काले-तिल, कुलथी या काली मसूर की दाल, काला जूता, कस्तूरी आदि दान करने से भी शनि के अशुभ फल में कमी आती है।

(5) पक्षियों को दाना चुगाना, अपनी छाया (परछाई) देखकर शनिवार के दिन तेल का दान, महामृत्युञ्जय मंत्र का शुद्ध उच्चारण के साथ निष्ठापूर्वक जाप, निम्न शनि लघु स्तोत्र का पाठ तथा '**शनि वज्र-पञ्जर कवच**' का पाठ सर्वाधिक उपयुक्त माना गया है।

**शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि** पाया के अशुभ फल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र की 23 हज़ार की संख्या में विधिपूर्वक जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। शनिवार का व्रत रखना, उड़द, सप्तधान्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित **शनि यन्त्र** धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

**शनि का बीज मन्त्र**— ***''ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।।''***

**शनि का वैदिक मन्त्र**—

***''ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शं योरभिस्रवन्तु नः॥ शं नमः॥''***

***शनि लघु स्तोत्र***–

**''ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते॥**
**नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो॥**
***नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥''***

**उपाय**—शास्त्रों में प्रतिपादित उपायों को विधिपूर्वक करने से अवश्य लाभ प्राप्त होगा।

प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान शिव की पूजनोपरान्त पीपल वृक्ष के समीप इस स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्ष के मूल में लस्सी चढ़ाना तथा सायंकाल को तैल का दीपक जलाकर प्रार्थना करने से शनि-जनित अरिष्टों की शान्ति होती है।

शनि सम्बन्धित अधिक उपायों एवं जानकारी के लिए पं. पन्ना लाल ज्योतिषी कृत **'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय'** पुस्तक मंगवाकर पढ़ें। **मूल्य-250 रु.**

## आगामी 12 वर्षों में शनि का राशि-परिवर्तन एवं साढ़ेसाती ज्ञान

| | |
|---|---|
| **(1) 29 मार्च, 2025 ई. से मीन में** | [साढ़ेसाती = कुम्भ, मीन, मेष] |
| **(2) 3 जून, 2027 ई. से मेष में** | [साढ़ेसाती = मीन, मेष, वृष] |
| **(3) 20 अक्तू, 2027 ई. से वक्री मीन में** | [साढ़ेसाती = कुम्भ, मीन, मेष] |
| **(4) 23 फरवरी, 2028 ई. से मेष में** | [साढ़ेसाती = मीन, मेष, वृष] |
| **(5) 8 अगस्त, 2029 ई. से वृष में** | [साढ़ेसाती = मेष, वृष, मिथुन] |
| **(6) 5 अक्तू., 2029 ई. से वक्री मेष में** | [साढ़ेसाती = मीन, मेष, वृष] |
| **(7) 17 अप्रैल, 2030 ई. से वृष में** | [साढ़ेसाती = मेष, वृष, मिथुन] |
| **(8) 31 मई, 2032 ई. से मिथुन में** | [साढ़ेसाती = वृष, मिथुन, कर्क] |
| **(9) 13 जुलाई, 2034 ई. से कर्क में** | [साढ़ेसाती = मिथुन, कर्क, सिंह] |
| (10) 27 अगस्त, 2036 ई. से सिंह में | [साढ़ेसाती = कर्क, सिंह, कन्या] |

## ✤ गुरु का शुभाशुभ गोचरफल-संवत् २०८१ ✤

### [9 अप्रैल, 2024 ई. से 29 मार्च, 2025 ई. तक]

गतवर्ष 22 अप्रैल, 2023 ई. से मेष राशि में संचार कर रहा 'गुरु' आगामी वि. संवत् २०८१ में 30 अप्रैल, 2024 ई. तक मेष राशि में ही संचार करेगा।

ता. 1 मई, 2024 ई. के दिन दोपहर 12 बजकर 57 मिनट पर वृष राशि में प्रवेश करेगा और संवत् के अन्त (29 मार्च, 2025 ई.) तक वृष में ही संचरित रहेगा।

**वक्री-मार्गी**—9 अक्तूबर, 2024 ई. से 3 फरवरी, 2025 ई. तक **गुरु वक्री** रहेंगे। तथा 4 फरवरी, 2025 से मार्गी होकर ही संचार करेंगे।

**मई** मास में गुरु की अतिचारी गति एवं अस्त रहने, तदुपरान्त जून-जुलाई में शीघ्र गति से संचार करेगा। जिसके प्रभावस्वरूप दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में ज़बरदस्त तेजी के कारण सामान्य लोगों में विक्षोभ, भय एवं क्रोध की भावना रहे। कहीं उपद्रव, लूटमार व हिंसक घटनाएँ घटित हों। कुछ राज्यों में सत्ता परिवर्तन होने के संकेत हैं-

**यदा सौम्यग्रहकोपि अतिचारोपजायते। दुर्भिक्षं नृपपीडा च शुभं व दृश्यति क्वचित्।।**

प्रजा में अशान्ति एवं अराजकता का माहौल बनेगा। गुरु के वक्री-काल में गुरु प्रभावित जातकों को मानसिक तनाव तथा सोची हुई योजनाएँ पूर्ण होने में विलम्ब हों।

**ध्यान रहे**, गुरु लगभग 4 मई, 2024 ई. से 28 मई, 2024 ई. के मध्य अतिचार गति को प्राप्त रहेगा।

**मेष राशि**—मेष राशिस्थ गुरु संचारकालीन (9 अप्रैल, 2024 ई. से 30 अप्रैल, 2024 ई. तक) चन्दन, पुष्प तथा अन्य सुगन्धित वस्तुएँ एवं च तेलादि सब वस्तुएँ दो मास के भीतर महँगी हो जाएगी। यद्यपि अनाज आदि उत्पादन के क्षेत्र में सुभिक्ष (कुशल-क्षेम) रहे। राजाओं में विग्रह अर्थात् पुराने गठबन्धनों में विच्छेद हो। वस्त्र-कपास, सोना, चाँदी, ताँबा, कपास और मूंग आदि सस्ते होंगे।

**वृष राशि-( 1 मई से संवतान्त तक )-**

**वैशाखेब्दे तु राजानो धर्ममार्गरताः क्षितौ।**
**क्षेमं सुभिक्षमारोग्यं द्विजाश्चाध्वर तत्पराः।।**

अर्थात् वैशाख मास में गुरु का राशि-परिवर्तन होने से सभी राजा (शासकाध्यक्ष) पृथ्वी पर धर्मराज्य करें। सभी ओर कुशल-क्षेम, श्रेष्ठ अनाज उत्पादन, आरोग्य तथा ब्राह्मण यज्ञादि अनुष्ठानों में रत रहे। (देखें पृष्ठ 90)

**विशेष ध्यातव्य-'वृष'** राशि पर संचार के समय गुरु की इस राशि पर शत्रुगत स्थिति, वृश्चिक राशि पर सप्तम मित्र दृष्टि परन्तु कन्या व मकर राशि पर क्रमशः शत्रु एवं नीच दृष्टि रहेगी। फलस्वरुप वृश्चिक राशि वालों को विद्या में सफलता, विवाह-सन्तान सम्बन्धी सुख, धार्मिक/आध्यात्मिक कार्यों में रूचि आदि शुभ फल प्राप्त होने की सम्भावनाएं बनेंगी। परन्तु कन्या व मकर राशि वालों को गुरु की शत्रु दृष्टि के कारण विद्या में यथेष्ठ सफलता न मिलना, प्रियजन वियोग, स्वास्थ्य कष्ट, निकटस्थ बन्धुओं के साथ मतभेद आदि अशुभ फल घटित होने की सम्भावनाएं रहेंगी।

## ✤ मेष राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ गोचरफल ✤

### [9 अप्रैल, 2024 ई. से 30 अप्रैल, 2024 ई. तक]

| मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्नस्थ गुरु पूज्य है। शरीर कष्ट व तनाव हो, आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। धर्म-कर्म की ओर रुचि हो। | द्वादश गुरु होने से आय अल्प व खर्च अधिक होंगे। घरेलु व व्यवसाय सम्बन्धी उलझनों से तनाव रहे। | भाग्य-वश लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त हों, धन-भूमि, सवारी आदि सुखों में वृद्धि हो, कार्यों में सफलता हो। | दशमस्थ गुरु होने से संघर्ष व कठिनाईयों के बाद ही गुज़ारे योग्य आय, खर्च अधिक, तनाव व रोग-भय। | भाग्य भाव में गुरु शुभ फल देगा, उच्च विद्या एवं कैरियर में सफलता, धर्म-कर्म में रुचि बढ़े। | आय कम व खर्च अधिक रहेंगे, घरेलु व व्यवसाय में उलझनें बढ़ेंगी, मानसिक तनाव, गुप्त चिन्ता व रोग भय रहे। | विशेष परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। सवारी सुख मिले परन्तु स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें। | व्यय अधिक रहे, ऋण, रोग व शत्रु भय हो, बनते कामों में अड़चनें रहें। भाग-दौड़ अधिक रहे। | गृह में कोई शुभ कार्य पर खर्च हो, विद्या-भूमि व वाहन सम्बन्धी सुख मिलें। भाग्य उन्नति हो। | गुरु चतुर्थस्थ होने से आराम कम व संघर्ष अधिक, धन-वाहन संबंधी परेशानी, निर्वाह योग्य आय बनें। | गुरु तृतीय होने से आय साधारण, आकस्मिक खर्च, शरीर कष्ट व घरेलु उलझनें व तनाव बढ़ेंगे। | उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से मेल हो, दीर्घ यात्रा के योग, धन लाभ, शुभ कार्यों पर खर्च हो। |

## ✤ वृष राशिगत गुरु का शुभाशुभ गोचरफल ✤

### [1 मई, 2024 ई. से संवतान्त 29 मार्च, 2025 ई. तक]

| मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धन लाभ व उन्नति के अवसर, शुभ कार्यों पर खर्च, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। | लग्नस्थ गुरु पूज्य है। आय कम, खर्च अधिक होंगे। धर्म पालन करने से लाभ के चाँस बनेंगे। | द्वादश-स्थ गुरु होने से आय अल्प व खर्च अधिक रहेंगे। बनते कामों में विघ्न पैदा होंगे। व्यवसाय संबंधी उलझनें रहें। | लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त हों, धन, भूमि-सवारी आदि सुखों में वृद्धि हो, कार्यों में सफलता प्राप्त हो। | कार्य-व्यवसाय में उलझनों के बाद धन प्राप्ति हो, खर्च भी अधिक रहें। तनाव के कारण स्वास्थ्य खराब हो। | गुरु नवम भाव में होने से कार्यों में सफलता, लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। धर्म-कर्म की ओर रुचि बढ़ेगी। | अष्टमस्थ गुरु होने से क्लिष्ट रोग का भय, आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। घरेलु उलझनें, यात्रा व तनाव बढ़ेंगे। | सप्तम गुरु होने से धन लाभ एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। विशेष संघर्ष के बाद लाभ के चाँस बनेंगे। | छटे गुरु होने से खर्च बढ़ेंगे। रोग एवं गुप्त शत्रुओं का भय रहेगा। निकट बन्धुओं से वृथा तकरार पैदा हो, तनाव बढ़ें। | पंचमस्थ गुरु होने से उच्च विद्या में सफलता, विवाह आदि सुखों की प्राप्ति, श्रेष्ठजनों से सम्पर्क, लाभ व उन्नति के अवसर मिलेगें। | चतुर्थस्थ गुरु होने से साधनों में वृद्धि परन्तु सुख में कमी हो, तनाव व अशान्ति बढ़े, सवारी से चोटादि का भय, खर्चों में वृद्धि हो। | स्थान परिवर्तन, धन का खर्च बढ़े, परन्तु आय कम रहे। इष्टजनों से वियोग, कार्यों में विघ्न, मित्रों से विरोध रहे। |

**गुरु का कारकत्व**—गुरु पति-सुख, धर्म-आध्यात्म, सन्तान, पुत्र, विद्या, विवेक-बुद्धि, बड़ा भाई, सुवर्ण, ज्योतिष आदि विद्याओं का कारक माना जाता है। शरीर में लिवर, हृदयकोश, पाचन प्रक्रिया, कान आदि का भी कारक माना जाता है। कुण्डली में गुरु अशुभ हो अथवा अशुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त हो, तो गुरु सम्बन्धित सुख में कमी करता है। अधिक जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से छपी **'ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग-1'** में गोचर विचार पढ़ना चाहिए।

**गुरु के अशुभ फल की शान्ति के लिए दान**—गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, गुरुवासरी अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं, धार्मिक ग्रन्थ आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मंत्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरु के बीज मंत्र, बृहस्पति अष्टोत्तर शतनाम, बृहस्पतिवार का व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है। प्रत्येक गुरुवार केसर का तिलक भी लगाना चाहिए।

**बृहस्पति शान्ति हेतु स्नान योग्य वस्तुएँ**—गुरु की अनिष्ट शान्ति (वैवाहिक विलम्ब, विद्या प्राप्ति, पदोन्नति में बाधाएं, पितृदोष आदि दूर करने हेतु) के लिए चमेली पुष्प, पीली सरसों, शहद, गुलर, दमयन्ती, मुलट्ठी, हरिद्रा, मालती पुष्प, सुगन्धबाला, श्वेत आक के नवीन पत्ते एवं गंगाजल आदि स्नान-औषधियों में से यदि कोई वस्तु प्राप्त न हो सके, तो जितनी प्राप्त हो, उन्हीं से स्नान करना चाहिए।

**विशेष**—औषध-स्नान के दिन साबुन, शैम्पू आदि को लगाने से पूरी तरह परहेज़ करना चाहिए। सभी गुरु-औषधि को गंगाजल में मिश्रित शुद्ध जल डालकर पूर्वाभिमुख होकर गुरु के बीजमंत्र से मंत्रपूर्वक स्नान करने से गुरु कृत अनिष्ट प्रभाव से निवृत्ति होती है। औषध स्नान के उपरान्त गुरु के बीज मंत्र का कम-से-कम 3 माला का जप (जप में हरिद्रा की माला या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना) करके ब्राह्मण-दम्पत्ति को मीठा भोजन, पीले वस्त्र एवं अन्य गुरु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना चाहिए।

**गुरु गायत्री मन्त्र**—

"ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥"

**गुरु बीज मन्त्र**—"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः॥"

**गुरु का वैदिक मन्त्र**—ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥(जप संख्या १९०००)

**पुराणोक्त गुरु मन्त्र**— ॐ देवानां च मुनीनां च गुरु कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥

✤ **मन्त्र प्रयोग विधि तथा गुरु** सम्बन्धी अन्य उपयोगी उपाय व टोटके जानने के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक **"अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय व टोटके"** मंगवाकर पढ़ें। मूल्य-250/- रु.

## राहु-केतु का शुभाशुभ गोचरफल-वि. संवत् २०८१

गत वि. संवत् २०८० मध्ये 30 अक्तूबर, 2023 ई. से राहु मीन राशि में तथा केतु तुला राशि में संचार कर रहे हैं।

आगामी वि. संवत् २०८१ की सम्पूर्ण कालावधि (9 अप्रैल, 2024 ई. से 29 मार्च, 2025 ई. तक) में राहु मीन राशि तथा केतु तुला राशि में ही संचार करते रहेंगे। *यद्यपि मीन राशिस्थ राहु, तुला राशिस्थ केतु का संचारफल गतवर्षीय पंचांग में (पृष्ठ 34) लिख चुके हैं, पाठकों की सुविधार्थ पुनः लिख रहे हैं–*

लाभदायक रहता है। प्रत्येक गुरुवार केसर का तिलक भी लगाना चाहिए।

## ✤ मीन राशिस्थ राहु का गोचरफल ✤

### [संवतारम्भ 9 अप्रैल, 2024 ई. से संवतान्त तक]

| मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपव्यय, व्यर्थ की भाग-दौड़ अधिक, बनते कामों में विलम्ब, किसी अप्रिय घटना के कारण मन अशान्त रहे। | गत किए हुए प्रयासों में सफलता, वाहन सुख, बिगड़े कार्य बनें, विदेश या दीर्घ यात्रा का विचार बने। | गृह में मांगलिक कार्य हों, संघर्ष के बाद धन लाभ कार्यों में सफलता घरेलु व कारोबारी उलझनों के कारण तनाव बढ़े। | घरेलु उलझनों के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहें, वाहनादि सुखों की प्राप्ति, खर्चों में वृद्धि, निज बन्धु से विरोध हो। | आय कम व संघर्ष अधिक रहे। शरीर कष्ट व शत्रु भय हो। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करें। | आय संबंधी परेशानी, शरीर कष्ट, बनते कार्यों में अड़चनें, मानसिक तनाव, परिवार या पति/पत्नी में मन-मुटाव हो। | विगत किए गए प्रयासों में सफलता, अचानक धन लाभ, शुभ यात्रा एवं परिवार से मेल-मिलाप हो। | बनते कामों में अड़चनें रहे, रोग भय व गुप्त चिन्ता हो। सन्तान एवं विद्या संबंधी कार्यों में विघ्न बाधाएं हों। | आय कम व खर्च अधिक, घरेलु उलझनें बढ़ेंगी, कार्य-व्यवसाय से विघ्नों के बाद सफलता मिले, घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। | कोई खुश-खबरी मिलेगी, धन लाभ व उन्नति के अवसर, प्राप्त होंगे। विदेश गमन की योजना बनेगी। | धन प्राप्ति में विघ्नों का सामना रहे। अचानक लाभ तथा अचानक हानि का भय, मानसिक तनाव रहे। | पारि-वारिक कलह-क्लेश, वृथा दौड़-धूप, बनते कार्यों में अड़चनें, शरीर कष्ट, बनते कार्यों में अड़चनें, खर्च भी अधिक हों। |

## ✤ कन्या राशिस्थ केतु का गोचरफल-सं. २०८१ ✤

### [संवतारम्भ 9 अप्रैल, 2024 ई. से संवातान्त 29 मार्च, 2025 ई. तक]

| मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विघ्नों के बाद लाभ व उन्नति के योग, बिगड़े कार्यों में सुधार, शुभ समाचार मिले। | लाभ कम व खर्च अधिक हों। किसी मंगल कार्य पर खर्च हो। विदेश यात्रा का योग बनेगा। | संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे, भूमि, सवारी सुख की प्राप्ति, परन्तु घरेलु झंझट व अशांति रहे। | गत किए कार्यों में सफलता प्राप्त हो, धन लाभ के अवसर प्राप्त हो, किसी मित्र की सहायता से बिगड़ा कार्य बने। | वृथा दौड़-धूप एवं खर्च अधिक रहे। हानि होने का भय, शरीर कष्ट व घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। | प्रत्येक कार्य में रुकावटें एवं विलम्ब हो, आय कम व खर्च अधिक रहे। स्वास्थ्य विकार, क्रोध अधिक रहे। | शत्रु-भय, अपव्यय, रोग-शोक हो। बनते कामों में अड़चनें, तनाव से स्वास्थ्य विकार, क्रोध अधिक रहे। | भूमि-वाहनादि भौतिक सुख-साधनों में वृद्धि, यश-लाभ, धन लाभ साधारण, परन्तु संघर्ष भी रहे। | अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। खर्चों में वृद्धि, रोग व शत्रु भय, उलझनें बढ़ेंगी। | धन लाभ अल्प, आराम कम, संघर्ष अधिक, दुर्घटना से चोटादि का भय, वाहनादि पर खर्च हो। | धन हानि, रोग व शत्रुभय, विद्या में विघ्न, संतान-परिवार व सेहत संबंधी चिन्ता, खर्च अधिक रहे। | खर्च अधिक, लाभ अल्प हो। घरेलु उलझनों के कारण तनाव तथा अशांति बढ़ेगी। |

**अनिष्ट राहु की शान्ति** हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र '**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**' का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। **गजेन्द्र मोक्ष** स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का गायत्री मन्त्र–ॐ **शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय** धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥

**केतु के अरिष्ट की शान्ति** हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र '**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**' की 17 हज़ार की संख्या में जाप करना तथा **संकटनाशक श्रीगणेश स्तोत्र** एवं **अपराजिता स्तोत्र** का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए गायत्री मन्त्र–

ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्॥

**अनिष्ट ग्रहों की शान्ति** के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी प्रकाशित पुस्तक **अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय/टोटके** मँगवाकर पढ़ें। मूल्य–250/–

## नक्षत्रानुसार पाया फल जानना

- ✱ आर्द्रा, पुर्न., पुष्य, अश्ले., मघा, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती–इन दश नक्षत्रों के मध्य किसी जातक का जन्म हो, तो चान्दी का पाया।
- ✱ विशा., अनु., ज्ये., मूल, पू.षा., उ.षा., श्रवण, धनि., शतभिषा के मध्य जन्म हो, तो ताम्बे का पाया।
- ✱ रेवती, अश्वि, भर., कृति, रोह, मृग = सोना (सुवर्ण)
- ✱ पू.भा., उ.भा. = लौह पाया

**आर्द्रा दश रूपाणां, विशाखा नवताम्रका। रेवती षट् हेमश्च, शेषा द्वौ लौह-प्रकीर्तिता॥**

चान्दी एवं ताम्र के पाया शुभ एवं लाभदायक तथा सुवर्ण एवं लौह के पाया धन हानि एवं कष्टकारी फल देते हैं।

कुछ विद्वानों एवं मुहूर्त्त ग्रन्थों अनुसार जन्म-राशि से चन्द्रस्थिति तक गणना करने पर विभिन्न स्थानों के अनुसार चन्द्रमा के सुवर्णादि पाद का विचार किया जाता है। यथा–

| स्थान | १,६,११ | २,५,९ | ३,७,१० | ४,८,१२ |
|---|---|---|---|---|
| चन्द्रपाद | स्वर्ण | रजत | ताम्र | लौह |
| फल | सौभाग्य | शुभत्व | दारिद्र्य | मृत्यु |

जन्मराशि से इन्हीं स्थानों पर अन्य ग्रहों के भी चरणों का विचार किया जाता है परन्तु फल भिन्न-भिन्न रहता है–"**सौरी लोहे शुभः प्रोक्तो हेमपादे च वै गुरुः। रजते चंद्रशुक्रौ च, ग्रहाश्चान्ये च ताम्रके॥**"

अर्थात् शनि का लौह पाद, बृहस्पति का सुवर्णपाद, चंद्र-शुक्र का रजत पाद तथा अन्य ग्रहों (सू.मं.बु.श.के.) के ताम्र पाद श्रेष्ठ होते हैं।

# सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र

| | | | | | | | | | | | | | | जप संख्या | जपकाल | जपनीय बीजमन्त्राः | हवन समिधा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | कनक | माणिक्य | तांबा | सोना | लाल गाय | गुड़ | घी | कमलादि | रक्तवस्त्र | लालचंदन | मूंगा | केशर | ७००० | सूर्योदय | ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः | आक् काष्ठ |
| चन्द्र | चावल | मोती | चांदी | सोना | श्वेत बैल | मिश्री | दही | श्वेत पुष्प | श्वेतवस्त्र | श्वेतचंदन | शंख | कपूर | ११००० | संध्याकाले | ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः | पलाश |
| मंगल | मसूर | मूंगा | तांबा | सोना | लाल बैल | गुड़ | घी | लाल कनेर | लालवस्त्र | लाल चंदन | केशर | कस्तूरी | १०००० | सू.उ. २।१५ | ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः | खैर |
| बुध | मूंग | पन्ना | कांस्य | सोना | शस्त्र | शक्कर | घी | सर्व रंग पु. | हरावस्त्र | अनेक फल | हाथीदांत | कपूर | ९००० | सू.उ. ५ घड़ी | ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः | अपामार्ग |
| गुरू | पीतधान्य | पुखराज | कांस्यपात्र | सोना | अश्व | लवण श | घी | पीले पुष्प | पीतवस्त्र | पीला फल | धर्मग्रंथ | लवणशहद | १९००० | संध्याकाले | ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः | पीपल |
| शुक्र | चावल | हीरा | चांदी | सोना | श्वेत घोड़ा | मिसरी | दूध | श्वेत पुष्प | सफेदवस्त्र | सफेद चंदन | दही | सुगन्धित द्रव्य | १६००० | सू. उ. काल | ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः | गूलर |
| शनि | उड़द | नीलम | लोहा | सोना | काली गाय | कुलथी | तैल | काले पुष्प | कालावस्त्र | काले जूते | भैंस | कस्तूरी | २३००० | संध्याकाल | ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः | शमी |
| राहु | सप्तधान्य | गोमेद | सीसा | सोना | काला घोड़ा | ताम्र पात्र | तैल | कृष्ण पुष्प | नीलवस्त्र | नारियल | कंबल | खड्ग | १८००० | रात्रि | ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः | दूर्वा |
| केतु | सप्तधान्य | लसनिया | लोहा | सोना | बकरा | नारियल | तेल | धूम्र पुष्प | कालावस्त्र | शस्त्र ध्वज | कंबल | कस्तूरी | १७००० | रात्रि | ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः | कुशा |
| मुंथा | चावल | मोती | कांस्यपात्र | सोना | श्वेतचंदन | ऋतुपुष्प | घृत | श्वेतपुष्प | श्वेतवस्त्र | हाथीदांत | मुंथेश ग्रह. | ग्रह अनुसार | मुंथेश ग्रहानुसार | प्रातः | मुन्था स्वामी मन्त्र | |

**विशेष**—ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दान के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**—गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

## सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

| सूर्य | चन्द्रमा | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मन:शिला | पंचगव्य | बिल्व छाल | गोबर | चमेलीपुष्प | पिपरामूल | कालेतिल | लोबान | लोबान |
| इलायची | गोदूध | लाल पुष्प | अक्षत | पुष्प | जायफल | सूरमा | तारपीन | तारपीन |
| देवदारू | गोबर | हींग | मोती | श्वेत सरसों | केशर | लोबान | मोथा | तिलपत्र |
| केशर | गजमद | गोदनी | शहद | शहद | मूली बीज़ | सौंफ | गजदंत | गजदंत |
| खस | शंख सीप | जटामांसी | सुवर्ण | गुलर | मन:शिल | खस | कस्तूरी | छागमूत्र |
| रक्तपुष्प | गंगाजल | मौलसिरी | जायफल | दमयंती | इलायची | खिल्ला | बिल्वपत्र | लाल चंदन |
| रक्तचंदन | श्वेत चंदन | सिगरफ | पिपरामूल | मुलट्ठी | श्वेतचंदन | शतकुसुम | गंगाजल | गंगाजल |
| कनेर पुष्प | स्फटिक | मालकंगनी | नागकेशर | नवीनपत्ते | गंगाजल | गाँदमिश्रित | लालचंदन | कस्तूरी |
| मि. गंगाजल | गोमूत्र | गंगाजल | गंगाजल | गंगाजल | श्वेतकमल | | | |

## होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वारं की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो अग्नि का वास पृथ्वी पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास पाताल में होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति [illegible]

## ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

| ग्रह | सूर्य | बुध | शुक्र | शनि | चंद्र | मंग. | गुरु | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

## नवग्रहों के जपनीय होमार्थ ( हवन ) मन्त्र

**सूर्य मन्त्र**—अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम ॥१ ॥

**चन्द्रमा मन्त्र**—(पलाश या ढाक समिधा के साथ)–"ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम ॥२ ॥

**भौम मन्त्र—(खैर की लकड़ी से)** "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति स्वाहा। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥"

**बुध मंत्र—(अपामार्ग की समिधा से)** ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

**गुरू मन्त्र—(पीपल)** ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

**शुक्र मन्त्र—(गूलर)** ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं पिवानं Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

**शनि मन्त्र—(शमी की समिधा)** ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥

**राहु मन्त्र—(दूर्वा)** ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राह्वे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

**केतु मन्त्र—(कुशा से)** *ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथा:।*

CC-0. Agamnidam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

## ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च—नीच, स्व—गृही राशि आदि चक्र

| नाम ग्रह | स्व-ग्रही राशि | मूल त्रिकोण | गुण | चरादि | वर्ण जाति | रंग | उच्च राशि | नीच राशि | पुरुष स्त्री | तत्त्व | कारक | संबंध | स्व-भाव | प्रकृति | धातु | रस | शरीरांग | दिशा | दृष्टि विशेष | भाग्योदय काल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **सूर्य Sun** | सिंह | सिंह | सत्त्व | स्थिर | क्षत्रिय | रक्त वर्ण | मेष | तुला | पुरुष | अग्नि | आत्मा | पिता | क्रूर | पित्त | सोना | तिक्त | शिर, नेत्र | पूर्व | ७ | २२ से २४ |
| **चन्द्र Moon** | कर्क | वृष | सत्त्व | चंचल | वैश्य | श्वेत | वृष | बृश्चि. | स्त्री | जल | मन | माता | सौम्य | वातश्ले | चांदी | क्षार | बुद्धि, रक्त | पशि. उत्तर | ७ | २४ से २५ |
| **मंगल Mars** | मेष, वृश्चिक | मेष | तम | चर | क्षत्रिय | लाल | मकर | कर्क | पुरूष | अग्नि | बल | भाई | क्रूर | पित्त | ताम्र | कटु | मज्जा | दक्षिण | ७,४,८ | २८ से ३२ |
| **बुध Merc** | मिथुन, कन्या | कन्या | रज | द्विस्वभा | वैश्य | हरा | कन्या | मीन | नपुंसक | पृथ्वी | वाणी | बंधु/मित्र | मिश्र | त्रिधातु | कांस्य | मिश्र | त्वचा, मुख | उत्तर | ७ | ३२ से ३६ |
| **गुरू Jup.** | धनु, मीन | धनु | सत्त्व | स्थिर | ब्राह्मण | पीला | कर्क | मकर | पुरूष | आकाश | विद्या | संतान | शुभ | कफ | सोना | मधुर | चर्बी | ईशान | ५७९ | १६ से २४ |
| **शुक्र Ven.** | वृष, तुला | तुला | रज | चर | वैश्य | सफेद | मीन | कन्या | स्त्री | जल | काम | स्त्री | शुभ | वात, कफ | चांदी | अम्ल | वीर्य | दक्षि., पूर्व | ७ | २६ से २८ |
| **शनि Sat.** | मकर, कुम्भ | कुम्भ | तम | स्थिर | शुद्र | नीला काला | तुला | मेष | नपुंसक | वायु | संघर्ष | भृत्य | क्रूर | वात, श्ले | लोहा | कषाय | स्नायु | पश्चि. | ३,७,१० | ३६ से ४२ |
| **राहु Rahu** | कन्या | कर्क | तम | चर | अत्यज | धूम्र | वृष | बृश्चि. | पुरुष | छाया | दुःख | शत्रु | क्रूर | वायु | लोहा | कषाय | हड्डी | दक्षिण | ७ | ४४ से ५० |
| **केतु Ketu** | मीन | मकर | तम | चर | शूद्र | धूम्र | बृश्चि. | वृष | पुरुष | छाया | कष्ट | बाधा | क्रूर | वायु | लोहा | कषाय | चर्म | उत्तर | ७ | ४८ से ५० |

## राशियों के गुण—स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

| राशि | स्वा. ग्रह | अंग्रेज़ी नाम | वर्ण | जाति | क्रूरादि | चरादि | तत्त्व | गुण | जीवादि | समादि | दिशा | शुभ रत्न | बल समय | शरीरांग | दीर्घादि | नरादि | प्रकृति | गुण | पृष्ठोदय आदि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **मेष** | मंगल | Aries | लाल | क्षत्रिय | क्रूर | चर | अग्नि | रज | धातु | विषम | पूर्व | मूंगा | रात्रि | शिर | ह्रस्व | पशु | पित्त | उष्ण | पृष्ठोदय |
| **वृष** | शुक्र | Taurus | श्वेत | वैश्य | सौम्य | स्थिर | पृथ्वी | तम | मूल | सम | दक्षिण | हीरा | रात्रि | नेत्र | ह्रस्व | पशु | वात | शांत | पृष्ठोदय |
| **मिथुन** | बुध | Gemini | हरा | शूद्र | क्रूर | द्वि. स्व. | वायु | सत | जीव | विषम | पश्चि. | पन्ना | रात्रि | भुजाएँ, गला | सम | नर | वात | चंचल | शीर्षोदय |
| **कर्क** | चंद्र | Cancer | श्वेत | विप्र | सौम्य | चर | जल | रज | धातु | सम | उत्तर | मोती | रात्रि | वक्ष, फेफड़े | सम | जल चर | कफ | शांत | पृष्ठोदय |
| **सिंह** | सूर्य | Leo | लाल | क्षत्रिय | क्रूर | स्थिर | अग्नि | तम | मूल | विषम | पूर्व | माणक | दिन | मेरू, रक्त, हृदय | दीर्घ | पशु | पित्त | उष्ण | शीर्षोदय |
| **कन्या** | बुध | Virgo | मिश्रित | वैश्य | सौम्य | द्वि. स्व. | पृथ्वी | सत | जीव | सम | दक्षिण | पन्ना | दिन | पेट, नाभि | दीर्घ | नर | त्रिदोष | शीत | शीर्षोदय |
| **तुला** | शुक्र | Libra | नीला | शूद्र | क्रूर | चर | वायु | रज | धातु | विषम | पश्चि. | हीरा | दिन | गुर्दे, कमर | दीर्घ | नर | वात | उष्ण | शीर्षोदय |
| **बृश्चिक** | मंगल | Scorpio | ताम्र | विप्र | सौम्य | स्थिर | जल | तम | मूल | सम | उत्तर | मूंगा | दिन | गुप्तांग | दीर्घ | कीट | कफ | शीत | शीर्षोदय |
| **धनु** | गुरु | Sagittarius | पीला | क्षत्रिय | क्रूर | द्वि. स्व. | अग्नि | सत | जीव | विषम | पूर्व | पुखराज | रात्रि | जंघा | सम | नर पशु | पित्त | उष्ण | पृष्ठोदय |
| **मकर** | शनि | Capricor | भूरा | वैश्य | सौम्य | चर | पृथ्वी | रज | धातु | सम | दक्षिण | नीलम | रात्रि | घुटने | सम | जल पशु | वात | शीत | पृष्ठोदय |
| **कुम्भ** | शनि | Aquarius | काला | शूद्र | क्रूर | स्थिर | वायु | तम | मूल | विषम | पश्चि. | नीलम | दिन | पिंडली | लघु | जल चर | त्रिदोष | उष्ण | शीर्षोदय |
| **मीन** | गुरु | Pisces | पीला | विप्र | सौम्य | द्वि. स्वा. | जल | सतो | जीव | सम | उत्तर | पुखराज | दिन | पाँव दोनों | लघु | जल चर | कफ | शीत | उभयोदय |

**चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व**—उपरोक्त राशियों के गुण, स्वभाव, तत्वादि का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, चर का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। '**मूल**' का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। '**जीव**' का अर्थ प्राणी-स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**—मान लीजिए, सौम्य राशि **मीन** में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्त्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा—ऐसा कहना चाहिए। जैसे—यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

# होमादि में अग्निवास एवं फल जानना

जिस दिन को हवन करना हो, उस दिन तात्कालिक तिथि और वार सँख्या में 1 जोड़कर 4 द्वारा भाग देवें। भाग देने पर यदि **शेष 3 या शून्य ( 0 ) बचे**, तो उस दिन अग्नि का वास **पृथिवी पर** जानें, शेष 1 बचे तो अग्नि का वास **आकाश** में तथा तिथि, यदि शेष 2 बचें तो अग्नि का वास **पाताल** में जानना चाहिए। **पृथिवी पर अग्नि** का वास शुभ एवं कल्याणकारक होता है। **आकाश** में वास हो तो आयु का क्षय तथा पाताल में वास हो तो धन की हानि होती है। वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से करनी चाहिए। अग्निवास चक्र के पश्चात् गत पृष्ठों में दिए गए ग्रह मुख में आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।—**पं. पन्ना लाल ज्यो.**

## अग्निवास एवं फल जानने का चक्र ( शुक्ल-पक्ष )

| शुक्ल पक्ष तिथि | रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | 3 पृथ्वी (लाभ) | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय |
| २ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि |
| ३ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी क्षय | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ |
| ४ | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ |
| ५ | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय |
| ६ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि |
| ७ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ |
| ८ | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ |
| ९ | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय |
| १० | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि |
| ११ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ |
| १२ | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ |
| १३ | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय |
| १४ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि |
| १५ | 1 आकाश | 2 पाताल | 3 पृथ्वी | 0 पृथ्वी | 1 आकाश | 2 पाताल | 3 पृथ्वी |

## अग्निवास एवं फल जानने का चक्र ( कृष्ण-पक्ष )

| कृष्ण पक्ष तिथि | रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ |
| २ | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय |
| ३ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि |
| ४ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ |
| ५ | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ |
| ६ | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय |
| ७ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि |
| ८ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ |
| ९ | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ |
| १० | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय |
| ११ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि |
| १२ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ |
| १३ | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ |
| १४ | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय | 2 पाताल हानि | 3 पृथ्वी लाभ | 0 पृथ्वी लाभ | 1 आकाश क्षय |
| १५ | 0 पृथ्वी | 1 आकाश | 2 पाताल | 3 पृथ्वी | 0 पृथ्वी | 1 आकाश | 2 पाताल |

# अनिष्ट ग्रहों के उपायों सम्बन्धी विशेष विवरण

ज्योतिष शास्त्र में अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं। यथा सुनिश्चित संख्या में मन्त्र जाप, यथासामर्थ्य दान, हवन, जड़ी-बूटी धारण, ग्रह औषधि स्नान, व्रत-जप-तप करना, उचित नग एवं विधिपूर्वक ग्रह यन्त्र को धारण करना इत्यादि शास्त्रोक्त उपायों को अपना करके मनुष्य ग्रह जनित कष्टों का समाधान करके प्रतिकूल परिस्थितियों को भी स्वयं के अनुकूल एवं समृद्ध बना सकते हैं।

## ◆ सूर्य शान्ति के लिए उपाय ◆

**सूर्य** क्रूर ग्रह से दृष्ट, युक्त अथवा नीच राशिस्थ (तुला) हो या १, २, ४, ५, ७, ८, ९ या १२वें भावस्थ सूर्य अशुभ माना जाता है। जन्म कुण्डली अथवा वर्ष कुण्डली में सूर्य अशुभकारी हो, तो निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का ७ हज़ार से लेकर सवा लाख की संख्या में जाप करना चाहिए। जप का आरम्भ **शुक्ल पक्षीय रविवार** या सूर्य षष्ठी अथवा रवि योग या रविपुष्य योग में करना चाहिए। पाठारम्भ करने से पूर्व लाल पुष्प, अक्षत, नैवेद्य व गंगाजल लेकर पाठ का संकल्प, ध्यान व आवाहनादि करें। जप-पाठ के लिए रूद्राक्ष की माला सर्वोत्तम है। उसके अभाव में चन्दन या तुलसी की माला का प्रयोग भी कर सकते हैं। विधिपूर्वक सूर्य उपासना से पदोन्नति, आत्मशक्ति, तेज़ बल, राजप्रतिष्ठा एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है। **प्रतिदिन पाठोपरान्त सूर्य देव को ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, लाल चन्दन ( या पुष्प ) डालकर अर्घ्य देना चाहिए** तदुपरान्त गायत्री मन्त्र करने का विधान है। सुनिश्चित संख्या में पाठ (जप) की पूर्ति हो जाने पर दशमांश संख्या में हवन कर लेना चाहिए।

**पुराणोक्त सूर्य नमस्कार मन्त्र–**

**जपाकुसुम संकाश काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥**

**वेदोक्त सूर्यमन्त्र–**

**ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।**
**हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥** (जप संख्या ७०००)

**तन्त्रोक्त बीजमन्त्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः**

**सूर्यार्घ्य मन्त्र–**

**एहि सूर्य ! सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय ! मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥**

**सूर्यार्घ्य का लघु मन्त्र–''ॐ घृणिः सूर्याय नमः''॥**

**सूर्यगायत्री मन्त्र–ॐ आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो भानुः प्रदोयात्॥**

**सूर्य गायत्री मन्त्र जाप, विधिपूर्वक रविवार का व्रत, सूर्यमणि ( मणिक्य )** धारण करना, **औषधि स्नान** (मनः शिला, इलायची छोटी, देवदारू, केशर, खस, कनेरादि लाल पुष्प एवं गंगाजल तथा विधिवत् निर्मित **सूर्ययन्त्र** धारण करना तथा सूर्य देव से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

**सूर्य दान योग्य वस्तुएँ**–गेहूँ, गुड़, लाल वस्त्र, घी, लाल वर्ण की सवत्सा गाय, सुवर्ण, माणक, ताम्र बर्तन, मिष्ठान्न, नारियल सहित लाल फल, ब्राह्मण भोजन एवं च सुनिश्चित पाठोपरान्त दशमांश हवन करना शुभ रहता है।

**उपाय**–(1) तांबे की अँगूठी में माणिक्य अथवा विधिवत् तैयार किया हुआ सूर्य-यन्त्र (ताम्र पत्र पर) धारण करें।

(2) खाना खाते समय सोने अथवा तांबे के चम्मच का प्रयोग करना तथा 11 रविवार तक सूर्य स्नान करना। जब जन्म या वर्ष कुण्डली में सूर्य अशुभ हो तो–

(3) 108 रविवार तक अथवा प्रतिदिन नियमित रूप से ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, लाल चन्दन मिलाकर सूर्य को अर्घ्य देकर सूर्य स्तोत्र का पाठ करना शुभ है।

(4) रविवार को नमक से परहेज़ रखें। लवणरहित सादा भोजन करें। ग्यारह रविवार पर्यन्त केवल दही और चावल का सेवन करना चाहिए।

(5) जिन जातकों का सूर्य नीच का हो, उन्हें **'कार्तिक माहात्म्य'** का कार्तिकमास में नित्यप्रति पाठ करके तुलसी के पौधे पर दीपक प्रज्वलित करना चाहिए।

## ◆ चन्द्रमा शान्ति के लिए उपाय ◆

**चन्द्रमा** शत्रु एवं क्रूर ग्रह से दृष्ट, युत एवं नीच राशि (वृश्चिक), अथवा ४, ६, ८, १२वें भावों में स्थित चन्द्रमा अशुभ माना जाता है।

**अशुभ चन्द्र की शान्ति** के लिए निम्नलिखित किसी एक मन्त्र की **११ हज़ार की संख्या** में जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना शुभ रहता है। जप का आरम्भ पूर्णमाशी या शुक्ल पक्ष के सोमवार को किसी शुभ मुहूर्त्त में करना चाहिए।

**तन्त्रोक्त चन्द्र मन्त्र–ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।**

**पुराणोक्त चन्द्र मन्त्र–ह्रीं दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।**
**नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम्॥**

**चन्द्रमा गायत्री मन्त्र–ॐ अमृतांगाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नो सोमः प्रचोदयात्॥**

**चन्द्र अर्घ्य मन्त्र–ॐ सोम् सोमाय नमः॥**

**चन्द्रमा अशुभ हो,** तो मानसिक विकार, नेत्र कष्ट, धन हानि, रक्त दोष, स्त्री कष्ट आदि अशुभ फल घटित होते हैं। चन्द्रमा की शुभता के लिए उपरोक्त मन्त्र-जाप के अतिरिक्त चांदी की अँगूठी में चन्द्रकान्त मणि या श्वेत सुच्चा मोती धारण करना, विधिवत, सोमवार एवं पूर्णमाशी का व्रत करना, चन्द्र मन्त्र मुद्रित करवा कर चाँदी का गोल सिक्का (Coin) गले में धारण करना, घर में श्वेत शंख रखना, औषधि एवं जड़ी-बूटी (पंचगण्य, श्वेत चन्दन आदि), विधिपूर्वक चन्द्र यन्त्र धारण करना, शिवोपासना करना कल्याणकारी रहता है।

**चन्द्र की शुभता बढ़ाने के लिए दान योग्य पदार्थ :**–चावल, सफेद चन्दन, शंख कर्पूर, दही, दूध घी, चीनी या मिश्री, क्षीर, श्वेत वस्त्र, सफेद चन्दन, चाँदी या कांसे का पात्र, चाँदी के

वर्क लगी बर्फी। **बलान्वित चन्द्रमा** मन, बुद्धि, रक्त, स्त्री एवं माता, धन-सम्पदादि सुखों में वृद्धिकारक होता है।

**उपाय**-(1) चांदी के बर्तनों का प्रयोग करना एवं चारपाई के पायों में चांदी के कील ठुकवाना।

(2) सफेद मोतियों की माला अथवा चांदी की अँगूठी में मोती एवं चांदी का कड़ा धारण करना।

यदि कुण्डली में चन्द्र अशुभ हो, तो चन्द्रमा के अशुभत्व के निवारण हेतु उपाय-

(3) शीशे के गिलास में दूध, पानी आदि पीने से परहेज़ रखना शुभ होगा।

(4) पानी में कच्चा दूध मिलाकर चन्द्रमा का बीज मन्त्र पढ़ते हुए पीपल को डालना।

(5) लगातार 16 सोमवार व्रत रखकर सायंकाल सफेद वस्तुओं का दान करना चाहिए तथा पाँच छोटी कन्याओं को क्षीर सहित भोजन कराना चाहिए।

## ◆ मंगल शान्ति के लिए उपाय ◆

**मंगल ग्रह** = १, २, ४, ५, ७, ८, ९, एवं १२वें भावों में स्थित मंगल, बुध अथवा शनि आदि शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त, या अपनी नीचराशि (कर्क) में अशुभ कारक होता है। **जन्म कुण्डली** या वर्ष कुण्डली में मंगल अशुभ एवं बाधाकारक हो, तो निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम **१० हज़ार की संख्या** में, शुभ मुहूर्त्त, मंगलवार को लाल पुष्प, लाल चन्दन, अक्षत (चावल), गंगाजल लेकर संकल्प पूर्वक पाठारम्भ करें। सुनिश्चित संख्या में पाठोपरान्त पाठ का दशमांश संख्या में हवन करना चाहिए।

**तन्त्रोक्त भौम मन्त्र-ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।**

**पुराणोक्त भौम मन्त्र-ह्रीं धरणी गर्भसम्भूतं विद्युत् कान्ति समप्रभम्।**
**कुमारं-शक्तिं हस्तं तं मंगल प्रणमाम्यहम्॥**

**भौम गायत्री मन्त्र-ॐ अंगारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्॥**

उपरोक्त मन्त्र जाप के अतिरिक्त अनिष्टकर मंगल की शान्ति के लिए **मंगलवार का व्रत** रखना, श्री हनुमान उपासना, मंगल स्तोत्र पढ़ना, लाल वर्ण की गाय को चारा डालना, मूँगा पहनना, औषधि स्नान करना परन्तु मांस, मछली, शराब आदि से परहेज़ रखना, विधिपूर्वक बना भौम यन्त्र धारण करना, उद्यापन के दिन ब्राह्मण भोजन कराना शुभ होता है।

**भौमशान्ति हेतु दान योग्य वस्तुएँ**-गेहूँ, मसर की दाल, घी, गुड़, सुवर्ण, कनेर के पुष्प, लाल वस्त्र, लाल चन्दन, केशर, नारियल, सेब आदि लाल फल, मूंगा, सोना, ताम्र बर्तन, गुड़ से बने मीठे चावल या मीठी चापातियां, ब्राह्मण भोजन आदि करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है। मंगल ग्रह पराक्रम, साहस, भूमि, भाई, पुत्र, रक्त-बलादि का भी कारक है। यदि अशुभ हो तो रक्त दोष, भ्रातृ कष्ट, आकस्मिक दुर्घटना, वृथा विवाद करवाता है।

**उपाय**-जब कुण्डली में मंगल शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फल न करता हो तो निम्नलिखित उपाय शुभ होंगे-

(1) तांबे की अँगूठी में मूँगा धारण करना अथवा तांबे का कड़ा पहनना।

(2) मंगलवार को घर में गुलाब का पौधा लगाना तथा 108 दिन तक रात को तांबे के बर्तन

(3) मंगलवार का व्रत रखकर 27 मंगल किसी अपाहज को मीठा विशेषकर गुड़ से निर्मित भोजन खिलाना।

(4) नारियल को तिलक करके तथा लाल कपड़े में लपेटकर लगातार 3 मंगलवार चलते पानी में बहाएँ।

(5) लाल रंग की गाय या लाल वर्ण के कुत्ते को भोजन खिलाना शुभ होगा।

(6) मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। विशेषकर उन कन्याओं को जिनकी कुण्डली में मंगल मंगलीक योग बनकर विवाह में बाधा, विलम्ब उत्पन्न कर रहा हो-उन्हें मंगलागौरी का व्रत लगातार 7 मंगलवार रखना चाहिए।

## ◆ बुध शान्ति के लिए उपाय ◆

**बुध ग्रह** कुण्डली में ४, ६, ८, १२वें भावों में स्थित अथवा शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त बुध अशुभ फलदायक होता है। बुध शुभ हो, तो वाणी, बुद्धि, विद्या, संतान, व्यापार आदि में लाभकारक होता है। अशुभ बुध बुद्धि में विभ्रम, त्वचा रोग, वाणी विकार, सन्तान को कष्ट रहता है। बुध की शुभता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिएँ।

**तन्त्रोक्त बुध मन्त्र-ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।** (जप संख्या ९०००)

**पुराणोक्त बुध मन्त्र-ह्रीं प्रियंगु कलिका श्याम रूपेणाप्रतिमं बुधम्।**
**सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुध प्रणमाम्यहम्॥**

**बुध गायत्री मन्त्र-ॐ सौम्यरूपाय विद्महे रोहिणी प्रियाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥**

उपरोक्त मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम ९००० की संख्या में जाप करना, बुधवार का विधिपूर्वक व्रत रखना, औषधि स्नान, हरे रंग का नग-पन्ना (Emareld) सोने की अंगूठी में धारण करना, विधिवत् तैयार किया गया बुध यन्त्र रखना, हरी वस्तुओं का प्रयोग करना, श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ तथा श्री विष्णु उपासना करना, चौपायों को हरा चारा डालना, बुध को कन्या पूजन के उपरान्त हरी वस्तुओं (वस्त्रादि) का दान करना इत्यादि बुध ग्रह जनित अशुभ फल को शान्त करता है।

**बुध के दान की वस्तुएँ**-मूंगी साबुत, चीनी, छोटी इलायचियाँ, षडरसों से युक्त भोजन, हरी सब्ज़ियां, पन्ना नग, कांस्य पात्र, हरे पुष्प, हरे फल, हाथी दाँत, हरा गर्म अथवा रेशमी वस्त्र, ब्राह्मण भोजन दक्षिणा सहित दान करना कल्याणप्रद रहता है।

**उपाय**-कुंडली में बुध शुभ होता हुआ भी फलकारक न हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे-

(1) हरे रंग का पन्ना बुधवार को सोने की अँगूठी में धारण करना। हरे रंग के वस्त्रों को पहनना तथा हरे रंग के पर्दे लगाना शुभ होगा।

(2) बुधवार को चाँदी या कांस्य के गोल टुकड़े को हरे रंग के कपड़े में लपेट कर जेब में रखें या भुजाओं के साथ बांधें।

यदि बुध अशुभ हो तो-(3) हरे रंग के वस्त्र एवं हरे रंग की गाड़ी आदि का प्रयोग न करें।

(4) हरे रंग के वस्त्र (परिधान) किसी हिजड़े को बुधवार के दिन शुभ होगा।

*(5) बुधवार के दिन 6 इलायची हरे रूमाल में लपेटकर अपने पास रखें तथा इसके पश्चात्*

## ◆ गुरु शान्ति के लिए उपाय ◆

**गुरू ( बृहस्पति )** कुण्डली में 4, 6, 8, 12वें भावों में ही स्थित हो, अथवा नीच राशिगत (मकर) हो, या शत्रु या अशुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त ग्रह जातक को अशुभ प्रभाव प्रदान करता है। अशुभ गुरू जातक को विद्या में असफलता अथवा विवाह सुख में अड़चनें, पुत्र-सन्तान एवं स्त्री कष्ट, भ्रातृ विरोध, शरीर कष्ट, बुद्धि में विकार आदि अशुभ फल प्रकट करता है।

गुरु में शुभता लाने के लिए निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का १९,००० की संख्या में पाठ करना अथवा किसी योग्य ब्राह्मण से करवाना तथा पाठोपरान्त दशांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी रहेगा।

**तन्त्रोक्त गुरू मन्त्र–ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौ सः गुरवे नमः**(जप संख्या १९०००)

**पुराणोक्त गुरू मन्त्र–ॐ देवानां च ऋषीणां च गुरुं का–चन संन्निभम्।**
**बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।**

**गुरु गायत्री मन्त्र–ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥**

संकल्पपूर्वक मन्त्र जाप के अतिरिक्त गुरू सम्बन्धी वस्तुओं का दान, सुवर्ण या चांदी की अँगूठी में पुखराज पहनना, विधिवत् निर्मित **गुरू यन्त्र** धारण, औषधि स्नान करना, **गुरूवार** का व्रत रखना, पीली वस्तुओं का प्रयोग, पीले वर्ण की गौओं की सेवा करना व गाय दान, पीपल वृक्ष की प्रतिष्ठा, ब्राह्मणों को क्षीर सहित भोजन खिलाना, दक्षिणा एवं धार्मिक ग्रन्थों का दान, गायत्री जप इत्यादि करना शुभ है।

**गुरू की दान योग्य वस्तुएँ**–पीले चावल, चने की दाल, हल्दी, शहद, पीला वस्त्र, पपीता, आम, केले आदि पीले फल, सवत्सा गाय, पीला कम्बल, बेसन के लड्डू, ताम्र एवं कांस्य पात्र, शक्कर, रामायण आदि धार्मिक ग्रंथ केशर इत्यादि वस्तुओं का दान शुभ रहता है।

**उपाय**–जन्म कुंडली में बृहस्पति शुभ व योगकारक होता हुआ भी शुभ फल प्रकट न कर रहा हो तो निम्नलिखित उपाय करें–

(1) सोने या चांदी की अँगूठी में तर्जनी अंगुली में तथा शुभ मुहूर्त में पुखराज धारण करें।

(2) 27 गुरुवार केसर का तिलक लगाना तथा केसर की पुड़िया पीले रंग के कपड़े या कागज़ में अपने पास रखना शुभ होगा।

गुरु के अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु निम्नलिखित उपाय करें–

(3) चलते पानी में बादाम एवं नारियल पीले कपड़े में लपेटकर बहाना शुभ होगा।

(4) पीपल के वृक्ष को गुरुवार एवं शनिवार को गुरु का बीज मन्त्र एवं गुरु गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए जल दें।

(5) वृद्ध ब्राह्मण को यथाशक्ति पीली वस्तुएँ, जैसे–चने की दाल, लड्डू, पीले वस्त्रों, शहदादि का दान करना चाहिए।

## ◆ शुक्र शान्ति के लिए उपाय ◆

**शुक्र ग्रह** जन्म कुण्डली में शुक्र ६, ८ या १२वें भाव में अथवा नीच राशि (कन्या) या शत्रु ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो अशुभ फल प्रदायक होता है।

**शुक्र ग्रह** स्त्री, धन-सम्पदा, ऐश्वर्य, वीर्य-भोग एवं वाहनादि सुख-साधनों का कारक माना जाता है। इस ग्रह की शुभता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम १६००० की संख्या में जप करना तथा फिर दशांश हवन करना शुभ कारक माना जाता है।

**तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र–ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**

**शुक्र गायत्री मन्त्र–ॐ भृगुजाताय विद्महे दिव्य देहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्॥**

सुनिश्चित संख्या में मन्त्र जाप के अतिरिक्त शुक्र सम्बन्धी वस्तुओं का दान तथा स्वयं प्रयोग, हीरा (Diamond) पहनना, शुक्र यन्त्र धारण करना, शुक्र-औषधि स्नान, गोदान, श्वेत एवं क्रीमवर्ण की वस्तुओं का प्रयोग, श्वेत चन्दन का तिलक, **श्री दुर्गा पूजा, श्री दुर्गा सप्तशती** का पाठ करना तथा पाँच **शुक्रवार व्रत करके पाँच कन्याओं का पूजन करना एवं उन्हें श्वेत वस्तुओं की भेंट देने से ग्रह शान्ति होती है।**

**शुक्र दान की वस्तुएँ**–चाँदी, चावल, मिश्री, दूध एवं दूध से निर्मित क्षीर, बर्फी आदि, श्वेत चन्दन, श्वेत गाय, श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, श्वेत फल एवं सुगन्धित पदार्थों आदि का दान करने से शुक्र की शुभता में वृद्धि होती है।

**उपाय**–कुंडली में यदि शुक्र शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फलीभूत न हो रहा हो तो निम्न उपाय कल्याणकारी रहेंगे–

(1) चाँदी की कटोरी में सफेद चन्दन, मुश्कपूर, सफेद पत्थर का टुकड़ा रखकर सोने वाले कमरे में रखे चन्दन की अगरबत्ती जलाना शुभ होगा।

(2) घर में तुलसी का पौधा लगाना, सफेद गाय रखना, सफेद पुष्प लगवाना शुभ होगा तथा क्रीम रंग के रेशमी कपड़े में चाँदी के चौरस टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवाकर विधिपूर्वक अपने पास रखें।

शुक्र अशुभ प्रभावी होने की स्थिति में नीचे लिखे उपाय कल्याणकारी होंगे–

(3) शुक्रवार को श्री दुर्गा पूजन, 5 कन्या पूजन उन्हें खीरादि श्वेत वस्तुएँ देना तथा गौशाला में शुक्रवार से शुरु करके सात दिन तक गाय को हरा चारा, शक्कर एवं चरी डालना।

(4) सफेद रंग के पत्थर पर चन्दन का तिलक लगाकर चलते पानी में बहा देना या चांदी के टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवा कर रेशमी क्रीम रंग के वस्त्र में लपेट कर शुक्रवार को नीम के वृक्ष के नीचे दबाना।

## ◆ शनि शान्ति के लिए उपाय ◆

**शनि ग्रह** किसी जातक की जन्म कुण्डली में जब शनि १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० अथवा १२वें स्थानों में हो, अथवा शत्रु या नीच (मेष) राशिगत हो अथवा सूर्य, मंगल आदि क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो शनि अशुभ फलदायक होता है। अशुभ एवं अरिष्टकर शनि धन एवं आय के साधनों में कमी, शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, बनते कामों में बार-बार अड़चनें पैदा होती रहती है। शनि कृत अरिष्ट निवारण हेतु निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का २३ हज़ार जप तथा जप उपरान्त दशांश संख्या में हवन करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

**तन्त्रोक्त शनि मन्त्र–ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः** (जप संख्या २३०००)

**तन्त्रोक्त शनि का लघु मन्त्र–ॐ शं शनैश्चराय नमः**

**वेदोक्त शनि मन्त्र–ॐ शंन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्यो रभिरस्त्रवन्तु नः॥**

**शनि गायत्री मन्त्र–ॐ सूर्यसुताय विद्महे, यमरूपाय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात्॥**

**पुराणोक्त शनि मन्त्र–ह्रीं नीलांजन समा भासं रवि पुत्रं यमाग्रजम्।**
**छायामार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥**

विधिपूर्वक मन्त्र जाप के अतिरिक्त शनि सम्बन्धी वस्तुओं का दान, सिक्के अथवा पंचधातु की अंगूठी में नीलम धारण करना, शनिवार का व्रत रखना, विधिवत् निर्मित शनि यन्त्र रखना, लोहे की कटोरी में तेल डालकर छाया पात्र करना, औषधि स्नान, अन्ध विद्यालय या कुष्ठाश्रम में अनाज (उड़द सहित) भोजन खिलाना, मछलियों को गेहूँ एवं उड़द के आटे की गोलियां डालना, शिव स्तोत्र एवं शनि स्तोत्र का पाठ एवं शनि से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

**शनि के दान योग्य वस्तुएँ**–उड़द, काले तिल, काले चने, सरसों का तेल, काली गाय, काला वस्त्र, लोहे का बर्तन, काले जूते, भैंस, कुलथी, कस्तूरी, नीलम, नारियल, काले एवं नीले पुष्प, ग़रीब वृद्ध व्यक्ति को भोजन कराना शुभ होता है। शनि का दान सायंकाल को करना प्रशस्त माना जाता है।

**उपाय**–शनि शुभ होता हुआ भी शुभफल प्रकट न कर रहा हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे–

(1) घर में नीले रंग के पर्दे तथा नीले रंग की चादरों का प्रयोग करना और स्वयं भी बहुधा नीले रंग के वस्त्रों का प्रयोग करना शुभ होगा। जब कुण्डली में शनि नीच या अरिष्टकर फल प्रकट कर रहा हो तो निम्न उपाय करें–

(2) स्टील या लोहे की कटोरी में तेल का छाया-पात्र करके तेल पाँच शनिवार तक आक के पौधे पर अथवा **'शनि मन्दिर'** में डालना शुभ होगा। 5वें शनिवार को तेल चढ़ाने के बाद तेल वाली कटोरी को वही दबा देना या वही चढ़ा देना शुभ होगा। तेल चढ़ाते समय शनि का बीज मन्त्र पढ़ें।

(3) अष्टम भाव में शनि अशुभ एवं रोगकारक हो, तो संकटनाशन श्री गणेशस्तोत्र का पाठ एवं श्री गणेश चतुर्थी का व्रत रखना चाहिये।

## ◆ राहु शान्ति के लिए उपाय ◆

राहु जिस कुण्डली में १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० या १२वें भाव में स्थित हो अथवा शत्रु या नीच राशि में या शत्रु ग्रह युक्त, दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शरीर कष्ट, तनाव, धन सम्बन्धी उलझनें, बुद्धि विभ्रम, कलह-क्लेश, वृथा भ्रमण आदि परेशानियों का सामना करना पड़ता है। राहु जनित अरिष्ट फल निवारण हेतु निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का **१८ हज़ार की संख्या** में जाप करना चाहिए।

**तन्त्रोक्त राहु मन्त्र–ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।**

सुनिश्चित मन्त्र जाप के अतिरिक्त राहु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान, शनिवार का व्रत, विधिपूर्वक निर्मित राहु यन्त्र धारण करना, राहु औषधि स्नान, गोमेद नग पहनना, शिव स्तोत्र एवं राहु स्तोत्र का पाठ करना, चलते पानी में नारियल बहाना, श्री दुर्गा पूजा करना, अपाहज एवं कुष्टाश्रम में अनाज, फल, आदि।

**राहु दान योग्य वस्तुएँ**–सप्तधान्य (सतनाजा), गोमेद, सीसा, काला घोड़ा, तिल, तैल, काले पुष्प, नीला वस्त्र, उड़द, खडग (चाकू इत्यादि), कम्बल, बिल पत्र, मौसमी फल, कस्तूरी आदि। राहु का दान रात्रि कालीन करना प्रशास्त माना जाता है।

**उपाय**–अशुभ राहु या राहु की महादशा या अन्तर्दशा में निम्नलिखित उपाय करें–

(1) काले व नीले वस्त्र पहनने से परहेज़ करें तथा चाँदी की चेनी व लॉकेट पहनना शुभ होगा।

(2) चापाती को खीर लगाकर कौओं को एवं काले रंग की गाय को खिलाएँ।

(3) काले तिल, कच्चा कोयला, नीले रंग के ऊनी कपड़े में बाँधकर शनिवार अथवा राहु के नक्षत्रों में घर के आंगन में दबाना शुभ होगा। अथवा नीले वस्त्र के बांधे रूमाल को राहु मन्त्र पढ़ते हुए जल में प्रवाह कर देवें।

## ◆ केतु शान्ति के लिए उपाय ◆

केतु कुण्डली में १, २, ४, ५, ७, ८, एवं १२वें भाव में हो, अथवा अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या नीच राशिगत हो तो जातक / जातिका को शरीर कष्ट, आपसी कलह, व्यवसाय में हानि, घरेलू उलझनों आदि का सामना रहता है। केतु कृत अरिष्ट फल निवारण हेतु निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का **१७ हज़ार की संख्या** में जाप करना लाभदायक रहता है–

**तन्त्रोक्त केतु मन्त्र–ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।**

**केतु गायत्री मन्त्र–ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतु प्रचोदयात्॥**

सुनिश्चित मन्त्र जाप के अतिरिक्त केतु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान, दुर्गा व गणेश जी की उपासना, कुत्तों को दूध-चपाती डालना, गर्म वस्त्र (कम्बलादि) का दान, केतु औषधि स्नान, अन्ध विद्यालय या कुष्ट आश्रम में अनाज, दवाईयों, वस्त्रादि का दान, पक्षियों को सतनाजा डालना तथा केतु यन्त्र धारण करना कल्याणकारी रहता है।

**केतु-दान योग्य, वस्तुएं**–लहसुनिया, लोहा, बकरा, नारियल, तिल, सप्तधान्य, धूम्र (धुएँ जैसे) वर्ण का वस्त्र, कस्तूरी, लौह, चाकू, कपिला गाय, दक्षिणा सहित। केतु का दान रात्रिकालीन प्रशस्त माना जाता है।

**उपाय**–(1) केतु की शान्ति के लिए श्री गणेश चतुर्थी का व्रत रखें तथा श्रीगणेश पूजन तथा लड्डुओं का भोग लगाना शुभ होगा।

(2) काले वस्त्र में बाँधकर काले व सफेद तिल चलते पानी में बहाना।

(3) रंग-बिरंगी (चितकबरी) गाय की सेवा करना एवं रंग-बिरंगे कुत्ते को दूध व चापाती (Bread) डालना। **शास्त्रोक्त एवं लाल किताब सम्बन्धी** *अधिक जानकारी एवं उपायों के लिए हमारी प्रकाशन 'अरिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय एवं टोटके' मंगवाकर पढ़ें।*

# जन्म कुण्डली में फलादेश हेतु कुछ विशेष नियम

जन्म कुण्डली के बारह भावों में मनुष्य के जन्मकाल से लेकर, बाल्य, यौवन, वृद्धत्व एवं मृत्यु पर्यन्त तथा मनुष्य के ऐहिक, विगत एवं आगामी जीवन सम्बन्धी प्रवृत्तियों एवं समस्त क्रिया–कलापों का समावेश रहता है। कुण्डली के भावों में स्थित राशियों एवं ग्रहों के बलावल, शुभाशुभ स्थिति एवं दृष्टियों तथा ग्रह दशाओं आदि के विश्लेषण के बाद ही कुण्डली द्वारा जातक के शुभाशुभ फलादेश का निर्णय किया जाता है। यद्यपि मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व को कतिपय नियमों के द्वारा सम्पूर्णतः अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। तथापि हमारे ज्योतिष आचार्यों ने कुण्डली में फलादेश सम्बन्धी विशिष्ट ज्ञान को यथासम्भव कुछ सूत्रों में पिरोने के श्लाघनीय प्रयास किए हैं। फलित ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के लिए निम्नलिखित सूत्रों एवं नियमों को ध्यान में रखना परमावश्यक है।

(1) जातक के जन्मकालिक एवं वर्तमान कालिक देश–काल, आयु, स्त्री/पुरुष, माता–पिता, कुल, व्यवसायादि का ज्ञान।

(2) **जन्म कुण्डली की शुद्धता**–सही फलादेश के लिए शुद्ध जन्मपत्री एवं जन्म कुण्डली का होना अनिवार्य है। किसी जातक की शुद्ध जन्म अथवा लग्न कुण्डली बनाने के लिए लग्न स्पष्ट तो अवश्य करना चाहिए, अन्यथा कई बार गलत एवं अशुद्ध लग्न बन जाता है, फलस्वरूप ज्योतिषी जी उपहास का पात्र बन सकते हैं।

इसके अतिरिक्त फलादेश में और भी अधिक सूक्ष्मता एवं स्पष्टता लाने के लिए जातक के जन्म समय के ग्रह–स्पष्ट, भाव स्पष्ट, चलित चक्र, सुदर्शन चक्र, नवमांशादि चक्र एवं योगिनी, विंशोत्तरी आदि ग्रह दशाओं का विश्लेषण करने के पश्चात् ही जन्म कुण्डली द्वारा फल कथन करना चाहिए।

(3) सर्वप्रथम कुण्डली में भाव, भावेश एवं भाव कारक ग्रहों की स्थिति तथा उन पर शुभाशुभ ग्रहों का विचार करना चाहिए।

> **भवन्ति भावा भावेश कारका बल संयुता।**
> **तदा पूर्ण फलं द्वाभ्यामर्घं एकेनाल्पं फलं वदेत्।।**

कुण्डली में केन्द्र त्रिकोण (१/४/५/७/९/१०) भावों में शुभ ग्रहों (चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र आदि) का होना शुभ फलदायक है, जबकि 3/6/11 भावों में पाप एवं क्रूर (सूर्य, मंगल, शनि, राहु आदि) ग्रहों का रहना शुभ फली माना जाता है।

(4) जिस भाव में जो राशि हो उस राशि का स्वामी ही उस **भाव का स्वामी या भावेश** कहलाता है। जो भाव अपने स्वामी ग्रह अथवा बुध, गुरु या शुक्र आदि शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो, तथा किसी अन्य शत्रु ग्रह से युक्त एवं दृष्ट न हो, तो वह (भाव) शुभफल देता है।

(5) (*i*) जिस भाव का स्वामी शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा जिस भाव में कोई शुभ मित्र ग्रह बैठा हो, या उस भाव को कोई शुभ मित्र ग्रह देखता हो, तो उस भाव सम्बन्धी शुभ फल की वृद्धि होती है।

(*ii*) जिस भाव में पाप ग्रह पड़ा हो, अथवा जिस भाव का स्वामी पाप ग्रह (शनि, मंगल, राहु आदि) से युक्त अथवा दृष्ट हो, उस भाव के फल की हानि होगी। यथा–

> **(यो यो भावः स्वामी दृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा, स्यात् तस्यतस्य वृद्धिः।**
> **पापैरेवं तस्य भावस्य हानि निर्देष्टव्या पृच्छता जन्मतो व)।।**

(6) जिस भाव का स्वामी ग्रह उच्च राशि में हो, उसका शुभ फल पूर्ण, नीच राशि में हो तो शुभ फल का अभाव, शत्रु राशि में अल्प शुभ फल, मित्र ग्रह की राशि में चतुर्थांश, अपनी राशि के भाव में आधा और मूल त्रिकोण राशि में ३ चरण अर्थात् ३/४ शुभ फल होता है–

> **स्वोच्च स्थितः शुभफलं प्रकरोति पूर्णं नीचर्क्षगस्तु विफलं, रिपु मन्दिरेऽल्पम्।**
> **पादं शुभस्य हिते स्वगृहे तदर्धं पादत्रयं गणनगः स्थित वास्त्रकोणे।। (सारावली)**

(7) त्रिकोण भावों (१/५/९) के स्वामी शुभ फल प्रदान करने वाले होते हैं–अर्थात् इन भावों के स्वामी यदि पाप ग्रह हों तो भी शुभफल को देने वाले होते हैं, यदि सौम्यग्रह हों, तो अत्यन्त शुभ फल प्रदायक होते हैं।

> **सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः शुभफलप्रदाः। पतयस्त्रिषडायानां यदि पापफलप्रदा।।**

त्रिषडाय (३/६/११) भावों के स्वामी कुण्डली में जहाँ भी होंगे, उस भाव के फल को अनिष्ट (अशुभ) ही करेंगे। यदि त्रिषडाय पति शुभ ग्रह हों, तो पाप ग्रहों के सदृश फल देंगे। यदि त्रिषडायपति पाप ग्रह हों, तो अत्यन्त अशुभ फल देंगे। त्रिषडाय भावों में स्थित पाप ग्रह शुभ फली माने जाते हैं।

(8) छठे, आठवें तथा बारहवें भाव के स्वामी जिन भावों में स्थित होते हैं, उस भाव के फल की हानि करते हैं।। 8वें और 12वें भाव में प्रायः सभी ग्रह अनिष्ट प्रभावकारक होते हैं।

9वें, दूसरे और 12वें भावों के स्वामी (ग्रह) अन्य भाव स्वामी ग्रह के साहचर्य से अथवा अपनी दूसरी राशि (स्वामी) के अनुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। उदाहरणार्थ–यदि दूसरे भाव का स्वामी ग्रह शुक्र (जैसा कि कन्या लग्न में होता है। भाग्येश (9वें भाव का स्वामी) भी हो जाता है। यदि शुक्र शुभस्थ पड़ा हो, तो जातक के अपने भाग्यवश धन उपार्जन होता रहता है।

(10) लग्नेश (प्रथम भाव का स्वामी) ग्रह जिस भाव में पड़े, उस भाव के फल में

विशेष रूप से वृद्धि होती है। यदि लग्नेश केन्द्र या त्रिकोण भावों में पड़ा हो, अर्थात् 1, 3, 4, 5, 6, 7, 10, 11वें भाव में पड़ा हो, तो जातक क्रमशः उच्च पद प्रतिष्ठित, पुरुषार्थी, सुखी, स्त्री–संतान, सवारी आदि सुखों से युक्त, भाग्यवान, सरकारी क्षेत्रों द्वारा लाभान्वित व्यक्ति होता है। लग्नेश पर शुभ ग्रहों की दृष्टि से जातक नीरोग एवं स्वस्थ रहता है, जबकि अशुभ ग्रहों की दृष्टि से स्वास्थ्य क्षीण होता है। 11वें भाव में लग्नेश हो, तो व्यक्ति को आय के साधन एक से अधिक होते हैं। लग्नेश छठे, आठवें एवं बारहवें भावों में स्थित होने से जातक को क्रमशः शरीर कष्ट, रोग एवं शत्रु भय, कार्यों में विघ्न–भय, संघर्ष तथा अपव्यय आदि अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

(11) (*i*) सूर्य, मंगल, शनि और राहु क्रम से एक–दूसरे से अधिक पाप एवं क्रूर ग्रह हैं। ये ग्रह अपनी नीच/पाप ग्रहों की राशियों में रहने से विशेष पापी तथा शुभ मित्र ग्रह की राशि और अपनी उच्च राशि में रहने से अल्पपापी अर्थात् अपेक्षाकृत कम अनिष्ट फल करते हैं।

(*ii*) चन्द्र, बुध, शुक्र और गुरु (ये क्रम से एक दूसरे से अधिक शुभ ग्रह हैं। ये शुभ ग्रहों की राशियों में रहने से और अधिक शुभ तथा पाप ग्रहों की राशियों में रहने से अपेक्षाकृत कम शुभ फली होते हैं।

(12) राहु, केतु और अष्टमेश (अष्टम भाव का स्वामी) जिस भाव में रहते हैं उस भाव के फल की हानि करते हैं। राहु 3, 6 एवं 9वें भावों में आकस्मिक/धन लाभ एवं अरिष्ट निवारण भी कर देता है। मतान्तर से, राहु–केतु जिस भाव में बैठते हैं, उस भाव के स्वामी के अनुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। फिर भी नैसर्गिक रूपेण राहु में शनि के अर्ध गुण तथा केतु में मंगल के अर्ध गुणों का समावेश रहता ही है।

(13) गुरु छठे भाव में शत्रु नाशक, शनि आठवें भाव में दीर्घायु कारक, सूर्य व मंगल दशम भाव में भाग्य में वृद्धिकारक तथा चतुर्थ भाव में चन्द्र और शुक्र धन–सम्पदा, लग्न में गुरु व बुध तथा शनि सप्तम में भी प्रशस्त (सौभाग्यवर्द्धक) माने जाते हैं।

इस प्रकार भाव, भावेश और भाव कारक ग्रह निर्बल हों, या ये पाप ग्रहों अथवा शत्रु ग्रह से युक्त या वीक्षित हों (और शुभ ग्रहों से युत या वीक्षित न हों) तो उस भाव सम्बन्धी फल का अशुभ फल प्राप्त होगा।

(14) जिस भाव का कोई ग्रह कारक माना गया है, यदि वह अकेला उस भाव में पड़ा हो, तो उस भाव के फल की हानि करता है। जैसे सूर्य 1, 9, 10 भावों का कारक है। यदि सूर्य अकेला प्रथम भाव में पड़ा हो (और किसी अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि न हो), तो जातक की आँखों एवं स्वास्थ्य को, नवम में हो तो भाग्योन्नति को तथा दशम में हो तो कार्य व्यवसाय में हानिकारक होगा। यदि भावकारक ग्रह पर गुरु आदि किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो उस भाव सम्बन्धी विषय में लाभ होगा।

संतान सुख में, दशम में व्यवसाय की उन्नति में तथा एकादश भाव में धन लाभ की स्थिति में कमी करता है। इसी भान्ति भावों के अन्य कारक ग्रहों के बारे में समझें।

भावों के कारक यद्यपि हमारी पुस्तक **'ज्योतिष–तत्त्व'** में लिखे हुए हैं। तथापि लिखते हैं–**यथा**–प्रथम भाव का कारक सूर्य, २. दूसरे का गुरु, ३रे भाव का मंगल, ४. चौथे का चन्द्र व बुध, ५. पंचम भाव का गुरु, ६. छठे का शनि व मंगल, ७. सप्तम का शुक्र, ८वें का शनि, नौवें का सूर्य व गुरु, दशम का सूर्य, बु. गुरु व शनि, एकादश का गुरु तथा १२वें भाव का कारक शनि होता है।

(15) **ग्रहों का कारकत्व**–कुण्डली में भावों की भान्ति ग्रहों के कारकत्व का अवश्य विचार करना चाहिए। जैसे सूर्य को पिता, आरोग्य एवं नेत्रों का कारक, चन्द्रमा को माता, मन एवं धन का, मंगल को भाई, भूमि, पुत्रादि का, बुध को बुद्धि, विद्या, वाणी, व्यापार, मामा आदि का, गुरु को विवेक–बुद्धि, विद्या, पुत्र, पति आदि का, शुक्र को स्त्री, धन, वाहन, व्यापार आदि का, तथा शनि को सुख–पीड़ा, आयु, व्यापार, रोगादि को, राहु को आकस्मिक धन तथा केतु को गुप्त–शक्ति, तन्त्र–विद्या का कारक माना जाता है।

उदाहरणार्थ कुण्डली में किसी जातक की आर्थिक स्थिति का विचार करना हो तो द्वितीय भाव, दूसरे भाव में स्थित शुभाशुभ ग्रह तथा द्वितीयेश व लाभेश ग्रहों की स्थिति के अतिरिक्त धन सम्पदा कारक ग्रह–चन्द्र व शुक्र ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति पर भी अवश्य विचार करना चाहिए।

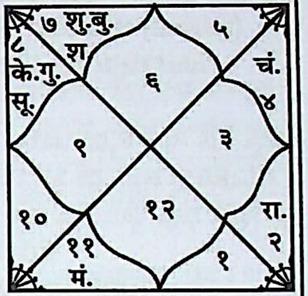

प्रस्तुत जन्म कुण्डली में दूसरा भाव लग्नेश बुध मित्र एवं योगकारक ग्रहों से संयुत है। द्वितीयेश शुक्र स्वराशिगत हैं। धन कारक ग्रह चन्द्र भी स्वगृही है, अतएव यह जातक विशेष धनवान होगा।

(16) जिस भाव का विचार करना हो, यदि उस भाव का स्वामी (अपने भाव) से 6, 8 या 12वें भाव में पड़े, तो उस भाव के फल को बिगाड़ेगा।

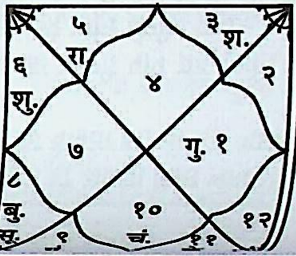

यदि विचारणीय भाव का स्वामी और अन्य शुभ ग्रह 1, 4, 5, 7, 9 और 10 भावों हों, तो उस भाव के फल की वृद्धि होगी।

**ध्यान रहे**, उपरोक्त भावों पर पाप ग्रहों की दृष्टि या स्थिति नहीं होनी चाहिए। यदि शुभ एवं अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह अवस्थित होंगे, तो सम्बद्ध भाव सम्बन्धी मिलें जुले (मिश्रित) प्रभाव होंगे।

का विचार करना है, तो सप्तम से छठा (12वाँ), सप्तम से 8वाँ (द्वितीय), तथा सप्तम से 12वाँ छठा भाव बनेगा। इन भावों में सप्तमेश एवं पाप ग्रह हों, तो सप्तम भाव सम्बन्धी सुख (स्त्री सुख) में कमी करेंगे। जैसे साथ वाली कुण्डली में सप्तमेश शनि १२वें भाव में तथा सप्तम से अष्टम अर्थात् 2रे भाव में पापी क्रूर ग्रह राहु होने से स्त्री एवं वैवाहिक सुख में कमी रहेगी।

(17) **षड्वर्ग का विचार**—फलित में यद्यपि जातक की जन्म कुण्डली मुख्य आधार होती है, परन्तु फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता एवं स्पष्टता लाने के लिए लग्न के अन्य वर्गों (षड्वर्गी कुण्डलियों को बनाने की प्रक्रिया उदाहरणों सहित हमारी **पुस्तक ज्योतिष तत्त्व गणित खण्ड में देखें।) षड्वर्गी**—**सप्तवर्गी** की कुण्डलियों का आश्रय लिया जाता है। जैसे—**होरा** कुण्डली से धन सम्पदा, **द्रेष्काण** से सौभाग्य, **सप्तमांश** से सन्तान सुख, **नवमांश से विवाह** एवं सुख/समृद्धि, **द्वादशांश** से माता–पिता, एवं **त्रिशांश कुं.** से जातक के व्यवहारादि चेष्टाओं का विशेष रूप से विचार किया जाता है। नवांश, द्रेष्काण आदि कुण्डलियों के विशेष फलादेश हेतु गतवर्षीय पंचांगों का अध्ययन करें।

(18) **चलित कुण्डली विचार**—चलित के बिना कुण्डली में ग्रहों की स्थिति का ठीक ज्ञान नहीं होता। ग्रह स्पष्ट और भाव स्पष्ट के तुलनात्मक विश्लेषण के बाद ही चलित कुण्डली का ज्ञान होता है। भावेश के तुल्य ग्रह ही पूर्ण फल प्रदान करता है। जब कि सन्धि की ओर बढ़ता ग्रह अल्प बली होता जाता है। सन्धि मध्य पड़ा ग्रह अर्थात् संधि तुल्य ग्रह षडबल प्राप्त होने पर भी फल देने में असमर्थ होता है। यथा—

**भावेषु भावस्फुट तुल्य भागस्तद् भावजं पूर्णफलं विधत्ते।**
**सन्धौ फलं नास्ति तदन्तराले चिन्त्योऽनुपातः खलु खेचराणाम्।।** भाव फलदीपिका।।

(19) **चन्द्र कुण्डली एवं सूर्य—कुण्डली का महत्त्व**—भारतीय ज्योतिषाचार्यों ने लग्न कुण्डली की भान्ति चन्द्र कुण्डली को भी विशेष महत्त्व दिया है। उनके अनुसार लग्न, षडवर्ग और नक्षत्र, ये देहरूप हैं तथा चन्द्रमा प्राण स्वरूप है। जिस प्रकार प्राण नष्ट होने से देह नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार शुभाशुभ फल में चन्द्र बल को मुख्य माना गया है—

**देहो लग्नं वर्गषटको डुकानि प्राणश्चन्द्रो घातवोऽन्ये ग्रहेन्द्राः।**
**प्राणे नष्टे देहघात्वङ्गनाशो यस्मात् तस्माच्चन्द्रवीर्यं प्रधानम्।।**

चन्द्र राशि के अत्यधिक महत्त्व को स्वीकारते हुए सम्भावतः इसी कारण प्राचीन काल से ही जन्मपत्री में लग्न कुण्डली के साथ–साथ चन्द्रकुण्डली को भी लिखने की परम्परा रही है।

**चन्द्रकुण्डली** द्वारा बाल्यावस्था, बालारिष्ट योग, माता की स्थिति, मन की प्रसन्नता, स्त्री एवं धनादि सम्पदा के सुखों का तथा गोचर ग्रहों के फलादेश में विशेष रूप से चन्द्र कुण्डली से विचार किया जाता है।

**"सर्वेषु लग्नेष्वपि सत्सु, चन्द्र लग्न प्रधानं खलु गोचरेषु।।"**

इसी भान्ति **सूर्य–कुण्डली** द्वारा पिता, धैर्य, पराक्रम, आत्म एवं तेज बल, उत्साह, नेत्र शक्ति, आरोग्यता, उच्च एवं सरकारी क्षेत्रों से लाभादि का विचार किया जाता है।

(20) **ग्रहों का बलाबल**—कुण्डली में ग्रहों के बलाबल का निर्णय करने से पूर्व ग्रहों के स्थानादि बल एवं दीप्तादि व शयनादि अवस्थाओं पर भी अवश्य विचार कर लेना चाहिए। 'ज्योतिष तत्त्व' गणित एवं फलित खण्ड के आरम्भिक पृष्ठों पर ग्रहध्याय में इनका विवरण विस्तारपूर्वक किया गया है।

(21) **ग्रहों की वक्री, मार्गी, अस्तंगतादि स्थितियाँ**—कोई शुभ ग्रह जब वक्री होता है, तो अधिक शुभ फलप्रदायक हो जाता है तथा यदि क्रूर ग्रह वक्री होता है, तो और भी अधिक अनिष्ट फलकारक होता है। सामान्यतः गोचरवश जब कोई ग्रह वक्री होता है, तो अन्य ग्रहों के सहचर्यवशात् परिस्थितियों में शुभाशुभ परिवर्तन करता है।

इसी भान्ति **अस्तंगत** ग्रह जातक को मानसिक एवं शारीरिक कष्ट, कार्यों में विफलता, धन–हानि, गुप्त चिन्ता, शत्रु–भय, रोगादि अशुभ फल देता है, जबकि **उदित ग्रह** मान सम्मान एवं सौभाग्य में वृद्धि,धन लाभ एवं सुख प्रदान करता है।

(22) **ग्रहों का गोचर फल विचार**—गोचर फल पद्धति में जातक की जन्म कुण्डली में चन्द्र राशि को आधार मान कर यहाँ अन्य ग्रहों की वर्तमान कालिक संचार स्थिति का विचार किया जाता है। **उदाहरणस्वरूप** यदि किसी जातक की जन्म राशि मेष है, तो पंचाँग में लिखे अनुसार मेष राशि पर जब भी शनि आदि क्रूर ग्रह का संचार होगा, तभी जातक को शरीर कष्ट, धन हानि, एवं प्रयासों में असफलताएँ आदि अशुभ फल घटित होंगे।

उदाहरणस्वरूप सूर्य जब चन्द्रमा से गोचरवश 3, 6, 10 एवं 11वें स्थान पर आता है, तो शुभ फल करता है। जबकि शनि गोचर वश 3, 6 एवं 11वें स्थानों पर शुभ फल प्रदान करता है। इन स्थानों में शनि अकसमात्–धन लाभ, व्यवसाय में उन्नति व वाहनादि सुखों की प्राप्ति करवाता है इत्यादि।

(23) **ग्रहों का वेधफल विचार**—वेध स्थिति को प्राप्त हुआ ग्रह गोचरवश अपने शुभ भावस्थ होने पर भी शुभ फल नहीं दे पाता है। उदाहरणार्थ जैसे उपरोक्त नियमानुसार सूर्य गोचरवश 3, 6, 10, 11वें भावों में शुभफल प्रदायक होता है, परन्तु यदि कुण्डली में इन निर्दिष्ट भावों से सप्तम भाव में अर्थात् क्रमशः 9, 12, 4, 5वें भाव में (शनि के अतिरिक्त) कोई अन्य ग्रह होगा तो सूर्य अपना शुभ प्रभाव नहीं दे पाता है।

गोचर एवं वेध सम्बन्धी ज्ञान के लिए हमारी **'ज्योतिष तत्त्व गणित–खण्ड'** या **'वर्षफल चंद्रिका'** का अध्ययन भी कर सकते हैं।

(24) **अष्टकवर्ग फल विचार**—अष्टकवर्ग द्वारा फल कथन की प्रक्रिया गोचर ग्रह पद्धति का ही परिवर्धित, सूक्ष्म एवं परिष्कृत रूप है। गोचर प्रणाली में तो जन्मकालीन चन्द्रमा के आधार पर अन्य ग्रहों के संचरण का विचार किया जाता है। परन्तु अष्टकवर्ग में लग्न से तथा अन्य सभी ७ ग्रहों से वर्तमान गोचर ग्रहों का विचार किया जाता है। इस

प्रणाली के अन्तर्गत लग्न कुण्डली से लग्नाष्टक वर्ग, चन्द्र से चन्द्राष्टक वर्ग, सूर्य कुण्डली से सूर्याष्टक वर्ग अदि सभी ग्रहों के आधार पर गोचर का विचार किया जाता है। जिस ग्रह एवं लग्न के आधार पर किसी राशि में 28 या 28 से अधिक बिन्दु आएं तो उस का फल अच्छा एवं उत्तम होगा। यदि २८ से कम संख्या हो, तो जितनी कम संख्या होगी उतना अशुभ फल अधिक होगा।

(25) **एक से अधिक ग्रह–योगों का फल**–कुण्डली में कई बार दो या दो से अधिक ग्रह–चमत्कारिक फल उत्पन्न कर देते हैं। उदाहरणार्थ–केन्द्र त्रिकोण के स्वामी ग्रह जिस भाव में इकट्ठे बैठे, उस भाव का फल शुभ होगा। विशेषकर पंचम, नवम अथवा 11वें भाव में दो या अधिक ग्रहों का योग अत्यन्त शुभफल प्रदायक होता है।

कई बार ग्रहों के पारम्परिक स्थान परिवर्तन अथवा एक–दूसरे ग्रह पर दृष्टि सम्बन्ध के कारण **ग्रह योग कारक** एवं विशेष फल प्रदायक हो जाते हैं। इन योगों का विशद वर्णन प्रत्येक लग्न फल के साथ–साथ किया गया है।

(26) **ग्रहों की दशा का विचार**–जो ग्रह अपनी उच्च राशि, स्वराशि या मित्र राशि में हो वह अपनी दशा अन्तर्दशा में शुभ फल देता है, जो ग्रह नीच एवं शत्रु राशिगत होगा, वह ग्रह अपनी दशान्तरदशा में धन–हानि, शरीर कष्ट, पीड़ा आदि अशुभ फल प्रदान करता है।

(27) वृहद् पाराशरी अनुसार त्रिकोण भाव (5, 9) **लक्ष्मी के स्थान** हैं तथा केन्द्र (1, 4, 7, 10)–ये **भगवान् विष्णु के स्थान** हैं। यदि दोनों स्थानों के स्वामी विष्णु और लक्ष्मी (**लक्ष्मी–नारायण**) की कृपा का सम्बन्ध उपरोक्त छः भावों में से किसी एक भाव में हो जाए, तो यह योग श्रेष्ठ शुभ फलदायी व राज योगकारक माना जाता है। ऐसा जातक विशेष भाग्यशाली होता है–

**लक्ष्मी स्थानं त्रिकोणं च विष्णुस्थानं च केन्द्रकम्।**
**तयोः सम्बन्ध–मात्रेण राजयोगादिकं भवेत्।।** (पाराशर)।।

(28) (क) लग्नेश (लग्न का स्वामी) तथा दशमेश–दोनों परस्पर एक दूसरे के भाव में बैठे हों अर्थात् लग्नेश दशम में हो, और दशमेश लग्न में हो, तो राज–योग होता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति लोक प्रसिद्ध, धनवान् और सर्वत्र विजय (सफलता) प्राप्त करने वाला होता है।

(ख) इसी भान्ति नवमेश और दशमेश ग्रह दोनों परस्पर एक दूसरे के स्थानों में हों तो भी राजयोग होता है।

(29) जो–जो भाव या ग्रह पंचमेश एवं नवमेश से युक्त या दृष्ट हों, वह सुख फलदायक होते हैं और जो–जो ग्रह षष्ठेश, अष्टमेश, द्वादशेश या मारकेश (2, 7) ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों, वह रोग, शोक, कलह–क्लेश, अर्थ संकट एवं दुःख प्रदायक होते हैं–

**ये ये ग्रहा (भावाश्च) धर्मण–बुद्धिपाभ्यां युक्ताश्च दृष्टाश्चसुख प्रदास्ते।**
[illegible]

(30) **भाव कारकत्व**–यदि कोई ग्रह अपने कारक भाव में अकेला बैठा हो, तो उस भाव/राशि के पूर्ण फल को नहीं प्रकट कर पाता, तथापि किसी अन्य ग्रह के योग, दृष्टि आदि के सम्बन्ध से शुभाशुभ फल देता है। जैसे कहा भी है **'कारको भाव नाशाय'** अर्थात् किसी भाव का कारक होकर कोई ग्रह स्थित हो, तो वह उस भाव के फल का नाश करता है। जैसे मान लो वृश्चिक लग्न में, चन्द्रमा भाग्येश होकर चतुर्थ भाव में अकेला पड़ा हो, तो वह चतुर्थ भाव सम्बन्धी फल जैसे माता, भूमि, मकान, सवारी आदि के सुखों में विघ्नकारक होगा ना कि भाग्य–वृद्धिकर। यदि चन्द्र के साथ कोई अन्य शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र आदि) होगा, तो चतुर्थ भाव सम्बन्धी अवश्य सुख प्रदान करेगा।

(31) किसी कुण्डली में किसी उच्च–नीचादि ग्रह देखकर फल कथन में शीघ्रता नहीं करनी चाहिए, बल्कि उस ग्रह की स्थिति का अवलोकन भाव चलित कुण्डली तथा नवांश आदि वर्ग कुण्डली में भी अवश्य करना चाहिए। किसी जातक की कुण्डली में यदि कोई ग्रह उच्च राशि अंशों में हो, परन्तु यदि नवांश में नीच राशिस्थ हो, तो उस स्थिति में जातक को मिश्रित अर्थात् शुभाशुभ दोनों फल मिलते हैं, बल्कि नीच का फल शीघ्र मिलता है। उसी भान्ति जन्म कुं. में यदि कोई ग्रह नीच का पीड़ा हो, परन्तु नवांश में उच्च का हो, तो जन्म कुण्डली वाले ग्रह का नीच फल क्षीण होकर ग्रह जातक को शुभ फल देने लगता है।

**नीचांशगस्तुंग ग्रहोपयाता जातस्य नीच फलमाशु दद्युः।**
**नीचगतास्तुंग नवांशकस्थाः सौम्यं फलं व्योमचराः प्रकुर्युः।।** (जातक पारिजात)

यदि जन्म लग्न और नवांश कुण्डली का लग्न समान हो, तो वह वर्गोत्तम नवांश होता है। वर्गों. नवांश में उत्पन्न जातक अपने कुल, परिवार एवं विभाग का मुखिया एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा साधन सम्पन्न व्यक्ति होता है। इसी भान्ति, यदि जन्म कुण्डली में कोई ग्रह स्वोच्च, स्वगृही या मित्र भावी हो तथा नवांश कुण्डली में भी वह स्वगृही, उच्च या मित्र भावी स्थिति में हो, तो वह ग्रह भी वर्गोतमी कहलाता है, तथा वर्गोत्तम स्थिति में गया ग्रह अपने भाव एवं कारकत्व अनुसार विशेष शुभ एवं उत्तम फल प्राप्त होते हैं।

(32) कुण्डली में दो, तीन या अधिक ग्रहों के फल का निर्णय करते समय ध्यान दें कि जो ग्रह सर्वाधिक बली होगा, वह अन्य ग्रहों के फल को भी प्रभावित करता है। इस सम्बन्ध में विस्तृत विवरण **'ज्योतिष तत्त्व'** फलितखण्ड के द्वितीय भाग में अवलोकन करें।

(33) लग्न भाव पर जितने अधिक शुभ ग्रहों की दृष्टि होगी, उस जातक का व्यक्तित्व उतना अधिक बलान्वित, समृद्ध एवं भाग्यशाली होगा। ऐसा व्यक्ति जीवन में विशेष उन्नति करता है।

(34) क्रूर एवं पापी ग्रह तथा 6, 8 एवं 12वें भाव का स्वामी गोचरवश जिस *भाव में भी जाता है, जातक को उस भाव सम्बन्धी हानि, कष्ट, रोग, शोक एवं परेशानियां* [illegible]

(35) सभी ग्रह अपनी महादशा में जब अपनी ही अन्तर्दशा आती है, तब शुभ फल नहीं करते, अपितु अपने मित्र ग्रह एवं अपनी उच्चराशि के स्वामी ग्रह की अन्तर्दशा आने पर ही शुभ फल प्रदान करते हैं। इस सम्बन्ध में और अधिक जानकारी हेतु ज्योतिष तत्त्व के **'विंशोतरी महादशा/अन्तर्दशा'** सम्बन्धी अध्याय का स्वाध्याय कीजिए।

(36) शनि की महादशा में शुक्र का अन्तर हो, तो शुक्र अपने गुण छोड़कर शनि के प्रभाव ग्रहण कर लेता है। कुण्डली में शनि अशुभस्थ हो, तो शुक्र भी अशुभ फल देने वाला हो जाता है। शुक्र एवं शनि यद्यपि परस्पर नैसर्गिक मित्र है। अतएव शुक्र मध्ये शनि की अर्न्तदशा में शनि शुभ फल अर्थात् शुक्र के समान फल प्रदान करेगा।

(37) ज्योर्तिमतानुसार शीर्षोदय राशियों (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुम्भ राशियां) में स्थित शुभाशुभ ग्रह अपनी दशा एवं गोचर आदि वश शीघ्र फल प्रदान करते हैं तथा पृष्ठोदय राशियों (1, 2, 4, 9, 10) में पड़े ग्रह विलम्ब से अपना शुभाशुभ फल देते हैं। जबकि मीन (उभयोदय) राशि में पड़े ग्रह राशि के मध्य में अपना शुभाशुभ फल प्रकट करते हैं। एक अन्य मतानुसार शीर्षोदय राशियों में पड़े शुभ ग्रह अत्यन्त शुभ फल करते हैं जबकि पृष्ठोदयी राशियों में क्रूर एवं पापग्रह और भी अधिक अशुभ एवं हानिकारक होते हैं।

(38) तीसरे, छठे एवं ग्यारहवें भावों में राहु, शनि एवं मंगल हों, तो अनेक अरिष्टों का नाश करके धन, सुख एवं ऐश्वर्य में वृद्धि करते हैं–

**'त्रिषड् एकादशे राहु, त्रिषड् एकादशे शनिः, त्रिषड् एकादशे भौम सर्वारिष्ट निवारकाः।।'**

(39) किसी जन्म कुण्डली में पड़े उच्चादि ग्रह को देखकर एकदम यह निर्णय नहीं लेना चाहिए कि वह सदा अच्छा (उत्तम) फल ही करेगा। बल्कि ग्रह सम्बन्धी शुभाशुभ निर्णय करने से पूर्व यह भी देखें कि जिस राशि में वह ग्रह उच्चादि अवस्था में पड़ा है, उस राशि का स्वामी यदि दुःस्थान में नीच आदि अवस्था में होगा, तो वांछित शुभ फल नहीं करेगा। जैसे उदाहरण में भाग्येश सूर्य पंचम भाव में उच्च राशिस्थ होने पर भी, पंचमेश मंगल यदि अष्टम में नीच राशिस्थ है, तो जातक को उच्च विद्या, धन एवं सन्तानादि के सम्बन्ध में विघ्न एवं परेशानीकारक होगा। यही नियम नीच राशि पर भी होगा, अर्थात् यदि कुण्डली में कोई ग्रह नीच राशिगत पड़ा है, परन्तु उस नीच राशि का स्वामी केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशिगत हो तो नीच राशि का ग्रह विशेष अशुभ फल नहीं देगा।

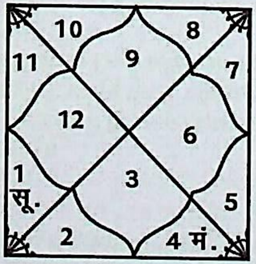

फलादेश सम्बन्धी और अधिक विस्तृत नियमों की जानकारी के लिए हमारी पूर्व प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड के दोनों भागों का अवलोकन करें।

## पितृ दोष की शान्ति हेतु विशेष उपाय

उपरोक्त उपायों के अतिरिक्त सामान्य उपाय करने भी पितृ आदि दोषों की शान्ति में लाभ प्रदायक सिद्ध होंगे–

1. अपने गृह की दक्षिण दिशा की दीवार पर अपने दिवंगत पूर्वजों के फोटों लगाकर उन पर हार चढ़ाकर सम्मानित करना चाहिए तथा उनकी मृत्यु तिथि पर ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र एवं दक्षिणा सहित दान, पितृ तर्पण एवं श्राद्ध कर्म करने चाहिए।

2. जीवित माता–पिता एवं भाई–बहनों का भी आदर–सत्कार और धन, वस्त्र, भोजनादि से सेवा करते हुए उनके आशीर्वाद ग्रहण करते रहें।

3. हर अमावस को अपने पितरों का ध्यान करते हुए पीपल पर कच्ची लस्सी, गंगाजल, थोड़े काले तिल, चीनी, चावल, जल, पुष्पादि चढ़ाते हुए **ॐ पितृभ्यः नमः** मन्त्र तथा पितृ सूक्त का पाठ करना शुभ होगा।

4. हर अमावस के दिन दक्षिणीभिमुख होकर दिवंगत पितरों के लिए **पितृ तर्पण** करना तथा **अमावस को पितृ स्तोत्र या पितृ सूक्त** का पाठ करना, त्रयोदशी को **नीलकण्ठ स्तोत्र** का पाठ करना, पंचमी तिथि **सर्पसूक्त** का पाठ करना तथा पूर्णमाशी के दिन **श्री नारायण कवच** का पाठ करने के पश्चात् ब्राह्मणों को मिष्ठान्न व दक्षिणा सहित भोजन करवाना पितृदोष की शान्ति के लिए शुभ होता है।

5. हर संक्रान्ति, अमावस एवं रविवार को सूर्य देव को ताम्र बर्तन में लाल–चन्दन, गंगाजल, शुद्ध जल डालकर बीज मंत्र पढ़ते हुए तीन बार अर्घ्य देवें।

6. नियमित श्राद्ध के अतिरिक्त श्राद्ध के दिनों में गौओं को चारा तथा कौओं, कुत्तों व भूखों को खाना खिलाना चाहिए।

7. श्राद्ध के दिनों विशेषकर अण्डा, मीट, शराब आदि तामसिक भोजन तथा पराये अन्न से परहेज करना चाहिए।

8. सोमवार के दिन आक के 21 पुष्पों, कच्ची लस्सी, बिल्व–पत्रादि सहित श्रीशिवजी की पूजा करने से पितृ दोष का शमन होता है।

9. पीपल वृक्ष पर मध्याह्न को जल, पुष्पाक्षत, दूध, गंगाजल, काले तिल आदि चढ़ाएं व सायं को दीप जलाएं तथा नाग स्तोत्र, महामृत्युञ्जय मंत्र, या रूद्र सूक्त या पितृ स्तोत्र, नवग्रह स्त्रोत का पाठ करने से तथा ब्राह्मण भोजन कराने से पितृ आदि दोष की शान्ति होती है।

10. कुल देवता एवं इष्ट देव की भी पूजार्चना करनी चाहिए।

11. किसी गरीब कन्या के विवाह या बीमारी में सहायता करें।

इसके अतिरिक्त सर्प पूजा, ब्राह्मणों को गोदान, कुआं खुदवाना, पीपल व बरगद के वृक्ष लगवाना, विष्णु मंत्रों का जप करना, श्रीमद्भगवद् गीता का पाठ करना, माता–पिता का आदर करना, पितरों के नाम से अस्पताल, मंदिर, विद्यालय, धर्मशाला आदि बनवाने से भी पितृ आदि दोषों की शांति होती है।

# कालसर्पयोग-अरिष्ट निवारक कुछ उपाय

**जन्म कुण्डली में यदि राहु और केतु के बीच एक ही तरफ में सभी सातों ग्रह ( सू., चं., मं., बु., गु., शु., श. ) पड़ जाएँ, तो कालसर्प नामक** योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक (पुरुष अथवा स्त्री) को व्यवसाय, धन, परिवार एवं सन्तानादि के कारण विविध परेशानियों एवं दुःखों से पीड़ित रहना पड़ता है-

**अग्रे वा चेत् पृष्ठतोऽप्येकपार्श्वे भानांषट्के राहुकेत्वो न खेटः।**
**योगः प्रोक्तः कालसर्पश्च तस्मिन्जातो जाता वाऽर्थपुत्रर्त्तिमीयात्॥**

**कालसर्प योग** से पीड़ित कुछ उल्लेखनीय महत्त्वपूर्ण कुण्डलियाँ इस प्रकार से हैं-स्वतन्त्र **भारतवर्ष एवं पाकिस्तान की जन्म कुण्डली**, पं० जवाहर लाल नेहरू, पाकिस्तान के भूतपूर्व शासक जुल्फकार भुट्टो, हिटलर ( जर्मनी ), सुश्री लतामंगेशकर इत्यादि। इनकी कुण्डलियों का विश्लेषात्मक अध्ययन ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) में पढ़ें।

वास्तव में राहु-केतु छाया ग्रह हैं। राहु का देवता 'काल' है। केतु का देवता सर्प हैं। कालसर्प योग के प्रभाव के कारण प्रत्येक कार्य में विघ्न-बाधाएँ तथा आर्थिक उन्नति में बाधाएं रहती हैं। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि कुण्डली में केवल कालसर्प योग ही प्रभावित कर रहा हो। कुंडली में बैठे अन्य शुभ योग जातक को आश्चर्यजनक सफलताएं दिला सकता है। कालसर्प योग अत्यन्त समृद्ध साधन सम्पन्न अमीर व्यक्ति की कुंडली में भी हो सकता है अथवा दीन, अभावग्रस्त गरीब व्यक्ति की कुण्डली में भी हो सकता है। मुख्यतः इस योग के प्रभावस्वरूप मनुष्य अपनी अन्तर्मन की शक्तियों का पूर्णतया उपयोग नहीं कर पाता अथवा सब सुख-साधन सम्पन्न होते हुए भी मानसिक तनाव एवं असन्तोष बना रहता है तथा अज्ञातभय एवं असुरक्षा की भावना व्याप्त रहती है।

**लक्षण**-इस योग के कारण जातक को स्वप्नों में सर्प दिखाई देते हैं, पानी दिखना, अपने-आप को उड़ते हुए देखना, परिवार के किसी सदस्य पर विपत्ति आना, पितृशिव देखना, सर्प और नेवेले की लड़ाई दिखे तो निश्चय ही गृह-कलह हो सकता है। कालसर्प योग का उपाय कर लें। ये सब लक्षण है कि आपकी कुण्डली में कालसर्प या आंशिक कालसर्प योग है। आप अपनी कुण्डली किसी विद्वान् ज्योतिषी को दिखाकर उपाय करें।

कालसर्प दोष केवल ग्रह-जनित पीड़ा है, इसलिए इसकी शान्ति मुख्य रूप से-(१) द्वादश ज्योर्तिलिंगों में से किसी एक ज्योर्तिलिंग के निकट (२) क्योंकि इस योग के अधिष्ठाता श्री महाकाल ही हैं। अतएव यदि प्रसिद्ध महाकालेश्वर ज्योतृिलग एवं सिद्ध शक्ति पीठ, कलिया नाग के निवास स्थल पुण्य सलिला क्षिप्रा गंगा के तट पर उज्जैन नगर में है। (३) प्रयागराज (४) नासिक में (५) अथवा यदि सम्भव न हो तो शिव मन्दिर में द्वादश ज्योतृिलग का ध्यान करते हुए करें।

## —कालसर्प दोष शान्ति के लिए उपाय—

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए मुख्य रूप से (१) ग्रह शान्ति (२) सर्प दोष (३) पितृ दोष शान्ति एवं नागबलि एवं शिव पूजन वैदिक पुराणोक्त विधि से किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। (४) विधिपूर्वक महामृत्युञ्जय का जप भी करें।

यदि कुण्डली में **काल सर्पयोग** पड़ा हो, तो निम्नलिखित किंचित् उपाय करने **शुभ एवं कल्याणकारी** होंगे-(1) **कालसर्प** की अरिष्ट शान्ति के लिए शिव मन्दिर में सवा लाख **ॐ नमः शिवाय** मन्त्र का पाठ करना तथा पाठोपरान्त रूद्राभिषेक करवाने का विशेष महत्त्व है। साथ ही शिवलिंग पर चांदी का **सर्प** मनसा-नाग स्तोत्र एवं नाग पूजनादि करके चढ़ाना शुभ होगा।

**नाग गायत्री मन्त्र**-ॐ नव कुलाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्॥

(2) प्रत्येक शनिवार एक नारियल को तैल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर, मौली लपेटकर अपने शिर से तीन बार घुमा कर **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः** मन्त्र कम-से-कम तीन बार पढ़कर चलते पानी में बहा देवें-ऐसे कम-से-कम **पाँच शनिवार करें।**

(3) प्रत्येक **शनिवार** कुत्तों को दूध और चपाती डालनी तथा गौओं, कौओं को तैल के छीटें देकर रसोई की प्रथम चपातियां डालना शुभ है।

(4) **कालसर्प** योग के कारण यदि वैवाहिक जीवन में बाधा आती हो, तो जातक पत्नी के साथ दोबारा विवाह करें एवं घर के चौखट द्वार पर चांदी का स्वस्तिक चिन्ह बनवा कर लगवाएं।

(5) घर में **मयूर पंख** का पंखा पवित्र स्थान पर रखें तथा भगवान् शिव का ध्यान करते हुए प्रातः उठते ही तथा सोने से पूर्व मयूर पंखे द्वारा हवा करें।

(6) प्रत्येक संक्रान्ति को गंगा जल सहित गोमूत्र का छिड़काव घर के सभी कमरों में करें।

(7) कालसर्प योग शान्ति के लिए नवनाग देवताओं के नाम का उच्चारण करना चाहिए-

**नवनाग स्तोत्र**- **अनंतं वासुकिं शेष पद्मानाभम् च कंबलम्।**
**शंखपालं कर्कोटकं कालियं तक्षकं तथा॥**
**एतानि संस्मरेन्नित्यं आयुः कामार्थ सिद्धये।**
**सर्पदोष क्षयार्थं च पुत्रपौत्रान् समृद्धये॥**
**तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥**

(8) महाकुम्भ पर्व के अवसर पर प्रमुख स्नान करें और कुम्भ में स्थित शिव मन्दिर में जाकर विधिपूर्वक पूजन करें। चाँदी के बने नाग-नागिन के कम-से-कम ११ जोड़ों को प्रतिदिन शिवलिंग में चढ़ाएँ तथा महादेव से इस कुयोग से मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करें।

(9) सोना-७ रत्ती, चाँदी-१२ रत्ती, तांबा-१६ रत्ती-ये तीनों मिलाकर सर्पाकार अंगूठी अनामिका अंगुली में धारण करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। जिस दिन धारण करें, उस दिन राहु की सामग्री का आंशिक दान भी करना चाहिए।

(10) नागपंचमी का व्रत करें तथा नवनाग स्तोत्र का पाठ करें। 'अनन्त चतुर्दशी' का व्रत भी विधिपूर्वक रखें।

(11) प्रत्येक बुधवार को काले वस्त्र में उड़द या मूंग एक मुट्ठी डालकर, राहु का मन्त्र जाप कर किसी भिखारी को दे देवें। यदि दान लेने वाला कोई नहीं मिले तो बहते पानी में उस अन्न को छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार 72 बुधवार करते रहने से अवश्य लाभ होता है।

(12) यदि किसी स्त्री की कुंडली इस योग से दूषित है तथा संतति का अभाव है, पूजन-विधि नहीं करवा सकती तो किसी अश्वत्थ (बट) के वृक्ष से नित्य १०८ प्रदक्षिणा (घेरे) लगाने चाहिए। तीन सौ दिन में जब २८००० प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर स्वतः ही संतति की प्राप्ति होगी।

*(13) इसके अतिरिक्त महाकाल रुद्र स्तोत्र, मनसादेवी नाग स्तोत्र, महामृत्युञ्जय आदि स्तोत्रों का विधि-विधान से पूजन, हवन करने से कालसर्प दोष की शान्ति हो जाती है।*

*कालसर्प दोष की शान्ति के लिए हमारी पुस्तक की प्रतीक्षा कीजिए।*

[illegible] स्तोत्र एवं नाग पूजनादि करके चढ़ाना शुभ होगा। कालसर्प योग की शान्ति के लिए हमारी पुस्तक की प्रतीक्षा कीजिए।

# सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरुपुष्य-आदि योग-वि. संवत् २०८१ (सन् 2024-2025 ई.)

दैनिक जीवन में आने वाले महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए शीघ्र ही सर्वांगशुद्ध मुहूर्त्त का अभाव हो, तथा इन शुभ मुहूर्त्तों की प्रतीक्षा में अधिक दिनों तक रुका न जा सकता हो, तो इन सुयोग वाले मुहूर्त्तों को सरलता से ग्रहण किया जा सकता है। इनसे प्राप्त होने वाले अभीष्ट शुभ फल के विषय में संशय नहीं करना चाहिए। ये सुयोग हैं—सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, रवियोग, सिद्धि, रत्नांकुर एवं प्रशस्तादि योग। **'यथा नाम तथा गुणा'** उक्ति के अनुसार सर्वाङ्गीण सिद्धिकारक हैं।

***(1) सर्वार्थ सिद्धि योग***—महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक कार्य जैसे—कोई व्यापारिक या राजकीय अनुबन्ध (कान्ट्रेक्ट) करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकद्दमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करने के लिए शीघ्रतावश गुरु-शुक्रास्त, अधिमास एवं वेधादि का विचार सम्भव न हो, तो ये सर्वार्थसिद्धि योग ग्रहण किए जा सकते हैं।

***(2) अमृतसिद्धि योग***—में स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम-विवाह करना, विदेश-यात्रा, किसी कार्य सिद्धि हेतु सुकाम अनुष्ठान करना आदि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष शुभ फलदायक माने गए हैं।** परन्तु अमृतसिद्धि योग के दिन कुछ तिथियां त्याज्य मानी गयी हैं। रविवार से शनिवार क्रमशः 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 तिथियां वर्जित हैं। **उदाहरण**—जैसे रविवार को हस्त नक्षत्र हो, तो अमृतसिद्धि योग बना है, परन्तु यदि उस दिन पंचमी तिथि आ पड़े तो उस तिथि काल में स.सि. एवं अमृतसिद्धि योग दूषित होगा। अतः इस काल को त्याग देना चाहिए।

***(3) रविपुष्य योग***—में जड़ी-बूटी तोड़ना तथा तोड़कर औषधि तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोगों में भी यह योग विशेष शुभ होता है।

***(4) गुरुपुष्य योग***— गुरु अथवा पिता, दादा या श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र या किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च-विद्या ग्रहण करना, धन, भूमि-विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरु धारण करना, विदेश-यात्रा आरम्भ करना शुभ होता है। परन्तु **'विवाह'** सर्वथा त्याज्य है।

उपरोक्त सभी योगों में से कोई योग विशेष ग्रहण करने से पूर्व तिथि एवं चन्द्रमा का बल भी ध्यान में रख लेवें, तो अत्यन्त लाभदायक होगा। (अर्थात् कृष्ण पक्ष की त्र्योदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर्यन्त चन्द्रमा निर्बल माना जाता है।) इनके अतिरिक्त गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त काल, अधिक मास, ग्रहण काल, श्राद्ध पक्ष आदि का भी ध्यान कर लेना शुभ होगा। **विवाह, मुण्डन, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश आदि कार्य निर्धारित मुहूर्त्तों में ही करने शुभ होंगे। ध्यान रहे,** इस वर्ष शुक्र 24 अप्रैल, 2024 ई. से 6 जुलाई, 2024 ई. तक अस्त रहेगा। जबकि गुरु 6 मई, 2024 ई. से 2 जून, 2024 ई. तक अस्त रहेगा।

**—पण्डित आदित्य शर्मा, गणितकर्ता**

### सर्वार्थ सिद्धि योग

| प्रारम्भ काल | | समाप्ति काल | |
|---|---|---|---|
| 2024 ई. | घं. मिं. | 2024 ई. | घं. मिं. |
| 7 अप्रै. | 12 58 | 8 अप्रै. | सू. उ. |
| 9 अप्रै. | 7 32 | 10 अप्रै. | 5 07 |
| 11 अप्रै. | 3 06 | 11 अप्रै. | सू. उ. |
| 16 अप्रै. | 3 06 | 16 अप्रै. | सू. उ. |
| 21 अप्रै. | सू. उ. | 22 अप्रै. | सू. उ. |
| 25 अप्रै. | 26 24 | 27 अप्रै. | 3 40 |
| 28 अप्रै. | सू. उ. | 29 अप्रै. | 4 49 |
| 5 मई | सू. उ. | 5 मई | 19 57 |
| 7 मई | सू. उ. | 7 मई | 15 32 |
| 8 मई | 13 34 | 9 मई | सू. उ. |
| 13 मई | 11 24 | 14 मई | सू. उ. |
| 14 मई | 13 05 | 15 मई | सू. उ. |
| 19 मई | सू. उ. | 20 मई | 3 16 |

### सर्वार्थ सिद्धि योग

| प्रारम्भ काल | | समाप्ति काल | |
|---|---|---|---|
| 2024 ई. | घं. मिं. | 2024 ई. | घं. मिं. |
| 23 मई | 9 15 | 24 मई | 10 10 |
| 26 मई | सू. उ. | 26 मई | 10 36 |
| 2 जून | 25 40 | 3 जून | सू. उ. |
| 4 जून | 22 35 | 6 जून | सू उ. |
| 9 जून | 20 21 | 10 जून | 21 40 |
| 11 जून | सू. उ. | 11 जून | 23 39 |
| 16 जून | सू. उ. | 16 जून | 11 13 |
| 19 जून | 17 23 | 20 जून | 18 10 |
| 23 जून | 17 04 | 24 जून | सू. उ. |
| 24 जून | 15 54 | 25 जून | सू. उ. |
| 30 जून | 7 34 | 1 जुला. | सू. उ. |
| 2 जुला. | सू. उ. | 3 जुला. | 4 40 |
| 3 जुला. | सू. उ. | 4 जुला. | सू. उ. |

### सर्वार्थ सिद्धि योग

| प्रारम्भ काल | | समाप्ति काल | |
|---|---|---|---|
| 2024 ई. | घं. मिं. | 2024 ई. | घं. मिं. |
| 6 जुला. | 4 07 | 6 जुला. | सू. उ. |
| 7 जुला. | सू. उ. | 8 जुला. | 6 03 |
| 9 जुला. | सू. उ. | 9 जुला. | 7 53 |
| 17 जुला | सू. उ. | 18जुला. | 3 13 |
| 21 जुला | सू. उ. | 21 जुला | 24 14 |
| 22 जुला | सू. उ. | 22जुला. | 22 21 |
| 26जुला. | 14 30 | 27 जुला | सू. उ. |
| 28 जुला | सू. उ. | 28 जुला | 11 48 |
| 30 जुला | सू. उ. | 30 जुला | 10 23 |
| 31 जुला | सू. उ. | 1 अग. | सू. उ. |
| 2 अग. | 10 59 | 3 अग. | सू. उ. |
| 4 अग. | सू. उ. | 4 अग. | 13 26 |
| 11 अग. | 5 49 | 11 अग. | सू. उ. |

### सर्वार्थ सिद्धि योग

| प्रारम्भ काल | | समाप्ति काल | |
|---|---|---|---|
| 2024 ई. | घं. मिं. | 2024 ई. | घं. मिं. |
| 14 अग. | सू. उ. | 14 अग. | 12 13 |
| 18 अग. | सू. उ. | 18 अग. | 10 15 |
| 19 अग. | सू. उ. | 19 अग. | 8 10 |
| 22 अग. | 22 06 | 24 अग. | सू. उ. |
| 26 अग. | 15 55 | 27 अग. | सू. उ. |
| 28 अग. | सू. उ. | 28 अग. | 15 53 |
| 29 अग. | 16 40 | 30 अग. | 17 56 |
| 7 सितं. | 12 34 | 8 सितं. | सू. उ. |
| 9 सितं. | 18 04 | 10 सितं. | सू. उ. |
| 14 सितं. | 20 33 | 15 सितं. | सू. उ. |
| 19 सितं. | 8 04 | 20 सितं. | 26 43 |
| 23 सितं. | सू. उ. | 24 सितं. | सू. उ. |
| 26 सितं. | सू. उ. | 27 सितं. | सू. उ. |
| 2 अक्तू | 12 23 | 3 अक्तू | सू. उ. |

### सर्वार्थ सिद्धि योग

| प्रारम्भ काल | | समाप्ति काल | |
|---|---|---|---|
| 2024 ई. | घं. मिं. | 2024 ई. | घं. मिं. |
| 5 अक्तू | सू. उ. | 5 अक्तू | 21 33 |
| 7 अक्तू | सू. उ. | 7 अक्तू | 26 25 |
| 12 अक्तू | 5 25 | 13 अक्तू | 4 28 |
| 15 अक्तू | 22 09 | 16 अक्तू | सू. उ. |
| 17 अक्तू | सू. उ. | 18 अक्तू | 13 26 |
| 21 अक्तू | सू. उ. | 22 अक्तू | 5 51 |
| 24 अक्तू | सू. उ. | 25 अक्तू | सू. उ. |
| 30 अक्तू | सू. उ. | 30 अक्तू | 21 44 |
| 4 नवं. | सू. उ. | 4 नवं. | 8 04 |
| 8 नवं. | 12 03 | 9 नवं. | 11 48 |
| 12 नवं. | 7 52 | 13 नवं. | 5 40 |
| 14 नवं. | सू. उ. | 14 नवं. | 24 33 |
| 16 नवं. | 19 28 | 17 नवं. | सू. उ. |
| 18 नवं. | सू. उ. | 18 नवं. | 15 49 |

## सर्वार्थ सिद्धि योग

| प्रारम्भ काल | | | समाप्ति काल | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 2024 ई. | घं. | मिं. | 2024 ई. | घं. | मिं. |
| 21 नवं. | सू. | उ. | 21 नवं. | 15 | 36 |
| 24 नवं. | 22 | 17 | 25 नवं. | सू. | उ. |
| 6 दिसं. | सू. | उ. | 6 दिसं. | 17 | 19 |
| 10 दिसं. | सू. | उ. | 10 दिसं. | 13 | 30 |
| 12 दिसं. | सू. | उ. | 12 दिसं. | 9 | 53 |
| 14 दिसं. | सू. | उ. | 15 दिस. | 3 | 55 |
| 22 दिसं. | सू. | उ. | 23 दिसं. | सू. | उ. |
| 27 दिसं. | 20 | 29 | 28 दिस. | सू. | उ. |
| 29 दिसं. | 23 | 22 | 30 दिसं. | सू. | उ. |
| (सन् 2025 ई०) | | | | | |
| 5 जन. | 20 | 18 | 6 जन. | सू. | उ. |
| 7 जन. | 17 | 50 | 8 जन. | सू. | उ. |
| 11 जन. | सू. | उ. | 11 जन. | 12 | 29 |
| 19 जन. | सू. | उ. | 20 जन. | सू. | उ. |
| 24 जन. | 5 | 08 | 25 जन. | 7 | 08 |
| 26 जन. | 8 | 26 | 27 जन. | सू. | उ. |
| 2 फर. | सू. | उ. | 2 फर. | 24 | 53 |
| 4 फर. | सू. | उ. | 4 फर. | 21 | 50 |
| 5 फर. | 20 | 33 | 6 फर. | सू. | उ. |
| 10 फर. | 18 | 01 | 11 फर. | सू. | उ. |
| 11 फर. | 18 | 34 | 12 फर. | सू. | उ. |
| 16 फर. | सू. | उ. | 17 फर. | 4 | 31 |
| 20 फर. | 13 | 30 | 21 फर. | 15 | 54 |
| 23 फर. | सू. | उ. | 23 फर. | 18 | 43 |
| 2 मार्च | सू. | उ. | 2 मार्च | 9 | 00 |
| 3 मार्च | 6 | 39 | 3 मार्च | सू. | उ. |
| 4 मार्च | 26 | 38 | 6 मार्च | सू. | उ. |
| 9 मार्च | 23 | 55 | 10 मार्च | 24 | 52 |
| 11 मार्च | सू. | उ. | 11 मार्च | 26 | 16 |
| 16 मार्च | सू. | उ. | 16 मार्च | 11 | 45 |
| 19 मार्च | 20 | 50 | 20 मार्च | 23 | 32 |
| 24 मार्च | 4 | 18 | 24 मार्च | सू. | उ. |

## अमृत सिद्धि योग

**विशेष**—कुछ विद्वान स.सि.यो. में अमृत-सिद्ध योग का संयोग अशुभ मानते हैं, जबकि नवीन मतानुसार कुछ विशेष तिथियां एवं घटिकाएं ही त्याज्य मानी गई हैं। यथा–रविवार से शनिवार तक क्रमशः 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 तिथियां एवं प्रारम्भ की 6 घड़ियां ही विषाक्त एवं त्याज्य मानी गई हैं।

| प्रारम्भ काल | | | समाप्ति काल | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 2024 ई. | घं. | मिं. | 2024 ई. | घं. | मिं. |
| 9 अप्रै. मंग | 7 | 32 | 10 अप्रै. | 5 | 07 |
| 21 अप्रै. रवि | 17 | 08 | 22 अप्रै. | सू. | उ. |
| 7 मई. मंग | सू. | उ. | 7 मई | 15 | 32 |
| 19 मई, रवि | सू. | उ. | 20 मई | 3 | 16 |
| 16 जून, रवि | सू. | उ. | 16 जून | 11 | 13 |
| 19 जून, बुध | 17 | 23 | 20 जून | सू. | उ. |
| 17 जुला. बुध | सू. | उ. | 18 जुला. | 3 | 13 |
| 26 जुला. शु. | 14 | 30 | 27 जुला | सू. | उ. |
| 14 अग. बुध | सू. | उ. | 14 अग. | 12 | 13 |
| 23 अग. शु. | सू. | उ. | 23 अग. | 19 | 54 |
| 23 सितं. चंद्र | 22 | 08 | 24 सितं. | सू. | उ. |
| 26 सितं. गुरु | 23 | 34 | 27 सितं. | सू. | उ. |
| 21 अक्तू चंद्र | 6 | 51 | 22 अक्तू | 5 | 51 |
| 24 अक्तू गुरु | सू. | उ. | 25 अक्तू | सू. | उ. |
| 16 नवं. शनि | 19 | 28 | 17 नवं. | सू. | उ. |
| 18 नवं. चंद्र | सू. | उ. | 18 नवं. | 15 | 49 |
| 21 नवं. गुरु | सू. | उ. | 21 नवं. | 15 | 36 |
| 14 दिसं. शनि | सू. | उ. | 15 दिसं. | 3 | 55 |
| (सन् 2025 ईसवी में) | | | | | |
| 7 जन. मंग | 17 | 50 | 8 जन. | सू. | उ. |
| 11 जन. शनि | सू. | उ. | 11 जन. | 12 | 29 |
| 19 जन. रवि | 17 | 30 | 20 जन. | सू. | उ. |
| 4 फर. मंग | सू. | उ. | 4 फर. | 21 | 50 |
| 16 फर. रवि | सू. | उ. | 17 फर. | 4 | 31 |
| 16 मार्च रवि | सू. | उ. | 16 मार्च | 11 | 45 |

## ◆ रवि योग–संवत् २०८१ वि. ◆

रवि योग तिथि, वार, नक्षत्रादि से सम्बन्धित कुंयोगों के दोषों को दूर कर देता है। सामान्यतः अन्नदान, गोदान, भूदान एवं सरकारी क्षेत्रों में सेवाओं (जैसे– प्रतिष्ठित पद ग्रहण आदि) के लिए इनका उपयोग किया जाता है।

| प्रारम्भ काल | | | समाप्ति काल | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 2024 ई. | घं. | मिं. | 2024 ई. | घं. | मिं. |
| 11 अप्रै. | 3 | 06 | 11 अप्रै. | 25 | 38 |
| 12 अप्रै. | 24 | 51 | 13 अप्रै. | 21 | 04 |
| 13 अप्रै. | 24 | 49 | 14 अप्रै. | 25 | 35 |
| 17 अप्रै. | 5 | 16 | 19 अप्रै. | 10 | 57 |
| 21 अप्रै. | 17 | 08 | 22 अप्रै. | 20 | 00 |
| 30 अप्रै. | 4 | 43 | 1 मई | 4 | 09 |
| 10 मई | 10 | 47 | 11 मई | 7 | 02 |
| 11 मई | 10 | 15 | 12 मई | 10 | 27 |
| 13 मई | 11 | 24 | 14 मई | 13 | 05 |
| 16 मई | 18 | 14 | 18 मई | 24 | 23 |
| 21 मई | 5 | 46 | 22 मई | 7 | 47 |
| 29 मई | 8 | 39 | 30 मई | 7 | 31 |
| 9 जून | 20 | 21 | 10 जून | 21 | 40 |
| 11 जून | 23 | 39 | 12 जून | 26 | 12 |
| 15 जून | 8 | 14 | 17 जून | 13 | 51 |
| 19 जून | 17 | 23 | 20 जून | 18 | 10 |
| 27 जून | 11 | 37 | 28 जून | 10 | 11 |
| 9 जुला | 7 | 53 | 10 जुला | 10 | 15 |
| 11 जुला | 13 | 04 | 12 जुला | 16 | 09 |
| 14 जुला | 22 | 07 | 16 जुला | 26 | 14 |
| 19 जुला | 3 | 25 | 19 जुला | 23 | 10 |
| 20 जुला | 2 | 55 | 20 जुला | 25 | 49 |
| 26 जुला | 14 | 30 | 27 जुला | 13 | 00 |
| 7 अग. | 20 | 31 | 8 अग. | 23 | 34 |
| 10 अग. | 2 | 45 | 11 अग. | 5 | 49 |
| 13 अग. | 10 | 44 | 15 अग. | 12 | 53 |
| 18 अग. | 10 | 15 | 19 अग. | 8 | 10 |
| 24 अग. | 18 | 06 | 25 अग. | 16 | 45 |
| 6 सितं. | 9 | 25 | 7 सितं. | 12 | 34 |
| 8 सितं. | 15 | 31 | 9 सितं. | 18 | 04 |
| 11 सितं. | 21 | 22 | 14 सितं. | 20 | 33 |
| 16 सितं. | 16 | 33 | 17 सितं. | 13 | 53 |
| 22 सितं. | 23 | 03 | 23 सितं. | 22 | 08 |
| 5 अक्तू | 21 | 33 | 6 अक्तू | 24 | 11 |

| प्रारम्भ काल | | | समाप्ति काल | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 2024 ई. | घं. | मिं. | 2024 ई. | घं. | मिं. |
| 12 अक्तू | 5 | 25 | 13 अक्तू | 26 | 52 |
| 15 अक्तू | 22 | 09 | 16 अक्तू | 19 | 18 |
| 22 अक्तू | 5 | 51 | 23 अक्तू | 5 | 39 |
| 23 अक्तू | 24 | 42 | 24 अक्तू | 6 | 16 |
| 4 नवं. | 8 | 04 | 5 नवं. | 9 | 45 |
| 6 नवं. | 8 | 46 | 6 नवं. | 11 | 00 |
| 7 नवं. | 11 | 47 | 8 नवं. | 12 | 03 |
| 10 नवं. | 11 | 00 | 12 नवं. | 7 | 52 |
| 14 नवं. | 3 | 11 | 14 नवं. | 24 | 33 |
| 21 नवं. | 15 | 36 | 22 नवं. | 17 | 10 |
| 4 दिसं. | 17 | 15 | 5 दिसं. | 17 | 27 |
| 6 दिसं. | 17 | 19 | 7 दिसं. | 16 | 51 |
| 9 दिसं. | 14 | 56 | 11 दिसं. | 11 | 48 |
| 13 दिसं. | 7 | 50 | 14 दिसं. | 5 | 48 |
| 20 दिसं. | 27 | 47 | 22 दिसं. | 6 | 14 |
| (सन् 2025 ईसवी में) | | | | | |
| 2 जन. | 23 | 11 | 3 जन. | 22 | 22 |
| 4 जन. | 21 | 24 | 5 जन. | 20 | 18 |
| 7 जन. | 17 | 50 | 9 जन. | 15 | 07 |
| 12 जन. | 11 | 25 | 13 जन. | 10 | 38 |
| 19 जन. | 17 | 30 | 20 जन. | 20 | 30 |
| 1 फर. | 4 | 15 | 1 फर. | 26 | 33 |
| 2 फर. | 24 | 53 | 3 फर. | 23 | 17 |
| 5 फर. | 20 | 33 | 6 फर. | 7 | 49 |
| 6 फर. | 19 | 30 | 8 फर. | 18 | 07 |
| 10 फर. | 18 | 01 | 11 फर. | 18 | 34 |
| 18 फर. | 7 | 36 | 19 फर. | 10 | 40 |
| 19 फर. | 12 | 26 | 20 फर. | 13 | 30 |
| 2 मार्च | 9 | 00 | 3 मार्च | 6 | 39 |
| 4 मार्च | 4 | 30 | 4 मार्च | 18 | 40 |
| 4 मार्च | 26 | 38 | 5 मार्च | 25 | 09 |
| 7 मार्च | 23 | 32 | 9 मार्च | 23 | 55 |
| 11 मार्च | 26 | 16 | 13 मार्च | 4 | 06 |

## यमघण्टक योग

### (सन् 2024-25 ई.)

यमघण्टक योग अशुभ माने गए हैं। इन योगों में मंगल–शुभ कार्यों का सम्पादन निषेध माना गया है।

| प्रारम्भ काल | | | समाप्ति काल | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तारीख | घं. | मिं. | तारीख | घं. | मिं. |
| 11 अप्रै. | सू. | उ. | 11 अप्रै. | 25 | 38 |
| 12 अप्रै. | सू. | उ. | 12 अप्रै. | 24 | 51 |
| 9 मई | सू. | उ. | 9 मई | 11 | 56 |
| 10 मई | सू. | उ. | 10 मई | 10 | 47 |
| 18 मई | 24 | 23 | 19 मई | सू. | उ. |
| 15 जून | 8 | 14 | 16 जून | सू. | उ. |
| 13 जुला | सू. | उ. | 13 जुला | 19 | 15 |
| 15 जुला | 24 | 30 | 16 जुला | सू. | उ. |
| 12 अग. | 8 | 33 | 13 अग. | सू. | उ. |
| 1 सितं. | 21 | 49 | 2 सितं. | सू. | उ. |
| 9 सितं. | सू. | उ. | 9 सितं. | 18 | 04 |
| 11 सितं. | 21 | 22 | 12 सितं. | सू. | उ. |
| 24 सितं. | 21 | 54 | 25 सितं. | सू. | उ. |
| 29 सितं. | सू. | उ. | 30 सितं. | 6 | 19 |
| 9 अक्तू | सू. | उ. | 10 अक्तू | 5 | 15 |
| 22 अक्तू | सू. | उ. | 23 अक्तू | 5 | 39 |
| 27 अक्तू | सू. | उ. | 27 अक्तू | 12 | 24 |
| 6 नवं. | सू. | उ. | 6 नव. | 11 | 00 |
| 19 नवं. | सू. | उ. | 19 नवं. | 14 | 56 |
| 14 दिसं. | 5 | 48 | 14 दिसं. | सू. | उ. |
| (सन् 2025 ई०) | | | | | |
| 9 जन. | 15 | 07 | 10 जन. | सू. | उ. |
| 10 जन. | 13 | 46 | 11 जन. | सू. | उ. |
| 6 फर. | सू. | उ. | 6 फर. | 19 | 30 |
| 7 फर. | सू. | उ. | 7 फर. | 18 | 40 |
| 15 फर. | 25 | 40 | 16 फर. | सू. | उ. |

## द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2024-25 ई.)

**( गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त्त )**

**'द्विपुष्कर योग'** द्विगुणित और **'त्रिपुष्कर योग'** त्रिगुणित लाभ-हानिकारक होता है। यदि इन योगों में कोई अनिष्ट हो जाए या हानि हो जाए तो भी दुगुनी अथवा त्रिगुणित हानि होने की सम्भावना बन जाती है। इसी प्रकार इन योगों में यदि कोई शुभ कार्य आरम्भ या सम्पन्न किया जाए अथवा किसी प्रकार की वस्तु का क्रय किया जाए तो भविष्य में उसका द्विगुणित या त्रिगुणित होने की सम्भावना बन जाती है। इसलिए इन योगों में **बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ,** वस्तुएँ जैसे—ज़मीन-जायदाद, हीरे-जवाहरात, स्वर्ण-चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय-भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है।

**परिहार**—द्विपुष्कर/त्रिपुष्कर योगों में यदि किसी की मृत्यु हो जाए या किसी अन्य वस्तु के नष्ट होने पर शान्ति करवानी चाहिए। त्रिपुष्कर दोष की शान्ति के लिए तीन गौओं के मूल्य का धन तथा द्विपुष्कर के लिए दो गौओं के मूल्य का धन तथा तिलों द्वारा निर्मित पीठी का दान करना शुभ होगा। (वसिष्ठ)

### द्विपुष्कर योग

| प्रारम्भ काल | | | समाप्ति काल | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 2024-25 | घं. | मिं. | 2024-25 | घं. | मिं. |
| 20 मई | 3 | 16 | 20 मई | सू. | उ. |
| 23 जुला | सू. | उ. | 23 जुला | 10 | 24 |
| 11 अग. | 5 | 46 | 11 अग. | 5 | 49 |
| 24 सितं. | सू. | उ. | 24 सितं. | 12 | 39 |
| 17 नवं. | 17 | 23 | 17 नवं. | 21 | 07 |
| 27 नवं. | 4 | 35 | 27 नवं. | सू. | उ. |
| 7 दिसं. | 11 | 07 | 7 दिसं. | 16 | 51 |
| ( सन् 2025 ई. में ) | | | | | |
| 21 जन. | सू. | उ. | 21 जन. | 12 | 40 |
| 16 मार्च | 11 | 45 | 16 मार्च | 16 | 59 |
| 26 मार्च | 3 | 50 | 26 मार्च | सू. | उ. |
| **रविपुष्य योग** | | | | | |
| 9 जून | 20 | 21 | 10 जून | सू. | उ. |
| 7 जुला | सू. | उ. | 8 जुला | सू. | उ. |
| 4 अग. | सू. | उ. | 4 अग. | 13 | 26 |
| ( सन् 2025 ई. में ) | | | | | |
| 9 मार्च | 23 | 55 | 10 मार्च | सू. | उ. |
| **गुरुपुष्य योग** | | | | | |
| 26 सितं. | 23 | 34 | 27 सितं. | सू. | उ. |
| 24 अक्तू | सू. | उ. | 25 अक्तू | सू. | उ. |
| 21 नवं. | सू. | उ. | 21 नवं. | 15 | 36 |

### त्रिपुष्कर योग

| प्रारम्भ काल | | | समाप्ति काल | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 2024-25 | घं. | मिं. | 2024-25 | घं. | मिं. |
| 14 अप्रै. | 25 | 35 | 15 अप्रै. | सू. | उ. |
| 20 अप्रै. | 14 | 04 | 20 अप्रै. | 22 | 42 |
| 30 अप्रै. | 7 | 06 | 1 मई | 4 | 09 |
| 4 मई | 20 | 39 | 4 मई | 22 | 07 |
| 18 जून | 15 | 56 | 19 जून | सू. | उ. |
| 23 जून | 17 | 04 | 24 जून | 3 | 27 |
| 2 जुला | 8 | 43 | 3 जुला | 4 | 40 |
| 7 जुला | 4 | 27 | 7 जुला | 4 | 48 |
| 21 अग. | 3 | 10 | 21 अग. | सू. | उ. |
| 25 अग. | 16 | 45 | 26 अग. | 3 | 40 |
| 23 अक्तू | 5 | 39 | 23 अक्तू | सू. | उ. |
| 29 अक्तू | सू. | उ. | 29 अक्तू | 10 | 32 |
| 2 नवं. | 20 | 22 | 3 नवं. | 5 | 58 |
| 17 दिसं. | सू. | उ. | 17 दिसं. | 10 | 57 |
| 22 दिसं. | 6 | 14 | 22 दिसं. | 14 | 32 |
| ( सन् 2025 ईसवी में ) | | | | | |
| 1 जन. | 3 | 22 | 1 जन. | सू. | उ. |
| 5 जन. | 20 | 16 | 5 जन. | 20 | 18 |
| 9 फर. | 17 | 53 | 9 फर. | 19 | 26 |
| 25 फर. | सू. | उ. | 25 फर. | 12 | 48 |
| 1 मार्च | सू. | उ. | 1 मार्च | 11 | 23 |

## ज्वालामुखी योग

## (अशुभ-योग) वि. संवत् २०८१

ज्वालामुखी योग का फल अशुभ माना गया है। इस योग में आरम्भ किया हुआ कार्य पूर्णतया सिद्ध नहीं हो पाता अथवा बार-बार विघ्न-बाधाएं होती हैं। इस योग में शुभ कार्य आरम्भ नहीं करने चाहिए। दुष्ट शत्रुओं पर प्रयोग करने के लिए यह मुहूर्त्त अच्छा समझा जाता है।

जब प्रतिपदा को मूल नक्षत्र, पंचमी को भरणी, अष्टमी को कृतिका, नवमी को रोहिणी अथवा दशमी को आश्लेषा नक्षत्र आता है, तो ज्वालामुखी योग बनता है।

| प्रारम्भ काल | | | समाप्ति काल | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तारीख | घं. | मिं. | तारीख | घं. | मिं. |
| 17 अप्रै. | 15 | 15 | 18 अप्रै. | 7 | 57 |
| 22 जून | 6 | 38 | 22 जून | 17 | 54 |
| 26 अग. | 3 | 40 | 26 अग. | 15 | 55 |
| 26 अग. | 26 | 20 | 27 अग. | 15 | 38 |
| 21 सितं. | 18 | 14 | 21 सितं. | 24 | 36 |
| 26 अक्तू | 3 | 23 | 26 अक्तू | 9 | 46 |
| ( सन् 2025 ई. ) | | | | | |
| 5 फर. | 20 | 33 | 5 फर. | 24 | 36 |
| 6 फर. | 19 | 30 | 6 फर. | 22 | 54 |
| 4 मार्च | 4 | 30 | 4 मार्च | 15 | 17 |

## वि. संवत् 2081 में लाभ-हानि चक्र

**( विंशोत्तरी मतानुसारेण )**

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित चक्र में अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा जोड़ में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएं सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम परन्तु विभिन्न कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भाग-दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खर्च हो, घरेलू एवं आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होंगी। यदि शेष 5 बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचें तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लॉटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। ज़मीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च भी रहेंगे। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियाँ भी बढ़ने के संकेत हैं।

| राशि | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लाभ | 2 | 11 | 2 | 11 | 14 | 2 | 11 | 2 | 14 | 8 | 8 | 14 |
| हानि | 14 | 5 | 5 | 14 | 11 | 5 | 5 | 14 | 2 | 5 | 5 | 2 |

## तिथि, वार, नक्षत्रादि जनित अशुभ योगों का परिहार

(1) दुष्ट योगों के समय कोई शुभ योग भी हो, तो दुष्ट योग का परिहार हो जाता है—**अयोगो सुयोगोऽपि चेत् स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति। परे लग्नशुद्धया कुयोगादिनाशं दिनाद्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम्।।** अन्यत्रऽपि—**अयोग: सिद्धियोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि। अयोगो हन्यते तत्र, सिद्धियोग: प्रवर्त्तते।।** (राजमार्तण्ड)

अर्थात् कुयोग के समय कोई अन्य सिद्धयादि सुयोग भी वर्तमान हो, तो सुयोग की विजय होकर कुयोग अकर्मण्य हो जाता है।

(2) वसिष्ठ जी अनुसार सामान्य दुष्टयोगों का अनिष्ट प्रभाव केवल दिन को ही होता है, रात्रि को नहीं। **'दिवामृत्युप्रदा: पापा दोषा: तु ऐते न रात्रिषु।।** (वसिष्ठ)

(3) मंगलवार और अश्विनी नक्षत्र के संयोग से 'सिद्धि योग' गृहप्रवेश में, शनिवार व रोहिणी नक्षत्र के संयोग से 'सिद्धियोग' यात्रा में तथा गुरुपुष्य जनित **'सिद्धियोग'** पाणिग्रहण (विवाह) में सर्वथा त्याज्य है—**भौमाश्विनीं प्रवेशे च, प्रयाणे शनिरोहिणीम्। गुरुपुष्यं विवाहे च, सर्वथा परिवर्जयेत्।।** (राजमार्तण्ड)

# व्यापारिक वस्तुओं तथा शेयरबाज़ार में मन्दा-तेजी विचार-सन् 2024 ई.

**वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक सुझाव**—ज्योतिष शास्त्र का वायदा–व्यापार से गहरा सम्बन्ध है। ध्यान रहे, हाजिर एवं वायदा बाजार पर राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं आजकल अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान विशोंत्तरी ग्रहदशा तथा आर्थिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्म/वर्ष कुण्डली में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रह–दशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रहदशा अकस्मात् धन–हानि करवा सकती है। सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी की हानि साधारणतया उठा सकने का सामर्थ्य हो।

गतवर्षों सन् 2010 से 2023 ई. तक हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रहस्थिति एवं तेजी–मन्दी के चान्सों से सोना, चाँदी, गुड़, सोयाबीन, कॉपर, तेल, लोहे, स्टील, चने तथा शेयरों से सम्बन्धित अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए। (विशेषकर अप्रैल–मई में सोने–चांदी में हुई तेजी–मन्दी से विशेष लाभ उठाया।)

आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक मन्दा–तेजी की विशेष लाइनों एवं तूफानी तेजी आदि का विवरण लिख रहे हैं। **यदि आप प्रतिमास किसी विशेष एक जिन्स (वस्तु) की दैनिक तेजी–मन्दी रिपोर्ट या वायदा हाजिर का चांस चाहते हैं तो प्रति जिन्स की एक मास की फीस 1000 रु., 2 मास की फीस 1800 रु. होगी। पूरी फीस अग्रिम ड्राफ्ट द्वारा भेजें।** रिपोर्ट लिखित रूप में वाट्स–एप (What's App) के माध्यम से भेज दी जाएगी।

**पता–पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी S/o स्व. पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर–144008 (पंजाब), फोन–94172-91325**

## जनवरी

**जनवरी**–नववर्ष वायदा व्यापारियों एवं पंचांगदिवाकर के पाठकों के लिए मंगलमय एवं लाभप्रद रहे, यही मंगल कामना है।

मासारम्भ में ही राहु रेवती 3 एवं केतु चित्रा 2 में आने से तिलहन, तेल, अरण्डी, सोयाबीन में अचानक मन्दी बनेगी।

2 जन. को बुध मार्गी होगा। इस समय बुध–शुक्र के साथ वृश्चिक राशिस्थ है तथा इन पर शनि की दृष्टि है। रूई, चाँदी तथा बैंकिंग शेयर्ज़ में पहले मन्दी, बाद में तेज़ी बन जाएगी। सोना, एरण्ड, बिनौला, गेहूँ, जौं, चना, अनाज में तेजी बनेगी। कुछ व्यापारिक वस्तुओं में अचानक मन्दी का रुख भी बनेगा। **घटा–बढ़ी के मध्य साधारण मामूली तेजी का रुख ता. 6 जन. तक रहेगा।**

7 जन. को बुध धनु राशि में आकर सूर्य एवं मंगल के साथ योग करेगा। इन पर गुरु की विशेष नवम दृष्टि भी रहेगी। इसी दिन शुक्र भी ज्येष्ठा नक्षत्र में आएगा। **अतः रूई, कपास, वस्त्र, सूत, चाँदी में अच्छी मन्दी का झटका लग सकता है।** सोना, सरसों, तेल, तिल, हींग, दालों में भी मन्दी बनेगी। परन्तु शीघ्र बाज़ार में इनकी पकड़ बन जाएगी। सावधान रहें।

11 जन. को सूर्य उ.षा. नक्षत्र में आएगा। इसीदिन शनि शतभिषा (2) में भी आएगा। उड़द, मूँग, चावल, चना, गेहूँ, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, पिप्पलामूल, सरसों में तेजी का रुख बनेगा।

12 जनवरी, शुक्रवार को चन्द्रदर्शन होने से सरसों, तिल, तेल, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, ऊनी वस्त्र व ऊन में मन्दी तथा रूई, सोना, चाँदी में घटा–बढ़ी के बाद तेजी बने।

14 जन. से सूर्य मकर राशि में अकेला संचार करेगा। घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई में तेजी, गेहूँ, ज्वार, बाजरा आदि अनाजों में मन्दी की ओर रुख रहेगा।

17 जन. को मंगल उदय होने से रुई, उड़द, तिल, तेल में तेजी, अनाजादि के भाव गिरेंगे।

18 जन. को शुक्र धनु राशि में आकर मंगल एवं बुध के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की विशेष दृष्टि रहेगी। गेहूँ, जौं, चना आदि अन्न तथा सोना, चाँदी, ताम्बा आदि धातुओं, शेयर–बाज़ार में भी तेजी का रुख रहेगा। **रूई, चाँदी, कपास में पहले मन्दी का अच्छा झटका लग सकता है। सावधानी बरतें।**

20 जन. शनिवार को बुध पूर्वाषाढ़ा में आने से स्थानीय बाज़ारों में सोना–चाँदी में मन्दी, परन्तु बिनौला, बारदाना में तेजी बने।

24 जन. को सूर्य श्रवण नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, अलसी, गेहूँ, रुई, सूत, सन, कपास, जौं, चावल, लौंग, शक्कर, सुपारी, पीतल, खाण्ड में तेजी बनेगी।

29 जन. को शुक्र पू.षा. नक्षत्र में आकर मंगल एवं बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। परन्तु इन पर गुरु की दृष्टि चल रही है। गुड़, मोठ, खाण्ड, सोना, चाँदी, अलसी, एरण्डी, उड़द, सरसों में मन्दी, रूई, अनाज, दालों में घटाबढ़ी होकर तेजी होगी।

30 जन. को बुध उत्तराषाढ़ा में आकर अनाजों में मन्दी का वातावरण बनाएगा।

***विशेष—ता. 17 से 24 जन. तथा 27-28 जन. को शेयर-बाज़ार में तेजी का रुख रहेगा।***

## फरवरी

**फरवरी**–मासारम्भ में ही ता. 1 को मंगल उ.षा. नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इसीदिन बुध मकर राशि में आकर सूर्य के साथ योग करेगा। सोना, चाँदी, रुई, धान्य, घी, तेल, सरसों, उड़द में तेजी बनेगी।

3 फर. को गुरु भरणी नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी आदि धातुओं, हीरा, मणि आदि जवाहरात, अलसी, चावल, जौं, गेहूँ, तिल, उड़द, मूँग, तूअर, मोठ, चना, लाख, ऊन व चमड़ा आदि के भावों में कुछ मन्दापन आएगा।

5 फर. को मंगल मकर राशि में आकर सूर्य एवं बुध के साथ मेल करेगा। **रुई, सोना, चाँदी, ताँबा**, गुड़, खाण्ड, सरसों, घी, तेल, अलसी, तिलहन में तेज़ी बनेगी। अनाजों में कुछ मन्दी सम्भव है।

6 फर. को सूर्य धनिष्ठा नक्षत्र में तथा 7 फर. को बुध श्रवण नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी, मोती, मणि आदि जवाहरात, मूँग, मसूर, गेहूँ आदि अनाजों, रुई, खाण्ड, अलसी, चना आदि में अच्छी तेजी बनेगी।

9 फर. को शुक्र उ.षा. नक्षत्र में आएगा। शुक्र पर गुरु की विशेष दृष्टि चल रही है। गुड़, खाण्ड, सोना, चाँदी, अलसी, एरण्ड आदि कुछ वस्तुओं में मन्दी तथा रुई, अनाज, घी आदि कुछ वस्तुओं में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

10 फर. को बुध पूर्व में अस्त होगा। इसीदिन शनि शतभिषा के तृतीय चरण में जाने से गुड़, खाण्ड, अनाजादि अन्न, घी में कुछ तेजी बनेगी। बैंकिंग शेयर्ज़ में मन्दी बनेगी।

11 फर., शनिवार को कुम्भराशिगत चन्द्रदर्शन होने से गुड़, तेल, सोना, चाँदी में तेजी जबकि रुई में मन्दी बन सकती है।

12 फर., रविवार को शुक्र मकर राशि में आकर सूर्य, मंगल व बुध के साथ मेल करेगा। इसीदिन शनि पश्चिम में अस्त भी होगा। अगली सुबह से ही शेयर-बाज़ार, अफीम, गुड़, खाण्ड, घी तथा गेहूँ, चना आदि सब अनाजों, सोना, चाँदी में तेजी प्रधान रहेगी।

13 फर. को सूर्य कुम्भ राशि में आकर शनि के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। **कुछ जिन्सों/वस्तुओं में भयंकर तेजी तथा कुछ में ज़बरदस्त मन्दी का रुख बन सकता है। सावधानीपूर्वक व्यापार करें।** सोना, चाँदी, कॉपर, क्रूड-ऑयल, शेयर बाज़ार में ज़बरदस्त उथल-पुथल रहेगी।

16 फर. को बुध धनिष्ठा नक्षत्र में आकर सोना, चाँदी, कॉपर आदि धातुओं में कुछ मन्दी करेगा। चावल, स्वाँक, रुई, अरहर, मूँग आदि दालों में कुछ तेजी बनेगी।

18 फर. को मंगल श्रवण नक्षत्र में आएगा। गेहूँ, चना, बाज़रा आदि अनाजों में विशेष तेजी बने, जौं, तिल, अफीम, सोना, चाँदी में भी तेजी बनेगी।

20 फर. को सूर्य शतभिषा तथा शुक्र श्रवण नक्षत्र में आएगा। यह तेजी की परिस्थितियां बनाएगा। **इसी समय बुध कुम्भ राशि में आकर सूर्य एवं शनि के साथ मेल करेगा। इस समय बाज़ार में ज़बरदस्त तेजी का वातावरण बनेगा। फिर भी सावधानी से व्यापार करें।** सोना, चाँदी, सूत, सन, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूँ, गुड़ के भावों में तेज़ी का रुख बनेगा। रुई-चाँदी में पहले मन्दी बनकर तेज़ी हो। यह तेजी ता. 22 तक चलेगी।

23 फर. को बुध शतभिषा नक्षत्र में आने से सोने, चाँदी के भावों में कुछ मन्दी बनेगी।

27 फर. को भी गुरु भरणी (2) में आने से भी सोने, चाँदी आदि धातुओं, हीरा, मणि आदि जवाहरात, चना, लाख, उड़द, मूँग, तूअर, गेहूँ, चावल आदि में कुछ मन्दी बनेगी।

*विशेष—ता. 11-12 से ता. 22 तक सोना-चाँदी आदि धातुओं में विशेष तेजी रहेगी। ता. 22 से मासान्त तक शेयर-बाज़ार में विशेष तेजी रहेगी।*

**मार्च**—मासारम्भ में ता. 1 को बुध पू.भा. नक्षत्र में आएगा। अकेला बुध यद्यपि यहाँ मन्दीकारक होता है, परन्तु बुध इस समय सूर्य एवं शनि के साथ है जोकि तेजीकारक मालूम होता है। इसीदिन शुक्र धनिष्ठा नक्षत्र में आने से चावल, मूँग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चाँदी, सोना, रूई, कपास में तेजी बनेगी।

4 मार्च को सूर्य पू.भा. में आएगा। इसी समय राहु रेव.(2) व केतु हस्त (4) में आने से भी रेशम, सोना, चाँदी, गेहूँ, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, पीपलामूल, रूई में तेजी बनेगी।

6 मार्च को मंगल धनिष्ठा में आने से राई, जौं, पीपल, सोना, चाँदी, ताँबा, पीपल, जिस्त, लोहा, स्टील तथा धातुओं, गुड़, शक्कर, गेहूँ आदि में तेजी, घी, खाण्ड, रुई में मन्दी बने।

7 मार्च को (अस्त) बुध मीन राशि में आकर राहु के साथ तथा इसीदिन शुक्र कुम्भ राशि में आकर सूर्य-शनि के साथ मेल करेगा। **बुध-शुक्र दोनों ग्रहों का क्रूर ग्रहों के साथ मेल बाज़ार को धीरे-धीरे तेजी की तरफ धकेल देगा।** रुई, कपास, सोना, चाँदी, कॉपर, चीनी, घी, चावल, शक्कर, शेयर बाज़ार, चना, जौं, मूँग, गुड़ में मन्दी दिखने के बावजूद तेजी का बोलबाला रहेगा। आगे तेजी ही लेकर चले।

11 मार्च, सोमवार को मीनराशिगत चन्द्रदर्शन होने से रुई, चाँदी, गेहूँ में मन्दी, परन्तु सोना, कॉपर में कुछ तेजी बने।

12 मार्च को शुक्र शतभिषा में आने से पुन: गेहूँ, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रूई, सोना, चाँदी में कुछ तेजी बनेगी।

**13 मार्च को बुध पश्चिम में उदय होने से 1-2 दिन में ही शेयर बाज़ार ( विशेषकर बैंकिंग शेयर्ज़ ) में विशेष तेजी का झटका लगेगा।**

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर बुध एवं राहु के साथ मेल करेगा। तिल, तेल, अलसी, सरसों, खाण्ड, गुड़, शक्कर, रुई, सोना, तिलहन में तेजी बनेगी। चाँदी, रुई में कुछ मन्दी बनेगी।

15 मार्च को मंगल कुम्भ राशि में आकर शुक्र एवं शनि के साथ मेल करेगा। **रूई व चाँदी में विशेष घटाबढ़ी होगी। गेहूँ आदि सब अनाजों, गुड़, खाण्ड, सोना, लाल मिर्च, काली मिर्च, लौंग, जीरा में अच्छी तेजी बनेगी।**

16 मार्च को बुध रेवती तथा गुरु भरणी (3) में आने से केसर, मजीठ, लाल चन्दन, गेहूँ, लाल मिर्च आदि लाल वस्तुओं में तेजी और गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, चाँदी, उड़द, चना में मन्दी बन सकती है।

17 मार्च को सूर्य उ.भा. में आएगा। इसीदिन कुम्भराशिगत शनि उदय होने से भी शेयर-बाज़ार में विशेष तेजी रहे, गेहूँ, चना, चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तैल, जौं आदि अनाज, लोहे, क्रूड-ऑयल में तेजी होगी।

(ता. 14 से 18 ता. तक शेयर-बाज़ार तथा धातुओं में विशेष तेजी बनेगी।)

23 मार्च को शुक्र पू.भा. में आने से रूई में तेजी, अनाजों में मन्दी बने।

24 मार्च को मंगल शतभिषा नक्षत्र में आएगा। **ध्यान दें !** इस समय मंगल शुक्र-शनि के साथ है। रूई, सोना, चाँदी, कपास के भाव पहले गिरकर शीघ्र ही अच्छी तेजी की तरफ बढ़ेंगे।

**25 मार्च को बुध मेष राशि तथा अश्विनी नक्षत्र में आकर गुरु के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। इन पर शनि की विशेष नीच दृष्टि पड़ रही है।** मूँग, मोती, जवाहारात तथा सोना, चाँदी, कॉपर आदि धातुओं, गेहूँ, चना, जौं आदि अनाज और तिल, तेल, सरसों, रूई, कपास, घी, गुड़, खाण्ड में अच्छी मन्दी का झटका लगकर तुरन्त सुधर भी सकता है। **सावधान होकर धीरे-धीरे प्लस ( + ) का कार्य करें। क्योंकि 1-2 दिन मन्दी बनकर शीघ्र ही तेजी बन जाएगी।**

31 मार्च को सूर्य रेवती नक्षत्र में आएगा। इसीदिन शुक्र मीन राशि में आकर सूर्य-राहु के साथ मेल करेगा। अनाज, सरसों, तेल, तिलहन, अलसी, एरण्डी, गुड़, खाण्ड, रूई, चना में तेजी बनेगी। **चाँदी में अचानक तेजी का झटका लगेगा।**

***विशेष—ता. 15 से 18 के मध्य शेयर बाज़ार में तेजी का रुख रहेगा।***

**अप्रैल**–मासारम्भ 1 अप्रैल को गुरु भरणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आएगा तथा मेष राशिस्थ गुरु युक्त बुध वक्री होगा। बुध-गुरु पर शनि की नीच दृष्टि भी है। यहाँ शेयरों (विशेषकर बैंकिंग सेक्टर) में तेजी का रुख बन जाएगा। खाण्ड, बिनौला, तिल, तेल, घी, गुड़, शक्कर, कपूर, चाँदी में तेजी बनेगी। परन्तु तिल, गेहूँ, जौं, चने आदि के भावों में कुछ मन्दी बनेगी। **तेजी के झटके लगाकर बाज़ार में अचानक मन्दी का वातावरण बन सकता है, अतः सावधान रहे।**

3 अप्रै. को शुक्र उ.भा. नक्षत्र में आएगा। चावल, मोती, चाँदी, कपूर, नमक, खाण्ड, रुई, कपास आदि सफेद वस्तुओं में मन्दी का रुख रहेगा।

4 अप्रै. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से चाँदी में झटके के साथ तेजी बने। घी, बैंकिंग शेयर्ज़, रुई में भी तेज़ी दिखेगी।

6 अप्रैल को कुम्भ राशिगत शनि पू.भा. नक्षत्र में आने से गेहूँ आदि अनाज, अलसी, तिल, तेल, सरसों, मूँग, उड़द में तेजी होगी।

9 अप्रैल को वक्री बुध रेवती नक्षत्र तथा मीन राशि में आकर सूर्य-शुक्र-राहु के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चाँदी, शेयर्ज़, केसर, मजीठ, कुसुंभा, लाल-चन्दन, गेहूँ, लाल-मिर्च आदि लाल वस्तुओं में विशेष तेजी की लाईन बनेगी। गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, सरसों, चाँदी में मन्दी के योग के बावजूद तेजी ही बनेगी।

10 अप्रै. को मेष राशिस्थ चन्द्रदर्शन तथा मंगल पू.भा. नक्षत्र में आने से तिल, तेल, मूँगफली, एरण्ड, अलसी, नारियल, सुपारी, रूई, सूत, कपास, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी।

13 अप्रैल को सूर्य मेष राशि में आकर गुरु के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। **यद्यपि सूर्य-गुरु का योग बाज़ार में कई बार मन्दीकारक होता है, परन्तु यहाँ सूर्य-गुरु पर शनि की विशेष दृष्टि रहने से तेजी का वातावरण ही बनेगा।** रूई, कपास, सूत, घी, तेल, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, अन्य सब प्रकार के फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी। गेहूं, चावल, उड़द, मूँग, अरहर, चना, जौं में कुछ मन्दी बनकर बाद में तेजी बने।

14 अप्रै. को शुक्र रेवती में आने से रुई, कपास, चाँदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर में कुछ मन्दी बने।

16 अप्रै. को गुरु कृतिका नक्षत्र मे आने से अनाज, रूई में मन्दी, गुड़, खाण्ड, सोना-चाँदी में मामूली घटा-बढ़ी रहे। क्योंकि सूर्य-गुरु पर शनि की दृष्टि चल रही है। अतः मामूली मन्दी दिखकर तुरन्त बाज़ार तेज़ी की तरफ चलेगा।

19 अप्रै. को वक्री बुध पूर्व में उदय होने से शेयरों, चना आदि अनाजों में तेजी बनेगी।

23 अप्रैल को मंगल मीन राशि में आकर बुध, शुक्र, राहु के साथ मेल करेगा। बाज़ार में ज़बरदस्त तेज़ी का रुख चलेगा। सोना, रूई, घी, तृण, काष्ठ व लकड़ी से निर्मित वस्तुओं में तेजी बनेगी। चाँदी में घटाबढ़ी से पहले कुछ मन्दी फिर तेजी की तरफ चलेगा।

24 अप्रैल को शुक्र मेष राशि में आकर सूर्य एवं गुरु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष तृतीय दृष्टि रहेगी। जौं, चना, गेहूँ आदि अन्न, घी, सोना, चाँदी, ताँबा, गुड़, शक्कर, बारदाना, पाट, पीतल, जिस्त, हींग, पारा, केसर में तेजी बनेगी। ऊन, तिल, तेल, सरसों, अरण्डी में कुछ मन्दी बन सकती है। **इसीदिन शुक्र पूर्व में अस्त होने से बाज़ार के रुख में अचानक परिवर्तन हो सकता है। अर्थात् यदि तेजी बन गई, तो अचानक मन्दी का रुख बन सकता है। इसीलिए शीघ्र ही मुनाफा काट लें।**

25 अप्रैल को बुध मार्गी होने से गेहूँ, जौं, चना, अनाज तथा शेयर बाज़ार में तेजी बनेगी। रुई, सोना, चाँदी, तेल, रेशम, अलसी, गुड़, बिनौला, मूँगफली, कपूर-चन्दन, अगर आदि सुगन्धित वस्तुओं में पहले मन्दी, फिर मामूली तेजी बने।

27 अप्रैल को सूर्य भरणी तथा मंगल उ.भा. नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी, ताँबा, मूँगा, पीतल के बर्तन आदि तथा गेहूं, जौं, चावल, मोठ, अलसी, रुई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी बनेगी।

मासान्त तक घटाबढ़ी के मध्य तेजी का यह रुख चलता रहेगा।

***विशेष—ता. 20 के बाद शेयर-बाज़ार मुख्यतः तेजी प्रधान रहेगा।***

**मई**–मासारम्भ ता. 1 को ही गुरु वृष राशि में प्रवेश करके शनि की दृष्टि से हट जाएगा। **राजनीतिक एवं व्यापारिक वातावरण बड़ा असमंजसपूर्ण हो जाएगा।** रुई, चाँदी, अनाज, मजीठ, मोती, मूँग, नमक, लालफल, घी, अरहर, हींग, खाण्ड में पहले मन्दी बनकर शीघ्र ही 8-10 दिनों में तेजी का रुख बन जाएगा।

5 मई को शुक्र भी भरणी नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि पहले से ही है। सोना, चाँदी, रुई, सॉफ्टवेयर शेयर्ज़ में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। यदि तेजी दिखे तो लाभ लेकर निकल जाएं।

6 मई को गुरु पश्चिम में अस्त होगा। रुई, घी, खाण्ड तथा शेयरों मे तेजी बनेगी, परन्तु सोना, चाँदी, अनाज आदि में अचानक मन्दी की लाईन चल सकती है। इसलिए सावधानीपूर्वक तदनुसार कार्य करें।

9 मई, गुरुवार को वृषराशिस्थ कालीन चन्द्रदर्शन होने से रूई, *शेयरों, सूत, रेशमी, ऊनी वस्त्र, सरसों, तेल, घी में तेजी बने। सोना, चाँदी, खाण्ड, गुड़ में कुछ मन्दी बने।*

*10 मई को बुध मेष राशि में आकर सूर्य एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर*

***शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। यह योग एवं दृष्टि सम्बन्ध बाज़ारों में तूफ़ानी तेजी लेकर आएगा। विशेष रूप से शेयर बाज़ार में।* सोना, चाँदी आदि धातुओं, चना, तेल, सरसों, रूई, कपास, घी, गुड़, खाण्ड में पहले कुछ मन्दी बनकर बाद में अच्छी तेजी बनेगी।**

11 मई को सूर्य कृतिका नक्षत्र तथा शनि पू.भा. के द्वितीय चरण में आने से घी, रूई, सोना, चाँदी, अलसी, एरण्ड, गेहूँ, जौं, चना, मूँग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेजी बनेगी।

14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर गुरु के साथ मेल करेगा। सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रूई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि में तेजी बनेगी। जौं, शेयरों, चने, गेहूं, मटर, अरहर, मूँग, चावल में कुछ मन्दी बन सकती है। इसीदिन मंगल रेवती नक्षत्र में आने से भी कुछ वस्तुओं में मन्दी बने।

15 मई को गुरु कृतिका नक्षत्र के तृतीय चरण में आने से भी सोने, चाँदी में घटाबढ़ी चलेगी।

16 मई को शुक्र कृतिका नक्षत्र में आकर सूर्य-गुरु के साथ एकनक्षत्र सम्बध बनाएगा। अकेला शुक्र यद्यपि यहाँ मन्दीकारक होता है, परन्तु इस ग्रहयोग के कारण यहाँ जौं, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रूई, सूत, सोना, चाँदी, हीरा, मणि, मोती आदि जवाहरात में मन्दी के योग बनेंगे।

19 मई को शुक्र वृष राशि में आकर सूर्य-गुरु के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। रूई, कपास में कुछ मन्दी परन्तु सोना, चाँदी, अनाज, कागज़, आलू, शेयरों के भावों में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

21 मई को बुध भरणी नक्षत्र में आएगा। **ध्यान दें,** बुध पर शनि की विशेष दृष्टि पड़ रही है। गेहूँ, चावल, चना आदि अनाजों, खाण्ड, बैंकिंग शेयर्ज़ में विशेष तेज़ी बनेगी।

24 मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में आएगा। तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, जौं, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, वस्त्र, सन, सुपारी, मिर्च, राई में तेजी बनेगी। निफ्टी (शेयर्ज़) कुछ नीचे आएगा।

27 मई को शुक्र रोहिणी नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। अकेला शुक्र यहाँ मन्दी करता है, परन्तु सूर्य के साथ होने से सोने, चाँदी आदि धातु, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, छुहारा, सुपारी, नारियल, ऊन में मन्दी का योग होने के बावजूद तेजी लेकर ही व्यापार करें।

29 मई को बुध कृतिका नक्षत्र में तथा गुरु कृतिका के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा। शेयरों, चाँदी में विशेष घटाबढ़ी होकर मन्दी बने तथा सोना, गुड़, खाण्ड में भी घटाबढ़ी होकर मामूली मन्दी बने।

31 मई को बुध वृष राशि में आकर सूर्य-गुरु-शुक्र के साथ 'चतुर्ग्रही योग' बनाएगा। **यदि जिन व्यापारिक वस्तुओं में पहले कुछ तेजी चल रही होगी, तो यहाँ यह योग तूफानी तेजी की ओर ले जाएगा। रूई, चाँदी तथा शेयरों में ज़बरदस्त घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।** जबकि शेष गेहूं, चना, चावल, मटर, रूई, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल सोने, आदि के भावों में भी अच्छी तेजी का चाँस है।

***विशेष*—*ता. 10 से 13, ता. 20 से 25 तक, पुनः ता. 29 से शेयर-बाज़ार में विशेष तेजी का वातावरण रहेगा।***

**जून**–ता. 1 जून को ही मंगल स्वराशि मेष में प्रवेश करेगा। **मंगल पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। यह दृष्टि सम्बन्ध व्यापारिक थोक एवं प्रचून बाज़ार में महँगाई (तेजी) का तहलका मचा सकता है।** अतः सावधानीपूर्वक तेजी में साथ-साथ माल निकालते जाएँ तथा खरीदते रहें। रूई, कपास, सूत, घी, तेल, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, गुड़, फल, खाण्ड, शक्कर, सोना, चाँदी में अच्छी तेजी बनेगी। चना, गेहूँ, मूँग आदि दालों तथा कुछ अन्य वस्तुओं में कुछ मन्दी के झटके भी लग सकते हैं।

2 जून को गुरु पूर्व में उदय होने से भी सोना, चाँदी आदि धातुओं, हल्दी, घी, रूई तथा अन्य सभी करियाना तथा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनेगी।

3 जून को बुध पूर्व में अस्त होने से सोना, रुई, चाँदी, गेहूँ आदि अनाज, तेल, घी, तिलहन एवं करियाना वस्तुओं में पहले मन्दी, फिर शीघ्र ही तेजी बन जाएगी।

5 जून को बुध रोहिणी नक्षत्र में आकर सूर्य एवं शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रूई, कपास, सूत, सोना, चाँदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी। रूई, राई, मूँग, खाण्ड, कॉपर में भी घटाबढ़ी के बाद पहले मन्दी, फिर तेजी बने।

7 जून को सूर्य एवं शुक्र–दोनों मृगशिर नक्षत्र में आकर एकनक्षत्र बनाएंगे। **वृष राशि में चतुर्ग्रही योग चल रहा है। यह ग्रहयोग तेजीकारक ही रहेगा।** रूई, सूत, रेशम, सन, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चाँदी, उड़द, मूँग, मोठ, चने, बाजरा, अलसी आदि में अच्छी तेजी बने।

11 जून को बुध भी मृगशिर में आकर सूर्य-शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रूई, चाँदी, तिल, सरसों, मूँग में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

12 जून को शुक्र मिथुन राशि में आने से रूई, कपास, सूत, वस्त्र, पाट, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार, में मन्दी, जबकि अलसी, गुड़, घी, चना, गेहूँ, जौं, चावल, शेयरों में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

13 जून को गुरु रोहिणी नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, हींग, घी, चने की दाल में मन्दी बनेगी। रूई में घटाबढ़ी रहेगी।

**14 जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा।** सोना, चाँदी, रेशम, सूत, कपास, रूई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, खाण्ड, घी, मूँग, उड़द, गेहूँ, चना, चावल आदि सभी अनाजों में तेजी का रुख रहेगा। इसीदिन बुध भी मिथुन राशि में आकर सूर्य-शुक्र के साथ मेल करेगा। **अकेला बुध यहाँ पर मन्दीकारक होता है। परन्तु इस ग्रहयोग के कारण तेजी ही बनेगी। उपरोक्त सभी वस्तुओं/जिन्सों में तेजी लेकर चलें। शीघ्र ही बैंकिंग शेयर्ज़ भी तेज़ होंगे।**

17 जून को बुध एवं शुक्र दोनों आर्द्रा में आकर एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएंगे। मन्दी का योग होने पर भी अधिक मन्दी नहीं बन पाएगी। गेहूँ, तिल, उड़द, जौं, चना, मूँग, मोठ आदि सब अनाजों में पहले मन्दी बनकर फिर मामूली तेजी बने।

19 जून को मंगल भरणी नक्षत्र में आकर गेहूँ आदि अनाजों, सोना, चाँदी, रूई में थोड़ी तेजी आएगी।

**21 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आकर बुध एवं शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध**

बनाएगा। रूई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूँ, चावल, चना, जौं, चाँदी में तेजी बनेगी। सोने के भावों में घटाबढ़ी रहेगी।

24 जून को बुध पुनर्वसु नक्षत्र में आने से चाँदी, रूई, कपास, सूत, सन में विशेष मन्दी का झटका लगेगा।

26 जून को बुध पश्चिम में उदय होने से सोना, चाँदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, घी, तेल में पहले अच्छी तेजी बनकर बाद में मन्दी बन जाएगी। शेयर्ज तेज रहेंगे।

27 जून को गुरु रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में आने से सभी प्रकार के अनाजों, चाँदी, घी में तेजी बनेगी। सुपारी, मिर्च, सरसों, राई, हींग, तेल, खजूर, छुहारा, हल्दी में कुछ मन्दी बने।

28 जून को शुक्र पुनर्वसु में बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चाँदी, रूई, कपास में मन्दी का योग होने पर भी बीच में तेजी का झटका लगेगा।

29 जून को बुध कर्क राशि में आएगा। कर्क राशि पर मंगल की विशेष नीच दृष्टि चल रही है। **ध्यान दें, इसीदिन शनि वक्री भी हो रहा है।** सोना, चाँदी, क्रूड-ऑयल, गुड़, दूध, सरसों, गुड़ में झटके की तेजी बनकर बाद में मन्दी की लाईन बन सकती है। **सावधानी से चलें। तुरन्त मुनाफा काटते जाएं।** क्योंकि सोना/चाँदी, कॉपर किसी धातु में तेजी बनकर अगर वापिस आने लगे तो समझ लेना 10-15 दिन मन्दी का या घटाबढ़ी के बाद भाव स्थिर रहें।

*विशेष—ता. 29 जून के बाद शेयर-बाज़ार में तेजी की लाईन चलेगी।*

**जुलाई**—ता. 1 को ही बुध पुष्य नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी, रूई, मणि, मोती, क्रूड-ऑयल, मूँग में मन्दी का अन्देशा होने के बावजूद मामूली तेजी बन ही जाएगी।

5 जुला. को सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में आकर शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रूई, सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारू, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सब्ज़ी, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, मजीठ, नील, गुग्गुल में सभी करियाना वस्तुओं में तेजी की लाईन शुरु हो जाएगी।

**7 जुला. को शुक्र कर्क राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा तथा इन पर मंगल की विशेष दृष्टि रहेगी।** अकेला शुक्र यद्यपि यहाँ मन्दीकारक होता है, परन्तु क्रूर ग्रह की दृष्टि होने से **यहाँ सभी व्यापारिक वस्तुओं व धातुओं में तेज़ी का ही ध्यान लग रहा है।** इसीदिन मंगल कृतिका नक्षत्र में आएगा तथा शुक्र पश्चिम में उदय हो जाएगा। बाज़ार तेजी प्रधान रहेगा। रूई, घी, दूध, अलसी, एरण्डी, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मसूर, तेल, सरसों, चाँदी में अच्छी ज़ोरदार तेजी बनेगी। सोना, ताँबा, चने में भी घटाबढ़ी के बाद कुछ तेजी बनेगी।

8 जुला. को राहु उ.भा. 4 केतु हस्त 2 में आने से चाँदी, रूई, दालों में घटाबढ़ी चलेगी।

9 जुला. को बुध आश्लेषा तथा शुक्र पुष्य नक्षत्र में आने से तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँगफली, सूत, रूई, सन, रेशम, ऊन व धान्य में तेजी और लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, शिंगरफ, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बनेगी।

12 जुला. को मंगल वृष राशि में आकर गुरु के साथ एकराशि सम्बन्ध बना रहा है। शीघ्र ही लाल वस्त्र, लाल चन्दन, अन्य लाल रंग की वस्तुएँ तथा सर्वप्रकार के अनाज, रूई, कपास, सूत, कुसुंभ, चन्दन, कपूर, केसर, तेल, सोना, चाँदी, ताँबा, जिस्त आदि धातुओं व शेयरों में भी तेजी बनेगी।

13 जुला. को गुरु रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण में आने से तिल, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, वस्त्र, गेहूँ, जौं, चना आदि में तेजी की लाईन बनेगी।

16 जुला. को सूर्य कर्क राशि में आकर बुध एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। रूई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चाँदी, सोना आदि में तेजी बनेगी। चना, चावल, मटर, अरहर, मूँग आदि दालों में कुछ मन्दी का वातावरण रहे।

19 जुला. को सूर्य पुष्य नक्षत्र में आएगा। **इसीदिन बुध मघा नक्षत्र तथा सिंह राशि में आकर मंगल एवं शनि की दृष्टि में आ जाएगा। बाज़ार में चल रही तेजी को और अधिक हवा (बल) मिलेगी।** तिल, तेल, सरसों, खाण्ड, चावल, गेहूँ, जौं, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सब्ज़ी, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, मजीठ, नील, सोंठ, गुग्गुल आदि सुगन्धित पदार्थ व अन्य करियाना वस्तुओं में तेजी बनेगी।

20 जुला. को शुक्र आश्लेषा में आने से चावल, रूई, शेयरों में कुछ मन्दी बनेगी।

26 जुला. को मंगल रोहिणी नक्षत्र में आएगा। गुरु पहिले से ही रोहिणी नक्षत्र में है। रूई, कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लाल-मिर्च, हींग में तथा शेयरों में तेजी बनेगी।

30 जुला. को गुरु रोहिणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आने से ज्वार, गेहूँ, जौं, चने, मसूर, सरसों, तिल, तैल, घी, गुड़, खाण्ड, नमक, शहद, सोंठ, मिर्च, रूई, सूत में मन्दी बनेगी।

31 जुला. को शुक्र सिंह राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। बुध-शुक्र का शनि के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध तथा इन पर मंगल की विशेष दृष्टि भी रहेगी। **यह योग वायदा एवं हाजिर करियाना बाज़ार तथा धातुओं में तूफानी तेजी ला सकता है।** सोना, ताँबा, जौं, चना, गेहूँ, लाल-चन्दन, मजीठ, लाल-मिर्च, लाल रंग की वस्तुएं, घी में ज़बरदस्त तेजी बन सकती है। रूई में पहिले कुछ मन्दी बनकर तेजी बने।

*विशेष—ता. 7 जुला. तथा 16 से 18 जुला., पुनः 21-22 जुला. के बाद शेयर बाज़ार में मन्दी के झटके भी लग सकते हैं।*

**अगस्त**—2 अग. को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी, रूई, बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ में तेजी बनेगी।

**5 अग. को सिंह राशिगत बुध वक्री होगा। बुध-शुक्र के साथ शनि का समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध तथा इन पर मंगल की दृष्टि भी है।** शीघ्र ही घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, जौं, चना आदि अनाजों, बैंकिंग शेयर्ज़ में ज़ोरदार तेजी बनेगी।

*6 अग., मंगलवार को सिंहराशिगत चन्द्रदर्शन होने से वायदा व्यापारिक वस्तुओं मे तेजी का रुख रहे। सोना, चाँदी, रूई, ताँबा, गुड़, सरसों में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी।*

---

11 अग. को शुक्र पू.फा. नक्षत्र में आने से गेहूं, जौं, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूँग, चना

दृष्टि सम्बन्ध होने से सोना, चाँदी, सूत, गुड़, मूँग, क्रूड-ऑयल में अच्छी तेजी का

11 अग. को शुक्र पू.फा. नक्षत्र में आने से गेहूं, जौं, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना में कुछ मन्दी बने।

12 अग. को सिंहराशिगत वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से चाँदी, रूई, घी में झटके के साथ तेजी बनेगी। बैंकिंग शेयर्ज़, सोने, ताँबे, लोहे, स्टील में भी तेजी की लाईन चलेगी।

16 अग. को सूर्य सिंह राशि में आकर बुध-शुक्र के साथ मेल करेगा। **इस समय सूर्य-बुध-शुक्र का शनि के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध बनेगा तथा मंगल की इन पर विशेष दृष्टि भी रहेगी।** सोना, चाँदी, कॉपर आदि धातुओं, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तैल, एरण्ड, सरसों आदि, लाल रंग की वस्तुएं, क्रूड-ऑयल में अच्छी तेजी बनेगी। शेयरों में भी कुछ तेजी बनकर बाद में मन्दी बन जाएगी।

18 अग. को वक्री शनि पू.भा. 1 में आने से चाँदी, चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, तेल तेज होंगे।

20 अग. को गुरु मृगशिर नक्षत्र में आने से रूई में तेजी, चावल, चाँदी, घी, तृणादि में मन्दी का रुख बनेगा।

22 अग. को वक्री बुध कर्क राशि में आएगा। इसीदिन शुक्र उ.फा. नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी, रूई, गुड़, दूध, तेल, मूँगफली, सरसों, बैंकिंग शेयर्ज़ में पहले घटाबढ़ी के मध्य तेजी बनकर मन्दी की लाईन चल सकती है। सावधान रहे।

**24 अग. को शुक्र कन्या राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की विशेष शत्रु दृष्टि रहेगी। कुछ वस्तुओं में तेजी तथा कुछ में मन्दी की ज़बरदस्त लाईन चलेगी।** चाँदी, गेहूँ आदि सर्वप्रकार के अनाज, गुड़, खाण्ड व ऊनी-रेशमी वस्त्रों, चावलों में तेजी बनेगी। शेयर्ज़ मे भी घटाबढ़ी के मध्य मामूली तेजी बने।

26 अग. को मंगल मिथुन राशि में आएगा। इसीदिन वक्री बुध पूर्व में उदय भी होगा। रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, अफीम, ताँबा, कुसुंभ, मजीठ तथा अन्य लाल रंग की वस्तुओ में विशेष तेजी बनेगी। सोना-चाँदी में भी घटाबढ़ी बनकर तेजी होगी।

29 अग. को बुध मार्गी होने से बैंकिंग शेयर्ज़, चाँदी, रूई, घी में विशेष घटाबढ़ी बनकर तेजी होगी। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूँगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित वस्तुओं में मन्दी बनेगी।

30 अग. को सूर्य पू.फा. नक्षत्र में आएगा। सूर्य-शनि के मध्य पहले ही समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध है। जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूँ, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़े, रूई, सूत में अच्छी तेजी का झटका लगेगा।

***विशेष*—*ता. 16 से 20 अग. तक, पुनः 24 अग. से मासान्त तक शेयर-बाज़ार में अच्छी तेजी की लाईन चलेगी।***

**सितम्बर**-ता. 1 को शुक्र हस्त नक्षत्र में आएगा। शुक्र-केतु के साथ है तथा इन पर मंगल की दृष्टि चल रही है। सोना, चाँदी, खाण्ड, गुड़, रूई, चावल में मन्दी का योग होने पर भी तेजी का ही रुख रहेगा।

4 सितं. को बुध सिंह राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इनका शनि के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध रहेगा। अकेला बुध यद्यपि यहाँ मन्दी करता है, **परन्तु यहाँ क्रूर दृष्टि सम्बन्ध होने से सोना, चाँदी, सूत, गुड़, मूँग, क्रूड-ऑयल में अच्छी तेजी का झटका लगेगा।** बैंकिंग शेयर्ज़ में भी तेजी बनकर बाद में मन्दी बनेगी।

6 सितं. को मंगल आर्द्रा नक्षत्र में आने से रुई, सूत, कपास, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, नमक में तेजी, परन्तु चाँदी, घी में मन्दी बने।

8 सितं. को राहु उ.भा. 3, केतु हस्त 1 में आने से सोने, चाँदी, कॉपर आदि धातुओं में अच्छी घटाबढ़ी रहेगी।

12 सितं. को शुक्र चित्रा नक्षत्र में आएगा। शुक्र मंगल द्वारा दृष्ट है। सोना, चाँदी आदि धातुओं तथा अनाजों के भावों में घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बनेगी।

13 सितं. को सूर्य उ.फा. नक्षत्र में आएगा। रूई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चाँदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, नील में तेजी बनेगी।

14 सितं. को बुध पू.फा. नक्षत्र में आएगा। अकेला बुध यहाँ मन्दीकारक होता है, परन्तु शनि की दृष्टि होने से गुड़, खाण्ड, गेहूँ, अनाज, मूँग, बाजरा, शेयर्ज़ में मन्दी की जगह तेजी बनेगी।

15 सितं. को बुध पूर्व में अस्त होने से घी, अनाज, रूई, शेयर्ज़ में कुछ मन्दी, सोने में तेजी बने।

16 सितं. को सूर्य कन्या राशि में आकर शुक्र एवं केतु के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल एवं गुरु की विशेष दृष्टियां रहेंगी। रूई, चाँदी, सोना, शेयरों, तिल, तैल, लाल वस्तुओं में पहले तेजी बनकर शीघ्र ही मन्दी का रुख बन जाएगा।

18 सितं. को शुक्र तुला राशि में आकर रूई, सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, दूध, चावल में साधारण तेजी, परन्तु शेयर्ज़ में अच्छी तेजी चल सकती है।

21 सितं. को बुध उ.फा. नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र बनाएगा। उड़द, मूँग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेजी, रूई-चाँदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बन सकती है।

22 सितं. को गुरु मृगशिर (2) में आने से सोना-चाँदी के भाव घटाबढ़ी के बाद तेज होंगे।

23 सितं. को बुध कन्या रशि में आकर सूर्य-केतु के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल एवं गुरु की दृष्टियां रहेंगी। गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी बनेगी। रूई-चाँदी में भी मन्दी की जगह तेजी बनेगी। इसीदिन स्वाती नक्षत्र में आकर शुक्र गुड़, खाण्ड, दूध, चावल में तेजी करेगा।

26 सितं. को सूर्य हस्त नक्षत्र में आएगा। **ध्यान रहे,** सूर्य-बुध-केतु पर मंगल-गुरु की दृष्टियां हैं। गेहूँ, जौं, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रूई, सूत, जूट, घास, लकड़ी, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी में अच्छी तेजी का रुख शुरु हो सकता है।

28 सितं. को बुध हस्त नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाने से अनाज, चावलों, चाँदी में मन्दी की जगह मामूली तेजी बनेगी।

29 सितं. को मंगल पुनर्वसु नक्षत्र में आने से रूई, चाँदी, कपास, सूत, नमक, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों में साधारण तेजी बनेगी।

***विशेष*—*ता. 4 से 12 तक घटाबढ़ी के मध्य शेयर बाज़ार मज़बूत ही रहेगा तथा बैंकिंग शेयर्ज़ में अच्छी तेजी बनेगी। ता. 18 से 22 तक भी निफ्टी मज़बूत रहेगी।***

**अक्तूबर**–3 अक्तू. से वक्री शनि शतभिषा नक्षत्र में आने से चावल, खाण्ड, घी, लौंग, क्रूड–ऑयल, काली मिर्च, लोहे में तेजी का रुख शुरु हो जाएगा।

4 अक्तू. शुक्रवार को तुलाराशिगत चन्द्रदर्शन तथा शुक्र विशाखा नक्षत्र में आने से, सोना, चाँदी, रूई, सूत में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो तथा सरसों, तिल, तेल, उड़द, चना में मामूली मन्दी बनकर तेजी होगी।

6 अक्तू. को बुध चित्रा नक्षत्र में आने से रुई, चाँदी, सोने, बाजरा में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

9 अक्तू. को वृषराशिगत गुरु वक्री होने से सोना, घी, तेल, कॉपर, हींग, हल्दी, सरसों, सोयाबीन में शीघ्र ही तेजी की लाईन चलेगी। यहाँ स्टॉक करने/माल खरीदने से भविष्य में अच्छा मुनाफा होगा।

10 अक्तू. सूर्य चित्रा नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रूई, सूत, सोना, चाँदी, कॉपर आदि धातुओं, रत्नों, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूँ, चना, कपूर, लाल कपड़े में विशेष तेजी बनेगी।

**13 अक्तू. को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर गुरु एवं शनि की दृष्टि में आ जाएगा।** गेहूं, जौं, उड़द, मूँग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों, अलसी, गुड़, शेयर्ज़, चाँदी, रूई में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी का प्रबल चाँस है।

14 अक्तू. को बुध स्वाती नक्षत्र में आकर चाँदी, रूई में मन्दी बन सकती है।

15 अक्तू. को शुक्र अनुराधा नक्षत्र में आने से गुड़, खाण्ड, चावल, नमक, चाँदी, कॉपर में मन्दी का चांस है परन्तु शुक्र पर शनि व गुरु की दृष्टि के कारण बाज़ार शीघ्र ही तेजी की तरफ ही रहेगा।

17 अक्तू. को सूर्य तुला राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सोना, ताँबा, लाल चन्दन, मजीठ, श्रीफल, सुपारी, चना, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी बनेगी। चाँदी, रूई, घी, में भी घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बने।

**20 अक्तू. को मंगल कर्क राशि में आकर शनि के साथ षडाष्टक सम्बन्ध बनाएगा। रूई, चाँदी आदि कुछ वस्तुओं में मन्दी बनकर तेजी बनेगी। परन्तु सरसों सोयाबीन, क्रूड–ऑयल, जीरा, लौंग, अलसी, पैट्रोल, खाण्ड, कॉपर में तेजी बनेगी।**

21 अक्तू. को बुध पश्चिम में उदय होने से सोना, चाँदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, पारा, गुड़, खाण्ड, तेल के व्यापार में अच्छी तेजी बनकर बाद में मन्दी बन जाएगी।

22 अक्तू. को बुध विशाखा में आने से रूई, गेहूँ, चावल, चना आदि में कुछ मन्दी बनेगी।

23 अक्तू. को सूर्य स्वाती नक्षत्र में आने से रुई, सूत, सन्, रेशम, कपड़ा, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल में तेजी बनेगी।

25 अक्तू. को वक्री गुरु मृगशिर (1) में आएगा। रूई में घटाबढ़ी, गुड़, खाण्ड, सोना, चाँदी में मन्दी बन सकती है। **क्योंकि गुरु–शुक्र मध्य समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध चल रहा है, अतः बाज़ार का रुख अचानक परिवर्तित हो सकता है, इसलिए बहुत ही सावधानीपूर्वक चलें।**

26 अक्तू. को ज्येष्ठा नक्षत्र का शुक्र भी यद्यपि मन्दीकारक होता है। सोना, चाँदी, चावल, सरसों, तिल, तेल, हींग में मन्दी का प्रभाव दिखेगा भी, परन्तु शीघ्र ही बाज़ार में उथल–पुथल मचेगी तथा तेजी की तरफ बढ़ेगा।

28 अक्तू. को मंगल पुष्य नक्षत्र में आएगा। मंगल शनि को देख रहा है। शीघ्र ही सोने, क्रूड ऑयल, चाँदी, गुड़, खाण्ड में तेजी का ज़बरदस्त झटका लगेगा।

29 अक्तू. को बुध वृश्चिक राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इस समय बुध–शुक्र का गुरु के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध रहेगा तथा इन पर शनि की विशेष दृष्टि भी है। सोना,चाँदी, तेल, सरसों, घी, खाण्ड, क्रूड–ऑयल में अच्छी तेजी बनेगी।

***विशेष–ता. 20 के बाद ही शेयर-बाज़ार (निफ्टी) में तेजी का रुख रहेगा।***

**नवम्बर**–मासारम्भ ता. 1 दीपावली वाले दिन अनुराधा नक्षत्र का बुध यद्यपि मन्दीकारक होता है, परन्तु बुध का गुरु एवं शनि के साथ दृष्टिसम्बन्ध वायदा एवं हाजिर बाज़ार में विशेष उथल–पुथल करेगा। सोना, चाँदी, रूई, दालों, गुड़, खाण्ड में घटाबढ़ी के बाद साधारण तेजी बने।

3 नवं., रविवार को वृश्चिकराशिस्थ चन्द्रदर्शन होने से भी गुड़, तेल, सोना–चाँदी में तेजी, रुई में कुछ मन्दी बने।

6 नवं. को सूर्य विशाखा नक्षत्र में तथा शुक्र धनु राशि में आएगा। सोना, चाँदी, कॉपर, जौं, शेयर्ज़, चावल, गेहूँ, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अलसी में तेजी होगी।

11 नवं. को बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर घी, गुड़, खाण्ड, चावल, चाँदी में तेजी करेगा।

**15 नवं. को शनि मार्गी होगा। शनि पर मंगल की विशेष दृष्टि चल रही है।** अतः रूई, तिल, तेल, सरसों, हींग, मिर्च, क्रूड–ऑयल में तेजी बनेगी।

**16 नवं. को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी।** रूई, सोना, चाँदी, ताँबा, ऊनी वस्त्रों, गुड़, सोयाबीन, सरसों, गेहूँ आदि में तेजी बनेगी।

18 नवं. को शुक्र पू.षा. नक्षत्र में आएगा। मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, नमक में कुछ मन्दी बने।

19 नवं. को सूर्य अनुराधा नक्षत्र में आएगा। जौं, चना आदि धान्यों, ऊन, सोना, चाँदी, कॉपर आदि धातुओं में तेजी बनेगी। कुछ वस्तुओं में मन्दी की लाईन भी चल सकती है, इसलिए सावधान रहें। घटाबढ़ी के मध्य साधारण तेजी की यह लाईन ता. 25 तक चलेगी।

**26 नवं. को वृश्चिक राशिगत एवं सूर्ययुक्त बुध वक्री होगा। इन पर शनि की दृष्टि है।** गुड़, शक्कर, सोना, चाँदी, बैंकिंग शेयर्ज़, बाज़ार में तेजी की लाईन शुरु होगी।

28 नवं. को वक्री गुरु रोहिणी नक्षत्र में आने से सरसों, गेहूँ, जौं, चने, घी, गुड़, खाण्ड, नमक, शहद, मिर्च, रूई में मन्दी बनेगी।

***29 नवं. को शुक्र उ.षा. नक्षत्र में आने से गुड़, खाण्ड, सोना, चाँदी, अलसी, एरण्डी में कुछ मन्दी बनेगी।***

***30 नवं. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से रूई, चाँदी, घी में झटके की***

**30 नवं. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से रूई, चाँदी, घी में झटके की ज़बरदस्त तेजी बनेगी। सोना, कॉपर, शेयर्ज़, गर्म मसाले, जौं, चावल में भी तेजी बनेगी।**

***विशेष—ता. 16 से 20 ता. तक, पुनः 26 से मासान्त तक शेयर बाज़ार में तेजी का बोलबाला रहेगा।***

**दिसम्बर**–2 दिसं. को सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में तथा शुक्र मकर राशि में आकर मंगल एवं गुरु के साथ दृष्टि-सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चाँदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, खाण्ड में तेजी की लाईन बनेगी जोकि एक सप्ताह तक भी चल सकती है।

**7 दिसं. को कर्कराशिगत मंगल वक्री होगा। क्रूड-ऑयल, लौंग, पैट्रोल, खाण्ड, गुड़, दूध, सोना, चाँदी में अच्छी तेजी बनेगी।**

8 दिसं. को वक्री बुध अनुराधा नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, सूत, सन, रूई में मन्दी बनेगी।

11 दिसं. को वक्री बुध पूर्व में उदय होगा तथा शुक्र श्रवण नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूँग, मोठ, उड़द, अनाज पहले तेज होकर बाद में गिर जाएंगे।

15 दिसं. को सूर्य धनु राशि में आएगा। रूई, कपास, सूत, तिल, तैल, सोना, चाँदी, ऊनी वस्त्र तेज होंगे। सोना-चाँदी एवं धातुओं मे तेजी की यह लाईन ता. 21 तक रहेगी।

22 दिसं. को शुक्र धनिष्ठा नक्षत्र में आएगा। चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चाँदी, सोना, रुई, कपास में पुनः कुछ तेजी बनेगी एवं धातुओं में नए लेवल देखने को मिलेंगे।

23 दिसं. को वक्री गुरु रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण में आने से तिल, तैल, घी, गुड़, खाण्ड, गर्म-वस्त्र, गेहूँ, जौं, चने में तेजी बने।

24 दिसं. को बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर घी, गुड़, खाण्ड, चावल, मूँग, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी बनेगी।

27 दिसं. को शनि पू.भा. (1) नक्षत्र में आने से गेहूँ आदि अनाज, अलसी, तिल, तेल, सरसों, मूँग, उड़द में तेजी बनेगी।

28 दिसं. को सूर्य पू.षा. नक्षत्र में तथा शुक्र कुम्भ राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। शुक्र-शनि पर मंगल की दृष्टि रहेगी। तिल, तैल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सन्, चाँदी, क्रूड-ऑयल में तेजी बनेगी। **यद्यपि अकेला शुक्र कुम्भ राशि में मन्दी करता है, परन्तु यहाँ क्रूर ग्रहयोग से तेजी का ही रुख चलेगा।**

***विशेष—मासारम्भ ता. 1 से 11 दिसं. तक शेयर-बाज़ार तेजी की तरफ ही रहेगा।***

**नोट**—गोचर ग्रहस्थिति अनुसार ऊपर दिए गए व्यापारिक रुख, लाईन तथा चांसों के विपरीत बाज़ार का रुख चले या वायदा/हाजिर व्यापार की लाईन अनुकूल न चले, तो तुरन्त सौदा काटकर हानि से बचें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि होने पर हम जिम्मेवार न होंगे।

**—सम्पादक**

# आज का दिन कैसा गुजरेगा ?

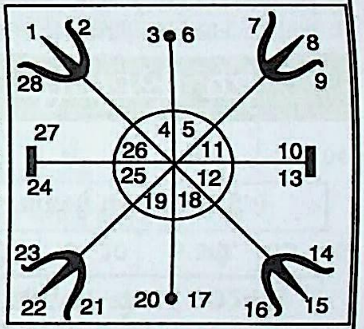

जिस दिन को मालूम करना हो कि **आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा ?** तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. 1 पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार 28 नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय बन्धु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। **उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. 1 लें।** इसी क्रम में पू.फा. आदि 28 नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचाँग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।

# खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

**विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरेश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥**

**१. अन्धाक्ष नक्षत्रों** में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।

**२. सुलोचन नक्षत्रों** में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

**३. मध्याक्ष नक्षत्र** में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तंगत) नहीं होती।

**४. मन्दाक्ष नक्षत्र** में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं–

| **नक्षत्र संज्ञा** | **नाम नक्षत्र** | | | | | | | **मिलेगी या नहीं** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **(१) अन्धाक्ष** | रोहणी | पुष्य. | उ.फा. | विशा. | पू.षा. | धनि. | रेव. | शीघ्र मिलेगी। |
| **(२) सुलोचन** | कृतिका | पुन. | पू.फा. | स्वा. | मूल. | श्रव. | उभा. | नहीं मिलेगी। |
| **(३) मध्याक्ष** | भर. | आर्द्रा. | मघा. | चित्रा. | ज्येष्ठा | अभि. | पू.भा. | पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी। |
| **(४) मन्दाक्ष** | अश्विनी | मृग. | आश्ले. | हस्त. | अनु. | उ.षा. | शत. | बहुत प्रयत्न करने पर मिलेगी। |

# चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्रों द्वारा अभीष्ट सिद्धि

संसार में निरन्तर बढ़ती दुःख शृंखलाओं से मुक्ति हेतु मन्त्र ही सर्वोत्तम सुलभ साधन है। अनेक दुःखों से परितप्त प्राणियों के कल्याण हेतु ही हमारे प्रातः स्मरणीय ऋषियों ने मन्त्र विद्या को अपने दिव्य ज्ञान द्वारा प्रकाशित किया है। लौकिक एवं पारलौकिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मन्त्र/उपासना, ध्यान आदि पद्धतियों द्वारा लोगों की जीवन-शैली को प्रभावित किया है। सूक्ष्म मनन चिन्तन के द्वारा विशेष सारगर्भित वर्णों के व्यष्टि रूप को मन्त्र की संज्ञा प्रदान की गई लगती है। पिंगला मतानुसार समस्त ब्रह्माण्ड के विज्ञान के मनन एवं मंथन और संसाररूपी बन्धनों से मुक्ति (त्राण)-इन दोनों प्रकार के कार्यों में उत्तम प्रकार से सिद्धि प्रदान कराने वाला वर्ण समुदाय मन्त्र कहलाता है।

**मननं विश्वविज्ञानं त्रणं संसार बन्धनात्। यतः करोति सं सिद्धिं मन्त्र इत्युच्यते ततः।।**

जो कार्य मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक उद्देश्य अन्य साधनों से सिद्ध नहीं हो सकते थे, हमारे मनीषि उन्हें मन्त्र जाप साधना से शीघ्र सिद्ध कर लेते थे। मन्त्र-सिद्धि के सम्बन्ध में यह आख्यान प्रसिद्ध ही है कि मन्त्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, दैवज्ञ (ज्योतिषी), वैद्य एवं गुरु के सम्बन्ध में व्यक्ति की जैसी भावना होगी, वैसे ही उसे फल की प्राप्ति होगी।

**मन्त्र तीर्थे द्विजे दैवज्ञे भैषजे गुरौ। यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।।**

मन्त्र-तन्त्र साधना में अभीष्ट सिद्धि एवं सफलता हेतु कुछ विशेष व्रत-नियमों आदि के पालन करने का निर्देश किया है। इनमें श्रद्धा, धैर्य, भक्ति, आसन, धन, शरीर एवं आचरण शुद्धि आदि के आवश्यक नियम बतलाए गए हैं।

मन्त्रों एवं यन्त्रों के अनुष्ठान के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षय-तृतीया, निरयण-सायन संक्रान्तिकाल, होलाष्टक, रविपुष्य, गुरुपुष्य, नवरात्रों में अमृत-सिद्ध, भौमवासरी अमावस, पूर्णिमा आदि में मन्त्र-यन्त्रों के अनुष्ठान का विशेष प्रभाव होता है। विविध मन्त्रों के अनुष्ठान एवं उनमें संसिद्धि सम्बन्धी विस्तृत व्याख्या हेतु आप हमारी पुस्तक 'शिव-मन्त्रावली' पढ़ें।

## मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

### (1) सायन संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल (सन् 2024-25 ई.)

भारतीय मुहूर्त्त शास्त्रों ने निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल की भान्ति सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल को भी यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष सिद्धिदायक बताया है।

| 2024-25 ई. | राशि | प्रवेशकाल | पुण्यकाल विवरण ( भा. स्टैं. टा. ) |
|---|---|---|---|
| 20 जनवरी | कुम्भ | 19:37 | दोपहर 13:13 से 26:01 तक |
| 19 फरवरी | मीन | 9:43 | 19 की प्रातः 03:19 से सायं 16:07 तक |
| 20 मार्च | मेष | 8:36 | 19 की रात्रि 26:12 से 20 की दोप. 15:00 तक |
| 19 अप्रैल | वृष | 19:30 | दोपहर 13:06 से 25:54 तक |
| 20 मई | मिथुन | 18:30 | दोपहर 12:06 से 24:54 तक |
| 20 जून | कर्क | 26:21 | रात्रि 19:57 से 21 ता. की प्रातः 8:45 तक |
| 22 जुलाई | सिंह | 13:14 | प्रातः 6-50 से रात्रि 19:38 तक |
| 22 अगस्त | कन्या | 20:25 | दोपहर 14:01 से रात्रि 26:49 तक |
| 22 सितम्बर | तुला | 18:14 | दोपहर 11:50 से रात्रि 24:38 तक |
| 22 अक्तूबर | वृश्चिक | 27:45 | 21 की रात्रि 21:21 से 22 की प्रातः 10:09 तक |
| 21 नवम्बर | धनु | 25:27 | 21 की रात्रि 19:03 से 22 ता. की प्रातः 7:51 तक |
| 21 दिसम्बर | मकर | 14:51 | प्रातः 8:27 से रात्रि 20:15 तक |
| 19जन.( 2025 ) | कुम्भ | 25:30 | रात्रि 19:06 से 20 ता. की प्रातः 7:54 तक |
| 18 फरवरी | मीन | 15:37 | प्रातः 9:13 से रात्रि 22:01 तक |
| 20 मार्च | मेष | 14:31 | प्रातः 8:07 से रात्रि 20:55 तक |

## क्रान्तिसाम्य काल (सन् 2024-25 ई.)

यहाँ सूर्य-चन्द्रमा का महापात-गणित द्वारा प्रणीत सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य-काल दिया जा रहा है। विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य-काल को वर्जित किया जाता है। यह समयावधि शुभ मुहूर्त्तों के लिए अशुभ एवं त्याज्य है, परन्तु मन्त्र-यन्त्रादि तांत्रिक अनुष्ठान के लिए श्रेष्ठ व शुभ होती है।

| प्रारम्भ काल | | | समाप्ति काल | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तारीख | घं. | मिं. | तारीख | घं. | मिं. |
| 19 अप्रैल | 10 | 32 | 19 अप्रैल | 14 | 58 |
| 2 मई | 19 | 28 | 2 मई | 23 | 32 |
| 15 मई | 03 | 51 | 15 मई | 9 | 08 |
| 28 मई | 19 | 54 | 28 मई | 25 | 15 |
| 10 जून | 10 | 28 | 10 जून | 17 | 06 |
| 2 जुला. | 13 | 09 | 2 जुला. | 19 | 09 |
| 16 जुला. | 11 | 06 | 16 जुला. | 16 | 53 |
| 28 जुला. | 20 | 14 | 29 जुला | 00 | 50 |
| 11 अग. | 10 | 12 | 11 अग. | 14 | 54 |
| 23 अग. | 19 | 14 | 23 अग. | 22 | 51 |
| 6 सितं. | 01 | 05 | 6 सितं. | 5 | 17 |
| 18 सितं. | 20 | 02 | 18 सितं. | 23 | 15 |
| 1 अक्तू | 13 | 32 | 1 अक्तू | 17 | 38 |
| 14 अक्तू | 21 | 26 | 14 अक्तू | 24 | 53 |
| 27 अक्तू | 02 | 11 | 27 अक्तू | 6 | 39 |
| 9 नवं. | 19 | 24 | 9 नवं. | 23 | 44 |
| 21 नवं. | 20 | 31 | 22 नवं. | 01 | 50 |
| 5 दिसं. | 20 | 07 | 6 दिसं. | 02 | 00 |
| 18 दिसं. | 9 | 05 | 18 दिसं. | 15 | 37 |
| 27 दिसं. | 14 | 38 | 27 दिसं. | 21 | 33 |
| ( सन् 2025 ई. ) | | | | | |
| 9 जन. | 14 | 03 | 9 जन. | 19 | 24 |
| 22 जन. | 23 | 22 | 23 जन. | 04 | 47 |
| 4 फर. | 15 | 17 | 4 फर. | 19 | 23 |
| 17 फर. | 16 | 45 | 17 फर. | 21 | 11 |
| 2 मार्च | 12 | 50 | 2 मार्च | 16 | 13 |
| 15 मार्च | 6 | 11 | 15 मार्च | 10 | 12 |
| 28 मार्च | 13 | 12 | 28 मार्च | 16 | 29 |
| महावारुणी-योग ( 2024 ई. ) | | | | | |
| 6 अप्रै. | 10 | 20 | 6 अप्रै. | 15 | 40 |
| वारुणी पर्व ( 2025 ई. ) | | | | | |
| 27 मार्च | सू. | उ. | 27 मार्च | 23 | 04 |

## दीपावली पर्व

यन्त्र-मन्त्र साधना, अनुष्ठान के लिए 1 नवं., शुक्रवार, 2024 ई. को दीपावली पर्व में प्रदोष एवं महानिशीथकाल आदि विशेष सिद्धिदायक होंगे। (देखें पृष्ठ 30)

## (1) दरिद्रतानाशक एवं लक्ष्मीप्राप्ति हेतु मन्त्र

**'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रिये नमो भगवति मम समृद्धौ ज्वल ज्वल मां सर्वसम्पदं देहि देहि ममालक्ष्मीं नाशय नाशय हुँ फट् स्वाहा।।'**

इस मन्त्र का सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण अथवा दीपावली की रात्रि को जो प्राणी एक हज़ार आठ बार जप कर दशांश हवन कर घृत से आहुति देता है, ऐसे प्राणी की दरिद्रता नष्ट हो जाती है और वह लक्ष्मी से युक्त हो जाता है।

## (2) सरकारी–क्षेत्र से काम निकलवाने का मन्त्र

यदि कोई कार्य सरकारी तन्त्र द्वारा किया जाना है परन्तु उसमें अनावश्यक विलम्ब हो रहा है, जिससे काफी क्षति हो रही है, उस दशा में निम्न मन्त्र को नहा–धोकर शुद्ध आसन पर बैठकर धूप दीप जलाकर 108 बार जाप करने से कार्य में सफलता मिलती है।

**''ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ श्रीं हुं फट् स्वाहा।।''**

## (3) ऋण/शत्रु-भय से मुक्ति के लिए अमोघ
## ''ऋणमोचन भौम (मंगल)–स्तोत्र''

इस स्तोत्र का संकल्पपूर्वक प्रतिदिन पाठ करने से ऋण (कर्ज़े) आदि से अवश्य मुक्ति प्राप्त हो जाती है। शुक्ल पक्ष के मंगलवार से इस स्तोत्र का पाठ आरम्भ करना चाहिए। यदि स्वयं पाठ न कर सकें, तो संकल्पपूर्वक ब्राह्मण–देवता से करवाएँ। इसकी जपसंख्या दस हज़ार है। जप पूर्ण होने पर दशांश हवन भी करवाएं।

***ध्यान मन्त्र***–(भौम देवता का ध्यान करना चाहिए।)

**'ॐ रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्मुखो मेषगमो गदाधृक्।**
**धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः।।**

(अर्थात् जिनका वस्त्र तथा शरीर लालवर्ण का है, जो मुकुट धारण किये हैं, जिनकी चार भुजाएँ हैं, जिनका वाहन मेष (भेड़ा) है, जो गदा, शक्ति तथा त्रिशूल धारण किए हुए हैं, ऐसे परम प्रशान्त, पृथ्वी के पुत्र श्रीमङ्गल देवता मुझे वर देने वाले हों।)

***विनियोग***–स्तोत्र पाठ आरम्भ करने से पहिले ऋषि आदि का स्मरण करें–

**''ॐ अस्य श्री भौमस्तोत्रस्य भार्गव ऋषिः। मंगलो देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। ऋणापहरणे जपे विनियोगः।''**

**स्तोत्र–**

**''मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।**
**स्थिरात्मजो महाकायः सर्वकामार्थसाधकः।। १।।**
**लोहितो लोहितांगश्च सामगानां कृपाकरः।**
**धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः।। २।।**
**अंगारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।**
**वृष्टिकर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः।। ३।।**
**एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।**
**ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्।। ४।।**
**धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्ति–समप्रभम्।**
**कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।। ५।।**
**स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत् पठनीयं सदा नृभिः।**
**न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित्।। ६।।**
**अङ्गारक ! महाभाग ! भगवन् ! भक्तवत्सल।**
**त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय।। ७।।**
**ऋणरोगादि–दारिद्रयं ये चाऽन्ये ह्यपमृत्यवः।**
**भय–क्लेश–मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।। ८।।**
**अतिवक्र ! दुराराध्य ! भोगमुक्तजितात्मनः।**
**तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्।। ९।।**
**विरिञ्चि–शक्र–विष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा?।**
**तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः।। १०।।**
**पुत्रान् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गताः।**
**ऋणदारिद्रयदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः।। ११।।**
**एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम्।**
**महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा।। १२।।**

*इति श्रीस्कन्दपुराणे भार्गवप्रोक्तम ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्रम्।।*

१. मङ्गल, २. भूमिपुत्र, ३. ऋणहर्ता, ४. धनप्रद, ५. स्थिरासन, ६. महाकाय, ७. सर्वकर्माविरोधक, ।।१।। ८. लोहित, ९. लोहिताङ्ग, १०. सामगानां कृपाकर (सागग ब्राह्मणों के ऊपर कृपा करने, ११. धरात्मज, १२. कुज, १३. भौम, १४. भूतिद (ऐश्वर्य को देने वाले), १५ भूमिनन्दन (पृथ्वी को आनन्द देने वाले)।।२।। १६. अङ्गारक, १७. यम. १८. सर्वरोगापहारक अर्थात् सम्पूर्ण रोगों को दूर करने वाले, १९. वृष्टिकर्ता (वृष्टि करने वाले), २०. वृष्टिहर्ता (वृष्टि को न कर अकाल डालने वाले तथा २१. सर्वकामफलप्रद (सम्पूर्ण कामनाओं के फल को देने वाले)।।३।। मङ्गल के उपर्युक्त (अर्थात् इक्कीस) नाम को जो व्यक्ति श्रद्धा से पढ़ते हैं, उनको ऋण–कर्ज़ नहीं होता और वे लोग शीघ्र ही धन प्राप्त करते हैं।। ४।। धरणी (पृथ्वी) के गर्भ से उत्पन्न, बिजली के समान कान्ति से युक्त, शक्ति को धारण करने वाले, कुमार मङ्गल को मैं प्रणाम करता हूँ।। ५।। मनुष्यों को इस मङ्गल–स्तोत्र का पाठ हमेशा करना चाहिए। जो लोग इस मङ्गल–स्तोत्र का पाठ करते हैं, उन्हें मङ्गल के अरिष्ट की थोड़ी–सी भी पीड़ा नहीं होती।। ६।।

हे अङ्गारक, महाभाग, भगवान्, भक्तवत्सल भौम ! आपको हम प्रणाम करते हैं। हमारे सम्पूर्ण ऋण (कर्ज़) को आप दूर कीजिए।। ७।। ऋण, रोग, दरिद्रता तथा अन्य अपमृत्यु, भय, क्लेश तथा मनस्ताप मेरे सदैव दूर हो जायें।। ८।। अतिवक्र, दुराराध्य भगवान् मङ्गल, आप प्रसन्न होने पर साम्राज्य दे सकते हैं, पर नाराज़ होने पर तुरन्त ही साम्राज्य को नष्ट भी कर देते हैं।। ९।। हे महाराज ! आप नाराज़ होने पर ब्रह्मा, इन्द्र तथा विष्णु के भी साम्राज्य-सम्पत्ति को नष्ट कर सकते हैं फिर मनुष्य की तो बात ही क्या है ? इस प्रकार के पराक्रम से युक्त होने के कारण आप महाबलवान् ग्रहराज हैं।। १०।। हे भगवन् ! आप मुझे पुत्र दें, धन देवें, मैं आपकी शरण में हूँ। ऋण, दारिद्रय, दुःख तथा शत्रु के भय से मुझे मुक्त करें।। ११।। इन बारह श्लोकों वाले इस **'ऋणमोचन-मङ्गल-स्तोत्र'** से जो लोग मङ्गल की स्तुति करते हैं, उनको प्रचुर-भरपूर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, वह इस पृथ्वी तल में दूसरा कुबेर तथा सदा युवा बना रहता है।। १२।।

*इस प्रकार स्कन्दपुराण में वर्णित भार्गव-ऋषि द्वारा कहा गया ऋणमोचन-मङ्गल-स्तोत्र सम्पूर्ण।*

## (4) ऋण मुक्ति के लिए कुछ उपयोगी मन्त्र

(1) कुश की जड़, बिल्व का पञ्चाङ्ग (पत्र, फल, बीज, लकड़ी और जड़) तथा सिन्दूर-इन सबका चूर्ण बनाकर चन्दन की पीठिका पर नीचे लिखे मन्त्र को लिखे। तदनन्तर पञ्चोपचार से पूजन करके गोघृत से 44 दिनों तक प्रतिदिन सात बार संक्षिप्त हवन करें। मन्त्र की जप संख्या कम-से-कम 10 हज़ार है, जो 44 दिनों में पूरी होनी चाहिए। 43 दिनों तक प्रतिदिन 228 मन्त्रों का जाप हो और 44वें दिन 196 मन्त्रों का। तदनन्तर १०००० मन्त्र का जप, जप के बाद उसका दशांश १००० हवन या जपादि करना आवश्यक है। मन्त्र यह है-

**ॐ आं ह्रीं क्रौं श्रीं श्रियै नमः ममालक्ष्मीं नाशय नाशय मामृणोत्तीर्णं कुरु कुरु सम्पदं वर्धय वर्धय स्वाहा।।**

(2) निम्न मन्त्र का एक वर्ष तक निरन्तर 1100 जप करने से साधक (कर्त्ता) शीघ्र ही ऋणमुक्त हो जाता है। साथ ही ऋणहर्ता गणेश स्तोत्र का भी पाठ कर लेना चाहिए-

**मन्त्र-ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट्।।**

(3) **ऋण-मुक्ति गणेश स्तोत्रम्-**

***विनियोगः*-अस्य श्रीऋणविमोचनमहागणपतिस्तोत्रमन्त्रस्य शुक्राचार्य ऋषिः, ऋणविमोचन महागणपतिर्देवता, अनुष्टुप् छन्दः, ऋणविमोचनमहागणपतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।**

**ॐस्मरामि देवदेवेशं वक्रतुण्डं महाबलम्। षडक्षरं कृपासिन्धुं नमामि ऋणमुक्तये।। १।।**
**महागणपतिं वन्दे महासेतुं महाबलम्। एकमेवाद्वितीयं तु नमामि ऋणमुक्तये।। २।।**
**एकाक्षरं त्वेकदन्तमेकं ब्रह्म सनातनम्। महाविघ्नहरं देवं नमामि ऋणमुक्तये।। ३।।**
**शुक्लाम्बरं शुक्लवर्णं शुक्लगन्धानुलेपनम्। सर्वशुक्लमयं देवं नमामि ऋणमुक्तये।। ४।।**
**रक्ताम्बरं रक्तवर्णं रक्तगन्धानुलेपनम्। रक्तपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये।। ५।।**
**कृष्णाम्बरं कृष्णवर्णं कृष्णगन्धानुलेपनम्। कृष्णयज्ञोपवीतं च नमामि ऋणमुक्तये।। ६।।**
**पीताम्बरं पीतवर्णं पीतगन्धानुलेपनम्। पीतपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये।। ७।।**
**सर्वात्मकं सर्ववर्णं सर्वगन्धानुलेपनम्। सर्वपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये।। ८।।**
**एतदृणहरं स्तोत्रं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः। षण्मासाभ्यन्तरे तस्य ऋणच्छेदो न संशयः।। ९।।**
**सहस्रदशकं कृत्वा ऋणमुक्तो धनी भवेत्।। १०।।**

## (5) सन्तान कामेश्वरी मन्त्र

**'शक्ति उपासना'** में सन्तान कामेश्वरी का बड़ा महत्त्व है। जिन महिलाओं को गर्भ निरोध हो जाता है अथवा किसी कारण से सन्तान प्राप्ति नहीं होती, उनके लिए यह मंत्र शीघ्र फलदायक है। अपने संकल्प के साथ भगवती का पूजन करके ध्यान करना चाहिए।

**ध्यान- भजे कामेश्वरीं देवीं शिवांके रूपसन्निभाम्।**
**व्रतानुष्ठान मात्रेण आशु सन्तान वर्धिनीम्॥**

**विनियोग**-अस्य श्रीसन्तानकामेश्वरी महामंत्रस्य मन्मथ ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः श्रीसन्तानकामेश्वरी देवता क्लीं बीजं श्रीं शक्तिः श्रीं कीलकं (अमुक्याः) मम सन्तान प्राप्तये वृद्धये जपे विनियोगः।

**-अथ जपनीय मन्त्र-**

**ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवति सन्तानकामेश्वरि गर्भविरोधं।**
**निरासय निरासय सम्यक् शीघ्रं सन्तानमुत्पादयोत्पादय स्वाहा॥**
**श्रीकामेश्वरी यै अर्पणमस्तु**

सवा लाख जाप के पश्चात् दशांश हवन, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन भी करवाएँ। कन्या पूजन करके आरम्भ करें। सन्तान अवश्य होती है।

## (6) सन्तान प्राप्ति के कुछ टोटके

(1) जो सन्तान पैदा करने में सक्षम हों और फिर भी उन्हें सन्तान न हुई हो तो वे अपने निवास के मुख्यद्वार पर बालक गणपति की मूर्त्ति या चित्र लगाएं तथा पति-पत्नी दोनों गणपति के 108 नामों का उच्चारण करें। नित्य प्रातः **'संतान गणपत्ये नमः गर्भदोषहरो नमः पुत्र पौत्राय नमः'** मंत्र का सवा लाख जप करें।

(2) संतान न होने के कारण सदा चिंतित रहने वाली महिला बागवानी करें तथा नित्य पौधे रोपकर उनकी देखभाल करें, उन्हें फलने-फूलने दें।

(3) पुत्र की अभिलाषा वाले पति-पत्नी एक मास तक भोजनोपरांत किसी पीली वस्तु का सेवन करें। दूसरे मास में पीला वस्त्र अवश्य पहनें। तीसरे मास में सामर्थ्यनुसार धन के साथ कोई पीली वस्तु दान करें। *विशेष जानकारी के लिए 'सुतभाव प्रकाश' (लेखक : पं. पन्ना लाल ज्यो.) पुस्तक पढ़ें।*

## (7) दाम्पत्य सुख एवं शत्रु विजय हेतु हनुमान प्रयोग

शुक्ल पक्ष के मंगलवार से प्रारम्भ कर यह प्रयोग लगातार ७ या ११ मंगलवार करें। यदि सम्भव हो तो प्रतिदिन करें। हनुमान जी की प्रतिमा लेकर चन्दन, पीला सिन्दूर और देसी घी से तिलक लगाएं। श्री हनुमान जी से इसी बात की प्रार्थना करनी है कि जिस प्रकार आपने सीता और श्रीराम का मिलन करवाया था, उसी प्रकार मुझे मेरे पति की प्राप्ति कराएं।

**''दारिद्रदु:खदहनं विजयं विवादे, कल्याण साधनममंगलवारणं च।**
**दाम्पत्यदीर्घसुखसर्वमनोरथाप्तिम, श्री मारुते: स्तवमहो नितरां तनोति॥''**

हर बार मन्त्र उच्चारण के पश्चात् ललाट से पूँछ तक तिलक लगाएं, तत्पश्चात् पूंछ से ललाट तक पुन: यही क्रिया सम्पन्न करें। प्रतिदिन कम-से-कम २१ बार अवश्य इस मन्त्र का जप करें। प्रति मंगलवार एक माला का पाठ करें। मन्त्र जप करते हुए मन ही मन हनुमान जी से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हे हनुमान ! जिस प्रकार आपने माता सीता को उनके अधीष्ठ राम से मिलवाया था, उसी प्रकार मेरे मार्ग की सभी बाधाओं तथा विपदाओं का शमन कर मुझे मेरे पति से मिलाने की कृपा करें।

## (8) अभीष्ट वर प्राप्ति के लिए विभिन्न मन्त्र

जिस कन्या के विवाह-कार्य में बार-बार विघ्न-बाधाएँ पड़ती हों। उसको गुरु-पुष्य, रवि पुष्य, अक्षया तीज, श्रावण मास में, दीपावली, बसन्त अथवा नवरात्रों में निम्नलिखित मन्त्र का आरम्भ करके यथेष्ठ संख्या में ५१ हज़ार अथवा सवा लाख की संख्या में नियमित रूप में, शिव-पार्वती अथवा माता के मन्दिर में धूप, दीप जलाकर पीले एवं लाल पुष्प चढ़ाकर सुनिश्चित समय में नियमित रूप से संकल्पपूर्वक एवं विधिवत् जप करना चाहिए। इससे देवी की कृपा से अवश्य कामना सिद्धि होती है-

**(१) ॐ ह्रीं गौर्ये नमः- हे गौरि शंकरार्धांगि यथा त्वं शंकर प्रिया।**
**तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्॥**

(हे गौरी, शङ्कर की अर्द्धाङ्गिनी ! जिस प्रकार तुम शङ्कर की प्रिया हो, उसी प्रकार हे कल्याणी ! मुझ कन्या को दुर्लभ वर प्रदान करो।)

**एक अन्य उपयोगी मन्त्र-**

**(२) ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिनी अधीश्वरी।**
**नन्दगोपसुते देवि ! पतिं मे कुरू ते नमः॥**

(हे कात्यायनि, महामाया, महायोगिनियों की अधीश्वरि ! मुझे भगवान् कृष्ण सदृश पति प्रदान करो ! तुम्हें नमस्कार है।)

**(३) ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्रप्रियभामिनी।**
**विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रं लाभं च देहि मे॥**

(ॐ देवेन्द्राणि ! देव इन्द्र की प्रिय पत्नी ! तुम्हें नमस्कार है। मुझे विवाह, भाग्य, आरोग्य और शीघ्र लाभ प्रदान करें।)

इस मन्त्र का भी प्रतिदिन कम से कम 108 बार लगातार अभीष्ट सिद्धि तक करते रहें। जप करने से पहले प्रतिष्ठित तुलसी-पादप की पूजा करके 12 परिक्रमाएँ करें, तदनन्तर दाएँ हाथ से दुग्ध और बाएँ हाथ से जल द्वारा श्रीसूर्यनारायण को 12 बार समन्त्र अर्घ्य दें। तदनन्तर जप करें। इस प्रकार प्रतिदिन अर्घ्यदान और जप करने से तथा प्रयास करते रहने से शीघ्र कार्य सिद्धि होगी।

**(४) मन्त्र- ''ॐ शं शङ्कराय सकल जन्मार्जित पापविध्वंसनाय।**
**पुरुषार्थचतुष्टयलाभाय च पतिं देहि कुरु कुरु स्वाहा॥''**

(हे समस्त जन्मों में अर्जित पापों के विध्वंसक भगवान शङ्कर ! पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति के लिए अनुकूल पति प्रदान करो। नमस्कार है, नमस्कार है।)

अशुभ ग्रहों के प्रभाव से निवारर्णाथ तथा आर्थिक समस्याओं से पीड़ित जातिका को शिव-पार्वती की सविधि पूजा करनी चाहिए। प्रतिदिन 3 माला कम से कम 40 दिन या अभीष्ट प्राप्ति तक करें। केले के पौधे पर अथवा उसका स्तम्भ (टाहनी) पर मौली की 11 आवृत्तियां लपेटकर इस मन्त्र का जप करें। जप समाप्ति पर पौधे की परिक्रमा करें। जो कन्या नित्यप्रति इस मन्त्र का जाप करती है, उसका शीघ्र विवाह होता है।

## (9) मनोवांछित पत्नी प्राप्ति के लिए

**(१) पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।**
**तारिणीं दुर्गसंसार सागरस्य कुलोद्भवाम्॥ (दुर्गा. सप्त., २४)**

प्रात:काल शुद्ध होकर दुर्गाजी के चित्रपट या मूर्ति पर लाल पुष्प समर्पित करें। दीप प्रज्वलित करके षोडशोपचार पूजन करें, तथा उपर्युक्त मन्त्र की कम से कम 5 माला प्रतिदिन जप करें। किसी ब्राह्मण से जप कराना हो तो भी एक माला जप स्वयं विवाह सम्पन्न होने तक करना चाहिए। साथ ही दुर्गासप्तशती का इसी मन्त्र से सम्पुट करके 18 पाठ करना या कराना चाहिए। सम्पूर्ण जानकारी के लिए हमारी पुस्तक 'दुर्गा सप्तशती' (भाषा-टीका) पढ़ें।

**(२) 'ॐ क्लीं विश्वावसुर्नाम गन्धर्व: कन्यानामधिपतिं लभामि**
**देवदत्तां कन्यां सुरुपां सालंकारां तस्मै विश्वावसवे स्वाहा।'**

सवा लाख जप करने या कराने के बाद दशांश हवन, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन अवश्य कराना चाहिए।

## (10) सर्वव्याधि नाश के लिए महामृत्युञ्जय मंत्र

**ॐ हौं जूँ स:, ॐ भूर्भुव: स्व:। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्व: भुव: भू: ॐ। स: जूँ हौं ॐ।**

**अर्थ**-हम परमपिता त्रयम्बक (भगवान् शिव) की आराधना करते हैं। वह परमसुखदायक एवं पुष्टिवर्धक हैं। जैसे तरबूज आदि फल (पक जाने पर स्वयं ही) बेल से छूट जाता है, वैसे ही (पूर्ण आयु भोगकर) मैं मृत्युमय जीवन से (बिना कष्ट भोगे) छूट जाऊँ, परन्तु अमृतमय जीवन से मत छुटूँ। पूजन विधि तथा महामृत्युञ्जय मन्त्र के विविध स्वरूप, यन्त्र आदि जानने के लिए हमारी प्रकाशित पुस्तक **'शिव मन्त्रावली'** का अध्ययन करें।

## (11) कालसर्प दोष निवारण रक्षक मन्त्र

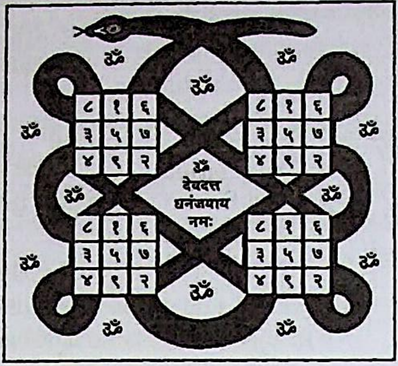

कालसर्प यंत्र को शनि प्रदोष के दिन, शिवरात्रि, नागपंचमी या अनन्तचतुर्दशी के दिन ताम्र पत्र पर खुदवाकर या भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही तथा अनार की कलम से लिखकर निम्न मंत्र द्वारा 21 बार अभिमन्त्रित करके अपने सिर से तीन बार Anticlock घुमाकर चलते पानी में बहा देवें।

*मन्त्र–*

**ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः।**
**ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।**
**ॐ सर्पेभ्यो नमः।।**

## (12) शत्रुविजयी, महाकल्याणकारी श्रीबगुलामुखी महामन्त्र (उपासना)

श्रीबगला महाविद्या की उपासना गुरु के सान्निध्य में रहकर सतर्कता, इन्द्रियनिग्रहपूर्वक सफलता की प्राप्ति होने तक प्रयत्नपूर्वक करते रहना चाहिए।

आपका विरोधी अथवा शत्रु आपको अन्यायपूर्वक तंग कर रहा हो अथवा राजकीय रुकावटों के कारण उपयुक्त प्रमोशन न मिल पा रहा हो अथवा व्यवसाय में गुप्त शत्रु हानि पहुँचाने का यत्न करते हों अथवा आपको अनावश्यक रुपेण, झगड़े आदि में फंसाया जा रहा हो तो निम्न श्री बगुलामुखी मन्त्र विशेष सहायक सिद्ध होता है।

साधक को गुरु से बगला मन्त्र का उपदेश ग्रहण कर ब्रह्मचर्यपूर्वक देवीमन्दिर में, पर्वतशिखर पर, शिवालय में, गुरु के समीप या जैसी सुविधा हो पीताचार से बगलामहामन्त्र का पुरश्चरण करना चाहिए। महाविद्या बगुलामुखी का ३६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है–

**"ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदम्।**
**स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्रीं ॐ स्वाहा॥"**

मन्त्र के जपादि के विषय में बगलापटल (सिद्धेश्वर तन्त्र) में विशेष विधान बताए हैं, जो इस प्रकार हैं–

**पीताम्बरधरो भूत्वा पूर्वाशाभिमुखः स्थितः। लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं हरिद्राग्रन्थिमालया॥**
**ब्रह्मचर्यरतो नित्यं प्रयतो ध्यानतत्परः। प्रियङ्गुकुसुमेनापि पीतपुष्पैश्च होमयेत्॥**

बगला के जप में पीले रंग का विशेष महत्त्व है। जपकर्त्ता को पीला वस्त्र पहनकर हल्दी की गाँठ की माला से जप करना चाहिए। देवी की पूजा और होम में पीले पुष्पों, प्रियङ्गु, कनेर, गेंदा आदि के पुष्पों का प्रयोग करना चाहिए। शुचिर्भूत हो पीले कपड़े पहनकर साधक पूर्वाभिमुख बैठकर ही जप करें। इसे ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्यतः करना चाहिए। जप के पूर्व पूर्वाभिमुख आसन पर बैठकर आसनशुद्धि, भूशुद्धि, भूतशुद्धि, अङ्गन्यास, करन्यास आदि करना चाहिए। जप संख्या एक लाख बतलाई गई है। विशेष बात यह बताई है कि प्रतिदिन जप के अन्त में दशांश होम पीले पुष्पों से अवश्य करना चाहिए।

महाविद्या बगुलामुखी का ध्यान निम्नलिखित है, जो जप से पूर्व करणीय है–

**सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं,**
**हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।**
**हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररसनाः सम्बिभ्रतीं भूषणैः,**
**व्याप्ताङ्गीं वगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥**

## (13) जड़ी–बूटियों से अनिष्ट ग्रहों की शान्ति

हमारे परम दयालु महार्षियों ने (जो लोग बहुमूल्य रत्नों को धारण करने में असमर्थ हैं– उनके) ग्रह दोषों की शान्ति के लिए जड़ी–बूटी को धारण करना भी बतलाया है। वह इस प्रकार समझें–

**सूर्य पीड़ाकारक** हो तो बेलपत्र की जड़ गुलाबी डोरे में रविवार को धारण करें। **चन्द्र पीड़ाकारक** हो तो क्षीरणी (खिरनी) की जड़ सफेद डोरे में सोमवार को, **मंगल पीड़कारक** हो तो अनन्तमूल की जड़ लाल डोरे में मंगलवार को, **बुध पीड़ाकारक** हो तो विधारा की जड़ हरे डोरे में बुधवार को। **गुरु पीड़ाकारक** हो तो नारंगी या **केले की जड़** पीले डोरे से गुरुवार को, **शुक्र पीड़ाकारक** हो तो सरपंखा या सरकंडे की जड़ सफेद डोरे में शुक्रवार को धारण करें। **शनि पीड़ाकारक** हो तो बिच्छू की जड़ काले डोरे में शनिवार को धारण करें। **राहु पीड़ाकारक** हो तो सफेद चन्दन नीले डोरे में बुधवार को धारण करें। **केतु पीड़ाकारक** हो तो असगन्ध की जड़ आसमानी डोरे में गुरुवार को धारण करें।

**नवग्रङ पीड़ा निवारक यन्त्र**

| | | |
|---|---|---|
| ८<br>ॐ ह्रीं राहवे नमः | १<br>ॐ ह्रीं सूर्याय नमः | ६<br>ॐ ह्रीं शुक्राय नमः |
| ३<br>ॐ ह्रीं भौमाय नमः | ५<br>ॐ ह्रीं गुरवे नमः | ७<br>ॐ ह्रीं शनये नमः |
| ४<br>ॐ ह्रीं बुधाय नमः | ९<br>ॐ ह्रीं केतवे नमः | २<br>ॐ सो सोमाय नमः |

उपर्युक्त यन्त्र को नवग्रह स्तोत्र के पाठ उपरान्त अष्टगन्ध से एवं भोजपत्र पर सप्त या अष्टधातु की प्लेट पर खुदवा कर शुभ मुहूर्त्त कालीन दानपूर्वक अपने पास रखने से नवग्रह जनित नेष्टफल दूर हो जाता है।

*चैत्र प्रतिपदा, अक्षय तृतीया, दशहरा, दीपावली की रात, अयनकाल, ग्रहणकाल, सायनसंक्रांतिकाल, पूर्णिमा, गुरुपुष्ययोग, त्रिपुष्कर आदि योग भी शुभ मुहूर्त्त काल माने जाते हैं।*

## (14) व्यापार में वृद्धिकारक लक्ष्मी–मन्त्र

## (14) व्यापार में वृद्धिकारक लक्ष्मी–मन्त्र

कठिन परिश्रम करने पर भी व्यापार में हानि हो, तो इस यंत्र का आश्रय लें। इसको भोजपत्र पर केसर की स्याही से अनार की कलम द्वारा अंकित करना चाहिए। दीपावली की रात्रि में यह साधना सर्वाधिक लाभकारी होती है। अत: उसी रात्रि यंत्र को लिखकर धूप-दीप से पूजा करके **'ॐ श्रीम् ह्रीं क्लीम् ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः'**–इस मंत्र की 11 माला का जप करें। जप के समय यन्त्र के सम्मुख घी का अखण्ड दीपक जलता रहे। बाद में इस यन्त्र को दुकान या प्रतिष्ठान में स्थापित कर दें और नित्य धूप-दीप द्वारा पूजा करते रहें। इस यंत्र को सोना, चाँदी अथवा ताँबे के लॉकेट अथवा प्लेट पर खुदवाकर, उस पर पूजा के पश्चात् शुभ मुहूर्त में धारण करने से व्यापार में सब प्रकार की बाधाएं दूर होंगी।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १६ | ९ | ४ | ५ |
| ३ | ६ | १५ | १० |
| १३ | १२ | १ | ८ |
| २ | ७ | १४ | ११ |

## योगिनी दशाओं के अरिष्ट शमन हेतु मन्त्र

**मंगला–ॐ ह्रीं मङ्गले मङ्गलायै स्वाहा।।**
**पिंगला–ॐ ग्लौं पिङ्गले वैरिकारिणी प्रसीद फट् स्वाहा।**
**धान्या–ॐ श्रीं धनदे धान्यै स्वाहा।।**
**भ्रामरी–ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरी भ्रामरी क्लीं स्वाहा।।**
**भद्रिका–ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा।।**
**उल्का–ॐ उल्के मम रोगं नाशय जृम्भय स्वाहा।।**
**सिद्धा–ॐ ह्रीं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय स्वाहा।।**
**संकटा–ॐ ह्रीं सङ्कटे मम रोगं नाशय स्वाहा।।**

## अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय एवं टोटके

प्रस्तुत पुस्तक में व्रत-धारण, मंत्र-यन्त्र प्रयोग, दुर्लभ स्तोत्र, ग्रह राशि अनुसार उपयुक्त रत्न, जड़ी-बूटी धारण विधि, सूर्यादि ग्रह पूजन, ध्यानादि मंत्रानुष्ठान करने की सरल विधियां दी गई हैं। इसके अतिरिक्त ग्रहों, नक्षत्रों एवं राशियों से सम्बन्धी ज्योतिष की प्रारम्भिक जानकारी, ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति का निर्णय, लड़के/लड़की के विवाह में विलम्ब के कारण व उपाय, **मंगलीक दोष, कालसर्प योग**, संतान में बाधाकारक योग, पितृदोष योग, विदेश यात्रा आदि योगों में विघ्न एवं उनके **शास्त्रसम्मत** उपाय व स्तोत्र, जैसे-मंगल चण्डिका, नीलकण्ठ, सर्प स्तोत्र, पुत्रदायक श्रीगणेश स्तोत्र, नवग्रह स्तोत्र एवं नवग्रह कवच इत्यादि आदि दुर्लभ स्तोत्रों का विवरण दिया गया है जोकि उपरोक्त दोषों के लिए विशिष्ट, शास्त्रसम्मत एवं अचूक उपाय माने जाते हैं। इस पुस्तक में ज्योतिष जगत में चर्चित 'लालकिताब' के अनुसार कुण्डली में प्रत्येक भावानुसार विशेष उपायों का भी समावेश किया गया है। ज्योतिष में रुचि रखने वाले, विद्यार्थियों, ज्योतिषियों एवं कर्मकाण्डी पण्डितों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। **मूल्य–250/- रु.**

## ● सोमवती, भौमवासरी आदि अमावस्या का माहात्म्य ●

सोमवार से युक्त अमावस्या का शास्त्रों में विशेष माहात्म्य कहा गया है। स्कन्द पुराण के अनुसार सोमवार और अमावस्या का योग कभी-कभी होता है। इस दिन भगवान शिव के दर्शन करके पूजन आदि करने का विशेष महत्त्व होता है। विशेषकर सोमेश्वर महादेव की पूजार्चना करने से कोटि (करोड़ों) यज्ञों का फल प्राप्त होता है–

**अमासोमेन संयुक्ता कदाचिद् यदि लभ्यते। तस्यां सोमेश्वरं दृष्ट्वा कोटियज्ञफलं लभेत्॥**

सोमवती अमावस्या को तीर्थ स्थान, जप, पाठ एवं ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दक्षिणादि सहित दान करना विशेष पुण्यप्रद माना गया है।

**पुरुषार्थ चिन्तामणि** के अनुसार, यदि अमावस्या सोमवार या मंगलवार अथवा गुरुवार को हो तो उस योग के पर्व को **पुष्कर योग** कहते हैं। इन योगों का फल सूर्यग्रहणों में किए हुए दान-पुण्य से सौ गुणा अधिक होता है–

**अमा सोमे तथा भौमे गुरुवारे यदा भवेत्। तत्पर्व पुष्करं नाम सूर्यपर्वशताधिकम्॥**

स्नानदान आदि पुण्य कर्मों में मंगलवारी अमावस्या भी सोमवती अमावस्या के समान मनानी चाहिए। यदि मंगलवारी अमावस्या हो तो गंगा के स्नानमात्र से सहस्त्र गौओं के दान का फल प्राप्त होता है–

**स्नानदानादौ भौमवती अपि सोमवती समा ज्ञेया। अमावस्या भवेद्वारे यदा भूमिसुतस्य वै।**
**जाह्नवी स्नान-मात्रेण गोसहस्त्रफलं लभेत्। –हेमाद्रौ शातातप**

सोमवार से युक्त अमावस्या हो तो वह अनन्त फल देने वाली और पितृगणों को दिया हुआ श्राद्ध अक्षय होता है–

**सोमवारेण संयुक्ता अमावस्या यदा भवेत्। तत्रानन्तफलं श्राद्धं पितृणां दत्तभक्षयम्॥**

सोमवती एवं मंगलवारी अमावस्या के विशिष्ट योग में पितृदोष शान्ति, सम्पदा सम्बन्धी परेशानियां, लड़के/लड़की के विवाह में विलम्ब, सन्तान एवं क्लिष्ट रोगों की शान्ति तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्म शुद्धि, स्नानदान, जप-पाठ आदि का विशेष माहात्म्य होता है। इसदिन व्रत धारण करके भगवान श्रीविष्णु एवं शिवपूजन, चन्द्रपूजन तथा पीपल वृक्ष की गंगाजल, तिल युक्त दुग्ध, पुष्पाक्षत एवं पुष्प-फल-मिष्ठान से धूप-दीप आदि से पूजन करके 108 प्रदक्षिणा के उपरान्त ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन, वस्त्र, फलों का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है।

## वर्ष 2024–25 ई. में प्रमुख अमावस्याएँ

| | | | |
|---|---|---|---|
| चैत्र (सोमवती) | 8 अप्रै. सोम | पौष (सोमवती) | 30 दिसं. सोम |
| भाद्रपद (सोमवती) | 2 सितं., सोम | चैत्र (शनैश्चरी) | 29 मार्च, शनि |

# ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड सम्बन्धी 'समस्याएँ एवं समाधान (प्रश्नोत्तर)'

परिलेख : पं. विवेक शर्मा

**समस्या (1) : क्या आश्विन कृष्णपक्ष में किए जाने वाले मृत्युतिथि-अनुसार पार्वण श्राद्ध के इलावा एकोद्दिष्ट श्राद्ध भी करना आवश्यक है ?**

**समाधान**—शास्त्रानुसार सपिण्डीकरण के पश्चात् प्रतिवर्ष पुत्र माता-पिता का पृथक्-पृथक् एकोद्दिष्ट श्राद्ध करना चाहिए। माता-पिता की मृत्युतिथि के दिन एकोद्दिष्ट श्राद्ध करना चाहिए। जो व्यक्ति एकोद्दिष्ट श्राद्ध का त्यागकर केवल पार्वण-श्राद्ध करता है, वह न करने समान है और वह मनुष्य पितरों का घातक (हत्यारा) माना गया है। **'मातपित्रोः पृथक्-कार्यम्-एकोद्दिष्टं-मृतेहनि।।' व्यासः- 'एकोद्दिष्ट तु कर्त्तव्यं पित्रोश्चैव मृतेहनि। एकोद्दिष्टं परित्यज्य पार्वणं कुरुते नरः।। अकृतं तद्विजानीयाद्-भवेञ्च पितृघातकः।।'** (निर्णयसिन्धुः)

**समस्या (2) : (*i*) यदि कोई व्यक्ति अपने किसी आत्मीय का गत 8-10 मास से मासिक श्राद्ध कर रहा हो, तो क्या अधिक (मल) मास में मासिकश्राद्ध करना चाहिए ?**

**(*ii*) यदि वार्षिकी से पहले अधिक मास आ जाए, तो कौन-से मास वार्षिकी (द्वादशमासिक) करनी चाहिए ?**

**संयुक्त-समाधान**—अधिक मास में भी मासिक श्राद्ध करना चाहिए। क्योंकि यदि वार्षिकी (द्वादशमासिक) से पूर्व अधिक मास आ जाए तो मासिक श्राद्ध करके त्रयोदश (१३) मास में ही प्रथमाब्दिक को करे और जब वार्षिकी अधिक मास के मध्य में आ रही हो तब मासिक श्राद्ध की दो बार आवृत्ति करके चौदहवें शुद्ध मास में ही प्रथमाब्दिक (वार्षिकी) को करें।

**उदाहरण**—यदि किसी व्यक्ति की मृत्यु भाद्रपद शुक्ल तृतीया, वि संवत् २०७९ (सन् 2022 ई. में) हुई, तो उसके निमित्त वार्षिक श्राद्ध द्वितीय शुद्ध श्रावण शुक्ल तृतीया को होगा (क्योंकि वि संवत् २०८० में श्रावण अधिक मास था।) श्राद्धकर्त्ता को अधिक श्रावण में मासिक श्राद्ध ही करना चाहिए। धर्मसिन्धुकार का यह वाक्य देखिए-

**प्रथमाब्दिकं त्रयोदशे मलमासे कार्यमित्युक्तम्। तेन यत्र द्वादशमासिकं शुद्ध मास भवति तत्र त्रयोदशेधिक एव प्रथमाब्दिकं कार्यम्।। यदा त्वधिकमध्ये द्वादशमासिकं तदा द्वादशमासिकस्य द्विरावृत्तिं कृत्वा चतुर्दशे शुद्धे मासे प्रथमाब्दिकं।**

**समस्या (*iii*)-अधिक (मल) मास में किसी की मृत्यु हो जाए, तो उसकी शुद्धि/सांवत्सरिक श्राद्ध कब होगा ?**

**समाधान**—यदि किसी की मलमास में मृत्यु हो जाए, तो उसका सांवत्सरिक श्राद्ध चतुर्थ वर्ष मलमास में ही होगा, शुद्ध में नहीं।

**'मलमासमृतानां तु यदा स एव मलमासो भवति।। तदाधिक एव सांवत्सरिकं न शुद्धे।।'** (धर्मसिन्धु)

**समस्या (3) : क्या सगे भाइयों/बहनों का विवाह एक ही वर्ष में करना चाहिए?**

**समाधान**—वीरमित्रोदय-संस्कार प्रकाश में स्मृतिरत्नावली के वचन से बताया गया है कि एक ही माता से उत्पन्न होने वाले सन्तानों का एक ही संवत्सर (एक वर्ष) के भीतर विवाह नहीं करना चाहिए तथा विवाह के अनन्तर मुण्डन-(उपनयन) नहीं करना चाहिए। **एकोदरप्रसूतानामेकस्मिन्वत्सरे पुनः।**

**विवाहं नैव कुर्वीत मण्डनोपरि मुण्डनम्।।**

गर्ग के मतानुसार यदि माता भिन्न हो तो अर्थात् मातृभेद होने पर एक वर्ष के भीतर भी पुत्र अथवा पुत्री का विवाह किया जा सकता है-**'मातृभेदे विधीयते।।'**

पुनः व्यवस्था में कहा गया है कि यदि एक वर्ष परिहार करने में असमर्थता हो तो छः मास का परिहार अवश्य करना चाहिए अर्थात् एक माता से उत्पन्न (सहोदरों)-का छः महीने के भीतर विवाह नहीं करना चाहिए-**'वत्सरपरिहाराशक्तौ षष्मासं वा परिहरेत्।'** (संस्कारप्रकाश)

मदनरत्न में बताया गया है कि यदि छः महीने के मध्य में ही संवत्सर परिवर्तित हो रहा हो तो सहोदरों का भी विवाह हो सकता है-

**ऋतुत्रयस्य मध्ये चेदन्याब्दस्य प्रवेशनम्।**
**तदा ह्येकोदरस्यापि विवाहस्तु प्रशस्यते।।** (वीरमित्रोदय-संस्कार प्रकाश)

**समस्या (4) : क्या एक ही महीने के भीतर एक घर में दो शुभ कार्य (हवनादि) किए जा सकते हैं ?**

**समाधान**—एक ही घर में नौ दिन के भीतर दो शुभ कार्य नहीं करने चाहिए, किन्तु यदि अवश्य करणीयता हो तो द्वारभेद (कक्षभेद), गृहभेद अथवा आचार्य के भेद से किए जा सकते हैं तथा एक ही घर में सोदरों (एक ही माता) के तीन हवन-कर्म नहीं करने चाहिये, यदि भिन्नोदर (माता अलग-अलग) हों तो दोष नहीं होता-

**द्विशोभनं त्वेकगृहेऽपि नेष्टं शुभं तु पश्चान्नवभिर्दिनैस्तु।**
***आवश्यकं शोभनमुत्सुको वा द्वारेऽथवाऽऽचार्य विभेदतो वा।।***

शुद्धि/सांवत्सरिक श्राद्ध कब होगा ?

आवश्यकं शोभनमुत्सुको वा द्वारेऽथवाऽऽचार्य विभेदतो वा।।

**एकोदरप्रसूतानां नाग्निकार्यत्रयं भवेत्।**
**भिन्नोदर प्रसूतानां नेति शातातपोऽब्रवीत्।।** (वसिष्ठ)

**समस्या ( 5 ) : कृपया पुत्र और पुत्री के विवाह की व्यवस्था शास्त्रानुसार स्पष्ट करें ?**

**समाधान**—पुत्र के विवाह के अनन्तर छः मास से पहले कन्या का विवाह नहीं करना चाहिए। बिना कन्या को श्वशुर-गृह में पहुँचाये अपने घर में वधू का प्रवेश नहीं कराना चाहिए अर्थात् कन्या के विवाह के अनन्तर ही पुत्र का विवाह करना चाहिए–

**उर्ध्वं विवाहात्तनयस्य नैव कार्यो विवाहो दुहितुस्समार्द्धम्।**
**अप्राप्य कन्यां श्वशुरालयं तु वधूः प्रवेश्या स्वगृहं न चादौ।।**
(संस्कार प्रकाश संहिताप्रदीपानुसार)

मुहूर्त्तचिन्तामणि में उपर्युक्त बातों को इस प्रकार से बताया गया है–

पुत्र के विवाह से छः महीने पर्यन्त कन्या का विवाह न करना तथा विवाह (मण्डन)-से छः महीने तक मुण्डन-चौल, उपनयन और महानाम्नयादि व्रत नहीं करना चाहिए। यदि बीच में संवत्सर बदल जाए जैसे-फाल्गुन में पुत्र का विवाह हो तो वैशाख में मुण्डन अथवा कन्या का विवाह हो सकता है। यह नियम तीन पीढ़ी सापिण्डय के लिए है। मंगल (विवाह)-के बाद छः महीने तक पितृ-क्रिया-श्राद्धादि का, सहोदर भाईयों को सहोदर कन्या देने का तथा सहोदरों का विवाह छः महीने के भीतर करने का निषेध है। कन्या के विवाह के अनन्तर चार दिन बाद पुत्र का विवाह हो सकता है, परन्तु एकोदरप्रसूत कन्या-पुत्र अथवा पुत्र-पुत्र अथवा कन्या-कन्या का विवाह छः महीने पर्यन्त नहीं होता–

**सुतपरिणयात्षण्मासान्तः सुताकरपीडनं, न च निजकुले तद्वद्वा मण्डनादपि मुण्डनम्।**
**न च सहजयोर्देये भ्रात्रोः सहोदरकन्यके, न सहजसुतोद्वाहोऽब्दार्द्धे शुभे न पितृक्रिया।।**
(मु. चिंतमणि)

**समस्या ( 6 ) : क्या बड़े भाई/बहिन के अविवाहित रहते छोटे भाई/बहिन का विवाह किया जा सकता है ?**

**समाधान**—बड़े भाई के अविवाहित रहते जो छोटा भाई अपना विवाह कर लेता है तथा अग्निहोत्र ग्रहण कर लेता है, वह छोटा भाई 'परिवेत्ता' तथा बड़ा भाई 'परिवित्ति' कहलाता है। परिवेत्ता, परिवित्ति, जिस कन्या से विवाह होता है वह, कन्यादान करने वाला तथा याजक (उस विवाह में हवनादि करने वाला ब्राह्मण)-ये पाँचों नरक को जाते हैं, अतः बड़े भाई के अविवाहित रहते छोटे भाई का विवाह नहीं किया जाता–

**दाराग्निहोत्रसंयोगं कुरुते योऽग्रजे स्थिते। परिवेत्ता स विज्ञेयः परिवित्तिस्तु पूर्वजः।।**
**परिवित्ति परिवेत्ता यया च परिविद्यते। सर्वे ते नरकं यान्ति दातृयाजकपञ्चमाः।।**
(मनुस्मृति)

जिस प्रकार बड़े भाई के विवाह से पूर्व छोटे भाई का विवाह नहीं किया जाता, उसी प्रकार बड़ी बहन के विवाह से पूर्व छोटी बहिन का विवाह भी नहीं होता। यदि बड़ी बहिन के अविवाहित रहते ही छोटी बहिन का विवाह हो जाए तो बड़ी बहिन 'दिधिषू' तथा छोटी बहिन 'अग्रेदिधिषू' कहलाती है–

**ज्येष्ठायां यद्यनूढायां कन्यायामुह्यतेऽनुजा।**
**या साऽग्रेदिधिषूः प्रोक्ता पूर्वा तु दिधिषूः स्मृता।।** (संस्कारप्रकाश)

ऐसा होने पर दोष होता है। अतः प्रायश्चित करना चाहिए। उन कन्याओं को कृच्छ्रव्रत का प्रायश्चित करना चाहिए। पिता आदि दाता को अतिकृच्छ्र (निराहार एकादशी या संकष्ट चतुर्थी आदि) और याजक (विवाह में होम कराने वाले ब्राह्मण)-को चान्द्रायण व्रत करना चाहिए।

**अत्र प्रात्यश्चित्तम्। कन्यायाः कृच्छ्रं दातुरतिकृच्छ्रं याजकस्य चान्द्रायणम्।।**
(धर्मसिन्धु-तृतीय परिच्छेद)

यदि बहिनें सहोदर न हों तो ज्येष्ठ कन्या से पूर्व कनिष्ठा के विवाह में दोष नहीं होता–**'ज्येष्ठाया भिन्नमातृजत्वे कनिष्ठाया विवाहे दोषो ना।'**

**समस्या ( 7 ) : प्रतिपदा, पञ्चमी, अष्टमी, नवमी और दशमी तिथियों को क्रमशः मूल, भरणी, कृतिका, रोहिणी और आश्लेषा नक्षत्रों का योग होने पर 'ज्वालामुखी योग' माना जाता है। जोकि शुभकृत्यों हेतु वर्जित माना जाता है। परन्तु आपके वि. सं. 2080 के पँचांग में माघ शुक्ल नवमी को रोहिणी नक्षत्र में शुद्ध विवाह लगा रखा है–क्या आप इसे उपयुक्त मानते हैं ?**

**समाधान**—ज्वालामुखी आदि कई कुयोगों के कुफल के बारे में प्रचलित अतिशयोक्तिपूर्ण क्षेत्रीय उक्तियों का हमारे संहितादि मूलग्रन्थों में कोई निर्देश नहीं है।

**अपवाद**—तिथि-नक्षत्र, वार-नक्षत्र, वार-तिथि एवं वार-तिथि-नक्षत्रों के योग से उत्पन्न ज्वालामुखी, क्रकच, यमघण्टक आदि कुयोगों में विवाहादि शुभकृत्य करने में गर्गादि आचार्यों ने कोई दोष नहीं माना–

**'वारर्क्षतिथियोगेषु यात्रामेव विवर्जयेत्।**
**विवाहादीनि कुर्वीत गर्गादीनामिदं वचः।।** (लल्लः)-मु.चि.

अपि च, मुहूर्त्तकारों अनुसार दुष्टयोग के समय कोई शुभयोग भी हो तो दुष्ट योग का परिहार हो जाता है–

**'अयोगे सुयोगोऽपि चेत्स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति।।**

कुछ आचार्यों के मत से केवल 'लग्न-शुद्धि' से कुयोगों का प्रभाव नष्ट हो जाता है-**'परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं दिनार्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम्।।** (मु.चिं.)

इसी बात की पुष्टि मुहूर्त्तकारों ने अन्यत्र भी कही है कि-इस प्रकार के दुष्टयोगों का कुफल तभी होता है, जब शुभकृत्य को शुद्ध लग्न में न किया जाए-

**'यत्र लग्नं विना कर्म क्रियते शुभसंज्ञकम्।**
**तत्र तेषामयोगानां प्रभावाज्जायते फलम्।।** (मु. दीपिका)

**समस्या (८) : क्या गुरु/शुक्रास्त काल में विवाह-आदि मङ्गल-कार्य सम्भव हैं ? ( आगामी वर्ष मई, 2024 ई. में नवर्निवाचित सरकार का शपथ ग्रहण गुरु-शुक्रास्त-काल में करना उचित रहेगा। ?)**

**समाधान**—गुरु/शुक्र के अस्तकाल तथा उनके बाल्य-वार्धक्यकाल में लगभग अधिकांश प्राचीन एवं अर्वाचीन ज्योतिषाचार्यों ने विवाह, शगुन, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, नया कुआं, तालाब आदि खोदना, देव प्रतिष्ठा, नवीन व्रतानुष्ठान, नैमित्तिक हवन, मन्त्रादि शान्ति-पाठ, (प्रथम) तीर्थस्नान, व्रतारम्भ आदि शुभ एवं मंगल कार्यों को करने का निषेध माना है।

इसकी पुष्टि वसिष्ट संहिता, ब्रह्मपुराण, ज्योतिर्निबन्ध, धर्म-सिन्धु, मुहूर्त्त-मार्तण्ड, मु. चिन्तामणि आदि सभी ग्रन्थों ने की है।

इतने बहुसंख्यक एवं पक्ष में प्रमाण होने पर भी आजकल आधुनिक युग में परिवर्तित पारिवारिक, सामाजिक एवं अन्तर्देशीय परिस्थितियों के कारण धर्म-परायण लोग भी परम्परागत शास्त्रीय वचनों की उपेक्षा करते हुए गुरु/शुक्रास्त काल में भी विवाह, मुण्डन, दीर्घ देशान्तर या प्रथम विदेश यात्रा, या नई सर्विस प्रवेश सम्बन्धी अनुबन्ध में तारा अस्त आदि का विचार नहीं करते हैं। वृहत्संहिता में आचार्य वराह ने ज्योतिषियों को इस सम्बन्ध मे स्पष्ट निर्देश दिया है कि देश-देश (प्रत्येक अलग-अलग) में जैसी-जैसी स्थिति हो, वैसा-वैसा ही वहाँ आचरण करना, क्योंकि लोकपरम्परा के विपरीत दैवज्ञ पण्डित भी उसका त्याग करके लोगमार्ग का ही अनुसरण करते हैं।

**देशाचारस्तावदादौ विचिन्त्यः देशे देशे या स्थितिः सैव कार्या।**
**लोकद्विष्टं पण्डिताः वर्जयन्ति, दैवज्ञऽतो लोकमार्गेण यायात्।।** (वृहत्संहिता)

आचार्य श्रीपति अनुसार भी अधिकांश लोग शास्त्रादेश की अपेक्षा शिष्टाचार को ही प्रमाण मानते हैं-

**शास्त्रस्वरूपं बहवोऽपि अबुध्वा वदन्ति यच्चानुमितं हितं नः।।**

→ज्योतिषाचार्य बृहस्पति के अनुसार अत्यन्त आवश्यक एवं अपरिहार्य परिस्थितियों में विवाह, मुण्डन, (शपथग्रहण आदि) आदि शुभ कार्य सम्पादित करने की विशेष (अत्यधिक) आवश्यकता उत्पन्न हो तो राजा व उसके लोगों को गुरु/शुक्र के अस्तकाल में विवाह आदि शुभ काम कर सकते हैं-

**आवश्यकेषु कार्येषु राज्ञां तत्कर्मकारिणाम्।**
**विवाहादीनि कुर्वीत मौढयेऽपि गुरुशुक्रयोः।।**

फिर भी मंगलकार्य सम्पादित करने से पूर्व गुरु एवं शुक्र दोनों की अथवा उनमें से जो भी अस्तगत हो, उसकी शान्ति करवाकर जप, हवन, ब्राह्मण भोजन एवं दानादि करके ही शुभ कार्य करने चाहिए-

**शान्तिं कृत्वा तपोस्तद्वत् शुक्र देवेन्द्रमन्त्रिणः।**
**होमैः दानैः जपेर्वापि तयोरुक्तैश्च मन्त्रकैः।।** (बृहस्पति)
**वैदिक मन्त्रैर्यथाविधि गुरुशुक्रयोः शान्तिं कृत्वा विवाहादि कुर्यात्।**

अतएव नवर्निवाचित सरकार का शपथ-ग्रहण गुरु-शुक्र के अस्त की कालावधि में वैदिक शान्ति/हवनादि के पश्चात् किया जा सकता है।

**निष्कर्ष**—गुरु-शुक्र अस्तकाल में विवाह/मुण्डनादि शुभ कार्य करने की शास्त्र-प्रतिकूल (विरुद्ध) क्रिया का हम अनुमोदन नहीं करते बल्कि आधुनिक हिन्दु समाज में व्याप्त हो रहे शास्त्र-विरुद्ध प्रवृत्ति का चित्रण किया है। कई बार लोगों को आधुनिक संघर्षपूर्ण परिस्थितियों अथवा देश-विदेश की आकस्मिक यात्रा के कारण पंचांग-शुद्धि द्वारा निर्धारित विवाहादि शुभ कार्य करना सम्भव नहीं होता, जिस कारण पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित अधिकांश लोग गुरु/शुक्रादि अस्त से रहित शुभ मुहूर्त्तों की उपेक्षा करके मनमाना आचरण करते हैं। फिर भी अति-आवश्यक स्थिति में विवाह, मुण्डनादि शुभ कार्य करने वाले महानुभावों से अनुरोध है कि वर-कन्या के कल्याण हेतु वे गुरु/शुक्रादि के अस्तकाल में भी भद्रा, वेध, क्रूरग्रह युति, क्रान्तिसाम्य आदि दोषों से रहित नक्षत्रकाल में (किसी सुयोग्य पण्डित जी से परामर्श करके) तथा अस्त ग्रह की पूर्वोक्त विधिना शान्ति करवाकर शुभ कार्य सम्पन्न करें।

**समस्या (९) : परिवार में शुभ कार्य के पश्चात् किसी आत्मीय की अचानक मृत्यु के बाद क्या करना चाहिए ? [ एक आवश्यक सन्देश ( परामर्श ) ]**

**समाधान**—परिवार में विवाह, मुण्डनादि किसी शुभ कर्म के उपरान्त किसी भी छोटी-बड़ी आयु के व्यक्ति का आकस्मिक (या असामयिक) निधन यदि डूब कर, जल कर, शस्त्राघात, विषपान, वाहन-दुर्घटना, पशु-पक्षी के आघात से, ऊँचाई से गिरकर, फाँसी लगाकर, यातना से, कैद में अचानक प्राणवायु रुक कर, किसी सदमे से, प्रेत व्याधि से या किसी म्लेच्छ व्याधि (या महामारी) से तड़प-तड़प कर मृत्यु हो जाए तो उसके क्रिया-कर्म एवं सद्गति हेतु शास्त्रोक्त उपायों (कर्म) को करने में अवहेलना नहीं करनी चाहिए, अन्यथा वे आत्माएं अपने ही परिवार में भटकती हैं, अपने पारिवारिक सदस्यों को शारीरिक, मन-मस्तिष्क, धन-सम्पत्ति, व्यापार-आदि सभी प्रकार से नुकसान (बरबाद) करती हुई अधोगति-अकालमृत्यु आदि के

अस्तकाल में विवाह आदि शुभ काम कर सकते हैं

आदि सभी प्रकार से नुकसान (बरबाद) करती हुई अधोगति–अकालमृत्यु आदि के

लिए बाध्य करती हैं। अपनी ही भटकती हुई आत्मा की तरह दूसरे सदस्यों को भी अपनी योनि में बुलाती हैं। विश्व के बहु–संख्यक परिवार इस प्रकार जाने–अनजाने परामनोवैज्ञानिक चक्रव्यूह में उलझे हुए हैं, जिनके निवारण हेतु सही उपाय तो किया नहीं जाता, उल्टे 'नीम हकीम खतरे जान' वाले साधु, संन्यासियों, तान्त्रिकों, मौलवियों, ओझों के चक्कर में पड़कर धन व समय नष्ट करते हुए दिवंगत आत्माओं की तकलीफें बढ़ाकर उनकी व्याधि की जड़ मज़बूत कर बैठते हैं जोकि बाद में असाध्य हो जाता है। एतदर्थ शास्त्रोक्त सर्वमान्य कुछ उपाय हैं, जिन्हें श्रद्धाभक्ति पूर्वक कर देने से निश्चय ही भटकती आत्माओं को सद्गति की प्राप्ति होती है। सामर्थ्यानुसार इन्हें अवश्य करें–

(1) त्रिपिण्डी श्राद्ध, (2) गया–श्राद्ध, (3) प्रतिवर्ष चण्डीपाठ के साथ रुद्र–पाठ, (4) अपने धन से किसी ब्राह्मणी कन्या का विवाह कराएं। (5) नागबलि और सुवर्ण निर्मित नाग–दम्पत्ति–प्रतिष्ठा, (6) नारायण–बलि। (7) सुवर्ण निमित्त पंचपात्र और सुवर्ण के 108 दाने की माला का दान, ऐसे सात्विक ब्राह्मण को दान दें जो अपने दैनिक सन्ध्या–गायत्री में उसका उपयोग कर सकें। (8) अपने धन से किसी विप्र–कुमार का सविधि यज्ञोपवीत (उपनयन) कराएं। (9) भूमि–दान, (10) विद्यालय, औषधालय का निर्माण, (11) चारों वेदों का पारायण, (12) किसी गरीब मृतक परिवार में आद्योपान्त श्राद्धादिक हेतु धन–द्रव्य–वस्त्र–अन्न का सहयोग। (13) प्रत्येक अमावस्या को, मल (अधिक) मास में द्वादश संक्रान्तियों के दिन और ग्रहणपर्व पर यथासंख्या दरिद्रनारायण का भोजन–(लंगर) समारोह। (14) प्रतिवर्ष पितृपक्ष (आश्विन कृष्णपक्ष) के 15 दिनों तक 15 ब्राह्मणों को काशी या गया तीर्थ में उनके रहने–खाने–पीने–पहनने और आने–जाने का पूरा व्यय–प्रबन्ध करके उन ब्राह्मणों द्वारा शिव–अभिषेक करवाएं। (15) एकादशी या पूर्णिमा का व्रत करते हुए उपवास के दिन अन्न व वस्त्र का दान, (16) किसी प्राण–प्रतिष्ठित और प्राचीन शिवलिङ्ग के बगल में एक नवीन शिवलिंग की स्थापना प्राण–प्रतिष्ठा विधान से कराएं। **विशेष**–उपरोक्त 16 उपायों में से कम–से–कम 3 उपाय अवश्य करने चाहिए। इन उपायों द्वारा सम्पूर्ण पापों का प्रायश्चित होता है, सौभाग्य और पुत्र की भी निश्चित प्राप्ति होती है।

**निवेदन**–पाठक कृपया अपने प्रश्न/जिज्ञासाएं पत्राचार द्वारा अथवा मेरे मोबाईल पर What's App के माध्यम से लिखकर (फोटो लेकर) भेजें। कृपया व्यर्थ में फोन न करें।

**पता**–पं. विवेक शर्मा, चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर–144008 (पंजाब)
मो.–94172-91325

## 'दीपावली पर्व'–निर्णय के विषय पर पाठकगण एवं विद्वतजन कृपया ध्यान दें !

**[भारत सरकार एवं वाराणसी से प्रकाशित कुछ पंचांगकारों द्वारा अशास्त्रीय चेष्ठा]**

पाठकगण कृपया ध्यान दें–पंचांगनिर्माण के दो पक्ष (Systems) भारत में प्रचलित हैं– (1) सौरपक्ष, (2) दृक्पक्ष।

सौरपक्ष से प्राप्त ग्रहभोगांश, तिथि, नक्षत्र, योग के समाप्तिकाल आदि इतने सूक्ष्म नहीं हैं, जितने कि दृक्पक्ष से प्राप्त गणित। सौरपक्षीय परिणाम दृक्पक्षीय गणित की अपेक्षा काफी स्थूल है। गत 50-60 वर्षों से भारत के लगभग 99 प्रतिशत से भी अधिक पंचांग **'दृक्पक्ष'** के आधार पर ही बनते हैं। **'पंचांगदिवाकर'** पंचांग भी दृक्पक्षीय गणना पर आधारित है। परन्तु इस आधुनिक युग में अब भी कुछ गिने–चुने परम्परावादी पंचांगकार ऐसे भी हैं, जो सौरपक्ष की स्थूल गणना को ही आधार मानकर पंचांग–निर्माण करते हैं। उनमें से दो मुख्य पंचांग हैं–**'हृषीकेश पंचांग'** तथा **'विश्वपंचांग'**। ये दोनों वाराणसी से प्रकाशित होते हैं। इन दो–तीन पंचांगों की गणित दृक्पक्षीय पंचांगों की गणित से कहीं भी मेल नहीं खाती। जिससे अनेकदा इन सौरपक्षीय पंचांगों द्वारा साधित व्रत-पर्व की तिथियों का दृक्पक्षीय तिथियों से समन्वय नहीं होता। यद्यपि दृक्पक्षीय तिथियों/गणित को ही भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है।

यहाँ एक आश्चर्यजनक एवं हास्यास्पद बात है कि ये सौरपक्षीय पंचांगकार आधुनिक दृक्पक्षीय पद्धति को अस्पृश्य समझते हैं, परन्तु सूर्य–चन्द्रमा ग्रहण के स्पर्श–मोक्षादि काल, जो सर्वसाधारण की दृष्टि में आते हैं, का निर्णय दृक्पक्षीय सूर्य–चन्द्र–राहु के भोगांशों के आधार पर ही करते हैं, क्योंकि सौरपक्ष से ग्रहणों के स्पर्श–मोक्षादि काल यथार्थ नहीं आते। **आगामी वर्ष दीपावली पर्व पर भी यही हो रहा है।** गणित भेद के कारण ही ये पंचांगकार 1 नवम्बर, 2024 ई. को अमावस्या तिथि सायं 18:17 की बजाए 17:14 पर ही समाप्त कर रहे हैं। **स्पष्ट है,** उनके द्वारा निर्णीत **'दीपावली'** निर्णय भी त्रुटिपूर्ण होगा। इस प्रकार व्रत–पर्वों की तिथियों से खिलवाड़ करने वाले इन पंचांगकारों तथा इनके द्वारा ही प्रभावित नॉटिकल आल्मानक विभाग (भारत सरकार), कोलकाता की सभी धार्मिक हिन्दु संस्थाओं द्वारा भर्त्सना की जानी चाहिए और शास्त्रीय मर्यादानुसार निश्चित करके एक ही दिन में मनाने के लिए भारत सरकार को बाध्य करना चाहिए। अन्यथा सनातन धर्म–परायण हिन्दुओं द्वारा मनाये जाने वाले पर्व–त्यौहारों की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचने का भय रहेगा।

दो–दो पर्व–त्यौहारों की स्थिति में मन्दिरों व अन्य सार्वजनिक स्थलों पर धर्माचार्यों की स्थिति हास्यास्पद बन जाती है।

इस सम्बन्ध में सभी धार्मिक संस्थाओं को एकजुटता एवं संघठन का परिचय देना चाहिए और इस विषय पर विरोध प्रकट कर मांग करनी चाहिए ताकि भविष्य में ऐसी पुनरावृत्ति न हो। कृपया पृष्ठ 27 पर ध्यानपूर्वक **'दीपावली निर्णय'** पढ़ें।

# द्वादश राशियों का ग्रहगोचरानुसार वर्षफल एवं उपाय–2024 ई.

## ☆ वर्षफल–मेष राशि ☆

वर्षप्रवेश कुण्डली

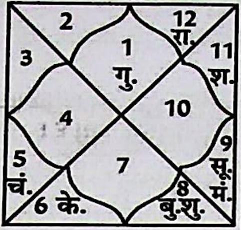

वर्षारम्भ से वर्षान्त तक इस राशि पर शनि की नीच दृष्टि रहने से मानसिक तनाव एवं गुप्त चिन्ताएं बनी रहेंगी। बनते हुए कार्यों में अड़चनें, स्वास्थ्य कष्ट तथा निकटस्थ सम्बन्धियों से मनमुटाव रहे। परन्तु वर्षारम्भ से ही 30 अप्रैल तक गुरु का संचार इस राशि पर होने से मान–सम्मान तथा सर्विस/कारोबार में तरक्की (प्रोमोशन) भी होगी।

5 फरवरी से 14 मार्च तक राशिस्वामी मंगल उच्चराशि (मकर) में आकर मेष राशि पर स्वगृही दृष्टि करेगा, जिससे बिगड़े कामों में सुधार, स्वास्थ्य में भी बेहतरी होगी। 23 अप्रैल से 31 मई तक मंगल द्वादशस्थ राहुयुक्त होने से सोचे हुए कार्यों में विघ्न–बाधाएं, विलम्ब हों, घरेलु कलह–क्लेश, गुप्त चिन्ताएँ, धन का खर्च अधिक तथा यात्राओं में परेशानियां रहें।

ता. 20 अक्तू. से वर्षान्त तक मंगल कर्क (नीच) राशिगत रहने से बनते कार्यों में उलझनें, धन–हानि व परेशानियों का सामना रहे। स्वास्थ्य भी खराब रहे।

**उपाय**–(1) प्रत्येक मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को कच्ची लस्सी में शहद, तिल, चावल आदि डालकर श्रीहरिहर–अष्टोत्तर–शतनामस्तोत्र का पाठ करके पीपल पर चढ़ावें।

(2) फाल्गुन अथवा श्रावण मास में त्रयोदशी से लगातार 3 दिन प्रदोषकाल में रुद्राभिषेक करना शुभ एवं कल्याणकारी रहेगा।

## ☆वर्षफल–वृष राशि ☆

वर्षप्रवेश कुण्डली

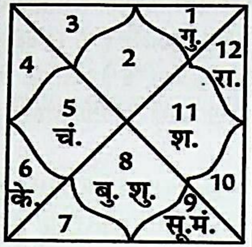

वर्षारम्भ में इस राशि पर बुध, शुक्र ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है, जिससे अत्यन्त कठिनाईयों एवं संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। 18 जन. से 11 फर. तक राशिस्वामी शुक्र अष्टम भाव में होने से बनते कार्यों में विलम्ब एवं अड़चनें रहेंगी। 31 मार्च से 24 अप्रै. तक शुक्र उच्च राशिस्थ (मीन) में होने से धन लाभ व उन्नति के आसार बनेंगे।

ता. 1 मई से गुरु इस राशि पर संचार करने से देश–विदेश में जाने का मन बनेगा। उच्च–प्रतिष्ठित लोगों के साथ मेल होगा। 19 मई से शुक्र के इसी राशि में संचार करने से मान–सम्मान, धन लाभ एवं पदोन्नति होने के अवसर प्राप्त होंगे। 24 अग. से शुक्र के नीच राशि में केतुयुक्त संचार करने से मानसिक तनाव एवं विद्या के सम्बन्ध में विघ्न–बाधाओं का सामना रहे।

**उपाय**–(1) वर्षभर प्रत्येक शुक्रवार छोटी कन्याओं का पूजन करके उन्हें बर्फी, फलादि भेंट देकर स्वयं व्रत रखें। (2) अथवा शुक्रवार को लक्ष्मीनारायण मन्दिर में श्रीसूक्त का पाठ करके 5–7 कन्याओं को मीठा प्रशाद खिलाएं। ऐसा लगातार 21 शुक्रवार करें।

विशेष उपायों के लिए हमारी पुस्तक **'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय व टोटके'** (लेखक : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी) पढ़ें।

## ☆ वर्षफल–मिथुन राशि ☆

वर्षप्रवेश कुण्डली

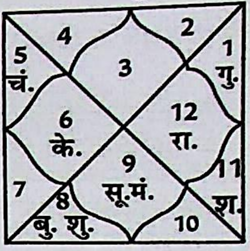

वर्षारम्भ ता. 1 जन. से 7 जन. तक बुध षष्ठस्थ होने से कुछ स्वास्थ्य कष्ट रहे। परन्तु ता. 7 जन. से 31 जन. तक मिथुन राशि पर बुध की स्वगृही दृष्टि रहने से कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु 10 फर. से 12 मार्च तक बुध अस्त होने से स्वास्थ्य में गड़बड़, आय कम तथा खर्च अधिक होंगे। ता. 7 मार्च से 25 मार्च तक, पुनः 9 अप्रै. से 9 मई के मध्य बुध नीच (मीन) राशिगत एवं राहुयुक्त होकर संचार करने से स्वास्थ्य हानि, अत्यधिक खर्च, तनाव एवं बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। 31 मार्च से 14 जून के मध्य बुध 12वें होने से वृथा, दौड़धूप, धन–हानि होने के योग हैं।

ता. 23 सितं. से 9 अक्तू. राशिस्वामी बुध उच्चस्थ (कन्या) होने से अचानक धन प्राप्ति के योग हैं। ता. 29 अक्तू. से वर्षान्त तक बुध छठे में होने से स्वास्थ्य कष्ट, चोटादि का भय है।

**उपाय**–(1) लगातार 9 बुधवार को श्रीविष्णु–सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करके फलादि से कन्या–पूजन करना विशेष शुभ रहेगा।

(2) अगस्त, 2024 ई. को बाद प्रत्येक बुधवार गौओं को हरा चारा तथा चपातियाँ खिलावें।

## ☆ वर्षफल–कर्क राशि ☆

वर्षप्रवेश कुण्डली

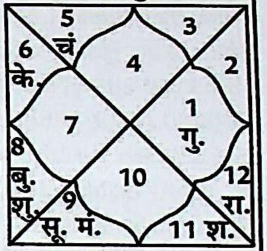

कर्क राशि पर शनि की ढैय्या का प्रभाव वर्षभर रहने से वृथा दौड़–धूप, अनावश्यक खर्च, गुप्त चिन्ताएं, रोग, शोक, कलह–क्लेश, धन–हानि, बन्धु–विरोध, कार्यों में विघ्न–बाधाओं एवं आर्थिक उलझनों का सामना रहेगा। वर्षारम्भ से 14 मार्च तक मंगल की नीच दृष्टि इस राशि पर रहने से मानसिक तनाव, क्रोध विशेष रूप से अधिक रहेगा। ता. 15 मार्च से 22 अप्रैल तक मंगल अष्टमस्थ रहने से बनते कार्यों में अड़चनें रहेंगी।

ता. 16 जुला. से 16 अग. के मध्य सूर्य इसी राशि में संचार करने से भी स्वास्थ्य कष्ट, स्वभाव में क्रोध व उत्तेजना बढ़ेगी। ता. 20 अक्तू. से मंगल इस राशि पर नीचावस्था में संचार करने से स्वास्थ्य विकार, मानसिक तनाव तथा चिड़चिड़ापन अधिक रहे।

**उपाय**–(1) संकल्पपूर्वक मंगलवार का व्रत रखकर कथा पढ़ना, गऊओं को गुड़, चारा तथा गरीब/आश्रितों को लाल वस्त्र/फल दान करना शुभ एवं कल्याणकारी रहेगा। **'भौम गायत्री मन्त्र'** का भी पाठ करें।

(2) शनि की ढैय्या के निवारण हेतु प्रत्येक शनिवार को शनि मन्दिर में तेल चढ़ाना तथा दशरथकृत शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

(लेखक : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी) पढ़ें।

दशरथकृत शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

(3) चाँदी का कड़ा सवा दो तोले का पूर्णमाशी की रात्रि को मन्त्रपूर्वक धारण करें। मन्त्र–'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।।'

## ☆ वर्षफल–सिंह राशि ☆

वर्षप्रवेश कुण्डली

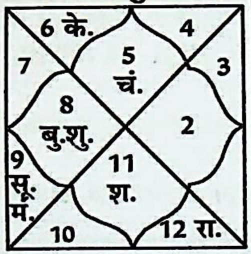

वर्षभर सिंह राशि पर शनि की शत्रु सप्तम दृष्टि रहने से मानसिक तनाव, भाई-बन्धुओं से मन-मुटाव या विरोध रहे। गुप्त चिन्ताएँ, घरेलू तथा व्यवसाय सम्बन्धी उलझनें व परेशानियां बढ़ेंगी। परन्तु वर्षारम्भ से 30 अप्रैल तक गुरु की दृष्टि रहने से भाग्यवश कुछ रुकावटों के बावजूद बिगड़े/रुके हुए कार्य बनते जाएंगे। ता. 5 फर. से 22 अप्रैल तक मंगल की भी अशुभ दृष्टि रहने से मानसिक तनाव, दौड़-धूप अधिक रहे, क्रोध व उत्तेजना से बचें।

14 अप्रैल से सूर्य भाग्यस्थान में उच्चस्थ होने से आय के स्रोतों में वृद्धि तथा धन लाभ के अवसर बनेंगे। परन्तु शनि की शत्रु दृष्टि के कारण तनाव बहुत रहे। आय कम व खर्च बढ़ेंगे।

**उपाय**–(1) वर्षभर शनि की अशुभ दृष्टि के निवारण हेतु हर शनिवार शनि मन्दिर में तेल, काले तिल चढ़ाना और दशरथकृत **'शनि स्तोत्रम्'** का पाठ करना शुभ रहेगा।

(2) रविवार का विधिपूर्वक व्रत रखें। ब्राह्मण को भोजन करवाकर लाल वस्त्र, लाल फल, गुड़, नारियल आदि धर्मग्रन्थ सहित दान करें।

(3) जन्मदिन पर जन्मदिन पूजन करवाकर अष्ट-दीर्घजीवी आचार्यों का पूजन करें। [देखें हमारी पुस्तक–**'जन्मदिन पूजा पद्धति**।]

## ☆ वर्षफल–कन्या राशि ☆

वर्षप्रवेश कुण्डली

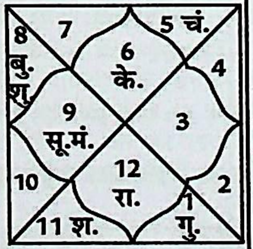

वर्षारम्भ से वर्षान्त तक इस राशि पर केतु का संचार रहने से वृथा मानसिक तनाव, परेशानियां तथा धन हानि होगी। जीवनसाथी के साथ भी मन-मुटाव रहे। 10 फर. से 12 मार्च तक राशिस्वामी बुध अस्त रहने से भी बनते कार्यों में अड़चने पड़ने की सम्भावनाएं होंगी। 9 अप्रैल से 9 मई तक बुध नीच राशि में तथा 2 अप्रै. से 24 अप्रै. के मध्य वक्री रहने से स्वास्थ्य भी ठीक न रहे तथा अपने नज़दीकी सम्बन्धी भी परायों जैसे व्यवहार करेंगे। 1 मई से गुरु की दृष्टि रहने से उलझनों के बावजूद काम होते रहेंगे। ता. 10 से 30 मई तक बुध अष्टमस्थ, फिर 29 जून से 18 जुला. तक कर्क राशिगत (पुनः 22 अग. से 3 सितं. तक) रहने से आर्थिक उलझनें, स्वास्थ्य कष्ट रहे। 23 सितं. से 9 अक्तू. तक बुध इसी राशि (कन्या) में रहने से मान-सम्मान में वृद्धि तथा धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

**उपाय**–(1) सम्पूर्ण वर्ष **'श्रीगणेश चतुर्थी'** का संकल्पपूर्वक व्रत रखना तथा बालकों में बूंदी-लड्डुओं का प्रसाद बाँटना शुभ एवं कल्याणकारी रहेगा। (2) मई मास से हर (16) बृहस्पतिवार का व्रत रखकर धर्म स्थान पर हलुवा या पीले मीठे चावलों का लंगर करवाएं या केले बांटे। व्रतोद्यापन के बाद धर्मस्थान पर सुपात्र व्यक्ति को श्रीमद्भागवत् (सुखसागर) ग्रंथ का दान करें। (3) लगातार 6 बुधवार सवा किलो साबुत मूँगी दाल (सामर्थ्यानुसार) धर्मस्थान अथवा पिंगलवाड़ा में दान देना शुभ होगा।

## ☆ वर्षफल–तुला राशि ☆

वर्षप्रवेश कुण्डली

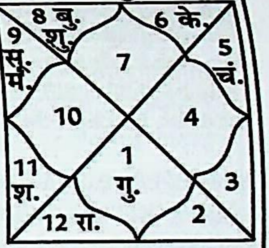

वर्षारम्भ से 30 अप्रैल तक गुरु की इस राशि पर शत्रु दृष्टि रहने से सर्विस अथवा व्यवसाय में नित्य नई-नई परेशानियों का सामना रहे, शत्रु प्रबल रहेंगे। 18 जन. से 11 फर. तक राशिस्वामी शुक्र शत्रुराशिगत रहने से भी विपरीत परिस्थितियां एवं संघर्षशील समय रहेगा। परन्तु 31 मार्च से 24 अप्रैल तक शुक्र उच्च (मीन) राशिस्थ संचार करने से उच्चस्तरीय लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे परन्तु राहु युक्त होने के कारण लाभ व उन्नति के मार्ग में रुकावटें रहेंगी।

7 जुला. से 24 अग. के मध्य शुक्र क्रमशः कर्क व सिंह राशि में संचारित होने से मिश्रित फल प्राप्त होंगे। गुज़ारे योग्य आय होने पर भी खर्च बहुत अधिक बढ़ेंगे। ता. 25 अग. से 17 सितं. के मध्य शुक्र द्वादश भाव में नीच राशिस्थ संचारित होगा। यह अवधि तुला राशि वाले जातकों के लिए विशेष घटनाप्रद होगी। 18 सितं. से 12 अक्तू. तक शुक्र तुला राशि में ही संचार करने से बिगड़े कामों में सुधार होगा। निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे।

**उपाय**–(1) प्रत्येक शुक्रवार सन्तोषी माता का विधिवत व्रत रखना और कन्या पूजन करके कन्याओं में मीठा प्रसाद, फलादि दक्षिणा सहित भेंट करना शुभ रहेगा।

(2) 30 अप्रैल तक प्रत्येक बृहस्पतिवार 6 केले बालकों में बाँट दें।

(3) नवरात्रों में श्रीदुर्गा-सप्तशती का पाठ करना एवं गौशाला में शुक्रवार से शुरु करके सात दिन तक गाय को हरा चारा, गुड़, मिश्रित पेड़ा डालना शुभ होगा।

## ☆ वर्षफल–वृश्चिक राशि ☆

वर्षप्रवेश कुण्डली

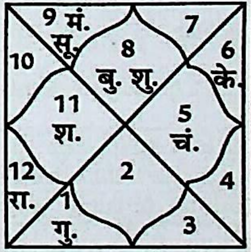

वृश्चिक राशि पर शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव वर्षभर रहेगा। वर्षारम्भ से 4 फर. तक राशिस्वामी मंगल धनु स्थान में रहेगा। ग्रहस्थिति अनुसार मानसिक तनाव, व्यर्थ की भागदौड़, खर्च अधिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां भी रहेंगी। 5 फर. से 14 मार्च तक मंगल उच्च-राशिगत (मकर) संचार करने से मान-सम्मान में मामूली वृद्धि तथा निर्वाह योग्य धन लाभ के स्रोत बनेंगे।

ता. 1 मई से पंचमेश गुरु की शुभ सप्तम दृष्टि रहने से गत किए गए प्रयासों में सफलता प्राप्ति के संकेत हैं। कार्य-व्यवसाय में कुछ परिवर्तन की योजना बनेगी। ता. 1 जून से 25 अग. तक मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से भी विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 20 अक्तू. से मंगल भाग्यस्थ नीच (कर्क) राशिगत संचार करने एवं 6 दिसं. से मंगल वक्री रहने से संघर्षपूर्ण एवं तनावपूर्ण परिस्थितियां रहेंगी।

**उपाय**–(1) वर्षभर प्रत्येक शनिवार काँसे की कटोरी में तेल का छायापात्र करना, शनि मन्दिर में काले तिल एवं तेल (शनि का बीज मन्त्र पढ़ते हुए) चढ़ाना शुभ रहेगा।

(2) जनवरी से वर्षान्त तक सात शनिवार काले मांश को पीसकर उसकी आटे की गोलियां बनाकर मछलियों को डालना शुभ रहेगा।

## ☆ वर्षफल–धनु राशि ☆

वर्षप्रवेश कुण्डली

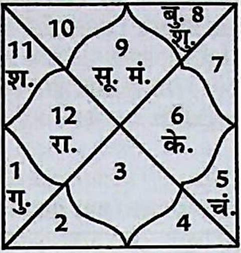

वर्षारम्भ से 30 अप्रैल तक इस राशि पर गुरु की स्वगृही दृष्टि रहने से विपरीत परिस्थितियों के बावजूद बिगड़े हुए काम बनेंगे। धर्म–कर्मादि शुभ कृत्यों की ओर प्रवृत्ति रहेगी। उच्चविद्या एवं कम्पीटीशन में सफलता प्राप्ति के योग बनेंगे। यद्यपि पंचम भाव पर शनि की नीच दृष्टि के कारण सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता तनाव, अत्यधिक खर्च एवं घरेलु उलझनें भी रहेंगी।

1 मई से वर्षान्त तक राशिस्वामी गुरु छठे स्थान में शत्रुराशिगत संचार करेगा। ता. 14 जून से 19 अक्तू. तक धनु राशि पर क्रमशः सूर्य एवं मंगल की संयुक्त दृष्टियां रहेंगी। जिस कारण धनु राशि वाले जातक/जातिकाओं को अत्यधिक क्रोध एवं आवेश के कारण नज़दीकी लोगों के साथ कलह–क्लेश होने का भय होगा।

**उपाय**–(1) जन्मदिन को जन्मदिन पूजन करवाकर, भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें तथा ब्राह्मण को भोजन करवाकर वस्त्र, फल, धर्मग्रन्थ सहित दान करें।

(2) मई मास से प्रत्येक बृहस्पतिवार का व्रत रखकर एक समय मिष्ठान्न के साथ भोजन करें।

(3) प्रत्येक गुरुवार को केसर का तिलक लगाएं तथा पीले मिश्रित रंग के कपड़े पहनें।

## ☆ वर्षफल–मकर राशि ☆

वर्षप्रवेश कुण्डली

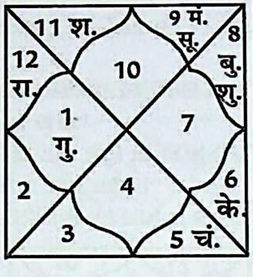

**'शनि–साढ़ेसाति'** का प्रभाव इस राशि पर वर्षभर रहेगा तथा 30 अप्रै. तक चतुर्थस्थ गुरु पर शनि की नीच दृष्टि भी रहेगी। फलतः अनेक घरेलु एवं व्यवसायिक उलझनें रहेंगी। निकटस्थ लोगों के साथ तनाव व झगड़े रहें, स्वास्थ्य सम्बन्धी नवीन परेशानियां उभरती रहेंगी। परन्तु 5 फर. से 14 मार्च तक मंगल इस राशि पर उच्चस्थ होकर संचार करने से मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा बिगड़े कार्यों में सुधार होगा।

ता. 1 मई से वर्षान्त तक गुरु की नीच दृष्टि इस राशि पर रहने से धन लाभ अल्प तथा सोची हुई योजनाओं के क्रियान्वयन में विघ्न–बाधाएं रहेंगी। ता. 26 अग. से 19 अक्तू. के मध्य मंगल की अष्टम दृष्टि रहने से क्रोध, उत्तेजना अधिक रहेगी। 20 अक्तू. से वर्षान्त तक मंगल की स्वोच्च दृष्टि रहेगी, जिससे अत्यधिक संघर्ष के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे।

**उपाय**–(1) जन्मदिन तथा लगातार 7 शनिवार गरीब अन्धचक्षु तथा कुष्ट रोगियों की दवाई, अनाज, वस्त्रों आदि से सेवा करना शुभ रहेगा।

(2) शनिवार को सरसों के तेल में अपना चेहरा (मुख) देखकर मन्त्र पढ़ते हुए सायंकाल के समय शनि मन्दिर में चढ़ाएं। **मन्त्र–'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।'**

(3) कार्तिक मास में (17 अक्तू. से) प्रतिदिन सूर्य भगवान् को **'ॐ घृणिः सूर्याय नमः'** मन्त्र के साथ अर्घ्य दें तथा **कार्तिक–माहात्म्य** का (पं. देवीदयालु पब्लिकेशन्ज़ द्वारा प्रकाशित, इसमें पूरे अध्याय, तुलसी विवाह भी दिया है) पाठ करें। मूल्य–80 रु.

## ☆ वर्षफल–कुम्भ राशि ☆

वर्षप्रवेश कुण्डली

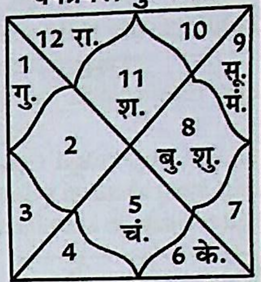

वर्षभर राशिस्वामी शनि इसी राशि पर संचार करने से **'शनि–साढ़ेसाती'** का प्रभाव रहेगा। फलतः किसी नए कार्य की योजना बनेगी। गत किए गए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। परन्तु साढ़ेसाती होने से मानसिक तनाव, घरेलु उलझनें एवं खर्च अधिक होंगे। पारिवारिक एवं निकटस्थ बन्धुओं के साथ मन–मुटाव भी रहेगा। 13 फर. से 13 मार्च तक कुम्भ राशि पर **'सूर्य–शनि'** योग होने से विघ्न/बाधाओं के बावजूद कुछ कार्य बनेंगे, आँखों में कष्ट, स्वास्थ्य की हानि तथा तनाव की स्थिति रहेगी।

ता. 15 मार्च से 22 अप्रै. तक **'मंगल–शनि'** योग इसी राशि पर होने से मानसिक एवं गुप्त चिन्ताएँ, किसी बन्धु से तकरार या झगड़ा तक हो सकता है। सावधानीपूर्वक व्यवहार करें।

16 अग. से 15 सितं. के मध्य इस राशि पर सूर्य–बुध की अलग–अलग दृष्टियां पड़ने से उपरोक्त अवधि में कार्य–व्यवसाय सम्बन्धी विशेष परेशानियां होंगी।

**उपाय**–(1) जन्मदिन तथा लगातार 7 शनिवार गरीब अन्धचक्षु तथा कुष्ट रोगियों की दवाई, अनाज, वस्त्रों आदि से सेवा करना शुभ रहेगा।

(2) शनिवार को सरसों के तेल में अपना चेहरा (मुख) देखकर मन्त्र पढ़ते हुए सायंकाल के समय शनि मन्दिर में चढ़ाएं। **मन्त्र–'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।'**

(3) कार्तिक मास में (17 अक्तू. से) प्रतिदिन सूर्य भगवान् को **'ॐ घृणिः सूर्याय नमः'** मन्त्र के साथ अर्घ्य दें तथा **कार्तिक–माहात्म्य** का (पं. देवीदयालु पब्लिकेशन्ज़ द्वारा प्रकाशित, इसमें पूरे अध्याय, तुलसी विवाह भी दिया है) पाठ करें। मूल्य–80 रु.

## ☆ वर्षफल–मीन राशि ☆

वर्षप्रवेश कुण्डली

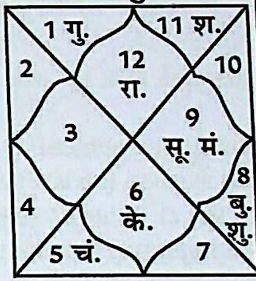

वर्षभर इस राशि पर राहु का संचार तथा **शनि–साढ़ेसाती** का प्रभाव रहने से प्रत्येक बनते हुए एवं शुभ कार्य के आरम्भ में अड़चनों/रुकावटों का सामना करना पड़े, धन का अपव्यय तथा क्रोध की भावना अधिक रहेगी। ता. 14 मार्च से 12 अप्रै. के मध्य राहु के साथ सूर्य भी इस राशि पर संचार करने से स्वभाव में क्रोध व उत्तेजना बढ़ेगी, स्वास्थ्य में खराबी एवं वृथा खर्च भी बढ़ेंगे।

23 अप्रै. से 31 मई तक **'मंगल–राहु'** योग इस राशि पर रहने से पारिवारिक एवं व्यवसायिक जीवन में बड़ी उथल–पुथल वाली परिस्थितियां बनेंगी। ता. 1 मई से राशिस्वामी गुरु तृतीय भाव में वृष राशिस्थ रहेगा, जिससे कार्य–व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग बनेंगे। शनि की कोष (द्वितीय) भाव पर नीच दृष्टि के कारण वर्षभर आर्थिक क्षेत्र में अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना होगा।

**उपाय**–(1) प्रत्येक गुरुवार को केले के पौधे का पूजन करना, भगवान् शंकर की पूजा करके शिवलिङ्ग पर हल्दी मिलाकर जल **'ॐ नमः शिवाय'** मन्त्र पढ़ते हुए बेलपत्र सहित चढ़ाना शुभ होगा। (2) प्रतिदिन गुरु गायत्री मन्त्र का 108 बार जाप करके भगवान् सूर्य को **'ॐ घृणि सूर्याय नमः'** मन्त्र पढ़कर अर्घ्य प्रदान करना। **गुरु गायत्री मन्त्र–'ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।।'** (3) *वर्षभर प्रतिदिन पक्षियों को बाजरा डालना शुभ रहेगा। (हमारी प्रकाशित पुस्तक* ***'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय व टोटके'*** *अवश्य मंगवाकर पढ़ें। मूल्य–250 रु.*

# बारह राशियों का ग्रहगोचर के अनुसार मासिक फलादेश-सन् 2024 ई.

आगे बारह राशियों का मासिक एवं वार्षिक फल ग्रहों की गोचर स्थित्यनुसार लिखा गया है। अपने जीवन सम्बन्धी और अधिक जानकारी एवं महत्त्वपूर्ण पक्ष जैसे–विद्या, व्यवसाय, नौकरी, विवाह, रोग, सन्तान, विदेश गमनादि प्रश्नों सम्बन्धी विशेष फलादेश तथा तत्सम्बन्धी समस्याओं के विशेष उपाय जानने के लिए शुद्ध एवं बड़ी जन्मपत्री का होना आवश्यक है। हमारे कार्यालय से शुद्ध एवं विस्तृत हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जातक/जातिका का नाम, जन्म–समय, जन्म स्थान (Place & Time of Birth), माता–पिता का नाम एवं व्यवसाय आदि का विवरण तथा अग्रिम रूप में पूरी फीस भेजें। मध्यम विस्तृत जन्मपत्री हस्तलिखित फलादेश सहित की फीस 1800, अधिक वृहद् विस्तृत की 2800 रुपए। सामान्य मध्यम जन्मपत्री की 900 रु., वार्षिक वर्षफल, उपायों आदि सहित की फीस 900 रु.। विदेश में उत्पन्न जातक की फीस 51 पौंड अथवा 75 डालर होगी। डाक व्यय 50 रु. जोड़कर भेजें, फीस M.O. या ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम इस पते पर भेजें– **–पं. विवेक शर्मा सुपुत्र पं. पन्ना लाल शर्मा, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर-8 ( पंजाब ), फोन–94172-91325**

## मेष राशि (Aries)—(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

**जनवरी**—गुरू का संचार इस राशि पर रहने से मान–सम्मान में वृद्धि, कारोबार में तरक्की होगी, परन्तु शनि की नीच दृष्टि रहने से गुप्त चिन्ताएं एवं मानसिक तनाव बना रहे। राशिस्वामी मंगल भाग्यस्थ होने से खर्च अधिक तथा पारिवारिक परेशानियां रहें।

**फरवरी**—ता. 5 से राशिस्वामी मंगल उच्चराशिगत होने से उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। मासान्त में आय कम तथा खर्च अधिक होंगे। पारिवारिक उलझनें बढ़ेंगी।

**मार्च**—ता. 14 तक मंगल उच्चराशिगत रहने से कुछ बिगड़े काम बनेंगे। आय के साधनों में सुधार, व्यवसाय सम्बन्धी कोई नवीन योजना बनेगी। ता. 15 से कुम्भ राशि में **'मंगल-शनि'** योग रहने से स्वास्थ्य में विकार, शरीर कष्ट तथा आर्थिक परेशानियों का सामना रहेगा।

**अप्रैल**—**'मंगल-शनि'** योग एकादश भाव में होने से वृथा भाग–दौड़, मानसिक तनाव, निकट बन्धुओं से मतभेद एवं चोटादि का भय रहेगा। सोची योजनाओं में विघ्न–बाधाओं का सामना रहे। ता. 23 से द्वादश भाव में **'मंगल-राहु'** योग रहने से धनागमन के साधनों में विघ्न, मानसिक तनाव एवं क्रोध अधिक रहे।

**मई**—**'मंगल-राहु'** योग 12वें होने तथा गुरु का संचार हट जाने से धन का खर्च अधिक, दूरस्थ यात्राएँ, विदेशी सम्बन्धियों से लाभ परन्तु परिवार में विभिन्न परेशानियों का सामना रहे। व्यवसाय में कठिन हालात का सामना रहे।

**जून**—मंगल इस राशि पर स्वराशिगत है, फलत: धन लाभ व पदोन्नति के योग बनेंगे। प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, परन्तु शनि की नीच शत्रु दृष्टि रहने से मानसिक तनाव एवं घरेलु झगड़े रहेंगे। व्यर्थ यात्रा तथा स्वास्थ्य कष्ट रहे।

**जुलाई**—ता. 11 तक मंगल स्वराशि में होने से अकस्मात् धन लाभ के अवसर मिलेंगे। पदोन्नति तथा गत रुके हुए कुछ कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। ता. 12 से मंगल द्वितीय भाव में गुरु युक्त होने से पुन: लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे, उच्च–प्रतिष्ठित लोगों के साथ मेल बढ़ेगा। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

**अगस्त**—शनि की दृष्टि यथावत रहने से व्यवसायिक क्षेत्रों में हालात अस्थिर एवं अनिश्चित रहेंगे। स्वास्थ्य में खराबी, स्वभाव में उग्रता एवं निकट बन्धुओं से मतभेद उभरेंगे। खर्च अधिक एवं किसी व्यक्ति विशेष से धोखे की सम्भावना बनी रहेगी।

**सितम्बर**—मंगल तृतीयस्थ होने से पराक्रम व अपने उद्यम द्वारा आय के साधनों में वृद्धि होगी। उच्चप्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ सम्पर्क बनेंगे। सुख–साधनों में वृद्धि होगी। परन्तु शनि के कारण मानसिक तनाव एवं अवांछित व्यक्तियों के कारण बनते कामों में परेशानी हो।

**अक्तूबर**—इस मास मिश्रित प्रभाव रहें। नवीन कार्य को करने की योजना बनेगी। व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। व्यस्तताएं बढ़ेंगी। ता. 20 से मंगल नीचराशिगत होने से वृथा भागदौड़, धन–लाभ में विघ्न, स्वास्थ्य में खराबी एवं परिवार सम्बन्धी चिन्ता बनी रहेगी। ***उपाय***–(1) **श्रीदुर्गा-सप्तशती** का पाठ करना शुभ होगा। (2) ता. 17 से पं. देवीदयालु (पं. पन्ना–लाल ज्यो. रचित) **'कार्तिक-माहात्म्य'** का पाठ करें।

**नवम्बर**—मंगल नीचराशिगत संचार करने से घरेलु सुखों में कमी होगी। संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूलखर्ची होगी। विलासादि कार्यों पर व्यय, कार्यों में बाधाएँ रहेंगी। उत्तरार्द्ध भाग में चोटादि का भय भी रहेगा।

**दिसम्बर**—ता. 6 से कर्कराशिगत मंगल वक्री होने से घरेलु सुखों में कमी व अशान्ति व्याप्त रहेगी। स्त्री/पति मध्य तनाव रहे, परन्तु दशमस्थ उच्च दृष्टि रहने से अचानक धन लाभ व प्रगति के अवसर भी प्राप्त होंगे।

## वृष राशि (Taurus)—(ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो)

**जनवरी**—मासारम्भ में इस राशि पर बुध–शुक्र की दृष्टियां रहने से कुछ सुखद घटनाएं घटित होंगी। उच्च–प्रतिष्ठित लोगों/स्त्री के सहयोग से लाभ की सम्भावनाएं बढ़ेंगी। खर्च भी बहुत बढ़ेंगे। ता. 18 से राशिस्वामी शुक्र अष्टम भाव में आने से धन हानि, स्वास्थ्य में कमी तथा खर्चों की अधिकता रहेगी।

**फरवरी**—ता. 11 तक शुक्र अष्टमस्थ रहने से व्यर्थ की भागदौड़ अधिक, विरोधी हानि पहुँचाने का प्रयास करेंगे। ता. 12 के पश्चात् धर्म–कर्म में रूचि होगी और अधिकतर समय शुभ कार्यों में ही व्यतीत होगा।

**मार्च**—ता. 7 से शुक्र शनि के साथ कुम्भ राशि में होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे, परन्तु खर्च भी बढ़–चढ़ कर रहेंगे। व्यस्तता अधिक रहे, क्रोध पर नियन्त्रण रखें।

**अप्रैल**—मासारम्भ से ही शुक्र मीन राशि (उच्च) में संचार करने से अकस्मात् धन लाभ के चाँस बनेंगे, परन्तु खर्च भी अधिक रहेंगे। वाहनादि सुख-सुविधाओं एवं मनोरंजन कार्यों पर खर्च अधिक होंगे। ता. 24 से शुक्र 12वें राहुयुक्त होने से खर्च और अधिक बढ़ जाएंगे।

**मई**—ता. 1 से ही गुरु इस राशि पर होने से आय के साधनों में वृद्धि, धर्म-कर्म में रुझान, परन्तु खर्च अधिक रहे। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, परन्तु परिवार में भाई-बन्धु का सहयोग प्राप्त होगा। किसी पर भी भरोसा करना हानिकारक होगा।

**जून**—ता. 11 तक गुरु-शुक्र योग रहने से आंशिक धन लाभ तथा कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। शुभ यात्रा एवं शुभ मंगल कार्यों पर धन खर्च होगा। ता. 12 से शुक्र मिथुन में रहने से विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन लाभ व कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।

**जुलाई**—ता. 7 से शुक्र कर्क (शत्रु) राशि में रहने से पारिवारिक परेशानी, शरीर कष्ट, वृथा भागदौड़, मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। भलाई करने पर भी बुराई मिलेगी, आर्थिक परेशानियों के कारण चिन्ताएं होंगी।

**अगस्त**—मासारम्भ से शुक्र सिंह राशिगत संचार करने से स्वास्थ्य में खराबी, घरेलु उलझनें, वृथा वाद-विवाद में परेशानी रहेगी। समय अनुकूल नहीं है। सावधानीपूर्वक क्रय-विक्रय करें। मासान्त ता. 24 से शुक्र नीचराशिगत होने से सन्तान, पारिवारिक उलझनें एवं सेहत सम्बन्धी परेशानी बढ़ेगी।

**सितम्बर**—ता. 17 तक शुक्र नीचस्थ होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियां रहेंगी। किसी दुष्ट व्यक्ति द्वारा हानि होने के संकेत मिलते हैं। स्वास्थ्य में विकार व चोटादि का भय है। आय कम, खर्च अधिक रहे। सन्तान एवं परिवार सम्बन्धी चिन्ता रहे। ता. 18 से शुक्र तुला राशिस्थ होने से अकस्मात् धन लाभ के चाँस बनेंगे।

**अक्तूबर**—पूर्वार्द्ध भाग में कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी। परन्तु खर्चों की अधिकता से मन परेशान रहेगा। शरीर कुछ अस्वस्थ रहे। उत्तरार्द्ध में स्थान परिवर्तन होने के योग हैं। सिर-दर्द एवं आँखों में कष्ट रहने के संकेत हैं।

**नवम्बर**—दैनिक कार्यों में प्रगति होगी। धर्म-कर्म में विशेष रूचि होगी। ता. 9 से शुक्र धनु (अष्टमस्थ) राशिस्थ रहने से पारिवारिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी। आय कम तथा आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे। बनते कार्यों में अड़चनें रहें।

**दिसम्बर**—ता. 2 से ही राशिस्वामी शुक्र भाग्यस्थ रहने से विपरीत परिस्थितियों के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे। भाग्य से धन प्राप्ति और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि हो, परन्तु गुरु की दृष्टि रहने से किसी निकटस्थ के साथ अचानक तनाव या झगड़ा भी होगा।

7 से 25 तक बुध नीच (मीन) राशि में आने से स्वास्थ्य-हानि, अत्यधिक खर्च, तनाव एवं बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। आर्थिक व घरेलु उलझनें बढ़ेंगी।

**अप्रैल**—ता. 8 तक बुध लाभस्थान में होने से व्यापार में लाभ तथा उच्चप्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क बनेंगे। ता. 9 से बुध नीचराशिगत होने के कारण मानसिक अस्थिरता एवं तनाव रहेगा। परिवार में घरेलु उलझनें उत्पन्न होंगी। परन्तु कार्य-व्यवसाय में गुज़ारे योग्य धन प्राप्त होता रहेगा।

**मई**—ता. 9 तक बुध नीचस्थ रहने से स्वास्थ्य हानि, मानसिक तनाव, बनते कामों में विघ्न तथा अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। ता. 10 से 31 तक बुध मेष राशिगत रहने से धन लाभ व अकस्मात् उन्नति के चाँस बढ़ेंगे।

**जून**—मासारम्भ से 13 तक बुध 12वें स्थान में गुरु युक्त होने से वृथा दौड़धूप, धन-हानि के योग हैं। ता. 14 से 28 तक बुध स्वराशिगत होने से बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार होगा। निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे।

**जुलाई**—उलझनों के बावजूद पराक्रम में वृद्धि एवं आय के साधनों में बढ़ौत्तरी होगी। परन्तु व्यवसायिक व्यस्तताओं के कारण पर्याप्त लाभ नहीं होगा। यद्यपि पारिवारिक सहयोग मिलेगा। परन्तु स्वभाव में तेज़ी एवं मानसिक तनाव रहे।

**अगस्त**—इस मास मिश्रित फल होगा। मासारम्भ में धनागमन के साधनों में वृद्धि होगी। ता. 5 से बुध वक्री तथा 22 ता. से पुनः कर्क राशि में रहने से शरीर कष्ट, मानसिक तनाव व चमड़ी सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना बनी रहेगी। ता. 24 से शुक्र कन्या राशि में संचार करने से विघ्नों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

**सितम्बर**—मासारम्भ से ही मंगल इस राशि पर संचार करने से किसी नज़दीकी बन्धु से कलह, मानसिक तनाव, क्रोध अधिक आएगा। निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

**अक्तूबर**—ता. 19 तक मंगल का संचार रहेगा, परन्तु बुध की स्वगृही दृष्टि के कारण आर्थिक कार्यों में व्यवधान होने पर भी गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। मासान्त में सन्तान सम्बन्धी चिन्ता एवं व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी।

**नवम्बर**—बुध अष्टमस्थ रहने से स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष ध्यान रखें। निकटस्थ भाई-बन्धुओं से मन-मुटाव, बनते कार्यों में विघ्न, आर्थिक परेशानियां बढ़ेंगी। व्यवसाय में तनाव व लेन-देन के मामलों में परेशानी हो सकती है।

**दिसम्बर**—ता. 14 तक बुध अष्टमस्थ वक्री रहने से व्यवसाय सम्बन्धी संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। घरेलु उलझनों से तनाव अधिक रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट तथा खर्च बढ़चढ़ कर रहेंगे।

## मिथुन राशि (Gemini)—(क,की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

**जनवरी**—ता. 7 से 31 तक राशिस्वामी बुध की स्वगृही दृष्टि रहने से कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। क्रय-विक्रय से लाभ होगा। मंगल की भी दृष्टि रहने से पुरुषार्थ एवं उत्साह में वृद्धि से कार्य पूर्ण होंगे।

**फरवरी**—ता. 19 तक बुध अष्टमस्थ तथा ता. 10 से अस्त भी रहने से बनते कार्यों में रुकावटें पैदा होंगी। निकटस्थ भाई-बन्धुओं से मनमुटाव पैदा होंगे। आर्थिक परेशानियां बढ़ेंगी।

**मार्च**—बुध ता. 6 तक नवम स्थान में होने से लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। ता.

## कर्क राशि (Cancer)—(हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

**जनवरी**—शनि की ढैय्या का प्रभाव रहने से बनते कार्यों में विघ्न, मानसिक तनाव, गुप्त चिन्ता, दुर्घटना में चोटादि का भय और भूमि-जायदाद सम्बन्धी कार्यों में परेशानी होगी। पारिवारिक परेशानी तथा आय में कमी रहेगी।

**फरवरी**—मंगल की अशुभ दृष्टि रहने से भी मानसिक तनाव, क्रोध की अधिकता, दुर्घटना में चोटादि का भय रहे। किसी पर भी भरोसा करना हानिकारक होगा। व्यर्थ के तनाव से स्वास्थ्य में गड़बड़ एवं परेशानी होगी।

**मार्च**—बुध ता. 6 तक नवम स्थान में होने से लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। ता. | तनाव से स्वास्थ्य में गड़बड़ एवं परेशानी होगा।

**मार्च**—ता. 14 तक मंगल की दृष्टि रहने से क्रोध एवं उत्तेजना बढ़ेगी। वाहनादि सावधानी से चलाना चाहिए। आँखों में कष्ट एवं सिरदर्द से परेशानी हो। ता. 15 से मंगल अष्टमस्थ शनि युक्त रहने से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों का सामना रहे, गुप्त रोग का भय रहे।

**अप्रैल**—ता. 22 तक **'मंगल-शनि'** योग अष्टमस्थ, तदुपरान्त भाग्य स्थान में **'मंगल-राहु'** योग होने से निकट बन्धुओं से विरोध, रोग एवं शत्रुभय तथा आर्थिक उलझनों का सामना रहेगा। व्यर्थ यात्रा की परेशानी उठानी पड़ेगी।

**मई**—भाग्य स्थान में **'मंगल-राहु'** योग तथा शनि की ढैय्या के प्रभाव से पारिवारिक एवं व्यवसायिक क्षेत्र में कठिन व संघर्षमयी परिस्थितियों का सामना रहेगा। अपनी ही गलती से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। खर्च अधिक रहें।

**जून**—शनि-ढैय्या के कारण बनते कार्यों में विघ्न, वृथा-भागदौड़, मानसिक तनाव एवं व्यवसाय में भी संघर्षपूर्ण हालात का सामना रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। सुख-साधनों पर धन का खर्च अधिक एवं मनोरंजन आदि में रुझान बढ़ेगा।

**जुलाई**—शनि-ढैय्या के कारण शरीर कष्ट, मानसिक तनाव व स्वास्थ्य हानि के योग हैं। लाभ कम व खर्च अधिक होगा। विभिन्न उलझनों का सामना रहेगा। ता. 16 से सूर्य का संचार इसी राशि पर होने से निकट बन्धुओं से मन-मुटाव एवं विरोध बढ़ेंगे। भगवान् सूर्य का पूजन व अर्घ्य प्रदान करना शुभ होगा।

**अगस्त**—सूर्य-शुक्र का संचार इस राशि पर रहने से कार्यव्यवसाय में स्थिति कुछ अनुकूल होगी। भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होगा। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। उत्तरार्द्ध में अड़चनों के कारण परेशानियां बढ़ेंगी। ता. 22 से बुध भी इसी राशि में संचार करने से तनाव एवं घरेलु उलझनें बढ़ेंगी।

**सितम्बर**—परिश्रम एवं दौड़-धूप अधिक रहेगी। फिर भी निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। कारोबार में कई तरह के उतार-चढ़ाव व अन्य परेशानियां रहेंगी। आकस्मिक खर्च होने के योग हैं। मासान्त में आर्थिक क्षेत्र में उन्नति के योग हैं। किसी उच्चाधिकारी के साथ सम्पर्क रहेंगे।

**अक्तूबर**—कार्य व्यवसाय में उन्नति व प्रगति के कुछ मार्ग प्रशस्त होंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। कुछ बिगड़े कार्यों में विशिष्ट व्यक्तियों से सम्पर्क करने से सुधार होगा। परिवार में भाई-बन्धु का सहयोग कम प्राप्त होगा। ता. 20 से मंगल इस राशि पर नीचावस्था में संचार करने से तनाव, घरेलु उलझनें तथा क्रोध बढ़ेगा।

**नवम्बर**—शनि की ढैय्या तथा भाग्यस्थ राहु के प्रभाव से परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। फिर भी निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। कारोबार में कई तरह के उतार-चढ़ाव व अन्य परेशानियां रहेंगी। आकस्मिक खर्च होंगे। मासान्त में आर्थिक क्षेत्र में लाभ के योग हैं।

**दिसम्बर**—मंगल इस राशि पर वक्री अवस्था में संचार करने से घरेलु एवं व्यवसाय सम्बन्धी परेशानियां, क्रोध, किसी से बेफजूल विवाद तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट रहे।

## सिंह राशि (Leo)—(म, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

**जनवरी**—इस राशि पर शनि की दृष्टि रहने से निकट बन्धुओं से तनाव एवं मतभेद रहेंगे। परन्तु गुरु की भी दृष्टि रहने से रुके हुए कार्य ठीक होते रहेंगे। शुभ/धार्मिक कार्यों पर खर्च भी होंगे। किसी का सहयोग प्राप्त होगा।

**फरवरी**—ता. 5 से मंगल की भी इस राशि पर दृष्टि रहने से यद्यपि उत्साह एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। परन्तु स्वास्थ्य कुछ ढीला एवं अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे। ता. 13 से सूर्य-शनि दोनों की संयुक्त दृष्टि रहने से पारिवारिक मतभेद उभरेंगे।

**मार्च**—सूर्य-शनि-मंगल-गुरु आदि ग्रहों की दृष्टियां रहने से व्यवसायिक एवं पारिवारिक उलझनें तथा व्यस्तताएं रहेंगी। वृथा भागदौड़, धन-लाभ, मान-सम्मान में वृद्धि होगी। किन्तु क्रोध एवं जल्दबाजी में किए गए कार्यों से नुक्सान हो सकता है। सावधानी बरतें।

**अप्रैल**—ता. 13 तक राशिस्वामी सूर्य अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य में खराबी एवं पिता से कुछ मतभेद रहेंगे। यद्यपि व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु घरेलु उलझनों के कारण मन परेशान रहे। ता. 14 से भाग्योन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

**मई**—भाग्यस्थ सूर्य पर शनि की नीच दृष्टि रहने से परिवार में व्यर्थ का तनाव व उलझनें रहेंगी। व्यापार अथवा नौकरी में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु उन अवसरों का उचित लाभ नहीं उठा सकेंगे। धन लाभ के साथ-साथ खर्च भी बढ़-चढ़ कर होगा।

**जून**—भाग्यस्थ मंगल पर शनि की दृष्टि तथा अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से स्वास्थ्य सम्बन्धी विभिन्न परेशानियां रहेंगी। नए-पुराने मित्रों से नए सम्बन्ध बनेंगे। घरेलु उलझनें एवं परिवार में विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा। खर्च अधिक एवं मानसिक तनाव रहेगा।

**जुलाई**—धर्म-कर्म में रूचि बढ़ेगी। राजदरबार में जाने से मान-सम्मान बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी में उन्नति के साधन बनेंगे। घर की सुख-शान्ति में मित्रों द्वारा विघ्न पड़ेगा। थोड़ी-सी उत्तेजना से काम बिगड़ सकता है। मासान्त में किसी बिगड़े काम में प्रतिष्ठित व्यक्ति के सहयोग से सुधार होगा।

**अगस्त**—इस मास मिश्रित फल प्राप्त होगा। व्यवसाय में उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। विलासादि पदार्थों पर धन का व्यय अधिक होंगे। ता. 16 से सूर्य का संचार इसी राशि पर होने से व्यवसाय में उन्नति एवं विघ्नों के बावजूद बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि परन्तु क्रोध से बचें।

**सितम्बर**—ता. 15 तक सूर्य का संचार होने के कारण मिश्रित प्रभाव रहेंगे। नौकरी व व्यापार में यद्यपि उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु पारिवारिक एवं निजी उलझनों के कारण लाभ में कमी रहेंगी। ता. 16 के बाद कुछ बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। वृथा मानसिक तनाव रहेगा।

**अक्तूबर**—मासारम्भ में उत्साह में वृद्धि परन्तु व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी। ता. 17 से राशिस्वामी सूर्य नीच राशि (तुला) में है। जिसके फलस्वरूप व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। ता. 20 के बाद भूमि, मकान एवं वाहन सम्बन्धी परेशानियां पैदा हों। परिवार में व्यर्थ का तनाव और खर्च की अधिकता रहेगी।

**नवम्बर**—मासारम्भ में अत्यधिक संघर्ष के बावजूद धन लाभ कम ही रहे। अधिकांश समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। उदर-विकार एवं आँखों में कष्ट का भय है। उत्तरार्द्ध भाग में किसी नए मित्र के साथ सम्पर्क पैदा होंगे। विद्या अथवा पूर्व में किए गए प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी।

**दिसम्बर**—निर्वाह योग्य धन लाभ संघर्ष के पश्चात् ही प्राप्त होगा। मांगलिक कार्यों पर धन का व्यय अधिक होगा। मनोरंजन में वृद्धि होगी। कुछ बिगड़े कार्यों में सफलता मिलेगी। मासान्त में मानसिक तनाव, क्रोध एवं परेशानियों का सामना रहेगा।

## कन्या राशि (Virgo)—(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

**जनवरी**—इस राशि पर केतु का संचार तथा बुध ता. 7 से धनु राशिगत रहने से संघर्षमयी परिस्थितियां रहेंगी। बनते कामों में विघ्न, स्वास्थ्य ढीला, स्वभाव में तेजी एवं वृथा भागदौड़ अधिक होगी। धन का अपव्यय अधिक रहे। ता. 26 के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

**फरवरी**—इस मास बुध मकर व कुम्भराशिगत संचार करने से पारिवारिक उलझनें एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में अत्यधिक भागदौड़ के उपरान्त भी लाभ में कमी रहेगी। ता. 10 से बुध अस्त भी रहने से विपरीत परिस्थितियों के कारण अल्प लाभ होगा। स्वास्थ्य कुछ ढीला एवं वृथा मानसिक तनाव रहे। खर्च अधिक रहे।

**मार्च**—आय के साधनों में मामूली वृद्धि होगी। स्त्री व सन्तान की ओर से शुभ समाचार मिलने के योग है। ता. 7 से बुध नीचराशिगत रहने से पारिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा। स्वास्थ्य में खराबी तथा चोटादि का भय रहेगा।

**अप्रैल**—मासारम्भ में बुध अष्टमस्थ परन्तु ता. 9 से पुनः सप्तमस्थ राहुयुक्त होने से आय कम और खर्च अधिक होंगे। चिन्ता रहेगी। अत्यधिक कठिनाई से निर्वाह योग्य धन के साधन बनेंगे। परन्तु पुरुषार्थ द्वारा उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। संक्रान्ति से वैशाख माहात्म्य का पाठ तथा सूर्य उपासना व दानादि करना शुभ होगा।

**मई**—मासारम्भ में किन्हीं शुभ कार्यों पर धन का खर्च होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। ता. 10 से बुध अष्टमस्थ रहने से स्वास्थ्य कुछ नर्म रहे, स्वभाव में तेजी तथा व्यर्थ की भागदौड़ अधिक होगी। विरोधी हानि पहुँचाने का प्रयास करेंगे।

**जून**—इस मास ता. 13 तक बुध-गुरु भाग्यस्थान में होने से बिगड़े कामों में सुधार एवं आय के साधनों में वृद्धि होगी। ता. 29 के पश्चात् व्यवसायिक क्षेत्रों में हालात कुछ अस्थिर रहेंगे।

**जुलाई**—केतु लग्नस्थ तथा बुध ता. 18 तक कर्क राशिगत रहने से बनते कार्यों में विघ्न, वृथा भागदौड़ एवं तनाव रहेगा। किन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 19 के बाद खर्च अधिक तथा किसी से अनावश्यक वाद-विवाद हो सकता है।

**अगस्त**—केतु की स्थिति तथा राशिस्वामी बुध 12वें होने से अत्यन्त संघर्षपूर्ण हालात का सामना रहेगा। व्यर्थ की भागदौड़ एवं मानसिक तनाव रहेगा। ता. 22 से वक्री बुध पुनः कर्क राशिशस्थ होने से स्वास्थ्य नर्म रहेगा।

**सितम्बर**—ता. 4 से बुध पुनः 12वें होने से व्यर्थ की भागदौड़ एवं यात्राएं होंगी। आशाओं के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं होंगी। मन उदासीन रहेगा। ता. 23 से बुध स्वराशिगत होने से दैनिक कार्यों में प्रगति होगी। कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा।

**अक्तूबर**—धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। परन्तु केतु के कारण तनाव व चिन्ता रहेगी। भलाई करने पर भी बुराई मिलेगी, आर्थिक परेशानियों के कारण चिन्ताएं होंगी।

**नवम्बर**—बुध वृश्चिक राशिगत रहने से व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। अत्यधिक भागदौड़ करने पर भी आय से खर्च अधिक होगा। केतु के कारण मन अशान्त, असन्तुष्ट, स्वास्थ्य ढीला एवं कैरियर सम्बन्धी चिन्ता रहेगी।

**दिसम्बर**—मासारम्भ में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु बुध तृतीयस्थ व केतु के कारण परिस्थितियां संघर्षपूर्ण रहेंगी। आराम कम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। भूमि व वाहनादि पर खर्च होगा। वाहनादि चलाते समय सावधानी बरतें। चोटादि का भय है। स्वास्थ्य विकार, बनते कार्यों में विघ्न तथा खर्च अधिक रहेगा।

## तुला राशि (Libra)—रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तु, ते

**जनवरी**—गुरु की शत्रु दृष्टि तथा ता. 18 से तृतीयस्थ शुक्र पर गुरु की नवम दृष्टि रहने से निकटस्थ बन्धुओं के साथ मनमुटाव व तनाव रहे। पारिवारिक समस्याएं व उलझनें रहेंगी। किन्तु नए कार्य की योजनाएं भी बनेंगी।

**फरवरी**—शुक्र ता. 11 तक शत्रुराशिगत (धनु) रहने से सर्विस अथवा व्यवसाय में नित्य नई-नई परेशानियों का सामना रहे। शत्रु प्रबल रहेंगे। ता. 12 से शुक्र चतुर्थ भावस्थ होने से व्यवसाय में अनेक उतार-चढ़ाव एवं परिवर्तनों का सामना रहेगा। स्थान-परिवर्तन भी होने के योग हैं। विदेशी सम्बन्धों से लाभ के योग हैं।

**मार्च**—मासारम्भ में रुके हुए कार्यों में कुछ सफलता प्राप्त होगी। निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। ता. से '**सूर्य-शुक्र-शनि**' योग पंचम भाव में होने से व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। घरेलु उलझनों से तनाव रहेगा।

**अप्रैल**—मासारम्भ से शुक्र उच्चराशिगत परन्तु राहुयुक्त होने से व्यवसाय में आंशिक लाभ एवं विलासादि कार्यों पर धन का व्यय होगा। क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। आर्थिक उलझनों के कारण मन में तनाव व चिन्ताएं रहेंगी। उत्तरार्द्ध भाग चुनौतीपूर्ण व खर्चीला होगा।

**मई**—मासारम्भ में शुक्र की स्वगृही दृष्टि होने पर भी व्यवसाय में आंशिक लाभ एवं विलासादि कार्यों पर धन का व्यय होगा। क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। आर्थिक उलझनों के कारण मन में तनाव व चिन्ताएं रहेंगी।

**जून**—परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। फिर भी निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। व्यवसाय में उतार-चढ़ाव व अल्प परेशानियां रहेंगी। स्थान परिवर्तन भी होने के योग हैं। सिर-दर्द, आँखों में कष्ट व चर्म रोग होने का भय रहेगा। विशेष सावधानी बरतें।

**जुलाई**—ता. 7 से शुक्र दशमस्थ होने से अकारण क्रोध, उत्तेजना, व्यर्थ की भागदौड़ लगी रहेगी। शत्रु-भय, मानसिक तनाव, अवांछित स्थान परिवर्तन एवं गृह में कलह-क्लेश और तनाव रहेगा। भूमि व वाहनादि का सुख प्राप्त होगा। गृह में शुभ कार्य पर खर्च होगा। ता. 16 से '**श्रावण माहात्म्य**' का पाठ करें।

**अगस्त**—बनते कामों में विघ्न और विलम्ब होगा। नौकरी में किसी से धोखा मिल सकता है। सावधानी बरतें। ता. 24 से शुक्र नीच राशिगत रहने से खर्च की अधिकता से मन परेशान और अशान्त रहेगा। शरीर कष्ट और चोटादि का भय रहेगा। **आदित्यहृदय स्तोत्र** का पाठ करना शुभ होगा।

**सितम्बर**—व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। धन-हानि एवं स्वास्थ्य नर्म रहेगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। *मन में अशांति व क्रोध की मात्रा अधिक होगी। अधिकांश समय मनोरंजन एवं वृथा कामों में व्यतीत होगा।*

***अक्तूबर**—ता. 12 तक राशिस्वामी स्वराशिगत रहने से कुछ बिगड़े कामों में सुधार,*

परिवार में अकस्मात् खुशी एवं नए मित्रों से मेल-जोल बढ़ेगा। परन्तु ता. 13 से धन का खर्च अधिक, स्थान परिवर्तन, यात्रा में चोटादि का भय रहेगा। सावधानी बरतें।

**नवम्बर**—मंगल की दृष्टि तथा ता. 6 से शुक्र धनु राशिगत रहने से धन लाभ साधारण ही रहेगा। खर्चों की अधिकता से मानसिक तनाव व क्रोध की भावना अधिक रहेगी। भाई-बन्धु से मनमुटाव रहेगी। परन्तु धर्म-कर्म के कार्यों में रूचि बढ़ेगी। शुभ कार्यों पर खर्च होगा। ***उपाय***—ता. 16 तक पं. देवीदयालु कृत '**कार्तिक-माहात्म्य**' का पाठ करते रहें।

**दिसम्बर**—ता. 2 से शुक्र चतुर्थ भाव में होने से स्वास्थ्य परेशानी, वाहनादि भौतिक सुखों पर खर्च अधिक रहे। विरोधियों द्वारा बनते कामों में अड़चनें पैदा करने से धन हानि होगी। '**श्रीसूक्तम्**' का पाठ करना शुभ रहेगा।

## वृश्चिक राशि (Scorpio)-(तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

**जनवरी**—मंगल धनुराशिगत संचार करने से आय के साधनों में वृद्धि एवं शुभ मंगल कार्यों पर धन का खर्च होगा। परन्तु शनि-ढैय्या के प्रभाव से पारिवारिक समस्याएं एवं आर्थिक उलझनें उभरती सिमटती रहेंगी। **उपाय**—'**श्रीविश्वनाथमङ्गल स्तोत्र**' का पाठ करें। (देखें पुस्तक—'**शिव मंत्रावली**') **लेखक : पं. पन्ना लाल ज्यो.**

**फरवरी**—ता. 5 से मंगल उच्चराशिगत संचार करने से विघ्न-बाधाओं के बावजूद व्यवसायिक कार्यों में सफलता मिलेगी। ज़मीन-जायदाद आदि का क्रय-विक्रय करने की योजना बनेगी। धन लाभ एवं पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे।

**मार्च**—किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी, मान-सम्मान में वृद्धि, पराक्रम एवं उत्साह में बढ़ौत्तरी, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क लाभकारी रहेंगे, ता. 15 से '**मंगल-शनि**' योग चतुर्थस्थ रहने से अचानक खर्चों में वृद्धि एवं घरेलु परेशानियां का सामना होगा।

**अप्रैल**—धन लाभ कम तथा घरेलू उलझनों के कारण मानसिक तनाव रहेगा। परिवार में मतभेद, पिता को स्वास्थ्य परेशानी एवं कुछ निजी समस्याओं का सामना रहेगा। ता. 23 से पंचम भाव में '**मंगल-राहु**' योग रहने से सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहे।

**मई**—'**मंगल-राहु**' योग पंचमस्थ रहने से स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट तथा खर्च अधिक रहेंगे। विशेष सावधानी बरतें। घर-परिवार सम्बन्धी उलझनें रहेंगी। दुर्घटना में चोटादि का भय रहेगा। व्यर्थ की यात्रा भी हो।

**जून**—ता. 13 तक सूर्य की मित्र तथा मासभर मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से व्यवसाय में संघर्ष के बाद आय के स्रोत बढ़ेंगे। स्वभाव में क्रोध एवं चिड़चिड़ापन रहेगा। संयमपूर्ण व्यवहार करें। यात्रा से बचें।

**जुलाई**—विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन-लाभ व कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन का विचार बने। यात्रा का प्रोग्राम बनेगा। प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। मासान्त में स्त्री सुख व शुभ समाचार मिले।

**अगस्त**—परिस्थितियां धीरे-धीरे अनुकूल होंगी। पराक्रम और पुरुषार्थ से कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। गुरु की दृष्टि होने से धर्म-कर्म में अभिरुचि, सन्तान सम्बन्धी सुख तथा सोची योजनाओं में कामयाबी मिलेगी। शनि-ढैय्या के कारण विघ्न-बाधाएं रहेंगी।

**सितम्बर**—मंगल अष्टमस्थ रहने से घरेलु उलझनों के कारण मन परेशान रहे। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न हों। निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति हो, खर्च की अधिकता रहे। शनि ढैय्या रहने से परिवार में कुछ निजी समस्याओं का सामना रहेगा।

**अक्तूबर**—पारिवारिक एवं आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान रहे। सोची योजनाओं में विघ्न-बाधाएं, परिवार में मतभेद एवं कठिन परिस्थितियों के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे। ***उपाय***—प्रतिदिन दारिद्रयदहन श्रीशिवस्तोत्र का पाठ करें। [देखें हमारी पुस्तक '**शिव मन्त्रावली**']

**नवम्बर**—ता. 15 तक सूर्य नीचराशिगत तथा मंगल कर्कराशिगत होने से व्यवसाय में अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष उपरान्त धन की प्राप्ति होगी। घरेलु समस्याएं, मानसिक तनाव, सिरदर्द व आँखों में कष्ट की सम्भावना बनी रहेगी।

**दिसम्बर**—ता. 6 से मंगल वक्री एवं शनि की ढैय्या के कारण व्यवसाय के सम्बन्ध में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। '**मंगल-शनि**' के मध्य षडाष्टक सम्बन्ध रहने से पारिवारिक सदस्यों के साथ मनमुटाव एवं वैमनस्य की स्थिति रहेगी।

## धनु राशि (Sagittarius)-(ये, यो, भा, भी, भू, धा, फ, ढ, भे)

**जनवरी**—राशिस्वामी गुरु की शुभ दृष्टि होने से अचानक धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। नौकरी एवं व्यवसाय में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। शुक्र द्वादशस्थ, ता. 18 से लग्नस्थ रहने से मनोरंजन एवं विलासादि वस्तुओं पर व्यय अधिक होगा। किसी प्रिय व्यक्ति से सम्बन्ध बढ़ेंगे।

**फरवरी**—मासारम्भ में कार्यक्षेत्र में विशेष उतार-चढ़ाव एवं संघर्ष का सामना रहेगा। कुछ सोची योजनाओं में विघ्न-बाधाएं उत्पन्न होंगी। मासान्त में शुभ कार्य पर धन का खर्च होगा। वाहनादि का क्रय-विक्रय भी होगा।

**मार्च**—गुरु की दृष्टि के प्रभावस्वरूप वृद्धजनों के सहयोग एवं परिश्रम के बाद धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। परन्तु परिवार में सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, मन आशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में हालात कुछ बदलेंगे। खर्च अधिक एवं मनोरंजन आदि कार्यों में ध्यान रहेगा।

**अप्रैल**—कुछ उत्साहवर्धक स्थितियां बनेंगी। अकस्मात् लाभ एवं सन्तान सुख में वृद्धि होगी। भूमि-सवारी आदि के क्रय-विक्रय की योजना भी बनेगी। धर्म-कर्म में भी रूचि रहेगी। '**वैशाख-माहात्म्य**' का ता. 13 से नित्य पाठ करें।

**मई**—पूर्वार्द्ध भाग में कुछ सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहे। परन्तु राशिस्वामी गुरु छटे होने से बनते कामों में विघ्न एवं स्वास्थ्य परेशानी रहे। उत्तरार्द्ध में अचानक यात्रा के संयोग बनेंगे। परन्तु शत्रु भय और खर्च अधिक रहेगा।

**जून**—गुरु छटे संचार करने से कुछ सोची योजनाओं को क्रियान्वित रूप देने में विलम्ब होगा। ता. 14 से व्यवसाय में आंशिक सफलता एवं विलासादि कार्यों पर धन खर्च होगा। क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं।

**जुलाई**—स्वास्थ्य कुछ ढीला, पेट-विकार एवं लीवर में खराबी के योग हैं। व्यवसाय में भी उतार-चढ़ाव एवं परिवर्तनों का सामना रहेगा। ता. 12 से मंगल की दृष्टि रहने से

उत्साह में वृद्धि परन्तु क्रोध अधिक, खर्च भी अधिक तथा वृथा भागदौड़ बनी रहेगी। चोटादि का भय रहे।

**अगस्त**—मंगल की दृष्टि रहने से निर्वाह योग्य धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। परन्तु मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक रहेंगे। सांसारिक कार्यों में प्रगति होगी। गृह में खुशी का वातावरण बनेगा। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे।

**सितम्बर**—मंगल की दृष्टि रहने से उत्साह में वृद्धि एवं भाग्यवश कोई बिगड़ा काम बनेगा। परन्तु ता. 15 तक सूर्य-शनि के मध्य दृष्टि सम्बन्ध रहने से क्रोध एवं खर्च अधिक रहेगा। स्वास्थ्य विकार एवं पारिवारिक सम्बन्ध तनावपूर्ण रहेंगे।

**अक्तूबर**—अपने साहस और परिश्रम से ही कार्यक्षेत्र की समस्याएं सुलझानी पड़ेंगी। ता. 9 से गुरु वक्री रहने से बौद्धिक कार्यों में रूचि कम होगी व विद्यार्थियों को विद्या में आशानुकूल सफलता नहीं प्राप्त हो सकेगी। ता. 17 से पं. देवीदयालु कृत '**कार्तिक-माहात्म्य**' का पाठ करें।

**नवम्बर**—मंगल अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य ढीला, घरेलु चिन्ता एवं सांझेदारी के कार्यों में हानि होगी। वाहनादि सावधानी से चलाना चाहिए। क्रोध अधिक, सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता रहेगी।

**दिसम्बर**—संघर्ष के बावजूद धन लाभ के साधन बनते रहेंगे। भूमि, जायदाद एवं वाहनादि पर खर्च अधिक होगा। स्त्री-सुख एवं परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा। मासान्त में बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। क्रोध अधिक व पारिवारिक परेशानी रहे।

## मकर राशि (Capricorn)—(भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

**जनवरी**—शनि स्वराशिगत द्वितीय भाव में होने से यद्यपि आय-वृद्धि के अनेक अवसर प्राप्त होंगे, परन्तु पारिवारिक उलझनें, स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट तथा व्यापार में लाभ की कमी रहेगी। अचानक कुछ रुके हुए कार्यों में प्रगति होगी।

**फरवरी**—ता. 5 से मंगल इस राशि पर उच्चस्थ होकर संचार करने से विशेष परिश्रम एवं पुरुषार्थ करने से कार्यसिद्धि होगी, अकस्मात् लाभ तथा हानि के योग हैं। आर्थिक उलझनें तथा भाई-बन्धुओं से मनमुटाव रहेगा।

**मार्च**—उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क बढ़ेंगे, परन्तु अनावश्यक दौड़-धूप एवं आकस्मिक धन का अपव्यय अधिक होगा। ता. 15 से मंगल-शनि योग रहने से परिवार में मतभेद भी रहें, क्रोध अधिक, स्वभाव में तेजी एवं उत्तेजना, स्वास्थ्य परेशानी के योग हैं।

**अप्रैल**—वैवाहिक जीवन में मतभेद दूर होगा। धन लाभ एवं उन्नति के पर्याप्त अवसरों के बावजूद समुचित लाभ नहीं उठा पाएंगे। परन्तु कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार एवं समाज में मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

**मई**—गुरु की नीच दृष्टि होने से व्यवसायिक क्षेत्रों में परिस्थितियां संघर्षपूर्ण रहेंगी। सांझेदारी के कार्यों में हानि एवं गुप्त चिन्ता रहेगी। ता. 14 के पश्चात् आय व सुख-साधनों में वृद्धि तथा विदेशी कार्यों में प्रगति होगी। धर्म-कर्म के कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा।

**जून**—मास के पूर्वार्द्ध भाग में धन एवं सुख की प्राप्ति होगी। वृथा खर्च भी बढ़ेंगे। आमोद-प्रमोद आदि साधनों में विस्तार एवं वृद्धि होगी। धर्म-कर्म में भी रुझान रहेगा। उत्तरार्द्ध में पारिवारिक उलझनों के कारण मन संतप्त रहे। आकस्मिक खर्चों में वृद्धि के कारण तनाव रहे। **शनिवार** के 11 व्रत करने शुभ होंगे।

**जुलाई**—पूर्वार्द्ध भाग में धन एवं विद्या में उन्नति होगी। विलासादि कार्यों पर धन का व्यय होगा। स्त्री एवं सन्तान की ओर से प्रसन्नता प्राप्त हो। ता. 16 के पश्चात् व्यवसाय में बहुत कठिनाई से निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। वृथा यात्राएं एवं धन का खर्च अधिक होगा।

**अगस्त**—सूर्य की सप्तम दृष्टि ता. 15 तक रहने से मानसिक तनाव एवं घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। अत्यधिक संघर्ष के बाद धन लाभ अल्प रहेगा। ता. 16 से रुके हुए कार्यों में सुधार, परन्तु आय कम खर्च अधिक होगा। ता. 26 से मंगल की भी दृष्टि रहने से क्रोध से बचें।

**सितम्बर**—मंगल की दृष्टि रहने से मान-प्रतिष्ठा एवं आय के साधनों में वृद्धि होगी। विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी। परन्तु ता. 16 से वृथा भागदौड़ एवं धन का खर्च अधिक होगा। भाग्यवश कुछ बनते कामों में विघ्नों का सामना रहेगा।

**अक्तूबर**—मासारम्भ में कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। पदोन्नति व मान-सम्मान में वृद्धि होगी। मासान्त में दौड़-धूप तथा फिजूलखर्ची बढ़ेगी। मंगल-शनि के मध्य षडाष्टक योग होने से मानसिक तनाव एवं परिवार में विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा।

**नवम्बर**—ता. 14 तक राशिस्वामी शनि वक्री होने से शरीर कष्ट, मानसिक तनाव एवं स्वास्थ्य हानि के योग हैं। किसी नवीन योजना पर विचार-विमर्श होगा। धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति भी बनेगी। परन्तु परिवार में तनाव एवं वैचारिक मतभेद होंगे। चोटादि का भय रहे।

**दिसम्बर**—संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद व्यवसाय में धन लाभ एवं पदोन्नति के योग हैं। धन लाभ एवं उन्नति के पर्याप्त अवसरों के बावजूद समुचित लाभ नहीं उठा पाएंगे। परन्तु कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार एवं समाज में मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

## कुम्भ राशि (Aquarius)—(गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

**जनवरी**—राशिस्वामी शनि लग्नस्थ स्वराशिगत होने से धन लाभ एवं पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे, परन्तु साढ़ेसाती के प्रभाव से पारिवारिक मतभेद, क्रोध की अधिकता तथा तनाव की स्थिति रहे।

**फरवरी**—पूर्वार्द्ध में व्यवसाय के क्षेत्र में योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ने पर लाभ व उन्नति सम्भव होगी। घर-परिवार में सुखद माहौल होते हुए भी गुप्त चिन्ता बनी रहेगी। ता. 13 से '**सूर्य-शनि**' योग होने से क्रोध अधिक, पारिवारिक सदस्यों के साथ मतान्तर पैदा होने के संकेत हैं।

**मार्च**—यद्यपि कार्यक्षेत्र में स्थिति असन्तोषजनक रहेगी, परन्तु अत्यधिक परिश्रम के पश्चात् निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी रहे। मासान्त में कुछ बिगड़े कामों में सुधार एवं परिवारिक सहयोग से कुछ कार्य बनेंगे। ***उपाय***—शनिवार को पीपल प्रदक्षिणा करना तथा **दशरथकृत शनि स्तोत्र** का पाठ शुभ रहेगा।

**अप्रैल**—ता. 22 तक इस राशि पर '**मंगल-शनि**' योग रहने से क्रोध अधिक, मानसिक तनाव तथा निकटस्थ बन्धुओं के साथ मतान्तर पैदा होने के संकेत हैं। आय कम और खर्च अधिक रहेगा। उत्तरार्द्ध में विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी। ***उपाय***—'***श्रीनीलकण्ठ स्तोत्र***' का पाठ करना शुभ होगा। (देखें पुस्तक '***शिव-मन्त्रावली***')

आमोद-प्रमोद आदि साधनों में विस्तार एवं वृद्धि होगी। धर्म-कर्म में भी रुझान रहेगा। स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा। (देखें पुस्तक 'शिव-मंत्रावली')

**मई**—चतुर्थ भाव में बृहस्पति आने तथा ता. 6 से अस्तगत रहने से मानसिक एवं घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। स्वास्थ्य नर्म एवं अफसरों से तनाव की स्थिति रहे। संयमपूर्वक व्यवहार करना शुभ होगा। उत्तरार्द्ध में कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। कुछ सोची योजनाओं में कामयाबी, मान-सम्मान में वृद्धि एवं यात्रा/विलासादि पर खर्च होंगे।

**जून**—व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से मेल-जोल होगा। परन्तु सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहे। ता. 16 के बाद परिवार में शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। परन्तु भूमि-जायदाद के मतभेद दूर होने में विलम्ब होगा।

**जुलाई**—व्यवसायिक क्षेत्रों में प्रतिकूल वातावरण का सामना रहेगा। परन्तु मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि एवं विदेशी कार्यों में प्रगति होगी। मित्रों की सहायता से किसी कठिन कार्य की सिद्धि होगी। ता. 16 के बाद स्वास्थ्य हानि तथा तनाव की स्थिति रहे।

**अगस्त**—मासारम्भ में उलझनों के बावजूद धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। ता. 16 से सूर्य की लग्नस्थ शनि पर दृष्टि रहने से क्रोध एवं उत्तेजना अधिक रहे। पारिवारिक सदस्यों के साथ मतान्तर पैदा होने के संकेत हैं।

**सितम्बर**—ता. 16 तक सूर्य की दृष्टि रहने से क्रोध अधिक, मानसिक तनाव तथा निकटस्थ बन्धुओं के साथ मतान्तर पैदा होने के संकेत हैं। शनि वक्री अवस्था में रहने से जल्दबाज़ी में लिए गए निर्णय हानिकारक हो सकते हैं। किसी विशेष व्यक्ति से धोखे की संभावना बनी रहेगी।

**अक्तूबर**—इस मास आर्थिक हालात पहले से बेहतर होंगे। कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। विदेश से सम्बन्धित कार्यों में कुछ सफलता प्राप्त होने की सम्भावनाएं हैं। मासान्त में शुभ समाचार और अप्रत्याशित लाभ भी होंगे।

**नवम्बर**—ता. 15 तक उच्चप्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क, धर्म-कर्म में रुझान एवं धन का खर्च अधिक होगा। ता. 16 से सूर्य-शनि के मध्य दृष्टि-सम्बन्ध रहने से इस समयावधि में विशेष उथल-पुथल एवं उतार-चढ़ाव का सामना रहेगा।

**दिसम्बर**—व्यवसाय में अनिश्चितता बनी रहेगी। आय से व्यय अधिक होगा। स्वास्थ्य में विकार उत्पन्न हो, मंगल-शनि के मध्य षडाष्टक सम्बन्ध होने से क्रोध अधिक, चोटादि का भय तथा घरेलु उलझनों के कारण तथा आर्थिक परेशानियों से मन चिन्तित रहेगा।

## मीन राशि (Pisces)—(दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि)

**जनवरी**—शनि-साढ़ेसाती तथा लग्नस्थ राहु के प्रभाव से बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएँ, शरीर कष्ट, मानसिक तनाव रहेगा। गुरु द्वितीयस्थ शनि द्वारा दृष्ट होने से कार्यव्यवसाय में भागदौड़ अधिक रहेगी। आय में कमी तथा आकस्मिक खर्च भी बढ़ेंगे।

**फरवरी**—व्यवसाय में परिश्रम एवं संघर्ष के बावजूद धन लाभ की स्थिति बनेगी। धर्म-कर्म में रूझान एवं शुभ कार्यों पर खर्च होगा। परन्तु वृथा-भागदौड़, मानसिक तनाव, गुप्त चिन्ता, किसी निकट भाई-बन्धु से वृथा तनाव एवं मतभेद भी रहेंगे।

**मार्च**—शनि-साढ़ेसाती होने से आय कम और व्यय अधिक होगा। व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। धन-हानि एवं स्वास्थ्य नर्म होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होते रहेंगे। ता. 14 से सूर्य-राहु का योग बन जाने से अकारण क्रोध, उत्तेजना, शत्रु-भय रहेगा, परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

**अप्रैल**—मासारम्भ में यद्यपि उच्चप्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क एवं लाभ के अवसर मिलेंगे। ता. 13 से द्वितीयस्थ सूर्य पर शनि की तृतीयस्थ दृष्टि होने से पारिवारिक सदस्यों में मतभेद एवं तकरार के हालात बनेंगे। वृथा भागदौड़ एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में भी आशानुकूल लाभ में कमी रहेगी।

**मई**—मासारम्भ में परिवार में विभिन्न समस्याओं का सामना रहेगा। वृथा भागदौड़ एवं धन लाभ में कमी रहेगी। उत्तरार्द्ध भाग में कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार, परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे। नए लोगों के साथ सम्पर्क और विदेश सम्बन्धी कार्यों के रुझान बढ़ेगा।

**जून**—मासारम्भ में धन का खर्च अधिक, उलझनों के बावजूद निर्वाह योग्य आय एवं विदेशी कार्यों में कुछ प्रगति होगी। परन्तु शनि-साढ़ेसाती के कारण मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। ज़मीन-जायदाद सम्बन्धी कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है।

**जुलाई**—शनि-साढ़ेसाती होने से व्यवसाय में अनिश्चितता बनी रहेगी। आय कम और व्यय अधिक रहेगी। परिश्रम करने पर भी धन प्राप्ति आशानुरूप नहीं होगी। परिवार में तनाव व वैचारिक मतभेद होंगे। उत्तरार्द्ध भाग में भूमि सम्बन्धी क्रय-विक्रय की योजना बनेगी। परन्तु इस कार्य में कुछ समस्या भी उत्पन्न हो सकती है।

**अगस्त**—राशिस्वामी गुरु तृतीय भावस्थ होने से शुभ कार्यों पर व्यय होगा। कुछ बिगड़े काम बनेंगे। नवीन मित्रों के साथ मेल-जोल बढ़ेगा। वाहनादि सुख-सुविधाओं पर खर्च अधिक होंगे। उत्तरार्द्ध भाग में मानसिक तनाव व गुप्त चिन्ता रहेगी। शिव चालीसा का पाठ करना शुभ होगा।

**सितम्बर**—शनि-साढ़ेसाती के प्रभाव से व्यवसाय में अनिश्चितता बनी रहेगी। आय कम और व्यय अधिक होगा। उत्तरार्द्ध भाग में किसी निकट सम्बन्धी से तकरार होगी। परिवार में कुछ मनमुटाव, वैचारिक मतभेद और अपनी ही गलती से परेशानी उत्पन्न हो।

**अक्तूबर**—पूर्वार्द्ध भाग में व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहे। मित्रों की सहायता से किसी कठिन कार्य में सिद्धि होगी। निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। परन्तु मासान्त में परिवार में धर्म-कर्म के कार्यों पर खर्च अधिक होगा। खुशी के अवसर भी मिलेंगे।

**नवम्बर**—साढ़ेसाती के प्रभाव से बनते कार्यों में विघ्न, आशाओं के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं होगी। मन उदासीन रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में कुछ विवादास्पद मामले मानसिक तनाव का कारण बनेंगे। किसी निकट सम्बन्धी से तकरार होगा। धन का खर्च अधिक, **श्रीसूक्तम्** का पाठ करना शुभ होगा।

**दिसम्बर**—गुरु वक्री रहने से भी खर्च अधिक रहे। उलझनों के बावजूद निर्वाह योग्य आय एवं विदेशी कार्यों में कुछ प्रगति होगी। परन्तु ता. 16 से परिस्थितियों में धीरे-धीरे सुधार होगा। उत्साह से किए कार्यों में सफलता के आसार बढ़ेंगे।

"सम्पूर्ण वृहद् राशिफल"

**अपनी जन्म एवं नाम राशि के अनुसार वर्ष-2024 ई. के लिए अधिक सटीक, विस्तार तथा दैनिक राशिफल, ग्रहगोचर अनुसार वर्षफल एवं उपायों के लिए हमारा वृहद् पं. देवीदयालु 'राशिफल' अवश्य पढ़ें। ( लेखक : पं. विवेक शर्मा ) मूल्य-80 रु.**

# वि. संवत् २०८१ में संवत्सर एवं राजा-मन्त्री-आदि का फल

ॐ स्वस्ति नः श्रीगणेशाय नमः। अचिन्तयाव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्-चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवीदयालु ज्यो. स्व वृद्धप्रपितामहम् स्मरन् भक्त्या लोकहितार्थाय सुखसम्पत्ति हेतवे सम्वत्तारम्भे **'कालयुक्त'** नामक विक्रमी सम्वत्सरे (ततो अग्रे-संवतान्तकाले **'सिद्धार्थी'** सम्वत्सरे) शुभे नव-चत्वारिंशत्योत्तर शतम् वर्षाणि (१४९) वर्षप्रवेशे **पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी** अहं प्रप्रपौत्र एवं अधिपतिः पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़, पुत्र दैवज्ञरत्न **पं. श्रीपन्ना लाल ज्योतिषी**, कनिष्ठ भ्रातृ **पं. पंकज शर्मा** सहितोऽहं कुर्वे **'पंचाँग दिवाकरम्'**।।

**सृष्टि सम्वत्** १,९५,५८,८५,१२५ के अन्तर्गत, **श्रीविक्रमी संवत् २०८१**, शक संवत् १९४६-४७, कलि (कल्कि) संवत् ५१२५, श्रीकृष्ण सम्वत् ५२६०, सप्तर्षि संवत् ५१००, श्रीबुद्ध संवत् २६४७-४८, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन) संवत् २५४९-५०, हिजरी सन् १४४५-४६, इंग्लिश सन् २०२४-२५ ईस्वी, फसली सन् १४३१-३२, खालसा संवत् ३२५-२६, नानकशाही सम्वत् ५५५-५६, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रेतायुग १२९६०००, द्वापरयुग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग का प्रमाण ४३,२००० वर्षों का होता है।

## 'कालयुक्त' नामक नव-सम्वत्सर का फल-(वि. सं. २०८१)

नव विक्रमी संवत् २०८१ के आरम्भ (9 अप्रैल, 2024 ई.) में बार्हस्पत्यमान (गुरुमान) से शिव (रुद्र) विशति के अन्तर्गत **'एकादश युग'** का द्वितीय **'कालयुक्त'** नामक (सम्वत्सरों में 52वाँ) सम्वत्सर का प्रारम्भ हो चुका होगा। (कालयुक्त-संवत्सर का आरम्भ लगभग 19 मार्च, 2024 ई. से हो चुका होगा) [संवत् २०८१ मध्ये मेषऽर्के समय संवत्सर के भुक्त मासादि ०/२५/१७′/१८″, भोग्य मास, दिनादि ११/०४/४२/४२″ हैं।] अर्थात् कालयुक्त सम्वत्सर का काल लगभग 14 मार्च, 2025 ई. तक रहेगा।

**नववर्ष प्रवेश लग्न**

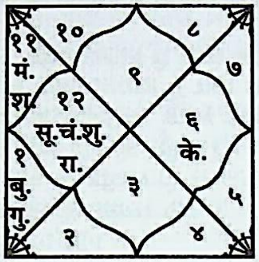

**ध्यान रहे,** नव विक्रमी संवत् का प्रवेश 8 अप्रैल, 2024 ई. सोमवार को रात्रि 11 बजकर 51 मिंट पर (23:51), रेवती नक्षत्र तथा वैधृति योग कालीन वृश्चिक लग्न में होगा। शास्त्र एवं प्रचलित परम्परानुसार नवसंवत् का प्रारम्भ तथा राजा का निर्णय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के वार-अनुसार ही किया जाता है। **'मंगलवार'** से नवसंवत् का प्रारम्भ होने के कारण आगामी वर्ष (संवत्) का राजा भी **'मंगल'** होगा। सम्वत्सर का निर्णय भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (संवत् के आरम्भ) में विद्यमान् सम्वत्सर को ही लिया जाता है। तद्नुसार **'कालयुक्त'** नामक नव वि. संवत् २०८१ तथा चैत्र (वासन्त) नवरात्रों का प्रारम्भ 9 अप्रैल, मंगलवार (२७ चैत्र प्रविष्टे), रेवती नक्षत्र कालीन होगा।

चैत्र (वासन्त) नवरात्र अर्थात् 9 अप्रैल, मंगलवार से जप, पाठ, पूजन, दान, व्रतानुष्ठान, यज्ञादि, धार्मिक अनुष्ठान कर्मों के आदि में, संकल्पादि प्रयोग कार्यों में **14 मार्च, 2025 ई.** तक **'कालयुक्त'** नामक नव सम्वत्सर का प्रयोग होगा। ता. 14 मार्च, 2025 ई. के बाद **सभी प्रकार के संकल्प कार्यों में संवतारम्भे 'कालयुक्त' परं वर्तमाने 'सिद्धार्थ' नाम सम्वत्सरे** का प्रयोग करना चाहिए।

**'कालयुक्त'** नामक सम्वत्सर का फल शास्त्रों में इस प्रकार वर्णित है-

**'रोगवृद्धिः प्रजायेत कालयुक्ते विशेषतः।**
**राजयुद्धं भवेद् घोरं वृष्टिर्घोरा वरानने।।'**

अर्थात् **'कालयुक्त'** नामक संवत्सर में विभिन्न प्रकार के पेचीदा रोगों में विशेष वृद्धि के कारण प्रजा में कष्ट तथा हाहाकार रहे। विभिन्न देशों के राजाओं (शासकों) में क्षुब्धता, टकराव तथा बिखराव के कारण युद्ध जैसी स्थिति निरन्तर बनी रहेगी। कुछ विशेष स्थानों पर भयंकर वर्षा होने से खड़ी फसलों को हानि तथा बाढ़ादि की स्थिति बने।

**'भविष्यफल भास्कर'** अनुसार भी **'कालयुक्त'** सम्वत्सर होने से वर्ष में प्रजा में रोग-शोक में वृद्धि होगी, परन्तु वर्षा पर्याप्त होने तथा धान्यादि के उत्पादन में वृद्धि होने से साधारण जनता सुखी एवं आनन्द से रहेगी। राजाओं में परस्पर युद्ध से प्रजा का विनाश भी होगा। कहीं धन-धान्य की वृद्धि तथा वृक्षों पर पुष्प-फल लगेंगे।

**'वत्सरे कालयुक्ताख्ये-सुखिनः सर्वजंतवः।**
**सन्त्पथापिच-सस्यानि-प्रचुराणित तथा गदाः।।'**

**नोट**-नवसंवत् (वर्ष कुण्डली) के ग्रहगोचर अनुसार राजनैतिक एवं सामाजिक प्रभाव हेतु **'ग्रहों की आकाशी कौंसल का प्रभाव'** वाले पृष्ठों का अवलोकन करें।

❖ ***रोहिणी का वास***-वि. संवत् २०८१ में मेष संक्रान्ति का प्रवेश **'मृगशिर'** नक्षत्रकालीन हुआ है। अतएव **'वर्षप्रबोध'** ग्रन्थानुसार रोहिणी का वास **'सन्धि'** पर होगा। यथा-

**संधिसंस्थ यदा ब्राह्म भंजायते। खण्डवृष्टिस्तदा सर्वधान्याप्तयः।।**

अर्थात् **'रोहिणी का वास' 'सन्धि'** पर होने से इस वर्ष देश में खण्ड वृष्टि अर्थात् असमान वर्षा होगी। कुछ क्षेत्रों/प्रदेशों में अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ का प्रकोप हो। भूस्खलन, अग्निकाण्ड, विस्फोट आदि के कारण लोगों की क्षति हो, जन-धन-कृषि आदि की हानि तथा कुछ प्रदेशों में बहुत कम वर्षा होने के कारण कहीं सूखा, कहीं अनाज एवं कहीं पेयजल की कमी के कारण जन-धन की हानि, अनाज की कमी हो। सब्ज़ियों, दालों के मूल्यों में विशेष वृद्धि हो।

परन्तु **'मेघमहोदय'** नामक ग्रन्थानुसार **'मृगशिर'** नक्षत्रकालीन वैशाख संक्रान्ति प्रवेश होने से रोहिणी-वास **'तट'** पर होगा। **'तट'** पर रोहिणी का वास होने से वर्ष में उपयोगी एवं उत्तम (अच्छी) वर्षा होने के योग बनेंगे। फलस्वरूप धान्य, चावल, चने, गन्ने, वृक्ष, घास व अन्य जड़ी-बूटियों, पौधों की पैदावार भी अच्छी होगी। प्रजा में अन्न, धन एवं अन्य सुख-साधनों व प्रसाधनों की वृद्धि होगी। **'तटे वृष्टिः सुशोभना'** अनुसार भी सन्तोषजनक एवं पर्याप्त वर्षा होगी।

**ध्यान दें**–उपरोक्त दो विभिन्न मतों के अनुसार रोहिणी-वास का स्थान (समुद्र, तट आदि) बहुधा भिन्न-भिन्न प्राप्त होने से, वर्षा की वार्षिक भविष्यवाणी सामान्यतः परस्पर विरोधी होती है। रोहिणीवास का निर्णय किसी पंचांग में **'वर्षप्रबोध'** और किसी में **'मेघमहोदय'** के अनुसार किया जाता है। परिणामस्वरूप इन विभिन्न पंचांगों में रोहिणीवास के आधार पर की जाने वाली भविष्यवाणियों (अतिवृष्टि, अल्पवृष्टि आदि) में प्रायः भारी मतभेद रहता है। पंचांगकारों के लिए यह गम्भीरता से विचारणीय विषय है। भविष्यवाणी में इस प्रकार का विरोधाभास ज्योतिष शास्त्र को उपहासपद बनाता है।

✤ **संवत् (समय) का वास**–रोहिणी का वास **'सन्धि'** पर होने की स्थिति में सम्वत्सर पर वास **'वैश्य'** के घर रहेगा, जिसके प्रभावस्वरूप धन का प्रसार अधिक रहे। सर्वत्र उपयोगी एवं अनुकूल वर्षा की कमी रहे अर्थात् खण्ड-वर्षा एवं विपरीत जलवायु रहने से सभी प्रकार के अनाजों, धान्यादि के मूल्यों में और अधिक तेजी होगी। राजनीतिक और व्यापारादि सभी क्षेत्रों में लोभ व स्वार्थपरता बढ़ेगी। खाद्यान्न व्यवसाय में संलग्न व्यापारी वर्ग विशेष रूप से लाभान्वित होंगे। सामान्य लोगों में भी लोभ-लालच का प्रभाव रहेगा।

(ii) रोहिणी का वास **'तट'** पर होने की स्थिति में संवत् का वास **'धोबी'** (रजक) के घर रहेगा। फलस्वरूप वर्षा विपुल एवं उत्तम मात्रा में होगी–**रजके वृष्टिरूत्तमा'**।। धान्य, चावल, गेहूँ, चने, गन्ना, ईख, मक्की, हरी सब्ज़ियों, वृक्षों व फलों का उत्पादन अच्छा होगा। लोगों में सुख एवं ऐश्वर्य के साधन बढ़ेंगे। कुएँ, तालाब, नदी-नाले, बावड़ियां, दरिया आदि जलापूरित रहेंगे।

✤ **संवत् (समय) का वाहन**–वि. संवत् २०८१ का राजा **'मंगल'** (भौम) होने से सम्वत् का वाहन **'वृषभ' (बैल)** होगा। फलस्वरूप वर्षा पर्याप्त एवं अच्छी होगी, विशेषकर पहाड़ी क्षेत्रों में वर्षा की बहुलता रहेगी। नदियों में पानी का वेग (बहाव) अधिक होगा, कहीं बाढ़ादि के कारण क्षति हो। वृक्षों पर फल-फूल की पैदावार अच्छी हो तथा पशुओं का चारा-घास, तृणादि भी बहुलता में हो। राजनेताओं में परस्पर आरोप-प्रत्यारोप लगने से कुछ राज्यों में अस्थिरता का वातावरण बने।

मतान्तर से कुछ विद्वान (संहिताकार) राजा मंगल होने से संवत् का वाहन 'नाव' **(नौका)** को मानते हैं। संवत् का वाहन नौका होने से सर्वत्र सभी प्रकार की फसलों के उत्पादन में कमी तथा अकालजन्य परिस्थितियां बनें। लोगों का इधर-उधर अर्थात् एक राज्य से दूसरे राज्यों में पलायन, देश में आतंकी प्रयोजित साम्प्रदायिक घटनाओं का भय तथा सभी चौपायों को कष्ट हो।

## ● वि. संवत् २०८१ के दश-पदाधिकारियों का फल ●

### (1) वर्ष (वि. संवत् २०८१) के राजा 'मंगल' का फल–

**'अग्नि-तस्कर-रोगाढयो नृपविग्रहः दायकः।**
**गतसस्यो बहुव्यालो भौमाब्दो बालहा भृशम्।।**

अर्थात् संवत्सर का राजा **'मंगल'** होने से इस वर्ष वायु-वेग (आँधी-तूफान) तीव्र रहेगा, वायुयान दुर्घटनाएँ, अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि प्राकृतिक उत्पातों में विशेष वृद्धि होगी। आतंकी-साम्प्रदायिक घटनाओं, तस्करी, ठगी, लूटपाट तथा विभिन्न पेचीदा रोगों में वृद्धि से साधारण जनता परेशान व पीड़ित रहेगी। तीव्र वायुवेग एवं बादल होने पर भी वर्षा की कमी अनुभव होगी तथा तूफान, चक्रवात, आँधी, ओलावृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं से कृषि-उत्पादन में कमी तथा पशुधन की भी हानि होगी। आरोप-प्रत्यारोप एवं सामाजिक वातावरण के कारण कुछ क्षेत्रों में शासकवर्ग की कर्त्तव्यपालन के प्रति उदासीनता रहे। प्रजा में पित्त, रक्त एवं विषाणु जनित रोगों की बहुलता रहेगी। बालक-बालिकाओं के प्रति क्रूरता तथा अपहरण सम्बन्धी घटनाएँ, अपमृत्यु तथा प्रियजन-विछोह से लोग दुःखी रहें। सर्पादि जीव खबरों में बने रहेंगे।

अन्य संहिताकार के मतानुसार–

**'भौमे नृपे वह्निभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थिव-विग्रहश्च।**
**दुःखं प्रजा-व्याधि-वियोगपीड़ा स्वल्पं पयो मुञ्चति वारिवाहः।।'**

अर्थात् वर्ष का राजा **'मंगल'** होने से देश में चोरी, ठगी, बेईमानी, भ्रष्टाचार, हिंसा-उपद्रव की घटनाएं तथा प्राकृतिक उत्पात-विशेष रूप से भूकम्प व अग्निकाण्ड/विस्फोट से विशेष जन-धन हानि की घटनाएं घटित होंगी। राजनेताओं में परस्पर विरोध एवं टकराव रहे। प्रजा अनेक विविध रोगों-व्याधियों, वायरल, अपहरण तथा प्रियजन-विछोह से दुःखी एवं पीड़ित रहें। देश में आगज़नी, साम्प्रदायिक हिंसा, उग्रवाद जन्य घटनाओं से जन-धन हानि होगी। कहीं अनावृष्टि या अतिवृष्टि से दुर्भिक्ष (सूखा) एवं कहीं बाढ़ की स्थिति बने। लोगों में धर्म-कर्म की ओर रूचि कम रहे।

### (2) सम्वत् के मन्त्री 'शनि' का फल–

**'रविसुते यदि मन्त्रिणि पार्थिवा विनय संरहिता बहुदुःखदाः।**
**न जलदा जलदा जनतापदा जनपदेषु सुखं न धनं क्वचित्।।'**

अर्थात् वर्ष का मन्त्री **'शनि'** होने से प्रशासक वर्ग एवं राजनेताओं का व्यवहार सामान्य लोगों (प्रजा) के प्रति अत्यन्त कठोर, नीति-विरुद्ध तथा निर्दयतापूर्ण रहेगा, जिससे लोगों को कष्ट व असन्तोष रहे। देश के कुछ भागों में वर्षा की कमी रहने से खाद्यान्नों में कमी एवं प्राकृतिक प्रकोप होने का भय व्याप्त रहे। सामान्य लोगों के पास धन-सम्पदा एवं पर्याप्त सुख-संसाधनों की कमी हो एवं उनमें गहन असन्तोष की भावनाएँ व्याप्त हों। लोहा, स्टील, ताँबा, जिस्त, सिक्का, तैल आदि खाद्यान्न पदार्थ, पैट्रोल, डीज़लादि तेज भाव होंगे।

**विशेष**—राजा एवं मन्त्री—दोनों मुख्य पदाधिकार—दो परस्पर विरोधी ग्रहों **'मंगल-शनि'** के पास होने से राजनीतिक एवं सामाजिक पटल पर परस्पर वैर-विरोध एवं विरोधाभासी घटनाएँ अधिक होंगी। जातीय एवं साम्प्रदायिक हिंसा की घटनाओं से वातावरण विषाक्त रहेगा। विश्व में भी अनेक देशों के मध्य युद्ध एवं जनहानि के समाचार मिलेंगे।

### *(3) सस्येश 'मंगल का फल—*

**'अथ च सस्यपतौ धरणीसुते गजतुरंगखरोष्ट्रगवामपि।**
**भवति रोगहतिश्च घना जलं ददति नैव तुषान्नविनाशनम्।।'**

सस्येश (चौमासा फसलों का स्वामी) **'मंगल'** होने से हाथी, घोड़े, गधे आदि चौपायों तथा गाय, बैल, भैंस, ऊँट आदि दुधारू पशुओं में भी विचित्र प्रकार के रोग फैलने की आशंका रहेगी। कहीं उपयुक्त वर्षा की कमी के कारण खड़ी फसलों (जैसे-धान्य, जौं, चना, सोयाबीन आदि), अनाज, सब्ज़ियों आदि की फसलों को हानि पहुंचेगी एवं च इनके भावों में विशेष तेजी बनेगी।

### *(4) धान्येश 'सूर्य' का फल—*

**'पश्चाद् धान्याधिपे सूर्ये पश्चाद धान्यं तदानहि।**
**विग्रहं भूभृतां धान्यं महर्घं ज्वरपीडनम्।।'**

धान्यपति **'सूर्य'** हो, तो पीछे वाले धान्य अर्थात् शीतकाल में पैदा होने वाली फसलों (जैसे-मूंग, मोठ, बाजरा, ईख, धान्य, तिलहन, दलहनादि) की पैदावार में कमी हो, अथवा प्राकृतिक प्रकोपों के कारण फसलों व कृषि-उत्पादन को हानि पहुँचे। फलतः दलहन, तिलहन व धान्यादि अनाजों के मूल्यों में वृद्धि होगी। प्रशासकों (राजनेताओं) में परस्पर वैर-विरोध, टकराव एवं विवाद उत्पन्न होंगे। देश में कटु राजनैतिक वातावरण एक युद्ध जैसा वातावरण बना देगा। सर्वप्रकार के अनाज तेज भाव हों, लोगों में विचित्र प्रकार के ज्वर एवं रोगों आदि के कारण कष्ट रहे।

### *(5) मेघेश 'शुक्र का फल—*

**'भृगुसुतो जलदस्यपतिः यदा जलमुचो जलदादि—विशोभजनाः।**
**धन—निधानयुता द्विजपालकाः नृपतयो जनता सुखदायकाः।।'**

अर्थात् मेघेश (वर्षा का स्वामी) **'शुक्र'** होने से आगामी वर्ष वर्षा बहुत अच्छी होगी। उच्चप्रतिष्ठित राजनेता एवं शासकवर्ग ब्राह्मणों एवं विद्वानों का हित व सम्मान करने में प्रयत्नशील रहेंगे। अधिकांश राजनेता एवं प्रशासक धन-धान्य से समृद्ध होंगे। कुछ विशिष्ट नेता व प्रशासक-वर्ग प्रजा की भलाई व कल्याण हेतु प्रयासरत रहेंगे तथा नई-नई कल्याणकारी नीतियों की घोषणा होंगी।

### *(6) रसेश 'गुरु' का फल—*

**'यदि गुरौ रसपे सुखिनो जनाः समधिकेन फलादियुता द्रुमाः।**
**जनपदा जननायक—सैनिका हव—हयायुध वाह—विगाहिताः।।'**

अर्थात् यदि गुरु रसाधिपति हो, तो उस वर्ष विशिष्ट साधन-सम्पन्न लोगों में भौतिक सुखों में विशेष वृद्धि होगी। घास, तृण, फल-फूलदार आदि वृक्षों की पैदावार अच्छी होगी। जनसाधारण विद्वान् पण्डितों-ब्राह्मणों की सेवा-सत्कार में तत्पर हों। परन्तु (साम्प्रदायिक दंगों के कारण) किसी जनपद अथवा सीमावर्ती प्रान्त में शासक-प्रशासक, पुलिस-सैन्याधिकारी अपने वाहनों एवं शस्त्रबलों की परेड व परीक्षण करें।

### *(7) नीरसेश (धातुओं का स्वामी) 'मंगल' का फल—*

**'नीरसेशो—यदा—भौमः प्रवाल—रक्त—वाससाम्।**
**रक्त—चन्दन—ताम्राणां—अर्घ—वृद्धिर्दिने—दिने।।'**

नीरसेश अर्थात् धातुओं का स्वामी मंगल होने से माणिक्य, मूँगा, पुखराज, हीरे आदि रत्न, लाल-वस्त्र, गर्म-वस्त्र, लाल-चन्दन, सोना, पीतल, ताँबा, लाख, खल-बिनौले आदि तथा अन्य लाल वर्ण के पदार्थ व धातुएँ दिन-प्रतिदिन महँगे होंगे।

### *(8) फलेश (फलों का स्वामी) 'शुक्र का फल—*

**'यदि फलस्यपतौ भृगुजे धरा—मृदुकुमार—मही—रुहराशयः।**
**बहुफला—नरनाथ—सुभोगदा—द्विजवराः श्रुतिपाठ—परायणाः।।'**

अर्थात् फलों का स्वामी **'शुक्र'** हो, तो उस साल वर्षा अच्छी होगी। पृथ्वी पर कोमल घास, तृण, फल-फूल एवं लघु पौधों के समूहों की पैदावार अधिक होगी अर्थात् इनका श्रेष्ठ प्ररोहण होगा। राजनेता एवं प्रशासक लोग विभिन्न प्रकार की धन-सम्पदा एवं ऐश्वर्यों से सम्पन्न होंगे। द्विजवर्ग अर्थात् कर्मकाण्डी पण्डित पाठ, यज्ञादि अनुष्ठान आदि कृत्य करते हुए लाभान्वित होंगे।

### *(9) धनेश (धन का स्वामी) 'चन्द्र' का फल—*

**'धनपतिः मृगलांछनको यदा रसचय—क्रय—विक्रयतो धनम्।**
**वसनशालि सुगन्धरसं बहु द्रविण—तैलयुतं नृपसौख्यदम्।।'**

जिस वर्ष धनपति (कोशपति) चन्द्रमा हो, तो उस वर्ष रसादि पदार्थों (दूध, घी, शर्बत, गुड़, जूस, तैल, सेब, मौसम्मी आदि रसकस) के क्रय-विक्रय (खरीद/बेच) द्वारा धन का लाभ अच्छा होगा। इसके अतिरिक्त वस्त्र, अनाज, तैल, सुगन्धित तैल, दूध, घी, गुड़,

चावल, इत्र, खुशबू, मिठाई आदि तथा करियाना वस्तुओं के व्यापार से भी अच्छे लाभ की सम्भावना बढ़ती है। अवसरवादी नेता विशेष प्रकार के सुख-साधनों से सम्पन्न होंगे और प्रजा कानूनों का सहर्ष पालन करते हुए अपने योग्य करों/टैक्सों का उचित भुगतान करेंगे।

### *( 10 ) दुर्गेश ( सेना का स्वामी ) 'शुक्र' का फल–*

**'नगर–देश विशेष पतिर्यदा भृगुसुतो बहुसौख्यकरो मतः।**
**विनयवाणिज–गोहसमः सुखोनगवने निकटेऽपि च दूरतः।।'**

दुर्गेश अर्थात् सेनापति **'शुक्र'** हो, तो देश के विशिष्ट राजनेता तथा विशिष्ट वर्ग के लोग ही सुख-साधनों से सम्पन्न एवं समृद्ध होंगे। दृढ़ शासन तथा सर्वत्र शान्ति बनी रहेगी। विनय एवं वाणी के व्यवहार से गृह जैसा सुख एवं शान्ति प्राप्ति होगी। दूरस्थ जनों एवं पर्वतीय स्थलों पर भी सर्व प्रकार की सुख-सुविधाएँ उपलब्ध होंगी अर्थात् दूरस्थ पर्वतीय स्थलों में भी आवागमन के साधन सुलभ होंगे।

*नोट–वर्ष के उपरोक्त दशाधिकारियों का फल यद्यपि सर्वत्र होता है। परन्तु राजा का फल विशेष रूप से काश्मीर, बंगाल, चीन, तिब्बत एवं हिमाचल, उ.खण्ड के निकटवर्ती क्षेत्र, मन्त्री का फल आन्ध्र-प्रदेश, मालवा, उज्जैन आदि मध्य-प्रदेशों में विशेष रूप से होता है। वैसे सामान्यतः राजा एवं मन्त्री का फल देश के प्रायः सभी क्षेत्रों में होता है।*

**चतुर्मेघ फल विचार**–आवर्तकादि चतुर्मेघों में **'आवर्त'** नामक मेघ है।

**फल–'आवर्ते वृष्टिहानिः स्यात्'**–अर्थात् इस वर्ष देश के अनेक प्रान्तों में खण्ड एवं अनोपयोगी वर्षा होगी। कुछ क्षेत्रों में वर्षा की विशेष कमी रहे तथा कुछ में अकाल व दुर्भिक्ष की स्थिति रहे।

### नवमेघों में 'वरुण' नामक मेघ का फल–

**'अग्निहोत्रकरणादराद्विजाः स्युः सदाधिकमुदोखिलाः प्रजाः।**
**अर्णवेण–सहितं महीतलं वारुणे जलधरे भुवेदलम्।।'**

अर्थात् यदि **'वरुण'** नाम का मेघ हो, तो समाज में कर्मकाण्डी एवं अग्निहोत्रादि करने वाले ब्राह्मणों का आदर बढ़े। प्रजा में सुख-साधनों की वृद्धि होगी। अनाज, धान्यादि का उत्पादन अच्छा होगा। कहीं अनुकूल एवं अच्छी वर्षा हो, कहीं अधिक वर्षा से भयंकर बाढ़ की स्थिति बनेगी।

### द्वादश नागों में 'पृथुश्रव' नामक नाग का फल–

**'पृथुश्रवाभुजंगेन्द्रो जायते यत्रवत्सरे। तत्रकीलालमल्पं स्यात् सस्यहानिरसंशयम्।।'**

अर्थात् जिस वर्ष पृथुश्रव नामक नाग उदय हो, तो उस वर्ष उपयोगी वर्षा की कमी रहे। गेहूँ, चने, धान्य, ईख, चावल आदि की फसलों को क्षति (हानि) पहुँचेगी।

## सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेशफल–वि. संवत् २०८१
## (वर्षा, कृषि एवं वायुमण्डल विचार)

**सूर्य आर्द्रा प्रवेश कुंडली**
**21 जून, 2024 ई., $24^{\text{घं.}}$ $06^{\text{मिं.}}$**

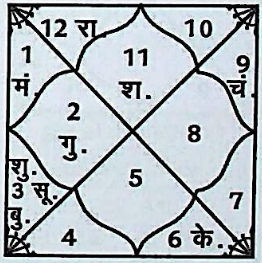

वि. संवत् २०८१ में सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी/पूर्णिमा को तद्नुसार 21 जून, 2024 ई., शुक्रवार की रात्रि 12 बजकर, 06 मिनट पर (24:06), मूल नक्षत्र, शुक्ल योग तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा कालीन कुम्भ लग्न में प्रवेश करेंगे। स्थिर राशि, परन्तु वायुतत्त्व कारक तथा पश्चिम दिशा की स्वामी **'कुम्भ'** लग्न (राशि) में सूर्य आर्द्रा प्रवेश हुआ है तथा लग्नेश शनि (स्थिर एवं वायुतत्त्वकारक) लग्न भाव में ही (कुम्भ) स्थित है। जलतत्त्वकारक तथा उत्तर-पश्चिम दिशा का स्वामी ग्रह चन्द्रमा अग्निकारक राशि धनु में स्थित है। फलस्वरूप ग्रहस्थिति अनुसार भारत के उत्तर एवं पश्चिमी राज्यों (जैसे-जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हि.प्र. आदि) में वायु प्रकोप के साथ गर्म-हवाएँ तथा गर्मी बढ़ने के संकेत हैं। फलतः विपरीत जलवायु, विषम वर्षा तथा कुछ क्षेत्रों अत्यधिक वर्षा से बाढ़ जैसे हालात तथा कुछ क्षेत्रों में अल्प वर्षा से अकाल जैसी परिस्थितियां बनेगी। शनि लग्नस्थ होने से धीमे वायु-वेग के कारण उपयोगी वर्षा की कमी रहे। **सूर्य ( अग्निकारक ), बुध ( पृथ्वीतत्त्व ) तथा शुक्र ( जलकारक )**–तीन ग्रह वायुतत्त्व तथा पश्चिमी दिशा की स्वामी मिथुन राशि में हैं। उत्तर-पूर्व दिशा का स्वामी गुरु दक्षिण-दिशा की स्वामी-राशि **वृष** में है। फलतः उत्तर-पश्चिम भारत में खुश्क तथा गर्म व विपरीत जलवायु के बावजूद पूर्वी एवं दक्षिणी क्षेत्रों में व्यापक वर्षा होगी।

मेघेश **'शुक्र'** (जलकारक) की वायुतत्त्व राशि मिथुन में होने से कुछ स्थलों पर पर्याप्त वर्षा होने के बावजूद अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। मेष राशिस्थ मंगल पर शनि की दृष्टि रहने से अग्निकाण्ड, भूस्खलन, तेज़ आँधियां (वायु-प्रकोप) अधिक रहे। परन्तु शनि एवं मंगल-दोनों स्वराशिगत होने से यद्यपि कृषि-उत्पादन में वृद्धि होगी। परन्तु गेहूँ, गन्ना, मक्की तथा भूमि के नीचे पैदा होने वाली फसलों की पर्याप्त आकांक्षित पैदावार नहीं हो सकेगी। फलस्वरूप मूल्यों में वृद्धि होगी।

परन्तु आर्द्रा प्रवेश तात्कालिक पूर्णिमा तिथि कालीन होने से प्रजा के सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होंगे, भाव यह है कि अनुकूल सरकारी नीतियों से महँगाई पर नियन्त्रण रहेगा तथा सरकार प्रजा की माँगों के अनुसार कार्य व नीतियां बनाएगी।

**'पौर्णमास्यां–दिनेशश्चेद्–आर्द्रा–नक्षत्रगो–भवेत्।**
**प्रजानां–तर्हि–विविधाः सम्पूर्णाः स्युः–मनोरथाः।।'**

शुक्रवार वाले दिन आर्द्रा-प्रवेश होने से भी सरकारी नीतियों से लोग सन्तुष्ट रहें।

परन्तु **'मूल'** नक्षत्रकालीन आर्द्रा नक्षत्र प्रवेश होने से प्रजा में विशेषकर पुरुष-जाति में अनेक प्रकार के भय उत्पन्न हों, अर्थात् स्त्रियों के पक्ष में कई प्रकार के कानून बनेंगे तथा जनसाधारण में रोग वृद्धि भी हो।

**'चंद्राक्रांते–निर्ऋति–भेयदार्द्रा–रविसंयुता।**
**भयं–नानाविधं–पुसां–कुशत्वं–रोगवृद्धिदा।।'**

परन्तु **'शुक्ल'** नामक योग में सूर्य का आर्द्रा प्रवेश होने से अच्छी वर्षा होने से श्रेष्ठ कृषि उत्पादन होगा।

आर्द्रा प्रवेश मध्यरात्रि (आधी रात) में होने से लोगों की भोग-विलास आदि में प्रवृत्ति रहे तथा अधिकतर समय यात्राओं, पर्यटन आदि में व्यतीत होगा–**भोगप्रदत्तेखलुमध्यरात्रे:।**

## वि. संवत् २०८१ में शनि की दृष्टि का फल

वि. संवत् २०८१ में शनि देव **'कुम्भ'** राशि में संचरणशील रहेंगे। फलस्वरूप 9 अप्रैल, 2024 ई. से 29 मार्च, 2025 ई. तक शनि की दृष्टि उत्तर दिशा अर्थात् उत्तर-गोलार्द्ध की तरफ रहेगी। कुम्भ राशिस्थ संचारकालीन शनि की **मेष, सिंह** तथा **वृश्चिक** राशियों पर दृष्टि तथा **मकर, कुम्भ** व **मीन राशि वाले** राष्ट्रों पर शनि–साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा। फलतः भारत के उत्तरी–दिशा के राज्यों (जम्मू–कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखण्ड, उत्तरी उ.प्र.), विश्व के उत्तरी–गोलार्द्ध में उत्तरी–अमेरिका तथा उत्तर-यूरोपीय देशों (ब्रिटेन, आयरलैण्ड, फिनलैण्ड, जर्मनी, फ्रांस, डेनमार्क, बैल्ज़ियम, इटली, स्पेन आदि) तथा उत्तरी–अरब देशों (ईराक, तुर्की, ईरान, यमन) में राजनीतिक उथल–पुथल, राजनैतिक अस्थिरता, सत्ता-परिवर्तन, दुर्भिक्ष, राजनैतिक एवं सामाजिक आन्दोलन व साम्प्रदायिक घटनाओं के कारण भारी जन–धन हानि होगी। संवतान्त के अन्तिम 2–3 मासों में कुछ देशों के मध्य युद्ध के भी दृश्य उपस्थित होंगे। क्योंकि कुम्भ राशि पश्चिम दिशा की द्योतक है तथा मेष राशि पर शनि की नीच दृष्टि भी रहेगी ; इसलिए भारत के उत्तर-पश्चिमी राज्यों (गुजरात, महाराष्ट्र, जम्मू-काश्मीर, पंजाब), तथा पूर्वी राज्यों (मणिपुर, असम, प. बंगाल) एवं पश्चिमी देशों (यूरोप) में प्राकृतिक प्रकोप, भीषण वर्षा, बाढ़, समुद्री तूफान, चक्रवात तथा कहीं अकालजन्य परिस्थितियां बनें। इन उपरोक्त प्रभावित राशि वाले देशों/प्रान्तों/नगरों में साम्प्रदायिक झगड़े, हत्याकाण्ड, अकाल, भयंकार रोग से व्यापक जन–धन हानि के संकेत हैं। पैट्रोल, डीज़ल, सोना–चाँदी, धान्य व अनाजादि विशेष रूप से महँगे होंगे–

**'कुंभराशिगत: सौरिर्वर्षमात्रं तदर्धकम्।**
**कालिंद्याउपकंठे च तत्र धान्य महर्घता।।'**

## गुर्राफल विचार (सन् 2024-25 ई.)

इस्लामी नववर्ष कुण्डली (1)
हिजरी सन् 1445 (2023-24 ई.)

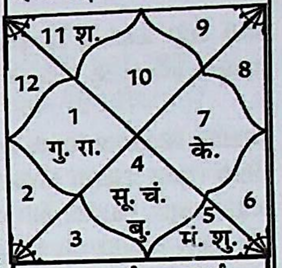

19 जुलाई, 2023 ई.
सूर्यास्त $19^{घं.}$–$28^{मिं.}$ (I.S.T.)

ईस्लामी मतानुसार एक (यकम्) मुहर्रम से ही नए हिजरी सन् की शुरुआत (आगाज़) होती है। गत वि. संवत् 2080 में 20 जुलाई, 2023 ई., गुरुवार को 1 मुहर्रम (यकम्) के दिन हिजरी सन् 1445 शुरु हो गया है। **'गुरुवार'** को हिजरी सन् का आगाज़ होने से मुस्लिम (ईस्लामी) वर्ष 1445 (सन् 2023–24 ई. में) का राजा (बादशाह) **'गुरु'** (बृहस्पति) ही होगा। अत: 20 जुलाई, 2023 ई. से 7 जुलाई, 2024 ई. तक मुस्लिम मतानुसार बादशाह **'गुरु'** होगा।

नववर्ष कुण्डली (हिजरी 1445–सन् 2023–24 ई.) में मकर लग्न उदित हुआ है तथा लग्नेश शनि द्वितीय भाव में (जोकि आर्थिक स्थिति, मुद्रास्फीति, महँगाई, व्यापार का भाव है) स्वराशिगत होकर अष्टम भाव (युद्ध, प्राकृतिक आपदाओं का भाव) में स्थित मंगल–शुक्र के साथ समसप्तक योग बना रहा है। यह शत्रु दृष्टि सम्बन्ध ईस्लामी राष्ट्रों में भयंकर उथल–पुथल मचाएगा तथा मुस्लिम देशों को युद्धाग्नि की तरफ ले जाएगा। ईरान–अफगानिस्तान, ईरान–ईजरायल तथा अन्य परस्पर विरोधी मुस्लिम राष्ट्रों में ड्रोन तथा मिज़ाईल अटैक द्वारा युद्धमय वातावरण रहेगा। **चतुर्थ भाव** (जोकि कृषि, सर्वसाधारण की प्रसन्नता, कृषि–उत्पादन, भूकम्प आदि का भाव है) में **'गुरु–राहु'** अशुभ योग एवं शनि की इन पर क्रूर नीच दृष्टि रहने से मुस्लिम राष्ट्रों (पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, कतर, सूडान, टर्की) के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध विशेषकर अमेरिका तथा पश्चिमी देशों के साथ तनावपूर्ण रहेंगे। **अष्टम भाव** (युद्ध का भाव) में **'मंगल–शुक्र'** का **'शनि'** के साथ शत्रु दृष्टि सम्बन्ध होने से विरोधी मुस्लिम राष्ट्र किसी भी समय एक–दूसरे पर प्राणघातक हथियारों का प्रयोग करेंगे। अफगानिस्तान, पाक आदि मुस्लिम देशों में आतंकवादी घटनाओं के कारण बेकसूर आम (साधारण) लोगों को जान–माल का खतरा होगा। कहीं भूकम्पादि प्राकृतिक आपदाओं के कारण जन–धन की क्षति होने के योग हैं।

ईस्लामी नववर्ष कुण्डली (2)
हिजरी सन् 1446 (2024-25 ई.)

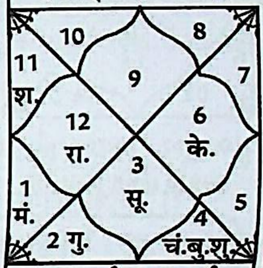

7 जुलाई, 2024 ई.
सूर्यास्त $19^{घं.}$–$32^{मिं.}$ (I.S.T.)

ईस्लामी मतानुसार एक (यकम्) मुहर्रम से ही नए हिजरी सन् की शुरुआत (आगाज़) होती है। वि. संवत् 2081 में 8 जुलाई, 2024 ई., सोमवार को 1 मुहर्रम (यकम्) के दिन हिजरी सन् 1446 शुरु होगा। सोमवार को हिजरी सन् का आगाज़ होने से मुस्लिम (इस्लामी) वर्ष 1446 (सन् 2024–25 ई.) का राजा (बादशाह) **'चन्द्र'** होगा।

इस प्रकार 8 जुलाई, 2024 ई. से 26 जून, 2025 ई. तक मुस्लिम मतानुसार बादशाह साल **'चन्द्र'** होगा।

नववर्ष कुण्डली (हिजरी 1446-सन् 2024-25 ई.) में धनु लग्न उदित हुआ है तथा लग्नेश गुरु षष्ठ भाव (ऋण, शत्रु-सेना, प्रत्यक्ष एवं परोक्ष शत्रु, विदेशी सहायता का भाव) में शत्रु राशिस्थ है। पंचम भावस्थ (विकास योजनाओं का भाव) मंगल पर शनि की नीच शत्रु दृष्टि भी है। ग्रहस्थिति अनुसार पाकिस्तान, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान, सीरिया आदि कट्टरपंथी देशों में अनेक स्थलों पर आतंकी एवं विस्फोटक घटनाओं को अंजाम दिया जाएगा। ये देश स्वयं आंतरिक विरोध, राजनीतिक हिंसा एवं शिया-सुन्नी विवाद की आग में झुलसने लगेंगे। इन देशों में हिंसक राजनीतिक विरोधी गतिविधियों में विशेष वृद्धि होगी। इन देशों में साम्प्रदायिक दंगे, जातीय-फिसाद एवं विस्फोटक घटनाएं अधिक बढ़ेंगी। **'मंगल-शनि'** के मध्य यह दृष्टि सम्बन्ध ईराक, सीरिया, टर्की, पाक, ईज़रायल-ईरान में भयानक युद्धभय वातावरण बनाएगा।

*[**गतवर्ष के 'पंचांगदिवाकर'** पृष्ठ 78 पर स्पष्ट पढ़ें-'पाकिस्तान में विरोधी पक्षों द्वारा ज़बरदस्त विस्फोटक घटनाओं को अंजाम दिया जाएगा, जिससे आम आदमी का जीवन संकटग्रस्त रहेगा'-जैसा कि 9 मई, 2023 ई. को पूरे पाकिस्तान में ईमरान खान की पार्टी द्वारा देशभर में उपद्रवी घटनाओं को अंजाम दिया गया, आदि (प्रभुकृपाक्षश यह भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य प्रमाणित हुई)]*

## वर्षादि के विश्वामान-सं. २०८१ वि.

वर्षादि विश्वा का कुल मान 20 विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा 1 से 20 अंकों के मध्य जितने अधिक (20 अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होगी। **जैसे**-आगे वि. संवत् 2081 में धान्य के विश्वा 11 लिखे हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी वर्ष धान्य का उत्पादन औसत रुप अर्थात् मध्यम रूप से सामान्य रहेगा।

वर्षा 5, धान्य 11, तृण 5, शीत 13, तेज 17, वायु 13, वृद्धि 15, क्षय 15, विग्रह 11, क्षुधा 3, तृषा 9, निद्रा 15, आलस्य 15, उद्यम 13, शान्ति 15, क्रोध 13, दम्भ 5, लोभ 3, मैथुन 15, रस 9, फल 13, फलनिष्पत्ति 11, उत्साह 3, उग्रता 15, पाप 17, पुण्य 7, व्याधि 7, व्याधिनाश 5, आचार 5, अनाचार 11, मृत्यु 9, जन्म 1, देशोपद्रव 7, देशस्वास्थ्य 13, चौरभय 3, चोरनाश 13, अग्नि 11, अग्निशान्त 15, उद्भिज 3, जरायुज 3, अंडज 3, स्वेदज 3, टिड्डी 13, तोता 17, मूषक 15, सोना 19, ताम्र 7, स्वचक्र 9, परचक्र 15, वृष्टि 3, वृष्टिनाश 11 तथा संवत् विश्वा 8 हैं।

## जल आदि चार स्तम्भ-वि. संवत् २०८१

**(1) जल स्तम्भ**-चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क 35.43% है। जोकि मध्यम स्तर से भी कम है। फलस्वरूप आगामी वर्ष खण्ड वर्षा के योग हैं अर्थात् कहीं अधिक एवं कहीं उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। कुछ क्षेत्रों में पेयजल की समस्याएं उत्पन्न होंगी, भूमिगत जलस्तर में गिरावट, ग्रीष्म ऋतु में नदियों के जलस्तर में भी गिरावट बनेगी। कुछ सीमित क्षेत्र में अत्यधिक वर्षा से कृषि को हानि होगी। कहीं बाढ़ एवं कहीं सूखे, दुर्भिक्ष की परिस्थितियां बनेंगी।

**(2) तृण स्तम्भ**-वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का सम्पर्क 21.86% है। फलस्वरूप तिनके, बाँस, घास, पुष्पों, भूसे से निकलने वाले मुख्य अनाज, वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों तथा अन्य वन-औषधियों के उत्पादन व उपलब्धता में विचारणीय कमी रहेगी। पशुचारे का भी अभाव रहे। मानसून के विलम्ब या अनियमित होने से गर्मी की अधिकता, खड़ी फसलों का सूखना, सब्ज़ियों आदि की कम पैदावार तथा कहीं अत्यधिक गर्मी, उष्णता व कहीं प्रतिकूल वर्षा के कारण लोगों व पशु-पक्षियों को कष्ट रहे। आयुर्वेदिक औषधियां तथा दूध, डायरी उत्पाद महँगे होंगे।

**(3) वायु स्तम्भ**-ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का सम्पर्क 90.50 प्रतिशत है। वायुस्तम्भ सबल होने से कुछ प्रदेशों में अनुकूल वायु-वेग एवं अनुकूल मेघ संचार से वर्षा का क्रम अच्छा रहेगा। ग्रीष्म ऋतु (वैशाख-ज्येष्ठ मासों) में स्वाभाविक रूप से चलने वाली लू और तेज़ हवाएँ चलेंगी। अर्थात् ऋतु-अनुसार वायु-वेग रहेगा। परन्तु वायु स्तम्भ की दृढ़ता से दक्षिणी-पूर्वी तटीय प्रदेशों में विशेष रूप से तथा उत्तरी-भारत में भी भीषण वायु-वेग, चक्रावात एवं तेज़ आँधियों से खड़ी फसलों, धनादि सम्पदा को हानि पहुँचेगी।

**(4) अन्न स्तम्भ**-आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का सम्पर्क शत-प्रतिशत (100%) रहना अत्यन्त शुभ संकेत दे रहा है। जल एवं तृणस्तम्भ निर्बल एवं अनियमित मानसून रहने के बावजूद खाद्यान्न का उत्पादन व उपलब्धता समुचित रहेगी। कुछ प्रदेशों में गेहूँ, चने, चावल, मक्की, ईख व अन्य धान्यादि का उत्पादन यथेष्ठ रहेगा। यद्यपि शासन-तन्त्र को अन्न-भण्डारण, अनाज की गुणवत्ता व अनाज-वितरण सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। इस सम्बन्ध में विशेष नीति-योजना निर्धारण एवं निर्णय लिए जाएंगे।

ऊपर वर्णित चारों स्तम्भ वर्ष (संवत्) में किसी भी देश की आर्थिक सम्पन्नता को समझने एवं जानने (आकलन) के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं, क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से वर्षा, मानसून तथा अन्न-उत्पादन पर ही निर्भर करती हैं। आगामी वि. संवत् २०८१ में जल तथा तृण स्तम्भ कुछ निर्बल परन्तु वायु तथा अन्नस्तम्भ सुदृढ़ होने से भारत की अर्थव्यवस्था प्रगति-पथ पर रहेगी तथा भारत विकसित राष्ट्र बनने के संकल्प की तरफ अग्रसर रहेगा।

## आर्षमान द्वारा रक्षा फल-विचार (वि. सं. २०८१)

निम्नलिखित ये चार आर्षमान वर्षभर जनता व देश की सुरक्षा, कानून-व्यवस्था, सामाजिक सौहार्द एवं शान्ति, नैतिक मूल्यों, समृद्धि एवं सौभाग्य का निर्धारण करते हैं। आर्षमान भी उपरोक्त स्तम्भों की भान्ति विशेष तिथियों एवं नक्षत्रों के संयोग से निर्धारित किए जाते हैं। इनकी निर्बलता देश में उपद्रव, दुर्घटनाओं, आपदाओं, विस्फोट, अशान्ति व लोगों के चारित्रिक पतन को निमन्त्रित करती हैं। '**आर्ष**' शब्द का अर्थ है-ऋषियों से सम्बन्धित, ऋषियों का। आर्षमान का मूलतः अर्थ हुआ-नापतोल का ऋषि प्रोक्त पैमाना। तिथि व नक्षत्र का संयोग जितना अधिक होगा, आर्षमान उतना ही अधिक बलवान समझा जाएगा।

(1) **प्रथम आर्ष**-गतवर्ष की पौष-अमावस्या को मूल नक्षत्र के सम्पर्क से माना जाता है। मूल नक्षत्र का अभाव है।

(2) **द्वितीय आर्ष**-वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र का सम्पर्क 28.75% है।

(3) **तृतीय आर्ष**-श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का सम्पर्क 24.38% है।

(4) **चतुर्थ आर्ष**-कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र का सम्पर्क 24.53% है।

**निष्कर्ष**-इस वर्ष प्रथम दुर्ग का अभाव तथा शेष तीनों दुर्ग अत्यल्प-बली हैं। चारों दुर्गों का विचार चिन्ताजनक परिस्थितियों की ओर संकेत कर रहा है। सीमावर्त्ती क्षेत्रों विशेषकर उत्तर-पूर्वी सीमा पर चीनी घुसपैठ, पाकिस्तान की ओर से आतंकवादियों का घुसपैठ तथा असम आदि सीमाओं पर बांग्लादेशी घुसपैठ से देश की आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा को गम्भीर संकट उत्पन्न होने का भय है। सीमाप्रान्तों में ड्रोन-घुसपैठ द्वारा हथियारों की सप्लाई, आन्दोलनों के कारण आन्तरिक सुरक्षा को खतरा रहेगा। देश की सुरक्षा एजेन्सीयों को विशेष प्रयास करने की आवश्यकता रहेगी। इस सम्बन्ध में भड्डुरी की कहावत भी लोक में प्रचलित है-

**अखै तीज रोहिणी न होई। पौष अमावस मूल न जोई।।**
**राखी श्रवणो हीन विचारो। कातिक पूनो कृतिका टारो।।**
**महि माहीं खल बलहिं प्रकासै। कहत भड्डुरी सालि विनासै।।**

अर्थात् वैशाख की अक्षय तृतीया को यदि रोहिणी न हो, पौष की अमावस्या को मूल न हो, रक्षाबन्धन के दिन श्रवण और कार्तिक की पूर्णिमा को कृतिका न हो, तो पृथ्वी पर दुष्टों का बल बढ़ेगा और उस वर्ष धन की उपज न होगी।

## वृष राशि में गुरु संचार-फल

### (1 मई, 2024 ई. से संवतान्त 29 मार्च, 2025 ई. तक)

**वृषराशौ-यदा-जीवो-वैशाख-संवत्सरः तदा। नंदशालाः भवेद् मेघः-सर्वधान्य-समर्घता।।**

अर्थात् गुरु जब वृष राशि में आए तो '**वैशाख**' संवत्सर होता है और उसमें '**नंदशाल**' नामक मेघ वर्षा करते हैं। सभी प्रकार की रसदार वस्तुएं, गन्ना, अन्य रसदार फल सस्ते हो जाएंगे। वैशाख और आश्विन महीनों में स्त्रियों तथा हाथियों को पीड़ा हो अर्थात् उन पर अत्याचार बढ़ेंगे। नेताओं में परस्पर वैर-विरोध रहे। गेहूँ, चावल, चने, मूँग, उड़द, तिल आदि श्रावण तथा ज्येष्ठ मास में विशेष महँगे होंगे। वर्षा कम ही होगी। विश्व में किसी देश की सीमाओं में बदलाव हो अर्थात् देशभंग हो। चौपायों में रोग फैले तथा उनकी मृत्यु हो, आषाढ़-श्रावण में वर्षा होगी, परन्तु भाद्रपद में अभाव रहेगा।

## श्री दुर्गा सप्तशती (हिन्दी भाषा में)

कलियुग में समस्त दुःखों एवं कष्टों के निवारण का एकमात्र उपाय भगवती देवी दुर्गा की उपासना ही शास्त्रों में बतलाया गया है। श्री दुर्गासप्तशती में वर्णित श्री नवदुर्गा जी के चरितों का विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्यों के पाप नष्ट होकर उन्हें धन-धान्य एवं सौभाग्यादि की प्राप्ति होती है। शुभ कार्यों में बार-बार पड़ने वाले विघ्नों की शान्ति होती है। विधिपूर्वक पाठ करने से जीवन के चारों क्षेत्रों-धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष में मनोवाँछित फल प्रदान कराने वाली **मन्दाकिनी** है।

जो व्यक्ति चैत्र, आश्विनादि नवरात्रों में दीपावली, दशहरा, अष्टमी आदि पर्वों पर अथवा कोई आकस्मिक संकट उपस्थित हो जाने पर श्रद्धा भक्ति के साथ श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है। माँ दुर्गा की कृपा शक्ति से समस्त विघ्न दूर होकर मनोवांछित फलों की प्राप्ति हो जाती है। पाठोपरान्त पाठ की दशांश संख्या में श्री दुर्गा हवन करने से शीघ्र ही कामना सिद्धि होती है।

**श्री दुर्गासप्तशती** मात्र धर्मग्रंथ नहीं बल्कि सिद्ध ग्रंथ है, इसमें नवदुर्गा महिमा, देवी कवच, अर्गलास्तोत्र, तीनों रहस्य, देवी सूक्त, श्रीदुर्गा पाठ पूरे १३ अध्याय पाठ की संकल्प विधि, देवी सूक्त, रात्रि सूक्त, अष्टाशत (108) स्तोत्र, नवार्ण मन्त्र, सिद्ध कुंजिका स्तोत्र, श्रीदुर्गा एवं चिंतपूर्णी चालीसा, कामनापूर्ण सिद्ध मन्त्रों पाठोपयोगी स्तोत्रों एवं विविध आरतियों सहित, सरल बोधगम्य हिन्दी भाषा में भी अब छपकर तैयार है। **ध्यान रहे**, बिना संकल्प विधि के किया जप-पाठ एवं कोई भी अनुष्ठान पूर्ण फल नहीं देता। मार्किट में बिकने वाली अधिकांश हिन्दी भाषी सप्तशतियों में संकल्पविधि, पूजन विधि आदि आवश्यक विषयों का अभाव मिलता है। श्रद्धापूर्वक सही विधि द्वारा किया गया पाठ ही मनोवांछित फल प्रदान करता है। **मूल्य 125/- रूपये।**

संक्षिप्त हवन विधि संहित (संस्कृत हिन्दी टीका) की **प्राचीन श्रीदुर्गा सप्तशती** भी उपलब्ध होगी।

**भेंट-120 रु., डाक व्यय अलग॥**

**पं. देवीदयालु संस्थान का कर्मकाण्ड सम्बन्धी नवीन प्रकाशन**

**'वार्षिक (एकोद्दिष्ट) एवं चातुर्वाषिक श्राद्ध पद्धति'**

**मूल्य : 80 रु.**

[ देवर्षि-पितृ-तर्पण, शय्या दान, गोदान, बलिवैश्वदेव विधि, पितृस्तोत्र, पितृसूक्त आदि सहित ] [ लेखक/सम्पादक :-पं. विवेक शर्मा (पंचांगकर्त्ता)]

आज ही स्थानीय पुस्तक विक्रेता से मांग करें अथवा मंगवाएं-जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर ( पं. ) पिन-144008, मो. 94172-91325

# वि. संवत् २०८१ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल व मुख्य भविष्यवाणियाँ

- नया 'कालयुक्त' नाम संवत्सर होने से आगामी वर्ष विभिन्न प्रकार के पेचीदा रोगों में विशेष वृद्धि होने से प्रजा में कष्ट तथा हाहाकार रहे। विश्व के विभिन्न राष्ट्राध्यक्षों में परस्पर क्षुब्धता, टकराव तथा बिखराव के कारण निरन्तर युद्ध जैसी स्थिति बनी रहेगी।
- राजा मंगल तथा मन्त्री शनि अर्थात् आकाशी कौंसिल के दो प्रमुख पद दो विपरीत एवं परस्पर शत्रु ग्रहों के पास होने से विश्व के अनेक विकसित देशों के मध्य परस्पर विरोध एवं युद्ध उत्प्रेरित माहौल रहेगा। विभिन्न देशों में प्रभुसत्ता, टकराव, वर्चस्व, प्रतिद्वन्दता एवं होड़ की प्रवृत्ति से तनाव बढ़ेगा। समाज एवं देश में भ्रष्टाचार, चोरी, ठगी, लूटमार, हिंसक एवं अग्निकाण्ड की घटनाएं अधिक होंगी।
- देश में राजनैतिक उग्रता, साम्प्रदायिक उपद्रव व तोड़-फोड़ की वारदातें अधिक होंगी। भारत के राजनैतिक पटल पर विशेष उतार-चढ़ाव होंगे। विभिन्न राजनेताओं और राजनीतिक पार्टियों में परस्पर टकराव, विरोध तथा कहीं नए गठबन्धन बनेंगे।
- जगत् लग्न कुण्डली में ग्रहस्थिति अनुसार मुस्लिम बाहुल्य पश्चिमी एशिया के एवं यहूदी देश धार्मिक विध्वंसता की आग में सुलगने लगेंगे। रूस, यूक्रेन के साथ-साथ यूरोप, ईरान आदि देश भी इस आग से त्रस्त हो जाएंगे। युद्धमय वातावरण के मध्य बड़े पैमाने पर साधारण जनता एक-दूसरे देशों में पलायन ( विस्थापन ) करेगी।
- ***खप्पर योग***—माघ, फाल्गुन, चैत्र ( 26 जन. से 23 अप्रैल, 2024 ई. तक ) मासों में *खप्पर योग* किसी राज्य में छत्रभंग ( सत्ता-परिवर्तन ) या किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या मृत्यु के योग हैं। प्रतिकूल जलवायु एवं खण्ड वर्षा से अकालजन्य हालात रहेंगे। पैट्रोल, डीज़ल के मूल्यों में आशातीत वृद्धि होती रहेगी।
- वैशाख एवं ज्येष्ठ ( अप्रैल से जून तक ) मास में गुरु-शुक्र आदि ग्रहों का अस्त रहने से भारत के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में अस्थिरता, अनिश्चितता एवं उथल-पुथल होने के संकेत हैं। विशिष्ट नेता के आकस्मिक निधन के संकेत हैं।
- आषाढ़ मास ( 15 जून से 15 जुला. के मध्य ) में हि.प्र., उ.खण्ड, काश्मीर आदि क्षेत्रों में भूस्खलन, अतिवृष्टि तथा दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेज़ी के कारण सामान्य लोगों में गहन असन्तोष एवं आक्रोश की भावना रहे।
- भारत में इसी वर्ष ( नवं.-दिसं., 2023 ई. ) कुछ राज्यों ( राजस्थान, म.प्र., छत्तीसगढ़, मिज़ोरम, तेलंगाना ) में होने वाले विधानसभा चुनावों में भाजपा कुछ राज्यों में स्पष्ट रूप से गठबन्धन करके विजयी होगी। तेलंगाना में भी वोट-प्रतिशत में बढ़ौत्तरी होगी। छत्तीसगढ़, राजस्थान में सत्ता विरोधी लहर के बावजूद कांग्रेस मज़बूत पार्टी रहेगी। म.प्र. में काँटे की लड़ाई रहेगी।
- आगामी लोकसभा चुनावों में कुछ नेताओं के विभाजनकारी एवं राष्ट्र विरोधी बयानों से राजनैतिक एवं सामाजिक वातावरण पूरी तरह विषाक्त हो जाएगा। ग्रहस्थिति अनुसार भाजपा पार्टी अपनी अन्य सहयोगी पार्टियों के साथ चुनावों में स्पष्ट बहुमत प्राप्त करने में सफल होगी तथा पुनः केन्द्रीय सत्ता प्राप्त करने में कामयाब होगी।

सनातन वैदिक परम्परा के ऋषियों ने जिन चतुर्दश विद्याओं का निर्देश किया है, वे हैं–चार वेद, छः वेदांग, धर्मशास्त्र, पुराण, मीमांसा एवं न्याय। वेद के छः अंगों (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द तथा ज्योतिष) में ज्योतिष को वेद का नेत्र माना गया है– **'ज्योतिषामयनं चक्षुः।'** जिस प्रकार मनुष्य को नेत्र के अभाव में लोक का कोई भी दृश्य दिखाई नहीं देता, उसी प्रकार ज्योतिष ज्ञान के अभाव में यज्ञादि काल-निर्धारण, बहुविध संस्कार, विद्यामुहूर्त्त, व्रत-त्यौहार, वास्तु, मूर्ति प्रतिष्ठा, विवाह आदि किसी भी प्रकार के कार्य और उसके मुहूर्त्त का सम्यक् रुपेण परिज्ञान नहीं हो पाता।

**ज्योतिष** वह शास्त्र है, जिसके आधार पर मनुष्य को उसके जन्म-जन्मान्तरीय कर्मों के सुपरिणाम और दुष्परिणाम का ज्ञान होता है तथा दुष्परिणामों से बचाव हेतु उपायों का निर्देश किया जाता है। विद्वानों ने इसे प्रत्यक्ष शास्त्र के रूप में स्वीकार किया है–

**अप्रत्याक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।**
**प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रर्कौ यत्र साक्षिणौ।।**

वस्तुतः भूत, वर्तमान और भविष्यत्–तीनों कालों के प्रत्यक्षीकरण में यह विद्या चक्षुरूपात्मिका है। एतावता इसका प्राधान्य स्वयंसिद्ध है तथा होरा, संहिता और सिद्धान्तादि स्कन्ध–त्रयात्मकत्वात् इसकी व्यापकता विद्वज्जन समुदाय में सर्वविदित है। अतः स्पष्ट है कि संसार में घटने वाली समस्त घटनाओं का ज्ञान ज्योतिषशास्त्र के द्वारा ही होता है।

प्राणियों के जन्म से मरणपर्यन्त समस्त सुख–दुःख ग्रहों के अधीन होते हैं। आकाश में व्यक्त और अव्यक्त अनेक ग्रह हैं, उनमें सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि–ये सात ग्रह प्रत्यक्ष फल देने वाले हैं। इनमें भी सूर्य प्रधान है ; क्योंकि परब्रह्म परमात्मा अपनी शक्ति (प्रकृति)–के द्वारा चराचर विश्व की रचना करने के समय में सर्वप्रथम आकाश की, तदनन्तर सूर्य की सृष्टि करते हैं। इन्द्रगुरु (बृहस्पति) ने लिखा है–

**ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नरावराः।**
**कालज्ञानं ग्रहाधीनं ग्रहाः कर्मफलप्रदाः।**
**सृष्टिरक्षणसंहाराः सर्वे चापि ग्रहानुगाः।।**

'यह समस्त संसार ग्रहों के अधीन है और मानव एवं पशु–पक्षी आदि जीव भी ग्रहों के ही अधीन हैं। काल का भी ज्ञान ग्रहों के अधीन है और कर्म का फल ग्रहों के द्वारा ही मिलता है। संसार की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय–ये सभी ग्रहों के ही अधीन है।'

इसी प्रकार समस्त पुराणों में ऋषियों ने सूर्यादि ग्रहों को ही जन्म, पालन और मरण का कारण बतलाया है। **वस्तुतः जन्मकाल** से ही ज्योतिषशास्त्र की उपयोगिता आरम्भ हो जाती है, क्योंकि आजन्म मृत्युपर्यन्त षोडश संस्कार एवं श्रौत–स्मार्त कर्मों हेतु शुभकाल का निर्देश ज्योतिषशास्त्र के बिना सम्भव नहीं है। इस ज्योतिषशास्त्र ज्ञान पर आधारित बनी एक जन्मपत्री अपने गर्भ में अनेक रहस्य संजोए रहती है। मनुष्य अपने जीवन सम्बन्धी अज्ञात रहस्यों को जानकर निश्चय ही भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त कर सकता है। जातक की जन्मकुण्डली मनुष्यों के पूर्वजन्मों के संचित एवं प्रारब्ध कर्मों की प्रतिमूर्त्ति होती है। अनेक जन्मों के पाप–पुण्य, शुभाशुभ कर्मों का फल कब प्रकट होगा? और भविष्य में जातक को कैसी परिस्थितियों की सम्भावना है? ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर ज्योतिष–शास्त्र अन्धेरे में दीप की भान्ति देता है। अतः यह शास्त्र प्रारब्धफल–कर्मप्रकाशक है–

**यदुपचितमन्यजन्मनि शुभाशुभं तस्य कर्मणः पक्तिम्।**
**व्यञ्जयति शास्त्रमेतत् तमसि द्रव्याणि दीप इव।।**

अतएव यह शास्त्र अध्यात्ममूलक है, इसके प्रत्येक विचार रहस्यात्मक, व्यंग्यार्थ प्रतिपादक है। दार्शनिक दृष्टि से भी ज्योतिष एवं समन्वयात्मक विशेष दर्शन सिद्ध होता है। अतः इसकी प्रत्यक्षता निर्विवाद सिद्ध है।

*परमपिता श्री परमात्मा की अपार कृपा से उत्तरी भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सर्वप्राचीन प्रकाशन **'पंचांगदिवाकर'**, **'मुफीद आलम जन्त्री'** (उर्दू–हिन्दी–पंजाबी) एवं तिथ–पत्रिका (पंजाबी–भाषा) को प्रकाशित होते हुए प्रस्तुत संवत् २०८१ (2024–25 ई.) में गौरवशाली 149 वर्ष हो जाएंगे। इस पंचांग–समूह के प्रवर्त्तक एवं संस्थापक हमारे परम–पूज्य वृद्ध प्रपितामह (पितृ–पुरुष) विश्वविख्यात मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु जी (लाहौर वाले) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हो चुकी है, वह सुविज्ञ पाठकगणों से छिपी हुई नहीं है। उत्तरी भारत में शताब्दि से भी अधिक वर्षों प्रयन्त ज्योतिष जगत् के क्षेत्र में हमारी पंचांग, जन्त्री एवं अन्य ज्योतिष, कर्मकाण्ड, धार्मिक प्रकाशनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सुविज्ञ पाठकों से अनुरोध है कि वह असली व प्रामाणिक **'पंचांगदिवाकर'**, **'मुफीद आलम जन्त्री'** तथा अन्य प्रकाशनों पर हमारे पूज्य पिता स्वर्गीय पं. पन्ना लाल जी का नाम व फोटो, गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा, सहसम्पादक पं. पंकज शर्मा तथा एकमात्र वितरक **'जनरल बुक डिपो'** जालन्धर का नाम अवश्य पढ़ लिया करें, जिससे कि आप असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक जन्त्री/पंचांग ही प्राप्त कर सकें।*

## गतवर्षीय दिवाकर पंचांगों की भविष्यवाणियाँ जो अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं

आगे हम संक्षिप्त रूप से हमारे पूर्वजों पं. देवीदयालु जी, पं. मोहन लाल जी, पं. चून्नी लाल जी, पिता जी पं. पन्ना लाल जी तथा वर्तमान गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा की उन भविष्यवाणियों का उल्लेख कर रहे हैं, जो ईश्वर कृपावश अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं। इन सटीक एवं सफल भविष्यवाणियों के कारण ही **'पंचांगदिवाकर'** को विद्वत समाज में अग्रणी एवं शीर्षस्थ स्थान प्राप्त है।

*[भारत–पाक का ब्रिटिश शासन से स्वतन्त्र होना सं. २००४ (1947–48 ई.), भारत–चीन युद्ध (सं. २०१९), भारत–पाक युद्ध (सं. २०२२), बांग्लादेश का उदय होना–सं. २०२७, कांग्रेस (ई.) की पराजय (संवत् २०३३) तथा पुनः सत्ता में आना–सं. २०३६, ईरान–ईराक युद्ध–वि. सं. २०३९, पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी की आकस्मिक मृत्यु–सं. २०४१, पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४७), मोर्चा सरकार का पतन तथा भाजपा का सशक्त पार्टी के रूप में सत्तारूढ़ होना–वि. सं. २०५५, भाजपा सरकार का आकस्मिक गिरना तथा कारगिल में युद्ध की स्पष्ट भविष्यवाणी–वि. संवत् २०५६, सं. २०५७ के पंचांग में एवं च, भाजपा का केन्द्र में गिरकर पुनः सत्ता ग्रहण की भविष्यवाणी स्पष्टतः की गई थी।]*

*पुनः वि. संवत् २०५८ के पंचांग में अमरीका 9/11 सम्बन्धित त्रासदी के बारे में, वि. संवत् २०५९ में पंजाब में कांग्रेस पार्टी की विजय सम्बन्धी भविष्यवाणी, वि. सं. २०६० में 'अमरीका–ईराक' युद्ध तथा ईराक में सत्ता–परिवर्तन, वि. सं. २०६१ में लोकसभा चुनावों में कांग्रेस की विजय तथा भाजपा (वाजपेयी) सरकार का पतन, वि. संवत् २०६३ में पंजाब, बिहार में नेतृत्व–परिवर्तन के योग (बादल तथा नितीश कुमार का सत्तासीन होना) वि. संवत् २०६४ (2007–08 ई.) में उ.प्र., उत्तराखण्ड में नेतृत्व परिवर्तन के योग, वि. संवत् २०६५ में गुजरात में भाजपा एवं मोदी सरकार के विजयी सम्बन्धी भविष्यवाणी, वि. संवत् २०६६ में अमरीकी राष्ट्रपति बराक*

*ओबामा को सफलता प्राप्ति वि. संवत् २०६७ में कांग्रेस का पुनः जीत प्राप्त करना, वि. संवत् २०६८ में विश्व में आर्थिक मन्दी, वि. संवत् २०६९ में पंजाब में अकाली–भाजपा गठबन्धन का पुनर्विजयी होना,* ***वि. संवत् २०७० ( 2013–14 ई. ) में ही 'श्रीनरेन्द्र मोदी' के प्रधानमन्त्री बनने सम्बन्धी भविष्यवाणी तथा विधानसभा चुनावों में भाजपा की सफलता प्राप्ति की भविष्यवाणी एवं उत्तराखण्ड में महावृष्टि सम्बन्धी हानि की भविष्यवाणी,*** *वि. संवत् २०७१ (2014–15 ई.) तथा वि. संवत् २०७२ (2015–16 ई.) में अप्रैल, 2015 ई. में* ***नेपाल में भूकम्प आएगी' भविष्यवाणी,*** *सं. २०७३ (2016–17 ई.) में 'एक सक्षम और सामर्थ्यवान राष्ट्र के रूप में भारत का उदय होगा', आदि अनेक भविष्यवाणियों का उल्लेख हम गतवर्षीय पंचांगों में कर आएं हैं। परन्तु* ***सन् 2016–17 ई. की सबसे बड़ी भविष्यवाणी थी 'नोटबन्दी'।*** *वि. संवत् २०७४ (2017–18 ई.) में पृष्ठ 91, कॉलम–I में पढ़ें–'……व्यापारी सरकार के कठोर व पेचीदा नियमों से परेशान व पीड़ित रहेंगे।' जैसा कि लोग/व्यापारी जी.एस.टी. व नोटबन्दी के दौरान परेशान रहे। वि. संवत् २०७५ में पूर्व–प्रधानमन्त्री श्री अटल–बिहारी वाजपेयी जी के निधन सम्बन्धी भविष्यवाणियां अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई हैं।*

**कोरोना महामारी सम्बन्धी स्पष्ट संकेत**—*वि. संवत् २०७६ में पृष्ठ 74 पर कोरोना महामारी सम्बन्धी स्पष्ट संकेत दिए गए थे। लोगों के पलायन सम्बन्धी भविष्यवाणी भी स्पष्टतः दी गई थी। (देखें पृष्ठ 74)। वि. संवत् २०७७ में पृष्ठ 85 पर कोरोना महामारी के कारण सरकार द्वारा कठोर एवं अप्रिय निर्णय लिए जाने सम्बन्धी भविष्यवाणी (सरकार द्वारा क्रियान्वित लॉकडाऊन नियमों से साधारण प्रजा में काफी भय, दुविधा का माहौल रहा।) इसी वर्ष पृष्ठ 92 पर म.प्र. सरकार परिवर्तन सम्बन्धी भविष्यवाणी। वि. संवत् २०७८ (2021–22 ई.) में पृष्ठ 92 पर अमेरिका में ट्रम्प सरकार के गिरने सम्बन्धी भविष्यवाणी, पृष्ठ 87 पर कोरोना महामारी की दूसरी लहर में (अप्रैल–मई 2021 ई.) ऑक्सीजन सम्बन्धी फैली अव्यवस्था सम्बन्धी संकेत, इसीलिए ज्योतिषशास्त्र को संकेतशास्त्र भी कहा जाता है।*

वि. संवत् २०७९ (2022–23 ई.)में पृष्ठ 89 पर–**'उ.प्र., उत्तराखण्ड, गोवा तथा मणिपुर में होने वाले विधानसभा चुनावों में भाजपा के पुनः विजयी प्राप्ति की भविष्यवाणी**, पृष्ठ 96 पर **'देश में साम्प्रदायिक उपद्रव तथा सामाजिक असंतुलन का नया विद्रूप दृष्टिगोचर होने सम्बन्धी भविष्यवाणी'**–जैसा कि जून, 2022 ई. में नुपुर शर्मा के वक्तव्य के बाद देश में सामाजिक विद्वेश फैला। आदि

## गतवर्ष वि. संवत् २०८० पंचांग की भविष्यवाणियां जो सत्य सिद्ध हुईं

गतवर्ष वि. सम्वत् २०८० के पंचांगदिवाकर में अभी तक (23 जुलाई, 2023 ई. तक) अनेक भविष्यवाणियां ईश्वर कृपावश सत्य सिद्ध हुई हैं। यथा–

*(1) पृष्ठ 83–मुख्य कॉलम की प्रथम पंक्ति में ही पढ़ें–''****समाज तथा राजनीतिज्ञों में परस्पर टकराव, वैर–विरोध एवं प्रतिद्वन्द्वता की भावना अधिक रहेगी। आरोप–प्रत्यारोप भरा वातावरण रहेगा। मूल्य–वृद्धि से साधारण लोग त्रस्त रहेंगे।''*** अप्रैल मास से कांग्रेस पार्टी द्वारा विदेश में जाकर सत्तारूढ़ भाजपा सरकार की निन्दा करना तथा भाजपा द्वारा प्रत्यारोप लगाना, N.D.A. गठबन्धन के विरुद्ध विरोधी पार्टियों द्वारा I.N.D.I.A. नामक गठबन्धन कर लेना–ये सब आरोप–प्रायारोप भरा वातावरण संवत् पर्यन्त रहेगा। पुनः, जून–जुलाई में सब्ज़ियों आदि के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि से लोग परेशान हो रहे हैं।

*(2) पृष्ठ 83 पर मुख्य कॉलम में पढ़ें–'****ऐसे अनेक राजनीतिक समीकरण देखने को मिलेंगे, जिसमें षड्यन्त्र, दोगलापन, पीठ पर छुरा घोंपना आदि के उदाहरण मिलेंगे।'***–जुलाई 2023 ई. को प्रारम्भ में ही महाराष्ट्र में N.C.P. पार्टी में अजीत पवार गुट द्वारा जिस प्रकार पार्टी को दोफाड़ किया गया. वह 'पीठ पर छुरा घोंपना' शब्दों का सटीक उदाहरण है।

*(3) पृष्ठ 83 एवं 90 पर स्पष्टतः पढ़ें–****भारत आयातित महँगाई का शिकार होता रहेगा। मोदी सरकार का विकास के प्रति प्रतिबद्धता का भाव बढ़ती महँगाई, मुद्रा अवमूल्यन……तथा धार्मिक कट्टरता की धुंध में विलुप्त होता जाएगा। देश के विभिन्न क्षेत्रों में रह–रह कर उठ रही साम्प्रदायिक टकराव की चिंगारी विचलित करती रहेगी।'***–मिज़ोरम, मणिपुर, राजस्थान, बंगाल आदि राज्यों में मैतिती–कुकी समुदायों के मध्य विषैला तनाव तथा महिलाओं पर अत्याचार से फैला साम्प्रदायिक तनाव–इन वाक्यों की सत्यता प्रमाणित कर रहा है।

*(4) पृष्ठ 83 पर ही स्पष्ट पढ़ें–'****गुजरात के होने वाले चुनावों में भाजपा कुछ मुश्किलों के बाद पुनः विजयी होगी।'***–नतीजे पाठकों के सामने हैं।

*(5) पृष्ठ 88 पर कॉलम–I में स्पष्ट पढ़ें–'****रूस–यूक्रेन युद्ध के सम्बन्ध में लिखा था–कि युद्ध अथवा युद्ध–भय एवं धमकियों भरा यह खेल ज़रा लम्बा चलेगा।***

*(6) पृष्ठ 89 पर अमरीका शीर्षक के अन्तर्गत पढ़ें–'****रूस के साथ प्रत्यक्ष टकराव से बचता रहेगा। यूक्रेन आदि दक्षिणी यूरोप के अन्य देशों को अपने उद्देश्यों की पूर्त्ति के लिए घातक हथियारों की आपूर्त्ति करता रहेगा।'***–अभी तक विश्व परिदृश्य यही स्पष्ट संकेत दे रहा है।

*(7) पृष्ठ 91, कॉलम–II में पढ़ें–'****भारत की बढ़ती वैश्विक स्वीकार्यता और लगातार बढ़ रहे कद के कारण 'रुपये' को अन्तर्राष्ट्रीय करेंसी के रूप में स्थापित करने में मदद मिलेगी।'***–जुलाई, 2023 ई. तक लगभग 52 देशों ने रुपये तथा U.P.I. पेमेन्ट को स्वीकार्य कर दिया है।

*(8) पृष्ठ 91, कॉलम–I में पढ़ें–'****रामायण–सर्किट, बुद्ध सर्किट जैसी योजना भारत की आस्था के लिए सुखद अनुबूति होंगी।'***

*(9) पृष्ठ 92, कॉलम–I एवं II में वैशाख, ज्येष्ठ तथा आषाढ़ मास के अन्तर्गत लिखी गई भविष्यवाणियां हू–ब–हू सत्य सिद्ध हुई कि* ***'देश में कहीं उपद्रव, फिसाद एवं आन्दोलन के संकेत हैं। जातीय उत्पात और साम्प्रदायिक दंगे–फसाद बढ़ेंगे।' आदि।***–मणिपुर, महाराष्ट्र, हरियाणा आदि राज्यों में इस अवधि में घटी घटनाएं इस भविष्यवाणी की सत्यता प्रमाणित कर रही है।–इत्यादि और भी अनेक भविष्यवाणियां ईश्वर कृपावश

अक्षरशः सत्य सिद्ध हो रही हैं। इसी कारण परम ज्ञान-विज्ञान विशारद भारतीय ऋषियों-मुनियों का यह मानना था आकाशीय पिण्डों का प्रभाव सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पर पड़ता है अर्थात् अन्तरिक्ष से आने वाले अन्तर्ग्रहीय दुष्प्रभाव हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं।

*उपरोक्त ये सभी घटनाएं '**पंचांगदिवाकर**' में दी गई भविष्यवाणियों की सार्थकता एवं सत्यता प्रामाणित कर रही है। वस्तुतः यदि पाठक गतवर्ष (वि. संवत् २०८०) में की गई भविष्यवाणियों एवं संकेतों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करेंगे तो उनमें आश्चर्यपूर्वक रूप से एक-एक पंक्ति में सांकेतिक भविष्यवाणियां परिलक्षित होंगी।*

## वि. संवत् 2081 में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भविष्यफल

वि. संवत् 2081 में ग्रहों की आकाशी कौंसिल (ग्रह-परिषद्) के दस पदाधिकारों में से पाँच मुख्य अधिकार उग्र (क्रूर) ग्रहों को तथा पांच अधिकार सौम्य (शुभ) ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। **राजा** का मुख्य अधिकार क्रूर, युद्धप्रिय, हिंसक एवं अग्नितत्त्वकारक ग्रह '**मंगल**' को प्राप्त हुआ है तथा **मन्त्री** का महत्त्वपूर्ण अधिकार क्रूर ग्रह **शनि** को प्राप्त हुआ है। **राजा एवं मन्त्री**-दोनों प्रमुख पद दो परस्पर विरोधी ग्रहों को प्राप्त होने से विश्व के अनेक राष्ट्रों के मध्य टकराव, प्रतिद्वन्दिता, होड़ एवं युद्ध की प्रवृत्तियां बढ़ेंगी। विश्व के अनेक पड़ोसी देशों तथा परस्पर विरोधी देशों (इज़रायल-ईरान, अमरीका-ईरान, अमरीका-रूस, यूक्रेन-रूस आदि) के मध्य विरोध एवं वैमनस्य बढ़ेगा। इसी प्रकार चीन-ताईवान, भारत-पाक आदि अन्य एशियाई देशों में भी विरोध एवं वैमनस्य बढ़ेगा। युद्ध-जन्य परिस्थितियां बनेंगी। विश्व में वायुयान दुर्घटनाएं तथा आतंकी खून-खराबे में वृद्धि होगी। विश्व में रक्तपात, युद्ध सम्बन्धी दुर्घटनाएं, पित्त-गर्मी सम्बन्धी रोगों की बहुलता तथा बालक-बालिकाओं के प्रति क्रूर घटनाएं बढ़ेंगी। मन्त्री शनि के कारण लोहा, स्टील, जिस्त, चाँदी, लकड़ी, ताँबा, गेहूँ, दालें, घी, तैल, पैट्रोलियम आदि बिल्डिंग मैट्रीरियल, चमड़ा, कलपुर्जों आदि पदार्थों से सम्बन्धित व्यापारी लोग विशेषतया लाभान्वित होंगे। राजनेताओं एवं प्रशासनिक अधिकारियों का व्यवहार सामान्य लोगों के प्रति कठोर एवं निर्दयतापूर्ण होगा। देश के कुछ भागों में वर्षा एवं खाद्यान्नों की कमी रहेगी। लौह, स्टील, ताँबा, वनस्पति तेल, खाद्यान्न, दालें, पैट्रोल, डीज़ल, बिजली, पेयजलादि उपभोग्य वस्तुएँ और अधिक तेज़ भाव होंगी। सामान्य लोगों में गहन असन्तोष क्रोध एवं विक्षोभ व्याप्त होगा।

'**कालयुक्त**' नामक संवत्सर का फल भी शुभ नहीं कहा जा सकता। विभिन्न प्रकार के पेचीदा रोगों में विशेष वृद्धि के कारण प्रजा में कष्ट तथा हाहाकार रहे। विभिन्न राजनीतिक पार्टियों में परस्पर विरोध एवं टकराव के कारण सामाजिक/राजनीतिक वातावरण विषाक्त बन जाएगा। देश में कहीं उपद्रव, हिंसा एवं अग्निकाण्ड की घटनाएं बढ़ेंगी। साम्प्रदायिक झगड़े-फिसाद अधिक होंगे।

सस्येश (कृषि)-नीरसेश (धातुओं) तथा धान्येश के अधिकार क्रमशः मंगल व सूर्य के पास होने से श्रावण में उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। ग्रीष्मऋतु की कृषि जैसे-गेहूँ, जौं, मक्की, चरी, दालें, चना, सब्ज़ियों की फसलों को हानि पहुँचे किंवा उनके भावों मे तेज़ी हो। राजनेताओं में परस्पर टकराव, विग्रह एवं विरोध रहे। लोगों में क्लिष्ट प्रकार के ज्वर एवं रोग व्याप्ति हो। सोना, ताँबा, पीतल, लाख, खल-बिनौले, पुखराज आदि रत्न दिन-प्रतिदिन महँगे होंगे। वर्षा (मेघ), फलों एवं सेना-ये तीनों अधिकार सौम्य ग्रह शुक्र को प्राप्त होने से अधिकांश राजनेता एवं प्रशासक अपना स्वार्थ ही सिद्ध करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। वे बहु धन-सम्पदा एवं संसाधनों से सम्पन्न होंगे। विभिन्न प्रकार के वृक्ष, फल, फूल, तृण, घास आदि एवं फलदार पौधे अधिक होंगे। उच्च स्तरीय विशेष वर्ग के लोग ही सुख-साधनों से और सम्पन्न होंगे। धन (कोश) का अधिकार चन्द्रमा के पास होने से धन-दौलत का विस्तार अधिक होगा। सुगन्धित तैल, दूध, घी, वस्त्रों, सौन्दर्य प्रसाधनों का व्यापार करने वाले अच्छा लाभ कमा सकेंगे। अवसरवादी (दल-बदलू) नेता अनेक प्रकार के सुख-साधनों से सम्पन्न होंगे।

## नववर्ष-प्रवेश एवं जगत्-लग्न कुण्डली अनुसार भविष्यफल

नववर्ष प्रवेश कुण्डली (1)
8-04-2024 ई. 23$^{\text{घं.}}$ 51$^{\text{मिं.}}$
(राज.,पश्चि.पंजाब,जम्मू आदिराज्यों के लिए)

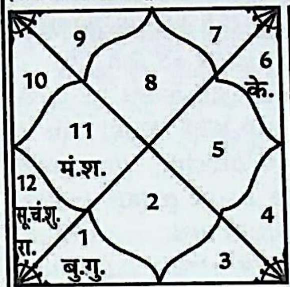

नववर्ष प्रवेश कुण्डली (2)
8-04-2024 ई. 23$^{\text{घं.}}$ 51$^{\text{मिं.}}$
(दिल्ली,हि.प्र.,हरियाणा आदि तथा शेष भारत के लिए)

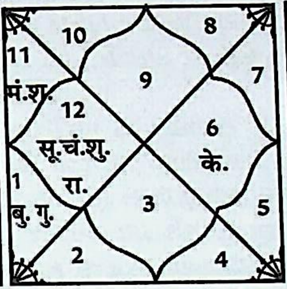

जगत् लग्न कुण्डली,
13 अप्रैल, सन् 2024 ई.
21$^{\text{घं.}}$04$^{\text{मिं.}}$P:M (भा.स्टैं.टा.)

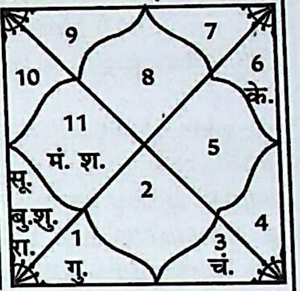

'**कालयुक्त**' नामक नव वि. संवत् 2081 का प्रवेश चैत्र-अमावस्या की समाप्ति 8 अप्रैल, 2024 ई. की रात्रि 11 बजकर 51 मिनट (23:51) पर, रेवती नक्षत्र, वैधृति योग, मीनस्थ चन्द्रमा कालीन धनु (द्विस्वभाव) लग्न में हुआ है। **कृपया ध्यान दें**, भारत के पश्चिमी राज्यों [जम्मू-का., पश्चिमी पंजाब (लुधियाना से पश्चिम में), पश्चिम राजस्थान में] में नववर्ष प्रवेश वृश्चिक लग्न में होगा। नववर्ष प्रवेश कुण्डली (1) में वर्ष लग्नपति मंगल चतुर्थ भाव (कृषि, सर्वसाधारण की प्रसन्नता, फसलों का उत्पादन, भूकम्प आदि के भाव) में शत्रु राशिगत होकर शत्रु ग्रह शनि के साथ स्थित है तथा इसकी षष्ठ भाव पर गुप्त मित्र दृष्टि है। *अतः भारत के पश्चिमी राज्यों में भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा, खण्ड एवं बेमौसमी वर्षा से व्यापक जन-धन हानि का योग है।*

**नववर्ष प्रवेश कुण्डली (2) में भी (जिसका प्रभाव भारत के अधिकतर क्षेत्र पर रहेगा)** वर्ष लग्नपति गुरु पंचम भाव (विकास योजनाओं, प्रशासनिक बुद्धि, खेलकूद का भाव) में शुभ राशिस्थ है परन्तु शत्रु ग्रह बुध के साथ है। पंचमेश एवं व्ययेश मंगल शत्रुराशिगत तथा शत्रुग्रह शनि के साथ तृतीय-भाव (पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध, दूरसंचार-रेल आदि का भाव) में होने से भारत के सम्बन्ध अपने पड़ोसी देशों के साथ वैमनस्यपूर्ण ही रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में, विशेषकर प्रथम तीन मास देश का सामाजिक, राजनीतकि एवं आर्थिक वातावरण अनिश्चित एवं अशान्त रहेगा। भारत में भावी लोकसभा चुनावों में एन.डी.ए. तथा I.N.D.I.A. नामक विपक्षी गठबन्धन के मध्य आरोप-प्रत्यारोप तथा विषैले भाषणों से भी सामाजिक वातावरण बड़ा उग्र तथा नफरत भरा हो जाएगा। ग्रहस्थिति अनुसार आगामी वर्ष विश्व की राजनीति का मंच विशेष घटनाप्रद होगा। विश्व के अनेक विकसित एवं विकासशील देश अपनी सामरिक शक्ति बढ़ाने के लिए अत्याधुनिक हथियार बनाने में प्रयत्नशील रहेंगे। चतुर्थ भाव (फसलों का भाव) में **'चतुर्ग्रही योग'** आगामी वर्ष में फसलों के लिए भयावह साबित हो सकता है, जिससे महँगाई बढ़ेगी। शास्त्रों में धनु लग्न में वर्षप्रवेश का फल इस प्रकार से कहा गया है–

**धनुर्लग्ने तु उत्तरस्यां पूर्वस्यां च सुखं नृणाम्। दुर्भिक्षं प्रबला वृष्टिः मध्यदेशे सरोगता।।**

अर्थात् धनु लग्न का वर्षलग्न होने से उत्तर-पूर्व के प्रदेशों में सुख के साधनों में वृद्धि होगी। मध्यगत प्रदेशों में प्रबल वर्षा से फसलों की हानि, दुर्भिक्ष, लोगों में क्लिष्ट रोगों की उत्पत्ति और चौपायों में विशेष रोग होने से चौपाय व दुग्धादि वस्तुओं में तेज़ी होगी।

## जगत् लग्न एवं विश्व घटनाक्रम

**जगत् लग्न कुण्डली** में वृश्चिक (स्थिर) लग्न उदित हुआ है। लग्नेश मंगल (जोकि युद्धप्रिय ग्रह माना जाता है तथा चीन, माओवादी संगठनों, अग्निकाण्ड, विस्फोट का प्रतीकात्मक एवं प्रतिनिधित्व भी करता है) चतुर्थ भाव (भूकम्प, कृषि-उद्योग का भाव) में शत्रुराशिगत होकर शत्रुग्रह शनि के साथ स्थित है। लग्न भाव पर शनि की गुप्त शत्रु दृष्टि भी पड़ रही है। फलस्वरूप विश्व के अनेक विकसित एवं विकासशील देशों के मध्य नए राजनैतिक गठजोड़ एवं समीकरण बनेंगे। नाटो एवं रूस के मध्य आर-पार की लड़ाई शुरु हो जाएगी। अप्रत्यक्ष रूप से रूस-यूक्रेन युद्ध में शामिल नाटो के कई देश (पोलैण्ड आदि) इस युद्ध के लपेटे में आ जाएंगे। चीन, पाकिस्तान आदि कुछ कट्टर एवं विस्तारवादी देशों का रवैय्या भारत, ताईवान आदि एशिया के अन्य विकासशील देशों के प्रति भेदभाव, घृणा एवं पक्षपातपूर्ण रहेगा। कई युद्धोन्मुखी घटनाएं होंगी। विश्व के अनेक राष्ट्राध्यक्षों के लिए सन् 2024 ई. का वर्ष अत्यन्त चुनौतिपूर्ण, विषम परिस्थितियों से युक्त तथा निर्णायक होगा। अमेरिका, इज़रायल गठजोड़ का कुछ मुस्लिम बाहुल्य देशों के साथ टकराव एवं लघु युद्ध की प्रबल सम्भावनाएं हैं। एशियाई देशों में भूकम्प आदि किसी प्राकृतिक आपदा के कारण व्यापक जन-धन हानि के भी प्रबल योग हैं। पंचम भाव में (विकास योजनाओं, प्रशासनिक बुद्धि) मीन राशि पर अमरीका के राशिस्वामी बुध की नीचस्थ स्थिति तथा सूर्य-शुक्र-राहु के साथ होने से विश्व राजनीति में अमरीका द्वारा निर्देशित शीत-युद्ध जन्य परिस्थितियां रहेंगी। अमरीकी कूटनीतिक एवं भेदभावपूर्ण नीतियों के विरुद्ध पश्चिमी एशियाई देश प्रखर रूप में विरोध एवं प्रत्याकार करेंगे। जगत् लग्न कुं. में प्रवेश के आसपास (अप्रैल, 2024 ई. में) भारत में राजनीतिक उथल-पुथल एवं परिवर्तन सम्पूर्ण विश्व के लिए एक आश्चर्यजनक परिदृश्य उपस्थित होगा।

## विश्व राजनीतिक मंच

वर्षारम्भ 2024 ई. में यूरोपीय देशों की कुण्डली में अष्टम भाव (युद्ध, मृत्युदर, प्राकृतिक आपदाओं, ऋण का भाव) में गुरु की स्थिति तथा शनि की तृतीय नीच दृष्टि यूरोपीय देशों के लिए संकटपूर्ण परिस्थितियों की ओर संकेत कर रही है। लग्न-भाव (केन्द्रीय-नेतृत्व देश की साधारण दशा, जनता की प्रवृत्ति) में केतु की स्थिति तथा सप्तम (अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों, विदेशी व्यापार का भाव) भाव में राहु की स्थिति तथा इन पर मंगल की गुप्त शत्रु दृष्टि यूरोपीय देशों–फ्रांस, स्पेन, इटली, जर्मनी, इंग्लैण्ड में विषम आर्थिक तथा राजनैतिक उलझनों से भरा वर्ष लेकर आएगी। रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण लगभग पूरा यूरोप गम्भीर आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक रूप से बेहद संकट की स्थिति में आ जाएगा।

**यूरोपीय देशों की कुण्डली**
**1 जन., 2024 ई.**
**मध्यरात्रि $00^{\text{घं.}}$ $00^{\text{मिं.}}$**

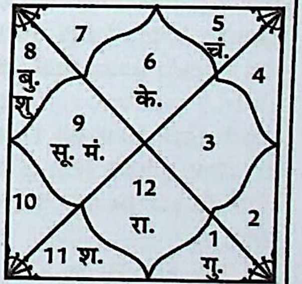

गेहूँ आदि सहित खाद्य वस्तुओं में अत्यधिक मूल्य वृद्धि से पूरे यूरोप में महँगाई अपने चरम पर आ जाएगी। ब्रिटेन, फ्रांस आदि यूरोपीय देशों में मुद्रा अवमूल्यन भी करना पड़ेगा, जिससे आर्थिक मन्दी का वातावरण बन जाएगा। विश्व राजनीतिक पटल पर दो गुट देखने को मिल सकते हैं–

(1) अमरीका-ऑस्ट्रेलिया-ताईवान-नाटो (यूरोपीय देश) तथा इज़रायल।

(2) रूस-चीन-उत्तरी-कोरिया-ईरान। इन दो गुटों के देशों के मध्य युद्ध अथवा युद्ध-भय एवं धमकियों भरा यह खेल जरा लम्बा चलेगा।

हिजरी सन् 1445 का बादशाह **'गुरु'** (बृहस्पति) है। मुस्लिम देशों की नववर्ष प्रवेश कुण्डली में मकर लग्न उदित है। लग्नेश शनि धन भाव (आर्थिक स्थिति, मुद्रास्फीति का भाव) में स्थित **'मंगल-शुक्र'** के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध बना रहा है तथा इसकी

चतुर्थ भाव में स्थित बादशाह गुरु एवं राहु पर शत्रु दृष्टि है। मुस्लिम एशायाई देश (ईरान) अमरीका के समक्ष उग्र रूप से व्यवहार करेगा तथा किसी भी समय युद्धाग्नि में जाकर वैश्विक वातावरण में हाहाकार मचा देगा। इसी प्रकार फिलीस्तीन-इज़रायल मध्य युद्धाग्नि कभी भी भड़क सकती है। विश्व की इन उग्र परिस्थितियां में अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय भारत को उग्र शान्तिदूत की भूमिका में देखेगा।

मुस्लिम देशों की कुण्डली
(19 जुला., 2023 ई. से
6 जुला., 2024 ई. तक)

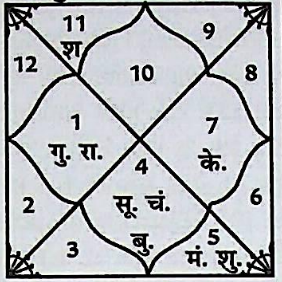

## सन् 2024 ई. में ग्रहगोचर स्थिति और विश्व के हालात

वर्षप्रवेश एवं जगत्-लग्न कुण्डली में ग्रहस्थिति अनुसार आगामी वर्ष सम्पूर्ण विश्व विशेषतया यूरोपीय देशों के लिए उलझनपूर्ण परिस्थितियां लेकर आएगा। वर्षभर लग्न पर केतु की स्थिति तथा सप्तम भाव (व्यापार, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध) में राहु की स्थिति शोचनीय अर्थव्यवस्था की ओर संकेत कर रही है। लग्न भाव पर मंगल की गुप्त शत्रु दृष्टि के कारण ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन से ठण्डे यूरोपीय देश भी नहीं बच पाएंगे। फलतः यूरोपीय तथा पश्चिमी एशियाई देशों में भी ऊर्जा की माँग व्यापक रूप से बढ़ जाएगी। परन्तु रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण यूरोपीय देशों की ऊर्जा की निरन्तर कमी शिरोवेदना ही बढ़ाएगी। गतवर्ष भी लिखा गया था कि रूस-चीन की विस्तारीकरण नीतियों के विरुद्ध अमरीका, ऑस्ट्रेलिया, नाटो तथा ताईवान के साथ गुट बनाएगा तथा विश्व लगभग दो गुटों में बंट जाएगा। विश्व-युद्ध समतुल्य शीत-युद्ध शुरु होगा, जिसकी अवधि लगभग 2-3 वर्ष रहेगी।

**पौष मास** (27 दिसं. 2023 से 25 जन. 2024 ई. तक) में पाँच बृहस्पतिवार होने से पश्चिमी व मुस्लिम देशों जैसे-ईराक, सूडान, इज़रायल-फिलीस्तीन, यूक्रेन आदि देशों में राजनीतिक व आतंकवादी टकराव तथा युद्धजन्य हालात बनेंगे। मेषस्थ गुरु पर शनि की नीच दृष्टि, मीनस्थ राहु पर मंगल की शत्रु दृष्टि के प्रभावस्वरूप व्यापार जगत् में विशेष उथल-पुथल होगी। राजनीतिक वातावरण भी अशान्त तथा पेचीदा बन जाएगा।

**माघ मास** (26 जन. से 24 फर. तक) में पांच शुक्र तथा पाँच शनिवार होने से विश्व में कहीं युद्धभय, कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) हो। गुरु-शुक्र के मध्य दृष्टि सम्बन्ध (5-9) तथा गुरु पर शनि की नीच दृष्टि के प्रभाव से विश्व में युद्ध तथा भयंकर प्राकृतिक प्रकोपों तथा आर्थिक उथल-पुथल से व्यापक जन-धन हानि का भय रहे। विश्व राजनीति में भारत का प्रभुत्व बढ़ेगा।

**फाल्गुन मास** (25 फर. से 25 मार्च तक) में पाँच रविवार तथा पाँच सोमवार होने से मुस्लिम एवं विरोधी देशों (इज़रायल-फिलीस्तीन) के मध्य युद्धमय वातावरण, तनाव, उपद्रव, विद्रोह आदि घटनाएं घटित होंगी। कहीं शासन परिवर्तन, किसी वरिष्ठ व्यक्ति की हत्या या निधन की भी सम्भावना है।

**चैत्र मास** (26 मार्च से 23 अप्रैल मध्य) में पाँच मंगलवार रहेंगे।

**खप्पर योग**—चान्द्र माघ मास से चैत्र मास (26 जन. से 23 अप्रैल, 2024 ई. के मध्य) के मध्यान्तर में क्रमशः **5 शनिवार, 5 रविवार** तथा **5 मंगलवार** पड़ने से अनिष्टकारी '**खप्पर योग**' बन रहा है, जिसका फल शास्त्रों में अशुभ कहा है-

**शनि भानु कुजे वारे बहवः संक्रमा-मासा यदाः।**
**तदामहर्घं अनिलं कुर्वते रोग-विग्रहम्॥**

अर्थात् चान्द्र मासों या संक्रान्तियों में क्रमशः शनि, रवि एवं मंगलवारों का आगमन हो, तो इसके प्रभावस्वरूप पाक, चीन आदि शत्रु देश भारत, ताईवान आदि देशों के प्रति कुटिल चालों का प्रयोग करते रहेंगे, विश्व के अधिकांश देशों में उपभोग्य वस्तुओं जैसे-खाद्यान्न, पैट्रोल, सोना, चाँदी आदि धातुओं में ज़बरदस्त तेजी होगी। किन्हीं मुस्लिम देशों में हिंसक, आतंकी एवं महाशक्तियों के हवाई हमलों से भी विनाशकारी घटनाएँ घटित होंगी।

**वैशाख मास** (24 अप्रैल से 23 मई तक) में पाँच बुधवार तथा पाँच गुरुवार होने, मेषस्थ सूर्य-शुक्र पर शनि की नीच दृष्टि, '**मंगल-राहु**' योग रहने से पश्चिमी एशियाई देशों में युद्ध के बादल मंडराएंगे। टर्की, अफगानिस्तान, ईरान, सीरिया, यमन, पौलैण्ड में अमरीका, रूस आदि देश अलग-अलग आधिपत्य स्थापित करने के लिए इन देशों को भीषण संघर्ष की अग्नि में झोंक देंगे।

**ज्येष्ठ मास** (24 मई से 22 जून तक) में पांच शुक्रवार तथा पाँच शनिवार होने, 31 मई से 12 जून वृष राशि में '**चतुर्ग्रही योग**' होने से, विश्व में कहीं छत्रभंग, उपद्रव व हिंसक घटनाओं का भय रहे। सर्वप्रकार के अनाज महँगे होंगे। राजनीतिक दृष्टि से एवं प्राकृतिक प्रकोपों के कारण विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी।

**आषाढ़ मास** (23 जून से 21 जुला. मध्य) में **पाँच रविवार** आने, त्रयोदश दिनात्मक पक्ष होने से अचानक किसी यूरोपीय देश में सत्ता-परिवर्तन होने के भी योग हैं। विश्व में किन्हीं देशों के मध्य युद्धजन्य परिस्थितियां बनेंगी। रूस-यूक्रेन युद्ध के इलावा किसी देश द्वारा आकस्मिक लघु फौजी कार्यवाही करने से विश्व भयानक युद्ध के मुहाने पर खड़ा होगा।

**श्रावण मास** (22 जुला. से 19 अग. तक) में पांच सोमवार बुध-शुक्र का वक्री शनि के साथ समसप्तक योग (19 जुला. से 21 अग.) रहने से कुछ देशों से युद्ध के समाचार मिलें। युद्ध, प्राकृतिक आपदाओं से पृथ्वी रक्त-रंजित रहे।

**भाद्रपद मास** (20 अग. से 18 सितं.) में **पाँच मंगलवार**, 10 अग. से 15 सितं. तक सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध रहने से अमेरिका, ब्रिटेन, यूक्रेन आदि देशों के प्रधाननेता को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

**आश्विन मास** (19 सितं. से 17 अक्तू.) में पांच बृहस्पतिवार आने, सूर्य-बुध-केतु पर मंगल की विशेष दृष्टि रहने से विश्व में अमरीका, जापान, इण्डोनेशिया जैसे देशों में तूफ़ान, आँधियां, सुनामी, भूकम्प आदि प्रकोप अधिक होंगे।

**कार्तिक मास** (18 अक्तू. से 15 नवं.) में पांच शुक्रवार, ता. 20 अक्तू. से '**मंगल-शनि** के मध्य षडाष्टक योग सम्बन्ध रहने से विश्व के कुछ प्रमुख देशों में टकराव, युद्ध-

भय, दंगे-फिसाद एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। यूरोपीय एवं मुस्लिम देशों में अमरीका द्वारा युद्ध का वातावरण बना दिया जाएगा।

**मार्गशीर्ष मास** (16 नवं. से 15 दिसं. तक) में पाँच शनि तथा पाँच रविवार, सूर्य-शनि के मध्य (4-10) दृष्टि सम्बन्ध रहने से पृथ्वी (विश्व) पर राजाओं के मध्य टकराव, युद्ध तथा लोगों में भी परस्पर विग्रह एवं विरोध रहे। प्रजा में क्लिष्ट रोगों का प्रसार तथा निरीह लोगों की अकालमृत्यु के भी योग है।

**पौष मास** (16 दिसं., 24 से 13 जन., 2025 ई. तक) में पाँच सोमवार, पौष रविवारी संक्रान्ति भी विश्वभर में राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियां पेचीदापूर्ण एवं उलझनपूर्ण रहेंगी। यूरोपीय देशों में आयधिक महँगाई, सूखे एवं दुर्भिक्ष का भय रहे। विश्व के प्रमुख नेता के लिए अशुभ एवं अनिष्टकर समय होगा।

## विश्व के कुछ प्रसिद्ध देश

**अमेरिका (America)**–इसकी प्रभावराशि **मिथुन** की जगत् लग्न कुण्डली में अष्टम भाव (प्राकृतिक आपदाओं, युद्ध आदि का भाव) में स्थिति है। जगत् कुं. में राशिस्वामी बुध नीचराशिगत है तथा राहु आदि ग्रहों से युक्त है। ग्रहस्थिति आगामी वर्ष 2024 ई. में अमरीका के लिए उलझन एवं पेचीदा परिस्थितियां उत्पन्न करेगा। अमरीका को अपने विरोधी देशों रूस, ईरान, उ.कोरिया आदि के साथ किसी भी समय प्रत्यक्ष लघु युद्ध में जाना पड़ सकता है। इसके विपरीत अमेरिका के लिए भारत की महत्ता धीरे-धीरे बढ़ती जाएगी। भारत-अमरीका के सम्बन्ध अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक एवं नई विश्व-व्यवस्था की दृष्टि से नए दौर की शुरुआत होगी, नए अध्याय का निर्माण होगा। धरती पर ही नहीं, अंतरिक्ष में भी भारत-अमरीका की सांझेदारी देखने को मिलेगी। आने वाले वर्ष में अमेरिका से भारत में होने वाले प्रत्यक्ष विदेशी निवेश यानि एफ.डी.आई. में भारी बढ़ौत्तरी देखने को मिलेगी। भारत-अमरीका के मध्य आर्थिक सांझेदारी नए क्षितिज तक पहुँच जाएगी। अमेरिका में आगामी वर्ष नवम्बर, 2024 ई. में होने वाले राष्ट्रपति चुनावों में **'जोए-बाईडन'** की डेमोक्रेटिक सरकार का अग्निपरीक्षा का समय होगा, इसकी लोकप्रियता में कमी आएगी तथा यथेष्ठ (पुर्न) सफलता संदिग्ध ही रहेगी।

**पाकिस्तान (Pakistan)**–जगत् लग्न कुण्डली में इस देश की **प्रभावराशि** एकादश भाव (अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, चुनाव सम्बन्धी भाव) में केतु द्वारा आक्रान्त है। केतु पर मंगल, सूर्यादि ग्रहों की अशुभ दृष्टि भी रहेगी। फलस्वरूप ग्रहस्थिति पाकिस्तान जैसे नाकाम देश के लिए और गम्भीर संकेत कर रही है। फरवरी, 2024 ई. में होने वाले सम्भावित चुनावों से पूर्व ही गठबन्धन वाली शरीफ सरकार को आंतरिक विरोध एवं आलोचनाओं के कारण अपने पद से इस्तीफा भी देना पड़ सकता है। राष्ट्रीय चुनावों में गठबन्धन पार्टी तथा इमरान खान की P.T.I. के मध्य ज़बरदस्त चुनावी हिंसा तथा कांटे की टक्कर के बाद यद्यपि गठबन्धन सरकार (पाक मुस्लिम लीग-एन) को बढ़त मिलेगी। परन्तु चुनाव पश्चात् पाकिस्तान में अफरा-तफरी भरा माहौल रहेगा। गठबन्धन सरकार में से भी एक नया चेहरा उभरकर सामने आएगा जो पाकिस्तान की कमान सम्भालेगा। यद्यपि नवाज़-शरीफ की लोकप्रियता में भी वृद्धि होगी। कुछ भी अप्रत्याशित हो सकता है। चाहे पिछले दरवाज़े से उसकी सेना ही संचालित करेगी। कर्ज के कुचक्र मे फंस कर धरातल की तरफ जाता दिखाई देगा। पाकिस्तान के भीतर सामाजिक ताना-बाना तथा राजनीतिक माहौल छिन्न-भिन्न हो जाएगा। भारत के विरुद्ध चीन के समर्थन से आतंकी संगठनों का पोषण एवं संवर्धन करता रहेगा।

# वि. सम्वत् 2081 में गोचर ग्रहस्थिति और भारत का भविष्यफल

जन्मकुंडली स्वतंत्र भारत
14/15 अगस्त, 1947 ई.
($23^{\text{घं.}}$–$59^{\text{मिं.}}$) भा. स्टैं. टा.

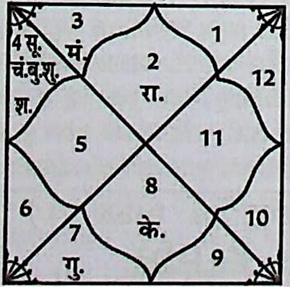

कुंडली गणतंत्र दिवस
26 जनवरी, 1950 ई.
$10^{\text{घं.}}$–$19^{\text{मिं.}}$ (भा. स्टैं. टा.)

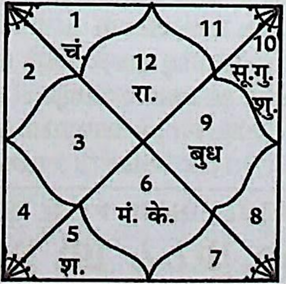

कुं. स्वतंत्र भारत (77वाँ वर्ष)
15 अगस्त, 2023 ई., मंगलवार
11:35 A.M. (I.S.T.), (दिल्ली)

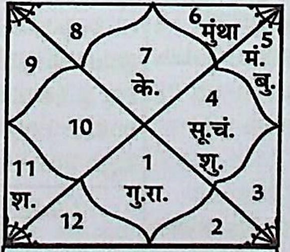

लग्न स्पष्ट-6-12°-26′-15″

कुं. स्वतंत्र भारत, 78वाँ वर्ष
14 अगस्त, 2024 ई.,
17:45 P.M. (I.S.T.), (दिल्ली)

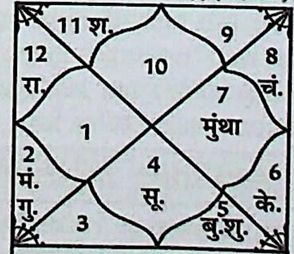

लग्न स्प.-9-06°-22′-27″

कुं. गणतन्त्र दिवस, 75वाँ वर्ष
27 जनवरी, 2024 ई., शनिवार
9:37 A.M. (I.S.T.), (दिल्ली)

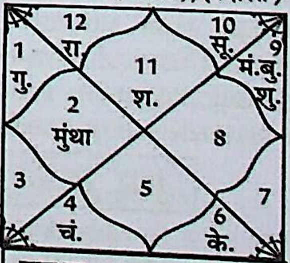

लग्न स्प.-10-28°-35′-05″

# स्वतन्त्र भारत का 77वाँ वर्ष

## (15 अगस्त, सन् 2023 ई. से 14 अगस्त, 2024 ई. तक)

स्वतन्त्र भारत के 77वें वर्ष की कुण्डली (15 अगस्त, 2023 ई.) में तुला लग्न उदित हुआ है। वर्ष-लग्नेश शुक्र दशम भाव में शत्रुराशिगत सूर्य एवं चंद्रमा युक्त होकर अस्तगत स्थिति में है। लग्न-भाव (केन्द्रीय नेतृत्व, मन्त्रीमण्डल, जनता की प्रवृत्ति का भाव) में केतु की स्थिति तथा उस गुरु की शत्रु सप्तम दृष्टि पड़ रही है। ग्रहस्थिति अनुसार प्रधानमन्त्री एवं केन्द्रीय सरकार के समक्ष सन् 2024 ई. में सत्ता का रास्ता बहुत कंटकाकीर्ण रहेगा। 'आई.एन.डी.आइ.ए.' (I.N.D.I.A.) नामक विपक्षी संगठन के बनने से भाजपा और एन.डी.ए. संगठन के सामने बहुत बड़ी चुनौती खड़ी हो जाएगी, **जिससे 2024 का चुनाव बहुत रोचक हो जाएगा**। चुनावों से पूर्व आगामी वर्ष का समय केन्द्रीय सरकार के लिए असमंजसपूर्ण एवं विवशतापूर्ण परिस्थितियों वाला होगा। मुंथा भी व्यय भाव (गुप्त-शत्रु, षड्यन्त्र, युद्ध सम्बन्धी कार्यों का भाव) में होने से चुनाव पूर्व सरकार द्वारा बजट आदि सत्रों में जनकल्याण एवं विकास हेतु अनेक योजनाएं राष्ट्र को समर्पित की जाएंगी अर्थात् उनका शुभारम्भ किया जाएगा। भारत नई लाजिस्टिक नीति, गतिशक्ति योजना के कारगर कार्यान्वयन, नीतिगत सुधारों, कारोबार आरम्भ करने के लिए सिंगल विंडो मंजूरी, इन्फ्रास्ट्रक्चर श्रमिकों को नए दौर के अनुरूप प्रशिक्षण देने के साथ-साथ विभिन्न आर्थिक और वित्तीय सुधारों से अगले वर्ष दुनिया के शीर्ष पसंदीदा एफ.डी.आई. वाले देशों की सूची में दिखाई देगा। विश्व का हर बड़ा देश और उनका खेमा भारत को अपने साथ देखना चाहेगा। विकसित राष्ट्र की संकल्पना के साथ अमृतकाल में भारत के कदम तेज़ी से सिरमौर राष्ट्र के रूप में स्थापित होने की दिशा में बढ़ेंगे।

परन्तु लग्नस्थ केतु पर गुरु की शत्रु दृष्टि एवं च, सप्तमस्थ **'गुरु-राहु'** पर शनि की विशेष नीच दृष्टि के कारण सत्तारूढ़-विपक्ष के मध्य आरोप-प्रत्यारोपों के कारण भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली की गरिमा को गहरा आघात लगेगा। विपक्ष तथा सरकार के मध्य जनकल्याण न होकर मुफ्तखोरी की राजनीति का बोलबाला रहेगा। चुनाव जीतने के लिए वित्तीय स्थिति की अनदेखी कर लोकलुभावन वादे करके अर्थव्यवस्था के साथ खुला खिलवाड़ करेंगे।

आगे 16 नवं. से 15 दिसं. तक सूर्य-शनि मध्ये (4-10) दृष्टि सम्बन्ध, 29 नवं. से 24 दिसं. 2023 ई. तक गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक योग, मंगल-शनि के मध्य भी (4-10) दृष्टि सम्बन्ध रहने से राजनीतिक वातावरण बड़ा असमंजसपूर्ण तथा आरोप-प्रत्यारोप भरा रहेगा। यह समयावधि सत्तारूढ़ केन्द्रीय भाजपा सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण एवं कठिन समय होगा। कुछ राज्यों में आशा के विपरीत जनमत मिलने से भाजपा पार्टी में नैराश्य की भावना का विस्तार होगा। अन्तर्कलह एवं उत्साह में कमी के कारण आगामी विधानसभा (राजस्थान, म.प्र., छत्तीसगढ़ आदि) चुनावों में भाजपा अपेक्षित सीटें प्राप्त करने में असफल रहेगी।

**विपक्षी** (I.N.D.I.A. आदि) **गठबन्धन सरकार** के खिलाफ शिरोवेदना वाले कई ज्वलन्त मुद्दे उठाकर सरकार को असमंजस की स्थिति में ला देगी।

# भारतीय गणतन्त्र का 75वाँ वर्ष

75वें गणतन्त्र दिवस की (27 जनवरी, 2024 ई.) कुण्डली में कुम्भ लग्न उदित हुआ है। वर्ष-लग्नेश शनि लग्न भाव (केन्द्रीय नेतृत्व का भाव) में स्वराशिगत होकर तृतीय भावस्थ (पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध, संचार साधनों का भाव) गुरु पर शत्रु दृष्टि रख रहा है। गुरु की विशेष नवम शुभ दृष्टि एकादश भाव (राष्ट्रीय आय, चुनाव, वाणिज्य से सम्बन्धित भाव) पर है। फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक मन्दी, रूस-यूक्रेन युद्ध, खाड़ी देशों का तनाव, रूस पर विश्व के बड़े देशों के आर्थिक प्रतिबंध, घरेलू एवं विदेशी मैदान पर भारत के खिलाफ दुष्प्रचार, तथाकथित असहिष्णुता, अल्पसंख्यकों-दलितों के साथ भेदभाव का नकली हौव्वा, लोकतांत्रिक-संवैधानिक संस्थाओं पर संकट के साजिशी दुष्प्रचार को धूल-धूसरित करते हुए भारत न केवल घरेलू मोर्चे पर सफलता के कीर्तिमान स्थापित करेगा, बल्कि वैश्विक मोर्चे पर मज़बूत ताकत और अर्थव्यवस्था बनकर भी उभरेगा। संसद् के शीतसत्र अथवा बजट-सत्र में सत्तारूढ़ भाजपा सरकार द्वारा सामाजिक न्याय से जुड़े व जनोपयोगी विधेयकों के लाने से विपक्ष के पास समर्थन के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं रहेगा।

13 फरवरी से 14 मार्च, 2024 ई. के मध्य कुम्भ राशि में **सूर्य-शनि**, फिर 15 मार्च से **'मंगल-शनि'** योग रहने से चुनावों की घोषणा होते ही पक्ष-विपक्ष के नेताओं के बीच पारस्परिक सम्मान और भाषाई शालीनता की अनुपस्थिति जनता को झकझोर देगी। विभिन्न पार्टियों द्वारा विभाजनकारी राजनीति का परिदृश्य उपस्थित किया जाएगा। भ्रष्टाचार, बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान व वापिस भेजने, भ्रष्टाचार, अपूरित विकास योजनाओं की बात पृष्ठभूमि में रहेंगी, जबकि वोट-बैंक प्रथम वरीयता में रहेगा।

15 मार्च से 23 अप्रैल, 2024 ई. तक **'मंगल-शनि'** योग रहेगा। लगभग इसी समय देश में लोकसभा के चुनाव हो रहे होंगे। वैचारिक दिवालियेपन से जूझ रहे विपक्षी कुनबे (I.N.D.I.A.) में चौतरफा विरोधाभास, मतभेद, निहित स्वार्थ स्पष्ट दिखाई देने शुरु हो जाएंगे। क्षेत्रियों दलों के सामने गठबन्धन से ज़्यादा अपना गढ़ बचाना प्राथमिकता होगी। इधर चुनावों से पूर्व केन्द्रीय सरकार द्वारा विकासोन्मुखी नीतिगत निर्णयों के क्रियान्वयन में तीव्रता लाई जाएगी। सदियों पहले विदेशी हमलावरों द्वारा किए गए सांस्कृतिक हमलों से छुटकारा पाने के लिए नई कार्य योजना बनाई जाएगी। भारत में नवनिर्माण की क्रान्ति चल पड़ेगी। 'भारत-मंडपम' (I.E.C.), नई संसद् आदि को विश्व-हेरीटेज़ में शामिल होते ही भारत की प्रतिष्ठा नई ऊँचाइयां छू लेगी। मार्च-अप्रैल में विपरीत ग्रह-योग के कारण देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था दल-बदली के रोग से पतन में जाती दिखेगी तथा अप्रैल-मई में गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त रहने तथा विपरीत गोचर ग्रहस्थिति के कारण केन्द्र व राज्य

सरकारों की दोषपूर्ण आर्थिक नीतियों के कारण कुछ राज्यों में बिगड़ती कानून-व्यवस्था, साम्प्रदायिक तनाव, बेरोज़गारी पक्ष-विपक्ष की **अमर्यादित ब्यानबाजी, उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में अतिशय वृद्धि इत्यादि ज्वलन्त समस्याओं के कारण जनता में असन्तोष तथा वोट डालते समय असमंजस की स्थिति रहे।**

## स्वतन्त्र भारत का 78वाँ वर्ष

### ( 14 अगस्त, 2024 ई. से संवतान्त तक )

**स्वतन्त्र भारत** के 78वें वर्ष की कुण्डली में (14 अगस्त, 2024 ई.) मकर लग्न उदित हुआ है, जोकि भारत की प्रभावराशि भी है। वर्ष लग्नेश शनि द्वितीय भाव (राष्ट्र की आर्थिक स्थिति, व्यापार, शेयरों, मुद्रास्फीति का भाव) में स्वराशिगत शुभ है। **फलस्वरूप मज़बूत प्रधानमन्त्री के असाधारण नेतृत्व में भारत एक महाशक्ति के रूप में उभरने के साथ ही कठिन वैश्विक परिस्थितियों में दुनिया को भी सही राह दिखाएगा।** देश में सेमीकंडक्टर के निर्माण से अर्थव्यवस्था की तस्वीर बदल जाएगी। सेमीकंडक्टर के निर्माण से ऑटोमोबाइल, इलैक्ट्रानिक्स एवं रक्षा-सेक्टर को काफी लाभ मिलेगा। पर्यावरण, टूरिज्म, ऊर्जा दक्षता और सतत विकास के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता से भारत को ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर एक अग्रणी देश के रूप में स्थापित होगा। परन्तु सत्तापक्ष एवं विपक्ष की विचारधाराओं में ज़बरदस्त मतभेद देखने को मिलेगा। वस्तुतः स्वतन्त्र भारत की **78वें वर्ष की कुण्डली में एक सक्षक्त केन्द्रीय सरकार के ही संकेत हैं जिससे देश में गुणात्मक परिवर्तन देखने को मिलेगा।** कुं. में एकादश भाव पर गुरु की शुभ परन्तु लग्न पर नीच दृष्टि रहने से राजनीति में नेताओं के परस्पर विरोधी एवं राष्ट्र-विरोधी बयानों से वाद-विवाद बढ़ेंगे। वास्तव में भारतीय राजनीति में राष्ट्रहित को प्राथमिकता देने के लिए अभी साहस, समर्पण और सद्बुद्धि की कमी रहेगी तथा संकल्पशक्ति का अभाव रहेगा। परन्तु भारत में एक सशक्त, मज़बूत, स्थायी, उत्तरदायी तथा सुधार-उन्मुखी सरकार के कारण सम्पूर्ण विश्व का भारत पर भरोसा रहेगा।

## सन् 2024 ई. में ग्रहगोचर और भारतवर्ष

वर्षारम्भ से ही **पौष मास** (27 दिसं., 2023 ई. से 25 जन., 2024 ई. के मध्य) में पांच बुधवार तथा पाँच बृहस्पतिवार आने, मेषस्थ गुरु पर शनि की नीच दृष्टि, मीनस्थ राहु पर मंगल की अशुभ दृष्टि रहने से देश में राजनीतिक वातावरण अशान्त तथा पेचीदा बन जाएगा। अयोध्या से राम-मन्दिर के भव्य उद्घाटन के बाद यद्यपि एक पक्ष का वातावरण बनता दिखेगा, परन्तु शीघ्र ही चुनावों की घोषणा होते ही विभिन्न पार्टियों द्वारा विभाजनकारी राजनीति का परिदृश्य उपस्थित किया जाएगा।

**माघ मास** (26 जन. से 24 फर. तक) में पांच शुक्र एवं पांच शनिवार आने, गुरु-शुक्र के मध्य दृष्टि सम्बन्ध (5-9) तथा मेषस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि के प्रभाव से देश में आशातीत महँगाई, कहीं सत्ता-परिवर्तन हो। ता. 13 से 'सूर्य-शनि' योग के प्रभावस्वरूप से किसी राज्य के प्रधाननेता की पदच्युति या आकस्मिक निधन होगा। बेमौसमी वर्षा, बर्फबारी, तेज आँधी या तूफान से खड़ी फसलों को हानि होगी।

**फाल्गुन मास** (25 फर. से 25 मार्च) में पाँच रविवार आने ता. 29 फर. को सूर्य-शनि मध्य अंशात्मक युति, 15 मार्च से 'मंगल-शनि' योग होने से केन्द्रीय नेतृत्व को किसी कठिन चुनौती का सामना होगा। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष राजनीतिक घटनाक्रम एवं उपद्रवी व विस्फोटक हालात बनेंगे। देश के कुछ भागों में आन्तरिक कलह, उपद्रव, अशान्ति एवं पार्टियों के मध्य वैचारिक युद्ध का वातावरण बने।

**चैत्र मास** (26 मार्च से 23 अप्रैल) में **पाँच मंगलवार** रहने, 23 अप्रैल तक 'मंगल-शनि' योग, मेष राशि में 'बुध-गुरु' योग तथा मीन राशि में 'सूर्य-शुक्र-राहु' योग होने से राजनीतिक पटल पर विशेष उथल-पुथल, कहीं भूकम्प, विस्फोट, यानादि दुर्घटना से भारी जन-धन हानि हो।

**भौम सौरीश्चेकराशौद्वयो स्थिते यदे। दुर्भिक्षं राज्यभंगं च मेदिन्यामग्नितोभयम्।।**

***खप्पर योग***—**माघ, फाल्गुन, चैत्र** (26 जन. से 23 अप्रैल तक) तीन महीनों में क्रमशः पाँच शनिवार, पाँच रविवार और पाँच मंगलवार होने से **खप्पर योग** बन रहा है। इसके अनिष्ट प्रभावस्वरूप देश में कहीं राज्यभंग एवं हिंसक घटनाएं घटित हों, कहीं अग्निकाण्ड या प्राकृतिक प्रकोप से जन, धनादि की क्षति हो। सामान्य लोगों में महँगाई के कारण गहन असन्तोष एवं आक्रोश रहे।

**लोके खर्पर योगोऽयं जीव धान्यादि नाशकः।।**

**वैशाख मास** (24 अप्रैल से 23 मई) में पांच बुधवार तथा पांच बृहस्पतिवार, गुरु-शुक्र अस्त रहने, मेषस्थ सूर्य-शुक्र पर शनि की नीच दृष्टि, 'मंगल-राहु' योग होने से देश के पश्चिमी राज्यों (पंजाब, कश्मीर, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र आदि) में कहीं साम्प्रदायिक एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं। आगामी तीन मास तक ज़बरदस्त महँगाई से हो जाएगी। **राजनैतिक पार्टियों में परस्पर टकराव, विरोध तथा प्रतिष्ठा व साख का युद्ध होगा। केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल के लिए अनिष्टकर समय होगा अर्थात् केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल का नया सुरूप देखने को मिलेगा।**

**राहुरंगारकश्च राशि ऋक्षगतौ तदा। भयाभयं सस्यानां न च वृष्टि प्रजायते।।**

**ज्येष्ठ मास** (24 मई से 22 जून) में पाँच शुक्रवार तथा पाँच शनिवार आने, 31 मई से वृष राशि में चतुर्ग्रही योग, 1 जून से मेषस्थ मंगल पर शनि की दृष्टि रहने से देश में आशातीत महँगाई, कहीं दुर्भिक्ष, अग्निकाण्ड, कहीं छत्रभंग (शासन-परिवर्तन) हो। नई केन्द्रीय सरकार द्वारा युग बदलने वाले परिवर्तन किए जाएंगे।

**आषाढ़ मास** (23 जून से 21 जुला.) में पांच रविवार आने, मंगल-शनि के मध्य दृष्टि सम्बन्ध रहने से कहीं वर्षा की कमी तथा कहीं अत्यधिक वर्षा से बाढ़ की स्थिति बने।

**त्रयोदश दिनात्मक पक्ष**—23 जून से 5 जुला., 2024 ई. के मध्य आषाढ़ कृष्ण

पक्ष तेरह दिन का होने से कुछ राज्यों जैसे–पं.बंगाल, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय आदि में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। सीमाप्रान्तों में शत्रुकृत गतिविधियों से शान्तिभंग हो सकती है। राजनैतिक पार्टियों के प्रमुख नेताओं में किसी राजनैतिक विषय को लेकर विवाद तूल पकड़ेंगे। भारत अथवा विश्व में कहीं रेल या हवाई दुर्घटना, बाढ़, भूकम्पादि प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन हानि हो। राजनैतिक व सामाजिक वातावरण भी अशान्त व उद्वेलित रहे–

**अनेक युग साहस्रयां देव योगात्प्रजायते। त्रयोदश–दिने पक्ष: तदा संहरते जगत्।**

आगे **श्रावण मास** (22 जुला. से 19 अग.) में कुम्भराशिगत शनि वक्री रहने, बुध-शुक्र के साथ समसप्तक योग रहने से कुछ राज्यों में प्राकृतिक आपदा, अनावृष्टि से भारी जन-धनादि की हानि हो। प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त प्रजा के प्रति सरकारी उदासीनता रहे। **'मंग.-गुरु'** के कारण देश के कुछ क्षेत्रों में वर्षा की कमी रहे।

**भाद्रपद मास** (20 अगस्त से 18 सितंबर) में पांच मंगलवार घटित होने, 16 अग. से सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध रहने से किसी प्रधाननेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के संकेत हैं। देश के किसी क्षेत्र विशेष में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), अग्निकाण्ड, उपद्रव, साम्प्रदायिक दंगे, तनाव एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं। सरकार कोई अप्रत्याशित निर्णय भी ले सकती है।

**आश्विन मास** (19 सितं. से 17 अक्तू.) में पांच बृहस्पतिवार होने तथा बृहस्पतिवार की ही संक्रान्ति, 12 अक्तू. से गुरु-शुक्र मध्य समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध होने से देश के पश्चिमी भागों (जैसे–कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरातादि प्रदेशों में कहीं उपद्रव एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं। राजनैतिक वातावरण अशान्त तथा असमंजसपूर्ण रहेगा। सरकार-विपक्ष के मध्य टकराव, वैचारिक युद्ध की स्थिति रहे।

**कार्तिक मास** (18 अक्तू. से 15 नवं.) में पांच शुक्रवार आने, **'मंगल-शनि'** के मध्य षडाष्टक योग सम्बन्ध होने से क्लिष्ट रोग भय, कहीं दुर्भिक्ष, छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) हो। सरकार एवं विपक्षी पार्टियों के मध्य वाद-विवाद एवं आरोप-प्रत्यारोप एक नए शिखर तक पहुँच जाएंगे।

**मार्गशीर्ष मास** (16 नवं. से 15 दिसं.) में शनिवारी संक्रान्ति (16 नवं.), पाँच शनि तथा पांच रविवार होने, मंगल-शनि के मध्य षडाष्टक योग सम्बन्ध होने से कहीं छत्रभंग, राजनैतिक अस्थिरता एवं राजनैतिक गतिरोध पैदा होने का भय है। पैट्रोल आदि कुछ वस्तुओं में भयंकर तेजी, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में अति स्वार्थपरता के कारण साम्प्रदायिकता, कट्टरवाद का फैलाव तथा चारित्रिक मूल्यों का ह्रास होगा।

**पौष मास** (16 दिसं., 24 ई. से 13 जन., 2025 ई.) में बुध-गुरु के मध्य समसप्तक, **'मंगल-शनि'** के मध्य षडाष्टक, **'गुरु-शुक्र'** के मध्य नवपंचम दृष्टि सम्बन्ध रहने से विपरीत जलवायु एवं प्राकृतिक प्रकोपों से खड़ी फसलों को हानि पहुँचे। पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध तनावपूर्ण रहेगा। छद्म एवं वैचारिक (मनोवैज्ञानिक) युद्ध खेलने का प्रयास किया जाएगा।

# केन्द्र में भाजपा गठबन्धन सरकार के योग

**जन्मकुण्डली श्री नरेन्द्र मोदी**
**17 सितम्बर, 1950 ई., रविवार**
**$11^{\text{घं.}}$-$00^{\text{मिं.}}$ A.M, महेसाना (गुज.)**

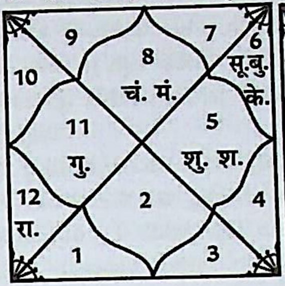

**स्थापना कुण्डली**
**भाजपा पार्टी**
**6-04-1980, 11:40 A.M**

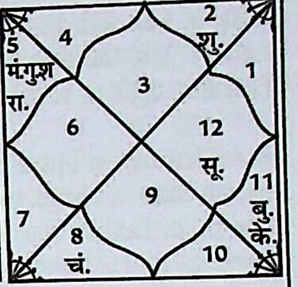

[प्रधानमन्त्री एवं लौहपुरुष श्रीनरेन्द्र मोदी जी की जन्म कुण्डली का विस्तृत विश्लेषण एवं विवेचना हम गतवर्षीय पंचांगों (वि. संवत् 2071, 2072, 2073) में विस्तारपूर्वक एवं विशेष रूप से कर चुके हैं, वहाँ अवश्य पढ़ना चाहिए।] इस वर्ष हम ग्रहगोचर अनुसार ही प्रधानमन्त्री जी की जन्म कुं. पर कुछ प्रकाश डालेंगे।

वर्तमान में तथा आगामी सम्पूर्ण वर्ष (2024 ई. में) भी पराक्रमेश एवं सुखेश शनि चतुर्थ भाव (सर्वसाधारण की प्रसन्नता का भाव) में स्वराशिगत होकर लग्न भाव (केन्द्रीय नेतृत्व, मन्त्रीमण्डल के हालात का भाव) को शत्रु दृष्टि से देखेगा। आगामी वर्ष भी मोदी जी की जन्मराशि व जन्मलग्न पर शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव भी रहेगा। फलत: आगामी वर्ष मोदी जी के लिए राजनीतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्तर पर परीक्षाप्रद समय रहने वाला है। मोदी जी की जन्मकुण्डली में चन्द्रमा नीचस्थ परन्तु केन्द्रस्थ होकर योगकारक है। मंगल लग्नेश होकर लग्न भाव में ही स्वराशिगत हो एवं भाग्येश चन्द्रमा के साथ होकर लग्न भावस्थ होने से महापुरुष योगों में से **रुचक नामक शुभ योग** बनता है। वृश्चिक लग्न में लग्नेश मंगल की महादशा/अर्न्तदशा विशेष रूप से शुभ, भाग्योदयकारक होती है। मंगल-गुरु-शुक्र-शनि ग्रह केन्द्र भावस्थ है।

जातक-पारिजात ग्रन्थानुसार यदि नवमेश, लाभेश, धनेश में से एक भी चन्द्रमा से केन्द्र में हो तो जातक को अखण्ड राज्य का पति बचावे–

**धर्मेशलाभेश धनेश्वराणामेकोऽपि शीतद्युति केन्द्रवर्ती।**
**अखण्ड साम्राज्य–पति त्वमेति।।**

एक ऐसे दौर में जब भारत तेज आर्थिक वृद्धि के पथ पर अग्रसर है, तब प्रधानमन्त्री का नेतृत्व और रणनीतिक अंतर्राष्ट्रीय सक्रियता वैश्विक स्तर पर भारत के कद को बढ़ाएगी। परन्तु 15 मार्च से 23 अप्रैल, 2024 ई. तक **मंगल-शनि** योग, तदुपरान्त 23 अप्रैल से 1 जून तक **'मंगल-राहु'** योग रहने से उक्त समयावधि में विपक्ष के आधारहीन आरोपों एवं निन्दा के कारण परेशानियों एवं उलझनों वाला रहेगा। परन्तु ता. 1 मई 2024 ई. से गुरु की दृष्टि लग्नभाव पर रहने से मोदी जी अपने कुशल नेतृत्व एवं राजनीतिक सूझ-बूझ से चुनावों का मूल विमर्श ही बदल देंगे। जनता के प्रतिबिंब के रूप में सभी पर एकछत्र नियन्त्रण रखते

हुए विपक्ष की आलोचनाओं का विकासोन्मुखी नीतियां बनाकर प्रत्युत्तर देंगे।

वर्तमान में श्रीमोदी पर 21 मई, 2023 ई. से 27 अप्रैल, 2024 ई. तक मंगल मध्ये गुरु की अन्तर्दशा शुभफली ही रहेगी। इस दशा में प्रधानमन्त्री मोदी की विदेश यात्राओं से ऐसी नई विश्व-व्यवस्था की नींव पड़ेगी जिसमें **भारत अपनी क्षमता, विचारधारा** और **नेतृत्व की बदौलत निर्णायक भूमिका में दिखाई देगा।** उद्योग-कारोबार से सम्बन्धित ऐसा महत्त्वपूर्ण परिदृश्य उभरकर सामने आएगा, जिसमें भारत दुनिया का नया मैन्यूफैक्चरिंग हब बनते हुए दिखाई देगा। सामान-नागरिक संहिता का मसौदा देश की जनता के विचारार्थ रख दिया जाएगा। इससे समान नागरिक संहिता को लेकर दुष्प्रचार करने वालों पर लगाम लगेगी। विपक्षी दलों के पास वैकल्पिक विमर्श तथा वैकल्पिक नेतृत्व का अभाव रहेगा। परन्तु 16 नवंबर, 2023 ई. से वृश्चिकस्थ मंगल पर शनि की शत्रु दृष्टि रहने से प्रधानमंत्री मोदी के लिए कुछ विपरीत परिस्थितियां बन सकती हैं। अतः **संघर्ष, परेशानियों** तथा **उलझनों के पश्चात् विधानसभा ( राजस्थान, म.प्र., ३६गढ़ ) चुनावों में किंचित सफलता ही मिल पाएगी।**

**भारतीय जनता पार्टी**—स्वतन्त्र भारत की 77वें वर्ष की कुण्डली में भाजपा की जन्मराशि वृश्चिक पर मंगल की स्वगृही दृष्टि तथा शनि की विशेष शत्रु दशम दृष्टि भी रहेगी। फलस्वरूप अनेक उथल-पुथल एवं कुछ संघर्ष के बावजूद सन् 2023-24 ई. में होने वाले कुछ राज्यों के विधानसभा चुनावों तथा **लोकसभा चुनावों में येन-केन प्रकारेण सफलता प्राप्त कर ही लेगी।** भाजपा सरकार द्वारा पिछले नौ वर्षों में तमाम उपलब्धियां किए जाने के बाद भी कुछ क्षेत्रों में उसे सत्ता विरोधी रुझान से दो-चार होना पड़ेगा। परन्तु भाजपा पार्टी तीसरी बार सत्ता का जनादेश लेने के लिए अपने सभी परंपरागत वायदों को पूरा करने के रिपोर्ट कार्ड के साथ जाएगी। अर्थात् भाजपा चुनावों से पूर्व दूसरे कार्यकाल के अंतिम चरण में एक और परंपरागत चुनावी वायदा पूरा करने का प्रयास करेगी। **फलतः लोकसभा चुनावों में तो भाजपा का परचम पूरे देश में लहराएगा। 'इंडिया'** नामक संगठन भाजपा को कठघरे में खड़ा करने की कोशिश करेगा। क्षेत्रीय दल केवल मोदी हटाओ एजेंडे के तहत एकजुट होने की कोशिश करेंगे। परन्तु एकजुट होकर चुनाव लड़ने की रूपरेखा इस बात का निर्धारण करेगी कि विपक्षी एकता का गुब्बारा हवा का दबाव सहेगा या फट जाएगा। वैचारिक एकजुटता और अन्य निष्ठाओं पर अक्सर व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाएं हावी होती प्रतीत होंगी, जिसका सीधा लाभ भाजपा को होगा।

## लोकसभा चुनाव—सन् 2024 ई.—संभावित दृश्य

आगामी नवम्बर-दिसम्बर में चार राज्यों के विधानसभा एवं सन् 2024 ई. में लोकसभा चुनावों के परिणाम आश्चर्यजनक एवं अप्रत्याशित होंगे। कुछ क्षेत्रों (राज्यों) से भारी उल्ट-फेर भरे परिणाम सामने आएंगे। संसदीय चुनाव की आहट के साथ ही भाजपा को भी सहयोगियों की आवश्यकता महसूस होने लगेगी। भाजपा या अन्य किसी पार्टी को स्वतन्त्र रूप से बहुमत या अधिक सीटें प्राप्त करना संदिग्ध रहेगा। कुछ क्षेत्रों (बिहार, बंगाल, महाराष्ट्र आदि) में भाजपा गठबन्धन (N.D.A.) तथा तथाकथित 'इण्डिया' की पार्टियों में कांटे की टक्कर होगी। परन्तु **भाजपा गठबन्धन को अपेक्षाकृत अधिक सीटों पर विजयी प्राप्ति होगी।**

विभीत्स धर्मांधता कुछ क्षेत्रों में अपना वर्चस्व कर लेगी। स्वयं अपनी कुछ दोषपूर्ण निर्णयों एवं अन्तर्कलह के कारण भाजपा सरकार को अनेक प्रान्तों में आशा के विपरीत नतीजे देखने पड़ेंगे। परन्तु फिर भी तेलंगाना, आंध्राप्रदेश, ३६गढ़, कर्नाटक आदि राज्यों में भाजपा का वोट-प्रतिशत बढ़ेगा तथा केन्द्र में एक बार पुनः भाजपा गठबन्धन (N.D.A.) सरकार के ही आने के योग हैं।

**स्वतन्त्र भारत कुं., गणतन्त्र दिवस कुण्डली तथा स्वयं मोदी जी की कुण्डली की ग्रहविवेचना के अनुसार भी श्रीनरेन्द्र मोदी जी के ही पुनः प्रधानमन्त्री बनने के प्रबल योग बन रहे हैं।** परन्तु तृतीय भाजपा गठबन्धन सरकार (N.D.A.) का रूप, रंग गत भाजपा प्रणीत सरकारों से भिन्न ही होगा।

## कांग्रेस पार्टी तथा 'इंडिया' नामक महागठबन्धन—एक विवेचना

कांग्रेस पार्टी की स्थापना कुण्डली में धनु लग्न उदित है। लग्नेश गुरु वर्षारम्भ (सन् 2024 ई.) से 30 अप्रैल, 2024 ई. तक पंचम भाव (योजना, प्रशासनिक बुद्धि का भाव) में मित्र राशिगत होकर लग्न भाव को स्वगृही दृष्टि से देखेगा। शनि की भी वर्षभर व्यय भाव पर शत्रु दृष्टि रहेगी। अतः ग्रहगोचर अनुसार तो अप्रैल, 2024 ई. तक चुनावों में शुभ सफलता प्राप्ति के ही योग हैं। अर्थात् कांग्रेस पार्टी को आगामी लोकसभा चुनावों से पहिले तक बेहतर परिणाम मिलने की सम्भावना है।

**राजस्थान, ३६गढ़ में सत्ता के खिलाफ जनाक्रोश के बावजूद कांग्रेस पार्टी के वोट-प्रतिशत में विशेष कमी नहीं आएगी।** परन्तु पुनः सत्तारूढ़ होना भी संदिग्ध लग रहा है। कांग्रेस को पुराने दिन वापिस लाने के लिए कांग्रेस कार्यकाल में हुए जन-हितकारी कार्यों को आम जन तक पहुँचाना बहुत ज़रूरी होगा। पुनः कांग्रेस को सहयोगी विपक्षी दलों के वजूद को भी महत्त्व देना होगा। लोकसभा चुनावों की घोषणा होने पर क्षेत्रीय दलों को कांग्रेस के लिए जगह खाली करने के लिए कहा जाएगा, परन्तु कोई जगह देने की बात पर स्वीकार्य नहीं होगा। क्षेत्रीय दल कांग्रेस को जनाधार वापिस पाते नहीं देखना चाहेंगे, क्योंकि उनका भविष्य उसकी कमज़ोरी पर टिका है। **'इंडिया' नामक महागठबन्धन का हिस्सा बनकर कांग्रेस नए राजनीतिक दुष्चक्र में जानबूझ कर फंसती दिखेगी। तात्कालिक आंशिक लाभ हेतु भविष्य को अंधकारमय कर लेगी।**

**कुण्डली कांग्रेस पार्टी**
**26-11-1969**
**9:57 A:M, बैंगलूरू**

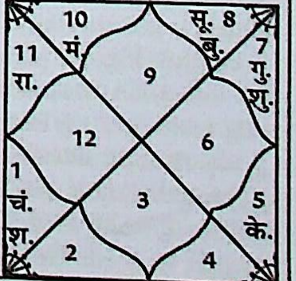

प्रत्येक पार्टी द्वारा अलग-अलग बयान तथा स्वर बदलने से महागठबन्धन की परिकल्पना एवं यथार्थ कुछ राज्यों तक ही सीमित होगा। यद्यपि नवम्बर-दिसम्बर, 2023 ई. में ३६गढ़, राजस्थान, म.प्र., मिज़ोरम में कांग्रेस की चुनावी उपलब्धियों को देखते हुए कुछ सहयोगी एवं नए राजनीतिक दल कांग्रेस के साथ आने के लिए तत्पर दिखेंगे।

**कुण्डली श्रीराहुल गाँधी**
**19-06-1970 ई., 5:05 A.M.**

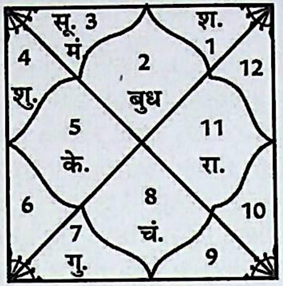

**श्री राहुल गाँधी जी की जन्म कुण्डली** में वृष लग्न उदित है। तथा जन्मराशि पर शनि की ढैय्या का प्रभाव वर्षभर (2024 ई.) रहेगा। 18-09-2022 से 18-11-2023 तक मंगल मध्ये शुक्र की अर्न्तदशा विशेष शुभ फलदायी नहीं रहेगी क्योंकि राहुल जी की जन्मकुण्डली में शुक्र शत्रु राशिगत है। शनि की ढैय्या का प्रभाव भी अशुभ रहेगा क्योंकि जन्म कुं. में शनि नीचराशिगत तथा नवांश कुं. में शत्रु (वृश्चिकस्थ) राशिगत है। फलतः ज्योतिष की दृष्टि से अभी इनका उच्च पद पर प्रतिष्ठित होना संदिग्ध ही है। ता. 1 मई, 2024 ई. से गुरु इनके लग्न में आकर (शत्रुराशिगत) संचार करेगा, जिससे इनकी पार्टी के कई वरिष्ठ सदस्य पार्टी छोड़कर इनसे शत्रुवत् व्यवहार करना प्रारम्भ कर देंगे। वस्तुतः देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस राजनीति और रणनीति के इस संक्रमणकाल में सबसे ज़्यादा संक्रमित होगी। यद्यपि कांग्रेस अपनी संयम-सकारात्मकता की राजनीतिक पूंजी के बल पर कुछ राज्यों में सत्ता प्राप्त करने में अवश्य सफल होगी, परन्तु लोकसभा के चुनावी-युद्ध में न केवल राहुल गाँधी के चातुर्य की बल्कि कांग्रेस की संगठनात्मक शक्ति की भी ज़रूरत होगी।

ग्रहयोगानुसार महागठबन्धन में निजी आकांक्षाएं प्रबल एवं भिन्न-भिन्न स्वर होने से यह रणनीतिक गठजोड़ अधिक देर तक सफल नहीं हो पाएगा तथा क्षेत्रीय दलों का यह गठजोड़ अपने सीमित क्षेत्र में ही कामयाब दिखेगा। जिससे सत्तारूढ़ भाजपा गठबन्धन अन्य दलों का समर्थन येन-केन प्रकारेण प्राप्त कर लेगा।

## भारत के कुछ मुख्य प्रान्त

**(1) हिमाचल प्रदेश**–इसकी **प्रभावराशि मीन** तथा **नामराशि कर्क** है। 77वें स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में नामराशि दशम भाव में सूर्य-चंद्र-शुक्र ग्रहों द्वारा अधीष्ठित है। इसकी प्रभावराशि पर शनि-साढ़ेसाती तथा नामराशि कर्क पर शनि की ढैय्या का प्रभाव रहेगा। जबकि गणतन्त्र दिवस कुं. इसकी प्रभावराशि राहु ग्रह द्वारा आक्रान्त है। अतएव आगामी वर्ष प्रदेश को प्राकृतिक आपदाओं जैसे-अतिवृष्टि, भूस्खलन, बाढ़ आदि प्रकोपों के कारण कृषि, जन-धनादि की भारी क्षति होने के संकेत हैं। विपक्ष (भाजपा) राज्य में बेरोज़गार युवाओं को रोज़गार दे पाने में विफलता, कानून व्यवस्था की चरमराई व्यवस्था, शासनतंत्र के हर स्तर पर स्थानांतरणों का सिलसिला न थमना, नशीले पदार्थों का प्रचलन, अवैध खनन का धंधा, बदहाल हुई सड़कों, किसानों-बागवानों को हुए नुक्सान की भरपाई, केन्द्र सरकार से तथा साथ लगते राज्यों से प्रदेश के हक हासिल कर पाने में श्री सुखविन्दर सिंह की विफलता जैसे अनेक मुद्दे उठाए जाएंगे। फिर भी हिमाचल आपदा के अन्धेरे से गुज़र देश को रोशन करता रहेगा। **आगामी वर्ष लोकसभा चुनावों में दोनों मुख्य पार्टियों में कांटे की टक्कर के बाद भाजपा को अल्पान्तर से ही सफलता प्राप्ति के योग हैं।**

**(2) पंजाब**–इसकी प्रभावराशि मीन तथा नामराशि कन्या है। 77वें स्वतन्त्र दिवस कुण्डली में मीन राशि षष्ठस्थ भाव में है तथा **नाम राशि कन्या** द्वादश भाव में मुंथा युक्त है। गणतन्त्र दिवस कुं. में प्रभावराशि एवं नाम राशि पर क्रमशः राहु-केतु अधीष्ठित हैं। गोचर-ग्रहस्थिति अनुसार वर्तमान '**आप**' सरकार को विशेष आर्थिक समस्याओं व चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। लोकसभा चुनावों से पूर्व यद्यपि 'भगवन्त मान' सरकार (आप) कई नए प्रोजैक्टों तथा लोकलुभावन योजनाओं की घोषणा करेगी। परन्तु बैमौसमी वर्षा तथा प्रतिकूल जलवायु-वातावरण के कारण खड़ी फसलों को हानि होगी। जिस कारण पंजाब की खेती बदलाव की राह पर होगी। आर्थिक संकट के कारण जनता तथा औद्योगिक क्षेत्र से विरोध का सामना करना पड़ेगा। राज्य के मंत्रीमण्डल में अन्तर्विरोध, टैक्सों, बिजली (ऊर्जा) समस्या, ड्रग्ज़, कृषि-ऋण के कारण किसानों द्वारा आत्महत्याएँ, लूट आदि समस्याओं के कारण प्रजा में गहन असन्तोष रहे। आगामी लोकसभा चुनावों से पूर्व भाजपा-अकाली-दल के गठबन्धन की प्रबल सम्भावनाएं हैं। परन्तु दोनों पार्टियों को विशेष लाभ नहीं होगा।

**(3) जम्मू-कश्मीर–प्रभावराशि तुला** तथा **नामराशि मकर** है। 77वें स्वतन्त्रता दिवस कुं. में तुला राशि लग्न ही उदित हुआ है। ता. 30 अप्रैल, 2024 ई. तक लग्नस्थ केतु पर गुरु की अशुभ दृष्टि, तदुपरान्त 1 मई, 2024 ई. से गुरु की नीच दृष्टि नामराशि मकर पर रहेगी। जिस कारण इस वर्ष एवं आगामी वर्ष भी पेचीदा परिस्थितियों के मध्य जम्मू-कश्मीर का राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण विक्षुब्ध एवं अशान्त रहेगा। पाक समर्थित आतंकवादियों द्वारा घुसपैठ एवं हिंसक घटनाओं में वृद्धि होना तथा नवम्बर, 2023 ई. के बाद आने वाली पाकिस्तान की नवीन सरकार द्वारा कश्मीर समस्या को पुनः बार-बार अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर उठाने का प्रयास तथा आतंकियों द्वारा हिन्दु समाज की लक्षित हत्याएं आदि विकट समस्याएं केन्द्रीय सत्तारूढ़ सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण रहेंगी। लोकसभा चुनावों में श्रीफारुख अब्दुल्ला के नैशनल फ्रंट गठबन्धन को अपेक्षाकृत यथेष्ठ सफलता प्राप्त होगी। जम्मू क्षेत्र में भाजपा तथा गुलाम नबी आज़ाद की पार्टी को सफलता प्राप्त हो। पी.डी.पी. का प्रभाव कमज़ोर होगा।

**(4) हरियाणा**–इस प्रान्त की **नामराशि मिथुन** तथा **प्रभावराशि मीन** है। 77वें स्वतन्त्रता दिवस कुण्डली में नामराशि भाग्यस्थान में तथा प्रभावराशि षष्ठस्थ है। गणतन्त्र दिवस कुं. में मीन राशि पर राहु अधीष्ठित है। सत्तारुढ़ भाजपा गठबन्धन सरकार द्वारा लोकसभा चुनावों से पूर्व जनता को आकर्षित करने हेतु अनेक विकासोन्मुखी योजनाओं की घोषणाएं की जाएंगी। प्रभावराशि मीन पर शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव रहने से कुछ क्षेत्रों में साम्प्रदायिक तनाव व झड़पों के बाद विभीत्स धर्मांधता वर्चस्व कर लेगी। कुछ क्षेत्रों में कांग्रेस का प्रभाव बढ़ेगा। सत्तारूढ़ भाजपा गठबन्धन में सामूहिक कार्यशैली का अभाव रहेगा। *आगामी लोकसभा चुनावों में भाजपा तथा इनैलो को मध्यम रुपेण सफलता प्राप्त हो जाएगी।*

**(5) उत्तर-प्रदेश**–राज्य की **प्रभावराशि धनु** तथा **नामराशि वृष** है। 75वें गणतन्त्र दिवस कुण्डली (27-01-2024 ई.) में नामराशि वृष पर मुंथा की स्थिति तथा मुंथेश शुक्र एकादश भाव में शत्रुराशिस्थ व प्रभावराशि धनु में स्थित है। धनु राशि मंगल-बुध-शुक्र द्वारा अधीष्ठित है। फलस्वरूप मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ वोटों को आकर्षित करने वाले एक करिश्माई नेता बने रहेंगे। ग्रहस्थिति अनुसार आगामी वर्ष लोकसभा चुनावों से पूर्व प्रदेश में विभिन्न दलों के मध्य चुनावी गठजोड़ होंगे। सपा-कांग्रेस तथा अन्य दलों के मध्य बने महागठबन्धन के कारण लोकसभा चुनावों में सत्तारूढ़ भाजपा सरकार को कुछ क्षेत्रों में हानि होगी, परन्तु कुछ क्षेत्रों में हानि की बजाए लाभ होगा तथा **चुनावों के रण में प्रचण्ड विजय प्राप्त कर 2014 के रिकार्ड को तोड़कर भी अधिक सांसद संसद् में भेजेगी।** अनेक अवरोधों के बावजूद नई क्रान्तिकारी एवं प्रगतिपद योजनाओं का शिलान्यास किया जाएगा, परन्तु श्रीराम का भव्य मन्दिर के उद्घाटन के बाद भाजपा की लोकप्रियता में विशेष वृद्धि होगी।

**(6) दिल्ली**–इसकी **नामराशि मीन** 75वें गणतन्त्र दिवस कुं. (21-01-2024 ई.) में द्वितीय भाव में राहु द्वारा तथा **प्रभावराशि मकर** द्वादश (व्यय) भाव में सूर्य द्वारा अधीष्ठित है। दिल्ली राज्य एवं शहर आरोप-प्रत्यारोप की दूषित एवं विषैली राजनीति का केन्द्र बन जाएगा। केन्द्र एवं राज्य सरकार में टकराव की राजनीति उपहास का कारण बन जाएगी। **'आप'** सरकार के लोकलुभावन नारों और नीतियों की कीमत अंततः जनता को चुकानी पड़ेगी। लोकसभा चुनावों में गठबन्धन के कारण भाजपा को 1-2 सीटों का मामूली नुकसान होगा।

**(7) राजस्थान**–प्रभाव राशि **कर्क** तथा नाम राशि **तुला** है। 77वें स्वतन्त्र भारत की कुण्डली (15-08-2023 ई.) में तुला राशि केन्द्र में केतु द्वारा अधीष्ठित है। तुला राशि पर केतु की स्थिति 30 अक्तू., 2023 ई. तक रहेगी। परन्तु प्रभावराशि कर्क पर शनि की ढैय्या का प्रभाव इस वर्ष के साथ-साथ अगले वर्षान्त तक रहेगा। फलतः सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार को कठिन एवं विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। गतवर्ष के पंचांग में भी लिखा जा चुका है कि आगामी विधानसभा चुनावों में भाजपा की स्थिति सुदृढ़ होगी। यद्यपि भाजपा-कांग्रेस में कांटे की टक्कर दृष्टिगोचर होगी। अन्तर्कलह के कारण भाजपा अपेक्षित सीटें प्राप्त नहीं कर पाएगी। यद्यपि लोकसभा चुनावों में भाजपा की स्थिति इस प्रदेश में सुदृढ़ रहेगी।

उपरोक्त भविष्यवाणियां देश, राज्य, स्थानादि की जन्म कुण्डलियों में ग्रहस्थिति, दशा एवं गोचर ग्रहों के प्रभाव व संकेतों को आधार मानकर अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार लिपिबद्ध की गई हैं। वास्तव में सर्वश्रेष्ठ भविष्यवेत्ता एवं सर्वज्ञ तो स्वयं ईश्वर ही है–

**"फलानि ग्रह संचारेण सूचयन्ति मनीषिणः। को वक्तः तारतम्यस्य वेधसं विना।"**

**लेख लिपिबद्धम्–**

**अधि. श्रावण पूर्णिमा,**
**1 अगस्त, सन् 2023 ई., मंगलवार**

**शुभ चिन्तकः**
**पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी**
**सुपुत्र श्रद्धेय स्व. पं. पन्ना लाल ज्यो.,**
**अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पंजाब)**
**फोन–94172-91325**

## वि. संवत् २०८१ में त्रयोदश (13) दिनात्मक पक्ष का फल

## ('विश्वघस्र पक्ष' का फल)

विक्रमी संवत् २०८१ में तिथियों की प्रत्यक्ष सूक्ष्म गणना के कारण आषाढ़ कृष्ण पक्ष (23 जून से 5 जुलाई, 2024 ई.) में तेरह दिन का पक्ष घटित हो रहा है। इसका फल शास्त्रों में अशुभ एवं अनिष्टकारी बताया गया है।

सामान्यतः सूर्य-चन्द्रमा की स्पष्ट गणित प्रक्रिया के बाद प्रत्येक भारतीय पंचांग में कृष्ण अथवा शुक्ल पक्ष के अन्तर्गत प्रतिवर्ष पक्ष के दिन 14, 15 अथवा 16 दिन घटित हो जाते हैं अर्थात् पक्ष में कोई तिथि क्षय हो जाने की स्थिति में 14, तिथि की वृद्धि अर्थात् 24 घण्टे से अधिक व्याप्ति-एक वार से दूसरे वार के आरम्भ से आगे तक चले गए, तो दो दिन व्याप्ति होने से कारण पक्ष में 16 दिन बन जाते हैं तथा यदि किसी तिथि का क्षय या वृद्धि न हुई हो तो पक्ष में 15 दिन ही होते हैं। कई बार सूर्य-चन्द्र की स्पष्ट गणितप्रक्रिया के कारण किसी पक्ष में दो बार तिथि का क्षय हो जाने से 13 दिन का पक्ष भी आ जाता है। इसे **'विश्वघस्र पक्ष'** भी कहते हैं। महाभारत में भी तेरह दिन के पक्ष के अशुभत्व के सम्बन्ध में वर्णन मिलता है। अन्य शास्त्रकारों ने भी त्रयोदश दिनात्मक पक्ष के अशुभत्व के विषय में अनेकत्र प्रमाण मिलते हैं। यथा–

**'अनेकयुग साहस्त्रयाद् दैवयोगात् प्रजायते। त्रयोदशदिने पक्षः तदा संहरते जगत्॥'** (मेघ महोदय)

अर्थात् कई एक युगों में प्रजा का नाश करने के निमित्त तेरह दिन का पक्ष आता है अर्थात् जिस पक्ष में तेरह दिन हों, वह पक्ष लोगों में क्लिष्ट रोग उत्पादक, महँगाई, विग्रह, उपद्रव एवं हिंसा आदि अशुभ फलकारक होता है। विश्व में किसी देश का विघटन अर्थात् भूगोल में परिवर्तन होता है। समाज में सर्वत्र अशान्ति का वातावरण फैलता है। अन्यत्र भी इस सम्बन्ध में अशुभ फल कहे गए हैं–

**'यदा च जायते पक्षस्त्रयोदश दिनात्मकः। भवेल्लोक क्षयो–घोरो रुण्डमुण्डमालायुता मही॥'**
**'त्रयोदशदिनः पक्षो भवेद् वर्षाष्टकान्तरे। तदा नगरभंगः स्यात् छत्रभंगो महर्घता॥'**

इस त्रयोदश दिनात्मक पक्ष के प्रभावस्वरूप विश्व एवं भारत में राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियां अस्थिर एवं अशान्तिपूर्ण होंगी। राजनैतिक पार्टियों के मध्य विग्रह, टकराव एवं बिखराव पैदा होंगे। कहीं तोड़-फोड़, हिंसा, विस्फोटक घटनाएँ एवं छत्रभंग की आशंका होगी। कहीं भयंकर युद्ध का वातावरण बनने से अशान्ति बने तथा कहीं भूकम्प, दुर्भिक्ष, भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जन-धन हानि के योग बनते हैं।

तेरह-दिन के पक्ष में शास्त्रों में विवाह, मुण्डन, गृह-प्रवेश, उपनयन आदि शुभ कार्यों का निषेध माना गया है। ज्योतिर्निबन्धानुसार–

**'उपनयनं परिणयनं वेश्मारम्भादि कर्माणि। यात्रां द्विक्षयपक्षे कुर्यात् न जिजीविषु पुरुषः॥'**

उपरोक्त शास्त्र-वाक्य को आधार मानकर परम्परावश कुछ विद्वान इस **'विश्वघस्त्र-पक्ष'** में शुभ कार्यों का निषेध मानते आ रहे हैं, परन्तु मुहूर्त्त चिन्तामणि में कश्यप मुनि के मतानुसार केन्द्र/त्रिकोण में शुभ ग्रहस्थिति होने पर इस विश्वघस्त्र पक्ष का दोष समाप्त हो जाता है–

**'अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्ष–सम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥'**

परन्तु इस वर्ष त्रयोदश दिनात्मक पक्ष (आषाढ़ कृष्ण पक्ष) के समय शुक्र अस्त है। अतएव इस पक्ष में कोई नवीन शुभ मुहूर्त्त नहीं होगा।

# सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त (घं. मिं.) (सन् 2024-25 ई.)

## सूर्य राशि प्रवेश

| ता. मास | राशि | घं. मिं. | ता. मास | राशि | घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|
| 14 जन. | मकर | 26:43 | 16 सितं. | कन्या | 19:43 |
| 13 फर. | कुम्भ | 15:43 | 17 अक्तू. | तुला | 7:42 |
| 14 मार्च | मीन | 12:36 | 16 नवं. | वृश्चिक | 7:32 |
| 13 अप्रै. | मेष | 21:04 | 15 दिसं. | धनु | 22:10 |
| 14 मई | वृष | 17:54 | 14 जन.(25) | मकर | 8:55 |
| 14 जून | मिथुन | 24:27 | 12 फर. | कुम्भ | 21:56 |
| 16 जुला. | कर्क | 11:19 | 14 मार्च | मीन | 18:50 |
| 16 अग. | सिंह | 19:44 | | | |

## मंगल राशि प्रवेश (संवतारम्भ में कुम्भ में)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 23 अप्रै. | मीन | 8:38 | 20 अक्तू. | कर्क | 14:22 |
| 1 जून | मेष | 15:37 | 6 दिसं | वक्री | 29:01 |
| 12 जुला. | वृष | 18:58 | 21 जन.(25) | व. मिथुन | 10:05 |
| 26 अग. | मिथुन | 15:25 | 24 फर. | मार्गी | 7:32 |

## बुध राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मेष में वक्री)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 9 अप्रै. | व. मीन | 21:30 | 4 सितं. | सिंह | 11:22 |
| 25 अप्रै. | मार्गी | 18:24 | 23 सितं. | कन्या | 10:10 |
| 10 मई | मेष | 18:43 | 10 अक्तू | तुला | 11:19 |
| 31 मई | वृष | 12:12 | 29 अक्तू | वृश्चिक | 22:39 |
| 14 जून | मिथुन | 23:05 | 26 नवं. | वक्री | 8:12 |
| 29 जून | कर्क | 12:26 | 15 दिसं. | मार्गी | 26:26 |
| 19 जुला | सिंह | 20:46 | 4 जन.(25) | धनु | 12:02 |
| 5 अग. | वक्री | 10:26 | 24 जन. | मकर | 17:38 |
| 22 अग. | व. कर्क | 6:38 | 11 फर. | कुम्भ | 12:53 |
| 28 अग. | मार्गी | 26:42 | 27 फर. | मीन | 23:45 |
| | | | 15 मार्च | वक्री | 12:16 |

## गुरु राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मेष में)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 मई | वृष | 12:57 | 4 फर.(25) | मार्गी | 15:10 |
| 9 अक्तू. | वक्री | 12:30 | ----- | --- | ---- |

## शुक्र राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मीन में)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 24 अप्रै. | मेष | 23:58 | 31 जुला | सिंह | 14:33 |
| 19 मई | वृष | 8:42 | 24 अग. | कन्या | 25:16 |
| 12 जून | मिथुन | 18:29 | 18 सितं. | तुला | 13:56 |
| 6 जुला | कर्क | 28:31 | 13 अक्तू | वृश्चिक | 6:00 |

## —शुक्र राशि प्रवेश—

| | | |
|---|---|---|
| 6 नवं. | धनु | 27:31 |
| 2 दिसं. | मकर | 11:57 |
| 28 दिसं. | कुम्भ | 23:39 |
| 28 जन.(25) | मीन | 7:02 |
| 2 मार्च | वक्री | 6:06 |

## —शनि राशि प्रवेश—

(संवतारम्भ में कुम्भ में)

सारा संवत् कुम्भ राशि में ही रहेगा।

| | | |
|---|---|---|
| 29 जून | वक्री | 24:29 |
| 15 नवं. | मार्गी | 19:53 |

संवतान्त में 29 मार्च, 2025 ई. को मीन राशि में प्रवेश करेगा।

| | | |
|---|---|---|
| 29मार्च(25) | मीन | 21:44 |

## मध्यम राहु राशि प्रवेश

(संवतारम्भ में मीन में)

पूरा संवत् मीन राशि में ही संचार करेगा।

## मध्यम केतु राशि प्रवेश

(संवतारम्भ में तुला में)

सारा संवत् तुला राशि में ही संचार करेगा।

## यूरेनस

| | | |
|---|---|---|
| 1 जून | वृष | 15:46 |
| 1 सितं. | वक्री | 20:50 |
| 13 दिसं. | व. मेष | 11:10 |
| 30जन.(25) | मार्गी | 21:51 |
| 19 मार्च | वृष | 5:39 |

## नैपच्यून

सारा संवत् मीन राशि में संचार करेगा।

## प्लूटो

सारा संवत् मकर राशि में रहेगा।

## ग्रहों का वक्री-मार्गी

### मंगल

| | | |
|---|---|---|
| 6 दिसं. | वक्री | 29:01 |
| 24 फर.(25) | मार्गी | 7:32 |

### बुध

| | | |
|---|---|---|
| 2 अप्रै. | वक्री | 3:45 |
| 25 अप्रै. | मार्गी | 18:24 |
| 5 अग. | वक्री | 10:26 |
| 28 अग. | मार्गी | 26:42 |
| 26 नवं. | वक्री | 8:12 |
| 15 दिसं. | मार्गी | 26:26 |
| 15 मार्च(25) | वक्री | 12:16 |
| 7 अप्रै. | मार्गी | 16:38 |

### गुरु

| | | |
|---|---|---|
| 9 अक्तू. | वक्री | 12:30 |
| 4 फर.(25) | मार्गी | 15:10 |

### शुक्र

| | | |
|---|---|---|
| 2 मार्च(25) | वक्री | 6:06 |

### शनि

| | | |
|---|---|---|
| 29 जून | वक्री | 24:29 |
| 15 नवं. | मार्गी | 19:53 |

### यूरेनस

| | | |
|---|---|---|
| 1 सितं. | वक्री | 20:50 |
| 30 जन.(25) | मार्गी | 21:51 |

### नैपच्यून

| | | |
|---|---|---|
| 2 जुला. | वक्री | 16:10 |
| 8 दिसं. | मार्गी | 5:17 |

### प्लूटो

| | | |
|---|---|---|
| 2 मई | वक्री | 23:05 |
| 12 अक्तू. | मार्गी | 5:57 |

## ग्रहों का उदय-अस्त (वि. संवत् २०८१)

### मंगल

सारा संवत् उदित रहेगा।

### बुध

(संवतारम्भ में व. पश्चिम में अस्त)

| | | |
|---|---|---|
| 19 अप्रै. | व. पूर्वोदय | 19:02 |
| 3 जून | पूर्व में अस्त | 9:02 |
| 25 जून | पश्चिम में उदय | 29:05 |
| 12 अग. | व. पश्चिम में अस्त | 6:12 |
| 26 अग. | व. पूर्व में उदय | 18:58 |
| 15 सितं. | पूर्व में अस्त | 18:39 |
| 20 अक्तू | पश्चिम में उदय | 28:12 |
| 30 नवं. | व. पश्चिम में अस्त | 17:39 |
| 11 दिसं. | व. पूर्व में उदय | 23:11 |
| 20जन.(25) | पूर्व में अस्त | 5:59 |
| 25 फर. | पश्चिम में उदय | 18:15 |
| 17 मार्च | व. पश्चिम में अस्त | 18:30 |
| 31 मार्च | व. पूर्व में उदय | 20:48 |

### गुरु

| | | |
|---|---|---|
| 6 मई | पश्चिम में अस्त | 19:06 |
| 2 जून | पूर्व में उदय | 24:40 |

### शुक्र

| | | |
|---|---|---|
| 24 अप्रै. | पूर्व में अस्त | 5:56 |
| 7 जुला | पश्चिम में उदय | 7:02 |
| 19मार्च(25) | व.पश्चि. में अस्त | 17:51 |
| 25मार्च(25) | व.पूर्वमें उदय | 18:42 |

### शनि

| | | |
|---|---|---|
| 23 फर.(25) | पश्चिम में अस्त | 18:18 |
| 29 मार्च (25) | पूर्व में उदय | 22:37 |

ता. 2 से 30 मई, 2024 ई. के मध्य गुरु वृष राशि में अतिचारी गति से संचार करेगा।

## ग्रहों की मध्यम, शीघ्र, अतिचारी गति

| ग्रह | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|
| मध्यम | 31′-26″ | 59′-08″ | 5′-00″ | 59′-08″ | 2′-00″ |
| शीघ्र | 39′-01″ | 104′-46″ | 12′-22″ | 73′-43″ | 5′-27″ |
| परमशीघ्र | 46′-11″ | 113′-32″ | 14′-04″ | 75′-42″ | 7′-45″ |

**ध्यान दें !**—मध्यम गति से कम गति हो तो मन्द गति, शीघ्र गति से कम हो तो मध्यम गति, परमशीघ्र गति से कम हो तो शीघ्र गति एवं परमशीघ्र गति से अधिक गति हो तो ग्रह '**अतिचारी**' कहलाता है। यहाँ '**गति**' से अभिप्राय ग्रह की दैनिक गति से है। 24 घण्टे में ग्रह जितना आगे या पीछे चलता है, उसे ग्रह की '***दैनिक गति***' कहते हैं।

# ▲▼▲ ग्रहों का नक्षत्र–चरण प्रवेश—संवत् २०८१ वि. (सन् 2024–25 ई.) ▲▼▲

## सूर्य नक्षत्र प्रवेश (संवतारम्भ में रेवती (3) में)

| 2024 ई. | नक्षत्र चरण | घं. मिं. |
|---|---|---|
| 10 अप्रै. | रेव.(4) | 11:31 |
| 13 अप्रै. | अश्वि.1 मेष | 21:04 |
| 17 अप्रै. | अश्वि.(2) | 6:47 |
| 20 अप्रै. | अश्वि.(3) | 16:41 |
| 23 अप्रै. | अश्वि.(4) | 26:44 |
| 27 अप्रै. | भर.(1) | 12:56 |
| 30 अप्रै. | भर.(2) | 23:17 |
| 4 मई | भर.(3) | 9:45 |
| 7 मई | भर.(4) | 20:19 |
| 11 मई | कृति.(1) | 7:02 |
| 14 मई | कृति.2 वृष | 17:54 |
| 18 मई | कृति.(3) | 4:53 |
| 21 मई | कृति.(4) | 16:05 |
| 24 मई | रोहि.(1) | 27:16 |
| 28 मई | रोहि.(2) | 14:38 |
| 31 मई | रोहि.(3) | 26:02 |
| 4 जून | रोहि.(4) | 13:32 |
| 7 जून | मृग.(1) | 25:05 |
| 11 जून | मृग.(2) | 12:44 |
| 14 जून | मृग.3 मिथुन | 24:27 |
| 18 जून | मृग.(4) | 12:15 |
| 21 जून | आर्द्रा(1) | 24:06 |
| 25 जून | आर्द्रा(2) | 11:59 |
| 28 जून | आर्द्रा(3) | 23:53 |
| 2 जुला | आर्द्रा(4) | 11:47 |
| 5 जुला | पुन.(1) | 23:40 |
| 9 जुला | पुन.(2) | 11:33 |
| 12 जुला | पुन.(3) | 23:25 |
| 16 जुला | पुन.4कर्क | 11:19 |
| 19 जुला | पुष्य(1) | 23:10 |
| 23 जुला | पुष्य(2) | 11:01 |
| 26 जुला | पुष्य(3) | 22:48 |
| 30 जुला | पुष्य(4) | 10:30 |
| 2 अग. | आश्ले.(1) | 22:06 |
| 6 अग. | आश्ले.(2) | 9:37 |
| 9 अग. | आश्ले.(3) | 21:04 |
| 13 अग. | आश्ले.(4) | 8:26 |
| 16 अग. | मघा 1 सिंह | 19:44 |
| 20 अग. | मघा(2) | 6:55 |
| 23 अग. | मघा(3) | 18:01 |
| 27 अग. | मघा(4) | 4:59 |
| 30 अग. | पू.फा.(1) | 15:46 |
| 2 सितं. | पू.फा.(2) | 26:25 |
| 6 सितं. | पू.फा.(3) | 12:55 |
| 9 सितं. | पू.फा.(4) | 23:19 |
| 13 सितं. | उ.फा.(1) | 9:35 |
| 16 सितं. | उ.फा.2कन्या | 19:43 |
| 20 सितं. | उ.फा.(3) | 5:42 |
| 23 सितं. | उ.फा.(4) | 15:31 |
| 26 सितं. | हस्त(1) | 25:10 |
| 30 सितं. | हस्त(2) | 10:38 |
| 3 अक्तू | हस्त(3) | 19:56 |
| 7 अक्तू | हस्त(4) | 5:05 |
| 10 अक्तू | चित्रा(1) | 14:06 |
| 13 अक्तू | चित्रा(2) | 22:58 |
| 17 अक्तू | चित्रा(3) तुला | 7:42 |
| 20 अक्तू | चित्रा(4) | 16:16 |
| 23 अक्तू | स्वा.(1) | 24:42 |
| 27 अक्तू | स्वा.(2) | 9:09 |
| 30 अक्तू | स्वा.(3) | 17:02 |
| 2 नवं. | स्वा.(4) | 24:58 |
| 6 नवं. | विशा.(1) | 8:46 |
| 9 नवं. | विशा.(2) | 16:27 |
| 12 नवं. | विशा.(3) | 24:03 |
| 16 नवं. | विशा.4 वृश्चि. | 7:32 |
| 19 नवं. | अनु.(1) | 14:53 |
| 22 नवं. | अनु.(2) | 22:07 |
| 26 नवं. | अनु.(3) | 5:14 |
| 29 नवं. | अनु.(4) | 12:14 |
| 2 दिसं. | ज्ये.(1) | 19:08 |
| 5 दिसं. | ज्ये.(2) | 25:59 |
| 9 दिसं. | ज्ये.(3) | 8:45 |
| 12 दिसं. | ज्ये.(4) | 15:29 |
| 15 दिसं. | मूल 1 धनु | 22:10 |
| 19 दिसं. | मूल (2) | 4:49 |
| 22 दिसं. | मूल (3) | 11:24 |
| 25 दिसं. | मूल (4) | 17:55 |
| 28 दिसं. | पू.षा.(1) | 24:25 |
| (सन् 2025 ई.) | | |
| 1 जन. | पू.षा.(2) | 6:53 |
| 4 जन. | पू.षा.(3) | 13:21 |
| 7 जन. | पू.षा.(4) | 19:51 |
| 10 जन. | उ.षा.(1) | 26:21 |
| 14 जन. | उ.षा.2 मकर | 8:55 |
| 17 जन. | उ.षा.(3) | 15:30 |
| 20 जन. | उ.षा.(4) | 22:06 |
| 24 जन. | श्रव.(1) | 4:44 |
| 27 जन. | श्रव.(2) | 11:25 |
| 30 जन. | श्रव.(3) | 18:08 |
| 2 फर. | श्रव.(4) | 24:56 |
| 6 फर. | धनि.(1) | 7:49 |
| 9 फर. | धनि.(2) | 14:49 |
| 12 फर. | धनि.3 कुम्भ | 21:56 |
| 16 फर. | धनि.(4) | 5:08 |
| 19 फर. | शत.(1) | 12:26 |
| 22 फर. | शत.(2) | 19:48 |
| 25 फर. | शत.(3) | 27:19 |
| 1 मार्च | शत.(4) | 10:56 |
| 4 मार्च | पू.भा.(1) | 18:40 |
| 7 मार्च | पू.भा.(2) | 26:34 |
| 11 मार्च | पू.भा.(3) | 10:37 |
| 14 मार्च | पू.भा.4मीन | 18:50 |
| 17 मार्च | उ.भा.(1) | 27:11 |
| 21 मार्च | उ.भा.(2) | 11:41 |
| 24 मार्च | उ.भा.(3) | 20:18 |
| 28 मार्च | उ.भा.(4) | 5:04 |
| 31 मार्च | रेव.(1) | 13:59 |

## मंगल नक्षत्र प्रवेश

[संवतारम्भ में शत. 4 में]

| 2024 ई. | नक्षत्र चरण | घं.मिं. |
|---|---|---|
| 10 अप्रै. | पू.भा.(1) | 11:08 |
| 14 अप्रै. | पू.भा.(2) | 18:08 |
| 18 अप्रै. | पू.भा.(3) | 25:18 |
| 23 अप्रै. | पू.भा.4 मीन | 8:38 |
| 27 अप्रै. | उ.भा.(1) | 16:10 |
| 1 मई | उ.भा.(2) | 23:54 |
| 6 मई | उ.भा.(3) | 7:53 |
| 10 मई | उ.भा.(4) | 16:10 |
| 14 मई | रेव.(1) | 24:50 |
| 19 मई | रेव.(2) | 9:52 |
| 23 मई | रेव.(3) | 19:21 |
| 28 मई | रेव.(4) | 5:15 |
| 1 जून | अश्वि.1 मेष | 15:37 |
| 5 जून | अश्वि.(2) | 26:30 |
| 10 जून | अश्वि.(3) | 14:00 |
| 14 जून | अश्वि.(4) | 26:09 |
| 19 जून | भर.(1) | 14:58 |
| 23 जून | भर.(2) | 28:31 |
| 28 जून | भर.(3) | 18:49 |
| 3 जुला | भर.(4) | 9:57 |
| 7 जुला | कृति.(1) | 25:57 |
| 12 जुला. | कृति.2 वृष | 18:58 |
| 17 जुला. | कृति.(3) | 13:04 |
| 22 जुला | कृति.(4) | 8:20 |
| 26 जुला | रोहि.(1) | 28:38 |
| 31 जुला | रोहि.(2) | 26:18 |
| 5 अग. | रोहि.(3) | 25:24 |
| 10 अग. | रोहि.(4) | 26:07 |
| 16 अग. | मृग.(1) | 4:35 |
| 21 अग. | मृग.(2) | 8:59 |
| 26 अग. | मृग.3 मिथुन | 15:25 |
| 31 अग. | मृग.(4) | 24:14 |
| 6 सितं. | आर्द्रा(1) | 11:49 |
| 11 सितं. | आर्द्रा(2) | 26:36 |
| 17 सितं. | आर्द्रा(3) | 21:06 |
| 23 सितं. | आर्द्रा(4) | 19:52 |
| 29 सितं. | पुन.(1) | 23:59 |
| 6 अक्तू | पुन.(2) | 10:52 |
| 13 अक्तू. | पुन.(3) | 6:37 |
| 20 अक्तू. | पुन.4 कर्क | 14:22 |
| 28 अक्तू. | पुष्य(1) | 15:57 |
| 6 नवं. | पुष्य(2) | 24:40 |
| 19 नवं. | पुष्य(3) | 10:39 |
| 7 दिसं. | वक्री | 5:01 |
| 23 दिसं. | व. पुष्य(2) | 26:59 |
| (सन् 2025 ई.) | | |
| 4 जन. | व. पुष्य(1) | 6:43 |
| 12 जन. | व. पुन.(4) | 24:17 |
| 21 जन. | व.पुन.3 मिथुन | 10:05 |
| 30 जन. | व. पुन.(2) | 21:00 |
| 15 फर. | व.पुन.(1) | 5:30 |
| 24 फर. | मार्गी | 7:32 |
| 5 मार्च | पुन.(2) | 16:49 |
| 22 मार्च | पुन.(3) | 25:14 |

## बुध नक्षत्र प्रवेश

[संवतारम्भ में मेष में वक्री]

| 2024 ई. | नक्षत्र चरण | घं. मिं. |
|---|---|---|
| 9 अप्रै. | व. रेव.4मीन | 21:30 |
| 14 अप्रै. | व.रेव.(3) | 10:06 |
| 19 अप्रै. | व.रेव.(2) | 15:36 |
| 25 अप्रै. | मार्गी | 18:24 |
| 1 मई | रेव.(3) | 23:35 |
| 6 मई | रेव.(4) | 26:41 |
| 10 मई | अश्वि.1 मेष | 18:43 |
| 13 मई | अश्वि.(2) | 20:55 |
| 16 मई | अश्वि.(3) | 14:58 |
| 18 मई | अश्वि.(4) | 27:28 |
| 21 मई | भर.(1) | 11:41 |
| 23 मई | भर.(2) | 16:35 |
| 25 मई | भर.(3) | 18:44 |
| 27 मई | भर.(4) | 18:30 |
| 29 मई | कृति.(1) | 16:14 |
| 31 मई | कृति.2 वृष | 12:12 |
| 2 जून | कृति.(3) | 6:36 |
| 3 जून | कृति.(4) | 23:34 |
| 5 जून | रोहि.(1) | 15:21 |
| 7 जून | रोहि.(2) | 6:10 |
| 8 जून | रोहि.(3) | 20:05 |
| 10 जून | रोहि.(4) | 9:24 |
| 11 जून | मृग.(1) | 22:12 |
| 13 जून | मृग.(2) | 10:42 |
| 14 जून | मृग. 3 मिथुन | 23:05 |
| 16 जून | मृग.(4) | 11:31 |
| 17 जून | आर्द्रा(1) | 24:08 |
| 19 जून | आर्द्रा(2) | 13:12 |
| 20 जून | आर्द्रा(3) | 26:46 |
| 22 जून | आर्द्रा(4) | 16:05 |
| 24 जून | पुन.(1) | 8:12 |
| 25 जून | पुन.(2) | 24:25 |
| 27 जून | पुन.(3) | 17:46 |
| 29 जून | पुन. 4 कर्क | 12:26 |
| 1 जुला | पुष्य(1) | 8:35 |
| 3 जुला | पुष्य(2) | 6:24 |
| 5 जुला | पुष्य(3) | 6:08 |
| 7 जुला | पुष्य(4) | 8:02 |
| 9 जुला | आश्ले.(1) | 12:26 |
| 11 जुला | आश्ले.(2) | 19:48 |
| 14 जुला | आश्ले.(3) | 6:44 |
| 16 जुला | आश्ले.(4) | 22:31 |
| 19 जुला | मघा 1 सिंह | 20:46 |
| 23 जुला | मघा(2) | 5:04 |
| 27 जुला | मघा(3) | 9:30 |
| 5 अग. | वक्री | 10:26 |
| 13 अग. | व.मघा(2) | 25:45 |
| 18 अग. | व. मघा (1) | 5:07 |
| 22 अग. | व.आश्ले.4कर्क | 6:38 |
| 28 अग. | मार्गी | 26:42 |
| 4 सितं. | मघा 1 सिंह | 11:22 |
| 7 सितं. | मघा(2) | 15:19 |
| 9 सितं. | मघा(3) | 26:47 |
| 12 सितं. | मघा(4) | 6:47 |
| 14 सितं. | पू.फा.(1) | 6–44 |
| 15 सितं. | पू.फा.(2) | 28:20 |
| 17 सितं. | पू.फा.(3) | 24:32 |
| 19 सितं. | पू.फा.(4) | 19:59 |

## बुध नक्षत्र प्रवेश

| 2024 ई. | नक्षत्र चरण | घं. मिं. |
|---|---|---|
| 21 सितं. | उ.फा.(1) | 15:06 |
| 23 सितं. | उ.फा.2 कन्या | 10:10 |
| 25 सितं. | उ.फा.(3) | 5:26 |
| 26 सितं. | उ.फा.(4) | 25:03 |
| 28 सितं. | हस्त(1) | 21:09 |
| 30 सितं. | हस्त(2) | 17:48 |
| 2 अक्तू. | हस्त(3) | 15:06 |
| 4 अक्तू. | हस्त(4) | 13:04 |
| 6 अक्तू. | चित्रा(1) | 11:45 |
| 8 अक्तू. | चित्रा(2) | 11:10 |
| 10 अक्तू. | चित्रा 3 तुला | 11:19 |
| 12 अक्तू. | चित्रा(4) | 12:14 |
| 14 अक्तू. | स्वा.(1) | 13:54 |
| 16 अक्तू. | स्वा.(2) | 16:20 |
| 18 अक्तू. | स्वा.(3) | 19:29 |
| 20 अक्तू. | स्वा.(4) | 23:23 |
| 22 अक्तू. | विशा.(1) | 28:00 |
| 25 अक्तू. | विशा.(2) | 9:24 |
| 27 अक्तू. | विशा.(3) | 15:36 |
| 29 अक्तू. | विशा.4 वृश्चि. | 22:39 |
| 1 नवं. | अनु.(1) | 6:40 |
| 3 नवं. | अनु.(2) | 15:52 |
| 5 नवं. | अनु.(3) | 26:28 |
| 8 नवं. | अनु.(4) | 15:04 |
| 11 नवं. | ज्ये.(1) | 6:22 |
| 13 नवं. | ज्ये.(2) | 26:09 |
| 17 नवं. | ज्ये.(3) | 5:56 |
| 21 नवं. | ज्ये.(4) | 6:49 |
| 26 नवं. | वक्री | 8:12 |
| 30 नवं. | व. ज्ये.(3) | 20:27 |
| 3 दिसं. | व.ज्ये.(2) | 24:32 |
| 6 दिसं. | व.ज्ये.(1) | 12:04 |
| 8 दिसं. | व.अनु.(4) | 24:42 |
| 12 दिसं. | व.अनु.(3) | 13:16 |
| 15 दिसं. | मार्गी | 26:26 |
| 19 दिसं. | अनु.(4) | 23:33 |
| 24 दिसं. | ज्ये.(1) | 8:26 |

| 2024 ई. | नक्षत्र चरण | घं. मिं. |
|---|---|---|
| 27 दिसं. | ज्ये.(2) | 13:20 |
| 30 दिसं. | ज्ये.(3) | 9:05 |
| ( सन् 2025 ई. ) | | |
| 1 जन. | ज्ये.(4) | 24:02 |
| 4 जन. | मूल(1)धनु | 12:02 |
| 6 जन. | मूल(2) | 22:05 |
| 9 जन. | मूल(3) | 6:41 |
| 11 जन. | मूल(4) | 14:06 |
| 13 जन. | पू.षा.(1) | 20:35 |
| 15 जन. | पू.षा.(2) | 26:15 |
| 18 जन. | पू.षा.(3) | 7:09 |
| 20 जन. | पू.षा.(4) | 11:20 |
| 22 जन. | उ.षा.(1) | 14:49 |
| 24 जन. | उ.षा.2 मकर | 17:38 |
| 26 जन. | उ.षा.(3) | 19:48 |
| 28 जन. | उ.षा.(4) | 21:16 |
| 30 जन. | श्रव.(1) | 22:04 |
| 1 फर. | श्रव.(2) | 22:11 |
| 3 फर. | श्रव.(3) | 21:37 |
| 5 फर. | श्रव.(4) | 20:24 |
| 7 फर. | धनि.(1) | 18:31 |
| 9 फर. | धनि.(2) | 16:00 |
| 11 फर. | धनि.3 कुम्भ | 12:53 |
| 13 फर. | धनि.(4) | 9:13 |
| 15 फर. | शत.(1) | 5:04 |
| 16 फर. | शत.(2) | 24:31 |
| 18 फर. | शत.(3) | 19:39 |
| 20 फर. | शत.(4) | 14:41 |
| 22 फर. | पू.भा.(1) | 9:49 |
| 24 फर. | पू.भा.(2) | 5:23 |
| 25 फर. | पू.भा.(3) | 25:48 |
| 27 फर. | पू.भा.4 मीन | 23:45 |
| 1 मार्च | उ.भा.(1) | 24:14 |
| 4 मार्च | उ.भा.(2) | 5:02 |
| 6 मार्च | उ.भा.(3) | 18:28 |
| 10 मार्च | उ.भा.(4) | 4:14 |
| 15 मार्च | वक्री | 12:16 |
| 20 मार्च | व.उ.भा.(3) | 27:18 |
| 25 मार्च | व.उ.भा.(2) | 6:55 |
| 28 मार्च | व.उ.भा.(1) | 28:13 |

## गुरु नक्षत्र प्रवेश

( संवतारम्भ में भर. 4 में )

| 2024 ई. | नक्षत्र चरण | घं. मिं. |
|---|---|---|
| 16 अप्रै. | कृति.(1) | 26:03 |
| 1 मई | कृति.2 वृष | 12:57 |
| 15 मई | कृति.(3) | 16:12 |
| 29 मई | कृति.(4) | 20:53 |
| 13 जून | रोहि.(1) | 5:37 |
| 27 जून | रोहि.(2) | 26:01 |
| 13 जुला. | रोहि.(3) | 19:23 |
| 30 जुला. | रोहि.(4) | 26:36 |
| 20 अग. | मृग.(1) | 16:10 |
| 22 सितं. | मृग.(2) | 15:58 |
| 9 अक्तू. | वक्री | 12:30 |
| 26 अक्तू. | व.मृग.(1) | 6:36 |
| 28 नवं. | व.रोहि.(4) | 14:25 |
| 23 दिसं. | व.रोहि.(3) | 15:38 |
| ( सन् 2025 ई. ) | | |
| 4 फर. | मार्गी | 15:10 |
| 19 मार्च | रोहि.(4) | 18:06 |

## शुक्र नक्षत्र प्रवेश

( संवतारम्भ में उ.भा. 3 में )

| | | |
|---|---|---|
| 11 अप्रै. | उ.भा.(4) | 11:45 |
| 13 अप्रै. | रेव.(1) | 28:32 |
| 16 अप्रै. | रेव.(2) | 21:22 |
| 19 अप्रै. | रेव.(3) | 14:13 |
| 22 अप्रै. | रेव.(4) | 7:05 |
| 24 अप्रै. | अश्वि.1 मेष | 23:58 |
| 27 अप्रै. | अश्वि.(2) | 16:52 |
| 30 अप्रै. | अश्वि.(3) | 16:18 |
| 2 मई | अश्वि.(4) | 26:45 |
| 5 मई | भर.(1) | 19:41 |
| 8 मई | भर.(2) | 12:39 |
| 11 मई | भर.(3) | 5:38 |
| 13 मई | भर.(4) | 22:38 |
| 16 मई | कृति.(1) | 15:40 |
| 19 मई | कृति.2 वृष | 8:42 |

## शुक्र नक्षत्र प्रवेश

| 2024 ई. | नक्षत्र चरण | घं. मिं. |
|---|---|---|
| 21 मई | कृति.(3) | 25:46 |
| 24 मई | कृति.(4) | 18:51 |
| 27 मई | रोहि.(1) | 11:56 |
| 30 मई | रोहि.(2) | 5:01 |
| 1 जून | रोहि.(3) | 22:06 |
| 4 जून | रोहि.(4) | 15:12 |
| 7 जून | मृग.(1) | 8:17 |
| 9 जून | मृग.(2) | 25:23 |
| 12 जून | मृग.(3)मिथुन | 18:29 |
| 15 जून | मृग.(4) | 11:36 |
| 17 जून | आर्द्रा(1) | 28:43 |
| 20 जून | आर्द्रा(2) | 21:50 |
| 23 जून | आर्द्रा(3) | 14:58 |
| 26 जून | आर्द्रा(4) | 8:05 |
| 28 जून | पुन.(1) | 25:12 |
| 1 जुला | पुन.(2) | 18:19 |
| 4 जुला | पुन.(3) | 11:25 |
| 6 जुला | पुन.4कर्क | 28:31 |
| 9 जुला | पुष्य(1) | 21:37 |
| 12 जुला | पुष्य(2) | 14:43 |
| 15 जुला | पुष्य(3) | 7:49 |
| 17 जुला | पुष्य(4) | 24:56 |
| 20 जुला | आश्ले.(1) | 18:03 |
| 23 जुला | आश्ले.(2) | 11:11 |
| 25 जुला | आश्ले.(3) | 28:18 |
| 28 जुला | आश्ले.(4) | 21:25 |
| 31 जुला. | मघा 1 सिंह | 14:33 |
| 3 अग. | मघा(2) | 7:41 |
| 5 अग. | मघा(3) | 24:49 |
| 8 अग. | मघा(4) | 17:57 |
| 11 अग. | पू.फा.(1) | 11:07 |
| 13 अग. | पू.फा.(2) | 28:18 |
| 16 अग. | पू.फा.(3) | 21:31 |
| 19 अग. | पू.फा.(4) | 14:45 |
| 22 अग. | उ.फा.(1) | 7:59 |
| 24 अग. | उ.फा.2 कन्या | 25:16 |

| 2024 ई. | नक्षत्र चरण | घं. मिं. |
|---|---|---|
| 27 अग. | उ.फा.(3) | 18:34 |
| 30 अग. | उ.फा.(4) | 11:53 |
| 2 सितं. | हस्त(1) | 5:12 |
| 4 सितं. | हस्त(2) | 22:35 |
| 7 सितं. | हस्त(3) | 15:59 |
| 10 सितं. | हस्त(4) | 9:24 |
| 12 सितं. | चित्रा(1) | 26:52 |
| 15 सितं. | चित्रा(2) | 20:23 |
| 18 सितं. | चित्रा 3 तुला | 13:56 |
| 21 सितं. | चित्रा(4) | 7:33 |
| 23 सितं. | स्वा.(1) | 25:12 |
| 26 सितं. | स्वा.(2) | 18:53 |
| 29 सितं. | स्वा.(3) | 12:38 |
| 2 अक्तू | स्वा.(4) | 6:23 |
| 4 अक्तू | विशा.(1) | 24:12 |
| 7 अक्तू | विशा.(2) | 18:04 |
| 10 अक्तू | विशा.(3) | 12:00 |
| 13 अक्तू | विशा.4 वृश्चि. | 6:00 |
| 15 अक्तू | अनु.(1) | 24:04 |
| 18 अक्तू | अनु.(2) | 21:25 |
| 21 अक्तू | अनु.(3) | 12:26 |
| 24 अक्तू | अनु.(4) | 6:45 |
| 26 अक्तू | ज्ये.(1) | 25:07 |
| 29 अक्तू | ज्ये.(2) | 19:34 |
| 1 नवं. | ज्ये.(3) | 14:07 |
| 4 नवं. | ज्ये.(4) | 9:06 |
| 6 नवं. | मूल 1 धनु | 27:31 |
| 9 नवं. | मूल(2) | 22:24 |
| 12 नवं. | मूल(3) | 17:27 |
| 15 नवं. | मूल(4) | 12:38 |
| 18 नवं. | पू.षा.(1) | 8:00 |
| 20 नवं. | पू.षा.(2) | 27:33 |
| 23 नवं. | पू.षा.(3) | 23:17 |
| 26 नवं. | पू.षा.(4) | 19:17 |
| 29 नवं. | उ.षा.(1) | 15:29 |
| 2 दिसं. | उ.षा.2 मकर | 11:57 |

| 2024 ई. | नक्षत्र चरण | घं. मिं. |
|---|---|---|
| 5 दिसं. | उ.षा.(3) | 8:43 |
| 8 दिसं. | उ.षा.(4) | 5:49 |
| 10 दिसं. | श्रव.(1) | 27:19 |
| 13 दिसं. | श्रव.(2) | 25:16 |
| 16 दिसं. | श्रव.(3) | 23:43 |
| 19 दिसं. | श्रव.(4) | 22:42 |
| 22 दिसं. | धनि.(1) | 22:18 |
| 25 दिसं. | धनि.(2) | 22:36 |
| 28 दिसं. | धनि.3 कुम्भ | 23:39 |
| 31 दिसं. | धनि.(4) | 25:21 |
| ( सन् 2025 ई. ) | | |
| 3 जन. | शत.(1) | 28:39 |
| 7 जन. | शत.(2) | 8:54 |
| 10 जन. | शत.(3) | 14:39 |
| 13 जन. | शत.(4) | 22:07 |
| 17 जन. | पू.भा.(1) | 7:42 |
| 20 जन. | पू.भा.(2) | 19:56 |
| 24 जन. | पू.भा.(3) | 11:37 |
| 28 जन. | पू.भा.4 मीन | 7:02 |
| 1 फर. | उ.भा.(1) | 8:27 |
| 5 फर. | उ.भा.(2) | 18:19 |
| 10 फर. | उ.भा.(3) | 17:53 |
| 16 फर. | उ.भा.(4) | 21:17 |
| 2 मार्च | वक्री | 6:06 |
| 14 मार्च | व.उ.भा.(3) | 22:18 |
| 20 मार्च | व.उ.भा.(2) | 18:55 |
| 25 मार्च | व.उ.भा.(1) | 27:05 |
| 31 मार्च | व.पू.भा.(4) | 28:47 |

## शनि नक्षत्र प्रवेश

[ संवतारम्भ में पू.भा. ( 1 ) में ]

| | | |
|---|---|---|
| 12 मई | पू.भा.(2) | 5:26 |
| 29 जून | वक्री | 24:35 |
| 18 अग. | व.पू.भा.(1) | 24:29 |
| 3 अक्तू | व.शत.(4) | 14:58 |
| 15 नवं. | मार्गी | 19:53 |

## शनि नक्षत्र प्रवेश

| 2024 ई. | नक्षत्र चरण | घं. मिं. |
|---|---|---|
| 27 दिसं. | पू.भा.(1) | 20:16 |
| ( सन् 2025 ई. ) | | |
| 2 फर. | पू.भा.(2) | 7:24 |
| 2 मार्च | पू.भा.(3) | 18:04 |
| 29 मार्च | पू.भा.4 मीन | 21:44 |

## राहु नक्षत्र प्रवेश

( संवतारम्भ में रेव. 2 में )

| 2024 ई. | नक्षत्र चरण | घं. मिं. |
|---|---|---|
| 6 मई | रेव.(1) | 10:14 |
| 8 जुला | उ.भा.(4) | 7:36 |
| 8 सितं. | उ.भा.(3) | 29:06 |
| 10 नवं. | उ.भा.(2) | 26:58 |
| ( सन् 2025 ई. ) | | |
| 12 जन. | उ.भा.(1) | 24:12 |
| 16 मार्च | पू.भा.(4) | 21:47 |

## केतु नक्षत्र प्रवेश

[ संवतारम्भ में हस्त 4 में ]

| | | |
|---|---|---|
| 6 मई | हस्त(3) | 10:14 |
| 8 जुला | हस्त(2) | 7:36 |
| 8 सितं | हस्त(1) | 29:06 |
| 10 नवं. | उ.फा.(4) | 26:58 |
| ( सन् 2025 ई. ) | | |
| 12 जन. | उ.फा.(3) | 24:12 |
| 16 मार्च | उ.फा.(2) | 21:47 |

## यूरेनस नक्षत्र प्रवेश

[ संवतारम्भ में कृति. 1 में ]

| | | |
|---|---|---|
| 1 जून | कृति.2 वृष | 15:46 |
| 1 सितं. | वक्री | 20:50 |
| 13 दिसं. | व. कृति.1 मेष | 11:10 |
| ( सन् 2025 ई. ) | | |
| 30 जन. | मार्गी | 21:51 |
| 19 मार्च | कृति.2 वृष | 5:39 |

## नैपच्यून नक्षत्र प्रवेश

[ संवतारम्भ में उ.भा. ( 1 ) में ]

| 2024 ई. | नक्षत्र चरण | घं. मिं. |
|---|---|---|
| 2 जुला | वक्री | 16:10 |
| 30 अक्तू | व.पू.भा.4 | 10:40 |
| 8 दिसं. | मार्गी | 5:17 |
| ( सन् 2025 ई. ) | | |
| 14 जन. | उ.भा.(1) | 25:48 |

## प्लूटो नक्षत्र प्रवेश

[ संवतारम्भ में उ.षा. 4 में ]

| | | |
|---|---|---|
| 2 मई | वक्री | 23:05 |
| 23 जुला. | व.उ.षा.(3) | 12:24 |
| 12 अक्तू | मार्गी | 5:57 |
| 25 दिसं. | उ.षा.(4) | 22:10 |

## शास्त्र-वाक्य

➤**आसन**—बिना आसन पर बैठ कर किए गए जप, तप, पाठ एवं मन्त्र आदि अनुष्ठान पूर्ण फल प्रदायक नहीं होते। कुश, कम्बल, मृगचर्म एवं रेशम का आसान जपादि के लिए श्रेष्ठ कहे गए हैं। संतानवान गृहस्थी तो मृगचर्म पर भी न बैठे।

पं. देवीदयालु संस्थान का कर्मकाण्ड सम्बन्धी नवीन प्रकाशन
'वार्षिक (एकोद्दिष्ट) एवं चातुर्वाषिक श्राद्ध पद्धति'
[ देवर्षि-पितृ-तर्पण, शय्या दान, गोदान, बलिवैश्वदेव विधि, पितृस्तोत्र, पितृसूक्त आदि सहित ]
लेखक/ सम्पादक :-पं. विवेक शर्मा ( पंचांगकर्त्ता )

## ग्रहों की अंशात्मक युतियां

( सन् 2024-25 ई. )

10 अप्रै. ➤ मंग.-शनि (कुम्भ)
12 अप्रै. ➤ सूर्य-बुध (मीन)
19 अप्रै. ➤ बुध-शुक्र (मीन)
18 मई ➤ सूर्य-गुरु (वृष)
18 मई ➤ मंग.-राहु (मीन)
23 मई ➤ गुरु-शुक्र (वृष)
4 जून ➤ सूर्य-शुक्र (वृष)
4 जून ➤ बुध-गुरु (वृष)
15 जून ➤ सूर्य-बुध (मिथुन)
17 जून ➤ बुध-शुक्र (मिथुन)
8 अग. ➤ बुध-शुक्र (सिंह)
14 अग. ➤ मंग.-गुरु (वृष)
19 अग. ➤ सूर्य-बुध (सिंह)
1 अक्तू ➤ सूर्य-बुध (सिंह)
6 दिसं. ➤ सूर्य-बुध (वृश्चिक)

( सन 2025 ई. )

19 जन. ➤ शुक्र-शनि (कुम्भ)
4 फर. ➤ शुक्र-राहु (मीन)
9 फर. ➤ सूर्य-बुध (मकर)
25 फर. ➤ बुध-शनि (कुम्भ)
2 मार्च ➤ बुध-राहु (मीन)
12 मार्च ➤ सूर्य-शनि (कुम्भ)
12 मार्च ➤ बुध-शुक्र (मीन)
17 मार्च ➤ सूर्य-राहु (मीन)
23 मार्च ➤ सूर्य-शुक्र (मीन)

## द्विग्रही-योग—वि. संवत् २०८१ (सन् 2024-25 ई.)

मंग.-शनि ➤ 9 अप्रै. से 23 अप्रै. (कुम्भ)
बुध-शुक्र ➤ 9 अप्रै. से 24 अप्रै. (मीन)
शुक्र-राहु ➤ 9 अप्रै. से 24 अप्रै. (मीन)
बुध-राहु ➤ 9 अप्रै. से 10 मई (मीन)
सूर्य-गुरु ➤ 13 अप्रै. से 1 मई (मेष)
मंग.-राहु ➤ 23 अप्रै. से 1 जून (मीन)
मंग.-बुध ➤ 23 अप्रै. से 10 मई (मीन)
सूर्य-शुक्र ➤ 24 अप्रै. से 14 मई (मेष)
बुध-शुक्र ➤ 10 मई से 19 मई (मेष)
सूर्य-गुरु ➤ 14 मई से 14 जून (वृष)
बुध-गुरु ➤ 31 मई से 14 जून (वृष)
सूर्य-बुध ➤ 14 जून से 29 जून (मिथुन)
सूर्य-शुक्र ➤ 14 जून से 7 जुला. (मिथुन)
बुध-शुक्र ➤ 14 जून से 29 जून (मिथुन)
बुध-शुक्र ➤ 7 जुला. से 19 जुला. (कर्क)
मंग.-गुरु ➤ 12 जुला. से 26 अग. (वृष)
सूर्य-शुक्र ➤ 16 जुला. से 31 जुला. (कर्क)
बुध-शुक्र ➤ 31 जुला. से 22 अग. (सिंह)
शुक्र-केतु ➤ 24 अग. से 18 सितं. (कन्या)
सूर्य-बुध ➤ 4 सितं. से 16 सितं. (सिंह)
सूर्य-केतु ➤ 16 सितं. से 16 अक्तू. (कन्या)
बुध-शुक्र ➤ 10 अक्तू. से 13 अक्तू. (तुला)
सूर्य-बुध ➤ 17 अक्तू. से 29 अक्तू. (तुला)
बुध-शुक्र ➤ 29 अक्तू. से 7 नवं. (वृश्चिक)
सूर्य-बुध ➤ 16 नवं. से 15 दिसं. (वृश्चिक)
शुक्र-शनि ➤ 28 दिसं. से 28 जन. (कुम्भ)

( सन 2025 ई. )

सूर्य-बुध ➤ 4 जन. से 14 जन. (धनु)
सूर्य-बुध ➤ 24 जन. से 11 फर. (मकर)
शुक्र-राहु ➤ 28 जन. से 31 मार्च (मीन)
बुध-शनि ➤ 11 फर. से 27 फर. (कुम्भ)
सूर्य-शनि ➤ 12 फर. से 14 मार्च (कुम्भ)
बुध-राहु ➤ 27 फर. से 31 मार्च (मीन)
बुध-शुक्र ➤ 27 फर. से 31 मार्च (मीन)
सूर्य-बुध ➤ 14 मार्च से 31 मार्च (मीन)
सूर्य-राहु ➤ 14 मार्च से 31 मार्च (मीन)
सूर्य-शुक्र ➤ 14 मार्च से 31 मार्च (मीन)
सूर्य-शनि ➤ 29 मार्च से (मीन)

## तीनग्रही-योग—(संवत् २०८१)

मं.+बु.+रा. ➤ 23 अप्रै. से 10 मई (मीन)
सू.+गु.+शु. ➤ 24 अप्रै. से 1 मई (मेष)
सू.+गु.+शु. ➤ 19 मई से 12 जून (वृष)
सू.+बु.+गु. ➤ 31 मई से 14 जून (वृष)
सू.+बु.+शु. ➤ 14 जून से 29 जून (मिथुन)
सू.+बु.+शु. ➤ 16 अग. से 22 अग. (सिंह)
सू.+शु.+के. ➤ 16 सितं. से 18 सितं. (कन्या)
सू.+बु.+के. ➤ 23 सितं. से 10 अक्तू. (कन्या)

( सन 2025 ई. )

सू.+बु.+श. ➤ 12 फर. से 27 फर. (कुम्भ)

## (चतुर्ग्रही योग-सं. २०८१)

सू.+बु.+शु.+रा. ➤ 10 अप्रै. से 13 अप्रै. (मीन)
सू.+बु.+गु.+शु. ➤ 31 मई से 12 जून (वृष)

( सन 2025 ई. )

सू.+बु.+शु.+रा. ➤ 14 मार्च से 31 मार्च

## (समसप्तक योग)-संवत् २०८१

बुध-शनि ➤ 19 जुला. से 21 अग. (सिंह-कुंभ)
शुक्र-शनि ➤ 31 जुला. से 24 अग. (सिंह-कुंभ)
सूर्य-शनि ➤ 16 अग. से 15 सितं. (सिंह-कुंभ)
बुध-शनि ➤ 4 सितं. से 23 सितं. (सिंह-कुंभ)
गुरु-शुक्र ➤ 12 अक्तू. से 6 नवं. (वृष-वृश्चिक)
बुध-गुरु ➤ 29 अक्तू. से 4 जन. (वृष-वृश्चिक)
सूर्य-गुरु ➤ 16 नवं. से 15 दिसं. (वृष-वृश्चिक)
मंग.-शुक्र ➤ 2 दिसं. से 28 दिसं. (कर्क-मकर)

( सन 2025 ई. )

सूर्य-मंग ➤ 14 जन. से 20 जन. (कर्क-मकर)
मंग.-बुध ➤ 21 जन. से 24 जन. (मिथुन-धनु)

## षडाष्टक योग

मंग.+शनि ➤20 अक्तू से 20 जन. (25) तक (कर्क-कुम्भ)

# चान्द्र परम्परा अनुसार प्रत्येक मास के मुख्य व्रत–त्यौहार

## (प्रत्येक मास के व्रत-पर्वों के तिथि-निर्णय एवं संक्षिप्त विधि-विधान सहित)

**[ इस लेख श्रृंखला के अन्तर्गत भारतीय सनातन वैदिक संस्कृति के अनुसार 'पंचांगदिवाकर' में प्रत्येक कृष्ण/शुक्ल पक्ष में दिए जाने वाले मुख्य पर्व/व्रत/त्यौहारों के संक्षिप्त विवरण (शास्त्रोक्त तिथि निर्णय एवं करणीय कर्म) क्रमानुसार दिया जा रहा है। आशा है धर्मपरायण पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। [ सुझाव आमंत्रित हैं। ] गत आठ वर्षों (वि. संवत् 2073 से सं. 2080 तक) में हमने 'चैत्र से आश्विन कृष्णपक्ष' मास तक के मुख्य व्रत/पर्वों का विवरण लिख चुके हैं। इस वर्ष हम 'आश्विन शुक्ल पक्ष' के मुख्य व्रत, पर्वों सम्बन्धी विधि–विधान का विवरण लिख रहे हैं। —पं. विवेक शर्मा सुपुत्र स्व. पं. पन्ना लाल शर्मा, जालन्धर (पं.)**

## 'आश्विन शुक्ल पक्ष'

आश्विन शुक्ल पक्ष का आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत महत्त्व है। इसमें नौ दिनों तक आद्याशक्ति भगवती का व्रत और श्रीदुर्गा-सप्तशती का पाठ करने से आध्यात्मिक, आधिभौतिक दोषों पर विजय प्राप्त करने में बड़ी सहायता मिलती है। तदुपरान्त विजयादशमी एवं शरद् पूर्णिमा पर्व परस्पर सूत्र में आबद्ध हैं। अतएव **'आश्विन शुक्ल प्रतिपदा'** से **पूर्णिमा** तक को शास्त्रों में **देवी-पक्ष** कहा गया है।

आश्विन कृष्ण प्रतिपदा से अमावस्या तक को **'पितृपक्ष'** कहा गया है। इसलिए पहले पितरों के श्राद्ध-तर्पण के उपरान्त **'देवी-पक्ष'** प्रारम्भ होता है। माता-पिता के प्रसन्न होने से सभी देवता प्रसन्न होते हैं। आश्विन अमावस्या **'महालया-अमावस्या'** शब्द से विख्यात है। इसी तिथि को पहले **'पितृकर्म'** सम्पन्न होते हैं तथा इसके बाद **'देवी-पक्ष'** का प्रारम्भ होता है।

### (1) मातामह/मातामही का महालय श्राद्ध

मातामह, मातामही (नाना, नानी) का महालय श्राद्ध पार्वण-श्राद्ध पद्धति अनुसार आश्विन शुक्ल प्रतिपदा के दिन अपराह्ण-काल में ही किया जाता है।

### (2) शारदीय–नवरात्र–प्रारम्भ

### (आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक)

**तिथि-निर्णय**–सामान्य स्थिति में आश्विन शुक्ल प्रतिपदा जिस दिन सूर्योदय बाद त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी हो, उस दिन शरद् नवरात्र-प्रारम्भ, घटस्थापन किया जाता है। शास्त्रानुसार यदि प्रतिपदा त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी न हो, तो दो या एक मुहूर्त्तव्यापिनी प्रतिपदा में नवरात्र-प्रारम्भ (घटस्थापन) कर लेना चाहिए। परन्तु गणनानुसार यदि प्रतिपदा एक मुहूर्त्त (लगभग २ घड़ी) से भी कम हो अथवा प्रतिपदा तिथि का क्षय हो जाए (अर्थात् सूर्योदय से पहिले ही समाप्त हो जाए) तो उस स्थिति में शास्त्र अमावस की समाप्ति वाले दिन ही नवरात्रारम्भ करने की आज्ञा देते हैं–

**'( प्रतिपदा ) मुहूर्त्तन्यून व्याप्तौ सूर्योदयऽस्पर्शे वा दर्शयुतापि ग्राह्या।।'** (धर्मसिन्धु)

यदि प्रतिपदा तिथि की वृद्धि हो तो षष्ठिघट्यात्मक (६० घड़ी) (पूर्णा) प्रतिपदा के दिन ही नवरात्र-प्रारम्भ किया जाएगा।

**ध्यान दें**–शास्त्रानुसार सूर्योदय बाद 10 घड़ी तक अथवा मध्याह्नकाल में अभिजित् मुहूर्त्त (दिन के अष्टम मुहूर्त्त) के समय नवरात्रारम्भ व कलशस्थापन किया जाता है। प्रतिपदा की पूर्ववर्त्ती (पहिली) 16 घड़ियां तथा चित्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग का पूर्वार्द्ध भाग नवरात्रारम्भ के लिए निषिद्ध है। यदि नवरात्रारम्भ हेतु यह ग्राह्य-काल अर्थात् सूर्योदय बाद की 10 घड़ियां तथा अभिजित् मुहूर्त्त–प्रतिपदा की प्रथम 16 घड़ियों अथवा चित्रा–वैधृति के पूर्वार्द्ध भाग से पूरी तरह दूषित हो, तो इसकी परवाह न करते हुए इस दिन दूषितकाल में नवरात्रारम्भ, कलश–स्थापन कर लेना चाहिए क्योंकि शास्त्रानुसार जहाँ तक सम्भव हो, इन दोषों से बचना चाहिए। यदि इसका त्याग करना सम्भव न हो, तो इसके दूषितकाल में ही निर्द्धारित–काल (अर्थात् प्रथम 10 घटियों (4 घण्टे) या अभिजित मुहूर्त्त) में घटस्थापन पूजादि कार्य कर लेना चाहिए–

**'एवं च प्रतिपद्-आद्यषोडशनाड़ीनिषेधः, चित्रा-वैधृतियोग निषेधश्च-उक्तकालानुरोधेन सति सम्भवे पालनीयो न तु निषेधानुरोधेन पूर्वाह्णः प्रारम्भकालः प्रतिपत्तिथिर्वातिक्रमणीयः।।'**

## शारदीय नवरात्र की महिमा तथा संक्षिप्त पूजा-विधान

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त (नौ दिन) नवरात्रे कहलाते हैं। इन नौं दिनों में आद्याशक्ति भगवती दुर्गा की विशेष आराधना की जाती है। आदिशक्ति के हर रूप की नवरात्रों के नौ दिनों में क्रमशः अलग–अलग पूजा की जाती है। जिससे माँ प्रसन्न होकर आशीर्वाद देती है। **नवानां रात्रीणां समाहारः नवरात्रम्** अर्थात् नौ रात्रियों के सम्मिश्रण का नाम नवरात्र है। श्रीदेवीभागवत् पुराणानुसार संवत् (वर्ष) में चार नवरात्र होते हैं–

***( 1 ) चैत्र ( वासन्त ) नवरात्र, ( 2 ) आषाढ़ ( गुप्त ) नवरात्रे, ( 3 ) आश्विन ( शारदीय ) नवरात्र, ( 4 ) माघ ( गुप्त ) नवरात्र।***

शयनाख्य चैत्रमासीय नवरात्र से बोधनाख्य शारदीय नवरात्र अधिक प्रशस्त-व्यापक हैं। यथा-बृहत्सारसिद्धान्त में कहा गया है-

**आश्विनस्य सितेपक्षे नानाविधमहोत्सवैः। प्रसादयेयुः श्रीदुर्गां चतुर्वर्गफलार्थिनः।।**

अर्थात् आश्विन शुक्लपक्ष में विशेष महोत्सवों से श्रीदुर्गा जी की पूजा, धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष-ये चारों फल देने वाली हैं।

श्रीदुर्गा-सप्तशती (श्रीमार्कण्डयोक्त) में भी आद्या शक्ति द्वारा स्वयं के कथनानुसार भी नवरात्रों की प्रतिष्ठा एवं महिमा प्रकट होती है-

**शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी। तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति समन्वितः।।**
**सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धन धान्य सुतान्वितः। मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।**

अर्थात् शरद् ऋतु में जो वार्षिक महापूजा अर्थात् नवरात्र पूजन होता है, उसमें श्रद्धा-भक्ति के साथ मेरे इस देवी-माहात्म्य (सप्तशती) का पाठ या श्रवण करना चाहिए। ऐसा करने पर निःसंदेह मेरे कृपा प्रसाद से मनुष्य सभी प्रकार की बाधाओं से मुक्त होकर धन-धान्य, भूमि-पुत्रादि सम्पत्तियों से सम्पन्न हो जाता है।......(श्रीदुर्गा-सप्तशती)

**पूजा विधान**—सर्वप्रथम प्रातःकाल स्वयं स्नानादि से पवित्र हो पूजा-स्थल को पवित्र कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् वैदिक, पौराणिक एवं तांत्रिक मन्त्रोच्चारण के बाद नवरात्र दुर्गापूजा निमित्त यथाविधि कलशस्थापन (घट-स्थापन) किया जाता है। विधिपूर्वक स्थापित घट-कलश में प्रदत्त द्रव्यों, पदार्थों को देखने से स्पष्ट होगा कि नौ दिनों तक कलश में दिए गए उन पदार्थों से कलश-जल अमृतमय हो जाता है और उस अमृतरूप जल से महामन्त्रों द्वारा अभिषेक किया जाता है। वह सर्वपाप-रोगविनाशक है। यह नवरात्र व्रत स्त्री-पुरुष या ब्राह्मण को प्रतिनिधि बनाकर व्रत पूर्ण कराया जा सकता है। इन नवरात्रों में श्रद्धानुसार अथवा सामर्थ्यानुसार कुछ लोग उपवास, अयाचित (बिना माँगे प्राप्त भोजन), नक्त (रात में भोजन करना) या एकभुक्त (एक बार भोजन करना) करते हैं।

[यदि नवरात्रों में घटस्थापन के बाद सूतक (अशौच) हो जाए तो कोई दोष नहीं लगता, परन्तु पहले हो जाए तो पूजनादि स्वयं न करें।]

प्रातः नित्यकर्म के पश्चात् कलश के साथ ही दीवार या चौकी पर देवी की मूर्त्ति भी स्थापित करके उसके सामने बैठकर '**ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः**......**मम महामायाभगवती (वा मायाधिपति भगवत) प्रीतये (आयुर्बलवित्तारोग्य समादरादिप्राप्तये वा) नवरात्रव्रतमहं करिष्ये।**' यह संकल्प करके षोडशोपचारपूर्वक पूजन स्वयं करें या ब्राह्मण द्वारा करवाएँ। घटस्थापन के साथ ही एक मिट्टी या धातु के खुले मुख वाले पात्र में जौं और गेहूँ बोये। साथ ही '**भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी हि विघ्नकृत, यावत् पूजा कर्मसमाप्ति स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।**' आदि मन्त्रों से घी का दीपक भी जलाना चाहिए।

**पाठ-विधि**—तदनन्तर '**श्रीदुर्गा-सप्तशती**' का सम्पुट या साधारण पाठ प्रतिदिन विधि एवं क्रमानुसार करना चाहिए। '**श्रीदुर्गा-सप्तशती**' पुस्तक का-

**नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।**
**नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।**

-इस मन्त्र से पञ्चोपचार पूजन कर यथाविधि पाठ करें। पाठ की पूर्णाहुति के दिन दशांश हवन अथवा पाठ एवं कन्या-पूजन करना चाहिए।

**कुमारी पूजन**—कुमारी पूजा नवरात्र का अनिवार्य अङ्ग है। कुमारिकाएँ जगज्जनी जगदम्बा का प्रत्यक्ष विग्रह हैं। सामर्थ्य हो तो नौ दिन तक एक-एक को, अन्यथा नौवें दिन नौ, सात, पाँच, तीन या एक ही कन्या को देवी मानकर पूजा करके भोजन कराना चाहिए। इसमें ब्राह्मण-कन्या को प्रशस्त माना गया है। कुमारियों को एक पंक्ति में बिठाकर पहले '**ॐ गं गणपतये नमः**' से गणेश जी का पञ्चोपचार पूजन करे, फिर '**ॐ वं वटुकाय नमः**' से वटुक का तथा '**ॐ कुमार्यै नमः**' से कुमारियों का पञ्चोपचार पूजन करें। इसके बाद पुष्पों से निम्न मन्त्र द्वारा कुमारियों की स्तुति करें-

**'मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम्। नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम् जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणी। पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते।।'**

कुछ क्षेत्रों में अष्टमी या नवमी के दिन कड़ाही पूजा की परम्परा है। कड़ाही में हलवा बनाकर उसे देवी की प्रतिमा के सम्मुख रखकर चमचे और कड़ाही में मौली बाँधकर '**ॐ अन्नपूर्णायै नमः**' इस नाम मन्त्र से कड़ाही का पञ्चोपचार पूजन कर, माँ को नैवेद्य लगाकर कुमारी बालिकाओं को भोजन कराकर उन्हें यथाशक्ति वस्त्राभूषण, दक्षिणादि देने का विधान है।

नवरात्रे व्यतीत होने के बाद दसवें दिन विसर्जन (पारणा) करना चाहिए। विसर्जन से पूर्व भगवती दुर्गा का गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन कर निम्न प्रार्थना करें-

**रूपं देहि यशो देहि भाग्यं भगवति देहि मे।**
**पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे।।**
**महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनी।**
**आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोऽस्तु ते।।**

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद हाथ में अक्षत एवं पुष्प लेकर भगवती का निम्न मन्त्र से विसर्जन करना चाहिए-

**गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठे स्वस्थानं परमेश्वरि।**
**पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च।।**

यहाँ पाठ-विधि अति संक्षेप से लिखी गई है। अधिक विस्तार से विधि जानने के लिए हमारे कार्यालय से छपी '**श्रीदुर्गा-सप्तशती**' (**संस्कृत-हिन्दी**) अथवा केवल

हिन्दी भाषा वाली मँगवाकर पढ़ें।

महाशक्ति ही परब्रह्म परमात्मा है, जो विविध रूपों में विभिन्न लीलाएं करती हैं। इन्हीं की शक्ति से ब्रह्मा विश्व की उत्पत्ति करते हैं। इन्हीं की शक्ति से श्री विष्णु सृष्टि का पालन करते हैं। अर्थात् यही सृजन, पालन और संहार करने वाली आद्या पराशक्ति है। सभी देवताओं की कारणभूता सनातनी होने के कारण वह सर्वदेवमयी है। वह विश्वरूपिणी है। वह दुखदारिद्र्या का शमन करने वाली, भवभीति से युक्त व्यक्ति का उद्धार करने वाली, सर्व मन्त्रों की मातृका, सर्व शब्दों की ज्ञानरूपिणी, चिन्मयी, परमानन्द स्वरूपा और समस्त दुराचारों की विध्वंसिका उस शक्ति को पदे-पदे नमस्कार करना चाहिए-

**"तां दुर्गां दुर्गमां देवी दुराचारविघातिनीम्। नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।।"**

## (3) श्रीउपाङ्ग–ललिता व्रत

**तिथि-निर्णय**—यह व्रत अपराह्ण-व्यापिनी आश्विन शुक्ल पंचमी के दिन किया जाता है, क्योंकि यह इस व्रत की पूजा का मुख्य काल है।

**'अत्र (आश्विन शुक्लपंचमी) अपराह्णव्यापिनी ग्राह्या। अपराह्णस्यैव तत्पूजाकालत्वोपपत्तेः।। दिनद्वये कात्स्न्र्येनापराह्ण-व्याप्तौ साम्येन वैषम्येण वापराह्णैक-देशव्याप्तौ च पूर्वैव युग्मवाक्यात्।। परत्रैवापराह्ण-व्याप्तौ परैव।।**

यदि पंचमी तिथि दोनों दिन पूर्णतः अपराह्णकाल को व्याप्त करे अथवा समान या असमान (विषम) रूप से उसके (पंचमी) एकभाग को व्याप्त करे (अर्थात् एक दिन कम-एक दिन अधिक) तो युग्मवाक्य अनुसार यह व्रत पहिले दिन होगा। यदि दोनों दिन अपराह्ण-काल को व्याप्त न करे, तो यह व्रत दूसरे दिन होता है।

**माहात्म्य**—व्रती को चाहिए कि इस दिन अपामार्ग (ऊँगा) के 21 दातुन लेकर **'आयुर्बलमिदम्०'** से एक-एक दातुन करके स्नान करे और सफेद वस्त्र पहनकर सुवर्णमयी उपाङ्गललिता का यथाप्राप्त उपचारों से पूजन करे। रात्रि में चन्द्रोदय होने पर उन्हें अर्घ्य दे करके नक्तव्रत कर दूसरे दिन देवी का विसर्जन करे। इस व्रत की महाराष्ट्र प्रदेश में विशेष प्रसिद्धि है।

## (4) पुस्तकों में सरस्वती आवाहन–पूजन–बलिदान–विसर्जन

आश्विन शुक्ल पक्ष में मूल नक्षत्र से श्रवण पर्यन्त सरस्वती का शयन-व्रत किया जाता है।

**तिथि-निर्णय**—पुस्तकों में सरस्वती देवी का आवाहन, पूजन, बलिदान और विसर्जन आश्विन शुक्लपक्ष में ही क्रम रूप से मूल, पू.षा., उ.षा. और श्रवण नक्षत्रों के प्रथम पाद (चरण) में किया जाता है। यहाँ पूजनादि में आवाहन, पूजन व बलिदान दिन के समय में ही किए जाने चाहिएं, रात्रि में पूजनादि नहीं करने चाहिए। यदि मूल, पू.षा. और उ.षा. नक्षत्र सूर्यास्त से पूर्व तीन मुहूर्त्त व्यापिनी हो, तो इनके प्रथम पाद (चरण) में ही आवाहन, पूजनादि कार्य करें। यदि ये नक्षत्र सूर्यास्त से पूर्व तीन मुहूर्त्त से कम हों और रात्रि (सूर्यास्त के बाद) में प्रथम-वाद विद्यमान् हो, तो दूसरे दिन इन मूलादि नक्षत्रों के द्वितीय आदि किसी भी पाद (चरण) में दिन के समय ही पूजादि करने चाहिए-

**'तत्र मूलस्य प्रथमे पादे सूर्यास्तात् प्राक् त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी सरस्वतिः आवाहनम्।। त्रिमुहूर्त्तन्यूनत्वे रात्रौ वा प्रथमपादसत्त्वे तस्य विशेषवचनं विना ग्राह्यत्वाभावाद् द्वितीयादिपादे परदिने एवावाहनम्। एवं पूर्वाषाढ़ादिनक्षत्रं पूजादौ दिनव्याप्येव ग्राह्यम्।।** (धर्मसिन्धुः)

यहां एक बात और ध्यान देने योग्य है कि सरस्वती विसर्जन श्रवण नक्षत्र के प्रथम पाद (चरण) में ही करना चाहिए, द्वितीयादि चरण में नहीं। चाहे श्रवण का प्रथम पाद रात्रिभाग (सूर्यास्त बाद) में भी चला जाए। इसलिए सरस्वती विसर्जन रात्रि के प्रथम प्रहर पर्यन्त जिसमें श्रवण का प्रथम पाद (चरण) हो, उसमें करना चाहिए-**'विसर्जनं तु श्रवणप्रथमपादे रात्रिभागगतेऽपिकार्यम्, विशेष-वचनात्। तच्च रात्रैः प्रथमप्रहर-पर्यन्तमेव इति भाति।।'** (धर्मसिन्धु)

**करणीय कृत्य**—सप्तमी को पुस्तकादि का पूजन करके सरस्वती का शयन कराये, व्रत में रहे और पठन-पाठन एवं लिखना-लिखाना बंद रखे और सप्तमी (के मूल) से दशमी (के श्रवण) पर्यन्त पुस्तकादि का पूजन करते रहें। पूजन में सरस्वती की स्वर्णमयी, शिलामयी या चित्रमयी जैसी भी मूर्त्ति हो वह चार भुजावाली, सर्वाभरणविभूषित, दो दायें हाथों में पुस्तक और रुद्राक्ष और दो बायें हाथों में वीणा और कमण्डलु धारण किए हुए समान रूप में विराजी हुई हो-इस प्रकार का ध्यान करें।

## (5) महाष्टमी (दुर्गाष्टमी)

आश्विन शुक्ल अष्टमी को देवी की उपासना के अनेक अनुष्ठान होते हैं, इस कारण यह महाष्टमी अथवा दुर्गाष्टमी मानी जाती है।

**तिथि-निर्णय**—यह महाष्टमी सूर्योदय बाद एक घड़ी भी हो, तो इसे नवमी से युक्त ही ग्रहण करना चाहिए-**'अथ महाष्टमी घटिकामात्र-प्यौदयिकी नवमीयुता ग्राह्या।। सप्तमी स्वल्पयुता सर्वथा त्याज्या।।'** सप्तमीयुता अष्टमी का सर्वथा त्याग देनी चाहिए। यदि पहले दिन सप्तमीयुता अष्टमी दूसरे दिन एक घड़ी से कम हो, तभी यह महाष्टमी सप्तमीयुता भी ग्राह्य है। मंगलवार की अष्टमी श्रेष्ठ मानी गई है। यदि पहले दिन अष्टमी षष्टिघटिकात्मिका (६० घड़ी) हो तब दूसरे दिन नवमीयुता को भी छोड़कर पहिले ही दिन इसे ग्रहण करना चाहिए। इसी प्रकार यदि नवमी का क्षय हो, तब भी नवमीयुता को छोड़कर पहिले ही दिन सप्तमीयुता अष्टमी में महाष्टमी मनानी

चाहिए। उत्तरी-भारत में इस '**महाष्टमी**' को '**दुर्गाष्टमी**' कहा जाता है।

महाष्टमी में पुत्रवान् गृहस्थी को उपवास नहीं करना चाहिए-'**उपवासं महाष्टम्यां पुत्रवान्न समाचरेत्**।'-(कालिकापुराण)

कुलाचार से यदि व्रत किया जा रहा हो तो किसी भक्ष्यपदार्थ को छोड़कर किया जा सकता है।

## (6) महानवमी (पूजा, उपवास एवं बलिदान हेतु)

आश्विन शुक्ल नवमी के दिन महानवमी होती है। यह दो प्रकार की है-(1) पूजा एवं उपवास के लिए तथा (2) बलिदान के लिए।

पूजा-उपवास के लिए अष्टमी के दिन (विद्धा) पूर्ण सायंव्यापिनी नवमी 'महानवमी' मानी जाती है। बलिदान के लिए दशमीविद्धा नवमी ली जाती है। परन्तु यदि नवमी अष्टमी वाले दिन सायंकाल के समय सूर्यास्त से पहिले तीन मुहूर्त्त से कम हो तो अगले दिन ही पूजा और उपवास करें।

**'महानवमी तु बलिदान-व्यतिरिक्तविषये पूजोपोषणादौ अष्टमीविद्धा ग्राह्या।। सा च यदि अष्टमी दिने सायं त्रिमुहूर्त्ता स्यात्तदैव ग्राह्या।। त्रिमुहूर्त्त न्यूनत्वे परैव ग्राह्या।। नवमी प्रयुक्त महाबलिदाने तु दशमीविद्धा।।'**

यदि नवमी की वृद्धि हो और दूसरे दिन कुछ मुहूर्त्त हो, तो पहिले दिन पूर्णा नवमी में ही बलिदान होगा।

## (7) नवरात्र-समाप्ति (पारणा)

नवरात्र व्रत की पारणा नवमी एवं दशमी तिथि में करने के परस्पर विरोध वाक्य शास्त्रों से मिलते हैं। परन्तु देवीभागवत् आदि पुराणों में दशमी में ही पारणा का समर्थन किया प्रतीत होता है-'**अथ नवरात्रपारणा-सा च दशम्यां कार्या**।।' क्योंकि नवमी तक नवरात्र व्रत, पूजा करने के दृढ़ शास्त्र प्रमाण मिलते हैं। यथा-

**'तस्मादियं महापुण्या नवमी पापनाशिनी।**
**उपोष्या सुप्रयत्नेन सततं पार्थिवैरिति।।** (भविष्य)

यदि नवमी तिथि की वृद्धि हो तो पहिले नवमी व्रत, पूजा और दूसरी नवमी के दिन नवमी में होम-आदि तथा दशमी तिथि में नवरात्र-पारणा करनी चाहिए।

**कृत्य-कर्म**-आश्विन शुक्ल दशमी के प्रातःकाल में भगवती का यथाविधि पूजन करके नीराजन करें। '**यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः**' से पुष्पाञ्जलि अर्पण करें। '**मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं यदर्चितम्। पूर्णं भवतु तत् सर्वं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।**' से क्षमा-प्रार्थना करके '**ॐ दुर्गायै नमः**' कहकर एक पुष्प ईशान (उत्तर-पूर्व) में छोड़ दें और '**गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देवि चण्डिके। व्रत-स्त्रोतोजलं वृद्ध्यैतिष्ठ गेहे च भूतये।।**' से कलशस्थ देवमूर्त्ति आदि को उठाकर यथास्थान स्थापित करें। यदि मूर्त्ति मृतिका आदि की हो तो उनको गायन-वादन के साथ समीप के जलाशय पर ले जाकर '**दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते। षण्मासेषु व्यतीतेषु पुनरागमनाय वै। इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्योपपादिताम्। रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम्।।**' इन मन्त्रों से मूर्त्ति का विसर्जन करके जल में प्रवेश कराये और सामग्री आदि जल में डाल दे। नवरात्रादि के अवसर में स्थापित देवता के जो कुछ फल-पुष्प-नैवेद्य अथवा उपहारादि अर्पण किया हो वह ब्राह्मण को देना चाहिए, अन्यथा विफल होता है।

## (८) विजयादशमी (दशहरा)

**तिथि-निर्णय**-अपराह्न-व्यापिनी आश्विन शुक्ल दशमी के दिन विजयादशमी (अपराजिता-पूजन) होती है। अतएव दशमी तिथि की अपराह्ण-काल व्याप्ति ही विजयादशमी का मुख्य निर्णायक तत्त्व है। 'ज्योतिर्निबन्ध' का यह वाक्य देखिए-

**'आश्विनस्य सिते पक्षे दशम्यां तारकोदये।**
**स कालो विजयो ज्ञेयः सनकार्याथसिद्धये।।'**

अर्थात् आश्विन शुक्ल दशमी के सायंकाल में तारा उदय होने के समय '**विजयकाल**' रहता है। वह सब कार्यों को सिद्ध करता है।

दशमी तिथि एवं श्रवण नक्षत्र का योग (संयोग) विजयादशमी की तिथि के निर्णय में विशेष निर्णायक तत्त्व हो जाता है। दशमी तिथि व श्रवण नक्षत्र की भिन्न-भिन्न स्थितियों के अनुसार इस पर्व की तिथि (दिन) का निर्णय धर्मसिन्धुकार अनुसार इस प्रकार से है-

(1) यदि दशमी केवल दूसरे दिन ही अपराह्ण-व्यापिनी हो, तो विजयादशी दूसरे दिन ही ग्रहण करें।

(2) यदि दशमी तिथि दोनों दिन अपराह्नव्यापिनी हो और दोनों दिन श्रवणनक्षत्र का अपराह्न-काल में योग हो अथवा न हो, तो विजयादशमी पहिले दिन ग्रहण की जाएगी।

(3) यदि दशमी तिथि दोनों दिन अपराह्न-व्यापिनी न हो अर्थात् अपराह्ण-काल में अविद्यमान हो और दोनों दिन अपराह्ण में श्रवण का योग हो या न हो तो भी विजयादशमी पहिले दिन मनाई जाएगी।

(4) यदि दशमी तिथि दोनों दिन अपराह्नव्यापिनी हो अथवा न हो, तो जिस दिन श्रवण नक्षत्र का योग (विद्यमानता) अपराह्ण-काल में हो, तो विजयादशमी उसी दिन ग्रहण करें, जिस दिन श्रवण नक्षत्र अपराह्न को स्पर्श कर रहा हो।

**(5)** इसी प्रकार यदि दशमी तिथि दोनों दिन अपराह्ण-व्यापिनी हो अथवा दोनों दिन न हो, और श्रवण नक्षत्र दूसरे ही दिन अपराह्ण में विद्यमान हो, तो विजयादशमी दूसरे दिन ग्रहण करें।

**(6)** यदि दशमी केवल पहले दिन ही अपराह्ण-काल को व्याप्त हो और श्रवण नक्षत्र केवल दूसरे दिन ही अपराह्ण-काल में हो, तो विजयादशमी पहले दिन ग्रहण करें।

**(7)** यदि दशमी केवल पहिले दिन ही अपराह्ण-व्यापिनी हो तथा दूसरे दिन त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी हो अर्थात् अपराह्ण से पहले ही समाप्त हो गई हो और केवल दूसरे दिन ही श्रवण-नक्षत्र अपराह्ण-व्यापिनी हो तो विजयादशमी दूसरे दिन ग्रहण करें।

**(8)** यदि दशमी पहले दिन अपराह्णव्यापिनी होकर दूसरे दिन सूर्योदय बाद तीन मुहूर्त्त से कम समय के लिए व्याप्त हो तथा श्रवण नक्षत्र दूसरे दिन ही हो, तब श्रवण नक्षत्र को महत्त्व न देते हुए विजयादशमी पहले दिन ग्रहण करें।

इसके अतिरिक्त 'नारद', स्कन्दपुराण, भविष्यपुराण, तिथि-तत्त्व, व्रत-परिचय, ज्योतिर्निबन्ध के मतानुसार अपराह्ण-व्यापिनी दशमी एवं श्रवणयुक्त तिथि में ही विजयादशमी को मान्यता दी है। विजयादशमी को ही **'दशहरा'** कहा जाता है।

इसीदिन सायंकाल रावण-दहन से पूर्व सीमोल्लंघन तथा अपराजिता-पूजन भी किया जाता है। सीमोल्लंघन के बारे में भी महर्षि कश्यप का मत है कि श्रवणयुक्त दशमी में ही सीमोल्लंघन करना चाहिए, क्योंकि श्रीराम ने श्रवण नक्षत्रयुक्त दशमी में ही लंका पर विजय के लिए अभियान किया था-

**श्रवणर्क्षे तु पूर्णायां काकुत्स्थः प्रस्थितो यतः।**
**उल्लंघयेयुः सीमानं तद्दिनर्क्षे ततो नराः।।** (कश्यप)

भविष्यपुराणानुसार श्रवण नक्षत्रयुक्त दशमी में ही अपराजिता पूजन करना चाहिए। श्रवण के अभाव में मात्र अपराह्ण-व्यापिनी दशमी को ग्रहण करना चाहिए-

**श्रवण सम्भवो तु श्रवण युक्तामेव दशम्यां प्रस्थानंऽपराजिता पूजनं च।।**

कुछ शास्त्रकारों ने नवमीयुक्त दशमी में अपराजिता-पूजन करने का परामर्श दिया है। यथा-**नवमी, शेषसंयुक्तां दशम्यां अपराजिता। ददाति विजयं देवी पूजिता-जयवर्धिनी।।**

अन्येतु- **आश्विन शुक्लपक्षे तु दशम्यां पूज्येत् शिवाम्।**
**एकादश्यां न कुर्वीत पूजनं चापराजितम्।।**-शिव रहस्य

## (9) आश्विन शुक्ल एकादशी व्रत

पापपरायण पुरुषों के पापों को वशवर्त्ती बनाने में आश्विन शुक्ल एकादशी अंकुश के समान है। इसी कारण इसका नाम **'पापांकुशा'** है।

[सङ्कल्प मन्त्र पूर्व एकादशियों की भान्ति रहेगा तथा कथा सार के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित **'एकादशी-माहात्म्य'** देखें।]

**संक्षिप्त माहात्म्य**-यह स्वर्ग और मोक्ष को देने वाली, शरीर को नीरोग रखने वाली, सुन्दरी, सुशीला, स्त्री, सदाचारी पुत्र और सुस्थिर धन देने वाली है। इसदिन में भगवान् का पूजन और रात्रि में उनके सम्मुख जागरण करके दूसरे दिन पूर्वाह्ण में पारण करके व्रत को समाप्त करें।

## (9) कोजागर व्रत

**तिथि-निर्णय**-यह व्रत आश्विन पूर्णिमा में किया जाता है। यह प्रदोष और निशीथ (अर्द्धरात्रि)-उभयव्यापिनी (दोनों में व्याप्त) पूर्णिमा के दिन किया जाता है। यदि पूर्णिमा केवल पहले दिन निशीथव्यापिनी हो और दूसरे दिन प्रदोषव्यापिनी न हो तो पहले दिन ही व्रत करना चाहिए। यदि पूर्णिमा पहले दिन केवल निशीथव्यापिनी और दूसरे दिन केवल प्रदोषव्यापिनी ही हो तो दूसरे दिन ही 'कोजागर व्रत' होगा।

**-सा पूर्वत्रैव निशीथव्याप्तौ पूर्वा।।**

**माहात्म्य**-आश्विन पूर्णिमा को भगवती महालक्ष्मी रात्रि में यह देखने के लिए घूमती है कि कौन जाग रहा है। जो जाग रहा है उसे धन देती है। लक्ष्मी जी के **'को जागर्ति'** कहने से इस व्रत का नाम **'कोजागर'** पड़ा है-

**निशीथे वरदा लक्ष्मी को जागर्तीति भाषिणी।**
**जगति भ्रमते तस्यां लोकचेष्टावलोकिनी।।**
**तस्मै वित्तं प्रयच्छामि यो जागर्ति महीतले।।**

इस व्रत में निशीथव्यापिनी पूर्णिमा ग्रहण करनी चाहिए तथा इन्द्र और महालक्ष्मी का पूजन करके व्रत करना चाहिए। रात्रि के समय घृतपूरित और गन्ध-पुष्पादि से पूजित एक सौ या यथाशक्ति अधिक दीपकों को प्रज्वलित कर देव-मन्दिरों, बाग-बगीचों, तुलसी, अश्वत्थ वृक्षों के नीचे तथा भवनों में रखना चाहिए।

प्रातः होने पर स्नानादि करके इन्द्र का पूजन कर ब्राह्मण को घी-शक्कर मिश्रित खीर का भोजन कराकर वस्त्रादि की दक्षिणा देने से अनन्त फल प्राप्त होता है। इसदिन श्रीसूक्त, लक्ष्मीस्तोत्र का पाठ ब्राह्मण द्वारा कराकर कमलगट्टा, बेल या पञ्चमेवा अथवा खीर द्वारा दशांश हवन कराना चाहिए।

**कथासार**—मगध देश में वलित नामक एक अयाचक व्रती ब्राह्मण था। उसकी पत्नी चण्डी अति कर्कशा थी। वह ब्राह्मण को रोज ताने देती कि मैं किस दरिद्र के घर आ गई हूँ। वह सम्पूर्ण लोक में पति की निन्दा ही किया करती थी। पति के विपरीत आचरण करना ही उसने अपना धर्म बना लिया था। वह पापिनी रोज पति को राजा के यहाँ से चोरी करके धन लाने को उकसाया करती थी।

एक बार श्राद्ध के समय उसने पिण्डों को उठाकर कुएँ में फैंक दिया। इससे अत्यन्त दुःखित होकर ब्राह्मण जंगल में चला गया, जहाँ उसे नागकन्याएँ मिलीं। उस दिन आश्विन मास की पूर्णिमा थी। नाग-कन्याओं ने ब्राह्मण को रात्रिजागरण कर लक्ष्मी जी को प्रसन्न करने वाला 'कोजागर व्रत' करने को कहा। कोजागर व्रत के प्रभाव से ब्राह्मण के पास अतुल धन-सम्पत्ति हो गई। भगवती लक्ष्मी की कृपा से उसकी पत्नी चण्डी की भी मति निर्मल हो गई और वे दम्पत्ति सुखपूर्वक रहने लगे।

## (11) शरद्–पूर्णिमा

**तिथि-निर्णय**—शरद्-पूर्णिमा की तिथि का निर्णय पीछे दिए गए 'कोजागर-व्रत' के निर्णय की भान्ति ही रहेगा। इन दोनों व्रतों के केवल पूजा-विधि में ही अन्तर है।

**माहात्म्य एवं व्रत-विधान**—शरद्-पूर्णिमा की रात्रि में चन्द्रमा की चाँदनी में अमृत का निवास रहता है, इसलिए उसकी किरणों से अमृतत्व और आरोग्य की प्राप्ति सुलभ होती है।

इस दिन प्रातःकाल अपने आराध्य देव को सुन्दर वस्त्राभूषण से सुशोभित करके उनका यथाविधि षोडशोपचार पूजन करना चाहिए। अर्धरात्रि के समय गो-दुग्ध से बनी खीर का भगवान् को भोग लगाना चाहिए। खीर से भरे पात्र को रात में खुली चाँदनी में रखना चाहिए। इसमें रात्रि के समय चन्द्र-किरणों के द्वारा अमृत गिरता है। पूर्ण चन्द्रमा के मध्य आकाश में स्थित होने पर उनका पूजन कर अर्घ्य प्रदान करना चाहिए।

इस दिन काँस्य-पात्र में घी भरकर सुवर्ण सहित ब्राह्मण को दान देने से मनुष्य ओजस्वी होता है। अपराह्न में हाथियों का नीराजन करने का भी विधान है।

भगवान् श्रीकृष्ण ने इसी तिथि को रासलीला की थी। इसलिए व्रज में इस पर्व को विशेष उत्साह के साथ मनाया जाता है। इसे '**रासोत्सव**' या '**कौमुदि-महोत्सव**' भी कहते हैं।

**विशेष**—इसी प्रकार '**कार्तिक कृष्ण पक्ष**' के व्रत, पर्वों का तिथि-निर्णय एवं माहात्म्य, कथा-सार आगामी वर्ष के '**पंचांगदिवाकर**' में दिया जाएगा।

## नव सम्वत्सर का फल और माहात्म्य

भारत की गौरवमयी सभ्यता एवं संस्कृति में **सम्वत्सर** का विशेष महत्त्व है। हिन्दुओं के प्रायः सभी शुभ **संस्कारों ( विवाह-मुण्डनादि )** एवं **मन्त्र-जपादि अनुष्ठानों में संकल्पादि के समय सम्वत् के नाम का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है।** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवीन सम्वत् का प्रारम्भ होता है। सत्ययुग का आरम्भ भी इसी दिन हुआ माना जाता है तथा ब्रह्मा जी ने सृष्टि का आरम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को किया था। ''**चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहनि ( ब्रह्मपुराण )**।'' सम्भवतः इसी कारण **इसे स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त** माना जाता है। इस दिन किए गए जप-दानादि शुभ कर्मों के प्रभाव से वर्ष भर धन-सम्पदा एवं सुख-शान्ति बनी रहती है। संवत् 2081 में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 9 अप्रैल, 2024 ई., मंगलवार से '**कालयुक्त**' नामक नया संवत्सर प्रारम्भ होगा।

**नव सम्वत्सर** के आगमन पर प्रातः तैलाभ्यंग, नित्य कर्मों से निपटकर आसन, पाद्य, अर्घ्य, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप, ताम्बुल, नैवेद्य, फल, आदि से सम्वत्सर पूजन एवं फल श्रवणादि, नवरात्र घट-स्थापन, मिट्टी के पात्र में रखी रेत-मिट्टी में जौं-गेहूँ आदि के बीज बोना, ओंकार सहित श्री गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा-इन पंचदेवों तथा नवग्रहों की स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मणों द्वारा पूजार्चना करवा कर उन्हें क्षीर सहित सात्त्विक भोजन करवाकर उनका '**पंचांगदिवाकर**', सहित यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल एवं धनादि देकर सत्कार करना चाहिए।

पूजन के समय भगवान् ब्रह्मा एवं विष्णु की मूर्तियों के समक्ष पुष्पाक्षत, नैवेद्य, अर्घ्य गंगा जल आदि लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें–

**ॐ ब्रह्मणे नमः से ब्रह्मा जी का आवाहन तथा बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने नमः परमात्म-विष्णुमावाहयामि स्थापयामि च।** फिर सम्वत्सर की मूर्ति अथवा प्रतीक रूप में सुपारी रखकर निम्न मन्त्रों से पूजन एवं प्रार्थना करें–

**''भगवंतस्त्वत्प्रसादेन वर्षं क्षेममिहास्तु मे। संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषतः।''**

**ॐ सम्वत्सराय नमः, चैत्राय नमः, वसन्ताय नमः। आदि नाम-मन्त्रों से पूजन करके विद्वान् ब्राह्मण का अर्चन करें।** तथा क्षीर सहित भोजन करवाकर यथाशक्ति वस्त्र, फलों नया पंचाँग दिवाकर आदि का दान करें।

तदुपरान्त स्वास्ती वाचन, शान्ति पाठ आदि मांगलिक मन्त्रों का पाठ करने के पश्चात् सूर्य देव को ताम्र बर्तन से मन्त्र-पूर्वक तीन बार अर्घ्य देकर **गायत्री मन्त्र** का जाप करना चाहिए। तत्पश्चात् दिवाकर पंचाँग में किसी ब्राह्मण के श्री मुख से **सम्वत् का नाम**, सम्वत् **का वास**, सवारी राजा, **मन्त्री आदि का फल श्रवण करना** चाहिए चैत्र, प्रतिपदा से लेकर नवमी तक भगवान्-विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा के समक्ष नित्य ज्योति जलाकर श्रद्धानुसार श्री दुर्गासप्तशती का जप पाठ करने का विधान है।

➘**चैत्र प्रतिपदा से नवमी तक** प्रतिदिन प्रातः कटु नीम की कोमल पत्तियाँ व पुष्पों का चूर्ण बनाकर, उसमें काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, ईमली, अजवायन, जीरा तथा शक्कर या चीनी बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनाकर भगवान् को भोग लगाकर ग्रहण करने से वर्षभर आरोग्यता बनी रहती है तथा रक्त विकार, त्वचा, कुष्ठ आदि रोगों का भय नहीं रहता॥

# तिथि, नक्षत्र, योग, करणादि के नामों की तालिका व उनके स्वामी

पंचांग में ग्रह गणित, व्रत-त्यौहार आदि विविध विषयों के अतिरिक्त उसके पाँच अंगों का मुख्यतः उल्लेख रहता है। "तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च। यत्रैतत् पंचकं स्पष्टं पंचांग तदुदीरितम्।।" अर्थात् तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण—इन पाँचों के स्पष्ट मान की गणना जिसमें हो, उसे पंचांग कहते हैं।

| तिथियाँ | तिथियों के स्वामी | तिथि नाम |
|---|---|---|
| प्रतिपदा | अग्नि | नन्दा |
| द्वितीया | ब्रह्मा | भद्रा |
| तृतीया | गौरी | जया |
| चतुर्थी | गणेश | रिक्ता |
| पंचमी | सर्प (शेषनाग) | पूर्णा |
| षष्ठी | स्कन्द (कार्तिकेय) | नन्दा |
| सप्तमी | सूर्यदेव | भद्रा |
| अष्टमी | शिवजी | जया |
| नवमी | दुर्गा | रिक्ता |
| दशमी | यम | पूर्णा |
| एकादशी | विश्वेदेवा | नन्दा |
| द्वादशी | श्रीविष्णु | भद्रा |
| त्रयोदशी | कामदेव | जया |
| चतुर्दशी | शिवजी | रिक्ता |
| पूर्णिमा | चन्द्रमा | पूर्णा |
| अमावस्या | पितर | पूर्णा |

| नक्षत्र | देवता | स्वामी ग्रह |
|---|---|---|
| 1. अश्विनी | अश्विनी कुमार | केतु |
| 2. भरणी | यम | शुक्र |
| 3. कृतिका | अग्नि | सूर्य |
| 4. रोहिणी | ब्रह्मा | चन्द्र |
| 5. मृगशिर | चन्द्रमा | मंगल |
| 6. आर्द्रा | रुद्र (शिव) | राहु |
| 7. पुनर्वसु | आदित्य | गुरु |
| 8. पुष्य | बृहस्पति | शनि |
| 9. आश्लेषा | सर्प | बुध |
| 10. मघा | पितर | केतु |
| 11. पूर्वाफाल्गुनी | भग | शुक्र |
| 12. उत्तराफाल्गुनी | अर्यमा | सूर्य |
| 13. हस्त | सूर्य | चन्द्र |
| 14. चित्रा | विश्वकर्मा | मंगल |
| 15. स्वाती | वायु | राहु |
| 16. विशाखा | इन्द्राग्नि | गुरु |
| 17. अनुराधा | मित्र (सूर्य) | शनि |
| 18. ज्येष्ठा | इन्द्र | बुध |
| 19. मूल | निर्ऋति (राक्षस) | केतु |
| 20. पूर्वाषाढ़ा | जल | शुक्र |
| 21. उत्तराषाढ़ा | विश्व देवा | सूर्य |
| 22. अभिजित | ब्रह्मा | सूर्य/चं. |
| 23. श्रवण | विष्णु | चन्द्र |
| 24. धनिष्ठा | वसु | मंगल |
| 25. शतभिषा | वरुण | राहु |
| 26. पूर्वाभाद्रपद | अजैकपाद | गुरु |
| 27. उत्तराभाद्रपद | अहिर्बुध्य | शनि |
| 28. रेवती | पूषा | बुध |

| योग | स्वामी | शुभ-अशुभ |
|---|---|---|
| 1. विष्कम्भ | यम | अशुभ |
| 2. प्रीति | विष्णु | शुभ |
| 3. आयुष्मान | चन्द्र | शुभ |
| 4. सौभाग्य | ब्रह्मा | शुभ |
| 5. शोभन | बृहस्पति | शुभ |
| 6. अतिगण्ड | चन्द्र | अशुभ |
| 7. सुकर्मा | इन्द्र | शुभ |
| 8. धृति | जल | शुभ |
| 9. शूल | सर्प | अशुभ |
| 10. गण्ड | अग्नि | अशुभ |
| 11. वृद्धि | सूर्य | शुभ |
| 12. ध्रुव | भूमि | शुभ |
| 13. व्याघात | वायु | अशुभ |
| 14. हर्षण | भग | शुभ |
| 15. वज्र | वरुण | अशुभ |
| 16. सिद्धि | गणेश | शुभ |
| 17. व्यतीपात | रूद्र | अशुभ |
| 18. वरीयान | कुबेर | शुभ |
| 19. परिघ | विश्वकर्मा | अशुभ |
| 20. शिव | मित्र | शुभ |
| 21. सिद्ध | कार्तिकेय | शुभ |
| 22. साध्य | सावित्री | शुभ |
| 23. शुभ | लक्ष्मी | शुभ |
| 24. शुक्ल | पार्वती | शुभ |
| 25. ब्रह्म | अश्विनी कु. | शुभ |
| 26. ऐन्द्र | पितर | अशुभ |
| 27. वैधृति | दिति | अशुभ |

विष्कम्भ की प्रथम 3 घड़ियां, व्याघात-वज्र की प्रथम 9 घड़ियां, परिघ-योग का पूर्वार्द्ध (7½ घटियां), शूल की प्रथम 5, गण्ड-अतिगण्ड की प्रथम 9 घड़ियां ही विशेषतया त्याज्य तथा वैधृति-व्यतिपात का सम्पूर्ण काल त्याज्य माना गया है।

## करण नाम

| तिथि | शुक्लपक्ष | | तिथि | कृष्णपक्ष | |
|---|---|---|---|---|---|
| | पूर्वार्द्ध | उत्तरार्द्ध | | पूर्वार्द्ध | उत्तरार्द्ध |
| प्रतिपदा | किंस्तुघ्न | बव | प्रतिपदा | बालव | कौलव |
| द्वितीया | बालव | कौलव | द्वितीया | तैतिल | गर |
| तृतीया | तैतिल | गर | तृतीया | वणिज | विष्टि |
| चतुर्थी | वणिज | विष्टि | चतुर्थी | बव | बालव |
| पंचमी | बव | बालव | पंचमी | कौलव | तैतिल |
| षष्ठी | कौलव | तैतिल | षष्ठी | गर | वणिज |
| सप्तमी | गर | वणिज | सप्तमी | विष्टि | बव |
| अष्टमी | विष्टि | बव | अष्टमी | बालव | कौलव |
| नवमी | बालव | कौलव | नवमी | तैतिल | गर |
| दशमी | तैतिल | गर | दशमी | वणिज | विष्टि |
| एकादशी | वणिज | विष्टि | एकादशी | बव | बालव |
| द्वादशी | बव | बालव | द्वादशी | कौलव | तैतिल |
| त्रयोदशी | कौलव | तैतिल | त्रयोदशी | गर | वणिज |
| चतुर्दशी | गर | वणिज | चतुर्दशी | विष्टि | शकुनि |
| पूर्णिमा | विष्टि | बव | अमावस | चतुष्पद | नाग |

| करणों के स्वामी | | | करणों में उपादेय कर्म |
|---|---|---|---|
| चरकरण | बव | इन्द्र | पौष्टिक कर्म। |
| | बालव | ब्रह्मा | स्वाध्याय, यज्ञ, दानादि धार्मिक कृत्य। |
| | कौलव | मित्र | मैत्रीकरण एवं स्त्रीकर्म। |
| | तैतिल | विश्व | सौभाग्यवती स्त्री के प्रिय कर्म। |
| | गर | भूमि | हल, प्रवहरण व बीजारोपण। |
| | वणिज | लक्ष्मी | व्यापार करना। |
| | विष्टि | यम | भद्रा में अग्नि, युद्ध, विषादि, क्रूर कर्म। |
| स्थिर करण | शकुनि | कलियु. | मंत्र-साधना, पितृकर्म, औषध कर्मादि। |
| | चतुष्पद | रुद्र | राज्य प्रशासनिक कर्म, पितृकर्म। |
| | नाग | सर्प | विषादि रसायानिक कर्म, पितृादि कर्म। |
| | किंस्तुघ्न | मरुत् | मांगलिक कर्म। |

## वि. संवत् २०८१, चैत्र शुक्ल पक्ष शाक: १९४६

### सन् 2024 ई. (ता. 9 से 23 अप्रैल तक), हिजरी सन् 1445 सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतु:

प्रातः शुक्र पूर्वी क्षितिज में दिखाई देगा, ता. 20 से बुध भी इससे नीचे दिखाई देने लगेगा। मंगल–शनि इनसे कुछ ऊपर दिखाई देंगे। सायंकाल गुरु पश्चिम–क्षितिज में दृश्यमान होगा।

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घड़ी पल | नक्षत्र | समाप्तिकाल घड़ी पल | योग | समाप्तिकाल घड़ी पल | करण | समाप्तिकाल घड़ी पल | तारीखें चैत्र शक | रमज़ान मु. | अप्रैल | चैत्र प्रवि. | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३१:३५ | १ | मंग | ३५:५५ | रेव.<br>अश्वि | ३ २५<br>५७ २३ | वैधृ | २०:२० | किं | १०:३२ | 20 | 29 | 9 | २७ | मे.३:२५ | ‘कालयुक्त’ नाम नव वि. संवत् २०८१ प्रारम्भ, चैत्र (वासन्त) (A) | ११:२५:२७:५३ | 6:10 | 18:48 |
| ३१:४० | २ | बुध | २८:३० | भर. | ५२:२३ | विष्क | ११:१० | बा | २:१३ | 21 | 30 | 10 | २८ | मेष | चन्द्रदर्शन, मु. १५, मंगल पू.भा. में १२:२८ | ११:२६:२६:४८ | 6:09 | 18:49 |
| ३१:४५ | ३ | गुरु | २२:२० | कृति. | ४८:४५ | प्रीति<br>आयु | २ ५८<br>५५ ५३ | ग | २२:२० | 22 | श. | 11 | २९ | वृ.६:२० | भ. ५०:०२ से, गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, आन्दोलन तृतीया,(B) | ११:२७:२५:४१ | 6:08 | 18:50 |
| ३१:४८ | ४ | शुक्र | १७:४३ | रोहि. | ४६:५० | सौभा | ५०:१५ | वि | १७:४३ | 23 | 2 | 12 | ३० | वृष | भ. १७:४३ तक, दमनक चतुर्थी, श्री (लक्ष्मी) पंचमी (देखें पृष्ठ 21),हय–व्रत | ११:२८:२४:३२ | 6:07 | 18:50 |
| ३१:५३ | ५ | शनि | १४:४८ | मृग. | ४६:४८ | शोभ | ४६:१० | बा | १४:५८ | 24 | 3 | 13 | वै. | मि.१६:३५ | सूर्य अश्वि. १ मेष में ३७:२५ (21:04), वैशाख संक्रान्ति, मु. ३० (C) | ११:२९:२३:१९ | 6:06 | 18:51 |
| ३१:५८ | ६ | रवि | १४:०८ | आर्द्रा | ४८:४५ | अति | ४३:४० | तै | १४:०८ | 25 | 4 | 14 | २ | मिथुन | (D)(जम्मू)–काँगड़ादेवी–नैनादेवी (हि.प्र.), अन्नपूर्णा पूजन | ००:००:२२:०६ | 6:05 | 18:52 |
| ३२:०३ | ७ | चन्द्र | १५:२३ | पुन. | ५२:३८ | सुक | ४२:४३ | व | १५:२३ | 26 | 5 | 15 | ३ | क.३६:३० | भ. १५:२३ से ४६:५६ तक, अशोककलिका प्राशन, अशोकाष्टमी (पुनर्वसुयुता) | ००:०१:२०:४७ | 6:03 | 18:52 |
| ३२:०८ | ८ | मंग | १८:२८ | पुष्य | ५८:०५ | धृति | ४३:०५ | ब | १८:२८ | 27 | 6 | 16 | ४ | कर्क | श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, गुरु कृति.१ में ५०:०३ (26:03), मेला बाहूफोर्ट(D) | ००:०२:१९:२९ | 6:02 | 18:53 |
| ३२:१३ | ९ | बुध | २३:०५ | आश्ले | ६०:०० | शूल | ४४:३५ | कौ | २३:०५ | 28 | 7 | 17 | ५ | कर्क | श्रीदुर्गा–नवमी, नवरात्र–समाप्त, श्रीरामनवमी, गण्डमूल | ००:०३:१८:०८ | 6:01 | 18:54 |
| ३२:१५ | १० | गुरु | २८:५० | आश्ले | ४:५३ | गण्ड | ४६:४८ | ग | २८:५० | 29 | 8 | 18 | ६ | सिं.४:५३ | नवरात्र व्रत पारणा, गण्डमूल विचार | ००:०४:१६:४५ | 6:00 | 18:54 |
| ३२:२० | ११ | शुक्र | ३५:१५ | मघा | १२:२५ | वृद्धि | ४९:५० | व | २:०३ | 30 | 9 | 19 | ७ | सिंह | भ. २:०३ से ३५:१५ तक, कामदा एकादशी, व्रत, लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव,(E) | ००:०५:१५:२० | 5:59 | 18:55 |
| ३२:२५ | १२ | शनि | ४१:५० | पू.फा. | २०:१५ | ध्रुव | ५२:०३ | ब | ८:३३ | 31 | 10 | 20 | ८ | कं.३७:१३ | श्रीविष्णु दमनोत्सव, अगस्त्य–अस्त | ००:०६:१३:५३ | 5:58 | 18:56 |
| ३२:२८ | १३ | रवि | ४८:०८ | उ.फा. | २७:५८ | व्या. | ५४:२८ | कौ | १४:५९ | वै. | 11 | 21 | ९ | कन्या | प्रदोष व्रत, अनङ्ग–त्रयोदशी, श्रीमहावीर–जयन्ती (जैन), शक वैशाख प्रारम्भ+ | ००:०७:१२:२३ | 5:57 | 18:56 |
| ३२:३३ | १४ | चन्द्र | ५३:४५ | हस्त | ३५:१० | हर्ष | ५६:२० | ग | २०:५७ | 2 | 12 | 22 | १० | कन्या | भ. ५३:४५ से, श्रीशिव–दमनोत्सव +शुक्र वार्धक्य दोष प्रारम्भ 5:58 | ००:०८:१०:५२ | 5:56 | 18:57 |
| ३२:३८ | १५ | मंग | ५८:३० | चित्रा | ४१:३३ | वज्र | ५७:३३ | वि | २६:०८ | 3 | 13 | 23 | ११ | तु.८:३० | भ. २६:०८ तक, चैत्र पूर्णिमा, वैशाखस्नान प्रारम्भ, मंगल मीन में ६:४८(F) | ००:०९:०९:१८ | 5:55 | 18:58 |

(A) नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन, पंचक समाप्त ३:२५ (7:32), वक्री बुध रेव. 4 मीन में ३८:२० (21:30), संवत्सरफल–श्रवण, ध्वजारोहण, तैलाभ्यंग, श्रीदुर्गा–पूजा, गुड़ी–पड़वा, गण्डमूल 29:07 तक, (B) शव्वाल (मु.) मास प्रारम्भ (C) पुण्यकाल सं. मध्याह्न–बाद, मेला वैशाखी (पंजाब), शुक्र रेवती में ५६:०५ (28:32), नाग पंचमी, स्कन्द षष्ठी व्रत (देखें पृष्ठ 21) (E) सूर्य सायन वृष में ३३:४८, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, वक्री बुध पूर्व में उदय 19:02 (F) (8:38), श्रीहनुमान–जयन्ती (दक्षिण–भारत)

**भौमे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 16 अप्रैल**

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ३ | १० | ११ | ० | ११ | १० | ११ | ५ |
| २ | ४ | २४ | २५ | २६ | १९ | २१ | २१ | २१ |
| १८ | ३४ | २८ | २२ | २८ | ११ | ०१ | ४ | ४ |
| १० | ३३ | ३५ | ०२ | २१ | ०३ | ०८ | १२ | १२ |
| 58<br>42 | 732<br>44 | 46<br>32 | 39<br>52 | 13<br>36 | 74<br>2 | 6<br>5 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| अश्वि<br>१ | पुष्य<br>१ | पूभा<br>२ | रेव<br>३ | भर.<br>४ | रेव<br>१ | पूभा<br>१ | रेव<br>२ | हस्त<br>४ |
| ० | ० | मा | व | मा | मा | मा | व | व |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ |
| उच्च | स्व. | सम | नीच | मित्र | उच्च | स्व. | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 16 अप्रै.

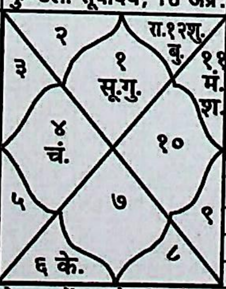

**भौमे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 23 अप्रैल**

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ५ | १० | ११ | ० | ११ | १० | ११ | ५ |
| ९ | २८ | २९ | २२ | २८ | २७ | २१ | २० | २० |
| ८ | ५ | ५३ | ३ | ४ | ४९ | ४२ | ४१ | ४१ |
| १७ | २६ | ५६ | १६ | १८ | ६ | ३७ | ५७ | ५७ |
| 58<br>27 | 726<br>38 | 46<br>24 | 10<br>12 | 13<br>50 | 73<br>58 | 5<br>42 | 3<br>10 | 3<br>10 |
| अश्वि<br>३ | चित्रा<br>२ | पूभा<br>३ | रेव<br>२ | कृति<br>१ | रेव.<br>४ | पूभा<br>१ | रेव<br>२ | हस्त<br>४ |
| ० | ० | मा | व | मा | मा | मा | व | व |
| ० | उ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ |
| उच्च | मित्र | सम | नीच | मित्र | उच्च | स्व. | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 23 अप्रैल

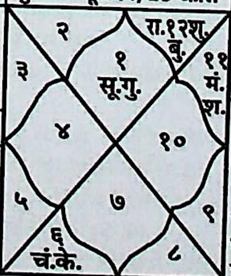

**चैत्र शुक्ल पक्षफल–**

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (9 अप्रैल, मंगलवार) से ‘शिवविंशति’ का ‘कालयुक्त’ नाम का नया वि. संवत् 2081 प्रारम्भ होगा। आगामी संवत्काल में व्रतानुष्ठान, होम–दानादि शुभ कार्यों के संकल्पादि में इसी नाम का प्रयोग होगा। नव सम्वत् का राजा मंगल और मन्त्री शनि होगा। परस्पर विरुद्ध तथा क्रूर ग्रहों के प्रभावस्वरूप समाज एवं देश के विभिन्न वर्गों में परस्पर विरोध, आवेश व क्रोध के कारण हिंसक तथा उपद्रव की घटनाएँ अधिक होंगी। राजनेताओं के मध्य भी टकराव, अपशब्द एवं टकराव अधिक बढ़ेगा। लोगों में क्लिष्ट रोगभय, चोरी, डकैती, पित्त–रोगों की बहुलता, भीषण अग्निकाण्ड तथा वाहन दुर्घटनाएँ अधिक होंगी। धार्मिक कृत्य– प्रतिपदा को प्रातः लगभग 10 बजे तक अथवा अभिजित् मुहूर्त्त में श्रीदुर्गा मूर्त्ति के सम्मुख नारियल सहित घटस्थापन करके अखण्ड दीप मन्त्रपूर्वक प्रज्वलित करके श्रीदुर्गा–सप्तशती का संकल्पपूर्वक पाठ करने का विधान है। प्रतिपदा को ही समृद्धि के प्रतीक मिट्टी के पात्र में शुद्ध रेत/मिट्टी डालकर जौं के बीज बोकर, शुद्ध जल के छींटे डालकर मंगलमन्त्र पढ़ने चाहिएं। इसीदिन ब्राह्मणमुख द्वारा नवसंवत्सर का पूजन, संवत् का नाम एवं राजा–मन्त्री का फल श्रवण करके ब्राह्मण को यथाशक्ति नया पंचांग, धर्मग्रन्थ, फल, मिष्ठान्न, दक्षिणा सहित दान करना चाहिए। इसीदिन ध्वजारोहण करने का भी विधान है। **वैशाख संक्रान्ति**—ता. 13 अप्रैल, शनिवार को रात्रि 9 बजकर 04 मिंट पर तुला लग्न में प्रवेश करेगी। (३०) मु. इस सं. का पुण्यकाल दोपहर 14:40 से प्रारम्भ होगा। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार मन्दाकिनी नामक यह सं. बेईमान तथा राजनेताओं के लिए सुखकर एवं लाभदायक रहेगी। शनिवारी सं. तथा चैत्रमास में 5 मंगलवार होने से भी देश में कहीं हिंसक–घटनाएँ अथवा युद्धभय, साम्प्रदायिक दंगे, उपद्रव व कहीं छत्रभंग (सत्ता–परिवर्तन) के योग बनते हैं।

**आकाश लक्षण**—चैत्र शु. १ एवं ८ को मंगलवार होने से हि.प्र., पंजाब, ज.का. आदि उत्तरी भारत में खण्ड एवं अल्प वर्षा के योग हैं। टिड्डी–दल से कृषि को हानि का भय रहे।

## वि. संवत् २०८१, वैशाख कृष्ण पक्ष शाक: १९४६

सन् 2024 ई. (ता. 24 अप्रैल से 8 मई तक), हिजरी सन् 1445
**सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:**

24 अप्रै. को शुक्र पूर्व में अस्त हो जाएगा। प्रातः बुध पूर्व–क्षितिज में, उससे ऊपर मंगल तथा उससे भी ऊपर शनि दृश्य होगा। सायं पश्चिम–क्षितिज में दृश्य गुरु 6 मई से अस्त हो जाएगा।

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घटी पल | नक्षत्र | समाप्तिकाल घटी पल | योग | समाप्तिकाल घटी पल | करण | समाप्तिकाल घटी पल | तारीखें वैशा. राष्ट्री. | तारीखें शव्वाल मुं. | तारीखें अप्रैल अं. | तारीखें वैशा. प्रवि. | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं.मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३२:४३ | १ | बुध | ६०:०० | स्वा. | ४६:५८ | सिद्धि | ५७:५८ | बा | ३०:२२ | 4 | 14 | 24 | १२ | तुला | **शुक्र अश्वि. १ मेष में. ४५:१० (23:58), शुक्र पूर्व में अस्त 5:56** | ०:१०:०७:४२ | 5:54 | 18:58 |
| ३२:४५ | १ | गुरु | २:१३ | विशा. | ५२:०८ | व्य. | ५७:३० | कौ | २:१३ | 5 | 15 | 25 | १३ | वृ.३५:२० | **बुध मार्गी ३१:१८ ( 18:24 )** | ०:११:०६:०५ | 5:53 | 18:59 |
| ३२:५० | २ | शुक्र | ४:४८ | अनु. | ५४:३० | वरी | ५६:०८ | ग | ४:४८ | 6 | 16 | 26 | १४ | वृश्चिक | भ. ३५:२९ से, गण्डमूल 27:40 से | ०:१२:०४:२६ | 5:52 | 19:00 |
| ३२:५३ | ३ | शनि | ६:१० | ज्ये. | ५६:३३ | परि. | ५३:५० | वि | ६:१० | 7 | 17 | 27 | १५ | ध.५६:३३ | भ. ६:१० तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), सूर्य भर. में १७:४३**(A)** | ०:१३:०२:४६ | 5:51 | 19:00 |
| ३२:५८ | ४ | रवि | ६:२० | मूल | ५७:२८ | शिव | ५०:४० | बा | ६:२० | 8 | 18 | 28 | १६ | धनु | सती अनुसूइया जयन्ती, गण्डमूल 28:49 तक, स.सि.यो. | ०:१४:०१:०३ | 5:50 | 19:01 |
| ३३:०३ | ५ | चन्द्र | ५:२३ | पू.षा. | ५७:१५ | सिद्ध | ४६:३३ | तै | ५:२३ | 9 | 19 | 29 | १७ | धनु | | ०:१४:५९:१९ | 5:49 | 19:02 |
| ३३:०८ | ६ | मंग | ३:१५ | उ.षा. | ५५:५३ | साध्य | ४१:३० | व | ३:१५ | 10 | 20 | 30 | १८ | म.१२:०३ | भ. ३:१५ से ३१:३५ तक, त्रिपुष्कर योग (7:06 से 28:09) | ०:१५:५७:३३ | 5:48 | 19:03 |
| अवम् | ७ | मंग | ५९:५५ | ०० | ०० | ०० | ० | ० | ०० | ० | 0 | 00 | ० | ०० | **सप्तमी तिथि का क्षय** ०० ०० | ० ० ० ० | ०० | ०० |
| ३३:१० | ८ | बुध | ५५:३८ | श्रव. | ५३:३० | शुभ | ३५:३५ | बा | २७:४७ | 11 | 21 | मई | १९ | मकर | **गुरु कृति २ वृष में १७:५५** (12:57), मई मास प्रारम्भ, श्रम दिवस | ०:१६:५५:४६ | 5:47 | 19:03 |
| ३३:१५ | ९ | गुरु | ५०:२० | धनि. | ५०:०८ | शुक्ल | २८:५३ | तै | २२:५९ | 12 | 22 | 2 | २० | कुं.२१:५८ | **पंचक प्रारम्भ २१:५८** (14:33), प्लूटो वक्री 23:05 | ०:१७:५३:५९ | 5:46 | 19:04 |
| ३३:२० | १० | शुक्र | ४४:१० | शत. | ४५:५३ | ब्रह्म | २१:२५ | व | १७:१५ | 13 | 23 | 3 | २१ | कुम्भ | भ. १७:१५ से ४४:१० तक, | ०:१८:५२:०८ | 5:45 | 19:05 |
| ३३:२३ | ११ | शनि | ३७:१८ | पू.भा. | ४०:५८ | ऐन्द्र | १३:१८ | ब | १०:१४ | 14 | 24 | 4 | २२ | मी.२७:१५ | **वरूथिनी एकादशी व्रत**, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती | ०:१९:५०:१७ | 5:44 | 19:05 |
| ३३:२८ | १२ | रवि | २९:५८ | उ.भा. | ३५:३५ | वैधृ<br>विष्क | ४ ५५<br>५५ ५० | कौ | ३:३८ | 15 | 25 | 5 | २३ | मीन | **प्रदोष व्रत**, शुक्र भर. में ३४:५५ (19:41), गण्डमूल 19:57 से, स.सि.यो. | ०:२०:४८:२३ | 5:43 | 19:06 |
| ३३:३३ | १३ | चन्द्र | २२:२८ | रेव. | ३०:०३ | प्रीति | ४६:५५ | व | २२:२८ | 16 | 26 | 6 | २४ | मे.३०:०३ | भ. २२:२८ से ४८:४४ तक, **पंचक समाप्त ३०:०३** (17:43), **(B)** | ०:२१:४६:३० | 5:42 | 19:07 |
| ३३:३५ | १४ | मंग | १५:०० | अश्वि. | २४:३८ | आयु | ३८:१५ | श | १५:०० | 17 | 27 | 7 | २५ | मेष | पितृकार्येषु अमावस, श्रीटैगोर जयन्ती, गण्डमूल 15:32 तक | ०:२२:४४:३४ | 5:41 | 19:07 |
| ३३:३८ | ३० | बुध | ७:५८ | भर. | १९:४३ | सौभा | ३०:०० | ना | ७:५८ | 18 | 28 | 8 | २६ | वृ.३३:३५ | **वैशाख अमावस** (स्नानदानादि), मेला पिंजौर (कालका, हरियाणा) | ०:२३:४२:३९ | 5:41 | 19:08 |

शुक्र अस्त
24 अप्रैल

गुरु अस्त
6 मई

**(A)** (12:56), मंगल उ.भा. में २५:४८ (16:10), गण्डमूल **(B) गुरु पश्चिम में अस्त 19:06**, राहु. रेवती १–केतु हस्त ३ में ११:२० (10:14)

### बुधे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 1 मई

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ९ | ११ | ११ | ० | ० | १० | ११ | ५ |
| १६ | १० | ६ | २२ | २९ | ७ | २२ | २० | २० |
| ५५ | ४६ | ४ | ५९ | ५५ | ४० | २६ | १६ | १६ |
| ५ | २४ | ३४ | १ | ३९ | ३९ | ३३ | ३२ | ३२ |
| 58<br>15 | 835<br>6 | 46<br>13 | 27<br>50 | 14<br>1 | 73<br>55 | 5<br>12 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| भर.<br>२ | श्रव.<br>१ | उभा<br>१ | रेव<br>२ | कृति<br>१ | अश्वि<br>३ | पूभा<br>१ | रेव<br>२ | हस्त<br>४ |
| ० | ० | मा | मा | मा | मा | मा | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | अ | उ | अ | अ |
| उच्च | सम | मित्र | नीच | मित्र | सम | स्व. | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 1 मई

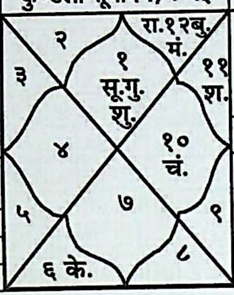

### बुधे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 8 मई

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ११ | ११ | १ | ० | १० | ११ | ५ |
| २३ | २१ | ११ | २७ | १ | १६ | २३ | १९ | १९ |
| ४२ | ४८ | २७ | ३६ | ३४ | १७ | १ | ५४ | ५४ |
| १२ | ३३ | ३४ | ४ | ७ | ५८ | ३४ | १६ | १६ |
| 58<br>4 | 863<br>22 | 46<br>1 | 53<br>51 | 14<br>7 | 73<br>52 | 4<br>43 | 3<br>10 | 3<br>10 |
| भर.<br>४ | भर.<br>३ | उभा<br>३ | रेव<br>४ | कृति<br>२ | भर.<br>१ | पूभा<br>१ | रेव<br>१ | हस्त<br>३ |
| ० | ० | मा | मा | मा | मा | मा | व | व |
| ० | ० | उ | उ | अ | अ | उ | अ | अ |
| उच्च | सम | मित्र | नीच | शत्रु | सम | स्व. | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 8 मई

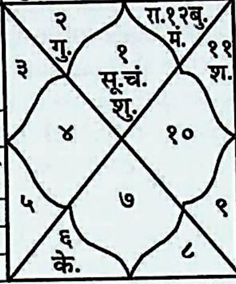

### वैशाख कृष्ण पक्षफल–

चैत्र पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा पर्यन्त वैशाख मास का विशेष माहात्म्य माना जाता है। इस मास में प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय से पूर्व किसी तीर्थस्थान अथवा अपने निवास पर ही गंगाजल मिश्रित पवित्र जल से स्नान करके भगवान् लक्ष्मीनारायण का तुलसीदल सहित पूजार्चन करके नित्य श्रीविष्णु सहस्रनाम, वैशाख माहात्म्य तथा **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** आदि नाम मन्त्रों तथा **'पापप्रशमन स्तोत्र'** का पाठ करना चाहिए। वै. पूर्णिमा को ब्राह्मण को यथाशक्ति वस्त्र, मौसमी फल, अनाजादि का दान करने से सौभाग्य एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है।

**ग्रह–गोचर**–पक्षारम्भ से मेष (उच्च) राशिस्थ सूर्य पर शनि की नीच दृष्टि पड़ रही है। राजनैतिक वातावरण अशान्त, तनावपूर्ण तथा असमंजसपूर्ण रहेगा। सत्तारूढ़ व विपक्षी दलों के नेताओं में परस्पर टकराव व खींचातानी बढ़ेगी। राजनीतिक भाषा का स्तर निम्न तथा विषाक्त होगा। इसी पक्ष में मीन राशि में मंगल-बुध-राहु योग रहने से तथा 1 मई से गुरु वृष (शत्रु) राशिगत रहने से दैनिक उपयोगी वस्तुओं, सरसों, चीनी तथा अनाज की कीमतों में आशातीत वृद्धि होगी। चान्द्र वैशाख मास में पाँच बुधवार तथा पाँच बृहस्पतिवार होने से देश के पश्चिमी क्षेत्रों में (कश्मीर, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, गुजरात आदि प्रदेशों) कहीं उपद्रव, विस्फोट, साम्प्रदायिक एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं। पाँच बुधवार आने से आगामी तीन मास तक ज़बरदस्त महँगाई हो। विशेषकर गन्ना, तेल, दूध आदि रसदार वस्तुओं के भावों में आशातीत तेज़ी हो। **आकाश–लक्षण**–इस पक्ष में गर्मी का प्रभाव बढ़ने लगेगा। पूर्वार्द्ध में उत्तरी एवं पहाड़ी क्षेत्रों में तेज़ हवाओं के साथ वर्षा के योग हैं।

## वि. संवत् २०८१, वैशाख शुक्ल पक्ष शाक: १९४६

### सन् 2024 ई. (ता. 9 से 23 मई तक), हिजरी सन् 1445
### सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

प्रातःकाल बुध पूर्वक्षितिज पर उदय होते दिखेंगे। मंगल इससे ऊपर तथा शनि पूर्व-कपाल में दिखेगा। गुरु-शुक्र अस्त हैं।

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घटी पल | नक्षत्र | समाप्तिकाल घटी पल | योग | समाप्तिकाल घटी पल | करण | समाप्तिकाल घटी पल | तारीखें वैशा. शक | तारीखें शव्वाल मु. | तारीखें मई | तारीखें वैशा. प्र. | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल | | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं.मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३३:४३ | १ | गुरु | १:४५ | कृति. | १५:४० | शोभ | २२:३३ | ब | १:४५ | 19 | 29 | 9 | २७ | वृष | चन्द्रदर्शन, मु. ४५, श्रीशिवाजी-जयन्ती | ०:२४:४०:४० | 5:40 | 19:09 |
| अवम् | २ | गुरु | ५६:३५ | ०० | ०:० | ० | ०:० | ० | ०:० | ० | 0 | 0 | ० | ०० | द्वितीया तिथि का क्षय ०० ०० | ०:००:००:०० | ०:०० | ०:०० |
| ३३:४५ | ३ | शुक्र | ५३:०० | रोहि. | १२:५० | अति | १६:०८ | तै | २४:४८ | 20 | जि | 10 | २८ | मि.४१:५८ | अक्षय-तृतीया, भगवान् परशुराम जयन्ती, बुध अश्वि. १ मेष में ३२:४०(A) | ०:२५:३८:४० | 5:39 | 19:09 |
| ३३:५० | ४ | शनि | ५१:०८ | मृग. | ११:३३ | सुक | ११:०३ | व | २२:०४ | 21 | 2 | 11 | २९ | मिथुन | भ. २२:०४ से ५१:०८ तक, सूर्य कृतिका में ३:३०, शनि पू.भा. २ में (B) | ०:२६:३६:३७ | 5:38 | 19:10 |
| ३३:५३ | ५ | रवि | ५१:०५ | आर्द्रा | १२:०३ | धृति | ७:१८ | ब | २१:०७ | 22 | 3 | 12 | ३० | क.५८:३८ | आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती | ०:२७:३४:३५ | 5:38 | 19:11 |
| ३३:५५ | ६ | चन्द्र | ५३:०५ | पुन. | १४:२८ | शूल | ५:१० | कौ | २२:०५ | 23 | 4 | 13 | ३१ | कर्क | श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती | ०:२८:३२:३० | 5:37 | 19:11 |
| ३४:०० | ७ | मंग | ५६:५० | पुष्य | १८:४३ | गण्ड | ४:३३ | ग | २४:५८ | 24 | 5 | 14 | ज्ये | कर्क | भ. ५६:५० से, श्रीगङ्गा-जयन्ती, सूर्य वृष में ३०:४५ (17:54), (C) | ०:२९:३०:२१ | 5:36 | 19:12 |
| ३४:०३ | ८ | बुध | ६०:०० | आश्ले | २४:३३ | वृद्धि | ५:१३ | वि | २९:२५ | 25 | 6 | 15 | २ | सिं.२४:३३ | भ. २९:२५ तक, गुरु कृति. ३ में २६:३०, श्रीदुर्गाष्टमी, गण्डमूल | १:००:२८:१४ | 5:36 | 19:13 |
| ३४:०८ | ८ | गुरु | २:०० | मघा | ३१:३८ | ध्रुव | ७:०० | ब | २:०० | 26 | 7 | 16 | ३ | सिंह | जानकी ( सीता ) जयन्ती (देखें पृष्ठ 21), शुक्र कृति. में २५:१३, (D) | १:०१:२६:०४ | 5:35 | 19:14 |
| ३४:१० | ९ | शुक्र | ८:०८ | पू.फा. | ३९:२० | व्या. | ९:२८ | कौ | ८:०८ | 27 | 8 | 17 | ४ | कं.५६:१८ | | १:०२:२३:५१ | 5:34 | 19:14 |
| ३४:१३ | १० | शनि | १४:३३ | उ.फा. | ४७:०३ | हर्ष | १२:०८ | ग | १४:३३ | 28 | 9 | 18 | ५ | कन्या | भ. ४७:३९ से, | १:०३:२१:३९ | 5:34 | 19:15 |
| ३४:१८ | ११ | रवि | २०:४५ | हस्त | ५४:२८ | वज्र | १४:३८ | वि | २०:४५ | 29 | 10 | 19 | ६ | कन्या | भ. २०:४५ तक, **मोहिनी एकादशी व्रत, शुक्र वृष में** ७:५३ ( **8:42** ), स.सि.यो. | १:०४:१९:२२ | 5:33 | 19:16 |
| ३४:१८ | १२ | चन्द्र | २६:०५ | चित्रा | ६०:०० | सिद्धि | १६:३३ | बा | २६:०५ | 30 | 11 | 20 | ७ | तु.२७:३५ | **सोम प्रदोष व्रत**, सूर्य सायन मिथुन में ३२:२३ (18:30) | १:०५:१७:०७ | 5:33 | 19:16 |
| ३४:२३ | १३ | मंग | ३०:२० | चित्रा | ०:३५ | व्य. | १७:३८ | तै | ३०:२० | 31 | 12 | 21 | ८ | तुला | बुध भरणी में १५:२३, **श्रीनृसिंह-जयन्ती** (देखें पृष्ठ 21) | १:०६:१४:४८ | 5:32 | 19:17 |
| ३४:२३ | १४ | बुध | ३३:१० | स्वा. | ५:३८ | वरी | १७:४३ | ग | १:४५ | ज्ये | 13 | 22 | ९ | वृ.५३:३० | भ. ३३:१० से, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ, श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती | १:०७:१२:२९ | 5:32 | 19:17 |
| ३४:२७ | १५ | गुरु | ३४:४० | विशा. | ९:२० | परि | १६:४३ | वि | ३:५५ | 2 | 14 | 23 | १० | वृश्चिक | भ. ३:५५ तक, **वैशाख पूर्णिमा, श्रीबुद्ध-जयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त**,(E) | १:०८:१०:०७ | 5:31 | 19:18 |

**(A)** (18:43), जिल्काद (मु.) मास प्रारम्भ, केदार-बद्रीनाथ यात्रा शुरु **(B)** ५९:३० (29:26) **(C)** **ज्येष्ठ संक्रान्ति**, मु. १५, पुण्यकाल सं. दुपैहर 11:30 बाद, मंगल रेवती में ४८:०५, गण्डमूल 13:05 से **(D)** **श्रीबगुलामुखी जयन्ती** (अर्द्धरात्रि-व्यापिनी), गण्डमूल 18:14 तक **(E)** श्रीबुद्ध पूर्णिमा, **श्रीसत्यनारायण व्रत** (देखें पृष्ठ 21), श्रीकूर्म जयन्ती (देखें पृष्ठ 21),

### गुरौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 16 मई

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १<br>१<br>२५<br>५२ | ४<br>७<br>१<br>३७ | ११<br>१७<br>३४<br>४० | ०<br>६<br>९<br>५० | १<br>३<br>२७<br>१६ | ०<br>२६<br>८<br>४४ | १०<br>२३<br>३७<br>१४ | ११<br>१९<br>२८<br>५० | ५<br>१९<br>२८<br>५० | |
| 57<br>49 | 712<br>2 | 45<br>43 | 76<br>31 | 14<br>9 | 73<br>58 | 4<br>7 | 3<br>10 | 3<br>10 | |
| कृति<br>२ | मघा<br>३ | रेव<br>१ | अश्वि<br>२ | कृति<br>३ | भर.<br>४ | पू.भा<br>२ | रेव<br>१ | हस्त<br>३ | |
| ० | ० | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | |
| ० | ० | उ | उ | अ | अ | उ | अ | अ | |
| शत्रु | मित्र | मित्र | सम | शत्रु | सम | स्व. | सम | मित्र | स्थिति |

कुण्डली सूर्योदय, 16 मई

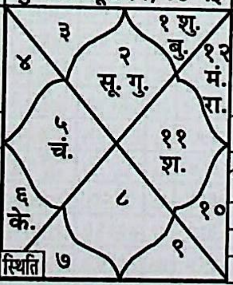

### गुरौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 23 मई

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १<br>८<br>१०<br>५ | ७<br>१<br>२१<br>२६ | ११<br>२२<br>५३<br>४८ | ०<br>१५<br>५६<br>५२ | १<br>५<br>६<br>१८ | १<br>४<br>४५<br>१३ | १०<br>२४<br>४<br>१८ | ११<br>१९<br>६<br>३५ | ५<br>१९<br>६<br>३५ | |
| 57<br>38 | 767<br>31 | 45<br>26 | 93<br>23 | 14<br>8 | 73<br>46 | 3<br>33 | 3<br>11 | 3<br>11 | |
| कृति<br>४ | विशा<br>४ | रेव<br>२ | भर.<br>१ | कृति<br>३ | कृति<br>३ | पू.भा<br>२ | रेव<br>१ | हस्त<br>३ | |
| ० | ० | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | |
| ० | ० | उ | उ | अ | अ | उ | अ | अ | |
| शत्रु | नीच | मित्र | सम | शत्रु | स्व. | स्व. | सम | मित्र | स्थिति |

कुण्डली सूर्योदय, 23 मई

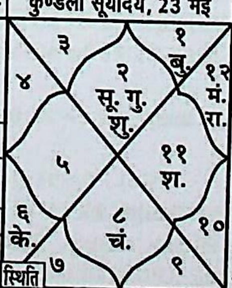

### वैशाख शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में 10 मई, शुक्रवार को अक्षय-तृतीया एवं भगवान् परशुराम की पुण्य जन्मतिथि मनाई जाएगी। अक्षय-तृतीया बड़ी पवित्र, पुण्यप्रदा एवं महासुख व सौभाग्यप्रदायक तिथि मानी जाती है। इस तिथि की गणना युगादि तिथियों में की जाती है। क्योंकि त्रेतायुग (कल्पभेद से सतयुग) का शुभारम्भ इसी तिथि से हुआ था। इसी कारण इस तिथि में किए गए स्नान, दान, जप-तप, होम, देव-पितृ-तर्पण आदि शुभ कर्मों का फल अनन्त गुणा होता है। इस तिथि को स्वयं-सिद्ध मुहूर्त्त भी माना जाता है। श्रीगङ्गा-जयन्ती ( 14 मई ) को मध्याह्न के समय श्रीगङ्गा जी का अवतरण पृथ्वी पर हुआ था। इस पक्ष व तिथि में हरिद्वार में गंगास्नान, पुष्पाक्षत व दीपादि द्वारा गङ्गापूजन, जप-पाठ एवं अन्न, वस्त्र, फलादि दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। वैशाख पूर्णिमा (23 मई) को तीर्थ पर गंगाजल सहित स्नान करके भगवान् विष्णु का ध्यान, पूजन एवं श्रीविष्णु सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए। ज्येष्ठ संक्रान्ति–ता. 14 मई, मंगलवार को सायं 5 बजकर 54 मिंट (17:54) पर तुला लग्न में प्रवेश करेगी। (15) मुहू. इस संक्रां. का पुण्यकाल दुपै. 11:30 बाद से प्रारम्भ होगा। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार राक्षसी नामक यह सं. बेईमान, दुष्ट व नीच प्रवृत्ति के लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर व कुम्भ राशि वालों के लिए शुभप्रद रहेगी। शेष के लिए समय कुछ कठिन रहेगा। ग्रहगोचर–मेष राशि पर शनि की नीच दृष्टि तथा मीन राशिगत 'मंगल-राहु' योग के प्रभाव से केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में प्रधानमन्त्री के लिए असमंजसपूर्ण परिस्थितियां रहेंगी। उपयुक्त वर्षा की कमी, फसलों की हानि तथा महँगाई अपने चरम पर होगी। आकाश लक्षण–कुछ क्षेत्रों में आँधी-तूफान के साथ खण्ड वर्षा होगी। शकुन–अक्षय-तीज को बादल चाल या बूंदाबांदी होना आगामी सुभिक्ष के संकेत हैं।

| वि. संवत् २०८१, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष | | | | | | शाक: १९४६ | | | | तारीखें | | | | चंद्र राशि | सन् 2024 ई. (ता. 24 मई से 6 जून तक), हिजरी सन् 1445<br>सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु : | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट | भा.स्टैं.टा. जालन्धर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घड़ी पल | नक्षत्र | समाप्तिकाल घड़ी पल | योग | समाप्तिकाल घड़ी पल | करण | समाप्तिकाल घड़ी पल | ज्ये. शक | ज़िल्का. मु. | मई | ज्ये. प्रवि. | प्रवेश घड़ी–पल | प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में, ता. 3 जून से गुरु भी पूर्वक्षितिज से दृश्य होगा। मंगल भी इससे ऊपर, शनि पूर्वकपाल में होगा। शुक्र अस्त है। ता. 3 जून से बुध भी अस्त रहेगा। | रा. अं. क. वि. | सूर्योदय घं.मिं. | सूर्यास्त घं.मिं. |
| ३४:३० | १ | शुक्र | ३४:४५ | अनु. | ११:३८ | शिव | १४:३५ | बा | ४:४३ | 3 | 15 | 24 | ११ | वृश्चिक | सूर्य रोहिणी में ५४:२३ (27:16), गण्डमूल 10:10 से<br>शुक्र अस्त है। | १:०९:०७:४५ | 5:31 | 19:19 |
| ३४:३३ | २ | शनि | ३३:४३ | ज्ये. | १२:४५ | सिद्ध | ११:३० | तै | ४:१४ | 4 | 16 | 25 | १२ | ध.१२:४५ | श्रीनारद-जयन्ती, वीणादान, गण्डमूल विचार | १:१०:०५:२१ | 5:30 | 19:19 |
| ३४:३५ | ३ | रवि | ३१:३३ | मूल | १२:४५ | साध्य | ७:३३ | व | २:३८ | 5 | 17 | 26 | १३ | धनु | भ. २:३८ से ३१:३३ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), गण्डमूल**(A)** | १:११:०२:५८ | 5:30 | 19:20 |
| ३४:४० | ४ | चन्द्र | २८:३३ | पू.षा. | ११:५३ | शुभ<br>शुक्ल | २ ५०<br>५७ २८ | ब | ०:०३ | 6 | 18 | 27 | १४ | म.२६:३० | शुक्र रोहिणी में १६:०८ (11:56) | १:१२:००:३१ | 5:29 | 19:21 |
| ३४:४० | ५ | मंग | २४:४८ | उ.षा. | १०:१३ | ब्रह्म | ५१:३३ | तै | २४:४८ | 7 | 19 | 28 | १५ | मकर | | १:१२:५८:०५ | 5:29 | 19:21 |
| ३४:४२ | ६ | बुध | २०:२८ | श्रव. | ७:५५ | ऐन्द्र | ४५:१३ | व | २०:२८ | 8 | 20 | 29 | १६ | कुं.३६:३३ | भ. २०:२८ से ४८:०३ तक, **पंचक प्रारम्भ** ३६:३३ (20:06),बुध कृति.**(B)** | १:१३:५५:३९ | 5:29 | 19:22 |
| ३४:४३ | ७ | गुरु | १५:३८ | धनि. | ५:०५ | वैधृ | ३८:३० | ब | १५:३८ | 9 | 21 | 30 | १७ | कुम्भ | गुरु उदय<br>2 जून | १:१४:५३:१२ | 5:29 | 19:22 |
| ३४:४८ | ८ | शुक्र | १०:२८ | शत.<br>पू.भा. | १ ५५<br>५८ २० | विष्क | ३१:३० | कौ | १०:२८ | 10 | 22 | 31 | १८ | मी.४४:१५ | बुध वृष में १६:५० ( 12:12 घं.मिं. ) | १:१५:५०:४० | 5:28 | 19:23 |
| ३४:४९ | ९ | शनि | ४:५३ | उ.भा. | ५४:३० | प्रीति | २४:१५ | ग | ४:५३ | 11 | 23 | जून | १९ | मीन | भ. ३१:५८ से ५९:०३ तक, मंगल अश्वि. १ मेष में २५:२३ (15:37), **(C)** | १:१६:४८:१२ | 5:28 | 19:23 |
| अवम् | १० | शनि | ५९:०३ | ०० | ० ० | ० | ०:० | ० | ०:० | ० | ० | ० | ० | ०० | **दशमी तिथि का क्षय** ०० ०० | ० ० ० ० | ०० | ०० |
| ३४:५० | ११ | रवि | ५३:०५ | रेव. | ५०:३० | आयु | १६:४८ | ब | २६:०४ | 12 | 24 | 2 | २० | मे.५०:३० | **पंचक समाप्त** ५०:३० (25:40), **अपरा एकादशी व्रत ( स्मार्त्त ), (D)** | १:१७:४५:४२ | 5:28 | 19:24 |
| ३४:५१ | १२ | चन्द्र | ४७:०८ | अश्वि. | ४६:३३ | सौभा | ९:१८ | कौ | २०:०७ | 13 | 25 | 3 | २१ | मेष | **अपरा एकादशी व्रत ( वैष्णव )** देखें पृष्ठ 22, **बुध पूर्व में अस्त 9:02,(E)** | १:१८:४३:१२ | 5:28 | 19:24 |
| ३४:५४ | १३ | मंग | ४१:२८ | भर. | ४२:५० | शोभ<br>अति | १ ५०<br>५४ ३८ | ग | १४:१८ | 14 | 26 | 4 | २२ | वृ.५६:५८ | भ. ४१:२८ से, **भौम प्रदोष व्रत**, मासशिवरात्रि व्रत | १:१९:४०:३८ | 5:27 | 19:25 |
| ३४:५५ | १४ | बुध | ३६:१३ | कृति. | ३९:३३ | सुक. | ४७:५० | वि | ८:५१ | 15 | 27 | 5 | २३ | वृष | भ. ८:५१ तक, बुध रोहिणी में २४:४५ (15:21) | १:२०:३८:०६ | 5:27 | 19:25 |
| ३४:५७ | ३० | गुरु | ३१:४३ | रोहि. | ३७:०५ | धृति. | ४१:४५ | च | ३:५८ | 16 | 28 | 6 | २४ | वृष | **ज्येष्ठ अमावस, शनैश्चर-जयन्ती, वटसावित्री व्रत (अमावस-पक्ष), (F)** | १:२१:३५:३५ | 5:27 | 19:26 |

**(A)** 10:36 तक, स.सि.यो. **(B)** में २६:५३ (16:14), गुरु कृति. ४ में ३८:३० (20:53) **(C)** जून मास प्रारम्भ, यूरेनस वृष में 15:46, गण्डमूल 27:16 बाद **(D)** (देखें पृष्ठ 22), मेला भद्रकाली (कपूरथला, पंजाब), गुरु पूर्व में उदय 24:40, गण्डमूल विचार **(E)** गण्डमूल 24:05 तक **(F)** भावुका अमावस

**शुक्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 31 मई**

| | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १<br>१५<br>५०<br>४५ | १०<br>१९<br>३४<br>१७ | ११<br>२८<br>५५<br>५८ | ०<br>२९<br>२८<br>४७ | १<br>६<br>५९<br>४ | १<br>१४<br>३५<br>१४ | १०<br>२४<br>३०<br>११ | ११<br>१८<br>४१<br>९ | ५<br>१८<br>४१<br>९ |
| | 57<br>32 | 850<br>40 | 45<br>4 | 111<br>49 | 14<br>2 | 73<br>43 | 2<br>51 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| | रोहि<br>२ | शत<br>४ | रेव<br>४ | कृति<br>१ | कृति<br>४ | रोहि<br>२ | पूभा<br>२ | रेव<br>१ | हस्त<br>३ |
| | ० | ० | मा | मा | मा | मा | मा | व | व |
| | ० | ० | उ | उ | अ | अ | उ | अ | अ |
| स्थिति | शत्रु | सम | मित्र | सम | शत्रु | स्व. | स्व. | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 31 मई

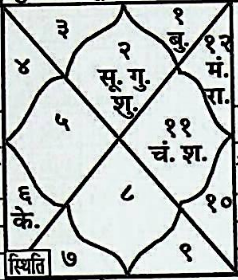

**गुरौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 6 जून**

| | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १<br>२१<br>३५<br>४१ | १<br>१४<br>४७<br>४६ | ०<br>३<br>२५<br>३५ | १<br>११<br>१२<br>१० | १<br>८<br>२३<br>२ | १<br>२१<br>५७<br>४२ | १०<br>२४<br>४५<br>४९ | ११<br>१८<br>२२<br>५ | ५<br>१८<br>२२<br>५ |
| | 57<br>26 | 829<br>13 | 44<br>45 | 124<br>17 | 13<br>55 | 73<br>45 | 2<br>12 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| | रोहि<br>४ | रोहि<br>२ | अश्वि<br>२ | रोहि<br>१ | कृति<br>४ | रोहि<br>४ | पूभा<br>२ | रेव<br>१ | हस्त<br>३ |
| | ० | ० | मा | मा | मा | मा | मा | व | व |
| | ० | अ | उ | अ | उ | अ | उ | अ | अ |
| स्थिति | शत्रु | मूल | स्व. | मित्र | शत्रु | स्व. | स्व. | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 6 जून

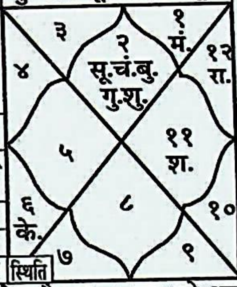

## ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल–

ज्येष्ठ मास में संक्रान्ति, एकादशी, अष्टमी, गंगा-दशहरा आदि पर्वों पर स्नान, जप, ध्यानादि के साथ श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर जलापूरित घड़ा (पात्र), गेहूँ, चावल, सत्तु आदि अनाज, दूध, चीनी, वस्त्र, छाता, पंखा, आम, खरबूजे आदि मौसमी फल एवं अन्य ग्रीष्मोपयोगी वस्तुओं का संकल्पपूर्वक सुपात्र ब्राह्मण को दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। इस मास जितेन्द्रिय रहकर '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' मन्त्र का जाप एवं श्रीविष्णु-सहस्रनाम, नारायण-कवच आदि स्तोत्रों का पाठ करने से धन-सम्पत्ति, विवाह, सन्तान एवं सौभाग्य आदि की प्राप्ति होती है। '**अपरा-एकादशी**' ( 2/3 जून ) का व्रत विधिपूर्वक रखने तथा किसी गरीब परिवार की सामर्थ्यानुसार अन्न-धनादि से सहायता करने से अनेक प्रकार के ज्ञात अथवा अज्ञानतावश किए गए पापों का क्षय होता है। ता. 6 जून को अमावस के दिन वैधव्य-दोष की शान्ति हेतु स्त्रियों को **वटसावित्री** का व्रत रखना कल्याणकारी होता है। वट के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा ऊपरी भाग में देवाधिदेव शिव प्रतिष्ठित रहते हैं। **ग्रहगोचर**—31 मई से वृष राशि में चतुर्ग्रही योग तथा ता. 1 जून से मेषस्थ मंगल पर शनि की क्रूर एवं शत्रु दृष्टि रहने से विश्व तथा देश-विदेश में राजनीतिक दृष्टि से एवं प्राकृतिक प्रकोपों आदि कारणों से विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। कहीं छत्रभंग, उपद्रव एवं हिंसक घटनाओं का भय होगा। सर्वप्रकार के अनाज महँगे होंगे। **लोक—भविष्य**—चान्द्र ज्येष्ठ मास में पाँच शुक्र तथा पाँच शनिवार होने से जनसंख्या, धन-धान्य एवं अनाजादि के उत्पादन में वृद्धि होगी। परन्तु देश में आशातीत महँगाई, कहीं दुर्भिक्ष, अग्निकाण्ड, युद्धादि का भय, कहीं छत्रभंग (शासन-परिवर्तन) हो।

**आकाश—लक्षण**—ज्ये. कृ. ११ को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क होने से आगे खण्ड वृष्टि अर्थात् कहीं बहुत अधिक व कहीं अत्यन्त कम वर्षा हो एवं कृषकों को कष्ट रहे।

**वि. संवत् २०८१, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाक: १९४६**

**सन् 2024 ई. (ता. 7 से 22 जून तक), हिजरी सन् 1445**

**सूर्य उत्तर–दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म–वर्षा ऋतु:**

बुध एवं शुक्र अस्त हैं। प्रातः गुरु पूर्वक्षितिज में, मंगल कुछ ऊपर तथा शनि याम्योत्तरवृत्त की ओर होगा।

| दिनमान | तिथि | वार | समाप्तिकाल | नक्षत्र | समाप्तिकाल | योग | समाप्तिकाल | करण | समाप्तिकाल | तारीखें |  |  |  | चंद्र राशि प्रवेश |  | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट | भा.स्टैं.टा. जालन्धर |  |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| घटी/पल |  |  | घटी पल |  | घटी पल |  | घटी पल |  | घटी पल | रा. ज्येष्ठ | जिल्हिजा मु. | जून | ज्येष्ठ प्र. | घड़ी–पल |  | रा. अं. क. वि. | सूर्योदय घं.मिं. | सूर्यास्त घं.मिं. |
| ३४:५८ | १ | शुक्र | २८:१८ | मृग. | ३५:४० | शूल | ३६:३३ | किं | ०:०१ | 17 | 29 | 7 | २५ | मि.६:१३ | चन्द्रदर्शन, मु. ३०, श्रीगङ्गा स्नान प्रारम्भ, सूर्य मृग. में ४९:०५ (25:05),(A) | १:२२:३३:०० | 5:27 | 19:26 |
| ३५:०० | २ | शनि | २६:१३ | आर्द्रा | ३५:४० | गण्ड | ३२:३० | कौ | २६:१३ | 18 | जि | 8 | २६ | मिथुन | रम्भा तृतीया व्रत (पूर्वविद्धा) (देखें पृष्ठ 22), जिल्हिजा (मु.) मास प्रारम्भ | १:२३:३०:२६ | 5:27 | 19:27 |
| ३५:०१ | ३ | रवि | २५:४५ | पुन. | ३७:१५ | वृद्धि | २९:४५ | ग | २५:४५ | 19 | 2 | 9 | २७ | क.२१:४० | भ. ५६:२४ से, **महाराणा प्रताप जयन्ती**, उमा–अवतार | १:२४:२७:५० | 5:27 | 19:27 |
| ३५:०२ | ४ | चन्द्र | २७:०३ | पुष्य | ४०:३३ | ध्रुव | २८:२० | वि | २७:०३ | 20 | 3 | 10 | २८ | कर्क | भ. २७:०३ तक, गण्डमूल 21:40 से | १:२५:२५:१४ | 5:27 | 19:28 |
| ३५:०३ | ५ | मंग | ३०:०३ | आश्ले | ४५:३० | व्या. | २८:२० | बा | ३०:०३ | 21 | 4 | 11 | २९ | सिं.४५:३० | बुध मृग. में ४१:५३ (22:12), सन्त टेऊँराम पुण्यतिथि, गण्डमूल विचार | १:२६:२२:३६ | 5:27 | 19:28 |
| ३५:०४ | ६ | बुध | ३४:३५ | मघा | ५१:५३ | हर्ष | २९:०० | कौ | २:१९ | 22 | 5 | 12 | ३० | सिंह | **शुक्र मिथुन में ३२:३५** (18:29), अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा,**(B)** | १:२७:१९:५८ | 5:27 | 19:29 |
| ३५:०५ | ७ | गुरु | ४०:१८ | पू.फा. | ५९:१५ | वज्र | ३१:३५ | ग | ७:२७ | 23 | 6 | 13 | ३१ | सिंह | भ. ४०:१८ से, गुरु रोहि. (1) में ०:२५ (5:37) | १:२८:१७:१८ | 5:27 | 19:29 |
| ३५:०६ | ८ | शुक्र | ४६:३५ | उ.फा. | ६०:०० | सिद्धि | ३४:१० | वि | १३:२७ | 24 | 7 | 14 | आ | कं.१६:१० | भ. १३:२७ तक, **सूर्य मिथुन में ४७:३०** (24:27), **आषाढ़ संक्रान्ति (C)** | १:२९:१४:३८ | 5:27 | 19:29 |
| ३५:०७ | ९ | शनि | ५२:४५ | उ.फा. | ६:५८ | व्य. | ३६:४८ | बा | १९:४० | 25 | 8 | 15 | २ | कन्या |  | २:००:११:५७ | 5:27 | 19:30 |
| ३५:०८ | १० | रवि | ५८:१३ | हस्त | १४:२५ | वरी. | ३८:५८ | तै | २५:२९ | 26 | 9 | 16 | ३ | तु.४७:५० | **श्रीगङ्गा दशहरा पर्व** (हरिद्वार आदि) हस्त नक्षत्र 11:13 तक, स.सि.यो. | २:०१:०९:१५ | 5:27 | 19:30 |
| ३५:०९ | ११ | चन्द्र | ६०:०० | चित्रा | २१:०० | परि. | ४०:१८ | व | ३०:१९ | 27 | 10 | 17 | ४ | तुला | भ. ३०:१९ से, बुध आर्द्रा में ४६:४३ (24:08), शुक्र आर्द्रा में ५८:१० (28:43) | २:०२:०६:३२ | 5:27 | 19:30 |
| ३५:१० | ११ | मंग | २:२५ | स्वा. | २६:१३ | शिव | ४०:३० | वि | २:२५ | 28 | 11 | 18 | ५ | तुला | भ. २:२५ तक, **निर्जला एकादशी व्रत** (देखें पृष्ठ 22) | २:०३:०३:३८ | 5:27 | 19:31 |
| ३५:१० | १२ | बुध | ५:०५ | विशा | २९:५० | सिद्ध | ३९:२३ | बा | ५:०५ | 29 | 12 | 19 | ६ | वृ.१४:०५ | **प्रदोष व्रत**, मंगल भर. में २३:४८ (14:58),वटसावित्री व्रतारम्भ, चम्पक द्वादशी | २:०४:०१:०३ | 5:27 | 19:31 |
| ३५:०९ | १३ | गुरु | ५:५८ | अनु. | ३१:४५ | साध्य | ३६:५० | तै | ५:५८ | 30 | 13 | 20 | ७ | वृश्चिक | **सूर्य सायन कर्क में ५२:१३** (26:21), सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु**(D)** | २:०४:५८:२० | 5:28 | 19:31 |
| ३५:०९ | १४ | शुक्र | ५:१० | ज्ये. | ३२:०८ | शुभ | ३३:०५ | व | ५:१० | 31 | 14 | 21 | ८ | ध.३२:०८ | भ. ५:१० से ३४:०३ तक, **वटसावित्री व्रत** (पूर्णिमा पक्ष), **श्रीसत्यनारायण(E)** | २:०५:५५:३४ | 5:28 | 19:31 |
| ३५:०९ | १५ | शनि | २:५५ | मूल | ३१:०५ | शुक्ल | २८:१३ | ब | २:५५ | आ | 15 | 22 | ९ | धनु | **ज्येष्ठ पूर्णिमा** (स्नानदानादि), **सन्त कबीर जयन्ती** (626वीं), शक आषाढ़**(F)** | २:०६:५२:४८ | 5:28 | 19:31 |

**(A)** शुक्र मृग. में ७:०५ (8:17), भावुका करिदिन, करवीर व्रत **(B)** गण्डमूल 26:12 तक **(C)** मु. ४५, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 6:52 तक, **बुध मिथुन में ४४:०५** (23:05), **श्रीदुर्गाष्टमी**, धूमावती जयन्ती, **मेला क्षीर–भवानी ( काश्मीर )** **(D)** प्रारम्भ, गण्डमूल 18:10 से **(E)** **व्रत, सूर्य आर्द्रा में ४६:३५** (24:06), ज्येष्ठी योग, गण्डमूल **(F)** प्रारम्भ, गण्डमूल 17:54 तक

**शुक्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 14 जून**

|  | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
|  | १ | ४ | ० | १ | १ | २ | १० | ११ | ५ |
|  | २९ | २६ | ९ | २८ | १० | १ | २५ | १७ | १७ |
|  | १४ | ५० | २१ | २३ | १३ | ४७ | १ | ५६ | ५६ |
|  | ४५ | ४४ | ५५ | १६ | ४० | ३३ | २४ | ३८ | ३८ |
|  | 57<br>19 | 708<br>42 | 44<br>16 | 132<br>1 | 13<br>41 | 73<br>43 | 1<br>31 | 3<br>11 | 3<br>11 |
|  | मृग.<br>२ | उफा.<br>१ | अश्वि.<br>३ | मृग.<br>२ | रोहि.<br>१ | मृग.<br>३ | पूभा.<br>२ | रेव.<br>१ | हस्त<br>३ |
|  | ० | ० | मा | मा | मा | मा | मा | व | व |
|  | ० | ० | उ | अ | उ | अ | उ | अ | अ |
| स्थिति | शत्रु | मित्र | मूल | मित्र | शत्रु | मित्र | स्व | सम | मित्र |

**कुण्डली सूर्योदय, 14 जून**

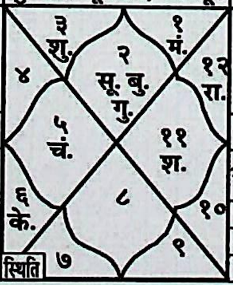

**शनौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 22 जून**

|  | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
|  | २ | ८ | ० | २ | १ | २ | १० | ११ | ५ |
|  | ६ | ६ | १५ | १५ | १२ | ११ | २५ | १७ | १७ |
|  | ५२ | १७ | १४ | ४० | २ | ३७ | १० | ३१ | ३१ |
|  | ५३ | २२ | १९ | ९ | १२ | १४ | ४५ | १२ | १२ |
|  | 57<br>13 | 821<br>40 | 43<br>45 | 123<br>59 | 13<br>23 | 73<br>42 | 0<br>44 | 3<br>11 | 3<br>11 |
|  | आर्द्रा<br>१ | मूल<br>२ | भर.<br>१ | आर्द्रा<br>३ | रोहि.<br>१ | आर्द्रा<br>२ | पूभा.<br>२ | रेव.<br>१ | हस्त<br>३ |
|  | ० | ० | मा | मा | मा | मा | मा | व | व |
|  | ० | ० | उ | अ | उ | अ | उ | अ | अ |
| स्थिति | सम | सम | मूल | स्व | शत्रु | मित्र | स्व | सम | मित्र |

**कुण्डली सूर्योदय, 22 जून**

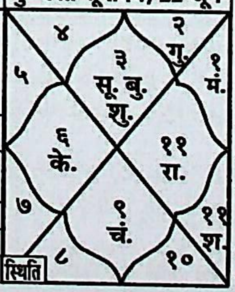

**ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल–**

पूर्वविद्धा तृतीया तिथि को ( 8 जून ) गौरी माता की प्रसन्नता के लिए रम्भा–देवी का विधिपूर्वक व्रत–दान करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इसमें गौरी माँ की पुष्प, नैवेद्य आदि से पूजन करके इस मन्त्र से प्रार्थना करनी चाहिए–'**देवि ! त्वं शक्तिस्त्वं स्वधा स्वाहा त्वं सावित्री सरस्वती। पतिं देहि गृहं देहि सुतान् देहि नमोऽस्तुते।** अष्टमी तिथि (14 जून) को माता (क्षीर) भवानी का मेला जम्मू–कश्मीर एवं दिल्ली के मन्दिरों में खीर, मेवे आदि का भोग लगाकर श्रद्धा से मनाया जाएगा। '**श्रीगङ्गा दशहरा**' पर्व (16 जून) पर गङ्गा–स्नान एवं श्रीगङ्गा जी का अक्षत, द्रव्यों, नारियलादि सहित पूजार्चना एवं यथाशक्ति दानादि कर्म करने से मनुष्य के कायिक, वाचिक और मानसिक–दस प्रकार के पापों का नाश होता है। इसदिन गंगा–स्तोत्रादि का पाठ करें तथा निम्न मन्त्र से आवाहन व प्रार्थना करें–'**ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गङ्गायै नमः।**' ता. 18 जून को **निर्जला एकादशी** का निराहार व्रत रखकर भगवान् श्रीविष्णु का पूजनोपरान्त द्वादशी को ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल, जलपात्र आदि दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **आषाढ़ संक्रान्ति–14 जून, शुक्रवार को रात्रि 12 बजकर 27 मिन्ट (24:27) पर कुम्भ लग्न में प्रवेश करेगी।** ४५ मुहू. इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन प्रातः 6घं.–52मिं. तक रहेगा। वारानुसार मिश्रा तथा नक्षत्रानुसार नन्दा नामक यह सं. ब्राह्मणों, लेखकों, विद्वानों तथा पशुओं से सम्बन्धित व्यापारियों के लिए लाभप्रद रहेगी। **आकाश–लक्षण–शनि-मंगल का दृष्टि-सम्बन्ध होने से खण्ड वर्षा अर्थात् अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी।**

## वि. संवत् २०८१, आषाढ़ कृष्ण पक्ष शाक: १९४६

सन् 2024 ई. (ता. 23 जून से 5 जुलाई तक), हिजरी सन् 1445
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु:

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घटी पल | नक्षत्र | समाप्तिकाल घटी पल | योग | समाप्तिकाल घटी पल | करण | समाप्तिकाल घटी पल | तारीखें आषा. शक | तारीखें जिल्हि. मु. | तारीखें जून | तारीखें आषा. प्र. | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | प्रातः गुरु पूर्वक्षितिज से ऊपर, मंगल उससे कुछ और ऊपर तथा शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न दृश्य होगा। ता. 26 जून से सायं बुध पश्चिमक्षितिज में होगा। शुक्र अस्त है। | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अवम् | १ | शनि | ५९:२५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ०० | आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा का क्षय ००<br>त्रयोदश दिनात्मक पक्ष (देखें पृष्ठ 103) | ० ० ० ० | ०० | ०० |
| ३५:०८ | २ | रवि | ५४:५८ | पू.षा. | २९:०० | ब्रह्म | २२:२५ | तै | २७:१२ | 2 | 16 | 23 | १० | म.४३:२० | | २:०७:५०:०१ | 5:28 | 19:31 |
| ३५:०८ | ३ | चन्द्र | ४९:४८ | उ.षा. | २६:०३ | ऐन्द्र | १५:५५ | व | २२:२३ | 3 | 17 | 24 | ११ | मकर | भ. २२:२३ से ४९:४८ तक, बुध पुन. में ६:४८ (8:12) | २:०८:४७:१७ | 5:29 | 19:32 |
| ३५:०७ | ४ | मंग | ४४:१८ | श्रव. | २२:४० | वैधृ | ९:०३ | ब | १७:०३ | 4 | 18 | 25 | १२ | कुं.५०:५० | **पंचक प्रारम्भ ५०:५० (25:49), अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (A)** | २:०९:४४:३० | 5:29 | 19:32 |
| ३५:०७ | ५ | बुध | ३८:३८ | धनि | १९:०० | विष्क<br>प्रीति | १ ५३<br>५४ ३८ | कौ | ११:२८ | 5 | 19 | 26 | १३ | कुम्भ | | २:१०:४१:४३ | 5:29 | 19:32 |
| ३५:०६ | ६ | गुरु | ३२:५५ | शत. | १५:१८ | आयु | ४७:२५ | ग | ५:४७ | 6 | 20 | 27 | १४ | मी.५७:३५ | भ. ३२:५५ से, गुरु रोहि. २ में ५१:१८ (26:01) | २:११:३८:५७ | 5:30 | 19:32 |
| ३५:०६ | ७ | शुक्र | २७:२५ | पू.भा. | ११:४३ | सौभा | ४०:२३ | वि | ०:१० | 7 | 21 | 28 | १५ | मीन | भ. ०:१० तक, शुक्र पुनर्वसु में ४९:१५ | २:१२:३६:१० | 5:30 | 19:32 |
| ३५:०५ | ८ | शनि | २२:०८ | उ.भा. | ८:१८ | शोभ | ३३:३० | कौ | २२:०८ | 8 | 22 | 29 | १६ | मीन | **बुध कर्क में १७:२० (12:26), शनि वक्री ४७:२८ (24:29) (B)** | २:१३:३३:२२ | 5:30 | 19:32 |
| ३५:०३ | ९ | रवि | १७:०३ | रेव | ५:०८ | अति | २६:४८ | ग | १७:०३ | 9 | 23 | 30 | १७ | मे.५:०८ | भ. ४४:४२ से, **पंचक समाप्त ५:०८** (7:34), गण्डमूल विचार | २:१४:३०:३७ | 5:31 | 19:32 |
| ३५:०२ | १० | चन्द्र | १२:२० | आश्वि<br>भर. | २:१८<br>५९:५० | सुक | २०:२८ | वि | १२:२० | 10 | 24 | जुला | १८ | मेष | भ. १२:२० तक, बुध पुष्य में ७:४०, जुलाई मास प्रारम्भ, गण्डमूल 6:26 तक | २:१५:२७:५० | 5:31 | 19:32 |
| ३५:०२ | ११ | मंग | ८:०० | कृति | ५७:५३ | धृति | १४:२५ | बा | ८:०० | 11 | 25 | 2 | १९ | वृ.१४:१८ | **योगिनी एकादशी व्रत**, नैपच्यून वक्री 16:10, स.सि.यो. | २:१६:२५:०३ | 5:31 | 19:32 |
| ३५:०१ | १२ | बुध | ४:०८ | रोहि | ५६:३० | शूल | ८:४५ | तै | ४:०८ | 12 | 26 | 3 | २० | वृष | **प्रदोष व्रत**, स.सि.यो. | २:१७:२२:२० | 5:32 | 19:32 |
| ३५:०० | १३ | गुरु | ०:५८ | मृग. | ५५:५८ | गण्ड<br>वृद्धि | ३ ४०<br>५९ १५ | व | ०:५८ | 13 | 27 | 4 | २१ | मि.२६:०५ | भ. ०:५८ से २९:४७ तक, **मासशिवरात्रि व्रत** | २:१८:१९:३३ | 5:32 | 19:32 |
| अवम् | १४ | गुरु | ५८:३५ | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ० | ० | ० | ० | ०० | **चतुर्दशी तिथि का क्षय** ०० ०० | ० ० ० ० | ०० | ०० |
| ३४:५९ | ३० | शुक्र | ५७:१५ | आर्द्रा | ५६:२५ | ध्रुव | ५५:३८ | च | २७:५५ | 14 | 28 | 5 | २२ | मिथुन | **आषाढ़ अमावस**, सूर्य पुनर्वसु में ४५:१८ (23:40) | २:१९:१६:४७ | 5:33 | 19:32 |

**(A)** (देखें पृष्ठ 12), बुध पश्चिम में उदय 29:05 **(B)** गण्डमूल 8:49 से

### शनौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 29 जून

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ११ | ० | २ | १ | २ | १० | ११ | ५ | |
| १३ | १४ | २० | २९ | १३ | २० | २५ | १७ | १७ | |
| ३३ | ४२ | १९ | २८ | ३५ | १३ | १३ | ८ | ८ | |
| २२ | ५७ | १७ | ७ | २ | ११ | ४५ | ५६ | ५६ | |
| 57<br>13 | 844<br>35 | 43<br>18 | 110<br>11 | 13<br>4 | 73<br>43 | 0<br>2 | 3<br>11 | 3<br>11 | |
| आर्द्रा<br>३ | उभा<br>४ | भर<br>३ | पुन.<br>३ | रोहि<br>२ | पुन.<br>१ | पूभा<br>२ | रेव<br>१ | हस्त<br>३ | |
| ० | ० | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | |
| ० | ० | उ | उ | उ | अ | उ | अ | अ | |
| सम | सम | मूल | स्व. | शत्रु | मित्र | स्व | सम | मित्र | स्थिति |

कुण्डली सूर्योदय, 29 जून

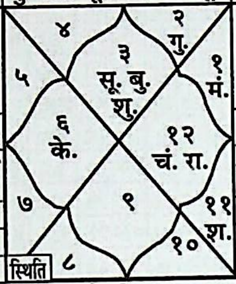

### शुक्रे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 5 जुलाई

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | २ | ० | ३ | १ | २ | १० | ११ | ५ | |
| १९ | ७ | २४ | ९ | १४ | २७ | २५ | १६ | १६ | |
| १६ | ३३ | ३७ | ५७ | ५२ | ३५ | १२ | ४९ | ४९ | |
| ४० | ९ | ५८ | २७ | ४१ | ३२ | २५ | ५० | ५० | |
| 57<br>15 | 792<br>35 | 42<br>52 | 97<br>26 | 12<br>45 | 73<br>44 | 0<br>35 | 3<br>11 | 3<br>11 | |
| आर्द्रा<br>४ | आर्द्रा<br>१ | भर<br>४ | पुष्य<br>२ | रोहि<br>२ | पुन.<br>३ | पूभा<br>२ | रेव<br>१ | हस्त<br>३ | |
| ० | ० | मा | मा | मा | मा | व | व | व | |
| ० | ० | उ | उ | उ | अ | उ | अ | अ | |
| सम | मित्र | मूल | शत्रु | शत्रु | मित्र | स्व | सम | मित्र | स्थिति |

कुण्डली सूर्योदय, 5 जुलाई

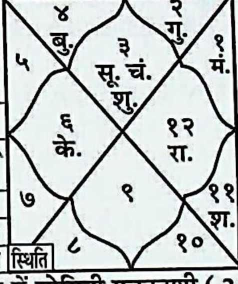

### आषाढ़ कृष्ण पक्षफल–

आषाढ़ मास में भगवान् लक्ष्मीनारायण की कृपा प्राप्ति के लिए ब्रह्मचारी रहते हुए नित्यप्रति स्नानादि के पश्चात् भगवान् की पूजार्चना करके श्रीविष्णु–सहस्रनाम अथवा श्रीहरिहर स्तोत्र का पाठ करना कल्याणप्रद होता है। इसके अतिरिक्त एकादशी संक्रान्ति, अमावस्या और पूर्णमाशी के दिन ब्राह्मण–दम्पत्ति को मिष्ठान्न सहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति आम, खरबूज़े आदि मौसमी फल, जलपूरित घड़ा, पंखा, छाता, आँवले, वस्त्र, अनाजादि का दान करना कल्याणकारी होता है। **स्वास्थ्य–** आषाढ़ मास में स्वयं को (विशेषकर सिर को) तेज धूप व ऊष्णता से बचाना चाहिए। इस मास में शीतल–जल, सादा–भोजन, छाछ, मौसमी फलों का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभप्रदायक होता है। ब्रह्मपुराणानुसार इस पक्ष में **योगिनी एकादशी** (2 जुला.) का व्रत करके भगवान् विष्णु की यथाविधि पूजा करके रात्रि–जागरण करने तथा दूसरे दिन अन्न, वस्त्रादि का दान करने से कुष्ठादि त्वचा रोगों की शान्ति होती है। **लोक–भविष्य**—मेष राशिस्थ मंगल पर शनि की नीच दृष्टि रहने से राजनेताओं एवं लोगों में परस्पर कलह–क्लेश, विग्रह हो। किसी विशिष्ट नेता के अपदस्थ या अपमृत्यु के योग हैं। कहीं अग्निकाण्ड, भूकम्प से जन–हानि तथा दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में तेजी के कारण लोगों में विक्षोभ हो। **त्रयोदश दिनात्मक पक्ष**—आषाढ़ कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा तथा चतुर्दशी–दो तिथियों का क्षय होने से तेरह–दिन (त्र्योदश दिनात्मक) पक्ष बना हुआ है। शास्त्रमतानुसार तेरह दिन के पक्ष में विवाह, मुण्डन, गृह–प्रवेश, उपनयन आदि शुभ कर्मों के सम्पादन का निषेध माना गया है। तेरह दिन के पक्ष का फल भी अशुभ कहा गया है। इसके प्रभावस्वरूप प्रजा में रोग, भ्रष्टाचार, बेईमानी, उपद्रव, अतिशय महँगाई व हिंसक घटनाएं बढ़ती हैं। अधिक विवरण के लिए देखें पृष्ठ संख्या नं. 103.

**आकाश लक्षण**—भारत के पूर्वी–दक्षिणी क्षेत्रों–महाराष्ट्र, असम, केरल, उड़ीसा में व्यापक रूप से वर्षा होगी। *परन्तु उत्तरी–भारत में उपयोगी वर्षा में बाधक व विलम्ब योग बना हुआ है।*

| वि. संवत् २०८१, **आषाढ़ शुक्ल पक्ष** शाक: १९४६ | | | | | | | | | | तारीखें | | | | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | सन् 2024 ई. (ता. 6 से 21 जुलाई तक), हिजरी सन् 1445–46 **सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु:** | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट | भा.स्टैं.टा. जालन्धर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घटी पल | नक्षत्र | समाप्तिकाल घटी पल | योग | समाप्तिकाल घटी पल | करण | समाप्तिकाल घटी पल | आषाढ़ शक | हिजरी मु. | जुलाई | आषाढ़ प्र. | | प्रातः गुरु पूर्वक्षितिज से ऊपर उठा होगा, मंगल इससे भी ऊपर तथा शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायं बुध पश्चिमक्षितिज में, ता. 7 से शुक्र भी पश्चिमक्षितिज में बुध से नीचे दृश्य होगा। | रा. अं. क. वि. | सूर्योदय घं.मिं. | सूर्यास्त घं.मिं. |
| ३४:५८ | १ | शनि | ५७:१५ | पुन. | ५८:०८ | व्या. | ५३:०५ | किं | २७:१५ | 15 | 29 | 6 | २३ | क.४२:३५ | **शुक्र कर्क में ५७:२५ (28:31), गुप्त नवरात्र प्रारम्भ** | २:२०:१४:०२ | 5:33 | 19:32 |
| ३४:५३ | २ | रवि | ५८:३५ | पुष्य | ६०:०० | हर्ष | ५१:३८ | बा | २७:५५ | 16 | 30 | 7 | २४ | कर्क | **चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, **रथयात्रा–उत्सव** (श्रीजगन्नाथपुरी), मंगल कृति. में **(A)** | २:२१:११:१७ | 5:34 | 19:31 |
| ३४:५२ | ३ | चन्द्र | ६०:०० | पुष्य | १:१३ | वज्र | ५१:२० | तै | ३०:०० | 17 | मु. | 8 | २५ | कर्क | राहु उ.भा. ४–केतु हस्त २ में ५:०५, मुहर्रम (मुस्लि.) सं. 1446 **(B)** | २:२२:०८:३१ | 5:34 | 19:31 |
| ३४:५० | ३ | मंग | १:२५ | आश्ले | ५:४५ | सिद्धि | ५२:०८ | ग | १:२५ | 18 | 2 | 9 | २६ | सिं.५:४५ | भ. ३३:३५ से, बुध आश्ले. में १७:०८, शुक्र पुष्य में ४०:०५, गण्डमूल विचार | २:२३:०५:४७ | 5:35 | 19:31 |
| ३४:४९ | ४ | बुध | ५:४५ | मघा | ११:४० | व्य. | ५३:५८ | वि | ५:४५ | 19 | 3 | 10 | २७ | सिंह | भ. ५:४५ तक, गण्डमूल 10:15 तक, शुक्र बाल्यत्व समाप्त 7:02 | २:२४:०३:०० | 5:35 | 19:31 |
| ३४:४८ | ५ | गुरु | ११:१० | पू.फा. | १८:४० | वरी | ५६:२३ | बा | ११:१० | 20 | 4 | 11 | २८ | क.३५:३५ | **स्कन्द ( कुमार ) षष्ठी** (पूर्वविद्धा) देखें पृष्ठ 22, सन्त टेऊँराम जयन्ती | २:२५:००:१५ | 5:36 | 19:31 |
| ३४:४५ | ६ | शुक्र | १७:२३ | उ.फा. | २६:२३ | परि | ५९:०८ | तै | १७:२३ | 21 | 5 | 12 | २९ | कन्या | **मंगल वृष में ३३:२५** (18:58), **विवस्वत सप्तमी** (पूर्वविद्धा) देखें पृ. 22 | २:२५:५७:३० | 5:36 | 19:30 |
| ३४:४३ | ७ | शनि | २३:४३ | हस्त | ३४:०५ | शिव | ६०:०० | व | २३:४३ | 22 | 6 | 13 | ३० | कन्या | भ. २३:४३ से ५६:३९ तक, गुरु रोहि. ३ में ३४:२५ (19:23) **शुक्र उदय 7 जुलाई** | २:२६:५४:४६ | 5:37 | 19:30 |
| ३४:४२ | ८ | रवि | २९:३५ | चित्रा | ४१:१५ | शिव | १:३५ | ब | २९:३५ | 23 | 7 | 14 | ३१ | तु.७:४५ | | २:२७:५२:०० | 5:37 | 19:30 |
| ३४:३८ | ९ | चन्द्र | ३४:१५ | स्वा. | ४७:१० | सिद्ध | ३:२५ | बा | १:५५ | 24 | 8 | 15 | ३२ | तुला | भढली नवमी, **गुप्त नवरात्र समाप्त**, मेला शरीक भवानी (काश्मीर) | २:२८:४९:१५ | 5:38 | 19:29 |
| ३४:३५ | १० | मंग | ३७:१८ | विशा | ५१:२८ | साध्य | ४:०८ | तै | ५:४७ | 25 | 9 | 16 | श्रा | वृ.३५:३३ | **सूर्य कर्क में १४:१०** (11:19), **श्रावण संक्रान्ति**, ४५ मु, पुण्यकाल **(C)** | २:२९:४६:२९ | 5:39 | 19:29 |
| ३४:३३ | ११ | बुध | ३८:३० | अनु | ५३:५५ | शुभ | ३:३३ | व | ७:५४ | 26 | 10 | 17 | २ | वृश्चिक | भ. ७:५४ से ३८:३० तक, **हरिशयनी एकादशी व्रत**, चातुर्मास्य व्रत–**(D)** | ३:००:४३:४४ | 5:39 | 19:28 |
| ३४:३० | १२ | गुरु | ३७:४३ | ज्ये. | ५४:२३ | शुक्ल<br>ब्रह्म | १:२३<br>५७:४० | ब | ८:०७ | 27 | 11 | 18 | ३ | ध.५४:२३ | गण्डमूल विचार | ३:०१:४१:०१ | 5:40 | 19:28 |
| ३४:२८ | १३ | शुक्र | ३५:०५ | मूल | ५३:०८ | ऐन्द्र | ५२:३३ | कौ | ६:२४ | 28 | 12 | 19 | ४ | धनु | **प्रदोष व्रत**, सूर्य पुष्य में ४३:४५, **बुध मघा १ सिंह में ३७:४५** (20:46),**(E)** | ३:०२:३८:१५ | 5:40 | 19:27 |
| ३४:२५ | १४ | शनि | ३०:४८ | पू.षा. | ५०:२० | वैधृ. | ४६:०८ | ग | २:५७ | 29 | 13 | 20 | ५ | धनु | भ. ३०:४८ से ५७:०२ तक, **श्रीसत्यनारायण व्रत** (देखें पृष्ठ 22), **(F)** | ३:०३:३५:३१ | 5:41 | 19:27 |
| ३४:२३ | १५ | रवि | २५:१५ | उ.षा. | ४६:२३ | विष्क | ३८:४५ | ब | २५:१५ | 30 | 14 | 21 | ६ | म.४:२५ | **आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा**, व्यास–पूजा, स. सि. यो. | ३:०४:३२:४६ | 5:41 | 19:26 |

**(A)** ५०:५८, शुक्र पश्चिम में उदय 7:02, रविपुष्य योग **(B)** हिजरी प्रारम्भ, गण्डमूल 6:03 से **(C)** सं. सूर्योदय से सायं 17:43 तक, निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ **(D)** नियमादि प्रारम्भ, श्रीविष्णु–शयनोत्सव **(E)** गण्डमूल 26:55 तक **(F)** वायु परीक्षा (सूर्यास्त समय), शुक्र आश्ले में ३०:५५, कोकिला व्रत, शिवशयनोत्सव, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर)

**रवौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 14 जुलाई**

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २<br>२७<br>५१<br>४३ | ५<br>२८<br>२४<br>१६ | १<br>१<br>०<br>४३ | ३<br>२३<br>१६<br>२ | १<br>१६<br>४५<br>९ | ३<br>८<br>३९<br>८ | १०<br>२५<br>३<br>४३ | ११<br>१६<br>२१<br>१३ | ५<br>१६<br>२१<br>१३ |
| 57<br>13 | 718<br>13 | 42<br>7 | 77<br>27 | 12<br>10 | 73<br>44 | 1<br>32 | 3<br>10 | 3<br>10 |
| पुन<br>३ | चित्रा<br>२ | कृत्ति<br>२ | श्ले.<br>२ | रोहि<br>३ | पुष्य<br>२ | पूभा<br>२ | उभा<br>४ | हस्त<br>२ |
| ० | ० | मा | मा | मा | मा | व | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ |
| सम | मित्र | सम | शत्रु | शत्रु | शत्रु | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 14 जुला

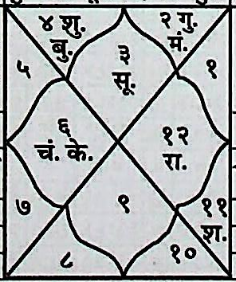

**रवौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 21 जुलाई**

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३<br>४<br>३२<br>२० | ८<br>२८<br>५०<br>४३ | १<br>५<br>५३<br>४३ | ४<br>१<br>२५<br>३८ | १<br>१८<br>८<br>४५ | ३<br>१७<br>१५<br>१० | १०<br>२४<br>५१<br>३७ | ११<br>१५<br>५८<br>५८ | ५<br>१५<br>५८<br>५८ |
| 57<br>15 | 858<br>59 | 41<br>31 | 59<br>10 | 11<br>38 | 73<br>42 | 2<br>5 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| पुष्य<br>१ | उषा<br>१ | कृत्ति<br>३ | मघा<br>१ | रोहि<br>३ | श्ले.<br>१ | पूभा<br>२ | उभा<br>४ | हस्त<br>२ |
| ० | ० | मा | मा | मा | मा | व | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ |
| मित्र | सम | सम | मित्र | शत्रु | शत्रु | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय,21 जुलाई

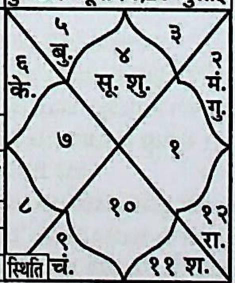

## आषाढ़ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया तिथि (पुष्य नक्षत्रयुक्त) 7 जुलाई को भगवान् श्रीजगन्नाथ की रथयात्रा का भव्य उत्सव विशेषकर जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) तथा देश के अन्य भागों में भी बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से मनाया जाता है। **हरिशयनी एकादशी** (17 जुला.) से चातुर्मास्य व्रत, नियमादि प्रारम्भ होंगे, जोकि कार्तिक शुक्ल एकादशी अर्थात् हरिप्रबोधिनी एकादशी (12 नवं.) तक की अवधि पर्यन्त रहेंगे। धर्मपरायण तपस्वी लोग यह अवधि चातुर्मास्य व्रतादि नियमों का पालन करते हुए नित्य भगवान् विष्णु की पूजार्चना, स्तोत्र-पाठादि में व्यतीत करते हैं। **गुरु पूर्णिमा** (21 जुलाई) ज्ञान, ध्यान एवं गुरु-भक्ति की तरफ ले जाने वाली होती है। इसदिन परब्रह्म ईश्वर का ध्यान करते हुए ऋषि व्यास, शुकदेव आदि ऋषियों का आवाहन-पूजनादि करके अपने इष्ट गुरु का पुष्पाक्षत, मिष्ठान्न, वस्त्र, दक्षिणा द्वारा सम्मान करना चाहिए। **श्रावण संक्रान्ति**–16 जुलाई, मंगलवार को 45 मुहूर्त्ति, प्रातः 11 बजकर 19 मिंट पर कन्या लग्न में प्रवेश करेगी। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार मिश्रा नामक यह सं. बेईमान, चोर, दुष्ट तथा पशुओं से सम्बन्धित व्यापारियों के लिए लाभप्रद रहेगी। यह सं. वृष, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर तथा कुम्भ राशि वालों के लिए शुभप्रद, शेष राशि वालों को अनिष्टकर रहेगी। आषाढ़ मास में श्रावण संक्रां. मंगलवार को होने से कहीं अग्निकाण्ड, क्लिष्ट रोगों से भय तथा अनाजादि दैनिक उपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होगी। **आकाश लक्षण**–भारत के उत्तर-पश्चिमी एवं पर्वतीय क्षेत्रों में रुक-रुक कर व्यापक वर्षा के योग हैं। **शकुन**–आ.शु. पंचमी को बादल चाल एवं इन्द्रधनुष दिखे तो खाद्य एवं वनस्पति तेलों के भाव तीन महीनों में डेढ़ गुणा लाभप्रदायक होंगे।

## वि. संवत् २०८१, श्रावण कृष्ण पक्ष शाक: १९४६

**सन् 2024 ई. (ता. 22 जुलाई से 4 अगस्त तक), हिजरी सन् 1446**

**सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु :**

**प्रात: पूर्वक्षितिज में गुरु–मंगल उत्तरोत्तर ऊपर उठे दिखाई देंगे। शनि याम्योत्तर से पश्चिम में होगा। सायं बुध–शुक्र पश्चिमक्षितिज में दृश्य होंगे।**

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल | नक्षत्र | समाप्तिकाल | योग | समाप्तिकाल | करण | समाप्तिकाल | तारीखें | | | | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट | भा.स्टैं.टा. जालन्धर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | घटी पल | | घटी पल | | घटी पल | | घटी पल | आषा. शके | मुहर्रम मं. | जुलाई | श्रावण प्र. | | | रा. अं. क. वि. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
| ३४:२० | १ | चन्द्र | १८:४५ | श्रव. | ४१:३८ | प्रीति | ३०:४० | कौ | १८:४५ | 31 | 15 | 22 | ७ | मकर | **श्रावण सोमवार व्रत प्रारम्भ**, सूर्य सायन सिंह में १८:५० (13:14), **(A)** | ३:०५:३०:०३ | 5:42 | 19:26 |
| ३४:१५ | २ | मंग | ११:४३ | धनि | ३६:२८ | आयु | २२:१३ | ग | ११:४३ | श्रा | 16 | 23 | ८ | कुं.९:०५ | भ. ३८:०७ से, **पंचक प्रारम्भ** ९:०५ (9:21), मङ्गलागौरी व्रत प्रारम्भ, **(B)** | ३:०६:२७:२१ | 5:43 | 19:25 |
| ३४:१५ | ३ | बुध | ४:३० | शत | ३१:२० | सौभा | १३:३८ | वि | ४:३० | 2 | 17 | 24 | ९ | कुम्भ | भ. ४:३० तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12) | ३:०७:२४:३८ | 5:43 | 19:25 |
| अवम् | ४ | बुध | ५७:२३ | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ० | ० | ० | ० | ०० | **चतुर्थी तिथि का क्षय** ०० ०० | ० ० ० ० | ० ० | ० ० |
| ३४:१० | ५ | गुरु | ५०:३८ | पू.भा. | २६:२३ | शोभ<br>अति | ५ १०<br>५७ ०५ | कौ | २४:०१ | 3 | 18 | 25 | १० | मी.१२:३३ | **नाग–पंचमी ( राजस्थान व बंगाल )** | ३:०८:२१:५६ | 5:44 | 19:24 |
| ३४:०८ | ६ | शुक्र | ४४:२५ | उ.भा. | २१:५३ | सुक | ४९:२८ | ग | १७:३२ | 4 | 19 | 26 | ११ | मीन | भ. ४४:२५ से, मंगल रोहिणी में ५७:१३, गण्डमूल 14:30 से, | ३:०९:१९:१८ | 5:45 | 19:24 |
| ३४:०५ | ७ | शनि | ३८:५८ | रेव. | १८:०८ | धृति | ४२:२८ | वि | ११:४२ | 5 | 20 | 27 | १२ | मे.१८:०८ | भ. ११:४२ तक, **पंचक समाप्त** १८:०८ (13:00), शीतला सप्तमी, **(C)** | ३:१०:१६:३६ | 5:45 | 19:23 |
| ३४:०० | ८ | रवि | ३४:१५ | अश्वि | १५:०५ | शूल | ३६:०३ | बा | ६:३७ | 6 | 21 | 28 | १३ | मेष | गण्डमूल 11:48 तक, स.सि.यो. | ३:११:१३:५९ | 5:46 | 19:22 |
| ३३:५८ | ९ | चन्द्र | ३०:२५ | भर. | १२:५३ | गण्ड | ३०:२३ | तै | २:२० | 7 | 22 | 29 | १४ | वृ.२७:२८ | भ. ५८:५५ से, | ३:१२:११:२० | 5:46 | 19:21 |
| ३३:५५ | १० | मंग | २७:२५ | कृति | ११:३० | वृद्धि | २५:२३ | वि | २७:२५ | 8 | 23 | 30 | १५ | वृष | भ. २७:२५ तक, गुरु रोहि. ४ में ५२:०३, स.सि.यो. 10:23 तक | ३:१३:०८:४४ | 5:47 | 19:21 |
| ३३:५० | ११ | बुध | २५:२० | रोहि | ११:०३ | ध्रुव | २१:०५ | बा | २५:२० | 9 | 24 | 31 | १६ | मि.४१:१० | **कामिका एकादशी व्रत, शुक्र मघा १ सिंह में २१:५३** (14:33),स.सि.यो. | ३:१४:०६:११ | 5:48 | 19:20 |
| ३३:४८ | १२ | गुरु | २४:१५ | मृग. | ११:३० | व्या. | १७:३५ | तै | २४:१५ | 10 | 25 | अग | १७ | मिथुन | **प्रदोष व्रत**, लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव, अगस्त मास प्रारम्भ | ३:१५:०३:३४ | 5:48 | 19:19 |
| ३३:४३ | १३ | शुक्र | २४:०५ | आर्द्रा | १२:५५ | हर्ष | १४:५० | व | २४:०५ | 11 | 26 | 2 | १८ | क.५९:४३ | भ. २४:०५ से ५४:३४ तक, सूर्य आश्ले. में ४०:४३, श्रावण–शिवरात्रि व्रत + | ३:१६:०१:०१ | 5:49 | 19:18 |
| ३३:४० | १४ | शनि | २५:०३ | पुन. | १५:२३ | वज्र | १२:५८ | श | २५:०३ | 12 | 27 | 3 | १९ | कर्क | + देखें पृष्ठ 185 | ३:१६:५८:३० | 5:50 | 19:18 |
| ३३:३८ | ३० | रवि | २७:१३ | पुष्य | १९:०० | सिद्धि | १२:०० | ना | २७:१३ | 13 | 28 | 4 | २० | कर्क | **श्रावण ( हरियाली ) अमावस**, गण्डमूल 13:26 से, रविपुष्य योग 13:26 तक | ३:१७:५५:५८ | 5:50 | 19:17 |

**(A)** अशून्यशयन व्रत, रोटंक व्रतारम्भ, स.सि.यो. **(B)** शक श्रावण प्रारम्भ, द्विपुष्कर योग 10:24 तक **(C)** गण्डमूल विचार

**रवौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 28 जुलाई**

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. | कुण्डली सूर्योदय, 28 जुला |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ० | १ | ४ | १ | ३ | १० | ११ | ५ | |
| ११ | ९ | १० | ७ | १९ | २५ | २४ | १५ | १५ | |
| १३ | ४० | ४२ | १२ | २८ | ५१ | ३५ | ३६ | ३६ | |
| २१ | २५ | २७ | ४६ | २७ | ६ | ८ | ४२ | ४२ | |
| 57<br>21 | 833<br>15 | 40<br>53 | 35<br>29 | 11<br>2 | 73<br>42 | 2<br>42 | 3<br>11 | 3<br>11 | |
| पुष्य<br>३ | अश्वि<br>३ | रोहि<br>१ | मघा<br>३ | रोहि<br>३ | श्ले.<br>३ | पूभा<br>२ | उभा<br>४ | हस्त<br>२ | |
| ० | ० | मा | मा | मा | मा | व | व | व | |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | |
| मित्र | सम | सम | मित्र | शत्रु | शत्रु | स्व. | सम | मित्र | स्थिति |

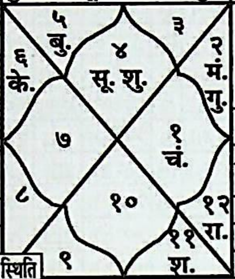

**रवौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 4 अगस्त**

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. | कुण्डली सूर्योदय, 4 अगस्त |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | १ | ४ | १ | ४ | १० | ११ | ५ | |
| १७ | १२ | १५ | ९ | २० | ४ | २४ | १५ | १५ | |
| ५५ | ३२ | २६ | ५० | ४३ | २६ | १४ | १४ | १४ | |
| ११ | १३ | ३४ | ३१ | ४५ | ५९ | ३५ | २६ | २६ | |
| 57<br>28 | 745<br>21 | 40<br>10 | 3<br>38 | 10<br>22 | 73<br>43 | 3<br>15 | 3<br>11 | 3<br>11 | |
| श्ले.<br>१ | पुष्य<br>३ | रोहि<br>२ | मघा<br>३ | रोहि<br>४ | मघा<br>२ | पूभा<br>२ | उभा<br>४ | हस्त<br>२ | |
| ० | ० | मा | मा | मा | मा | व | व | व | |
| ० | अ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | |
| मित्र | स्व. | सम | मित्र | शत्रु | शत्रु | स्व. | सम | मित्र | स्थिति |

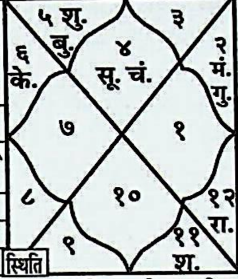

### श्रावण कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की चन्द्रोदय–व्यापिनी द्वितीया को लक्ष्मीनारायण की पूजा व स्तोत्र–पाठ करने का विधान है। यह **'अशून्यशयन व्रत'** (22 जुला.) पति–पत्नी में पारस्परिक प्रेम बढ़ाने में विशेष प्रशस्त होता है। यह व्रत मार्ग. कृ. द्वितीया तक किया जाता है। **श्रावण मास** में प्रतिदिन अथवा प्रति सोमवार को एकभुक्त व्रत रखकर शिवपूजन बिल्वपत्र, दूध, दही, ताण्डुल, चीनी, पुष्प, गंगाजल सहित **'ॐ नमः शिवाय'** तथा पंचाक्षरी मन्त्रों के साथ मंत्रपूर्वक अभिषेक आदि करने से मनोवांछित कामनाओं की पूर्ति होती है। श्रावण मास के ही प्रत्येक मंगलवार को मंगलागौरी का व्रत एवं पूजनादि करने से स्त्रियों को विवाह, सौभाग्यादि सुखों की प्राप्ति होती है। **कामिका एकादशी** (31 जुला.) का व्रत रखकर मंजरी सहित तुलसीदल से भगवान् श्रीकृष्ण (या विष्णु) का पूजन करना चाहिए। घी का दीपक प्रज्वलित रखें तथा ब्राह्मणों को यथाशक्ति दान करने से सुखैश्वर्य साधनों की प्राप्ति होती है। **हरियाली अमावस** ( 4 अग. ) को गंगादि तीर्थस्थान पर स्नान, जप, श्राद्ध, तर्पणादि एवं दक्षिणा सहित ब्राह्मण भोजन व दानादि करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। ***ग्रहगोचर***—कुम्भ राशिगत शनि वक्री रहने तथा सिंह राशिस्थ बुध–शुक्र के साथ समसप्तक योग रहने से कुछ देशों से युद्ध के समाचार मिलें, देश में अत्यधिक महँगाई, अनाज की कमी, दुर्भिक्ष, लोगों के जीवन, धन–सम्पदा आदि की हानि हो, कहीं दुर्भिक्ष, अकाल जैसे हालात बनेंगे। **'मंगल–गुरु'** योग भी वर्षा में बाधक बनता है। **लोक—भविष्य**—हरियाली अमावस रविवासरी होने से राजनेताओं की त्रुटिपूर्ण नीतियों के कारण लोगों में दु:ख–पीड़ा, विक्षोभ एवं व्याकुलता रहे। लोगों में भी कलह–क्लेश, धन का नाश, तनाव, दुखाधिक्य तथा अशान्ति बढ़े। ***आकाश लक्षण***—पक्ष में भारत के उत्तर तथा उत्तर–पूर्वी राज्यों में व्यापक वर्षा होने के योग हैं। **शकुन**—श्रा. कृ. ८ में वर्षा हो, तो सब दोषों (अवरोधों) का दूर होकर आगे सुभिक्ष एवं खुशहाली रहेगी।

## वि. संवत् २०८१, श्रावण शुक्ल पक्ष शाक : १९४६

**सन् 2024 ई. (ता. 5 से 19 अगस्त तक), हिजरी सन् 1446**
**सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु :**

प्रातःकाल मंगल–गुरु पूर्वकपाल में तथा शनि पश्चिम में होगा। सायं बुध पश्चिमक्षितिज में तथा शुक्र इससे कुछ ऊपर की ओर होगा। ता. 12 से बुध अदृश्य हो जाएगा।

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घं. मि. | नक्षत्र | समाप्तिकाल घं. मि. | योग | समाप्तिकाल घं. मि. | करण | समाप्तिकाल घं. मि. | तारीखें श्राव. शक | मुहर्रम मु. | अगस्त | श्रावण प्र. | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं. | सूर्यास्त घं.मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३३:३३ | १ | चन्द्र | ३०:३३ | आश्ले | २३:४८ | व्य. | ११:५८ | ब | ३०:३३ | 14 | 29 | 5 | २१ | सिं.२३:४८ | श्रावण शुक्ल पक्ष शुरु, **मेला छिन्नमस्तिका ( चिन्तपूर्णी ) हि.प्र. शुरु, (A)** | ३:१८:५३:२९ | 5:51 | 19:16 |
| ३३:२८ | २ | मंग. | ३५:०३ | मघा | २९:४० | वरी | १२:५० | बा | २:४८ | 15 | 30 | 6 | २२ | सिंह | **चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, गण्डमूल 17:44 तक, | ३:१९:५०:५९ | 5:52 | 19:15 |
| ३३:२५ | ३ | बुध | ४०:३५ | पू.फा. | ३६:३८ | परि | १४:३३ | तै | ७:४९ | 16 | सफ | 7 | २३ | कं.५३:२८ | **मधुस्रवा–हरियाली–सिंघारा तीज**, स्वर्णगौरी व्रत, सफर (मुस्लि.) मास प्रा. | ३:२०:४८:२९ | 5:52 | 19:14 |
| ३३:२० | ४ | गुरु | ४१:५० | उ.फा. | ४४:१३ | शिव | १६:५५ | व | ११:१३ | 17 | 2 | 8 | २४ | कन्या | भ. ११:१३ से ४१:५० तक, वरद् चतुर्थी, दूर्वा गणपति व्रत | ३:२१:४६:०४ | 5:53 | 19:13 |
| ३३:१५ | ५ | शुक्र | ५३:२३ | हस्त | ५२:०८ | सिद्ध | १९:३८ | ब | १७:३७ | 18 | 3 | 9 | २५ | कन्या | **नाग–पञ्चमी,** | ३:२२:४३:३८ | 5:54 | 19:12 |
| ३३:१३ | ६ | शनि | ५९:४० | चित्रा | ५९:४८ | साध्य | २२:२५ | कौ | २६:३२ | 19 | 4 | 10 | २६ | तु.२६:०० | **श्रीकल्कि–जयन्ती** | ३:२३:४१:१२ | 5:54 | 19:11 |
| ३३:०८ | ७ | रवि | ६०:०० | स्वा. | ६०:०० | शुभ | २४:४५ | ग | ३२:२२ | 20 | 5 | 11 | २७ | तुला | शुक्र पू.फा. में १३:००, **गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती**, शीतला सप्तमी | ३:२४:३८:४७ | 5:55 | 19:10 |
| ३३:०५ | ७ | चन्द्र | ५:०३ | स्वा. | ६:३५ | शुक्ल | २६:१८ | व | ५:०३ | 21 | 6 | 12 | २८ | वृ.५५:५० | भ. ५:०३ से ३७:०२ तक, **वक्री बुध पश्चिम में अस्त 6:12** | ३:२५:३६:२२ | 5:55 | 19:09 |
| ३३:०० | ८ | मंग. | ९:०० | विशा | १२:०० | ब्रह्म | २६:३३ | ब | ९:०० | 22 | 7 | 13 | २९ | वृश्चिक | **श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी–चामुण्डादेवी** (हि.प्र.) **समाप्त** | ३:२६:३३:५९ | 5:56 | 19:08 |
| ३२:५५ | ९ | बुध | ११:०८ | अनु. | १५:४० | ऐन्द्र | २५:२३ | कौ | ११:०८ | 23 | 8 | 14 | ३० | वृश्चिक | गण्डमूल 12:13 से, स.सि.यो. 12:13 तक | ३:२७:३१:३९ | 5:57 | 19:07 |
| ३२:५३ | १० | गुरु | ११:१५ | ज्ये. | १७:२० | वैधृ. | २२:३३ | ग | ११:१५ | 24 | 9 | 15 | ३१ | ध.१७:२० | भ. ४०:१५ से, **भारत स्वतन्त्रता दिवस ( 78वाँ )**, मंगल मृग. में ५६:३५, गं.मू. | ३:२८:२९:१५ | 5:57 | 19:06 |
| ३२:४८ | ११ | शुक्र | ९:१५ | मूल | ११:५५ | विष्क | १८:०३ | वि | ९:१५ | 25 | 10 | 16 | भा. | धनु | भ. ९:१५ तक, **पवित्रा एकादशी व्रत, सूर्य मघा १ सिंह में ३४:२५ (B)** | ३:२९:२६:२६ | 5:58 | 19:05 |
| ३२:४३ | १२ | शनि | ५:१८ | पू.षा. | १४:३५ | प्रीति | १२:०० | बा | ५:१८ | 26 | 11 | 17 | २ | म.२८:४५ | **शनि प्रदोष व्रत** | ४:००:२४:३८ | 5:59 | 19:04 |
| अवम् | १३ | शनि | ५९:४३ | ०० | ०० | ०० | ०० | ० | ०० | ० | ० | ० | ० | ०० | **त्रयोदशी तिथि का क्षय** ०० ०० ०० | ० ० ० ० | ०० | ०० |
| ३२:४० | १४ | रवि | ५२:४५ | उ.षा. | १०:४० | आयु<br>सौभा. | ४ ४०<br>५६ १३ | ग | २६:१४ | 27 | 12 | 18 | ३ | मकर | भ. ५२:४५ से, वक्री शनि पू.भा. १ में ४६:१५, स.सि.यो. 10:15 तक | ४:०१:२२:१८ | 5:59 | 19:03 |
| ३२:३५ | १५ | चन्द्र | ४४:५० | श्रव.<br>धनि. | ५:२५<br>५९:२३ | शोभ | ४६:५८ | वि | १८:४८ | 28 | 13 | 19 | ४ | कुं.३२:३० | भ. १८:४८ तक, **पंचक प्रारम्भ ३२:३० (19:00), श्रावण पूर्णिमा (C)** | ४:०२:२०:०२ | 6:00 | 19:02 |

**(A)** बुध वक्री ११:२८ (10:26) **(B)** (19:44), **भाद्रपद संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद, गण्डमूल 12:44 तक, **(C) रक्षाबन्धन** (भद्रा बाद, देखें पृष्ठ 23), **श्रीसत्यनारायण व्रत, ऋक्–उपाकर्म–** (देखें पृष्ठ 22), यजुर्वेदि–अथर्ववेदि उपाकर्म, श्रीगायत्री जयन्ती, हयग्रीव जयन्ती, कोकिला व्रत पूर्ण, रोटक व्रत पूर्ण, ऋषि तर्पण (अपराह्ण–काले), श्रावणी उपाकर्म, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा (काश्मीर), संस्कृत–दिवस

### भौमे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 13 अगस्त

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३<br>२६<br>३२<br>५६ | ७<br>०<br>३८<br>२५ | १<br>२१<br>२४<br>१५ | ४<br>७<br>१५<br>३ | १<br>२२<br>१३<br>९ | ४<br>१५<br>३०<br>३ | १०<br>२३<br>४२<br>५५ | ११<br>१४<br>४५<br>४९ | ५<br>१४<br>४५<br>४९ | |
| 57<br>38 | 748<br>29 | 39<br>11 | 41<br>32 | 9<br>23 | 73<br>37 | 3<br>50 | 3<br>11 | 3<br>11 | |
| श्ले.<br>३ | विशा<br>४ | रोहि<br>४ | मघा<br>३ | रोहि<br>४ | पूफा<br>१ | पूभा<br>२ | उभा<br>४ | हस्त<br>२ | |
| ० | ० | मा | व | मा | मा | व | व | व | |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | |
| मित्र | नीच | सम | मित्र | शत्रु | शत्रु | स्व | सम | मित्र | स्थिति |

कुण्डली सूर्योदय, 13 अग.

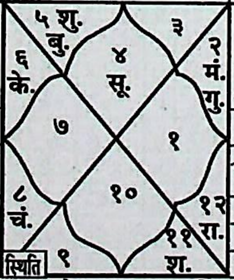

### चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 19 अगस्त

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४<br>२<br>१८<br>५० | ९<br>२१<br>४१<br>४९ | १<br>२५<br>१७<br>३७ | ४<br>२<br>२७<br>४४ | १<br>२३<br>७<br>३५ | ४<br>२२<br>५१<br>४० | १०<br>२३<br>१९<br>९ | ११<br>१४<br>२६<br>४४ | ५<br>१४<br>२६<br>४४ |
| 57<br>42 | 888<br>51 | 38<br>29 | 50<br>43 | 8<br>38 | 73<br>35 | 4<br>8 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| मघा<br>१ | श्रव<br>४ | मृग<br>१ | मघा<br>१ | रोहि<br>४ | पूफा<br>३ | पूभा<br>१ | उभा<br>४ | हस्त<br>२ |
| ० | ० | मा | व | मा | मा | व | व | व |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ |
| मूल | सम | सम | मित्र | शत्रु | शत्रु | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 19 अगस्त

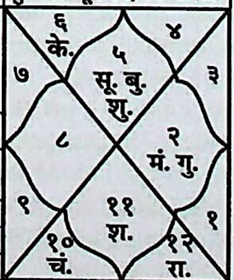

### श्रावण शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की प्रतिपदा से अष्टमी तक (ता. 5 से 13 अग.) माता **चिन्तपूर्णी ( छिन्नमस्तिका ), ज्वालामुखी एवं चामुण्डादेवी** (काँगड़ा) के दरबार में भगवती जागरण, कीर्तन, लंगर एवं भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। ता. 7 अग. को **सिंघारा ( हरियाली ) तीज** के दिन सुहागिन स्त्रियाँ अपने पीहर जाकर हाथों में मेहंदी रचाकर झूले झूलती हुई श्रावण के मलहार गीत गाती हैं। **नाग-पंचमी** (9 अग.) को अपने गृह–द्वार की दहलीज़ के दोनों ओर गोबर से सर्पाकृति बनाकर उनका दूध, दूर्वा, कुशा, गन्ध, पुष्प, अक्षत, लड्डुओं सहित पूजा करके **'ॐ कुरुकुल्ये हुं फट् स्वाहा।'** मन्त्र का 3 माला जप व नागस्तोत्र का पाठ करने से सर्प–विष का भय नहीं रहता। ता. 19 अगस्त को श्रावण–पूर्णिमा के दिन भाई–बहिन के पवित्र सम्बन्धों का पर्व रक्षा–बन्धन होगा। परन्तु इस दिन भद्रा दुपै. 13घं.–31मिं. तक व्याप्त रहेगी। शास्त्रनियम अनुसार **रक्षाबन्धन** का पर्व भद्रा के बाद दुपैहर 13:31 के बाद ही परम्परानुसार अपराह्ण–काल में मनाना शुभ होगा। (देखें पृष्ठ 23)।। **भाद्रपद संक्रान्ति**—16 अगस्त शुक्रवार को 30 मुहूर्त्ति, रात्रि 7 बजकर 44 मिंट (19:44) पर कुम्भ लग्न में प्रवेश करेगी। इसका पुण्यकाल दोपहर 13घं.–20मिं. से शुरु होगा। वारानुसार मिश्रा तथा नक्षत्रानुसार घोरा (उग्र) नामक यह सं. नीच प्रवृत्ति तथा पशुओं के व्यापारियों के लिए लाभप्रद होगी। **सं. राशिफल**—यह सं. मेष, वृष, मिथुन, तुला, वृश्चिक, धनु तथा कुम्भ राशि वालों के लिए शुभप्रद, शेष राशि वालों को अनिष्टकर रहेगी। **आकाश लक्षण**—पंजाब, हरि., हि.प्र., जम्मू-कश्मीर, दिल्ली, उत्तरी उ.प्र. में खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**—भाद्र. संक्रान्ति को बूँदा-बाँदी हो तो खण्ड व गेहूँ-धान्यादि का स्टाक करने से दो मास बाद विशेष लाभ हो।

## वि. संवत् २०८१, भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाक: १९४६

**सन् 2024 ई. (20 अगस्त से 3 सितंबर तक), हिजरी सन् 1446**
**सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा–शरद् ऋतु:**

प्रात: मंगल–गुरु पूर्वकाल में, ता. 27 से बुध भी पूर्वीक्षितिज में दृश्य तथा शनि पश्चिमक्षितिज होगा। सायं शुक्र पश्चिमाक्षितिज में होगा।

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घटी पल | नक्षत्र | समाप्तिकाल घटी पल | योग | समाप्तिकाल घटी पल | करण | समाप्तिकाल घटी पल | तारीखें श्राव. प्रवि. | सफर मु. | अगस्त | भाद्र. राष्ट्री. | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं. | सूर्यास्त घं.मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३२:३३ | १ | मंग | ३६:२३ | शत | ५२:५५ | अति | ३७:१८ | बा | १०:३७ | 29 | 14 | 20 | ५ | कुम्भ | **गायत्री जपम्**, गुरु मृग. १ में २५:२५ (16:10) | ४:०३:१७:४४ | 6:00 | 19:01 |
| ३२:२८ | २ | बुध | २७:४५ | पू.भा. | ४६:२३ | सुक | २७:३० | तै | २:०४ | 30 | 15 | 21 | ६ | मी.३२:५८ | भ. ५३:३४ से, **कज्जली तृतीया** (चन्द्रोदय-व्यापिनी) | ४:०४:१५:३३ | 6:01 | 19:00 |
| ३२:२३ | ३ | गुरु | १९:२३ | उ.भा. | ३२:१० | धृति | १७:५० | वि | १९:२३ | 31 | 16 | 22 | ७ | मीन | भ. १९:२३ तक, **श्रीगणेश ( बहुला ) चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), **वक्री बुध कर्क में (A)** | ४:०५:१३:१९ | 6:02 | 18:59 |
| ३२:२० | ४ | शुक्र | ११:३३ | रेव. | ३४:४० | शूल | ८:४३ | बा | ११:३३ | भा. | 17 | 23 | ८ | मे.३४:४० | **पंचक समाप्त** ३४:४० (19:54), शक भाद्रपद प्रारम्भ, गण्डमूल विचार | ४:०६:११:०७ | 6:02 | 18:58 |
| ३२:१५ | ५ | शनि | ४:३३ | अश्वि | ३०:०८ | गंड<br>वृद्धि | ० १३<br>५२ ४० | तै | ४:३३ | 2 | 18 | 24 | ९ | मेष | भ. ५८:४० से, **चन्दन षष्ठी व्रत**, चन्द्रोदय 21:56 (जालन्धर), **शुक्र कन्या में (B)** | ४:०७:०९:०० | 6:03 | 18:57 |
| अवम् | ६ | शनि | ५८:४० | ०० | ०० | ०० | ०० | ० | ०० | ० | ० | ० | ० | ०० | **षष्ठी तिथि का क्षय** ०० ०० ०० | ० ० ० ० | ०० | ०० |
| ३२:०८ | ७ | रवि | ५४:०० | भर. | २६:४३ | ध्रुव | ४६:०३ | वि | २६:२० | 3 | 19 | 25 | १० | वृ.४१:०५ | भ. २६:२० तक, शीतला सप्तमी | ४:०८:०६:५२ | 6:04 | 18:55 |
| ३२:०५ | ८ | चन्द्र | ५०:४० | कृति. | २४:३८ | व्या. | ४०:३३ | बा | २२:२० | 4 | 20 | 26 | ११ | वृष | **श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत, श्रीकृष्ण-जयन्ती योग** (रोहिणी योगे), **(C)** | ४:०९:०४:४५ | 6:04 | 18:54 |
| ३२:०० | ९ | मंग | ४८:४३ | रोहि. | २३:५३ | हर्ष | ३६:०५ | तै | १९:४२ | 5 | 21 | 27 | १२ | मि.५४:०३ | **श्रीगुग्गा-नवमी, गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव** | ४:१०:०२:४० | 6:05 | 18:53 |
| ३१:५८ | १० | बुध | ४८:०८ | मृग. | २४:३० | वज्र | ३२:४८ | व | १८:२६ | 6 | 22 | 28 | १३ | मिथुन | भ. १८:२६ से ४८:०८ तक, **बुध मार्गी** ५१:३३ (26:42) | ४:११:००:३८ | 6:05 | 18:52 |
| ३१:५३ | ११ | गुरु | ४८:५० | आर्द्रा | २६:२५ | सिद्धि | ३०:३० | ब | १८:२९ | 7 | 23 | 29 | १४ | मिथुन | **अजा एकादशी व्रत** | ४:११:५८:३९ | 6:06 | 18:51 |
| ३१:४५ | १२ | शुक्र | ५०:५८ | पुन. | २९:३३ | व्य. | २९:१० | कौ | १९:५४ | 8 | 24 | 30 | १५ | क.१३:३८ | **वत्स द्वादशी ( पूजा )**, सूर्य पू.फा. में २४:०८ (15:46) | ४:१२:५६:४० | 6:07 | 18:49 |
| ३१:४३ | १३ | शनि | ५३:५५ | पुष्य | ३३:५३ | वरी | २८:४८ | ग | २२:२७ | 9 | 25 | 31 | १६ | कर्क | भ. ५३:५५ से, **शनि प्रदोष व्रत**, कैलाश यात्रा प्रारम्भ, गण्डमूल 19:40 से, | ४:१३:५४:४१ | 6:07 | 18:48 |
| ३१:३८ | १४ | रवि | ५८:०५ | अश्ले | ३९:१३ | परि | २९:१५ | वि | २६:०० | 10 | 26 | सित | १७ | सिं.३९:१३ | भ. २६:०० तक, शुक्र हस्त में ५७:४०, मासशिवरात्रि व्रत सितम्बर मास प्रा. **(D)** | ४:१४:५२:४६ | 6:08 | 18:47 |
| ३१:३५ | ३० | चन्द्र | ६०:०० | मघा | ४५:३० | शिव | ३०:३० | च | ३०:४२ | 11 | 27 | 2 | १८ | सिंह | **कुशाग्रहणी अमावस**, **'ॐ हुं फट् स्वाहा'** इहमंत्रेण कुशोत्पाटनम् **(E)** | ४:१५:५०:५३ | 6:08 | 18:46 |
| ३१:३० | ३० | मंग | ३:१८ | पू.फा. | ५२:३५ | सिद्ध | ३२:२० | ना | ३:१८ | 12 | 28 | 3 | १९ | सिंह | **भाद्रपद अमावस**–स्नानदानादि प्रात: 7:26 तक, **भौमवती अमावस** | ४:१६:४९:०२ | 6:09 | 18:45 |

**(A)** १:३० (6:38), शुक्र उ.फा. में ४:५३, सूर्य सायन कन्या में ३५:५८ (20:25), शरद् ऋतु प्रारम्भ, गण्डमूल 22:06 से **(B)** ४८:०३ (25:16), हल-षष्ठी, गण्डमूल 18:06 तक, **(C)** देखें पृष्ठ 12 एवं 23, **मंगल मिथुन में** २३:२३ (15:25), **वक्री बुध पूर्व में उदय 18:58, श्रीदूर्वाष्टमी ( देखें पृष्ठ 23 )** **(D)** अघोरा चतुर्दशी, **यूरेनस वक्री 20:50**, गण्डमूल विचार **(E) सोमवती अमावस**, पिठोरी अमावस, **पितृकार्येषु अमावस, तीर्थस्नान माहात्म्य**, रानी सती मेला (झुंझुनूं-राजस्थान), लोहार्गल यात्रा (स्नान)-2 दिन, गण्डमूल 24:20 तक

**चन्द्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 26 अगस्त**

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४<br>९<br>३<br>२३ | १<br>४<br>२<br>३६ | १<br>२९<br>४४<br>२६ | ३<br>२७<br>४५<br>५ | १<br>२४<br>५<br>१८ | ५<br>१<br>२६<br>२९ | १०<br>२२<br>४९<br>२० | ११<br>१४<br>४<br>२८ | ५<br>१४<br>४<br>२८ |
| 57<br>53 | 817<br>54 | 37<br>37 | 10<br>59 | 7<br>43 | 73<br>30 | 4<br>25 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| मघा<br>३ | कृत्ति<br>३ | मृग<br>२ | श्ले<br>४ | मृग<br>१ | उफा<br>२ | पूभा<br>१ | उभा<br>४ | हस्त<br>२ |
| ० | ० | मा | व | मा | मा | व | व | व |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ |
| स्व. | सम | सम | शत्रु | शत्रु | नीच | स्व. | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 26 अग.

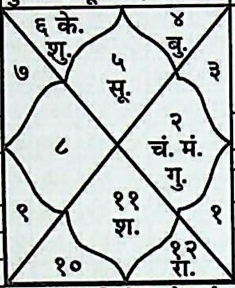

**भौमे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 3 सितम्बर**

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४<br>१६<br>४७<br>२८ | ४<br>१५<br>५४<br>४० | २<br>४<br>४१<br>३० | ३<br>२९<br>०<br>४५ | १<br>२५<br>२<br>५५ | ५<br>११<br>१४<br>२० | १०<br>२२<br>१३<br>२४ | ११<br>१३<br>३९<br>२ | ५<br>१३<br>३९<br>२ |
| 58<br>8 | 714<br>25 | 36<br>30 | 46<br>7 | 6<br>31 | 73<br>26 | 4<br>36 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| पूफा<br>२ | पूफा<br>१ | मृग<br>४ | श्ले<br>४ | मृग<br>१ | हस्त<br>१ | पूभा<br>१ | उभा<br>४ | हस्त<br>२ |
| ० | ० | मा | मा | मा | मा | व | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ |
| मूल | मित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु | नीच | स्व. | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 3 सितम्बर

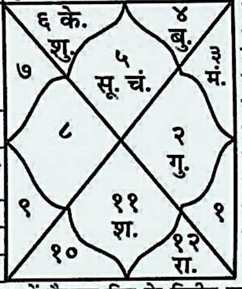

### भाद्रपद कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में श्रीगणेश बहुला चतुर्थी (22 अग.) को व्रत रखकर सायंकाल श्रीगणेश का लड्डुओं सहित पूजन करने तथा चन्द्रोदय होने पर अर्घ्य देने से अभीष्ट सुखों की प्राप्ति होती है। ता. 24 अग. को **'चन्दन-षष्ठी'** का व्रत रखकर सूर्य व चन्द्रमा की पूजा करने से धन, सन्तति एवं सौभाग्य की वृद्धि होती है। ता. 26 अग., सोमवार को **'श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी'** का व्रत रखकर भगवान् कृष्ण की कथा श्रवण/पाठ करना तथा रात्रि को पुष्पाक्षत एवं फलों सहित पूजन करने से अनेक कायिक व मानसिक दु:खों की निवृत्ति होती है। जन्माष्टमी को रोहिणी नक्षत्र का योग होने से **जयन्ती** नामक प्रशस्त योग बना है, इसमें श्रीकृष्ण स्तोत्र का पाठ करना विशेष पुण्यकारक होगा। **वत्स-द्वादशी** (30 अग.) को प्रात: बछड़े सहित गाय का पूजन करके मूँग, मोठ और बाजरा सहित भोजन का भोग लगाते हैं। इसदिन गाय का दूध, दही या गोघृत से परहेज़ करके भैंस का दूध प्रयोग में लाते हैं। **कुशाग्रहणी अमावस ( 2 सितं. )** को वर्षभर देव-पितृ कार्यों के लिए पूर्व या उत्तर दिशा में बैठकर दिन के द्वितीय प्रहर में दाएँ हाथ से मन्त्रपूर्वक कुशा संग्रह करनी चाहिए। **ग्रहगोचर**– सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध (15 सितं. तक) रहने से उ.प्र., म.प्र., बिहार, असम तथा जम्मू-कश्मीर के पश्चिमोत्तर भाग में हिंसा, राजनीतिक टकराव, उपद्रव, साम्प्रदायिक हिंसा एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के योग हैं। भाद्रपद अमावस भी मंगलवार को होने तथा भाद्रपद मास में पाँच मंगलवार होने से देश में कहीं अल्पवृष्टि तथा कहीं अतिवृष्टि से प्राकृतिक आपदाएं बढ़ें। किसी प्रमुख नेता की आकस्मिक मृत्यु या अपदस्थ होने के भी योग हैं। **आकाश लक्षण**—*उत्तरी भारत के अनेक प्रान्तों में तीव्र बौछारों के साथ खण्ड वर्षा के योग हैं। भाद्र. कृ. ८ को यदि मौसम खुश्क रहे, तो अनाज के मूल्यों में तीन मास तक तेजी रहे।*

## वि. संवत् २०८१, भाद्रपद शुक्ल पक्ष शाक: १९४६

**सन् 2024 ई. (ता. 4 से 18 सितम्बर तक), हिजरी सन् 1446**
**सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु:**

प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में होगा, जो ता. 15 से अस्त हो जाएगा। मंगल पूर्वकपाल में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्त की ओर वढ़ता दिखाई देगा। सायं शनि पूर्वकपाल में तथा शुक्र पश्चिमक्षितिज में होगा।

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घं. प. | नक्षत्र | समाप्तिकाल घं. प. | योग | समाप्तिकाल घं. प. | करण | समाप्तिकाल घं. प. | तारीखें भाद्र. शुक्ल | तारीखें सफर मु. | तारीखें सितंबर | तारीखें भाद्र. प्रवि. | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३१:२५ | १ | बुध | ९:०५ | उ.फा. | ६०:०० | साध्य | ३४:४५ | ब | ९:०५ | 13 | 29 | 4 | २० | कं.९:२८ | चन्द्रदर्शन, मु. ४५, बुध मघा १ सिंह में १३:०३ (11:22), अगस्त्य-उदय | ४:१७:४७:१० | 6:09 | 18:43 |
| ३१:२० | २ | गुरु | १५:३० | उ.फा. | ०:१३ | शुभ | ३७:२५ | कौ | १५:३० | 14 | रबि | 5 | २१ | कन्या | सामवेदि उपाकर्म (देखें पृष्ठ 23), रबि-उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ | ४:१८:४५:२३ | 6:10 | 18:42 |
| ३१:१५ | ३ | शुक्र | २२:०८ | हस्त | ८:०५ | शुक्ल | ४०:१० | ग | २२:०८ | 15 | 2 | 6 | २२ | तु.४२:०५ | भ. ५५:२३ से, **हरितालिका तृतीया**, गौरी तृतीया, **श्रीवराह-जयन्ती (A)** | ४:१९:४३:३८ | 6:11 | 18:41 |
| ३१:१३ | ४ | शनि | २८:३८ | चित्रा | १५:५८ | ब्रह्म | ४२:४३ | वि | २८:३८ | 16 | 3 | 7 | २३ | तुला | भ. २८:३८ तक, **सिद्धि विनायक व्रत** (देखें पृष्ठ 12) | ४:२०:४१:५१ | 6:11 | 18:40 |
| ३१:०५ | ५ | रवि | ३४:२८ | स्वा. | २३:१८ | ऐन्द्र | ४४:४३ | ब | १:३३ | 17 | 4 | 8 | २४ | तुला | **ऋषि-पंचमी व्रत, सम्वत्सरी महापर्व ( जैन )**, राहु उ.भा. ३-केतु हस्त १ में ५७:१५ | ४:२१:४०:०७ | 6:12 | 18:38 |
| ३१:०३ | ६ | चन्द्र | ३९:१५ | विशा | २९:४० | वैधृ | ४५:५० | कौ | ४:४७ | 18 | 5 | 9 | २५ | वृ.१३:१३ | **सूर्य षष्ठी व्रत** | ४:२२:३८:२५ | 6:12 | 18:37 |
| ३०:५८ | ७ | मंग | ४२:३० | अनु. | ३४:३८ | विष्क | ४५:४५ | ग | १०:५३ | 19 | 6 | 10 | २६ | वृश्चिक | भ. ४२:३० से, **मुक्ताभरण/सन्तान सप्तमी व्रत**, गण्डमूल 20:04 से | ४:२३:३६:४६ | 6:13 | 18:36 |
| ३०:५० | ८ | बुध | ४३:५३ | ज्ये. | ३७:५० | प्रीति | ४४:१३ | वि | १३:१२ | 20 | 7 | 11 | २७ | ध.३७:५० | भ. १३:१२ तक, **श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ**, दधीची जयन्ती | ४:२४:३५:०८ | 6:14 | 18:34 |
| ३०:४८ | ९ | गुरु | ४३:१८ | मूल | ३९:०८ | आयु | ४१:०८ | बा | १३:३६ | 21 | 8 | 12 | २८ | धनु | **श्रीचन्द-नवमी ( उदासीन-सम्प्रदाय )**, शुक्र चित्रा में ५१:३५, **श्रीभागवत(B)** | ४:२५:३३:२८ | 6:14 | 18:33 |
| ३०:४३ | १० | शुक्र | ४०:४० | पू.षा. | ३८:२३ | सौभा | ३६:२३ | तै | ११:५९ | 22 | 9 | 13 | २९ | म.५२:५३ | सूर्य उ.फा. में ८:२० (9:35) | ४:२६:३१:५४ | 6:15 | 18:32 |
| ३०:४० | ११ | शनि | ३६:०८ | उ.षा. | ३५:४५ | शोभ | ३०:०५ | व | ८:२४ | 23 | 10 | 14 | ३० | मकर | भ. ८:२४ से ३६:०८ तक, **पद्मा एकादशी व्रत**, बुध पू.फा. में १:१३ (6:44) | ४:२७:३०:१९ | 6:15 | 18:31 |
| ३०:३३ | १२ | रवि | २९:५३ | श्रव. | ३१:२३ | अति | २२:२३ | ब | ३:०१ | 24 | 11 | 15 | ३१ | कुं.५८:४३ | **पंचक प्रारम्भ** ५८:४३ (29:45), **प्रदोष व्रत, श्रीवामन-जयन्ती, (C)** | ४:२८:२८:४७ | 6:16 | 18:29 |
| ३०:२८ | १३ | चन्द्र | २२:१५ | धनि. | २५:४० | सुक | १३:३० | तै | २२:१५ | 25 | 12 | 16 | आ | कुम्भ | **सूर्य कन्या में ३३:३५ (19:43), आश्विन संक्रान्ति**, मु. १५, **(D)** | ४:२९:२७:१६ | 6:17 | 18:28 |
| ३०:२५ | १४ | मंग | १३:४० | शत. | १९:०० | धृति<br>शूल | ३ ४८<br>५३ ३० | व | १३:४० | 26 | 13 | 17 | २ | मी.५८:३८ | भ. १३:४० से ३९:०४ तक, **अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला बाबा सोढल (E)** | ५:००:२५:४६ | 6:17 | 18:27 |
| ३०:१८ | १५ | बुध | ४:२८ | पू.भा. | ११:४५ | गण्ड | ४२:५८ | ब | ४:२८ | 27 | 14 | 18 | ३ | मीन | **भाद्रपद पूर्णिमा** (स्नानदानादि), **शुक्र तुला में १९:०५ (13:56), (F)** | ५:०१:२४:१८ | 6:18 | 18:25 |

**(A)** (देखें पृष्ठ 24), मंगल आर्द्रा में १४:०५, **कलंक-चतुर्थी ( चन्द्रदर्शन-निषेध )**, चन्द्रास्त 20:20 (जालन्धर) (देखें पृष्ठ 24), पत्थर चौथ **(B)** सप्ताह पाठारम्भ, गण्डमूल 21:53 तक **(C)** श्रवण द्वादशी, विष्णुशृंखल योग 18:13 तक, बुध पूर्व में अस्त ३०:५८ (18:39) **(D)** पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद **(E)** (जालन्धर), श्रीसत्यनारायण व्रत, कदली व्रत-पूजन, प्रोष्ठपदी-महालय श्राद्ध प्रारम्भ, पूर्णिमा का श्राद्ध **(F)** श्राद्ध ( पितृपक्ष ) प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध

### बुधे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 11 सितम्बर

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ७ | २ | ४ | १ | ५ | १० | ११ | ५ |
| २४ | २१ | ९ | ८ | २५ | २१ | २१ | १३ | १३ |
| ३३ | ३५ | २९ | २० | ५० | १ | ३६ | १३ | १३ |
| २२ | ४१ | १ | ५ | ३८ | २५ | ३९ | ३६ | ३६ |
| 58<br>20 | 767<br>2 | 35<br>12 | 94<br>39 | 5<br>13 | 73<br>19 | 4<br>36 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| पूफा<br>४ | ज्ये.<br>२ | आर्द्रा<br>१ | मघा<br>३ | मृग<br>१ | हस्त<br>४ | पूभा<br>१ | उभा<br>३ | हस्त<br>१ |
| ० | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ |
| स्व. | नीच | शत्रु | मित्र | शत्रु | नीच | स्व. | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 11 सितं.

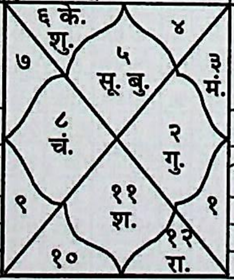

### बुधे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 18 सितम्बर

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | १० | २ | ४ | १ | ५ | १० | ११ | ५ |
| १ | २९ | १३ | २० | २६ | २९ | २१ | १२ | १२ |
| २२ | ५१ | ३१ | २२ | २३ | ३४ | ४ | ५१ | ५१ |
| २२ | ८ | ५७ | ३९ | ३६ | १५ | ५० | २० | २० |
| 58<br>34 | 911<br>34 | 34<br>00 | 110<br>22 | 4<br>00 | 73<br>11 | 4<br>28 | 3<br>10 | 3<br>10 |
| उफा<br>२ | पूभा<br>३ | आर्द्रा<br>३ | पूफा<br>३ | मृग<br>१ | चित्रा<br>२ | पूभा<br>१ | उभा<br>३ | हस्त<br>१ |
| ० | ० | मा | मा | मा | मा | व | व | व |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ |
| सम | सम | शत्रु | मित्र | शत्रु | नीच | स्व. | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 18 सितंबर

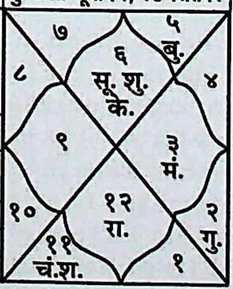

### भाद्रपद शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में हरितालिका तृतीया (6 सितं.) का व्रत तथा शिव-गौरी की पूजा करना विशेषकर सौभाग्यवती विवाहित स्त्रियों के लिए पति, पुत्र-सन्तति एवं पौत्रादि सुखों को बढ़ाने वाला होता है। चन्द्रास्त-व्यापिनी सायंकालिक चतुर्थी ( **पत्थर-चौथ** ) के दिन (6 सितं.) चन्द्रदर्शन करना शुभ नहीं माना जाता। (देखें पृष्ठ 24)। मध्याह्न-व्यापिनी चतुर्थी को **सिद्धिविनायक** ( 7 **सितं.** ) का व्रत रखकर श्रीगणेश जी के बीजमन्त्र ( **ॐ गं गणपतये नमः** ) तथा श्रीगणेश स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। **ता. 17 सितं.** को अनन्त चतुर्दशी का व्रत रखकर भगवान् विष्णु के अनन्तस्वरूप का ध्यान करते हुए '**ॐ अनन्ताय नमः**' मन्त्रपूर्वक तथा रेशम की पीली एवं 14 ग्रन्थियुक्त, डोरी सहित पूजन करने का विधान है। **ता. 17 सितं.** को ही अपराह्ण-व्यापिनी पूर्णिमा में अपने दिवंगत आत्मीय पितरों के निमित्त महालय पूर्णिमा का श्राद्ध किया जाएगा। ता. 18 सितं. से **पितृपक्ष प्रारम्भ** होगा। प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध भी इसी दिन मध्याह्न/अपराह्ण काल में होगा। **आश्विन संक्रान्ति**–16 सितंबर, सोमवार को 15 मुहू. रात्रि 7 बजकर 43 मिंट (19:43) पर मीन लग्न में प्रवेश करेगी। इस सं. का पुण्यकाल दोपहर 13घं.-19मिं. बाद से शुरु होगा। वारानुसार ध्वांक्षी तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह सं. व्यापारियों के लिए लाभप्रद रहेगी। **सं. राशिफल**–यह सं. मेष, वृष, मिथुन, कर्क, वृश्चिक, धनु, मकर राशि वालों को शुभदायक, शेष राशि वालों को अनिष्टकर रहेगी।

**आकाश लक्षण**–भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में रुक-रुक कर वर्षा के योग हैं, उत्तर-पूर्वी भारत (बिहार, असम, पूर्वी उ.प्र.) में व्यापक वर्षा एवं बाढ़ के योग हैं।

## वि. संवत् २०८१, आश्विन कृष्ण शाक: १९४६

**सन् 2024 ई. (ता. 19 सितम्बर से 2 अक्तू. तक), हिजरी सन् 1446**
**सूर्य दक्षिणायन, उत्तर–दक्षिण गोल, शरद् ऋतु:**

बुध अस्त है। प्रात: मंगल याम्योत्तरवृत्त के पास तथा गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न नजर आएगा। सायं शनि पूर्वकपाल में तथा शुक्र पश्चिमक्षितिज में दृश्य होगा।

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घ. प. | नक्षत्र | समाप्तिकाल घ. प. | योग | समाप्तिकाल घ. प. | करण | समाप्तिकाल घ. प. | तारीखें भाद्र. शुक्ल | तारीखें रबिउल्ल. अ. | तारीखें सितम्बर | तारीखें आश्वि. प्र. | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अवम् | १ | बुध | ५५:०५ | ०० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ० | ० | ० | ० | ०० | **आश्विन कृष्ण प्रतिपदा का क्षय** ०० ०० | ० ० ० ० | ० ० | ० ० |
| ३०:१५ | २ | गुरु | ४५:५५ | उभा<br>रेव | ४ २५<br>५७ २३ | वृद्धि | ३२:३३ | तै | २०:३० | 28 | 15 | 19 | ४ | मे.५७:२३ | **पंचक समाप्त** ५७:२३ (29:15), द्वितीया तिथि का श्राद्ध गण्डमूल 8:04 से, | ५:०२:२२:५३ | 6:18 | 18:24 |
| ३०:१० | ३ | शुक्र | ३७:२३ | अश्वि | ५१:०० | ध्रुव | २२:३० | व | ११:३९ | 29 | 16 | 20 | ५ | मेष | भ. ११:३९ से ३७:२३ तक, तृतीया का श्राद्ध, गण्डमूल 26:43 तक | ५:०३:२१:२९ | 6:19 | 18:23 |
| ३०:०५ | ४ | शनि | २९:४८ | भर. | ४५:४३ | व्या. | १३:१३ | ब | ३:३६ | 30 | 17 | 21 | ६ | वृ.५९:३५ | **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12 तथा 24), बुध उ.फा. में २१:५८, **(A)** | ५:०४:२०:०७ | 6:19 | 18:21 |
| ३०:०० | ५ | रवि | २३:३० | कृति | ४१:४८ | हर्ष<br>वज्र | ४ ५३<br>५७ ४८ | तै | २३:३० | 31 | 18 | 22 | ७ | वृष | चन्द्र षष्ठी व्रत, सूर्य सायन तुला में २९:४५, दक्षिण गोल प्रारम्भ, पंचमी का श्राद्ध**(B)** | ५:०५:१८:५० | 6:20 | 18:20 |
| २९:५५ | ६ | चन्द्र | १८:४५ | रोहि | ३९:२८ | सिद्धि | ५२:०३ | व | १८:४५ | आ | 19 | 23 | ८ | वृष | भ. १८:४५ से ४७:१५ तक, **बुध कन्या में** ९:३३ (10:10), **षष्ठी एवं (C)** | ५:०६:१७:३४ | 6:21 | 18:19 |
| २९:५३ | ७ | मंग | १५:४५ | मृग. | ३८:५३ | व्य. | ४७:४५ | ब | १५:४५ | 2 | 20 | 24 | ९ | मि.८:५८ | **श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न** (चन्द्रोदय-व्यापिनी) (देखें पृष्ठ 12), अष्टमी का श्राद्ध | ५:०७:१६:१७ | 6:21 | 18:18 |
| २९:४५ | ८ | बुध | १४:३३ | आर्द्रा | ४०:०५ | वरी | ४४:५० | कौ | १४:३३ | 3 | 21 | 25 | १० | मिथुन | सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध, मातृ–नवमी, जीवित्पुत्रिका व्रत, | ५:०८:१५:०७ | 6:22 | 18:16 |
| २९:४३ | ९ | गुरु | १५:१० | पुन. | ४३:०० | परि | ४३:१८ | ग | १५:१० | 4 | 22 | 26 | ११ | क.२७:०८ | भ. ४६:१८ से, सूर्य हस्त में ४७:००, दशमी का श्राद्ध | ५:०९:१३:५४ | 6:22 | 18:15 |
| २९:३८ | १० | शुक्र | १७:२५ | पुष्य | ४७:२५ | शिव | ४२:५८ | वि | १७:२५ | 5 | 23 | 27 | १२ | कर्क | भ. १७:२५ तक, **एकादशी का श्राद्ध** (देखें पृष्ठ 24), गण्डमूल 25:21 बाद | ५:१०:१२:४८ | 6:23 | 18:14 |
| २९:३० | ११ | शनि | २१:०५ | अश्ले | ५३:०५ | सिद्ध | ४३:३८ | बा | २१:०५ | 6 | 24 | 28 | १३ | सिं.५३:०५ | **इन्दिरा एकादशी व्रत**, बुध हस्त में ३६:५३, गण्डमूल | ५:११:११:४३ | 6:24 | 18:12 |
| २९:२८ | १२ | रवि | २६:०० | मघा | ५९:४८ | साध्य | ४५:०८ | तै | २६:०० | 7 | 25 | 29 | १४ | सिंह | संन्यासीनां श्राद्ध, मंगल पुन. में ४३:५८, द्वादशी का श्राद्ध, गण्डमूल **(D)** | ५:१२:१०:३८ | 6:24 | 18:11 |
| २९:२३ | १३ | चन्द्र | ३१:४५ | पू.फा. | ६०:०० | शुभ | ४७:१३ | व | ३१:४५ | 8 | 26 | 30 | १५ | सिंह | भ. ३१:४५ से, **सोम प्रदोष व्रत** (देखें पृष्ठ 25), मासशिवरात्रि व्रत, **(E)** | ५:१३:०९:३७ | 6:25 | 18:10 |
| २९:१८ | १४ | मंग | ३८:०५ | पू.फा. | ७:०५ | शुक्ल | ४९:३८ | वि | ४:५५ | 9 | 27 | अक्तू | १६ | कं.२४:०० | भ. ४:५५ तक, शस्त्र–विष–दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध, **(F)** | ५:१४:०८:३९ | 6:26 | 18:09 |
| २९:१३ | ३० | बुध | ४४:४३ | उ.फा. | १४:५३ | ब्रह्म | ५२:१८ | च | ११:२४ | 10 | 28 | 2 | १७ | कन्या | **आश्विन/महालय अमावस, सर्वपितृ–श्राद्ध, चतुर्दशी/अमावस (G)** | ५:१५:०७:४० | 6:26 | 18:07 |

**(A)** भरणी–श्राद्ध, चतुर्थी श्राद्ध **(B)** गुरु मृग. २ में २४:०५ **(C) सप्तमी का श्राद्ध** (देखें पृष्ठ 24), शुक्र स्वा. में ४७:०८ (25:12), शक आश्विन प्रारम्भ **(D)** 30:19 तक, मघा श्राद्ध **(E)** त्रयोदशी का श्राद्ध **(F)** अक्तूबर मास शुरु **(G) तिथि का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त**, पितृ–विसर्जन, गजच्छाया योग (12:23 से सूर्यास्त), (देखें पृष्ठ 25), महात्मा गाँधी जयन्ती

### बुधे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 25 सितम्बर

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | २ | २ | ५ | १ | ६ | १० | ११ | ५ | |
| ८ | १० | १७ | ३ | २६ | ८ | २० | १२ | १२ | |
| १२ | ५० | २६ | २० | ४७ | ६ | ३४ | २९ | २९ | |
| ५९ | ४४ | ५ | १८ | ५१ | १० | १० | ५ | ५ | |
| 58<br>47 | 777<br>21 | 32<br>40 | 110<br>18 | 2<br>42 | 73<br>4 | 4<br>15 | 3<br>11 | 3<br>11 | |
| उफा<br>४ | आर्द्रा<br>२ | आर्द्रा<br>४ | उफा<br>३ | मृग<br>२ | स्वा.<br>१ | पूभा<br>१ | उभा<br>३ | हस्त<br>१ | |
| ० | ० | मा | मा | मा | मा | व | व | व | |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | |
| सम | मित्र | शत्रु | उच्च | शत्रु | मूल | स्व. | सम | मित्र | स्थिति |

कुण्डली सूर्योदय, 25 सितं.

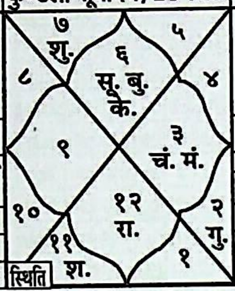

### बुधे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 2 अक्तूबर

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ५ | २ | ५ | १ | ६ | १० | ११ | ५ | |
| १५ | ६ | २१ | १५ | २७ | १६ | २० | १२ | १२ | |
| ५ | ३७ | १० | ५७ | २ | ३७ | ५ | ६ | ६ | |
| २२ | २१ | १३ | ५७ | ४९ | १८ | २४ | ५० | ५० | |
| 59<br>5 | 707<br>00 | 31<br>7 | 105<br>7 | 1<br>21 | 72<br>56 | 3<br>54 | 3<br>11 | 3<br>11 | |
| हस्त<br>२ | उफा<br>३ | पुन<br>१ | हस्त<br>२ | मृग<br>२ | स्वा<br>३ | पूभा<br>१ | उभा<br>३ | हस्त<br>१ | |
| ० | ० | मा | मा | मा | मा | व | व | व | |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | |
| सम | मित्र | शत्रु | उच्च | शत्रु | मूल | स्व. | सम | मित्र | स्थिति |

कुण्डली सूर्योदय, 2 अक्तूबर

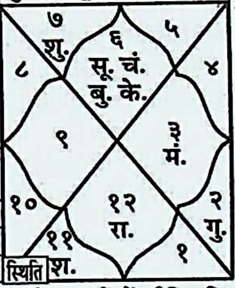

### आश्विन कृष्ण पक्षफल–

आश्विन कृष्णपक्ष **'पितृपक्ष'** कहलाता है। पितरों के निमित्त किए जाने वाले प्राय: सभी श्राद्धकर्म पार्वण श्राद्ध कहलाते हैं। श्राद्धों में अपने दिवंगत पूर्वजों की मृत्यु–तिथ्यानुसार तिल, कुशा, जौं, चावल एवं गंगाजल सहित संकल्पपूर्वक पिण्डदान व तर्पणादि करने के बाद ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन, फल–वस्त्रादि का दान दक्षिणा सहित करता है, उसके पितर–संतृप्त होकर साधक को दीर्घायु, आरोग्य, स्वास्थ्य, धन–यश, सम्पदा, मोक्षादि का आशीर्वाद देते हैं–**'आयु पुत्रान् यश: स्वर्ग-कीर्तिं पुष्टिबलं श्रियम्। पशून् सौख्यं धन-धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्।।'** जो व्यक्ति जान बूझकर श्राद्ध कर्म नहीं करता, वह शापग्रस्त होकर अनेक प्रकार के कष्टों एवं अभावों से पीड़ित रहता है। ता. 24 सितं. को (चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी) श्रीमहालक्ष्मी व्रत तथा 25 सितं. को उदय-व्यापिनी अष्टमी में जीवित्पुत्रिका का व्रत, पूजनादि सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने सुहाग एवं सन्तान की दीर्घायु की कामना हेतु करती हैं। ता. 2 अक्तू. को सर्वपितृ श्राद्ध के दिन ज्ञात-अज्ञात तिथियों में मृतकजनों के निमित्त श्राद्धकर्म करने से पितरों की शान्ति तथा श्राद्धकर्त्ता के गृह में सुख–शान्ति एवं पारिवारिक सौभाग्य में वृद्धि होती है। **शास्त्रों में मध्याह्न विशेषकर अपराह्न–काल में श्राद्धकर्म करने का विधान कहा गया है।** उस दिन गो–ग्रास एवं पीपल पर जल–तिलाञ्जली अर्पण करना शुभ होता है। सायंकाल को गृहद्वार के बाहर दीप–प्रज्वलित करके श्रद्धापूर्वक पितृ–विसर्जन करना चाहिए। **गजच्छाया योग**–इस योग में स्नान, दान, जप एवं ब्राह्मणों को भोजन, अन्न, वस्त्रादि का दान व श्राद्ध करने का विशेष माहात्म्य माना गया है। उपरोक्त पितृपक्ष में यह विशिष्ट योग 2 अक्तू. को दोपहर 12घं.–23मिं. से सूर्यास्त तक रहेगा। ***आकाश–लक्षण***–उत्तर-पश्चिमी राज्यों में खण्ड वर्षा हो। ***कहीं आर्द्रता, कहीं प्रतिकूल वर्षा हो।***

## वि. संवत् २०८१, आश्विन शुक्ल पक्ष शाक: १९४६

सन् 2024 ई.(ता. 3 से 17 अक्तूबर तक), हिजरी सन् 1446
**सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद् ऋतु:**

बुध अस्त है। प्रातः मंगल याम्योत्तरवृत्तासन्न और गुरु याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं शनि पूर्वकपाल में तथा शुक्र पश्चिमक्षितिज के पास होगा।

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घड़ी पल | नक्षत्र | समाप्तिकाल घड़ी पल | योग | समाप्तिकाल घड़ी पल | करण | समाप्तिकाल घड़ी पल | तारीखें आश्वि. शक | रबिउल्सानी मु. | अक्टू. | आश्वि. प्रवि. | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | मा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं. | सूर्यास्त घं.मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९:०८ | १ | गुरु | ५१:२० | हस्त | २२:४३ | ऐन्द्र | ५४:५३ | किं | १८:०२ | 11 | 29 | 3 | १८ | तु.५६:३८ | शरद् नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन, मातामह (नाना/नानी) का श्राद्ध, **(A)** | ५:१६:०६:४७ | 6:27 | 18:06 |
| २९:०५ | २ | शुक्र | ५७:४० | चित्रा | ३०:२८ | वैधृ. | ५७:१५ | बा | २४:३० | 12 | 30 | 4 | १९ | तुला | चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शुक्र विशाखा में ४४:२३ (24:12) | ५:१७:०५:५२ | 6:27 | 18:05 |
| २९:०० | ३ | शनि | ६०:०० | स्वा. | ३७:४३ | विष्क | ५९:१० | तै | ३०:३२ | 13 | रबि | 5 | २० | तुला | रबि–उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ, स.सि.यो. | ५:१८:०५:०३ | 6:28 | 18:04 |
| २८:५३ | ३ | रवि | ३:२३ | विशा | ४४:१५ | प्रीति | ६०:०० | ग | ३:२३ | 14 | 2 | 6 | २१ | वृ.२७:४३ | भ. ३५:५१ से, बुध चित्रा में १३:१० (11:45) | ५:१९:०४:१४ | 6:29 | 18:02 |
| २८:५० | ४ | चन्द्र | ८:१८ | अनु. | ४९:५० | प्रीति | ०:२८ | वि | ८:१८ | 15 | 3 | 7 | २२ | वृश्चिक | भ. ८:१८ तक, उपाङ्ग ललिता व्रत (देखें पृष्ठ 25), गण्डमूल 26:25 से | ५:२०:०३:२६ | 6:29 | 18:01 |
| २८:४५ | ५ | मंग | १२:०३ | ज्ये. | ५४:०५ | आयु | ०:५३ | बा | १२:०३ | 16 | 4 | 8 | २३ | ध.५४:०५ | गण्डमूल विचार | ५:२१:०२:४१ | 6:30 | 18:00 |
| २८:४० | ६ | बुध | १४:२० | मूल | ५६:५० | सोभा<br>शोभ | ० १५<br>५८ २५ | तै | १४:२० | 17 | 5 | 9 | २४ | धनु | **सरस्वती आवाहन, गुरु वक्री १४:५८ ( 12:30 ), गण्डमूल 29:15 तक** | ५:२२:०१:५८ | 6:31 | 17:59 |
| २८:३५ | ७ | गुरु | १५:०३ | पू.षा. | ५७:५५ | अति | ५५:१५ | व | १५:०३ | 18 | 6 | 10 | २५ | धनु | भ. १५:०३ से ४४:३१ तक, सरस्वती पूजन, सूर्य चित्रा में १८:५८, बुध तुला में 11:19 | ५:२३:०१:१५ | 6:31 | 17:57 |
| २८:३० | ८ | शुक्र | १३:५८ | उ.षा. | ५७:१३ | सुक. | ५०:३५ | ब | १३:५८ | 19 | 7 | 11 | २६ | म.१२:५३ | **श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, सरस्वती बलिदान, महानवमी (व्रत एवं पूजा हेतु) देखें पृ.25** | ५:२४:००:३६ | 6:32 | 17:56 |
| २८:२५ | ९ | शनि | ११:०५ | श्रव. | ५४:४८ | धृति | ४४:३३ | कौ | ११:०५ | 20 | 8 | 12 | २७ | मकर | **महानवमी** (बलिदान एवं होम हेतु), **विजयादशमी ( दशहरा ) (B)** | ५:२४:५९:५८ | 6:33 | 17:55 |
| २८:२३ | १० | रवि | ६:३० | धनि. | ५०:४८ | शूल | ३७:१० | ग | ६:३० | 21 | 9 | 13 | २८ | कुं.२२:५८ | भ. ३३:२५ से, **पंचक प्रारम्भ २२:५८(15:44)**, पापांकुशा एकादशी व्रत**(C)** | ५:२५:५९:२१ | 6:33 | 17:54 |
| २८:१८ | ११ | चन्द्र | ०:२० | शत. | ४५:२३ | गण्ड | २८:३८ | वि | ०:२० | 22 | 10 | 14 | २९ | कुम्भ | भ. ०:२० तक, **पापांकुशा एकादशी व्रत ( वैष्णव )देखें पृष्ठ 25**, बुध स्वा. में १८:२० | ५:२६:५८:४७ | 6:34 | 17:53 |
| अवम् | १२ | चन्द्र | ५२:५३ | ०० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ० | 11 | ० | ० | ०० | **द्वादशी तिथि का क्षय** ०० ०० | ० ० ० ० | ०० | ०० |
| २८:१३ | १३ | मंग | ४४:२३ | पू.भा. | ३८:५५ | वृद्धि | १९:०५ | कौ | १८:३८ | 23 | 12 | 15 | ३० | मी.२५:३५ | **भौम प्रदोष व्रत**, शुक्र अनु. में ४३:४३ | ५:२७:५८:१५ | 6:35 | 17:52 |
| २८:१० | १४ | बुध | ३५:१५ | उ.भा. | ३१:४८ | ध्रुव<br>व्या. | ८ ५५<br>५८ २३ | ग | ९:४९ | 24 | 13 | 16 | ३१ | मीन | भ. ३५:१५ से, **शरद् पूर्णिमा व्रत** (देखें पृष्ठ 26),कोजागर व्रत (लक्ष्मी–**(D)** | ५:२८:५७:४२ | 6:35 | 17:51 |
| २८:०३ | १५ | गुरु | २५:५० | रेव. | २४:२० | हर्ष | ४७:४५ | वि | ०:३३ | 25 | 14 | 17 | का. | मे.२४:२० | भ. ०:३३ तक, **आश्विन पूर्णिमा, पंचक समाप्त २४:२०** (16:20), **(E)** | ५:२९:५७:१५ | 6:36 | 17:49 |

**(A)** महाराजा अग्रसेन जयन्ती, वक्री शनि शत. ४ में २१:१८ **(B)** नवरात्र समाप्त, **शुक्र वृश्चिक में ५८:३८** (30:00), **सरस्वती विसर्जन**, अपराजिता–पूजन, शमी–पूजा, आयुध (शस्त्र) पूजन, सीमोल्लंघन **(C)** (स्मार्त) – देखें पृष्ठ 25, भरत मिलाप, श्रीमाधवाचार्य जयन्ती, नवरात्र व्रत पारणा **(D)** इन्द्र पूजा), वाराह चतुर्दशी, मेला शाकम्भरी देवी (देवबन), महारास पूर्णिमा (ब्रजभूमि), गण्डमूल 19:18 से **(E)** श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृष्ठ 26), महर्षि श्रीवाल्मीकि जयन्ती, **सूर्य तुला में २:४५** (7:42), **कार्तिक संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल सं. सूर्योदय से दोप. 13:06 तक, **कार्तिक स्नान–नियम प्रारम्भ**, नवान्नभक्षणं, आकाश दीपदान प्रारम्भ

### शुक्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 11 अक्तूबर

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५<br>२३<br>५८<br>४ | ८<br>२६<br>३३<br>५२ | २<br>२५<br>४१<br>१९ | ६<br>१<br>१४<br>४१ | १<br>२७<br>७<br>४९ | ६<br>२७<br>३३<br>२ | १०<br>१९<br>३२<br>३३ | ११<br>११<br>३८<br>१३ | ५<br>११<br>३८<br>१३ |
| 59<br>20 | 808<br>57 | 28<br>49 | 97<br>57 | 0<br>26 | 72<br>44 | 3<br>18 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| चित्रा<br>१ | पूषा<br>४ | पुन.<br>२ | चित्रा<br>३ | मृग<br>२ | विशा<br>३ | शत<br>४ | उभा<br>३ | हस्त<br>१ |
| ० | ० | मा | मा | व | मा | व | व | व |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ |
| सम | सम | शत्रु | मित्र | शत्रु | मूल | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 11 अक्तू.

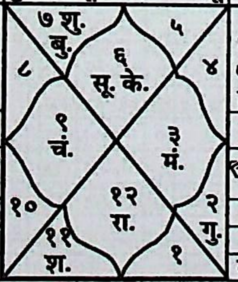

### गुरौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 17 अक्तूबर

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५<br>२९<br>५४<br>३३ | ११<br>२३<br>८<br>१ | २<br>२८<br>३०<br>०० | ६<br>१०<br>५१<br>४९ | १<br>२७<br>२<br>८ | ७<br>४<br>४९<br>०० | १०<br>१९<br>१३<br>५० | ११<br>११<br>१९<br>९ | ५<br>११<br>१९<br>९ |
| 59<br>31 | 911<br>53 | 27<br>4 | 93<br>51 | 1<br>39 | 72<br>33 | 2<br>50 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| चित्रा<br>२ | रेव<br>२ | पुन<br>३ | स्वा<br>२ | मृग<br>२ | अनु<br>१ | शत<br>४ | उभा<br>३ | हस्त<br>१ |
| ० | ० | मा | मा | व | मा | व | व | व |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ |
| सम | सम | शत्रु | मित्र | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुं. सूर्योदय, 17 अक्तूबर

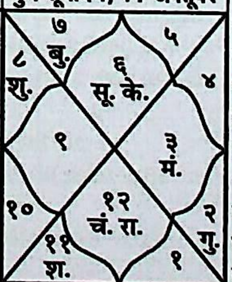

### आश्विन शुक्ल पक्षफल–

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा ( 3 अक्तू. ) से शारदीय नवरात्रों का शुभारम्भ होगा। संकल्पपूर्वक प्रतिपदा को घटस्थापन, दीप प्रज्वलन एवं षोडशोपचार सहित श्रीदुर्गा पूजन करके श्रीदुर्गा–सप्तशती का पाठ प्रारम्भ किया जाता है। नवरात्रों में श्रीदुर्गा–पूजा, कुमारी कन्या पूजन, दानादि का विशेष माहात्म्य होता है। **कार्तिक संक्रान्ति**—17 अक्तूबर, गुरुवार को ३० मुहूर्त्ति यह सं. प्रातः 7 बजकर 42 मिंट पर तुला लग्न में प्रवेश करेगी। इस सं. का पुण्यकाल दोप. 13:06 बजे तक रहेगा। वारानुसार नन्दा तथा नक्षत्रानुसार मन्दाकिनी नामक यह सं. ब्राह्मणों, लेखकों, राजनेताओं के लिए सुखकर तथा लाभदायक रहेगी। सं. राशिफल—यह सं. मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर तथा कुम्भ राशि वालों के लिए शुभप्रद व अनुकूल रहेगी, जबकि शेष राशि वालों के लिए कुछ भागदौड़ वाली रहेगी। **लोक–भविष्य**—चान्द्र आश्विन मास में पाँच बृहस्पतिवार तथा गुरुवार की संक्रान्ति होने से देश के पश्चिमी भागों जैसे–काश्मीर, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरातादि प्रदेशों में कहीं उपद्रव, आतंकादि विस्फोटक एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं। ता. 13 अक्तू. से गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध होने से राजनैतिक वातावरण अशान्त तथा असमंजसपूर्ण रहेगा। लोगों में रोग-शोक आदि दुःखों की बहुलता रहेगी। सरकार-विपक्ष के मध्य टकराव, वैचारिक युद्ध की स्थिति रहे। **आकाश लक्षण**—कुछ क्षेत्रों में प्रबल (अधिक) एवं बेमौसमी (प्रतिकूल) वर्षा होगी।

## वि. संवत् २०८१, कार्तिक कृष्ण पक्ष शाक: १९४६

**सन् 2024 ई. (ता. 18 अक्तू. से 1 नवं. तक), हिजरी सन् 1446**
**सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु:**

प्रात: मंगल पूर्वकपाल में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न देखा जा सकेगा। सायं शनि याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में, शुक्र पश्चिमक्षितिज में तथा ता. 21 से बुध भी शुक्र के नीचे दृश्य होगा।

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घटी पल | नक्षत्र | समाप्तिकाल घटी पल | योग | समाप्तिकाल घटी पल | करण | समाप्तिकाल घटी पल | तारीखें आश्वि. शक | तारीखें रबिउस्सानी | तारीखें अक्टू. | तारीखें कार्ति. प्रवि. | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७:५८ | १ | शुक्र | १६:३८ | अश्वि | १७:०३ | वज्र | ३७:२३ | कौ | १६:३८ | 26 | 14 | 18 | २ | मेष | कार्तिक कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 13:26 तक, | ६:००:५६:४० | 6:37 | 17:48 |
| २७:५३ | २ | शनि | ७:५८ | भर. | १०:२३ | सिद्धि | २७:४० | ग | ७:५८ | 27 | 15 | 19 | ३ | वृ.२३:५० | भ. ३४:११ से, | ६:०१:५६:२६ | 6:38 | 17:47 |
| २७:५० | ३ | रवि | ०:२३ | कृति | ४:४५ | व्य. | १८:५५ | वि | ०:२३ | 28 | 16 | 20 | ४ | वृष | भ. ०:२३ तक, **व्रत करवा–चौथ** (करक–चतुर्थी) चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 12 **(A)** | ६:०२:५६:०२ | 6:38 | 17:46 |
| अवम् | ४ | रवि | ५४:१० | ०० | ०० | ० | ०० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ०० | **चतुर्थी तिथि का क्षय** ०० ०० | ० ० ० ० | ०० | ०० |
| २७:४५ | ५ | चन्द्र | ४९:३७ | रोहि.<br>मृग | ० ३०<br>५८ ०० | वरी | ११:२० | कौ | २१:५४ | 29 | 17 | 21 | ५ | मि.२९:०० | स.सि.यो. | ६:०३:५५:४२ | 6:39 | 17:45 |
| २७:४० | ६ | मंग | ४७:०५ | आर्द्रा | ५७:२८ | परि | ५:१५ | ग | १८:२१ | 30 | 18 | 22 | ६ | मिथुन | भ. ४७:०५ से, **स्कन्द षष्ठी व्रत**, बुध विशा. में ५३:२०, सूर्य सायन **(B)** | ६:०४:५५:२६ | 6:40 | 17:44 |
| २७:३८ | ७ | बुध | ४६:३८ | पुन. | ५९:०० | शिव<br>सिद्ध | ० ४८<br>५८ ०० | वि | १६:५२ | का | 19 | 23 | ७ | क.४३:२५ | भ. १६:५२ तक, सूर्य स्वाती में ४५:०५, शक कार्तिक प्रारम्भ | ६:०५:५५:०८ | 6:40 | 17:43 |
| २७:३३ | ८ | गुरु | ४८:१५ | पुष्य | ६०:०० | साध्य | ५६:४३ | बा | १७:२७ | 2 | 20 | 24 | ८ | कर्क | **अहोई अष्टमी व्रत, गुरु–पुष्य योग** | ६:०६:५४:५४ | 6:41 | 17:42 |
| २७:२८ | ९ | शुक्र | ५१:४३ | पुष्य | २:२५ | शुभ | ५६:५० | तै | १९:५९ | 3 | 21 | 25 | ९ | कर्क | वक्री गुरु मृग. १ में ५९:४५, गण्डमूल 7:40 से | ६:०७:५४:४४ | 6:42 | 17:41 |
| २७:२३ | १० | शनि | ५६:४३ | अश्ले | ७:३८ | शुक्ल | ५८:०५ | व | २४:१३ | 4 | 22 | 26 | १० | सिं.७:३८ | भ. २४:१३ से ५६:४३ तक, शुक्र ज्येष्ठा में ४६:०० (25:07) | ६:०८:५४:३५ | 6:43 | 17:40 |
| २७:१८ | ११ | रवि | ६०:०० | मघा | १४:१० | ब्रह्म | ६०:०० | ब | २९:४६ | 5 | 23 | 27 | ११ | सिंह | कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ, गण्डमूल 12:24 तक | ६:०९:५४:२९ | 6:44 | 17:39 |
| २७:१५ | ११ | चन्द्र | २:४८ | पू.फा. | २१:४० | ब्रह्म | ०:०८ | बा | २:४८ | 6 | 24 | 28 | १२ | कं.३८:३८ | **रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी** (देखें पृष्ठ 26), मंगल पुष्य में २३:०३ | ६:१०:५४:२३ | 6:44 | 17:38 |
| २७:१० | १२ | मंग | ९:२८ | उ.फा. | २९:३३ | ऐन्द्र | २:३८ | तै | ९:२८ | 7 | 25 | 29 | १३ | कन्या | **भौम प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, बुध वृश्चिक में ३९:४५** (22:39), **(C)** | ६:११:५४:२० | 6:45 | 17:37 |
| २७:०५ | १३ | बुध | १६:१५ | हस्त | ३७:२५ | वैधृ | ५:१३ | व | १६:१५ | 8 | 26 | 30 | १४ | कन्या | भ. १६:१५ से ४९:३० तक, **श्रीहनुमान–जयन्ती** (उत्तर–भारत) अर्द्धरात्रि–**(D)** | ६:१२:५४:२० | 6:46 | 17:36 |
| २७:०० | १४ | गुरु | २२:४५ | चित्रा | ४४:५५ | विष्क | ७:४० | श | २२:४५ | 9 | 27 | 31 | १५ | तु.११:१३ | **नरक–चतुर्दशी** (पूर्व–अरुणोदय वाली), प्रभात–स्नान, तैलाभ्यंग, रुप **(E)** | ६:१३:५४:२२ | 6:47 | 17:35 |
| २६:५९ | ३० | शुक्र | २८:४५ | स्वा. | ५१:५० | प्रीति | ९:४५ | ना | २८:४५ | 10 | 28 | नवं | १६ | तुला | **कार्तिक अमावस** (देव–पितृकार्येषु अमावस), **दीपावली** (देखें पृष्ठ27), **(F)** | ६:१४:५४:२३ | 6:47 | 17:35 |

**(A)** श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, मंगल कर्क में १९:२० (14:22), बुध पश्चिम में उदय 28:12 **(B)** वृश्चिक में ५२:४३, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ **(C)** यम प्रीत्यर्थं दीपदान **(D)** व्यापिनी, श्रीधनवन्तरी–जयन्ती, यमाय–तर्पण, मासशिवरात्रि व्रत **(E)** चौदश, बुध अनु. में ५९:४३, काली–पूजा **(F)** श्रीमहालक्ष्मी पूजन (देखें पृष्ठ 27, 30), कुबेर पूजा, सायं दीपदान देवालये, कौमुदि महोत्सव सम्पन्न, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन), नवम्बर मास प्रारम्भ

### गुरौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 24 अक्तूबर

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६<br>६<br>५१<br>५७ | ३<br>२<br>५५<br>४७ | ३<br>१<br>३२<br>५३ | ६<br>२१<br>३५<br>५४ | १<br>२६<br>४६<br>२५ | ७<br>१३<br>१६<br>१५ | १०<br>१८<br>५५<br>४४ | ११<br>१०<br>५६<br>५३ | ५<br>१०<br>५६<br>५३ |
| 59<br>47 | 757<br>2 | 24<br>47 | 89<br>38 | 3<br>2 | 72<br>21 | 2<br>14 | 3<br>10 | 3<br>10 |
| स्वा<br>१ | पुन<br>४ | पुन<br>४ | विशा<br>१ | मृग<br>२ | अनु<br>३ | शत<br>४ | उभा<br>३ | हस्त<br>१ |
| ० | ० | मा | मा | व | मा | व | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ |
| नीच | स्व | नीच | मित्र | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 24 अक्तू.

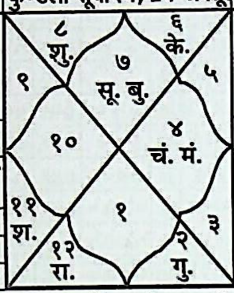

### शुक्रे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 1 नवम्बर

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६<br>१४<br>५१<br>११ | ६<br>९<br>१<br>३८ | ३<br>४<br>४०<br>३४ | ७<br>३<br>१५<br>५५ | १<br>२६<br>१६<br>४८ | ७<br>२२<br>५४<br>७ | १०<br>१८<br>४०<br>३१ | ११<br>१०<br>३१<br>२७ | ५<br>१०<br>३१<br>२७ |
| 60<br>5 | 778<br>7 | 21<br>40 | 84<br>32 | 4<br>32 | 72<br>4 | 1<br>28 | 3<br>10 | 3<br>10 |
| स्वा<br>३ | स्वा<br>१ | पुष्य<br>१ | विशा<br>४ | मृग<br>१ | ज्ये.<br>२ | शत<br>४ | उभा<br>३ | हस्त<br>१ |
| ० | ० | मा | मा | व | मा | व | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ |
| नीच | सम | नीच | सम | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 1 नवंबर

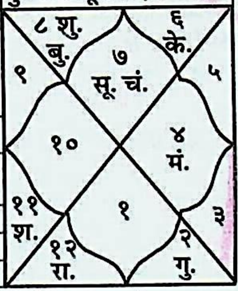

### कार्तिक कृष्ण पक्षफल–

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी (20 अक्तू.) को पतिव्रता स्त्रियां अपने पति के मंगल हेतु एवं आयु वृद्धि की कामना से **'करवा–चौथ'** का व्रत रखती हैं। वे निराहार रहकर सायंकाल को श्रीगणेश–पूजन, करवा–दान, शिव–पार्वती पूजन एवं चन्द्रमा को अर्घ्य प्रदान कर, पति का सम्मान करने के उपरान्त ही स्वयं भोजन करती हैं। **अहोई अष्टमी** (24 अक्तू.) का व्रत, पूजन भी प्रदोष–व्यापिनी अष्टमी के दिन सन्तान व पति के कल्याण हेतु किया जाता है। **धन त्रयोदशी** (29 अक्तू.) को सायं नवीन बर्तन क्रय करना, श्रीलक्ष्मीनारायण का पूजन करने के बाद अनाज, वस्त्र, औषधियां एवं यमार्थ दीपदान करने से अकालमृत्यु का भय नहीं रहता। 31 अक्तू. को नरक–चतुर्दशी के दिन बिजली, अग्नि, उल्का आदि से मृतकों की शान्ति के लिए चार मुख वाले दीपक को प्रज्वलित करके यथाशक्ति दान करें। सायंकाल दक्षिणोभिमुख जल, तिल व कुश सहित तर्पण करें। ता. 1 नवं., शुक्रवार को कार्तिक अमावस्या (दीपावली) को प्रदोषकाल में दीपदान करके अपने गृह के पूजा–स्थान में मन्त्रपूर्वक दीप प्रज्वलित करके महालक्ष्मी की यथाविधि पूजा करनी चाहिए। यद्यपि 31 अक्तू. को भी प्रदोषकाल अमावस्या तिथि युक्त है, परन्तु शास्त्रानुसार यदि अमावस्या दो दिन प्रदोषव्यापिनी हो, तो अगले (दूसरे) दिन ही दीपावली (महालक्ष्मी पूजन) करना चाहिए (देखें पृष्ठ 27)। **लोक–भविष्य**–गुरु–शुक्र के मध्य समसप्तक तथा मंगल–शनि के मध्य षडाष्टक दृष्टि सम्बन्ध रहने से राजनीतिक वातावरण बड़ा असमंजसपूर्ण तथा आरोप–प्रत्यारोप भरा रहेगा। कुछ प्रदेशों में विस्फोटक घटनाएँ घटित होंगी। महँगाई भी अपने चरम स्तर पर होगी।

**आकाश लक्षण**–पक्ष के पूर्वार्द्ध में आकाश निर्मल रहे, उत्तरार्द्ध में उत्तर–पश्चिमी विशेषकर पहाड़ी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग हैं।

## वि. संवत् २०८१, **कार्तिक शुक्ल पक्ष** शाक: १९४६

**सन् 2024 ई. (ता. 2 से 15 नवम्बर तक), हिजरी सन् 1446**
**सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु:**

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घटी पल | नक्षत्र | समाप्तिकाल घटी पल | योग | समाप्तिकाल घटी पल | करण | समाप्तिकाल घटी पल | तारीखें कार्ति. शक | तारीखें जमा. मु. | तारीखें नवम्बर | तारीखें कार्ति. प्र. | चन्द्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | प्रातः मंगल याम्योत्तरवृत्तासन्न तथा गुरु इससे पश्चिम की ओर दिखाई देगा। सायं शनि को याम्योत्तरवृत्त के पास तथा बुध–शुक्र को पश्चिमक्षितिज के पास देखा जा सकता है। | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं.मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६:५५ | १ | शनि | ३३:५५ | विशा | ५७:५५ | आयु | ११:१५ | किं | १:२० | 11 | 29 | 2 | १७ | वृ.४१:३० | अन्नकूट–गोवर्धन पूजा, गोक्रीडा, बलिपूजा, मार्गपाली पूजा, विश्वकर्मा दिवस (पं.) | ६:१५:५४:३१ | 6:48 | 17:34 |
| २६:५० | २ | रवि | ३८:१३ | अनु. | ६०:०० | सौभा | १२:०५ | बा | ६:०४ | 12 | 30 | 3 | १८ | वृश्चिक | **चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, **भ्रातृ ( भाई )दूज**, यमद्वितीया, यमुना–स्नान, कलम-**(A)** | ६:१६:५४:३८ | 6:49 | 17:33 |
| २६:४५ | ३ | चन्द्र | ४१:२८ | अनु. | ३:०५ | शोभ | १२:१३ | तै | ९:५१ | 13 | जम | 4 | १९ | वृश्चिक | जमादिउल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल 8:04 से | ६:१७:५४:४८ | 6:50 | 17:32 |
| २६:४० | ४ | मंग | ४३:३५ | ज्ये. | ७:१५ | अति | ११:३० | व | १२:३२ | 14 | 2 | 5 | २० | ध.७:१५ | भ. १२:३२ से ४३:३५ तक, दूर्वा गणपति व्रत, गण्डमूल विचार | ६:१८:५४:५९ | 6:51 | 17:31 |
| २६:३८ | ५ | बुध | ४४:३५ | मूल | १०:२० | सुक | ९:५८ | ब | १४:०५ | 15 | 3 | 6 | २१ | धनु | सूर्य विशा. में ४:४५, शुक्र मूल १ धनु में ५१:३८ (27:31) सौभाग्य-**(B)** | ६:१९:५५:१३ | 6:52 | 17:31 |
| २६:३५ | ६ | गुरु | ४४:१८ | पू.षा. | १२:१८ | धृति | ७:२८ | कौ | १४:२७ | 16 | 4 | 7 | २२ | म.२७:३५ | **सूर्य षष्ठी पर्व ( छठ ) ( बिहार ),** | ६:२०:५५:२५ | 6:52 | 17:30 |
| २६:३० | ७ | शुक्र | ४२:४० | उ.षा. | १२:५५ | शूल<br>गण्ड | ३:५८<br>५९:२३ | ग | १३:२९ | 17 | 5 | 8 | २३ | मकर | भ. ४२:४० से, **(B)** पंचमी, जया-पंचमी, ज्ञान–पंचमी (जैन), गण्डमूल 11:00 तक | ६:२१:५५:४० | 6:53 | 17:29 |
| २६:२८ | ८ | शनि | ३९:४० | श्रव. | १२:१५ | वृद्धि | ५३:३३ | वि | ११:१० | 18 | 6 | 9 | २४ | कुं.४१:२५ | भ. ११:१० तक, **पंचक प्रारम्भ** ४१:२५ (23:28), **गोपाष्टमी** | ६:२२:५५:५८ | 6:54 | 17:29 |
| २६:२३ | ९ | रवि | ३५:१८ | धनि. | १०:१३ | ध्रुव | ४६:५८ | बा | ७:२९ | 19 | 7 | 10 | २५ | कुम्भ | **अक्षय–कूष्माण्ड नवमी**, बुध ज्ये. में ५८:३८, राहु उ.भा. २–केतु उ.फा. ४**(C)** | ६:२३:५६:१७ | 6:55 | 17:28 |
| २६:१८ | १० | चन्द्र | २९:३८ | शत. | ६:५० | व्या. | ३९:१० | तै | २:२८ | 20 | 8 | 11 | २६ | मी.४८:३५ | भ. ५६:१४ से, **भीष्मपंचक प्रारम्भ** (देखें पृष्ठ 26) | ६:२४:५६:३८ | 6:56 | 17:27 |
| २६:१५ | ११ | मंग | २२:५० | पू.भा.<br>उ.भा. | २:१८<br>५६:४८ | हर्ष | ३०:३० | वि | २२:५० | 21 | 9 | 12 | २७ | मीन | भ. २२:५० तक, **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह (D)** | ६:२५:५६:५९ | 6:57 | 17:27 |
| २६:१० | १२ | बुध | १५:१० | रेव. | ५०:३३ | वज्र | २१:०८ | बा | १५:१० | 22 | 10 | 13 | २८ | मे.५०:३३ | **पंचक समाप्त** ५०:३३ (27:11), **प्रदोष व्रत**, हरिप्रबोधोत्सव, गण्डमूल | ६:२६:५७:२३ | 6:58 | 17:26 |
| २६:०९ | १३ | गुरु | ६:५५ | अश्वि | ४३:५८ | सिद्धि | ११:२० | तै | ६:५५ | 23 | 11 | 14 | २९ | मेष | भ. ५८:२५ से, **वैकुण्ठ चतुर्दशी**, नेहरू-जयन्ती (बाल–दिवस), गण्डमूल 24:33 तक | ६:२७:५७:४५ | 6:58 | 17:26 |
| अवम् | १४ | गुरु | ५८:२५ | ०० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ० | ० | ० | ० | ०० | **चतुर्दशी तिथि का क्षय** ०० ०० | ० ० ० ० | ०० | ०० |
| २६:०५ | १५ | शुक्र | ५०:०० | भर. | ३७:२० | व्य.<br>वरी | १:१८<br>५१:२५ | वि | २४:१३ | 24 | 12 | 15 | ३० | वृ.५०:४५ | भ. २४:१३ तक, **कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरु नानकदेव जयन्ती, भीष्मपंचक(E)** | ६:२८:५८:११ | 6:59 | 17:25 |

**(A)** दवात पूजन, **विश्वकर्मा–पूजन** **(C)** में ५०:०८, आमला नवमी, आरोग्य व्रत, जगधातृ–पूजा **(D) चातुर्मास्य व्रत–नियम समाप्त,** गंडमूल 29:40 से **(E) समाप्त, शनि मार्गी** ३२:१५ (19:53), मेला रामतीर्थ (अमृतसर), मेला पुष्करतीर्थ (राज.), आकाशदीपदान समाप्ति, कार्तिक व्रतोद्यापनं, श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव, कार्तिकस्नान समाप्त, **पद्मक योग** (21:55 से 26:59 तक)–देखें पृ. 26

### शनौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 9 नवम्बर

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ९ | ३ | ७ | १ | ८ | १० | ११ | ५ |
| २२ | १९ | ७ | १४ | २५ | २ | १८ | १० | १० |
| ५२ | ४६ | २१ | ६ | ३५ | २९ | ३१ | ६ | ६ |
| २८ | १३ | १८ | ३८ | ४३ | २९ | ३८ | १ | १ |
| 60<br>17 | 822<br>45 | 17<br>59 | 76<br>9 | 5<br>52 | 71<br>42 | 0<br>38 | 3<br>10 | 3<br>10 |
| विशा<br>१ | श्रव<br>३ | पुष्य<br>२ | अनु<br>४ | मृग<br>१ | मूल<br>१ | शत<br>४ | उभा<br>३ | हस्त<br>१ |
| ० | ० | मा | मा | व | मा | व | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ |
| नीच | सम | नीच | सम | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 9 नवं.

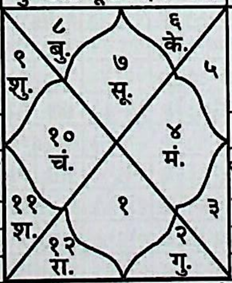

### शुक्रे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 15 नवम्बर

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ० | ३ | ७ | १ | ८ | १० | ११ | ५ |
| २८ | १६ | ९ | २१ | २४ | ९ | १८ | ९ | ९ |
| ५४ | २५ | १ | १५ | ५८ | ३८ | २९ | ४६ | ४६ |
| २९ | ४८ | २७ | ३८ | २३ | ४८ | २१ | ५७ | ५७ |
| 60<br>25 | 996<br>55 | 14<br>49 | 63<br>16 | 6<br>42 | 71<br>20 | 0<br>1 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| विशा<br>३ | भर<br>१ | पुष्य<br>२ | ज्ये.<br>२ | मृग<br>१ | मूल<br>३ | शत<br>४ | उभा<br>२ | उफा<br>४ |
| ० | ० | मा | मा | व | मा | व | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ |
| नीच | सम | नीच | सम | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुं. सूर्योदय, 15 नवम्बर

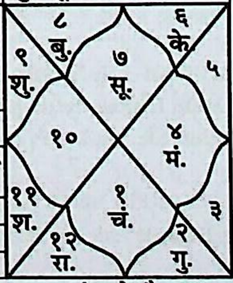

### कार्तिक शुक्ल पक्षफल–

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (2 नवं.) को श्रीकृष्ण भगवान् की प्रसन्नता के लिए अन्नकूट पर्व के उपलक्ष्य में छप्पन (56) भोग (अर्थात् अनेक प्रकार) के पकवान बनाकर गोवर्धन व श्रीकृष्ण की पूजा की जाती है। **द्वितीया** (3 नवं.) को **भाई–दूज** के दिन स्नान–उपरान्त शिव–पार्वती एवं यम-पूजनोपरान्त बहन अपने भाई की मंगल–कामना हेतु उसे तिलक लगाती है। **भीष्मपंचक** पंचदिनात्मक होने से 11 से 15 नवम्बर तक रहेंगे। (देखें पृष्ठ 26)। **हरिप्रबोधिनी एकादशी** (12 नवं.) से चातुर्मास्य व्रतादि नियम समाप्त होंगे। ता. 12 नवं. को ही विवाह नक्षत्र उ.भा. में तुलसी विवाह करना प्रशस्त रहेगा। ता. 13 नवं. को श्रीहरि का प्रबोधोत्सव भी मनाने की परम्परा है। ता. 14 नवं. को वैकुण्ठ चतुर्दशी अर्द्धरात्रि व्यापिनी होगी। इसदिन भगवान् श्रीविष्णु एवं श्रीशिव की पूजा एवं संकीर्तन संयुक्त रूप से किया जाता है। ता. 15 नवं. को **कार्तिक पूर्णिमा** के दिन कार्तिक स्नान, तीर्थस्नान, दानादि का पुण्य होगा। **ग्रह–गोचर–'मंगल-शनि'** के मध्य **षडाष्टक योग** सम्बन्ध रहने से लोगों में रोग-शोक आदि दुःखों की बहुलता होगी। मूंगफली, खाद्य-तेल, चीनी, गुड़-शक्कर तेज भाव होंगे। लोगों में क्लिष्ट रोग भय, असन्तोष, व्याकुलता, पीड़ा एवं कहीं दुर्भिक्ष, छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) होने का भय रहे। **आकाश लक्षण**–पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश व जम्मू-कश्मीर के उत्तरी भागों में तेज हवाओं के साथ बौछारें पड़ने के योग हैं। **शकुन**–का. शु. १२ की रात्रि को आकाश निर्मल रहे, तो सुभिक्ष हो।

## वि. संवत् २०८१, मार्गशीर्ष कृष्ण शाक: १९४६

**सन् 2024 ई. (ता. 16 नवम्बर से 1 दिसम्बर तक), हिजरी सन् 1446**
**सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु:**

प्रातः मंगल याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में तथा गुरु भी पश्चिम में नीचे होगा। सायं शनि खमध्यासन्न तथा बुध-शुक्र पश्चिमक्षितिज में होंगे। ता. 30 नवं. से बुध पश्चिम में ही लुप्त हो जाएगा।

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घटी पल | नक्षत्र | समाप्तिकाल घटी पल | योग | समाप्तिकाल घटी पल | करण | समाप्तिकाल घटी पल | तारीखें कार्ति. शक | जमादि. अ. | नवम्बर | मार्ग. प्रवि. | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल | | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं. | सूर्यास्त घं.मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६:०३ | १ | शनि | ४२:०८ | कृति. | ३१:१० | परि. | ४२:०० | बा | १६:०४ | 25 | 13 | 16 | मा | वृष | सूर्य वृश्चिक में १:२० ( 7:32 ), मार्गशीर्ष संक्रान्ति,मु. ३०, पुण्यकाल(A) | ६:२९:५८:४१ | 7:00 | 17:25 |
| २५:५८ | २ | रवि | ३५:१५ | रोहि. | २५:५५ | शिव | ३३:२० | तै | ८:४२ | 26 | 14 | 17 | २ | मि.५३:४५ | | ७:००:५९:०९ | 7:01 | 17:24 |
| २५:५५ | ३ | चन्द्र | २९:४८ | मृग. | २१:५८ | सिद्ध | २५:५० | व | २:३२ | 27 | 15 | 18 | ३ | मिथुन | भ. २:३२ से २९:४८ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), शुक्र **(B)** | ७:०१:५९:४१ | 7:02 | 17:24 |
| २५:५० | ४ | मंग | २६:०५ | आर्द्रा | १९:४३ | साध्य | १९:४३ | बा | २६:०५ | 28 | 16 | 19 | ४ | मिथुन | सूर्य अनुराधा में १९:३५ (14:53) | ७:०३:००:१४ | 7:03 | 17:23 |
| २५:४८ | ५ | बुध | २४:२५ | पुन. | १९:२८ | शुभ | १५:१० | तै | २४:२५ | 29 | 17 | 20 | ५ | क.४:१८ | | ७:०४:००:४८ | 7:04 | 17:23 |
| २५:४५ | ६ | गुरु | २५:०० | पुष्य | २१:२० | शुक्ल | १२:२३ | व | २५:०० | 30 | 18 | 21 | ६ | कर्क | भ. २५:०० से ५६:१९ तक, सूर्य सायन धनु में ४५:५८, गण्डमूल 15:36 से,**(C)** | ७:०५:०१:२२ | 7:04 | 17:22 |
| २५:४३ | ७ | शुक्र | २७:३८ | अश्ले | २५:१३ | ब्रह्म | ११:१३ | ब | २७:३८ | मा | 19 | 22 | ७ | सिं.२५:१३ | शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार | ७:०६:०२:०० | 7:05 | 17:22 |
| २५:४० | ८ | शनि | ३२:१० | मघा | ३०:५३ | ऐन्द्र | ११:३० | कौ | ३२:१० | 2 | 20 | 23 | ८ | सिंह | **श्रीकालभैरवाष्टमी**, भैरव-जयन्ती, गण्डमूल 19:27 तक | ७:०७:०२:४१ | 7:06 | 17:22 |
| २५:३८ | ९ | रवि | ३८:०३ | पू.फा. | ३७:५५ | वैधृ | १२:५५ | तै | ५:०७ | 3 | 21 | 24 | ९ | कं.५४:४८ | | ७:०८:०३:२३ | 7:07 | 17:22 |
| २५:३३ | १० | चन्द्र | ४४:४५ | उ.फा. | ४५:४० | विष्क | १५:१० | व | ११:२४ | 4 | 22 | 25 | १० | कन्या | भ. ११:२४ से ४४:४५ तक, | ७:०९:०४:०७ | 7:08 | 17:21 |
| २५:३० | ११ | मंग | ५१:३८ | हस्त | ५३:३५ | प्रीति | १७:४० | ब | १८:१२ | 5 | 23 | 26 | ११ | कन्या | **उत्पन्ना एकादशी व्रत, बुध वक्री २:३८ ( 8:12 )** | ७:१०:०४:५१ | 7:09 | 17:21 |
| २५:२८ | १२ | बुध | ५८:०५ | चित्रा | ६०:०० | आयु | २०:०८ | कौ | २४:५२ | 6 | 24 | 27 | १२ | तु.२७:२३ | | ७:११:०५:३८ | 7:10 | 17:21 |
| २५:२७ | १३ | गुरु | ६०:०० | चित्रा | १:०५ | सौभा | २२:१० | ग | ३०:५४ | 7 | 25 | 28 | १३ | तुला | **प्रदोष व्रत**, वक्री गुरु रोहि. ४ में १८:०८ | ७:१२:०६:२३ | 7:10 | 17:21 |
| २५:२५ | १३ | शुक्र | ३:४३ | स्वा. | ७:४८ | शोभ | २३:२५ | व | ३:४३ | 8 | 26 | 29 | १४ | वृ.५७:१० | भ. ३:४३ से ३५:५९ तक, शुक्र उ.षा. में २०:४५, श्रीबालाजी-जयन्ती | ७:१३:०७:१२ | 7:11 | 17:21 |
| २५:२३ | १४ | शनि | ८:१५ | विशा. | १३:२८ | अति | २३:५० | श | ८:१५ | 9 | 27 | 30 | १५ | वृश्चिक | **पितृकार्येषु अमावस, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 17:39, मेला (D)** | ७:१४:०८:०३ | 7:12 | 17:21 |
| २५:२० | ३० | रवि | ११:३५ | अनु | १७:५८ | सुक | २३:२० | ना | ११:३५ | 10 | 28 | दिसं | १६ | वृश्चिक | **मार्गशीर्ष अमावस** (स्नानदानादि), गण्डमूल 14:24 बाद, दिसम्बर मास प्रा. | ७:१५:०८:५४ | 7:13 | 17:21 |

**(A)** सं. सूर्योदय से दोप. 13:56 तक, मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ **(B)** पू.षा. में २:२५, सौभाग्य सुन्दरी व्रत **(C) गुरुपुष्य योग** **(D)** पुरमण्डल ( जम्मू ), देविका-स्नान (ऊधमपुर, जम्मू-काश्मीर)

### शनौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 23 नवम्बर

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | ४ | ३ | ७ | १ | ८ | १० | ११ | ५ |
| ६ | ६ | १० | २७ | २४ | १९ | १८ | ९ | ९ |
| ५८ | १७ | ४३ | ४४ | १ | ७ | ३२ | २१ | २१ |
| ३८ | ५३ | ३४ | ४४ | ३४ | ३० | १२ | ३१ | ३१ |
| 60<br>39 | 723<br>23 | 9<br>58 | 22<br>47 | 7<br>34 | 70<br>45 | 0<br>50 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| अनु<br>२ | मूल<br>२ | पुष्य<br>३ | ज्ये.<br>४ | मृग.<br>१ | पूषा<br>२ | शत<br>४ | उभा<br>२ | उफा<br>४ |
| ० | ० | मा | मा | व | मा | मा | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ |
| मित्र | मित्र | नीच | सम | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 23 नवं.

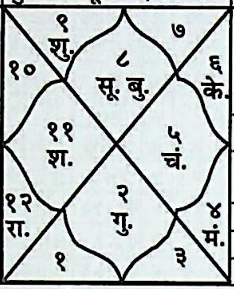

### रवौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 1 दिसम्बर

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | ७ | ३ | ७ | १ | ८ | १० | ११ | ५ |
| १५ | १२ | ११ | २६ | २२ | २८ | १८ | ८ | ८ |
| ४ | २ | ४३ | २२ | ५९ | ३१ | ४१ | ५६ | ५६ |
| ३३ | ५० | ५३ | १९ | १ | १० | ४८ | ४ | ४ |
| 60<br>50 | 752<br>00 | 4<br>17 | 57<br>11 | 8<br>4 | 70<br>2 | 1<br>41 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| अनु<br>४ | अनु<br>३ | पुष्य<br>३ | ज्ये.<br>३ | रोहि<br>४ | उषा<br>१ | शत<br>४ | उभा<br>२ | उफा<br>४ |
| ० | ० | मा | व | व | मा | मा | व | व |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ |
| मित्र | नीच | नीच | सम | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 1 दिसंबर

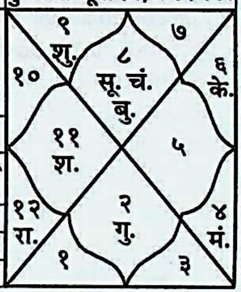

### मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की मध्याह्न एवं प्रदोषव्यापिनी अष्टमी को भगवान् शिव के प्रतीकात्मक एवं चमत्कारीस्वरूप **महाकाल भैरव** की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। इसदिन '**जागरं चोपवासं च कृत्वा कालाष्टमीदिने। प्रयतः पापनिर्मुक्तः शैवो भवति शोभनः।।**' के अनुसार उपवास करके रात्रि में जागरण करने से पाप क्षीण होते हैं और व्रती कल्याण प्राप्त करता है। **उत्पन्ना एकादशी** (26 नवं.) का विधिपूर्वक व्रत रखने से सर्वप्रकार के अभीष्टों की सिद्धि होती है। **मार्गशीर्ष संक्रान्ति**– 16 नवं., शनिवार, ३० मुहू. प्रातः 7 बजकर 32 मिंट पर वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेगी। पुण्यकाल 13घं.–56मिं. तक रहेगा। वारानुसार राक्षसी तथा नक्षत्रानुसार मिश्रा नामक यह सं. नीच प्रवृत्ति वाले, दुष्ट तथा पशुओं के व्यापारियों के लिए लाभप्रद रहेगी। **सं. राशिफल**–यह सं. वृष, सिंह, वृश्चिक, धनु, मकर तथा कुम्भ राशि वालों के लिए लाभप्रद रहेगी। **ग्रह–गोचर–शनिवारी संक्रान्ति** तथा चान्द्र मार्गशीर्ष मास में **पाँच शनि** तथा **पाँच रविवार** होने से पृथ्वी पर राजाओं (प्रशासकों) के मध्य टकराव, युद्ध तथा लोगों में भी परस्पर विग्रह एवं विरोध अधिक रहे। लोगों में क्लिष्ट रोगों का प्रसार हो एवं निरीह लोगों की अकालमृत्यु के भी योग हैं–'**शनिवारा यदा पंचजायन्ते रविपंचकम्। महार्घं जायते धान्यं रोग शोकाकुला पृथिवी।।**' गुरु-शुक्र के मध्य राशि-परिवर्तन योग तथा मंगल-शनि के षडाष्टक योग सम्बन्ध बनने से युद्धभय व हिंसक घटनाएं घटित हों। कहीं छत्रभंग अर्थात् शासन-परिवर्तन भी होगा।

**आकाश लक्षण**–उ. भारत में बादलों से आच्छादित होने पर भी वर्षा बहुत कम हो। **शकुन**–मार्ग कृ. ७ (22 नवं.) को रात्रि आकाश निर्मल रहे, तो वैशाख में धान्य महँगा हो।

## वि. संवत् २०८१, मार्गशीर्ष शुक्ल शाक: १९४६

सन् 2024 ई. (ता. 2 से 15 दिसम्बर तक), हिजरी सन् 1446
**सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु :**

प्रातः मंगल याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में, गुरु इस समय पश्चिमक्षितिज में डूबने को होगा। सायं शनि याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम में, शुक्र पश्चिम में होगा। ता. 12 से बुध प्रातः पूर्वक्षितिज में दिखेगा।

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घ. प. | नक्षत्र | समाप्तिकाल घ. प. | योग | समाप्तिकाल घ. प. | करण | समाप्तिकाल घ. प. | तारीखें मार्ग. शुक्ल | जमादि. मु. | दिसम्बर | मार्ग. प्र. | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं. | सूर्यास्त घं.मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५:१५ | १ | चन्द्र | १३:४५ | ज्ये. | २१:२० | धृति | २१:५८ | ब | १३:४५ | 11 | 29 | 2 | १७ | ध.२१:२० | सूर्य ज्ये. में २९:४५ (19:08), **शुक्र मकर में ११:४८** (11:57), गण्डमूल विचार | ७:१६:०९:४७ | 7:14 | 17:20 |
| २५:१३ | २ | मंग | १४:४८ | मूल | २३:३८ | शूल | १९:४३ | कौ | १४:४८ | 12 | 30 | 3 | १८ | धनु | **चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, गण्डमूल 16:42 तक, | ७:१७:१०:४१ | 7:15 | 17:20 |
| २५:१३ | ३ | बुध | १४:५० | पू.षा. | २५:०० | गण्ड | १६:४३ | ग | १४:५० | 13 | जम | 4 | १९ | म.४०:१३ | भ. ४४:२३ से, जमादिउल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ | ७:१८:११:३४ | 7:15 | 17:20 |
| २५:१२ | ४ | गुरु | १३:५५ | उ.षा. | २५:२८ | वृद्धि | १३:०० | वि | १३:५५ | 14 | 2 | 5 | २० | मकर | भ. १३:५५ तक, विनायक व्रत (देखें पृष्ठ 28) | ७:१९:१२:३० | 7:16 | 17:21 |
| २५:१० | ५ | शुक्र | १२:०८ | श्रव. | २५:०५ | ध्रुव | ८:३५ | बा | १२:०८ | 15 | 3 | 6 | २१ | कुं.५४:३५ | **पंचक प्रारम्भ ५४:३५** (29:07), श्रीपञ्चमी, **मंगल वक्री ५४:२० (A)** | ७:२०:१३:२७ | 7:17 | 17:21 |
| २५:०९ | ६ | शनि | ९:३३ | धनि | २३:५३ | व्या.<br>हर्ष | ३ ३०<br>५७ ५० | तै | ९:३३ | 16 | 4 | 7 | २२ | कुम्भ | चम्पा षष्ठी (महाराष्ट्र), **मित्र-सप्तमी ( षष्ठीविद्धा )** देखें पृष्ठ 28 **(B)** | ७:२१:१४:२५ | 7:18 | 17:21 |
| २५:०८ | ७ | रवि | ६:०८ | शत | २१:५३ | वज्र | ५१:२८ | व | ६:०८ | 17 | 5 | 8 | २३ | कुम्भ | भ. ६:०८ से ३३:५९ तक, वक्री बुध अनु. ४ में ४३:३०, श्रीदुर्गाष्टमी | ७:२२:१५:२१ | 7:18 | 17:21 |
| २५:०६ | ८ | चन्द्र | १:५० | पू.भा. | १९:०३ | सिद्धि | ४४:२५ | ब | १:५० | 18 | 6 | 9 | २४ | मी. ४:५० | | ७:२३:१६:२१ | 7:19 | 17:21 |
| अवम् | ९ | चन्द्र | ५६:४८ | ०० | ०० | ० | ० | ० | ०० | ० | ० | ० | ० | ०० | **नवमी तिथि का क्षय** ०० ०० | ० ० ० ० | ०० | ०० |
| २५:०४ | १० | मंग | ५०:५८ | उ.भा. | १५:२५ | व्य. | ३६:४८ | तै | २३:५३ | 19 | 7 | 10 | २५ | मीन | शुक्र श्रवण में ४९:५८ (27:19), गण्डमूल 13:30 बाद, स.सि.यो. | ७:२४:१७:२० | 7:20 | 17:21 |
| २५:०३ | ११ | बुध | ४४:३३ | रेव | ११:०८ | वरी | २८:३५ | व | १७:४६ | 20 | 8 | 11 | २६ | मे.११:०८ | भ. १७:४६ से ४४:३३ तक, **पंचक समाप्त ११:०८** (11:48), **मोक्षदा (C)** | ७:२५:१८:२१ | 7:21 | 17:22 |
| २५:०२ | १२ | गुरु | ३७:४५ | अश्वि | ६:२० | परि | २०:०५ | ब | ११:०९ | 21 | 9 | 12 | २७ | मेष | **अखण्ड द्वादशी**, गण्डमूल 9:53 तक, स.सि.यो. | ७:२६:१९:१९ | 7:21 | 17:22 |
| २५:०० | १३ | शुक्र | ३०:४८ | भर.<br>कृति. | १ १०<br>५६ ०५ | शिव | ११:२० | कौ | ४:१७ | 22 | 10 | 13 | २८ | वृ.१४:५३ | **प्रदोष व्रत**, शिव चतुर्दशी व्रत, वक्री यूरेनस मेष में 11:10 | ७:२७:२०:२० | 7:22 | 17:22 |
| २४:५९ | १४ | शनि | २४:०० | रोहि | ५१:२० | सिद्ध<br>साध्य | २ ३८<br>५४ २० | व | २४:०० | 23 | 11 | 14 | २९ | वृष | भ. २४:०० से ५०:५७ तक, पिशाचमोचन श्राद्ध, **श्रीदत्तात्रेय जयन्ती (D)** | ७:२८:२१:२३ | 7:23 | 17:22 |
| २४:५९ | १५ | रवि | १७:५३ | मृग | ४७:२३ | शुभ | ४६:४० | ब | १७:५३ | 24 | 12 | 15 | पौ. | मि.१९:१३ | **मार्गशीर्ष पूर्णिमा**, सूर्य मूल १ धनु में ३६:५८ (22:10) **पौष संक्रान्ति,(E)** | ७:२९:२२:२३ | 7:23 | 17:23 |

**(A)** (29:01), श्रीराम-विवाहोत्सव, नाग-पंचमी स्कन्द, (गुह) षष्ठी (व्रत हेतु सायाह्न व्या.) देखें पृष्ठ 28, **(B)** नैपच्यून मार्गी 29:17 **(C) एकादशी व्रत, श्रीगीता-जयन्ती**, वक्री बुध पूर्व में उदय 23:11 **(D) श्रीसत्यनारायण व्रत**, त्रिपुरभैरव जयन्ती **(E)** मु. ३०, पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद, **बुध मार्गी ४७:३८ ( 26:26 )**

### चन्द्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 9 दिसम्बर

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७<br>२३<br>११<br>४४ | १०<br>२७<br>४८<br>५२ | ३<br>११<br>५६<br>२० | ७<br>१६<br>२५<br>५ | १<br>२१<br>५३<br>५० | ९<br>७<br>४८<br>१७ | १०<br>१८<br>५८<br>५ | ११<br>८<br>३०<br>३८ | ५<br>८<br>३०<br>३८ |
| 60<br>57 | 846<br>16 | 2<br>4 | 67<br>20 | 8<br>10 | 69<br>4 | 2<br>29 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| ज्ये.<br>२ | पूभा<br>३ | पुष्य<br>३ | अनु<br>४ | रोहि<br>४ | उषा<br>४ | शत<br>४ | उभा<br>२ | उफा<br>४ |
| ० | ० | व | व | व | मा | मा | व | व |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ |
| मित्र | सम | नीच | सम | शत्रु | मित्र | स्व. | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 9 दिसं.

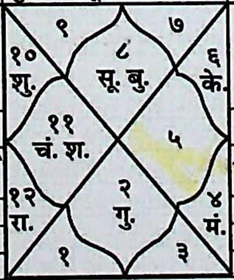

### रवौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 15 दिसम्बर

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७<br>२९<br>१७<br>३६ | १<br>२४<br>१७<br>२० | ३<br>११<br>३१<br>४१ | ७<br>१२<br>१५<br>२० | १<br>२१<br>५<br>१० | ९<br>१४<br>४०<br>२२ | १०<br>१९<br>१४<br>२९ | ११<br>८<br>११<br>३३ | ५<br>८<br>११<br>३३ |
| 61<br>1 | 854<br>38 | 7<br>1 | 3<br>49 | 7<br>58 | 68<br>5 | 3<br>5 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| ज्ये.<br>४ | मृग.<br>१ | पुष्य<br>३ | अनु.<br>३ | रोहि<br>४ | श्रव.<br>२ | शत<br>४ | उभा<br>२ | उफा<br>४ |
| ० | ० | व | व | व | मा | मा | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ |
| मित्र | उच्च | नीच | सम | शत्रु | मित्र | स्व | सम | मित्र |

कुं. सूर्योदय, 15 दिसम्बर

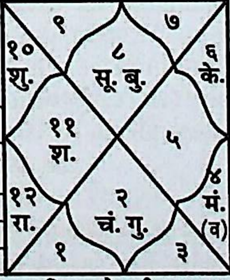

### मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की पंचमी को **श्रीराम-विवाहोत्सव** मनाया जाता है। इसीदिन श्रीपंचमी ( 6 दिसं. ) को कमलासन पर विराजित एवं कमलपुष्प लिए श्रीलक्ष्मी की सुवर्णमयी/ताम्र अथवा चाँदी की मूर्त्ति को सुवर्णादि के कलश पर स्थापित कर गणपति पूजन, मातृका पूजन सहित लक्ष्मी-पूजन एवं श्रीसूक्त/लक्ष्मीसूक्त का पाठ, ब्राह्मण-भोजन, दानादि करने से विवाह, सन्तान, सौभाग्य एवं अचल लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। मार्ग. शुक्ल षष्ठी को **कार्तिकेय** जी तारकासुर को मारकर अभिषिक्त हुए थे। इसमें स्नानदान और व्रत करने से पुण्य होता है। ता. 11 दिसं. को **मोक्षदा एकादशी** का विधिपूर्वक व्रत रखने तथा भगवान् विष्णु का पूजार्चन, दानादि करने से अनेक मानसिक व कायिक पापों की निवृत्ति तथा पुण्य प्राप्ति होती है। इसीदिन श्रीगीता जयन्ती के उपलक्ष्य में भगवान् कृष्ण की पूजा-स्तुति करके श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ एवं उत्सव करना चाहिए। ***पौष संक्रान्ति***—15 दिसं., रविवार, ३० मुहू. रात्रि 10 बजकर 10 मिंट (22:10) पर सिंह लग्न में प्रवेश करेगी। इसका पुण्यकाल मध्याह्न बाद से प्रारम्भ मानना चाहिए। वारानुसार घोरा तथा नक्षत्रानुसार मन्दाकिनी नामक यह सं. नीच प्रवृत्ति, दुष्ट तथा राजनेताओं के लिए लाभप्रद रहेगी। **सं. राशिफल**—यह सं. मेष, वृष, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु, राशि वालों के लिए लाभप्रद, शेष राशि वालों के लिए कष्टप्रद रहेगी। **ग्रह–गोचर**—सूर्य-शनि का चतुर्थ-दशम, मंगल-शनि का षडाष्टक योग (6-8) तथा गुरु-शुक्र का नवपंचम (5-9) विरुद्ध ग्रहों का दृष्टि-सम्बन्ध रहने से आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि से प्रजा में आक्रोश एवं गहन असन्तोष व्याप्त रहे। विश्व में कहीं आतंकवादी व युद्धोन्मादी घटनाएँ अधिक घटित होंगी। सरकारी प्रयासों से धान्यादि के भावों में विशेष तेजी नहीं बन पाएगी। **आकाश लक्षण**—देश के उत्तर-पश्चिमी भागों में खण्ड वर्षा व तेज शीत वायु चलने के योग हैं।

## वि. संवत् २०८१, पौष कृष्ण पक्ष शाक: १९४६

सन् 2024 ई. (ता. 16 से 30 दिसम्बर तक), हिजरी सन् 1446
सूर्य दक्षिण–उत्तरायण, दक्षिण गोल, हेमन्त–शिशिर ऋतु:

प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में तथा मंगल याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायंकाल गुरु पूर्व में उदित होकर सारी रात दीखेगा। शनि याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम में ओर शुक्र पश्चिमकपाल में दिखाई देगा।

भा.स्टैं.टा.
जालन्धर

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घटी पल | नक्षत्र | समाप्तिकाल घटी पल | योग | समाप्तिकाल घटी पल | करण | समाप्तिकाल घटी पल | तारीखें मार्ग. शक | तारीखें जमादि. सा. | तारीखें दिसम्बर | तारीखें पौष प्रवि | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४:५८ | १ | चन्द्र | १२:४० | आर्द्रा | ४४:३५ | शुक्ल | ३९:५५ | कौ | १२:४० | 25 | 13 | 16 | २ | मिथुन | **पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ,** | ८:००:२३:२६ | 7:24 | 17:23 |
| २४:५८ | २ | मंग | ८:५३ | पुन. | ४३:२० | ब्रह्म | ३४:२८ | ग | ८:५३ | 26 | 14 | 17 | ३ | क.२८:३० | भ. ३७:४९ से, | ८:०१:२४:२८ | 7:24 | 17:23 |
| २४:५७ | ३ | बुध | ६:४५ | पुष्य | ४३:५५ | ऐन्द्र | ३०:२३ | वि | ६:४५ | 27 | 15 | 18 | ४ | कर्क | भ. ६:४५ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), गण्डमूल 24:59 बाद | ८:०२:२५:३४ | 7:25 | 17:24 |
| २४:५६ | ४ | गुरु | ६:३३ | आश्ले | ४६:२५ | वैधृ | २७:५० | बा | ६:३३ | 28 | 16 | 19 | ५ | सिं.४६:२५ | गण्डमूल विचार | ८:०३:२६:३९ | 7:26 | 17:25 |
| २४:५६ | ५ | शुक्र | ८:२८ | मघा | ५०:५३ | विष्क | २६:५३ | तै | ८:२८ | 29 | 17 | 20 | ६ | सिंह | गण्डमूल 27:47 तक | ८:०४:२७:४३ | 7:26 | 17:25 |
| २४:५५ | ६ | शनि | १२:१८ | पू.फा. | ५६:५८ | प्रीति | २७:२० | व | १२:१८ | 30 | 18 | 21 | ७ | सिंह | भ. १२:१८ से ४५:०१ तक सूर्य सायन मकर में १८:३० (14:51), सायन**(A)** | ८:०५:२८:५१ | 7:27 | 17:25 |
| २४:५६ | ७ | रवि | १७:४३ | उ.फा. | ६०:०० | आयु | २८:५३ | ब | १७:४३ | पौ | 19 | 22 | ८ | कं.१३:४३ | शुक्र धनिष्ठा में ३७:०८ (22:18), शक पौष प्रारम्भ, स.सि.यो. | ८:०६:२९:५६ | 7:27 | 17:26 |
| २४:५६ | ८ | चन्द्र | २४:१० | उ.फा. | ४:१३ | सौभा | ३१:०५ | कौ | २४:१० | 2 | 20 | 23 | ९ | कन्या | वक्री गुरु रोहि. ३ में २०:२५ (15:38), **रूक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध** | ८:०७:३१:०५ | 7:28 | 17:26 |
| २४:५७ | ९ | मंग | ३१:०३ | हस्त | १२:०३ | शोभ | ३३:३५ | ग | ३१:०३ | 3 | 21 | 24 | १० | तु.४५:५८ | बुध ज्येष्ठा में २:२५ (8:26) | ८:०८:३२:१२ | 7:28 | 17:27 |
| २४:५७ | १० | बुध | ३७:३५ | चित्रा | १९:४५ | अति | ३५:४८ | व | ४:१९ | 4 | 22 | 25 | ११ | तुला | भ. ४:१९ से ३७:३५ तक, क्रिसमिस दिवस, तुलसी पूजन महोत्सव | ८:०९:३३:२० | 7:28 | 17:27 |
| २४:५८ | ११ | गुरु | ४३:०८ | स्वा. | २६:४३ | सुक | ३७:१५ | ब | १०:२२ | 5 | 23 | 26 | १२ | तुला | **सफला एकादशी व्रत** | ८:१०:३४:३१ | 7:29 | 17:28 |
| २४:५९ | १२ | शुक्र | ४७:२५ | विशा | ३२:३० | धृति | ३७:५० | कौ | १५:१७ | 6 | 24 | 27 | १३ | वृ.१६:१० | शनि पू.भा. १ में ३१:५८ (20:16), बोधनाचार्य जयन्ती, सुरुप द्वादशी | ८:११:३५:४० | 7:29 | 17:28 |
| २४:५९ | १३ | शनि | ५०:०८ | अनु. | ३६:४८ | शूल | ३७:१३ | ग | १८:४७ | 7 | 25 | 28 | १४ | वृश्चिक | भ. ५०:०८ से, **शनि प्रदोष व्रत**, सूर्य पू.षा. में ४२:१८ (24:25), **(B)** | ८:१२:३६:५२ | 7:30 | 17:29 |
| २५:०० | १४ | रवि | ५१:२० | ज्ये. | ३९:४० | गण्ड | ३५:२८ | वि | २०:४४ | 8 | 26 | 29 | १५ | ध.३९:४० | भ. २०:४४ तक, मासशिवरात्रि व्रत, गण्डमूल विचार | ८:१३:३८:०२ | 7:30 | 17:30 |
| २५:०१ | ३० | चन्द्र | ५१:०८ | मूल | ४१:१० | वृद्धि | ३२:३५ | च | २१:१४ | 9 | 27 | 30 | १६ | धनु | **पौष ( सोमवती ) अमावस**, मेला हरिद्वार-प्रयागराजादि, तीर्थस्नान **(C)** | ८:१४:३९:०९ | 7:30 | 17:31 |

**(A)** उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ **(B) शुक्र कुम्भ में ४०:२३ ( 23:39 )**, गण्डमूल 22:13 से **(C)** माहात्म्य, गण्डमूल 23:58 तक,

**चन्द्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 23 दिसम्बर**

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | ५ | ३ | ७ | १ | ९ | १० | ११ | ५ |
| ७ | ८ | १० | १५ | २० | २३ | १९ | ७ | ७ |
| २६ | १२ | १२ | ३८ | ३ | ४० | ४१ | ४६ | ४६ |
| ०६ | ७ | १२ | ५२ | ८ | ०० | ४० | ६ | ६ |
| 61 | 708 | 13 | 53 | 7 | 66 | 3 | 3 | 3 |
| 7 | 4 | 38 | 59 | 25 | 34 | 49 | 11 | 11 |
| मूल ३ | उफा ४ | पुष्य ३ | अनु ४ | रोहि ४ | धनि १ | शत ४ | उभा २ | उफा ४ |
| ० | ० | मा | मा | व | मा | मा | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ |
| मित्र | मित्र | नीच | सम | शत्रु | मित्र | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 23 दिसं.

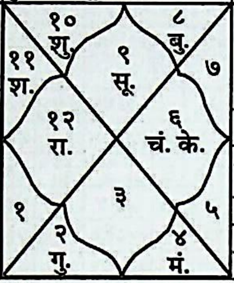

**चन्द्रे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 30 दिसम्बर**

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | ८ | ३ | ७ | १ | १० | १० | ११ | ५ |
| १४ | ३ | ८ | २३ | १९ | १ | २० | ७ | ७ |
| ३४ | १७ | २० | ८ | १३ | २० | १० | २३ | २३ |
| ७ | ५७ | ४९ | ५१ | ३५ | ५९ | ११ | ४९ | ४९ |
| 61 | 784 | 18 | 74 | 6 | 64 | 4 | 3 | 3 |
| 10 | 48 | 45 | 37 | 35 | 50 | 24 | 10 | 10 |
| पूषा १ | मूल १ | पुष्य २ | ज्ये. २ | रोहि ३ | धनि ३ | पूभा १ | उभा २ | उफा ४ |
| ० | ० | व | मा | व | मा | मा | व | व |
| ० | अ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ |
| मित्र | सम | नीच | सम | शत्रु | मित्र | स्व | सम | मित्र |

कुं. सूर्योदय, 30 दिसम्बर

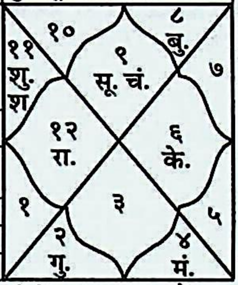

### पौष कृष्ण पक्षफल–

पौष मास में गेहूँ, धान्यादि अनाज, कम्बलादि गर्म-वस्त्र, ईंधन सामग्री, मौसमी फल-मिष्ठान्न दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **पौष संक्रान्ति ( 15 दिसं. )** को अनाज से पूरित ताम्र-पात्र (कलश-गड़वा आदि) का गुड़ सहित दान करने से क्लिष्ट रोग की शान्ति होती है। 26 दिसं. को **सफला एकादशी** का व्रत रखकर भगवान् विष्णु की विधिपूर्वक पूजार्चना करने से सब प्रकार के मनोवांछित फलों की प्राप्ति होती है। ता. 30 दिसं. **सोमवती अमावस** को हरिद्वार आदि में तीर्थस्नान, दान, जप, भगवान् शिव व विष्णु पूजन तथा पीपल (अश्वत्थ) वृक्ष की पुष्पाक्षत, चावल, फल, धूप, दीपादि सहित पूजन-परिक्रमा करने से अनेक पापों से मुक्ति मिलती है। (देखें पृष्ठ 69)। **लोक–भविष्य**–चान्द्र पौष मास में पाँच सोमवार होने से मिश्रित प्रभाव घटित होंगे। ता. 15 दिसं. को **रविवारी संक्रान्ति** होने से कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), पदच्युति या किसी प्रधाननेता का आकस्मिक निधन हो। कहीं उपद्रव, जनांदोलन व हिंसक घटनाएं घटित होंगी। सरकार एवं विपक्षी पार्टियों के मध्य वाद-विवाद एवं आरोप-प्रत्यारोप एक नए शिखर तक पहुँच जाएंगे। अल्पवृष्टि एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण आवश्यक वस्तुओं में कमी के कारण मूल्यों में तेजी हो। **ग्रह–गोचर**–बुध-गुरु के मध्य समसप्तक, मंगल-शनि के मध्य षडाष्टक सम्बन्ध, ता. 28 दिसं. गुरु-शुक्र के मध्य नवपंचम दृष्टि सम्बन्ध रहने से विपरीत जलवायु एवं प्राकृतिक प्रकोपों से खड़ी फसलों को हानि पहुँचे, विशेषकर ईख व धान्य की फसलों को। **आकाश–लक्षण**–इस पक्ष में उ.खण्ड, हि.प्र. के पहाड़ी क्षेत्रों में शीत हवाओं के साथ खण्ड वर्षा तथा वर्षा की कमी अनुभव होगी। **शकुन**–परन्तु पौष ३० को मूल नक्षत्र होने से आगामी मास व पक्ष में वर्षा की सम्भावना बने–**पौषमूलममावस्यां वृष्टये लोकतुष्टये।।**

## वि. संवत् २०८१, पौष शुक्ल पक्ष शाक: १९४६

सन् 2024–25 ई. (ता. 31 दिसं. (24) ई. से 13 जन. (25) ई. तक), हिजरी सन् 1446

**सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु:**

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घ. प. | नक्षत्र | समाप्तिकाल घ. प. | योग | समाप्तिकाल घ. प. | करण | समाप्तिकाल घ. प. | तारीखें पौष शाके | जमादि. २ | दिसम्बर | पौष प्र. | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | ग्रह–गोचर–प्रात: बुध पूर्वक्षितिज में तथा मंगल पश्चिम कपाल में होगा। सायं शुक्र–शनि पश्चिमकपाल में तथा गुरु पूर्व में दिखाई देगा। | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं. | सूर्यास्त घं.मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५:०२ | १ | मंग | ४९:४० | पू.षा. | ४१:२५ | ध्रुव | २८:४३ | किं | २०:२४ | 10 | 28 | 31 | १७ | म.५६:१८ | पौष शुक्लपक्ष प्रारम्भ | ८:१५:४०:२२ | 7:30 | 17:31 |
| २५:०३ | २ | बुध | ४७:१५ | उ.षा. | ४०:३८ | व्या. | २३:५८ | बा | १८:२८ | 11 | 29 | जन | १८ | मकर | चन्द्रदर्शनम्, मु. ४५, जनवरी मास (सं. 2025 ई.) प्रारम्भ, आरोग्य व्रत | ८:१६:४१:३६ | 7:31 | 17:32 |
| २५:०४ | ३ | गुरु | ४४:०५ | श्रव. | ३९:१० | हर्ष | १८:३८ | तै | १५:४० | 12 | रज्ज | 2 | १९ | मकर | रज्जब (मुस्लि.) मास प्रारम्भ | ८:१७:४२:४६ | 7:31 | 17:33 |
| २५:०५ | ४ | शुक्र | ४०:२३ | धनि. | ३७:०८ | वज्र | १२:४५ | व | १२:१४ | 13 | 2 | 3 | २० | कुं. ८:१३ | भ. १२:१४ से ४०:२३ तक, **पंचक प्रारम्भ** ८:१३ (10:48), शुक्र शत. में **(A)** | ८:१८:४३:५६ | 7:31 | 17:33 |
| २५:०७ | ५ | शनि | ३६:१८ | शत. | ३४:४३ | सिद्धि | ६:३३ | ब | ८:२१ | 14 | 3 | 4 | २१ | कुम्भ | **बुध मूल १ धनु में ११:१८ (12:02)** | ८:१९:४५:०७ | 7:31 | 17:34 |
| २५:१० | ६ | रवि | ३१:५३ | पू.भा. | ३१:५८ | व्य.<br>वरी | ०:०३<br>५३:२० | कौ | ४:०६ | 15 | 4 | 5 | २२ | मी.१७:४० |  | ८:२०:४६:१७ | 7:31 | 17:35 |
| २५:१२ | ७ | चन्द्र | २७:१३ | उ.भा. | २९:०० | परि. | ४६:२५ | व | २७:१३ | 16 | 5 | 6 | २३ | मीन | भ. २७:१३ से ५४:४६ तक, **मार्तण्ड–सप्तमी, श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.,(B)** | ८:२१:४७:२६ | 7:31 | 17:36 |
| २५:१३ | ८ | मंग | २२:१८ | रेव. | २५:४५ | शिव | ३९:२० | ब | २२:१८ | 17 | 6 | 7 | २४ | मे.२५:४५ | **पंचक समाप्त** २५:४५ (17:50), गण्डमूल विचार | ८:२२:४८:३७ | 7:32 | 17:37 |
| २५:१४ | ९ | बुध | १७:१५ | अश्वि | २२:२५ | सिद्ध | ३२:०८ | कौ | १७:२५ | 18 | 7 | 8 | २५ | मेष | **श्रीदुर्गाष्टमी**, महारुद्र व्रत, गण्डमूल 16:30 तक, | ८:२३:४९:४६ | 7:32 | 17:37 |
| २५:१५ | १० | गुरु | १२:०८ | भर. | १८:५८ | साध्य | २४:५३ | ग | १२:०८ | 19 | 8 | 9 | २६ | वृ.३३:०८ | भ. ३९:३४ से, | ८:२४:५०:५४ | 7:32 | 17:38 |
| २५:१७ | ११ | शुक्र | ७:०० | कृति | १५:३५ | शुभ | १७:४३ | वि | ७:०० | 20 | 9 | 10 | २७ | वृष | भ. ७:०० तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत**, सूर्य उ.षा. में ४७:०३ (26:21)* | ८:२५:५२:०२ | 7:32 | 17:39 |
| २५:२० | १२ | शनि | २:०५ | रोहि. | १२:२३ | शुक्ल | १०:४० | बा | २:०५ | 21 | 10 | 11 | २८ | मि.४०:५८ | **शनि प्रदोष व्रत**, स.सि.यो. *कुम्भ–महापर्व (प्रयागराज) प्रारम्भ (देखें पृष्ठ 16) | ८:२६:५३:०९ | 7:32 | 17:40 |
| अवम् | १३ | शनि | ५७:३५ | ०० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ० | ० | ० | ० | ०० | **त्रयोदशी तिथि का क्षय** ०० ०० | ० ० ० ० | ० ० | ० ० |
| २५:२५ | १४ | रवि | ५३:५० | मृग. | ९:४५ | ब्रह्म<br>ऐन्द्र | ४:०५<br>५८:०३ | ग | २५:४३ | 22 | 11 | 12 | २९ | मिथुन | भ. ५३:५० से, वक्री मंगल पुन. ४ में ४१:५५ (24:17), राहु उ.भा. १–केतु**(C)** | ८:२७:५४:१४ | 7:31 | 17:41 |
| २५:२७ | १५ | चन्द्र | ५१:०५ | आर्द्रा | ७:४५ | वैधृ | ५२:५० | वि | २२:२८ | 23 | 12 | 13 | ३० | क.५२:०३ | भ. २२:२८ तक, **पौष पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ**, श्रीसत्यनारायण व्रत, **(D)** | ८:२८:५५:२० | 7:31 | 17:42 |

**(A)** ५२:५० (28:39) **(B)** गण्डमूल 19:07 से **(C)** उ.फा. ३ में ४१:४३ (24:12), ईशान व्रत **(D)** **लोहड़ी पर्व** (पं., हरि., जम्मू–दिल्ली), शाकंभरी जयन्ती, स्नान–पर्व (कुम्भ–महापर्व) प्रयाग

**भौमे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 7 जनवरी**

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | ११ | ३ | ८ | १ | १० | १० | ११ | ५ |
| २२ | २२ | ५ | ३ | १८ | ९ | २० | ६ | ६ |
| ४३ | ४५ | ३५ | ४५ | २४ | ५१ | ४७ | ५८ | ५८ |
| २७ | ३९ | १० | ५० | ५१ | ९ | ४२ | २३ | २३ |
| 61<br>9 | 866<br>8 | 22<br>45 | 84<br>33 | 5<br>24 | 62<br>16 | 5<br>2 | 3<br>10 | 3<br>10 |
| पूषा<br>३ | रेव<br>२ | पुष्य<br>१ | मूल<br>२ | रोहि<br>३ | शत<br>१ | पूभा<br>१ | उभा<br>२ | उफा<br>४ |
| ० | ० | व | मा | व | मा | मा | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ |
| मित्र | सम | नीच | सम | शत्रु | मित्र | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 7 जन.

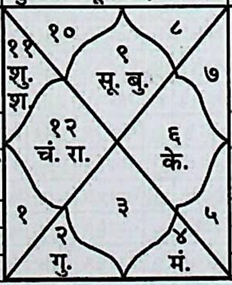

**चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 13 जनवरी**

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | २ | ३ | ८ | १ | १० | १० | ११ | ५ |
| २८ | १७ | ३ | १२ | १७ | १५ | २१ | ६ | ६ |
| ५० | ४ | १४ | २४ | ५५ | ५८ | १८ | ३९ | ३९ |
| १२ | २५ | ४९ | १३ | ४ | ३८ | ५८ | १८ | १८ |
| 61<br>6 | 815<br>18 | 23<br>59 | 88<br>43 | 4<br>21 | 59<br>44 | 5<br>27 | 3<br>10 | 3<br>10 |
| उषा<br>१ | आर्द्रा<br>४ | पुन<br>४ | मूल<br>४ | रोहि<br>३ | शत.<br>३ | पूभा<br>१ | उभा<br>१ | उफा<br>३ |
| ० | ० | व | मा | व | मा | मा | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ |
| मित्र | मित्र | नीच | सम | शत्रु | मित्र | स्व | सम | मित्र |

कुं. सूर्योदय, 13 जनवरी

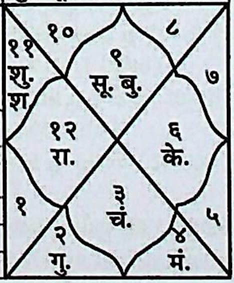

**पौष शुक्ल पक्षफल–**

इस पक्ष की द्वितीया को गायों के सींगों को धोकर लिए जल सहित स्नान करके श्वेत वस्त्र धारण करके बालेन्दु (द्वितीया) के चन्द्रमा का गन्धादि से पूजन करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित विविध भोजन करवाकर सन्तुष्ट करें। इससे रोगों की निवृत्ति और आरोग्य की प्राप्ति होती है। **मार्त्तण्ड सप्तमी** (6 जन.) को भगवान् सूर्य का व्रत, पूजन, गोदान करने से आरोग्य व तेज की वृद्धि होती है। इसीदिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती समस्त भारत में बडी श्रद्धा से मनाई जाती है। ता. 10 जन. को **पुत्रदा एकादशी** का विधिवत व्रत रखकर जप, हवन, ब्राह्मण-भोजन एवं यथाशक्ति दान करने से दम्पत्ति को मनोवांछित पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। **पौष पूर्णिमा** (13 जन.) से हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, प्रयाग–आदि तीर्थों पर (अथवा गृह में ही गंगाजल सहित) शुद्ध जल से स्नान, जप, ध्यान, दानादि का विशेष माहात्म्य होगा। ता. 13 को ही ***लोहड़ी पर्व*** समस्त पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली, जम्मू आदि प्रदेशों में गृहों में अग्नि प्रज्वलित करके तिल–समिधा, रेवड़ियों आदि सहित अग्नि पूजनोपरान्त उत्सव मनाया जाता है। **ग्रहगोचर**–वक्री मंगल का **शुक्र-शनि** के साथ **षडाष्टक** दृष्टि सम्बन्ध होने से अनाज, दालों एवं खाद्य तैलों में तेजी होगी। राजनेताओं में परस्पर विरोध व टकराव हो। कहीं उपद्रव, झगड़े, फिसाद एवं जनांदोलन के संकेत हैं। जातीय उत्पात और साम्प्रदायिक दंगे-फसाद बढ़ेंगे। कहीं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं। जनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में तेजी का रूझान होगा। वृष राशिगत गुरु भी वक्री रहने से लौह, पीतल, सोना आदि सभी धातुएं और बर्तन महँगे होंगे। **आकाश लक्षण**–इस पक्ष में उ.खण्ड, हि.प्र. के पहाड़ी क्षेत्रों में शीत हवाओं के साथ खण्ड वर्षा एवं बर्फबारी होने के योग हैं। **शकुन**–पौष शुक्ल ९ या ११ को बादल चाल हो, तो सब धान्य महँगे होंगे।

## वि. संवत् २०८१, माघ कृष्ण पक्ष शाक : १९४६

सन् 2025 ई. (ता. 14 से 29 जनवरी तक), हिजरी सन् 1446
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु :

प्रातः बुध पूर्वी–क्षितिज में होगा जो 20 जन. से अस्त हो जाएगा। सायं मंगल पूर्वक्षितिज में, शुक्र–शनि पश्चिमकपाल में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में होगा।

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घटी पल | नक्षत्र | समाप्तिकाल घटी पल | योग | समाप्तिकाल घटी पल | करण | समाप्तिकाल घटी पल | तारीखें पौष शक | रज्जब | जनवरी | माघ प्रवि. | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | सूर्योदय घं.मिं. | सूर्यास्त घं.मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५:२८ | १ | मंग | ४९:३८ | पुन. | ६:५५ | विष्क | ४८:३८ | बा | २०:२२ | 24 | 13 | 14 | मा | कर्क | **सूर्य मकर में ३:३० ( 8:55 ), मकर ( माघ ) संक्रान्ति, मु. ३०, (A)** | ८:२९:५६:२६ | 7:31 | 17:42 |
| २५:३० | २ | बुध | ४९:४३ | पुष्य | ७:२३ | प्रीति | ४५:४० | तै | १९:४१ | 25 | 14 | 15 | २ | कर्क | गण्डमूल 10:28 से,<br>**कुम्भ महापर्व ( प्रयागराज ) देखें पृष्ठ 16** | ९:००:५७:३१ | 7:31 | 17:43 |
| २५:३३ | ३ | गुरु | ५१:३० | आश्ले | ९:२५ | आयु | ४३:५८ | व | २०:३७ | 26 | 15 | 16 | ३ | सिं. ९:२५ | भ. २०:३७ से ५१:३० तक, गण्डमूल विचार | ९:०१:५८:३७ | 7:31 | 17:44 |
| २५:३५ | ४ | शुक्र | ५५:०० | मघा | १३:०५ | सौभा | ४३:३५ | ब | २३:१५ | 27 | 16 | 17 | ४ | सिंह | **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), शुक्र पू.भा. में ०:२८, **(B)** | ९:०२:५९:४१ | 7:31 | 17:45 |
| २५:४० | ५ | शनि | ६०:०० | पू.फा. | १८:२५ | शोभ | ४४:२५ | कौ | २७:३२ | 28 | 17 | 18 | ५ | कं.३४:५८ | | ९:०४:००:४३ | 7:30 | 17:46 |
| २५:४३ | ५ | रवि | ०:०३ | उ.फा. | २५:०० | अति | ४६:०८ | तै | ०:०३ | 29 | 18 | 19 | ६ | कन्या | सूर्य सायन कुम्भ में ४५:०० (25:30), **बुध पूर्व में अस्त 29:59** | ९:०५:०१:४७ | 7:30 | 17:47 |
| २५:४५ | ६ | चन्द्र | ६:१३ | हस्त | ३२:३० | सुक | ४८:२५ | व | ६:१३ | 30 | 19 | 20 | ७ | कन्या | भ. ६:१३ से ३९:३४ तक, | ९:०६:०२:५० | 7:30 | 17:48 |
| २५:४८ | ७ | मंग | १२:५५ | चित्रा | ४०:१८ | धृति | ५०:४८ | ब | १२:५५ | मा | 20 | 21 | ८ | तु. ६:२५ | **वक्री मंगल मिथुन में ६:२८** (10:05), शक माघ प्रारम्भ, स्वामी **(C)** | ९:०७:०३:५४ | 7:30 | 17:49 |
| २५:५० | ८ | बुध | ११:३५ | स्वा. | ४७:४३ | शूल | ५२:५३ | कौ | ११:३५ | 2 | 21 | 22 | ९ | तुला | बुध उ.षा. में १८:२० (14:49) | ९:०८:०४:५४ | 7:29 | 17:50 |
| २५:५५ | ९ | गुरु | २५:२३ | विशा | ५४:०८ | गण्ड | ५४:०५ | ग | २५:२३ | 3 | 22 | 23 | १० | वृ.३७:४० | भ. ५७:३९ से, सूर्य श्रवण में ५३:०८ (28:44), सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती | ९:०९:०५:५६ | 7:29 | 17:51 |
| २५:५८ | १० | शुक्र | २९:५५ | अनु. | ५९:१० | वृद्धि | ५४:१० | वि | २९:५५ | 4 | 23 | 24 | ११ | वृश्चिक | भ. २९:५५ तक, **बुध मकर में २५:२५** (17:38), गण्डमूल 31:08 से | ९:१०:०६:५६ | 7:28 | 17:51 |
| २६:०० | ११ | शनि | ३२:४० | ज्ये. | ६०:०० | ध्रुव | ५२:५५ | ब | १:१८ | 5 | 24 | 25 | १२ | वृश्चिक | **षट्तिला एकादशी व्रत**, गण्डमूल विचार | ९:११:०७:५८ | 7:28 | 17:52 |
| २६:०३ | १२ | रवि | ३३:३८ | ज्ये. | २:२५ | व्या. | ५०:१५ | कौ | ३:०९ | 6 | 25 | 26 | १३ | ध. २:२५ | **तिल द्वादशी, भारत गणतन्त्र दिवस ( 76वाँ )**, गण्डमूल विचार | ९:१२:०८:५९ | 7:28 | 17:53 |
| २६:०८ | १३ | चन्द्र | ३२:५० | मूल | ३:५८ | हर्ष | ४६:१५ | ग | ३:१४ | 7 | 26 | 27 | १४ | धनु | भ. ३२:५० से, **सोम प्रदोष व्रत, शुक्र मीन में ५८:५८**, मासशिवरात्रि व्रत,**(D)** | ९:१३:०९:५६ | 7:27 | 17:54 |
| २६:१३ | १४ | मंग | ३०:२८ | पू.षा. | ३:५३ | वज्र | ४१:०३ | वि | १:३९ | 8 | 27 | 28 | १५ | म.१८:३५ | भ. १:३९ तक, | ९:१४:१०:५४ | 7:26 | 17:55 |
| २६:१५ | ३० | बुध | २६:४० | उ.षा.<br>श्रव. | २:१८<br>५९:३३ | सिद्धि | ३४:५० | ना | २६:४० | 9 | 28 | 29 | १६ | मकर | **माघ ( मौनी ) अमावस, कुम्भ महापर्व ( द्वितीय-मुख्य ) शाही स्नान (E)** | ९:१५:११:५२ | 7:26 | 17:56 |

**(A)** पुण्यकाल सं. सूर्योदय से मध्याह्न बाद तक, **प्रथम ( शाही ) स्नान-कुम्भ महापर्व ( प्रयागराज ) देखें पृष्ठ 16**, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ, माघ कृष्णपक्ष शुरु, **(B)** गौरी–वक्रतुण्ड चतुर्थी, गण्डमूल 12:45 तक, **(C)** विवेकानन्द जयन्ती (तिथ्यनुसार) **(D)** मेरु त्रयोदशी (जैन), गण्डमूल 9:02 तक **(E)** ( प्रयागराज ) देखें पृष्ठ 16

### बुधे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 22 जनवरी

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ६ | २ | ८ | १ | १० | १० | ११ | ५ |
| ७ | ९ | २९ | २६ | १७ | २४ | २२ | ६ | ६ |
| ५९ | ३४ | ४१ | ३ | २२ | ३७ | १० | १० | १० |
| ५२ | १४ | २३ | ३१ | ४० | ४९ | २१ | ४१ | ४१ |
| 61<br>2 | 713<br>25 | 22<br>43 | 93<br>53 | 2<br>38 | 54<br>50 | 6<br>1 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| उषा<br>४ | स्वा.<br>१ | पुन<br>३ | पूषा<br>४ | रोहि<br>३ | पूभा<br>२ | पूभा<br>१ | उभा<br>१ | उफा<br>३ |
| ० | ० | व | मा | व | मा | मा | व | व |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ |
| शत्रु | सम | शत्रु | सम | शत्रु | मित्र | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 22 जन.

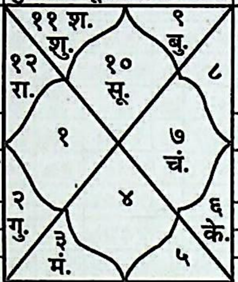

### बुधे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 29 जनवरी

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ९ | २ | ९ | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| १५ | ८ | २७ | ७ | १७ | ० | २२ | ५ | ५ |
| ६ | २१ | ११ | १३ | ८ | ४७ | ५३ | ४८ | ४८ |
| ५७ | ५४ | २७ | २९ | २७ | २१ | ३८ | २५ | २५ |
| 60<br>58 | 836<br>28 | 19<br>20 | 98<br>15 | 1<br>13 | 49<br>48 | 6<br>23 | 3<br>10 | 3<br>10 |
| श्रव<br>२ | उषा<br>४ | पुन<br>३ | उषा<br>४ | रोहि<br>३ | पूभा<br>४ | पूभा<br>१ | उभा<br>१ | उफा<br>३ |
| ० | ० | व | मा | व | मा | मा | व | व |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ |
| शत्रु | सम | शत्रु | सम | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुं. सूर्योदय, 29 जनवरी

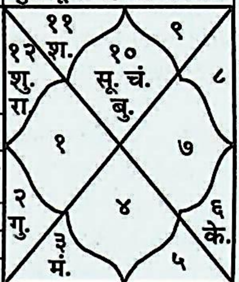

### माघ कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की चतुर्थी (17 जन.) को श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी के व्रत का संकल्प **'गणपति प्रीतये संकष्ट चतुर्थी व्रतं करिष्ये'** पढ़कर व्रत करके **'ॐ गं गणपतये नमः'** मन्त्रादि जप व गणेशस्तोत्र का पाठ करें। रात्रि को श्रीगणेश एवं चन्द्रमा की लड्डुओं सहित पूजा करके चन्द्रोदय होने पर **'ॐ सोम् सोमाय नमः'** द्वारा अर्घ्य देने से अनेक दैहिक एवं मानसिक कष्टों से निवृत्ति होती है। **षट्तिला एकादशी** (25 जन.) का व्रत विधिपूर्वक रखकर तिलयुक्त पदार्थों का हवन, दानादि करके स्वयं भोजन करना चाहिए। **मकर संक्रान्ति ( 14 जन. )** को स्नानादि उपरान्त तिलों से हवन, तिलयुक्त वस्तुओं का दान, पंचदेव पूजन, पुरुष-सूक्त, सूर्याष्टकादि स्तोत्रों, ब्राह्मण-भोजन, धार्मिक पुस्तकादि का दक्षिणादि सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। ता. 14 जन. से ही **प्रयागराज में कुम्भ-महापर्व का शुभारम्भ होगा तथा प्रथम शाही स्नान भी इसी दिन होगा। ता. 29 जन. को माघ ( मौनी ) अमावस** होने से इस दिन हरिद्वार, प्रयागराज आदि तीर्थों पर स्नान, वस्त्र, चावलादि, अन्न-दान, फल, आँवला, तिल निर्मित रेवड़ियाँ, गच्चकादि मिष्ठान्न का दान, पितृ-तर्पण, ब्राह्मण-भोजन दक्षिणा सहित देने के विशेष एवं अक्षय फल होगा। इसीदिन प्रातः 8:21 बाद श्रवण नक्षत्र होने से पुण्य योग बना हुआ है। **इसीदिन प्रयागराज में कुम्भ-महापर्व का मुख्य-शाही स्नान होगा। मकर (माघ) संक्रान्ति**–ता. 14 जन., मंगलवार, 30 मुहू., प्रातः 8 बजकर 55 मिन्ट पर मकर लग्न में प्रवेश करेगी। इस सं. का पुण्यकाल प्रातः सूर्योदय से दोपहर बाद 15घं.–19मिं. तक रहेगा। वार तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह सं. बेईमान, चोर तथा दुष्ट लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। **सं. राशिफल**–*यह सं. मेष, वृष, कर्क, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर तथा कुम्भ राशि वालों को शुभप्रद रहेगी। शेष राशि वालों के लिए भागदौड़ वाली रहेगी।* **आकाश लक्षण**–*उत्तर-पश्चिम भारत में शीत-प्रकोप, कहीं बर्फबारी एवं कहीं खण्ड वर्षा के योग हैं।*

## वि. संवत् २०८१, माघ शुक्ल पक्ष शाक: १९४६

सन् 2025 ई. (30 जनवरी से 12 फरवरी तक), हिजरी सन् 1446
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु:

बुध अस्त है। सायं शनि पश्चिमक्षितिज, उससे कुछ ऊपर चमकता हुआ शुक्र होगा। इसी समय मंगल पूर्व में तथा गुरु भी याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में होगा।

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घटी पल | नक्षत्र | समाप्तिकाल घटी पल | योग | समाप्तिकाल घटी पल | करण | समाप्तिकाल घटी पल | तारीखें माघ शु. | रज्जब मु. | जनवरी | माघ प्र. | चद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल | | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं. | सूर्यास्त घं.मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६:२० | १ | गुरु | २१:५५ | धनि. | ५६:०५ | व्य. | २७:५० | ब | २१:५५ | 10 | 29 | 30 | १७ | कुं.२७:५५ | पंचक प्रारम्भ २७:५५ (18:35), बुध श्रवण में ३६:३८, चन्द्रदर्शन, मु. ३० | ९:१६:१२:४७ | 7:25 | 17:57 |
| २६:२३ | २ | शुक्र | १६:२८ | शत. | ५२:०५ | वरी | २०:२० | कौ | १६:२८ | 11 | श. | 31 | १८ | कुम्भ | शब्बान (मु.) मास प्रारम्भ, | ९:१७:१३:४४ | 7:25 | 17:58 |
| २६:२८ | ३ | शनि | १०:३८ | पू.भा. | ४७:५३ | परि | १२:३३ | ग | १०:३८ | 12 | 2 | फर | १९ | मी.३३:५८ | भ. ३७:३८ से, **गौरी तृतीया ( गोंतरी ) व्रत, वरद्-तिल-कुन्द चतुर्थी (A)** | ९:१८:१४:३८ | 7:24 | 17:59 |
| २६:३० | ४ | रवि | ४:३८ | उ.भा. | ४३:४३ | शिव<br>सिद्ध | ४:३५<br>५६:४५ | वि | ४:३८ | 13 | 3 | 2 | २० | मीन | भ. ४:३८ तक, **वसन्त पञ्चमी**, श्रीपञ्चमी, सरस्वती-लक्ष्मी पूजन, **(B)** | ९:१९:१५:३३ | 7:24 | 18:00 |
| अवम् | ५ | रवि | ५८:४३ | ०० | ०० | ०० | ०० | ० | ०० | ० | | ० | ० | ०० | **पंचमी तिथि का क्षय** ०० ०० | ० ० ० ० | ०० | ०० |
| २६:३५ | ६ | चन्द्र | ५३:०८ | रेव. | ३९:४५ | साध्य | ४९:१० | कौ | २५:५६ | 14 | 4 | 3 | २१ | मे.३९:४५ | **पंचक समाप्त ३९:४५ (23:17), तृतीय ( अन्तिम ) शाही स्नान ( प्रयाग )-मतान्तरे** | ९:२०:१६:२३ | 7:23 | 18:01 |
| २६:३८ | ७ | मंग | ४७:५३ | अश्वि | ३६:१० | शुभ | ४१:५० | ग | २०:३१ | 15 | 5 | 4 | २२ | मेष | भ. ४७:५३ से, **गुरु मार्गी** १९:३० (15:10), **रथ सप्तमी व्रत** (पूर्व- **(C)** | ९:२१:१७:१३ | 7:22 | 18:01 |
| २६:४३ | ८ | बुध | ४३:०८ | भर. | ३३:०० | शुक्ल | ३४:५५ | वि | १५:३१ | 16 | 6 | 5 | २३ | वृ.४७:१८ | भ. १५:३१ तक, **भीष्माष्टमी** | ९:२२:१८:०० | 7:21 | 18:02 |
| २६:४५ | ९ | गुरु | ३८:५३ | कृति. | ३०:२३ | ब्रह्म | २८:२३ | बा | ११:०१ | 17 | 7 | 6 | २४ | वृष | सूर्य धनिष्ठा में १:१० (7:49), **गुप्त नवरात्र समाप्त** | ९:२३:१८:४९ | 7:21 | 18:03 |
| २६:५० | १० | शुक्र | ३५:१८ | रोहि. | २८:२० | ऐन्द्र | २२:२३ | तै | ७:०६ | 18 | 8 | 7 | २५ | मि.५७:३३ | बुध धनिष्ठा में २७:५८ (18:31) | ९:२४:१९:३५ | 7:20 | 18:04 |
| २६:५५ | ११ | शनि | ३२:२३ | मृग. | २७:०० | वैधृ | १६:५३ | व | ३:५१ | 19 | 9 | 8 | २६ | मिथुन | भ. ३:५१ से ३२:२३ तक, **जया एकादशी व्रत** | ९:२५:२०:१८ | 7:19 | 18:05 |
| २७:०० | १२ | रवि | ३०:२० | आर्द्रा | २६:२८ | विष्क | १२:०३ | ब | १:२२ | 20 | 10 | 9 | २७ | मिथुन | **भीष्म-द्वादशी**, तिल-द्वादशी | ९:२६:२०:५९ | 7:18 | 18:06 |
| २७:०३ | १३ | चन्द्र | २९:१० | पुन. | २६:४८ | प्रीति | ७:५३ | तै | २९:१० | 21 | 11 | 10 | २८ | क.११:३८ | **सोम प्रदोष व्रत** | ९:२७:२१:४३ | 7:18 | 18:07 |
| २७:०५ | १४ | मंग | २९:०८ | पुष्य | २८:१३ | आयु | ४:३३ | व | २९:०८ | 22 | 12 | 11 | २९ | कर्क | भ. २९:०८ से ५९:४३ तक, **बुध कुम्भ में १४:००** (12:53), गण्डमूल 18:34 से | ९:२८:२२:२१ | 7:17 | 18:07 |
| २७:१० | १५ | बुध | ३०:१८ | आश्ले | ३०:५० | सौभा | २:०८ | ब | ३०:१८ | 23 | 13 | 12 | फा. | सिं.३०:५० | **माघ-पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त, सूर्य कुम्भ में ३६:४०** (21:56), **(D)** | ९:२९:२२:५८ | 7:16 | 18:08 |

**कुम्भ महापर्व**
**( प्रयागराज )**
**देखें पृष्ठ 16**

**(A)** (देखें पृष्ठ 28), शुक्र उ.भा. में २:३८ (8:27), फरवरी मास प्रारम्भ **(B) तृतीय ( शाही ) स्नान-कुम्भ-महापर्व ( प्रयागराज )**-देखें पृष्ठ 16, शनि पू.भा. २ में ०:०१ (7:24), वागेश्वरी जयन्ती, गण्डमूल 24:53 से **(C)** अरुणोदय वाली), पुत्र (आरोग्य) व्रत, भानु-सप्तमी, गण्डमूल 21:50 तक **(D) फाल्गुन संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद, **श्रीगुरु रविदास जयन्ती**, श्रीललिता जयन्ती, **श्रीसत्यनारायण व्रत**

### बुधे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 5 फरवरी

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ० | २ | ९ | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| २२ | १७ | २५ | १८ | १७ | ६ | २३ | ५ | ५ |
| १३ | ५१ | ९ | ५५ | ४ | १६ | ३९ | २६ | २६ |
| १८ | ० | ५६ | ५४ | १५ | ५८ | २० | १० | १० |
| 60<br>49 | 842<br>5 | 14<br>30 | 103<br>15 | 0<br>14 | 43<br>7 | 6<br>41 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| श्रव.<br>४ | भर.<br>२ | पुन.<br>२ | श्रव<br>३ | रोहि<br>३ | उभा<br>१ | पूभा<br>२ | उभा<br>१ | उफा<br>३ |
| ० | ० | व | मा | मा | मा | मा | व | व |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ |
| शत्रु | सम | शत्रु | सम | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 5 फर.

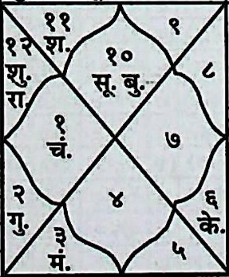

### बुधे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 12 फरवरी

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ३ | २ | १० | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| २९ | २२ | २३ | १ | १७ | १० | २४ | ५ | ५ |
| १८ | ३१ | ४४ | १४ | १० | ५३ | २७ | ३ | ३ |
| २९ | ३४ | ४१ | ३६ | ४ | ३४ | २ | ५४ | ५४ |
| 60<br>39 | 760<br>57 | 9<br>1 | 108<br>28 | 1<br>38 | 34<br>15 | 6<br>57 | 3<br>10 | 3<br>10 |
| धनि<br>२ | श्ले.<br>२ | पुन.<br>२ | धनि.<br>३ | रोहि<br>३ | उभा<br>३ | पूभा<br>२ | उभा<br>१ | उफा<br>३ |
| ० | ० | व | मा | मा | मा | मा | व | व |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ |
| शत्रु | स्व | शत्रु | सम | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुं. सूर्योदय, 12 फरवरी

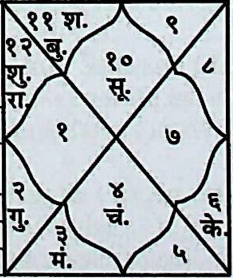

### माघ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में **गौरी-तृतीया** (1 फर.) को उमा (पार्वती) का पूजन करके गुड़, अदरख, लवण, पालक और खीर-इनसे बलि देकर ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। इसीदिन मध्याह्न एवं प्रदोष-व्यापिनी चतुर्थी होने से श्रीगणेश जी का व्रत एवं पूजन तिल, फल, गुड़ व लड्डुओं सहित करने का विधान है। **वसन्त-पंचमी** (2 फर.) को भगवान् श्रीविष्णु, सरस्वती व श्रीकृष्ण-राधा की पूजा पीले पुष्पों, गुलाल, अर्घ्य, धूप, दीप, नैवेद्य आदि द्वारा करके पीले/मीठे चावलों एवं हलुवा का भोग लगाकर स्वयं सेवन करने की परम्परा है। **प्रयागराज में कुम्भ-महापर्व का तृतीय शाही स्नान भी दो दिन रहेगा। माघ-पूर्णिमा** (12 फर.) को **तीर्थजल** से स्नान करके देव-पितृतर्पण करने के बाद तिल, गुड़, अनाज, घी, फल, गर्म वस्त्रों आदि का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **फाल्गुन संक्रान्ति**–ता. 12 फरवरी, बुधवार, 30 मुहू., रात्रि 9 बजकर 56 मिंट (21:56) पर कन्या लग्न में प्रवेश करेगी। इस सं. का पुण्यकाल मध्याह्न 15:32 से शुरु होगा। वारानुसार मन्दाकिनी तथा नक्षत्रानुसार घोरा नामक यह सं. नीच-दुष्ट, राजनेताओं को लाभप्रद रहेगी। **सं. राशिफल**–यह सं. वृष, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर तथा कुम्भ राशि वालों के लिए लाभप्रद रहेगी, शेष राशि वालों के लिए अशुभ रहेगी। चान्द्र माघ मास में पाँच मंगलवारों का होना सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों के लिए शुभ नहीं। देश में कहीं राज्य परिवर्तन, राजनीतिक पार्टियों में टकराव, साम्प्रदायिक व हिंसक घटनाओं की सम्भावना रहे। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के भी योग हैं। **आकाश लक्षण**–पक्ष के पूर्वार्द्ध में उत्तर पर्वतीय क्षेत्रों में खण्ड वर्षा, बर्फबारी एवं कहीं बूंदा-बांदी होगी। **शकुन**–माघ पूर्णिमा स्वच्छ निर्मल होना शुभ है–**माघी पूनम निर्मल होय, अन्न आषाढ़ै सस्तो होय।**

| वि. संवत् २०८१, **फाल्गुन कृष्ण पक्ष** शाकः १९४६ | | | | | | | | | | तारीखें | | | | चंद्र राशि प्रवेश | सन् 2025 ई. (ता. 13 से 27 फरवरी तक), हिजरी सन् 1446<br>सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर–वसन्त ऋतुः | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट | भा.स्टैं.टा.<br>जालन्धर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घ. प. | नक्षत्र | समाप्तिकाल घ. प. | योग | समाप्तिकाल घ. प. | करण | समाप्तिकाल घ. प. | माघ शक | शाबा. मं. | फरवरी | फाल्गु. प्र. | घड़ी–पल | सायंकाल गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न, मंगल पूर्वकपाल में, शुक्र–शनि पश्चिमक्षितिज में होंगे। ता. 23 से शनि पश्चिम में ही अस्त हो जाएगा। ता. 25 फर. से सायं बुध पश्चिमक्षितिज में होगा। | रा. अं. क. वि. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
| २७:१५ | १ | गुरु | ३२:४८ | मघा | ३४:४० | शोभ | ०:४० | बा | १:३३ | 24 | 14 | 13 | २ | सिंह | फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 21:07 तक, | १०:००:२३:३५ | 7:15 | 18:09 |
| २७:२० | २ | शुक्र | ३६:३८ | पू.फा. | ३९:५० | अति | ०:१५ | तै | ४:४३ | 25 | 15 | 14 | ३ | कं.५६:१८ | बुध शतभिषा में ५४:३५ (29:04) | १०:०१:२४:०९ | 7:14 | 18:10 |
| २७:२५ | ३ | शनि | ४१:४० | उ.फा. | ४६:०८ | सुक | ०:५० | व | ९:०९ | 26 | 16 | 15 | ४ | कन्या | भ. ९:०९ से ४१:४० तक, | १०:०२:२४:४२ | 7:13 | 18:11 |
| २७:३० | ४ | रवि | ४७:४० | हस्त | ५३:१८ | धृति | २:१५ | ब | १४:४० | 27 | 17 | 16 | ५ | कन्या | **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), स. सि. यो. | १०:०३:२५:१२ | 7:12 | 18:12 |
| २७:३३ | ५ | चन्द्र | ५४:१८ | चित्रा | ६०:०० | शूल | ४:२० | कौ | २०:५९ | 28 | 18 | 17 | ६ | तु.२७:१० | | १०:०४:२५:४६ | 7:11 | 18:12 |
| २७:३८ | ६ | मंग | ६०:०० | चित्रा | १:०५ | गण्ड | ६:४५ | ग | २७:३९ | 29 | 19 | 18 | ७ | तुला | सूर्य सायन मीन में २१:०८ (15:37), **वसन्त ऋतु प्रारम्भ** | १०:०५:२६:१५ | 7:10 | 18:13 |
| २७:४३ | ६ | बुध | १:०० | स्वा. | ८:४८ | वृद्धि | ९:०८ | व | १:०० | 30 | 20 | 19 | ८ | वृ.५९:१३ | भ. १:०० से ३४:०४ तक, सूर्य शत. में १३:१३ (12:26) | १०:०६:२६:४४ | 7:09 | 18:14 |
| २७:४८ | ७ | गुरु | ७:०८ | विशा | १५:५५ | ध्रुव | ११:०५ | ब | ७:०८ | फा | 21 | 20 | ९ | वृश्चिक | शक फाल्गुन प्रारम्भ, **जानकी व्रत** (मध्याह्न–व्यापिनी) | १०:०७:२७:०८ | 7:08 | 18:15 |
| २७:५३ | ८ | शुक्र | १२:०८ | अनु. | २१:५८ | व्या. | १२:१० | कौ | १२:०८ | 2 | 22 | 21 | १० | वृश्चिक | गण्डमूल 15:54 से, | १०:०८:२७:३३ | 7:07 | 18:16 |
| २७:५५ | ९ | शनि | १५:३५ | ज्ये. | २६:२५ | हर्ष | १२:०५ | ग | १५:३५ | 3 | 23 | 22 | ११ | ध.२६:२५ | भ. ४६:२२ से, बुध पू.भा. में ६:४८ (9:49) | १०:०९:२७:५७ | 7:06 | 18:16 |
| २८:०० | १० | रवि | १७:०८ | मूल | २९:०५ | वज्र | १०:३५ | वि | १७:०८ | 4 | 24 | 23 | १२ | धनु | भ. १७:०८ तक, **शनि पश्चिम में अस्त** २८:०३, स्वामी दयानन्द सरस्वती **(A)** | १०:१०:२८:२१ | 7:05 | 18:17 |
| २८:०५ | ११ | चन्द्र | १६:४३ | पू.षा. | २९:४८ | सिद्धि | ७:३३ | बा | १६:४३ | 5 | 25 | 24 | १३ | म.४४:४० | **विजया एकादशी व्रत, मंगल मार्गी** १:१० (7:32) | १०:११:२८:४२ | 7:04 | 18:18 |
| २८:१० | १२ | मंग | १४:२३ | उ.षा. | २८:४० | व्य.<br>वरी | ३:००<br>५७:०० | तै | १४:२३ | 6 | 26 | 25 | १४ | मकर | **भौम प्रदोष व्रत**, बुध पश्चिम में उदय २८:०० (18:15) | १०:१२:२९:०० | 7:03 | 18:19 |
| २८:१५ | १३ | बुध | १०:१८ | श्रव. | २५:५३ | परि. | ४९:४८ | व | १०:१८ | 7 | 27 | 26 | १५ | कुं.५३:५८ | भ. १०:१८ से ३७:३२ तक, **पंचक प्रारम्भ ५३:५८** (28:37), **(B)** | १०:१३:२९:१९ | 7:02 | 18:20 |
| २८:१८ | १४ | गुरु | ४:४५ | धनि. | २१:४८ | शिव | ४१:४० | श | ४:४५ | 8 | 28 | 27 | १६ | कुम्भ | **फाल्गुन अमावस** (स्नानदानादि प्रातः 8:55 बाद), **बुध मीन में ४१:५०** (23:45) | १०:१४:२९:३६ | 7:01 | 18:20 |
| अवम् | ३० | गुरु | ५८:०५ | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ० | ० | ० | ० | ०० | **अमावस तिथि का क्षय** ०० ०० | ० ० ० ० | ० ० | ० ० |

**(A)** जयन्ती, गण्डमूल 18:43 तक **(B) श्रीमहाशिवरात्रि व्रत**, मेला शिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) शुरु–7 दिन, कुम्भ स्नानपर्व (प्रयागराज), कुम्भ–स्नान समाप्त (देखें पृष्ठ 16)

**शुक्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 21 फरवरी**

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०<br>८<br>२३<br>२९ | ७<br>११<br>२२<br>५६ | २<br>२२<br>५१<br>५८ | १०<br>१७<br>४८<br>४९ | १<br>१७<br>३१<br>४७ | ११<br>१५<br>४<br>११ | १०<br>२५<br>३०<br>४० | ११<br>४<br>३५<br>१७ | ५<br>४<br>३५<br>१७ |
| 60<br>27 | 736<br>42 | 1<br>57 | 111<br>12 | 3<br>22 | 18<br>58 | 7<br>12 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| शत<br>१ | अनु<br>३ | पुन<br>१ | शत<br>४ | रोहि<br>३ | उभा<br>१ | पूभा<br>२ | उभा<br>१ | उफा<br>३ |
| ० | ० | व | मा | मा | मा | मा | व | व |
| ० | ० | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ |
| शत्रु | नीच | शत्रु | सम | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 21 फर.

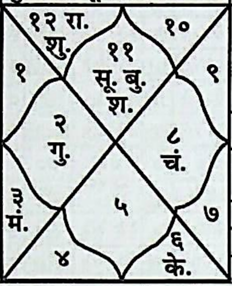

**गुरौ चतुर्दश्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 27 फरवरी**

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०<br>१४<br>२५<br>४९ | १०<br>०<br>३१<br>५० | २<br>२२<br>५१<br>३० | १०<br>२८<br>४१<br>४३ | १<br>१७<br>५४<br>४७ | ११<br>१६<br>२६<br>३७ | १०<br>२६<br>१४<br>१० | ११<br>४<br>१६<br>१२ | ५<br>४<br>१६<br>१२ |
| 60<br>18 | 869<br>3 | 2<br>30 | 102<br>52 | 4<br>28 | 6<br>2 | 7<br>18 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| शत<br>३ | धनि<br>३ | पुन<br>१ | पूभा<br>३ | रोहि<br>३ | उभा<br>४ | पूभा<br>२ | उभा<br>१ | उफा<br>३ |
| ० | ० | मा | मा | मा | मा | मा | व | व |
| ० | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | अ |
| शत्रु | सम | शत्रु | सम | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुं. सूर्योदय, 27 फरवरी

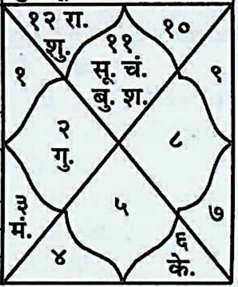

**फाल्गुन कृष्ण पक्षफल–**

इस पक्ष की **गणेश चतुर्थी** को व्रत रखकर श्रीगणेश–पूजन, बीज–मन्त्र एवं स्तोत्र स्तवन करते हुए रात्रि को चन्द्रोदय के समय चन्द्रमा को अर्घ्य देकर भगवान् को लड्डुओं सहित तिल निर्मित द्रव्यों का भोग लगाकर स्वयं प्रसाद रूप में ग्रहण करना चाहिए। **विजया एकादशी** (24 फर.) को विधिवत् व्रत रखने से हर प्रकार के वाद–विवाद में सफलता प्राप्त होती है। **ता. 26 फर.**, बुधवार को **श्रीमहाशिवरात्रि** का सर्वकल्याणकर व्रत रखने से अश्वमेघ यज्ञ तुल्य फल प्राप्त होता है। इसदिन काले तिलों सहित स्नानकर व्रत पालन कर रात्रि में भगवान् शिव–शंकर की विधिवत् पूजा करनी चाहिए। पूजन के समय शिव–कथा, शिवसहस्रनाम तथा शिवस्तोत्रादि का पाठ करना चाहिए। दूसरे दिन ब्राह्मण–भोजन एवं दानादि के पश्चात् स्वयं भोजन करना चाहिए। **लोक–भविष्य**–फाल्गुन मास में पांच गुरुवार तथा पाँच शुक्रवार होने से पश्चिम एवं मुस्लिम देशों जैसे–ईरान, तुर्की, सीरिया, इज़रायल–फिलीस्तीन आदि देशों में राजनीतिक व आतंकवादी टकराव तथा युद्धजन्य हालात बनेगें। पाँच शुक्रवारों के कारण श्रृंगारिक समान दूध, दही, पनीर, रूई–कपासादि श्वेत वस्तुओं की माँग बढ़ने से उनके मूल्यों में विशेष तेजी का रुझान बनेगा। जनसंख्या में असंयमित रूप में वृद्धि होने से लोगों की आर्थिक स्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

**आकाश–लक्षण**–पक्ष में बादल–चाल के बावजूद वर्षा की कमी अनुभव होगी। **शकुन**–फा.कृ. ५ को चित्रा नक्षत्र में बूँदाबादी हो, तो आगामी अच्छी फसल के संकेत होंगे।

## वि. संवत् २०८१, फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाक: १९४६

**सन् 2025 ई. (ता. 28 फरवरी से 14 मार्च तक), हिजरी सन् 1446**
**सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु:**

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल घड़ी पल | नक्षत्र | समाप्तिकाल घड़ी पल | योग | समाप्तिकाल घड़ी पल | करण | समाप्तिकाल घड़ी पल | फाल्गु. प्रवि. | शाबा. मु. | फरवरी | फाल्गु. प्र. | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल | सायं मंगल याम्योत्तर से पूर्व में गुरु याम्योत्तर–वृत्तासन्न, बुध–शुक्र पश्चिम–क्षितिजासन्न होंगे। शनि अस्त है। | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि. | भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं. | सूर्यास्त घं.मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८:२३ | १ | शुक्र | ५०:४३ | शत. | १६:४० | सिद्ध | ३२:५० | किं | २४:२४ | 9 | 29 | 28 | १७ | मी.५७:२५ | फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रारम्भ | १०:१५:२९:५२ | 7:00 | 18:21 |
| २८:२८ | २ | शनि | ४२:५८ | पू.भा. | ११:०० | साध्य | २३:३५ | बा | १६:४६ | 10 | 30 | मा | १८ | मीन | चन्द्रदर्शन, मु. ४५, बुध उ.भा. में ४३:०८, **शुक्र वक्री** ५७:४८ (30:06) **(A)** | १०:१६:३०:०५ | 6:59 | 18:22 |
| २८:३५ | ३ | रवि | ३५:१५ | उ.भा.<br>रेव | ५:०८<br>५९:१५ | शुभ | १४:१५ | तै | ९:०७ | 11 | रम | 2 | १९ | मे.५९:१५ | **पंचक समाप्त** ५९:१५ (30:39), शनि पू.भा. ३ में २७:४८ (18:04), **(B)** | १०:१७:३०:१३ | 6:57 | 18:23 |
| २८:३८ | ४ | चन्द्र | २७:४८ | अश्वि | ५३:५५ | शुक्ल<br>ब्रह्म | ५:०३<br>५६:१२ | व | १:३२ | 12 | 2 | 3 | २० | मेष | भ. १:३२ से २७:४८ तक, गण्डमूल 28:30 तक | १०:१८:३०:२५ | 6:56 | 18:23 |
| २८:४३ | ५ | मंग | २०:५५ | भर. | ४९:१८ | ऐन्द्र | ४८:०० | बा | २०:५५ | 13 | 3 | 4 | २१ | मेष | सूर्य पू.भा. में २९:२३ (18:40), याज्ञवलक्य जयन्ती | १०:१९:३०:३२ | 6:55 | 18:24 |
| २८:४८ | ६ | बुध | १४:५५ | कृति. | ४५:३८ | वैधृ. | ४०:३३ | तै | १४:५५ | 14 | 4 | 5 | २२ | वृ. ३:१८ | | १०:२०:३०:३७ | 6:54 | 18:25 |
| २८:५० | ७ | गुरु | ९:५५ | रोहि. | ४३:०३ | विष्क | ३४:०० | व | ९:५५ | 15 | 5 | 6 | २३ | वृष | भ. ९:५५ से ३८:०२ तक, लक्ष्मी–सीताष्टमी (प्रदोष व्यापिनी) | १०:२१:३०:४३ | 6:53 | 18:25 |
| २८:५५ | ८ | शुक्र | ६:०८ | मृग. | ४१:४० | प्रीति | २८:२८ | ब | ६:०८ | 16 | 6 | 7 | २४ | मि.१२:१३ | **होलाष्टक प्रारम्भ**, अन्नपूर्णा अष्टमी | १०:२२:३०:४४ | 6:52 | 18:26 |
| २९:०३ | ९ | शनि | ३:३८ | आर्द्रा | ४१:३८ | आयु | २३:५५ | कौ | ३:३८ | 17 | 7 | 8 | २५ | मिथुन | | १०:२३:३०:४० | 6:50 | 18:27 |
| २९:०८ | १० | रवि | २:२३ | पुन. | ४२:४५ | सौभा | २०:२३ | ग | २:२३ | 18 | 8 | 9 | २६ | क.२७:२३ | भ. ३२:२३ से, | १०:२४:३०:३७ | 6:49 | 18:28 |
| २९:१० | ११ | चन्द्र | २:२३ | पुष्य | ४५:१० | शोभ | १७:५३ | वि | २:२३ | 19 | 9 | 10 | २७ | कर्क | भ. २:२३ तक, **आमलकी एकादशी व्रत**, **गोविन्द–द्वादशी**, गण्डमूल 24:52 बाद | १०:२५:३०:३२ | 6:48 | 18:28 |
| २९:१५ | १२ | मंग | ३:४० | आश्ले | ४८:४३ | अति | १६:१८ | बा | ३:४० | 20 | 10 | 11 | २८ | सिं.४८:४३ | **भौम प्रदोष व्रत**, गण्डमूल विचार, स. सि. यो. | १०:२६:३०:२४ | 6:47 | 18:29 |
| २९:२० | १३ | बुध | ६:०५ | मघा | ५३:२० | सुक | १५:३५ | तै | ६:०५ | 21 | 11 | 12 | २९ | सिंह | महेश्वर व्रत, गण्डमूल 28:06 तक, | १०:२७:३०:१६ | 6:46 | 18:30 |
| २९:२५ | १४ | गुरु | ९:४० | पू.फा. | ५९:०० | धृति | १५:४८ | व | ९:४० | 22 | 12 | 13 | ३० | सिंह | भ. ९:४० से ४१:५८ तक, **होलिका–दहन** (भद्रा–बाद–देखें पृष्ठ 29) **(C)** | १०:२८:३०:०३ | 6:44 | 18:30 |
| २९:३० | १५ | शुक्र | १४:१५ | उ.फा. | ६०:०० | शूल | १६:४३ | ब | १४:१५ | 23 | 13 | 14 | चैत्र | कं.१५:३५ | **फाल्गुन पूर्णिमा, होली–पर्व, होलाष्टक समाप्त, सूर्य मीन में ३०:१८ (D)** | १०:२९:२९:४९ | 6:43 | 18:31 |

**होलाष्टक**
**7 मार्च से 14 मार्च**

**(A)** फूलेरा दूज (मथुरा–वृन्दावन), मार्च (सं. 2025) मास प्रारम्भ, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती **(B)** रमज़ान (मु.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल 9:00 से **(C)** **श्रीसत्यनारायण व्रत**, लक्ष्मीनारायण व्रत, वृषदान व्रत **(D)** (18:50), **चैत्र संक्रान्ति**, मु. ४५, पुण्यकाल सं. दोप. 12:26 बाद, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती, होलिका विभूति धारण, धूलिवन्दन

### शुक्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 7 मार्च

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | १ | २ | ११ | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| २२ | २६ | २३ | १० | १८ | १६ | २७ | ३ | ३ |
| २७ | २६ | ३० | ३२ | ३५ | ६ | १३ | ५० | ५० |
| १९ | ९ | ४३ | ३७ | २९ | ४५ | ०० | ४६ | ४६ |
| 60<br>1 | 814<br>55 | 7<br>51 | 64<br>5 | 5<br>51 | 13<br>43 | 7<br>25 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| पूभा<br>१ | मृग<br>१ | पुन.<br>२ | उभा<br>३ | रोहि<br>३ | उभा<br>४ | पूभा<br>३ | उभा<br>१ | उफा<br>३ |
| ० | ० | मा | मा | मा | व | मा | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | अ | अ | अ |
| शत्रु | उच्च | शत्रु | सम | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 7 मार्च

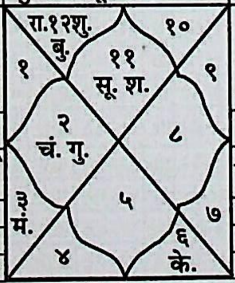

### शुक्रे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 14 मार्च

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | ४ | २ | ११ | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| २९ | २६ | २४ | १५ | १९ | १३ | २८ | ३ | ३ |
| २६ | १५ | ३८ | १५ | १९ | ४० | ४ | २८ | २८ |
| ४७ | ६ | ४ | ४३ | ४६ | ४२ | ४८ | ३१ | ३१ |
| 59<br>47 | 723<br>5 | 11<br>52 | 6<br>43 | 6<br>57 | 29<br>32 | 7<br>24 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| पूभा<br>३ | पूफा<br>४ | पुन<br>२ | उभा<br>४ | रोहि<br>३ | उभा<br>४ | पूभा<br>३ | उभा<br>१ | उफा<br>३ |
| ० | ० | मा | मा | मा | व | मा | व | व |
| ० | ० | उ | उ | उ | उ | अ | अ | अ |
| शत्रु | मित्र | शत्रु | सम | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुं. सूर्योदय, 14 मार्च

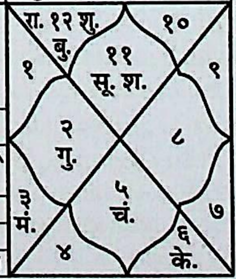

### फाल्गुन शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में ता. 7 से 14 मार्च तक '**होलाष्टक**' रहेंगे। इन दिनों परम्परानुसार पंजाब, हिमाचल, हरियाणादि कुछ प्रदेशों में शुभ मंगल कार्यों का आरम्भ वर्जित माना गया है, जबकि अन्य प्रदेशों में विशेष विचार नहीं किया जाता। **आमलकी एकादशी (10 मार्च)** के दिन आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु की भक्ति करनी चाहिए तथा आँवले की टहनी को कलश में स्थापन करके पूजन करना चाहिए। ता. 13 मार्च को प्रदोष–व्यापिनी पूर्णिमा में '**होलिका–दहन**' किया जाएगा। क्योंकि 14 मार्च को पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी नहीं है तथा 13 मार्च को प्रदोषकाले भद्रा व्याप्त है। अतएव शास्त्रानुसार भद्रा (23घं.–32मिं.) बाद तथा निशीथकाल 24घं.–35मिं. से पहिले होलिका–दहन किया जाएगा (देखें पृष्ठ 29)। ता. 14 मार्च, फाल्गुन पूर्णिमा को ही **होली का पर्व/त्यौहार** समस्त भारत (विशेषकर मथुरा/वृन्दावन) में बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह से मनाया जाएगा। **चैत्र संक्रान्ति**–ता. 14 मार्च, शुक्रवार, ४५ मुहू., सायं 6 बजकर 50 मिंट (18:50) पर कन्या लग्न में प्रवेश करेगी। इस सं. का पुण्यकाल दोपहर 12 बजकर 26 मिंट से प्रारम्भ होगा। वारानुसार मिश्रा तथा नक्षत्रानुसार नन्दा नामक यह सं. राजनेताओं तथा ब्राह्मणों के लिए लाभप्रद रहेगी। **सं. राशिफल**–यह सं. वृष, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर राशि वालों के लिए शुभ, शेष के लिए भागदौड़ वाली रहेगी। **आकाश लक्षण**–इस पक्ष में भारत के उत्तर–पश्चिमी भागों में तेज़ आँधियाँ तथा खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**–फा. शु. ८ या १३ तिथि को वृष्टि होना सुभिक्ष एवं आरोग्यता के संकेत होंगे।

## वि. संवत् २०८१, चैत्र कृष्ण पक्ष शाक: १९४६-४७

**सन् 2025 ई. (ता. 15 से 29 मार्च तक), हिजरी सन् 1446**
**सूर्य उत्तरायण, दक्षिण–उत्तर गोल, वसन्त ऋतु:**

सायं गुरु पश्चिम–कपाल में, मंगल याम्योत्तरवृत्त में, इसी समय बुध–शुक्र पश्चिमक्षितिज में होंगे। 19 मार्च को शुक्र पश्चिम में लुप्त होकर ता. 26 मार्च से प्रात: पूर्वक्षितिज से दिखाई देगा। जबकि बुध 17 मार्च से लुप्त रहेगा। शनि अस्त है।

| दिनमान घटी/पल | तिथि | वार | समाप्तिकाल | नक्षत्र | समाप्तिकाल | योग | समाप्तिकाल | करण | समाप्तिकाल | तारीखें |  |  |  | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल |  | सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट | भा.स्टैं.टा. जालन्धर |  |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
|  |  |  | घ. प. |  | घ. प. |  | घ. प. |  | घ. प. | फाल्गु. शक | रमजान मु. | मार्च | चैत्र प्रवि. |  |  | रा. अं. क. वि. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
| २९:३५ | १ | शनि | १९:४० | उ.फा. | ५:३० | गण्ड | १८:१५ | कौ | १९:४० | 24 | 14 | 15 | २ | कन्या | **बुध वक्री १३:५५, चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, होला मेला ( श्रीआनन्दपुर (A)** | ११:००:२९:३४ | 6:42 | 18:32 |
| २९:३८ | २ | रवि | २५:४५ | हस्त | १२:४० | वृद्धि | २०:२० | ग | २५:४५ | 25 | 15 | 16 | ३ | तु.४६:२५ | भ. ५९:०२ से, राहु पू.भा. ४–केतु उ.फा. २ में ३७:४५, **सन्त तुकाराम जयंती** | ११:०१:२९:१६ | 6:41 | 18:32 |
| २९:४५ | ३ | चन्द्र | ३२:१८ | चित्रा | २०:२० | ध्रुव | २२:४५ | वि | ३२:१८ | 26 | 16 | 17 | ४ | तुला | भ. ३२:१८ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12 एवं 29), सूर्य उ.भा. में (B) | ११:०२:२८:५५ | 6:39 | 18:33 |
| २९:५० | ४ | मंग | ३८:५० | स्वा. | २८:०५ | व्या. | २५:१५ | ब | ५:३४ | 27 | 17 | 18 | ५ | तुला | श्रीभगवान्नारायण जयन्ती, यूरेनस वृष में 29:39 | ११:०३:२८:३४ | 6:38 | 18:34 |
| २९:५३ | ५ | बुध | ४५:०३ | विशा | ३५:३३ | हर्ष | २७:३३ | कौ | ११:५७ | 28 | 18 | 19 | ६ | वृ.१८:४८ | **वक्री शुक्र पश्चिम में अस्त 17:51**, गुरु रोहि. ४ में २८:४३, **श्रीरंग- (C)** | ११:०४:२८:११ | 6:37 | 18:34 |
| २९:५८ | ६ | गुरु | ५०:२५ | अनु. | ४२:२० | वज्र | २९:२० | ग | १७:४४ | 29 | 19 | 20 | ७ | वृश्चिक | भ. ५०:२५ से, सूर्य सायन मेष में १९:४८, **उत्तर गोल प्रारम्भ**, एकनाथ–षष्ठी,(D) | ११:०५:२७:४६ | 6:36 | 18:35 |
| ३०:०५ | ७ | शुक्र | ५४:३५ | ज्ये. | ४८:०० | सिद्धि | ३०:२० | वि | २२:३० | 30 | 20 | 21 | ८ | ध.४८:०० | भ. २२:३० तक, शीतला सप्तमी (पूजा), मेला शीतलामाता (कुराली) पं., | ११:०६:२७:१८ | 6:34 | 18:36 |
| ३०:०८ | ८ | शनि | ५७:०८ | मूल | ५२:०८ | व्य. | ३०:०८ | बा | २५:५२ | चैत्र | 21 | 22 | ९ | धनु | शक चैत्र एवं संवत् 1947 प्रारम्भ, **शीतलाष्टमी व्रत**, गण्डमूल 27:24 (E) | ११:०७:२६:४९ | 6:33 | 18:36 |
| ३०:१३ | ९ | रवि | ५७:४८ | पू.षा. | ५४:२५ | वरी | २८:३८ | तै | २७:२८ | 2 | 22 | 23 | १० | धनु | **शुक्र अस्त 19 मार्च**<br>**शुक्र उदय 25 मार्च** | ११:०८:२६:१९ | 6:32 | 18:37 |
| ३०:१८ | १० | चन्द्र | ५६:२८ | उ.षा. | ५४:५० | परि. | २५:३५ | व | २७:०८ | 3 | 23 | 24 | ११ | म. ९:४५ | भ. २७:०८ से ५६:२८ तक, | ११:०९:२५:४७ | 6:31 | 18:38 |
| ३०:२३ | ११ | मंग | ५३:१३ | श्रव. | ५३:२३ | शिव | २१:०० | ब | २४:५१ | 4 | 24 | 25 | १२ | मकर | **पापमोचनी एकादशी व्रत ( स्मार्त्त )** (देखें पृष्ठ 29),**वक्री शुक्र पूर्व में (F)** | ११:१०:२५:१२ | 6:29 | 18:38 |
| ३०:२८ | १२ | बुध | ४८:०८ | धनि. | ५०:०५ | सिद्ध | १४:५३ | कौ | २०:४१ | 5 | 25 | 26 | १३ | कुं.२१:५८ | **पंचक प्रारम्भ २१:५८** (15:15),**पापमोचनी एकादशी व्रत ( वैष्णव )(G)** | ११:११:२४:३८ | 6:28 | 18:39 |
| ३०:३३ | १३ | गुरु | ४१:३३ | शत. | ४५:१८ | साध्य<br>शुभ | ७:२५<br>५८:४५ | ग | १४:५१ | 6 | 26 | 27 | १४ | कुम्भ | भ. ४१:३३ से, **प्रदोष व्रत, वारुणी पर्व ( योग ) 23:04 तक**, मासशिवरात्रि व्रत | ११:१२:२४:०० | 6:27 | 18:40 |
| ३०:३५ | १४ | शुक्र | ३३:४५ | पू.भा. | ३९:२० | शुक्ल | ४९:१३ | वि | ७:३४ | 7 | 27 | 28 | १५ | मी.२५:५५ | भ. ७:३४, **मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ** (हरियाणा) | ११:१३:२३:२३ | 6:26 | 18:40 |
| ३०:४३ | ३० | शनि | २५:१० | उ.भा. | ३२:३८ | ब्रह्म | ३९:०८ | ना | २५:१० | 8 | 28 | 29 | १६ | मीन | **चैत्र अमावस, शनिवारी अमावस, शनि पू.भा. ४ मीन में ३८:२० (H)** | ११:१४:२२:३५ | 6:24 | 18:41 |

**(A)** **व पांओटा साहिब ), वसन्तोत्सव, ध्वजारोहण, धुलैण्डी, आम्रकुसुम-प्राशन** **(B)** ५१:२० (27:11), वक्री बुध पश्चिम में अस्त २९:३८ (18:30) **(C)** **पंचमी, मेला गुरु रामराय** (देहरादून, उत्तराखण्ड), **मेला नवचण्डी** (मेरठ उ.प्र.) **(D)** गण्डमूल 23:32 से, **(E)** तक, महाविषुव दिवस **(F)** उदय 18:42 ( घं.मिं. ) **(G)** देखें पृष्ठ 29, वारुणी योग 26:25 से **(H)** (21:44), वि. संवत् २०८१ पूर्ण, गण्डमूल 19:27 से

### शनौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 22 मार्च

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | ८ | २ | ११ | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| ७ | १ | २६ | १२ | २० | ९ | २९ | ३ | ३ |
| २४ | ५५ | २७ | ३३ | १९ | ६ | ३ | ३ | ३ |
| १३ | २८ | ३ | २ | २४ | ४ | ५४ | ५ | ५ |
| 59<br>33 | 751<br>23 | 15<br>45 | 47<br>22 | 8<br>5 | 37<br>48 | 7<br>21 | 3<br>11 | 3<br>11 |
| उभा<br>२ | मूल<br>१ | पुन<br>२ | उभा<br>३ | रोहि<br>४ | उभा<br>२ | पूभा<br>३ | पूभा<br>४ | उफा<br>२ |
| ० | ० | मा | व | मा | व | मा | व | व |
| ० | ० | उ | अ | उ | अ | अ | अ | अ |
| मित्र | सम | शत्रु | सम | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 22 मार्च

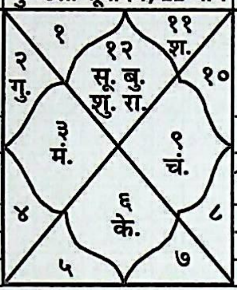

### शनौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 29 मार्च

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | ११ | २ | ११ | १ | ११ | १० | ११ | ५ |
| १४ | ७ | २८ | ६ | २१ | ४ | २९ | २ | २ |
| २० | ५५ | २६ | ३७ | १८ | ५१ | ५५ | ४० | ४० |
| २५ | ६ | १९ | २३ | ४६ | २० | ६ | ४९ | ४९ |
| 59<br>20 | 905<br>23 | 18<br>39 | 45<br>47 | 8<br>59 | 32<br>24 | 7<br>14 | 3<br>10 | 3<br>10 |
| उभा<br>४ | उभा<br>२ | पुन<br>३ | उभा<br>१ | रोहि<br>४ | उभा<br>१ | पूभा<br>३ | पूभा<br>४ | उफा<br>२ |
| ० | ० | मा | व | मा | व | मा | व | व |
| ० | अ | उ | अ | उ | उ | अ | अ | अ |
| मित्र | सम | शत्रु | सम | शत्रु | सम | स्व | सम | मित्र |

कुण्डली सूर्योदय, 29 मार्च

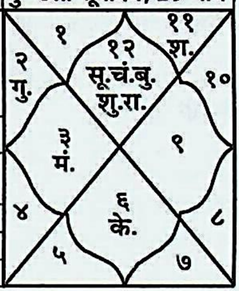

### चैत्र कृष्ण पक्षफल–

प्रतिपदा (15 मार्च) को होला मेला, धुलैण्डी व वसन्तोत्सव पंजाब, हरि., हि.प्र. आदि अनेक प्रदेशों में मनाया जाता है। इसी दिन कई स्थलों पर ध्वजारोहण भी किया जाता है। ता. 17 मार्च को श्रीगणेश–पूजन, मन्त्र–जप **'ॐ गं गणपत्ये नम:'** करने से विघ्न दूर होते हैं तथा पुत्र–पौत्रादि की प्राप्ति होती है। **पापमोचनी एकादशी** (25/26 मार्च) का व्रत विधि अनुसार रखने से ज्ञाताज्ञात अनिष्ट पापों से निवृत्ति होती है। ता. 22 मार्च को **महाविषुव दिवस** (जब दिन–रात समान होते हैं) को यन्त्र, तन्त्र एवं मन्त्रादि अनुष्ठान के लिए विशेष प्रशस्त दिन माना जाता है। ता. 27 मार्च को प्रात: सूर्योदय से सूर्यास्त तक होने से तीर्थादि स्थल पर स्नान, दानादि का विशेष महत्व होता है। इसका माहात्मय ग्रहणतुल्य होता है। चतुर्दशी (28 मार्च) को पिहोवा-तीर्थ (कुरुक्षेत्र) पर मेला पृथूदक बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया जाएगा। **ग्रह–गोचर**–मीन राशि में **'सूर्य-बुध-शुक्र-राहु'** चतुर्ग्रही योग तथा गुरू-शुक्र के मध्य स्थान-परवर्तिन योग (वृष-मीन) होने से देश के कुछ भागों में कहीं सांप्रदायिक हिंसा का भयावह सिलसिला, उपद्रव, अशन्ति एवं विश्व में कुछ देशों के मध्य युद्ध का वातावरण बने। कहीं असामयिक वर्षा से हानि होगी तथा दैनिक उपभोग्य वस्तुओं में तेज़ी हो। **लोक–भविष्य**–चैत्र मास में पाँच शनिवार होने से सर्वप्रकार के अनाज, दालों एवं खाद्य तेलों में तेजी होगी। राजनेताओं में परस्पर विरोध व टकराव हो। कहीं उपद्रव, झगड़े, फिसाद एवं जनांदोलन के संकेत हैं। जातीय उत्पात और साम्प्रदायिक दंगे–फसाद बढ़ेंगे। **आकाश–लक्षण**–पक्ष में पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर के उत्तरी क्षेत्रों में तेज़ हवाओं के साथ बौछारें पड़ने के संकेत हैं।

# वि. संवत् 2080–81, अप्रैल मास का तिथ्यादि पंचाग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2024 ई.

| मास पक्ष | अप्रैल | तिथि | वार | समाप्ति काल घं. मिं. | नक्षत्र | समाप्ति काल घं. मिं. | योग | समाप्ति काल घं. मिं. | करण | समाप्ति काल घं. मिं. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश<br>सूर्योत्तरायण घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] वसन्त-ग्रीष्म ऋतुः | जम्मू सूर्योदय घं. मिं. | जम्मू सूर्यास्त घं. मिं. | दिल्ली सूर्योदय घं. मिं. | दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं. | चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं. | चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं. | मुम्बई सूर्योदय घं. मिं. | मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चैत्र कृष्ण पक्ष (वि. सं. 2080) | 1 | ७ | चन्द्र | 21:10 | मूल | 23:12 | वरी | 20:30 | वि | 9:21 | धनु | भ. 9:21 तक, शीतला सप्तमी (पूजा), बुध वक्री 27:45, गुरु भर. 4 में(A) | 6:22 | 18:47 | 6:15 | 18:35 | 6:15 | 18:38 | 6:36 | 18:49 |
| | 2 | ८ | मंग | 20:09 | पू.षा. | 22:49 | परि. | 18:35 | बा | 8:40 | म.28:37 | शीतलाष्टमी व्रत | 6:21 | 18:47 | 6:14 | 18:36 | 6:14 | 18:38 | 6:36 | 18:49 |
| | 3 | ९ | बुध | 18:30 | उ.षा. | 21:48 | शिव | 16:10 | तै | 7:20 | मकर | भद्रा 29:23 से, शुक्र उ.भा. में 9:29, | 6:20 | 18:48 | 6:13 | 18:36 | 6:13 | 18:39 | 6:35 | 18:49 |
| | 4 | १० | गुरु | 16:15 | श्रव. | 20:12 | सिद्ध | 13:15 | वि | 16:15 | मकर | भ. 16:15 तक, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 6:20 | 6:18 | 18:49 | 6:12 | 18:37 | 6:12 | 18:40 | 6:34 | 18:49 |
| | 5 | ११ | शुक्र | 13:29 | धनि. | 18:07 | साध्य<br>शुभ | 9 55<br>30 15 | बा | 13:29 | कुं. 7:13 | पंचक प्रारम्भ 7:13, पापमोचनी एकादशी व्रत | 6:17 | 18:49 | 6:10 | 18:38 | 6:11 | 18:40 | 6:33 | 18:49 |
| | 6 | १२ | शनि | 10:20 | शत. | 15:40 | शुक्ल | 26:20 | तै | 10:20 | कुम्भ | शनि प्रदोष व्रत, महावारुणी योग (10:20 से 15:40 तक), वारुणी पर्व,(B) | 6:16 | 18:50 | 6:09 | 18:38 | 6:09 | 18:41 | 6:32 | 18:50 |
| | 7 | १३ | रवि | 6:54 | पू.भा. | 12:58 | ब्रह्म | 22:17 | व | 6:54 | मी. 7:40 | भ. 6:54 से 17:08 तक, मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरि.), मासशिवरात्रि | 6:15 | 18:51 | 6:08 | 18:39 | 6:08 | 18:42 | 6:31 | 18:50 |
| | ० | १४ | रवि | 27:22 | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ०० | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| | 8 | ३० | चन्द्र | 23:51 | उ.भा. | 10:13 | ऐन्द्र | 18:14 | च | 13:37 | मीन | चैत्र-सोमवती अमावस, तीर्थस्नान माहात्म्य, वि. संवत् 2080 पूर्ण (C) | 6:13 | 18:52 | 6:07 | 18:39 | 6:07 | 18:42 | 6:31 | 18:50 |
| चैत्र शुक्ल पक्ष (वि. संवत् 2081) | 9 | १ | मंग | 20:32 | रेव<br>अश्वि | 7 32<br>29 07 | वैधृ. | 14:18 | किं | 10:12 | मे. 7:32 | 'कालयुक्त' नाम नव वि. संवत् २०८१ शुरु, चैत्र (वासन्त) नवरात्र शुरु(D) | 6:12 | 18:52 | 6:06 | 18:40 | 6:06 | 18:43 | 6:30 | 18:51 |
| | 10 | २ | बुध | 17:33 | भर. | 27:06 | विष्क | 10:37 | बा | 7:03 | मेष | चन्द्रदर्शन, मु. 15, मंगल पू.भा. में 11:08, | 6:11 | 18:53 | 6:05 | 18:40 | 6:05 | 18:44 | 6:29 | 18:51 |
| | 11 | ३ | गुरु | 15:04 | कृति. | 25:38 | प्रीति<br>आयु | 7 19<br>28 29 | ग | 15:04 | वृ. 8:40 | भ. 26:08 से, गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, आन्दोलन तृतीया (E) | 6:10 | 18:54 | 6:04 | 18:41 | 6:04 | 18:44 | 6:28 | 18:51 |
| | 12 | ४ | शुक्र | 13:12 | रोहि. | 24:51 | सौभा | 26:13 | वि | 13:12 | वृष | भ. 13:12 तक, दमनक चतुर्थी, श्री (लक्ष्मी) पंचमी (देखें पृष्ठ 21), हय-व्रत | 6:08 | 18:54 | 6:03 | 18:42 | 6:02 | 18:45 | 6:28 | 18:51 |
| | 13 | ५ | शनि | 12:05 | मृग. | 24:49 | शोभ | 24:34 | बा | 12:05 | मि.12:44 | सूर्य अश्वि. 1 मेष में 21:04, वैशाख संक्रान्ति, मु. 30, पुण्यकाल सं. (F) | 6:07 | 18:55 | 6:02 | 18:42 | 6:01 | 18:45 | 6:27 | 18:52 |
| | 14 | ६ | रवि | 11:44 | आर्द्रा | 25:35 | अति | 23:33 | तै | 11:44 | मिथुन | | 6:06 | 18:56 | 6:01 | 18:43 | 6:00 | 18:46 | 6:26 | 18:52 |
| | 15 | ७ | चन्द्र | 12:12 | पुन. | 27:06 | सुक | 23:08 | व | 12:12 | क.20:39 | भ. 12:12 से 24:49 तक, अशोककलिका प्राशन, अशोकाष्टमी (पुनर्वसुयुता) | 6:05 | 18:57 | 5:59 | 18:43 | 5:59 | 18:47 | 6:25 | 18:52 |
| | 16 | ८ | मंग | 13:25 | पुष्य | 29:16 | धृति | 23:16 | ब | 13:25 | कर्क | श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)-कांगड़ादेवी-नैनादेवी (G) | 6:03 | 18:57 | 5:58 | 18:44 | 5:58 | 18:47 | 6:24 | 18:52 |
| | 17 | ९ | बुध | 15:15 | आश्ले | - - | शूल | 23:51 | कौ | 15:15 | कर्क | श्रीदुर्गा-नवमी, नवरात्र-समाप्त, श्रीरामनवमी, गण्डमूल | 6:02 | 18:58 | 5:57 | 18:44 | 5:57 | 18:48 | 6:24 | 18:53 |
| | 18 | १० | गुरु | 17:32 | आश्ले | 7:57 | गंड | 24:43 | ग | 17:32 | सिं. 7:57 | नवरात्र व्रत पारणा, गण्डमूल विचार | 6:01 | 18:59 | 5:56 | 18:45 | 5:56 | 18:49 | 6:23 | 18:53 |
| | 19 | ११ | शुक्र | 20:05 | मघा | 10:57 | वृद्धि | 25:45 | व | 6:49 | सिंह | भ. 6:49 से 20:05 तक, कामदा एकादशी व्रत, लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव(H) | 6:00 | 18:59 | 5:55 | 18:46 | 5:55 | 18:49 | 6:22 | 18:53 |
| | 20 | १२ | शनि | 22:42 | पू.फा. | 14:04 | ध्रुव | 26:47 | ब | 9:24 | कं.20:51 | श्रीविष्णु दमनोत्सव, अगस्त्य-अस्त | 5:59 | 19:00 | 5:54 | 18:46 | 5:53 | 18:50 | 6:22 | 18:54 |
| | 21 | १३ | रवि | 25:12 | उ.फा. | 17:08 | व्या. | 27:44 | कौ | 11:57 | कन्या | प्रदोष व्रत, अनङ्ग-त्रयोदशी, श्रीमहावीर-जयन्ती (जैन), शक वैशाख प्रारम्भ = | 5:58 | 19:01 | 5:53 | 18:47 | 5:52 | 18:51 | 6:21 | 18:54 |
| | 22 | १४ | चन्द्र | 27:26 | हस्त | 20:00 | हर्ष | 28:28 | ग | 14:19 | कन्या | भ. 27:26 से, श्रीशिव-दमनोत्सव =स.सि.यो., शुक्र वार्धक्य दोष प्रारम्भ 5:58 | 5:57 | 19:02 | 5:52 | 18:47 | 5:51 | 18:51 | 6:20 | 18:54 |
| | 23 | १५ | मंग | 29:19 | चित्रा | 22:32 | वज्र | 28:56 | वि | 16:23 | तु. 9:19 | भ. 16:23 तक, चैत्र पूर्णिमा, वैशाखस्नान शुरु, मंगल मीन में 8:38 (I) | 5:55 | 19:02 | 5:51 | 18:48 | 5:50 | 18:52 | 6:20 | 18:54 |
| वैशाख कृष्ण पक्ष | 24 | १ | बुध | - - | स्वा. | 24:41 | सिद्धि | 29:05 | बा | 18:03 | तुला | वैशाख कृष्णपक्ष प्रा., शुक्र अश्वि 1 मेष में 23:58, शुक्र पूर्व में अस्त 5:56 | 5:54 | 19:03 | 5:50 | 18:48 | 5:49 | 18:53 | 6:19 | 18:55 |
| | 25 | १ | गुरु | 6:46 | विशा. | 26:24 | व्य. | 28:53 | कौ | 6:46 | वृ. 20:01 | बुध मार्गी 18:24, | 5:53 | 19:04 | 5:50 | 18:49 | 5:48 | 18:53 | 6:18 | 18:55 |
| | 26 | २ | शुक्र | 7:47 | अनु. | 27:40 | वरी | 28:19 | ग | 7:47 | वृश्चिक | भ. 20:03 से, गण्डमूल 27:40 से, स. सि. यो. | 5:52 | 19:05 | 5:49 | 18:50 | 5:47 | 18:54 | 6:18 | 18:55 |
| | 27 | ३ | शनि | 8:19 | ज्ये. | 28:28 | परि | 27:23 | वि | 8:19 | ध.28:28 | भ. 8:19 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12), सूर्य भर. में 12:56(J) | 5:51 | 19:05 | 5:48 | 18:50 | 5:46 | 18:55 | 6:17 | 18:56 |
| | 28 | ४ | रवि | 8:22 | मूल | 28:49 | शिव | 26:06 | बा | 8:22 | धनु | सती अनुसूइया जयन्ती, गण्डमूल 28:49 तक, स. सि. यो. | 5:50 | 19:06 | 5:47 | 18:51 | 5:45 | 18:55 | 6:16 | 18:56 |
| | 29 | ५ | चन्द्र | 7:58 | पू.षा. | 28:43 | सिद्ध | 24:26 | तै | 7:58 | धनु | शुक्र अस्त 24 अप्रैल | 5:49 | 19:07 | 5:46 | 18:51 | 5:44 | 18:56 | 6:16 | 18:56 |
| | 30 | ६ | मंग | 7:06 | उ.षा. | 28:09 | साध्य | 22:24 | व | 7:06 | म.10:37 | भ. 7:06 से 18:26 तक, त्रिपुष्कर योग (7:06 से 28:09) | 5:48 | 19:07 | 5:45 | 18:52 | 5:43 | 18:57 | 6:15 | 18:57 |
| | ० | ७ | मंग | 29:46 | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | सप्तमी तिथि का क्षय ०० ०० ०० ०० | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |

(A) 24:59, मेला शीतला माता (कुराली पं.), अप्रैल मास-सन् 2024 ई. शुरु, गण्डमूल 23:12 तक, (B) शनि पू.भा. 1 में 14:11 (C) मेला हरिद्वार-प्रयागराजादि, गण्डमूल 10:13 बाद (D) **घटस्थापन, पंचक समाप्त 7:32, वक्री बुध रेव. (4) मीन में 21:30**, संवत्सरफल-श्रवण, ध्वजारोहण, तैलाभ्यंग, श्रीदुर्गा-पूजा, गुड़ी-पड़वा, गण्डमूल 29:07 तक (E) शव्वाल (मु.) मास प्रारम्भ (F) मध्याह्न बाद, **मेला वैशाखी (पंजाब)**, शुक्र रेवती में 28:32, नाग-पंचमी, **स्कन्द षष्ठी व्रत (देखें पृष्ठ 21)** (G) (हि.प्र.), अन्नपूर्णा पूजन, गुरु कृति. (1) में 26:03 (H) सूर्य सायन वृष में 19:30, **ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ**, वक्री बुध पूर्व में उदय 19:02, गण्डमूल 10:57 तक (I) **श्रीहनुमान जयन्ती** (दक्षिण-भारत) (J) मंगल उ.भा. में 16:10, गण्डमूल

# वि. संवत् 2081, मई मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2024 ई.

| मास पक्ष | मई | तिथि | वार | समाप्ति काल घं. मिं. | नक्षत्र | समाप्ति काल घं. मिं. | योग | समाप्ति काल घं. मिं. | करण | समाप्ति काल घं. मिं. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण ग्रीष्म ऋतुः | जम्मू | | दिल्ली | | चण्डीगढ़ | | मुम्बई | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
| वैशाख कृष्ण पक्ष | 1 | ८ | बुध | 28:02 | श्रव. | 27:11 | शुभ | 20:01 | बा | 16:54 | मकर | **मईमास प्रारम्भ, गुरु कृति. 2 वृष में 12:57** | 5:47 | 19:08 | 5:44 | 18:53 | 5:43 | 18:57 | 6:15 | 18:57 |
| | 2 | ९ | गुरु | 25:54 | धनि. | 25:49 | शुक्ल | 17:19 | तै | 14:58 | कुं.14:33 | **पंचक प्रारम्भ 14:33**, प्लूटो वक्री 23:05 | 5:46 | 19:09 | 5:43 | 18:53 | 5:42 | 18:58 | 6:14 | 18:57 |
| | 3 | १० | शुक्र | 23:25 | शत | 24:06 | ब्रह्म | 14:19 | व | 12:40 | कुम्भ | भ. 12:40 से 23:25 तक, | 5:45 | 19:10 | 5:43 | 18:54 | 5:41 | 18:59 | 6:13 | 18:58 |
| | 4 | ११ | शनि | 20:39 | पू.भा. | 22:07 | ऐन्द्र | 11:03 | ब | 10:02 | मी.16:38 | **वरूथिनी एकादशी व्रत**, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती | 5:44 | 19:10 | 5:42 | 18:55 | 5:40 | 18:59 | 6:13 | 18:58 |
| | 5 | १२ | रवि | 17:42 | उ.भा. | 19:57 | वैधृ<br>विष्क | 7 37<br>28 03 | कौ | 7:11 | मीन | **प्रदोष व्रत**, शुक्र भर. में 19:41, गण्डमूल 19:57 से, स. सि. यो. | 5:43 | 19:11 | 5:41 | 18:55 | 5:39 | 19:00 | 6:12 | 18:58 |
| | 6 | १३ | चन्द्र | 14:41 | रेव. | 17:43 | प्रीति | 24:28 | व | 14:41 | मे.17:43 | भ. 14:41 से 25:11 तक, **पंचक समाप्त 17:43, गुरु पश्चिम में अस्त(A)** | 5:43 | 19:12 | 5:40 | 18:56 | 5:38 | 19:01 | 6:12 | 18:59 |
| | 7 | १४ | मंग | 11:41 | अश्वि | 15:32 | आयु | 20:59 | श | 11:41 | मेष | पितृकार्येषु अमावस, श्रीटैगोर–जयन्ती, गण्डमूल 15:32 तक, | 5:42 | 19:13 | 5:39 | 18:56 | 5:37 | 19:01 | 6:11 | 18:59 |
| | 8 | ३० | बुध | 8:52 | भर. | 13:34 | सौभा | 17:41 | ना | 8:52 | वृ.19:07 | **वैशाख अमावस** (स्नानदानादि), मेला पिंजौर (कालका, हरियाणा) | 5:41 | 19:13 | 5:39 | 18:57 | 5:37 | 19:02 | 6:11 | 18:59 |
| वैशाख शुक्ल पक्ष | 9 | १ | गुरु | 6:22 | कृति | 11:56 | शोभ | 14:41 | ब | 6:22 | वृष | वैशाख शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, श्रीशिवाजी–जयन्ती | 5:40 | 19:14 | 5:38 | 18:58 | 5:36 | 19:03 | 6:10 | 19:00 |
| | ० | २ | गुरु | 28:18 | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | **द्वितीया तिथि का क्षय** ०० ०० | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| | 10 | ३ | शुक्र | 26:51 | रोहि. | 10:47 | अति | 12:06 | तै | 15:35 | मि.22:26 | **अक्षय–तृतीया, भगवान् परशुराम जयन्ती, बुध अश्वि–1 मेष में 18:43(B)** | 5:39 | 19:15 | 5:37 | 18:58 | 5:35 | 19:03 | 6:10 | 19:00 |
| | 11 | ४ | शनि | 26:05 | मृग. | 10:15 | सुक. | 10:03 | व | 14:28 | मिथुन | भ. 14:28 से 26:05 तक, सूर्य कृतिका में 7:02, शनि पू.भा. 2 में 29:26 | 5:38 | 19:16 | 5:37 | 18:59 | 5:34 | 19:04 | 6:10 | 19:01 |
| | 12 | ५ | रवि | 26:04 | आर्द्रा | 10:27 | धृति | 8:33 | ब | 14:05 | क.29:05 | **आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती,** | 5:38 | 19:16 | 5:36 | 18:59 | 5:34 | 19:05 | 6:09 | 19:01 |
| | 13 | ६ | चन्द्र | 26:51 | पुन. | 11:24 | शूल | 7:41 | कौ | 14:28 | कर्क | श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती | 5:37 | 19:17 | 5:35 | 19:00 | 5:33 | 19:05 | 6:09 | 19:01 |
| | 14 | ७ | मंग | 28:20 | पुष्य | 13:05 | गण्ड | 7:25 | ग | 15:36 | कर्क | भ. 28:20 से, **श्रीगङ्गा–जयन्ती, सूर्य वृष में 17:54, ज्येष्ठ संक्रान्ति (C)** | 5:36 | 19:18 | 5:35 | 19:01 | 5:32 | 19:06 | 6:08 | 19:02 |
| | 15 | ८ | बुध | – – | आश्ले | 15:25 | वृद्धि | 7:41 | वि | 17:22 | सिं.15:25 | भ. 17:22 तक, गुरु कृति. 3 में 16:12, **श्रीदुर्गाष्टमी**, गण्डमूल | 5:36 | 19:18 | 5:34 | 19:01 | 5:32 | 19:07 | 6:08 | 19:02 |
| | 16 | ८ | गुरु | 6:23 | मघा | 18:14 | ध्रुव | 8:23 | ब | 6:23 | सिंह | **जानकी ( सीता ) जयन्ती** (देखें पृष्ठ 21), शुक्र कृतिका में 15:40, **(D)** | 5:35 | 19:19 | 5:34 | 19:02 | 5:31 | 19:07 | 6:08 | 19:02 |
| | 17 | ९ | शुक्र | 8:49 | पू.फा. | 21:18 | व्या. | 9:21 | कौ | 8:49 | कं.28:05 | | 5:34 | 19:20 | 5:33 | 19:02 | 5:31 | 19:08 | 6:07 | 19:03 |
| | 18 | १० | शनि | 11:23 | उ.फा. | 24:23 | हर्ष | 10:25 | ग | 11:23 | कन्या | भ. 24:37 से, | 5:34 | 19:21 | 5:33 | 19:03 | 5:30 | 19:09 | 6:07 | 19:03 |
| | 19 | ११ | रवि | 13:51 | हस्त | 27:16 | वज्र | 11:24 | वि | 13:51 | कन्या | भ. 13:51 तक, **मोहिनी एकादशी व्रत, शुक्र वृष में 8:42**, स.सि.यो. | 5:33 | 19:21 | 5:32 | 19:04 | 5:29 | 19:09 | 6:07 | 19:04 |
| | 20 | १२ | चंद्र | 15:59 | चित्रा | – – | सिद्धि | 12:10 | बा | 15:59 | तु.16:35 | **सोम प्रदोष व्रत**, सूर्य सायन मिथुन में 18:30 | 5:32 | 19:22 | 5:32 | 19:04 | 5:29 | 19:10 | 6:06 | 19:04 |
| | 21 | १३ | मंग | 17:40 | चित्रा | 5:46 | व्य. | 12:35 | तै | 17:40 | तुला | बुध भरणी में 11:41, **श्रीनृसिंह जयन्ती** (देखें पृष्ठ 21) | 5:32 | 19:23 | 5:31 | 19:05 | 5:28 | 19:11 | 6:06 | 19:04 |
| | 22 | १४ | बुध | 18:48 | स्वा. | 7:47 | वरी | 12:37 | ग | 6:14 | वृ.26:56 | भ. 18:48 से, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ, श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती | 5:31 | 19:23 | 5:31 | 19:05 | 5:28 | 19:11 | 6:06 | 19:05 |
| | 23 | १५ | गुरु | 19:23 | विशा | 9:15 | परि | 12:12 | वि | 7:06 | वृश्चिक | भ. 7:06 तक, **वैशाख पूर्णिमा, श्रीबुद्ध–जयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त(E)** | 5:31 | 19:24 | 5:30 | 19:06 | 5:27 | 19:12 | 6:06 | 19:05 |
| ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष | 24 | १ | शुक्र | 19:25 | अनु. | 10:10 | शिव | 11:21 | बा | 7:24 | वृश्चिक | ज्येष्ठ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, सूर्य रोहिणी में 27:16, गण्डमूल 10:10 से, | 5:30 | 19:25 | 5:30 | 19:07 | 5:27 | 19:12 | 6:05 | 19:06 |
| | 25 | २ | शनि | 18:59 | ज्ये. | 10:36 | सिद्ध | 10:06 | तै | 7:12 | ध.10:36 | **श्रीनारद–जयन्ती**, वीणादान, गण्डमूल विचार | 5:30 | 19:25 | 5:30 | 19:07 | 5:27 | 19:13 | 6:05 | 19:06 |
| | 26 | ३ | रवि | 18:07 | मूल | 10:36 | साध्य | 8:31 | व | 6:33 | धनु | भ. 6:33 से 18:07 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12), गण्डमूल **(F)** | 5:29 | 19:26 | 5:29 | 19:08 | 5:26 | 19:14 | 6:05 | 19:06 |
| | 27 | ४ | चन्द्र | 16:54 | पू.षा. | 10:14 | शुभ<br>शुक्ल | 6 37<br>28 28 | ब | | म.16:05 | शुक्र रोहिणी में 11:56 | 5:29 | 19:27 | 5:29 | 19:08 | 5:26 | 19:14 | 6:05 | 19:07 |
| | 28 | ५ | मंग | 15:24 | उ.षा. | 9:34 | ब्रह्म | 26:06 | तै | 15:24 | मकर | | 5:29 | 19:27 | 5:29 | 19:09 | 5:25 | 19:15 | 6:05 | 19:07 |
| | 29 | ६ | बुध | 13:40 | श्रव. | 8:39 | ऐन्द्र | 23:34 | व | 13:40 | कुं.20:06 | भ. 13:40 से 24:42 तक, **पंचक प्रारम्भ 20:06**, बुध कृति. 16:14 **(G)** | 5:28 | 19:28 | 5:28 | 19:09 | 5:25 | 19:15 | 6:05 | 19:08 |
| | 30 | ७ | गुरु | 11:44 | धनि. | 7:31 | वैधृ. | 20:53 | ब | 11:44 | कुम्भ | | 5:28 | 19:28 | 5:28 | 19:10 | 5:25 | 19:16 | 6:05 | 19:08 |
| | 31 | ८ | शुक्र | 9:39 | शत<br>पू.भा. | 6 14<br>28 48 | विष्क | 18:04 | कौ | 9:39 | मी.23:10 | **बुध वृष में 12:12** **इस मास शुक्र अस्त रहेगा।** | 5:28 | 19:29 | 5:28 | 19:10 | 5:25 | 19:16 | 6:04 | 19:08 |

**गुरु अस्त**
**6 मई**

**(A)** 19:06, राहु रेव. 1–केतु हस्त 3 में 10:14, **(B)** जिल्काद (मु.) मास प्रारम्भ, केदार–बद्रीनाथ यात्रा शुरु **(C)** मु. 15, पुण्यकाल सं. दुपैहर 11:30 बाद, मंगल रेवती में 24:50, गण्डमूल 13:05 से **(D)** श्रीबगुलामुखी जयन्ती (अर्द्धरात्रि–व्यापिनी), गण्डमूल 18:14 तक **(E)** श्रीबुद्ध–पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृष्ठ 21), श्रीकूर्म जयन्ती (देखें पृष्ठ 21) **(F)** 10:36 तक, **(G)** गुरु कृति. (4) में 20:53

# वि. संवत् 2081, जून मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिन्टों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2024 ई.

| मास पक्ष | जून | तिथि | वार | समाप्ति काल घं. मिं. | नक्षत्र | समाप्ति काल घं. मिं. | योग | समाप्ति काल घं. मिं. | करण | समाप्ति काल घं. मिं. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.]<br>सूर्य उत्तर-दक्षिणायन<br>ग्रीष्म-वर्षा ऋतु | जम्मू |  | दिल्ली |  | चण्डीगढ़ |  | मुम्बई |  |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
| ज्ये. कृष्ण पक्ष | 1 | ९ | शनि | 7:25 | उ.भा. | 27:16 | प्रीति | 15:10 | ग | 7:25 | मीन | भ. 18:15 से 29:05 तक, जून मास प्रारंभ, मंगल अश्वि.1 मेष में 15:37(A) | 5:27 | 19:30 | 5:28 | 19:11 | 5:24 | 19:17 | 6:04 | 19:09 |
|  | ० | १० | शनि | 29:05 | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | दशमी तिथि का क्षय ०० शुक्र इस मास अस्त रहेगा। | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
|  | 2 | ११ | रवि | 26:42 | रेव. | 25:40 | आयु | 12:11 | ब | 15:54 | मे.25:40 | गुरु पूर्व में उदय 24:40, पंचक समाप्त 25:40, अपरा एकादशी व्रत(B) | 5:27 | 19:30 | 5:27 | 19:11 | 5:24 | 19:18 | 6:04 | 19:09 |
|  | 3 | १२ | चन्द्र | 24:19 | अश्वि. | 24:05 | सौभा | 9:11 | कौ | 13:31 | मेष | बुध पूर्व में अस्त 9:02, अपरा एकादशी व्रत (वैष्णव), गण्डमूल 24:05 तक | 5:27 | 19:31 | 5:27 | 19:12 | 5:24 | 19:18 | 6:04 | 19:09 |
|  | 4 | १३ | मंग | 22:02 | भर. | 22:35 | शोभ<br>अति | 6 11<br>27 18 | ग | 11:11 | वृ.28:14 | भ. 22:02 से, भौम प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि व्रत गुरु उदय 2 जून | 5:27 | 19:31 | 5:27 | 19:12 | 5:24 | 19:19 | 6:04 | 19:10 |
|  | 5 | १४ | बुध | 19:56 | कृति. | 21:16 | सुक | 24:35 | वि | 8:59 | वृष | भ. 8:59 तक, बुध रोहि. में 15:21 | 5:26 | 19:32 | 5:27 | 19:13 | 5:24 | 19:19 | 6:04 | 19:10 |
|  | 6 | ३० | गुरु | 18:08 | रोहि. | 20:17 | धृति | 22:09 | च | 7:02 | वृष | ज्येष्ठ अमावस, शनैश्चर-जयन्ती, वटसावित्री व्रत (अमावस-पक्ष) (C) | 5:26 | 19:32 | 5:27 | 19:13 | 5:23 | 19:20 | 6:04 | 19:10 |
| ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष | 7 | १ | शुक्र | 16:46 | मृग | 19:43 | शूल | 20:04 | ब | 16:46 | मि.7:56 | ज्येष्ठ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु.30, श्रीगङ्गा स्नान प्रारम्भ, सूर्य मृग.(D) | 5:26 | 19:33 | 5:27 | 19:14 | 5:23 | 19:20 | 6:04 | 19:11 |
|  | 8 | २ | शनि | 15:56 | आर्द्रा | 19:43 | गण्ड | 18:27 | कौ | 15:56 | मिथुन | रम्भा तृतीया व्रत (पूर्वविद्धा) (देखें पृष्ठ 22), जिल्हिजा (मु.)मास प्रारम्भ, | 5:26 | 19:33 | 5:27 | 19:14 | 5:23 | 19:20 | 6:04 | 19:11 |
|  | 9 | ३ | रवि | 15:45 | पुन. | 20:21 | वृद्धि | 17:21 | ग | 15:45 | क.14:07 | भ. 28:01 से, महाराणा प्रताप जयन्ती, उमा अवतार | 5:26 | 19:34 | 5:27 | 19:14 | 5:23 | 19:21 | 6:04 | 19:11 |
|  | 10 | ४ | चन्द्र | 16:16 | पुष्य | 21:40 | ध्रुव | 16:47 | वि | 16:16 | कर्क | भ. 16:16 तक, गण्डमूल 21:40 से | 5:26 | 19:34 | 5:27 | 19:15 | 5:23 | 19:21 | 6:04 | 19:12 |
|  | 11 | ५ | मंग | 17:28 | आश्ले | 23:39 | व्या. | 16:47 | बा | 17:28 | सिं.23:39 | बुध मृग. में 22:12, सन्त टेऊँराम पुण्यतिथि, गण्डमूल विचार, स.सि.यो.. | 5:26 | 19:34 | 5:27 | 19:15 | 5:23 | 19:22 | 6:05 | 19:12 |
|  | 12 | ६ | बुध | 19:17 | मघा | 26:12 | हर्ष | 17:15 | कौ | 6:23 | सिंह | शुक्र मिथुन में 18:29, अरण्य-षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा, गण्डमूल 26:12 तक | 5:26 | 19:35 | 5:27 | 19:16 | 5:23 | 19:22 | 6:05 | 19:12 |
|  | 13 | ७ | गुरु | 21:34 | पू.फा. | 29:09 | वज्र | 18:05 | ग | 8:26 | सिंह | भ. 21–34 से, गुरु रोहि. (1) में 5:37 | 5:26 | 19:35 | 5:27 | 19:16 | 5:23 | 19:22 | 6:05 | 19:13 |
|  | 14 | ८ | शुक्र | 24:05 | उ.फा. | - - | सिद्धि | 19:07 | वि | 10:50 | कं.11:55 | भ. 10:50 तक, सूर्य मिथुन में 24:27, आषाढ़ संक्रान्ति, मु. 45, (E) | 5:26 | 19:36 | 5:27 | 19:16 | 5:23 | 19:23 | 6:05 | 19:13 |
|  | 15 | ९ | शनि | 26:33 | उ.फा. | 8:14 | व्य. | 20:10 | बा | 13:19 | कन्या |  | 5:26 | 19:36 | 5:27 | 19:17 | 5:23 | 19:23 | 6:05 | 19:13 |
|  | 16 | १० | रवि | 28:44 | हस्त | 11:13 | वरी | 21:02 | तै | 15:39 | तु.24:35 | श्रीगङ्गा-दशहरा पर्व (हरिद्वार आदि), स.सि.यो. 11:13 तक, | 5:26 | 19:36 | 5:27 | 19:17 | 5:23 | 19:23 | 6:05 | 19:14 |
|  | 17 | ११ | चन्द्र | - - | चित्रा | 13:51 | परि | 21:34 | व | 17:35 | तुला | भ. 17:35 से, बुध आर्द्रा में 24:08, शुक्र आर्द्रा में 28:43 | 5:26 | 19:37 | 5:27 | 19:17 | 5:24 | 19:24 | 6:05 | 19:14 |
|  | 18 | ११ | मंग | 6:25 | स्वा. | 15:56 | शिव | 21:39 | वि | 6:25 | तुला | भद्रा 6:25 तक, निर्जला एकादशी व्रत (देखें पृष्ठ 22) | 5:26 | 19:37 | 5:27 | 19:18 | 5:24 | 19:24 | 6:06 | 19:14 |
|  | 19 | १२ | बुध | 7:29 | विशा | 17:23 | सिद्ध | 21:12 | बा | 7:29 | वृ.11:05 | प्रदोष व्रत, मंगल भर. में 14:58, वटसावित्री व्रतारम्भ, चम्पक द्वादशी | 5:27 | 19:37 | 5:27 | 19:18 | 5:24 | 19:24 | 6:06 | 19:14 |
|  | 20 | १३ | गुरु | 7:51 | अनु | 18:10 | साध्य | 20:12 | तै | 7:51 | वृश्चिक | सूर्य सायन कर्क में 26:21, सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु प्रा., (F) | 5:27 | 19:37 | 5:27 | 19:18 | 5:24 | 19:25 | 6:06 | 19:15 |
|  | 21 | १४ | शुक्र | 7:32 | ज्ये. | 18:19 | शुभ | 18:42 | व | 7:32 | ध.18:19 | भ. 7:32 से 19:05 तक, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष),श्रीसत्यनारायण(G) | 5:27 | 19:38 | 5:28 | 19:18 | 5:24 | 19:25 | 6:06 | 19:15 |
|  | 22 | १५ | शनि | 6:38 | मूल | 17:54 | शुक्ल | 16:45 | ब | 6:38 | धनु | ज्येष्ठ पूर्णिमा (स्नानदानादि), सन्त कबीर जयन्ती (626वीं), शक (H) | 5:27 | 19:38 | 5:28 | 19:18 | 5:25 | 19:25 | 6:06 | 19:15 |
| आषाढ़ कृष्ण पक्ष | ० | १ | शनि | 29:14 | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा का क्षय ०० ०० | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
|  | 23 | २ | रवि | 27:27 | पू.षा. | 17:04 | ब्रह्म | 14:26 | तै | 16:21 | म.22:48 | त्रयोदश दिनात्मक पक्ष (देखें पृष्ठ 103) | 5:27 | 19:38 | 5:28 | 19:19 | 5:25 | 19:25 | 6:07 | 19:15 |
|  | 24 | ३ | चन्द्र | 25:24 | उ.षा. | 15:54 | ऐन्द्र | 11:51 | व | 14:26 | मकर | भ. 14:26 से 25:24 तक, बुध पुन. में 8:12 | 5:28 | 19:38 | 5:29 | 19:19 | 5:25 | 19:25 | 6:07 | 19:15 |
|  | 25 | ४ | मंग | 23:12 | श्रव. | 14:33 | वैधृ | 9:06 | ब | 12:18 | कुं.25:49 | पंचक प्रारम्भ 25:49, अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12)(I) | 5:28 | 19:38 | 5:29 | 19:19 | 5:25 | 19:25 | 6:07 | 19:16 |
|  | 26 | ५ | बुध | 20:56 | धनि. | 13:05 | विष्क<br>प्रीति | 6 14<br>27 20 | कौ | 10:04 | कुम्भ |  | 5:28 | 19:38 | 5:29 | 19:19 | 5:26 | 19:25 | 6:07 | 19:16 |
|  | 27 | ६ | गुरु | 18:40 | शत. | 11:37 | आयु | 24:28 | ग | 7:48 | मी.28:32 | भ. 18:40 से 29:34 तक, गुरु रोहि. (2) में 26:01, | 5:29 | 19:38 | 5:30 | 19:19 | 5:26 | 19:26 | 6:08 | 19:16 |
|  | 28 | ७ | शुक्र | 16:28 | पू.भा. | 10:11 | सौभा | 21:39 | वि | 5:34 | मीन | शुक्र पुनर्वसु में 25:12, | 5:29 | 19:38 | 5:30 | 19:19 | 5:26 | 19:26 | 6:08 | 19:16 |
|  | 29 | ८ | शनि | 14:21 | उ.भा. | 8:49 | शोभ | 18:54 | कौ | 14:21 | मीन | बुध कर्क में 12:26, शनि वक्री 24:29, गण्डमूल 8:49 से | 5:29 | 19:38 | 5:30 | 19:19 | 5:27 | 19:26 | 6:08 | 19:16 |
|  | 30 | ९ | रवि | 12:20 | रेव. | 7:34 | अति | 16:14 | ग | 12:20 | मे.7:34 | भ. 23:24 से, पंचक समाप्त 7:34, गण्डमूल विचार | 5:30 | 19:38 | 5:31 | 19:19 | 5:27 | 19:26 | 6:09 | 19:16 |

**(A)** गण्डमूल 27:16 से, यूरेनस वृष में 15:46 **(B)** (स्मार्त्त) (देखें पृष्ठ 22), मेला भद्रकाली (कपूरथला, पंजाब), गण्डमूल **(C)** भावुका अमावस **(D)** में 25:05, शुक्र मृग. में 8:17, भावुका करिदिन, करवीर व्रत **(E)** पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रात: 6:52 तक, बुध मिथुन में 23:05, श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर-भवानी (काश्मीर) **(F)** गण्डमूल 18:10 से, **(G)** व्रत, सूर्य आर्द्रा में 24:06, ज्येष्ठी योग, गण्डमूल **(H)** आषाढ़ प्रारम्भ, गण्डमूल 17:54 तक **(I)** बुध पश्चिम में उदय 29:05

# वि. संवत् 2081, जुलाई मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2024 ई.

| मास पक्ष | जुलाई | तिथि | वार | समाप्ति काल घं. मिं. | नक्षत्र | समाप्ति काल घं. मिं. | योग | समाप्ति काल घं. मिं. | करण | समाप्ति काल घं. मिं. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश | जम्मू | | दिल्ली | | चण्डीगढ़ | | मुम्बई | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | सूर्य-दक्षिणायन<br>घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.]<br>वर्षा-ऋतु | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
| आषाढ़ कृष्ण | 1 | १० | चन्द्र | 10:27 | अश्वि<br>भर. | 6 26<br>29 27 | सुक. | 13:42 | वि | 10:27 | मेष | भ. 10:27 तक, जुलाई मास प्रारम्भ, बुध पुष्य में 8:35, गण्डमूल 6:26 तक | 5:30 | 19:38 | 5:31 | 19:19 | 5:27 | 19:26 | 6:09 | 19:16 |
| | 2 | ११ | मंग | 8:43 | कृति | 28:40 | धृति | 11:17 | बा | 8:43 | वृ.11:14 | योगिनी एकादशी व्रत, स. सि. यो., नैपच्यून वक्री 16:10<br>शुक्र उदय 7 जुलाई | 5:31 | 19:38 | 5:31 | 19:19 | 5:28 | 19:26 | 6:09 | 19:16 |
| | 3 | १२ | बुध | 7:11 | रोहि. | 28:08 | शूल | 9:02 | तै | 7:11 | वृष | प्रदोष व्रत, स. सि. यो. | 5:31 | 19:38 | 5:32 | 19:19 | 5:28 | 19:26 | 6:09 | 19:16 |
| | 4 | १३ | गुरु | 5:55 | मृग. | 27:55 | गंड<br>वृद्धि | 7 00<br>29 14 | व | 5:55 | मि.15:58 | भ. 5:55 से 17:27 तक, मासशिवरात्रि व्रत | 5:32 | 19:38 | 5:32 | 19:19 | 5:29 | 19:25 | 6:10 | 19:16 |
| | ० | १४ | गुरु | 28:58 | ०० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ०० | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| | 5 | ३० | शुक्र | 28:27 | आर्द्रा | 28:07 | ध्रुव | 27:48 | च | 16:43 | मिथुन | आषाढ़ अमावस, सूर्य पुनर्वसु में 23:40 | 5:32 | 19:38 | 5:33 | 19:19 | 5:29 | 19:25 | 6:10 | 19:16 |
| आषाढ़ शुक्ल पक्ष | 6 | १ | शनि | 28:27 | पुन. | 28:48 | व्या. | 26:47 | किं | 16:27 | क.22:35 | आषाढ़ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, शुक्र कर्क में 28:31, गुप्त नवरात्र प्रारम्भ | 5:32 | 19:38 | 5:33 | 19:19 | 5:30 | 19:25 | 6:10 | 19:16 |
| | 7 | २ | रवि | 29:00 | पुष्य | – – | हर्ष | 26:13 | बा | 16:44 | कर्क | चन्द्रदर्शन, मु. 30, रथयात्रा–उत्सव (श्रीजगन्नाथपुरी), मंगल कृति. में (A) | 5:33 | 19:38 | 5:33 | 19:19 | 5:30 | 19:25 | 6:11 | 19:16 |
| | 8 | ३ | चन्द्र | – – | पुष्य | 6:03 | वज्र | 26:06 | तै | 17:35 | कर्क | राहु उ.भा. 4, केतु हस्त 2 में 7:36, मुहर्रम (मुस्लि.) 1446 हिजरी शुरु (B) | 5:33 | 19:37 | 5:34 | 19:19 | 5:31 | 19:25 | 6:11 | 19:16 |
| | 9 | ३ | मंग | 6:09 | आश्ले. | 7:53 | सिद्धि | 26:26 | ग | 6:09 | सिं.7:53 | भ. 19:01 से, बुध आश्ले. में 12:26, शुक्र पुष्य में 21:37, गण्डमूल विचार | 5:34 | 19:37 | 5:34 | 19:18 | 5:31 | 19:25 | 6:11 | 19:16 |
| | 10 | ४ | बुध | 7:53 | मघा | 10:15 | व्य. | 27:10 | वि | 7:53 | सिंह | भ. 7:53 तक, गण्डमूल 10:15 तक, शुक्र बाल्यत्व समाप्त 7:02 | 5:35 | 19:37 | 5:35 | 19:18 | 5:32 | 19:24 | 6:12 | 19:16 |
| | 11 | ५ | गुरु | 10:04 | पू.फा. | 13:04 | वरी | 28:09 | बा | 10:04 | कं.19:50 | स्कन्द (कुमार) षष्ठी (पूर्वविद्धा) (देखें पृष्ठ 22), सन्त टेऊँराम जयन्ती | 5:35 | 19:37 | 5:35 | 19:18 | 5:32 | 19:24 | 6:12 | 19:16 |
| | 12 | ६ | शुक्र | 12:33 | उ.फा. | 16:09 | परि | 29:15 | तै | 12:33 | कन्या | मंगल वृष में 18:58, विवस्वत सप्तमी (पूर्वविद्धा) (देखें पृष्ठ 22) | 5:36 | 19:36 | 5:36 | 19:18 | 5:33 | 19:24 | 6:13 | 19:16 |
| | 13 | ७ | शनि | 15:06 | हस्त | 19:15 | शिव | – – | व | 15:06 | कन्या | भ. 15:06 से 28:17 तक, गुरु रोहि. (3) में 19:23 | 5:36 | 19:36 | 5:36 | 19:17 | 5:33 | 19:24 | 6:13 | 19:16 |
| | 14 | ८ | रवि | 17:27 | चित्रा | 22:07 | शिव | 6:15 | ब | 17:27 | तु. 8:43 | | 5:37 | 19:36 | 5:37 | 19:17 | 5:34 | 19:23 | 6:13 | 19:16 |
| | 15 | ९ | चन्द्र | 19:20 | स्वा. | 24:30 | सिद्ध | 7:00 | बा | 6:24 | तुला | भढली नवमी, गुप्त नवरात्र समाप्त, मेला शरीक भवानी (काश्मीर) | 5:37 | 19:35 | 5:37 | 19:17 | 5:34 | 19:23 | 6:14 | 19:15 |
| | 16 | १० | मंग | 20:34 | विशा. | 26:14 | साध्य | 7:18 | तै | 7:57 | वृ.19:52 | सूर्य कर्क में 11:19, श्रावण संक्रान्ति, 45 मुहू., पुण्यकाल सं. सूर्योदय से(C) | 5:38 | 19:35 | 5:38 | 19:17 | 5:35 | 19:22 | 6:14 | 19:15 |
| | 17 | ११ | बुध | 21:03 | अनु. | 27:13 | शुभ | 7:04 | व | 8:49 | वृश्चिक | भ. 8:49 से 21:03 तक, हरिशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य–व्रत–(D) | 5:39 | 19:34 | 5:38 | 19:16 | 5:35 | 19:22 | 6:14 | 19:15 |
| | 18 | १२ | गुरु | 20:45 | ज्ये. | 27:25 | शुक्ल<br>ब्रह्म | 6 13<br>28 44 | ब | 8:54 | ध.27:25 | गण्डमूल विचार | 5:39 | 19:34 | 5:39 | 19:16 | 5:36 | 19:22 | 6:15 | 19:15 |
| | 19 | १३ | शुक्र | 19:42 | मूल | 26:55 | ऐन्द्र | 26:41 | कौ | 8:14 | धनु | प्रदोष व्रत, सूर्य पुष्य में 23:10, बुध मघा 1 सिंह में 20:46, गण्डमूल 26:55 तक | 5:40 | 19:33 | 5:39 | 19:15 | 5:37 | 19:21 | 6:15 | 19:15 |
| | 20 | १४ | शनि | 18:00 | पू.षा. | 25:49 | वैधृ | 24:08 | ग | 6:51 | धनु | भ. 18:00 से 28:54 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृष्ठ 22), (E) | 5:41 | 19:33 | 5:40 | 19:15 | 5:37 | 19:21 | 6:15 | 19:14 |
| | 21 | १५ | रवि | 15:47 | उ.षा. | 24:14 | विष्क | 21:11 | ब | 15:47 | म. 7:27 | आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, स.सि.यो. | 5:41 | 19:32 | 5:41 | 19:14 | 5:38 | 19:20 | 6:16 | 19:14 |
| श्रावण कृष्ण पक्ष | 22 | १ | चन्द्र | 13:12 | श्रव. | 22:21 | प्रीति | 17:58 | कौ | 13:12 | मकर | श्रावण कृष्णपक्ष प्रारम्भ, श्रावण सोमवार व्रत प्रारम्भ, सूर्य सायन सिंह में (F) | 5:42 | 19:32 | 5:41 | 19:14 | 5:38 | 19:20 | 6:16 | 19:14 |
| | 23 | २ | मंग | 10:24 | धनि. | 20:18 | आयु | 14:36 | ग | 10:24 | कुं. 9:21 | भ. 20:58 से, पंचक प्रारम्भ 9:21, शक श्रावण प्रारम्भ, मङ्गलागौरी व्रत प्रा. | 5:42 | 19:31 | 5:42 | 19:13 | 5:39 | 19:19 | 6:16 | 19:14 |
| | 24 | ३ | बुध | 7:31 | शत. | 18:15 | सौभा | 11:10 | वि | 7:31 | कुम्भ | भ. 7:31 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12) | 5:43 | 19:30 | 5:42 | 19:13 | 5:40 | 19:19 | 6:17 | 19:13 |
| | ० | ४ | बुध | 28:40 | ०० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | चतुर्थी तिथि का क्षय ००० ०० | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| | 25 | ५ | गुरु | 25:59 | पू.भा. | 16:17 | शोभ<br>अति | 7 48<br>28 34 | कौ | 15:20 | मी.10:45 | नागपंचमी (राजस्थान व बंगाल) | 5:44 | 19:30 | 5:43 | 19:12 | 5:40 | 19:18 | 6:17 | 19:13 |
| | 26 | ६ | शुक्र | 23:31 | उ.भा. | 14:30 | सुक | 25:32 | ग | 12:45 | मीन | भ. 23:31 से, मंगल रोहिणी में 28:38, गण्डमूल 14:30 से | 5:44 | 19:29 | 5:43 | 19:12 | 5:41 | 19:17 | 6:18 | 19:13 |
| | 27 | ७ | शनि | 21:20 | रेव. | 13:00 | धृति | 22:44 | वि | 10:26 | मे.13:00 | भ. 10:26 तक, पंचक समाप्त 13:00, शीतला सप्तमी, गण्डमूल विचार | 5:45 | 19:28 | 5:44 | 19:11 | 5:41 | 19:17 | 6:18 | 19:12 |
| | 28 | ८ | रवि | 19:28 | अश्वि | 11:48 | शूल | 20:11 | बा | 8:24 | मेष | गण्डमूल 11:48 तक, स.सि.यो. | 5:46 | 19:28 | 5:44 | 19:11 | 5:42 | 19:16 | 6:18 | 19:12 |
| | 29 | ९ | चन्द्र | 17:56 | भर. | 10:55 | गण्ड | 17:55 | तै | 6:42 | वृ.16:45 | भ. 29:21 से, | 5:46 | 19:27 | 5:45 | 19:10 | 5:43 | 19:15 | 6:19 | 19:11 |
| | 30 | १० | मंग | 16:45 | कृति. | 10:23 | वृद्धि | 15:56 | वि | 16:45 | वृष | भ. 16:45 तक, गुरु रोहि. 4 में 26:36, स.सि.यो. | 5:47 | 19:26 | 5:46 | 19:09 | 5:43 | 19:15 | 6:19 | 19:11 |
| | 31 | ११ | बुध | 15:56 | रोहि. | 10:13 | ध्रुव | 14:14 | बा | 15:56 | मि.22:16 | कामिका एकादशी व्रत, शुक्र मघा 1 सिंह में 14:33, स. सि. यो. | 5:48 | 19:25 | 5:46 | 19:09 | 5:44 | 19:14 | 6:19 | 19:10 |

(A) 25:57, शुक्र पश्चिम में उदय 7:02, रविपुष्य योग (B) गण्डमूल 6:03 से (C) निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ (D) नियमादि प्रारम्भ, श्रीविष्णु–शयनोत्सव (E) वायु परीक्षा (सूर्यास्त समय), शुक्र आश्लेषा में 18:03, कोकिला व्रत, शिवशयनोत्सव, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर) (F) 13:14, अशून्यशयन व्रत, रोटक व्रतारम्भ, स.सि.यो.

# वि. संवत् 2081, अगस्त मास का तिथ्यादि पचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2024 ई.

| मास पक्ष | अगस्त | तिथि | वार | समाप्ति काल घं. मिं. | नक्षत्र | समाप्ति काल घं. मिं. | योग | समाप्ति काल घं. मिं. | करण | समाप्ति काल घं. मिं. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [ भा. स्टैं. टा. ]<br>सूर्य-दक्षिणायन<br>वर्षा-शरद्-ऋतु | जम्मू | | दिल्ली | | चण्डीगढ़ | | मुम्बई | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
| श्रा. कृष्ण | 1 | १२ | गुरु | 15:30 | मृग. | 10:24 | व्या | 12:50 | तै | 15:30 | मिथुन | अगस्त मास प्रारम्भ, प्रदोष व्रत, लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव | 5:48 | 19:25 | 5:47 | 19:08 | 5:44 | 19:13 | 6:20 | 19:10 |
| | 2 | १३ | शुक्र | 15:27 | आर्द्रा | 10:59 | हर्ष | 11:45 | व | 15:27 | क.29:42 | भ. 15:27 से 27:39 तक, सूर्य आश्ले. में 22:06, श्रावण शिवरात्रि व्रत(देखें पृ. 185) | 5:49 | 19:24 | 5:47 | 19:07 | 5:45 | 19:12 | 6:20 | 19:10 |
| | 3 | १४ | शनि | 15:51 | पुन. | 11:59 | वज्र | 11:01 | श | 15:51 | कर्क | | 5:50 | 19:23 | 5:48 | 19:07 | 5:46 | 19:12 | 6:20 | 19:09 |
| | 4 | ३० | रवि | 16:43 | पुष्य | 13:26 | सिद्धि | 10:38 | ना | 16:43 | कर्क | श्रावण ( हरियाली ) अमावस, गण्डमूल 13:26 से, रविपुष्य योग 13:26 तक | 5:51 | 19:22 | 5:48 | 19:06 | 5:46 | 19:11 | 6:21 | 19:09 |
| श्रावण शुक्ल पक्ष | 5 | १ | चन्द्र | 18:04 | आश्ले | 15:22 | व्य. | 10:38 | ब | 18:04 | सिं.15:22 | श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ, मेला छिन्नमस्तिका ( चिन्तपूर्णी ) प्रारम्भ (A) | 5:51 | 19:21 | 5:49 | 19:05 | 5:47 | 19:10 | 6:21 | 19:08 |
| | 6 | २ | मंग | 19:53 | मघा | 17:44 | वरी | 11:00 | बा | 6:59 | सिंह | चन्द्रदर्शन, मु. 30, गण्डमूल 17:44 तक | 5:52 | 19:20 | 5:50 | 19:04 | 5:48 | 19:09 | 6:21 | 19:08 |
| | 7 | ३ | बुध | 22:06 | पू.फा. | 20:31 | परि | 11:41 | तै | 9:00 | कं.27:15 | मधुस्रवा–हरियाली–सिंघारा तीज, स्वर्णगौरी व्रत, सफर (मुस्लि.) मास प्रा. | 5:53 | 19:19 | 5:50 | 19:03 | 5:48 | 19:08 | 6:21 | 19:07 |
| | 8 | ४ | गुरु | 24:37 | उ.फा. | 23:34 | शिव | 12:39 | व | 11:22 | कन्या | भ. 11:22 से 24:37 तक, वरद् चतुर्थी, दूर्वा गणपति व्रत | 5:53 | 19:18 | 5:51 | 19:03 | 5:49 | 19:07 | 6:22 | 19:06 |
| | 9 | ५ | शुक्र | 27:15 | हस्त | 26:45 | सिद्ध | 13:45 | ब | 13:56 | कन्या | नाग–पञ्चमी, | 5:54 | 19:17 | 5:51 | 19:02 | 5:49 | 19:06 | 6:22 | 19:06 |
| | 10 | ६ | शनि | 29:46 | चित्रा | 29:49 | साध्य | 14:52 | कौ | 16:31 | तु.16:18 | श्रीकल्कि–जयन्ती. | 5:55 | 19:16 | 5:52 | 19:01 | 5:50 | 19:05 | 6:22 | 19:05 |
| | 11 | ७ | रवि | – – | स्वा. | – – | शुभ | 15:49 | ग | 18:51 | तुला | शुक्र पू.फा. में 11:07, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, शीतला सप्तमी | 5:55 | 19:15 | 5:52 | 19:00 | 5:51 | 19:05 | 6:23 | 19:05 |
| | 12 | ७ | चन्द्र | 7:56 | स्वा. | 8:33 | शुक्ल | 16:26 | व | 7:56 | वृ.28:15 | भ. 7:56 से 20:44, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 6:12 | 5:56 | 19:14 | 5:53 | 18:59 | 5:51 | 19:04 | 6:23 | 19:04 |
| | 13 | ८ | मंग | 9:32 | विशा | 10:44 | ब्रह्म | 16:33 | ब | 9:32 | वृश्चिक | श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी–चामुण्डादेवी ( हि.प्र. ) समाप्त, | 5:57 | 19:13 | 5:53 | 18:58 | 5:52 | 19:03 | 6:23 | 19:03 |
| | 14 | ९ | बुध | 10:24 | अनु. | 12:13 | ऐन्द्र | 16:06 | कौ | 10:24 | वृश्चिक | गण्डमूल 12:13 से, स.सि.यो. 12:13 तक | 5:57 | 19:12 | 5:54 | 18:57 | 5:53 | 19:02 | 6:24 | 19:03 |
| | 15 | १० | गुरु | 10:27 | ज्ये. | 12:53 | वैधृ | 14:58 | ग | 10:27 | ध.12:53 | भ. 22:04 से, भारत स्वतन्त्रता दिवस ( 78वाँ ),मंगल मृग. में 28:35, गं.मू. | 5:58 | 19:11 | 5:55 | 18:56 | 5:53 | 19:01 | 6:24 | 19:02 |
| | 16 | ११ | शुक्र | 9:40 | मूल | 12:44 | विष्क | 13:11 | वि | 9:40 | धनु | भ. 9:40 तक, पवित्रा एकादशी व्रत, सूर्य मघा 1 सिंह में 19:44 (B) | 5:59 | 19:10 | 5:55 | 18:55 | 5:54 | 19:00 | 6:24 | 19:01 |
| | 17 | १२ | शनि | 8:06 | पू.षा. | 11:49 | प्रीति | 10:47 | बा | 8:06 | म.17:29 | शनि प्रदोष व्रत, | 5:59 | 19:09 | 5:56 | 18:54 | 5:54 | 18:59 | 6:24 | 19:01 |
| | ० | १३ | शनि | 29:52 | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | त्रयोदशी तिथि का क्षय ०० ०० | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| | 18 | १४ | रवि | 27:05 | उ.षा. | 10:15 | आयु<br>सौभा | 7 51<br>28 28 | ग | 16:29 | मकर | भ. 27:05 से, वक्री शनि पू.भा. 1 में 24:29 | 6:00 | 19:08 | 5:56 | 18:53 | 5:55 | 18:58 | 6:25 | 19:00 |
| | 19 | १५ | चन्द्र | 23:56 | श्रव.<br>धनि | 8 10<br>29 45 | शोभ | 24:47 | वि | 13:31 | कुं.19:00 | भ. 13:31 तक, पंचक प्रारम्भ 19:00, श्रावण पूर्णिमा, रक्षाबन्धन (C) | 6:01 | 19:07 | 5:57 | 18:52 | 5:56 | 18:56 | 6:25 | 18:59 |
| भाद्रपद कृष्ण पक्ष | 20 | १ | मंग | 20:33 | शत. | 27:10 | अति | 20:55 | बा | 10:15 | कुम्भ | भाद्रपद कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गायत्री जपम्, गुरु मृग. 1 में 16:10 | 6:01 | 19:06 | 5:57 | 18:51 | 5:56 | 18:55 | 6:25 | 18:59 |
| | 21 | २ | बुध | 17:07 | पू.भा. | 24:34 | सुक | 17:01 | तै | 6:50 | मी.19:12 | भ. 27:27 से, कज्जली तृतीया (चन्द्रोदय व्यापिनी), | 6:02 | 19:04 | 5:58 | 18:50 | 5:57 | 18:54 | 6:25 | 18:58 |
| | 22 | ३ | गुरु | 13:47 | उ.भा. | 22:06 | धृति | 13:10 | वि | 13:47 | मीन | भ. 13:47 तक, श्रीगणेश ( बहुला ) चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12),वक्री (D) | 6:03 | 19:03 | 5:58 | 18:49 | 5:57 | 18:53 | 6:26 | 18:57 |
| | 23 | ४ | शुक्र | 10:39 | रेव. | 19:54 | शूल | 9:31 | बा | 10:39 | मे.19:54 | पंचक समाप्त 19:54, शक भाद्रपद प्रारम्भ, गण्डमूल विचार | 6:03 | 19:02 | 5:59 | 18:48 | 5:58 | 18:52 | 6:26 | 18:56 |
| | 24 | ५ | शनि | 7:52 | अश्वि | 18:06 | गंड<br>वृद्धि | 6 8<br>27 7 | तै | 7:52 | मेष | भ. 29:31 से, चन्दन षष्ठी व्रत, चन्द्रोदय 21:56 (जालन्धर), शुक्र कन्या में (E) | 6:04 | 19:01 | 5:59 | 18:47 | 5:59 | 18:51 | 6:26 | 18:55 |
| | ० | ६ | शनि | 29:31 | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | षष्ठी तिथि का क्षय ०० ०० | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| | 25 | ७ | रवि | 27:40 | भर. | 16:45 | ध्रुव | 24:29 | वि | 16:36 | वृ.22:30 | भ. 16:36 तक, शीतला सप्तमी | 6:05 | 19:00 | 6:00 | 18:46 | 5:59 | 18:50 | 6:26 | 18:55 |
| | 26 | ८ | चन्द्र | 26:20 | कृति. | 15:55 | व्या. | 22:17 | बा | 15:00 | वृष | श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रत, श्रीकृष्ण–जयंती योग (रोहिणीयोगे) (F) | 6:05 | 18:58 | 6:00 | 18:45 | 6:00 | 18:49 | 6:26 | 18:54 |
| | 27 | ९ | मंग | 25:34 | रोहि. | 15:38 | हर्ष | 20:31 | तै | 13:57 | मि.27:42 | श्रीगुग्गा–नवमी, गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव | 6:06 | 18:57 | 6:01 | 18:44 | 6:00 | 18:47 | 6:27 | 18:53 |
| | 28 | १० | बुध | 25:20 | मृग. | 15:53 | वज्र | 19:12 | व | 13:27 | मिथुन | भ. 13:27 से 25:20 तक, बुध मार्गी 26:42, स.सि.यो. 15:53 तक | 6:07 | 18:56 | 6:01 | 18:43 | 6:01 | 18:46 | 6:27 | 18:52 |
| | 29 | ११ | गुरु | 25:38 | आर्द्रा | 16:40 | सिद्धि | 18:17 | ब | 13:29 | मिथुन | अजा एकादशी व्रत | 6:07 | 18:55 | 6:02 | 18:42 | 6:01 | 18:45 | 6:27 | 18:52 |
| | 30 | १२ | शुक्र | 26:26 | पुन. | 17:56 | व्य. | 17:47 | कौ | 14:02 | क.11:34 | वत्स द्वादशी ( पूजा ), सूर्य पू.फा. में 15:46 | 6:08 | 18:53 | 6:02 | 18:41 | 6:02 | 18:44 | 6:27 | 18:51 |
| | 31 | १३ | शनि | 27:41 | पुष्य | 19:40 | वरी | 17:38 | ग | 15:04 | कर्क | भ. 27:41 से, शनि प्रदोष व्रत, कैलाश यात्रा प्रारम्भ, गण्डमूल 19:40 से | 6:09 | 18:52 | 6:03 | 18:40 | 6:03 | 18:43 | 6:27 | 18:50 |

**(A)** बुध वक्री 10:26 **(B)** भाद्रपद संक्रान्ति, मु. 30, पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद, गण्डमूल 12:44 तक **(C)** (भद्रा बाद, देखें पृष्ठ 23), श्रीसत्यनारायण व्रत, ऋक् उपाकर्म (देखें पृष्ठ 22), यजुर्वेदि–अथर्ववेदि उपाकर्म, श्रीगायत्री–जयन्ती, हयग्रीव जयन्ती, कोकिला व्रत पूर्ण, रोटक–व्रत पूर्ण, ऋषि तर्पण (अपराह्ण–काले), श्रावणी उपाकर्म, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा (काश्मीर), संस्कृत दिवस **(D)** बुध कर्क में 6:38, शुक्र उ.फा. में 7:59, सूर्य सायन कन्या में 20:25, शरद् ऋतु प्रारम्भ, गण्डमूल 22:06 से **(E)** 25:16, हल–षष्ठी, गण्डमूल 18:06 तक **(F)** (देखें पृष्ठ 23), मंगल मिथुन में 15:25, वक्री बुध पूर्व में उदय 18:58, श्रीदूर्वाष्टमी ( देखें पृष्ठ 23 )

# वि. संवत् 2081, सितम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2024 ई.

| मास पक्ष | सितम्बर | तिथि | वार | समाप्ति काल घं. मिं. | नक्षत्र | समाप्ति काल घं. मिं. | योग | समाप्ति काल घं. मिं. | करण | समाप्ति काल घं. मिं. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश सूर्य-दक्षिणायन घण्टा–मिन्टों में [ भा. स्टैं. टा. ] शरद्-ऋतुः | जम्मू सूर्योदय घं. मिं. | जम्मू सूर्यास्त घं. मिं. | दिल्ली सूर्योदय घं. मिं. | दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं. | चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं. | चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं. | मुम्बई सूर्योदय घं. मिं. | मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भा.कृ. | 1 | १४ | रवि | 29:22 | आश्ले | 21:49 | परि | 17:50 | वि | 16:32 | सिं.21:49 | भ. 16:32 तक, सितम्बर मास प्रारम्भ, शुक्र हस्त में 29:12, मासशिवरात्रि**(A)** | 6:09 | 18:51 | 6:03 | 18:38 | 6:03 | 18:42 | 6:28 | 18:49 |
| | 2 | ३० | चन्द्र | - - | मघा | 24:20 | शिव | 18:20 | च | 18:24 | सिंह | **कुशाग्रहणी अमावस, 'ॐ हुँ फट् स्वाहा' इहमंत्रेण कुशोत्पाटनम् (B)** | 6:10 | 18:50 | 6:04 | 18:37 | 6:04 | 18:40 | 6:28 | 18:48 |
| | 3 | ३० | मंग | 7:26 | पू.फा. | 27:11 | सिद्ध | 19:05 | ना | 7:26 | सिंह | **भाद्रपद अमावस**, स्नानदानादि प्रातः 7:26 तक, **भौमवती अमावस** | 6:11 | 18:48 | 6:04 | 18:36 | 6:04 | 18:39 | 6:28 | 18:47 |
| भाद्रपद शुक्ल पक्ष | 4 | १ | बुध | 9:47 | उ.फा. | - - | साध्य | 20:03 | ब | 9:47 | कं. 9:56 | भाद्रपद शुक्लपक्ष प्रारम्भ, **बुध मघा 1 सिंह में 11:22, चन्द्रदर्शन मु. 45, +** | 6:11 | 18:47 | 6:05 | 18:35 | 6:05 | 18:38 | 6:28 | 18:47 |
| | 5 | २ | गुरु | 12:22 | उ.फा. | 6:15 | शुभ | 21:08 | कौ | 12:22 | कन्या | सामवेदि उपाकर्म (देखें पृष्ठ 23), रबि–उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ | 6:12 | 18:46 | 6:05 | 18:34 | 6:05 | 18:37 | 6:28 | 18:46 |
| | 6 | ३ | शुक्र | 15:02 | हस्त | 9:25 | शुक्ल | 22:15 | ग | 15:02 | तु.23:01 | भ. 28:20 से, **हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया, श्रीवराह–जयन्ती (C)** | 6:12 | 18:44 | 6:06 | 18:33 | 6:06 | 18:35 | 6:29 | 18:45 |
| | 7 | ४ | शनि | 17:38 | चित्रा | 12:34 | ब्रह्म | 23:16 | वि | 17:38 | तुला | भ. 17:38 तक, **सिद्धि विनायक व्रत** (देखें पृष्ठ 12) + अगस्त्य–उदय | 6:13 | 18:43 | 6:06 | 18:31 | 6:07 | 18:34 | 6:29 | 18:44 |
| | 8 | ५ | रवि | 19:59 | स्वा. | 15:31 | ऐन्द्र | 24:05 | ब | 6:49 | तुला | **ऋषि-पंचमी व्रत, सम्वत्सरी महापर्व ( जैन )**, राहु उ.भा. 3, केतु हस्त 1 में 29:06 | 6:14 | 18:42 | 6:07 | 18:30 | 6:07 | 18:33 | 6:29 | 18:43 |
| | 9 | ६ | चन्द्र | 21:54 | विशा. | 18:04 | वैधृ | 24:32 | कौ | 8:57 | वृ.11:29 | **सूर्य षष्ठी व्रत** | 6:14 | 18:40 | 6:07 | 18:29 | 6:08 | 18:32 | 6:29 | 18:42 |
| | 10 | ७ | मंग | 23:13 | अनु. | 20:04 | विष्क | 24:31 | ग | 10:34 | वृश्चिक | भ. 23:13 से, **मुक्ताभरण/सन्तान सप्तमी व्रत**, गण्डमूल 20:04 से, | 6:15 | 18:39 | 6:08 | 18:28 | 6:08 | 18:30 | 6:29 | 18:41 |
| | 11 | ८ | बुध | 23:47 | ज्ये. | 21:22 | प्रीति | 23:55 | वि | 11:30 | ध.21:22 | भ. 11:30 तक, **श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ**, दधीची जयन्ती | 6:16 | 18:38 | 6:08 | 18:27 | 6:09 | 18:29 | 6:30 | 18:40 |
| | 12 | ९ | गुरु | 23:33 | मूल | 21:53 | आयु | 22:41 | बा | 11:40 | धनु | **श्रीचन्द-नवमी ( उदासीन-सम्प्रदाय )**, शुक्र चित्रा में 26:52, **श्रीभागवत(D)** | 6:16 | 18:36 | 6:09 | 18:26 | 6:09 | 18:28 | 6:30 | 18:40 |
| | 13 | १० | शुक्र | 22:31 | पू.षा. | 21:36 | सौभा | 20:48 | तै | 11:02 | म.27:24 | सूर्य उ.फा. में 9:35, | 6:17 | 18:35 | 6:09 | 18:24 | 6:10 | 18:27 | 6:30 | 18:39 |
| | 14 | ११ | शनि | 20:42 | उ.षा. | 20:33 | शोभ | 18:17 | व | 9:37 | मकर | भ. 9:37 से 20:42 तक, **पद्मा एकादशी व्रत**, बुध पू.फा. में 6:44, **(E)** | 6:18 | 18:34 | 6:10 | 18:23 | 6:11 | 18:25 | 6:30 | 18:38 |
| | 15 | १२ | रवि | 18:13 | श्रव. | 18:49 | अति | 15:13 | ब | 7:28 | कुं.29:45 | **पंचक प्रारम्भ 29:45, प्रदोष व्रत, श्रीवामन-जयन्ती, श्रवण–द्वादशी(F)** | 6:18 | 18:32 | 6:10 | 18:22 | 6:11 | 18:24 | 6:30 | 18:37 |
| | 16 | १३ | चन्द्र | 15:11 | धनि | 16:33 | सुक | 11:41 | तै | 15:11 | कुम्भ | **सूर्य कन्या में 19:43, आश्विन संक्रान्ति**, मु.15, पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद | 6:19 | 18:31 | 6:11 | 18:21 | 6:12 | 18:23 | 6:30 | 18:36 |
| | 17 | १४ | मंग | 11:45 | शत | 13:53 | धृति<br>शूल | 7 48<br>27 41 | व | 11:45 | मी.29:44 | भ. 11:45 से 21:55 तक, **अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला बाबा सोढल (G)** | 6:19 | 18:30 | 6:11 | 18:20 | 6:12 | 18:21 | 6:31 | 18:35 |
| | 18 | १५ | बुध | 8:05 | पू.भा. | 11:00 | गण्ड | 23:29 | ब | 8:05 | मीन | **भाद्रपद पूर्णिमा** (स्नानदानादि), शुक्र तुला में 13:56, **श्राद्ध ( पितृपक्ष ) (H)** | 6:20 | 18:28 | 6:12 | 18:18 | 6:13 | 18:20 | 6:31 | 18:34 |
| आश्विन कृष्ण पक्ष | ० | १ | बुध | 28:20 | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | **आश्विन कृष्ण प्रतिपदा तिथि का क्षय** ०० ०० | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| | 19 | २ | गुरु | 24:40 | उ.भा.<br>रेव | 8 04<br>29 15 | वृद्धि | 19:19 | तै | 14:30 | मे.29:15 | **पंचक समाप्त 29:15**, द्वितीया तिथि का श्राद्ध, गण्डमूल 8:04 से, | 6:21 | 18:27 | 6:12 | 18:17 | 6:13 | 18:19 | 6:31 | 18:33 |
| | 20 | ३ | शुक्र | 21:16 | अश्वि | 26:43 | ध्रुव | 15:19 | व | 10:58 | मेष | भ. 10:58 से 21:16 तक, तृतीया का श्राद्ध, गण्डमूल 26:43 तक | 6:21 | 18:26 | 6:13 | 18:16 | 6:14 | 18:18 | 6:31 | 18:32 |
| | 21 | ४ | शनि | 18:14 | भर. | 24:36 | व्या. | 11:36 | ब | 7:45 | वृ.30:09 | **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12 तथा 24), बुध उ.फा. 1 में 15:06, **(I)** | 6:22 | 18:24 | 6:13 | 18:15 | 6:14 | 18:16 | 6:31 | 18:32 |
| | 22 | ५ | रवि | 15:44 | कृति. | 23:03 | हर्ष<br>वज्र | 8 17<br>29 27 | तै | 15:44 | वृष | चन्द्र षष्ठी व्रत, सूर्य सायन तुला में 18:14, दक्षिण गोल प्रारम्भ, पंचमी का**(J)** | 6:23 | 18:23 | 6:14 | 18:14 | 6:15 | 18:15 | 6:32 | 18:31 |
| | 23 | ६ | चन्द्र | 13:51 | रोहि. | 22:08 | सिद्धि | 27:10 | व | 13:51 | वृष | भ. 13:51 से 25:15 तक, **षष्ठी एवं सप्तमी का श्राद्ध** (देखें पृष्ठ 24)**(K)** | 6:23 | 18:22 | 6:14 | 18:12 | 6:16 | 18:14 | 6:32 | 18:30 |
| | 24 | ७ | मंग | 12:39 | मृग. | 21:54 | व्य. | 25:27 | ब | 12:39 | मि. 9:56 | **श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न** (चन्द्रोदय-व्यापिनी) (देखें पृष्ठ 12), अष्टमी का श्राद्ध | 6:24 | 18:20 | 6:15 | 18:11 | 6:16 | 18:13 | 6:32 | 18:29 |
| | 25 | ८ | बुध | 12:11 | आर्द्रा | 22:24 | वरी | 24:18 | कौ | 12:11 | मिथुन | सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध, मातृ–नवमी, **जीवित्पुत्रिका व्रत** | 6:25 | 18:19 | 6:15 | 18:10 | 6:17 | 18:11 | 6:32 | 18:28 |
| | 26 | ९ | गुरु | 12:26 | पुन. | 23:34 | परि | 23:41 | ग | 12:26 | क.17:13 | भ. 24:53 से, सूर्य हस्त में 25:10, दशमी का श्राद्ध | 6:25 | 18:18 | 6:16 | 18:09 | 6:17 | 18:10 | 6:32 | 18:27 |
| | 27 | १० | शुक्र | 13:21 | पुष्य | 25:21 | शिव | 23:34 | वि | 13:21 | कर्क | भ. 13:21 तक, **एकादशी का श्राद्ध** (देखें पृष्ठ 24), गण्डमूल 25:21 बाद | 6:26 | 18:16 | 6:16 | 18:08 | 6:18 | 18:09 | 6:32 | 18:26 |
| | 28 | ११ | शनि | 14:50 | आश्ले | 27:38 | सिद्ध | 23:51 | बा | 14:50 | सिं.27:38 | **इन्दिरा एकादशी व्रत**, बुध हस्त में 21:09, गण्डमूल | 6:27 | 18:15 | 6:17 | 18:06 | 6:19 | 18:07 | 6:33 | 18:25 |
| | 29 | १२ | रवि | 16:48 | मघा | 30:19 | साध्य | 24:27 | तै | 16:48 | सिंह | संन्यासीनां श्राद्ध, द्वादशी का श्राद्ध, मंगल पुन.में 23:59, गंडमूल 30:19 तक, मघा श्राद्ध | 6:27 | 18:14 | 6:17 | 18:05 | 6:19 | 18:06 | 6:33 | 18:24 |
| | 30 | १३ | चन्द्र | 19:07 | पू.फा. | - - | शुभ | 25:18 | व | 19:07 | सिंह | भ. 19:07 से, **सोम प्रदोष व्रत** (देखें पृष्ठ25), मासशिवरात्रि व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध | 6:28 | 18:12 | 6:18 | 18:04 | 6:20 | 18:05 | 6:33 | 18:24 |

**(A)** व्रत, गण्डमूल विचार, अघोरा चतुर्दशी, यूरेनस वक्री 20:50 **(B) सोमवती अमावस**, पिठोरी अमावस, **पितृकार्येषु अमावस**, रानी सती मेला (झुंझुनूं-राजस्थान), लोहार्गल यात्रा (स्नान)-2 दिन, गण्डमूल 24:20 तक **(C)** (देखें पृष्ठ 24), मंगल आर्द्रा में 11:49, **कलंक-चतुर्थी** ( चन्द्रदर्शन-निषेध )., चन्द्रास्त 20:20 (जालन्धर) (देखें पृष्ठ 24), पत्थर चौथ **(D) सप्ताह पाठारम्भ**, गण्डमूल 21:53 तक **(E)** विष्णुशृंखल योग 20:33 से **(F) विष्णुशृंखल योग 18:13 तक**, बुध पूर्व में अस्त 18:39 **(G)** (जालन्धर), **श्रीसत्यनारायण व्रत**, कदली व्रत-पूजन, **प्रोष्ठपदी-महालय श्राद्ध प्रारम्भ, पूर्णिमा का श्राद्ध** **(H)** प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध **(I)** भरणी श्राद्ध, चतुर्थी श्राद्ध **(J)** श्राद्ध, गुरु मृग. 2 में 15:58 **(K) बुध कन्या में 10:10, शुक्र स्वा. में 25:12, शक आश्विन प्रारम्भ**

# वि. संवत् 2081, अक्तूबर मास का तिथ्यादि पंचाग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2024 ई.

| मास पक्ष | अक्टू. | तिथि | वार | समाप्ति काल घं. मिं. | नक्षत्र | समाप्ति काल घं. मिं. | योग | समाप्ति काल घं. मिं. | करण | समाप्ति काल घं. मिं. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.]<br>सूर्य-दक्षिणायन<br>शरद्-हेमन्त-ऋतुः | जम्मू |  | दिल्ली |  | चण्डीगढ़ |  | मुम्वई |  |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
| आ.कृ. | 1 | १४ | मंग | 21:40 | पू.फा. | 9:16 | शुक्ल | 26:17 | वि | 8:24 | कं.16:02 | भ. 8:24 तक, शस्त्र–विष–दुर्घटनादि (अपमृत्यु)से मृतों का श्राद्ध, अक्तू. मास शुरु | 6:29 | 18:11 | 6:18 | 18:03 | 6:20 | 18:04 | 6:33 | 18:23 |
|  | 2 | ३० | बुध | 24:19 | उ.फा. | 12:23 | ब्रह्म | 27:21 | च | 11:00 | कन्या | **आश्विन/महालय अमावस, सर्वपितृ–श्राद्ध, चतुर्दशी/अमावस (A)** | 6:29 | 18:10 | 6:19 | 18:02 | 6:21 | 18:02 | 6:33 | 18:22 |
| आश्विन शुक्ल पक्ष | 3 | १ | गुरु | 26:59 | हस्त | 15:32 | ऐन्द्र | 28:24 | किं | 13:39 | तु.29:06 | **शरद् नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन,** मातामह (नाना/नानी) श्राद्ध, महाराजा(B) | 6:30 | 18:08 | 6:19 | 18:01 | 6:22 | 18:01 | 6:34 | 18:21 |
|  | 4 | २ | शुक्र | 29:31 | चित्रा | 18:38 | वैधृ. | 29:21 | बा | 16:15 | तुला | **चन्द्रदर्शन,** मु. 30, शुक्र विशाखा में 24:12 | 6:31 | 18:07 | 6:20 | 17:59 | 6:22 | 18:00 | 6:34 | 18:20 |
|  | 5 | ३ | शनि | – – | स्वा. | 21:33 | विष्क | 30:08 | तै | 18:41 | तुला | रबि–उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ, स.सि.यो. | 6:31 | 18:06 | 6:20 | 17:58 | 6:23 | 17:59 | 6:34 | 18:19 |
|  | 6 | ३ | रवि | 7:50 | विशा. | 24:11 | प्रीति | – – | ग | 7:50 | वृ.17:34 | भ. 20:49 से, बुध चित्रा में 11:45 | 6:32 | 18:04 | 6:21 | 17:57 | 6:23 | 17:58 | 6:34 | 18:19 |
|  | 7 | ४ | चन्द्र | 9:48 | अनु. | 26:25 | प्रीति | 6:40 | वि | 9:48 | वृश्चिक | भ. 9:48 तक, **उपाङ्ग ललिता व्रत** (देखें पृष्ठ 25),गण्डमूल 26:25 से, स.सि.यो. | 6:33 | 18:03 | 6:22 | 17:56 | 6:24 | 17:56 | 6:35 | 18:18 |
|  | 8 | ५ | मंग | 11:19 | ज्ये. | 28:08 | आयु | 6:51 | बा | 11:19 | ध.28:08 | गण्डमूल विचार | 6:34 | 18:02 | 6:22 | 17:55 | 6:25 | 17:55 | 6:35 | 18:17 |
|  | 9 | ६ | बुध | 12:15 | मूल | 29:15 | सौभा<br>शोभ | 6 37<br>29 53 | तै | 12:15 | धनु | **सरस्वती आवाहन, गुरु वक्री 12:30,** गण्डमूल 29:15 तक | 6:34 | 18:01 | 6:23 | 17:54 | 6:25 | 17:54 | 6:35 | 18:16 |
|  | 10 | ७ | गुरु | 12:32 | पू.षा. | 29:41 | अति | 28:37 | व | 12:32 | धनु | भ. 12:32 से 24:20 तक, **सरस्वती पूजन,** सूर्य चित्रा में 14:06, भद्रकाली अवतार | 6:35 | 17:59 | 6:23 | 17:53 | 6:26 | 17:53 | 6:35 | 18:15 |
|  | 11 | ८ | शुक्र | 12:07 | उ.षा. | 29:25 | सुक | 26:46 | ब | 12:07 | म.11:41 | **श्रीदुर्गाष्टमी,** महाष्टमी, सरस्वती बलिदान, महानवमी (व्रत एवं पूजा हेतु) देखें पृ.25 | 6:36 | 17:58 | 6:24 | 17:52 | 6:27 | 17:52 | 6:36 | 18:15 |
|  | 12 | ९ | शनि | 10:59 | श्रव. | 28:28 | धृति | 24:22 | कौ | 10:59 | मकर | **महानवमी** (बलिदान एवं होम हेतु), **विजयादशमी ( दशहरा ) (C)** | 6:36 | 17:57 | 6:24 | 17:50 | 6:27 | 17:50 | 6:36 | 18:14 |
|  | 13 | १० | रवि | 9:09 | धनि. | 26:52 | शूल | 21:25 | ग | 9:09 | कुं.15:44 | भ. 19:56 से, **पंचक प्रारम्भ 15:44, पापांकुशा एकादशी व्रत ( स्मार्त )(D)** | 6:37 | 17:56 | 6:25 | 17:49 | 6:28 | 17:49 | 6:36 | 18:13 |
|  | 14 | ११ | चन्द्र | 6:42 | शत. | 24:43 | गण्ड | 18:01 | वि | 6:42 | कुम्भ | भ. 6:42 तक, **पापांकुशा एकादशी व्रत ( वैष्णव )** (देखें पृष्ठ 25),**(E)** | 6:38 | 17:54 | 6:26 | 17:48 | 6:29 | 17:48 | 6:36 | 18:12 |
|  | ० | १२ | चन्द्र | 27:43 | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | **द्वादशी तिथि का क्षय** ०० ०० | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
|  | 15 | १३ | मंग | 24:20 | पू.भा. | 22:09 | वृद्धि | 14:13 | कौ | 14:02 | मी.16:49 | **भौम प्रदोष व्रत,** शुक्र अनु. में 24:04, | 6:39 | 17:53 | 6:26 | 17:47 | 6:29 | 17:47 | 6:37 | 18:12 |
|  | 16 | १४ | बुध | 20:41 | उ.भा. | 19:18 | ध्रुव<br>व्या. | 10 09<br>29 56 | ग | 10:31 | मीन | भ. 20:41 से, **शरद् पूर्णिमा व्रत** (देखें पृष्ठ 26), कोजागर व्रत **(F)** | 6:39 | 17:52 | 6:27 | 17:46 | 6:30 | 17:46 | 6:37 | 18:11 |
|  | 17 | १५ | गुरु | 16:56 | रेव. | 16:20 | हर्ष | 25:42 | वि | 6:49 | मे.16:20 | भ. 6:49 तक, **आश्विन पूर्णिमा, पंचक समाप्त 16:20, श्रीसत्यनारायण(G)** | 6:40 | 17:51 | 6:27 | 17:45 | 6:31 | 17:45 | 6:37 | 18:10 |
| कार्तिक कृष्ण पक्ष | 18 | १ | शुक्र | 13:16 | अश्वि | 13:26 | वज्र | 21:34 | कौ | 13:16 | मेष | कार्तिक कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 13:26 तक | 6:41 | 17:50 | 6:28 | 17:44 | 6:31 | 17:44 | 6:38 | 18:09 |
|  | 19 | २ | शनि | 9:49 | भर. | 10:47 | सिद्धि | 17:42 | ग | 9:49 | वृ.16:10 | भ. 20:18 से, | 6:42 | 17:49 | 6:29 | 17:43 | 6:32 | 17:43 | 6:38 | 18:09 |
|  | 20 | ३ | रवि | 6:47 | कृति | 8:32 | व्य. | 14:12 | वि | 6:47 | वृष | भ. 6:47 तक, **व्रत करवा चौथ**(करक–चतुर्थी)चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 12,**(H)** | 6:42 | 17:47 | 6:29 | 17:42 | 6:33 | 17:42 | 6:38 | 18:08 |
|  | ० | ४ | रवि | 28:18 | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | **चतुर्थी तिथि का क्षय** ०० ०० | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
|  | 21 | ५ | चन्द्र | 26:30 | रोहि.<br>मृग. | 6 51<br>29 51 | वरी | 11:11 | कौ | 15:24 | मि.18:15 | स. सि. यो. | 6:43 | 17:46 | 6:30 | 17:41 | 6:33 | 17:41 | 6:39 | 18:07 |
|  | 22 | ६ | मंग | 25:30 | आर्द्रा | 29:39 | परि | 8:46 | ग | 14:00 | मिथुन | भ. 25:30 से, स्कन्द षष्ठी व्रत, बुध विशा. में 28:00, सूर्य सायन वृश्चिक**(I)** | 6:44 | 17:45 | 6:30 | 17:40 | 6:34 | 17:40 | 6:39 | 18:07 |
|  | 23 | ७ | बुध | 25:19 | पुन | 30:16 | शिव<br>सिद्ध | 6 59<br>29 52 | वि | 13:25 | क.24:02 | भ. 13:25 तक, सूर्य स्वाती में 24:42, शक कार्तिक प्रारम्भ | 6:45 | 17:44 | 6:31 | 17:39 | 6:35 | 17:39 | 6:39 | 18:06 |
|  | 24 | ८ | गुरु | 25:59 | पुष्य | – – | साध्य | 29:22 | बा | 13:39 | कर्क | **अहोई अष्टमी व्रत, गुरुपुष्य योग,** कालाष्टमी | 6:46 | 17:43 | 6:32 | 17:38 | 6:36 | 17:38 | 6:40 | 18:05 |
|  | 25 | ९ | शुक्र | 27:23 | पुष्य | 7:40 | शुभ | 29:26 | तै | 14:41 | कर्क | वक्री गुरु मृग. 1 में 30:36, गण्डमूल 7:40 से | 6:46 | 17:42 | 6:32 | 17:38 | 6:36 | 17:37 | 6:40 | 18:05 |
|  | 26 | १० | शनि | 29:24 | आश्ले | 9:46 | शुक्ल | 29:57 | व | 16:24 | सिं.9:46 | भ. 16:24 से 29:24 तक, शुक्र ज्येष्ठा में 25:07 | 6:47 | 17:41 | 6:33 | 17:37 | 6:37 | 17:36 | 6:40 | 18:04 |
|  | 27 | ११ | रवि | – – | मघा | 12:24 | ब्रह्म | – – | ब | 18:38 | सिंह | कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ, गण्डमूल 12:24 तक | 6:48 | 17:40 | 6:34 | 17:36 | 6:38 | 17:35 | 6:41 | 18:04 |
|  | 28 | ११ | चन्द्र | 7:51 | पू.फा. | 15:24 | ब्रह्म | 6:47 | बा | 7:51 | कं.22:11 | **रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी** (देखें पृष्ठ 26), मंगल पुष्य में 15:57 | 6:49 | 17:39 | 6:35 | 17:35 | 6:39 | 17:34 | 6:41 | 18:03 |
|  | 29 | १२ | मंग | 10:32 | उ.फा. | 18:34 | ऐन्द्र | 7:48 | तै | 10:32 | कन्या | **भौम प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, बुध वृश्चिक में 22:39,** यम प्रीत्यर्थं दीपदान | 6:50 | 17:38 | 6:35 | 17:34 | 6:39 | 17:33 | 6:42 | 18:03 |
|  | 30 | १३ | बुध | 13:16 | हस्त | 21:44 | वैधृ. | 8:51 | व | 13:16 | कन्या | भ. 13:16 से 26:35 तक, श्रीहनुमान–जयन्ती (उत्तर–भारत)–अर्द्धरात्रि**(J)** | 6:51 | 17:37 | 6:36 | 17:33 | 6:40 | 17:32 | 6:42 | 18:02 |
|  | 31 | १४ | गुरु | 15:53 | चित्रा | 24:45 | विष्क | 9:51 | श | 15:53 | तु.11:16 | **नरक–चतुर्दशी** (पूर्व–अरुणोदय वाली), प्रभात स्नान, तैलाभ्यंग, रूप **(K)** | 6:51 | 17:36 | 6:37 | 17:33 | 6:41 | 17:31 | 6:43 | 18:02 |

**(A) तिथि का श्राद्ध, श्राद्ध–समाप्त,** पितृ–विसर्जन, **गजच्छाया योग** (12:23 से सूर्यास्त) (देखें पृष्ठ 25), महात्मा गाँधी जयन्ती **(B)** अग्रसेन जयन्ती, वक्री शनि शत. 4 में 14:58 **(C) नवरात्र समाप्त,** अपराजिता–पूजन, शमी–पूजा, आयुध (शस्त्र) पूजन, सीमोल्लंघन, **सरस्वती विसर्जन, शुक्र वृश्चिक में 30:00, प्लूटो मार्गी 5:57 (D)** देखें पृष्ठ 26, श्रीमाधवाचार्य जयन्ती, भरत–मिलाप, नवरात्र पारणा **(E)** बुध स्वा. में 13:54 **(F)** (लक्ष्मी–इन्द्र पूजा), वाराह चतुर्दशी, मेला शाकम्भरी देवी (देवबन), महारास पूर्णिमा (ब्रजभूमि), गण्डमूल 19:18 से **(G)** व्रत (देखें पृष्ठ 26), महर्षि श्रीवाल्मीकि जयन्ती, **सूर्य तुला में 7:42, कार्तिक संक्रान्ति,** मु. 30, पुण्यकाल सं. दोपहर 13:06 तक, **कार्तिक स्नान–नियम प्रारम्भ** नवान्नभक्षणं, आकाश दीपदान प्रारम्भ **(H) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, मंगल कर्क में 14:22, बुध पश्चिम में उदय 28:12 (I)** में 27:45, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ **(J)** व्यापिनी, श्रीधनवन्तरी जयन्ती, यमाय–तर्पण, मासशिवरात्रि व्रत **(K)** चौदश, बुध अनु. में 30:40, काली–पूजा

# वि. संवत् 2081, नवम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2024 ई.

| मास पक्ष | नवंबर | तिथि | वार | समाप्ति काल घं. मिं. | नक्षत्र | समाप्ति काल घं. मिं. | योग | समाप्ति काल घं. मिं. | करण | समाप्ति काल घं. मिं. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य-दक्षिणायन हेमन्त-ऋतुः | जम्मू | | दिल्ली | | चण्डीगढ़ | | मुम्बई | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
| कृ. | 1 | ३० | शुक्र | 18:17 | स्वा. | 27:31 | प्रीति | 10:41 | ना | 18:17 | तुला | कार्तिक अमावस (देव-पितृकार्येषु अमावस), दीपावली (देखें पृष्ठ 27),(A) | 6:52 | 17:35 | 6:37 | 17:32 | 6:42 | 17:30 | 6:43 | 18:01 |
| कार्तिक शुक्ल पक्ष | 2 | १ | शनि | 20:22 | विशा | 29:58 | आयु | 11:18 | किं | 7:20 | वृ.23:24 | कार्तिक शुक्लपक्ष प्रारम्भ, अन्नकूट-गोवर्धन पूजा, गोक्रीडा, बलिपूजा,(B) | 6:53 | 17:35 | 6:38 | 17:31 | 6:42 | 17:30 | 6:43 | 18:01 |
| | 3 | २ | रवि | 22:06 | अनु. | – – | सौभा | 11:39 | बा | 9:14 | वृश्चिक | चन्द्रदर्शन, मु. 30, भ्रातृ (भाई) दूज, यमद्वितीया, यमुना-स्नान, कलम-(C) | 6:54 | 17:34 | 6:39 | 17:30 | 6:43 | 17:29 | 6:44 | 18:00 |
| | 4 | ३ | चन्द्र | 23:25 | अनु. | 8:04 | शोभ | 11:43 | तै | 10:46 | वृश्चिक | जमादिउल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल 8:04 से, | 6:55 | 17:33 | 6:40 | 17:30 | 6:44 | 17:28 | 6:44 | 18:00 |
| | 5 | ४ | मंग | 24:17 | ज्ये. | 9:45 | अति | 11:27 | व | 11:51 | ध. 9:45 | भ. 11:51 से 24:17 तक, दूर्वा गणपति व्रत, गण्डमूल विचार | 6:56 | 17:32 | 6:40 | 17:29 | 6:45 | 17:27 | 6:45 | 17:59 |
| | 6 | ५ | बुध | 24:42 | मूल | 11:00 | सुक | 10:51 | ब | 12:30 | धनु | सूर्य विशा. में 8:46, शुक्र मूल 1 धनु में 27:31, सौभाग्य-पंचमी, जया-(D) | 6:57 | 17:31 | 6:41 | 17:28 | 6:46 | 17:27 | 6:45 | 17:59 |
| | 7 | ६ | गुरु | 24:35 | पू.षा. | 11:47 | धृति | 9:51 | कौ | 12:39 | म.17:54 | सूर्य षष्ठी पर्व (छठ) (बिहार) | 6:57 | 17:30 | 6:42 | 17:28 | 6:46 | 17:26 | 6:46 | 17:58 |
| | 8 | ७ | शुक्र | 23:57 | उ.षा. | 12:03 | शूल<br>गंड | 8 28<br>30 38 | ग | 12:16 | मकर | भ. 23:57 से, | 6:58 | 17:30 | 6:43 | 17:27 | 6:47 | 17:25 | 6:46 | 17:58 |
| | 9 | ८ | शनि | 22:46 | श्रव. | 11:48 | वृद्धि | 28:23 | वि | 11:22 | कुं.23:28 | भ. 11:22 तक, पंचक प्रारम्भ 23:28, गोपाष्टमी | 6:59 | 17:29 | 6:43 | 17:26 | 6:48 | 17:24 | 6:47 | 17:58 |
| | 10 | ९ | रवि | 21:02 | धनि. | 11:00 | ध्रुव | 25:42 | बा | 9:54 | कुम्भ | अक्षय-कूष्माण्ड नवमी, बुध ज्ये. में 30:22, राहु उ.भा. 2–केतु उ.फा. (E) | 7:00 | 17:28 | 6:44 | 17:26 | 6:49 | 17:24 | 6:47 | 17:57 |
| | 11 | १० | चन्द्र | 18:47 | शत. | 9:40 | व्या. | 22:36 | तै | 7:55 | मी.26:22 | भ. 29:26 से, भीष्मपंचक प्रारम्भ (देखें पृष्ठ 26) | 7:01 | 17:28 | 6:45 | 17:25 | 6:50 | 17:23 | 6:48 | 17:57 |
| | 12 | ११ | मंग | 16:05 | पू.भा.<br>उ.भा. | 7 52<br>29 40 | हर्ष | 19:09 | वि | 16:05 | मीन | भ. 16:05 तक, हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह, (F) | 7:02 | 17:27 | 6:46 | 17:25 | 6:51 | 17:23 | 6:48 | 17:57 |
| | 13 | १२ | बुध | 13:02 | रेव. | 27:11 | वज्र | 15:25 | बा | 13:02 | मे.27:11 | पंचक समाप्त 27:11, प्रदोष व्रत, गण्डमूल 05:40 से, हरिप्रबोधोत्सव | 7:03 | 17:26 | 6:46 | 17:24 | 6:51 | 17:22 | 6:49 | 17:57 |
| | 14 | १३ | गुरु | 9:44 | अश्वि | 24:33 | सिद्धि | 11:30 | तै | 9:44 | मेष | भ. 30:20 से, वैकुण्ठ चतुर्दशी, नेहरू-जयन्ती (बाल-दिवस), गण्डमूल 24:33 तक | 7:04 | 17:26 | 6:47 | 17:24 | 6:52 | 17:22 | 6:49 | 17:56 |
| | ० | १४ | गुरु | 30:20 | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ०० | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| | 15 | १५ | शुक्र | 26:59 | भर. | 21:55 | व्य.<br>वरी | 7 30<br>27 33 | वि | 16:40 | वृ.27:17 | भ. 16:40 तक, कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरु नानकदेव जयन्ती, भीष्मपंचक(G) | 7:05 | 17:25 | 6:48 | 17:23 | 6:53 | 17:21 | 6:50 | 17:56 |
| मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष | 16 | १ | शनि | 23:51 | कृति. | 19:28 | परि | 23:48 | बा | 13:25 | वृष | मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष प्रारम्भ, सूर्य वृश्चिक में 7:32, मार्गशीर्ष संक्रान्ति,(H) | 7:06 | 17:25 | 6:49 | 17:23 | 6:54 | 17:21 | 6:51 | 17:56 |
| | 17 | २ | रवि | 21:07 | रोहि. | 17:23 | शिव | 20:21 | तै | 10:29 | मि.28:31 | | 7:06 | 17:24 | 6:50 | 17:22 | 6:55 | 17:20 | 6:51 | 17:56 |
| | 18 | ३ | चन्द्र | 18:57 | मृग. | 15:49 | सिद्ध | 17:22 | व | 8:02 | मिथुन | भ. 8:02 से 18:57 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12), शुक्र (I) | 7:07 | 17:24 | 6:50 | 17:22 | 6:56 | 17:20 | 6:52 | 17:56 |
| | 19 | ४ | मंग | 17:29 | आर्द्रा | 14:56 | साध्य | 14:56 | बा | 17:29 | मिथुन | सूर्य अनु. में 14:53, | 7:08 | 17:23 | 6:51 | 17:22 | 6:57 | 17:19 | 6:52 | 17:56 |
| | 20 | ५ | बुध | 16:50 | पुन. | 14:51 | शुभ | 13:08 | तै | 16:50 | क. 8:47 | | 7:09 | 17:23 | 6:52 | 17:21 | 6:57 | 17:19 | 6:53 | 17:55 |
| | 21 | ६ | गुरु | 17:04 | पुष्य | 15:36 | शुक्ल | 12:01 | व | 17:04 | कर्क | भ. 17:04 से 29:36 तक, सूर्य सायन धनु में 25:27, गण्डमूल 15:36 से,(J) | 7:10 | 17:22 | 6:53 | 17:21 | 6:58 | 17:19 | 6:53 | 17:55 |
| | 22 | ७ | शुक्र | 18:08 | आश्ले | 17:10 | ब्रह्म | 11:34 | ब | 18:08 | सिं.17:10 | शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार, | 7:11 | 17:22 | 6:54 | 17:21 | 6:59 | 17:18 | 6:54 | 17:55 |
| | 23 | ८ | शनि | 19:58 | मघा | 19:27 | ऐन्द्र | 11:42 | कौ | 19:58 | सिंह | श्रीकालभैरवाष्टमी, भैरव-जयन्ती, गण्डमूल 19:27 तक | 7:12 | 17:22 | 6:54 | 17:21 | 7:00 | 17:18 | 6:55 | 17:55 |
| | 24 | ९ | रवि | 22:20 | पू.फा. | 22:17 | वैधृ | 12:17 | तै | 9:09 | कं.29:02 | | 7:13 | 17:21 | 6:55 | 17:20 | 7:01 | 17:18 | 6:55 | 17:55 |
| | 25 | १० | चन्द्र | 25:02 | उ.फा. | 25:24 | विष्क | 13:12 | व | 11:41 | कन्या | भ. 11:41 से 25:02 तक, | 7:14 | 17:21 | 6:56 | 17:20 | 7:02 | 17:18 | 6:56 | 17:55 |
| | 26 | ११ | मंग | 27:48 | हस्त | 28:35 | प्रीति | 14:13 | ब | 14:25 | कन्या | उत्पन्ना एकादशी व्रत, बुध वक्री 8:12 | 7:15 | 17:21 | 6:57 | 17:20 | 7:02 | 17:17 | 6:56 | 17:55 |
| | 27 | १२ | बुध | 30:24 | चित्रा | – – | आयु | 15:13 | कौ | 17:06 | तु.18:07 | | 7:15 | 17:21 | 6:58 | 17:20 | 7:03 | 17:17 | 6:57 | 17:55 |
| | 28 | १३ | गुरु | – – | चित्रा | 7:36 | सौभा | 16:02 | ग | 19:32 | तुला | प्रदोष व्रत, वक्री गुरु रोहि. 4 में 14:25 | 7:16 | 17:21 | 6:58 | 17:20 | 7:04 | 17:17 | 6:58 | 17:55 |
| | 29 | १३ | शुक्र | 8:40 | स्वा. | 10:18 | शोभ | 16:33 | व | 8:40 | वृ.30:03 | भ. 8:40 से 21:35 तक, शुक्र उ.षा. में 15:29, श्रीबालाजी जयन्ती | 7:17 | 17:20 | 6:59 | 17:20 | 7:05 | 17:17 | 6:58 | 17:55 |
| | 30 | १४ | शनि | 10:30 | विशा. | 12:35 | अति | 16:44 | श | 10:30 | वृश्चिक | पितृकार्येषु अमावस, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 17:39, मेला पुरमण्डल(K) | 7:18 | 17:20 | 7:00 | 17:20 | 7:06 | 17:17 | 6:59 | 17:56 |

**(A)** श्रीमहालक्ष्मी पूजन (देखें पृष्ठ 27 एवं 30), कुबेर पूजा, सायं दीपदान देवालये, कौमुदि महोत्सव सम्पन्न, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन), **(B)** मार्गपाली पूजा, विश्वकर्मा दिवस (पंजाब) **(C)** दवात पूजन, विश्वकर्मा-पूजन **(D)** पंचमी, ज्ञान-पंचमी (जैन), गण्डमूल 11:00 तक **(E)** 4 में 26:58, आमला-नवमी, आरोग्य व्रत, जगधातृ-पूजा **(F)** चातुर्मास्य व्रत-नियम समाप्त **(G)** समाप्त, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), शनि मार्गी 19:53, मेला पुष्करतीर्थ (राजस्थान), आकाश दीपदान समाप्ति, कार्तिक व्रतोद्यापनं, श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव, पद्मक योग (21:55 से 26:59 तक) (देखें पृष्ठ 26), कार्तिक स्नान समाप्त, **(H)** मु. 30, पुण्यकाल सं. दोपहर 13:56 तक, मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ **(I)** पू.षा. में 8:00, सौभाग्य सुन्दरी व्रत **(J)** गुरुपुष्य योग **(K)** (जम्मू), देविका-स्नान (ऊधमपुर, जम्मू-काश्मीर)

# वि. संवत् 2081, दिसम्बर मास का तिथ्यादि पंचाग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2024 ई.

| मास पक्ष | दिसम्बर | तिथि | वार | समाप्ति काल घं. मिं. | नक्षत्र | समाप्ति काल घं. मिं. | योग | समाप्ति काल घं. मिं. | करण | समाप्ति काल घं. मिं. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य दक्षिण–उत्तरायणे हेमन्त-शिशिर ऋतुः | जम्मू | | दिल्ली | | चण्डीगढ़ | | मुम्बई | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
| मा. | 1 | ३० | रवि | 11:51 | अनु. | 14:24 | सुक | 16:33 | ना | 11:51 | वृश्चिक | मार्गशीर्ष अमावस (स्नानदानादि), गण्डमूल 14:24 बाद, दिसम्बर मास प्रा. | 7:19 | 17:20 | 7:01 | 17:20 | 7:07 | 17:17 | 7:00 | 17:56 |
| मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष | 2 | १ | चन्द्र | 12:44 | ज्ये. | 15:46 | धृति | 16:01 | ब | 12:44 | ध.15:46 | मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, सूर्य ज्ये. में 19:08, **शुक्र मकर में 11:57(A)** | 7:20 | 17:20 | 7:01 | 17:20 | 7:07 | 17:17 | 7:00 | 17:56 |
| | 3 | २ | मंग | 13:10 | मूल | 16:42 | शूल | 15:08 | कौ | 13:10 | धनु | **चन्द्रदर्शन**, मु. 30, गण्डमूल 16:42 तक | 7:21 | 17:20 | 7:02 | 17:20 | 7:08 | 17:17 | 7:01 | 17:56 |
| | 4 | ३ | बुध | 13:11 | पू.षा. | 17:15 | गण्ड | 13:56 | ग | 13:11 | म.23:20 | भ. 25:01 से, जमादिउल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ | 7:21 | 17:20 | 7:03 | 17:20 | 7:09 | 17:17 | 7:01 | 17:56 |
| | 5 | ४ | गुरु | 12:50 | उ.षा. | 17:27 | वृद्धि | 12:28 | वि | 12:50 | मकर | भ. 12:50 तक, विनायक व्रत (देखें पृष्ठ 29) +षष्ठी (देखें पृष्ठ 28) | 7:22 | 17:20 | 7:04 | 17:20 | 7:10 | 17:17 | 7:02 | 17:56 |
| | 6 | ५ | शुक्र | 12:08 | श्रव. | 17:19 | ध्रुव | 10:43 | बा | 12:08 | कुं.29:07 | **पंचक प्रारम्भ 29:07**, श्रीपञ्चमी, श्रीराम-विवाहोत्सव, नाग-पंचमी, स्कन्द (गुह)+ | 7:23 | 17:20 | 7:04 | 17:20 | 7:11 | 17:17 | 7:03 | 17:57 |
| | 7 | ६ | शनि | 11:07 | धनि. | 16:51 | व्या<br>हर्ष | 8 42<br>30 26 | तै | 11:07 | कुम्भ | मंगल वक्री 5:01, चम्पा षष्ठी (महाराष्ट्र), **मित्र-सप्तमी ( षष्ठीविद्धा )(B)** | 7:24 | 17:20 | 7:05 | 17:20 | 7:11 | 17:17 | 7:03 | 17:57 |
| | 8 | ७ | रवि | 9:45 | शत. | 16:03 | वज्र | 27:53 | व | 9:45 | कुम्भ | भ. 9:45 से 20:54 तक, वक्री बुध अनु. 4 में 24:42, **श्रीदुर्गाष्टमी** | 7:24 | 17:20 | 7:06 | 17:20 | 7:12 | 17:17 | 7:04 | 17:57 |
| | 9 | ८ | चन्द्र | 8:03 | पू.भा. | 14:56 | सिद्धि | 25:05 | ब | 8:03 | मी. 9:15 | | 7:25 | 17:21 | 7:07 | 17:21 | 7:13 | 17:17 | 7:04 | 17:58 |
| | ० | ९ | चन्द्र | 30:02 | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | **नवमी तिथि का क्षय** ००० ०० ०० | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| | 10 | १० | मंग | 27:43 | उ.भा. | 13:30 | व्य. | 22:03 | तै | 16:53 | मीन | शुक्र श्रवण में 27:19, गण्डमूल 13:30 बाद, स.सि.यो. 13:30 तक | 7:26 | 17:21 | 7:07 | 17:21 | 7:13 | 17:18 | 7:05 | 17:58 |
| | 11 | ११ | बुध | 25:10 | रेव. | 11:48 | वरी | 18:47 | व | 14:27 | मे.11:48 | भ. 14:27 से 25:10 तक, **पंचक समाप्त 11:48, मोक्षदा एकादशी व्रत(C)** | 7:27 | 17:21 | 7:08 | 17:21 | 7:14 | 17:18 | 7:06 | 17:58 |
| | 12 | १२ | गुरु | 22:27 | अश्वि | 9:53 | परि | 15:23 | ब | 11:49 | मेष | अखण्ड द्वादशी, गण्डमूल 9:53 तक, स.सि.यो. | 7:27 | 17:21 | 7:09 | 17:21 | 7:15 | 17:18 | 7:06 | 17:59 |
| | 13 | १३ | शुक्र | 19:41 | भर.<br>कृति | 7 50<br>29 48 | शिव | 11:54 | कौ | 9:04 | वृ.13:19 | **प्रदोष व्रत**, शिव चतुर्दशी व्रत, वक्री यूरेनस मेष में 11:10 | 7:28 | 17:21 | 7:09 | 17:22 | 7:15 | 17:18 | 7:07 | 17:59 |
| | 14 | १४ | शनि | 16:59 | रोहि. | 27:55 | सिद्ध<br>साध्य | 8 26<br>29 07 | व | 16:59 | वृष | भ. 16:59 से 27:46 तक, पिशाचमोचन श्राद्ध, **श्रीदत्तात्रेय जयन्ती (D)** | 7:29 | 17:22 | 7:10 | 17:22 | 7:16 | 17:19 | 7:07 | 17:59 |
| | 15 | १५ | रवि | 14:32 | मृग. | 26:20 | शुभ | 26:03 | ब | 14:32 | मि.15:04 | **मार्गशीर्ष पूर्णिमा, सूर्य मूल 1 धनु में 22:10, पौष संक्रान्ति**, मु. 30,**(E)** | 7:29 | 17:22 | 7:11 | 17:22 | 7:17 | 17:19 | 7:08 | 18:00 |
| पौष कृष्ण पक्ष | 16 | १ | चन्द्र | 12:28 | आर्द्रा | 25:14 | शुक्ल | 23:22 | कौ | 12:28 | मिथुन | पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ, | 7:30 | 17:22 | 7:11 | 17:23 | 7:17 | 17:19 | 7:09 | 18:00 |
| | 17 | २ | मंग | 10:57 | पुन. | 24:44 | ब्रह्म | 21:11 | ग | 10:57 | क.18:48 | भ. 22:32 से, **त्रिपुष्कर योग** 10:57 तक | 7:31 | 17:23 | 7:12 | 17:23 | 7:18 | 17:20 | 7:09 | 18:01 |
| | 18 | ३ | बुध | 10:07 | पुष्य | 24:59 | ऐन्द्र | 19:34 | वि | 10:07 | कर्क | भ. 10:07 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), गण्डमूल 24:59 बाद | 7:31 | 17:23 | 7:12 | 17:24 | 7:19 | 17:20 | 7:10 | 18:01 |
| | 19 | ४ | गुरु | 10:03 | आश्ले | 26:00 | वैधृ | 18:34 | बा | 10:03 | सिं.26:00 | गण्डमूल विचार | 7:32 | 17:24 | 7:13 | 17:24 | 7:19 | 17:21 | 7:10 | 18:01 |
| | 20 | ५ | शुक्र | 10:49 | मघा | 27:47 | विष्क | 18:11 | तै | 10:49 | सिंह | गण्डमूल 27:47 तक | 7:32 | 17:24 | 7:13 | 17:24 | 7:20 | 17:21 | 7:11 | 18:02 |
| | 21 | ६ | शनि | 12:22 | पू.फा. | 30:14 | प्रीति | 18:23 | व | 12:22 | सिंह | भ. 12:22 से 26:10 तक, सूर्य सायन मकर में 14:51, सायन उत्तरायण **(F)** | 7:33 | 17:25 | 7:14 | 17:25 | 7:20 | 17:22 | 7:11 | 18:02 |
| | 22 | ७ | रवि | 14:32 | उ.फा. | – – | आयु | 19:00 | ब | 14:32 | कं.12:56 | शुक्र धनिष्ठा में 22:18, शक पौष प्रारम्भ, स.सि.यो. | 7:33 | 17:25 | 7:14 | 17:25 | 7:21 | 17:22 | 7:12 | 18:03 |
| | 23 | ८ | चन्द्र | 17:08 | उ.फा. | 9:09 | सौभा | 19:54 | कौ | 17:08 | कन्या | वक्री गुरु रोहि. 3 में 15:38, **रुक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध** | 7:34 | 17:26 | 7:15 | 17:26 | 7:21 | 17:23 | 7:12 | 18:03 |
| | 24 | ९ | मंग | 19:53 | हस्त | 12:17 | शोभ | 20:54 | ग | 19:53 | तु.25:51 | बुध ज्येष्ठा में 8:26 | 7:34 | 17:26 | 7:15 | 17:27 | 7:22 | 17:23 | 7:13 | 18:04 |
| | 25 | १० | बुध | 22:30 | चित्रा | 15:22 | अति | 21:47 | व | 9:12 | तुला | भ. 9:12 से 22:30 तक, क्रिसमिस दिवस, **तुलसी पूजन महोत्सव** | 7:35 | 17:27 | 7:16 | 17:27 | 7:22 | 17:24 | 7:13 | 18:05 |
| | 26 | ११ | गुरु | 24:44 | स्वा. | 18:10 | सुक | 22:23 | ब | 11:37 | तुला | **सफला एकादशी व्रत** | 7:35 | 17:27 | 7:16 | 17:28 | 7:22 | 17:24 | 7:14 | 18:05 |
| | 27 | १२ | शुक्र | 26:27 | विशा | 20:29 | धृति | 22:37 | कौ | 13:36 | वृ.13:57 | शनि पू.भा. 1 में 20:16 | 7:35 | 17:28 | 7:17 | 17:28 | 7:23 | 17:25 | 7:14 | 18:06 |
| | 28 | १३ | शनि | 27:33 | अनु. | 22:13 | शूल | 22:23 | ग | 15:00 | वृश्चिक | भ. 27:33 से, **शनि प्रदोष व्रत**, सूर्य पू.षा. में 24:25, **शुक्र कुम्भ में (G)** | 7:36 | 17:29 | 7:17 | 17:29 | 7:23 | 17:26 | 7:14 | 18:06 |
| | 29 | १४ | रवि | 28:02 | ज्ये. | 23:22 | गण्ड | 21:41 | वि | 15:48 | ध.23:22 | भ. 15:48 तक, मासशिवरात्रि व्रत, गण्डमूल विचार | 7:36 | 17:29 | 7:17 | 17:30 | 7:23 | 17:26 | 7:15 | 18:07 |
| | 30 | ३० | चन्द्र | 27:57 | मूल | 23:58 | वृद्धि | 20:32 | च | 16:00 | धनु | **पौष ( सोमवती ) अमावस**, मेला हरिद्वार-प्रयागराजादि, तीर्थस्नान **(H)** | 7:36 | 17:30 | 7:18 | 17:30 | 7:24 | 17:27 | 7:15 | 18:07 |
| पौ. | 31 | १ | मंग | 27:22 | पू.षा. | 24:04 | ध्रुव | 18:59 | किं | 15:40 | म.30:01 | **पौष शुक्लपक्ष प्रारम्भ** | 7:37 | 17:31 | 7:18 | 17:31 | 7:24 | 17:28 | 7:15 | 18:08 |

**(A)** गण्डमूल विचार **(B)** (देखें पृष्ठ 28), नैपच्यून मार्गी 29:17 **(C)** श्रीगीता-जयन्ती, वक्री बुध पूर्व में उदय 23:11 **(D)** श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरभैरव-जयन्ती **(E)** पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद, बुध मार्गी 26:26 **(F)** प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ **(G)** 23:39 गण्डमूल, 22:13 से, **(H)** माहात्म्य, गण्डमूल 23:58 तक,

# वि. संवत् 2081, जनवरी मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2025 ई.

| मास पक्ष | जनवरी | तिथि | वार | समाप्ति काल घं. मिं. | नक्षत्र | समाप्ति काल घं. मिं. | योग | समाप्ति काल घं. मिं. | करण | समाप्ति काल घं. मिं. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [ भा. स्टैं. टा. ] सूर्योत्तरायण शिशिर-ऋतुः | जम्मू | | दिल्ली | | चण्डीगढ़ | | मुम्बई | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
| पौष शुक्ल पक्ष | 1 | २ | बुध | 26:25 | उ.षा. | 23:46 | व्या. | 17:06 | बा | 14:54 | मकर | चन्द्रदर्शनम्, मु. 45, जनवरी मास(सं. 2025 ई.) प्रारम्भ, आरोग्य व्रत | 7:37 | 17:31 | 7:18 | 17:32 | 7:24 | 17:28 | 7:16 | 18:09 |
| | 2 | ३ | गुरु | 25:09 | श्रव. | 23:11 | हर्ष | 14:58 | तै | 13:47 | मकर | रज्जब (मुस्लि.) मास प्रारम्भ | 7:37 | 17:32 | 7:18 | 17:32 | 7:24 | 17:29 | 7:16 | 18:09 |
| | 3 | ४ | शुक्र | 23:40 | धनि. | 22:22 | वज्र | 12:37 | व | 12:25 | कुं.10:48 | भ. 12:25 से 23:40 तक, **पंचक प्रारम्भ 10:48**, शुक्र शत. में 28:39 | 7:37 | 17:33 | 7:19 | 17:33 | 7:25 | 17:30 | 7:16 | 18:10 |
| | 4 | ५ | शनि | 22:02 | शत. | 21:24 | सिद्धि | 10:08 | ब | 10:51 | कुम्भ | **बुध मूल 1 धनु में 12:02** | 7:37 | 17:34 | 7:19 | 17:34 | 7:25 | 17:31 | 7:17 | 18:10 |
| | 5 | ६ | रवि | 20:16 | पू.भा. | 20:18 | व्य.<br>वरी | 7 32<br>28 51 | कौ | 9:09 | मी.14:35 | | 7:37 | 17:35 | 7:19 | 17:34 | 7:25 | 17:31 | 7:17 | 18:11 |
| | 6 | ७ | चन्द्र | 18:24 | उ.भा. | 19:07 | परि. | 26:05 | व | 18:24 | मीन | भ. 18:24 से 29:26 तक, **मार्तण्ड-सप्तमी, श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.(A)** | 7:37 | 17:35 | 7:19 | 17:35 | 7:25 | 17:32 | 7:17 | 18:12 |
| | 7 | ८ | मंग | 16:27 | रेव | 17:50 | शिव | 23:16 | ब | 16:27 | मे.17:50 | **पंचक समाप्त 17:50**, गण्डमूल विचार<br>**कुम्भ महापर्व (प्रयागराज) देखें पृष्ठ 16** | 7:38 | 17:36 | 7:19 | 17:36 | 7:25 | 17:33 | 7:18 | 18:12 |
| | 8 | ९ | बुध | 14:26 | अश्वि | 16:30 | सिद्ध | 20:23 | कौ | 14:26 | मेष | **श्रीदुर्गाष्टमी**, महारूद्र व्रत, गण्डमूल 16:30 तक | 7:38 | 17:37 | 7:19 | 17:37 | 7:25 | 17:34 | 7:18 | 18:13 |
| | 9 | १० | गुरु | 12:23 | भर. | 15:07 | साध्य | 17:29 | ग | 12:23 | वृ.20:47 | भ. 23:22 से, | 7:38 | 17:38 | 7:19 | 17:37 | 7:25 | 17:34 | 7:18 | 18:14 |
| | 10 | ११ | शुक्र | 10:20 | कृति | 13:46 | शुभ | 14:37 | वि | 10:20 | वृष | भ. 10:20 तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत**, सूर्य उ.षा. में 26:21 | 7:38 | 17:39 | 7:19 | 17:38 | 7:25 | 17:35 | 7:18 | 18:14 |
| | 11 | १२ | शनि | 8:22 | रोहि | 12:29 | शुक्ल | 11:48 | बा | 8:22 | मि.23:55 | **शनि प्रदोष व्रत**, स.सि.यो. 12:29 तक | 7:37 | 17:40 | 7:19 | 17:39 | 7:25 | 17:36 | 7:18 | 18:15 |
| | ० | १३ | शनि | 30:34 | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | **त्रयोदशी तिथि का क्षय** ०० ०० | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| | 12 | १४ | रवि | 29:03 | मृग | 11:25 | ब्रह्म<br>ऐन्द्र | 9 09<br>30 44 | ग | 17:49 | मिथुन | भ. 29:03 से, वक्री मंगल पुन. 4 में 24:17, राहु उ.भा. 1–केतु उ.फा. 3 **(B)** | 7:37 | 17:40 | 7:19 | 17:40 | 7:25 | 17:37 | 7:18 | 18:16 |
| | 13 | १५ | चन्द्र | 27:57 | आर्द्रा | 10:38 | वैधृ | 28:39 | वि | 16:30 | क.28:20 | भ. 16:30 तक, **पौष पूर्णिमा**, माघस्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, **(C)** | 7:37 | 17:41 | 7:19 | 17:41 | 7:25 | 17:38 | 7:19 | 18:16 |
| माघ कृष्ण पक्ष | 14 | १ | मंग | 27:22 | पुन. | 10:17 | विष्क | 26:58 | बा | 15:40 | कर्क | माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, **सूर्य मकर में 8:55, मकर ( माघ ) संक्रान्ति, (D)** | 7:37 | 17:42 | 7:19 | 17:42 | 7:25 | 17:39 | 7:19 | 18:17 |
| | 15 | २ | बुध | 27:24 | पुष्य | 10:28 | प्रीति | 25:47 | तै | 15:23 | कर्क | गण्डमूल 10:28 से, | 7:37 | 17:43 | 7:19 | 17:42 | 7:25 | 17:40 | 7:19 | 18:17 |
| | 16 | ३ | गुरु | 28:07 | आश्ले | 11:17 | आयु | 25:06 | व | 15:46 | सिं.11:17 | भ. 15:46 से 28:07 तक, गण्डमूल विचार, | 7:37 | 17:44 | 7:19 | 17:43 | 7:25 | 17:40 | 7:19 | 18:18 |
| | 17 | ४ | शुक्र | 29:31 | मघा | 12:45 | सौभा | 24:57 | ब | 16:49 | सिंह | **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), शुक्र पू.भा. में 7:42, गौरी–**(E)** | 7:36 | 17:45 | 7:19 | 17:44 | 7:24 | 17:41 | 7:19 | 18:19 |
| | 18 | ५ | शनि | – – | पू.फा. | 14:52 | शोभ | 25:16 | कौ | 18:31 | कं.21:29 | | 7:36 | 17:46 | 7:19 | 17:45 | 7:24 | 17:42 | 7:19 | 18:19 |
| | 19 | ५ | रवि | 7:31 | उ.फा. | 17:30 | अति | 25:57 | तै | 7:31 | कन्या | सूर्य सायन कुम्भ में 25:30, **बुध पूर्व में अस्त 29:59**, स.सि.यो. | 7:36 | 17:47 | 7:18 | 17:46 | 7:24 | 17:43 | 7:19 | 18:20 |
| | 20 | ६ | चन्द्र | 9:59 | हस्त | 20:30 | सुक | 26:52 | व | 9:59 | कन्या | भ. 9:54 से 23:20 तक, | 7:36 | 17:48 | 7:18 | 17:46 | 7:24 | 17:44 | 7:19 | 18:21 |
| | 21 | ७ | मंग | 12:40 | चित्रा | 23:37 | धृति | 27:49 | ब | 12:40 | तु.10:04 | स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (तिथ्यनुसार), **वक्री मंगल मिथुन में 10:05,(F)** | 7:35 | 17:49 | 7:18 | 17:47 | 7:23 | 17:45 | 7:19 | 18:21 |
| | 22 | ८ | बुध | 15:19 | स्वा. | 26:34 | शूल | 28:38 | कौ | 15:19 | तुला | बुध उ.षा. में 14:49 **(G)** मेरु त्रयोदशी (जैन), गण्डमूल 9:02 तक | 7:35 | 17:50 | 7:18 | 17:48 | 7:23 | 17:46 | 7:19 | 18:22 |
| | 23 | ९ | गुरु | 17:38 | विशा. | 29:08 | गण्ड | 29:07 | ग | 17:38 | वृ.22:33 | भ. 30:32 से, सूर्य श्रवण में 28:44, सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती | 7:34 | 17:51 | 7:17 | 17:49 | 7:23 | 17:47 | 7:19 | 18:23 |
| | 24 | १० | शुक्र | 19:26 | अनु. | 31:08 | वृद्धि | 29:08 | वि | 19:26 | वृश्चिक | भ. 19:26 तक, **बुध मकर में 17:38**, गण्डमूल 31:08 से, | 7:34 | 17:52 | 7:17 | 17:50 | 7:22 | 17:48 | 7:18 | 18:23 |
| | 25 | ११ | शनि | 20:32 | ज्ये. | – – | ध्रुव | 28:38 | ब | 7:59 | वृश्चिक | **षट्तिला एकादशी व्रत**, गण्डमूल विचार | 7:33 | 17:53 | 7:17 | 17:51 | 7:22 | 17:48 | 7:18 | 18:24 |
| | 26 | १२ | रवि | 20:55 | ज्ये. | 8:26 | व्या. | 27:34 | कौ | 8:44 | ध. 8:26 | **तिल द्वादशी, भारत गणतन्त्र दिवस ( 76वाँ )**, गण्डमूल विचार | 7:33 | 17:53 | 7:16 | 17:52 | 7:21 | 17:49 | 7:18 | 18:24 |
| | 27 | १३ | चन्द्र | 20:35 | मूल | 9:02 | हर्ष | 25:57 | ग | 8:45 | धनु | भ. 20:35 से, **सोम प्रदोष व्रत, शुक्र मीन में 31:02**, मासशिवरात्रि व्रत**(G)** | 7:32 | 17:54 | 7:16 | 17:52 | 7:21 | 17:50 | 7:18 | 18:25 |
| | 28 | १४ | मंग | 19:37 | पू.षा. | 8:59 | वज्र | 23:51 | वि | 8:06 | म.14:52 | भ. 8:06 तक, **(H)शाही स्नान** ( देखें पृष्ठ 16 ), तीर्थस्नान माहात्म्य | 7:32 | 17:55 | 7:15 | 17:53 | 7:20 | 17:51 | 7:18 | 18:26 |
| | 29 | ३० | बुध | 18:06 | उ.षा.<br>श्रव. | 8 21<br>31 15 | सिद्धि | 21:22 | ना | 18:06 | मकर | **माघ ( मौनी ) अमावस, कुम्भ-महापर्व ( प्रयागराज )–द्वितीय ( मुख्य )(H)** | 7:31 | 17:56 | 7:15 | 17:54 | 7:20 | 17:52 | 7:18 | 18:26 |
| मा.शु. | 30 | १ | गुरु | 16:11 | धनि. | 29:51 | व्य. | 18:33 | ब | 16:11 | कुं.18:35 | माघ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, **पंचक प्रारम्भ 18:35**, बुध श्रवण में 22:04 **(I)** | 7:31 | 17:57 | 7:14 | 17:55 | 7:19 | 17:53 | 7:17 | 18:27 |
| | 31 | २ | शुक्र | 14:00 | शत. | 28:15 | वरी | 15:33 | कौ | 14:00 | कुम्भ | शब्बान (मु.) मास प्रारम्भ | 7:30 | 17:58 | 7:14 | 17:56 | 7:19 | 17:54 | 7:17 | 18:27 |

**(A)** गण्डमूल 19:07 से, **(B)** में 24:12, ईशान व्रत **(C) लोहड़ी पर्व** (पं., हरि., जम्मू, दिल्ली), बुध पू.षा. में 20:35 **(D)** मु. 30, पुण्यकाल सं. सूर्योदय से मध्याह्न बाद तक, **प्रथम शाही स्नान–कुम्भ महापर्व ( प्रयागराज )** (देखें पृष्ठ 16), निरयण उत्तरायण प्रारम्भ **(E)** वक्रतुण्ड चतुर्थी, गण्डमूल 12:45 तक **(F)** शक माघ प्रारम्भ **(I) गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, *यूरेनस मार्गी 21:51*

# वि. संवत् 2081, फरवरी मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2025 ई.

| मास पक्ष | फरवरी | तिथि | वार | समाप्ति काल घं. मिं. | नक्षत्र | समाप्ति काल घं. मिं. | योग | समाप्ति काल घं. मिं. | करण | समाप्ति काल घं. मिं. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश<br>सूर्योत्तरायण<br>घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.]<br>शिशिर-वसन्त-ऋतुः | जम्मू | | दिल्ली | | चण्डीगढ़ | | मुम्बई | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
| माघ शुक्ल पक्ष | 1 | ३ | शनि | 11:39 | पू.भा. | 26:33 | परि. | 12:25 | ग | 11:39 | मी.20:59 | भ.22:27 से, गौरी तृतीया ( गोंतरी ) व्रत, वरद्-तिल-कुन्द चतुर्थी **(A)** | 7:29 | 17:59 | 7:13 | 17:56 | 7:18 | 17:55 | 7:17 | 18:28 |
| | 2 | ४ | रवि | 9:15 | उ.भा. | 24:53 | शिव<br>सिद्ध | 9 14<br>30 06 | वि | 9:15 | मीन | भ. 9:15 तक, वसन्त पञ्चमी, श्रीपञ्चमी, सरस्वती-लक्ष्मी पूजन, शनि **(B)** | 7:29 | 18:00 | 7:13 | 17:57 | 7:18 | 17:56 | 7:16 | 18:28 |
| | ० | ५ | रवि | 30:53 | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | पंचमी तिथि का क्षय ००० + ( प्रयाग ) देखें पृष्ठ 16 ( मतान्तरे ) | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| | 3 | ६ | चन्द्र | 28:38 | रेव | 23:17 | साध्य | 27:03 | कौ | 17:46 | मे.23:17 | पंचक समाप्त 23:17, तृतीय ( अन्तिम ) शाही स्नान-कुम्भ महापर्व + | 7:28 | 18:01 | 7:12 | 17:58 | 7:17 | 17:56 | 7:16 | 18:29 |
| | 4 | ७ | मंग | 26:31 | अश्वि | 21:50 | शुभ | 24:06 | ग | 15:35 | मेष | भ. 26:31 से, गुरु मार्गी 15:10, रथ सप्तमी व्रत (पूर्व-अरुणोदय वाली),**(C)** | 7:27 | 18:02 | 7:12 | 17:59 | 7:16 | 17:57 | 7:16 | 18:29 |
| | 5 | ८ | बुध | 24:36 | भर. | 20:33 | शुक्ल | 21:19 | वि | 13:34 | वृ.26:16 | भ. 13:34 तक, भीष्माष्टमी | 7:26 | 18:03 | 7:11 | 18:00 | 7:16 | 17:58 | 7:15 | 18:30 |
| | 6 | ९ | गुरु | 22:54 | कृति. | 19:30 | ब्रह्म | 18:42 | बा | 11:45 | वृष | सूर्य धनि. में 7:49, गुप्त नवरात्र समाप्त | 7:26 | 18:04 | 7:10 | 18:01 | 7:15 | 17:59 | 7:15 | 18:30 |
| | 7 | १० | शुक्र | 21:27 | रोहि. | 18:40 | ऐन्द्र | 16:17 | तै | 10:11 | मि.30:21 | बुध धनिष्ठा में 18:31 | 7:25 | 18:05 | 7:10 | 18:01 | 7:14 | 18:00 | 7:15 | 18:31 |
| | 8 | ११ | शनि | 20:16 | मृग | 18:07 | वैधृ | 14:04 | व | 8:52 | मिथुन | भ. 8:52 से 20:16 तक, जया एकादशी व्रत | 7:24 | 18:06 | 7:09 | 18:02 | 7:13 | 18:01 | 7:14 | 18:32 |
| | 9 | १२ | रवि | 19:26 | आर्द्रा | 17:53 | विष्क | 12:07 | ब | 7:51 | मिथुन | भीष्म द्वादशी, तिल द्वादशी | 7:23 | 18:07 | 7:08 | 18:03 | 7:13 | 18:02 | 7:14 | 18:32 |
| | 10 | १३ | चन्द्र | 18:58 | पुन. | 18:01 | प्रीति | 10:27 | तै | 18:58 | क.11:57 | सोम प्रदोष व्रत, | 7:22 | 18:08 | 7:08 | 18:04 | 7:12 | 18:02 | 7:13 | 18:32 |
| | 11 | १४ | मंग | 18:56 | पुष्य | 18:34 | आयु | 9:06 | व | 18:56 | कर्क | भ. 18:56 से 31:10 तक, बुध कुम्भ में 12:53, गण्डमूल 18:34 से, | 7:21 | 18:08 | 7:07 | 18:04 | 7:11 | 18:03 | 7:13 | 18:33 |
| | 12 | १५ | बुध | 19:23 | आश्ले | 19:36 | सौभा | 8:07 | ब | 19:23 | सिं.19:36 | माघ पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त, सूर्य कुम्भ में 21:56, फाल्गुन संक्रान्ति**(D)** | 7:21 | 18:09 | 7:06 | 18:05 | 7:10 | 18:04 | 7:12 | 18:33 |
| फाल्गुन कृष्ण पक्ष | 13 | १ | गुरु | 20:22 | मघा | 21:07 | शोभ | 7:31 | बा | 7:53 | सिंह | फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 21:07 तक | 7:20 | 18:10 | 7:05 | 18:06 | 7:09 | 18:05 | 7:12 | 18:34 |
| | 14 | २ | शुक्र | 21:53 | पू.फा. | 23:10 | अति | 7:20 | तै | 9:08 | कं.29:45 | बुध शत. में 29:04 | 7:19 | 18:11 | 7:04 | 18:07 | 7:08 | 18:06 | 7:11 | 18:34 |
| | 15 | ३ | शनि | 23:53 | उ.फा. | 25:40 | सुक | 7:33 | व | 10:53 | कन्या | भ. 10:53 से 23:53 तक, | 7:18 | 18:12 | 7:04 | 18:07 | 7:07 | 18:07 | 7:11 | 18:35 |
| | 16 | ४ | रवि | 26:16 | हस्त | 28:31 | धृति | 8:06 | ब | 13:05 | कन्या | श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12), स.सि.यो. | 7:17 | 18:13 | 7:03 | 18:08 | 7:07 | 18:07 | 7:10 | 18:35 |
| | 17 | ५ | चन्द्र | 28:54 | चित्रा | - - | शूल | 8:55 | कौ | 15:35 | तु.18:03 | | 7:16 | 18:14 | 7:02 | 18:09 | 7:06 | 18:08 | 7:10 | 18:36 |
| | 18 | ६ | मंग | - - | चित्रा | 7:36 | गण्ड | 9:52 | ग | 18:14 | तुला | सूर्य सायन मीन में 15:37, वसन्त ऋतु प्रारम्भ | 7:15 | 18:15 | 7:01 | 18:10 | 7:05 | 18:09 | 7:09 | 18:36 |
| | 19 | ६ | बुध | 7:33 | स्वा. | 10:40 | वृद्धि | 10:48 | व | 7:33 | वृ.30:50 | भ. 7:33 से 20:46 तक, सूर्य शत. में 12:26 | 7:14 | 18:15 | 7:00 | 18:10 | 7:04 | 18:10 | 7:09 | 18:37 |
| | 20 | ७ | गुरु | 9:59 | विशा. | 13:30 | ध्रुव | 11:34 | ब | 9:59 | वृश्चिक | शक फाल्गुन प्रारम्भ, जानकी व्रत (मध्याह्न-व्यापिनी) | 7:13 | 18:16 | 6:59 | 18:11 | 7:03 | 18:10 | 7:08 | 18:37 |
| | 21 | ८ | शुक्र | 11:58 | अनु. | 15:54 | व्या. | 11:59 | कौ | 11:58 | वृश्चिक | गण्डमूल 15:54 से, | 7:11 | 18:17 | 6:58 | 18:12 | 7:02 | 18:11 | 7:07 | 18:37 |
| | 22 | ९ | शनि | 13:20 | ज्ये. | 17:40 | हर्ष | 11:56 | ग | 13:20 | ध.17:40 | भ. 25:38 से, बुध पू.भा. में 9:49, | 7:10 | 18:18 | 6:57 | 18:12 | 7:01 | 18:12 | 7:07 | 18:38 |
| | 23 | १० | रवि | 13:56 | मूल | 18:43 | वज्र | 11:19 | वि | 13:56 | धनु | भ. 13:56 तक, शनि पश्चिम में अस्त 18:18, स्वामी दयानन्द सरस्वती **(E)** | 7:09 | 18:19 | 6:56 | 18:13 | 7:00 | 18:13 | 7:06 | 18:38 |
| | 24 | ११ | चन्द्र | 13:45 | पू.षा. | 18:59 | सिद्धि | 10:05 | बा | 13:45 | म.24:56 | विजया एकादशी व्रत, मंगल मार्गी 7:32 | 7:08 | 18:20 | 6:55 | 18:14 | 6:59 | 18:14 | 7:05 | 18:38 |
| | 25 | १२ | मंग | 12:48 | उ.षा. | 18:31 | व्य.<br>वरी | 8 15<br>29 51 | तै | 12:48 | मकर | भौम प्रदोष व्रत, बुध पश्चिम में उदय 18:15, त्रिपुष्कर योग 12:48 तक | 7:07 | 18:20 | 6:54 | 18:14 | 6:58 | 18:14 | 7:05 | 18:39 |
| | 26 | १३ | बुध | 11:09 | श्रव. | 17:23 | परि. | 26:57 | व | 11:09 | कुं.28:37 | भ. 11:09 से 22:02 तक, पंचक प्रारम्भ 28:37, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 7:06 | 18:21 | 6:53 | 18:15 | 6:56 | 18:15 | 7:04 | 18:39 |
| | 27 | १४ | गुरु | 8:55 | धनि | 15:44 | शिव | 23:41 | श | 8:55 | कुम्भ | फाल्गुन अमावस (स्नानदानादि प्रात: 8:55 बाद), बुध मीन में 23:45 | 7:05 | 18:22 | 6:52 | 18:16 | 6:55 | 18:16 | 7:03 | 18:40 |
| | ० | ३० | गुरु | 30:15 | ० | ०० | ० | ०० | ० | ०० | ०० | अमावस तिथि का क्षय ०० ०० ०० | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| फा.शु. | 28 | १ | शुक्र | 27:17 | शत. | 13:40 | सिद्ध | 20:08 | किं | 16:46 | मी.29:58 | फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, | 7:04 | 18:23 | 6:51 | 18:16 | 6:54 | 18:16 | 7:03 | 18:40 |

कुम्भ महापर्व
(प्रयागराज)
देखें पृष्ठ 16

**(A)** (देखें पृष्ठ 28), शुक्र उ.भा. में 8:27, फरवरी मास प्रारम्भ **(B)** पू.भा. 2 में 7:24, तृतीय ( अन्तिम ) शाहीस्नान-कुम्भमहापर्व ( प्रयाग )-देखें पृष्ठ 16, वागेश्वरी जयन्ती, गण्डमूल 24:53 से, **(C)** पुत्र (आरोग्य) व्रत, भानु-सप्तमी, गण्डमूल 21:50 तक **(D)** मु. 30, पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, श्रीललिता जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत **(E)** जयन्ती, गण्डमूल 18:43 तक

# वि. संवत् 2081, मार्च मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2025 ई.

| मास पक्ष | मार्च | तिथि | वार | समाप्ति काल घं. मिं. | नक्षत्र | समाप्ति काल घं. मिं. | योग | समाप्ति काल घं. मिं. | करण | समाप्ति काल घं. मिं. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.]<br>सूर्योत्तरायण<br>वसन्त-ऋतुः | जम्मू |  | दिल्ली |  | चण्डीगढ़ |  | मुम्बई |  |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. | सूर्योदय घं. मिं. | सूर्यास्त घं. मिं. |
| फाल्गुन शुक्ल पक्ष | 1 | २ | शनि | 24:10 | पू.भा. | 11:23 | साध्य | 16:25 | बा | 13:44 | मीन | **चन्द्रदर्शन**, मु. 45, बुध उ.भा. 24:14, **फूलेरा दूज** (मथुरा-वृन्दावन) **(A)** | 7:02 | 18:24 | 6:50 | 18:17 | 6:53 | 18:17 | 7:02 | 18:40 |
|  | 2 | ३ | रवि | 21:03 | उ.भा.<br>रेव. | 9 00<br>30 39 | शुभ | 12:39 | तै | 10:37 | मे.30:39 | **पंचक समाप्त 30:39**, शनि पू.भा. 3 में 18:04, रमज़ान (मु.) मास **(B)** | 7:01 | 18:24 | 6:49 | 18:18 | 6:52 | 18:18 | 7:01 | 18:41 |
|  | 3 | ४ | चन्द्र | 18:03 | अश्वि | 28:30 | शुक्ल<br>ब्रह्म | 8 57<br>29 25 | व | 7:33 | मेष | भ. 7:33 से 18:03 तक, गण्डमूल 28:30 तक | 7:00 | 18:25 | 6:48 | 18:18 | 6:51 | 18:19 | 7:00 | 18:41 |
|  | 4 | ५ | मंग | 15:17 | भर. | 26:38 | ऐन्द्र | 26:07 | बा | 15:17 | मेष | सूर्य पू.भा. में 18:40, याज्ञवलक्य जयन्ती | 6:59 | 18:26 | 6:47 | 18:19 | 6:50 | 18:19 | 7:00 | 18:41 |
|  | 5 | ६ | बुध | 12:52 | कृति | 25:09 | वैधृ. | 23:07 | तै | 12:52 | वृ. 8:13 |  | 6:58 | 18:27 | 6:46 | 18:20 | 6:49 | 18:20 | 6:59 | 18:41 |
|  | 6 | ७ | गुरु | 10:51 | रोहि. | 24:06 | विष्क | 20:29 | व | 10:51 | वृष | भ. 10:51 से 22:05, | 6:56 | 18:28 | 6:45 | 18:20 | 6:47 | 18:21 | 6:58 | 18:42 |
|  | 7 | ८ | शुक्र | 9:19 | मृग. | 23:32 | प्रीति | 18:15 | ब | 9:19 | मि.11:45 | **होलाष्टक प्रारम्भ**, अन्नपूर्णा-अष्टमी | 6:55 | 18:28 | 6:44 | 18:21 | 6:46 | 18:21 | 6:57 | 18:42 |
|  | 8 | ९ | शनि | 8:17 | आर्द्रा | 23:29 | आयु | 16:24 | कौ | 8:17 | मिथुन | होलाष्टक<br>7 से 14 मार्च | 6:54 | 18:29 | 6:43 | 18:21 | 6:45 | 18:22 | 6:57 | 18:42 |
|  | 9 | १० | रवि | 7:46 | पुन. | 23:55 | सौभा | 14:58 | ग | 7:46 | क.17:46 | भ. 19:45 से, | 6:53 | 18:30 | 6:42 | 18:22 | 6:44 | 18:23 | 6:56 | 18:43 |
|  | 10 | ११ | चन्द्र | 7:45 | पुष्य | 24:52 | शोभ | 13:57 | वि | 7:45 | कर्क | भ. 7:45 तक, **आमलकी एकादशी व्रत, गोविन्द-द्वादशी**,गण्डमूल 24:52 बाद | 6:51 | 18:31 | 6:41 | 18:23 | 6:43 | 18:23 | 6:55 | 18:43 |
|  | 11 | १२ | मंग | 8:15 | आश्ले | 26:16 | अति | 13:18 | बा | 8:15 | सिं.26:16 | **भौम प्रदोष व्रत**, गण्डमूल विचार, स.सि.यो. | 6:50 | 18:31 | 6:39 | 18:23 | 6:42 | 18:24 | 6:54 | 18:43 |
|  | 12 | १३ | बुध | 9:12 | मघा | 28:06 | सुक | 13:00 | तै | 9:12 | सिंह | महेश्वर व्रत, गण्डमूल 28:06 तक | 6:49 | 18:32 | 6:38 | 18:24 | 6:40 | 18:25 | 6:53 | 18:43 |
|  | 13 | १४ | गुरु | 10:36 | पू.फा. | 30:20 | धृति | 13:03 | व | 10:36 | सिंह | भ. 10:36 से 23:31 तक, होलिका–दहन(देखें पृष्ठ 29),श्रीसत्यनारायण**(C)** | 6:47 | 18:33 | 6:37 | 18:24 | 6:39 | 18:25 | 6:53 | 18:44 |
|  | 14 | १५ | शुक्र | 12:25 | उ.फा. | – – | शूल | 13:24 | ब | 12:25 | कं.12:57 | **फाल्गुन पूर्णिमा, होली पर्व, होलाष्टक समाप्त, सूर्य मीन में 18:50,(D)** | 6:46 | 18:34 | 6:36 | 18:25 | 6:38 | 18:26 | 6:52 | 18:44 |
| चैत्र कृष्ण पक्ष | 15 | १ | शनि | 14:34 | उ.फा. | 8:54 | गण्ड | 14:00 | कौ | 14:34 | कन्या | चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, **बुध वक्री 12:16, होला–मेला** ( श्रीआनन्दपुर **(E)** | 6:45 | 18:34 | 6:35 | 18:26 | 6:37 | 18:27 | 6:51 | 18:44 |
|  | 16 | २ | रवि | 16:59 | हस्त | 11:45 | वृद्धि | 14:49 | ग | 16:59 | तु.25:15 | भ. 30:17 से, राहु पू.भा. 4–केतु उ.फा. 2 में 21:47, **सन्त तुकाराम जयन्ती** | 6:44 | 18:35 | 6:34 | 18:26 | 6:36 | 18:27 | 6:50 | 18:45 |
|  | 17 | ३ | चन्द्र | 19:34 | चित्रा | 14:47 | ध्रुव | 15:45 | वि | 19:34 | तुला | भ. 19:34 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12 एवं 29), सूर्य उ.भा. में **(F)** | 6:42 | 18:36 | 6:33 | 18:27 | 6:34 | 18:28 | 6:49 | 18:45 |
|  | 18 | ४ | मंग | 22:10 | स्वा. | 17:52 | व्या. | 16:44 | ब | 8:52 | तुला | श्रीभगवान्नरायण जयन्ती, **यूरेनस वृष में 29:39** | 6:41 | 18:37 | 6:31 | 18:27 | 6:33 | 18:29 | 6:48 | 18:45 |
|  | 19 | ५ | बुध | 24:38 | विशा | 20:50 | हर्ष | 17:38 | कौ | 11:24 | वृ.14:07 | **वक्री शुक्र पश्चिम में अस्त 17:51**, गुरु रोहि. 4 में 18:06, श्रीरंग- **(G)** | 6:40 | 18:37 | 6:30 | 18:28 | 6:32 | 18:29 | 6:48 | 18:45 |
|  | 20 | ६ | गुरु | 26:46 | अनु. | 23:32 | वज्र | 18:20 | ग | 13:42 | वृश्चिक | भ. 26:46 से, सूर्य सायन मेष में 14:31, उत्तर गोल प्रा., एकनाथ षष्ठी, **(H)** | 6:38 | 18:38 | 6:29 | 18:28 | 6:31 | 18:30 | 6:47 | 18:46 |
|  | 21 | ७ | शुक्र | 28:24 | ज्ये. | 25:46 | सिद्धि | 18:42 | वि | 15:35 | ध.25:46 | भ. 15:35 तक, शीतला सप्तमी (पूजा), मेला शीतलामाता (कुराली), पं. | 6:37 | 18:39 | 6:28 | 18:29 | 6:29 | 18:31 | 6:46 | 18:46 |
|  | 22 | ८ | शनि | 29:24 | मूल | 27:24 | व्य. | 18:36 | बा | 16:54 | धनु | शक चैत्र एवं सन् 1947 प्रारम्भ, **शीतलाष्टमी व्रत**, गण्डमूल 27:24 तक | 6:36 | 18:39 | 6:27 | 18:30 | 6:28 | 18:31 | 6:45 | 18:46 |
|  | 23 | ९ | रवि | 29:39 | पू.षा. | 28:18 | वरी | 17:59 | तै | 17:32 | धनु | शुक्र अस्त<br>19 मार्च<br>शुक्र उदय<br>25 मार्च | 6:34 | 18:40 | 6:26 | 18:30 | 6:27 | 18:32 | 6:44 | 18:46 |
|  | 24 | १० | चन्द्र | 29:06 | उ.षा. | 28:27 | परि | 16:45 | व | 17:23 | म.10:25 | भ. 17:23 से 29:06 तक, | 6:33 | 18:41 | 6:25 | 18:31 | 6:26 | 18:33 | 6:43 | 18:47 |
|  | 25 | ११ | मंग | 27:46 | श्रव. | 27:50 | शिव | 14:53 | ब | 16:26 | मकर | **पापमोचनी एकादशी व्रत** (स्मार्त्त)देखें पृष्ठ 29, **वक्री शुक्र पूर्व में उदय 18:42** | 6:32 | 18:42 | 6:23 | 18:31 | 6:24 | 18:33 | 6:43 | 18:47 |
|  | 26 | १२ | बुध | 25:43 | धनि. | 26:30 | सिद्ध | 12:25 | कौ | 14:45 | कुं.15:15 | **पंचक प्रारम्भ 15:15, पापमोचनी एकादशी व्रत** ( वैष्णव )देखें पृष्ठ 29,**(I)** | 6:30 | 18:42 | 6:22 | 18:32 | 6:23 | 18:34 | 6:42 | 18:47 |
|  | 27 | १३ | गुरु | 23:04 | शत. | 24:34 | साध्य<br>शुभ | 9 25<br>29 57 | ग | 12:24 | कुम्भ | भ. 23:04 से, **प्रदोष व्रत, वारुणी पर्व ( योग ) 23:04 तक**, मासशिवरात्रि व्रत | 6:29 | 18:43 | 6:21 | 18:32 | 6:22 | 18:35 | 6:41 | 18:47 |
|  | 28 | १४ | शुक्र | 19:56 | पू.भा. | 22:10 | शुक्ल | 26:07 | वि | 9:30 | मी.16:48 | भ. 9:30 तक, **मेला पृथूद्क-पिहोवातीर्थ** (हरियाणा) | 6:28 | 18:44 | 6:20 | 18:33 | 6:21 | 18:35 | 6:40 | 18:47 |
|  | 29 | ३० | शनि | 16:28 | उ.भा. | 19:27 | ब्रह्म | 22:03 | ना | 16:28 | मीन | **चैत्र अमावस, शनिवारी अमावस**, वि. संवत् 2081 पूर्ण, शनि पू.भा. 4 **(J)** | 6:27 | 18:44 | 6:19 | 18:34 | 6:19 | 18:36 | 6:39 | 18:48 |

**(A)** मार्च (सं. 2025) मास प्रारम्भ, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, **शुक्र वक्री 30:06** **(B)** प्रारम्भ, गण्डमूल 9:00 से **(C) व्रत**, लक्ष्मीनारायण व्रत, वृषदान व्रत **(D) चैत्र संक्रान्ति**, मु. 45, पुण्यकाल सं. दोपहर 12:26 बाद, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती, होलिका विभूति धारण, धूलिवन्दन **(E) व पाओंटा–साहिब** ), वसन्तोत्सव, ध्वजारोहण, धुलैण्डी, आम्रकुसुम प्राशन **(F)** 27:11, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 18:30 **(G) पंचमी, मेला गुरु रामराय** (देहरादून, उत्तराखण्ड), **मेला नवचण्डी** (मेरठ, उ.प्र.) **(H)** गण्डमूल 23:32 से **(I)** वारुणी योग 26:25 से, **(J) मीन में 21:44**, गण्डमूल 19:27 से

# भारत के प्रमुख नगरों के दैनिक सूर्योदय-सूर्यास्त (भा. स्टैं. टा.)-2024 ई.

नीचे भारत के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग 4 मिनट घटाने तथा अस्त में 4 मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे। निवेदक : पं. आदित्य शर्मा, जालन्धर (पं.)

| तारीख | अमृतसर | | लुधियाना | | अम्बाला | | रोहतक | | कुरुक्षेत्र | | जयपुर | | हिसार | | हरिद्वार | | करनाल | | देहरादून | | कठुआ | | तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | |
| जन. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | जन. |
| 1 | 7 34 | 17 33 | 7 28 | 17 31 | 7 23 | 17 29 | 7 21 | 17 33 | 7 22 | 17 29 | 7 20 | 17 41 | 7 25 | 17 36 | 7 17 | 17 25 | 7 21 | 17 29 | 7 18 | 17 24 | 7 33 | 17 30 | 1 |
| 2 | 34 | 34 | 29 | 32 | 24 | 30 | 21 | 34 | 22 | 30 | 20 | 41 | 25 | 36 | 17 | 25 | 21 | 30 | 19 | 25 | 34 | 30 | 2 |
| 3 | 35 | 35 | 29 | 33 | 24 | 30 | 21 | 35 | 23 | 31 | 20 | 42 | 25 | 37 | 18 | 26 | 21 | 31 | 19 | 26 | 34 | 31 | 3 |
| 4 | 35 | 36 | 29 | 33 | 24 | 31 | 21 | 35 | 23 | 32 | 20 | 43 | 25 | 38 | 18 | 27 | 22 | 31 | 19 | 26 | 34 | 32 | 4 |
| 5 | 35 | 36 | 29 | 34 | 24 | 32 | 22 | 36 | 23 | 32 | 21 | 44 | 26 | 39 | 18 | 28 | 22 | 32 | 19 | 27 | 34 | 33 | 5 |
| 6 | 35 | 37 | 29 | 35 | 24 | 33 | 22 | 37 | 23 | 33 | 21 | 44 | 26 | 39 | 18 | 28 | 22 | 33 | 19 | 28 | 34 | 33 | 6 |
| 7 | 35 | 38 | 29 | 36 | 25 | 33 | 22 | 38 | 23 | 34 | 21 | 45 | 26 | 40 | 18 | 29 | 22 | 34 | 19 | 29 | 34 | 34 | 7 |
| 8 | 35 | 39 | 29 | 37 | 25 | 34 | 22 | 38 | 23 | 35 | 21 | 46 | 26 | 41 | 18 | 30 | 22 | 35 | 19 | 29 | 34 | 35 | 8 |
| 9 | 35 | 40 | 29 | 37 | 25 | 35 | 22 | 39 | 23 | 35 | 21 | 47 | 26 | 42 | 18 | 31 | 22 | 35 | 20 | 30 | 34 | 36 | 9 |
| 10 | 35 | 41 | 29 | 38 | 25 | 36 | 22 | 40 | 24 | 36 | 21 | 47 | 26 | 42 | 18 | 32 | 22 | 36 | 20 | 31 | 34 | 37 | 10 |
| 11 | 35 | 41 | 29 | 39 | 25 | 37 | 22 | 41 | 24 | 37 | 21 | 48 | 26 | 43 | 18 | 32 | 22 | 37 | 20 | 32 | 34 | 38 | 11 |
| 12 | 35 | 42 | 29 | 40 | 25 | 37 | 22 | 42 | 23 | 38 | 21 | 49 | 26 | 44 | 18 | 33 | 22 | 38 | 19 | 33 | 34 | 38 | 12 |
| 13 | 35 | 43 | 29 | 41 | 25 | 38 | 22 | 42 | 23 | 39 | 21 | 50 | 26 | 45 | 18 | 34 | 22 | 39 | 19 | 34 | 34 | 39 | 13 |
| 14 | 35 | 44 | 29 | 42 | 24 | 39 | 22 | 43 | 23 | 40 | 21 | 50 | 26 | 46 | 18 | 35 | 22 | 39 | 19 | 34 | 34 | 40 | 14 |
| 15 | 35 | 45 | 29 | 42 | 24 | 40 | 22 | 44 | 23 | 40 | 21 | 51 | 26 | 46 | 18 | 36 | 22 | 40 | 19 | 35 | 34 | 41 | 15 |
| 16 | 35 | 46 | 29 | 43 | 24 | 41 | 22 | 45 | 23 | 41 | 21 | 52 | 26 | 47 | 18 | 37 | 22 | 41 | 19 | 36 | 33 | 42 | 16 |
| 17 | 34 | 47 | 29 | 44 | 24 | 42 | 22 | 46 | 23 | 42 | 21 | 53 | 26 | 48 | 18 | 38 | 22 | 42 | 19 | 37 | 33 | 43 | 17 |
| 18 | 34 | 47 | 28 | 45 | 24 | 42 | 21 | 47 | 23 | 43 | 21 | 54 | 26 | 49 | 17 | 38 | 21 | 43 | 19 | 38 | 33 | 44 | 18 |
| 19 | 34 | 48 | 28 | 46 | 24 | 43 | 21 | 47 | 23 | 44 | 21 | 54 | 25 | 50 | 17 | 39 | 21 | 44 | 18 | 39 | 33 | 45 | 19 |
| 20 | 34 | 59 | 28 | 47 | 23 | 44 | 21 | 48 | 22 | 45 | 20 | 55 | 25 | 51 | 17 | 40 | 21 | 45 | 18 | 40 | 32 | 46 | 20 |
| 21 | 33 | 50 | 27 | 48 | 23 | 45 | 21 | 49 | 22 | 46 | 20 | 56 | 25 | 51 | 17 | 41 | 21 | 45 | 18 | 40 | 32 | 47 | 21 |
| 22 | 33 | 51 | 27 | 49 | 23 | 46 | 20 | 50 | 22 | 46 | 20 | 57 | 25 | 52 | 16 | 42 | 20 | 46 | 18 | 41 | 32 | 48 | 22 |
| 23 | 33 | 52 | 27 | 49 | 22 | 47 | 20 | 51 | 21 | 47 | 20 | 58 | 24 | 53 | 16 | 43 | 20 | 47 | 17 | 42 | 31 | 49 | 23 |
| 24 | 32 | 53 | 26 | 50 | 22 | 48 | 20 | 52 | 21 | 48 | 19 | 58 | 24 | 54 | 15 | 44 | 20 | 48 | 17 | 43 | 31 | 49 | 24 |
| 25 | 32 | 54 | 26 | 51 | 22 | 49 | 19 | 52 | 21 | 49 | 19 | 17 59 | 24 | 55 | 15 | 44 | 19 | 49 | 16 | 44 | 30 | 50 | 25 |
| 26 | 31 | 55 | 25 | 52 | 21 | 50 | 19 | 53 | 20 | 50 | 19 | 18 00 | 23 | 56 | 15 | 45 | 19 | 50 | 16 | 45 | 30 | 51 | 26 |
| 27 | 31 | 56 | 25 | 53 | 21 | 50 | 18 | 54 | 20 | 51 | 18 | 01 | 23 | 57 | 14 | 46 | 19 | 51 | 16 | 46 | 29 | 52 | 27 |
| 28 | 30 | 57 | 24 | 54 | 20 | 51 | 18 | 55 | 19 | 52 | 18 | 01 | 22 | 57 | 14 | 47 | 18 | 51 | 15 | 47 | 29 | 53 | 28 |
| 29 | 30 | 58 | 24 | 55 | 20 | 52 | 18 | 56 | 19 | 52 | 17 | 02 | 22 | 58 | 13 | 48 | 18 | 52 | 15 | 47 | 28 | 54 | 29 |
| 30 | 29 | 17 58 | 24 | 56 | 19 | 53 | 17 | 57 | 18 | 53 | 17 | 03 | 21 | 17 59 | 13 | 49 | 17 | 53 | 14 | 48 | 28 | 55 | 30 |
| 31 | 7 29 | 17 59 | 7 23 | 17 57 | 7 19 | 17 54 | 7 17 | 17 57 | 7 18 | 17 54 | 7 17 | 18 04 | 7 21 | 18 00 | 7 12 | 17 50 | 7 17 | 17 54 | 7 14 | 17 49 | 7 27 | 17 56 | 31 |
| फर. | 7 28 | 18 00 | 7 22 | 17 58 | 7 18 | 17 55 | 7 16 | 17 58 | 7 17 | 17 55 | 7 16 | 18 04 | 7 20 | 18 01 | 7 12 | 17 51 | 7 16 | 17 59 | 7 13 | 17 50 | 7 26 | 17 57 | फर. |
| 2 | 27 | 01 | 22 | 58 | 18 | 56 | 15 | 17 59 | 17 | 56 | 16 | 05 | 20 | 02 | 11 | 51 | 16 | 18 00 | 12 | 51 | 26 | 58 | 2 |
| 3 | 27 | 02 | 21 | 17 59 | 17 | 57 | 15 | 18 00 | 16 | 57 | 15 | 06 | 19 | 02 | 10 | 52 | 15 | 01 | 12 | 52 | 25 | 59 | 3 |
| 4 | 26 | 03 | 20 | 18 00 | 16 | 57 | 14 | 18 01 | 15 | 58 | 14 | 07 | 19 | 03 | 10 | 53 | 14 | 01 | 11 | 53 | 24 | 18 00 | 4 |
| 5 | 25 | 04 | 20 | 01 | 16 | 58 | 14 | 02 | 15 | 58 | 14 | 07 | 18 | 04 | 09 | 53 | 14 | 02 | 10 | 54 | 24 | 01 | 5 |
| 6 | 25 | 05 | 19 | 02 | 15 | 17 59 | 13 | 02 | 14 | 17 59 | 13 | 08 | 7 17 | 05 | 08 | 55 | 13 | 03 | 10 | 54 | 23 | 02 | 6 |
| 7 | 24 | 06 | 18 | 03 | 14 | 18 00 | 12 | 03 | 13 | 18 00 | 13 | 09 | 7 17 | 06 | 08 | 56 | 12 | 04 | 09 | 55 | 22 | 02 | 7 |
| 8 | 7 23 | 18 07 | 7 18 | 18 04 | 7 14 | 18 01 | 7 12 | 18 04 | 7 13 | 18 01 | 7 13 | 18 10 | 7 16 | 18 07 | 7 07 | 17 56 | 7 12 | 18 05 | 7 08 | 17 56 | 7 21 | 18 03 | 8 |

| तारीख | अमृतसर | | लुधियाना | | अम्बाला | | रोहतक | | कुरुक्षेत्र | | जयपुर | | हिसार | | हरिद्वार | | करनाल | | देहरादून | | कठुआ | | तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | |
| फर. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | फर. |
| 9 | 7 22 | 18 08 | 7 17 | 18 05 | 7 13 | 18 02 | 7 11 | 17 05 | 7 12 | 18 02 | 7 11 | 18 10 | 7 15 | 18 07 | 7 06 | 17 57 | 7 11 | 18 06 | 7 08 | 17 57 | 7 20 | 18 04 | 9 |
| 10 | 21 | 09 | 16 | 06 | 12 | 02 | 10 | 06 | 11 | 03 | 11 | 11 | 15 | 08 | 05 | 58 | 10 | 06 | 07 | 58 | 20 | 05 | 10 |
| 11 | 20 | 09 | 15 | 07 | 11 | 03 | 09 | 06 | 10 | 03 | 10 | 12 | 14 | 09 | 05 | 17 59 | 09 | 07 | 06 | 59 | 19 | 06 | 11 |
| 12 | 20 | 10 | 14 | 08 | 10 | 04 | 09 | 07 | 10 | 04 | 09 | 13 | 13 | 10 | 04 | 18 00 | 09 | 08 | 05 | 59 | 18 | 07 | 12 |
| 13 | 19 | 10 | 13 | 08 | 10 | 05 | 08 | 08 | 09 | 05 | 09 | 13 | 12 | 10 | 03 | 00 | 08 | 09 | 04 | 18 00 | 17 | 08 | 13 |
| 14 | 18 | 12 | 12 | 09 | 09 | 06 | 07 | 09 | 08 | 06 | 08 | 14 | 11 | 11 | 02 | 01 | 07 | 10 | 03 | 01 | 16 | 09 | 14 |
| 15 | 17 | 13 | 11 | 10 | 08 | 07 | 06 | 09 | 07 | 07 | 07 | 15 | 11 | 12 | 01 | 02 | 06 | 10 | 03 | 02 | 15 | 10 | 15 |
| 16 | 16 | 14 | 10 | 11 | 07 | 07 | 05 | 10 | 06 | 07 | 06 | 15 | 10 | 13 | 7 00 | 03 | 05 | 11 | 02 | 03 | 14 | 10 | 16 |
| 17 | 15 | 15 | 10 | 12 | 06 | 08 | 04 | 11 | 05 | 08 | 05 | 16 | 09 | 14 | 6 59 | 04 | 04 | 12 | 01 | 03 | 13 | 11 | 17 |
| 18 | 14 | 15 | 09 | 12 | 05 | 09 | 03 | 12 | 04 | 09 | 05 | 17 | 08 | 14 | 59 | 04 | 03 | 13 | 7 00 | 04 | 12 | 12 | 18 |
| 19 | 13 | 16 | 08 | 13 | 04 | 10 | 03 | 12 | 04 | 10 | 04 | 17 | 07 | 15 | 58 | 05 | 03 | 13 | 6 59 | 05 | 11 | 13 | 19 |
| 20 | 12 | 17 | 07 | 14 | 03 | 10 | 02 | 13 | 03 | 18 11 | 03 | 18 | 06 | 16 | 57 | 06 | 02 | 14 | 58 | 06 | 10 | 14 | 20 |
| 21 | 11 | 18 | 06 | 15 | 02 | 11 | 01 | 14 | 02 | 18 11 | 02 | 19 | 05 | 16 | 56 | 07 | 01 | 15 | 57 | 06 | 09 | 15 | 21 |
| 22 | 10 | 19 | 05 | 16 | 01 | 12 | 7 00 | 14 | 01 | 12 | 01 | 19 | 04 | 17 | 55 | 07 | 7 00 | 16 | 56 | 07 | 08 | 16 | 22 |
| 23 | 09 | 19 | 04 | 16 | 7 00 | 13 | 6 59 | 15 | 7 00 | 13 | 7 00 | 20 | 03 | 18 18 | 54 | 08 | 6 59 | 16 | 55 | 08 | 07 | 16 | 23 |
| 24 | 08 | 20 | 02 | 17 | 6 59 | 13 | 58 | 16 | 6 59 | 13 | 6 59 | 20 | 02 | 19 | 53 | 09 | 58 | 17 | 54 | 09 | 06 | 17 | 24 |
| 25 | 07 | 21 | 01 | 18 | 58 | 14 | 57 | 16 | 58 | 14 | 58 | 21 | 01 | 19 | 52 | 10 | 57 | 18 | 53 | 09 | 05 | 18 | 25 |
| 26 | 06 | 22 | 7 00 | 19 | 57 | 15 | 56 | 17 | 57 | 15 | 57 | 22 | 7 00 | 20 | 51 | 10 | 56 | 18 | 52 | 10 | 03 | 19 | 26 |
| 27 | 04 | 23 | 6 59 | 19 | 56 | 16 | 55 | 18 | 56 | 16 | 57 | 22 | 6 59 | 21 | 50 | 11 | 55 | 19 | 51 | 11 | 02 | 20 | 27 |
| 28 | 7 03 | 18 23 | 6 58 | 18 20 | 6 55 | 18 16 | 6 54 | 17 18 | 6 54 | 18 16 | 6 56 | 18 23 | 6 58 | 18 21 | 48 | 18 12 | 54 | 18 20 | 6 50 | 18 12 | 7 01 | 18 20 | 28 |
| 29 | 7 03 | 18 23 | 6 58 | 18 20 | 6 54 | 18 17 | 6 54 | 17 18 | 6 53 | 18 17 | 6 56 | 18 23 | 6 57 | 18 22 | 48 | 18 12 | 52 | 18 21 | 6 50 | 18 12 | 7 01 | 18 20 | 28 |
| मार्च | 7 02 | 18 24 | 6 57 | 18 21 | 6 53 | 18 18 | 6 53 | 18 19 | 6 52 | 18 18 | 6 55 | 18 23 | 6 56 | 18 23 | 6 47 | 18 12 | 6 51 | 18 17 | 6 49 | 18 12 | 7 00 | 18 21 | मार्च |
| 2 | 7 01 | 25 | 56 | 21 | 52 | 19 | 52 | 20 | 51 | 18 | 54 | 24 | 55 | 23 | 46 | 13 | 50 | 18 | 48 | 13 | 6 59 | 22 | 2 |
| 3 | 7 00 | 26 | 55 | 22 | 51 | 19 | 51 | 20 | 50 | 19 | 53 | 25 | 54 | 24 | 45 | 14 | 49 | 19 | 46 | 14 | 58 | 23 | 3 |
| 4 | 6 59 | 26 | 54 | 23 | 50 | 20 | 50 | 21 | 49 | 20 | 52 | 25 | 53 | 25 | 44 | 14 | 48 | 19 | 45 | 14 | 56 | 23 | 4 |
| 5 | 58 | 27 | 53 | 24 | 48 | 21 | 48 | 22 | 48 | 20 | 51 | 26 | 52 | 25 | 43 | 15 | 47 | 20 | 44 | 15 | 56 | 24 | 5 |
| 6 | 56 | 28 | 51 | 24 | 47 | 21 | 47 | 22 | 47 | 21 | 50 | 26 | 51 | 27 | 42 | 16 | 46 | 21 | 43 | 16 | 54 | 25 | 6 |
| 7 | 55 | 29 | 50 | 25 | 46 | 22 | 46 | 23 | 46 | 22 | 49 | 27 | 50 | 27 | 41 | 16 | 45 | 21 | 42 | 16 | 53 | 26 | 7 |
| 8 | 54 | 29 | 49 | 26 | 45 | 23 | 45 | 24 | 44 | 22 | 47 | 27 | 48 | 27 | 40 | 17 | 44 | 22 | 41 | 17 | 52 | 27 | 8 |
| 9 | 53 | 30 | 48 | 26 | 44 | 23 | 44 | 24 | 43 | 23 | 46 | 28 | 47 | 28 | 38 | 18 | 42 | 22 | 40 | 18 | 50 | 27 | 9 |
| 10 | 52 | 31 | 47 | 27 | 43 | 24 | 43 | 25 | 42 | 24 | 45 | 29 | 46 | 28 | 37 | 18 | 41 | 23 | 38 | 18 | 49 | 28 | 10 |
| 11 | 50 | 31 | 45 | 28 | 41 | 25 | 42 | 25 | 41 | 24 | 44 | 29 | 45 | 29 | 36 | 19 | 40 | 24 | 37 | 19 | 48 | 29 | 11 |
| 12 | 49 | 32 | 44 | 28 | 40 | 25 | 41 | 26 | 40 | 25 | 43 | 30 | 44 | 30 | 35 | 20 | 39 | 24 | 36 | 20 | 47 | 29 | 12 |
| 13 | 48 | 33 | 43 | 29 | 39 | 26 | 40 | 27 | 39 | 26 | 42 | 30 | 43 | 30 | 34 | 20 | 38 | 25 | 35 | 20 | 45 | 30 | 13 |
| 14 | 47 | 33 | 42 | 30 | 38 | 27 | 38 | 27 | 37 | 26 | 41 | 31 | 42 | 31 | 33 | 21 | 37 | 26 | 34 | 21 | 44 | 31 | 14 |
| 15 | 45 | 34 | 40 | 30 | 37 | 27 | 37 | 28 | 36 | 27 | 40 | 31 | 40 | 31 | 31 | 22 | 35 | 26 | 33 | 22 | 43 | 32 | 15 |
| 16 | 44 | 35 | 39 | 31 | 35 | 28 | 36 | 28 | 35 | 28 | 39 | 32 | 39 | 32 | 30 | 22 | 34 | 27 | 31 | 22 | 41 | 32 | 16 |
| 17 | 43 | 36 | 38 | 32 | 34 | 29 | 35 | 29 | 34 | 28 | 38 | 32 | 38 | 33 | 29 | 23 | 33 | 28 | 30 | 23 | 40 | 33 | 17 |
| 18 | 42 | 36 | 37 | 32 | 33 | 29 | 34 | 30 | 33 | 29 | 37 | 33 | 37 | 33 | 28 | 23 | 32 | 28 | 29 | 24 | 39 | 34 | 18 |
| 19 | 40 | 37 | 36 | 33 | 32 | 30 | 33 | 30 | 31 | 29 | 36 | 33 | 36 | 34 | 27 | 24 | 31 | 29 | 28 | 24 | 38 | 35 | 19 |
| 20 | 39 | 38 | 34 | 34 | 31 | 30 | 31 | 31 | 30 | 30 | 35 | 34 | 35 | 34 | 25 | 25 | 30 | 29 | 26 | 25 | 36 | 35 | 20 |
| 21 | 38 | 38 | 33 | 34 | 29 | 31 | 30 | 31 | 29 | 31 | 33 | 34 | 33 | 35 | 24 | 25 | 28 | 30 | 25 | 26 | 35 | 36 | 21 |
| 22 | 37 | 39 | 32 | 35 | 28 | 32 | 29 | 32 | 28 | 31 | 32 | 35 | 32 | 36 | 23 | 26 | 27 | 31 | 24 | 26 | 34 | 37 | 22 |
| 23 | 35 | 40 | 31 | 36 | 27 | 32 | 28 | 32 | 27 | 32 | 31 | 35 | 31 | 36 | 22 | 26 | 26 | 31 | 23 | 27 | 32 | 37 | 23 |
| 24 | 34 | 40 | 29 | 36 | 26 | 33 | 27 | 33 | 25 | 32 | 30 | 36 | 30 | 37 | 20 | 27 | 25 | 32 | 22 | 27 | 31 | 38 | 24 |
| 25 | 33 | 41 | 28 | 37 | 24 | 34 | 26 | 34 | 24 | 33 | 29 | 36 | 29 | 37 | 19 | 28 | 24 | 32 | 20 | 28 | 30 | 39 | 25 |
| 26 | 31 | 42 | 27 | 38 | 23 | 34 | 24 | 34 | 23 | 34 | 28 | 37 | 28 | 38 | 18 | 28 | 22 | 33 | 19 | 29 | 28 | 39 | 26 |
| 27 | 6 30 | 18 42 | 6 26 | 18 38 | 6 22 | 18 35 | 6 23 | 18 35 | 6 22 | 18 34 | 6 27 | 18 37 | 6 26 | 18 38 | 6 17 | 18 29 | 6 21 | 18 34 | 6 18 | 18 29 | 7 27 | 18 40 | 27 |

| तारीख | अमृतसर | | लुधियाना | | अम्बाला | | रोहतक | | कुरुक्षेत्र | | जयपुर | | हिसार | | हरिद्वार | | करनाल | | देहरादून | | कठुआ | | तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | |
| मार्च | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | मार्च |
| 28 | 6 29 | 18 43 | 6 24 | 18 39 | 6 21 | 18 35 | 6 22 | 18 35 | 6 21 | 18 35 | 6 26 | 18 38 | 6 25 | 18 39 | 6 16 | 18 30 | 6 20 | 18 34 | 6 17 | 18 30 | 7 26 | 18 41 | 28 |
| 29 | 28 | 44 | 23 | 40 | 20 | 36 | 21 | 36 | 19 | 36 | 25 | 38 | 24 | 40 | 14 | 30 | 19 | 35 | 15 | 31 | 25 | 42 | 29 |
| 30 | 26 | 44 | 22 | 40 | 18 | 37 | 20 | 36 | 18 | 36 | 24 | 39 | 23 | 18 40 | 13 | 31 | 18 | 35 | 14 | 31 | 23 | 42 | 30 |
| 31 | 6 25 | 18 45 | 6 21 | 18 41 | 6 17 | 18 37 | 6 19 | 18 37 | 6 17 | 18 37 | 6 22 | 18 39 | 6 22 | 18 41 | 6 12 | 18 31 | 6 16 | 18 36 | 6 13 | 18 32 | 6 22 | 18 43 | 31 |
| अप्रै. | 6 24 | 18 46 | 6 19 | 18 41 | 6 16 | 18 38 | 6 17 | 18 38 | 6 16 | 18 37 | 6 21 | 18 40 | 6 20 | 18 41 | 6 11 | 18 32 | 6 15 | 18 36 | 6 12 | 18 32 | 6 21 | 18 44 | अप्रै. |
| 2 | 23 | 46 | 18 | 42 | 15 | 38 | 16 | 38 | 15 | 38 | 20 | 40 | 19 | 42 | 10 | 33 | 14 | 37 | 11 | 33 | 19 | 44 | 2 |
| 3 | 21 | 47 | 17 | 43 | 13 | 39 | 15 | 39 | 13 | 39 | 19 | 41 | 18 | 42 | 08 | 33 | 13 | 38 | 09 | 34 | 18 | 45 | 3 |
| 4 | 20 | 48 | 16 | 43 | 12 | 40 | 14 | 39 | 12 | 39 | 18 | 41 | 17 | 43 | 07 | 34 | 12 | 38 | 08 | 34 | 17 | 46 | 4 |
| 5 | 19 | 48 | 15 | 44 | 11 | 40 | 13 | 40 | 11 | 40 | 17 | 42 | 16 | 44 | 06 | 34 | 10 | 39 | 07 | 35 | 16 | 46 | 5 |
| 6 | 18 | 49 | 13 | 45 | 10 | 41 | 12 | 40 | 6 10 | 40 | 16 | 42 | 15 | 44 | 05 | 35 | 09 | 39 | 06 | 35 | 14 | 48 | 6 |
| 7 | 16 | 50 | 12 | 45 | 09 | 42 | 11 | 41 | 6 09 | 41 | 15 | 43 | 14 | 45 | 04 | 36 | 08 | 40 | 05 | 36 | 13 | 48 | 7 |
| 8 | 15 | 50 | 11 | 46 | 08 | 42 | 09 | 41 | 07 | 42 | 14 | 43 | 12 | 45 | 03 | 36 | 07 | 41 | 03 | 37 | 12 | 48 | 8 |
| 9 | 14 | 51 | 10 | 47 | 06 | 43 | 08 | 42 | 06 | 42 | 13 | 44 | 11 | 46 | 01 | 37 | 06 | 41 | 02 | 37 | 11 | 49 | 9 |
| 10 | 13 | 52 | 09 | 47 | 05 | 43 | 07 | 43 | 05 | 43 | 12 | 44 | 10 | 47 | 6 00 | 37 | 05 | 42 | 01 | 38 | 09 | 50 | 10 |
| 11 | 12 | 52 | 07 | 48 | 04 | 44 | 06 | 43 | 04 | 43 | 11 | 45 | 09 | 47 | 5 59 | 38 | 04 | 42 | 6 00 | 39 | 08 | 51 | 11 |
| 12 | 10 | 53 | 06 | 49 | 03 | 45 | 05 | 44 | 03 | 44 | 10 | 45 | 08 | 48 | 58 | 39 | 02 | 43 | 5 59 | 39 | 07 | 51 | 12 |
| 13 | 09 | 54 | 05 | 49 | 02 | 45 | 04 | 44 | 02 | 45 | 09 | 46 | 07 | 48 | 57 | 39 | 01 | 44 | 58 | 40 | 06 | 52 | 13 |
| 14 | 08 | 54 | 04 | 50 | 01 | 46 | 03 | 45 | 01 | 45 | 08 | 46 | 06 | 49 | 56 | 40 | 6 00 | 44 | 57 | 40 | 04 | 53 | 14 |
| 15 | 07 | 55 | 03 | 50 | 6 00 | 47 | 02 | 46 | 6 00 | 46 | 07 | 47 | 05 | 49 | 55 | 40 | 5 59 | 45 | 55 | 41 | 03 | 53 | 15 |
| 16 | 06 | 56 | 02 | 51 | 5 58 | 47 | 01 | 46 | 5 58 | 47 | 06 | 47 | 04 | 50 | 54 | 41 | 58 | 46 | 54 | 42 | 02 | 54 | 16 |
| 17 | 04 | 56 | 6 01 | 52 | 57 | 48 | 6 00 | 47 | 57 | 47 | 05 | 48 | 03 | 51 | 53 | 42 | 57 | 46 | 53 | 42 | 01 | 55 | 17 |
| 18 | 03 | 57 | 5 59 | 52 | 56 | 49 | 5 59 | 47 | 56 | 48 | 04 | 48 | 02 | 51 | 51 | 42 | 56 | 47 | 52 | 43 | 00 | 55 | 18 |
| 19 | 02 | 58 | 58 | 53 | 55 | 49 | 58 | 48 | 55 | 48 | 03 | 49 | 01 | 52 | 50 | 43 | 55 | 47 | 51 | 44 | 00 | 56 | 19 |
| 20 | 6 01 | 58 | 57 | 54 | 54 | 50 | 57 | 48 | 54 | 49 | 02 | 49 | 6 00 | 52 | 49 | 44 | 54 | 48 | 50 | 44 | 5 57 | 57 | 20 |
| 21 | 6 00 | 18 59 | 56 | 54 | 53 | 50 | 56 | 49 | 53 | 50 | 01 | 50 | 5 59 | 53 | 48 | 44 | 53 | 49 | 49 | 45 | 56 | 58 | 21 |
| 22 | 5 59 | 19 00 | 55 | 55 | 52 | 51 | 55 | 50 | 52 | 50 | 6 00 | 50 | 58 | 54 | 47 | 45 | 52 | 49 | 48 | 46 | 55 | 58 | 22 |
| 23 | 58 | 00 | 54 | 56 | 51 | 52 | 54 | 50 | 51 | 51 | 5 59 | 51 | 57 | 54 | 46 | 45 | 51 | 50 | 47 | 46 | 54 | 18 59 | 23 |
| 24 | 57 | 01 | 53 | 56 | 50 | 52 | 53 | 51 | 50 | 52 | 58 | 52 | 56 | 55 | 45 | 46 | 50 | 50 | 46 | 47 | 53 | 19 00 | 24 |
| 25 | 56 | 02 | 52 | 57 | 49 | 53 | 52 | 51 | 49 | 52 | 57 | 52 | 55 | 55 | 44 | 47 | 49 | 51 | 45 | 47 | 52 | 00 | 25 |
| 26 | 55 | 03 | 51 | 58 | 48 | 54 | 51 | 52 | 48 | 53 | 56 | 53 | 54 | 56 | 43 | 47 | 48 | 52 | 44 | 48 | 51 | 01 | 26 |
| 27 | 54 | 03 | 50 | 58 | 47 | 54 | 50 | 53 | 47 | 53 | 56 | 53 | 53 | 57 | 42 | 48 | 47 | 52 | 43 | 49 | 50 | 02 | 27 |
| 28 | 53 | 04 | 49 | 59 | 46 | 55 | 49 | 53 | 46 | 54 | 55 | 54 | 52 | 57 | 41 | 49 | 46 | 53 | 42 | 49 | 49 | 03 | 28 |
| 29 | 52 | 05 | 48 | 19 00 | 45 | 56 | 48 | 54 | 45 | 55 | 54 | 54 | 51 | 58 | 40 | 49 | 45 | 54 | 41 | 50 | 48 | 03 | 29 |
| 30 | 5 51 | 19 05 | 5 47 | 19 00 | 5 44 | 18 56 | 5 47 | 18 54 | 5 44 | 18 55 | 5 53 | 18 55 | 5 50 | 18 59 | 5 40 | 18 50 | 5 44 | 18 54 | 5 40 | 18 51 | 5 47 | 19 04 | 30 |
| मई | 5 50 | 19 06 | 5 46 | 19 01 | 5 43 | 18 57 | 5 46 | 18 55 | 5 44 | 18 56 | 5 52 | 18 55 | 5 41 | 18 59 | 5 39 | 18 51 | 5 43 | 18 55 | 5 39 | 18 51 | 5 47 | 19 05 | मई |
| 2 | 49 | 07 | 45 | 02 | 42 | 58 | 45 | 56 | 43 | 57 | 51 | 56 | 40 | 19 00 | 38 | 51 | 42 | 56 | 38 | 52 | 45 | 06 | 2 |
| 3 | 48 | 07 | 44 | 02 | 42 | 58 | 45 | 56 | 42 | 57 | 51 | 56 | 40 | 00 | 37 | 52 | 42 | 56 | 37 | 53 | 45 | 06 | 3 |
| 4 | 47 | 08 | 44 | 03 | 41 | 18 59 | 44 | 57 | 41 | 58 | 50 | 57 | 39 | 01 | 36 | 53 | 41 | 57 | 36 | 53 | 43 | 07 | 4 |
| 5 | 46 | 09 | 43 | 04 | 40 | 19 00 | 43 | 58 | 40 | 59 | 49 | 58 | 38 | 02 | 35 | 53 | 40 | 57 | 36 | 54 | 42 | 08 | 5 |
| 6 | 45 | 10 | 42 | 04 | 39 | 00 | 42 | 58 | 39 | 18 59 | 48 | 58 | 37 | 02 | 34 | 54 | 39 | 58 | 35 | 55 | 41 | 08 | 6 |
| 7 | 44 | 10 | 41 | 05 | 38 | 01 | 42 | 59 | 39 | 19 00 | 48 | 59 | 36 | 03 | 34 | 54 | 38 | 59 | 34 | 55 | 40 | 09 | 7 |
| 8 | 44 | 11 | 40 | 06 | 38 | 02 | 41 | 18 59 | 38 | 01 | 47 | 18 59 | 36 | 04 | 33 | 55 | 38 | 18 59 | 33 | 56 | 40 | 14 | 8 |
| 9 | 43 | 12 | 39 | 07 | 37 | 02 | 40 | 19 00 | 37 | 01 | 46 | 19 00 | 35 | 04 | 32 | 56 | 37 | 19 00 | 32 | 57 | 39 | 11 | 9 |
| 10 | 42 | 12 | 39 | 07 | 36 | 03 | 39 | 01 | 36 | 02 | 46 | 00 | 34 | 05 | 31 | 56 | 36 | 01 | 32 | 57 | 38 | 11 | 10 |
| 11 | 41 | 13 | 38 | 08 | 35 | 04 | 39 | 01 | 36 | 03 | 45 | 01 | 34 | 05 | 31 | 57 | 35 | 01 | 31 | 58 | 37 | 12 | 11 |
| 12 | 5 40 | 19 14 | 5 37 | 19 09 | 5 35 | 19 04 | 5 38 | 19 02 | 5 35 | 19 03 | 5 45 | 19 02 | 5 33 | 19 06 | 5 30 | 18 58 | 5 35 | 19 02 | 5 30 | 18 59 | 5 36 | 19 13 | 12 |

| तारीख | अमृतसर | | लुधियाना | | अम्बाला | | रोहतक | | कुरुक्षेत्र | | जयपुर | | हिसार | | हरिद्वार | | करनाल | | देहरादून | | कठुआ | | तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | |
| मई | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | मई |
| 13 | 5 40 | 19 14 | 37 | 19 09 | 5 34 | 19 05 | 5 37 | 19 02 | 5 34 | 19 04 | 5 44 | 19 02 | 5 32 | 19 07 | 5 29 | 18 58 | 5 34 | 19 03 | 5 30 | 18 59 | 5 36 | 19 13 | 13 |
| 14 | 39 | 15 | 36 | 10 | 33 | 06 | 37 | 03 | 34 | 04 | 43 | 03 | 32 | 07 | 29 | 18 59 | 34 | 03 | 29 | 19 00 | 35 | 14 | 14 |
| 15 | 38 | 16 | 35 | 11 | 33 | 06 | 36 | 04 | 33 | 05 | 43 | 03 | 31 | 08 | 28 | 19 00 | 33 | 04 | 28 | 01 | 34 | 15 | 15 |
| 16 | 38 | 16 | 35 | 11 | 32 | 07 | 36 | 04 | 32 | 06 | 42 | 04 | 30 | 09 | 27 | 00 | 32 | 04 | 28 | 01 | 33 | 16 | 16 |
| 17 | 37 | 17 | 34 | 12 | 31 | 07 | 35 | 05 | 32 | 06 | 42 | 04 | 30 | 09 | 27 | 01 | 32 | 05 | 27 | 02 | 33 | 16 | 17 |
| 18 | 36 | 18 | 33 | 13 | 31 | 08 | 34 | 06 | 31 | 07 | 41 | 05 | 29 | 10 | 26 | 02 | 31 | 06 | 26 | 02 | 32 | 17 | 18 |
| 19 | 36 | 18 | 33 | 13 | 30 | 09 | 34 | 06 | 31 | 08 | 41 | 05 | 29 | 10 | 26 | 02 | 31 | 06 | 26 | 03 | 32 | 18 | 19 |
| 20 | 35 | 19 | 32 | 14 | 30 | 09 | 33 | 07 | 30 | 08 | 40 | 06 | 28 | 11 | 25 | 03 | 30 | 07 | 25 | 04 | 31 | 18 | 20 |
| 21 | 35 | 20 | 32 | 14 | 29 | 10 | 33 | 07 | 30 | 09 | 40 | 07 | 28 | 12 | 25 | 03 | 30 | 08 | 25 | 04 | 30 | 19 | 21 |
| 22 | 34 | 20 | 31 | 15 | 29 | 11 | 33 | 08 | 29 | 09 | 40 | 07 | 27 | 12 | 24 | 04 | 29 | 08 | 24 | 05 | 30 | 20 | 22 |
| 23 | 34 | 21 | 31 | 16 | 28 | 11 | 32 | 09 | 29 | 10 | 39 | 08 | 27 | 13 | 24 | 05 | 29 | 09 | 24 | 06 | 29 | 20 | 23 |
| 24 | 33 | 22 | 30 | 16 | 28 | 12 | 32 | 09 | 28 | 11 | 39 | 08 | 27 | 13 | 23 | 05 | 28 | 09 | 23 | 06 | 29 | 21 | 24 |
| 25 | 33 | 22 | 30 | 17 | 28 | 12 | 31 | 10 | 28 | 11 | 38 | 09 | 26 | 14 | 23 | 06 | 28 | 10 | 23 | 07 | 28 | 22 | 25 |
| 26 | 32 | 23 | 30 | 18 | 27 | 13 | 31 | 10 | 28 | 19 12 | 38 | 09 | 26 | 14 | 23 | 06 | 28 | 11 | 23 | 07 | 28 | 22 | 26 |
| 27 | 32 | 24 | 29 | 18 | 27 | 14 | 31 | 11 | 27 | 19 12 | 38 | 10 | 25 | 15 | 22 | 07 | 27 | 11 | 22 | 09 | 28 | 23 | 27 |
| 28 | 32 | 24 | 29 | 19 | 27 | 14 | 30 | 11 | 27 | 13 | 38 | 10 | 25 | 16 | 22 | 08 | 27 | 12 | 22 | 09 | 27 | 24 | 28 |
| 29 | 31 | 25 | 28 | 19 | 26 | 15 | 30 | 12 | 27 | 14 | 37 | 11 | 25 | 16 | 22 | 08 | 27 | 12 | 22 | 09 | 27 | 24 | 29 |
| 30 | 31 | 25 | 28 | 20 | 26 | 15 | 30 | 12 | 26 | 14 | 37 | 11 | 25 | 17 | 21 | 09 | 26 | 13 | 21 | 10 | 26 | 25 | 30 |
| 31 | 5 31 | 19 26 | 5 28 | 19 20 | 5 26 | 19 16 | 5 30 | 19 13 | 5 26 | 19 15 | 5 37 | 19 12 | 5 24 | 19 17 | 5 21 | 19 09 | 5 26 | 19 13 | 5 21 | 19 10 | 5 26 | 19 25 | 31 |
| जून | 5 30 | 19 27 | 5 28 | 19 21 | 5 25 | 19 16 | 5 29 | 19 13 | 5 26 | 19 15 | 5 37 | 19 12 | 5 32 | 19 18 | 5 21 | 19 10 | 5 26 | 19 14 | 5 21 | 19 11 | 5 26 | 19 26 | जून |
| 2 | 30 | 27 | 27 | 22 | 25 | 17 | 29 | 14 | 26 | 16 | 37 | 13 | 32 | 18 | 21 | 10 | 26 | 14 | 20 | 11 | 26 | 26 | 2 |
| 3 | 30 | 28 | 27 | 22 | 25 | 17 | 29 | 14 | 26 | 16 | 36 | 13 | 32 | 19 | 20 | 11 | 25 | 15 | 20 | 12 | 25 | 27 | 3 |
| 4 | 30 | 28 | 27 | 23 | 25 | 18 | 29 | 15 | 25 | 17 | 36 | 14 | 32 | 19 | 20 | 11 | 25 | 15 | 20 | 12 | 25 | 28 | 4 |
| 5 | 29 | 29 | 27 | 23 | 25 | 18 | 29 | 15 | 25 | 17 | 36 | 14 | 32 | 20 | 20 | 12 | 25 | 16 | 20 | 13 | 25 | 28 | 5 |
| 6 | 29 | 29 | 27 | 24 | 25 | 19 | 29 | 16 | 25 | 18 | 36 | 15 | 31 | 20 | 20 | 12 | 25 | 16 | 20 | 13 | 25 | 29 | 6 |
| 7 | 29 | 30 | 27 | 24 | 24 | 19 | 28 | 16 | 25 | 18 | 36 | 15 | 31 | 21 | 20 | 13 | 25 | 17 | 20 | 14 | 25 | 29 | 7 |
| 8 | 29 | 30 | 27 | 24 | 24 | 20 | 28 | 17 | 25 | 19 | 36 | 15 | 31 | 21 | 20 | 13 | 25 | 17 | 20 | 14 | 25 | 30 | 8 |
| 9 | 29 | 31 | 26 | 25 | 24 | 20 | 28 | 17 | 25 | 19 | 36 | 16 | 31 | 21 | 20 | 14 | 25 | 18 | 19 | 15 | 24 | 30 | 9 |
| 10 | 29 | 31 | 26 | 25 | 24 | 21 | 28 | 18 | 25 | 19 | 36 | 16 | 31 | 22 | 20 | 14 | 25 | 18 | 19 | 15 | 24 | 30 | 10 |
| 11 | 29 | 31 | 26 | 26 | 24 | 21 | 28 | 18 | 25 | 20 | 36 | 17 | 31 | 22 | 20 | 14 | 25 | 18 | 19 | 16 | 24 | 31 | 11 |
| 12 | 29 | 32 | 26 | 26 | 24 | 21 | 28 | 18 | 25 | 20 | 36 | 17 | 31 | 23 | 20 | 15 | 25 | 19 | 19 | 16 | 24 | 31 | 12 |
| 13 | 29 | 32 | 26 | 27 | 24 | 22 | 28 | 19 | 25 | 21 | 36 | 17 | 31 | 23 | 20 | 15 | 25 | 19 | 19 | 16 | 24 | 32 | 13 |
| 14 | 29 | 33 | 26 | 27 | 24 | 22 | 28 | 19 | 25 | 21 | 36 | 18 | 31 | 23 | 20 | 15 | 25 | 19 | 19 | 17 | 24 | 32 | 14 |
| 15 | 29 | 33 | 27 | 27 | 24 | 22 | 29 | 19 | 25 | 21 | 36 | 18 | 31 | 24 | 20 | 16 | 25 | 20 | 20 | 17 | 24 | 32 | 15 |
| 16 | 29 | 33 | 27 | 28 | 25 | 23 | 29 | 20 | 25 | 22 | 36 | 18 | 32 | 24 | 20 | 16 | 25 | 20 | 20 | 17 | 25 | 33 | 16 |
| 17 | 29 | 34 | 27 | 28 | 25 | 23 | 29 | 20 | 25 | 22 | 36 | 18 | 32 | 24 | 20 | 16 | 25 | 20 | 20 | 18 | 25 | 33 | 17 |
| 18 | 29 | 34 | 27 | 28 | 25 | 23 | 29 | 20 | 25 | 22 | 37 | 19 | 32 | 24 | 20 | 17 | 25 | 21 | 20 | 18 | 25 | 33 | 18 |
| 19 | 29 | 34 | 27 | 28 | 25 | 24 | 29 | 21 | 26 | 22 | 37 | 19 | 32 | 25 | 20 | 17 | 26 | 21 | 20 | 18 | 25 | 34 | 19 |
| 20 | 30 | 34 | 27 | 29 | 25 | 24 | 29 | 21 | 26 | 23 | 37 | 19 | 32 | 25 | 21 | 17 | 26 | 21 | 20 | 19 | 25 | 34 | 20 |
| 21 | 30 | 35 | 27 | 29 | 25 | 24 | 29 | 21 | 26 | 23 | 37 | 19 | 32 | 25 | 21 | 17 | 26 | 21 | 20 | 19 | 25 | 34 | 21 |
| 22 | 30 | 35 | 28 | 29 | 26 | 24 | 30 | 21 | 26 | 23 | 37 | 20 | 33 | 25 | 21 | 18 | 26 | 22 | 21 | 19 | 26 | 34 | 22 |
| 23 | 30 | 35 | 28 | 29 | 26 | 24 | 30 | 21 | 27 | 23 | 38 | 20 | 33 | 26 | 21 | 18 | 27 | 22 | 21 | 19 | 26 | 34 | 23 |
| 24 | 30 | 35 | 28 | 29 | 26 | 25 | 30 | 21 | 27 | 23 | 38 | 20 | 33 | 26 | 22 | 18 | 27 | 22 | 21 | 19 | 26 | 35 | 24 |
| 25 | 31 | 35 | 28 | 30 | 26 | 25 | 30 | 22 | 27 | 23 | 38 | 20 | 33 | 26 | 22 | 18 | 27 | 22 | 21 | 19 | 26 | 35 | 25 |
| 26 | 31 | 35 | 29 | 30 | 27 | 25 | 31 | 22 | 27 | 24 | 38 | 20 | 34 | 26 | 22 | 18 | 27 | 22 | 22 | 20 | 27 | 35 | 26 |
| 27 | 31 | 36 | 29 | 30 | 27 | 25 | 31 | 22 | 28 | 24 | 39 | 20 | 34 | 26 | 22 | 18 | 28 | 22 | 22 | 20 | 27 | 35 | 27 |
| 28 | 5 32 | 19 36 | 5 29 | 19 30 | 5 27 | 19 25 | 5 31 | 19 22 | 5 28 | 19 24 | 5 39 | 19 20 | 5 34 | 19 26 | 5 23 | 19 18 | 5 28 | 19 22 | 5 22 | 19 20 | 5 27 | 19 35 | 28 |

| तारीख | अमृतसर | | लुधियाना | | अम्बाला | | रोहतक | | कुरुक्षेत्र | | जयपुर | | हिसार | | हरिद्वार | | करनाल | | देहरादून | | कठुआ | | तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | |
| जून | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | जून |
| 29 | 5 32 | 19 36 | 5 30 | 19 30 | 5 28 | 19 25 | 5 32 | 19 22 | 5 28 | 19 24 | 5 39 | 19 21 | 5 35 | 19 26 | 5 23 | 19 18 | 5 28 | 19 22 | 5 23 | 19 20 | 5 28 | 19 35 | 29 |
| 30 | 5 32 | 19 36 | 5 30 | 19 30 | 5 28 | 19 25 | 5 32 | 19 22 | 5 29 | 19 24 | 5 40 | 19 21 | 5 35 | 19 26 | 5 24 | 19 18 | 5 29 | 19 22 | 5 23 | 19 20 | 5 28 | 19 35 | 30 |
| जुला | 5 33 | 19 36 | 5 31 | 19 30 | 5 29 | 19 25 | 5 32 | 19 22 | 5 29 | 19 24 | 5 40 | 19 21 | 5 35 | 19 26 | 5 24 | 19 18 | 5 29 | 19 22 | 5 23 | 19 20 | 5 28 | 19 35 | जुला |
| 2 | 33 | 36 | 31 | 30 | 29 | 25 | 33 | 22 | 30 | 24 | 40 | 21 | 36 | 26 | 24 | 18 | 30 | 22 | 24 | 20 | 29 | 35 | 2 |
| 3 | 34 | 36 | 31 | 30 | 29 | 25 | 33 | 22 | 30 | 24 | 41 | 21 | 36 | 26 | 25 | 18 | 30 | 22 | 24 | 20 | 29 | 35 | 3 |
| 4 | 34 | 36 | 32 | 30 | 30 | 25 | 34 | 22 | 30 | 24 | 41 | 21 | 37 | 26 | 25 | 18 | 30 | 22 | 25 | 20 | 30 | 35 | 4 |
| 5 | 34 | 35 | 32 | 30 | 30 | 25 | 34 | 22 | 31 | 23 | 42 | 20 | 37 | 26 | 26 | 18 | 31 | 22 | 25 | 20 | 30 | 35 | 5 |
| 6 | 35 | 35 | 33 | 29 | 31 | 25 | 35 | 22 | 31 | 23 | 42 | 20 | 38 | 26 | 26 | 18 | 31 | 22 | 26 | 19 | 31 | 35 | 6 |
| 7 | 35 | 35 | 33 | 29 | 31 | 24 | 35 | 22 | 32 | 23 | 42 | 20 | 38 | 26 | 26 | 18 | 32 | 22 | 26 | 19 | 31 | 34 | 7 |
| 8 | 36 | 35 | 34 | 29 | 32 | 24 | 35 | 21 | 32 | 23 | 43 | 20 | 38 | 26 | 27 | 18 | 32 | 22 | 26 | 19 | 32 | 34 | 8 |
| 9 | 36 | 35 | 34 | 29 | 32 | 24 | 36 | 21 | 33 | 23 | 43 | 20 | 39 | 25 | 27 | 18 | 33 | 21 | 27 | 19 | 32 | 34 | 9 |
| 10 | 37 | 35 | 35 | 29 | 33 | 24 | 36 | 21 | 33 | 23 | 44 | 20 | 39 | 25 | 28 | 17 | 33 | 21 | 27 | 19 | 33 | 34 | 10 |
| 11 | 37 | 34 | 35 | 28 | 33 | 24 | 37 | 21 | 34 | 22 | 44 | 20 | 40 | 25 | 28 | 17 | 34 | 21 | 28 | 19 | 33 | 33 | 11 |
| 12 | 38 | 34 | 36 | 28 | 34 | 23 | 37 | 21 | 34 | 22 | 45 | 19 | 40 | 25 | 29 | 17 | 34 | 21 | 28 | 18 | 34 | 33 | 12 |
| 13 | 39 | 34 | 36 | 28 | 34 | 23 | 38 | 20 | 35 | 22 | 45 | 19 | 41 | 24 | 29 | 17 | 35 | 20 | 29 | 18 | 34 | 33 | 13 |
| 14 | 39 | 33 | 37 | 27 | 35 | 23 | 38 | 20 | 35 | 21 | 46 | 19 | 41 | 24 | 30 | 16 | 35 | 20 | 29 | 18 | 35 | 32 | 14 |
| 15 | 40 | 33 | 37 | 27 | 35 | 22 | 39 | 20 | 36 | 21 | 46 | 19 | 42 | 24 | 30 | 16 | 36 | 20 | 30 | 17 | 35 | 32 | 15 |
| 16 | 40 | 33 | 38 | 27 | 36 | 22 | 39 | 19 | 36 | 21 | 47 | 18 | 43 | 23 | 31 | 16 | 36 | 19 | 31 | 17 | 36 | 32 | 16 |
| 17 | 41 | 32 | 38 | 26 | 36 | 22 | 40 | 19 | 37 | 20 | 47 | 18 | 43 | 23 | 32 | 15 | 37 | 19 | 31 | 17 | 37 | 31 | 17 |
| 18 | 41 | 32 | 39 | 26 | 37 | 21 | 40 | 19 | 37 | 20 | 48 | 18 | 44 | 23 | 32 | 15 | 37 | 19 | 32 | 16 | 37 | 31 | 18 |
| 19 | 42 | 31 | 40 | 25 | 38 | 21 | 41 | 18 | 38 | 19 | 48 | 17 | 44 | 22 | 33 | 14 | 38 | 18 | 32 | 16 | 38 | 30 | 19 |
| 20 | 43 | 31 | 40 | 25 | 38 | 20 | 42 | 18 | 39 | 19 | 49 | 17 | 45 | 22 | 33 | 14 | 38 | 18 | 33 | 15 | 38 | 30 | 20 |
| 21 | 43 | 30 | 41 | 24 | 39 | 20 | 42 | 17 | 39 | 19 | 49 | 16 | 45 | 21 | 34 | 13 | 39 | 17 | 33 | 15 | 39 | 29 | 21 |
| 22 | 44 | 30 | 41 | 24 | 39 | 19 | 43 | 17 | 40 | 18 | 50 | 16 | 46 | 21 | 34 | 13 | 40 | 17 | 34 | 14 | 40 | 29 | 22 |
| 23 | 44 | 29 | 42 | 23 | 40 | 19 | 43 | 16 | 40 | 17 | 50 | 16 | 46 | 20 | 35 | 12 | 40 | 16 | 35 | 14 | 40 | 28 | 23 |
| 24 | 45 | 29 | 43 | 23 | 40 | 18 | 44 | 16 | 41 | 17 | 51 | 15 | 47 | 20 | 36 | 12 | 41 | 16 | 35 | 13 | 41 | 28 | 24 |
| 25 | 46 | 28 | 43 | 22 | 41 | 17 | 44 | 15 | 42 | 16 | 51 | 15 | 48 | 19 | 36 | 11 | 41 | 15 | 36 | 13 | 42 | 27 | 25 |
| 26 | 46 | 27 | 44 | 22 | 42 | 17 | 45 | 15 | 42 | 16 | 52 | 14 | 48 | 19 | 37 | 11 | 42 | 14 | 36 | 12 | 42 | 26 | 26 |
| 27 | 47 | 27 | 44 | 21 | 42 | 16 | 45 | 14 | 43 | 15 | 52 | 14 | 49 | 18 | 37 | 10 | 43 | 14 | 37 | 12 | 43 | 26 | 27 |
| 28 | 48 | 26 | 45 | 20 | 43 | 16 | 46 | 13 | 43 | 14 | 53 | 13 | 49 | 17 | 38 | 09 | 43 | 13 | 38 | 11 | 44 | 25 | 28 |
| 29 | 48 | 25 | 46 | 20 | 44 | 15 | 47 | 13 | 44 | 14 | 53 | 12 | 50 | 17 | 39 | 09 | 44 | 13 | 38 | 10 | 44 | 24 | 29 |
| 30 | 49 | 25 | 46 | 19 | 44 | 14 | 47 | 12 | 44 | 13 | 54 | 12 | 50 | 16 | 39 | 08 | 44 | 12 | 39 | 10 | 45 | 23 | 30 |
| 31 | 5 50 | 19 24 | 5 47 | 19 18 | 5 45 | 19 13 | 5 48 | 19 12 | 5 45 | 19 12 | 5 54 | 19 11 | 5 51 | 19 15 | 5 40 | 19 07 | 5 45 | 19 11 | 5 39 | 19 09 | 5 46 | 19 23 | 31 |
| अग. | 5 50 | 19 23 | 5 48 | 19 17 | 5 45 | 19 13 | 5 48 | 19 11 | 5 46 | 19 12 | 5 55 | 19 11 | 5 52 | 19 15 | 5 40 | 19 07 | 5 46 | 19 06 | 5 40 | 19 08 | 5 46 | 19 22 | अग. |
| 2 | 51 | 22 | 48 | 17 | 46 | 12 | 49 | 10 | 46 | 19 11 | 55 | 10 | 52 | 14 | 41 | 06 | 46 | 06 | 41 | 07 | 47 | 21 | 2 |
| 3 | 51 | 22 | 49 | 16 | 47 | 11 | 49 | 09 | 47 | 19 10 | 56 | 09 | 53 | 13 | 42 | 05 | 47 | 05 | 41 | 07 | 48 | 20 | 3 |
| 4 | 52 | 21 | 50 | 15 | 47 | 10 | 50 | 09 | 48 | 09 | 56 | 08 | 53 | 12 | 42 | 04 | 47 | 04 | 42 | 06 | 48 | 19 | 4 |
| 5 | 53 | 20 | 50 | 14 | 48 | 10 | 51 | 08 | 48 | 09 | 57 | 08 | 54 | 12 | 43 | 03 | 48 | 03 | 42 | 05 | 49 | 19 | 5 |
| 6 | 53 | 19 | 51 | 13 | 48 | 09 | 51 | 07 | 49 | 08 | 57 | 07 | 54 | 11 | 43 | 03 | 48 | 03 | 43 | 04 | 50 | 18 | 6 |
| 7 | 54 | 18 | 51 | 12 | 49 | 08 | 52 | 06 | 49 | 07 | 58 | 06 | 55 | 10 | 44 | 02 | 49 | 02 | 44 | 03 | 50 | 17 | 7 |
| 8 | 55 | 17 | 52 | 12 | 50 | 07 | 52 | 05 | 50 | 06 | 58 | 06 | 56 | 09 | 45 | 01 | 50 | 01 | 44 | 03 | 51 | 16 | 8 |
| 9 | 55 | 16 | 53 | 11 | 50 | 06 | 53 | 05 | 51 | 05 | 59 | 05 | 56 | 08 | 45 | 19 00 | 50 | 19 00 | 45 | 02 | 52 | 15 | 9 |
| 10 | 56 | 15 | 53 | 10 | 51 | 05 | 53 | 04 | 51 | 04 | 5 59 | 04 | 57 | 07 | 46 | 18 59 | 51 | 18 59 | 45 | 01 | 52 | 14 | 10 |
| 11 | 57 | 15 | 54 | 09 | 51 | 04 | 54 | 03 | 52 | 03 | 6 00 | 03 | 57 | 06 | 46 | 58 | 51 | 58 | 46 | 19 00 | 53 | 13 | 11 |
| 12 | 57 | 14 | 55 | 08 | 52 | 03 | 55 | 02 | 52 | 02 | 00 | 02 | 58 | 06 | 47 | 57 | 52 | 57 | 47 | 18 59 | 54 | 12 | 12 |
| 13 | 58 | 13 | 55 | 07 | 53 | 02 | 55 | 01 | 53 | 01 | 01 | 01 | 58 | 05 | 48 | 56 | 53 | 56 | 47 | 58 | 54 | 11 | 13 |
| 14 | 5 59 | 19 12 | 5 56 | 19 06 | 5 54 | 19 01 | 5 56 | 19 00 | 5 53 | 19 00 | 6 01 | 19 01 | 5 59 | 19 04 | 5 48 | 18 55 | 5 53 | 18 55 | 5 48 | 18 57 | 5 55 | 19 10 | 14 |

| तारीख | अमृतसर | | लुधियाना | | अम्बाला | | रोहतक | | कुरुक्षेत्र | | जयपुर | | हिसार | | हरिद्वार | | करनाल | | देहरादून | | कठुआ | | तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | |
| अग. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | अग. |
| 15 | 5 59 | 19 11 | 5 56 | 19 05 | 5 54 | 19 00 | 5 56 | 18 59 | 5 54 | 18 59 | 6 02 | 19 00 | 6 00 | 19 03 | 5 49 | 18 54 | 5 54 | 18 54 | 5 48 | 18 56 | 5 56 | 19 09 | 15 |
| 16 | 6 00 | 09 | 57 | 04 | 54 | 18 59 | 57 | 58 | 55 | 58 | 02 | 18 59 | 00 | 02 | 49 | 53 | 54 | 53 | 49 | 55 | 56 | 08 | 16 |
| 17 | 00 | 08 | 58 | 03 | 55 | 18 58 | 57 | 57 | 55 | 57 | 03 | 58 | 01 | 19 01 | 50 | 52 | 55 | 52 | 50 | 54 | 57 | 07 | 17 |
| 18 | 01 | 07 | 58 | 02 | 56 | 57 | 58 | 56 | 56 | 56 | 03 | 57 | 01 | 19 00 | 50 | 51 | 55 | 51 | 50 | 53 | 58 | 06 | 18 |
| 19 | 02 | 06 | 59 | 01 | 56 | 56 | 58 | 55 | 56 | 55 | 04 | 56 | 02 | 18 59 | 51 | 50 | 56 | 50 | 51 | 52 | 58 | 04 | 19 |
| 20 | 02 | 05 | 5 59 | 19 00 | 57 | 55 | 59 | 54 | 57 | 54 | 04 | 55 | 02 | 58 | 52 | 49 | 57 | 49 | 51 | 51 | 59 | 03 | 20 |
| 21 | 03 | 04 | 6 00 | 18 59 | 57 | 54 | 5 59 | 53 | 58 | 53 | 05 | 54 | 03 | 57 | 52 | 48 | 57 | 48 | 52 | 50 | 6 00 | 02 | 21 |
| 22 | 04 | 03 | 01 | 57 | 58 | 53 | 6 00 | 52 | 58 | 52 | 05 | 53 | 03 | 18 56 | 53 | 47 | 58 | 47 | 53 | 49 | 00 | 01 | 22 |
| 23 | 04 | 02 | 01 | 56 | 59 | 52 | 01 | 51 | 59 | 18 51 | 06 | 52 | 04 | 18 55 | 53 | 46 | 58 | 46 | 53 | 48 | 01 | 19 00 | 23 |
| 24 | 05 | 19 01 | 02 | 55 | 5 59 | 51 | 01 | 50 | 5 59 | 18 50 | 06 | 51 | 04 | 54 | 54 | 45 | 59 | 45 | 54 | 47 | 02 | 18 59 | 24 |
| 25 | 06 | 18 59 | 02 | 54 | 6 00 | 50 | 02 | 49 | 6 00 | 49 | 07 | 50 | 05 | 52 | 54 | 44 | 5 59 | 44 | 54 | 45 | 02 | 57 | 25 |
| 26 | 06 | 58 | 03 | 53 | 00 | 49 | 02 | 48 | 00 | 48 | 07 | 49 | 06 | 51 | 55 | 43 | 6 00 | 43 | 55 | 44 | 03 | 56 | 26 |
| 27 | 07 | 57 | 04 | 52 | 01 | 47 | 03 | 47 | 01 | 47 | 08 | 48 | 06 | 50 | 56 | 42 | 00 | 42 | 55 | 43 | 04 | 55 | 27 |
| 28 | 07 | 56 | 04 | 51 | 01 | 46 | 03 | 46 | 01 | 45 | 08 | 47 | 07 | 49 | 56 | 41 | 01 | 41 | 56 | 42 | 04 | 54 | 28 |
| 29 | 08 | 55 | 05 | 49 | 02 | 45 | 04 | 45 | 02 | 44 | 09 | 46 | 07 | 48 | 57 | 39 | 02 | 39 | 57 | 41 | 05 | 53 | 29 |
| 30 | 09 | 54 | 05 | 48 | 03 | 44 | 04 | 43 | 03 | 43 | 09 | 45 | 08 | 47 | 58 | 38 | 02 | 38 | 57 | 40 | 05 | 51 | 30 |
| 31 | 6 09 | 18 52 | 6 06 | 18 47 | 6 03 | 18 42 | 6 05 | 18 42 | 6 03 | 18 42 | 6 09 | 18 44 | 6 08 | 18 46 | 5 58 | 18 37 | 6 03 | 18 41 | 5 58 | 18 39 | 6 06 | 18 50 | 31 |
| सितं. | 6 10 | 18 51 | 6 07 | 18 46 | 6 04 | 18 42 | 6 05 | 18 41 | 6 04 | 18 41 | 6 10 | 18 43 | 6 09 | 18 45 | 5 58 | 18 36 | 6 03 | 18 40 | 5 58 | 18 37 | 6 07 | 18 49 | सितं. |
| 2 | 10 | 50 | 07 | 44 | 04 | 40 | 06 | 40 | 04 | 40 | 10 | 42 | 09 | 43 | 59 | 35 | 04 | 39 | 59 | 36 | 07 | 48 | 2 |
| 3 | 11 | 49 | 08 | 43 | 05 | 39 | 06 | 39 | 05 | 38 | 11 | 41 | 10 | 42 | 5 59 | 34 | 04 | 38 | 5 59 | 35 | 08 | 46 | 3 |
| 4 | 12 | 47 | 08 | 42 | 05 | 38 | 07 | 38 | 05 | 37 | 11 | 39 | 10 | 41 | 6 00 | 32 | 05 | 36 | 6 00 | 34 | 09 | 45 | 4 |
| 5 | 12 | 46 | 09 | 41 | 06 | 37 | 07 | 37 | 06 | 36 | 12 | 38 | 11 | 40 | 00 | 31 | 05 | 35 | 01 | 33 | 09 | 44 | 5 |
| 6 | 13 | 45 | 09 | 40 | 07 | 35 | 08 | 35 | 06 | 35 | 12 | 37 | 11 | 39 | 01 | 30 | 06 | 34 | 01 | 31 | 10 | 42 | 6 |
| 7 | 13 | 43 | 10 | 38 | 07 | 34 | 08 | 34 | 07 | 34 | 13 | 36 | 12 | 38 | 02 | 29 | 06 | 33 | 02 | 30 | 10 | 41 | 7 |
| 8 | 14 | 42 | 11 | 37 | 08 | 33 | 09 | 33 | 07 | 32 | 13 | 35 | 12 | 36 | 02 | 27 | 07 | 32 | 02 | 29 | 11 | 40 | 8 |
| 9 | 15 | 40 | 11 | 36 | 08 | 32 | 09 | 32 | 08 | 31 | 13 | 34 | 13 | 35 | 03 | 26 | 07 | 30 | 03 | 28 | 12 | 39 | 9 |
| 10 | 15 | 40 | 12 | 35 | 09 | 30 | 10 | 31 | 09 | 30 | 14 | 33 | 13 | 34 | 03 | 25 | 08 | 29 | 03 | 26 | 12 | 37 | 10 |
| 11 | 16 | 38 | 12 | 33 | 09 | 29 | 10 | 29 | 09 | 29 | 14 | 32 | 14 | 33 | 04 | 24 | 08 | 28 | 04 | 25 | 13 | 36 | 11 |
| 12 | 16 | 37 | 13 | 32 | 10 | 28 | 11 | 28 | 10 | 27 | 15 | 31 | 14 | 31 | 04 | 23 | 09 | 27 | 04 | 24 | 14 | 35 | 12 |
| 13 | 17 | 36 | 13 | 31 | 10 | 27 | 11 | 27 | 10 | 26 | 15 | 29 | 15 | 30 | 05 | 21 | 10 | 25 | 05 | 23 | 14 | 33 | 13 |
| 14 | 18 | 34 | 14 | 29 | 11 | 25 | 12 | 26 | 11 | 25 | 16 | 28 | 15 | 29 | 05 | 20 | 10 | 24 | 05 | 21 | 15 | 32 | 14 |
| 15 | 18 | 33 | 15 | 28 | 11 | 24 | 12 | 25 | 11 | 24 | 16 | 27 | 16 | 28 | 06 | 19 | 11 | 23 | 06 | 20 | 15 | 31 | 15 |
| 16 | 19 | 32 | 15 | 27 | 12 | 23 | 13 | 23 | 12 | 22 | 16 | 26 | 16 | 27 | 06 | 18 | 11 | 22 | 07 | 19 | 16 | 29 | 16 |
| 17 | 19 | 31 | 16 | 26 | 13 | 22 | 13 | 22 | 12 | 21 | 17 | 25 | 17 | 25 | 07 | 16 | 12 | 20 | 07 | 18 | 17 | 28 | 17 |
| 18 | 20 | 29 | 16 | 24 | 13 | 20 | 14 | 21 | 13 | 20 | 17 | 24 | 17 | 24 | 07 | 15 | 12 | 19 | 08 | 16 | 17 | 27 | 18 |
| 19 | 21 | 28 | 17 | 23 | 14 | 19 | 14 | 20 | 13 | 19 | 18 | 23 | 18 | 23 | 08 | 14 | 13 | 18 | 08 | 15 | 18 | 25 | 19 |
| 20 | 21 | 27 | 17 | 22 | 14 | 18 | 15 | 19 | 14 | 17 | 18 | 21 | 18 | 22 | 09 | 13 | 13 | 17 | 09 | 14 | 19 | 24 | 20 |
| 21 | 22 | 25 | 18 | 20 | 15 | 17 | 15 | 17 | 14 | 16 | 19 | 20 | 19 | 21 | 09 | 11 | 14 | 15 | 09 | 12 | 19 | 23 | 21 |
| 22 | 22 | 24 | 19 | 19 | 15 | 15 | 16 | 16 | 15 | 15 | 19 | 19 | 19 | 19 | 10 | 10 | 14 | 14 | 10 | 11 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 23 | 23 | 19 | 18 | 16 | 14 | 16 | 15 | 16 | 14 | 19 | 18 | 20 | 18 | 10 | 09 | 15 | 13 | 10 | 10 | 21 | 20 | 23 |
| 24 | 24 | 21 | 20 | 17 | 16 | 13 | 17 | 14 | 16 | 12 | 20 | 17 | 20 | 17 | 10 | 08 | 15 | 12 | 11 | 09 | 21 | 18 | 24 |
| 25 | 24 | 20 | 20 | 15 | 17 | 12 | 17 | 12 | 17 | 11 | 20 | 16 | 21 | 16 | 11 | 06 | 16 | 11 | 12 | 07 | 22 | 17 | 25 |
| 26 | 25 | 19 | 21 | 14 | 18 | 10 | 18 | 11 | 17 | 10 | 21 | 15 | 21 | 14 | 12 | 05 | 16 | 09 | 12 | 06 | 22 | 16 | 26 |
| 27 | 25 | 17 | 21 | 13 | 18 | 09 | 18 | 10 | 18 | 09 | 21 | 13 | 23 | 13 | 12 | 04 | 17 | 08 | 13 | 05 | 23 | 15 | 27 |
| 28 | 26 | 16 | 22 | 11 | 19 | 08 | 19 | 09 | 18 | 07 | 22 | 12 | 23 | 12 | 13 | 03 | 18 | 07 | 13 | 04 | 24 | 13 | 28 |
| 29 | 27 | 15 | 23 | 10 | 19 | 07 | 19 | 08 | 19 | 06 | 22 | 11 | 23 | 11 | 13 | 01 | 18 | 06 | 14 | 02 | 24 | 12 | 29 |
| 30 | 6 27 | 18 14 | 6 23 | 18 09 | 6 20 | 18 05 | 6 20 | 18 06 | 6 19 | 18 05 | 6 23 | 18 10 | 6 24 | 18 10 | 6 14 | 18 00 | 6 19 | 18 04 | 6 14 | 18 01 | 6 25 | 18 11 | 30 |

| तारीख | अमृतसर | | लुधियाना | | अम्बाला | | रोहतक | | कुरुक्षेत्र | | जयपुर | | हिसार | | हरिद्वार | | करनाल | | देहरादून | | कठुआ | | तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | |
| अक्तू | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | अक्तू |
| अक्तू | 6 28 | 18 12 | 6 24 | 18 08 | 6 20 | 18 04 | 6 20 | 18 05 | 6 20 | 18 04 | 6 23 | 18 09 | 6 24 | 18 08 | 6 15 | 17 59 | 6 19 | 18 03 | 6 15 | 18 00 | 6 25 | 18 09 | अक्तू |
| 2 | 29 | 11 | 25 | 06 | 21 | 03 | 21 | 04 | 21 | 03 | 23 | 08 | 25 | 07 | 15 | 58 | 20 | 02 | 16 | 17 59 | 26 | 08 | 2 |
| 3 | 29 | 10 | 25 | 05 | 22 | 02 | 21 | 03 | 21 | 01 | 24 | 07 | 25 | 06 | 16 | 57 | 20 | 01 | 16 | 58 | 27 | 07 | 3 |
| 4 | 30 | 08 | 26 | 04 | 22 | 18 00 | 22 | 02 | 22 | 18 00 | 24 | 06 | 26 | 05 | 16 | 55 | 21 | 18 00 | 17 | 56 | 28 | 05 | 4 |
| 5 | 31 | 07 | 26 | 03 | 23 | 17 59 | 23 | 18 01 | 22 | 17 59 | 25 | 05 | 26 | 04 | 17 | 54 | 22 | 17 58 | 17 | 55 | 28 | 04 | 5 |
| 6 | 31 | 06 | 27 | 02 | 23 | 58 | 23 | 17 59 | 23 | 58 | 25 | 03 | 27 | 03 | 18 | 53 | 22 | 57 | 18 | 54 | 29 | 03 | 6 |
| 7 | 32 | 05 | 28 | 18 00 | 24 | 57 | 24 | 58 | 24 | 57 | 26 | 02 | 28 | 01 | 18 | 52 | 23 | 56 | 19 | 53 | 30 | 02 | 7 |
| 8 | 33 | 03 | 28 | 17 59 | 25 | 56 | 24 | 57 | 24 | 55 | 26 | 01 | 28 | 18 00 | 19 | 51 | 23 | 55 | 19 | 52 | 30 | 18 00 | 8 |
| 9 | 33 | 02 | 29 | 58 | 25 | 56 | 25 | 56 | 25 | 54 | 27 | 18 00 | 29 | 17 59 | 19 | 49 | 24 | 54 | 20 | 50 | 31 | 17 59 | 9 |
| 10 | 34 | 18 01 | 30 | 57 | 26 | 53 | 25 | 55 | 25 | 53 | 27 | 17 59 | 29 | 58 | 20 | 48 | 24 | 53 | 20 | 49 | 32 | 58 | 10 |
| 11 | 35 | 18 00 | 30 | 56 | 27 | 52 | 26 | 54 | 26 | 52 | 28 | 58 | 30 | 57 | 21 | 47 | 25 | 52 | 21 | 48 | 33 | 57 | 11 |
| 12 | 35 | 17 59 | 31 | 54 | 27 | 51 | 27 | 53 | 27 | 51 | 28 | 57 | 30 | 56 | 21 | 46 | 26 | 50 | 22 | 47 | 33 | 55 | 12 |
| 13 | 36 | 57 | 32 | 53 | 28 | 50 | 27 | 52 | 27 | 50 | 29 | 56 | 31 | 55 | 22 | 45 | 26 | 49 | 22 | 46 | 34 | 54 | 13 |
| 14 | 37 | 56 | 32 | 52 | 28 | 49 | 28 | 51 | 28 | 49 | 29 | 55 | 32 | 54 | 22 | 44 | 27 | 48 | 23 | 45 | 35 | 53 | 14 |
| 15 | 37 | 55 | 33 | 51 | 29 | 48 | 28 | 50 | 28 | 48 | 30 | 54 | 32 | 53 | 23 | 44 | 28 | 47 | 24 | 43 | 35 | 52 | 15 |
| 16 | 38 | 54 | 34 | 50 | 30 | 47 | 29 | 49 | 29 | 46 | 31 | 53 | 33 | 52 | 24 | 42 | 28 | 46 | 24 | 42 | 36 | 51 | 16 |
| 17 | 39 | 53 | 34 | 49 | 30 | 45 | 30 | 47 | 30 | 45 | 31 | 52 | 33 | 50 | 24 | 41 | 29 | 45 | 25 | 41 | 37 | 49 | 17 |
| 18 | 39 | 52 | 35 | 48 | 31 | 44 | 30 | 46 | 30 | 44 | 32 | 51 | 34 | 49 | 25 | 39 | 30 | 44 | 26 | 40 | 38 | 48 | 18 |
| 19 | 40 | 51 | 36 | 47 | 32 | 43 | 31 | 45 | 31 | 43 | 32 | 50 | 35 | 48 | 26 | 38 | 30 | 43 | 26 | 39 | 38 | 47 | 19 |
| 20 | 41 | 50 | 36 | 45 | 33 | 42 | 31 | 44 | 32 | 42 | 33 | 49 | 35 | 47 | 26 | 37 | 31 | 42 | 27 | 38 | 39 | 46 | 20 |
| 21 | 42 | 48 | 37 | 44 | 33 | 41 | 32 | 43 | 32 | 41 | 33 | 48 | 34 | 46 | 27 | 36 | 32 | 41 | 28 | 37 | 40 | 45 | 21 |
| 22 | 42 | 47 | 38 | 43 | 34 | 40 | 33 | 43 | 33 | 40 | 34 | 48 | 37 | 46 | 28 | 35 | 32 | 40 | 28 | 36 | 41 | 44 | 22 |
| 23 | 43 | 46 | 38 | 42 | 35 | 39 | 33 | 42 | 34 | 39 | 35 | 47 | 37 | 45 | 28 | 34 | 33 | 39 | 29 | 35 | 41 | 43 | 23 |
| 24 | 44 | 45 | 39 | 41 | 35 | 38 | 34 | 41 | 35 | 38 | 35 | 46 | 38 | 44 | 29 | 33 | 34 | 38 | 30 | 34 | 42 | 42 | 24 |
| 25 | 45 | 44 | 40 | 40 | 36 | 37 | 35 | 40 | 35 | 37 | 36 | 45 | 39 | 43 | 30 | 32 | 34 | 37 | 30 | 33 | 43 | 41 | 25 |
| 26 | 45 | 43 | 41 | 39 | 37 | 36 | 35 | 39 | 36 | 36 | 36 | 44 | 39 | 42 | 31 | 32 | 35 | 36 | 31 | 32 | 44 | 40 | 26 |
| 27 | 46 | 42 | 41 | 38 | 38 | 35 | 36 | 38 | 37 | 36 | 37 | 43 | 40 | 41 | 31 | 31 | 36 | 35 | 32 | 31 | 45 | 39 | 27 |
| 28 | 47 | 41 | 42 | 38 | 38 | 35 | 37 | 37 | 37 | 35 | 37 | 43 | 41 | 40 | 32 | 30 | 36 | 34 | 33 | 30 | 45 | 38 | 28 |
| 29 | 48 | 40 | 43 | 37 | 39 | 34 | 38 | 36 | 38 | 34 | 38 | 42 | 42 | 39 | 33 | 29 | 37 | 33 | 33 | 29 | 46 | 37 | 29 |
| 30 | 48 | 39 | 44 | 36 | 40 | 33 | 38 | 35 | 39 | 33 | 39 | 41 | 42 | 38 | 33 | 28 | 38 | 33 | 34 | 29 | 47 | 36 | 30 |
| 31 | 6 49 | 17 39 | 6 45 | 17 35 | 6 41 | 17 32 | 6 39 | 17 35 | 6 40 | 17 32 | 6 40 | 17 40 | 6 43 | 17 38 | 6 34 | 17 27 | 6 39 | 17 32 | 6 35 | 17 28 | 6 48 | 17 35 | 31 |
| नवं. | 6 50 | 17 38 | 6 45 | 17 34 | 6 41 | 17 31 | 6 40 | 17 34 | 6 40 | 17 31 | 6 40 | 17 40 | 6 44 | 17 37 | 6 35 | 17 26 | 6 39 | 17 27 | 6 36 | 17 27 | 6 49 | 17 34 | नवं. |
| 2 | 51 | 37 | 46 | 33 | 42 | 30 | 40 | 33 | 41 | 31 | 41 | 39 | 44 | 36 | 36 | 26 | 40 | 26 | 36 | 26 | 50 | 33 | 2 |
| 3 | 52 | 36 | 47 | 32 | 43 | 30 | 41 | 32 | 42 | 30 | 42 | 38 | 45 | 35 | 37 | 25 | 41 | 25 | 37 | 25 | 50 | 32 | 3 |
| 4 | 53 | 35 | 48 | 32 | 44 | 29 | 42 | 32 | 43 | 29 | 42 | 37 | 46 | 35 | 37 | 24 | 42 | 24 | 38 | 24 | 51 | 31 | 4 |
| 5 | 53 | 34 | 49 | 31 | 44 | 28 | 43 | 31 | 44 | 28 | 43 | 37 | 47 | 34 | 38 | 23 | 42 | 23 | 39 | 24 | 52 | 30 | 5 |
| 6 | 54 | 34 | 49 | 30 | 45 | 27 | 43 | 30 | 44 | 28 | 44 | 36 | 48 | 33 | 39 | 23 | 43 | 23 | 40 | 23 | 53 | 30 | 6 |
| 7 | 55 | 33 | 50 | 29 | 46 | 27 | 44 | 30 | 45 | 27 | 44 | 36 | 48 | 33 | 40 | 22 | 44 | 22 | 40 | 22 | 54 | 29 | 7 |
| 8 | 56 | 32 | 51 | 29 | 47 | 26 | 45 | 29 | 46 | 26 | 45 | 35 | 49 | 32 | 40 | 21 | 45 | 21 | 41 | 22 | 55 | 28 | 8 |
| 9 | 57 | 31 | 52 | 28 | 48 | 25 | 46 | 28 | 47 | 26 | 46 | 34 | 50 | 31 | 41 | 21 | 46 | 21 | 42 | 21 | 56 | 27 | 9 |
| 10 | 58 | 31 | 53 | 27 | 49 | 25 | 46 | 28 | 48 | 25 | 46 | 34 | 51 | 31 | 42 | 20 | 46 | 20 | 43 | 20 | 57 | 27 | 10 |
| 11 | 58 | 30 | 54 | 27 | 49 | 24 | 47 | 27 | 48 | 24 | 47 | 33 | 51 | 30 | 43 | 19 | 47 | 20 | 44 | 20 | 57 | 26 | 11 |
| 12 | 6 59 | 29 | 54 | 26 | 50 | 24 | 48 | 27 | 49 | 24 | 48 | 33 | 52 | 30 | 44 | 19 | 48 | 19 | 44 | 19 | 58 | 25 | 12 |
| 13 | 7 00 | 29 | 55 | 26 | 51 | 23 | 49 | 26 | 50 | 23 | 49 | 33 | 53 | 29 | 45 | 18 | 49 | 19 | 45 | 18 | 59 | 25 | 13 |
| 14 | 01 | 28 | 56 | 25 | 52 | 22 | 50 | 26 | 51 | 23 | 49 | 32 | 54 | 29 | 45 | 18 | 50 | 18 | 46 | 18 | 7 00 | 24 | 14 |
| 15 | 02 | 28 | 57 | 25 | 53 | 22 | 50 | 25 | 52 | 22 | 50 | 32 | 55 | 28 | 46 | 17 | 50 | 18 | 47 | 17 | 01 | 24 | 15 |
| 16 | 7 03 | 17 27 | 6 58 | 17 24 | 6 54 | 17 21 | 6 51 | 17 25 | 6 53 | 17 22 | 6 51 | 17 31 | 6 55 | 17 28 | 6 47 | 17 17 | 6 51 | 17 22 | 6 48 | 17 17 | 7 02 | 17 23 | 16 |

| तारीख | अमृतसर | | लुधियाना | | अम्बाला | | रोहतक | | कुरुक्षेत्र | | जयपुर | | हिसार | | हरिद्वार | | करनाल | | देहरादून | | कठुआ | | तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | |
| नवं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | नवं. |
| 17 | 7 04 | 17 27 | 6 59 | 17 24 | 6 54 | 17 21 | 6 52 | 17 24 | 6 53 | 17 21 | 6 52 | 17 31 | 6 56 | 17 27 | 6 48 | 17 16 | 6 52 | 17 21 | 6 49 | 17 16 | 7 03 | 17 23 | 17 |
| 18 | 05 | 26 | 7 00 | 23 | 55 | 21 | 53 | 24 | 54 | 21 | 52 | 31 | 57 | 27 | 49 | 16 | 53 | 21 | 49 | 16 | 04 | 22 | 18 |
| 19 | 05 | 26 | 00 | 23 | 56 | 20 | 54 | 24 | 55 | 21 | 53 | 30 | 58 | 27 | 49 | 16 | 54 | 20 | 50 | 16 | 05 | 22 | 19 |
| 20 | 06 | 25 | 01 | 22 | 57 | 20 | 54 | 23 | 56 | 20 | 54 | 30 | 59 | 26 | 50 | 15 | 55 | 20 | 51 | 15 | 05 | 21 | 20 |
| 21 | 07 | 25 | 02 | 22 | 58 | 20 | 55 | 23 | 57 | 20 | 55 | 30 | 6 59 | 26 | 51 | 15 | 55 | 20 | 52 | 15 | 06 | 21 | 21 |
| 22 | 08 | 25 | 03 | 22 | 59 | 19 | 56 | 23 | 58 | 20 | 55 | 30 | 7 00 | 26 | 52 | 15 | 56 | 20 | 53 | 15 | 07 | 20 | 22 |
| 23 | 09 | 24 | 04 | 21 | 6 59 | 19 | 57 | 22 | 58 | 19 | 56 | 29 | 01 | 25 | 53 | 14 | 57 | 19 | 54 | 14 | 08 | 20 | 23 |
| 24 | 10 | 24 | 05 | 21 | 7 00 | 19 | 58 | 22 | 6 59 | 19 | 57 | 29 | 02 | 25 | 54 | 14 | 58 | 19 | 55 | 14 | 09 | 20 | 24 |
| 25 | 11 | 24 | 06 | 21 | 01 | 19 | 58 | 22 | 7 00 | 19 | 58 | 29 | 03 | 25 | 54 | 14 | 6 59 | 19 | 55 | 14 | 10 | 20 | 25 |
| 26 | 12 | 23 | 06 | 21 | 02 | 18 | 6 59 | 22 | 01 | 19 | 59 | 29 | 04 | 25 | 55 | 14 | 7 00 | 19 | 56 | 14 | 11 | 19 | 26 |
| 27 | 12 | 23 | 07 | 21 | 03 | 18 | 7 00 | 22 | 02 | 19 | 6 59 | 29 | 04 | 25 | 56 | 14 | 01 | 19 | 57 | 13 | 12 | 19 | 27 |
| 28 | 13 | 23 | 08 | 20 | 04 | 18 | 01 | 22 | 02 | 18 | 7 00 | 29 | 05 | 25 | 57 | 13 | 02 | 18 | 58 | 13 | 13 | 19 | 28 |
| 29 | 14 | 23 | 09 | 20 | 04 | 18 | 02 | 22 | 03 | 18 | 01 | 29 | 06 | 25 | 58 | 13 | 02 | 18 | 59 | 13 | 13 | 19 | 29 |
| 30 | 7 15 | 17 23 | 7 10 | 17 20 | 7 05 | 17 18 | 7 02 | 17 22 | 7 04 | 17 18 | 7 02 | 17 29 | 7 07 | 17 24 | 6 59 | 17 13 | 7 03 | 17 18 | 6 59 | 17 13 | 7 14 | 17 19 | 30 |
| दिसं. | 7 16 | 17 23 | 7 10 | 17 20 | 7 06 | 17 18 | 7 03 | 17 21 | 7 05 | 17 18 | 7 02 | 17 29 | 7 08 | 17 24 | 6 59 | 17 13 | 7 04 | 17 18 | 7 00 | 17 13 | 7 15 | 17 18 | दिसं. |
| 2 | 17 | 23 | 11 | 20 | 07 | 18 | 04 | 21 | 06 | 18 | 03 | 29 | 08 | 24 | 7 00 | 13 | 04 | 18 | 01 | 13 | 16 | 18 | 2 |
| 3 | 17 | 23 | 12 | 20 | 08 | 18 | 05 | 22 | 06 | 18 | 04 | 29 | 09 | 24 | 01 | 13 | 05 | 18 | 02 | 13 | 17 | 18 | 3 |
| 4 | 18 | 23 | 13 | 20 | 08 | 18 | 06 | 22 | 07 | 18 | 04 | 29 | 10 | 25 | 02 | 13 | 06 | 18 | 03 | 13 | 18 | 18 | 4 |
| 5 | 19 | 23 | 14 | 20 | 09 | 18 | 06 | 22 | 08 | 18 | 05 | 29 | 11 | 25 | 02 | 13 | 07 | 18 | 03 | 13 | 18 | 18 | 5 |
| 6 | 20 | 23 | 14 | 20 | 10 | 18 | 07 | 22 | 09 | 19 | 05 | 29 | 11 | 25 | 03 | 13 | 07 | 18 | 04 | 13 | 19 | 18 | 6 |
| 7 | 21 | 23 | 15 | 20 | 11 | 18 | 08 | 22 | 09 | 19 | 07 | 29 | 12 | 25 | 04 | 13 | 08 | 19 | 05 | 13 | 20 | 19 | 7 |
| 8 | 21 | 23 | 16 | 20 | 11 | 18 | 08 | 22 | 10 | 19 | 07 | 29 | 13 | 25 | 05 | 14 | 09 | 19 | 06 | 13 | 21 | 19 | 8 |
| 9 | 22 | 23 | 17 | 21 | 12 | 18 | 09 | 22 | 11 | 19 | 08 | 30 | 13 | 25 | 05 | 14 | 10 | 19 | 06 | 13 | 21 | 19 | 9 |
| 10 | 23 | 23 | 17 | 21 | 13 | 19 | 10 | 22 | 7 12 | 19 | 08 | 30 | 14 | 25 | 06 | 14 | 10 | 19 | 07 | 14 | 22 | 19 | 10 |
| 11 | 24 | 23 | 18 | 21 | 14 | 19 | 11 | 23 | 7 12 | 19 | 09 | 30 | 15 | 26 | 07 | 14 | 11 | 19 | 08 | 14 | 23 | 19 | 11 |
| 12 | 24 | 24 | 19 | 21 | 14 | 19 | 11 | 23 | 13 | 20 | 10 | 30 | 16 | 26 | 07 | 14 | 12 | 20 | 09 | 14 | 24 | 19 | 12 |
| 13 | 25 | 24 | 19 | 22 | 15 | 19 | 12 | 23 | 14 | 20 | 11 | 31 | 16 | 26 | 08 | 15 | 12 | 20 | 09 | 14 | 24 | 20 | 13 |
| 14 | 26 | 24 | 20 | 22 | 16 | 20 | 13 | 24 | 14 | 20 | 11 | 31 | 17 | 27 | 09 | 15 | 13 | 20 | 10 | 15 | 25 | 20 | 14 |
| 15 | 26 | 24 | 21 | 22 | 16 | 20 | 13 | 24 | 15 | 21 | 12 | 31 | 17 | 27 | 09 | 15 | 14 | 21 | 11 | 15 | 26 | 20 | 15 |
| 16 | 27 | 25 | 21 | 23 | 17 | 20 | 14 | 24 | 16 | 21 | 12 | 32 | 18 | 27 | 10 | 16 | 14 | 21 | 11 | 15 | 26 | 21 | 16 |
| 17 | 27 | 25 | 22 | 23 | 17 | 21 | 14 | 25 | 16 | 21 | 13 | 32 | 19 | 28 | 11 | 16 | 15 | 21 | 12 | 16 | 27 | 21 | 17 |
| 18 | 28 | 26 | 23 | 23 | 18 | 21 | 15 | 25 | 17 | 22 | 14 | 33 | 19 | 28 | 11 | 17 | 15 | 22 | 12 | 16 | 28 | 21 | 18 |
| 19 | 29 | 26 | 23 | 24 | 18 | 22 | 15 | 26 | 17 | 22 | 14 | 33 | 20 | 29 | 12 | 17 | 16 | 22 | 13 | 16 | 28 | 22 | 19 |
| 20 | 29 | 26 | 24 | 24 | 19 | 22 | 16 | 26 | 18 | 23 | 15 | 34 | 20 | 29 | 12 | 17 | 16 | 23 | 13 | 17 | 29 | 22 | 20 |
| 21 | 30 | 27 | 24 | 25 | 20 | 23 | 17 | 26 | 18 | 23 | 15 | 34 | 21 | 30 | 13 | 18 | 17 | 23 | 14 | 17 | 29 | 23 | 21 |
| 22 | 30 | 27 | 25 | 25 | 20 | 23 | 17 | 27 | 19 | 24 | 16 | 34 | 21 | 30 | 13 | 18 | 17 | 24 | 15 | 18 | 30 | 23 | 22 |
| 23 | 31 | 28 | 25 | 26 | 20 | 24 | 17 | 27 | 19 | 24 | 16 | 35 | 22 | 31 | 14 | 19 | 18 | 24 | 15 | 18 | 30 | 24 | 23 |
| 24 | 31 | 28 | 26 | 26 | 21 | 24 | 18 | 28 | 20 | 25 | 17 | 36 | 22 | 31 | 14 | 20 | 18 | 25 | 15 | 19 | 31 | 24 | 24 |
| 25 | 32 | 29 | 26 | 27 | 21 | 25 | 18 | 29 | 20 | 25 | 17 | 36 | 23 | 32 | 15 | 20 | 19 | 25 | 16 | 20 | 31 | 25 | 25 |
| 26 | 32 | 30 | 26 | 27 | 22 | 25 | 19 | 29 | 21 | 26 | 18 | 37 | 23 | 32 | 15 | 21 | 19 | 26 | 16 | 20 | 31 | 25 | 26 |
| 27 | 32 | 30 | 27 | 28 | 22 | 26 | 19 | 30 | 21 | 27 | 18 | 37 | 23 | 33 | 16 | 21 | 20 | 27 | 17 | 21 | 32 | 26 | 27 |
| 28 | 33 | 31 | 27 | 29 | 22 | 27 | 20 | 30 | 21 | 27 | 18 | 38 | 24 | 33 | 16 | 22 | 20 | 27 | 17 | 21 | 32 | 27 | 28 |
| 29 | 33 | 31 | 28 | 29 | 23 | 27 | 20 | 31 | 22 | 28 | 19 | 39 | 24 | 34 | 16 | 23 | 20 | 28 | 17 | 22 | 33 | 27 | 29 |
| 30 | 33 | 32 | 28 | 30 | 23 | 28 | 20 | 32 | 22 | 29 | 19 | 39 | 24 | 35 | 17 | 23 | 21 | 28 | 18 | 23 | 33 | 28 | 30 |
| 31 | 7 34 | 17 33 | 7 28 | 17 31 | 7 23 | 17 29 | 7 21 | 17 32 | 7 22 | 17 29 | 7 19 | 17 40 | 7 25 | 17 35 | 7 17 | 17 24 | 7 21 | 17 29 | 7 18 | 17 23 | 7 33 | 17 29 | 31 |

# चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल घण्टा-मिनटों में ( भा. स्टैं. टा. ) वि. संवत् २०८१ ( सन् 2024-25 ई. )

## ◆◆◆◆◆◆ ( चन्द्रमा के नक्षत्र चरणों के अनुसार बच्चों ( शिशुओं ) का नामकरण करें। ) ◆◆◆◆◆◆

आगे लिखे चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का समय घण्टे मिनटों में भा. स्टैं. टा. अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह ( 12 ) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का प्रारम्भ काल है, न कि समाप्तिकाल। इस सारिणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय ( घण्टा-मिनटों में ) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी-पलों या भयात्-भभोग की गणित प्रक्रिया से नक्षत्र-चरण निकालने का झंझट नहीं होगा।

| चन्द्र नक्षत्र चरण → | | 1 | | 2 | | 3 | | 4 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अप्रै. 2024 | नक्षत्र | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. |
| 8/9 अप्रै. | रेवती | 10 | 13 | 15 | 33 | 20 | 53 | 2 | 12 |
| 9/10 अप्रै. | अश्वि. | 7 | 32 | 13 | 25 | 19 | 19 | 1 | 12 |
| 10 अप्रै. | भरणी | 5 | 07 | 10 | 37 | 16 | 07 | 21 | 37 |
| 11 अप्रै. | कृतिका | 3 | 06 | 8 | 40 | 4 | 20 | 19 | 59 |
| 12 अप्रै. | रोहिणी | 1 | 38 | 7 | 26 | 13 | 15 | 19 | 03 |
| 13 अप्रै. | मृगशिर | 0 | 51 | 6 | 48 | 12 | 44 | 18 | 47 |
| 14 अप्रै. | आर्द्रा | 0 | 49 | 7 | 00 | 13 | 12 | 19 | 23 |
| 15 अप्रै. | पुन | 1 | 35 | 7 | 58 | 14 | 20 | 20 | 39 |
| 16 अप्रै. | पुष्य | 3 | 06 | 9 | 38 | 16 | 11 | 22 | 43 |
| 17/18 अप्रै. | आश्ले. | 5 | 16 | 11 | 56 | 18 | 37 | 1 | 17 |
| 18/19 अप्रै. | मघा | 7 | 57 | 14 | 42 | 21 | 27 | 4 | 12 |
| 19/20 अप्रै. | पू.फा. | 10 | 57 | 17 | 44 | 0 | 30 | 7 | 17 |
| 20/21 अप्रै. | उ.फा. | 14 | 04 | 20 | 51 | 3 | 36 | 10 | 22 |
| 21/22 अप्रै. | हस्त | 17 | 08 | 23 | 51 | 6 | 34 | 13 | 17 |
| 22/23 अप्रै. | चित्रा | 20 | 00 | 2 | 39 | 9 | 19 | 15 | 55 |
| 23/24 अप्रै. | स्वाती | 22 | 32 | 5 | 04 | 11 | 37 | 18 | 09 |
| 25 अप्रै. | विशाखा | 0 | 41 | 7 | 07 | 13 | 34 | 20 | 01 |
| 26 अप्रै. | अनु. | 2 | 24 | 8 | 43 | 15 | 02 | 21 | 21 |
| 27 अप्रै. | ज्ये. | 3 | 40 | 9 | 52 | 16 | 04 | 22 | 16 |
| 28 अप्रै. | मूल | 4 | 28 | 10 | 33 | 16 | 39 | 22 | 44 |
| 29 अप्रै. | पू.षा. | 4 | 49 | 10 | 47 | 16 | 46 | 22 | 44 |
| 30 अप्रै. | उ.षा. | 4 | 43 | 10 | 37 | 16 | 28 | 22 | 18 |
| 1 मई | श्रवण | 4 | 09 | 9 | 54 | 15 | 40 | 21 | 25 |
| 2 मई | धनि. | 3 | 11 | 8 | 50 | 14 | 33 | 20 | 09 |
| 3 मई | शत. | 1 | 49 | 7 | 23 | 12 | 58 | 18 | 32 |

| चन्द्र नक्षत्र चरण → | | 1 | | 2 | | 3 | | 4 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मई 2024 | नक्षत्र | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. |
| 4 मई | पू.भा. | 0 | 06 | 5 | 36 | 11 | 07 | 16 | 38 |
| 4/5 मई | उ.भा. | 22 | 07 | 3 | 34 | 9 | 02 | 14 | 30 |
| 5/6 मई | रेवती | 19 | 57 | 1 | 23 | 6 | 50 | 12 | 17 |
| 6/7 मई | अश्वि. | 17 | 43 | 23 | 10 | 4 | 38 | 10 | 05 |
| 7/8 मई | भरणी | 15 | 32 | 21 | 02 | 2 | 33 | 8 | 04 |
| 8/9 मई | कृतिका | 13 | 34 | 19 | 07 | 0 | 43 | 6 | 20 |
| 9/10 मई | रोहिणी | 11 | 56 | 17 | 39 | 23 | 21 | 5 | 04 |
| 10/11 मई | मृग. | 10 | 47 | 16 | 37 | 22 | 26 | 4 | 21 |
| 11/12 मई | आर्द्रा | 10 | 15 | 16 | 18 | 22 | 21 | 4 | 24 |
| 12/13 मई | पुर्न. | 10 | 27 | 16 | 39 | 22 | 53 | 5 | 05 |
| 13/14 मई | पुष्य | 11 | 24 | 17 | 49 | 0 | 15 | 6 | 40 |
| 14/15 मई | आश्ले. | 13 | 05 | 19 | 40 | 2 | 15 | 8 | 50 |
| 15/16 मई | मघा | 15 | 25 | 22 | 07 | 4 | 50 | 11 | 32 |
| 16/17 मई | पू.फा. | 18 | 14 | 1 | 00 | 7 | 46 | 14 | 32 |
| 17/18 मई | उ.फा. | 21 | 18 | 4 | 05 | 10 | 51 | 17 | 37 |
| 19 मई | हस्त | 0 | 23 | 7 | 06 | 13 | 50 | 20 | 33 |
| 20 मई | चित्रा | 3 | 16 | 9 | 55 | 16 | 35 | 23 | 12 |
| 21/22 मई | स्वाती | 5 | 46 | 12 | 16 | 18 | 47 | 1 | 17 |
| 22/23 मई | विशा. | 7 | 47 | 14 | 09 | 20 | 32 | 2 | 56 |
| 23/24 मई | अनु. | 9 | 15 | 15 | 29 | 21 | 42 | 3 | 56 |
| 24/25 मई | ज्ये. | 10 | 10 | 16 | 16 | 22 | 23 | 4 | 30 |
| 25/26 मई | मूल | 10 | 36 | 16 | 36 | 22 | 36 | 4 | 36 |
| 26/27 मई | पू.षा. | 10 | 36 | 16 | 30 | 22 | 25 | 4 | 20 |
| 27/28 मई | उ.षा. | 10 | 14 | 16 | 05 | 21 | 54 | 3 | 44 |
| 28/29 मई | श्रवण | 9 | 34 | 15 | 20 | 21 | 07 | 2 | 53 |

| चन्द्र नक्षत्र चरण → | | 1 | | 2 | | 3 | | 4 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मई 2024 | नक्षत्र | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. |
| 29/30 मई | धनि. | 8 | 39 | 14 | 22 | 20 | 06 | 1 | 48 |
| 30/31 मई | शत. | 7 | 31 | 13 | 12 | 18 | 52 | 0 | 33 |
| 31 मई | पू.भा. | 6 | 14 | 11 | 52 | 17 | 31 | 23 | 10 |
| 1 जून | उ.भा. | 4 | 48 | 10 | 25 | 16 | 02 | 21 | 39 |
| 2 जून | रेवती | 3 | 16 | 8 | 52 | 14 | 28 | 20 | 04 |
| 3 जून | अश्वि. | 1 | 40 | 7 | 16 | 12 | 53 | 18 | 29 |
| 4 जून | भरणी | 0 | 05 | 5 | 42 | 11 | 20 | 16 | 57 |
| 4/5 जून | कृतिका | 22 | 35 | 4 | 14 | 9 | 56 | 15 | 36 |
| 5/6 जून | रोहि. | 21 | 16 | 3 | 01 | 8 | 47 | 14 | 32 |
| 6/7 जून | मृग. | 20 | 17 | 2 | 07 | 7 | 56 | 13 | 50 |
| 7/8 जून | आर्द्रा | 19 | 43 | 1 | 43 | 7 | 43 | 13 | 43 |
| 8/9 जून | पुन. | 19 | 43 | 1 | 52 | 8 | 00 | 14 | 07 |
| 9/10 जून | पुष्य | 20 | 21 | 2 | 41 | 8 | 00 | 14 | 20 |
| 10/11 जून | आश्ले. | 21 | 40 | 4 | 10 | 10 | 39 | 17 | 09 |
| 11/12 जून | मघा | 23 | 39 | 6 | 17 | 12 | 56 | 19 | 34 |
| 13 जून | पू.फा. | 2 | 12 | 8 | 56 | 15 | 41 | 22 | 25 |
| 14/15 जून | उ.फा. | 5 | 09 | 11 | 55 | 18 | 42 | 1 | 28 |
| 15/16 जून | हस्त | 8 | 14 | 14 | 59 | 21 | 43 | 4 | 28 |
| 16/17 जून | चित्रा | 11 | 13 | 17 | 53 | 0 | 35 | 7 | 14 |
| 17/18 जून | स्वाती | 13 | 51 | 20 | 22 | 2 | 54 | 9 | 25 |
| 18/19 जून | विशा. | 15 | 56 | 22 | 20 | 4 | 41 | 11 | 05 |
| 19/20 जून | अनु. | 17 | 23 | 23 | 35 | 5 | 46 | 11 | 58 |
| 20/21 जून | ज्ये. | 18 | 10 | 0 | 12 | 6 | 15 | 12 | 17 |
| 21/22 जून | मूल | 18 | 19 | 0 | 13 | 6 | 06 | 12 | 00 |
| 22/23 जून | पू.षा. | 17 | 54 | 23 | 41 | 5 | 29 | 11 | 17 |

# चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

| चन्द्र नक्षत्र चरण → | | 1 | | 2 | | 3 | | 4 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जून 2024 | नक्षत्र | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. |
| 23/24 जून | उ.षा. | 17 | 04 | 22 | 48 | 4 | 29 | 10 | 12 |
| 24/25 जून | श्रवण | 15 | 54 | 21 | 34 | 3 | 13 | 8 | 53 |
| 25/26 जून | धनि. | 14 | 33 | 20 | 11 | 1 | 49 | 7 | 27 |
| 26/27 जून | शत. | 13 | 05 | 18 | 43 | 0 | 21 | 5 | 59 |
| 27/28 जून | पू.भा. | 11 | 37 | 17 | 15 | 22 | 54 | 4 | 32 |
| 28/29 जून | उ.भा. | 10 | 11 | 15 | 50 | 21 | 30 | 3 | 10 |
| 29/30 जून | रेवती | 8 | 49 | 14 | 30 | 20 | 12 | 1 | 53 |
| 30/1 जुला | अश्वि. | 7 | 34 | 13 | 17 | 19 | 00 | 0 | 43 |
| 1 जुला. | भरणी | 6 | 26 | 12 | 11 | 17 | 57 | 23 | 42 |
| 2 जुला. | कृति. | 5 | 27 | 11 | 14 | 17 | 04 | 22 | 52 |
| 3 जुला. | रोहि. | 4 | 40 | 10 | 32 | 16 | 24 | 22 | 16 |
| 4 जुला. | मृग. | 4 | 08 | 10 | 04 | 15 | 58 | 21 | 57 |
| 5 जुला. | आर्द्रा | 3 | 55 | 9 | 58 | 16 | 01 | 22 | 04 |
| 6 जुला. | पुन. | 4 | 07 | 10 | 16 | 16 | 26 | 22 | 35 |
| 7 जुला. | पुष्य | 4 | 48 | 11 | 07 | 17 | 25 | 23 | 44 |
| 8/9 जुला. | आश्ले. | 6 | 03 | 12 | 30 | 18 | 58 | 1 | 26 |
| 9/10 जुला | मघा | 7 | 53 | 14 | 28 | 21 | 04 | 3 | 40 |
| 10/11 जुला | पू.फा. | 10 | 15 | 16 | 57 | 23 | 40 | 6 | 22 |
| 11/12 जुला | उ.फा. | 13 | 04 | 19 | 50 | 2 | 37 | 9 | 23 |
| 12/13 जुला | हस्त | 16 | 09 | 22 | 55 | 5 | 42 | 12 | 28 |
| 13/14 जुला | चित्रा | 19 | 15 | 1 | 59 | 8 | 43 | 15 | 25 |
| 14/15 जुला | स्वाती | 22 | 07 | 4 | 43 | 11 | 18 | 17 | 54 |
| 16 जुला. | विशा. | 0 | 30 | 6 | 58 | 13 | 24 | 19 | 52 |
| 17 जुला. | अनु. | 2 | 14 | 8 | 29 | 14 | 43 | 20 | 58 |
| 18 जुला. | ज्ये. | 3 | 13 | 9 | 16 | 15 | 19 | 21 | 22 |
| 19 जुला. | मूल | 3 | 25 | 9 | 17 | 15 | 10 | 21 | 03 |
| 20 जुला. | पू.षा. | 2 | 55 | 8 | 38 | 14 | 22 | 20 | 06 |
| 21 जुला. | उ.षा. | 1 | 49 | 7 | 27 | 13 | 04 | 18 | 40 |
| 22 जुला. | श्रवण | 0 | 14 | 5 | 46 | 11 | 17 | 16 | 49 |
| 22/23 जुला | धनि. | 22 | 21 | 3 | 50 | 9 | 21 | 14 | 49 |
| 23/24 जुला | शत. | 20 | 18 | 1 | 47 | 7 | 17 | 12 | 46 |

| चन्द्र नक्षत्र चरण → | | 1 | | 2 | | 3 | | 4 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जुला. 2024 | नक्षत्र | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. |
| 24/25 जुला | पू.भा. | 18 | 15 | 23 | 45 | 5 | 15 | 10 | 45 |
| 25/26 जुला | उ.भा. | 16 | 17 | 21 | 50 | 3 | 24 | 8 | 57 |
| 26/27 जुला | रेवती | 14 | 30 | 20 | 07 | 1 | 45 | 7 | 23 |
| 27/28 जुला | अश्वि. | 13 | 00 | 18 | 42 | 0 | 24 | 6 | 06 |
| 28/29 जुला | भरणी | 11 | 48 | 17 | 35 | 23 | 21 | 5 | 08 |
| 29/30 जुला | कृति | 10 | 55 | 16 | 45 | 22 | 37 | 4 | 31 |
| 30/31 जुला | रोहि | 10 | 23 | 16 | 20 | 22 | 18 | 4 | 16 |
| 31/1 अग. | मृग. | 10 | 13 | 16 | 16 | 22 | 16 | 4 | 20 |
| 1/2 अग. | आर्द्रा | 10 | 24 | 16 | 33 | 22 | 41 | 4 | 50 |
| 2/3 अग. | पुन. | 10 | 59 | 17 | 14 | 23 | 28 | 5 | 42 |
| 3/4 अग. | पुष्य | 11 | 59 | 18 | 21 | 0 | 42 | 7 | 04 |
| 4/5 अग. | आश्ले. | 13 | 26 | 19 | 55 | 2 | 24 | 8 | 53 |
| 5/6 अग. | मघा | 15 | 22 | 21 | 57 | 4 | 33 | 11 | 09 |
| 6/7 अग. | पू.फा. | 17 | 44 | 24 | 26 | 7 | 07 | 13 | 49 |
| 7/8 अग. | उ.फा. | 20 | 31 | 3 | 15 | 10 | 20 | 16 | 48 |
| 8/9 अग. | हस्त | 23 | 34 | 6 | 22 | 13 | 09 | 19 | 57 |
| 10 अग. | चित्रा | 2 | 45 | 9 | 31 | 16 | 18 | 23 | 03 |
| 11/12 अग. | स्वाती | 5 | 49 | 12 | 30 | 19 | 11 | 1 | 52 |
| 12/13 अग. | विशा. | 8 | 33 | 15 | 07 | 21 | 40 | 4 | 15 |
| 13/14 अग. | अनु. | 10 | 44 | 17 | 06 | 23 | 29 | 5 | 51 |
| 14/15 अग. | ज्ये. | 12 | 13 | 18 | 23 | 0 | 33 | 6 | 43 |
| 15/16 अग. | मूल | 12 | 53 | 18 | 51 | 0 | 48 | 6 | 46 |
| 16/17 अग. | पू.,षा. | 12 | 44 | 18 | 30 | 0 | 17 | 6 | 03 |
| 17/18 अग. | उ.षा. | 11 | 49 | 17 | 29 | 23 | 04 | 4 | 40 |
| 18/19 अग. | श्रवण | 10 | 15 | 15 | 44 | 21 | 12 | 2 | 41 |
| 19/20 अग. | धनि. | 8 | 10 | 13 | 36 | 19 | 00 | 0 | 22 |
| 20 अग. | शत. | 5 | 45 | 11 | 06 | 16 | 28 | 21 | 49 |
| 21 अग. | पू.भा. | 3 | 10 | 8 | 31 | 13 | 52 | 19 | 12 |
| 22 अग. | उ.भा. | 0 | 34 | 5 | 57 | 11 | 20 | 16 | 43 |
| 22/23 अग. | रेवती | 22 | 06 | 3 | 33 | 9 | 00 | 14 | 27 |
| 23/24 अग. | अश्वि. | 19 | 54 | 1 | 27 | 7 | 00 | 12 | 33 |

| चन्द्र नक्षत्र चरण → | | 1 | | 2 | | 3 | | 4 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अग. 2024 | नक्षत्र | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. |
| 24/25 अग. | भरणी | 18 | 06 | 23 | 46 | 5 | 25 | 11 | 05 |
| 25/26 अग. | कृतिका | 16 | 45 | 22 | 30 | 4 | 20 | 10 | 08 |
| 26/27 अग. | रोहि. | 15 | 55 | 21 | 51 | 3 | 46 | 9 | 42 |
| 27/28 अग. | मृग. | 15 | 38 | 21 | 40 | 3 | 42 | 9 | 48 |
| 28/29 अग. | आर्द्रा | 15 | 53 | 22 | 05 | 4 | 16 | 10 | 28 |
| 29/30 अग. | पुर्न | 16 | 40 | 22 | 58 | 5 | 16 | 11 | 34 |
| 30/31 अग. | पुष्य | 17 | 56 | 0 | 22 | 6 | 48 | 13 | 14 |
| 31/1 सितं. | आश्ले. | 19 | 40 | 2 | 12 | 8 | 45 | 15 | 17 |
| 1/2 सितं. | मघा | 21 | 49 | 4 | 27 | 11 | 04 | 17 | 42 |
| 3 सितं. | पू.फा. | 0 | 20 | 7 | 03 | 13 | 45 | 20 | 28 |
| 4 सितं. | उ.फा. | 3 | 11 | 9 | 56 | 16 | 43 | 23 | 29 |
| 5/6 सितं. | हस्त | 6 | 15 | 13 | 02 | 19 | 50 | 2 | 38 |
| 6/7 सितं. | चित्रा | 9 | 25 | 16 | 12 | 23 | 01 | 5 | 47 |
| 7/8 सितं. | स्वाती | 12 | 34 | 19 | 18 | 2 | 03 | 8 | 47 |
| 8/9 सितं. | विशा. | 15 | 31 | 22 | 09 | 4 | 50 | 11 | 29 |
| 9/10 सितं. | अनु. | 18 | 04 | 0 | 34 | 7 | 04 | 13 | 34 |
| 10/11सितं. | ज्ये. | 20 | 04 | 2 | 23 | 8 | 43 | 15 | 03 |
| 11/12सितं. | मूल | 21 | 22 | 3 | 30 | 9 | 37 | 15 | 45 |
| 12/13सितं. | पू.षा. | 21 | 53 | 3 | 49 | 9 | 44 | 15 | 40 |
| 13/14सितं. | उ.षा. | 21 | 36 | 3 | 24 | 9 | 08 | 14 | 51 |
| 14/15सितं. | श्रवण | 20 | 33 | 2 | 07 | 7 | 41 | 3 | 15 |
| 15/16सितं. | धनि. | 18 | 49 | 0 | 18 | 5 | 45 | 11 | 10 |
| 16/17सितं. | शत. | 16 | 33 | 21 | 53 | 3 | 13 | 8 | 33 |
| 17/18सितं. | पू.भा. | 13 | 53 | 19 | 10 | 0 | 26 | 5 | 44 |
| 18/19सितं. | उ.भा. | 11 | 00 | 16 | 16 | 21 | 32 | 2 | 48 |
| 19 सितं. | रेवती | 8 | 04 | 13 | 22 | 18 | 39 | 23 | 57 |
| 20 सितं. | अश्वि. | 5 | 15 | 10 | 37 | 15 | 59 | 21 | 21 |
| 21 सितं. | भरणी | 2 | 43 | 8 | 11 | 13 | 40 | 19 | 08 |
| 22 सितं. | कृति | 0 | 36 | 6 | 09 | 11 | 52 | 17 | 28 |
| 22/23सितं. | रोहि | 23 | 03 | 4 | 49 | 10 | 36 | 16 | 22 |
| 23/24सितं. | मृग. | 22 | 08 | 4 | 02 | 9 | 56 | 15 | 56 |

# चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

| चन्द्र नक्षत्र चरण → | | 1 | | 2 | | 3 | | 4 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सितं. 2024 | नक्षत्र | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. |
| 24/25 सितं. | आर्द्रा | 21 | 54 | 4 | 01 | 10 | 09 | 16 | 17 |
| 25/26 सितं. | पुर्न | 22 | 24 | 4 | 39 | 10 | 56 | 17 | 13 |
| 26/27 सितं. | पुष्य | 23 | 34 | 6 | 01 | 12 | 27 | 18 | 54 |
| 28 सितं. | आश्ले. | 1 | 21 | 7 | 55 | 14 | 30 | 21 | 04 |
| 29 सितं. | मघा | 3 | 38 | 10 | 18 | 16 | 59 | 23 | 39 |
| 30/1 अक्तू. | पू.फा. | 6 | 19 | 13 | 03 | 19 | 48 | 2 | 32 |
| 1/2 अक्तू. | उ.फा. | 9 | 16 | 16 | 02 | 22 | 49 | 5 | 36 |
| 2/3 अक्तू. | हस्त | 12 | 23 | 19 | 10 | 1 | 58 | 8 | 45 |
| 3/4 अक्तू. | चित्रा | 15 | 32 | 22 | 18 | 5 | 06 | 11 | 52 |
| 4/5 अक्तू. | स्वाती | 18 | 38 | 1 | 22 | 8 | 05 | 14 | 49 |
| 5/6 अक्तू. | विशा. | 21 | 33 | 4 | 12 | 10 | 53 | 17 | 34 |
| 7 अक्तू. | अनु. | 0 | 11 | 6 | 44 | 13 | 18 | 19 | 52 |
| 8 अक्तू. | ज्ये. | 2 | 25 | 8 | 51 | 15 | 16 | 21 | 42 |
| 9 अक्तू. | मूल | 4 | 08 | 10 | 25 | 16 | 41 | 22 | 58 |
| 10 अक्तू. | पू.षा. | 5 | 15 | 11 | 21 | 17 | 28 | 23 | 35 |
| 11 अक्तू. | उ.षा. | 5 | 41 | 11 | 41 | 17 | 35 | 23 | 30 |
| 12 अक्तू. | श्रवण | 5 | 25 | 11 | 11 | 16 | 56 | 22 | 42 |
| 13 सितं. | धनि. | 4 | 28 | 10 | 06 | 15 | 44 | 21 | 18 |
| 14 सितं. | शत. | 2 | 52 | 8 | 20 | 13 | 47 | 19 | 15 |
| 15 सितं. | पू.भा. | 0 | 43 | 6 | 04 | 11 | 26 | 16 | 49 |
| 15/16 सितं. | उ.भा. | 22 | 09 | 3 | 26 | 8 | 44 | 14 | 01 |
| 16/17 सितं. | रेवती | 19 | 18 | 0 | 33 | 5 | 49 | 11 | 05 |
| 17/18 अक्तू. | अश्वि. | 16 | 20 | 21 | 36 | 2 | 53 | 8 | 10 |
| 18/19 अक्तू. | भरणी | 13 | 26 | 18 | 46 | 0 | 07 | 5 | 27 |
| 19/20 अक्तू. | कृति. | 10 | 47 | 16 | 10 | 21 | 38 | 3 | 04 |
| 20/21 अक्तू. | रोहि. | 8 | 32 | 14 | 07 | 19 | 41 | 1 | 16 |
| 21/22 अक्तू. | मृग. | 6 | 51 | 12 | 34 | 18 | 15 | 0 | 04 |
| 22 अक्तू. | आर्द्रा | 5 | 51 | 11 | 48 | 17 | 45 | 23 | 42 |
| 23/24 अक्तू. | पुन. | 5 | 39 | 11 | 46 | 17 | 55 | 0 | 02 |
| 24/25 अक्तू. | पुष्य | 6 | 16 | 12 | 37 | 18 | 58 | 1 | 19 |
| 25/26 अक्तू. | आश्ले. | 7 | 40 | 14 | 11 | 20 | 43 | 3 | 15 |

| चन्द्र नक्षत्र चरण → | | 1 | | 2 | | 3 | | 4 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अक्तू. 2024 | नक्षत्र | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. |
| 26/27 अक्तू. | मघा | 9 | 46 | 16 | 25 | 23 | 05 | 5 | 45 |
| 27/28 अक्तू. | पू.फा. | 12 | 24 | 19 | 09 | 1 | 54 | 8 | 39 |
| 28/29 अक्तू. | उ.फा. | 15 | 24 | 22 | 11 | 4 | 59 | 11 | 47 |
| 29/30 अक्तू. | हस्त | 18 | 34 | 1 | 21 | 8 | 09 | 14 | 57 |
| 30/31 अक्तू. | चित्रा | 21 | 44 | 4 | 29 | 11 | 16 | 18 | 00 |
| 1 नवं. | स्वाती | 0 | 45 | 7 | 26 | 14 | 08 | 20 | 50 |
| 2 नवं. | विशा | 3 | 31 | 10 | 10 | 16 | 46 | 23 | 24 |
| 3/4 नवं. | अनु. | 5 | 58 | 12 | 29 | 19 | 01 | 1 | 33 |
| 4/5 नवं. | ज्ये. | 8 | 04 | 14 | 29 | 20 | 55 | 3 | 20 |
| 5/6 नवं. | मूल | 9 | 45 | 16 | 04 | 22 | 22 | 4 | 41 |
| 6/7 नवं. | पू.षा. | 11 | 00 | 17 | 12 | 23 | 23 | 5 | 35 |
| 7/8 नवं. | उ.षा. | 11 | 47 | 17 | 54 | 23 | 57 | 5 | 59 |
| 8/9 नवं. | श्रवण | 12 | 03 | 17 | 59 | 23 | 56 | 5 | 52 |
| 9/10 नवं. | धनि. | 11 | 48 | 17 | 38 | 23 | 28 | 5 | 14 |
| 10/11 नवं. | शत. | 11 | 00 | 16 | 40 | 22 | 20 | 4 | 00 |
| 11/12 नवं. | पू.भा. | 9 | 40 | 15 | 15 | 20 | 48 | 2 | 22 |
| 12/13 नवं. | उ.भा. | 7 | 52 | 13 | 19 | 18 | 46 | 0 | 13 |
| 13 नवं. | रेवती | 5 | 40 | 11 | 03 | 16 | 25 | 21 | 48 |
| 14 नवं. | अश्वि. | 3 | 11 | 8 | 31 | 13 | 52 | 19 | 13 |
| 15 नवं. | भरणी | 0 | 33 | 5 | 53 | 11 | 14 | 16 | 35 |
| 15/16 नवं. | कृति. | 21 | 55 | 3 | 17 | 8 | 42 | 14 | 05 |
| 16/17 नवं. | रोहि. | 19 | 28 | 0 | 58 | 6 | 29 | 12 | 00 |
| 17/18 नवं. | मृग. | 17 | 23 | 22 | 56 | 4 | 31 | 10 | 08 |
| 18/19 नवं. | आर्द्रा | 15 | 49 | 21 | 36 | 3 | 22 | 9 | 09 |
| 19/20 नवं. | पुन. | 14 | 56 | 20 | 56 | 2 | 50 | 8 | 47 |
| 20/21 नवं. | पुष्य | 14 | 51 | 21 | 02 | 3 | 14 | 9 | 25 |
| 21/22 नवं. | आश्ले. | 15 | 36 | 21 | 59 | 4 | 23 | 10 | 47 |
| 22/23 नवं. | मघा | 17 | 10 | 23 | 44 | 6 | 19 | 12 | 53 |
| 23/24 नवं. | पू.फा. | 19 | 27 | 2 | 09 | 8 | 52 | 15 | 35 |
| 24/25 नवं. | उ.फा. | 22 | 17 | 5 | 02 | 11 | 49 | 18 | 37 |
| 26 नवं. | हस्त | 1 | 24 | 8 | 12 | 14 | 59 | 21 | 47 |

| चन्द्र नक्षत्र चरण → | | 1 | | 2 | | 3 | | 4 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नवं. 2024 | नक्षत्र | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. |
| 27/28 नवं. | चित्रा | 4 | 35 | 11 | 20 | 18 | 07 | 0 | 51 |
| 28/29 नवं. | स्वाती | 7 | 36 | 14 | 16 | 20 | 57 | 3 | 38 |
| 29/30 नवं. | विशा. | 10 | 18 | 16 | 52 | 23 | 28 | 6 | 03 |
| 30/1 दिसं. | अनु. | 12 | 35 | 19 | 02 | 1 | 30 | 7 | 57 |
| 1/2 दिसं. | ज्ये. | 14 | 24 | 20 | 44 | 3 | 05 | 9 | 26 |
| 2/3 दिसं. | मूल | 15 | 46 | 22 | 00 | 4 | 14 | 10 | 28 |
| 3/4 दिसं. | पू.षा. | 16 | 42 | 22 | 50 | 4 | 59 | 11 | 07 |
| 4/5 दिसं. | उ.षा. | 17 | 15 | 23 | 20 | 5 | 22 | 11 | 25 |
| 5/6 दिसं. | श्रवण | 17 | 27 | 23 | 25 | 5 | 23 | 11 | 21 |
| 6/7 दिसं. | धनि. | 17 | 19 | 23 | 13 | 5 | 07 | 10 | 59 |
| 7/8 दिसं. | शत. | 16 | 51 | 22 | 39 | 4 | 27 | 10 | 15 |
| 8/9 दिसं. | पू.भा. | 16 | 03 | 21 | 46 | 3 | 31 | 9 | 15 |
| 9/10 दिसं. | उ.भा. | 14 | 56 | 20 | 34 | 2 | 13 | 7 | 52 |
| 10/11 दिसं. | रेवती | 13 | 30 | 19 | 04 | 0 | 39 | 6 | 14 |
| 11/12 दिसं. | अश्वि. | 11 | 48 | 17 | 19 | 22 | 51 | 4 | 22 |
| 12/13 दिसं. | भरणी | 9 | 53 | 15 | 22 | 20 | 52 | 2 | 21 |
| 13/14 दिसं. | कृति. | 7 | 50 | 13 | 19 | 18 | 49 | 0 | 19 |
| 14 दिसं. | रोहि | 5 | 48 | 11 | 20 | 16 | 51 | 22 | 23 |
| 15 दिसं. | मृग. | 3 | 55 | 9 | 28 | 15 | 04 | 20 | 42 |
| 16 दिसं. | आर्द्रा | 2 | 20 | 8 | 03 | 13 | 47 | 19 | 31 |
| 17 दिसं. | पुर्न | 1 | 14 | 7 | 04 | 12 | 57 | 18 | 48 |
| 18 दिसं. | पुष्य | 0 | 44 | 6 | 48 | 12 | 51 | 18 | 55 |
| 19 दिसं. | आश्ले. | 0 | 59 | 7 | 14 | 13 | 30 | 19 | 45 |
| 20 दिसं. | मघा | 2 | 00 | 8 | 27 | 14 | 53 | 21 | 20 |
| 21 दिसं. | पू.फा. | 3 | 47 | 10 | 24 | 17 | 00 | 23 | 37 |
| 22/23 दिसं. | उ.फा. | 6 | 14 | 12 | 56 | 19 | 40 | 2 | 24 |
| 23/24 दिसं. | हस्त | 9 | 09 | 15 | 56 | 22 | 43 | 5 | 30 |
| 24/25 दिसं. | चित्रा | 12 | 17 | 19 | 03 | 1 | 51 | 8 | 36 |
| 25/26 दिसं. | स्वाती | 15 | 22 | 22 | 04 | 4 | 46 | 11 | 28 |
| 26/27 दिसं. | विशा. | 18 | 10 | 0 | 46 | 7 | 21 | 13 | 57 |
| 27/28 दिसं. | अनु. | 20 | 29 | 2 | 55 | 9 | 21 | 15 | 47 |

# चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

| चन्द्र नक्षत्र चरण→ | | 1 | | 2 | | 3 | | 4 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिसं. 2024 | नक्षत्र | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. |
| 28/29दिसं. | ज्ये. | 22 | 13 | 4 | 30 | 10 | 48 | 17 | 05 |
| 29/30दिसं. | मूल | 23 | 22 | 5 | 31 | 11 | 40 | 17 | 49 |
| 30/31दिसं. | पू.षा. | 23 | 58 | 5 | 59 | 12 | 01 | 18 | 03 |
| 1 जन.(2025) | उ.षा. | 0 | 04 | 6 | 01 | 11 | 56 | 17 | 52 |
| 1/2 जन. | श्रवण | 23 | 46 | 5 | 37 | 11 | 29 | 17 | 20 |
| 2/3 जन. | धनि. | 23 | 11 | 4 | 59 | 10 | 48 | 16 | 36 |
| 3/4 जन. | शत. | 22 | 22 | 4 | 07 | 9 | 53 | 15 | 39 |
| 4/5 जन. | पू.भा. | 21 | 24 | 3 | 07 | 8 | 51 | 14 | 35 |
| 5/6 जन. | उ.भा. | 20 | 18 | 2 | 00 | 7 | 43 | 13 | 25 |
| 6/7 जन. | रेवती | 19 | 07 | 0 | 48 | 6 | 28 | 12 | 09 |
| 7/8 जन. | अश्वि. | 17 | 50 | 23 | 30 | 5 | 10 | 10 | 50 |
| 8/9 जन. | भरणी | 16 | 30 | 22 | 09 | 3 | 49 | 9 | 28 |
| 9/10 जन. | कृति. | 15 | 07 | 20 | 47 | 2 | 26 | 8 | 06 |
| 10/11 जन. | रोहि. | 13 | 46 | 19 | 27 | 1 | 07 | 6 | 48 |
| 11/12 जन. | मृग. | 12 | 29 | 18 | 12 | 23 | 55 | 5 | 40 |
| 12/13 जन. | आर्द्रा | 11 | 25 | 17 | 13 | 23 | 02 | 4 | 50 |
| 13/14 जन. | पुन. | 10 | 38 | 16 | 33 | 22 | 26 | 4 | 20 |
| 14/15 जन. | पुष्य | 10 | 17 | 16 | 20 | 22 | 22 | 4 | 25 |
| 15/16 जन. | आश्ले. | 10 | 28 | 16 | 40 | 22 | 53 | 5 | 05 |
| 16/17 जन. | मघा | 11 | 17 | 17 | 39 | 0 | 01 | 6 | 23 |
| 17/18 जन. | पू.फा. | 12 | 45 | 19 | 17 | 1 | 48 | 8 | 20 |
| 18/19 जन. | उ.फा. | 14 | 52 | 21 | 29 | 4 | 10 | 10 | 50 |
| 19/20 जन. | हस्त | 17 | 30 | 0 | 15 | 7 | 00 | 13 | 45 |
| 20/21 जन. | चित्रा | 20 | 30 | 3 | 17 | 10 | 04 | 16 | 50 |
| 21/22 जन. | स्वा. | 23 | 37 | 6 | 21 | 13 | 06 | 19 | 50 |
| 23 जन. | विशा. | 2 | 34 | 9 | 14 | 15 | 53 | 22 | 33 |
| 24 जन. | अनु. | 5 | 08 | 11 | 08 | 17 | 08 | 23 | 08 |
| 25/26 जन. | ज्ये. | 5 | 08 | 11 | 57 | 18 | 47 | 1 | 37 |
| 26/27 जन. | मूल | 8 | 26 | 14 | 35 | 20 | 44 | 2 | 53 |
| 27/28 जन. | पू.षा. | 9 | 02 | 15 | 01 | 21 | 01 | 3 | 00 |

| चन्द्र नक्षत्र चरण → | | 1 | | 2 | | 3 | | 4 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जन. 2025 | नक्षत्र | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. |
| 28/29 जन. | उ.षा. | 8 | 59 | 14 | 52 | 20 | 42 | 2 | 32 |
| 29/30 जन. | श्रवण | 8 | 21 | 14 | 04 | 19 | 48 | 1 | 32 |
| 30/31 जन. | धनि. | 7 | 15 | 12 | 55 | 18 | 35 | 0 | 14 |
| 31 जन. | शत. | 5 | 51 | 11 | 27 | 17 | 03 | 22 | 39 |
| 1 फर. | पू.भा. | 4 | 15 | 9 | 49 | 15 | 24 | 20 | 59 |
| 2 फर. | उ.भा. | 2 | 33 | 8 | 08 | 13 | 43 | 19 | 18 |
| 3 फर. | रेवती | 0 | 53 | 6 | 29 | 12 | 05 | 17 | 41 |
| 3/4 फर. | अश्वि. | 23 | 17 | 4 | 55 | 10 | 34 | 16 | 12 |
| 4/5 फर. | भरणी | 21 | 50 | 3 | 31 | 9 | 11 | 14 | 52 |
| 5/6 फर. | कृति. | 20 | 33 | 2 | 16 | 8 | 02 | 13 | 46 |
| 6/7 फर. | रोहि. | 19 | 30 | 1 | 17 | 7 | 05 | 12 | 53 |
| 7/8 फर. | मृग. | 18 | 40 | 0 | 30 | 6 | 22 | 12 | 14 |
| 8/9 फर. | आर्द्रा | 18 | 07 | 0 | 04 | 6 | 01 | 11 | 57 |
| 9/10 फर. | पुर्न | 17 | 53 | 23 | 55 | 5 | 56 | 11 | 57 |
| 10/11 फर. | पुष्य | 18 | 01 | 0 | 09 | 6 | 18 | 12 | 26 |
| 11/12 फर. | आश्ले | 18 | 34 | 0 | 49 | 7 | 05 | 13 | 21 |
| 12/13 फर. | मघा | 19 | 36 | 1 | 59 | 8 | 21 | 14 | 44 |
| 13/14 फर. | पू.फा. | 21 | 07 | 3 | 38 | 10 | 08 | 16 | 39 |
| 14/15 फर. | उ.फा. | 23 | 10 | 5 | 45 | 12 | 23 | 19 | 02 |
| 16 फर. | हस्त | 1 | 40 | 8 | 23 | 15 | 05 | 21 | 48 |
| 17/1/8 फर. | चित्रा | 4 | 31 | 11 | 17 | 18 | 03 | 0 | 50 |
| 18/19 फर. | स्वा. | 7 | 36 | 14 | 22 | 21 | 08 | 3 | 54 |
| 19/20 फर. | विशा. | 10 | 40 | 17 | 22 | 0 | 05 | 6 | 50 |
| 20/21 फर. | अनु. | 13 | 30 | 20 | 06 | 2 | 42 | 9 | 18 |
| 21/22 फर. | ज्ये. | 15 | 54 | 22 | 20 | 4 | 47 | 11 | 14 |
| 22/23 फर. | मूल | 17 | 40 | 23 | 56 | 6 | 11 | 12 | 27 |
| 23/24 फर. | पू.षा. | 18 | 43 | 0 | 47 | 6 | 51 | 12 | 55 |
| 24/25 फर. | उ.षा. | 18 | 59 | 0 | 56 | 6 | 48 | 12 | 40 |
| 25/26 फर. | श्रवण | 18 | 31 | 0 | 14 | 5 | 57 | 11 | 40 |
| 26/27 फर. | धनि. | 17 | 23 | 22 | 59 | 4 | 37 | 10 | 11 |

| चन्द्र नक्षत्र चरण → | | 1 | | 2 | | 3 | | 4 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फर. 2025 | नक्षत्र | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. | घं. | मिं. |
| 27/28 फर. | शत. | 15 | 44 | 21 | 13 | 2 | 42 | 8 | 11 |
| 28/1 मार्च | पू.भा. | 13 | 40 | 19 | 06 | 0 | 31 | 5 | 58 |
| 1/2 मार्च | उ.भा. | 11 | 23 | 16 | 47 | 22 | 12 | 3 | 36 |
| 2/3 मार्च | रेवती | 9 | 00 | 14 | 25 | 19 | 49 | 1 | 14 |
| 3 मार्च | अश्वि. | 6 | 39 | 12 | 07 | 17 | 34 | 23 | 02 |
| 4 मार्च | भरणी | 4 | 30 | 10 | 02 | 15 | 34 | 21 | 06 |
| 5 मार्च | कृति. | 2 | 38 | 8 | 13 | 13 | 50 | 19 | 29 |
| 6 मार्च | रोहि. | 1 | 09 | 6 | 53 | 12 | 38 | 18 | 22 |
| 7 मार्च | मृग. | 0 | 06 | 5 | 57 | 11 | 45 | 17 | 41 |
| 7/8 मार्च | आर्द्रा | 23 | 32 | 5 | 31 | 11 | 31 | 17 | 30 |
| 8/9 मार्च | पुन. | 23 | 29 | 5 | 35 | 11 | 40 | 17 | 46 |
| 9/10 मार्च | पुष्य | 23 | 55 | 6 | 09 | 12 | 24 | 18 | 38 |
| 11 मार्च | आश्ले | 0 | 52 | 7 | 13 | 13 | 34 | 19 | 58 |
| 12 मार्च | मघा | 2 | 16 | 8 | 43 | 15 | 11 | 21 | 39 |
| 13 मार्च | पू.फा. | 4 | 06 | 10 | 39 | 17 | 13 | 23 | 47 |
| 14/15 मार्च | उ.फा. | 6 | 20 | 12 | 57 | 19 | 37 | 2 | 16 |
| 15/16 मार्च | हस्त | 8 | 54 | 15 | 37 | 22 | 19 | 5 | 02 |
| 16/17 मार्च | चित्रा | 11 | 45 | 18 | 30 | 1 | 15 | 8 | 02 |
| 17/18 मार्च | स्वा. | 14 | 47 | 21 | 33 | 4 | 20 | 11 | 06 |
| 18/19 मार्च | विशा. | 17 | 52 | 0 | 36 | 7 | 21 | 14 | 07 |
| 19/20 मार्च | अनु. | 20 | 50 | 3 | 30 | 10 | 11 | 16 | 52 |
| 20/21 मार्च | ज्ये. | 23 | 32 | 6 | 05 | 12 | 39 | 19 | 13 |
| 22 मार्च | मूल | 1 | 46 | 8 | 10 | 14 | 35 | 21 | 00 |
| 23 मार्च | पू.षा. | 3 | 24 | 9 | 37 | 15 | 51 | 22 | 05 |
| 24 मार्च | उ.षा. | 4 | 18 | 10 | 25 | 16 | 26 | 22 | 28 |
| 25 मार्च | श्रवण | 4 | 27 | 10 | 18 | 16 | 08 | 21 | 59 |
| 26 मार्च | धनि. | 3 | 50 | 9 | 33 | 15 | 15 | 20 | 52 |
| 27 मार्च | शत. | 2 | 30 | 8 | 01 | 13 | 32 | 19 | 03 |
| 28 मार्च | पू.भा. | 0 | 34 | 5 | 59 | 11 | 23 | 16 | 48 |
| 28/29 मार्च | उ.भा. | 22 | 10 | 3 | 29 | 8 | 49 | 14 | 08 |

# प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

यदि आपको प्रातः साढ़े पाँच बजे के ग्रहस्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रहस्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं–मान लीजिए, आपको **15 अप्रैल, 2024 ई.** की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में **15 अप्रैल** के सामने सूर्य स्पष्ट (0-01°-19′-26″) राशि-अंशादि लिखे गए हैं, जो कि प्रातः साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13/00 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तेरह (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिंट हुआ। अब 7 घण्टे 30 मिंट की गति को 15 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट मिल जाएगा। (16) अप्रै. में से 15 अप्रै. का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (58′/44″) प्राप्त हुई। इस दै. गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17-08) कला तथा 30 मिनट की गति (1.13) कला प्राप्त हुई। जमा करने पर साढ़े सात घण्टे की गति (18′.21) हुई, इसको **15 अप्रैल प्रातः 5/30 के सूर्यस्पष्ट** में जमा कर देने पर हमें 15 अप्रैल की दुपै. एक बजे का सूर्यस्पष्ट (0-01°-37′-47″) प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

## ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

| दै. गति (24 घं.) | गति (30 मिंट) | गति 1 घण्टे | गति 2 घण्टे | गति (3 घं.) | गति (4 घं.) | गति (5 घं.) | गति (6 घं.) | गति (7 घं.) | गति (8 घं.) | गति (9 घं.) | दै.गति (24 घं.) | गति (30 मिं.) | गति (1 घं.) | गति (2 घं.) | गति (3 घं.) | गति (4 घं.) | गति (5 घं.) | गति (6 घं.) | गति (7 घं.) | गति 8 घण्टे | गति 9 घण्टे |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कला | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | कला | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. |
| 3' | 0.04 | 0.07 | 0.15 | 0.22 | 0.30 | 0.37 | 0.45 | 0.52 | 1.00 | 1.07 | 61' | 1.16 | 2.32 | 5.05 | 7.37 | 10.10 | 12.42 | 15.15 | 17.47 | 20.20 | 22.52 |
| 5' | 0.06 | 0.12 | 0.25 | 0.37 | 0.50 | 1.02 | 1.11 | 1.27 | 1.40 | 1.52 | 63' | 1.19 | 2.37 | 5.15 | 7.52 | 10.30 | 13.07 | 15.45 | 18.22 | 21.00 | 23.37 |
| 7' | 0.09 | 0.17 | 0.35 | 0.52 | 1.10 | 1.27 | 1.45 | 2.02 | 2.20 | 2.37 | 65' | 1.21 | 2.42 | 5.25 | 8.07 | 10.50 | 13.32 | 16.15 | 18.57 | 21.40 | 24.22 |
| 9' | 0.11 | 0.22 | 0.45 | 1.07 | 1.30 | 1.52 | 2.15 | 2.37 | 3.00 | 3.22 | 67' | 1.24 | 2.47 | 5.35 | 8.22 | 11.10 | 13.57 | 16.45 | 19.25 | 22.20 | 25.07 |
| 11' | 0.14 | 0.27 | 0.55 | 1.22 | 1.50 | 2.17 | 2.45 | 3.12 | 3.40 | 4.07 | 69' | 1.26 | 2.52 | 5.45 | 8.37 | 11.30 | 14.22 | 17.15 | 20.07 | 23.00 | 25.52 |
| 13' | 0.16 | 0.32 | 1.05 | 1.37 | 2.10 | 2.42 | 3.15 | 3.47 | 4.20 | 4.52 | 71' | 1.29 | 2.57 | 5.55 | 8.52 | 11.50 | 14.57 | 17.45 | 20.42 | 23.40 | 26.37 |
| 15' | 0.19 | 0.37 | 1.15 | 1.52 | 2.30 | 3.07 | 3.45 | 4.22 | 5.00 | 5.37 | 73' | 1.31 | 3.02 | 6.05 | 9.07 | 12.10 | 15.12 | 18.15 | 21.17 | 24.20 | 27.22 |
| 17' | 0.21 | 0.42 | 1.25 | 2.07 | 2.50 | 3.32 | 4.15 | 4.57 | 5.40 | 6.22 | 75' | 1.34 | 3.07 | 6.15 | 9.22 | 12.30 | 15.37 | 18.45 | 21.52 | 25.00 | 28.07 |
| 19' | 0.24 | 0.47 | 1.35 | 2.22 | 3.10 | 3.57 | 4.45 | 5.32 | 6.20 | 7.07 | 77' | 1.36 | 3.12 | 6.25 | 9.37 | 12.50 | 16.02 | 19.15 | 22.27 | 25.40 | 28.52 |
| 21' | 0.26 | 0.52 | 1.45 | 2.37 | 3.30 | 4.22 | 5.15 | 6.07 | 7.00 | 7.52 | 79' | 1.39 | 3.17 | 6.35 | 9.52 | 13.10 | 16.27 | 19.45 | 23.02 | 26.20 | 29.37 |
| 23' | 0.29 | 0.57 | 1.55 | 2.52 | 3.50 | 4.47 | 5.45 | 6.42 | 7.40 | 8.37 | 81' | 1.41 | 3.22 | 6.45 | 10.07 | 13.30 | 16.52 | 20.15 | 23.37 | 27.00 | 30.22 |
| 25' | 0.31 | 1.02 | 2.05 | 3.07 | 4.10 | 5.12 | 6.15 | 7.17 | 8.20 | 9.22 | 83' | 1.44 | 3.27 | 6.55 | 10.22 | 13.50 | 17.17 | 20.45 | 24.12 | 27.40 | 31.07 |
| 27' | 0.34 | 1.07 | 2.15 | 3.22 | 4.30 | 5.37 | 6.45 | 7.52 | 9.00 | 10.07 | 85' | 1.46 | 3.32 | 7.05 | 10.37 | 14.10 | 17.42 | 21.15 | 24.47 | 28.20 | 31.52 |
| 29' | 0.36 | 1.12 | 2.25 | 3.37 | 4.50 | 6.02 | 7.15 | 8.27 | 9.40 | 10.52 | 87' | 1.49 | 3.37 | 7.15 | 10.52 | 14.30 | 18.07 | 21.45 | 25.22 | 29.00 | 32.37 |
| 31' | 0.39 | 1.17 | 2.35 | 3.52 | 5.10 | 6.27 | 7.45 | 9.02 | 10.20 | 11.37 | 89' | 1.51 | 3.42 | 7.25 | 11.07 | 14.50 | 18.32 | 22.15 | 25.57 | 29.40 | 33.22 |
| 33' | 0.41 | 1.22 | 2.45 | 4.07 | 5.30 | 6.52 | 8.15 | 9.37 | 11.00 | 12.22 | 90' | 1.52 | 3.45 | 7.30 | 11.15 | 15.00 | 18.45 | 22.30 | 26.15 | 30.00 | 33.45 |
| 35' | 0.44 | 1.27 | 2.55 | 4.22 | 5.50 | 7.17 | 8.45 | 10.12 | 11.40 | 13.07 | 92' | 1.55 | 3.50 | 7.40 | 11.30 | 15.20 | 19.10 | 23.00 | 26.50 | 30.40 | 34.30 |
| 37' | 0.46 | 1.32 | 3.05 | 4.37 | 6.10 | 7.42 | 9.15 | 10.47 | 12.20 | 13.52 | 94' | 1.57 | 3.55 | 7.50 | 11.45 | 15.40 | 19.35 | 23.30 | 27.25 | 31.20 | 35.15 |
| 39' | 0.49 | 1.37 | 3.15 | 4.52 | 6.30 | 8.07 | 9.45 | 11.22 | 13.00 | 14.37 | 96' | 2.00 | 4.00 | 8.00 | 12.00 | 16.00 | 20.00 | 24.00 | 28.00 | 32.00 | 36.00 |
| 41' | 0.51 | 1.42 | 3.25 | 5.07 | 6.50 | 8.32 | 10.15 | 11.57 | 13.40 | 15.22 | 98' | 2.02 | 4.05 | 8.10 | 12.15 | 16.20 | 20.25 | 24.30 | 28.35 | 32.40 | 36.45 |
| 43' | 0.54 | 1.47 | 3.35 | 5.22 | 7.10 | 8.57 | 10.45 | 12.32 | 14.20 | 16.07 | 99' | 2.04 | 4.07 | 8.15 | 12.22 | 16.30 | 20.37 | 24.45 | 28.52 | 33.00 | 37.07 |
| 45' | 0.56 | 1.52 | 3.45 | 5.37 | 7.30 | 9.22 | 11.15 | 13.07 | 15.00 | 16.52 | 100' | 2.05 | 4.10 | 8.20 | 12.30 | 16.40 | 20.50 | 25.00 | 29.10 | 33.20 | 37.30 |
| 47' | 0.59 | 1.57 | 3.55 | 5.52 | 7.50 | 9.47 | 11.45 | 13.42 | 15.40 | 17.37 | 102' | 2.07 | 4.15 | 8.30 | 12.45 | 17.00 | 21.15 | 25.30 | 29.45 | 34.00 | 38.15 |
| 49' | 1.01 | 2.02 | 4.05 | 6.07 | 8.10 | 10.12 | 12.15 | 14.17 | 16.20 | 18.22 | 104' | 2.10 | 4.20 | 8.40 | 13.00 | 17.20 | 21.30 | 26.00 | 30.20 | 34.40 | 39.00 |
| 51' | 1.04 | 2.07 | 4.15 | 6.22 | 8.30 | 10.37 | 12.45 | 14.52 | 17.00 | 19.07 | 106' | 2.12 | 4.25 | 8.50 | 13.15 | 17.40 | 22.05 | 26.30 | 30.55 | 35.20 | 39.45 |
| 53' | 1.06 | 2.12 | 4.25 | 6.37 | 8.50 | 11.02 | 13.15 | 15.27 | 17.40 | 19.52 | 108' | 2.15 | 4.30 | 9.00 | 13.30 | 18.00 | 22.30 | 27.00 | 31.30 | 36.00 | 40.30 |
| 55' | 1.09 | 2.17 | 4.35 | 6.52 | 9.10 | 11.27 | 13.45 | 16.02 | 18.20 | 20.37 | 110' | 2.17 | 4.35 | 9.10 | 13.45 | 18.20 | 22.55 | 27.30 | 32.05 | 36.40 | 41.15 |
| 57' | 1.11 | 2.22 | 4.45 | 7.07 | 9.30 | 11.52 | 14.15 | 16.37 | 19.00 | 21.22 | 112' | 2.20 | 4.40 | 9.20 | 14.00 | 18.40 | 23.20 | 28.00 | 32.40 | 37.20 | 42.00 |
| 58' | 1.12 | 2.25 | 4.50 | 7.15 | 9.40 | 12.05 | 14.30 | 16.55 | 19.20 | 21.45 | 114' | 2.22 | 4.45 | 9.30 | 14.15 | 19.00 | 23.45 | 28.30 | 33.15 | 38.00 | 42.45 |
| 59' | 1.14 | 2.27 | 4.55 | 7.27 | 9.50 | 12.17 | 14.45 | 17.12 | 19.40 | 22.07 | 116' | 2.25 | 4.50 | 9.40 | 14.30 | 19.20 | 24.10 | 29.00 | 33.50 | 38.40 | 43.30 |
| 60' | 1.15 | 2.30 | 5.00 | 7.30 | 10.00 | 12.30 | 15.00 | 17.30 | 20.00 | 22.30 | 118' | 2.27 | 4.55 | 9.50 | 14.45 | 19.40 | 24.35 | 29.30 | 34.25 | 39.20 | 44.15 |

# दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5 घंटे 30 मिंट बजे) (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2081 (सन् 2024–25 ई.)

**नोट**–अपने अभीष्टकाल के अनुसार ग्रह स्पष्ट करने के लिए गत पृष्ठ पर दी गई सारिणी देखें। (1 अप्रै. से 30 अप्रै., 2024 ई. तक)

1 अप्रैल, 2024 ई० को अयनांश = 24°/11′/40″

| ता. | सम्पातिक काल | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | मध्यम राहु | स्पष्ट राहु | सूर्य क्रांति | चंद्र क्रांति | तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अप्रै. | 0-00 Hr. GMT | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | अं. क. | अं. क. | |
| अप्रै. | 12 39 23 | 11 17 33 30 | 8 3 34 15 | 10 12 49 0 | 0 2 58 23 | 0 23 9 33 | 11 00 39 22 | 10 19 24 17 | 11 21 51 54 | 11 21 25 42 | +4 39 | –28 28 | अप्रै. |
| 2 | 12 43 20 | 11 18 32 42 | 8 16 51 23 | 10 13 35 42 | 0 3 1 26 | 0 23 22 26 | 11 01 53 32 | 10 19 31 2 | 11 21 48 43 | 11 21 25 48 | 5 2 | –28 14 | 2 |
| 3 | 12 47 16 | 11 19 31 52 | 9 0 30 45 | 10 14 22 23 | 0 2 57 25 | 0 23 35 23 | 11 03 07 42 | 10 19 37 44 | 11 21 45 33 | 11 21 25 43 | 5 25 | –26 20 | 3 |
| 4 | 12 51 13 | 11 20 31 00 | 9 14 33 12 | 10 15 9 5 | 0 2 46 37 | 0 23 48 23 | 11 04 21 51 | 10 19 44 24 | 11 21 42 22 | 11 21 25 35 | 5 48 | –22 46 | 4 |
| 5 | 12 55 9 | 11 21 30 7 | 9 28 57 49 | 10 15 55 46 | 0 2 29 24 | 0 24 1 27 | 11 05 36 00 | 10 19 51 2 | 11 21 39 11 | 11 21 25 30 | 6 11 | 17 46 | 5 |
| 6 | 12 59 6 | 11 22 29 12 | 10 13 41 35 | 10 16 42 26 | 0 2 6 15 | 0 24 14 34 | 11 06 50 8 | 10 19 57 38 | 11 21 36 00 | 11 21 25 31 | 6 33 | –11 37 | 6 |
| 7 | 13 3 3 | 11 23 28 15 | 10 28 39 3 | 10 17 29 6 | 0 1 37 42 | 0 24 27 44 | 11 08 04 16 | 10 20 04 11 | 11 21 32 50 | 11 21 25 38 | 6 56 | –4 44 | 7 |
| 8 | 13 6 59 | 11 24 27 16 | 11 13 42 48 | 10 18 15 46 | 0 1 4 24 | 0 24 40 57 | 11 09 18 24 | 10 20 10 41 | 11 21 29 39 | 11 21 25 45 | 7 18 | +2 29 | 8 |
| 9 | 13 10 56 | 11 25 26 15 | 11 28 44 10 | 10 19 2 25 | 0 0 27 4 | 0 24 54 13 | 11 10 32 31 | 10 20 17 9 | 11 21 26 28 | 11 21 25 48 | 7 41 | 9 32 | 9 |
| 10 | 13 14 52 | 11 26 25 13 | 0 13 34 35 | 10 19 49 4 | 11 29 46 28 | 0 25 07 32 | 11 11 46 38 | 10 20 23 35 | 11 21 23 17 | 11 21 25 37 | 8 3 | 15 59 | 10 |
| 11 | 13 18 48 | 11 27 24 8 | 0 28 6 39 | 10 20 35 40 | 11 29 3 26 | 0 25 20 53 | 11 13 00 43 | 10 20 29 58 | 11 21 20 7 | 11 21 25 10 | 8 25 | 21 24 | 11 |
| 12 | 13 22 45 | 11 28 23 1 | 1 12 15 12 | 10 21 22 17 | 11 28 18 52 | 0 25 34 18 | 11 14 14 48 | 10 20 36 18 | 11 21 16 56 | 11 21 24 28 | 8 47 | 25 26 | 12 |
| 13 | 13 26 42 | 11 29 21 51 | 1 25 57 29 | 10 22 8 53 | 11 27 33 35 | 0 25 47 45 | 11 15 28 53 | 10 20 42 35 | 11 21 13 45 | 11 21 23 38 | 9 9 | 27 50 | 13 |
| 14 | 13 30 38 | 0 0 20 40 | 2 9 13 22 | 10 22 55 28 | 11 26 48 29 | 0 26 01 15 | 11 16 42 57 | 10 20 48 49 | 11 21 10 34 | 11 21 22 50 | 9 31 | 28 34 | 14 |
| 15 | 13 34 35 | 0 1 19 26 | 2 22 4 39 | 10 23 42 2 | 11 26 4 22 | 0 26 14 47 | 11 17 57 00 | 10 20 55 00 | 11 21 7 24 | 11 21 22 16 | 9 52 | 27 42 | 15 |
| 16 | 13 38 31 | 0 2 18 10 | 3 4 34 33 | 10 24 28 35 | 11 25 22 2 | 0 26 28 21 | 11 19 11 3 | 10 21 01 8 | 11 21 4 12 | 11 21 22 6 | 10 13 | 25 27 | 16 |
| 17 | 13 42 28 | 0 3 16 52 | 3 16 47 17 | 10 25 15 7 | 11 24 42 10 | 0 26 41 57 | 11 20 25 5 | 10 21 07 13 | 11 21 1 1 | 11 21 22 26 | 10 34 | 22 4 | 17 |
| 18 | 13 46 24 | 0 4 15 31 | 3 28 47 21 | 10 26 1 37 | 11 24 5 23 | 0 26 55 36 | 11 21 39 7 | 10 21 13 15 | 11 20 57 50 | 11 21 23 14 | 10 55 | 17 49 | 18 |
| 19 | 13 50 21 | 0 5 14 9 | 4 10 39 20 | 10 26 48 7 | 11 23 32 14 | 0 27 09 16 | 11 22 53 8 | 10 21 19 14 | 11 20 54 40 | 11 21 24 25 | 11 16 | 12 57 | 19 |
| 20 | 13 54 17 | 0 6 12 44 | 4 22 27 29 | 10 27 34 36 | 11 23 3 8 | 0 27 22 59 | 11 24 07 8 | 10 21 25 10 | 11 20 51 29 | 11 21 25 44 | 11 37 | 7 38 | 20 |
| 21 | 13 58 14 | 0 7 11 17 | 5 4 15 43 | 10 28 21 4 | 11 22 38 27 | 0 27 36 43 | 11 25 21 8 | 10 21 31 2 | 11 20 48 19 | 11 21 26 55 | 11 57 | +2 3 | 21 |
| 22 | 14 2 10 | 0 8 9 48 | 5 16 7 27 | 10 29 7 30 | 11 22 18 25 | 0 27 50 30 | 11 26 35 7 | 10 21 36 51 | 11 20 45 8 | 11 21 27 39 | 12 18 | –3 38 | 22 |
| 23 | 14 6 7 | 0 9 8 17 | 5 28 5 26 | 10 29 53 56 | 11 22 3 16 | 0 28 04 18 | 11 27 49 6 | 10 21 42 37 | 11 20 41 57 | 11 21 27 40 | 12 38 | –9 14 | 23 |
| 24 | 14 10 4 | 0 10 6 44 | 6 10 12 4 | 11 0 40 20 | 11 21 53 4 | 0 28 18 8 | 11 29 03 4 | 10 21 48 19 | 11 20 38 47 | 11 21 26 45 | 12 57 | –14 35 | 24 |
| 25 | 14 14 0 | 0 11 5 9 | 6 22 28 59 | 11 1 26 43 | 11 21 47 52 | 0 28 31 59 | 0 00 17 1 | 10 21 53 58 | 11 20 35 36 | 11 21 24 54 | 13 17 | –19 25 | 25 |
| 26 | 14 17 57 | 0 12 3 33 | 7 4 57 37 | 11 2 13 5 | 11 21 47 41 | 0 28 45 52 | 0 01 30 58 | 10 21 59 33 | 11 20 32 25 | 11 21 22 13 | 13 36 | –23 30 | 26 |
| 27 | 14 21 53 | 0 13 1 55 | 7 17 38 56 | 11 2 59 25 | 11 21 52 27 | 0 28 59 47 | 0 02 44 55 | 10 22 05 4 | 11 20 29 15 | 11 21 19 00 | 13 55 | –26 32 | 27 |
| 28 | 14 25 50 | 0 14 0 15 | 8 0 33 44 | 11 3 45 44 | 11 22 2 5 | 0 29 13 43 | 0 03 58 52 | 10 22 10 32 | 11 20 26 4 | 11 21 15 38 | 14 14 | –28 14 | 28 |
| 29 | 14 29 46 | 0 14 58 33 | 8 13 42 54 | 11 4 32 2 | 11 22 16 29 | 0 29 27 40 | 0 05 12 48 | 10 22 15 55 | 11 20 22 53 | 11 21 12 38 | 14 33 | –28 23 | 29 |
| 30 | 14 33 43 | 0 15 56 50 | 8 27 6 57 | 11 5 18 19 | 11 22 35 30 | 0 29 41 39 | 0 06 26 43 | 10 22 21 16 | 11 20 19 42 | 11 21 10 24 | 14 52 | –26 54 | 30 |

## दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं.–30मि.) (1 मई से 3 जून, 2024 ई. तक)

1 मई, 2024 ई० को अयनांश = 24° /11'/44" 1 जून, 2024 ई० को अयनांश = 24° /11'/49"

| ता. | सम्पातिक काल | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | मध्यम राहु | स्पष्ट राहु | सूर्य क्रांति | चंद्र क्रांति | मई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मई | 0-00 Hr. GMT | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | अं. क. | अं. क. | |
| मई | 14 37 40 | 0 16 55 5 | 9 10 46 24 | 11 6 4 34 | 11 22 59 1 | 0 29 55 39 | 0 07 40 39 | 10 22 26 33 | 11 20 16 32 | 11 21 9 12 | +15 10 | –23 49 | मई |
| 2 | 14 41 36 | 0 17 53 20 | 9 24 41 30 | 11 6 50 47 | 11 23 26 51 | 1 0 9 40 | 0 08 54 34 | 10 22 31 45 | 11 20 13 21 | 11 21 9 10 | 15 28 | –19 19 | 2 |
| 3 | 14 45 33 | 0 18 51 32 | 10 8 51 41 | 11 7 37 00 | 11 23 58 52 | 1 0 23 42 | 0 10 8 29 | 10 22 36 54 | 11 20 10 10 | 11 21 10 1 | 15 45 | –13 40 | 3 |
| 4 | 14 49 29 | 0 19 49 43 | 10 23 15 27 | 11 8 23 10 | 11 24 34 53 | 1 0 37 45 | 0 11 22 24 | 10 22 41 58 | 11 20 6 59 | 11 21 11 19 | 16 3 | –7 13 | 4 |
| 5 | 14 53 26 | 0 20 47 52 | 11 7 49 59 | 11 9 9 19 | 11 25 14 46 | 1 0 51 49 | 0 12 36 18 | 10 22 46 58 | 11 20 3 49 | 11 21 12 26 | 16 20 | –0 18 | 5 |
| 6 | 14 57 22 | 0 21 46 1 | 11 22 30 59 | 11 9 55 26 | 11 25 58 20 | 1 1 5 54 | 0 13 50 11 | 10 22 51 55 | 11 20 0 38 | 11 21 12 46 | 16 37 | +6 41 | 6 |
| 7 | 15 1 19 | 0 22 44 7 | 0 7 12 42 | 11 10 41 31 | 11 26 45 29 | 1 1 20 00 | 0 15 4 5 | 10 22 56 47 | 11 19 57 27 | 11 21 11 49 | 16 54 | +13 19 | 7 |
| 8 | 15 5 15 | 0 23 42 12 | 0 21 48 33 | 11 11 27 34 | 11 27 36 4 | 1 1 34 7 | 0 16 17 58 | 10 23 01 34 | 11 19 54 16 | 11 21 9 20 | 17 10 | +19 10 | 8 |
| 9 | 15 9 12 | 0 24 40 16 | 1 6 11 55 | 11 12 13 35 | 11 28 29 55 | 1 1 48 14 | 0 17 31 50 | 10 23 6 17 | 11 19 51 6 | 11 21 5 25 | 17 26 | +23 50 | 9 |
| 10 | 15 13 9 | 0 25 38 18 | 1 20 17 4 | 11 12 59 34 | 11 29 26 56 | 1 2 2 22 | 0 18 45 42 | 10 23 10 56 | 11 19 47 55 | 11 21 0 26 | 17 42 | 26 58 | 10 |
| 11 | 15 17 5 | 0 26 36 18 | 2 3 59 58 | 11 13 45 31 | 0 0 27 1 | 1 2 16 30 | 0 19 59 34 | 10 23 15 31 | 11 19 44 44 | 11 20 54 29 | 17 57 | 28 23 | 11 |
| 12 | 15 21 2 | 0 27 34 16 | 2 17 18 39 | 11 14 31 26 | 0 1 30 2 | 1 2 30 39 | 0 21 13 25 | 10 23 20 1 | 11 19 41 33 | 11 20 49 46 | 18 12 | 28 6 | 12 |
| 13 | 15 24 58 | 0 28 32 13 | 3 0 13 22 | 11 15 17 18 | 0 2 35 55 | 1 2 44 48 | 0 22 27 15 | 10 23 24 26 | 11 19 38 23 | 11 20 45 26 | 18 27 | 26 16 | 13 |
| 14 | 15 28 55 | 0 29 30 7 | 3 12 46 12 | 11 16 3 8 | 0 3 44 33 | 1 2 58 57 | 0 23 41 5 | 10 23 28 47 | 11 19 35 12 | 11 20 42 26 | 18 42 | 23 11 | 14 |
| 15 | 15 32 51 | 1 0 28 0 | 3 25 0 48 | 11 16 48 55 | 0 4 55 53 | 1 3 13 6 | 0 24 54 55 | 10 23 33 3 | 11 19 32 1 | 11 20 40 58 | 18 56 | 19 8 | 15 |
| 16 | 15 36 48 | 1 1 25 52 | 4 7 1 37 | 11 17 34 40 | 0 6 9 50 | 1 3 27 16 | 0 26 8 44 | 10 23 37 14 | 11 19 28 50 | 11 20 40 55 | 19 10 | 14 23 | 16 |
| 17 | 15 40 44 | 1 2 23 41 | 4 18 53 39 | 11 18 20 23 | 0 7 26 21 | 1 3 41 25 | 0 27 22 32 | 10 23 41 21 | 11 19 25 40 | 11 20 41 55 | 19 24 | 9 10 | 17 |
| 18 | 15 44 41 | 1 3 21 29 | 5 0 42 1 | 11 19 6 4 | 0 8 45 23 | 1 3 55 35 | 0 28 36 20 | 10 23 45 23 | 11 19 22 29 | 11 20 43 22 | 19 37 | +3 40 | 18 |
| 19 | 15 48 38 | 1 4 19 15 | 5 12 31 39 | 11 19 51 42 | 0 10 6 53 | 1 4 9 44 | 0 29 50 8 | 10 23 49 20 | 11 19 19 18 | 11 20 44 34 | 19 50 | –1 59 | 19 |
| 20 | 15 52 34 | 1 5 17 0 | 5 24 27 0 | 11 20 37 17 | 0 11 30 48 | 1 4 23 53 | 1 1 3 54 | 10 23 53 12 | 11 19 16 7 | 11 20 44 48 | 20 2 | –7 37 | 20 |
| 21 | 15 56 31 | 1 6 14 43 | 6 6 31 56 | 11 21 22 50 | 0 12 57 7 | 1 4 38 2 | 1 2 17 41 | 10 23 56 59 | 11 19 12 57 | 11 20 43 28 | 20 15 | –13 3 | 21 |
| 22 | 16 0 27 | 1 7 12 24 | 6 18 49 26 | 11 22 8 20 | 0 14 25 49 | 1 4 52 10 | 1 3 31 27 | 10 24 0 41 | 11 19 9 46 | 11 20 40 11 | 20 26 | –18 4 | 22 |
| 23 | 16 4 24 | 1 8 10 5 | 7 1 21 26 | 11 22 53 48 | 0 15 56 52 | 1 5 6 18 | 1 4 45 13 | 10 24 4 18 | 11 19 6 35 | 11 20 34 51 | 20 38 | –22 24 | 23 |
| 24 | 16 8 20 | 1 9 7 43 | 7 14 8 57 | 11 23 39 14 | 0 17 30 15 | 1 5 20 26 | 1 5 58 59 | 10 24 7 51 | 11 19 3 24 | 11 20 27 46 | 20 49 | –25 46 | 24 |
| 25 | 16 12 17 | 1 10 5 21 | 7 27 11 47 | 11 24 24 37 | 0 19 5 57 | 1 5 34 33 | 1 7 12 44 | 10 24 11 18 | 11 19 0 14 | 11 20 19 31 | 21 00 | –27 51 | 25 |
| 26 | 16 16 13 | 1 11 2 58 | 8 10 29 5 | 11 25 9 57 | 0 20 43 59 | 1 5 48 40 | 1 8 26 29 | 10 24 14 40 | 11 18 57 3 | 11 20 11 00 | 21 10 | –28 23 | 26 |
| 27 | 16 20 10 | 1 12 00 33 | 8 23 59 12 | 11 25 55 14 | 0 22 24 20 | 1 6 2 46 | 1 9 40 14 | 10 24 17 57 | 11 18 53 52 | 11 20 3 9 | 21 21 | –27 15 | 27 |
| 28 | 16 24 7 | 1 12 58 7 | 9 07 40 23 | 11 26 40 29 | 0 24 7 00 | 1 6 16 52 | 1 10 53 59 | 10 24 21 8 | 11 18 50 41 | 11 19 56 49 | 21 30 | –24 29 | 28 |
| 29 | 16 28 3 | 1 13 55 41 | 9 21 30 53 | 11 27 25 42 | 0 25 51 58 | 1 6 30 57 | 1 12 7 44 | 10 24 24 15 | 11 18 47 31 | 11 19 52 33 | 21 40 | –20 17 | 29 |
| 30 | 16 32 0 | 1 14 53 14 | 10 05 29 15 | 11 28 10 51 | 0 27 39 14 | 1 6 45 1 | 1 13 21 29 | 10 24 27 16 | 11 18 44 20 | 11 19 50 28 | 21 49 | –14 56 | 30 |
| 31 | 16 35 56 | 1 15 50 45 | 10 19 34 17 | 11 28 55 58 | 0 29 28 47 | 1 6 59 4 | 1 14 35 14 | 10 24 30 11 | 11 18 41 9 | 11 19 50 11 | 21 57 | –8 46 | 31 |
| जून | 16 39 53 | 1 16 48 17 | 11 3 44 57 | 11 29 41 2 | 1 1 20 36 | 1 7 13 6 | 1 15 48 57 | 10 24 33 2 | 11 18 37 58 | 11 19 50 50 | 22 6 | –2 7 | जून |
| 2 | 16 43 49 | 1 17 45 47 | 11 17 59 48 | 0 0 26 3 | 1 3 14 39 | 1 7 27 8 | 1 17 2 43 | 10 24 35 45 | 11 18 34 48 | 11 19 51 23 | 22 13 | +4 40 | 2 |
| 3 | 16 47 46 | 1 18 43 17 | 0 2 16 52 | 0 1 11 1 | 1 5 10 54 | 1 7 41 8 | 1 18 16 28 | 10 24 38 25 | 11 18 31 37 | 11 19 50 44 | 22 21 | 11 14 | 3 |

## दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं.–30मिं.) (4 जून से 7 जुलाई 2024 ई. तक)

1 जुलाई, 2024 ई. को अयनांश = 24°/11′/54″

| ता. | सम्पातिक काल | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | मध्यम राहु | स्पष्ट राहु | सूर्य क्रांति | चंद्र क्रांति | ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जून | 0-00 Hr. GMT | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | अं. क. | अं. क. | |
| 4 | 16 51 42 | 1 19 40 45 | 0 16 33 13 | 0 1 55 55 | 1 7 9 17 | 1 7 55 7 | 1 19 30 13 | 10 24 40 59 | 11 18 28 26 | 11 19 48 1 | +22 28 | +17 14 | 4 |
| 5 | 16 55 39 | 1 20 38 13 | 1 0 45 1 | 0 2 40 47 | 1 9 9 45 | 1 8 9 5 | 1 20 43 58 | 10 24 43 27 | 11 18 25 15 | 11 19 42 47 | 22 35 | 22 14 | 5 |
| 6 | 16 59 36 | 1 21 35 41 | 1 14 47 46 | 0 3 25 35 | 1 11 12 10 | 1 8 23 2 | 1 21 57 42 | 10 24 45 49 | 11 18 22 5 | 11 19 35 10 | 22 41 | 25 55 | 6 |
| 7 | 17 3 32 | 1 22 33 7 | 1 28 36 59 | 0 4 10 20 | 1 13 16 27 | 1 8 36 57 | 1 23 11 27 | 10 24 48 6 | 11 18 18 54 | 11 19 25 41 | 22 47 | 27 58 | 7 |
| 8 | 17 7 29 | 1 23 30 33 | 2 12 8 52 | 0 4 55 2 | 1 15 22 27 | 1 8 50 51 | 1 24 25 11 | 10 24 50 18 | 11 18 15 43 | 11 19 15 17 | 22 52 | 28 18 | 8 |
| 9 | 17 11 25 | 1 24 27 57 | 2 25 20 48 | 0 5 39 39 | 1 17 29 59 | 1 9 4 44 | 1 25 38 55 | 10 24 52 23 | 11 18 12 32 | 11 19 5 2 | 22 57 | 26 59 | 9 |
| 10 | 17 15 22 | 1 25 25 21 | 3 8 12 2 | 0 6 24 14 | 1 19 38 53 | 1 9 18 34 | 1 26 52 39 | 10 24 54 23 | 11 18 9 21 | 11 18 55 56 | 23 2 | 24 16 | 10 |
| 11 | 17 19 18 | 1 26 22 43 | 3 20 43 29 | 0 7 8 45 | 1 21 48 54 | 1 9 32 23 | 1 28 6 23 | 10 24 56 17 | 11 18 6 11 | 11 18 48 43 | 23 6 | 20 28 | 11 |
| 12 | 17 23 15 | 1 27 20 5 | 4 2 57 44 | 0 7 53 12 | 1 23 59 49 | 1 9 46 11 | 1 29 20 06 | 10 24 58 5 | 11 18 3 0 | 11 18 43 45 | 23 10 | 15 52 | 12 |
| 13 | 17 27 11 | 1 28 17 25 | 4 14 58 34 | 0 8 37 35 | 1 26 11 22 | 1 9 59 56 | 2 0 33 50 | 10 24 59 48 | 11 17 59 49 | 11 18 41 00 | 23 14 | 10 45 | 13 |
| 14 | 17 31 8 | 1 29 14 45 | 4 26 50 44 | 0 9 21 55 | 1 28 23 16 | 1 10 13 40 | 2 1 47 33 | 10 25 1 24 | 11 17 56 38 | 11 18 40 00 | 23 17 | +5 17 | 14 |
| 15 | 17 35 5 | 2 0 12 4 | 5 8 39 26 | 0 10 6 11 | 2 0 35 17 | 1 10 27 21 | 2 3 1 16 | 10 25 2 55 | 11 17 53 27 | 11 18 39 59 | 23 19 | –0 19 | 15 |
| 16 | 17 39 1 | 2 1 9 22 | 5 20 30 9 | 0 10 50 24 | 2 2 47 5 | 1 10 41 1 | 2 4 14 59 | 10 25 4 20 | 11 17 50 16 | 11 18 40 1 | +23 21 | –5 57 | 16 |
| 17 | 17 42 58 | 2 2 6 39 | 6 2 28 2 | 0 11 34 32 | 2 4 58 27 | 1 10 54 38 | 2 5 28 42 | 10 25 5 39 | 11 17 47 6 | 11 18 39 7 | 23 23 | –11 25 | 17 |
| 18 | 17 46 54 | 2 3 3 55 | 6 14 37 56 | 0 12 18 37 | 2 7 9 6 | 1 11 8 14 | 2 6 42 24 | 10 25 6 52 | 11 17 43 55 | 11 18 36 26 | 23 25 | –16 33 | 18 |
| 19 | 17 50 51 | 2 4 1 10 | 6 27 3 50 | 0 13 2 38 | 2 9 18 47 | 1 11 21 47 | 2 7 56 7 | 10 25 7 59 | 11 17 40 44 | 11 18 31 23 | 23 26 | –21 6 | 19 |
| 20 | 17 54 47 | 2 4 58 25 | 7 9 48 30 | 0 13 46 36 | 2 11 27 19 | 1 11 35 17 | 2 9 9 49 | 10 25 9 1 | 11 17 37 33 | 11 18 23 47 | 23 26 | –24 49 | 20 |
| 21 | 17 58 44 | 2 5 55 39 | 7 22 53 9 | 0 14 30 29 | 2 13 34 30 | 1 11 48 46 | 2 10 23 31 | 10 25 9 56 | 11 17 34 22 | 11 18 13 57 | 23 26 | –27 20 | 21 |
| 22 | 18 2 40 | 2 6 52 53 | 8 6 17 22 | 0 15 14 19 | 2 15 40 9 | 1 12 2 12 | 2 11 37 14 | 10 25 10 45 | 11 17 31 12 | 11 18 2 37 | 23 26 | –28 21 | 22 |
| 23 | 18 6 37 | 2 7 50 6 | 8 19 59 2 | 0 15 58 4 | 2 17 44 8 | 1 12 15 35 | 2 12 50 56 | 10 25 11 29 | 11 17 28 1 | 11 17 50 51 | 23 25 | –27 40 | 23 |
| 24 | 18 10 34 | 2 8 47 19 | 9 3 54 40 | 0 16 41 40 | 2 19 46 21 | 1 12 28 56 | 2 14 4 38 | 10 25 12 7 | 11 17 24 50 | 11 17 39 51 | 23 24 | –25 15 | 24 |
| 25 | 18 14 30 | 2 9 44 32 | 9 18 0 0 | 0 17 25 24 | 2 21 46 42 | 1 12 42 15 | 2 15 18 20 | 10 25 12 38 | 11 17 21 39 | 11 17 30 43 | 23 23 | –21 18 | 25 |
| 26 | 18 18 27 | 2 10 41 45 | 10 2 10 45 | 0 18 8 59 | 2 23 45 6 | 1 12 55 31 | 2 16 32 3 | 10 25 13 4 | 11 17 18 28 | 11 17 24 9 | 23 21 | –16 5 | 26 |
| 27 | 18 22 23 | 2 11 38 57 | 10 16 23 9 | 0 18 52 29 | 2 25 41 29 | 1 13 8 44 | 2 17 45 45 | 10 25 13 24 | 11 17 15 17 | 11 17 20 20 | 23 19 | –10 00 | 27 |
| 28 | 18 26 20 | 2 12 36 10 | 11 0 34 28 | 0 19 35 55 | 2 27 35 51 | 1 13 21 54 | 2 18 59 28 | 10 25 13 37 | 11 17 12 6 | 11 17 18 49 | 23 16 | –3 25 | 28 |
| 29 | 18 30 16 | 2 13 33 22 | 11 14 42 57 | 0 20 19 17 | 2 29 28 7 | 1 13 35 2 | 2 20 13 11 | 10 25 13 45 | 11 17 8 56 | 11 17 18 40 | 23 13 | +3 19 | 29 |
| 30 | 18 34 13 | 2 14 30 35 | 11 28 47 32 | 0 21 2 35 | 3 1 18 18 | 1 13 48 6 | 2 21 26 54 | 10 25 13 47 | 11 17 5 45 | 11 17 18 36 | 23 9 | 9 52 | 30 |
| जुला | 18 38 10 | 2 15 27 48 | 0 12 47 25 | 0 21 45 48 | 3 3 6 22 | 1 14 1 7 | 2 22 40 37 | 10 25 13 42 | 11 17 2 34 | 11 17 17 18 | 23 5 | 15 54 | जुला |
| 2 | 18 42 6 | 2 16 25 1 | 0 26 41 39 | 0 22 28 57 | 3 4 52 20 | 1 14 14 5 | 2 23 54 21 | 10 25 13 32 | 11 16 59 23 | 11 17 13 45 | 23 1 | 21 4 | 2 |
| 3 | 18 46 3 | 2 17 22 15 | 1 10 28 46 | 0 23 12 2 | 3 6 36 10 | 1 14 27 0 | 2 25 8 5 | 10 25 13 16 | 11 16 56 12 | 11 17 07 23 | 22 56 | 25 2 | 3 |
| 4 | 18 49 59 | 2 18 19 28 | 1 24 6 44 | 0 23 55 4 | 3 8 17 52 | 1 14 39 52 | 2 26 21 48 | 10 25 12 53 | 11 16 53 1 | 11 16 58 15 | 22 51 | 27 31 | 4 |
| 5 | 18 53 56 | 2 19 16 40 | 2 07 33 9 | 0 24 37 58 | 3 9 57 27 | 1 14 52 41 | 2 27 35 32 | 10 25 12 25 | 11 16 49 50 | 11 16 46 57 | 22 45 | 28 22 | 5 |
| 6 | 18 57 52 | 2 20 13 55 | 2 20 45 44 | 0 25 20 50 | 3 11 34 53 | 1 15 5 26 | 2 28 49 16 | 10 25 11 50 | 11 16 46 39 | 11 16 34 30 | 22 39 | 27 34 | 6 |
| 7 | 19 1 49 | 2 21 11 8 | 3 3 42 37 | 0 26 3 36 | 3 13 10 11 | 1 15 18 7 | 3 0 3 00 | 10 25 11 10 | 11 16 43 28 | 11 16 22 05 | 22 33 | 25 16 | 7 |

## दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं.–30मिं.) (8 जुला. से 10 अग. 2024 ई. तक)

1 अगस्त, 2024 ई. को अयनांश = 24°/12'/00"

| ता. | सम्पातिक काल | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | मध्यम राहु | स्पष्ट राहु | सूर्य क्रांति | चंद्र क्रांति | जुलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जुला. | 0-00 Hr. GMT | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | अं. क. | अं. क. | |
| 8 | 19 5 45 | 2 22 8 22 | 3 16 23 0 | 0 26 46 18 | 3 14 43 20 | 1 15 30 45 | 3 1 16 45 | 10 25 10 24 | 11 16 40 17 | 11 16 10 51 | +22 26 | +21 45 | 8 |
| 9 | 19 9 42 | 2 23 5 35 | 3 28 47 14 | 0 27 28 54 | 3 16 14 19 | 1 15 43 19 | 3 2 30 30 | 10 25 9 32 | 11 16 37 7 | 11 16 01 40 | 22 19 | 17 21 | 9 |
| 10 | 19 13 39 | 2 24 2 48 | 4 10 57 3 | 0 28 11 26 | 3 17 43 07 | 1 15 55 49 | 3 3 44 13 | 10 25 8 34 | 11 16 33 56 | 11 15 55 01 | 22 12 | 12 19 | 10 |
| 11 | 19 17 35 | 2 25 0 1 | 4 22 55 19 | 0 28 53 53 | 3 19 9 43 | 1 16 8 15 | 3 4 57 58 | 10 25 7 30 | 11 16 30 45 | 11 15 50 55 | 22 4 | 6 54 | 11 |
| 12 | 19 21 32 | 2 25 57 16 | 5 4 46 2 | 0 29 36 16 | 3 20 34 5 | 1 16 20 37 | 3 6 11 42 | 10 25 6 20 | 11 16 27 34 | 11 15 48 58 | 21 56 | +1 18 | 12 |
| 13 | 19 25 28 | 2 26 54 29 | 5 16 33 55 | 1 0 18 32 | 3 21 56 12 | 1 16 32 55 | 3 7 25 25 | 10 25 5 4 | 11 16 24 24 | 11 15 48 27 | 21 47 | –4 19 | 13 |
| 14 | 19 29 25 | 2 27 51 43 | 5 28 24 16 | 1 1 0 43 | 3 23 16 02 | 1 16 45 9 | 3 8 39 8 | 10 25 3 43 | 11 16 21 13 | 11 15 48 23 | 21 38 | –9 49 | 14 |
| 15 | 19 33 21 | 2 28 48 56 | 6 10 22 29 | 1 1 42 50 | 3 24 33 29 | 1 16 57 19 | 3 9 52 52 | 10 25 2 16 | 11 16 18 3 | 11 15 47 45 | 21 29 | –15 2 | 15 |
| 16 | 19 37 18 | 2 29 46 8 | 6 22 33 58 | 1 2 24 52 | 3 25 48 33 | 1 17 9 24 | 3 11 6 36 | 10 25 0 44 | 11 16 14 52 | 11 15 45 40 | 21 19 | –19 45 | 16 |
| 17 | 19 41 14 | 3 0 43 23 | 7 5 3 26 | 1 3 6 48 | 3 27 1 9 | 1 17 21 26 | 3 12 20 19 | 10 24 59 5 | 11 16 11 41 | 11 15 41 26 | 21 9 | –23 44 | 17 |
| 18 | 19 45 11 | 3 1 40 37 | 7 17 54 42 | 1 3 48 40 | 3 28 11 15 | 1 17 33 22 | 3 13 34 1 | 10 24 57 22 | 11 16 8 30 | 11 15 34 51 | 20 58 | –26 40 | 18 |
| 19 | 19 49 8 | 3 2 37 51 | 8 1 9 57 | 1 4 30 26 | 3 29 18 45 | 1 17 45 14 | 3 14 47 44 | 10 24 55 32 | 11 16 5 19 | 11 15 26 05 | 20 47 | –28 14 | 19 |
| 20 | 19 53 4 | 3 3 35 5 | 8 14 49 21 | 1 5 12 7 | 4 0 23 35 | 1 17 57 2 | 3 16 1 28 | 10 24 53 37 | 11 16 2 8 | 11 15 15 49 | 20 36 | –28 9 | 20 |
| 21 | 19 57 1 | 3 4 32 20 | 8 28 50 43 | 1 5 53 43 | 4 1 25 38 | 1 18 8 45 | 3 17 15 10 | 10 24 51 37 | 11 15 58 58 | 11 15 05 02 | 20 25 | –26 18 | 21 |
| 22 | 20 0 57 | 3 5 29 35 | 9 13 9 42 | 1 6 35 14 | 4 2 24 48 | 1 18 20 23 | 3 18 28 52 | 10 24 49 32 | 11 15 55 47 | 11 14 54 52 | 20 13 | –22 44 | 22 |
| 23 | 20 4 54 | 3 6 26 50 | 9 27 40 15 | 1 7 16 39 | 4 3 21 0 | 1 18 31 56 | 3 19 42 34 | 10 24 47 21 | 11 15 52 36 | 11 14 46 24 | 20 1 | –17 43 | 23 |
| 24 | 20 8 50 | 3 7 24 7 | 10 12 15 40 | 1 7 57 59 | 4 4 14 6 | 1 18 43 24 | 3 20 56 17 | 10 24 45 5 | 11 15 49 25 | 11 14 40 20 | 19 48 | –11 40 | 24 |
| 25 | 20 12 47 | 3 8 21 24 | 10 26 49 39 | 1 8 39 14 | 4 5 3 58 | 1 18 54 48 | 3 22 9 59 | 10 24 42 43 | 11 15 46 14 | 11 14 36 51 | 19 35 | –4 59 | 25 |
| 26 | 20 16 43 | 3 9 18 42 | 11 11 17 8 | 1 9 20 24 | 4 5 50 28 | 1 19 6 6 | 3 23 23 40 | 10 24 40 16 | 11 15 43 3 | 11 14 35 38 | 19 22 | +1 54 | 26 |
| 27 | 20 20 40 | 3 10 16 0 | 11 25 34 40 | 1 10 1 28 | 4 6 33 28 | 1 19 17 19 | 3 24 37 24 | 10 24 37 45 | 11 15 39 52 | 11 14 35 49 | 19 9 | 8 38 | 27 |
| 28 | 20 24 37 | 3 11 13 21 | 0 9 40 25 | 1 10 42 27 | 4 7 12 46 | 1 19 28 27 | 3 25 51 6 | 10 24 35 8 | 11 15 36 42 | 11 14 36 16 | 18 55 | 14 50 | 28 |
| 29 | 20 28 33 | 3 12 10 42 | 0 23 33 40 | 1 11 23 20 | 4 7 48 15 | 1 19 39 29 | 3 27 4 48 | 10 24 32 26 | 11 15 33 31 | 11 14 35 49 | 18 41 | 20 12 | 29 |
| 30 | 20 32 30 | 3 13 8 4 | 1 7 14 25 | 1 12 4 7 | 4 8 19 43 | 1 19 50 26 | 3 28 18 30 | 10 24 29 40 | 11 15 30 20 | 11 14 33 32 | 18 26 | 24 25 | 30 |
| 31 | 20 36 26 | 3 14 5 28 | 1 20 42 52 | 1 12 44 48 | 4 8 46 59 | 1 20 1 18 | 3 29 32 12 | 10 24 26 48 | 11 15 27 9 | 11 14 28 52 | 18 12 | 27 12 | 31 |
| अग. | 20 40 23 | 3 15 2 51 | 2 3 59 3 | 1 13 25 24 | 4 9 9 53 | 1 20 12 3 | 4 0 45 54 | 10 24 23 52 | 11 15 23 58 | 11 14 21 50 | 17 56 | 28 25 | अग. |
| 2 | 20 44 19 | 3 16 0 16 | 2 17 2 53 | 1 14 5 53 | 4 9 28 13 | 1 20 22 43 | 4 1 59 36 | 10 24 20 51 | 11 15 20 48 | 11 14 12 55 | 17 41 | 28 1 | 2 |
| 3 | 20 48 16 | 3 16 57 43 | 2 29 54 1 | 1 14 46 17 | 4 9 41 49 | 1 20 33 17 | 4 3 13 18 | 10 24 17 45 | 11 15 17 37 | 11 14 02 58 | 17 26 | 26 6 | 3 |
| 4 | 20 52 13 | 3 17 55 11 | 3 12 32 13 | 1 15 26 34 | 4 9 50 31 | 1 20 43 45 | 4 4 26 59 | 10 24 14 35 | 11 15 14 26 | 11 13 53 00 | 17 10 | 22 54 | 4 |
| 5 | 20 56 9 | 3 18 52 39 | 3 24 57 34 | 1 16 6 44 | 4 9 54 9 | 1 20 54 7 | 4 5 40 42 | 10 24 11 20 | 11 15 11 15 | 11 13 43 58 | 16 53 | 18 43 | 5 |
| 6 | 21 0 6 | 3 19 50 7 | 4 7 10 42 | 1 16 46 49 | 4 9 52 36 | 1 21 4 23 | 4 6 54 23 | 10 24 8 1 | 11 15 8 4 | 11 13 36 40 | 16 37 | 13 49 | 6 |
| 7 | 21 4 2 | 3 20 47 37 | 4 19 12 58 | 1 17 26 47 | 4 9 45 46 | 1 21 14 32 | 4 8 8 4 | 10 24 4 38 | 11 15 4 53 | 11 13 31 32 | 16 20 | 8 28 | 7 |
| 8 | 21 7 59 | 3 21 45 9 | 5 1 6 40 | 1 18 6 38 | 4 9 33 35 | 1 21 24 35 | 4 9 21 45 | 10 24 1 11 | 11 15 1 43 | 11 13 28 39 | 16 3 | +2 53 | 8 |
| 9 | 21 11 55 | 3 22 42 40 | 5 12 54 50 | 1 18 46 23 | 4 9 16 4 | 1 21 34 31 | 4 10 35 26 | 10 23 57 39 | 11 14 58 32 | 11 13 27 44 | 15 46 | –2 47 | 9 |
| 10 | 21 15 52 | 3 23 40 14 | 5 24 41 22 | 1 19 26 2 | 4 8 53 15 | 1 21 44 21 | 4 11 49 6 | 10 23 54 4 | 11 14 55 21 | 11 13 28 14 | 15 29 | –8 20 | 10 |

## दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः $5^{\text{घं.}}$–$30^{\text{मिं.}}$) (11 अग. से 13 सितं., 2024 ई. तक) 1 सितम्बर, 2024 ई. को अयनांश =24°/12′/05″

| ता. अग. | सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT | सूर्य रा. अं. क. वि. | चन्द्र रा. अं. क. वि. | मंगल रा. अं. क. वि. | बुध रा. अं. क. वि. | गुरु रा. अं. क. वि. | शुक्र रा. अं. क. वि. | शनि रा. अं. क. वि. | मध्यम राहु रा. अं. क. वि. | स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि. | सूर्य क्रांति अं. क. | चंद्र क्रांति अं. क. | अगस्त |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | 21 19 48 | 3 24 37 47 | 6 6 30 48 | 1 20 5 34 | 4 8 25 19 | 1 21 54 4 | 4 13 2 45 | 10 23 50 25 | 11 14 52 10 | 11 13 29 23 | +15 11 | –13 37 | 11 |
| 12 | 21 23 45 | 3 25 35 22 | 6 18 28 5 | 1 20 44 57 | 4 7 52 28 | 1 22 3 40 | 4 14 16 24 | 10 23 46 42 | 11 14 48 59 | 11 13 30 24 | 14 53 | –18 28 | 12 |
| 13 | 21 27 41 | 3 26 32 56 | 7 0 38 25 | 1 21 24 15 | 4 7 15 3 | 1 22 13 9 | 4 15 30 3 | 10 23 42 55 | 11 14 45 49 | 11 13 30 31 | 14 35 | –22 39 | 13 |
| 14 | 21 31 38 | 3 27 30 34 | 7 13 6 54 | 1 22 3 26 | 4 6 33 31 | 1 22 22 32 | 4 16 43 40 | 10 23 39 5 | 11 14 42 38 | 11 13 29 10 | 14 16 | –25 55 | 14 |
| 15 | 21 35 35 | 3 28 28 10 | 7 25 57 57 | 1 22 42 30 | 4 5 48 26 | 1 22 31 47 | 4 17 57 18 | 10 23 35 13 | 11 14 39 27 | 11 13 26 05 | 13 57 | –27 59 | 15 |
| 16 | 21 39 31 | 3 29 25 48 | 8 9 14 48 | 1 23 21 27 | 4 5 0 30 | 1 22 40 55 | 4 19 10 55 | 10 23 31 16 | 11 14 36 16 | 11 13 21 23 | 13 39 | –28 32 | 16 |
| 17 | 21 43 28 | 4 0 23 28 | 8 22 58 52 | 1 24 0 18 | 4 4 10 27 | 1 22 49 55 | 4 20 24 30 | 10 23 27 17 | 11 14 33 5 | 11 13 15 28 | 13 19 | –27 23 | 17 |
| 18 | 21 47 24 | 4 1 21 8 | 9 7 9 8 | 1 24 39 1 | 4 3 19 12 | 1 22 58 49 | 4 21 38 5 | 10 23 23 14 | 11 14 29 55 | 11 13 9 3 | 13 00 | –24 27 | 18 |
| 19 | 21 51 21 | 4 2 18 50 | 9 21 41 49 | 1 25 17 37 | 4 2 27 44 | 1 23 7 35 | 4 22 51 40 | 10 23 19 9 | 11 14 26 44 | 11 13 2 57 | 12 41 | –19 55 | 19 |
| 20 | 21 55 17 | 4 3 16 32 | 10 6 30 40 | 1 25 56 6 | 4 1 37 1 | 1 23 16 13 | 4 24 5 15 | 10 23 15 1 | 11 14 23 33 | 11 12 57 54 | 12 21 | –14 6 | 20 |
| 21 | 21 59 14 | 4 4 14 18 | 10 21 27 41 | 1 26 34 27 | 4 0 48 6 | 1 23 24 44 | 4 25 18 48 | 10 23 10 50 | 11 14 20 22 | 11 12 54 27 | 12 1 | –7 24 | 21 |
| 22 | 22 3 10 | 4 5 12 2 | 11 6 24 25 | 1 27 12 42 | 4 0 2 2 | 1 23 33 7 | 4 26 32 21 | 10 23 6 36 | 11 14 17 11 | 11 12 52 47 | 11 41 | –0 18 | 22 |
| 23 | 22 7 7 | 4 6 9 50 | 11 21 13 10 | 1 27 50 50 | 3 29 19 50 | 1 23 41 22 | 4 27 45 54 | 10 23 2 20 | 11 14 14 0 | 11 12 52 42 | 11 21 | +6 46 | 23 |
| 24 | 22 11 4 | 4 7 7 40 | 0 5 47 58 | 1 28 28 50 | 3 28 42 23 | 1 23 49 29 | 4 28 59 25 | 10 22 58 2 | 11 14 10 50 | 11 12 53 39 | 11 0 | 13 22 | 24 |
| 25 | 22 15 0 | 4 8 5 30 | 0 20 5 2 | 1 29 6 42 | 3 28 10 33 | 1 23 57 28 | 5 0 12 58 | 10 22 53 41 | 11 14 7 39 | 11 12 54 56 | 10 39 | 19 8 | 25 |
| 26 | 22 18 57 | 4 9 3 23 | 1 4 2 36 | 1 29 44 26 | 3 27 45 5 | 1 24 5 18 | 5 1 26 29 | 10 22 49 20 | 11 14 4 28 | 11 12 55 46 | 10 19 | 23 44 | 26 |
| 27 | 22 22 53 | 4 10 1 16 | 1 17 40 30 | 2 0 22 3 | 3 27 26 36 | 1 24 13 1 | 5 2 39 59 | 10 22 44 55 | 11 14 1 17 | 11 12 55 35 | 9 58 | 26 53 | 27 |
| 28 | 22 26 50 | 4 10 59 14 | 2 0 59 44 | 2 0 59 32 | 3 27 15 37 | 1 24 20 34 | 5 3 53 30 | 10 22 40 30 | 11 13 58 6 | 11 12 54 00 | 9 37 | 28 27 | 28 |
| 29 | 22 30 46 | 4 11 57 12 | 2 14 1 49 | 2 1 36 53 | 3 27 12 30 | 1 24 28 00 | 5 5 6 59 | 10 22 36 2 | 11 13 54 56 | 11 12 51 2 | 9 15 | 28 23 | 29 |
| 30 | 22 34 43 | 4 12 55 11 | 2 26 48 30 | 2 2 14 5 | 3 27 17 33 | 1 24 35 17 | 5 6 20 29 | 10 22 31 32 | 11 13 51 45 | 11 12 46 56 | 8 54 | 26 48 | 30 |
| 31 | 22 38 40 | 4 13 53 12 | 3 9 21 33 | 2 2 51 10 | 3 27 30 55 | 1 24 42 24 | 5 7 33 57 | 10 22 27 2 | 11 13 48 34 | 11 12 42 13 | 8 32 | 23 53 | 31 |
| सितं. | 22 42 36 | 4 14 51 15 | 3 21 42 34 | 2 3 28 5 | 3 27 52 37 | 1 24 49 24 | 5 8 47 25 | 10 22 22 30 | 11 13 45 23 | 11 12 37 27 | 8 10 | +19 56 | सितं |
| 2 | 22 46 33 | 4 15 49 22 | 4 3 53 4 | 2 4 4 52 | 3 28 22 36 | 1 24 56 14 | 5 10 0 53 | 10 22 17 57 | 11 13 42 12 | 11 12 33 11 | 7 49 | 15 12 | 2 |
| 3 | 22 50 29 | 4 16 47 28 | 4 15 54 40 | 2 4 41 30 | 3 29 0 45 | 1 25 2 55 | 5 11 14 20 | 10 22 13 24 | 11 13 39 2 | 11 12 29 53 | 7 27 | 9 57 | 3 |
| 4 | 22 54 26 | 4 17 45 36 | 4 27 49 5 | 2 5 18 00 | 3 29 46 52 | 1 25 9 26 | 5 12 27 46 | 10 22 8 48 | 11 13 35 51 | 11 12 27 48 | 7 5 | +4 23 | 4 |
| 5 | 22 58 22 | 4 18 43 46 | 5 9 38 18 | 2 5 54 19 | 4 0 40 37 | 1 25 15 48 | 5 13 41 11 | 10 22 4 13 | 11 13 32 40 | 11 12 26 58 | 6 42 | –1 17 | 5 |
| 6 | 23 2 19 | 4 19 41 59 | 5 21 24 46 | 2 6 30 30 | 4 1 41 40 | 1 25 22 1 | 5 14 54 36 | 10 21 59 37 | 11 13 29 29 | 11 12 27 16 | 6 20 | –6 54 | 6 |
| 7 | 23 6 15 | 4 20 40 12 | 6 3 11 25 | 2 7 6 31 | 4 2 49 35 | 1 25 28 4 | 5 16 7 59 | 10 21 55 1 | 11 13 26 19 | 11 12 28 23 | 5 58 | –12 17 | 7 |
| 8 | 23 10 12 | 4 21 38 26 | 6 15 1 43 | 2 7 42 23 | 4 4 3 54 | 1 25 33 57 | 5 17 21 22 | 10 21 50 26 | 11 13 23 8 | 11 12 29 56 | 5 35 | –17 16 | 8 |
| 9 | 23 14 8 | 4 22 36 44 | 6 26 59 36 | 2 8 18 5 | 4 5 24 7 | 1 25 39 40 | 5 18 34 44 | 10 21 45 51 | 11 13 19 57 | 11 12 31 29 | 5 12 | –21 37 | 9 |
| 10 | 23 18 5 | 4 23 35 2 | 7 9 9 24 | 2 8 53 38 | 4 6 49 42 | 1 25 45 14 | 5 19 48 5 | 10 21 41 15 | 11 13 16 46 | 11 12 32 40 | 4 50 | –25 9 | 10 |
| 11 | 23 22 2 | 4 24 33 22 | 7 21 35 41 | 2 9 29 1 | 4 8 20 5 | 1 25 50 38 | 5 21 1 25 | 10 21 36 39 | 11 13 13 36 | 11 12 33 13 | 4 27 | –27 35 | 11 |
| 12 | 23 25 58 | 4 25 31 42 | 8 4 22 43 | 2 10 4 13 | 4 9 54 44 | 1 25 55 51 | 5 22 14 44 | 10 21 32 3 | 11 13 10 25 | 11 12 32 59 | 4 4 | –28 39 | 12 |
| 13 | 23 29 55 | 4 26 30 5 | 8 17 34 18 | 2 10 39 16 | 4 11 33 6 | 1 26 0 55 | 5 23 28 2 | 10 21 27 28 | 11 13 7 14 | 11 12 32 01 | +3 41 | –28 9 | 13 |

# दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रात: $5^{घं.}–30^{मि.}$) (14 सितं. से 17 अक्टू., 2024 ई. तक)

1 अक्तूबर, 2024 ई. को अयनांश 24°/12′/08″

| ता. सितं | सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | मध्यम राहु | स्पष्ट राहु | सूर्य क्रांति | चंद्र क्रांति | तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | अं. क. | अं. क. | |
| 14 | 23 33 51 | 4 27 28 30 | 9 1 12 55 | 2 11 14 9 | 4 13 14 38 | 1 26 5 48 | 5 24 41 19 | 10 21 22 55 | 11 13 4 3 | 11 12 30 32 | +3 18 | –25 58 | 14 |
| 15 | 23 37 48 | 4 28 26 56 | 9 15 19 11 | 2 11 48 51 | 4 14 58 49 | 1 26 10 29 | 5 25 54 35 | 10 21 18 22 | 11 13 0 53 | 11 12 28 49 | 2 55 | –22 9 | 15 |
| 16 | 23 41 44 | 4 29 25 22 | 9 29 51 12 | 2 12 23 24 | 4 16 45 10 | 1 26 15 2 | 5 27 7 49 | 10 21 13 50 | 11 12 57 42 | 11 12 27 12 | 2 32 | –16 53 | 16 |
| 17 | 23 45 41 | 5 0 23 52 | 10 14 44 17 | 2 12 57 45 | 4 18 33 16 | 1 26 19 25 | 5 28 21 2 | 10 21 9 18 | 11 12 54 31 | 11 12 25 56 | 2 9 | –10 30 | 17 |
| 18 | 23 49 37 | 5 1 22 22 | 10 29 51 8 | 2 13 31 57 | 4 20 22 39 | 1 26 23 36 | 5 29 34 15 | 10 21 4 50 | 11 12 51 20 | 11 12 25 12 | 1 46 | –3 25 | 18 |
| 19 | 23 53 34 | 5 2 20 56 | 11 15 2 42 | 2 14 5 57 | 4 22 13 1 | 1 26 27 36 | 6 0 47 26 | 10 21 0 22 | 11 12 48 10 | 11 12 25 1 | 1 22 | +3 53 | 19 |
| 20 | 23 57 31 | 5 3 19 30 | 0 0 9 31 | 2 14 39 47 | 4 24 4 1 | 1 26 31 26 | 6 2 0 36 | 10 20 55 55 | 11 12 44 59 | 11 12 25 17 | 0 59 | 10 57 | 20 |
| 21 | 0 1 27 | 5 4 18 8 | 0 15 2 59 | 2 15 13 25 | 4 25 55 24 | 1 26 35 6 | 6 3 13 44 | 10 20 51 30 | 11 12 41 48 | 11 12 25 50 | 0 36 | 17 17 | 21 |
| 22 | 0 5 24 | 5 5 16 48 | 0 29 36 36 | 2 15 46 53 | 4 27 46 54 | 1 26 38 34 | 6 4 26 52 | 10 20 47 6 | 11 12 38 37 | 11 12 26 25 | +0 12 | 22 29 | 22 |
| 23 | 0 9 20 | 5 6 15 29 | 1 13 46 24 | 2 16 20 9 | 4 29 38 20 | 1 26 41 51 | 6 5 39 59 | 10 20 42 40 | 11 12 35 27 | 11 12 26 54 | –0 11 | 26 13 | 23 |
| 24 | 0 13 17 | 5 7 14 12 | 1 27 30 54 | 2 16 53 13 | 5 1 29 31 | 1 26 44 56 | 6 6 53 5 | 10 20 38 27 | 11 12 32 16 | 11 12 27 9 | –0 34 | 28 17 | 24 |
| 25 | 0 17 13 | 5 8 12 59 | 2 10 50 44 | 2 17 26 5 | 5 3 20 18 | 1 26 47 51 | 6 8 6 10 | 10 20 34 10 | 11 12 29 5 | 11 12 27 9 | –0 58 | 28 38 | 25 |
| 26 | 0 21 10 | 5 9 11 46 | 2 23 48 5 | 2 17 58 45 | 5 5 10 36 | 1 26 50 33 | 6 9 19 14 | 10 20 29 55 | 11 12 25 54 | 11 12 27 0 | –1 21 | 27 22 | 26 |
| 27 | 0 25 6 | 5 10 10 38 | 3 6 25 54 | 2 18 31 12 | 5 7 0 19 | 1 26 53 5 | 6 10 32 17 | 10 20 25 42 | 11 12 22 44 | 11 12 26 47 | –1 44 | 24 44 | 27 |
| 28 | 0 29 3 | 5 11 9 30 | 3 18 47 33 | 2 19 3 27 | 5 8 49 21 | 1 26 55 25 | 6 11 45 19 | 10 20 21 34 | 11 12 19 33 | 11 12 26 37 | –2 8 | 21 00 | 28 |
| 29 | 0 33 0 | 5 12 8 25 | 4 0 56 30 | 2 19 35 29 | 5 10 37 40 | 1 26 57 33 | 6 12 58 20 | 10 20 17 27 | 11 12 16 22 | 11 12 26 33 | –2 31 | 16 27 | 29 |
| 30 | 0 36 56 | 5 13 7 22 | 4 12 55 53 | 2 20 7 17 | 5 12 25 13 | 1 26 59 30 | 6 14 11 21 | 10 20 13 22 | 11 12 13 11 | 11 12 26 37 | –2 54 | 11 19 | 30 |
| अक्तू | 0 40 53 | 5 14 6 21 | 4 24 48 38 | 2 20 38 52 | 5 14 12 0 | 1 27 1 15 | 6 15 24 20 | 10 20 9 23 | 11 12 10 1 | 11 12 26 46 | –3 18 | 5 50 | अक्तू |
| 2 | 0 44 49 | 5 15 5 22 | 5 6 37 21 | 2 21 10 13 | 5 15 57 57 | 1 27 2 49 | 6 16 37 18 | 10 20 5 24 | 11 12 6 50 | 11 12 26 55 | –3 41 | +0 10 | 2 |
| 3 | 0 48 46 | 5 16 4 27 | 5 18 24 21 | 2 21 41 20 | 5 17 43 4 | 1 27 4 10 | 6 17 50 14 | 10 20 1 30 | 11 12 3 39 | 11 12 26 56 | –4 4 | –5 29 | 3 |
| 4 | 0 52 42 | 5 17 3 32 | 6 0 11 55 | 2 22 12 13 | 5 19 27 22 | 1 27 5 20 | 6 19 3 10 | 10 19 57 41 | 11 12 0 28 | 11 12 26 44 | –4 27 | –10 58 | 4 |
| 5 | 0 56 39 | 5 18 2 40 | 6 12 2 15 | 2 22 42 51 | 5 21 10 50 | 1 27 6 17 | 6 20 16 5 | 10 19 53 53 | 11 11 57 18 | 11 12 26 14 | –4 50 | –16 4 | 5 |
| 6 | 1 0 35 | 5 19 1 49 | 6 23 57 46 | 2 23 13 14 | 5 22 53 28 | 1 27 7 3 | 6 21 28 58 | 10 19 50 10 | 11 11 54 7 | 11 12 25 25 | –5 13 | –20 37 | 6 |
| 7 | 1 4 32 | 5 20 1 1 | 7 6 1 4 | 2 23 43 23 | 5 24 35 17 | 1 27 7 36 | 6 22 41 49 | 10 19 46 30 | 11 11 50 56 | 11 12 24 22 | –5 36 | –24 21 | 7 |
| 8 | 1 8 29 | 5 21 0 14 | 7 18 15 4 | 2 24 13 15 | 5 26 16 19 | 1 27 7 57 | 6 23 54 40 | 10 19 42 54 | 11 11 47 45 | 11 12 23 13 | –5 59 | 27 4 | 8 |
| 9 | 1 12 25 | 5 21 59 29 | 8 0 43 0 | 2 24 42 53 | 5 27 56 31 | 1 27 8 7 | 6 25 7 29 | 10 19 39 24 | 11 11 44 35 | 11 12 22 11 | –6 22 | –28 31 | 9 |
| 10 | 1 16 22 | 5 22 58 46 | 8 13 28 10 | 2 25 12 14 | 5 29 35 59 | 1 27 8 4 | 6 26 20 16 | 10 19 35 56 | 11 11 41 24 | 11 12 21 29 | –6 45 | –28 30 | 10 |
| 11 | 1 20 18 | 5 23 58 4 | 8 26 33 52 | 2 25 41 19 | 6 1 14 41 | 1 27 7 49 | 6 27 33 2 | 10 19 32 33 | 11 11 38 13 | 11 12 21 15 | –7 8 | –26 54 | 11 |
| 12 | 1 24 15 | 5 24 57 24 | 9 10 2 49 | 2 26 10 8 | 6 2 52 38 | 1 27 7 23 | 6 28 45 46 | 10 19 29 15 | 11 11 35 2 | 11 12 21 36 | –7 30 | –23 45 | 12 |
| 13 | 1 28 11 | 5 25 56 47 | 9 23 56 47 | 2 26 38 41 | 6 4 29 51 | 1 27 6 44 | 6 29 58 28 | 10 19 26 0 | 11 11 31 52 | 11 12 22 26 | –7 53 | –19 9 | 13 |
| 14 | 1 32 8 | 5 26 56 10 | 10 8 15 49 | 2 27 6 56 | 6 6 6 22 | 1 27 5 53 | 7 1 11 9 | 10 19 22 50 | 11 11 28 41 | 11 12 23 33 | –8 15 | –13 22 | 14 |
| 15 | 1 36 4 | 5 27 55 36 | 10 22 57 41 | 2 27 34 54 | 6 7 42 11 | 1 27 4 50 | 7 2 23 48 | 10 19 19 46 | 11 11 25 30 | 11 12 24 36 | –8 37 | –6 42 | 15 |
| 16 | 1 40 1 | 5 28 55 3 | 11 7 57 32 | 2 28 02 35 | 6 9 17 20 | 1 27 3 35 | 7 3 36 25 | 10 19 16 45 | 11 11 22 19 | 11 12 25 14 | –8 59 | +0 29 | 16 |
| 17 | 1 43 58 | 5 29 54 33 | 11 23 8 1 | 2 28 30 00 | 6 10 51 49 | 1 27 2 8 | 7 4 49 00 | 10 19 13 50 | 11 11 19 9 | 11 12 25 7 | –9 21 | 7 43 | 17 |

## दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः $5^{\text{घं}}$–$30^{\text{मिं}}$) (18 अक्तू. से 20 नवंबर, 2024 ई. तक) 1 नवंबर 2024 ई. को अयनांश 24°/12′/12″

| ता. अक्तू | सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | मध्यम राहु | स्पष्ट राहु | सूर्य क्रांति | चंद्र क्रांति | तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | अं. क. | अं. क. | |
| 18 | 1 47 54 | 6 0 54 4 | 0 8 19 54 | 2 28 57 4 | 6 12 25 40 | 1 27 0 29 | 7 6 1 33 | 10 19 11 00 | 11 11 15 58 | 11 12 24 5 | –9 43 | +14 31 | 18 |
| 19 | 1 51 51 | 6 1 53 37 | 0 23 23 30 | 2 29 23 50 | 6 13 58 53 | 1 26 58 38 | 7 7 14 5 | 10 19 8 14 | 11 11 12 47 | 11 12 22 8 | –10 5 | 20 24 | 19 |
| 20 | 1 55 47 | 6 2 53 13 | 1 8 9 58 | 2 29 50 18 | 6 15 31 29 | 1 26 56 35 | 7 8 26 34 | 10 19 5 33 | 11 11 9 36 | 11 12 19 32 | –10 26 | 24 54 | 20 |
| 21 | 1 59 44 | 6 3 52 51 | 1 22 32 46 | 3 0 16 27 | 6 17 3 28 | 1 26 54 20 | 7 9 39 2 | 10 19 2 58 | 11 11 6 26 | 11 12 16 41 | –10 48 | 27 42 | 21 |
| 22 | 2 3 40 | 6 4 52 31 | 2 6 28 9 | 3 0 42 16 | 6 18 34 52 | 1 26 51 54 | 7 10 51 28 | 10 19 0 28 | 11 11 3 15 | 11 12 14 4 | –11 9 | 28 40 | 22 |
| 23 | 2 7 37 | 6 5 52 13 | 2 19 55 19 | 3 1 7 45 | 6 20 5 41 | 1 26 49 15 | 7 12 3 53 | 10 18 58 3 | 11 11 0 4 | 11 12 12 9 | –11 30 | 27 52 | 23 |
| 24 | 2 11 33 | 6 6 51 57 | 3 2 55 47 | 3 1 32 53 | 6 21 35 54 | 1 26 46 25 | 7 13 16 15 | 10 18 55 44 | 11 10 56 53 | 11 12 11 14 | –11 51 | 25 33 | 24 |
| 25 | 2 15 30 | 6 7 51 44 | 3 15 32 49 | 3 1 57 40 | 6 23 5 32 | 1 26 43 23 | 7 14 28 36 | 10 18 53 30 | 11 10 53 43 | 11 12 11 25 | –12 11 | 22 2 | 25 |
| 26 | 2 19 27 | 6 8 51 33 | 3 27 50 43 | 3 2 22 5 | 6 24 34 35 | 1 26 40 9 | 7 15 40 55 | 10 18 51 21 | 11 10 50 32 | 11 12 12 34 | –12 32 | 17 38 | 26 |
| 27 | 2 23 23 | 6 9 51 24 | 4 9 54 6 | 3 2 46 8 | 6 26 3 2 | 1 26 36 44 | 7 16 53 12 | 10 18 49 18 | 11 10 47 21 | 11 12 14 19 | –12 52 | 12 37 | 27 |
| 28 | 2 27 20 | 6 10 51 18 | 4 21 47 39 | 3 3 9 50 | 6 27 30 53 | 1 26 33 7 | 7 18 5 27 | 10 18 47 21 | 11 10 44 10 | 11 12 16 9 | –13 12 | 7 13 | 28 |
| 29 | 2 31 16 | 6 11 51 13 | 5 3 35 40 | 3 3 33 6 | 6 28 58 8 | 1 26 29 19 | 7 19 17 40 | 10 18 45 30 | 11 10 41 00 | 11 12 17 30 | –13 32 | +1 36 | 29 |
| 30 | 2 35 13 | 6 12 51 10 | 5 15 21 57 | 3 3 56 0 | 7 0 24 44 | 1 26 25 19 | 7 20 29 51 | 10 18 43 44 | 11 10 37 49 | 11 12 17 49 | –13 52 | –4 3 | 30 |
| 31 | 2 39 9 | 6 13 51 10 | 5 27 9 44 | 3 4 18 30 | 7 1 50 40 | 1 26 21 9 | 7 21 42 00 | 10 18 42 4 | 11 10 34 38 | 11 12 16 40 | –14 12 | –9 35 | 31 |
| नवं. | 2 43 6 | 6 14 51 11 | 6 9 1 38 | 3 4 40 34 | 7 3 15 55 | 1 26 16 48 | 7 22 54 7 | 10 18 40 31 | 11 10 31 27 | 11 12 13 51 | –14 31 | –14 48 | नवं. |
| 2 | 2 47 2 | 6 15 51 16 | 6 21 59 45 | 3 5 2 14 | 7 4 40 27 | 1 26 12 16 | 7 24 6 11 | 10 18 39 3 | 11 10 28 17 | 11 12 9 22 | –14 50 | –19 31 | 2 |
| 3 | 2 50 59 | 6 16 51 21 | 7 3 5 43 | 3 5 23 27 | 7 6 4 12 | 1 26 7 34 | 7 25 18 13 | 10 18 37 41 | 11 10 25 6 | 11 12 3 31 | –15 9 | –23 29 | 3 |
| 4 | 2 54 25 | 6 17 51 28 | 7 15 20 57 | 3 5 44 15 | 7 7 27 7 | 1 26 2 39 | 7 26 30 13 | 10 18 36 25 | 11 10 21 55 | 11 11 56 50 | –15 27 | –26 28 | 4 |
| 5 | 2 58 52 | 6 18 51 37 | 7 27 46 44 | 3 6 04 35 | 7 8 49 9 | 1 25 57 37 | 7 27 42 10 | 10 18 35 15 | 11 10 18 44 | 11 11 50 2 | –15 46 | 28 12 | 5 |
| 6 | 3 2 49 | 6 19 51 48 | 8 10 24 29 | 3 6 24 28 | 7 10 10 13 | 1 25 52 22 | 7 28 54 4 | 10 18 34 12 | 11 10 15 34 | 11 11 43 53 | –16 4 | –28 32 | 6 |
| 7 | 3 6 45 | 6 20 52 0 | 8 23 15 46 | 3 6 43 55 | 7 11 30 14 | 1 25 46 59 | 8 0 5 55 | 10 18 33 14 | 11 10 12 23 | 11 11 39 4 | –16 21 | –27 19 | 7 |
| 8 | 3 10 42 | 6 21 52 13 | 9 6 22 23 | 3 7 2 50 | 7 12 49 4 | 1 25 41 26 | 8 1 17 44 | 10 18 32 23 | 11 10 9 12 | 11 11 36 1 | –16 39 | –24 37 | 8 |
| 9 | 3 14 38 | 6 22 52 28 | 9 19 46 13 | 3 7 21 18 | 7 14 6 38 | 1 25 35 43 | 8 2 29 29 | 10 18 31 38 | 11 10 6 1 | 11 11 34 51 | –16 56 | –20 32 | 9 |
| 10 | 3 18 35 | 6 23 52 45 | 10 3 28 58 | 3 7 39 17 | 7 15 22 47 | 1 25 29 51 | 8 3 41 11 | 10 18 31 00 | 11 10 2 51 | 11 11 35 14 | –17 13 | –15 17 | 10 |
| 11 | 3 22 31 | 6 24 53 3 | 10 17 31 38 | 3 7 56 46 | 7 16 37 21 | 1 25 23 50 | 8 4 52 50 | 10 18 30 28 | 11 9 59 40 | 11 11 36 29 | –17 30 | –9 7 | 11 |
| 12 | 3 26 28 | 6 25 53 22 | 11 1 53 57 | 3 8 13 43 | 7 17 50 9 | 1 25 17 41 | 8 6 4 25 | 10 18 30 1 | 11 9 56 29 | 11 11 37 40 | –17 46 | –2 21 | 12 |
| 13 | 3 30 25 | 6 26 53 43 | 11 16 33 46 | 3 8 30 9 | 7 19 0 58 | 1 25 11 23 | 8 7 15 57 | 10 18 29 42 | 11 9 53 18 | 11 11 37 49 | –18 2 | +4 40 | 13 |
| 14 | 3 34 21 | 6 27 54 5 | 0 1 26 40 | 3 8 46 4 | 7 20 9 33 | 1 25 4 57 | 8 8 27 24 | 10 18 29 28 | 11 9 50 7 | 11 11 36 9 | –18 18 | 11 33 | 14 |
| 15 | 3 38 18 | 6 28 54 29 | 0 16 25 48 | 3 9 1 27 | 7 21 15 38 | 1 24 58 23 | 8 9 38 48 | 10 18 29 21 | 11 9 46 57 | 11 11 32 16 | –18 33 | 17 48 | 15 |
| 16 | 3 42 14 | 6 29 54 54 | 1 1 22 43 | 3 9 16 16 | 7 22 18 54 | 1 24 51 41 | 8 10 50 8 | 10 18 29 20 | 11 9 43 46 | 11 11 26 14 | –18 48 | +22 58 | 16 |
| 17 | 3 46 11 | 7 0 55 20 | 1 16 8 29 | 3 9 30 32 | 7 23 18 57 | 1 24 44 51 | 8 12 1 24 | 10 18 29 26 | 11 9 40 35 | 11 11 18 33 | –19 3 | 26 35 | 17 |
| 18 | 3 50 7 | 7 1 55 50 | 2 0 35 7 | 3 9 44 13 | 7 24 15 22 | 1 24 37 55 | 8 13 12 35 | 10 18 29 38 | 11 9 37 24 | 11 11 10 8 | –19 17 | 28 22 | 18 |
| 19 | 3 54 4 | 7 2 56 20 | 2 14 36 54 | 3 9 57 19 | 7 25 7 43 | 1 24 30 51 | 8 14 23 43 | 10 18 29 56 | 11 9 34 14 | 11 11 1 59 | –19 31 | 28 14 | 19 |
| 20 | 3 58 0 | 7 3 56 52 | 2 28 10 56 | 3 10 9 49 | 7 25 55 26 | 1 24 23 41 | 8 15 34 46 | 10 18 30 20 | 11 9 31 3 | 11 10 55 3 | –19 45 | 26 24 | 20 |

## दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः $5^{\text{घं.}}$–$30^{\text{मि.}}$) (21 नवंबर से 24 दिसंबर 2024 ई. तक)

1 दिसंबर, 2024 ई. को अयनांश 24°/12'/17''

| ता. नवं. | सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT | | | सूर्य | | | | चन्द्र | | | | मंगल | | | | बुध | | | | गुरु | | | | शुक्र | | | | शनि | | | | मध्यम राहु | | | | स्पष्ट राहु | | | | सूर्य क्रांति | | चंद्र क्रांति | | ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | अं. | क. | अं. | क. | |
| 21 | 4 | 1 | 57 | 7 | 4 | 57 | 26 | 3 | 11 | 17 | 16 | 3 | 10 | 21 | 42 | 7 | 26 | 37 | 59 | 1 | 24 | 16 | 24 | 8 | 16 | 45 | 45 | 10 | 18 | 30 | 51 | 11 | 9 | 27 | 52 | 11 | 10 | 50 | 1 | –19 | 58 | +23 | 11 | 21 |
| 22 | 4 | 5 | 54 | 7 | 5 | 58 | 1 | 3 | 23 | 58 | 14 | 3 | 10 | 32 | 57 | 7 | 27 | 14 | 38 | 1 | 24 | 9 | 2 | 8 | 17 | 56 | 40 | 10 | 18 | 31 | 28 | 11 | 9 | 24 | 41 | 11 | 10 | 47 | 8 | –20 | 11 | 18 | 56 | 22 |
| 23 | 4 | 9 | 50 | 7 | 6 | 58 | 38 | 4 | 6 | 17 | 53 | 3 | 10 | 43 | 34 | 7 | 27 | 44 | 44 | 1 | 24 | 1 | 34 | 8 | 19 | 7 | 30 | 10 | 18 | 32 | 12 | 11 | 9 | 21 | 31 | 11 | 10 | 46 | 12 | –20 | 24 | 14 | 1 | 23 |
| 24 | 4 | 13 | 47 | 7 | 7 | 59 | 17 | 4 | 18 | 21 | 16 | 3 | 10 | 53 | 32 | 7 | 28 | 7 | 31 | 1 | 23 | 54 | 00 | 8 | 20 | 18 | 15 | 10 | 18 | 33 | 2 | 11 | 9 | 18 | 20 | 11 | 10 | 46 | 39 | –20 | 36 | 8 | 39 | 24 |
| 25 | 4 | 17 | 43 | 7 | 8 | 59 | 58 | 5 | 0 | 13 | 46 | 3 | 11 | 2 | 51 | 7 | 28 | 22 | 11 | 1 | 23 | 46 | 21 | 8 | 21 | 28 | 56 | 10 | 18 | 33 | 58 | 11 | 9 | 15 | 9 | 11 | 10 | 47 | 35 | –20 | 48 | +3 | 5 | 25 |
| 26 | 4 | 21 | 40 | 7 | 10 | 0 | 40 | 5 | 12 | 0 | 47 | 3 | 11 | 11 | 27 | 7 | 28 | 27 | 59 | 1 | 23 | 38 | 38 | 8 | 22 | 39 | 31 | 10 | 18 | 35 | 00 | 11 | 9 | 11 | 58 | 11 | 10 | 48 | 00 | –20 | 59 | –2 | 34 | 26 |
| 27 | 4 | 25 | 36 | 7 | 11 | 1 | 24 | 5 | 23 | 47 | 18 | 3 | 11 | 19 | 22 | 7 | 28 | 24 | 8 | 1 | 23 | 30 | 50 | 8 | 23 | 50 | 2 | 10 | 18 | 36 | 9 | 11 | 9 | 8 | 48 | 11 | 10 | 46 | 58 | –21 | 10 | –8 | 7 | 27 |
| 28 | 4 | 29 | 33 | 7 | 12 | 2 | 9 | 6 | 5 | 37 | 41 | 3 | 11 | 26 | 35 | 7 | 28 | 9 | 59 | 1 | 23 | 22 | 58 | 8 | 25 | 0 | 27 | 10 | 18 | 37 | 25 | 11 | 9 | 5 | 37 | 11 | 10 | 43 | 41 | –21 | 21 | –13 | 25 | 28 |
| 29 | 4 | 33 | 29 | 7 | 13 | 2 | 56 | 6 | 17 | 35 | 28 | 3 | 11 | 33 | 6 | 7 | 27 | 45 | 4 | 1 | 23 | 15 | 2 | 8 | 26 | 10 | 47 | 10 | 18 | 38 | 46 | 11 | 9 | 2 | 26 | 11 | 10 | 37 | 46 | –21 | 31 | –18 | 16 | 29 |
| 30 | 4 | 37 | 26 | 7 | 14 | 3 | 44 | 6 | 29 | 43 | 18 | 3 | 11 | 38 | 51 | 7 | 27 | 9 | 8 | 1 | 23 | 7 | 4 | 8 | 27 | 21 | 1 | 10 | 18/ | 40 | 14 | 11 | 8 | 59 | 15 | 11 | 10 | 29 | 10 | –21 | 41 | –22 | 28 | 30 |
| दिसं | 4 | 41 | 23 | 7 | 15 | 4 | 33 | 7 | 12 | 2 | 50 | 3 | 11 | 43 | 53 | 7 | 26 | 22 | 19 | 1 | 22 | 59 | 1 | 8 | 28 | 31 | 10 | 10 | 18 | 41 | 48 | 11 | 8 | 56 | 4 | 11 | 10 | 18 | 18 | –21 | 50 | –25 | 44 | दिसं |
| 2 | 4 | 45 | 19 | 7 | 16 | 5 | 23 | 7 | 24 | 34 | 50 | 3 | 11 | 48 | 10 | 7 | 25 | 25 | 8 | 1 | 22 | 50 | 57 | 8 | 29 | 41 | 12 | 10 | 18 | 43 | 29 | 11 | 8 | 52 | 53 | 11 | 10 | 6 | 2 | –21 | 59 | –27 | 48 | 2 |
| 3 | 4 | 49 | 16 | 7 | 17 | 6 | 15 | 8 | 7 | 19 | 18 | 3 | 11 | 51 | 41 | 7 | 24 | 18 | 44 | 1 | 22 | 42 | 50 | 9 | 0 | 51 | 8 | 10 | 18 | 45 | 15 | 11 | 8 | 49 | 43 | 11 | 9 | 53 | 26 | –22 | 8 | –28 | 28 | 3 |
| 4 | 4 | 53 | 12 | 7 | 18 | 7 | 8 | 8 | 20 | 15 | 49 | 3 | 11 | 54 | 26 | 7 | 23 | 4 | 42 | 1 | 22 | 34 | 42 | 9 | 2 | 0 | 58 | 10 | 18 | 47 | 8 | 11 | 8 | 46 | 32 | 11 | 9 | 41 | 44 | –22 | 16 | –27 | 34 | 4 |
| 5 | 4 | 57 | 9 | 7 | 19 | 8 | 1 | 9 | 3 | 23 | 50 | 3 | 11 | 56 | 24 | 7 | 21 | 45 | 10 | 1 | 22 | 26 | 33 | 9 | 3 | 10 | 40 | 10 | 18 | 49 | 7 | 11 | 8 | 43 | 21 | 11 | 9 | 32 | 2 | –22 | 24 | –25 | 10 | 5 |
| 6 | 5 | 1 | 5 | 7 | 20 | 8 | 56 | 9 | 16 | 42 | 58 | 3 | 11 | 57 | 36 | 7 | 20 | 22 | 39 | 1 | 22 | 18 | 22 | 9 | 4 | 20 | 15 | 10 | 18 | 51 | 13 | 11 | 8 | 40 | 10 | 11 | 9 | 25 | 2 | –22 | 31 | –21 | 21 | 6 |
| 7 | 5 | 5 | 2 | 7 | 21 | 9 | 51 | 10 | 0 | 13 | 14 | 3 | 11 | 57 | 58 | 7 | 18 | 59 | 58 | 1 | 22 | 10 | 11 | 9 | 5 | 29 | 44 | 10 | 18 | 53 | 24 | 11 | 8 | 36 | 59 | 11 | 9 | 20 | 57 | –22 | 38 | –16 | 23 | 7 |
| 8 | 5 | 8 | 58 | 7 | 22 | 10 | 47 | 10 | 13 | 55 | 1 | 3 | 11 | 57 | 32 | 7 | 17 | 39 | 55 | 1 | 22 | 2 | 1 | 9 | 6 | 39 | 5 | 10 | 18 | 55 | 41 | 11 | 8 | 33 | 49 | 11 | 9 | 19 | 21 | –22 | 45 | –10 | 32 | 8 |
| 9 | 5 | 12 | 55 | 7 | 23 | 11 | 44 | 10 | 27 | 48 | 52 | 3 | 11 | 56 | 20 | 7 | 16 | 25 | 5 | 1 | 21 | 53 | 50 | 9 | 7 | 48 | 17 | 10 | 18 | 58 | 5 | 11 | 8 | 30 | 38 | 11 | 9 | 19 | 18 | –22 | 50 | –4 | 6 | 9 |
| 10 | 5 | 16 | 52 | 7 | 24 | 12 | 41 | 11 | 11 | 55 | 8 | 3 | 11 | 54 | 16 | 7 | 15 | 17 | 45 | 1 | 21 | 45 | 40 | 9 | 8 | 57 | 21 | 10 | 19 | 0 | 34 | 11 | 8 | 27 | 27 | 11 | 9 | 19 | 30 | –22 | 56 | +2 | 39 | 10 |
| 11 | 5 | 20 | 48 | 7 | 25 | 13 | 39 | 11 | 26 | 13 | 13 | 3 | 11 | 51 | 24 | 7 | 14 | 19 | 37 | 1 | 21 | 37 | 30 | 9 | 10 | 6 | 16 | 10 | 19 | 3 | 9 | 11 | 8 | 24 | 16 | 11 | 9 | 18 | 33 | –23 | 1 | 9 | 20 | 11 |
| 12 | 5 | 24 | 45 | 7 | 26 | 14 | 37 | 0 | 10 | 41 | 7 | 3 | 11 | 47 | 43 | 7 | 13 | 31 | 52 | 1 | 21 | 29 | 22 | 9 | 11 | 45 | 2 | 10 | 19 | 5 | 51 | 11 | 8 | 21 | 6 | 11 | 9 | 15 | 19 | –23 | 6 | 15 | 38 | 12 |
| 13 | 5 | 28 | 41 | 7 | 27 | 15 | 36 | 0 | 25 | 15 | 2 | 3 | 11 | 43 | 12 | 7 | 12 | 55 | 11 | 1 | 21 | 21 | 16 | 9 | 12 | 23 | 38 | 10 | 19 | 8 | 38 | 11 | 8 | 17 | 55 | 11 | 9 | 9 | 10 | –23 | 10 | 21 | 5 | 13 |
| 14 | 5 | 32 | 38 | 7 | 28 | 16 | 36 | 1 | 9 | 49 | 22 | 3 | 11 | 37 | 52 | 7 | 12 | 29 | 44 | 1 | 21 | 13 | 12 | 9 | 13 | 32 | 4 | 10 | 19 | 11 | 31 | 11 | 8 | 14 | 44 | 11 | 8 | 0 | 5 | –23 | 13 | 25 | 15 | 14 |
| 15 | 5 | 36 | 34 | 7 | 29 | 17 | 36 | 1 | 24 | 17 | 20 | 3 | 11 | 31 | 41 | 7 | 12 | 15 | 20 | 1 | 21 | 5 | 10 | 9 | 14 | 40 | 22 | 10 | 19 | 14 | 29 | 11 | 8 | 11 | 33 | 11 | 8 | 48 | 42 | –23 | 17 | 27 | 46 | 15 |
| 16 | 5 | 40 | 31 | 8 | 0 | 18 | 37 | 2 | 8 | 31 | 58 | 3 | 11 | 24 | 40 | 7 | 12 | 11 | 31 | 1 | 20 | 57 | 12 | 9 | 15 | 48 | 27 | 10 | 19 | 17 | 34 | 11 | 8 | 8 | 22 | 11 | 8 | 36 | 6 | –23 | 19 | 28 | 25 | 16 |
| 17 | 5 | 44 | 28 | 8 | 1 | 19 | 39 | 2 | 22 | 27 | 20 | 3 | 11 | 16 | 49 | 7 | 12 | 17 | 37 | 1 | 20 | 49 | 16 | 9 | 16 | 56 | 24 | 10 | 19 | 20 | 44 | 11 | 8 | 5 | 11 | 11 | 8 | 23 | 36 | –23 | 22 | 27 | 13 | 17 |
| 18 | 5 | 48 | 24 | 8 | 2 | 20 | 42 | 3 | 5 | 59 | 26 | 3 | 11 | 8 | 7 | 7 | 12 | 32 | 55 | 1 | 20 | 41 | 24 | 9 | 18 | 4 | 8 | 10 | 19 | 23 | 59 | 11 | 8 | 2 | 0 | 11 | 8 | 12 | 28 | –23 | 24 | 24 | 27 | 18 |
| 19 | 5 | 52 | 21 | 8 | 3 | 21 | 45 | 3 | 19 | 6 | 46 | 3 | 10 | 58 | 36 | 7 | 12 | 56 | 33 | 1 | 20 | 33 | 35 | 9 | 19 | 11 | 42 | 10 | 19 | 27 | 21 | 11 | 7 | 58 | 49 | 11 | 8 | 3 | 39 | –23 | 25 | 20 | 27 | 19 |
| 20 | 5 | 56 | 17 | 8 | 4 | 22 | 49 | 4 | 1 | 50 | 11 | 3 | 10 | 48 | 14 | 7 | 13 | 27 | 44 | 1 | 20 | 25 | 51 | 9 | 20 | 19 | 5 | 10 | 19 | 30 | 47 | 11 | 7 | 55 | 38 | 11 | 7 | 57 | 35 | –23 | 26 | 15 | 38 | 20 |
| 21 | 6 | 0 | 14 | 8 | 5 | 23 | 54 | 4 | 14 | 12 | 32 | 3 | 10 | 37 | 2 | 7 | 14 | 5 | 39 | 1 | 20 | 18 | 12 | 9 | 21 | 26 | 15 | 10 | 19 | 34 | 20 | 11 | 7 | 52 | 28 | 11 | 7 | 54 | 12 | –23 | 26 | 10 | 18 | 21 |
| 22 | 6 | 4 | 10 | 8 | 6 | 24 | 59 | 4 | 26 | 18 | 7 | 3 | 10 | 25 | 1 | 7 | 14 | 49 | 35 | 1 | 20 | 10 | 37 | 9 | 22 | 33 | 14 | 10 | 19 | 37 | 57 | 11 | 7 | 49 | 17 | 11 | 7 | 52 | 53 | –23 | 26 | +4 | 42 | 22 |
| 23 | 6 | 8 | 7 | 8 | 7 | 26 | 6 | 5 | 8 | 12 | 7 | 3 | 10 | 12 | 12 | 7 | 15 | 38 | 52 | 1 | 20 | 3 | 8 | 9 | 23 | 40 | 00 | 10 | 19 | 41 | 40 | 11 | 7 | 46 | 6 | 11 | 7 | 52 | 40 | –2326 | | –0 | 59 | 23 |
| 24 | 6 | 12 | 3 | 8 | 8 | 27 | 13 | 5 | 20 | 0 | 11 | 3 | 9 | 58 | 34 | 7 | 16 | 32 | 51 | 1 | 19 | 55 | 43 | 9 | 24 | 46 | 34 | 10 | 19 | 45 | 29 | 11 | 7 | 42 | 55 | 11 | 7 | 52 | 25 | –23 | 25 | –6 | 35 | 24 |

## दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रात: 5<sup>घं.</sup>–30<sup>मिं.</sup>) (25 दिसं., 2024 ई. से 25 जन., 2025 ई. तक) 1 जन., 2025 ई. को अयनांश 24°/12′/23″

| ता. दिसं | सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | मध्यम राहु | स्पष्ट राहु | सूर्य क्रांति | चंद्र क्रांति | दिसं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | अं. क. | अं. क. | |
| 25 | 6 16 0 | 8 9 28 21 | 6 1 47 55 | 3 9 44 9 | 7 17 30 59 | 1 19 48 25 | 9 25 52 54 | 10 19 49 23 | 11 7 39 44 | 11 7 50 59 | –23 23 | –11 57 | 25 |
| 26 | 6 19 57 | 8 10 29 29 | 6 13 40 36 | 3 9 28 57 | 7 18 32 49 | 1 19 41 14 | 9 26 59 00 | 10 19 53 22 | 11 7 36 33 | 11 7 47 25 | –23 21 | –16 56 | 26 |
| 27 | 6 23 53 | 8 11 30 38 | 6 25 42 52 | 3 9 13 00 | 7 19 37 52 | 1 19 34 8 | 9 28 4 52 | 10 19 57 26 | 11 7 33 22 | 11 7 41 8 | –23 19 | –21 19 | 27 |
| 28 | 6 27 50 | 8 12 31 47 | 7 7 58 24 | 3 8 56 19 | 7 20 45 47 | 1 19 27 10 | 9 29 10 30 | 10 20 1 37 | 11 7 30 11 | 11 7 31 59 | –23 16 | –24 52 | 28 |
| 29 | 6 31 46 | 8 13 32 57 | 7 20 29 45 | 3 8 38 54 | 7 21 56 12 | 1 19 20 19 | 10 0 15 52 | 10 20 5 51 | 11 7 27 00 | 11 7 20 21 | –23 13 | –27 19 | 29 |
| 30 | 6 35 43 | 8 14 34 7 | 8 3 17 57 | 3 8 20 49 | 7 23 8 51 | 1 19 13 35 | 10 1 20 59 | 10 20 10 11 | 11 7 23 49 | 11 7 7 4 | –23 9 | –28 24 | 30 |
| 31 | 6 39 39 | 8 15 35 17 | 8 16 22 45 | 3 8 2 4 | 7 24 23 28 | 1 19 7 00 | 10 2 25 49 | 10 20 14 35 | 11 7 20 39 | 11 6 53 17 | –23 5 | –27 56 | 31 |
| जन. | 6 43 36 | 8 16 36 28 | 8 29 42 37 | 3 7 42 41 | 7 25 39 51 | 1 19 0 32 | 10 3 30 22 | 10 20 19 5 | 11 7 17 28 | 11 6 40 18 | –23 0 | –25 52 | जन. |
| 2 | 6 47 32 | 8 17 37 38 | 9 13 15 9 | 3 7 22 42 | 7 26 57 47 | 1 18 54 13 | 10 4 34 38 | 10 20 23 39 | 11 7 14 17 | 11 6 29 20 | –22 55 | –22 18 | 2 |
| 3 | 6 51 29 | 8 18 38 48 | 9 26 57 37 | 3 7 2 10 | 7 28 17 6 | 1 18 48 2 | 10 5 38 36 | 10 20 28 18 | 11 7 11 6 | 11 6 21 13 | –22 49 | –17 28 | 3 |
| 4 | 6 55 26 | 8 19 39 59 | 10 10 47 31 | 3 6 41 6 | 7 29 37 41 | 1 18 42 00 | 10 6 42 15 | 10 20 33 2 | 11 7 7 56 | 11 6 16 15 | –22 43 | –11 42 | 4 |
| 5 | 6 59 22 | 8 20 41 9 | 10 24 42 54 | 3 6 19 33 | 8 0 59 24 | 1 18 36 7 | 10 7 45 34 | 10 20 37 51 | 11 7 4 45 | 11 6 14 4 | –22 36 | –5 19 | 5 |
| 6 | 7 3 19 | 8 21 42 18 | 11 8 42 30 | 3 5 57 34 | 8 2 22 9 | 1 18 30 24 | 10 8 48 32 | 10 20 42 43 | 11 7 1 34 | 11 6 13 45 | –22 29 | +1 22 | 6 |
| 7 | 7 7 15 | 8 22 43 27 | 11 22 45 39 | 3 5 35 10 | 8 3 45 50 | 1 18 24 51 | 10 9 51 9 | 10 20 47 42 | 11 6 58 23 | 11 6 14 1 | –22 22 | 8 00 | 7 |
| 8 | 7 11 12 | 8 23 44 36 | 0 6 51 47 | 3 5 12 25 | 8 5 10 23 | 1 18 19 27 | 10 10 53 25 | 10 20 52 44 | 11 6 55 13 | 11 6 13 28 | –22 14 | 14 16 | 8 |
| 9 | 7 15 8 | 8 24 45 44 | 0 21 0 0 | 3 4 49 21 | 8 6 35 44 | 1 18 14 14 | 10 11 55 17 | 10 20 57 50 | 11 6 52 2 | 11 6 10 56 | –22 6 | 19 48 | 9 |
| 10 | 7 19 5 | 8 25 46 52 | 1 5 8 34 | 3 4 26 00 | 8 8 1 50 | 1 18 9 10 | 10 12 56 45 | 10 21 3 00 | 11 6 48 51 | 11 6 5 40 | –21 57 | 24 14 | 10 |
| 11 | 7 23 1 | 8 26 47 59 | 1 19 14 42 | 3 4 20 26 | 8 9 28 38 | 1 18 4 17 | 10 13 57 49 | 10 21 8 15 | 11 6 45 40 | 11 5 57 38 | –21 48 | 27 12 | 11 |
| 12 | 7 26 58 | 8 27 49 6 | 2 03 14 44 | 3 3 38 42 | 8 10 56 7 | 1 17 59 36 | 10 14 58 27 | 10 21 13 35 | 11 6 42 29 | 11 5 47 18 | –21 38 | 28 27 | 12 |
| 13 | 7 30 55 | 8 28 50 12 | 2 17 4 25 | 3 3 14 49 | 8 12 24 13 | 1 17 55 4 | 10 15 58 38 | 10 21 18 58 | 11 6 39 18 | 11 5 35 41 | –21 28 | 27 53 | 13 |
| 14 | 7 34 51 | 8 29 51 18 | 3 0 39 43 | 3 2 50 50 | 8 13 52 56 | 1 17 50 43 | 10 16 58 22 | 10 21 24 25 | 11 6 36 8 | 11 5 24 1 | –21 18 | 25 38 | 14 |
| 15 | 7 38 48 | 9 0 52 23 | 3 13 57 25 | 3 2 26 49 | 8 15 22 15 | 1 17 46 33 | 10 17 57 38 | 10 21 29 57 | 11 6 32 57 | 11 5 13 30 | –21 7 | 22 2 | 15 |
| 16 | 7 42 44 | 9 1 53 29 | 3 26 55 44 | 3 2 2 49 | 8 16 52 10 | 1 17 42 34 | 10 18 56 24 | 10 21 35 32 | 11 6 29 46 | 11 5 5 4 | –20 56 | 17 25 | 16 |
| 17 | 7 46 41 | 9 2 54 33 | 4 9 34 34 | 3 1 38 51 | 8 18 22 38 | 1 17 38 46 | 10 19 54 40 | 10 21 41 11 | 11 6 26 35 | 11 4 59 14 | –20 44 | 12 9 | 17 |
| 18 | 7 50 37 | 9 3 55 38 | 4 21 55 28 | 3 1 14 59 | 8 19 53 41 | 1 17 35 10 | 10 20 52 25 | 10 21 46 54 | 11 6 23 24 | 11 4 56 1 | –20 32 | 6 32 | 18 |
| 19 | 7 54 34 | 9 4 56 42 | 5 4 1 23 | 3 0 51 15 | 8 21 25 17 | 1 17 31 45 | 10 21 49 38 | 10 21 52 40 | 11 6 20 13 | 11 4 55 0 | –20 20 | +0 47 | 19 |
| 20 | 7 58 31 | 9 5 57 45 | 5 15 56 30 | 3 0 27 43 | 8 22 57 28 | 1 17 28 32 | 10 22 46 15 | 10 21 58 30 | 11 6 17 3 | 11 4 55 24 | –20 7 | –4 55 | 20 |
| 21 | 8 2 27 | 9 6 58 49 | 5 27 45 40 | 3 0 4 24 | 8 24 30 12 | 1 17 25 30 | 10 23 42 20 | 10 22 4 25 | 11 6 13 52 | 11 4 56 17 | –19 54 | –10 24 | 21 |
| 22 | 8 6 24 | 9 7 59 52 | 6 9 34 14 | 2 29 41 23 | 8 26 3 31 | 1 17 22 40 | 10 24 37 49 | 10 22 10 21 | 11 6 10 41 | 11 4 56 37 | –19 40 | –15 31 | 22 |
| 23 | 8 10 20 | 9 9 0 54 | 6 21 27 39 | 2 29 18 40 | 8 27 37 24 | 1 17 20 2 | 10 25 32 39 | 10 22 16 22 | 11 6 7 30 | 11 4 55 34 | –19 26 | –20 5 | 23 |
| 24 | 8 14 17 | 9 10 1 56 | 7 3 31 10 | 2 28 56 20 | 8 29 11 53 | 1 17 17 36 | 10 26 26 52 | 10 22 22 28 | 11 6 4 20 | 11 4 52 32 | –19 12 | –23 54 | 24 |
| 25 | 8 18 13 | 9 11 2 58 | 7 15 49 25 | 2 28 34 23 | 9 0 46 58 | 1 17 15 22 | 10 27 20 24 | 10 22 28 34 | 11 6 1 9 | 11 4 47 19 | –18 57 | –26 44 | 25 |

## दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5 घं. – 30 मि.) (26 जनवरी से 26 फर., 2025 ई. तक)

1 फरवरी, 2025 ई. को अयनांश 24°/12'/29''

| ता. | सम्पातिक काल | | | सूर्य | | | | चन्द्र | | | | मंगल | | | | बुध | | | | गुरु | | | | शुक्र | | | | शनि | | | | मध्यम राहु | | | | स्पष्ट राहु | | | | सूर्य क्रांति | | चंद्र क्रांति | | ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जन. | 0-00 Hr. GMT | | | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | वि. | अं. | क. | अं. | क. | |
| 26 | 8 | 22 | 10 | 9 | 12 | 3 | 59 | 7 | 28 | 26 | 9 | 2 | 28 | 12 | 54 | 9 | 2 | 22 | 39 | 1 | 17 | 13 | 20 | 10 | 28 | 13 | 15 | 10 | 22 | 34 | 46 | 11 | 5 | 57 | 58 | 11 | 4 | 40 | 4 | –18 | 42 | –28 | 18 | 26 |
| 27 | 8 | 26 | 6 | 9 | 13 | 4 | 59 | 8 | 11 | 23 | 42 | 2 | 27 | 51 | 53 | 9 | 3 | 58 | 57 | 1 | 17 | 11 | 30 | 10 | 29 | 5 | 22 | 10 | 22 | 41 | 00 | 11 | 5 | 54 | 47 | 11 | 4 | 31 | 23 | –18 | 27 | –28 | 23 | 27 |
| 28 | 8 | 30 | 3 | 9 | 14 | 5 | 59 | 8 | 24 | 42 | 41 | 2 | 27 | 31 | 24 | 9 | 5 | 35 | 54 | 1 | 17 | 9 | 52 | 10 | 29 | 56 | 45 | 10 | 22 | 47 | 18 | 11 | 5 | 51 | 36 | 11 | 4 | 22 | 7 | –18 | 11 | –26 | 51 | 28 |
| 29 | 8 | 34 | 0 | 9 | 15 | 6 | 57 | 9 | 8 | 21 | 54 | 2 | 27 | 11 | 27 | 9 | 7 | 13 | 29 | 1 | 17 | 8 | 27 | 11 | 0 | 47 | 21 | 10 | 22 | 53 | 38 | 11 | 5 | 48 | 25 | 11 | 4 | 13 | 18 | –17 | 55 | –23 | 43 | 29 |
| 30 | 8 | 37 | 56 | 9 | 16 | 7 | 55 | 9 | 22 | 18 | 22 | 2 | 26 | 52 | 7 | 9 | 8 | 51 | 44 | 1 | 17 | 7 | 14 | 11 | 1 | 37 | 9 | 10 | 23 | 0 | 1 | 11 | 5 | 45 | 15 | 11 | 4 | 5 | 51 | –17 | 39 | –19 | 9 | 30 |
| 31 | 8 | 41 | 53 | 9 | 17 | 8 | 52 | 10 | 6 | 27 | 49 | 2 | 26 | 33 | 23 | 9 | 10 | 30 | 40 | 1 | 17 | 6 | 13 | 11 | 2 | 26 | 6 | 10 | 23 | 6 | 28 | 11 | 5 | 42 | 4 | 11 | 4 | 0 | 29 | –17 | 22 | –13 | 28 | 31 |
| फर. | 8 | 45 | 49 | 9 | 18 | 9 | 48 | 10 | 20 | 45 | 17 | 2 | 26 | 15 | 18 | 9 | 12 | 10 | 16 | 1 | 17 | 5 | 25 | 11 | 3 | 14 | 11 | 10 | 23 | 12 | 57 | 11 | 5 | 38 | 53 | 11 | 3 | 57 | 29 | –17 | 5 | –7 | 1 | फर. |
| 2 | 8 | 49 | 46 | 9 | 19 | 10 | 43 | 11 | 5 | 5 | 56 | 2 | 25 | 57 | 54 | 9 | 13 | 50 | 35 | 1 | 17 | 4 | 49 | 11 | 4 | 1 | 21 | 10 | 23 | 19 | 29 | 11 | 5 | 35 | 42 | 11 | 3 | 56 | 38 | –16 | 48 | –0 | 11 | 2 |
| 3 | 8 | 53 | 42 | 9 | 20 | 11 | 36 | 11 | 19 | 25 | 41 | 2 | 25 | 41 | 11 | 9 | 15 | 31 | 38 | 1 | 17 | 4 | 26 | 11 | 4 | 47 | 33 | 10 | 23 | 26 | 3 | 11 | 5 | 32 | 32 | 11 | 3 | 57 | 21 | –16 | 31 | +6 | 39 | 3 |
| 4 | 8 | 57 | 39 | 9 | 21 | 12 | 28 | 0 | 3 | 41 | 25 | 2 | 25 | 25 | 11 | 9 | 17 | 13 | 23 | 1 | 17 | 4 | 14 | 11 | 5 | 32 | 46 | 10 | 23 | 32 | 40 | 11 | 5 | 29 | 21 | 11 | 3 | 58 | 42 | –16 | 13 | 13 | 7 | 4 |
| 5 | 9 | 1 | 35 | 9 | 22 | 13 | 18 | 0 | 17 | 51 | 0 | 2 | 25 | 9 | 56 | 9 | 18 | 55 | 54 | 1 | 17 | 4 | 15 | 11 | 6 | 16 | 58 | 10 | 23 | 39 | 20 | 11 | 5 | 26 | 10 | 11 | 3 | 59 | 41 | –15 | 55 | 18 | 52 | 5 |
| 6 | 9 | 5 | 32 | 9 | 23 | 14 | 7 | 1 | 1 | 53 | 5 | 2 | 24 | 55 | 26 | 9 | 20 | 39 | 9 | 1 | 17 | 4 | 29 | 11 | 7 | 0 | 5 | 10 | 23 | 46 | 1 | 11 | 5 | 22 | 59 | 11 | 3 | 59 | 27 | –15 | 36 | 23 | 32 | 6 |
| 7 | 9 | 9 | 29 | 9 | 24 | 14 | 55 | 1 | 15 | 46 | 42 | 2 | 24 | 41 | 41 | 9 | 22 | 23 | 10 | 1 | 17 | 4 | 54 | 11 | 7 | 42 | 4 | 10 | 23 | 52 | 46 | 11 | 5 | 19 | 48 | 11 | 3 | 57 | 28 | –15 | 18 | 26 | 48 | 7 |
| 8 | 9 | 13 | 25 | 9 | 25 | 15 | 41 | 1 | 29 | 30 | 57 | 2 | 24 | 28 | 43 | 9 | 24 | 7 | 56 | 1 | 17 | 5 | 32 | 11 | 8 | 22 | 54 | 10 | 23 | 59 | 33 | 11 | 5 | 16 | 37 | 11 | 3 | 53 | 37 | –14 | 59 | 28 | 26 | 8 |
| 9 | 9 | 17 | 22 | 9 | 26 | 16 | 24 | 2 | 13 | 4 | 45 | 2 | 24 | 16 | 31 | 9 | 25 | 53 | 29 | 1 | 17 | 6 | 22 | 11 | 9 | 2 | 30 | 10 | 24 | 6 | 22 | 11 | 5 | 13 | 27 | 11 | 3 | 48 | 14 | –14 | 40 | 28 | 20 | 9 |
| 10 | 9 | 21 | 18 | 9 | 27 | 17 | 8 | 2 | 26 | 26 | 54 | 2 | 24 | 5 | 7 | 9 | 27 | 39 | 46 | 1 | 17 | 7 | 24 | 11 | 9 | 40 | 51 | 10 | 24 | 13 | 13 | 11 | 5 | 10 | 16 | 11 | 3 | 41 | 55 | –14 | 20 | 26 | 34 | 10 |
| 11 | 9 | 25 | 15 | 9 | 28 | 17 | 49 | 3 | 09 | 36 | 11 | 2 | 23 | 54 | 30 | 9 | 29 | 26 | 48 | 1 | 17 | 8 | 38 | 11 | 10 | 17 | 53 | 10 | 24 | 20 | 7 | 11 | 5 | 7 | 5 | 11 | 3 | 35 | 30 | –14 | 1 | 23 | 22 | 11 |
| 12 | 9 | 29 | 11 | 9 | 29 | 18 | 29 | 3 | 22 | 31 | 34 | 2 | 23 | 44 | 41 | 10 | 1 | 14 | 36 | 1 | 17 | 10 | 4 | 11 | 10 | 53 | 34 | 10 | 24 | 27 | 2 | 11 | 5 | 3 | 54 | 11 | 3 | 29 | 44 | –13 | 41 | 19 | 4 | 12 |
| 13 | 9 | 33 | 8 | 10 | 0 | 19 | 8 | 4 | 5 | 12 | 31 | 2 | 23 | 35 | 40 | 10 | 3 | 3 | 4 | 1 | 17 | 11 | 42 | 11 | 11 | 27 | 49 | 10 | 24 | 33 | 59 | 11 | 5 | 0 | 43 | 11 | 3 | 25 | 15 | –13 | 21 | 13 | 59 | 13 |
| 14 | 9 | 37 | 4 | 10 | 1 | 19 | 45 | 4 | 17 | 39 | 14 | 2 | 23 | 27 | 26 | 10 | 4 | 52 | 14 | 1 | 17 | 13 | 32 | 11 | 12 | 0 | 36 | 10 | 24 | 40 | 58 | 11 | 4 | 57 | 33 | 11 | 3 | 22 | 23 | –13 | 0 | 8 | 25 | 14 |
| 15 | 9 | 41 | 1 | 10 | 2 | 20 | 20 | 4 | 29 | 52 | 47 | 2 | 23 | 20 | 00 | 10 | 6 | 42 | 0 | 1 | 17 | 15 | 33 | 11 | 12 | 31 | 52 | 10 | 24 | 47 | 59 | 11 | 4 | 54 | 22 | 11 | 3 | 21 | 13 | –12 | 40 | +2 | 38 | 15 |
| 16 | 9 | 44 | 58 | 10 | 3 | 20 | 56 | 5 | 11 | 55 | 6 | 2 | 23 | 13 | 22 | 10 | 8 | 32 | 20 | 1 | 17 | 17 | 47 | 11 | 13 | 1 | 33 | 10 | 24 | 55 | 2 | 11 | 4 | 51 | 11 | 11 | 3 | 21 | 32 | –12 | 19 | –3 | 9 | 16 |
| 17 | 9 | 48 | 54 | 10 | 4 | 21 | 29 | 5 | 23 | 49 | 6 | 2 | 23 | 7 | 31 | 10 | 10 | 23 | 9 | 1 | 17 | 20 | 12 | 11 | 13 | 29 | 35 | 10 | 25 | 2 | 7 | 11 | 4 | 48 | 00 | 11 | 3 | 22 | 53 | –11 | 58 | –8 | 46 | 17 |
| 18 | 9 | 52 | 51 | 10 | 5 | 22 | 1 | 6 | 5 | 38 | 23 | 2 | 23 | 2 | 28 | 10 | 12 | 14 | 20 | 1 | 17 | 22 | 48 | 11 | 13 | 55 | 56 | 10 | 25 | 9 | 13 | 11 | 4 | 44 | 49 | 11 | 3 | 24 | 43 | –11 | 37 | –14 | 2 | 18 |
| 19 | 9 | 56 | 47 | 10 | 6 | 22 | 32 | 6 | 17 | 27 | 15 | 2 | 22 | 58 | 11 | 10 | 14 | 5 | 47 | 1 | 17 | 25 | 36 | 11 | 14 | 20 | 32 | 10 | 25 | 16 | 20 | 11 | 4 | 41 | 38 | 11 | 3 | 26 | 30 | –11 | 16 | –18 | 48 | 19 |
| 20 | 10 | 0 | 44 | 10 | 7 | 23 | 1 | 6 | 29 | 20 | 27 | 2 | 22 | 54 | 41 | 10 | 15 | 57 | 20 | 1 | 17 | 28 | 36 | 11 | 14 | 43 | 17 | 10 | 25 | 23 | 30 | 11 | 4 | 38 | 27 | 11 | 3 | 27 | 42 | –10 | 55 | –22 | 52 | 20 |
| 21 | 10 | 4 | 40 | 10 | 8 | 23 | 29 | 7 | 11 | 22 | 56 | 2 | 22 | 51 | 58 | 10 | 17 | 48 | 49 | 1 | 17 | 31 | 47 | 11 | 15 | 4 | 11 | 10 | 25 | 30 | 40 | 11 | 4 | 35 | 17 | 11 | 3 | 27 | 59 | –10 | 33 | –26 | 1 | 21 |
| 22 | 10 | 8 | 37 | 10 | 9 | 23 | 56 | 7 | 23 | 39 | 38 | 2 | 22 | 50 | 1 | 10 | 19 | 40 | 1 | 1 | 17 | 35 | 9 | 11 | 15 | 23 | 9 | 10 | 25 | 37 | 52 | 11 | 4 | 32 | 6 | 11 | 3 | 27 | 9 | –10 | 11 | –28 | 2 | 22 |
| 23 | 10 | 12 | 33 | 10 | 10 | 24 | 22 | 8 | 6 | 14 | 58 | 2 | 22 | 48 | 49 | 10 | 21 | 30 | 41 | 1 | 17 | 38 | 43 | 11 | 15 | 40 | 6 | 10 | 25 | 45 | 5 | 11 | 4 | 28 | 55 | 11 | 3 | 25 | 16 | –9 | 49 | –28 | 41 | 23 |
| 24 | 10 | 16 | 30 | 10 | 11 | 24 | 46 | 8 | 19 | 12 | 35 | 2 | 22 | 48 | 23 | 10 | 23 | 20 | 33 | 1 | 17 | 42 | 28 | 11 | 15 | 54 | 58 | 10 | 25 | 52 | 20 | 11 | 4 | 25 | 44 | 11 | 3 | 22 | 36 | –9 | 27 | –27 | 47 | 24 |
| 25 | 10 | 20 | 27 | 10 | 12 | 25 | 8 | 9 | 2 | 34 | 43 | 2 | 22 | 48 | 41 | 10 | 25 | 9 | 16 | 1 | 17 | 46 | 24 | 11 | 16 | 7 | 43 | 10 | 25 | 59 | 35 | 11 | 4 | 22 | 33 | 11 | 3 | 19 | 32 | –9 | 5 | –25 | 18 | 25 |
| 26 | 10 | 24 | 23 | 10 | 13 | 25 | 29 | 9 | 16 | 21 | 44 | 2 | 22 | 49 | 44 | 10 | 26 | 56 | 28 | 1 | 17 | 50 | 30 | 11 | 16 | 18 | 18 | 10 | 26 | 6 | 52 | 11 | 4 | 19 | 23 | 11 | 3 | 16 | 33 | –8 | 42 | –21 | 17 | 26 |

## दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं.–30मिं.) (27 फर. से 31 मार्च, 2025 ई. तक)

1 मार्च, 2025 ई. को अयनांश 24°/12′/32″

| ता. फर. | सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | मध्यम राहु | स्पष्ट राहु | सूर्य क्रांति | चंद्र क्रांति | फरवरी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | अं. क. | अं. क. | |
| 27 | 10 28 20 | 10 14 25 49 | 10 0 31 50 | 2 22 51 30 | 10 28 41 43 | 1 17 54 47 | 11 16 26 37 | 10 26 14 10 | 11 4 16 12 | 11 3 14 6 | –8 20 | –15 57 | 27 |
| 28 | 10 32 16 | 10 15 26 7 | 10 15 0 53 | 2 22 54 00 | 11 0 24 35 | 1 17 59 15 | 11 16 32 39 | 10 26 21 28 | 11 4 13 1 | 11 3 12 30 | –7 57 | –9 38 | 28 |
| मार्च | 10 36 13 | 10 16 26 23 | 10 29 42 58 | 2 22 57 12 | 11 2 4 34 | 1 18 3 54 | 11 16 36 19 | 10 26 28 48 | 11 4 9 50 | 11 3 11 51 | –7 34 | –2 43 | मार्च |
| 2 | 10 40 9 | 10 17 26 36 | 11 14 31 0 | 2 23 01 6 | 11 3 41 7 | 1 18 8 44 | 11 16 37 36 | 10 26 36 8 | 11 4 6 40 | 11 3 12 5 | –7 12 | +4 25 | 2 |
| 3 | 10 44 6 | 10 18 26 50 | 11 29 17 44 | 2 23 5 42 | 11 5 13 41 | 1 18 13 44 | 11 16 36 26 | 10 26 43 30 | 11 4 3 29 | 11 3 12 57 | –6 49 | 11 17 | 3 |
| 4 | 10 48 2 | 10 19 27 0 | 0 13 56 45 | 2 23 10 58 | 11 6 41 41 | 1 18 18 55 | 11 16 32 47 | 10 26 50 52 | 11 4 0 18 | 11 3 14 4 | –6 26 | 17 29 | 4 |
| 5 | 10 51 59 | 10 20 27 7 | 0 28 23 3 | 2 23 16 54 | 11 8 4 35 | 1 18 24 16 | 11 16 26 38 | 10 26 58 15 | 11 3 57 7 | 11 3 15 4 | –6 2 | 22 37 | 5 |
| 6 | 10 55 56 | 10 21 27 15 | 1 12 33 24 | 2 23 23 29 | 11 9 21 43 | 1 18 29 47 | 11 16 17 57 | 10 27 5 38 | 11 3 53 57 | 11 3 15 41 | –5 39 | 26 18 | 6 |
| 7 | 10 59 52 | 10 22 27 19 | 1 26 26 9 | 2 23 30 43 | 11 10 32 37 | 1 18 35 29 | 11 16 6 45 | 10 27 13 00 | 11 3 50 46 | 11 3 15 44 | –5 16 | 28 20 | 7 |
| 8 | 11 3 49 | 10 23 27 20 | 2 10 1 4 | 2 23 38 34 | 11 11 36 42 | 1 18 41 20 | 11 15 53 2 | 10 27 20 25 | 11 3 47 35 | 11 3 15 16 | –4 52 | 28 37 | 8 |
| 9 | 11 7 45 | 10 24 27 20 | 2 23 18 47 | 2 23 47 2 | 11 12 33 30 | 1 18 47 20 | 11 15 36 50 | 10 27 27 48 | 11 3 44 24 | 11 3 14 23 | –4 29 | 27 13 | 9 |
| 10 | 11 11 42 | 10 25 27 17 | 3 6 20 26 | 2 23 56 6 | 11 13 22 35 | 1 18 53 31 | 11 15 18 11 | 10 27 35 13 | 11 3 41 14 | 11 3 13 19 | –4 6 | +24 21 | 10 |
| 11 | 11 15 38 | 10 26 27 12 | 3 19 7 27 | 2 24 5 44 | 11 14 3 36 | 1 18 59 51 | 11 14 57 10 | 10 27 42 37 | 11 3 38 3 | 11 3 12 17 | –3 42 | 20 21 | 11 |
| 12 | 11 19 35 | 10 27 27 6 | 4 1 41 15 | 2 24 15 58 | 11 14 36 15 | 1 19 6 20 | 11 14 33 50 | 10 27 50 1 | 11 3 34 52 | 11 3 11 27 | –3 18 | 15 29 | 12 |
| 13 | 11 23 31 | 10 28 26 58 | 4 14 3 19 | 2 24 26 44 | 11 15 00 20 | 1 19 12 58 | 11 14 8 18 | 10 27 57 25 | 11 3 31 41 | 11 3 10 56 | –2 55 | +10 5 | 13 |
| 14 | 11 27 28 | 10 29 26 47 | 4 26 15 6 | 2 24 38 4 | 11 15 15 43 | 1 19 19 46 | 11 13 40 42 | 10 28 4 48 | 11 3 28 31 | 11 3 10 43 | –2 31 | +4 22 | 14 |
| 15 | 11 31 25 | 11 0 26 34 | 5 8 18 11 | 2 24 49 56 | 11 15 22 26 | 1 19 26 43 | 11 13 11 10 | 10 28 12 12 | 11 3 25 20 | 11 3 10 44 | –2 7 | –1 26 | 15 |
| 16 | 11 35 21 | 11 1 26 19 | 5 20 14 20 | 2 25 2 19 | 11 15 20 35 | 1 19 33 48 | 11 12 39 50 | 10 28 19 36 | 11 3 22 9 | 11 3 10 52 | –1 44 | –7 8 | 16 |
| 17 | 11 39 18 | 11 2 26 3 | 6 2 5 41 | 2 25 15 13 | 11 15 10 26 | 1 19 41 3 | 11 12 6 56 | 10 28 27 00 | 11 3 18 58 | 11 3 11 1 | –1 20 | –12 32 | 17 |
| 18 | 11 43 14 | 11 3 25 44 | 6 13 54 45 | 2 25 28 37 | 11 14 52 21 | 1 19 48 26 | 11 11 32 39 | 10 28 34 24 | 11 3 15 48 | 11 3 11 5 | –0 56 | –17 29 | 18 |
| 19 | 11 47 11 | 11 4 25 24 | 6 25 44 34 | 2 25 42 31 | 11 14 26 50 | 1 19 55 58 | 11 10 57 11 | 10 28 41 48 | 11 3 12 37 | 11 3 11 2 | –0 33 | –21 46 | 19 |
| 20 | 11 51 7 | 11 5 25 2 | 7 7 38 36 | 2 25 56 53 | 11 13 54 35 | 1 20 3 38 | 11 10 20 46 | 10 28 49 10 | 11 3 9 26 | 11 3 10 52 | –0 9 | –25 13 | 20 |
| 21 | 11 55 4 | 11 6 24 39 | 7 19 40 49 | 2 26 11 43 | 11 13 16 20 | 1 20 11 27 | 11 9 43 39 | 10 28 56 32 | 11 3 6 15 | 11 3 10 39 | +0 15 | –27 34 | 21 |
| 22 | 11 59 0 | 11 7 24 13 | 8 1 55 28 | 2 26 27 3 | 11 12 33 2 | 1 20 19 24 | 11 9 6 4 | 10 29 3 54 | 11 3 3 5 | 11 3 10 29 | 0 38 | –28 40 | 22 |
| 23 | 12 2 57 | 11 8 23 46 | 8 14 26 51 | 2 26 42 48 | 11 11 45 40 | 1 20 27 29 | 11 8 28 16 | 10 29 11 15 | 11 2 59 54 | 11 3 10 29 | 1 2 | –28 20 | 23 |
| 24 | 12 6 53 | 11 9 23 17 | 8 27 19 6 | 2 26 59 00 | 11 10 55 20 | 1 20 35 42 | 11 7 50 34 | 10 29 18 35 | 11 2 56 43 | 11 3 10 44 | 1 26 | –26 29 | 24 |
| 25 | 12 10 50 | 11 10 22 46 | 9 10 35 36 | 2 27 15 36 | 11 10 3 7 | 1 20 44 3 | 11 7 13 8 | 10 29 25 55 | 11 2 53 32 | 11 3 11 14 | 1 49 | –23 9 | 25 |
| 26 | 12 14 47 | 11 11 22 14 | 9 24 18 27 | 2 27 32 40 | 11 9 10 10 | 1 20 52 32 | 11 6 36 16 | 10 29 33 15 | 11 2 50 22 | 11 3 11 55 | 2 13 | –18 26 | 26 |
| 27 | 12 18 43 | 11 12 21 39 | 10 8 27 55 | 2 27 50 9 | 11 8 17 32 | 1 21 1 9 | 11 6 0 12 | 10 29 40 32 | 11 2 47 11 | 11 3 12 38 | 2 37 | –12 35 | 27 |
| 28 | 12 22 40 | 11 13 21 3 | 10 23 1 47 | 2 28 8 1 | 11 7 26 17 | 1 21 9 54 | 11 5 25 9 | 10 29 47 50 | 11 2 44 0 | 11 3 13 8 | 3 00 | –5 54 | 28 |
| 29 | 12 26 36 | 11 14 20 25 | 11 7 55 6 | 2 28 26 19 | 11 6 37 23 | 1 21 18 46 | 11 4 51 20 | 10 29 55 6 | 11 2 40 49 | 11 3 13 15 | 3 23 | +1 15 | 29 |
| 30 | 12 30 33 | 11 15 19 45 | 11 23 0 29 | 2 28 44 58 | 11 5 51 36 | 1 21 27 45 | 11 4 18 56 | 11 0 2 20 | 11 2 37 39 | 11 3 12 47 | 3 47 | 8 25 | 30 |
| 31 | 12 34 29 | 11 16 19 3 | 0 8 8 56 | 2 29 4 2 | 11 5 9 39 | 1 21 36 52 | 11 3 48 10 | 11 0 9 34 | 11 2 34 28 | 11 3 11 44 | 4 10 | 15 8 | 31 |

# यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटो के निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे ( भा. स्टै. टा. ) वि. सं. २०८१ ( 2024–25 ई. )

| ता. | यूरेनस | | | | नैपच्यून | | | प्लूटो | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अप्रै. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | रा. | अं. | क. |
| 1 | 0 | 26 | 35 | 28 | 11 | 3 | 43 | 9 | 7 | 40 |
| 4 | 0 | 26 | 44 | 12 | 11 | 3 | 49 | 9 | 7 | 43 |
| 7 | 0 | 26 | 53 | 11 | 11 | 3 | 56 | 9 | 7 | 45 |
| 10 | 0 | 27 | 2 | 23 | 11 | 4 | 2 | 9 | 7 | 47 |
| 13 | 0 | 27 | 11 | 48 | 11 | 4 | 9 | 9 | 7 | 49 |
| 16 | 0 | 27 | 21 | 24 | 11 | 4 | 15 | 9 | 7 | 50 |
| 19 | 0 | 27 | 31 | 9 | 11 | 4 | 21 | 9 | 7 | 52 |
| 22 | 0 | 27 | 41 | 4 | 11 | 4 | 27 | 9 | 7 | 53 |
| 25 | 0 | 27 | 51 | 6 | 11 | 4 | 33 | 9 | 7 | 54 |
| 28 | 0 | 28 | 1 | 15 | 11 | 4 | 39 | 9 | 7 | 54 |
| मई | 0 | 28 | 11 | 30 | 11 | 4 | 44 | 9 | 7 | 54 |
| 4 | 0 | 28 | 21 | 50 | 11 | 4 | 49 | 9 | 7 | 54 |
| 7 | 0 | 28 | 32 | 13 | 11 | 4 | 54 | 9 | 7 | 54 |
| 10 | 0 | 28 | 42 | 39 | 11 | 4 | 59 | 9 | 7 | 54 |
| 13 | 0 | 28 | 53 | 6 | 11 | 5 | 4 | 9 | 7 | 53 |
| 16 | 0 | 29 | 3 | 32 | 11 | 5 | 8 | 9 | 7 | 52 |
| 19 | 0 | 29 | 13 | 58 | 11 | 5 | 13 | 9 | 7 | 51 |
| 22 | 0 | 29 | 24 | 22 | 11 | 5 | 17 | 9 | 7 | 49 |
| 25 | 0 | 29 | 34 | 43 | 11 | 5 | 20 | 9 | 7 | 47 |
| 28 | 0 | 29 | 44 | 59 | 11 | 5 | 24 | 9 | 7 | 46 |
| 31 | 0 | 29 | 55 | 11 | 11 | 5 | 27 | 9 | 7 | 43 |
| जून | 0 | 29 | 58 | 33 | 11 | 5 | 28 | 9 | 7 | 43 |
| 4 | 1 | 0 | 8 | 36 | 11 | 5 | 31 | 9 | 7 | 40 |
| 7 | 1 | 0 | 18 | 32 | 11 | 5 | 34 | 9 | 7 | 38 |
| 10 | 1 | 0 | 28 | 19 | 11 | 5 | 36 | 9 | 7 | 35 |
| 13 | 1 | 0 | 37 | 56 | 11 | 5 | 38 | 9 | 7 | 32 |
| 16 | 1 | 0 | 47 | 22 | 11 | 5 | 40 | 9 | 7 | 29 |
| 19 | 1 | 0 | 56 | 36 | 11 | 5 | 41 | 9 | 7 | 25 |
| 22 | 1 | 1 | 5 | 37 | 11 | 5 | 42 | 9 | 7 | 22 |
| 25 | 1 | 1 | 14 | 25 | 11 | 5 | 43 | 9 | 7 | 18 |
| 28 | 1 | 1 | 22 | 59 | 11 | 5 | 44 | 9 | 7 | 15 |

| ता. | यूरेनस | | | | नैपच्यून | | | प्लूटो | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जुला | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | रा. | अं. | क. |
| जुला | 1 | 1 | 31 | 17 | 11 | 5 | 44 | 9 | 7 | 11 |
| 4 | 1 | 1 | 39 | 19 | 11 | 5 | 44 | 9 | 7 | 7 |
| 7 | 1 | 1 | 47 | 3 | 11 | 5 | 44 | 9 | 7 | 3 |
| 10 | 1 | 1 | 54 | 29 | 11 | 5 | 43 | 9 | 6 | 59 |
| 13 | 1 | 2 | 1 | 36 | 11 | 5 | 42 | 9 | 6 | 55 |
| 16 | 1 | 2 | 8 | 24 | 11 | 5 | 41 | 9 | 6 | 50 |
| 19 | 1 | 2 | 14 | 50 | 11 | 5 | 39 | 9 | 6 | 46 |
| 22 | 1 | 2 | 20 | 55 | 11 | 5 | 38 | 9 | 6 | 42 |
| 25 | 1 | 2 | 26 | 38 | 11 | 5 | 36 | 9 | 6 | 38 |
| 28 | 1 | 2 | 31 | 59 | 11 | 5 | 34 | 9 | 6 | 33 |
| 31 | 1 | 2 | 36 | 56 | 11 | 5 | 31 | 9 | 6 | 29 |
| अग. | 1 | 2 | 38 | 30 | 11 | 5 | 30 | 9 | 6 | 28 |
| 4 | 1 | 2 | 42 | 55 | 11 | 5 | 27 | 9 | 6 | 23 |
| 7 | 1 | 2 | 46 | 55 | 11 | 5 | 24 | 9 | 6 | 19 |
| 10 | 1 | 2 | 50 | 30 | 11 | 5 | 21 | 9 | 6 | 15 |
| 13 | 1 | 2 | 53 | 38 | 11 | 5 | 18 | 9 | 6 | 11 |
| 16 | 1 | 2 | 56 | 21 | 11 | 5 | 14 | 9 | 6 | 7 |
| 19 | 1 | 2 | 58 | 37 | 11 | 5 | 10 | 9 | 6 | 4 |
| 22 | 1 | 3 | 0 | 27 | 11 | 5 | 6 | 9 | 5 | 59 |
| 25 | 1 | 3 | 1 | 50 | 11 | 5 | 2 | 9 | 5 | 56 |
| 28 | 1 | 3 | 2 | 46 | 11 | 4 | 57 | 9 | 5 | 53 |
| 31 | 1 | 3 | 3 | 14 | 11 | 4 | 53 | 9 | 5 | 50 |
| सितं | 1 | 3 | 3 | 18 | 11 | 4 | 51 | 9 | 5 | 49 |
| 4 | 1 | 3 | 3 | 10 | 11 | 4 | 47 | 9 | 5 | 46 |
| 7 | 1 | 3 | 2 | 34 | 11 | 4 | 42 | 9 | 5 | 43 |
| 10 | 1 | 3 | 1 | 32 | 11 | 4 | 37 | 9 | 5 | 40 |
| 13 | 1 | 3 | 0 | 2 | 11 | 4 | 32 | 9 | 5 | 38 |
| 16 | 1 | 2 | 58 | 6 | 11 | 4 | 27 | 9 | 5 | 36 |
| 19 | 1 | 2 | 55 | 45 | 11 | 4 | 22 | 9 | 5 | 34 |
| 22 | 1 | 2 | 52 | 58 | 11 | 4 | 17 | 9 | 5 | 32 |
| 25 | 1 | 2 | 49 | 45 | 11 | 4 | 12 | 9 | 5 | 30 |
| 28 | 1 | 2 | 46 | 9 | 11 | 4 | 7 | 9 | 5 | 29 |

| ता. | यूरेनस | | | | नैपच्यून | | | प्लूटो | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अक्तू | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | रा. | अं. | क. |
| अक्तू | 1 | 2 | 42 | 8 | 11 | 4 | 2 | 9 | 5 | 28 |
| 4 | 1 | 2 | 37 | 45 | 11 | 3 | 57 | 9 | 5 | 27 |
| 7 | 1 | 2 | 33 | 0 | 11 | 3 | 53 | 9 | 5 | 27 |
| 10 | 1 | 2 | 27 | 54 | 11 | 3 | 48 | 9 | 5 | 26 |
| 13 | 1 | 2 | 22 | 28 | 11 | 3 | 43 | 9 | 5 | 26 |
| 16 | 1 | 2 | 16 | 44 | 11 | 3 | 39 | 9 | 5 | 26 |
| 19 | 1 | 2 | 10 | 42 | 11 | 3 | 35 | 9 | 5 | 27 |
| 22 | 1 | 2 | 4 | 25 | 11 | 3 | 30 | 9 | 5 | 28 |
| 25 | 1 | 1 | 57 | 53 | 11 | 3 | 26 | 9 | 5 | 29 |
| 28 | 1 | 1 | 51 | 8 | 11 | 3 | 23 | 9 | 5 | 30 |
| 31 | 1 | 1 | 44 | 11 | 11 | 3 | 19 | 9 | 5 | 31 |
| नवं. | 1 | 1 | 41 | 49 | 11 | 3 | 18 | 9 | 5 | 32 |
| 4 | 1 | 1 | 34 | 40 | 11 | 3 | 15 | 9 | 5 | 34 |
| 7 | 1 | 1 | 27 | 22 | 11 | 3 | 12 | 9 | 5 | 36 |
| 10 | 1 | 1 | 19 | 58 | 11 | 3 | 9 | 9 | 5 | 38 |
| 13 | 1 | 1 | 12 | 31 | 11 | 3 | 6 | 9 | 5 | 41 |
| 16 | 1 | 1 | 5 | 1 | 11 | 3 | 4 | 9 | 5 | 44 |
| 19 | 1 | 0 | 57 | 30 | 11 | 3 | 2 | 9 | 5 | 47 |
| 22 | 1 | 0 | 50 | 0 | 11 | 3 | 0 | 9 | 5 | 50 |
| 25 | 1 | 0 | 42 | 33 | 11 | 2 | 59 | 9 | 5 | 53 |
| 28 | 1 | 0 | 35 | 11 | 11 | 2 | 57 | 9 | 5 | 57 |
| दिसं. | 1 | 0 | 27 | 55 | 11 | 2 | 56 | 9 | 6 | 1 |
| 4 | 1 | 0 | 20 | 47 | 11 | 2 | 56 | 9 | 6 | 5 |
| 7 | 1 | 0 | 13 | 49 | 11 | 2 | 56 | 9 | 6 | 10 |
| 10 | 1 | 0 | 7 | 3 | 11 | 2 | 56 | 9 | 6 | 14 |
| 13 | 1 | 0 | 0 | 30 | 11 | 2 | 56 | 9 | 6 | 19 |
| 16 | 0 | 29 | 54 | 12 | 11 | 2 | 57 | 9 | 6 | 24 |
| 19 | 0 | 29 | 48 | 11 | 11 | 2 | 58 | 9 | 6 | 28 |
| 22 | 0 | 29 | 42 | 27 | 11 | 2 | 59 | 9 | 6 | 34 |
| 25 | 0 | 29 | 37 | 2 | 11 | 3 | 1 | 9 | 6 | 39 |
| 28 | 0 | 29 | 31 | 57 | 11 | 3 | 2 | 9 | 6 | 44 |
| 31 | 0 | 29 | 27 | 14 | 11 | 3 | 5 | 9 | 6 | 50 |

| ता. | यूरेनस | | | | नैपच्यून | | | प्लूटो | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जन. | रा. | अं. | क. | वि. | रा. | अं. | क. | रा. | अं. | क. |
| जन. 2025 | 0 | 29 | 25 | 45 | 11 | 3 | 6 | 9 | 6 | 51 |
| 4 | 0 | 29 | 21 | 32 | 11 | 3 | 8 | 9 | 6 | 57 |
| 7 | 0 | 29 | 17 | 44 | 11 | 3 | 11 | 9 | 7 | 3 |
| 10 | 0 | 29 | 14 | 21 | 11 | 3 | 14 | 9 | 7 | 8 |
| 13 | 0 | 29 | 11 | 24 | 11 | 3 | 18 | 9 | 7 | 14 |
| 16 | 0 | 29 | 8 | 53 | 11 | 3 | 21 | 9 | 7 | 20 |
| 19 | 0 | 29 | 6 | 49 | 11 | 3 | 25 | 9 | 7 | 26 |
| 22 | 0 | 29 | 5 | 13 | 11 | 3 | 30 | 9 | 7 | 31 |
| 25 | 0 | 29 | 4 | 4 | 11 | 3 | 34 | 9 | 7 | 37 |
| 28 | 0 | 29 | 3 | 24 | 11 | 3 | 39 | 9 | 7 | 43 |
| 31 | 0 | 29 | 3 | 12 | 11 | 3 | 44 | 9 | 7 | 49 |
| फर. | 0 | 29 | 3 | 14 | 11 | 3 | 46 | 9 | 7 | 51 |
| 4 | 0 | 29 | 3 | 41 | 11 | 3 | 51 | 9 | 7 | 56 |
| 7 | 0 | 29 | 4 | 36 | 11 | 3 | 56 | 9 | 8 | 2 |
| 10 | 0 | 29 | 6 | 0 | 11 | 4 | 2 | 9 | 8 | 8 |
| 13 | 0 | 29 | 7 | 53 | 11 | 4 | 8 | 9 | 8 | 13 |
| 16 | 0 | 29 | 10 | 13 | 11 | 4 | 14 | 9 | 8 | 18 |
| 19 | 0 | 29 | 13 | 1 | 11 | 4 | 20 | 9 | 8 | 24 |
| 22 | 0 | 29 | 16 | 16 | 11 | 4 | 26 | 9 | 8 | 29 |
| 25 | 0 | 29 | 19 | 59 | 11 | 4 | 32 | 9 | 8 | 34 |
| 28 | 0 | 29 | 24 | 8 | 11 | 4 | 39 | 9 | 8 | 39 |
| मार्च | 0 | 29 | 25 | 36 | 11 | 4 | 41 | 9 | 8 | 41 |
| 4 | 0 | 29 | 30 | 20 | 11 | 4 | 48 | 9 | 8 | 45 |
| 7 | 0 | 29 | 35 | 29 | 11 | 4 | 54 | 9 | 8 | 50 |
| 10 | 0 | 29 | 41 | 2 | 11 | 5 | 1 | 9 | 8 | 54 |
| 13 | 0 | 29 | 46 | 58 | 11 | 5 | 8 | 9 | 8 | 58 |
| 16 | 0 | 29 | 53 | 17 | 11 | 5 | 15 | 9 | 9 | 2 |
| 19 | 0 | 29 | 59 | 58 | 11 | 5 | 21 | 9 | 9 | 6 |
| 22 | 1 | 0 | 7 | 0 | 11 | 5 | 28 | 9 | 9 | 10 |
| 25 | 1 | 0 | 14 | 22 | 11 | 5 | 35 | 9 | 9 | 13 |
| 28 | 1 | 0 | 22 | 3 | 11 | 5 | 42 | 9 | 9 | 17 |
| 31 | 1 | 0 | 30 | 3 | 11 | 5 | 49 | 9 | 9 | 20 |

# 'दिल्ली' एवं 'जालन्धर' के दैनिक चन्द्रोदय–चन्द्रास्त काल (भा.स्टैं.टा.) सन् 2024–25 ई.

| तारीख | अप्रैल–2024 ई. | | | | मई–2024 ई. | | | | जून–2024 ई. | | | | जुलाई–2024 ई. | | | | अगस्त–2024 ई. | | | | सितंबर–2024 ई. | | | | तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | दिल्ली | | जालन्धर | | दिल्ली | | जालन्धर | | दिल्ली | | जालन्धर | | दिल्ली | | जालन्धर | | दिल्ली | | जालन्धर | | दिल्ली | | जालन्धर | | |
| | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | |
| | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | |
| 1 | 0:28 | 10:33 | 0:44 | 10:32 | 1:06 | 11:38 | 1:20 | 11:38 | 1:36 | 13:52 | 1:43 | 13:59 | 1:17 | 14:59 | 1:20 | 15 :10 | 2:17 | 17:08 | 2 :15 | 17:23 | 4:08 | 18:00 | 4:10 | 18:11 | 1 |
| 2 | 1:27 | 11:34 | 1:42 | 11:33 | 1:49 | 12:45 | 2:01 | 12:47 | 2:08 | 14:56 | 2:14 | 15:05 | 1:55 | 16:05 | 1:56 | 16:19 | 3:15 | 18:01 | 3:14 | 18:15 | 5:05 | 18:30 | 5:08 | 18:40 | 2 |
| 3 | 2:22 | 12:40 | 2:36 | 12:40 | 2:27 | 13:51 | 2:38 | 13:55 | 2:41 | 16:02 | 2:45 | 16:13 | 2:39 | 17:12 | 2:38 | 17:27 | 4:16 | 18:46 | 4:15 | 19:00 | 6:00 | 18:58 | 6:04 | 19:06 | 3 |
| 4 | 3: 09 | 13:48 | 3:23 | 13:50 | 3:02 | 14:57 | 3:11 | 15:03 | 3:18 | 17:10 | 3:20 | 17:22 | 3:28 | 18:16 | 3:27 | 18:31 | 5:17 | 19:25 | 5:17 | 19:37 | 6:53 | 19:24 | 6:59 | 19:31 | 4 |
| 5 | 3: 52 | 14:58 | 4:04 | 15:01 | 3:36 | 16:04 | 3:42 | 16:11 | 3:59 | 18 :19 | 3:59 | 18:32 | 4:24 | 19:15 | 4:23 | 19:30 | 6:16 | 19:58 | 6:18 | 20:09 | 7:45 | 19:49 | 7 :52 | 19:55 | 5 |
| 6 | 4: 31 | 16:07 | 4:40 | 16:12 | 4:09 | 17:11 | 4:14 | 17:20 | 4:45 | 19:26 | 4:45 | 19:41 | 5:25 | 20:06 | 5:24 | 20:20 | 7:12 | 20:28 | 7:15 | 20:37 | 8:37 | 20:16 | 8:46 | 20:20 | 6 |
| 7 | 5: 06 | 17:14 | 5:13 | 17:23 | 4:44 | 18:19 | 4: 48 | 18:31 | 5:39 | 20:29 | 5:37 | 20:44 | 6:27 | 20:49 | 6:26 | 21:02 | 8:06 | 20:55 | 8:11 | 21:03 | 9:30 | 20:44 | 9:40 | 20:47 | 7 |
| 8 | 5:41 | 18:23 | 5:46 | 18:33 | 5:23 | 19:29 | 5:25 | 19:42 | 6:37 | 21:25 | 6:36 | 21:40 | 7:27 | 21:26 | 7:28 | 21:38 | 8:59 | 21:21 | 9:05 | 21:27 | 10:25 | 21:16 | 10:36 | 21:17 | 8 |
| 9 | 6:15 | 19:32 | 6:19 | 19:44 | 6:07 | 20:38 | 6:07 | 20:53 | 7:39 | 22:13 | 7:38 | 22:27 | 8:25 | 21:58 | 8:28 | 22:08 | 9:51 | 21:46 | 9:58 | 21:51 | 11:21 | 21:52 | 11:35 | 21:52 | 9 |
| 10 | 6:52 | 20:42 | 6:54 | 20:55 | 6:57 | 21:45 | 6:56 | 22:00 | 8:40 | 22:54 | 8:40 | 23:06 | 9:21 | 22:26 | 9:25 | 22:35 | 10:43 | 22:14 | 10:52 | 22:17 | 12:20 | 22:35 | 12:35 | 22:34 | 10 |
| 11 | 7:33 | 21:52 | 7:34 | 22:06 | 7:53 | 22:45 | 7:51 | 23:00 | 9:39 | 23:28 | 9:41 | 23:39 | 10:14 | 22:53 | 10:19 | 23:00 | 11:37 | 22:43 | 11:47 | 22:45 | 13:20 | 23:25 | 13:35 | 23:24 | 11 |
| 12 | 8:19 | 23:00 | 8:19 | 23:15 | 8:53 | 23:36 | 8:51 | 23:51 | 10:36 | 23:59 | 10:39 | – – | 11:06 | 23:19 | 11:13 | 23:25 | 12:33 | 23:17 | 12:45 | 23:18 | 14:19 | – – | 14:34 | – – | 12 |
| 13 | 9:11 | – – | 9:10 | – – | 9:54 | – – | 9:53 | – – | 11:30 | – – | 11:35 | 0:08 | 11:58 | 23:45 | 12:07 | 23:50 | 13:31 | 23:57 | 13:45 | 23:56 | 15:14 | 0:23 | 15:29 | 0:22 | 13 |
| 14 | 10:08 | 0:02 | 10:06 | 0:17 | 10:54 | 0:20 | 10:54 | 0:34 | 12:23 | 0:26 | 12:29 | 0:34 | 12:51 | – – | 13:01 | – – | 14:32 | – – | 14:47 | – – | 16:04 | 1:28 | 16:17 | 1:27 | 14 |
| 15 | 11:07 | 0:57 | 11:06 | 1:12 | 11:51 | 0:58 | 11:53 | 1:10 | 13:15 | 0:52 | 13:22 | 0:59 | 13:47 | 0:14 | 13:58 | 0:17 | 15:33 | 0:43 | 15:49 | 0:42 | 16:48 | 2:36 | 17:00 | 2:37 | 15 |
| 16 | 12:06 | 1:44 | 12:06 | 1:59 | 12:46 | 1:30 | 12:50 | 1:41 | 14:08 | 1:18 | 14:16 | 1:24 | 14:45 | 0:45 | 14:57 | 0:47 | 16:32 | 1:38 | 16:47 | 1:37 | 17:27 | 3:46 | 17:38 | 3:48 | 16 |
| 17 | 13:04 | 2:25 | 13:06 | 2:37 | 13:39 | 1:59 | 13:44 | 2:08 | 15:02 | 1:46 | 15:12 | 1:49 | 15:46 | 1:22 | 16:00 | 1:22 | 17:26 | 2:41 | 17:41 | 2:40 | 18:03 | 4:56 | 18:12 | 5:00 | 17 |
| 18 | 14:00 | 2:59 | 14:03 | 3:11 | 14:32 | 2:25 | 14:38 | 2:33 | 15:59 | 2:15 | 16:11 | 2:18 | 16:48 | 2:05 | 17:03 | 2:04 | 18:16 | 3:50 | 18:28 | 3:49 | 18:38 | 6:05 | 18:45 | 6:11 | 18 |
| 19 | 14:54 | 3:29 | 14:58 | 3:39 | 15:24 | 2:51 | 15:32 | 2:57 | 16:59 | 2:49 | 17:12 | 2:50 | 17:49 | 2:57 | 18:05 | 2:55 | 18:58 | 5:00 | 19:08 | 5:02 | 19:13 | 7:13 | 19:17 | 7:21 | 19 |
| 20 | 15:47 | 3:57 | 15:52 | 4:06 | 16:17 | 3:17 | 16:26 | 3:22 | 18:01 | 3:29 | 18:16 | 3:28 | 18:47 | 3:56 | 19:02 | 3:55 | 19:36 | 6:11 | 19:44 | 6:14 | 19:49 | 8:23 | 19:52 | 8:33 | 20 |
| 21 | 16:39 | 4:23 | 16:46 | 4:30 | 17:13 | 3:46 | 17:24 | 3:49 | 19:04 | 4:16 | 19:19 | 4:14 | 19:39 | 5:02 | 19:53 | 5:02 | 20:09 | 7:20 | 20:17 | 7:25 | 20:30 | 9:33 | 20:31 | 9:45 | 21 |
| 22 | 17:31 | 4:49 | 17:40 | 4:55 | 18:11 | 4:17 | 18:23 | 4:19 | 20:04 | 5:11 | 20:19 | 5:09 | 20:24 | 6:12 | 20:36 | 6:13 | 20:44 | 8:27 | 20:49 | 8:34 | 21:15 | 10:43 | 21:15 | 10:57 | 22 |
| 23 | 18:25 | 5:16 | 18:35 | 5:20 | 19:12 | 4:53 | 19:26 | 4:53 | 20:58 | 6:13 | 21:13 | 6:12 | 21:03 | 7:22 | 21:13 | 7:24 | 21:19 | 9:35 | 21:21 | 9:44 | 22:06 | 11:52 | 22:05 | 12:07 | 23 |
| 24 | 19:23 | 5:45 | 19:33 | 5:47 | 20:14 | 5:35 | 20:30 | 5:34 | 21:46 | 7:20 | 21:59 | 7:20 | 21:39 | 8:31 | 21:47 | 8:35 | 21:55 | 10:42 | 21:56 | 10:53 | 23:04 | 12:57 | 23:01 | 13:12 | 24 |
| 25 | 20:22 | 6:17 | 20:34 | 6:18 | 21:16 | 6:24 | 21:32 | 6:23 | 22:29 | 8:29 | 22:39 | 8:30 | 22:12 | 9:37 | 22:18 | 9:43 | 22:36 | 11:50 | 22:35 | 12:02 | – – | 13:55 | – – | 14:10 | 25 |
| 26 | 21:22 | 6:55 | 21:36 | 6:55 | 22:13 | 7:21 | 22:28 | 7:20 | 23:06 | 9:36 | 23:14 | 9:39 | 22:44 | 10:42 | 22:49 | 10:50 | 23:31 | 12:57 | 23:20 | 13:11 | 0:03 | 14:44 | 0:01 | 14:59 | 26 |
| 27 | 22:24 | 7:38 | 22:38 | 7:37 | 23:04 | 8:24 | 23:18 | 8:23 | 23:39 | 10:42 | 23:46 | 10:46 | 23:18 | 11:47 | 23:21 | 11:56 | – – | 14:03 | – – | 14:18 | 1:03 | 15:26 | 1:03 | 15:39 | 27 |
| 28 | 23:23 | 8:29 | 23:37 | 8:28 | 23:49 | 9:31 | – – | 9:31 | – – | 11:46 | – – | 11:52 | 23:55 | 12:52 | 23:57 | 13:03 | 0:12 | 15:04 | 0:11 | 15:19 | 2:03 | 16:02 | 2:04 | 16:14 | 28 |
| 29 | – – | 9:28 | – – | 9:26 | – – | 10:38 | 0:01 | 10:39 | 0:10 | 12:49 | 0:16 | 12:57 | – – | 13:58 | – – | 14:11 | 1:09 | 15:58 | 1:08 | 16:13 | 3:00 | 16:33 | 3:02 | 16:44 | 29 |
| 30 | 0:17 | 10:31 | 0:32 | 10:30 | 0:28 | 11:43 | 0:39 | 11:47 | 0:42 | 13:53 | 0:47 | 14:03 | 0:36 | 15:04 | 0:37 | 15:19 | 2:09 | 16 :45 | 2:08 | 16:59 | 3:55 | 17:02 | 3 :59 | 17:11 | 30 |
| 31 | – – | – | – – | – – | 1:03 | 12:48 | 1:12 | 12:53 | – – | – – | – – | – – | 1:24 | 16:08 | 1:23 | 16:24 | 3:09 | 17 :25 | 3:09 | 17:38 | – – | – – | – – | – – | 31 |

# 'दिल्ली' एवं 'जालन्धर' के दैनिक चन्द्रोदय–चन्द्रास्त काल (भा.स्टैं.टा.) सन् 2024–25 ई.

| तारीख | अक्तूबर–2024 ई. | | | | नवम्बर–2024 ई. | | | | दिसम्बर–2024 ई. | | | | जनवरी–2025 ई. | | | | फरवरी–2025 ई. | | | | मार्च–2025 ई. | | | | तारीख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | दिल्ली | | जालन्धर | | दिल्ली | | जालन्धर | | दिल्ली | | जालन्धर | | दिल्ली | | जालन्धर | | दिल्ली | | जालन्धर | | दिल्ली | | जालन्धर | | |
| | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | |
| | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | |
| 1 | 4:48 | 17:28 | 4:53 | 17:35 | 6:14 | 17:20 | 6:24 | 17:22 | 6:59 | 17:14 | 7:13 | 17:13 | 8:32 | 18:58 | 8:46 | 18:58 | 9:03 | 21:06 | 9:11 | 21:12 | 7:32 | 19:55 | 7:40 | 20:02 | 1 |
| 2 | 5:40 | 17:53 | 5:47 | 17:59 | 7:09 | 17:53 | 7:22 | 17:54 | 7:58 | 18:04 | 8:13 | 18:03 | 9:16 | 20:04 | 9:29 | 20:05 | 9:35 | 22:11 | 9:42 | 22:19 | 8:06 | 21:02 | 8:11 | 21:11 | 2 |
| 3 | 6:32 | 18:20 | 6:40 | 18:24 | 8:07 | 18:32 | 8:21 | 18:32 | 8:56 | 19:01 | 9::11 | 19:00 | 9:55 | 21:09 | 10:06 | 21:12 | 10:08 | 23:16 | 10:12 | 23:26 | 8:41 | 22:11 | 8:44 | 22:22 | 3 |
| 4 | 7:25 | 18:47 | 7:35 | 18:50 | 9:06 | 19:17 | 9:21 | 19:16 | 9:49 | 20:03 | 10:03 | 20:02 | 10:30 | 22:12 | 10:39 | 22:17 | 10:42 | – – | 10:45 | – – | 9:19 | 23:20 | 9:20 | 23:33 | 4 |
| 5 | 8:19 | 19:18 | 8:30 | 19:19 | 10:05 | 20:09 | 10:20 | 20:07 | 10:36 | 21:07 | 10:49 | 21:07 | 11:02 | 23:15 | 11:10 | 23:22 | 11:20 | 0:22 | 11:22 | 0:34 | 10:01 | – – | 10:02 | – – | 5 |
| 6 | 9:15 | 19:52 | 9:28 | 19:53 | 11:00 | 21:07 | 11:16 | 21:05 | 11:17 | 22:11 | 11:30 | 22:13 | 11:34 | – – | 11:39 | – – | 12:04 | 1:30 | 12:04 | 1:43 | 10:50 | 0:30 | 10:49 | 0:44 | 6 |
| 7 | 10:13 | 20:32 | 10:27 | 20:32 | 11:51 | 22:09 | 12:06 | 22:08 | 11:54 | 23:15 | 12:05 | 23:19 | 12:06 | 0:18 | 12:10 | 0:27 | 12:54 | 2:38 | 12:52 | 2:52 | 11:45 | 1:37 | 11:44 | 1:52 | 7 |
| 8 | 11:12 | 21:19 | 11:27 | 21:18 | 12:37 | 23:13 | 12:50 | 23:14 | 12:28 | – – | 12:37 | – – | 12:41 | 1:23 | 12:44 | 1:33 | 13:50 | 3:43 | 13:49 | 3:58 | 12:45 | 2:39 | 12:44 | 2:54 | 8 |
| 9 | 12:10 | 22:13 | 12:25 | 22:11 | 13:17 | – – | 13:29 | – – | 13:00 | 0:18 | 13:07 | 0:23 | 13:21 | 2:29 | 13:22 | 2:41 | 14:52 | 4:43 | 14:51 | 4:58 | 13:48 | 3:33 | 13:47 | 3:48 | 9 |
| 10 | 13:05 | 23:13 | 13:20 | 23:12 | 13:53 | 0:18 | 14:03 | 0:20 | 13:32 | 1:21 | 13:37 | 1:28 | 14:07 | 3:38 | 14:06 | 3:51 | 15:56 | 5:35 | 15:55 | 5:50 | 14:51 | 4:19 | 14:51 | 4:33 | 10 |
| 11 | 13:55 | – – | 14:09 | – – | 14:27 | 1:23 | 14:36 | 1:27 | 14:05 | 2:25 | 14:09 | 2:35 | 15:00 | 4:46 | 14:59 | 5:01 | 16:59 | 6:20 | 17:00 | 6:33 | 15:51 | 4:59 | 15:53 | 5:11 | 11 |
| 12 | 14:40 | 0:18 | 14:53 | 0:18 | 15:00 | 2:28 | 15:07 | 2:34 | 14:43 | 3:32 | 14:45 | 3:43 | 16:00 | 5:52 | 15:59 | 6:07 | 18:00 | 6:58 | 18:02 | 7:10 | 16:49 | 5:33 | 16:53 | 5:43 | 12 |
| 13 | 15:20 | 1:25 | 15:31 | 1:26 | 15:34 | 3:34 | 15:39 | 3:42 | 15:26 | 4:42 | 15:27 | 4:55 | 17:04 | 6:51 | 17:03 | 7:06 | 18:57 | 7:31 | 19:01 | 7:41 | 17:46 | 6:03 | 17:50 | 6:12 | 13 |
| 14 | 15:57 | 2:33 | 16:06 | 2:36 | 16:10 | 4:42 | 16:13 | 4:52 | 16:17 | 5:53 | 16:16 | 6:08 | 18:10 | 7:42 | 18:10 | 7:56 | 19:52 | 8:01 | 19:58 | 8:09 | 18:39 | 6:30 | 18:46 | 6:38 | 14 |
| 15 | 16:31 | 3:40 | 16:39 | 3::45 | 16:52 | 5:53 | 16:53 | 6:05 | 17:14 | 7:03 | 17:13 | 7:18 | 19:13 | 8:24 | 19:14 | 8:37 | 20:40 | 8:28 | 20:53 | 8:35 | 19:32 | 6:56 | 19:40 | 7:03 | 15 |
| 16 | 17:06 | 4:48 | 17:11 | 4:55 | 17:39 | 7:05 | 17:39 | 7:19 | 18:18 | 8:08 | 18:16 | 8:23 | 20:12 | 9:01 | 20:15 | 9:12 | 21:39 | 8:54 | 21:47 | 9:00 | 20:25 | 7:23 | 20:34 | 7:27 | 16 |
| 17 | 17:41 | 5:57 | 17:45 | 6:06 | 18:33 | 8:18 | 18:32 | 8:32 | 19:24 | 9:04 | 19:24 | 9:18 | 21:09 | 9:32 | 21:13 | 9:42 | 22:32 | 9:21 | 22:42 | 9:25 | 21:18 | 7:50 | 21:29 | 7:53 | 17 |
| 18 | 18:20 | 7:08 | 18:22 | 7:19 | 19:34 | 9:26 | 19:32 | 9:41 | 20:28 | 9:51 | 20:29 | 10:05 | 22:03 | 10:00 | 22:09 | 10:08 | 23:26 | 9:49 | 23:37 | 9:52 | 22:13 | 8:20 | 22:26 | 8:22 | 18 |
| 19 | 19:05 | 8:20 | 19:06 | 8:33 | 20:38 | 10:26 | 20:37 | 10:41 | 21:28 | 10:31 | 21:31 | 10:43 | 22:55 | 10:27 | 23:03 | 10:34 | – – | 10:20 | – – | 10:21 | 23:10 | 8:53 | 23:24 | 8:54 | 19 |
| 20 | 19:56 | 9:32 | 19:54 | 9:46 | 21:42 | 11:17 | 21:42 | 11:31 | 22:26 | 11:04 | 22:30 | 11:15 | 23:48 | 10:53 | 23:57 | 10:58 | 0:22 | 10:55 | 0:35 | 10:55 | – – | 9:31 | – – | 9:31 | 20 |
| 21 | 20:52 | 10:41 | 20:50 | 10:57 | 22:44 | 11:59 | 22:45 | 12:12 | 23:30 | 11:34 | 23:25 | 11:43 | – – | 11:20 | – – | 11:24 | 1:20 | 11:36 | 1:34 | 11:35 | 0:07 | 10:16 | 0:22 | 10:14 | 21 |
| 22 | 21:53 | 11:44 | 21:51 | 12:00 | 23:42 | 12:35 | 23:44 | 12:47 | – – | 12:01 | – – | 12:08 | 0:41 | 11:50 | 0:52 | 11:52 | 2:18 | 12:24 | 2:33 | 12:22 | 1:04 | 11:07 | 1:20 | 11:05 | 22 |
| 23 | 22:55 | 12:39 | 22:53 | 12:54 | – – | 13:06 | – – | 13:16 | 0:13 | 12:27 | 0:20 | 12:33 | 1:36 | 12:22 | 1:49 | 12:23 | 3:15 | 13:19 | 3:31 | 13:17 | 1:59 | 12:04 | 2:14 | 12:03 | 23 |
| 24 | 23:55 | 13:25 | 23:56 | 13:38 | 0:37 | 13:34 | 0:41 | 13:42 | 1:05 | 12:53 | 1:13 | 12:58 | 2:34 | 13:00 | 2:47 | 13:00 | 4:10 | 14:20 | 4:25 | 14:19 | 2:49 | 13:06 | 3:03 | 13:06 | 24 |
| 25 | – – | 14:03 | – – | 14:15 | 1:29 | 14:00 | 1:35 | 14:07 | 1:58 | 13:21 | 2:07 | 13:24 | 3:33 | 13:45 | 3:47 | 13:44 | 4:59 | 15:26 | 5:13 | 15:26 | 3:34 | 14:12 | 3:48 | 14:12 | 25 |
| 26 | 0:54 | 14:36 | 0:56 | 14:47 | 2:21 | 14:26 | 2:29 | 14:31 | 2:52 | 13:52 | 3:03 | 13:53 | 4:32 | 14:37 | 4:47 | 14:35 | 5:43 | 16:33 | 5:56 | 16:35 | 4:15 | 15:18 | 4:27 | 15:20 | 26 |
| 27 | 1:50 | 15:05 | 1:53 | 15:14 | 3:13 | 14:52 | 3:22 | 14:57 | 3:48 | 14:28 | 4:01 | 14:27 | 5:29 | 15:36 | 5:44 | 15:34 | 6:23 | 17:41 | 6:33 | 17:44 | 4:52 | 16:25 | 5:02 | 16:29 | 27 |
| 28 | 2:43 | 15:32 | 2:48 | 15:40 | 4:06 | 15:21 | 4:17 | 15:24 | 4:47 | 15:08 | 5:01 | 15:07 | 6:22 | 16:40 | 6:37 | 16:40 | 6:58 | 18:48 | 7:08 | 18:53 | 5:26 | 17:32 | 5:35 | 17:38 | 28 |
| 29 | 3:36 | 15:57 | 3:42 | 16:04 | 5:02 | 15:53 | 5:13 | 15:55 | 5:47 | 15:56 | 6:02 | 15:54 | 7:10 | 17:48 | 7:23 | 17:48 | – – | – – | – – | – – | 6:00 | 18:39 | 6:07 | 18:48 | 29 |
| 30 | 4:27 | 16:23 | 4:35 | 16:28 | 5:59 | 16:31 | 6:12 | 16:30 | 6:46 | 16:51 | 7:01 | 16:49 | 7:51 | 18:55 | 8:03 | 18:57 | – – | – – | – – | – – | 6:35 | 19:49 | 6:39 | 19:59 | 30 |
| 31 | 5:20 | 16:50 | 5:29 | 16:54 | – – | – – | – – | – – | 7:42 | 17:52 | 7:56 | 17:51 | 8:29 | 20:01 | 8:39 | 20:05 | – – | – – | – – | – – | 7:12 | 21:01 | 7:15 | 21:13 | 31 |

# शुद्ध एवं शुभ विवाह मुहूर्त–सं. २०८१ वि. (सन् 2024-25 ई.)

## समय शुद्धि विचार (शुभ–अशुभ समय का विचार)–

**(1) शुक्र–अस्त विचार**–वि संवत् २०८१ मध्ये 24 अप्रैल, 2024 ई. को शुक्र पूर्व में अस्त होकर 7 जुलाई, 2024 ई. को पश्चिम में उदय होगा। **ध्यान रहे**, गुरु–शुक्र अस्तदिन से 3 दिन पहले **वार्धक्य–दोष** और उदय–दिन के 3 दिन बाद तक **बाल्यत्वदोष** रहता है। तद्नुसार 21 अप्रैल, 2024 ई. से शुक्र–वार्धक्य दोष तथा 10 जुलाई, 2024 ई. तक **शुक्र–बाल्यत्व दोष** रहेगा।

**(2) गुरु अस्त विचार**–गुरु 6 मई, 2024 ई. को पश्चिम में अस्त होकर 2 जून, 2024 ई. को पूर्व में उदित होगा। **ध्यान दें**, इसी समयावधि में शुक्र भी अस्त चल रहा है। ता. 3 मई, 2024 ई. से गुरु वार्धक्यदोष तथा 5 जून, 2024 ई. तक गुरु बाल्यत्वदोष रहेगा।

**(3) त्रयोदश (तेरह) दिनात्मक पक्ष (23 जून से 5 जुलाई, 2024 ई.) (आषाढ़ कृष्णपक्ष)**–तेरह (13) दिन के पक्ष में (दौरान) शास्त्रकारों ने यद्यपि विवाह, उपनयन आदि शुभ मुहूर्त्तों का निषेध (वर्जित) कहा है–

> **'उपनयनं–परिणयनं तु वेश्मारम्भादि कर्माणि।**
> **यात्रां द्विक्षय पक्षे कुर्यात् न जिजीविषु: पुरुष:।।** (ज्योतिर्निबन्ध)

तथापि कश्यप मुनि के मतानुसार यदि लग्न में गुरु, शुक्र या बुध में से एक भी केन्द्र या त्रिकोण स्थानों में हो तो तिथ्यादि (पक्ष–दोष) समाप्त हो जाते हैं। (मुहूर्त्त चिन्तामणि–पीयूषधारा)। परन्तु यह त्रयोदश–दिनात्मक पक्ष शुक्र–अस्त की समयावधि में घटित होने से परिहार–वाक्यों का कोई औचित्य नहीं है। अत: इस समयावधि में कोई शुभ मुहूर्त्त नहीं होंगे। (देखें पृष्ठ 103)

**(4) चातुर्मास्यादि में विवाह मुहूर्त्त**–पंजाब, हि.प्र., दिल्ली, हरियाणा, जम्मू–काश्मीर आदि प्रदेशों में चातुर्मास (आषाढ़े शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकदशी तक) में गत सैंकड़ों वर्षों से परम्परया एवं लोकमान्यतानुसार विवाहादि शुभ मुहूर्त्त स्वीकार किए गए हैं। हमारे मुहूर्त्तकारों ने भी स्थानीय परम्पराओं को शास्त्रादेश के समान आदर देने की अनुमति दी है। इस सम्बन्ध में 'ज्येतिर्विदाभरण' का निम्न वाक्य तो शास्त्र एवं लोकपरम्परा में वैमस्य की स्थिति में लोकपरम्परा को ही बलवत्तर बतलाता है। यथा–

> **''पुराण–वेद–स्मृति धर्मतो बहि: धर्मोऽयमत्र प्रतिपादनीय:।**
> **शास्त्रप्रमाणादपि लोकधर्म: प्रमाणमेतद् बलवत्तदादरात्।।''**

प्रत्यक्ष है–शास्त्रकारों ने भी लोकपरम्परा को अधिमान दिया है। इसीलिए गत लगभग 150 वर्षों से हम **'पंचांगदिवाकर'** में चातुर्मास में भी विवाह–मुहूर्त्त शोधन करके दे रहे हैं।

**(5) श्राद्ध दिन**–ता. 17 सितम्बर से 2 अक्तूबर, 2024 ई. तक श्राद्ध–दिन (पितृ–पक्ष) रहेंगे।

**(6) कार्तिक मास**–ता. 17 अक्तू. से 15 नवम्बर, 2024 ई. तक सौर कार्तिक मास रहेगा। इस समयावधि में केवल पर्वतीय प्रदेशों में विवाहादि शुभकृत्य सम्पादित करने की शास्त्राज्ञा है।

**(7) भीष्मपंचक विचार (11 से 15 नवम्बर)**–पंजाब, हिमाचल, जम्मू, हरियाणादि कुछ प्रदेशों में परम्परावश विवाह, उपनयन, गृहारम्भादि शुभ कार्यों का सम्पादन शुभ नहीं माना जाता, जबकि भारत के अधिकांश अन्य प्रदेशों में जैसे–उत्तरप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र आदि में परम्परागत विवाहादि शुभ कृत्यों का निषेध नहीं माना जाता है।

**(8) होलाष्टक विचार**–ता. 6 से 14 मार्च, 2025 तक होलाष्टक रहेंगे। इस अवधि में विवाहादि शुभ कृत्य वर्जित रहेंगे। विशेषकर पंजाब, हि.प्र., जम्मू–काश्मीर, हरियाणादि राज्यों में। जबकि कुछ राज्यों/क्षेत्रों में (उत्तराखण्ड, पूर्वी उ.प्र., बिहारादि) होलाष्टक दिनों में मंगल–कार्यों का सम्पादन शुभ माना जाता है। **(देखें–'पंचांगदिवाकर'** वि. संवत् २०७३ पृष्ठ 98)

**(9) पुन: शुक्र अस्त दोष**–शुक्र पुन: 19 मार्च, 2025 ई. को पश्चिम में अस्त होकर 25 मार्च, 2025 ई. को पूर्व में उदित होगा। वैसे भी 14 मार्च, 2025 ई. से 13 अप्रैल, 2025 ई. तक चैत्र मास होने के कारण शुभ नवीन कार्यों का निषेध रहेगा।

आगे दिए गए विवाह मुहूर्त्तों में 'लतादि दश गुण–दोष रेखाएं' शीर्षक के अन्तर्गत सीधी रेखा (।) दोषाभाव अर्थात् गुण की सूचक है, जबकि आड़ी रेखा (ऽ) दोष की सूचक है। मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य, भद्रा, लग्नस्थ व सप्तमस्थ क्रूर ग्रहादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। (आगामी पृष्ठों पर दिया गया लेख 'विवाह–मुहूर्त्त में लतादि दश दोष विचार' पढ़ें।) परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार मिल जाते हैं, वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा, दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है, नवम दोष क्रान्तिसाम्य के लिए स्थूल क्रान्तिसाम्य के स्थान पर सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य (महापात् गणित) प्रक्रिया का आश्रय लिया गया है।

***सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण*–विवाह मुहूर्त्तों में लग्न विवरण में १ को मेष, २ को वृष, ३ को मिथुन, ४ को कर्क, ५ को सिंह, ६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को बृश्चिक, ९ को धनु, १० को मकर, ११ को कुम्भ तथा १२ की संख्या को मीन लग्न जानें॥**

**दि. ल. = दिन का लग्न ; रा. ल. = रात्रि का लग्न**

चं. दा. = अर्थात् इस विवाह लग्न में चन्द्रमा से सम्बन्धित वस्तुओं का दान व पूजा करके विवाह कर सकते हैं। इसी प्रकार मं.दा., बु. दा. आदि अन्य ग्रहों का भी जानें।

**आवश्यके** = लग्न निर्बल है, अत: अत्यावश्यकता में इस लग्न में विवाह किया जा सकता है।

**पादवेध** = विवाह लग्न के समय नक्षत्रचरण को शुभ ग्रह का वेध है।

**आवश्यक नोट**–जिस मुहूर्त्त में गुरू, बुध–शुक्र की केन्द्र–त्रिकोण में स्थिति अथवा गुरू की शुभ दृष्टिवश परिहार हो जाता है, उस मुहूर्त्त, लग्न को शुभ मुहूर्त्तों में शामिल कर लिया गया है। **परन्तु मुहूर्त्त शास्त्रानुसार लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ क्रूर ग्रह की स्थिति को त्याज्य ही माना गया है।**

## ✲ वैशाख मास (अप्रैल–मई) ✲ सन् 2024 ईसवी

| पक्ष तिथि वार | ता.अंग्रे. | प्रविष्टे | वि. नक्षत्र | समय (भा.स्टैं.टा.) | सूर्य राशि | चंद राशि | लतादि दश रेखाएं | शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चैत्र शुक्ल १०,गुरु | 18 अप्रै. | ६ वैशा. | मघा | 7:57 बाद | मेष | सिंह | ।ऽ।।।ऽनृ.।ऽऽ। | दि.ल. २ (7:57 बाद, सू.मं.दा.), ३ (के.दा.), गोधूलि, रा.ल. ८ (सू. गु. दा.), ९ (रा. दा.), १० (अष्टमस्थ चंद्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभपदा, चं. शु. दा.) |

**[ 21 अप्रैल से 10 जुलाई तक शुक्र अस्त–दोष रहेगा, इसी मध्ये 3 मई से 5 जून, 2024 ई. तक गुरु अस्त–दोष रहेगा। ]**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आषा. शु. ५, गुरु | 11 जुला | २८ आषा | उ.फा. | 13:04 बाद | मिथुन | सिं./कं. | ।।।।ऽश.।।।।। | दि. ल. ८ (लग्नेश मं. षष्ठस्थ परिहार, मं. पूज्य दान वा), रा. ल. २ (मं. गु. दा.) –28:09 से परिघ–दोष |
| आषा. शु. ६,शुक्र | 12 जुला | २९ आषा | उ.फा. | 16:09 तक | मिथुन | कन्या | ।।।।ऽश.ऽरो।।।। | दि. ल. ४ (7:09 बाद, 7:09 तक परिघ–दोष (बु. शु. दा.), ८ (16:09 तक–अल्पकाले, –लग्नेश मं. षष्ठस्थ परिहार, मं. पूज्य) |
| आषा. शु. ८, रवि | 14 जुला | ३१ आषा | स्वाति | 22:07 बाद | मिथुन | तुला | ।।।।।।।।।। | मृत्युबाण–दोष रात्रि 21:32 तक, रा. ल. १ (चं. दान व पूजा) |

**देवशयनकाल (चातुर्मास्य) के विवाह मुहूर्त्त (पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर, राजस्थान आदि के लिए)**
**(17 जुलाई से 12 नवम्बर, 2024 ई. तक)**

## ✲ श्रावण मास (जुलाई–अगस्त) ✲ सन् 2024 ई.

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आषा. शु.१३,शुक्र | 19 जुला | ४ श्रावण | मूल | 26:55 तक | कर्क | धनु | ।।।।।।।।।। | 23:10 तक सूर्य–वेध, रा. ल. १, 26:41 से वैधृति–दोष |
| आषा. शु.१४,शनि | 20 जुला | ५ श्रावण | उ.षा. | 25:49 बाद | कर्क | धनु | ऽके.।।।।।।ऽ।। | 27:01 तक विष्कम्भ दोष, रा. ल. ३ (चं. मं. दा.), 28:54 तक भद्रा पाताले |
| आषा. पूर्णिमा,रवि | 21 जुला | ६ श्रावण | उ.षा. | 24:14 तक | कर्क | ध./मक | ऽके.।।।।।।ऽ।। | दि. ल. ९ (लग्नेश गुरु षष्ठस्थ एवं अष्टमस्थ शु. परिहार, गु. शु. पूज्य दान वा), रा. ल. १ (24:14 तक) |
| आषा. पूर्णिमा,रवि | 21 जुला | ६ श्रावण | श्रवण | 24:14 बाद | कर्क | मकर | ।।।ऽबु.ऽसू.।।ऽ।। | रा. ल. १ (24:14 बाद), ३ (अष्टमस्थ चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा, चं. मं. गु. दा.), –पादेन बुध वेधऽभाव: |
| श्राव. कृ. १, चंद्र | 22 जुला | ७ श्रावण | धनि. | 22:21 बाद | कर्क | मकर | ।।।ऽशु.ऽशु.ऽचौ.।।।। | रा. ल. १, ३ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य दान वा), पादेन शुक्र वेधऽभाव: |
| श्राव. कृ. २, मंग | 23 जुला | ८ श्रावण | धनि. | 20:18 तक | कर्क | म./कुं. | ।।।ऽशु.ऽशु.।।।।। | 11:11 से 14:48 तक शुक्र पादवेध, दि. ल. ९ (लग्नेश गु. षष्ठस्थ, एवं शु. अष्टमस्थ–परिहार, गु.–शु. पूज्य दान वा) |
| श्राव. कृ. ७, शनि | 27 जुला | १२ श्राव. | अश्वि | 13:00 बाद | कर्क | मेष | ।।।।।।।ऽ।। | दि. ल. ९ (लग्नेश गु. षष्ठस्थ एवं अष्टमस्थ शु. परिहार, गु. शु. दान व पूजा), 22:44 से 24:44 तक शूल दोष, रा. ल. ३ (शु. के. दा.) |
| श्राव. कृ.१०, मंग | 30 जुला | १५ श्राव. | रोहि. | 10:23 बाद | कर्क | वृष | ऽबु.।ऽमं.गु.।।।।ऽ।। | दि. ल. ९ (लग्नेश गु. षष्ठस्थ व अष्टमस्थ शु. परिहार, चं. गु. शु. पूज्य) (षष्ठस्थ चं परिहार), रा. ल. १, ३ (चं. मं. गु. के. दा.) (भौमयुति परिहार) |
| श्राव. कृ.११, बुध | 31 जुला | १६ श्राव. | मृग. | 10:13 बाद | कर्क | वृ./मि. | ऽश.।।।।।।ऽ।। | 14:14 से 18:50 तक व्याघात दोष, रा. ल. १, ३ (चं. मं. गु. के. दा.) |
| श्राव. शु. १, चंद्र | 5 अग. | २१ श्राव. | मघा | 15:22 बाद | कर्क | सिंह | ।।ऽबु.शु.।।ऽमृ.।।।। | 8:34 से 21:06 तक मृत्युबाण दोष, रा. ल. १, ३ (मं. गु. शु. दा.) |
| श्राव. शु. २, मंग | 6 अग. | २२ श्राव. | मघा | 17:44 तक | कर्क | सिंह | ।।ऽबु.शु.।।।।।।। | 11:00 से 14:00 तक परिघ–दोष, दि. ल. ९ (लग्नेश गु. षष्ठस्थ परिहार, गु. पूज्य, –धनु लग्न 17:44 तक |
| श्राव. शु. ३, बुध | 7 अग. | २३ श्राव. | उ.फा. | 20:31 बाद | कर्क | सिं./कं. | ।।।।ऽश.।।।।। | रा. ल. १, ३ (मं. गु. शु. दा.) |
| श्राव. शु. ४, गुरु | 8 अग. | २४ श्राव. | उ.फा. | 23:34 तक | कर्क | कन्या | ।।।।ऽश.ऽनृ.।।।। | दि. ल. ९ (लग्नेश गुरु षष्ठस्थ परिहार, गु. दा.), रा. ल. १ (23:44 तक)–भद्रा पातालगते |

## शुभ विवाह मुहूर्त्त—श्रावण मास (जुलाई-अगस्त)—सन् 2024 ई.

| पक्ष तिथि वार | ता.अंग्रे. | प्रविष्टे | वि. नक्षत्र | समय (भा.स्टैं.टा.) | सूर्य राशि | चंद्र राशि | लतादि दश रेखाएं | शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण ( भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में ) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| श्राव. शु. ७, रवि | 11 अग. | २७ श्राव. | स्वाति | सारा दिन | कर्क | तुला | ।।।।।।।।ऽ।। | प्रातः 10:12 से 14:54 तक क्रान्तिसाम्य दोष, दि. ल. ९ (गुरु षष्ठस्थ परिहार, गु. दा.), रा. ल. १ (चं. दा.), ३ (मं. गु. शु. दा.) |
| श्राव. शु. ८, मंग | 13 अग. | २९ श्राव. | अनु. | 10:44 बाद | कर्क | वृश्चिक | ।।।।।।।।।ऽ। | दि. ल. ९ (षष्ठस्थ गु. परिहार, गु. दा.), रा. ल. १ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य), ३ (षष्ठस्थ च परिहार, च. बु. गु. शु. दा.) |

## ✲ भाद्रपद मास (अगस्त-सितम्बर) ✲ सन् 2024 ई.

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| श्राव. पूर्णिमा,चन्द्र | 19 अग. | ४ भाद्रपद | धनि. | 8:10 से 29:45 | सिंह | म./कुं. | ।।।।।ऽअ.ऽऽ।। | दि. ल. ९ (लग्नेश गु. षष्ठस्थ परिहार, गु. पूज्य), १० (अष्टमस्थ शु. परिहार, चं. शु. दा.), रा. ल. १, 24:47 से 27:11 तक अतिगण्ड दोष |
| भाद्र. कृ.४, शुक्र | 23 अग. | ८ भाद्रपद | अश्विनी | 19:54 बाद | सिंह | मेष | ।ऽ।।।।।।ऽऽ। | 19:14 से 22:51 तक क्रान्तिसाम्य दोष, रा. ल. ३ (मं. गु. शु. दा.), ४ (शु. के. दा.) |
| भाद्र. कृ.५, शनि | 24 अग. | ९ भाद्रपद | अश्विनी | 18:06 तक | सिंह | मेष | ।ऽ।।।।।।ऽऽ। | दि. ल. ९ (लग्नेश गुरु षष्ठस्थ परिहार), १० (18:06 तक, सू. बु. दा.) |
| भाद्र. कृ.८, चंद्र | 26 अग. | ११ भाद्र. | रोहि. | 15:55 बाद | सिंह | वृष | ।।।।।।।।ऽ।। | दि. ल. ९ (15:55 बाद, लग्नेश गु. षष्ठस्थ परिहार, गु. दा.), १० (सू. बु. दा.), रा. ल. १ (षष्ठस्थ शु. परिहार, सू. शु. दा.), ४ (28:59 तक, बु. शु. दा.)–28:59 से मृत्युबाण–दोष |
| भाद्र. कृ.९, मंग | 27 अग. | १२ भाद्र. | मृग. | 15:38 बाद | सिंह | वृ./मि. | ऽश.ऽऽमं.गु.।।।।ऽ।। | 17:24 तक मृत्युबाण–दोष, दि. ल. १० (17:24 बाद, बु. दा.), 20:31 से 24:07 तक वज्र––दोष, रा. ल. ४ (बु. शु. दा.), भौमयुति परिहार |
| भाद्र. कृ.१०, बुध | 28 अग. | १३ भाद्र. | मृग. | 15:53 तक | सिंह | मिथुन | ऽश.ऽऽमं.गु.।।ऽअ.।ऽ।ऽ | दि. ल. ७ (बुध केन्द्रगत होने से अष्टमस्थ गु. परिहार, गु. शु. दा.), |
| भाद्र.शुक्ल १,बुध | 4 सितं | २० भाद्र. | उ.फा. | सारा दिन | सिंह | सिं./कं. | ।ऽ।।ऽश.।।।।। | दि. ल. ७ (अष्टनस्थ गु. परिहार, गु. शु. दा.), १० (सू. बु. दा.) रा. ल. १ (षष्ठस्थ चं. शु. परिहार, चं. शु. दा.), २, ४ (मं. शु. दा.) |
| भाद्र. शु.४, शनि | 7 सितं | २३ भाद्र. | स्वाति | 12:34 बाद | सिंह | तुला | ।।।।।।।।ऽ।। | दि. ल. १० (बुध पूज्य,–भद्रा पातालगते), रा. ल. १ (चं. शु. पूज्य, शुक्र षष्ठस्थ परिहार), २ (गुरु केन्द्रगते षष्ठस्थ चं. परिहार), ४ (शु. दा.) |
| भाद्र. शु.५, रवि | 8 सितं | २४ भाद्र. | स्वाति | 15:31 तक | सिंह | तुला | ।।।।।।।।ऽ।। | दि. ल. ७ (गुरु पूज्य) |
| भाद्र. शु.६, चंद्र | 9 सितं | २५ भाद्र. | अनु. | 18:04 बाद | सिंह | वृश्चिक | ।ऽ।।।।ऽऽ।। | 25:44 तक वैधृति–विष्कम्भ दोष, रा. ल. ४ (शु. दा.) |
| भाद्र. शु.७, मंग | 10 सितं | २६ भाद्र. | अनु. | 20:04 तक | सिंह | वृश्चिक | ।ऽ।।।ऽचौ.।ऽ।। | दि. ल. ७ (गुरु पूज्य दान वा), १० (सू. बु. दा.) |
| भाद्र. शु.८, बुध | 11 सितं | २७ भाद्र. | मूल | 21:22 बाद | सिंह | धनु | ।।।।ऽगु.।।।।। | रा. ल. १ (21:22 बाद–अल्पकाले, षष्ठस्थ शु. परिहार), २ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य) |
| भाद्र. शु.९, गुरु | 12 सितं | २८ भाद्र. | मूल | 21:53 तक | सिंह | धनु | ।।।।ऽगु.ऽरो.।।।। | दि. ल. ७ (गुरु पूज्य दान वा), १० (सू. बु. दा.), रा. ल. १ (षष्ठस्थ शु. परिहार, शु. दा.) |
| भाद्र. शु.१०, शुक्र | 13 सितं | २९ भाद्र. | उ.षा. | 21:36 बाद | सिंह | ध./म. | ऽके.।।ऽगु.।।।ऽ।। | रा. ल. २ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. दा.), ४ (27:24 बाद, कर्क लग्न अल्पकाले) –27:24 तक चन्द्रमा षष्ठस्थ है। –पादेन गुरु वेधऽभावः |
| भाद्र. शु.११, शनि | 14 सितं | ३० भाद्र. | उ.षा. | 20:33 तक | सिंह | मकर | ऽके.।।ऽगु.।।।ऽ।। | दि. ल. ७ (गुरु पूज्य दान वा), 14:48 से 20:33 तक गुरुपादवेध, भद्रा पातालगते, 18:26 से मृत्युबाण दोष |

## ✲ आश्विन मास (सितम्बर-अक्तूबर) ✲ सन् 2024 ई.

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आश्वि. शु.१, गुरु | 3 अक्तू. | १८ आश्विन | चित्रा | 15:32 बाद | कन्या | कन्या | ।।।।।।।।।।। | दि. ल. १० (15:32 बाद), रा. ल. १ (सू. चं. दा.), ४–28:24 से वैधृति दोष |
| आश्वि. शु.३, रवि | 6 अक्तू. | २१ आश्विन | अनु. | 24:11 बाद | कन्या | वृश्चिक | ।।।।।।।।ऽ।। | मृत्युबाण सायं 16:56 तक, रा. ल. ४ (मं. दा.), (भद्रा स्वर्गगते) |
| आश्वि. शु.४,चन्द्र | 7 अक्तू. | २२ आश्विन | अनु. | 26:25 तक | कन्या | वृश्चिक | ।।।।।ऽअ.।ऽ।। | दि. ल. ७ (गुरु पूज्य दान वा), १०, रा. ल. १ (चं. अष्टमस्थ परिहार, चं. दा.) |

## शुभ विवाह मुहूर्त्त—आश्विन मास (सितम्बर-अक्तूबर) ✲ सन् 2024 ई.

| पक्ष तिथि वार | ता.अंग्रे. | प्रविष्टे | वि. नक्षत्र | समय (भा.स्टैं.टा.) | सूर्य राशि | चंद राशि | लतादि दश रेखाएं | शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण ( भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में ) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आश्वि. शु.८, शुक्र | 11 अक्तू | २६ आश्विन | उ.षा. | 29:25 तक | कन्या | ध./म. | ऽके.।।ऽगु.ऽमं.।।ऽ।। | दि. ल. ७ (बु. गु. शु. पूज्य), १० (चं. पूज्य), 17:33 से 23:29 तक गुरुपादवेध, रा. ल. ४ (मं. दा.) |
| आश्वि. शु.९, शनि | 12 अक्तू | २७ आश्विन | श्रवण | 28:28 तक | कन्या | मकर | ।।।।।।।।।। | दि. ल. ७ (बु. गु. शु. पूज्य), १० (सू. बु. दा.), रा. ल. १ (बु. शु. दा.) ( विजयादशमी ) 24:22 से 26:22 तक शूल–दोष |

## ✲ कार्तिक मास (अक्तूबर-नवम्बर) ✲ सन् 2024 ई. (हिमाचल–प्रदेश, उत्तराखण्ड आदि पर्वतीय प्रदेशों के लिए)

| पक्ष तिथि वार | ता.अंग्रे. | प्रविष्टे | वि. नक्षत्र | समय (भा.स्टैं.टा.) | सूर्य राशि | चंद राशि | लतादि दश रेखाएं | शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण ( भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में ) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कार्ति. कृ.३, रवि | 20 अक्तू | ४ कार्ति. | रोहिणी | 8:32 बाद | तुला | वृष | ऽश.ऽ।।ऽशु.।ऽऽ।। | 14:12 तक व्यतिपात दोष, रा. ल. २ (चं. गु. शु. दा.), ३ (बुध त्रिकोणगते–षष्ठस्थ शु. परिहार, शु. दा.) |
| कार्ति. कृ.५, चंद्र | 21 अक्तू | ५ कार्ति. | मृग. | 6:51 से 29:51 | तुला | वृ./मि. | ।।ऽगु.।।ऽनृ.।ऽ।। | दि. ल. ८ (चं. गु. शु. पूज्य), 11:11 से 14:11 तक परिघ दोष, रा. ल. २ (गु. शु. दा.), ३ (बुध त्रिकोणगते षष्ठस्थ शु. परिहार) |
| कार्ति. कृ.१०, शनि | 26 अक्तू | १०कार्ति. | मघा | 9:46 बाद | तुला | सिंह | ऽबु.गु.।।।।।।ऽ।। | दि. ल. ८ (अल्पकाले, गु. शु. दा.), ९ (षष्ठस्थ गु. एवं अष्टमस्थ मं. परिहार, 16:24 से भद्रा भूगोल, 30:39 तक क्रान्तिसाम्य दोष |
| कार्ति. कृ.११, रवि | 27 अक्तू | ११कार्ति. | मघा | 12:24 तक | तुला | सिंह | ऽबु.गु.।।।।।।ऽ।। | दि. ल. ८ (8:57 तक, अल्पकाले) 8:57 से 20:56 तक मृत्युबाण दोष |
| कार्ति. कृ.११, चन्द्र | 28 अक्तू | १२कार्ति. | उ.फा. | 15:24 बाद | तुला | सिं./कं. | ।।।।।।।ऽ।ऽ | गोधूलि, रा. ल. २ (गु. शु. दा.), ३ (षष्ठस्थ शुक्र परिहार, शु. दा.), दग्धा परिहार |
| कार्ति. शु.२, रवि | 3 नवंबर | १८कार्ति. | अनु. | सारा दिन | तुला | वृश्चिक | ।।ऽबु.।।ऽरो.।।।। | दि. ल. ८ (चं. बु. गु. शु. पूज्य), ९ (षष्ठस्थ गुरु व अष्टमस्थ मं. परिहार, चं. मं. गु. दा., गोधूलि, रा. ल. २ (चं. बु. गु. दा.), तदुपरान्त लग्नऽभावः |
| कार्ति. शु.३, चन्द्र | 4 नवंबर | १९कार्ति. | अनु. | 8:04 तक | तुला | वृश्चिक | ।।ऽबु.।।।।।।। | दि. ल. ८ (अल्पकाले 8:04 तक) |
| कार्ति. शु.५, बुध | 6 नवंबर | २१कार्ति. | मूल | 11:00 तक | तुला | धनु | ।।।।ऽगु.।।।।। | दि. ल. ८ (बु. गु. दा.), ९ (11:00 तक, बु. गु. शु. पूज्य, षष्ठस्थ गु. परिहार) |
| कार्ति. शु.७, शुक्र | 8 नवंबर | २३कार्ति. | श्रवण | 12:03 बाद | तुला | मकर | ।ऽ।।ऽमं.ऽनृ.।ऽ।। | गोधूलि, रा. ल. ३ (लग्नेश बुध षष्ठस्थ, चं. अष्टमस्थ परिहार, चं. पूज्य) |
| कार्ति. शु.८, शनि | 9 नवंबर | २४कार्ति. | श्रवण | 11:48 तक | तुला | मकर | ।ऽ।।ऽमं.।।ऽ।। | दि. ल. ८ (बु. गु. दा.), ९ (लग्नेश गुरु षष्ठस्थ परिहार, 11:48 तक, गु. पूज्य) |
| कार्ति. शु.८, शनि | 9 नवंबर | २४कार्ति. | धनि. | 11:48 बाद | तुला | म./कुं. | ।।।।।।।ऽ।। | गोधूलि, 19:24 से 23:44 तक क्रान्तिसाम्य दोष |
| कार्ति. शु.९, रवि | 10 नवं. | २५कार्ति. | धनि. | 11:00 तक | तुला | कुम्भ | ।।।।।।।ऽऽ। | दि. ल. ८ (बु. गु. दा.), ९ (षष्ठस्थ गु. परिहार, गु. शु. पूज्य) |

[ चातुर्मास्य के विवाह–मुहूर्त्त समाप्त ]

| पक्ष तिथि वार | ता.अंग्रे. | प्रविष्टे | वि. नक्षत्र | समय (भा.स्टैं.टा.) | सूर्य राशि | चंद राशि | लतादि दश रेखाएं | शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण ( भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में ) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कार्ति. शु.१३, गुरु | 14 नवं. | २९कार्ति. | अश्विनी | 24:33 तक | तुला | मेष | ।।।।।ऽमृ.।।।। | दि. ल. ८ (7:51 तक) अल्पकाले–7:51 से 19:45 तक मृत्युबाण, 11:30 से व्यतिपात दोष (भीष्मपंचक विचार) |

## ✲ मार्गशीर्ष मास (नवम्बर-दिसम्बर) ✲ सन् 2024 ई.

| पक्ष तिथि वार | ता.अंग्रे. | प्रविष्टे | वि. नक्षत्र | समय (भा.स्टैं.टा.) | सूर्य राशि | चंद राशि | लतादि दश रेखाएं | शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण ( भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में ) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मार्ग.कृ. २, रवि | 17 नवं. | २ मार्ग. | मृग. | 17:23 बाद | वृश्चिक | वृ./मि. | ।।ऽगु.।ऽबु.।।।।। | मृत्युबाण दोष 19:15 तक, गोधूलि, रा. ल. ३ (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार, बु. शु. दा.), ७ (अष्टमस्थ गु. परिहार, गु. शु. दा.) |
| मार्ग.कृ. ३, चन्द्र | 18 नवं. | ३ मार्ग. | मृग. | 15:49 तक | वृश्चिक | मिथुन | ।।ऽगु.।ऽबु.ऽअ.।।।। | दि. ल. ९ (षष्ठस्थ गु., अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. गु. शु. दा.), भद्रा पातालगते |
| मार्ग.कृ. ७, शुक्र | 22 नवं. | ७ मार्ग. | मघा | 17:10 बाद | वृश्चिक | सिंह | ऽमं.गु.।।।।ऽचौ.।ऽ।। | गोधूलि, रा. ल. ३ (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार, बु. गु. पूज्य दान वा), ७ (गु. शु. दा.) |
| मार्ग.कृ. ८, शनि | 23 नवं. | ८ मार्ग. | मघा | 19:27 तक | वृश्चिक | सिंह | ऽमं.गु.।।।।।।ऽ।। | दि. ल. ९ (गु. पूज्य दान वा), 11:42 से वैधृति–दोष |
| मार्ग.कृ. ९, रवि | 24 नवं. | ९ मार्ग. | उ.फा. | 22:17 बाद | वृश्चिक | सिं./कं. | ऽबु.।ऽके.।।।।ऽ।ऽ | रा. ल. ७ (चं. गु. शु. दा. व पूजा) केतु–युति परिहार |

# शुभ विवाह मुहूर्त–मार्गशीर्ष मास (नवम्बर-दिसम्बर) ✲ सन् 2024 ई.

| पक्ष तिथि वार | ता.अंग्रे. | प्रविष्टे | वि. नक्षत्र | समय (भा.स्टैं.टा.) | सूर्य राशि | चंद्र राशि | लतादि दश रेखाएं | शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मार्ग.कृ.१०, चंद्र | 25 नवं. | १० मार्ग. | उ.फा. | 25:24 तक | वृश्चिक | कन्या | ऽबु.।ऽके.।।।।ऽ।ऽ | दि. ल. ९ (लग्नेश षष्ठस्थ गु. परिहार, अष्टमस्थ मं. परिहार), १ (बु. दा.), गोधूलि, –(केतु युति परिहार) दग्धा–परिहार, भद्रा पातालगते |
| मार्ग.कृ.११, मंग | 26 नवं. | ११ मार्ग. | चित्रा | 28:35 बाद | वृश्चिक | कन्या | ।।।।।।।ऽ।। | रा. ल. ७ (28:35 बाद, गु. शु. दा.) |
| मार्ग.कृ.१२, बुध | 27 नवं. | १२ मार्ग. | चित्रा | सारा दिन | वृश्चिक | कं./तु. | ।।।।।ऽअ.।ऽ।। | दि. ल. ९ (लग्नेश गु. षष्ठस्थ एवं अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. गु. दा.), १ (षष्ठस्थ–चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा), गोधूलि, रा. ल. ७ (गु. शु. दा.) |
| मार्ग.शु. ४, गुरु | 5 दिसं. | २० मार्ग. | उ.षा. | 17:27 तक | वृश्चिक | मकर | ।।ऽशु.।।।।।।। | 14:09 तक मृत्युबाण दोष, दि. ल. १ (बु. दा.) |
| मार्ग.शु. ४, गुरु | 5 दिसं. | २० मार्ग. | श्रव. | 17:27 बाद | वृश्चिक | मकर | ।।।।ऽमं.।।ऽ।। | 20:07 से 26:00 तक क्रान्तिसाम्य–दोष, रा.ल. ७ (लग्नेश शु. केन्द्रस्थ होने से– –अष्टमस्थ गु. परिहार) (गु. पूज्य–दान वा) |
| मार्ग.शु. ५, शुक्र | 6 दिसं. | २१ मार्ग. | श्रवण | 17:19 तक | वृश्चिक | मकर | ।।।।ऽमं.ऽअ.।ऽ।। | 10:43 से 14:19 तक व्याघात दोष, दि. ल. १ (सू. बु. दा.), गोधूलि |
| मार्ग.शु. ५, शुक्र | 6 दिसं. | २१ मार्ग. | धनि. | 17:19 बाद | वृश्चिक | म./कुं. | ।।।।।।।।।। | गोधूलि, रा. ल. ७ (गु. पूज्य दान वा) |
| मार्ग.शु. ६, शनि | 7 दिसं. | २२ मार्ग. | धनि. | 16:51 तक | वृश्चिक | कुम्भ | ।।।।।।।।।। | दि. ल. १ (सू. बु. दा. व पूजा), गोधूलि (16:51 तक) |
| मार्ग.शु. ११, बुध | 11 दिसं. | २६ मार्ग. | अश्वि | 11:48 बाद | वृश्चिक | मेष | ।।।।।।।।।। | दि. ल. १ (सू. बु. दान व पूजा), गोधूलि 18:47 से 21:47 तक परिघ दोष, रा. ल. ७ (चं. पूज्य दान वा)–भद्रा स्वर्गगते |

## ✲ माघ मास (जनवरी–फरवरी) ✲ सन् 2025 ई.

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| माघ कृ. ३, गुरु | 16 जन. | ३ माघ | मघा | 11:17 बाद | मकर | सिंह | ।।।।।ऽअ.।।।। | दि. ल. १ (मं. दा.), २ (बु. दा.) (वृष लग्न 15:46 तक–भद्रा पूर्वे) 15:46 से 28:07 तक भद्रा भूलोके, रा. ल. ८ (28:07 बाद, गु. दा.) |
| माघ कृ. ४, शुक्र | 17 जन. | ४ माघ | मघा | 12:45 तक | मकर | सिंह | ।।।।।।।।।। | दि. ल. १ (12:45 तक)–अल्पकाले |
| माघ कृ. ५, शनि | 18 जन. | ५ माघ | उ.फा. | 14:52 बाद | मकर | सिं./कं. | ।।ऽके.।ऽश.ऽनृ.।ऽ।। | दि. ल. २ (14:52 बाद, अत्यल्पकाले), गोधूलि, रा. ल. ७ (25:16 तक, अष्टमस्थ–गुरु पूज्य दान वा), 25:16 से 27:40 तक अतिगण्डदोष, ८ (27:40 बाद)–केतु युति परिहार |
| माघ कृ. ५, रवि | 19 जन. | ६ माघ | उ.फा. | 17:30 तक | मकर | कन्या | ।।ऽके.।ऽश.।।ऽ।। | दि. ल. १ (षष्ठस्थ चन्द्र परिहार), २ (गु. दा.) (केतु युति परिहार) |
| माघ कृ. ७, मंग | 21 जन. | ८ माघ | स्वाति | 23:37 बाद | मकर | तुला | ।।।।।।ऽऽ।। | रा. ल. ७ (अष्टमस्थ गु. परिहार, गु. दा.), 27:49 से 29:49 तक शूल–दोष |
| माघ कृ. ८, बुध | 22 जन. | ९ माघ | स्वाति | 26:34 तक | मकर | तुला | ।।।।।ऽरो.।ऽ।। | दि. ल. १ (चं. दान व पूजा), २ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. बु. गु. दा.), –(23:22 से 28:47 तक क्रान्तिसाम्य दोष) |
| माघ कृ.१०, शुक्र | 24 जन. | ११ माघ | अनु. | 31:08 तक | मकर | वृश्चिक | ।।।।।।।ऽ।। | 16:33 तक मृत्युबाण दोष विचार, रा. ल. ७ (अष्टमस्थ गु. परिहार, गु. दा.) |
| माघ शु. १, गुरु | 30 जन. | १७ माघ | धनि. | 29:51 तक | मकर | म./कुं. | ।ऽ।।।।।।।। | 18:33 तक व्यतिपात दोष, **गोधूलि**, तदुपरान्त लग्नऽभाव, रा. ल. ८ (गुरु केन्द्रगते शत्रुराशिगते अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दान व पूजा)–**आवश्यके** |
| माघ शु. ७, मंग | 4 फर. | २२ माघ | अश्विनी | 21:50 तक | मकर | मेष | ।ऽ।।।ऽनृ.।ऽ।। | दि. ल. १ (चं. दा.), २ (चं. गु. दा.)–15:17 से 19:23 तक क्रान्तिसाम्य दोष |
| माघ शु. १०, शुक्र | 7 फर. | २५ माघ | रोहिणी | 18:40 तक | मकर | वृष | ।।ऽगु.।।ऽचौ.ऽ।ऽ। | दि. ल. १, २ (चं. शु. दा.), 16:17 से वैधृति–दोष |

## ✲ फाल्गुन मास (फरवरी–मार्च) ✲ सन् 2025 ई.

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फाल्गु.कृ.१, गुरु | 13 फर. | २ फाल्गु | मघा | 21:07 तक | कुम्भ | सिंह | ।।।।ऽसू.बु.।ऽऽ।। | प्रात: 7:31 से 9:55 तक अतिगण्ड दोष, दि. ल. १ (सू. शु. दा.), २ (सू. गु. दा.), ४ (सू. बु. दा.), 21:41 से मृत्युबाण दोष |

## शुभ विवाह मुहूर्त—फाल्गुन मास (फरवरी-मार्च) ✲ सन् 2025 ई.

| पक्ष तिथि वार | ता.अंग्रे. | प्रविष्टे | वि. नक्षत्र | समय (भा.स्टैं.टा.) | सूर्य राशि | चंद राशि | लतादि दश रेखाएं | शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण ( भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में ) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फाल्गु.कृ.२, शुक्र | 14 फर. | ३ फाल्गु | उ.फा. | 23:10 बाद | कुम्भ | सिं./कं. | ।।ऽके.।ऽश.।।।।। | रा. ल. १० (चं. दा., 29:45 तक चन्द्र पूज्य)–केतु युति परिहार |
| फाल्गु.कृ.३, शनि | 15 फर. | ४ फाल्गु | उ.फा. | 25:40 तक | कुम्भ | कन्या | ।।ऽके. ।ऽश. ।।।।। | दि. ल. १ (षष्ठस्थ चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा), २, ४ (सू. बु. दा.)–भद्रा पाताले |
| फाल्गु.कृ.६, मंग | 18 फर. | ७ फाल्गु | स्वाति | 7:36 बाद | कुम्भ | तुला | ।ऽ।ऽबु.।ऽचौ.।।ऽ। | दि. ल. १ (चं. पूज्य), २ (चं. दा. व पूज्य), ४ (सू. बु. श. दा.), गोधूलि,<br>19:39 से 21:08 तक बुधपादवेध, रा. ल. १० (शु. दा.) |
| फाल्गु.कृ.६, बुध | 19 फर. | ८ फाल्गु | स्वाति | 10:40 तक | कुम्भ | तुला | ।ऽ।ऽबु.।ऽचौ.।।ऽ। | दि. ल. १ (10:40 तक, चं. पूज्य)–भद्रा पातालगते |
| फाल्गु.कृ.७, गुरु | 20 फर. | ९ फाल्गु | अनु. | 13:30 बाद | कुम्भ | वृश्चिक | ।।।।।।ऽऽ।। | 11:34 से 15:10 तक व्याघात दोष, दि. ल. ४ (सू. बु. श. दा.), गोधूलि, रा. ल. १० (शु. दा.) |
| फाल्गु.कृ.८, शुक्र | 21 फर. | १०फाल्गु | अनु. | 15:54 तक | कुम्भ | वृश्चिक | ।।।।।ऽरो. ।ऽ।। | दि. ल. १ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. दा.), २ (चं. गु. दा.), ४ (कर्क लग्न-<br>अल्पकाले-15:54 तक, सू. बु. दा.) |
| फाल्गु.कृ.१२,मंग | 25 फर. | १४फाल्गु | उ.षा. | 18:31 तक | कुम्भ | मकर | ।ऽ।।ऽमं. ।।ऽ।। | प्रात: 8:15 तक व्यतिपात दोष, दि. ल. १, २ (गु. दा.), दोपहर 12:48 से कृष्ण त्रयोदशी |
| फाल्गु.शु.४, चंद्र | 3 मार्च | २०फाल्गु | अश्वि. | 28:30 तक | कुम्भ | मेष | ।।।।।।।ऽ।ऽ | दि. ल. १ (चं. शु. दा.), २ (चं. गु. दा.), ४ (सू. श. दा.),-(भद्रा स्वर्गगते)<br>(18:43 से 30:42 तक मृत्युबाण दोष) |
| फाल्गु.शु.६, बुध | 5 मार्च | २२फाल्गु | रोहि. | 25:09 बाद | कुम्भ | वृष | ।।ऽगु. ।।।ऽऽ।। | विष्कम्भ दोष 24:19 तक, रा. ल. १० (शु. दा.) |
| फाल्गु.शु.७, गुरु | 6 मार्च | २३फाल्गु | रोहि. | 24:06 तक | कुम्भ | वृष | ।।ऽगु. ।।ऽनृ. ।ऽ।। | दि. ल. १, २ (चं. गु. दा.), ४ (सू. श. दा.)–भद्रा स्वर्गगते |
| फाल्गु.शु.७, गुरु | 6 मार्च | २३फाल्गु | मृग. | 24:06 बाद | कुम्भ | वृष | ऽश. ।।।।ऽनृ.।ऽ।। | रा. ल. १० (शु. दा.) |

## ✲ होलाष्टक में (केवल उत्तराखण्ड, पूर्वी उ.प्र., बिहार आदि राज्यों के लिए) ✲ सन् 2025 ई.

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फाल्गु.शु.८, शुक्र | 7 मार्च | २४फाल्गु | मृग. | 23:32 तक | कुम्भ | वृ./मि. | ऽश.।।।।।।ऽ।। | दि. ल. १, २ (चं. गु. दा.), ४ (मं. दा.) |
| फाल्गु.शु.१२, मंग | 11 मार्च | २८फाल्गु | मघा | 26:16 बाद | कुम्भ | सिंह | ।।।।।।।।।। | रा. ल. १० (गुरु त्रिकोणगते अष्टमस्थ चं. परिहार, चन्द्र पूज्य दान वा) |
| फाल्गु.शु.१३, बुध | 12 मार्च | २९फाल्गु | मघा | 28:06 तक | कुम्भ | सिंह | ।।।।।।।।।। | दि. ल. १ (बु. शु. दा.), २ (गु. दा.), ४ (सू. श. दा.), 18:41 से 30:43 तक मृत्युबाण दोष |

**विशेष—आगामी वर्ष ( वि. संवत् २०८२ ) में गुरु–शुक्रास्त की सम्भावित तारीखें**

(1) गुरू लगभग 11 जून 2025 ई० को पश्चिम में अस्त होकर 5 जुलाई, 2025 ई. को पूर्व में उदय होगा।
(2) शुक्र लगभग 13 दिसम्बर, 2025 ई. को पूर्व में अस्त होकर 30 जनवरी, 2026 ई. को पश्चिम में उदय होगा।

## —विवाह में दोष निवृत्ति के लिए पुनर्विवाह का विचार—

आचार्य श्रीधर के अनुसार–स्त्री और पुरूष का विवाह हो जाने के बाद मिलान, विवाह मुहूर्त्त आदि के दोष बारे में ज्ञान के बाद मिलान, विवाह मुहूर्त्त आदि के दोष सम्बन्धी ज्ञान हो जाने पर, उन दोनों (वर और वधू) को फिर से विवाह कर लेना चाहिए। लग्न तथा चन्द्र लग्न के दोष में, ग्रह तारा आदि के मिलान की स्थिति में और अन्य कालों में, दुष्टयोगादि की सम्भावना में और विवाह में दम्पत्ति के अशौच आदि की स्थिति में उनके दोष की निवृत्ति अर्थात् दोष की शान्ति के लिए वर–वधू में परस्पर फिर से विवाह (पुनर्विवाह) कराने का परामर्श दिया गया है—पुनर्विवाहं वक्ष्यामि दम्पत्योः शुभवृद्धिदम्॥ लग्नेन्दुलग्न योर्दोषे ग्रहतारादि सम्भवे। अन्येष्व–शुभकालेषु दुष्टयोगादि सम्भवे। विवाहेचापि–दम्पत्यो राशौचादि समुद्भवे॥ तस्य दोषस्य शान्त्यर्थं पुनर्वैवाह्यमिष्यते॥ (निर्णय सिन्धुः)

## राहु कालम्

### शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु–कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में राहु कालम का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार—प्रातः 7/30 से प्रातः 9 बजे तक
मंगलवार—अपराह्न 3/00 से 4/30 बजे तक
बुधवार—दोपहर 12/00 से 1/30 बजे तक
बृहस्पतिवार—दोपहर 1/30 से 3/00 बजे तक
शुक्रवार—प्रातः 10/30 से दुपै. 12 बजे तक
शनिवार—प्रातः 9/00 से प्रातः 10/30 बजे तक
रविवार—सायं 4/30 से सायं 6/00 बजे तक

नोट—यह समयावधि प्रत्येक नगर के दिनमान के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।

# दोषयुक्त एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त-संवत् २०८१ वि. (सन् 2024-25 ई.)

नीचे वि. संवत् २०८१ में उन विशेष दोषयुक्त एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्तों का स्पष्टीकरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह-नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। यहाँ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्तों के आगे जिन युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों का विवरण लिखा है, उनका कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है। गत पृष्ठों में जिन मुहूर्त्तों, लग्नों में क्रूर ग्रहयुति, लग्नेश षष्ठाष्टमस्थ, चंद्र षष्ठाष्टमस्थ, शुक्र षष्ठाष्टमस्थ आदि दोषों का परिहार मिल गया है, उन्हें शुद्ध मुहूर्तों में सम्मिलित कर लिया गया है।

**निवेदक—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी, गणितकर्त्ता**

| ता. मास वार | नक्षत्र | समय | दोष विवरण |
|---|---|---|---|
| 13 अप्रै, शनि | मृग. | 24:49 तक | संक्रान्ति-दोष |
| 19 अप्रै, शुक्र | मघा | 10:57 तक | भद्रा, 10:32 से क्रान्तिसाम्य |
| 20 अप्रै, शनि | उ.फा. | 14:04 बाद | राहु-वेध |
| 21 अप्रै, रवि | उ.फा. | 17:08 तक | राहु-वेध |

21 अप्रैल से 10 जुलाई, 2024 ई. तक शुक्र-अस्त दोष
इसी मध्य 3 मई से 5 जून तक गुरु अस्त दोष रहेगा।

| ता. मास वार | नक्षत्र | समय | दोष विवरण |
|---|---|---|---|
| 10 जुला, बुध | मघा | 10:15 तक | व्यतीपात दोष |
| 12 जुला, शुक्र | हस्त | 16:09 बाद | राहुवेध |
| 13 जुला, शनि | हस्त | 19:15 तक | राहुवेध |
| 13 जुला, शनि | चित्रा | 19:15 बाद | शनिवेध |
| 14 जुला, रवि | चित्रा | 22:07 तक | शनिवेध, मृत्युबाण |
| 15 जुला, चंद्र | स्वा. | 24:30 तक | मासान्त |
| 16 जुला, मंग | अनु. | 26:14 बाद | संक्रान्ति-दोष |
| 17 जुला, बुध | अनु. | 27:13 तक | 12:29 से 25:02 तक मृत्युबाण, लग्नऽभाव |
| 18 जुला, गुरु | मूल | 27:25 बाद | सूर्यवेध |
| 22 जुला, चंद्र | श्रव. | 22:21 तक | 16:50 तक लग्नऽभाव<br>16:50 से 22:21 तक बुधपादवेध |
| 25 जुला, गुरु | उ.भा. | 16:17 बाद | केतुवेध |
| 26 जुला, शुक्र | उ.भा. | 14:30 तक | केतुवेध |
| 26 जुला, शुक्र | रेव. | 14:30 बाद | लग्नऽभाव, 22:48 से मृत्युबाण |
| 27 जुला, शनि | रेव. | 13:00 तक | 11:22 तक मृत्युबाण, लग्नऽभाव |
| 28 जुला, रवि | अश्वि. | 11:48 तक | लग्नऽभाव: |
| 31 जुला, बुध | रोहि. | 10:13 तक | लग्नऽभाव: |
| 1 अग, गुरु | मृग. | 10:24 तक | लग्नऽभाव: |
| 8 अग., गुरु | हस्त | 23:34 तक | राहुवेध |
| 9 अग., शुक्र | हस्त | 26:45 तक | राहु वेध |

| ता. मास वार | नक्षत्र | समय | दोष विवरण |
|---|---|---|---|
| 9 अग, शुक्र | चित्रा | 26:45 तक | शनि-वेध |
| 10 अग., शनि | चित्रा | 29:49 तक | शनिवेध |
| 12 अग., चंद्र | स्वा. | 8:33 तक | लग्नऽभाव: |
| 14 अग., बुध | अनु. | 12:13 तक | लग्नऽभाव: |
| 15 अग., गुरु | मूल | 12:53 बाद | मासान्त दोष |
| 16 अग., शुक्र | मूल | 12:44 तक | संक्रान्ति-दोष |
| 17 अग., शनि | उ.षा. | 11:49 बाद | भौमवेध |
| 18 अग., रवि | उ.षा. | 10:15 तक | भौम-वेध |
| 18 अग., रवि | श्रव. | 10:15 बाद | सूर्य-वेध |
| 19 अग., चंद्र | श्रव. | 8:10 तक | सूर्य-वेध |
| 21 अग., बुध | उ.भा. | 24:34 बाद | राहुयुति, केतु-वेध |
| 22 अग., गुरु | उ.भा. | 22:06 तक | राहुयुति, केतु-वेध |
| 22 अग., गुरु | रेव. | 22:06 बाद | भुजंगपात |
| 23 अग., शुक्र | रेव. | 19:54 तक | भुजंगपात, 19:14 से क्रान्तिसाम्य |
| 27 अग., मंग | रोहि. | 15:38 तक | 17:24 तक मृत्युबाण |
| 1 सितं., रवि | मघा | 21:49 बाद | कृष्ण त्र्योदशी |
| 2 सितं., चंद्र | मघा | 24:20 तक | अमावस |
| 5 सितं., गुरु | उ.फा. | 6:15 तक | लग्नऽभाव: |
| 5 सितं., गुरु | हस्त | 6:15 बाद | राहु-वेध, मृत्युबाण |
| 6 सितं., शुक्र | हस्त | 9:25 तक | राहु-वेध |
| 6 सितं., शुक्र | चित्रा | 9:25 बाद | शनि-वेध |
| 7 सितं., शनि | चित्रा | 12:34 तक | शनि-वेध |
| 14 सितं., शनि | श्रव. | 20:33 बाद | मृत्युबाण दोष |
| 15 सितं., रवि | श्रव. | 18:49 तक | मासान्त दोष |
| 16 सितं., चंद्र | धनि | 16:33 तक | संक्रान्ति-दोष |

18 सितंबर से 2 अक्तू., 2024 ई. तक श्राद्ध-दिन

| ता. मास वार | नक्षत्र | समय | दोष विवरण |
|---|---|---|---|
| 3 अक्तू, गुरु | हस्त | 15:32 तक | राहु-वेध |
| 4 अक्तू, शुक्र | चित्रा | 18:38 तक | वैधृति-दोष |
| 4 अक्तू, शुक्र | स्वा. | 18:38 बाद | शनि-वेध |
| 5 अक्तू, शनि | स्वा. | 21:33 तक | शनि-वेध |
| 8 अक्तू, मंग | मूल | 28:08 बाद | भौम-वेध |
| 9 अक्तू, बुध | मूल | 29:15 तक | भौम-वेध |
| 10 अक्तू, गुरु | उ.षा. | 29:41 बाद | लग्नऽभाव: |
| 11 अक्तू, शुक्र | श्रव. | 29:25 बाद | लग्नऽभाव: |
| 12 अक्तू, शनि | धनि. | 28:28 बाद | भुजंगपात |
| 13 अक्तू, रवि | धनि. | 26:52 तक | भुजंगपात |
| 15 अक्तू, मंग | उ.भा. | 22:09 बाद | केतु-वेध |
| 16 अक्तू, बुध | उ.भा. | 19:18 तक | केतुवेध, मासान्त दोष |
| 17 अक्तू, गुरु | रेव. | 16:20 तक | संक्रान्ति-दोष |
| 18 अक्तू, शुक्र | अश्वि | 13:26 तक | मृत्युबाण 7:54 से 19:58 |
| 29 अक्तू, चंद्र | उ.फा. | 18:34 तक | वैधृति-दोष |
| 29 अक्तू, चंद्र | हस्त | 18:34 बाद | राहु-वेध |
| 30 अक्तू, बुध | हस्त | 21:44 तक | राहु-वेध |
| 30 अक्तू, बुध | चित्रा | 21:44 बाद | कृष्ण-त्रयोदशी |
| 31 अक्तू, गुरु | चित्रा | 24:45 तक | कृष्ण-चतुर्दशी |
| 31 अक्तू, गुरु | स्वा. | 24:45 बाद | कृष्ण चतुर्दशी/अमावस |
| 1 नवं., शुक्र | स्वा. | 27:31 तक | कार्तिक अमावस |
| 2 नवं., शनि | अनु. | 29:58 बाद | लग्नऽभाव: |
| 5 नवं., मंग | मूल | 9:45 बाद | मृत्युबाण 8:51 से 20:49 +लग्नऽभाव: |
| 7 नवं., गुरु | उ.षा. | 11:47 बाद | भुजंगपात |
| 8 नवं., शुक्र | उ.षा. | 12:03 तक | भुजंगपात |
| 12 नवं., मंग | उ.भा. | 7:52-29:40 | राहुयुति अपरिहार्य |

# अशुद्ध/दोषयुक्त विवाह मुहूर्त—वि. संवत् २०८१

| ता. मास वार | नक्षत्र | समय | दोष विवरण |
|---|---|---|---|
| 12 नवं., मंग | रेव. | 29:40 बाद | केतु-वेध |
| 13 नवं., बुध | रेव. | 27:11 तक | केतु-वेध |
| 13 नवं., बुध | अश्वि | 27:11 बाद | लग्नऽभावः |
| 14 नवं., गुरु | अश्वि | 24:33 तक | मृत्युबाण 7:51 से 19:45, 11:30 से व्यतिपात |
| 16 नवं.,शनि | रोहि. | 19:28 बाद | संक्रान्ति दोष |
| 17 नवं., रवि | रोहि. | 17:23 तक | मृत्युबाण 7:21 से 19:15 |
| 25 नवं., चंद्र | हस्त | 25:24 बाद | राहु-वेध |
| 26 नवं., मंग | हस्त | 28:35 तक | राहुवेध, मृत्युबाण 17:10 तक |
| 28 नवं., गुरु | चित्रा | 7:36 तक | कृष्ण त्रयोदशी |
| 2 दिसं.,चंद्र | मूल | 15:46 बाद | 16:01 से 18:01 तक शूलदोष, 19:08 से भुजंगपात |
| 3 दिसं.,मंग | मूल | 16:42 तक | भुजंगपात |
| 4 दिसं.,बुध | उ.षा. | 17:15 बाद | लग्नऽभाव + मृत्युबाण- 26:20 से |
| 9 दिसं.,चंद्र | उ.भा. | 14:56 बाद | राहुयुति अपरिहार्य |
| 10 दिसं.,मंग | उ.भा. | 13:30 तक | राहुयुति अपरिहार्य |
| 10 दिसं.,मंग | रेव. | 13:30 बाद | केतु-वेध |
| 11 दिसं.,बुध | रेव. | 11:48 तक | केतु-वेध |
| 12 दिसं.,गुरु | अश्वि. | 9:53 तक | लग्नऽभावः |
| 13 दिसं.,शुक्र | रोहि. | 29:48 बाद | लग्नऽभावः |
| 14 दिसं.,शनि | रोहि. | 27:55 तक | मासान्त-दोष |

[ 15 दिसं., 2024 से 13 जन. 2025 ई. पौष मास रहेगा। ]

( सन् 2025 ई० )

| ता. मास वार | नक्षत्र | समय | दोष विवरण |
|---|---|---|---|
| 19 जन.,रवि | हस्त | 17:30 बाद | राहु-वेध |
| 20 जन.,चन्द्र | हस्त | 20:30 तक | राहु-वेध |
| 20 जन., चंद्र | चित्रा | 20:30 बाद | शुक्र-शनि वेध |
| 21 जन., मंग | चित्रा | 23:37 तक | शुक्र-शनि वेध |
| 23 जन., गुरु | अनु. | 29:08 बाद | मृत्युबाण ( 28:44 से ) |
| 26 जन., रवि | मूल | 8:26 बाद | भौम-वेध, 20:55 से कृष्ण १३ |
| 1 फर.,शनि | उ.भा. | 26:33 बाद | शुक्र-राहु युति अपरिहार्य |
| 2 फर., रवि | उ.भा. | 24:53 तक | शुक्र-राहु युति अपरिहार्य |
| 2 फर., रवि | रेव. | 24:53 बाद | केतु-वेध |
| 3 फर., चंद्र | रेव. | 23:17 तक | केतु-वेध |
| 3 फर., चंद्र | अश्वि. | 23:17 बाद | लग्नऽभावः |
| 6 फर., गुरु | रोहि. | 19:30 बाद | लग्नऽभावः |
| 7 फर.,शुक्र | मृग. | 18:40 बाद | वैधृति दोष |
| 8 फर.,शनि | मृग. | 18:07 तक | 15:16 तक वैधृ.विष्क. दोष |
| 12 फर., बुध | मघा | 19:36 बाद | संक्रान्ति-दोष |
| 15 फर.,शनि | हस्त | 25:40 बाद | शुक्र-राहु वेध |
| 16 फर., रवि | हस्त | 28:31 तक | शुक्र-राहु वेध |
| 16 फर., रवि | चित्रा | 28:31 बाद | भुजंगपात, शनिवेध |
| 17 फर., चंद्र | चित्रा | सारा दिन | भुजंगपात, शनिवेध |
| 18 फर., मंग | चित्रा | 7:36 तक | भुजंगपात, शनिवेध |
| 22 फर.,शनि | मूल | 17:40 बाद | भौमवेध |
| 23 फर., रवि | मूल | 18:43 तक | भौमवेध |
| 24 फर., चंद्र | उ.षा. | 18:59 बाद | व्यतिपात-दोष |
| 25 फर., मंग | श्रव. | 18:31 बाद | कृष्ण-त्रयोदशी |
| 1 मार्च,शनि | उ.भा. | 11:23 बाद | राहुयुति अपरिहार्य |
| 2 मार्च,रवि | उ.भा. | 9:00 तक | राहुयुति अपरिहार्य |
| 2 मार्च,रवि | रेव. | 9:00 से 30:39 | केतु-वेध |
| 2 मार्च,रवि | अश्वि | 30:39 बाद | लग्नऽभावः |
| 13 मार्च, गुरु | उ.फा. | 30:20 बाद | मासान्त, मृत्युबाण |
| 13 मार्च,शुक्र | उ.फा. | सारा दिन | संक्रान्ति-दोष |

### श्रावण मास में

## काँवड़ जलाभिषेक मुहूर्त—सन् 2024 ई.

गोमुख, श्रीकेदारनाथ, श्रीअमरनाथ, श्री-हरिद्वार, नीलकण्ठ एवं गंगादि तीर्थों से श्रीगंगाजल के कलश भरकर भगवान् श्रीशिव की प्रसन्नता हेतु आषाढ़ पूर्णिमा से लेकर सम्पूर्ण श्रावण मास पर्यन्त भगवान् श्रीशिव के प्रतिष्ठित मन्दिरों, ज्योतिर्लिङ्गों, विग्रहों, स्वरूपों तथा क्षेत्रीय मन्दिरों में शिवभक्त काँवड़ियों द्वारा श्रद्धारूपी श्रीगङ्गाजल अभिषेक किया जाता है।

स्कन्दपुराणानुसार श्रावण मास में नियमपूर्वक नक्त व्रत करें और महीने भर प्रतिदिन रुद्राभिषेक करें।

**कुर्यात् नक्त व्रतं योगिन् श्रावणे नियतो नरः। रुद्राभिषेकं कुर्वीत् मासमात्रं दिने दिने।।**

कुछ लोगों का भ्रम है कि श्रावण-भाद्रपद मास में नदियां रजस्वलारूप हो जाने से उनका जल पवित्र नहीं होता। परन्तु स्कन्दपुराण में स्पष्ट लिखा है कि सिन्धु, सूती, चन्द्रभागा, गंगा, सरयू, नर्मदा, यमुना, प्लक्षजाला, सरस्वती-ये सभी नंदसंज्ञा वाली नदियां रजोदोष से युक्त नहीं होती है।-ये सभी अवस्थाओं में निर्मल रहती हैं।

श्रीगंगादि तीर्थों से जल लाने एवं भगवान् शिवपूजन एवं शिवलिङ्ग को जलांजली अभिषेक करने की शुभ एवं पुण्य तारीखें-

| पक्ष, तिथि | वार | तारीख | नक्षत्र | समय |
|---|---|---|---|---|
| आषा.शु.१३, | शुक्र | 19 जुला. | मूल | सारा दिन |
| आषा. पूर्णिमा | रवि | 21 जुला. | उ.षा. | सारा दिन |
| श्राव. कृष्ण१, | चंद्र | 22 जुला. | श्रवण | सारा दिन |
| श्राव.कृष्ण ५, | गुरु | 25 जुला. | पू./उभा | सारा दिन |
| श्राव.कृष्ण१२, | गुरु | 1 अग. | मृ/आर्द्रा | प्रदोषकाल |
| श्राव.कृष्ण१३, | शुक्र | 2 अग. | आ/पु. | सारा दिन |
| श्राव.कृष्ण१४, | शनि | 3 अग. | पुन. | प्रात: 10 बजे तक |
| श्राव.शुक्ल ५ | शुक्र | 9 अग. | हस्त | प्रात:काल |
| श्राव. शु.१२, | शनि | 17 अग. | पू/उषा | सारा दिन |
| श्राव. शु.१४ | रवि | 18 अग. | उषा/श्र | सारा दिन |

**विशेष**—यद्यपि इन मुहूर्त्तों में से कांवड़ जलाभिषेक हेतु जल ग्रहण करने एवं जलांजली अभिषेक हेतु कोई भी मुहूर्त्त ग्रहण कर सकते हैं। शिवलिङ्ग पर जलाभिषेक हेतु यद्यपि नित्यकर्म के पश्चात् प्रात:काल का समय ही श्रेष्ठ (सूर्योदय से लगभग 2$^{\text{घं.}}$-24$^{\text{मिं.}}$ तक) रहता ह। ता. 2 अगस्त, 2024 ई., शुक्रवार को प्रदोषकाल तथा 1 अगस्त, गुरुवार को प्रदोषकाल के समय मुख्य मुहूर्त्त रहेंगे। कुछ विद्वान् मुख्य मुहूर्त्त वाले दिन ( श्रावण-शिवरात्रि-2 अगस्त) प्रदोष व निशीथकाल में जलाभिषेक करेंगे। यद्यपि आर्द्रा नक्षत्र विशेष रूप से शिव-पूजन तथा जलाभिषेक के लिए शुभ माना गया है।

**शुभ समय**—(*i*) 1 अगस्त ⇒ सायं 15:55 बाद से 19-56 तक, (*ii*) 2 अगस्त ⇒ प्रात: 9:35 तक, सायं 16:02 से 19:50 तक, (*iii*) 3 अगस्त ⇒ प्रात: 9:30 तक

# त्रिबल शुद्धि पर आधारित–वर-कन्या की राशि-अनुसार शुभ विवाह-मुहूर्त्त निकालें-संवत् २०८१ वि. (सन् 2024-25 ई.)

नीचे वर-कन्या की जन्म अथवा नाम राशि के अनुसार (**त्रिबल शुद्धि-सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित**) विवाह मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। वर-कन्या की कुण्डली मिलान के पश्चात् उनकी राशियों में जो-जो तारीखें समान होंगी, उन तारीखों में वर-कन्या का विवाह शुभ एवं ग्राह्य होगा। **विवाह लग्न** का निर्णय करने के लिए गत पृष्ठों पर दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों में से किसी विद्वान पण्डित जी के परामर्श अनुसार चयन करना चाहिए। **उदाहरण**–मेष राशि का लड़का और सिंह राशि की लड़की का विवाह मुहूर्त्त **अगस्त** (भाद्रपद), 2024 ई. में देखना हो तो, दोनों की राशियों में 19, 23, 24,26 अगस्त की तारीखों एवं मुहूर्त्तों में समानता पाई गई है, इनमें से कोई भी तारीख अपनी सुविधानुसार ग्रहण कर सकते हैं। **कार्तिक मास के मुहूर्त्त यद्यपि पर्वतीय** (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। परन्तु वर्तमान परिस्थितियों वश, अन्य प्रदेशों के वासी भी कार्तिक मास में विवाह ग्रहण करने लगे हैं। **ध्यान रहे,** विवाह के मास का निर्धारण मुख्यत: लड़के (वर) की राश्यनुसार किया जाता है। **कन्या** की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विचारणीय होता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में जबकि कन्याओं का विवाह बालिग होने पर ही करते हैं, अत: गुरु शुद्धि को गम्भीरतापूर्वक न लेते एवं ४, ८, १२वें गुरु को वर्ज्य न समझते हुए पूज्य के रूप में ग्रहण किया गया है।

**ध्यान रहे,** लड़के की जन्म (अथवा नाम) राशि से ३, ६, १०, ११वें सूर्य शुभ; १, २, ५, ७, ९ वें सूर्य पूज्य तथा ४, ८, १२वें सूर्य त्याज्य होता है। कन्या को १, ३, ६ व १०वें गुरु साधारण पूज्य एवं उन्हें ४, ८, १२वें गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए। सूर्य एवं गुरु स्वराशि या मित्रक्षेत्री हों तो उन्हें पूज्य न मानकर शुभ एवं ग्राह्य मान लिया जाता है।

| ☐ वर ( लड़का ) ☐ | वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि | ☐ कन्या ( लड़की ) ☐ |
|---|---|---|
| **मेष राशि–अप्रै.** 18, **जुला.** 11,12, 14, **अग.** 19, 23, 24, 26, 27, 28, **सितं.** 4, 7, 8, 11, 12, 13, 14, **अक्तू.** 3, 11, 12, **[ कार्तिक मासे अक्तू.** 20, 21, 26, 27, 28, **नवं.** 6, 8, 9, 10, 14] **सन् 2025 ई. में जन.** 16, 17, 18, 19, 21, 22, 30, **फर.** 4, 7, 13, 14, 15, 18, 19, 25, **मार्च** 3, 5, 6 (होलाष्टक में **मार्च** की 7, 11, 12) तारीखें शुभ होंगी। | मेष राशि के **वर** को आषाढ़, आश्विन, माघ, फाल्गुन **शुभ** ; वैशाख, ज्येष्ठ व कार्तिक मासों में **सूर्य पूज्य** तथा श्रावण, मार्गशीर्ष व चैत्र मास **त्याज्य** रहेंगे।<br>इस राशि की **कन्या** को संवतारम्भ से 1 मई तक साधारण रुपेण पूज्य तदुपरान्त संवतान्त तक शुभ रहेगा। | **मेष राशि–अप्रै.** 18, **जुला.** 11, 12, 14, 19, 20, 21, 22, 23, 27, 30, 31, **अग.** 5, 6, 7, 8, 11, 19, 23, 24, 26, 27, 28, **सितं.** 4, 7, 8, 11, 12, 13, 14, **अक्तू.** 3, 11, 12 **[ कार्तिक मासे अक्तू.** 20, 21, 26, 27, 28, **नवं.** 6, 8, 9, 10, 14] मार्गशीर्ष मासे **नवं.** 17, 18, 22, 23, 24, 25, 26, 27, **दिसं.** 5, 6, 7, 11, **सन् 2025 ई० में जन.** 16, 17, 18, 19, 21, 22, 30, **फर.** 4, 7, 13, 14, 15, 18, 19, 25, **मार्च** 3, 5, 6 *(होलाष्टक में मार्च की 7, 11, 12)* तारीखें शुभ होंगी। |
| **वृष राशि–जुला.** 11 (19:50 बाद), 12, 14, 21 (7:27 बाद), 22, 23, 27 (चं.दा.), 30, 31, **अग.** 7 (27:15 बाद), 8, 11, 13, **अक्तू.** 3, 6, 7, 11 (11:41 बाद), 12, **[ कार्तिक मासे अक्तू.** 20, 21, 28 (22:11 बाद), **नवं.** 3, 4, 8, 9, 10, 14 (चं.दा.)] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** की 17, 18, 24 (29:02 बाद), 25, 26, 27, **दिसं.** 5, 6, 7, 11 (चं.दा.), **सन् 2025 ई. में जन.** 18 (21:29 बाद), 19, 21, 22, 24, 30, **फर.** 4 (चं.दा.), 7, 14 (29:45 बाद), 15, 18, 19, 20, 21, 25, **मार्च** 3 (चं.दा.), 5, 6, *(होलाष्टक में मार्च की 7)* तारीखें शुभ होंगी। | वृष राशि के **वर** को श्रावण, कार्तिक, फाल्गुन मास-**शुभ**, ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ मासों में **सूर्य पूज्य** तथा वैशाख, भाद्रपद मास **त्याज्य** रहेंगे।<br>इस राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 1 मई तक विशेष रुपेण पूज्य तदुपरान्त संवतान्त तक साधारण रुपेण पूज्य रहेगा। | **वृष राशि–जुला.** 11 (19:50 बाद), 12, 14, 21 (7:27 बाद), 22, 23, 27, 30, 31, **अग.** 7 (27:15 बाद), 8, 11, 13, 19, 23-24 (चं.दा.), 26, 27, 28, **सितं.** 4 (9:56 बाद), 7, 8, 9, 10, 13 (27:24 बाद), 14, **अक्तू.** 3, 6, 7, 11 (11:41 बाद), 12 **[ कार्तिक मासे अक्तू.** 20, 21, 28 (22:11 बाद), **नवं.** 3, 4, 8, 9, 10, 14] **मार्गशीर्ष मास में नवं.** की 17, 18, 24 (29:02 बाद), 25, 26, 27, **दिसं.** 5, 6, 7, 11, **सन् 2025 ई. में जन.** 18 (21:29 बाद), 19, 21, 22, 24, 30, **फर.** 4, 7, 14 (29:45 बाद), 15, 18, 19, 20, 21, 25, **मार्च** 3, 5, 6, (होलाष्टक में **मार्च** की 7) तारीखें शुभ होंगी। |
| **मिथुन राशि–अप्रै.** 18, **जुला.** 11 (19:50 तक), 14, 19, 20, 21 (7:27 तक), 23 (9:21 बाद), 27, 30-31 (चं.दा.), **अग.** 5, 6, 7 (27:15 तक), 11, 13, 19 (19:00 बाद), 23, 24, 26-27 (चं.दा.), 28, **सितं.** 4 (9:56 तक), 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13 (27:24 तक), **[ कार्तिक मासे अक्तू.** 20-21 (चं.दा.), 26, 27, 28 (22:11 तक), **नवं.** 3, 4, 6, 9 (23:28 बाद), 10,14] **मार्गशीर्ष** मास में **नवं.** 17 (चं.दा.), 18, 22, 23, 24 (29:02 तक), 27 (18:07 बाद), **दिसं.** 6 (29:07 बाद), 7, 11, **सन् 2025 ई. में फर.** 13, 14 (29:45 तक), 18, 19, 20, 21, **मार्च** 3, 5-6 (चं.दा.), *(होलाष्टक में मार्च की 7, 11, 12)* तारीखें शुभ होंगी। | मिथुन राशि के **वर** को वैशाख, मार्गशीर्ष, भाद्रपद मास-**शुभ**। आषाढ़, श्रावण, कार्तिक व फाल्गुन मासों में **सूर्य पूज्य** तथा ज्येष्ठ, आश्विन, माघ मास **त्याज्य** रहेंगे।<br>इस राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 1 मई तक **शुभ**, तदुपरान्त संवतान्त तक विशेष रुपेण पूज्य रहेगा। | **मिथुन राशि–अप्रै.** 18, **जुला.** 11 (19:50 तक), 14, 19, 20, 21 (7:27 तक), 23 (9:21 बाद), 27, 30, 31, **अग.** 5, 6, 7 (27:15 तक), 11, 13, 19 (19:00 बाद), 23, 24, 26, 27, 28, **सितं.** 4 (9:56 तक), 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13 (27:24 तक), **अक्तू.** 6, 7, 11 (11:41 तक), **[ कार्तिक मासे अक्तू.** 20, 21, 26, 27, 28 (22:11 तक), **नवं.** 3, 4, 6, 9 (23:28 बाद), 10, 14] मार्गशीर्ष मास में **नवं. की** 17, 18, 22, 23, 24 (29:02 तक), 27 (18:07 बाद), **दिसं.** 6 (29:07 बाद), 7, 11, **सन् 2025 ई. में जन.** 16, 17, 18 (21:29 तक), 21, 22, 24, 30 (18:35 बाद), **फर.** 4, 7 (चं.दा.), 13, 14 (29:45 तक), 18, 19, 20, 21, **मार्च** 3, 5, 6 *(होलाष्टक में मार्च की 7, 11, 12) तारीखें शुभ होंगी।* |

| ❑ वर ( लड़का ) ❑ | वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि | ❑ कन्या ( लड़की ) ❑ |
|---|---|---|
| **कर्क राशि–अप्रै.** 18, **जुला.** 19, 20, 21, 22, 23 (9:21 तक), 27, 30, 31 (चं.दा.), **अग.** 5, 6, 7, 8, 13, 19 (19:00 तक), 23, 24, 26, 27–28 (चं.दा.), **सितं.** 4, 9, 10, 11, 12, 13, 14, **अक्तू.** 3, 6, 7, 11, 12, मार्गशीर्षे **नवं.** 17–18 (चं.दा.), 22, 23, 24, 25, 26, 27 (18:07 तक), **दिसं.** 5, 6 (29:07 तक), 11, **सन् 2025 ई० में जन.** 16, 17, 18, 19, 24, 30 (18:35 तक), **फर.** 4, 7 तारीखें शुभ होंगी। | कर्क राशि के **वर** को वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन मास-**शुभ**, श्रावण, भाद्रपद, मार्गशीर्ष व माघ मासों में **सूर्य पूज्य** तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास **त्याज्य** रहेंगे।<br>कर्क राशि की **कन्या** को गुरू संवतारम्भ से 1 मई तक साधारण रुपेण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक शुभ रहेगा। | **कर्क राशि–अप्रै.** 18, **जुला.** 11, 12, 19, 20, 21, 22, 23 (9:21 तक), 27, 30, 31, **अग.** 5, 6, 7, 8, 13, 19 (19:00 तक), 23, 24, 26, 27, 28, **सितं.** 4, 9, 10, 11, 12, 13, 14, **अक्तू.** 3, 6, 7, 11, 12, [कार्तिक मास में **अक्तू.** 20, 21, 26, 27, 28, **नवं.** 3, 4, 6, 8, 9 (23:28 तक)] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 17, 18, 22, 23, 24, 25, 26, 27 (18:07 तक), **दिसं.** 5, 6, (29:07 तक), 11, **सन् 2025 ई. में जन.** 16, 17, 18, 19, 24, 30, (18:35 तक), **फर.** 4, 7, 13, 14, 15, 20, 21, 25, **मार्च** 3, 5, 6, ***( होलाष्टक में मार्च की 7, 11, 12 )*** तारीखें शुभ होंगी। |
| **सिंह राशि–अप्रै.** 18, **जुला.** 11, 12, 14, **अग.** 19, 23, 24, 26, 27, 28, **सितं.** 4, 7, 8, 11, 12, 13, 14, **अक्तू.** 3, 11, 12, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 20, 21, 26, 27, 28, **नवं.** 6, 8, 9, 10, 14], **सन् 2025 ई. में जन.** 16, 17, 18, 19, 21, 22, 30, **फर.** 4, 7, 13, 14, 15, 18, 19, 25, **मार्च** 3, 5, 6, ***( होलाष्टक में मार्च की 7, 11, 12 )*** तारीखें शुभ होंगी। | सिंह राशि के **वर** को ज्येष्ठ, आषाढ़, कार्तिक व माघ मास **शुभ** ; आश्विन, भाद्रपद, वैशाख व फाल्गुन मासों में **सूर्य पूज्य** तथा श्रावण–मार्गशीर्ष मास **त्याज्य** रहेंगे।<br>सिंह राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 1 मई तक शुभ, तदुपरान्त संवतान्त तक साधारण रुपेण पूज्य रहेगा। | **सिंह राशि–अप्रै.** 18, **जुला.** 11, 12, 14, 19, 20, 21, 22, 23, 27, 30, 31, **अग.** 5, 6, 7, 8, 11, 19, 23, 24, 26, 27, 28, **सितं.** 4, 7, 8, 11, 12, 13, 14, **अक्तू.** 3, 11, 12 [कार्तिक मासे **अक्तू.** 20, 21, 26, 27, 28, **नवं.** 6, 8, 9, 10, 14] मार्गशीर्ष मासे **नवं.** की 17, 18, 22, 23, 24, 25, 26, 27, **दिसं.** 5, 6, 7, 11, **सन् 2025 ई. में जन.** 16, 17, 18, 19, 21, 22, 30, **फर.** 4, 7, 13, 14, 15, 18, 19, 25, **मार्च** 3, 5, 6 ***( होलाष्टक में मार्च 7, 11, 12 )*** तारीखें शुभ होंगी। |
| **कन्या राशि–जुला.** 11 (चं.दा.), 12, 14, 21 (7:27 बाद), 22, 23, 30, 31, **अग.** 5–6–7 (चं.दा.), 8, 11, 13, **अक्तू.** 3, 6, 7, 11 (11:41 बाद), 12, [ **कार्तिक मासे अक्तू.** 20, 21, 26–27–28 (चं.दा.), **नवं.** 3, 4, 8, 9, 10] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** की 17, 18, 22–23–24 (चं.दा.), 25, 26, 27, **दिसं.** 5, 6, 7, **सन् 2025 ई. में जन.** 16–17–18 (चं.दा.), 19, 21, 22, 24, 30, **फर.** 7, 13–14 (चं.दा.), 15, 18, 19, 20, 21, 25, **मार्च** 5, 6 ***[ होलाष्टक में मार्च की 7, 11–12 ( चं.दा. ) ]*** तारीखें शुभ होंगी। | कन्या राशि के **वर** को आषाढ़, श्रावण, मार्गशीर्ष व फाल्गुन मास **शुभ**, ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व माघ मासों में **सूर्य पूज्य**, वैशाख, भाद्रपद मास **त्याज्य** होंगे।<br>इस राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 1 मई तक विशेष रुपेण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक शुभ रहेगा। | **कन्या राशि–अप्रै.** 18 (चं.दा.), **जुला.** 11, 12, 14, 21 (7:27 बाद), 22, 23, 30, 31, **अग.** 5, 6, 7, 8, 11, 13, 19, 26, 27, 28, **सितं.** 4, 7, 8, 9, 10, 13 (27:24 बाद), 14, **अक्तू.** 3, 6, 7, 11 (11:41 बाद), 12, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 20, 21, 26, 27, 28, **नवं.** 3, 4, 8, 9, 10], मार्गशीर्ष मास में **नवं.** की 17, 18, 22, 23, 24, 25, 26, 27, **दिसं.** 5, 6, 7, **सन् 2025 ई. में जन.** 16, 17, 18, 19, 21, 22, 24, 30, **फर.** 7, 13, 14, 15, 18, 19, 20, 21, 25, **मार्च** 5, 6 ***[ होलाष्टक में मार्च की 7, 11, 12 ]*** तारीखें शुभ होंगी। |
| **तुला राशि–अप्रै.** 18, **जुला.** 11–12 (चं.दा.), 14, 19, 20, 21 (7:27 तक), 23 (9:21 बाद), 27, 31 (22:16 बाद), **अग.** 5, 6, 7, 8, 11, 13, 19 (19:00 बाद), 23, 24, 27 (27:42 बाद), 28, **सितं.** 4, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13 (27:24 तक), **[ कार्तिक मासे अक्तू.** 21 (18:15 बाद), 26, 27, 28 (चं.दा.), **नवं.** 3, 4, 6, 9 (23:28 बाद), 10, 14], मार्गशीर्ष मास में **नवं.** की 17 (28:31 बाद), 18, 22, 23, 24, 25, 26, 27, **दिसं.** 6 (29:07 बाद), 7, 11, **सन् 2025 ई. में फर.** 13, 14–15 (चं.दा.), 18, 19, 20, 21, **मार्च** 3, ***[ होलाष्टक में मार्च 7 ( 11:45 बाद ), 11, 12 ]*** तारीखें शुभ होंगी। | तुला राशि के **वर** को श्रावण, भाद्रपद-**शुभ**। वैशाख, आषाढ़, कार्तिक, मार्गशीर्ष व फाल्गुन मासों में **सूर्य** की **पूजा/दानादि** होगा। ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास **त्याज्य** होंगे।<br>तुला राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 1 मई तक शुभ, तदुपरान्त संवतान्त तक विशेष रुपेण पूज्य रहेगा। | **तुला राशि–अप्रै.** 18, **जुला.** 11, 12, 14, 19, 20, 21 (7:27 तक), 23 (9:21 बाद), 27, 31 (22:16 बाद), **अग.** 5, 6, 7, 8, 11, 13, 19 (19:00 बाद), 23, 24, 27 (27:42 बाद), 28, **सितं.** 4, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13 (27:24 तक), **अक्तू.** 3, 6, 7, 11 (11:41 तक) [कार्तिक मासे **अक्तू.** 21 (18:15 बाद), 26, 27, 28, **नवं.** 3, 4, 6, 9 (23:38 बाद), 10, 14] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 17 (28:31 बाद), 18, 22, 23, 24, 25, 26, 27, **दिसं.** 6 (29:07 बाद), 7, 11, **सन् 2025 ई. में जन.** 16, 17, 18, 19, 21, 22, 24, 30 (18:35 बाद), **फर.** 4, 13, 14, 15, 18, 19, 20, 21, **मार्च** 3, ***[ होलाष्टक में मार्च 7 ( 11:45 बाद ), 11, 12 ]*** तारीखें शुभ होंगी। |

| ☐ वर ( लड़का ) ☐ | वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि | ☐ कन्या ( लड़की ) ☐ |
|---|---|---|
| **वृश्चिक राशि**–**अप्रै.** 18, **जुला.** 19, 20, 21, 22, 23 (9:21 तक), 27, 30, 31 (22:16 तक), **अग.** 5, 6, 7, 8, 11, 13, 19 (19:00 तक), 23, 24, 26, 27 (27:42 तक), **सितं.** 4, 7–8 (चं.दा.), 9, 10, 11, 12, 13, 14, **अक्तू.** 3, 6, 7, 11, 12, मार्गशीर्ष मासे **नवं.** 17 (28:31 तक), 22, 23, 24, 25, 26, 27, **दिसं.** 5, 6 (29:07 तक), 11, **सन् 2025 ई. में जन.** 16, 17, 18, 19, 21–22 (चं.दा.), 24, 30 (18:35 तक), **फर.** 4, 7 तारीखें शुभ होंगी। | वृश्चिक राशि के **वर** को वैशाख, भाद्रपद, आश्विन एवं माघ मास **शुभ**, ज्येष्ठ, श्रावण और मार्गशीर्ष मासों में **सूर्य पूज्य** तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास **त्याज्य** होंगे।<br>इस राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 1 मई तक साधारण रुपेण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक शुभ रहेगा। | **वृश्चिक राशि**–**अप्रै.** 18, **जुला.** 11, 12, 14 (चं.दा.), 19, 20, 21, 22, 23 (9:21 तक), 27, 30, 31 (22:16 तक), **अग.** 5, 6, 7, 8, 11, 13, 19 (19:00 तक), 23, 24, 26, 27 (27:42 तक), **सितं.** 4, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, **अक्तू.** 3, 6, 7, 11, 12 [कार्तिक मासे **अक्तू.** 20, 21 (18:15 तक), 26, 27, 28, **नवं.** 3, 4, 6, 8, 9 (23:28 तक), 14] मार्गशीर्ष मासे **नवं.** 17 (28:31 तक), 22, 23, 24, 25, 26, 27, **दिसं.** 5, 6 (29:07 तक), 11, **सन् 2025 ई. में जन.** 16, 17, 18, 19, 21, 22, 24, 30 (18:35 तक), **फर.** 4, 7, 13, 14, 15, 18–19 (चं.दा.), 20, 21, 25, **मार्च** 3, 5, 6, *[ होलाष्टक में मार्च की 7 ( 11:45 तक ), 11, 12 ]* तारीखें शुभ होंगी। |
| **धनु राशि**–**अप्रै.** 18, **जुला.** 11, 12, 14, **अग.** 19, 23, 24, 26, 27, 28, **सितं.** 4, 7, 8, 9–10 (चं.दा.), 11, 12, 13, 14, **अक्तू.** 3, 6–7 (चं.दा.), 11, 12, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 20, 21, 26, 27, 28, **नवं.** 3–4 (चं.दा.), 6, 8, 9, 10, 14], **सन् 2025 ई. में जन.** 16, 17, 18, 19, 21, 22, 24 (चं.दा.), 30, **फर.** 4, 7, 13, 14, 15, 18, 19, 20–21 (चं.दा.), 25, **मार्च** 3, 5, 6, *( होलाष्टक में मार्च 7, 11, 12 )* तारीखें शुभ होंगी। | धनु राशि के **वर** को ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व फाल्गुन मास **शुभ**, वैशाख, आषाढ़, भाद्रपद व माघ मासों में **सूर्य पूज्य** तथा श्रावण, मार्गशीर्ष मास **त्याज्य** होंगे।<br>धनु राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 1 मई तक शुभ, तदुपरान्त संवतान्त तक साधारण रुपेण पूज्य होगा। | **धनु राशि**–**अप्रै.** 18, **जुला.** 11, 12, 14, 19, 20, 21, 22, 23, 27, 30, 31, **अग.** 5, 6, 7, 8, 11, 13 (चं.दा.), 19, 23, 24, 26, 27, 28, **सितं.** 4, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, **अक्तू.** 3, 6, 7, 11, 12, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 20, 21, 26, 27, 28, **नवं.** 3, 4, 6, 8, 9, 10, 14] मार्गशीर्ष मासे **नवं.** की 17, 18, 22, 23, 24, 25, 26, 27, **दिसं.** 5, 6, 7, 11, **सन् 2025 ई. में जन.** 16, 17, 18, 19, 21, 22, 24, 30, **फर.** 4, 7, 13, 14, 15, 18, 19, 20, 21, 25, **मार्च** 3, 5, 6, *( होलाष्टक में मार्च 7, 11, 12 )* तारीखें शुभ होंगी। |
| **मकर राशि**–**जुला.** 11 (19:50 बाद), 12, 14, 19–20–21 (चं.दा.), 22, 23, 30, 31, **अग.** 7 (27:15 बाद), 8, 11, 13, **अक्तू.** 3, 6, 7, 11 (चं.दा.), 12 [कार्तिक मासे **अक्तू.** 20, 21, 28 (22:11 बाद), **नवं.** 3, 4, 6 (चं.दा.), 8, 9, 10] मार्गशीर्ष मासे **नवं. की** 17, 18, 24 (29:02 बाद), 25, 26, 27, **दिसं.** 5, 6, 7, **सन् 2025 ई. में जन.** 18 (21:29 बाद), 19, 21, 22, 24, 30, **फर.** 7, 14 (29:45 बाद), 15, 18, 19, 20, 21, 25, **मार्च** 5, 6 *[ होलाष्टक में मार्च की 7 ]* तारीखें शुभ होंगी। | मकर राशि के **वर** को आषाढ़, कार्तिक, मार्गशीर्ष मास-**शुभ**। ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, माघ व फाल्गुन मासों में **सूर्य पूज्य** तथा वैशाख, भाद्रपद मास **त्याज्य** होंगे।<br>इस राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 1 मई 2024 ई. तक विशेष रुपेण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक शुभ होगा। | **मकर राशि**–**जुला.** 11 (19:50 बाद), 12, 14, 19, 20, 21, 22, 23, 30, 31, **अग.** 7 (27:15 बाद), 8, 11, 13, 19, 26, 27, 28, **सितं.** 4 (9:56 बाद), 7, 8, 9, 10, 11–12–13 (चं.दा.), 14, **अक्तू.** 3, 6, 7, 11, 12 [कार्तिक मासे **अक्तू.** 20, 21, 28 (22:11 बाद), **नवं.** 3, 4, 6, 8, 9, 10] मार्गशीर्ष मासे **नवं.** की 17, 18, 24 (29:02 बाद), 25, 26, 27, **दिसं.** 5, 6, 7, **सन् 2025 ई. में जन.** 18 (21:29 बाद), 19, 21, 22, 24, 30, **फर.** 7, 14 (29:45 बाद), 15, 18, 19, 20, 21, 25, **मार्च** 5, 6 *[ होलाष्टक में मार्च की 7 ]* तारीखें शुभ होंगी। |
| **कुम्भ राशि**–**अप्रै.** 18, **जुला.** 11 (19:50 तक), 14, 19, 20, 21–22–23 (चं.दा.), 27, 31 (22:16 बाद), **अग.** 5, 6, 7 (27:15 तक), 11, 13, 19 (चं.दा.), 23, 24, 27 (27:42 बाद), 28, **सितं.** 4 (9:56 तक), 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13–14 (चं.दा.), [कार्तिक मासे **अक्तू.** 21 (18:15 बाद), 26, 27, 28 (22:11 तक), **नवं.** 3, 4, 6, 8–9 (चं.दा.), 10, 14] मार्गशीर्ष मासे **नवं.** की 17 (28:31 बाद), 18, 22, 23, 24 (29:02 तक), 27 (18:07 बाद), **दिसं.** 5–6 (चं.दा.), 7, 11, **सन् 2025 ई. में फर.** 13, 14 (29:45 तक), 18, 19, 20, 21, 25, **मार्च** 3, [होलाष्टक में **मार्च** की 7 (11:45 बाद), 11, 12] तारीखें शुभ होंगी। | कुम्भ राशि के **वर** को वैशाख, मार्गशीर्ष, श्रावण मास **शुभ**, आषाढ़, भाद्रपद, कार्तिक व फाल्गुन मासों में **सूर्य पूज्य** तथा ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास **त्याज्य** रहेंगे।<br>इस राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 1 मई, 2024 ई. तक साधारण रुपेण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक विशेष रुपेण पूज्य रहेगा। | **कुम्भ राशि**–**अप्रै.** 18, **जुला.** 11 (19:50 तक), 14, 19, 20, 21, 22, 23, 27, 31 (22:16 बाद), **अग.** 5, 6, 7 (27:15 तक), 11, 13, 19, 23, 24, 27 (27:42 बाद), 28, **सितं.** 4 (9:56 तक), 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, **अक्तू.** 6, 7, 11–12 (चं.दा.), [कार्तिक मासे **अक्तू.** 21 (18:15 बाद), 26, 27, 28 (22:11 तक), **नवं.** 3, 4, 6, 8, 9, 10, 14] मार्गशीर्ष मासे **नवं.** की 17 (28:31 बाद), 18, 22, 23, 24 (29:02 तक), 27 (18:07 बाद), **दिसं.** 5, 6, 7, 11, **सन् 2025 ई. में जन.** 16, 17, 18 (21:29 तक), 21, 22, 24, 30, **फर.** 4, 13, 14 (29:45 तक), 18, 19, 20, 21, 25, **मार्च** 3, [होलाष्टक में **मार्च** की 7 (11:45 बाद), 11, 12] तारीखें शुभ होंगी। |

### ☐ वर ( लड़का ) ☐

**मीन राशि–अप्रै.** 18, **जुला.** 19, 20, 21, 22, 23 (चं.दा.), 27, 30, 31 (22:16 तक), **अग.** 5, 6, 7, 8, 13, 19 (चं.दा.), 23, 24, 26, 27 (27:42 तक), **सितं.** 4, 9, 10, 11, 12, 13, 14, **अक्तू.** 3, 6, 7, 11, 12, मार्गशीर्ष मासे **नवं.** की 17 (28:31 तक), 22, 23, 24, 25, 26, 27 (18:07 तक), **दिसं.** 5, 6, 7, 11, **सन् 2025 ई. में जन.** 16, 17, 18, 19, 24, 30 (चं.दा.), **फर.** 4, 7 तारीखें शुभ होंगी।

### वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि

मीन राशि के **वर** को ज्येष्ठ, भाद्रपद व माघ मास **शुभ,** वैशाख, श्रावण, आश्विन व मार्गशीर्ष मासों में **सूर्य पूज्य** तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास **त्याज्य** होंगे।

मीन राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 1 मई 2024 ई. तक शुभ, तदुपरान्त संवतान्त तक साधारण रुपेण पूज्य रहेगा।

### ☐ कन्या ( लड़की ) ☐

**मीन राशि–अप्रै.** 18, **जुला.** 11, 12, 19, 20, 21, 22, 23, 27, 30, 31 (22:16 तक), **अग.** 5, 6, 7, 8, 13, 19, 23, 24, 26, 27 (27:42 तक), **सितं.** 4, 9, 10, 11, 12, 13, 14, **अक्तू.** 3, 6, 7, 11, 12 [कार्तिक मासे **अक्तू.** की 20, 21 (18:15 तक), 26, 27, 28, **नवं.** 3, 4, 6, 8, 9, 10, 14] मार्गशीर्ष मासे **नवं.** 17 (28:31 तक), 22, 23, 24, 25, 26, 27 (18:07 तक), **दिसं.** 5, 6, 7, 11, **सन् 2025 ई. में जन.** 16, 17, 18, 19, 24, 30, **फर.** 4, 7, 13, 14, 15, 20, 21, 25, **मार्च** 3, 5, 6, [होलाष्टक में **मार्च** की 7 (11:45 तक), 11, 12] तारीखें शुभ होंगी।

# दिनमान व रात्रिमान से मध्याह्न, अपराह्न, प्रदोष काल आदि जानना

भारतीय भूखण्ड में दिनमान का विस्तार लगभग 9/30 घं. मिंट से लेकर 14-30 घं. मि. के मध्य में पड़ता है। इसीलिए 9/30 घं. मिं. दिनमान से लेकर 14/30 घं. मिं. के दिनमान के मध्यान्तर में आने वाले मध्याह्न, अपराह्न आदि के आरम्भ व समाप्ति काल जानने की प्रक्रिया लिख रहे हैं। मध्याह्न तथा अपराह्न काल के प्रारम्भ एवं समाप्ति काल के घण्टा मिनट को अपने नगर के सूर्योदय में अलग-अलग जमा कर देने से क्रमश: मध्याह्न एवं अपराह्न काल का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल पता चल जाएगा।

इसी भान्ति अभीष्ट दिनमान की दाईं तरफ चौथे कालम में अपराह्न के आरम्भ तथा समाप्ति के घं.मिं. उस दिन के स्थानीय सूर्योदय में अलग-अलग जोड़ देने पर अपराह्न का आरम्भ व समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) मालूम हो जाएगा।

| दिनमान | मध्याह्न | | अपराह्न | | सायाह्न | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | प्रारम्भ | समाप्ति | प्रारम्भ | समाप्ति | प्रारम्भ | समाप्ति |
| घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 9 30 | 3 48 | 5 42 | 5 42 | 7 36 | 7 36 | 9 30 |
| 9 45 | 3 54 | 5 51 | 5 51 | 7 48 | 7 48 | 9 45 |
| 10 00 | 4 00 | 6 00 | 6 00 | 8 00 | 8 00 | 10 00 |
| 10 15 | 4 06 | 6 9 | 6 9 | 8 12 | 8 12 | 10 15 |
| 10 30 | 4 12 | 6 18 | 6 18 | 8 24 | 8 24 | 10 30 |
| 10 45 | 4 18 | 6 27 | 6 27 | 8 36 | 8 36 | 10 45 |
| 11 00 | 4 24 | 6 36 | 6 36 | 8 48 | 8 48 | 11 99 |
| 11 15 | 4 30 | 6 45 | 6 45 | 9 00 | 9 00 | 11 15 |
| 11 30 | 4 36 | 6 54 | 6 54 | 9 12 | 9 12 | 11 30 |
| 11 45 | 4 42 | 7 03 | 7 03 | 9 24 | 9 24 | 11 45 |
| 12 00 | 4 48 | 7 12 | 7 12 | 9 36 | 9 36 | 12 00 |
| 12 15 | 4 54 | 7 21 | 7 21 | 9 48 | 9 48 | 12 15 |
| 12 30 | 5 00 | 7 30 | 7 30 | 10 00 | 10 00 | 12 30 |
| 12 45 | 5 06 | 7 39 | 7 39 | 10 12 | 10 12 | 12 45 |
| 13 00 | 5 12 | 7 48 | 7 48 | 10 24 | 10 24 | 13 00 |
| 13 15 | 5 18 | 7 57 | 7 57 | 10 36 | 10 36 | 13 15 |
| 13 30 | 5 24 | 8 06 | 8 06 | 10 48 | 10 48 | 13 30 |
| 13 45 | 5 30 | 8 15 | 8 15 | 11 00 | 11 00 | 13 45 |
| 14 00 | 5 36 | 8 24 | 8 24 | 11 12 | 11 12 | 14 00 |
| 14 15 | 5 42 | 8 33 | 8 33 | 11 24 | 11 24 | 14 15 |
| 14 30 | 5 48 | 8 42 | 8 42 | 11 36 | 11 36 | 14 30 |
| 15 00 | 6 00 | 9 00 | 9 00 | 12 00 | 12 00 | 15 00 |

| रात्रिमान | प्रदोषकाल | | निशीथकाल | | महानिषीथकाल | | अरूणोदयकाल | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | प्रारम्भ | समाप्ति | प्रारम्भ | समाप्ति | प्रारम्भ | समाप्ति | प्रारम्भ | समाप्ति |
| घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 9 30 | सूर्यास्त | 1 54 | 1 54 | 3 48 | 3 48 | 5 42 | 8 14 | 9 30 |
| 9 45 | सूर्यास्त | 1 57 | 1 57 | 3 54 | 3 54 | 5 51 | 8 27 | 9 45 |
| 10 00 | सूर्यास्त | 2 00 | 2 00 | 4 00 | 4 48 | 6 00 | 8 40 | 10 00 |
| 10 15 | सूर्यास्त | 2 03 | 2 03 | 4 06 | 4 06 | 6 09 | 8 53 | 10 15 |
| 10 30 | सूर्यास्त | 2 06 | 2 06 | 4 12 | 4 12 | 6 18 | 9 06 | 10 30 |
| 10 45 | सूर्यास्त | 2 09 | 2 09 | 4 18 | 4 18 | 6 27 | 9 19 | 10 45 |
| 11 00 | सूर्यास्त | 2 12 | 2 12 | 4 24 | 4 24 | 6 36 | 9 32 | 11 00 |
| 11 15 | सूर्यास्त | 2 15 | 2 15 | 4 30 | 4 30 | 6 45 | 9 45 | 11 15 |
| 11 30 | सूर्यास्त | 2 18 | 2 18 | 4 36 | 4 36 | 6 54 | 9 58 | 11 30 |
| 11 45 | सूर्यास्त | 2 21 | 2 21 | 4 42 | 4 42 | 7 03 | 10 11 | 11 45 |
| 12 00 | सूर्यास्त | 2 24. | 2 24 | 4 48 | 4 48 | 7 12 | 10 24 | 12 00 |
| 12 15 | सूर्यास्त | 2 27 | 2 27 | 4 54 | 4 54 | 7 21 | 10 37 | 12 15 |
| 12 30 | सूर्यास्त | 2 30 | 2 30 | 5 00 | 5 00 | 7 30 | 10 50 | 12 30 |
| 12 45 | सूर्यास्त | 2 33 | 2 33 | 5 06 | 5 06 | 7 39 | 11 03 | 12 45 |
| 13 00 | सूर्यास्त | 2 36 | 2 36 | 5 12 | 5 12 | 7 48 | 11 16 | 13 00 |
| 13 15 | सूर्यास्त | 2 39 | 2 39 | 5 18 | 5 18 | 7 57 | 11 29 | 13 15 |
| 13 30 | सूर्यास्त | 2 42 | 2 42 | 5 24 | 5 24 | 8 06 | 11 42 | 13 30 |
| 13 45 | सूर्यास्त | 2 45 | 2 45 | 5 30 | 5 30 | 8 15 | 11 55 | 13 45 |
| 14 00 | सूर्यास्त | 2 48 | 2 48 | 5 36 | 5 36 | 8 24 | 11 58 | 14 00 |
| 14 15 | सूर्यास्त | 2 51 | 2 51 | 5 42 | 5 42 | 8 33 | 12 11 | 14 15 |
| 14 30 | सूर्यास्त | 2 54 | 2 54 | 5 48 | 5 48 | 8 42 | 12 24 | 14 30 |
| 15 00 | सूर्यास्त | 3 00 | 3 00 | 6 00 | 6 00 | 9 00 | 12 50 | 15 00 |

# मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, विपणि, उपनयन, सर्वदेव प्रतिष्ठादि मुहूर्त्त—वि. संवत् २०८१

प्राचीन भारतीय ज्योतिषाचार्यों द्वारा शुद्धता की दृष्टि से विवाह, मुण्डनादि मुहूर्त्तों के निर्धारण में मुख्यतः इक्कीस दोषों का उल्लेख किया गया है। इनमें पंचाँगशुद्धि, क्रूर ग्रह का नक्षत्र–वेध, पापग्रह की युति, क्रान्तिसाम्य दोष, मृत्युबाण, षष्ठाष्टम चन्द्र एवं शुक्र विचार, व्यतीपात– वैधृति आदि दुष्ट योगों की युति, गुरु शुक्रास्त का विचार, दग्धा तिथि विचार आदि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। राजमार्त्तण्ड–वशिष्ठ आदि शास्त्रकारों एवं आचार्यों ने भी विवाह के अतिरिक्त चूड़ाकरण, गृहारम्भ, व्रत, प्रतिष्ठा, पुंसवन, कर्णवेध आदि मुहूर्त्तों में भी क्रूर ग्रहों के वेध, युति, व्यतीपात, वैधृति आदि अशुभ योगों एवं दोषों का विचार करने का निर्देश दिया है—विवाहेऽर्ध प्रतिष्ठायां व्रते पुंसवनं तथा कर्णवेधादि चूडायां विद्धऋक्षं विवर्जयेत्॥ ध्यान रहे, शास्त्र नियमानुसार बुधवार के दिन अभिजित मुहूर्त्त भी ग्राह्य नहीं होता। जिन मुहूर्त्तों के आगे केवल शुद्धकाल दिया गया है, वहाँ दैवज्ञों को शुद्धकाल की अवधि में सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र एवं लग्नेश की शुभ स्थानों में स्थिति को ध्यान रखते हुए शुभ लग्न का निर्णय स्वयं कर सकते हैं। 'पंचांगदिवाकर' में दिए गए सभी मुहूर्त्तों में सर्वत्र शास्त्र विहित नियमों का यथासम्भव पालन किया जाता है। कुछ अन्य नए प्रचलित पंचांगों के मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रहों का वेध, क्रूर ग्रह युति, क्षीण चन्द्र आदि अपरिहार्य दोष पाए जाते हैं, जो मुहूर्त्त–शास्त्र की दृष्टि से सर्वथा चिन्तनीय है।

—निवेदकः पं. विवेक शर्मा

## मुण्डन मुहूर्त्त–२०८१ वि.

मुण्डन संस्कार को चूडाकरण संस्कार या चौलकर्म भी कहते हैं, जिसका अर्थ है–वह संस्कार जिसमें बालक को चूड़ा अर्थात् शिखा दी जाएं। गर्भावस्था की अपवित्रता दूर करने के लिए भी मुण्डन संस्कार किया जाता है। मुण्डन संस्कार करके बालक को अन्य संस्कारों (वेदांरम्भ, यज्ञादि) के योग्य बनाया जाता है, क्योंकि मुण्डन संस्कार करते समय यह प्रार्थना की जाती है कि इसका सिर पवित्र हो, यह दीर्घजीवी हो। अतः बालक के स्वास्थ्य व शरीर के लिए नया संस्कार है।

मुण्डन मुहूर्त्त सम्बन्धी विशेष लेख इसी पंचांग में आगे पृष्ठ नं. 202 पर 'आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय' शीर्षक के अन्तर्गत देखें।

| पक्ष तिथि | वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.) |
|---|---|---|---|---|
| चैत्र शु. ७, | चंद्र | 15 अप्रै. | पुन. | ल. २, ३, अभिजित् |
| चैत्र शु. ८, | मंग | 16 अप्रै. | पुष्य | ल. २, ३, अभि. (क्षत्रियाणां केवल) |
| (आश्विन नवरात्रों में—आवश्यके) | | | | |
| आश्वि. शु. १, | गुरु | 3 अक्तू | चित्रा | मु. 15:32 बाद |
| आश्वि. शु. ५, | मंग. | 8 अक्तू | ज्ये. | ल. ९, अभि. (क्षत्रियाणां केवल) |
| आश्वि. शु. ९, | शनि | 12 अक्तू | श्रव. | मु. 10:59 बाद, ल. ९, अभि. (वैश्यानां केवल) |
| (सन् 2025 ई०) | | | | |
| माघ कृ. २, | बुध | 15 जन. | पुष्य | मु. प्रातः 10:28 तक |
| माघ कृ. ८, | बुध | 22 जन. | स्वा. | ल. १, २ (शूल–दोष परिहार) |
| माघ कृ. ११, | शनि | 25 जन. | ज्ये. | ल. १, अभिजित् (वैश्यानां) |
| माघ कृ. १२, | रवि | 26 जन. | ज्ये. | मु. प्रातः 8:26 तक (ब्राह्मणों के लिए) |
| माघ शु. २, | शुक्र | 31 जन. | शत. | ल. १, अभि., २ |
| माघ शु. ७, | मंग. | 4 फर. | अश्वि. | ल. १, २, अभि. (क्षत्रियाणां) |
| माघ शु. १३, | चंद्र | 10 फर. | पुन. | ल. १, २, मु. 11:57 तक |
| फाल्गु.कृ. ६, | मंग | 18 फर. | स्वा. | मु. 7:36 बाद, ल. १, २, अभि. (क्षत्रियाणां केवलम्) |
| फाल्गु.कृ. ६, | बुध | 19 फर. | स्वा. | मु. 10:40 तक (भद्रा पातालगते) |

नोट—मुण्डन अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार जन्म या गर्भाधान से १, ३, ५वें इत्यादि विषम वर्षों में करना शुभ होता है। कुछ लोग अपनी कुल परम्परानुसार या अपने वरिष्ठ आत्मीय की आज्ञानुसार अक्षय-तीज, चैत्र या शरद् नवरात्रों में सिद्ध तीर्थस्थल पर या श्री माता के शक्तिपीठों (देवी-मन्दिरों) में (बिना शास्त्रीय मुहूर्त्त के भी) बालक के मुण्डनादि कार्य कर लेते हैं। मुण्डन में जन्म नक्षत्र शुभ माना जाता है।

## नींव/गृहारम्भ मुहूर्त्त—सं. २०८१

### (खनन, भूमि–पूजन एवं शिलान्यास मुहूर्त्त)

विशेष—नींव मुहूर्त्त (शिलान्यास) सम्बन्धी विशेष विवरण हेतु इसी पंचांग में आगे पृष्ठ नं.– पर 'आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय' शीर्षक के अन्तर्गत देखें।

नोट—देवालय खनन हेतु केवल उत्तरायण काल (16 जुलाई से पूर्व) के मुहूर्त्त ही ग्राह्य होंगे। (देखें पृष्ठ 207)

| पक्ष तिथि | वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.) |
|---|---|---|---|---|
| *आषा.शु.५, | गुरु | 11 जुला | उ.फा. | मु. 13:04 बाद |
| *आषा.शु.६, | शुक्र | 12 जुला | उ.फा. | मु. 7:09 बाद, ल. ५, अभि. |
| आषा. शु.११, | बुध | 17 जुला | अनु. | ल. ५, ७, मृत्युबाण 12:29 से |
| *श्राव.कृ.७, | शनि | 27 जुला | रे/अ | मु. 10:26 बाद, (मृत्युबाण परि.) |
| *श्राव.कृ.११, | बुध | 31 जुला | रो/मृ | ल. ५, ७, मु. 14:14 तक (रोहण्यां भौमयुति परिहार) |
| *श्राव.कृ.१२, | गुरु | 1 अग. | मृग. | मु. 10:24 तक |
| श्राव पूर्णिमा, | चंद्र | 19 अग. | धनि. | मु. 8:10 बाद, ल. ७, ८, अभि. |
| *भाद्र.कृ.१०, | बुध | 28 अग. | मृग. | ल. ७, ८ |
| *भाद्र.शु. १, | बुध | 4 सितं. | उ.फा. | ल. ७, ८ |
| भाद्र.शु. ११, | शनि | 14 सितं. | उ.षा. | ल. ७, ८, अभिजित् (भद्रा परिहार) |
| कार्ति.कृ. १, | शुक्र | 18 अक्तू | अश्वि | ल. ७, ८, ९, अभिजित् |
| *कार्ति.कृ.८, | गुरु | 24 अक्तू | पुष्य | ल. ८, ९, अभिजित् |
| *कार्ति.शु.३, | चंद्र | 4 नवं. | अनु. | मु. प्रातः 8:04 तक |
| *मार्ग.कृ. ३, | चंद्र | 18 नवं. | मृग. | ल. ९, १०, अभिजित् |
| *मार्ग.कृ.१०, | चंद्र | 25 नवं. | उ.फा. | ल. ९, १०, अभि. (केतु युति परिहार) |
| *मार्ग.कृ.१२, | बुध | 27 नवं. | चित्रा | ल. ९, १० |
| *मार्ग.शु. ६, | शनि | 7 दिसं. | धनि. | ल. ९, १० |
| मार्ग. शु.११, | बुध | 11 दिसं. | अश्वि. | मु. 11:48 बाद |
| मार्ग. शु. १२, | गुरु | 12 दिसं. | अश्वि | ल. ९, १०, मु. 9:53 तक |
| (सन् 2025 ई०) | | | | |
| *माघ कृ.२, | बुध | 15 जन. | पुष्य | ल. ११, मु. प्रातः 10:28 तक |
| *माघ शु.२, | शुक्र | 31 जन. | शत. | ल. ११, १, अभिजित् |

### नींव/गृहारम्भ मुहूर्त

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| फाल्गु.कृ.३, शनि | 15 फर. | उ.फा. | ल. १, २, अभिजित् |
| *फाल्गु.कृ.६,बुध | 19 फर. | स्वा. | मु. प्रातः 10:40 तक |
| *फाल्गु.कृ.८,शुक्र | 21 फर. | अनु. | ल. १, २, मु. 11:58 तक |

नोट–( * ) तारांकित मुहूर्त्तों में केवल वृष वास्तु चक्र शुद्धि नहीं है। शेष सभी मुहूर्त्त दोषों से मुक्त (शुद्ध) हैं।

## नूतन (नवीन) गृह प्रवेश मुहूर्त्त (संवत् २०८१)

नूतन गृह-प्रवेश के समय पण्डित जी द्वारा निकाले गए मुहूर्त्त पर नए घर में वास्तु-पूजा शान्ति, नवग्रह पूजा शान्ति, स्वस्तिवाचन, एवं पंचदेव, गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को भोजन-दानादि एवं कन्या-पूजन, जलपूर्ण कलश (नारियल सहित) तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल-गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए।

विशेष विस्तृत विवरण हेतु इसी पंचांग के पृष्ठ नं. 209 का अवलोकन अवश्य करें।

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| चैत्र शु. ७, चंद्र | 15 अप्रै. | पुन. | ल. २, ३, अभिजित् |
| आषा. शु. ५, गुरु | 11 जुला | उ.फा. | मु. 13:04 बाद |
| आषा. शु. ६,शुक्र | 12 जुला | उ.फा. | मु. 7:09 बाद, ल. ५, अभि. |
| *कार्ति.कृ.१,शुक्र | 18 अक्तू | अश्वि | ल. ८, ९, अभिजित्, ( मृत्युबाण परिहार ) |
| *कार्ति.कृ.५, चंद्र | 21 अक्तू | रो/मृ | ल. ८, ९, मु. 11:11 तक |
| *कार्ति.कृ.७,बुध | 23 अक्तू | पुन. | ल. ८, ९ ( भौमयुति परिहार ) |
| *कार्ति.कृ.८,गुरु | 24 अक्तू | पुष्य | ल. ८, ९, अभिजित् |
| *कार्ति.शु.३, चंद्र | 4 नवं. | अनु. | मु. प्रातः 8:04 तक |
| कार्ति. शु. ७,शुक्र | 8 नवं. | श्रव. | मु. 12:03 बाद |
| कार्ति. शु. ८,शनि | 9 नवं. | श्र/ध. | ल. ८, ९, अभिजित् |
| *मार्ग.कृ.३, चंद्र | 18 नवं. | मृग. | ल. ९, १०, अभिजित् |
| *मार्ग. कृ.५, बुध | 20 नवं. | पुन. | ल. ९, १० |

### नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| मार्ग.कृ.१०, चंद्र | 25 नवं. | उ.फा. | ल. ९, १०, अभिजित् ( भद्रा-परिहार ) |
| मार्ग.कृ.१२, बुध | 27 नवं. | चित्रा | ल. ९, १० |
| *मार्ग. शु. ४, गुरु | 5 दिसं. | उ.षा. | मु. 12:50 बाद, मृत्युबाण परिहार |
| *मार्ग.शु. ५,शुक्र | 6 दिसं. | श्रव. | मु. 10:43 तक |
| मार्ग. शु. ६, शनि | 7 दिसं. | धनि. | ल. ९, १०, अभिजित् |
| मार्ग. शु.११, बुध | 11 दिसं. | अश्वि | मु. 11:48 बाद, भद्रा-परिहार |
| मार्ग. शु.१२, गुरु | 12 दिसं. | अश्वि | मु. 9:53 तक |
| ( सन् 2025 ई० ) | | | |
| *माघ कृ. २, बुध | 15 जन. | पुष्य | ल. ११, १ |
| माघ कृ. ८, बुध | 22 जन. | स्वा. | ल. ११, १ |
| माघ कृ.१०, शुक्र | 24 जन. | अनु. | ल. ११, १, अभि., भद्रा-परिहार ( मृत्युबाण परिहार ) |
| *माघ शु. २,शुक्र | 31 जन. | शत. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ शु.१०, शुक्र | 7 फर. | रोहि. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ शु.१३, चंद्र | 10 फर. | पुन. | ल. ११, १, भौमयुति--परिहार 11:57 तक |
| *फाल्गु.कृ.३,शनि | 15 फर. | उ.फा. | ल. १, २, अभिजित् |
| *फाल्गु.कृ.६,बुध | 19 फर. | स्वा. | मु. 10:40 तक, ल. १, बुधपादवेधऽभावः |
| *फाल्गु.कृ.८,शुक्र | 21 फर. | अनु. | ल. १, २, अभिजित् |
| फाल्गु.शु.७, गुरु | 6 मार्च | रोहि. | ल. १, २, अभिजित् |

विशेष नोट–( * ) तारांकित मुहूर्त्तों में केवल कलश चक्र शुद्धि नहीं है, शेष सभी मुहूर्त्त दोषों से मुक्त (शुद्ध) हैं।

## पुरातन गृह-प्रवेश मुहूर्त्त-सं. २०८१ वि.

पहिले दिए गए नूतन ( नवीन ) गृहप्रवेश मुहूर्त्तों के अतिरिक्त पुरातन गृहप्रवेश में निम्नलिखित मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे। विशेष विवरण पृष्ठ 209 पर देखें।

### पुरातन गृह-प्रवेश

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| शुक्रास्त काल में ( आवश्यक परिस्थितिवश ) | | | |
| वैशा. कृ. १, बुध | 24 अप्रै. | स्वा. | ल. २, ३ ( शु. दा. ) |
| वैशा. कृ. २,शुक्र | 26 अप्रै. | अनु. | ल. २, ३, अभिजित् |
| वैशा. कृ. ८, बुध | 1 मई | श्रव. | ल. २, ३ |
| वैशा. कृ.१०,शुक्र | 3 मई | शत. | ल. २, ३, अभिजित् |

ता. 6 मई से 2 जून तक गुरु-शुक्र–दोनों ग्रह अस्त रहने के कारण कोई शुभ कार्यारम्भ नहीं करने चाहिए।

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| ज्ये. शु. १, शुक्र | 7 जून | मृग. | ल. ३, ५, अभिजित् |
| ज्ये. शु.११, चंद्र | 17 जून | स्वा. | मु. 13:51 बाद |
| आषा. कृ. ३, चंद्र | 24 जून | उ.षा. | मु. 11:51 तक |
| आषा. कृ. ५, बुध | 26 जून | धनि. | ल. ५ |
| आषा. कृ. ६, गुरु | 27 जून | शत. | मु. 11:37 तक |
| आषा. शु.१, शनि | 6 जुला | पुन. | ल. ५, अभिजित् |
| आषा. शु.११,बुध | 17 जुला | अनु. | मु. 12:29 तक |
| श्राव. कृ. १, चंद्र | 22 जुला | श्रवण | ल. ५, ७, अभिजित् |
| श्राव. कृ. ७,शनि | 27 जुला | रेव. | मु. 10:26 बाद, मृत्यु परिहार |
| श्राव. कृ.११,बुध | 31 जुला | रो/मृ | ल. ५, ७, अभिजित् |
| श्राव. कृ.१२,गुरु | 1 अग. | मृग. | मु. 10:24 तक |
| श्राव. कृ.१३,शुक्र | 2 अग. | पुन. | मु. 10:59 बाद |
| श्राव. शु. ७, चंद्र | 12 अग. | स्वा. | मु. प्रातः 8:33 तक |
| श्राव. शु. ९, बुध | 14 अग. | अनु. | मु. 10:24 से 12:13 तक |
| श्राव. शु. १२,शनि | 17 अग. | उ.षा. | मु. 11:49 बाद |
| श्राव. पूर्णिमा,चंद्र | 19 अग. | धनि. | मु. 8:10 बाद |

## व्यवसाय (विपणि) शुरु करने के मुहूर्त्त- वि. संवत् २०८१ (2024-25 ई.)

[दुकान, कार्यालय, फैक्ट्री (कारखाना) आदि शुरु करने के मुहूर्त्त]

मुहूर्त्त के समय किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा सर्वदेव, नवग्रह पूजन के पश्चात् कलश-स्थापन एवं कन्या-पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों, आश्रित एवं सहयोगी-जनों को यथाशक्ति भोजन आदि करवाना चाहिए। विशाल पैमाने पर व्यापार करने के लिए केवल बु.गु. एवं शुक्रवारों को ही ग्रहण करना चाहिए।

नोट–मुहूर्त्त वाले दिन अपनी राशि से चन्द्र 4, 8, 12वें हो, तो वह दिन त्याग दें। वार-स्वामी भी उदित होना चाहिए।

## व्यवसाय (विपणि) शुरु करने के मुहूर्त्त [दुकान, कार्यालय, फैक्ट्री (कारखाना) आदि शुरु करने के मुहूर्त]

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| आषा. शु.५, गुरु | 11 जुला | उ.फा. | मु. 13:04 बाद |
| आषा. शु.६, शुक्र | 12 जुला | उ.फा. | मु. 7:09 बाद |
| आषा. शु.११, बुध | 17 जुला | अनु. | ल. ५ |
| आषा.पूर्णिमा, रवि | 21 जुला | उ.षा. | ल. ५, अभिजित् |
| श्राव. कृ.१, चंद्र | 22 जुला | श्रव. | ल. ५, ७, अभिजित् |
| श्राव. कृ.७, शनि | 27 जुला | रेव. | मु. 10:26 से 13:00 तक ( मृत्युबाण परिहार ) |
| श्राव. कृ.७, शनि | 27 जुला | अश्वि | मु. 13:00 बाद |
| श्राव. कृ.८, रवि | 28 जुला | अश्वि | मु. 11:48 तक |
| श्राव. कृ.११, बुध | 31 जुला | रो/मृ | ल. ५, ७, मु. 14:14 तक ( रोहिण्यां भौमयुति परिहार ) |
| श्राव. कृ.१२, गुरु | 1 अग. | मृग. | मु. 10:24 तक |
| श्राव. शु.९, बुध | 14 अग. | अनु. | मु. 10:24 से 12:13 तक |
| भाद्र. कृ.५, शनि | 24 अग. | अश्वि | ल. ७, ८, अभिजित् |
| भाद्र. कृ.१०, बुध | 28 अग. | मृग. | भौमयुति परिहार |
| भाद्र. शु.१, बुध | 4 सितं. | उ.फा. | ल. ७, ८, ९ |
| भाद्र. शु. ५, रवि | 8 सितं. | स्वा. | ल. ७, ८, अभिजित् |
| भाद्र. शु.११, शनि | 14 सितं. | उ.षा. | ल. ७, ८, अभिजित् |
| आश्वि. शु.४, चंद्र | 7 अक्तू | अनु. | मु. प्रातः 9:48 बाद |
| आश्वि. शु.८, शुक्र | 11 अक्तू | उ.षा. | ल. ७, ८, ९, अभिजित् |
| आश्वि. शु. ९, शनि | 12 अक्तू | श्रव. | मु. 10:59 बाद |
| कार्ति. कृ.१, शुक्र | 18 अक्तू | अश्वि | मु. 13:26 तक, मृत्युबाण परि |
| कार्ति. कृ. ५, चंद्र | 21 अक्तू | मृग. | मु. 11:11 तक |
| कार्ति. कृ. ८, गुरु | 24 अक्तू | पुष्य | ल. ८, ९, अभिजित् |
| कार्ति. शु.२, रवि | 3 नवं. | अनु. | ल. ८, ९, अभिजित् |
| कार्ति. शु. ३, चंद्र | 4 नवं. | अनु. | मु. 8:04 तक |
| कार्ति. शु.७, शुक्र | 8 नवं. | श्रव. | मु. 12:03 बाद |
| कार्ति. शु.८, शनि | 9 नवं. | श्रव. | मु. 11:48 तक |
| कार्ति. शु.१३, गुरु | 14 नवं. | अश्वि | मु. प्रातः 9:44 तक, मृत्युबाण परिहार |
| मार्ग. कृ. २, रवि | 17 नवं. | रोहि. | ल. ९, अभिजित्, मृत्युबाण परिहार |
| मार्ग. कृ. ३, चंद्र | 18 नवं. | मृग. | ल. ९, १०, अभिजित्, भद्रा-परिहार |
| मार्ग. कृ. १०, चंद्र | 25 नवं. | उ.फा. | ल. ९, १०, अभिजित् |
| मार्ग. कृ. १२, बुध | 27 नवं. | चित्रा | ल. ९, १० |
| मार्ग. शु. ४, गुरु | 5 दिसं. | उ.षा. | मु. 12:50 बाद |
| मार्ग. शु. ५, शुक्र | 6 दिसं. | श्रव. | मु. 10:43 तक |
| मार्ग. शु. ११, बुध | 11 दिसं. | रे/अ | ल. ९, १० |
| मार्ग. शु. १२, गुरु | 12 दिसं. | अश्वि | मु. प्रातः 9:53 तक. |
| ( सन् 2025 ई० ) | | | |
| माघ कृ. २, बुध | 15 जन. | पुष्य | मु. प्रातः 10:28 तक |
| माघ कृ. ५, रवि | 19 जन. | उ.फा. | ल. १, अभिजित् ( केतुयुति परिहार ) |
| माघ कृ.१०, शुक्र | 24 जन. | अनु. | ल. १, २, अभिजित् ( मृत्युबाण परिहार ) |
| माघ शु.१०, शुक्र | 7 फर. | रोहि. | ल. १, २, अभिजित् |
| फाल्गु.कृ. ३, शनि | 15 फर. | उ.फा. | ल. १, २, अभिजित् |
| फाल्गु. कृ. ७, गुरु | 20 फर. | अनु. | मु. 13:30 बाद |
| फाल्गु.कृ.८, शुक्र | 21 फर. | अनु. | ल. १, २, अभिजित् |
| फाल्गु. शु.७, गुरु | 6 मार्च | रोहि. | ल. १, २, अभिजित् |

## उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त-सं. २०८१

उपनयन संस्कार सम्बन्धी आवश्यक विवरण आगामी पृष्ठों पर 'आवश्यक-मुहूर्त्त' लेख में पृष्ठ 203 पर देखें।

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| चैत्र शु. ६, रवि | 14 अप्रै. | आर्द्रा | ल. २, ३, अभिजित् ( तिथिदोष परिहार ) |
| चैत्र शु. ७, चंद्र | 15 अप्रै. | पुन. | ल. २, ३, अभिजित् ( तिथिदोष परिहार ) |
| चैत्र शु. १०, गुरु | 18 अप्रै. | आश्ले | मु. 7:57 तक |
| आषा. शु.५, गुरु | 11 जुला | पू.फा. | ल. ५, अभिजित् |
| ( सन् 2025 ई० ) | | | |
| माघ कृ. २, बुध | 15 जन. | पुष्य | ल. ११, मु. 10:28 तक |
| माघ कृ. २, बुध | 15 जन. | आश्ले | मु. 10:28 बाद |
| माघ कृ. ३, गुरु | 16 जन. | आश्ले | मु. 11:17 तक |
| माघ शु. २, शुक्र | 31 जन. | शत. | ल. १२, १, अभिजित् |
| माघ शु. १०, शुक्र | 7 फर. | रोहि. | ल. १२, १, अभिजित् |
| माघ शु. १२, रवि | 9 फर. | आर्द्रा | ल. ११, १२, १, अभिजित् |
| फाल्गु. कृ.२, शुक्र | 14 फर. | पू.फा. | ल. ११, १२, १, अभिजित् |

## मुहूर्त्त मुकलावा (द्विरागमन)-सं. २०८१

विवाह के दिन से 16 दिन के भीतर ही द्विरागमन हो तो निर्धारित मुहूर्त्तों के बगैर भी वधू-प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ ही होता है। इसके अतिरिक्त नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा प्रथम यात्रा में सम्मुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है। (देखें पृष्ठ 205)

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| चैत्र शु. ७, चंद्र | 15 अप्रै. | पुन. | ल. २, ३, अभिजित् |
| मार्ग. कृ. ३, चंद्र | 18 नवं. | मृग. | ल. ९, १०, अभिजित् |
| मार्ग. कृ. ५, बुध | 20 नवं. | पुन. | ल. ९, १० |
| मार्ग. कृ. १०, चंद्र | 25 नवं. | उ.फा. | ल. ९, १० ( केतुयुति परि. ) |
| मार्ग. कृ. १२, बुध | 27 नवं. | चित्रा | ल. ९, १०, गोधूलि |
| मार्ग. कृ. १३, गुरु | 28 नवं. | चित्रा | मु. प्रातः 7:36 तक |
| मार्ग. शु. ४, गुरु | 5 दिसं. | उ.षा. | मु. 12:50 बाद, मृत्युबाण परि. |
| मार्ग. शु. ५, शुक्र | 6 दिसं. | श्रव. | मु. 10:43 तक |
| मार्ग. शु. ११, बुध | 11 दिसं. | अश्वि | मु. 11:48 बाद |
| मार्ग. शु. १२, गुरु | 12 दिसं. | अश्वि | ल. ९, १०, मु. 9:53 तक |
| ( सन् 2025 ई० ) | | | |
| फाल्गु. कृ.६, बुध | 19 फर. | स्वा. | मु. 10:40 तक |
| फाल्गु. कृ.७, गुरु | 20 फर. | अनु. | मु. 15:10 बाद |
| फाल्गु. कृ.८, शुक्र | 21 फर. | अनु. | ल. १, २, अभिजित्, मु. 15:54 तक |
| फाल्गु. शु.१, शुक्र | 28 फर. | शत. | मु. 13:40 तक |
| फाल्गु. शु.७, गुरु | 6 मार्च | रोहि. | ल. १, २, अभिजित् *( भद्रा परिहार )* |

# सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०८१

आगे लिखे उत्तरायण-काल में सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त प्राय: सभी सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति-स्थापना, जलाशय, बावड़ी, कूँआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मास तथा **उनके अवतरण ( जयन्ती ) का दिवस भी विशेष रूप से ग्राह्य होगा।**

जैसे-श्रीविष्णु, राम की मूर्त्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण मासों के अतिरिक्त अक्षय-तृतीया, रामनवमी विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ हैं। श्रीविष्णु-प्रतिमा प्रतिष्ठा में माघ मास वर्जित होता है। श्रीकृष्ण की प्रतिमा के लिए उत्तरायण मास, भाद्र. कृष्णाष्टमी तथा मार्गशीर्ष मास शुभ माने जाते हैं। श्रीशिव मूर्त्ति एवं शिवलिङ्ग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुन मास की चतुर्दशी (महाशिवरात्रि) विशेषतया प्रशस्त है।

सभी सात्त्विक देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्ण-काल में (मध्याह्न से पहिले) ही की जाती है। कालभैरव आदि तामस देवों के लिए दक्षिणायन एवं मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य हैं। अत: दक्षिणायन में भी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त अलग से दिए गए हैं।

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| चैत्र शु. ७, चंद्र | 15 अप्रै. | पुन. | ल. २, ३, अभिजित् |
| आषा. शु. ५, गुरु | 11 जुला | उ.फा. | मु. 13:04 बाद |
| आषा. शु. ६, शुक्र | 12 जुला | उ.फा. | मु. 7:09 बाद, ल. ५, अभि. |
| ( सन् 2025 ई० ) | | | |
| माघ कृ. २, बुध | 15 जन. | पुष्य | ल. ११, मु. 10:28 तक |
| माघ कृ. ५, रवि | 19 जन. | उ.फा. | ल. ११, १, अभिजित् ( केतुयुति परिहार ) |
| माघ कृ. ८, बुध | 22 जन. | स्वा. | ल. ११, १ |
| माघ कृ.१०, शुक्र | 24 जन. | अनु. | ल. ११, १, अभिजित् ( मृत्युबाण एवं भद्रा परिहार ) |
| माघ शु. २, शुक्र | 31 जन. | शत. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ शु.१०, शुक्र | 7 फर. | रोहि. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ शु.१३, चंद्र | 10 फर. | पुन. | ल. ११, १ ( 11:57 तक भौमयुति का परिहार है ) |
| फाल्गु.कृ. ३, शनि | 15 फर. | उ.फा. | ल. १, २, अभिजित् ( केतुयुति परिहार ) |
| फाल्गु. कृ.६, बुध | 19 फर. | स्वा. | मु. 10:40 तक |
| फाल्गु. कृ.८, शुक्र | 21 फर. | अनु. | ल. १, २, अभिजित् |
| फाल्गु.कृ.१०, रवि | 23 फर. | मूल | ल. १, २, अभिजित् |
| फाल्गु. शु.७, गुरु | 6 मार्च | रोहि. | ल. १, २, अभिजित् |

## तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (दक्षिणायन में)

( देवी, वाराह, नृसिंह, काली आदि उग्र देवताओं के प्रतिष्ठा मुहूर्त्त )

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| आषा. शु.११, बुध | 17 जुला | अनु. | ल. ५, ७ ( भद्रा परिहार ) |
| आषा. पूर्णिमा, रवि | 21 जुला | उ.षा. | ल. ५, ७, अभिजित् |
| श्राव. कृ.१, चन्द्र | 22 जुला | श्रव. | ल. ५, ७, अभिजित् |
| श्राव. कृ.७, शनि | 27 जुला | रेव. | मु. 10:26 से 13:00 तक, 11:22 तक मृत्युबाण परिहार |
| श्राव. कृ. ८, रवि | 28 जुला | अश्वि | मु. 11:48 तक |
| श्राव. कृ.११, बुध | 31 जुला | रो/मृ | ल. ५, ७, मु. 14:14 तक ( रोहिण्यां भौमयुति परिहार ) |
| श्राव. कृ.१२, गुरु | 1 अग. | मृग. | मु. 10:24 तक |
| श्राव. शु.७, रवि | 11 अग. | स्वा. | मु. 10:12 तक |
| श्राव. शु. ७, चंद्र | 12 अग. | स्वा. | मु. 8:33 तक |
| श्राव. शु. ९, बुध | 14 अग. | अ/ज्ये | मु. 10:24 बाद |
| श्राव. पूर्णिमा, चंद्र | 19 अग. | धनि. | मु. 8:10 बाद ( भद्रा-परिहार ) |
| भाद्र. कृ. ५, शनि | 24 अग. | अश्वि | ल. ७, ८, अभिजित् |
| भाद्र. कृ.१०, बुध | 28 अग. | मृग. | ल. ७, ८ ( भौमयुति परिहार ) |
| भाद्र. शु. १, बुध | 4 सितं. | उ.फा. | ल. ७, ८ |
| भाद्र. शु. ५, रवि | 8 सितं. | स्वा. | ल. ७, ८, अभिजित् |
| भाद्र. शु. ८, बुध | 11 सितं. | ज्ये. | ल. ७, ८ |
| भाद्र. शु.११, शनि | 14 सितं. | उ.षा. | ल. ७, ८, अभिजित् |
| आश्वि. शु. ४, चंद्र | 7 अक्तू | अनु. | मु. 9:48 बाद |
| आश्वि. शु.८, शुक्र | 11 अक्तू | उ.षा. | ल. ७, ८, ९, अभिजित् |
| आश्वि. शु. ९, शनि | 12 अक्तू | श्रव. | मु. 10:59 बाद |
| कार्ति. कृ.१, शुक्र | 18 अक्तू | अश्वि | मु. 13:26 तक, मृत्युबाण परिहार |
| कार्ति. कृ.५, चंद्र | 21 अक्तू | मृग. | मु. 11:11 तक, 11:11 से 14:11 तक-परिघ दोष |
| कार्ति. कृ.७, बुध | 23 अक्तू | पुन. | ल. ८, ९ ( भद्रा-परिहार ) भौमयुति परिहार |
| कार्ति. कृ. ८, गुरु | 24 अक्तू | पुष्य | ल. ८, ९, अभिजित् |
| कार्ति. शु. २, रवि | 3 नवं | अनु. | ल. ८, ९, अभिजित् |
| कार्ति. शु. ३, चंद्र | 4 नवं. | अनु. | मु. 8:04 तक |
| कार्ति. शु. ५, बुध | 6 नवं. | मूल | मु. 11:00 तक |
| कार्ति. शु. ७, शुक्र | 8 नवं. | श्रव. | मु. 12:03 बाद |
| कार्ति. शु. ८, शनि | 9 नवं. | श्र/ध | ल. ८, ९, अभिजित्, भद्रा-परिहार |
| मार्ग. कृ. २, रवि | 17 नवं. | रोहि. | ल. ९, अभिजित्, ( मृत्यु-परिहार ) |
| मार्ग. कृ. ३, चंद्र | 18 नवं. | मृग. | ल. ९, १०, अभिजित् ( भद्रा-परिहार ) |
| मार्ग. कृ. ५, बुध | 20 नवं. | पुन. | ल. ९, १० |
| मार्ग. कृ.१०, चंद्र | 25 नवं. | उ.फा. | ल. ९, १०, अभिजित् ( केतुयुति परिहार ) |
| मार्ग. कृ.१२, बुध | 27 नवं. | चित्रा | ल. ९, १० |
| मार्ग. शु. ५, शुक्र | 6 दिसं. | श्रव. | 10:43 तक, 10:43 से 14:19 तक-व्याघात दोष |
| मार्ग. शु. ६, शनि | 7 दिसं. | धनि. | ल. ९, १०, अभिजित् |
| मार्ग. शु. ११, बुध | 11 दिसं | अश्वि | मु. 11:48 से 14:27 तक |
| मार्ग. शु.१२, गुरु | 12 दिसं. | अश्वि | ल. ९, १०, मु. 9:53 तक |

## श्रीदुर्गा/गौरी देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-२०८१

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| चैत्र शु. ७, चंद्र | 15 अप्रै. | पुन. | ल. २, ३, अभिजित् |
| आषा.शु. ६, शुक्र | 12 जुला | उ.फा. | मु. 7:09 बाद, ल. ५, अभि. |
| आषा. शु.८, रवि | 14 जुला | चित्रा | ल. ५, अभिजित् |
| आषा. शु. ११, बुध | 17 जुला | अनु. | ल. ५, |
| श्राव. कृ. १, चंद्र | 22 जुला | श्रव. | ल. ५, ७, अभिजित् |
| श्राव. कृ. ९, चंद्र | 29 जुला | कृति | मु. 10:55 बाद |
| श्राव. कृ.११, बुध | 31 जुला | रो/मृ | ल. ५, ७, मु. 14:14 तक ( रोहिण्यां भौमयुति परिहार ) |
| श्राव. कृ.१२, गुरु | 1 अग. | मृग. | मु. 10:24 तक |

## श्रीदुर्गा/गौरी देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| श्राव. शु. ७, रवि | 11 अग. | स्वा. | मु. 10:12 तक, 10:12 से क्रान्तिसाम्य दोष |
| श्राव. शु. ७, चंद्र | 12 अग. | स्वा. | 8:33 तक, भद्रा परिहार |
| श्राव. शु. ९, बुध | 14 अग. | अनु/ज्ये | मु. 16:06 तक |
| श्राव. पूर्णिमा, चंद्र | 19 अग. | धनि. | मु. 8:10 बाद ( भद्रा-परिहार) |
| भाद्र. कृ. ८, चंद्र | 26 अग. | कृति. | ल. ७, ८, अभिजित् |
| भाद्र. कृ.१०, बुध | 28 अग. | मृग. | ल. ७, ८ ( भौमयुति परि. ) |
| भाद्र. शु. ५, रवि | 8 सितं. | स्वा. | ल. ७, ८, अभिजित् |
| भाद्र. शु. ८, बुध | 11 सितं. | ज्ये. | भद्रा-परिहार, ल. ७, ८ |
| भाद्र. शु. ९, गुरु | 12 सितं. | मूल | ल. ७, ८, अभिजित् |
| आश्वि. शु. ४, चंद्र | 7 अक्तू | अनु. | मु. 9:48 बाद, ल. ८, अभि. |
| आश्वि. शु.९, शनि | 12 अक्तू | श्रव. | ल. ७, ८, अभिजित् |
| कार्ति. कृ. ५, चंद्र | 21 अक्तू | रो/मृ | मु. 11:11 तक, 11:11 से 14:11 तक-परिघ दोष |
| कार्ति. कृ. ८, गुरु | 24 अक्तू | पुष्य | ल. ८, ९, अभिजित् |
| कार्ति. कृ. ९, शुक्र | 25 अक्तू | पुष्य | मु. 7:40 तक |
| कार्ति. शु. २, रवि | 3 नवं. | अनु. | ल. ८, ९, अभिजित् |
| कार्ति. शु. ३, चंद्र | 4 नवं. | अनु. | मु. 8:04 तक |
| कार्ति. शु. ५, बुध | 6 नवं. | मूल | ल. ८, ९ |
| कार्ति. शु. ८, शनि | 9 नवं. | श्र/ध | ल. ८, ९, अभि., भद्रा परि. |
| मार्ग. कृ. २, रवि | 17 नवं. | रोहि | ल. ९, अभिजित् (मृत्यु परिहार) |
| मार्ग. कृ. ३, चंद्र | 18 नवं. | मृग. | ल. ९, १०, अभि. ( भद्रा परिहार ) |
| मार्ग. कृ.१२, बुध | 27 नवं. | चित्रा | ल. ९, १० |
| मार्ग. शु. ५, शुक्र | 6 दिसं. | श्रव. | मु. 10:43 तक |
| मार्ग. शु. १३, शुक्र | 13 दिसं. | कृति. | ल. ९, १०, अभिजित् |
| ( सन् 2025 ई० ) | | | |
| माघ कृ. २, बुध | 15 जन. | पुष्य | ल. ११, मु. 10:28 तक |
| माघ कृ. ८, बुध | 22 जन. | स्वा. | ल. ११, १ |
| माघ कृ.१०, शुक्र | 24 जन. | अनु. | ल. ११, १, अभिजित् ( मृत्युबाण एवं भद्रा परिहार ) |
| माघ कृ.११, शनि | 25 जन. | ज्ये. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ कृ.१२, रवि | 26 जन. | ज्ये. | मु. 8:26 तक |
| माघ शु. ९, गुरु | 6 फर. | कृति. | ल. १, अभिजित् |
| माघ शु.१०, शुक्र | 7 फर. | रोहि. | ल. ११, १, अभिजित् |
| फाल्गु. कृ.६, बुध | 19 फर. | स्वा. | मु. 10:40 तक |
| फाल्गु. कृ.८, शुक्र | 21 फर. | अनु. | ल. १, २, अभिजित् |
| फाल्गु. कृ.९, शनि | 22 फर. | ज्ये. | ल. १, २, अभिजित् |
| फाल्गु. शु.७, गुरु | 6 मार्च | रोहि | ल. १, २, अभिजित् |

## भगवान् शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०८१

गत कालमों में दिए गए सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्तों के अतिरिक्त आगे भगवान् शिव प्रतिमा व शिवलिङ्ग स्थापना हेतु मुख्य मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं, जो विशेषत: शुभ एवं ग्राह्य होंगे। शिव प्रतिमा/शिवलिङ्ग प्रतिष्ठा हेतु निम्न मुहूर्त्तों में आगे दिए गए '**शिववास चक्र**' का भी प्रयोग कर लें तो विशेष शुभ होगा, परन्तु अनिवार्य नहीं है। शिव प्रतिष्ठा हेतु उत्तरायण मास, मिथुन लग्न व आर्द्रा नक्षत्र विशेष प्रशस्त एवं ग्राह्य माने गए हैं। शिव प्रतिष्ठा में श्रावण व मार्गशीर्ष मास भी ग्राह्य माने गए हैं।

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| चैत्र शु. ६, रवि | 14 अप्रै. | आर्द्रा | ल. २, ३, अभिजित् |
| चैत्र शु. ७, चंद्र | 15 अप्रै. | पुन. | ल. २, ३, अभिजित् |
| चैत्र शु. ८, मंग | 16 अप्रै. | पुष्य | ल. २, ३, अभिजित् |
| आषा. शु. ५, गुरु | 11 जुला | पू.फा. | मु. 13:04 तक |
| आषा. शु.११, बुध | 17 जुला. | अनु. | ल. ५, ( भद्रा-परिहार ) |
| श्राव. कृ. १, चंद्र | 22 जुला | श्रव. | ल. ५, ७, अभिजित् |
| श्राव. कृ. २, मंग | 23 जुला | धनि. | मु. 11:11 तक, 11:11 से 14:48 तक-शुक्र पादवेध विचार्य |
| श्राव. कृ. ३, बुध | 24 जुला | शत. | ल. ५, ७ |
| श्राव. कृ. ७, शनि | 27 जुला | रेव. | मु. 10:26 बाद, 10:26 तक भद्रा ( मृत्युबाण परिहार ) |
| श्राव. कृ. ८, रवि | 28 जुला | अश्वि | मु. 11:48 तक |
| श्राव. कृ.१०, मंग | 30 जुला | रोहि | मु. 10:23 बाद ( भौमयुति परिहार ) |
| श्राव. कृ.११, बुध | 31 जुला | रो/मृ | ल. ५, ७, मु. 14:14 तक ( रोहिण्यां भौमयुति परिहार ) |
| श्राव. कृ.१२, गुरु | 1 अग. | मृग. | मु. 10:24 तक |
| श्राव. कृ.१२, गुरु | 1 अग. | आर्द्रा | मु. 10:24 बाद |
| श्राव. कृ.१३, शुक्र | 2 अग. | आ/पु | ल. ५, ७, ( 11:45 से 15:21 तक वज्र दोष ) |
| श्राव. कृ.१४, शनि | 3 अग. | पु/पु | ल. ५, ७, अभिजित् |
| श्राव. शु. ३, बुध | 7 अग. | पू.फा. | ल. ५, ७ |
| श्राव. शु. ७, रवि | 11 अग. | स्वा. | मु. 10:12 तक |
| श्राव. शु. ७, चंद्र | 12 अग. | स्वा. | मु. 8:33 तक |
| श्राव. शु.१४, रवि | 18 अग. | श्रव. | मु. 10:15 बाद |

## शिव-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| मार्ग. कृ. २, रवि | 17 नवं. | रोहि | ल. ९, अभि. ( मृत्यु-परिहार ) |
| मार्ग. कृ. ३, चंद्र | 18 नवं. | मृग. | ल. ९, १०, अभि. (भद्रा-परिहार) |
| मार्ग. कृ. ४, मंग | 19 नवं. | आर्द्रा | ल. ९, १०, अभि. |
| मार्ग. कृ. ५, बुध | 20 नवं. | पुन. | ल. ९, १० |
| मार्ग. कृ.१२, बुध | 27 नवं. | चित्रा | ल. ९, १० |
| मार्ग. शु. २, मंग | 3 दिसं. | मूल | ल. ९, १०, अभिजित् |
| मार्ग. शु. ५, शुक्र | 6 दिसं. | श्रव. | 10:43 तक, 10:43 से 14:19 तक-व्याघात दोष |
| मार्ग. शु. ६, शनि | 7 दिसं. | धनि | ल. ९, १०, अभिजित् |
| मार्ग. शु.११, बुध | 11 दिसं. | अश्वि | मु. 11:48 से 14:27 तक |
| मार्ग. शु. १२, गुरु | 12 दिसं. | अश्वि | मु. 9:53 तक |
| ( सन् 2025 ई० ) | | | |
| माघ कृ. २, बुध | 15 जन. | पुष्य | ल. ११, मु. 10:28 तक |
| माघ कृ. ५, शनि | 18 जन. | पू.फा. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ कृ. ८, बुध | 22 जन. | स्वा. | ल. ११, १ |
| माघ कृ.१०, शुक्र | 24 जन. | अनु. | ल. ११, १, अभि. ( मृत्युबाण एवं भद्रा-परिहार ) |
| माघ कृ.११, शनि | 25 जन. | ज्ये. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ कृ.१२, रवि | 26 जन. | ज्ये. | मु. 8:26 तक |
| माघ शु. २, शुक्र | 31 जन. | शत. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ शु. ७, मंग | 4 फर. | अश्वि | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ शु.१०, शुक्र | 7 फर. | रोहि. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ शु.१२, रवि | 9 फर. | आर्द्रा | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ शु. १३, चंद्र | 10 फर. | पुन. | मु. 11:57 तक ( भौमयुति परिहार ) |
| फाल्गु. कृ.२, शुक्र | 14 फर. | पू.फा. | ल. १, २, अभिजित् |
| फाल्गु. कृ.६, मंग | 18 फर. | स्वा. | मु. 7:36 बाद |
| फाल्गु. कृ.६, बुध | 19 फर. | स्वा. | मु. 10:40 तक |
| फाल्गु. कृ.८, शुक्र | 21 फर. | अनु. | मु. 15:54 तक |
| फाल्गु. कृ.१३, बुध | 26 फर. | श्रव. | मु. 8:51 बाद, 8:51 तक परिघ-दोष |
| फाल्गु. शु. ४, चंद्र | 3 मार्च | अश्वि | ल. १, २, अभिजित् |
| फाल्गु. शु.७, गुरु | 6 मार्च | रोहि. | ल. १, २, अभिजित् |

# शिववास चक्र

## शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना एवं प्रतिष्ठार्थ

*ऊपर लिखे शास्त्र-विहित मुहूर्त्तों में से विशेष मुहूर्त्त के चयन हेतु कुछ विद्वान् शिववास चक्र का भी प्रयोग करते हैं। पाठकों के लाभ हेतु शिववास चक्र दिया जा रहा हैं। इस चक्र की प्रयोग विधि इस प्रकार से है–*

| शेष | शिववास | फल |
|---|---|---|
| १ | कैलाश पर | शुभ/लाभ, सुख |
| २ | गौरी संग | शुभ-लाभ |
| ३ | बैल पर | कार्य सिद्धि |
| ४ | सभा में | कष्टकारी |
| ५ | भोजन | दुख प्रदायक |
| ६ | रमण | कष्टप्रद |
| (०) | श्मशान | नेष्ट फल |

*उपरोक्त लिखी गई तिथियों में से अभीष्ट (Required) तिथि की संख्या को दोगुणा करके उसमें, पाँच जोड़ देवें, फिर कुल मान को सात से भाग कर देवें, जो शेष संख्या बचे, उसके अनुसार शिव का वास जानना। उदाहरण–मान लो हमने पंचमी तिथि के सम्बन्ध में शिववास जानना है, तो पाँच संख्या को दोगुणा करने पर दस संख्या मिली, इसमें 5 जमा करके 15 संख्या हुई, इसको 7 द्वारा भाग देने पर शेष 1 बचा, इसका फल लाभ/सुख अच्छा लिखा है। कुछ विद्वान् महामृत्युमुञ्जय आदि शैव मन्त्रानुष्ठान के पश्चात् करणीय होमादि में भी इस शिववास चक्र का विचार करते हैं।*

## श्रीगणेश प्रतिमा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| श्राव. कृ. ३, बुध | 24 जुला | शत. | ल. ५, ७ |
| मार्ग. कृ. ४, मंग | 19 नवं. | आर्द्रा | ल. ९, १०, अभिजित् |
| ( सन् 2025 ई० ) | | | |
| माघ कृ. ४, शुक्र | 17 जन. | मघा | ल. १, अभिजित् |

( नोट–श्रीगणेश प्रतिष्ठा में आर्द्रा, पू.भा., उ.भा., श्रवण और रेवती नक्षत्र विशेषतया शुभ माने गए हैं।

## श्री स्कन्द प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०८१

| | | | |
|---|---|---|---|
| चैत्र शु. ६, रवि | 14 अप्रै. | आर्द्रा | ल. २, ३, अभिजित् |
| आषा. शु.६, शुक्र | 12 जुला | उ.फा. | ल. ५, अभिजित् ( मु. 7:09 बाद ) |

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| कार्ति. शु. ६, गुरु | 7 नवं. | पू.षा. | मु. 9:51 तक, 9:51 से शूल दोष |
| मार्ग.शु.६, शनि | 7 दिसं. | धनि. | ल. ९, १०, अभि. |

## श्रीलक्ष्मीनारायण व श्रीराधा-कृष्ण मूर्त्ति प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०८१

गत पृष्ठों में दिए गए सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तों के अतिरिक्त निम्नलिखित मुहूर्त्त भी विशेष रूप से ग्राह्य होंगे। मतान्तर से कुछ लोग माघ मास में श्रीविष्णु जी की प्रतिष्ठा को वर्ज्य मानते हैं।

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| चैत्र शु. ७, चंद्र | 15 अप्रै. | पुन. | ल. २, ३, अभिजित् |
| आषा. शु.६, शुक्र | 12 जुला | उ.फा. | मु. 7:09 बाद, ल. ५, अभि. |
| भाद्र. कृ. ८, चंद्र | 26 अग. | कृ/रो | ल. ७, ८, अभिजित् |
| मार्ग. कृ. २, रवि | 17 नवं. | रोहि | ल. ९, अभि. ( मृत्यु-परिहार ) |
| मार्ग. कृ. ३, चंद्र | 18 नवं. | मृग. | ल. ९, १०, अभिजित् ( भद्रा-परिहार ) |
| मार्ग. कृ. ५, बुध | 20 नवं. | पुन. | ल. ९, १० |
| मार्ग. कृ.१०, चंद्र | 25 नवं. | उ.फा. | ल. ९, १०, अभिजित् ( केतुयुति परिहार ) |
| मार्ग. कृ.१२, बुध | 27 नवं. | चित्रा | ल. ९, १० |
| मार्ग. शु. ५, शुक्र | 6 दिसं. | श्रव. | मु. 10:43 तक, 10:43 से 14:19 तक-व्याघात दोष |
| मार्ग. शु.११, बुध | 11 दिसं. | अश्वि | मु. 11:48 से 14:27 तक |
| मार्ग. शु. १२, गुरु | 12 दिसं. | अश्वि | ल. ९, १०, मु. 9:53 तक |
| ( सन् 2025 ई० ) | | | |
| माघ कृ. २, बुध | 15 जन. | पुष्य | ल. ११, मु. 10:28 तक |
| माघ कृ. ५, रवि | 19 जन. | उ.फा. | ल. ११, १, अभिजित् ( केतु युति परिहार ) |
| माघ कृ. ८, बुध | 22 जन. | स्वा. | ल. ११, १ |
| माघ कृ.१०, शुक्र | 24 जन. | अनु. | ल. ११, १, अभि. ( मृत्युबाण एवं भद्रा परिहार ) |
| माघ शु.१०, शुक्र | 7 फर. | रोहि. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ शु.१३, चंद्र | 10 फर. | पुन. | ल. ११, १ ( 11:57 तक भौमयुति का परिहार है। ) |
| फाल्गु. कृ.८, शुक्र | 21 फर. | अनु. | ल. १, २, अभिजित् |
| फाल्गु. शु.७, गुरु | 6 मार्च | रोहि | ल. १, २, अभिजित् |

## श्रीमद्भागवत्, हरिवंशपुराण, रामायणादि कथा प्रारम्भ मुहूर्त्त-वि. संवत् २०८१

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| चैत्र शु. ७, चंद्र | 15 अप्रै. | पुन. | ल. २, ३, अभिजित् |
| आषा. शु. ५, गुरु | 11 जुला | पू.फा. | ल. ५, अभिजित् |
| आषा. शु. ६, शुक्र | 12 जुला | उ.फा. | ल. ४, ५, अभिजित् |
| आषा. शु.११, बुध | 17 जुला | अनु. | ल. ५, ७ ( भद्रा-परिहार ) |
| आषा. पूर्णिमा, रवि | 21 जुला | उ.षा. | ल. ५, ७, अभिजित् |
| श्राव. कृ. १, चंद्र | 22 जुला | श्रव. | ल. ५, ७, अभिजित् |
| श्राव. कृ. ८, रवि | 28 जुला | अश्वि | मु. 11:48 तक |
| श्राव. कृ.११, बुध | 31 जुला | रो/मृ | ल. ५, ७, मु. 14:14 तक ( रोहिण्यां भौमयुति परिहार ) |
| श्राव. कृ.१२, गुरु | 1 अग. | मृग. | मु. 10:24 तक |
| श्राव. शु. ३, बुध | 7 अग. | पू.फा. | ल. ५, ७ |
| श्राव. शु. ७, रवि | 11 अग. | स्वा. | 10:12 तक, 10:12 से 14:54 तक क्रान्तिसाम्य दोष |
| श्राव. शु. ७, चंद्र | 12 अग. | स्वा. | मु. 8:33 तक |
| श्राव. शु. ९, बुध | 14 अग. | अ/ज्ये | मु. 10:24 बाद |
| श्राव. पूर्णिमा, चंद्र | 19 अग. | धनि. | मु. 8:10 बाद ( भद्रा-परि. ) |
| भाद्र. कृ.१०, बुध | 28 अग. | मृग. | ल. ७, ८ (भौमयुति परिहार) |
| भाद्र. शु. १, बुध | 4 सितं. | उ.फा. | ल. ७, ८ |
| भाद्र. शु. ५, रवि | 8 सितं. | स्वा. | ल. ७, ८, अभिजित् |
| आश्वि. शु. १, गुरु | 3 अक्तू | चित्रा | मु. 15:32 बाद |
| आश्वि. शु. ४, चंद्र | 7 अक्तू | अनु. | मु. 9:48 बाद |
| आश्वि. शु.७, गुरु | 10 अक्तू | पू.षा. | ल. ७, ८, ९, अभिजित् |
| आश्वि. शु.८, शुक्र | 11 अक्तू | उ.षा. | ल. ७, ८, ९, अभिजित् |
| कार्ति. कृ.१, शुक्र | 18 अक्तू | अश्वि | मु. 13:26 तक, मृत्युबाण परि. |
| कार्ति. कृ.५, चंद्र | 21 अक्तू | मृग. | मु. 11:11 तक |
| कार्ति. कृ.७, बुध | 23 अक्तू | पुन. | ल. ८, ९ ( भद्रा-परिहार ) |
| कार्ति. कृ.८, गुरु | 24 अक्तू | पुष्य | ल. ८, ९, अभिजित् |
| कार्ति. कृ.११, चंद्र | 28 अक्तू | पू.फा. | ल. ८, ९, अभिजित् |
| कार्ति. शु. २, रवि | 3 नवं. | अनु. | ल. ८, ९, अभिजित् |
| कार्ति. शु.३, चंद्र | 4 नवं. | अनु. | मु. 8:04 तक |
| कार्ति. शु. ५, बुध | 6 नवं. | पू.षा. | मु. 11:00 बाद |
| कार्ति. शु. ६, गुरु | 7 नवं. | पू.षा. | मु. 9:51 तक |

## श्रीमद्भागवत्, हरिवंशपुराण, रामायणादि कथा

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| कार्ति. शु.१०, चंद्र | 11 नवं. | पू.भा. | मु. 9:40 बाद |
| मार्ग. कृ. २, रवि | 17 नवं. | रोहि. | ल. ९, अभि. (मृत्यु-परिहार) |
| मार्ग. कृ. ३, चंद्र | 18 नवं. | मृग. | ल. ९, १०, अभिजित् ( भद्रा-परिहार ) |
| मार्ग. कृ. ५, बुध | 20 नवं. | पुन. | ल. ९, १० |
| मार्ग. कृ.१०, चंद्र | 25 नवं. | उ.फा. | ल. ९, १०, अभिजित् ( केतुयुति परिहार ) |
| मार्ग. कृ.१२, बुध | 27 नवं. | चित्रा | ल. ९, १० |
| मार्ग. शु. ३, बुध | 4 दिसं. | पू.षा. | ल. ९, १० |
| मार्ग. शु. ५, शुक्र | 6 दिसं. | श्रव. | मु. 10:43 तक |
| मार्ग. शु. ८, चंद्र | 9 दिसं. | पू.भा. | मु. 8:03 तक |
| मार्ग. शु.१२, गुरु | 12 दिसं. | अश्वि | मु. 9:53 तक |

( सन् 2025 ई० )

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| माघ कृ. २, बुध | 15 जन. | पुष्य | ल. ११, मु. 10:28 तक |
| माघ कृ. ५, रवि | 19 जन. | उ.फा. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ कृ. ८, बुध | 22 जन. | स्वा. | ल. ११, १ |
| माघ कृ. १०, शुक्र | 24 जन. | अनु. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ शु. २, शुक्र | 31 जन. | शत. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ शु. १३, चंद्र | 10 फर. | पुन. | मु. 11:57 तक |
| फाल्गु. कृ.२, शुक्र | 14 फर. | पू.फा. | ल. १, २, अभिजित् |
| फाल्गु. कृ. ६, बुध | 19 फर. | स्वा. | मु. 10:40 तक |
| फाल्गु. कृ. ८, शुक्र | 21 फर. | अनु. | ल. १, २, अभिजित् |
| फाल्गु. कृ.११, चंद्र | 24 फर. | पू.षा. | मु. 10:05 तक |
| फाल्गु. शु.७, गुरु | 6 मार्च | रोहि | ल. १, २, अभिजित् |

## वाहनादि क्रय मुहूर्त्त-वि. संवत् २०८१

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| चैत्र शु. ७, चंद्र | 15 अप्रै. | पुन. | ल. २, ३, अभिजित् |
| चैत्र शु. १०, गुरु | 18 अप्रै. | मघा | 7:57 बाद |
| आषा. शु. ५, गुरु | 11 जुला | पू.फा. | ल. ५, अभिजित् (13:04 तक) |
| आषा. शु. ६, शुक्र | 12 जुला | उ.फा. | 7:09 बाद, ल. ५, अभिजित् |
| आषा. शु.११, बुध | 17 जुला | अनु. | ल. ५, ७ ( भद्रा-परिहार ) |
| आषा. पूर्णिमा, रवि | 21 जुला | उ.षा. | ल. ५, ७, अभिजित् |

## वाहनादि क्रय मुहूर्त्त

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| श्राव. कृ. १, चंद्र | 22 जुला | श्रव. | ल. ५, ७, अभिजित् |
| श्राव. कृ. ८, रवि | 28 जुला | अश्वि | मु. 11:48 तक |
| श्राव. कृ.११, बुध | 31 जुला | मृग. | मु. 10:13 बाद |
| श्राव. कृ.१२, गुरु | 1 अग. | मृग. | मु. 10:24 तक |
| श्राव. शु. ३, बुध | 7 अग. | पू.फा. | ल. ७ |
| श्राव. शु. ७, रवि | 11 अग. | स्वा. | मु. 10:12 तक, 10:12 से क्रान्तिसाम्य दोष |
| श्राव. शु. ७, चंद्र | 12 अग. | स्वा. | मु. 8:33 तक |
| श्राव. शु. ९, बुध | 14 अग. | अ/ज्ये | मु. 10:24 बाद |
| श्राव. पूर्णिमा, चंद्र | 19 अग. | धनि. | मु. 8:10 बाद ( भद्रा-परिहार ) |
| भाद्र. कृ.१०, बुध | 28 अग. | मृग. | ल. ७, ८ ( भौमयुति परि. ) |
| भाद्र शु. १, बुध | 4 सितं. | उ.फा. | ल. ७, ८ |
| भाद्र शु. ५, रवि | 8 सितं. | स्वा. | ल. ७, ८, अभिजित् |
| आश्वि. शु. ४, चंद्र | 7 अक्तू | अनु. | मु. 9:48 बाद |
| आश्वि. शु. ७, गुरु | 10 अक्तू | पू.षा. | मु. 12:32 तक |
| आश्वि. शु. ८, शुक्र | 11 अक्तू | उ.षा. | ल. ७, ८, ९, अभिजित् |
| कार्ति. कृ, १, शुक्र | 18 अक्तू | अश्वि | मु. 13:26 तक |
| कार्ति. कृ.५, चंद्र | 21 अक्तू | मृग. | मु. 11:11 तक, 11:11 से 14:11 तक-परिघ दोष |
| कार्ति. कृ. ७, बुध | 23 अक्तू | पुन. | ल. ८, ९ ( भद्रा परिहार ) ( भौमयुति परिहार ) |
| कार्ति. कृ. ८, गुरु | 24 अक्तू | पुष्य | ल. ८, ९, अभिजित् |
| कार्ति. कृ.११, रवि | 27 अक्तू | म/पू | ल. ८, ९, अभिजित् ( मृत्युबाण-परिहार ) |
| कार्ति. कृ.१२, चंद्र | 28 अक्तू | पू.फा. | ल. ८, ९, अभिजित् |
| कार्ति. शु. २, रवि | 3 नवं. | अनु. | ल. ८, ९, अभिजित् |
| कार्ति. शु. ५, बुध | 6 नवं. | मूल | मु. 11:00 तक |
| कार्ति. शु. ६, गुरु | 7 नवं. | पू.षा. | मु. 9:51 तक |
| कार्ति. शु. ७, शुक्र | 8 नवं. | श्रव. | मु. 12:03 बाद |
| कार्ति. शु.१०, चंद्र | 11 नवं. | पू.भा. | मु. 9:40 बाद |

## वाहनादि क्रय मुहूर्त्त

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| कार्ति. शु.१३, गुरु | 14 नवं. | अश्वि | मु. 9:44 तक |
| मार्ग. कृ. ३, चंद्र | 18 नवं. | मृग. | ल. ९, १०, अभि. ( भद्रा-परि. ) |
| मार्ग. कृ. ५, बुध | 20 नवं. | पुन. | ल. ९, १० |
| मार्ग. कृ.१०, चंद्र | 25 नवं. | उ.फा. | ल. ९, १०, अभिजित् ( केतुयुति परिहार ) |
| मार्ग. कृ.१२, बुध | 27 नवं. | चित्रा | ल. ९, १० |
| मार्ग. शु. ३, बुध | 4 दिसं. | पू.षा. | ल. ९, १० |
| मार्ग. शु. ५, शुक्र | 6 दिसं. | श्रव. | मु. 10:43 तक, 10:43 से 14:19 तक व्याघात |
| मार्ग. शु.११, बुध | 11 दिसं. | अश्वि | 11:48 से 14:27 तक |
| मार्ग. शु.१२, गुरु | 12 दिसं. | अश्वि | मु. 9:53 तक |

( सन् 2025 ई० )

| पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण ( घं. मिं. ) |
|---|---|---|---|
| माघ कृ. २, बुध | 15 जन. | पुष्य | ल. ११, मु. 10:28 तक |
| माघ कृ. ३, गुरु | 16 जन. | मघा | मु. 11:17 बाद |
| माघ कृ. ५, रवि | 19 जन. | उ.फा. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ कृ. ८, बुध | 22 जन. | स्वा. | ल. ११, १ |
| माघ कृ.१०, शुक्र | 24 जन. | अनु. | ल. ११, १, अभिजित् (मृत्युबाण एवं भद्रा-परिहार) |
| माघ शु. २, शुक्र | 31 जन. | शत. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ शु.१०, शुक्र | 7 फर. | रोहि. | ल. ११, १, अभिजित् |
| माघ शु.१३, चंद्र | 10 फर. | पुन. | मु. 11:57 तक ( भौमयुति परिहार ) |
| फाल्गु. कृ.१, गुरु | 13 फर. | मघा | मु. 9:57 बाद |
| फाल्गु. कृ.२, शुक्र | 14 फर. | पू.फा. | ल. १, २, अभिजित् |
| फाल्गु. कृ.६, बुध | 19 फर. | स्वा. | मु. 10:40 तक |
| फाल्गु. कृ. ८, शुक्र | 21 फर. | अनु. | मु. 15:54 तक |
| फाल्गु. कृ.१३, बुध | 26 फर. | श्रव. | 8:51 बाद (चं.दा.), मु. 11:09 तक |
| फाल्गु. शु. ७, गुरु | 6 मार्च | रोहि. | ल. १, २, अभिजित् |

नोट—मुहूर्त्त वाले दिन व्याप्त राशि जातक/जातिका की नामराशि से 4, 8, 12वें न हों।

# विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यों में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। **तिथि** को शरीर, **चन्द्रमा** को मन, **योग–नक्षत्रों** आदि को शरीर के अंग तथा **लग्न** को **आत्मा** माना गया है। यथा–

**तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्यं विलग्नमात्माऽवयवास्तु-भाद्याः** —**ज्योर्तिनिबंध**

लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

**लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।**
**तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥** —**ज्योति. विदरणे**

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

**विवाह लग्न** का निश्चय करना हो, तो त्रिविक्रम–संहितानुसार, **लग्न** स्थान में चन्द्र तथा सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश न हो तथा आठवें स्थान में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिएं तथा सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। **सातवें चन्द्र और गुरु समफल करते हैं। अर्थात्** चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो जाती है।

**विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह**

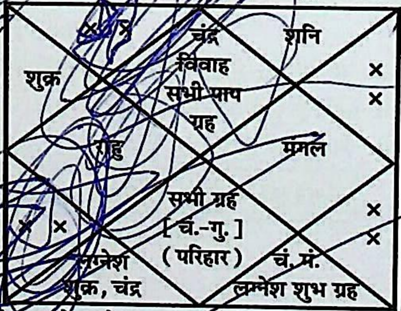

**“त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।**
**रन्ध्रे-चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ॥”**

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। **‘पंचांगदिवाकर’** में लगाए गए लग्न मुहूर्तों में इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा लें।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

**विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न**—मुहूर्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। ३, ६ और ११वें मंगल, २, ३, ११वें **चंद्रमा**, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित **शुक्र** शुभ होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार करते हैं—

**लग्ने वर्गोत्तमे वेन्दौ द्यूनाथे लाभगेऽथवा।**
**केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकलाऽपि॥** मु. गणपति॥

# विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

**जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न**—वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवी राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्—

**सुखघ्नं तुर्यमुद्वाहे द्वादश वित्तनाश कृत्। जन्म भात् जन्म लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमष्टमम्॥**

परन्तु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का **स्वामी ग्रह समान** हो, अथवा **मित्र क्षेत्री** हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का **स्वामी, केन्द्र** स्थित हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

➡**कर्तृरि दोष**—लग्न में क्रूर ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वक्री गत होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्तृरि दोष होता है। यह योग दारिद्रय, शोक व मृत्युतुल्य कष्टकारी होता है।

➡**परिहार**—कर्तृरि दोष कारक ग्रह **नीच**, शत्रु क्षेत्री, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कृर्तरि दोष निवार्य हो जाता है।

➡**अष्टमस्थ मंगल का परिहार**—मंगल अस्तंगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर अष्टमगत नहीं होना चाहिए। **अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
**कुजाष्टमोद्‌भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ कश्यप॥**

➡**छठे, अष्टम चन्द्र का परिहार**—शत्रु राशि या नीच–राशिगत चन्द्रमा ६ या ८वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे—वृश्चिक, मिथुन, कन्या राशि (३, ६)

**नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेऽपि वा, चन्द्रे षष्ठारि–रिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।**

परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टस्थ नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्रमा यद्यपि त्याज्य माना गया है, परन्तु यदि लग्नगत चन्द्र पर गुरु की दृष्टि हो अथवा वह गुरु से युक्त हो, तो अशुभ चन्द्रमा भी शुभ हो जाता है—

**“अशुभोऽपि शुभचन्द्रो, गुरुणा लोकितो युतः॥”** (पीयूषधारा)

**लग्नस्थ चन्द्र का परिहार—“कर्किगोस्थः पूर्णो विधुस्तनौ”**

**व्रतबन्धोक्त** अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक नहीं होता। मु. मार्त्तण्ड

➡**षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार**—नीच एवं शत्रु राशिगत (कर्क, सिंह या कन्या) शुक्र छठे, आठवें हो भी दोषकारक नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे—

**नीच राशिगते शुक्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।**
**भृगु षट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥** मुहूर्त चिं. पीयूषधारा

➡**सप्तम भावस्थ चन्द्र–गुरु**—सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र–गुरु का परिहार है। **“चन्द्र चान्द्री शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः।”**

**‘मुहूर्त्तगणपति’** अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र–त्रिकोण में **गुरु, शुक्र** एवं बुध एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

➡**वेध दोष परिहार**—पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो

जाने पर विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण ही अशुभ माना है। —ज्योर्तिनिबन्ध

➡**युतिदोष परिहार**—पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है। **यथा—**

**स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो व मित्रक्षेत्रगतो विधुः।**
**युति दोषाय न भवेत् दम्पत्योः श्रेयसेतदा॥ (नारदः)**

(१०) **दग्धा तिथि परिहार**—विवाह लग्न समय केन्द्र–त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वां) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दग्धातिथि का दोष नहीं रहता।—**मु० गणपति**

**पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्त्तों** में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहां विशेष दोषपूर्ण घड़ियों को विचार करके ही वि. मुहूर्त्त लगाए गए हैं।

**कश्यप ऋषि अनुसार** लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में गुरू, शुक्र या बुधादि सौम्य ग्रह हो, तो समस्त दोषों का ऐसे परिहार हो जाता है, जैसे भगवान् विष्णु को मात्र स्मरण करने से पापों का नाश हो जाता है

**काव्यो गुरू र्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र त्रिकोणगाः।**
**नाशयन्ति अखिलान् दोषान् पापानि व हरिस्मृतिः॥ (कश्यप)**

## विवाह लग्न से रेखाप्रद ग्रहों का ज्ञान

मुहूर्त्त–चिन्तामणि अनुसार विवाह लग्न से 3, 6, 8, 11वें स्थानों में सूर्य, शनि, राहु, केतु शुभप्रद होते हैं। चन्द्रमा 2, 3, 11वें, मंगल 3, 6, 11वें स्थानों में शुभ–प्रद होते हैं। बुध–गुरु 7, 8, 12वें स्थानों में अशुभ व अन्य स्थानों में शुभ, जबकि शुक्र वि. लग्न से 3, 6, 7, 8, 12वें स्थानों में अशुभ व शेष स्थानों में शुभप्रद होता है। **यथा—**

| ग्रह | विवाह से शुभ स्थान | विंशोपक बल |
|---|---|---|
| सू. | 3, 6, 8, 11 | 3½ |
| चं. | 2, 3, 11 | 5 |
| मं. | 3, 6, 11 | 1½ |
| बु. | 1, 2, 3, 4, 5, 6, 9, 10, 11 | 2 |
| गु. | 1, 2, 3, 4, 5, 6, 9, 10, 11 | 3 |
| शु. | 1, 2, 4, 5, 9, 10, 11 | 2 |
| श. | 3, 6, 8, 11 | 1½ |
| रा. | 3, 6, 8, 11 | 1½ |
| के. | 3, 6, 8, 11 | 1½ |

**लग्न विंशोपक—** आचार्य वराह–अनुसार सूर्य का पूर्ण विंशोपक 3½, चंद्रमा का 5, गुरु का तीन, बुध–शुक्र का 2–2, मंगल–शनि–राहु–केतु का 1½–1½ होता है। बलाबल के आधार पर विंशोपक बल का ज्ञान करना चाहिए।

## भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षा बन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं।

**भद्रा परिहार विचार**—सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूर्त्तों में भद्रा का त्याग ही करना चाहिए, परन्तु आवश्यक परिस्थितिवश **भूलोक की भद्रा**, तथा **भद्रा मुख** छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं।

**कार्येत्वाश्यके विष्टेर्मुख, कण्ठहृदि मात्रां परित्येत्।**

एक अन्य मतानुसार अत्यावश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं।

**तिथेः पूर्वार्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्येऽत्यावश्यके सति॥**

### भद्रा परिहार

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता है। यथा—

**तिथि पूर्वार्धजा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कथ्यते॥**
**दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो–दोषो न, भवेत्सर्वं सौख्यदः॥**

अर्थात् तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात् तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ भद्रायादि तिथ्यन्त में रात्रिव्यापिनी हो जाए, तो दोषकारक न होकर सुखदायिनी हो जाती है।

**(ii) पीयूषधारानुसार—दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है।**

**रात्रिभद्रा यदह्नि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः, सा भद्रा–भद्र दायिनी॥**

(iii) **"दिवा परार्द्धजा विष्टिः, पूर्वार्द्धोत्था निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥"**

उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है।

### भद्रा लोक वास

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा **स्वर्ग लोक** में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से **पाताल** में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में भद्रा **मर्त्यलोक (भू लोक) में—अर्थात् सम्मुख रहती है। जब भद्रा भू–लोक में (सम्मुख) रहती है, अशुभफल दायिनी** एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है—

**स्थिताभूर्लोस्था भद्रा सदा त्याज्या स्वर्गपातालगा शुभा —(मु. मार्त्तण्ड)**

| लोकवास | स्वर्ग | पाताल | भू–लोक |
|---|---|---|---|
| चन्द्रराशि | १, २, ३, ८ | ६, ७, ९, १० | ४, ५, ११, १२ |
| भद्रा–मुख | ऊर्ध्वमुखी | अधोमुख | सम्मुख |

**स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं पाताले च धनागमः। मृत्युलोके यदा भद्रा कार्य सिद्धिस्तदानहि॥**

(iv) शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम **बृश्चिकी** है। कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम **सर्पिणी** है। **मतान्तर** से, दिन की **भद्रा सर्पिणी**, रात्रि की भद्रा **बृश्चिकी** है। बिच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण **बृश्चिकी** भद्रा की पुच्छ और **सर्पिणी** भद्रा का मुख विशेषत: त्याज्य है।

(v) भद्रा दोष, मंगल–शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्याह्न के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है।

## गोधूलि काल

विवाह मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त्त में शुद्ध विवाह–लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है।

**गोधूलि काल**–जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) और गाय आदि चौपाय अपने–अपने गृहों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगें, तो उस काल को मुहूर्त्तकारों ने **गोधूलि काल** का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है। यह लग्न, मुहूर्त्त, पात, अष्टम भाव, जामित्रादि दोषों को नष्ट प्राय कर देता है।

**नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो, गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता॥** –मुहूर्त्त चिन्तामणि

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या विवाह योग्य हो गई हो तो गोधूलि में विवाह शुभ होता है। **ज्योतिनिर्बन्धानुसार–**

**लग्न शुद्धिर्यदा न स्याद् यौवने समुपास्थिते, तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥**

**गोधूलि लग्न काल** के सम्बन्ध में विद्वानों ने मतान्तर पाए जाते हैं–

**(i) पीयूषधारा** के मतानुसार सूर्य के अर्ध–अस्त होने के अनन्तर **२ घड़ी (४८ मिनट) का समय गोधूलि काल है।**

**(ii) मुहूर्त्त गणपति** के अनुसार सूर्यार्ध बिम्ब के अस्त हो जाने के पूर्व एवं पश्चात् १५–१५ पल अर्थात् १२ मिनट का मध्यान्तर गोधूलि संज्ञक है।

**(iii)** आचार्य नारदानुसार सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न काल होता है।

**(iv)** कुछ विद्वानों के अनुसार लग्न, सप्तम तथा अष्टम भाव में मंगल को भी वर्ज्य माना गया है। शेष भावों में अन्य किसी ग्रह का विचार गोधूलि लग्न में नहीं किया जाता।

**(v)** गुरुवार को सूर्यास्त के बाद तथा शनिवार को सूर्यास्त होने से पूर्व (पहले) की ही आधी घड़ी (12 मिनट) को गोधूलिकाल माना गया है, अन्यथा नहीं. (मुहूर्त्त चिन्तामणि)

## चतुर्कोणों दिशाशूल विचार

**आग्नेय** (पूर्व-दक्षिण) में सोम व गुरुवार, **नैऋत्य** (दक्षिण-पश्चिम) दिशा में रविवार व शुक्रवार, **वायव्य** (उत्तर-पश्चिम) में मंगलवार तथा **ईशान** (पूर्व-उत्तर) में बुध एवं शनिवार के दिन **दिशाशूल** होता है (मुहूर्त्त गणपति)

**दिशापति** के वार अनुसार उसी दिशा की यात्रा शुभदायिनी तथा उससे पीछे (सामनेवाली) दिशा की यात्रा अनिष्टप्रदा होती है- दिगीशाहे शुभा यात्रा पृष्ठा हे मरणं ध्रुवम् (ज्योतिस्तत्व)

परन्तु बधवार उत्तर दिशा का स्वामी होते हुए, बुध की उत्तर में निषिद्ध माना गया है (गर्ग)

**विशेष**–यदि एक जगह से रवाना होकर, उसी दिन गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाना निश्चित हो, तो ऐसी यात्रा में तिथि-वार-नक्षत्र, दिशा-शूल, प्रतिशुक, योगिनी आदि जनित दोषों का विचार नहीं करना चाहिए।

# यात्रादि मुहूर्त्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३–इन तिथियों में, अश्वि., मृग. पुर्न, पुष्य, अनु, हस्त, श्रव., धनि, रेव.–इन नक्षत्रों में तथा चौर, बाण, भद्रा, वैधृति, व्यतियात और मासांत दिनादि दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

## दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अत: उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक होने पर रविवार को दलिया एवं घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौं खाकर दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

## चन्द्रवास ज्ञान चक्र

| पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर |
|---|---|---|---|
| मेष | वृष | मिथुन | कर्क |
| सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक |
| धनु | मकर | कुम्भ | मीन |

## चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

## सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु-केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

## 'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताज़ा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियां, मूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना-बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष–ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'–यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'–यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

# विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

## विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार–

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। **"आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥ मु. चिंतामणि॥"**

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

**जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥**

आचार्य भृगु जी के अनुसार जन्म मास, जन्म नक्षत्र एवं जन्म लग्न में विवाह होने पर दम्पत्ति के सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा वह धन सम्पत्ति तथा सन्तान सुख से सौभाग्यशालिनी होती है।

**जन्ममासेऽथ जन्मर्क्षे जन्मलग्नेऽथ जन्मनि। उद्वाहेषु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत्। भृगुः**
**जन्ममासेऽथ पुत्राढ्या धनादया जन्मभोदये। जन्मभे वा भवेदूढा वृद्धा संतति वर्धिनी॥ (यवनाचार्य)**

# ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है–

**द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तत्रवेक ज्येष्ठः शुभावहः।**
**ज्येष्ठ त्रयं न कर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम्** —वाराहमिहिर॥

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। मुनि भारद्वाज के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

**( ३ ) सगे भाई-बहन** के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिएं। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं ( मु. मार्तण्ड )। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। ( नारद ), परन्तु कन्या-विवाह के पश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें अथवा एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें ( **वसिष्ठ** ) तथा जिस वर को अपनी कन्या देवें, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे ( नारदः )।

**दो सगे भाईयों** या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है ( वृन्द्धमनुः )। दो सहोदर ( भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे ( शार्गंधर ) जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मंगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मङ्गल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करे। वाग्दान अर्थात् विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता, भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णयसिंधु) परन्तु अपवाद स्वरूप संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा सूतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे।

## जन्म नक्षत्र विचार

जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूड़ाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है–

**बालान्नभुक्तौ व्रतबन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिण्यम्।**
**शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥** —वसिष्ठ

मतान्तर से ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त दीपिकानुसार केवल चूड़ाकरण (मुण्डन), औषध सेवन, विवाद, यात्रा और कर्णवेध में ही जन्म-नक्षत्र का निषेध कहते है, अन्य सभी कार्यों में जन्म नक्षत्र शुभ कहा है–

**जन्म नक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।**
**क्षौर भैषजविवादध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्॥ (मुहूर्त्त दीपिका)**

परन्तु जन्म नक्षत्र से २५वां तथा २७वां नक्षत्र शुभ कार्यों में त्याज्य माना जाता है।

**जन्म मास** अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह **जन्म नक्षत्र** एवं **जन्म मास** में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है–

**न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥** —नारद

परन्तु अनुज लड़के या लड़की का विवाह जन्म मास में ग्रहणीय माना गया है–

**विवुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः** —मुहूर्त्त चिंतामणि

# विवाह में सम–विषम वर्षों का विचार

सम वर्षों (१८, २०, २२, २४ आदि) में कन्या का विवाह और **विषम वर्षों** (१९, २१, २३, २५ आदि) में लड़के (पुत्र) का विवाह शुभ माना गया है। –अर्थात् इन वर्षों में कन्या या पुत्र का विवाह करना, उनके वैवाहिक जीवन में सुख, सौहार्द आदि की दृष्टि से कल्याणकारी होता है। इसके विपरीत वर्षों (अर्थात् कन्या का विषम वर्षों में तथा लड़के का सम वर्षों) में करना दुःख, रोग एवं कष्टप्रद होता है– **(ज्योतिष तत्त्व प्रकाश)**

# मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त्त

***ग्राह्य तिथि***–३, ५, ८, १०, १३ (शुक्लपक्ष) तथा पूर्णिमा ***ग्राह्य वार***–रवि, मंगल, बुध एवं गुरुवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***–भरणी, आर्द्रा, आश्ले., मघा, पूर्वा-तीनों, ज्येष्ठा तथा मूल। ***ग्राह्य लग्न***–३, ६, ७, ८, ११ राशि लग्न। जब शुभ ग्रह लग्न में हो, पापग्रह ३, ६, ११वें हों तथा अष्टम भाव शुद्ध हो। **विशेष**–गोचरानुसार याचिकाकर्त्ता का चंद्रमा एवं मंगल भी बलान्वित होने चाहिएं।

# चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त्त

***शुभ तिथियाँ***–(१ कृ.), २, ३, ५, ९, १०, १२ एवं १५ शुक्ल। ***शुभ वार***–सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार। ***शुभ नक्षत्र***–अश्वि., रोहि., पुर्न, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनु., श्रव., धनि., रेवती। ***शुभ लग्न***–१, ४, ७, १०। **विशेष**–केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११वें पाप ग्रह हो। लग्न एवं लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो। बुध, शुक्र, गुरु उदित हों। चन्द्र बली हो तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त्त वाले दिन-छटे, आठवें एवं १२वें न हो। ***संसद् में शपथ ग्रहण के समय स्थिर लग्न प्रशस्त होता है।***

# आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

| नाम वार | रविवार | सोमवार | मंगलवार | बुधवार | वीरवार | शुक्रवार | शनिवार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ | पूर्व, उत्तर<br>आग्नेय (दक्षिण पूर्व) | पश्चिम, दक्षिण<br>वायव्य (उत्तर-पश्चिम) | दक्षिण-पूर्व<br>आग्नेय (दक्षिण-पूर्व) | दक्षिण, पूर्व<br>नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) | पूर्व, उत्तर<br>ईशान (पूर्व-उत्तर) | पूर्व, उत्तर<br>ईशान (उत्तर-पूर्व) | पश्चिम, दक्षिण<br>नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) |
| यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले) | पश्चिम, नैऋत्य<br>(दक्षि.-पश्चि. कोण) | पूर्व, उत्तर<br>आग्नेय (दक्षि.-पूर्व) | उत्तर, पश्चिम<br>वायव्य (उत्तर पश्चि.) | उत्तर, पश्चिम<br>ईशान (पूर्व-उत्तर) | दक्षिण, पूर्व<br>नैऋत्य (दक्षि. पश्चि.) | पश्चिम, दक्षिण<br>नैऋत्य कोण (द. पश्चि.) | पूर्व, उत्तर<br>ईशान (पूर्व-उत्तर) |
| **विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी** | विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी। | लेखनादि कार्य, मैडीकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी। | बिजली (इलैक्ट्रानिक), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि। | गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि हुनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना। | दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि। | नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा। | तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेज़ी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना। |
| **व्यापार सम्बन्धी कार्य** | राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज़, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मैडीकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि। | कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि। | शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बिन्धत कार्य, बेकरी electronics, स्पोटर्स Goods, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य। | कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय। | धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य। | संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टैलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रूई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्रय, खुशबूदार वस्तु। | मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य। |

| नाम वार | रवि | चन्द्र | मंगल | बुध | वृह | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नवीन वस्त्र धारण करना | शुभ है | मध्यम | अशुभ | शुभ | शुभ | अति शुभ | अशुभ |
| नवीन आभूषण धारण | शुभ | शुभ | मध्यम | शुभ | शुभ | शुभ | अशुभ |
| तेल लगाना | अशुभ | शुभ | अशुभ | विशेष शुभ | अशुभ | शुभ | विशेष शुभ |
| हजामत करना | मध्यम | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | मध्यम |
| नया जूता पहनना | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | मध्यम | शुभ | मध्यम |
| मुकद्दमा करना | अशुभ | अशुभ | शुभ | शुभ | अशुभ | मध्यम | शुभ |

## अभिजित मुहूर्त्त

**पुराणानुसार अभिजित मुहूर्त्त** काल में क्रियमाण सभी कर्म प्रायः सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त्त सब दोषों को नाश कर देता है-**दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्त्ते हि अभिजित् प्रभुः। चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥**

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त्त का मध्य भाग निकल आता है। **'नारद पुराण'** के अनुसार **अभिजित्** के मध्याह्न काल से 1 घटी अर्थात् 24 मिनट पूर्व और मध्याह्न से 24 मिनट पश्चात् तक के समय को **अभिजित् काल** कहा जाता है।

**उदाहरण**-मान लो, आपने 28 नवम्बर को अभिजित मुहूर्त्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (25/30 घटी पल) का अर्धभाग 12 घड़ी, 45 पल होंगे। इस अर्ध भाग के 5 घंटे, 6 मिनट बनते हैं। इनके उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय 7/10 घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. 12 बजकर 16 मिनट पर अभिजित मुहूर्त्त का मध्यकाल होगा। इससे 24 मिनट पूर्व अर्थात् 11/52 घं. मिं. से अभिजित का प्रारम्भ काल तथा (12:16 + 00:24 मिनट = 12 घं. 40 मिनट पर अभिजित का समाप्ति काल (घंटा मिंट) होगा।

# आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय

आगे हम भारतीय संस्कृति एवं शास्त्रानुसार मुख्य मुहूर्त्तों का निर्णय प्रकार दे रहे हैं, जिसमें विभिन्न मुहूर्त्तों में ग्राह्य मास, तिथि, वार, नक्षत्र आदि का विवरण दे रहे हैं। **ध्यान रहे,** सभी मुहूर्त्तों में वर्ज्य तत्त्वों जैसे–अधिक मास, क्षय मास, पितृ पक्ष, रिक्ता-तिथि (४, ९, १४), वैधृति-व्यतीपात आदि दुष्ट योग, भद्रा (भूलोके) एवं गुरु-शुक्रास्तादि का भी विचार कर लेना उचित होगा। ज्ञातव्य रहे, पंचांगदिवाकर में षोडश संस्कार अन्तर्गत गर्भाधान से अन्नप्राशन तक के मुहूर्त्त स्थायी स्तम्भ '**भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व**' में दिए रहते हैं। हम इसके आगे के मुख्य मुहूर्त्तों का ग्राह्य-अग्राह्य तत्त्वों का निर्णय प्रकार लिख रहे हैं–

## (1) मुण्डन (चौल, चूड़ाकरण) मुहूर्त्त

जन्म या गर्भाधान से ३, ५, ७ आदि विषम वर्षों में मुण्डन संस्कार किया जाता है। कुलाचार अनुसार इसे प्रथम वर्ष भी सम्पन्न कर लेते हैं अथवा यज्ञोपवीत संस्कार के साथ करते हैं। कन्या का चौल (मुण्डन) संस्कार सम वर्षों में होता है।

***ग्राह्य मास***–उत्तरायण मासों में (14 जन. से 15 जुला.-आषाढ़ तक)-यथा-वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ व फाल्गुन मास।

***ग्राह्य तिथि***–२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२ (कृ. व शु. पक्ष), १३ (शुक्लपक्ष) एवं पूर्णिमा।

***ग्राह्य वार***–सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार सभी वर्णों के लिए शुभ हैं। (परन्तु ब्राह्मणों को रविवार, क्षत्रियों को मंगलवार तथा वैश्यों को शनिवार मुण्डनादि कार्यों के लिए विशेष शुभ माने गए हैं।) शुक्ल पक्ष का सोमवार विशेष शुभ होता है, जबकि कृष्ण पक्ष का सोमवार अशुभ (साधारण) होता है।

***ग्राह्य नक्षत्र***–लघु संज्ञक नक्षत्र (अश्वि., पुष्य, हस्त, अभि.), अनुराधा नक्षत्र को त्यागकर मृदुसंज्ञक (मृग., चित्रा, रेवती) तथा चरसंज्ञक (पुन, स्वा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा) तथा ज्येष्ठा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ रहते हैं।

कुछ विद्वान जन्म-मास व जन्म-नक्षत्र, विरुद्ध व विपरीत चन्द्र (४, ८, १२ व शत्रुगत) में वर्ज्य मानते हैं–

**न जन्ममासे न च जन्मभे तथा विधौ विरुद्धेऽशुभतारकासु।**
**युग्माब्दमासे न च कृष्ण पक्षे चूडा न कार्या खलु चैत्रमासे॥**

परन्तु कुछ विद्वान जन्म नक्षत्र या जन्म राशि को शुभ मानते हैं।

**नोट**–ज्येष्ठा नक्षत्र में ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन न करें।

***शुभ लग्न***–२, ३, ४, ६, ७, ९ या १२ राशियों के लग्न अथवा इनके नवांश में मुण्डन शुभ होते हैं। ग्राह्य लग्न राशि जन्म-लग्न या जन्म-राशि से अष्टमस्थ न हो। अष्टम भाव (शुक्र के अतिरिक्त) शुद्ध होना चाहिए। सामान्य लग्न शुद्धि तो आवश्यक ही है।

***तारा-शुद्धि***–मुहूर्त्त ग्रन्थों में चूड़ाकरण (मुण्डन) में तारा का प्रबल होना चन्द्रमा से भी अधिक आवश्यक माना गया है। (ज्योतिर्निबन्ध)

परन्तु तारा-विचार कृष्ण-पक्ष में ही विचारणीय है, शुक्ल पक्ष में नहीं। शुक्ल पक्ष में चन्द्र-बल ही विचारणीय है।–'**कृष्णे बलवती तारा शुक्लपक्षे बली शशी।**' (नारद), अपि च, कृष्ण पक्ष में भी अशुभ तारा होने पर भी यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, मित्रवर्ग या किसी शुभ ग्रह के साथ हो, तो मुण्डन कार्य किया जा सकता है। ('तारा-चक्र' वि. संवत् २०७४ के पंचांगदिवाकर में देखें।)

**विशेष ध्यातव्य**–यदि बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, और गर्भ पाँच मास से अधिक का हो, तो मुण्डन कार्य न करावें। इस संस्कार से गर्भ नष्ट हो सकता है, परन्तु यदि संस्कार्य बालक 5 वर्ष से अधिक हो, तो माता के गर्भ के दोषापत्ति नहीं रहती।

## (2) नूतन अक्षर–लेखनारम्भ मुहूर्त्त

बालक की पाँच वर्ष की अवस्था में सम्प्राप्त हो जाने पर आगे वर्णित विशुद्ध दिन को श्रीगणेश, सरस्वती, लक्ष्मीनारायण, गुरु एवं कुलदेवता की पूजा के साथ उसे लिखने-पढ़ने के उद्देश्य से नूतन अक्षराम्भ संस्कार करवाना चाहिए। उपर्युक्त देवताओं के नाम से घी का हवन करे तथा ब्राह्मणों को दक्षिणादि से सन्तुष्ट करना चाहिए। तदनन्तर पूर्वाभिमुख गुरु के सम्मुख पश्चिमाभिमुख बालक को अक्षरारम्भ करवाना चाहिए। संस्कार्य बालक का चन्द्र-बुध बल अपेक्षित है।

***ग्राह्य मास***–कुम्भस्थ सूर्य को छोड़कर उत्तरायण मासों में (14 जन. से 15 जुला. तक), कुछ विद्वान कुम्भस्थ सूर्य की अवधि को भी ग्राह्य मानते हैं।

***ग्राह्य तिथि***–२, ३, ५, ७, १०, ११, १२।

***ग्राह्य वार***–सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., ज्ये., अभि., श्रव. और रेवती नक्षत्र।

***शुभ लग्न***–२, ३, ६, ९, १२ लग्नराशि। अष्टम भाव ग्रहरहित होना चाहिए।

**नोट**–यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार से पहिले अक्षराम्भ और व्रतबन्ध के पश्चात् वेदारम्भ शुभ होता है।

## (3) विद्यारम्भ–मुहूर्त्त

वर्णमाला-गणितादि में बालक परिपक्व हो जाने पर भविष्यत् आजीविका-प्रदात्री कोई विशेष या सर्वसामान्य विद्या का शुभारम्भ करना चाहिए।

***ग्राह्य मास***—फाल्गुन मास को छोड़कर उत्तरायण के मास।

***ग्राह्य तिथि***—२, ३, ५, ६, १०, ११, १२

***ग्राह्य वार***—रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार।

***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग. आर्द्रा, पुन, पुष्य, आश्ले, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, पू.षा. उ.षा., श्रव., धनि., शत., पू.भा., उ.भा. और रेवती।

***शुभ लग्न***—२, ५, ८ राशि लग्न। तथा केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा ३, ६, ११वें क्रूर ग्रह हों।

## ( 4 ) उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त

यह नवम संस्कार यज्ञोपवीत, व्रतबन्ध, उपनयन, मौञ्जिबन्धन और जनेऊ आदि नामों से प्रचलित है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का प्रथम जन्म माता के गर्भ से और द्वितीय जन्म व्रतबन्ध से संस्कृत होने पर माना गया है। अत: वे **'द्विज'** वा **'द्विजन्मा'** कहलाने के अधिकारी हैं। अत: ऐसे महत्त्वपूर्ण संस्कार को शास्त्र-सम्मत् काल में विधिवत् सम्पादित करना चाहिए।

**उपनयन ( यज्ञोपवीत ) संस्कार कब करना चाहिए ?** इस संस्कार में काम्य, नित्य और गौण काल के भेद से तीन प्रकार के काल कहे गए हैं। ब्राह्मण बालक के गर्भधारण या जन्मदिन से पंचम वर्ष में काम्यकाल या अष्टम वर्ष में नित्यकाल ; क्षत्रिय का षष्ठ या 11वें वर्ष में क्रमश: काम्य व नित्यकाल एवं 8वें या 12वें वर्ष में वैश्य का काम्य व नित्यकाल में उपनयन संस्कार हो जाना चाहिए।

यदि उपरोक्त वर्षों तक उपनयन संस्कार न हो सके, तो उपरोक्त वर्षों को द्विगुणित कर देने से मध्यमान्तर काल **'गौण-काल'** माना गया है। अर्थात् 8 से 16वें वर्ष तक ब्राह्मण का, 11 से 22 वर्ष तक क्षत्रिय का तथा 12 से 24 वर्ष तक वैश्य का यज्ञोपवीत संस्कार मध्यम फलप्रदी होने से अत्यावश्यकता में करणीय हैं।

***शुभ ग्राह्य मास***—चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (देवशयनी एकादशी से पूर्वकाल तक), माघ व फाल्गुन मास।

***ज्ञातव्य बिन्दु***—(*i*) ज्येष्ठ पुत्र के लिए ज्येष्ठ मास त्याज्य रखना चाहिए। मीनस्थ सूर्य यज्ञोपवीत में शुभ कहा गया है। (निर्णय सिन्धु)

(*ii*) यज्ञोपवीत संस्कार के लिए वसन्त ऋतु तथा अष्टम वर्ष की उत्कृष्टता इतनी है कि दोनों के संयोग में जन्ममास-तिथि-नक्षत्र भी दूषित नहीं होते।

(*iii*) यद्यपि जन्ममास यज्ञोपवीत में त्याज्य है, तथापि आवश्यक होने पर जन्मदिन से दस दिन छोड़कर अन्य दिनों में संस्कार दोषपूर्ण नहीं होता। (राजमार्तण्ड)

(*iv*) अन्य मतानुसार जन्मकालिक पक्ष को छोड़कर दूसरे पक्ष में शुभ कार्य करने पर जन्म मास का दोष नहीं रहता। (निर्णय सिन्धुः)

***ग्राह्य तिथि***—शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, १०, ११, १२ एवं कृष्ण पक्ष की–१, २, ३, ५ तिथियां शुभ हैं।

***ज्ञातव्य बिन्दु***—(*i*) चैत्र-वैशाख शुक्ल तृतीया, माघ शुक्ल सप्तमी तथा फाल्गुन शुक्ल तृतीया उपनयन में विशेष रूप से ग्राह्य हैं। (पुरुषार्थ-चिन्तामणि)

(*ii*) **मन्वादि-युगादि**-*सोपपद तिथियां, चतुर्दशी, अमावस्या, प्रतिपदा, अष्टमी तथा निरयण सूर्य संक्रान्ति दिन उपनयन संस्कार के लिए त्याज्य हैं। इसी प्रकार पौष, माघ और फाल्गुन की तीनों कृष्णाष्टमी तथा ७, ८, ९ तिथियां **'अष्टका'** संज्ञक त्याज्य हैं।

***ग्राह्य वार***—रवि, सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

***वर्णेश, शाखेश बल***—विशेष रूप से **ब्राह्मणों** को गुरु व शुक्रवार में, **क्षत्रियों** का रवि, मंगलवार में तथा **वैश्यों** का सोम और बुधवार में उपनयन शुभ हैं, क्योंकि ये ही इनके वर्णेश हैं। (पुरुषार्थ-चिन्तामणि)

(*ii*) बुध यदि अस्त हो या पापाक्रान्त हो, तो बुधवार त्यागें।

(*iii*) मुहूर्त्त के दिन बालक का चन्द्र ४, ८, या १२वें नहीं होना चाहिए।

***शुभ समय***—**पूर्वाह्न उत्तम,** मध्याह्न मध्यम और अपराह्न वर्जित कहा गया है।

***शुभ नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले., पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, पू.षा., उ.षा., अभि., श्रव., धनि., शत., पू.भा., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

***ब्राह्मणों के लिए पुनर्वसु नक्षत्र त्याज्य है।***

***शुभ लग्न***—विशेषतया २, ३, ५, ६, ९ राशि लग्न उत्कृष्ट कहे गए हैं, तथापि कोई भी राशि लग्न ग्राह्य हैं, जब ८, १२वां भाव शुद्ध ; ३, ६, ११वें पापग्रह, अन्यत्र (लग्न बिना) सौम्य ग्रह तथा वृष या कर्कस्थ पूर्णचन्द्र लग्न में हो। पुन: गुरु, शुक्र और स्वशाखा, स्ववर्ण का अधिपति ग्रह उच्चस्थ, स्वक्षेत्री, वर्गोत्तम, मूलत्रिकोण या केन्द्र-त्रिकोणस्थ हो, तो वह काल उपनयन में शुभ जानना चाहिए।

**सूर्य-चन्द्र व गुरु बल ( त्रिबल )**—उपनयन मुहूर्त्त के प्रवरण हेतु संस्कार्य बालक की जन्मराशि से सूर्य, गुरु और चन्द्र बल का विचार अवश्य करना चाहिए।

### रवि-चन्द्र-गुरु शुद्धि चक्र

| ग्रह बल | सूर्य बल | चन्द्र बल | गुरु बल |
|---|---|---|---|
| शुभ स्थान | ३,६,१०,११ | १,२,३,५,६,७,९,१०,११ | २,५,७,९,११ |
| पूज्य स्थान | १,२,५,७,९ | १२ | १,३,६,१० |
| अनिष्ट स्थान | ४,८,१२ | ४,८ | ४,८,१२ |

उच्चस्थ, स्वनवांश, मित्रराशि या वर्गोत्तम या स्वराशि में गुरु हो, तो अनिष्ट गुरु भी ग्राह्य होता है।

***रोग–बाण***—उपनयन मुहूर्त्त में रोगबाण का भी विचार किया जाता है। (रोगबाण प्रत्येक

---

*सोपपद तिथियाँ–ज्ये. शुक्ल २, आषाढ़ शुक्ल १०, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२

राशि के 9, 18, और 27वें अंश में स्थित सूर्य का संचारकाल होता है) परन्तु ध्यान रहे, रोगबाण और चौरबाण का विचार रात्रि में किया जाता है। तथा उपनयन का समय तो पूर्वार्द्ध या मध्याह्न तक ही होता है। अपि च, लग्न बल की उपलब्धि में बाण विचार निरर्थक है–

**लग्ने पूर्णबलोयेते न दोषः पंचकस्य च।।** –मुहूर्त गणपति

**नोट**–यदि संस्कार्य बालक की माता रजस्वला हो जाए तो उसकी शुद्धि के बाद ही यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिए।

## (5) केशान्त कर्म मुहूर्त्त

ब्राह्मण को 16वें, क्षत्रियों को 22वें तथा वैश्य को 24वें वर्ष में केशान्त संस्कार करना चाहिए। इस संस्कार के लिए काल-शुद्धि, ग्राह्य-वर्ज्य दोष चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार के सदृश ही जानने चाहिएं।

## (6) समावर्तन मुहूर्त्त

यह संस्कार आचार्य-गृह (गुरुकुल) में विद्या समाप्त कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश के समय एक विशेष अनुष्ठान के रूप में किया जाता है। केशान्त तथा विवाह संस्कार के मध्यवर्त्ती काल में, जब बालक गुरु से अध्ययन करके स्वगृह लौटता है, तब उपाकर्म की तरह ही समावर्तन करना चाहिए। इसे कुछ विद्वान लोग **'मौंजी-मोक्षण'** संस्कार भी कहते हैं। इस संस्कार में वर्ज्य-ग्राह्य एवं काल-शुद्धि आदि उपनयन संस्कार की भान्ति रहेगी। समावर्तन संस्कार के उपरान्त ही ब्रह्मचारी विद्याव्रत स्नातक कहलाता है।

# विवाह संस्कार

विवाह गृहस्थाश्रम का सर्वप्रमुख संस्कार है। इस संस्कार के प्रमुख तीन उद्देश्य होते हैं–(1) अनर्गल प्रवृत्ति का निरोध, (2) पुत्रोत्पादन द्वारा वंश की रक्षा एवं (3) भगवत्प्रेम का अभ्यास। ऋषि-ऋण, देव-ऋण और पितृ-ऋण–इन तीन ऋणों का शोधन कर अपना चित्त मोक्ष में लगाना चाहिए। तीन ऋणों से बिना छुटकारा पाये मुक्ति मार्ग का आश्रय लेने से मानव का पतन हो जाता है। अतएव स्वाध्याय द्वारा ऋषि-ऋण, यज्ञ-साधन द्वारा देव-ऋण और पुत्रोत्पत्ति द्वारा पितृ-ऋण से सद्गृहस्थ मुक्त होते हैं। नैष्ठिक ब्रह्मचारी के समस्त ऋण ज्ञानयज्ञ में लय हो जाते हैं।

गृहस्थ बनने के लिए मन के अनुरुपा, भिन्नगोत्रीया, अपने से अल्पवयस्का एवं अनन्यपूर्विका (पहिले किसी के साथ अविवाहिता) कन्या का पाणिग्रहण करें।

## (7) वर–वरण (सगाई) मुहूर्त्त

वर–कन्या की जन्मपत्रियों में परस्पर सम्यक् मिलान हो जाने के पश्चात् दोनों के माता–पिता विवाह के संकल्प (वाग्दान) को सम्पुष्ट करने के लिए वर–कन्या का वरण (सगाई) करते हैं। इसके निम्नलिखित शुभ मुहूर्त्त में कन्या का भाई कुल पुरोहित (ब्राह्मण) एवं परिवार के सन्निकट सगे–सम्बन्धियों के साथ यज्ञोपवीत, नारियल, साबुत सुपारी, हल्दी, अक्षत, छुहारे, गुड़, वस्त्र, अँगूठी, मिष्ठान्न, फल, फूलादि अर्पण करके वर का शास्त्र प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें। (पूर्ण विधि जानने के लिए हमारी नवीन प्रकाशित **'विवाह-पद्धति'** का अवलोकन करें।)

***ग्राह्य मास***–पौष एवं चैत्र मास (धनु एवं मीनस्थ सूर्यकालीन) को छोड़कर शेष मास।

***शुभ–ग्राह्य तिथि***–१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (दोनों पक्षों की), १३ (शुक्ल) एवं पूर्णिमा तिथि।

***ग्राह्य वार***–रवि, चन्द्र, बुध, गुरु तथा शुक्रवार।

***ग्राह्य नक्षत्र***–कृति., रोहि., मृग, तीनों पूर्वा, हस्त, श्रवण, चित्रा।

***शुभ लग्न***–सभी राशि लग्न, परन्तु केन्द्र/त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा 3, 6, 11वें भावों में क्रूर ग्रह हों।

## (8) कन्या–वरण मुहूर्त्त

वर-वरण की भान्ति ही वर के माता–पिता अथवा रक्त–सम्बन्धी कन्या के वरण के लिए कन्या के घर में जाकर शास्त्र–प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें।

***शुभ मास***–धनुस्थ एवं मीनस्थ (पौष एवं चैत्र मास) सूर्य को छोड़कर शेष मास।

***ग्राह्य तिथि***–१ (कृष्ण पक्ष की), २ ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (दोनों पक्षों की), १३ (शुक्ल) एवं पूर्णिमा।

***ग्राह्य नक्षत्र***–मघा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा तथा विवाह–मुहूर्त्त वाले सभी नक्षत्र।

***शुभ लग्न***–सभी राशि लग्न, तथा केन्द्र/त्रिकोण में शुभ ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र) हों।

## (9) विवाहांग कृत्यारम्भ मुहूर्त्त

विवाह से पूर्व महत्त्वपूर्ण कृत्य जैसे–दलन, कण्डन, अनाज–शोधन, पिष्टीकरण, घर को लीपना (पेंट), सजाना, चित्रकारी करना, स्तम्भारोपण, अंकुरार्पण, गणेशादि पूजन, वस्त्रालंकार संग्रह, भूषण–कंकणादि धारण, कलश–स्थापन, मंगल–स्नान तथा नान्दीश्राद्धादि विवाहांग कृत्यों को विवाह दिन से पूववर्ती ३, ६, ९वें दिनों को छोड़कर करना चाहिए। इन्हें विवाह–मुहूर्त्तोक्त नक्षत्रों तथा सामान्य पंचांग शुद्धि में २, ४, ५, ७, ८, १०, ११, १२ दिन पूर्व करें।

## वेदिका निर्माण और स्तम्भारोपण

विवाह में वेदी–रचना (मण्डप) भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। ब्राह्मणों के लिए विवाह के लिए (कन्या) के 4 हाथ परिमित लम्बी–चौड़ी, एक हाथ ऊँची और पूर्व की ओर क्रमशः ढालु होती हुई वेदी बनानी चाहिए। समस्त वर्णों के लिए कन्या–घर के बायीं ओर वेदी का निर्माण करना चाहिए। अर्थात् घर के बाहर घर की ओर मुँह करके खड़े व्यक्ति के दायीं ओर बनाई जाए। इस मण्डपवेदी को चारों ओर चार मण्डप–स्तम्भों से आवृत्त किया जाता है। मण्डप निर्माणान्तर्गत प्रथण स्तम्भ के आरोपणार्थ दिशा ज्ञान के हेतु सूर्य राशि संचार के अनुसार निम्न चक्र द्रष्टव्य है–

| **दिशा** | ईशान | आग्नेय | नैर्ऋत्य | वायव्य |
|---|---|---|---|---|
| **सूर्य राशि** | ५,६,७ | २,३,४ | ११,१२,१ | ८,९,१० |

*अर्थात् सूर्य के सिंह, कन्या, तुला राशि संचार कालीन ( भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक मास)* स्तम्भ ईशान कोण में सर्वप्रथम गाड़ा जाना चाहिए।

**विशेष**–मण्डप निर्माणारम्भ में '**विवाहांग कृत्यारम्भ**' में कहे हुए तत्त्वों का विचार तथा मंगलवार व पंचक-नक्षत्रों का परित्याग करना चाहिए।

विवाह कार्य पूर्ण हो जाने के अनन्तर पूर्वनिर्मित मण्डपादि तथा पूर्वामन्त्रित गणेशषोडश-मातृकादि का विसर्जन २, ४, ५, ७वें दिन करना शुभावह माना गया है।

**ध्यान रहे**–नान्दीमुख श्राद्ध से मण्डपोद्वासन पर्यन्त पिता, भाई तथा सभी सगोत्र/सपिण्ड बान्धवों को दर्श श्राद्ध, क्षयश्राद्ध, ठण्डे पानी से स्नान, अपसव्य, स्वधाकार, नित्यश्राद्ध, ब्रह्मयज्ञ, अध्ययन, नदी व सीमा का लांघना, उपवास, व्रत और श्राद्ध में भोजन नहीं करना चाहिए।

## ( 10 ) तैलादि–लापन (चढ़ाने) का मुहूर्त्त

वर-कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना (उबटन) हो, उसका चन्द्र-बल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन के पूर्व (पहिले) करना चाहिए। **उदाहरणार्थ**–मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से 5 दिन पूर्व तैलाभ्यंग करना चाहिए। इसमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

| राशि | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तैलसंख्या | 7 | 10 | 5 | 10 | 5 | 7 | 7 | 5 | 5 | 5 | 5 | 7 |

## (11) विवाह–मुहूर्त्त

विवाह-मुहूर्त्त निर्णय में सामान्य वर्ज्य दोषों के अतिरिक्त लतादि दस दोषों का विवरण तथा लग्न शुद्धि एवं अन्य घटक तत्त्व इसी पंचांग में वार्षिक विवाह-मुहूर्त्तों के अनन्तर पृष्ठों पर प्रतिवर्ष दिया रहता है। मुख्य ग्राह्य मासादि का विवरण पुनः लिख रहे हैं–

***ग्राह्य मास***–विवाह संस्कार में पूर्वाचार्यों ने यद्यपि वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन मास ग्रहण किए हैं। परन्तु अनेक विद्वानों एवं मुहूर्त्त चिन्तामणि पीयूषधारा अनुसार लोकाचार से श्रावण, भाद्रपद, आश्विन मास भी ग्रहणीय हैं। इसीदिन (भद्रदेश) पंजाब (हि.प्र., हरियाणा, जम्मू सहित) में अति प्राचीन काल से श्रा., भाद्र., आश्वि महीनों में विवाह करने की प्रथा चली आ रही है। पर्वतीयों प्रदेशों (हि.प्र., उत्तराखण्ड आदि) में कार्तिक मास में भी विवाह होते हैं।

***ग्राह्य तिथि***–कृष्णपक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तक की तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में।

***ग्राह्य वार***–सभी वार ग्रहणीय है। परन्तु रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र विशेष शुभ तथा मंगल-शनिवार मध्यम कहे गए हैं।

***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., रोहि., मृग., मघा, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, उ.षा., श्रव., धनि., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

**अश्वि., चित्रा, श्रव. व धनिष्ठा**–ये चार विवाह नक्षत्र कात्यायन गृहसूत्रोक्त त्रिषुत्रिषूत्तरादिषु प्रमाणानुसार ग्रहण किए गए हैं। गृहसूत्र के अतिरिक्त 'धर्मसिन्धु', 'ज्योतिर्विदाभरणम्' तथा 'सत्यकृत्य मुक्तावली' ग्रन्थ में भी ये चारों नक्षत्र विवाह हेतु ग्राह्य माने गए हैं।

**विवाह में लग्न शुद्धि एवं विशेष विषयों पर विचार**–विवाह में त्रिविक्रमसंहिता अनुसार शुद्ध काल, लग्न-शुद्धि, लग्न-बल, वर-कन्या के सम-विषम वर्षों का विचार, भद्रादि दोष, गोधूली लग्न सम्बन्धी सभी विषयों का निर्णयप्रकार सप्रपञ्च इसी पंचांग में वार्षिक विवाह-मुहूर्त्त वाले पृष्ठों के बाद स्थायी स्तम्भों में देखें।

## ( 12 ) नववधू प्रवेश–(वध्वागमन) मुहूर्त्त

विवाह दिन से 16 दिनों के मध्यान्तर में सम दिनों में एवं 5, 7, 9वें विषम दिनों एवं स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। उपरोक्त दिनों में तिथि और नक्षत्रादियों का नियम नहीं होता। यदि ऊपर कहे हुए दिनों में वधू प्रवेश न हो सके तो विषम दिनों (तिथियों) में, विषम मासों में और विषम वर्षों में होना चाहिए। परन्तु यदि किसी कारण अथवा दैवगत व्यवधान के कारण पाँच वर्ष तक भी नववधू प्रवेश न हो सके तो फिर किसी भी अन्य शुभ मुहूर्त्त में प्रवेश करना चाहिए। 16 दिन के पश्चात् ही निम्न तिथ्यादि तत्त्व विचारणीय होंगे–

***ग्राह्य तिथि***–कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथियाँ तथा ४, ९, १४ तिथियाँ त्यागकर सभी तिथियां।

***ग्राह्य वार***–सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।

***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., रोहि., मृग, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, उत्तरा-तीनों, श्रव., धनि. तथा रेवती।

***शुभ लग्न***–५, ८, ११ लग्न विशेष शुभ हैं। परन्तु अन्य लग्नों में भी (४, ८ भाव शुद्ध होने पर) वधू प्रवेश रात्रि के समय किया जा सकता है।

नववधू प्रवेश के समय भद्रा, व्यतिपातादि अशुभ दोषों का विचार तो करना ही चाहिए।

## विवाह के बाद प्रथम वर्ष में कन्या वास-चिन्तन

विवाह के पश्चात् नव-परिणीता स्त्री प्रथम ज्येष्ठ मास में पति के घर निवास करे, तो पति के ज्येष्ठ (जेठ) को, प्रथम अधिक मास में पति को, क्षय मास में स्वयं का, प्रथम आषाढ़ (मासान्तर श्रावण) में सास को एवं पौष में श्वसुर को अशुभ फल प्राप्त होता है। इसी प्रकार प्रथम चैत्र मास में मायके (पितृ-गृह) में रहने से पिता को अशुभ फल प्राप्त होता है।

## ( 13 ) द्विरागमन (मुकलावा) मुहूर्त्त

नवविवाहिता वधू का वधू-प्रवेश के अनन्तर पिता के गृह में लौटकर पुनः भर्तृगृह गमन (ससुराल) '**द्विरागमन**' कहलाता है। अतः इसे '**पुनर्वधूप्रवेश**' भी कहा जा सकता है।

***द्विरागमन काल***–यदि द्विरागमन विवाह दिन से 16 दिन के मध्यान्तर में किया जाए तो विषम या सम दिनों में सूर्य-चन्द्र बल, गुरु-शुक्रास्त, गुरु-शुक्र बाल्य-वृद्धत्व, एकराशिगत सूर्य-

चन्द्र, सम्मुख एवं दक्षिणस्थ शुक्र, भद्रा का विचार नहीं किया जाता। परन्तु यदि 16 दिनों के बाद हो, तो द्विरागमन में ये घटक त्याज्य रहेंगे। विवाह के बाद प्रथम, तृतीय या पंचम-सप्तमादि विषम वर्षों में वर (पुरुष) के सूर्य एवं गुरु तथा दोनों (वर-वधू) के चन्द्रमा बलवान् होने पर पत्नी का द्विरागमन शुभ होता है।

***ग्राह्य मास***—मेष, वृश्चिक तथा कुम्भस्थ कालीन सूर्य अर्थात् वैशाख, मार्गशीर्ष तथा फाल्गुन सौर मासों में।

***ग्राह्य शुभ तिथि***—शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ एवं पूर्णिमा।

***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत. तथा रेवती नक्षत्र।

***शुभ लग्न***—२, ३, ६, ७, १२ लग्न विशेष शुभ हैं तथा इन पर शुभ ग्रहों की दृष्टियां हों। लग्न से ३, ६, १०, ११वें गुरु तथा केन्द्र भावों में शुक्र विशेष शुभप्रद होगा।

***शुक्र-विचार***—शुक्र की शुद्धि द्विरागमन में अत्यावश्यक है। शुक्र जिस दिशा में उदित हुआ हो, उसी दिशा से शुक्रवास का विचार करना चाहिए। **उदाहरणार्थ**—जैसे यदि शुक्र पूर्व दिशा से उदय हुआ हो [जब शुक्र, सूर्य से पीछे (कम) रहता है, तो प्रातःकाल पूर्व में उदित रहता है।]—उस समय पूर्व-उत्तर (आग्नेय-ईशान) की यात्रा में शुक्र सम्मुख-दक्षिण होने से अशुभ होगा। परन्तु पश्चिम-दक्षिण (नैर्ऋत्य-वायव्य) की यात्रा में शुक्र पृष्ठ-वाम (बाएं) होने से शुभ है। इसी प्रकार शुक्र जब सूर्य से आगे (अधिक) रहता है, तो सन्ध्या में पश्चिम में उदित रहता है, उस समय पश्चिम (वायव्य) की यात्रा में शुक्र सम्मुख (सामने) तथा दक्षिण की यात्रा में दक्षिण (दाहिना) होता है। अतः पूर्व (आग्नेय) तथा उत्तर (ईशान) की यात्रा में पृष्ठ एवं वाम (बाएं) शुक्र होते हैं। **सम्मुख** एवं **दक्षिण** शुक्र में बालक, गर्भिणी तथा नवोढ़ा के लिए यात्रा अशुभ कही गई है।

यह शुक्र का विचार तृतीयादि विषम वर्ष के द्विरागमन, नवविवाहिता तथा गर्भिणी की यात्रा में करना आवश्यक है।

**सम्मुख-शुक्र का परिहार**—एक ही नगर/ग्राम में, किसी विषय (बिमारी या उत्पात) आदि के उपद्रव में, विवाह सम्बन्धी यात्रा में, देव-तीर्थ यात्रादि में, राज-पीड़ित होकर और विवाह के बाद एक वर्ष के भीतर स्त्री पिता के घर से पतिगृह की यात्रा करें तो सम्मुख-दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होगा। अपि च, जब चन्द्रमा रेवती से मृगशिर तक हो, तो भी सम्मुख-दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। क्योंकि इस अवधि में शुक्र अन्धा हो जाता है। इसीप्रकार पति द्वारा पत्नी के ले जाने पर (अर्थात् यदि पति साथ हो) तो तथा भृगु, अंगिरा, वत्स, वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि और भारद्वाज-इन 7 मुनियों के वंश (गोत्र) में भी सम्मुख शुक्र का दोष नहीं लगता है।

## (14) प्रथम स्त्री-समागम मुहूर्त्त

रजोदर्शन उपरान्त 16 रात्रि पर्यन्त, प्रथम चार रात्रियों को छोड़कर शेष 12 रात्रियों में स्त्री संगम (समागम) करें। पुरुष अपने चन्द्र बल में प्रसन्नचित्त होकर नवांगना से प्रथम-समागम करे। विषम रात्रि में संभोग से गर्भ होने पर कन्या, समरात्रियों में पुत्र का जन्म होता है।

***ग्राह्य तिथि***—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १२ तथा शुक्ल पक्ष की १३

***ग्राह्य वार***—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार

***ग्राह्य नक्षत्र***—रोहि., मृग., उत्तरा-तीनों, हस्त, स्वाती, अनु., श्रव., धनि और शतभिषा

***शुभ लग्न***—१, ३, ५, ७, ९, ११ राशि लग्न

## (15) नववधू द्वारा प्रथम पाककर्म मुहूर्त्त

नवविवाहिता वधू को ससुराल में सर्वप्रथम रसोई बनवाना शुरु करने हेतु विचारणीय शुभ काल-

***ग्राह्य तिथि***—१ (कृ.), २, ३, ५, ६, ७, १० तथा शुक्ल पक्ष की १३ व पूर्णिमा

***ग्राह्य वार***—सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार

***ग्राह्य नक्षत्र***—कृति., रोहि., मृग, पुन., उत्तरा-तीनों, विशा., ज्ये., श्रव., धनि., शत. एवं रेवती।

***शुभ लग्न***—२, ५, ८, ११ राशि लग्न। जब चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह या ग्रहाभाव, सप्तम में बलयुत सौम्य ग्रह तथा अष्टम भाव भी शुद्ध हो।

## (16) वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी हो, तो शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात् वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ गहरा गड्ढा खोद कर उसे जल से भर दें। प्रातःकाल आकर उसे देखने पर, यदि वह गड्ढा पानी से भरा हुआ दिखे तो, भूमि शुभ जानें। यदि पानी न हो, तो मध्यम जानें, और यदि गड्ढा में पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हुई हो, तो भूमि को अशुभ समझें।

(ख) वास्तुभूमि में परीक्षा के लिए भूमि में लगभग डेढ़ फुट गहरा उतना ही चौड़ा गड्ढा खोदें। खुदाई के समय यदि पत्थर, ईंट, ताम्बा, पात्र, धनादि द्रव्य मिलें, तो यह परिवार की आयु, धन, संतति आदि में वृद्धि होने के संकेत हैं। इसे शुभ शकुन मानना चाहिए। यदि भूमि खोदने पर कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, गुठली, रुई, सीप खोपड़ी, लोहादि मिलें तो इसे अशुभ शकुन समझना चाहिए।

(ग) विश्वकर्मा के अनुसार एक अन्य परीक्षा भूमि में उत्तर दिशा की ओर एक लगभग डेढ़ फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ा गड्ढा खोदें। गड्ढे में से सारी मिट्टी निकाल लें। तथा निकाली हुई मिट्टी को दुबारा उसी गड्ढे में भर देवें। यदि गड्ढा भर देने के बाद भी मिट्टी शेष बच जाती है, तो समझ लें कि भूमि उत्तम है। यदि फिर भरने के बाद मिट्टी शेष नहीं बचती और गड्ढा पूरा भर जाता है, तो इससे यह समझना चाहिए कि भूमि मध्यम स्तरीय होगी। यदि निकाली गई सारी मिट्टी गड्ढे में भरने पर भी, गड्ढा पूरी तरह नहीं भरता है, तो समझें कि ज़मीन निकृष्ट प्रकार की है।

(घ) फटी हुई, शूल (कांटों), दीमक आदि से युक्त ऊँची-नीची भूमि अशुभ होती है।

(ङ) शुभ-भूमि-चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, पुष्प, लताओं, फूलों आदि से सुगन्धित एवं समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होती है।

*(च) मकान की नींव को गहरा खोदते समय यदि काली ईंटें देखने को मिलें, तो भूमि शुभ*

जानें। हड्डी, केश, (बाल), कोयला राखादि निकलें तो वहाँ मकान बनवाने वाले को रोगादि से कष्ट रहे॥

## ( 17 ) गृहारम्भ (नींव) मुहूर्त्त

विभिन्न सूर्य संक्रान्तियों में राहु-मुख से पृष्ठवर्तिनी दिशा में घर की नींव खोदना शुभता का द्योतक होता है। भूखण्ड में सूर्य की राशि के अनुसार सर्पाकार राहु का मुख, उदर एवं पुच्छ परिवर्तित होती रहती है। इसीलिए उस दिशा में खुदाई प्रारम्भ करनी चाहिए। जहाँ राहु का कोई अंश (अवयव) न हो–

(1) सूर्य, वृष, मिथुन या कर्क (ज्येष्ठ, आषाढ़ या श्रावण) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ **नैऋत्य** (दक्षिण-पश्चिम) कोण से करें।

(2) सूर्य सिंह, कन्या या तुला (भाद्र., आश्वि. या कार्तिक) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ **आग्नेय कोण** (पूर्व-दक्षिण) में करें।

(3) सूर्य वृश्चिक, धनु या मकर (मार्ग., पौष या माघ) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ **ईशान कोण** (उत्तर-पूर्व) में करें।

(4) सूर्य मेष, कुम्भ या मीन (वैशाख, फाल्गुन या चैत्र) में हो, तो नींव की खुदाई का आरम्भ **वायव्य कोण** (उत्तर-पश्चिम) से करें।

ध्यान दें, नींव की खुदाई में सुप्त-भूमि (भू-शयन) का विचार करना भी आवश्यक है।

***सुप्तभूमि (भू-शयन)***—*(i)* **प्रत्येक सूर्य संक्रान्ति से ५, ७, ९, १५, २१ एवं २४वें प्रविष्टे को पृथ्वी सोई रहती है,** अतएव सुप्त भूमि के दिवसों में यथासम्भव कृषि, गृह-निर्माण, वापी, कुआं, तालाब के लिए भूमि का खनन न करें।

***(ii)*** एक अन्य मतानुसार, सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९ तथा २६वें चन्द्र नक्षत्रों में भी भूमि का शयन होता है। (**पंचांगदिवाकर में दिए गए गृहारम्भ मुहूर्त्तों में इन दोनों मतों का अनुसरण होता है।**) (**भू-रजस्वला**–सूर्य-संक्रान्ति के दिन से १, ५, १०, ११, १६, १८, १९वें दिन भूमि रजस्वला रहती है। अतः इन दिनों भी यज्ञ, हवन, कृषि, तालाब, गृह निर्माणारम्भ आदि कार्यों का आरम्भ न करें–परन्तु अधिकतर पंचांगकार एवं विद्वान इस मत को मान्यता नहीं देते।)

***ग्राह्य मास***—वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, मार्ग., माघ तथा फाल्गुन श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं।

**द्वार-मुख के अनुसार मास ग्रहण**–जब सूर्य मेष-वृष-वृश्चिक-तुला राशि में हो, तो दक्षिण या उत्तर मुख का और जब सूर्य कर्क-सिंह-मकर-कुम्भ राशि में हो, तो पूर्व या पश्चिम मुख का गृह बनाना चाहिए।

| पूर्व-पश्चिमाभिमुख गृह | उत्तरदक्षिणाभिमुख गृह |
|---|---|
| सौर श्रावण, भाद्रपद, माघ तथा फाल्गुन मास | सौर वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक और मार्गशीर्ष मास |

***ग्राह्य तिथि***—१ (कृ.), २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ (शु.), १५

***ग्राह्य वार***—सोम, बुध, गुरु, शुक्र और शनिवार

***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्विनी, रोहि., मृग., पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा-तीनों, अनु., श्रव., धनि., शत. और रेवती।

***शुभ लग्न***—स्थिर या द्विस्वभाव लग्न शुभ होंगे (२, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२)। लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि, पापग्रह ३, ६, ११ में हों तथा शुभ ग्रह ८, १२वें भाव के अतिरिक्त अन्य भावों में हों, दशम भाव में सबल सौम्य ग्रह तथा चन्द्रमा १, ६, ८, १२वें न हों।

***अग्निबाण***—'गृहगोपेऽग्निपंचकम्' अनुसार गृहारम्भ के समय अग्निबाण वर्जित है। परन्तु अधिकतर विद्वानों के अनुसार लकड़ी आदि की छत डालते समय, इलैक्ट्रिक वायरिंग प्रारम्भ करते हुए तथा स्तम्भ आरोहणादि काल में ही अग्निबाण का विचार करना चाहिए। अपि च, लग्न बल की उपलब्धि में बाण विचार निरर्थक है।

## वृषवास्तु चक्र

| बैल के अंग | शिर | अगले पाद (पांव) | पृष्ठपाद (पिछले पांव) | पृष्ठ (पीठ) | दक्ष कुक्षि (दाईं कोख) | पुच्छ (पूँछ) | वाम कुक्षि (बाईं कोख) | मुख |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | ३ | ४ | ४ | ३ | ४ | ३ | ४ | ३ |
| फल | अग्नि-भय | शून्य (०) | स्थिरता शान्तिप्रद | श्रीलक्ष्मी प्राप्ति | लाभ-प्रद | स्वामी कष्टकारी | दारिद्रय | सदा पीड़ा व कष्ट |

गृहारम्भ के मुहूर्त्तों में से मास शुद्धि, ग्रह-बलादि देखने के बाद, कल्पित वृष (बैल) के अंगों पर अभिजित् सहित अट्ठाईस नक्षत्रों को प्रत्यारोप (स्थापित) करें। सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से मुहूर्त्त के दिन तक गणना करने पर मुहूर्त्त वाला दिन दोषपूर्ण आता हो, तो उस स्थिति में मुहूर्त्त का दिन बदल लेना चाहिए।

**उदाहरण**–जैसे सूर्य के नक्षत्र से लेकर प्रथम तीन नक्षत्रों तक गिनने पर **मुहूर्त्त दिन** पड़ता हो, तो गृह में **अग्निदाह** का भय रहेगा। आगे 4, 5, 6 एवं 7वें नक्षत्र पर मु. नक्षत्र आवे तो शून्य यानि-कुछ भी शुभाशुभ फल न हो। अर्थात् अपने कर्मों के अनुसार ही फल मिले। आगामी चार (8, 9, 10, 11)वें नक्षत्रों के मध्यपात हो तो भाग्य में स्थिरता एवं शान्ति रहेगी। चतुर्थ भाग उससे आगे के तीन नक्षत्रों के मध्य मुहूर्त्त आ जावे तो लक्ष्मी प्राप्ति अर्थात् धन प्राप्ति के योग होंगे। इसी क्रमानुसार फल जानें।

**निष्कर्षतः**–गृह निर्माण का आरम्भ करने के लिए सूर्य के नक्षत्र से प्रथम सात नक्षत्र अशुभ। आठवें नक्षत्र से अठारहवें तक शुभ तथा शेष अंतिम दश नक्षत्र पुनः अशुभ होंगे।

**ध्यान रहे,** भूखनन के बाद भूमि-पूजन एवं वास्तु-पूजा करनी आवश्यक है।

***शिलान्यास मुहूर्त्त***—गृहारम्भ की शुभ बेला में खनित नींव को गृहारम्भ के लिए निर्दिष्ट

समय-शुद्धि का विचार करके विधिवत् पत्थरों, शिलाओं, ईंटों से पूरित कर देना चाहिए। वृहत्संहिता अनुसार पहिले से खोदी हुई नींव में पूर्व व दक्षिण दिशा के मध्य में अर्थात् अग्निकोण में पूजा करके प्रथम शिला स्थापित करके प्रदक्षिणा के क्रम से अर्थात् अग्नि के बाद दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य) तथा वायव्यादि( उत्तर) दिशाओं में स्थापित करना चाहिए एवं खम्भ को भी इसी रीति से बनवाना चाहिए।

## ■■■■■नींव में रखने योग्य सामग्री■■■■■

**शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री–**

- तांबे की गड़वी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वी को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध लें। ➧ ५ नई ईंटे
- ५ पंचरत्नी तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ
- १ जोड़ी सर्प, सर्वोषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा
- **(विशेष)** –भाद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए।
- फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो।
- ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो।
- मार्गशीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए।
- ५ कौड़ीयां, सिंधूर, ५ सुपारी साबुत, 1 नारियल।
- दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा १ पाव कच्चा दूध। (यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है।

## (18) द्वार–शाखा स्थापन मुहूर्त्त

उचित दिशा में प्रमुख द्वार का निर्माण व उसमें चौखट लगवाने में उपयुक्त काल शुद्धि–

***तिथि***–५, ७, ८, ९ [पंचमी धनदा चैव, मुनिनन्दवसौ शुभम्।।–ज्येतिर्निबन्ध]

***ग्राह्य वार***–सोम, बुध, गुरु, शुक्र

***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, उत्तरा–तीनों, हस्त, स्वा., श्रव. और रेवती।

### सूर्यभात् द्वार–देहली चक्र

| सूर्यभात् नक्षत्र | ४ | ८ | ८ | ३ | ४ |
|---|---|---|---|---|---|
| फल | लक्ष्मी प्राप्ति | उद्वेग | देहसौख्य | मृत्युतुल्य कष्ट | सौख्य |
| वास | शिर | चतुष्कोण | चतुः शाखा | देहली | मध्य |

## (19) जलाशय (कुआँ), देवालय खनन मुहूर्त्त

सामान्य रूप से कुआँ, तालाब, बावड़ी आदि समस्त जलस्थानों का शुभारम्भ अग्रलिखित तिथि/वार आदि में शास्त्र-सम्मत होगा–

***ग्राह्य मास***–वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (मिथुनार्क), माघ तथा फाल्गुन।

***ग्राह्य तिथि***–शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३

***ग्राह्य वार***–सोम, बुध, गुरु, शुक्र।

***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., रोहि., मृग., पुन, पुष्य, उत्तरा–तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती।

***लग्न–शुद्धि***–२, ४, ७, ९, १०, ११, १२ आदि राशि लग्न तथा शुभ ग्रहों के नवांश। तथा केन्द्र में शुभ ग्रह हों।

**विशेष**–गुरु-शुक्रास्त, गुर्वादित्य, दक्षिणायन, भद्रा, कुयोगादि त्याज्य।

## (20) राहु मुख ज्ञान चक्रम्

सूर्य के भिन्न-भिन्न राशियों में संचार-कालीन देवालय-प्रारम्भ, गृहारम्भ तथा जलाशय (कुआँ, नल, तालाबादि) के लिए भू-खननोपयोगी दिशा ज्ञान चक्र है। तीन-तीन राशि की स्थिति में ऊपर के क्रम से राहु के मुख की दिशा लिखी है, उसकी विपरीत (पृष्ठ) दिशा में खात करना शुभ होगा।

### सूर्यराशिवशात् खात चक्रम

| राहुमुखम् | ईशान्ये | वायव्ये | नैऋत्ये | आग्नये |
|---|---|---|---|---|
| देवालयारम्भे सूर्य | मीन, मेष, वृष | मिथुन, कर्क, सिंह | कन्या, तुला, वृश्चिक | धनु, मकर, कुम्भ |
| गृहारम्भे सूर्य | सिंह, कन्या, तुला, | वृश्चि., धनु, मकर | कुम्भ, मीन, मेष | वृष, मिथुन कर्क |
| जलाशयारम्भे सूर्य | मकर, कुम्भ, मीन | मेष, वृष, मिथुन | कर्क, सिंह, कन्या | तुला, वृश्चि., धनु |
| खातदिशा (खुदाई) \| शुभ→ | आग्नेये (पूर्व-दक्षिण) | ईशाने (उत्तर-पूर्व) | वायव्ये (उत्तर-पश्चिम) | नैऋत्ये (दक्षिण-पश्चिम) |

### सूर्यभात् कूप–नल ( जल चक्र )

| नक्षत्र | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिशा | मध्य | पूर्व | आग्नेय | दक्षिण | नैऋत्य | पश्चिम | वायव्य | उत्तर | ईशान |
| प्राप्यजल | स्वादु | खण्डित | स्वादु | अभाव | स्वादु | क्षार | मिश्रित | मधुर | क्षार |

## (21) अथ चुल्लिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से 6 नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। आगामी 4 नक्षत्र मस्तक के मृत्युप्रद। आगामी 8 नक्षत्र बाहु के सुन्दर-सुख एवं भोगदायक। 5 गर्भ के नाशक। 2 भुज के भोगदायक तथा अन्तिम 2 नक्षत्र चरण के नाशक माने गए हैं। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य द्वारा लिखा गया है। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में ही चुल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

## ( 22 ) नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त

***ग्राह्य मास***—निरयण उत्तरायणकाल अर्थात् वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (लगभग 15 जुलाई तक की कालावधि), माघ तथा फाल्गुन मास। कार्तिक एवं मार्गशीर्ष मास मध्यम माने गए हैं।

***ग्राह्य वार***—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।

***ग्राह्य शुभ तिथियां***—रिक्ता तिथियां (४, ९, १४) तथा अमावस को छोड़कर शेष प्रायः सभी तिथियां।

प्रकारन्तरेण, दिग्द्वार के अनुसार अनुरूप गृह–प्रवेशोपयोगी तिथियां–

| **द्वार दिशा** | पूर्व | पश्चिम | उत्तर | दक्षिण |
|---|---|---|---|---|
| **शुभ तिथियां** | ५,१०,१५ | २,७,१२ | ३,८,१३ | १,६,११ |

***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., उ.फा., उ.षा., उ.भा., श्रव., धनि., शत., रेवती।

## 'गृह प्रवेश में कलश वास्तु चक्र'

*नवगृह प्रवेश सम्बन्धी मुहूर्तों में और अधिक सूक्ष्मता प्राप्ति के लिए कलश–वास्तु चक्र का प्रयोग किया जाता है। किसी काल्पनिक कलश को आठ विभागों में बाँट लें। मुहूर्त्त काल में सूर्याधीष्ठित नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र (मुहूर्त्त वाला नक्षत्र) तक यथाक्रम नक्षत्र रखें। घट चित्र रेखांकित है। सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र 1 (समान) होने पर मुख पर स्थापित करें। सूर्य के नक्षत्र से आगे गिनने पर दो से पाँच अर्थात् आगे के चार नक्षत्र पूर्व दिशा में रखें, इसी प्रकार 6 से 9 तक चार नक्षत्र कलश के दक्षिण में रखें, फिर दस से तेरह तक चार नक्षत्र पश्चिम में रखें, फिर 14 से 17 तक चार नक्षत्र उत्तर में रखें तथा 18 से 21 तक चार नक्षत्र कलश के उदर में रखें, फिर 22 से 24 तक तीन नक्षत्र कलश के तल में रखें तथा शेष 25 से 27 तीन नक्षत्र कलश के कण्ठ में रखें। इसके बाद गृह प्रवेश का फल इस प्रकार जानें–*

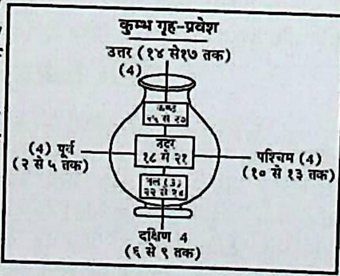

| गृह–प्रवेश में नक्षत्र फल | फल |
|---|---|
| *1. यदि मुख का नक्षत्र ही प्रवेशनक्षत्र* | *अग्नि से भय होता है।* |
| *2. पूर्व के चार नक्षत्रों में भवन* | *उजाड़ होने का भय होता है।* |
| *3. दक्षिण के चार नक्षत्रों में* | *धन लाभ होता है।* |
| *4. पश्चिम के चार नक्षत्रों में* | *धन–वैभव प्राप्त होता है।* |
| *5. उत्तर के चार नक्षत्रों में* | *कलह–क्लेश रहता है।* |
| *6. उदर के चार नक्षत्रों में* | *विनाश का भय रहता है।* |
| *7. तल के तीन नक्षत्रों में* | *स्थिरता (स्थायी वास)।* |
| *8. कण्ठ के तीन नक्षत्रों में* | *गृहस्वामी की चिरायु हो।* |

*शुभ लग्न—विशेष रूप से गृहस्वामी के जन्म–लग्न या जन्मराशि से अष्टम लग्न न हो, जन्मराशि/जन्मलग्न से उपचय 3, 6, 10 या 11वें तथा स्थिर लग्न में गृह–प्रवेश करना चाहिए। ग्राह्य लग्न में लग्न से 1, 2, 5, 7, 9, 10 भावों में शुभ ग्रह और 3, 6, 11वें भावों में पाप–ग्रह हों तथा चतुर्थ व अष्टम भाव शुद्ध होने पर गृह–प्रवेश करना शुभ होता है।*

***वामस्थ रवि विचार***—गृह प्रवेश के समय ग्राह्य लग्न में वामस्थ सूर्य शुभ माना गया है। गृह प्रवेश के लग्न से 8वें स्थान में जो राशि हो, तो उससे 5 स्थान आगे–8, 9, 10, 11, 12वें भाव में यदि सूर्य हो, तो पूर्वदिशा की ओर गृहप्रवेश में रवि वाम होता है और दक्षिणाभिमुखः वाले द्वारगृह में प्रवेश लग्न के समय यदि सूर्य 5, 6, 7, 8, 9वें भाव में सूर्य हो, तो दक्षिण दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होगा। इसी प्रकार गृह प्रवेश लग्न से दूसरे स्थान से आगे 5 स्थान 2, 3, 4, 5, 6वें भाव में सूर्य होने से पश्चिम दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होगा तथा प्रवेश लग्न से 11वें स्थान से आगे 5 स्थानों 11, 12, 1, 2, 3 भाव में सूर्य हो, तो उत्तर दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होता है।

### वामस्थ रवि ज्ञानार्थ चक्र

| द्वार दिशा | गृह–प्रवेश लग्न से | आगे 5 स्थान तक वामस्थ सूर्य |
|---|---|---|
| पूर्वाभिमुख गृह | अष्टम स्थान से | सूर्य 8, 9, 10, 11, 12वें भाव |
| दक्षिणाभिमुख गृह | पंचम स्थान से | सूर्य 5, 6, 7, 8, 9वें भाव |
| पश्चिमाभिमुख गृह | दूसरे स्थान (भाव) से | सूर्य 2, 3, 4, 5, 6ठे भाव |
| उत्तराभिमुख गृह | 11वें स्थान (भाव) से | सूर्य 11, 12, 1, 2, 3 रे भाव |

***स्पष्टीकरण***—जैसे आपके नवीन गृह का द्वार मुख पूर्व की ओर है तथा गृह–प्रवेश ग्राह्य लग्न सिंह है, तो सूर्य की मीन, मेष, वृष, मिथुन व कर्क राशि संचारकालीन (चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ तथा श्रावण) सूर्य वामस्थ होगा। अतः चैत्र, श्रावण को छोड़कर वै., ज्ये., आषा. में गृहप्रवेश करेंगे, तो अधिक शुभकारक होगा। इसी प्रकार अन्य निर्धारित मुहूर्त–लग्नों एवं द्वारमुख की दिशा के अनुसार वामस्थ रवि का विचार करें।

## ( 23 ) पुरातन (पुराने) गृह–प्रवेश मुहूर्त्त

अस्थायी रूप से किराये (ट्रांस्फर आदि के कारण) आदि के मकान में प्रवेश अथवा पुराने गृह में प्रवेश के मुहूर्त्त के लिए ऊपर दिए गए शुभ मासों के अतिरिक्त **श्रावण मास** भी ग्राह्य होगा। पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्तों में **रिक्ता तिथि, गुरु–शुक्रास्त काल, अधिक–क्षय मास भी ग्राह्य होते हैं।** परन्तु मासान्त, भद्रा, व्यतीपात, वैधृति, त्रयोदश–दिनात्मक पक्ष, तिथि–क्षय, निर्बल चन्द्र, युति, वेधादि का विचार अवश्य करना चाहिए। यद्यपि नवग्रह शान्ति, स्वास्तीवाचन, कलश–पूजनादि आपेक्षित हैं, परन्तु वास्तु–शान्ति, कलशचक्र शुद्धि, स्थापनादि आवश्यक नहीं। ग्राह्य वार, तिथि, नक्षत्र नूतन गृह प्रवेश की भान्ति ही रहेंगे।

## ( 24 ) विपणि मुहूर्त्त

### ( अर्थात् दुकान, व्यवसाय, फैक्टरी शुरु करने के मुहूर्त्त )

***शुभ एवं ग्राह्य मास***—वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन। ***ग्राह्य तिथियाँ***—रिक्ता तिथियाँ (४, ९, १४), कृष्ण १३ तथा अमावस तिथियाँ छोड़कर शेष तिथियाँ। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग., पुन, मूल, पुष्य, उत्तरा–तीनों, हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., अभिजित् और रेवती। ***शुभ वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***शुभ लग्न***—कुम्भ लग्न त्याज्य है। शेष राशि लग्नों में भी चन्द्र,

बुध-शुक्र केन्द्र स्थानों में, अष्टम तथा द्वादश भाव शुद्ध हों तथा 2, 10, 11वें भावों में शुभ ग्रह हों। **नोट**—क्रूर ग्रह की युति, वेध, गुरु-शुक्रस्तादि का विचार तो करना ही चाहिए।

## ( 25 ) बीज बोने (हल चलाने) का मुहूर्त्त

***ग्राह्य तिथियाँ***—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल) तथा पूर्णिमा। ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग., पुन, पुष्य, मघा, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., विशा., अनु., मूल, धनि. तथा रेवती।

## ( 26 ) अनाज संग्रह (भरने) का मुहूर्त्त

***ग्राह्य तिथियाँ***—२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३ (शुक्ल), १५। ***ग्राह्य वार***—चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्रवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग, पुन., पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत. तथा रेवती।

## ( 27 ) औषधि निर्माण एवं सेवन मुहूर्त्त

***ग्राह्य तिथि***—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शु.)। ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ***ग्राह्य नक्षत्र***—यहाँ जन्म नक्षत्र त्याज्य रहेगा। लघु संज्ञक (अश्वि., पुष्य, हस्त, अभि.), मृदुसंज्ञक (मृग., चित्रा, रेवती), चरसंज्ञक (पुन., स्वा., श्रव., धनि., शत.) तथा मूल नक्षत्र (ज्येष्ठा, मूल) ***लग्न शुद्धि***—द्विस्वभाव राशिलग्न (३, ६, ९, १२) तथा लग्न, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव शुद्ध हों अर्थात् इन भावों पर क्रूर की स्थिति व दृष्टि वर्ज्य है।

## ( 28 ) सर्ववस्तु क्रय-विक्रय मुहूर्त्त

खरीदने के नक्षत्र में बेचना शुभ नहीं है। विक्रय (बेचने) के नक्षत्र में खरीदना अच्छा नहीं होता। ***वस्तु खरीदने के नक्षत्र***—रेव., शत., अश्वि, स्वा., श्रव. और चित्रा नक्षत्रों में शुभ है। ***वस्तु बेचने के नक्षत्र***—तीनों पूर्वा, विशाखा, कृतिका, आश्लेषा और भरणी नक्षत्र। लग्न शुद्धि, तिथ्यादि के लिए विपणि मुहूर्त्त देखें।

## ( 29 ) आप्रेशन कराने का मूहूर्त्त

***ग्राह्य तिथि***—२, ३, ५, ६, ७, १०, १२ (१३-शुक्ल पक्ष की)।
***ग्राह्य वार***—रवि, मंगल, गुरु और शनिवार।
***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., अभि., श्रव.।

## ( 30 ) मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त

***ग्राह्य तिथि***—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) तथा १५ ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवार ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., मृग., उ.फा., हस्त, श्रव. तथा विशाखा। इसके अतिरिक्त रविपुष्य योगों, निरयण एवं सायन संक्रान्ति संक्रमण-काल, दीपावली आदि योगों में मन्त्र सिद्धि सम्बन्धी कार्य किए जाते हैं।

## ( 31 ) भूमि-खरीदने का मुहूर्त्त

***ग्राह्य मास***—वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (मिथुनार्क तक-15 जुला.), मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमि क्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं। ***ग्राह्य तिथियाँ***—१ (कृष्ण पक्षे), कृष्ण तथा शुक्लपक्ष की २,५,६,१०,११ एवं पूर्णिमा।। ***ग्राह्य नक्षत्र***—मृग., पुन., आश्ले., मघा, विशा, अनु., तीनों पूर्वा, मूल, स्वा., शत और रेवती।। ***शुभ वार***—मंगल, गुरु एवं शुक्रवार।

## ( 32 ) पशु खरीदने का मुहूर्त्त

***ग्राह्य तिथि***—१ (कृष्णपक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण व शुक्ल पक्ष की), १३ (शुक्ल पक्ष की), १५ ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु एवं शनिवार।

***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., पुन, पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत और रेवती।

## ( 33 ) ऋण-दान (कर्ज़ देने) का मुहूर्त्त

ब्याज अर्जित करने के उद्देश्य से धन का उधार देना निम्न मुहूर्त्त में हितकर है-

***ग्राह्य तिथि***—१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण एवं शुक्ल पक्ष की), १३ (शुक्ल) तथा १५ ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, मंग., गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., मृग., पुन, पुष्य, चित्रा, स्वा., विशा, श्रव., धनि., शत और रेवती। ***लग्न शुद्धि***—१, ४, ७, १० राशि लग्न।। पंचम-नवम भाव में शुभग्रह तथा अष्टम भाव शुद्ध होना चाहिए। **विशेष**—बुधवार को अपना धन किसी को नहीं देना चाहिए। अर्थात् बुधवार को दिया हुआ धन वापिस नहीं मिलता। भद्रा, व्यतीपात, महापात तथा अमावस में दिया गया धन वापिस प्राप्त नहीं होता।

## ( 34 ) ऋण-ग्रहण (कर्ज़ लेने) मुहूर्त्त

***ग्राह्य तिथि***—१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण व शुक्लपक्ष की), १३ (शुक्ल), १५ ***ग्राह्य वार***—सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग. पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि, शत तथा रेवती।। तथापि मृग., चित्रा, अनु. तथा रेवती विशेष रूप से शुभ हैं। ***शुभ लग्न***—१, ४, ७, १० राशि लग्न श्रेष्ठ है। शुभ ग्रह त्रिकोण (5, 9वें) तथा अष्टम भाव शुद्ध हो। **विशेष**—मंगलवार को कर्ज़ के रूप में किसी से धन नहीं लेना चाहिए। संक्रान्ति वाले दिन, वृद्धि योग, हस्त नक्षत्र और रविवार में ऋण (कर्ज़) नहीं लेना चाहिए।

अपि च, "**ऋणच्च्छेदं कुजे कुर्यात् संचयं सोमनन्दे**"-मंगलवार को ऋणों को चुका देना तथा बुधवार को धन संचय करना चाहिए।

## ( 35 ) क्षौरकर्म (हजामत) के लिए शुभाशुभ दिन

गर्गादि आचार्यों के अनुसार रविवार, मंगलवार एवं शनिवार को क्षौर (हजामत) कर्म करवाने से आयु का क्षय होता है। **सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार** को क्षौर कर्म (हजामत) करवाना शुभ होता है। मतान्तर से एक पुत्र सन्तान वाले गृहस्थी को सोमवार के दिन, तथा विद्या एवं धनाकांक्षी गृहस्थी को गुरुवार के दिन क्षौर नहीं करवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त पर्व वाले दिन, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी (१४) आदि रिक्ता तिथियों में, व्रत के दिन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन, भद्रा और व्यातिपात योग में तथा भोजन करने के बाद, देश-प्रदेश जाने के समय में शुभाकांक्षी क्षौर कर्म न करावें।

## ( 36 ) तैलाभ्यंग-अर्थात् तैल मालिश करना

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। **निर्णय सिन्धु** के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन-हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दुःख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता हैं। प्रतिदिन तेल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता-( ***-अभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम्॥*** )

# विवाह-मुहूर्त्त में लत्तादि दस दोष विचार

विवाह मुहूर्तों के साधन में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पंचबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि–इन दश दोषों का विचार करके निर्णय लेना आवश्यक है। पंचांगदिवाकर या किसी अन्य पंचांग में भी इन दस दोषों का विचार करके ही विवाह मुहूर्त दिए जाते हैं। इन दस महादोषों में से वेध, मृत्युबाण तथा क्रान्तिसाम्य–ये तीन महादोष अपरिहार्य होने से विवाह में सर्वत्र सर्वथा वर्जित हैं–शेष सात दोषों में से चार से अल्प दोष रहने पर वे विवाह-मुहूर्त्त की लग्न-शुद्धि से नष्ट हो जाते हैं। विवाह मुहूर्त्त में उपरोक्त दस दोषों में से क्रमशः जो दोष वर्तमान रहता है, उसे वक्ररेखा (ऽ) से तथा जो दोष नहीं रहता, उसे खड़ी रेखा (।) से सूचित किया जाता है। जैसा कि पंचांगदिवाकर के विवाह मुहूर्त्तों में दस महादोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा के स्तम्भ में आपको मिलेगा। ये रेखायें इस पंचांग या अन्य किसी भी पंचांग में यथाक्रम शुद्धतापूर्वक लगायी गयी हैं या नहीं, इसकी जाँच आप चाहें तो सरलता से कर सके तथा स्वयं विवाह-मुहूर्त्त शोधन में सुयोग्य बन जाएं। इसलिए प्रत्येक महादोष का विचार व चक्र दिया जा रहा है–

### ( 1 ) लत्तादोष-चक्र

| विवाह नक्षत्र → ग्रह | अश्वि. | रोहि | मृग. | मघा | उ.फा | हस्त | चित्रा | स्वाती | अनु | मूल | उ.षा. | श्रवण | धनि. | उ.भा. | रेव. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | अनु | पू.षा. | उ.षा. | उ.भा. | अश्वि. | भर. | कृति. | रोहि | आर्द्रा | पुष्य | मघा | पू.फा. | उ.फा. | स्वा. | विशा. |
| मंग. | उ.भा. | भरणी | कृति. | पुष्य | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | स्वाती | अनु. | मूला | पू.षा. | उ.षा. | शत. | पू.भा. |
| बुध | पुर्न | मघा | पू.फा. | विशा. | ज्ये. | मूल | पू.षा. | उ.षा. | धनि. | पू.भा. | रेवती | अश्वि. | भर. | मृग. | आर्द्रा |
| गुरू | धनि. | उ.भा. | रेवती | मृग. | पुर्न. | पुष्य | आश्ले | मघा | उ.फा. | चित्रा | विशा. | अनु. | ज्ये. | उ.षा. | श्रव. |
| शुक्र | मृग. | पुष्य | अश्ले | चित्रा | विशा. | अनु. | ज्ये. | मूल | उ.षा. | धनि. | पू.भा. | उ.भा. | रेव. | कृति. | रोहि. |
| शनि | उ.षा. | शत | पू.भा. | कृति. | मृग. | आर्द्रा | पुर्न. | पुष्य | मघा | उ.फा. | चित्रा | स्वा. | विशा. | मूल | पू.षा. |
| राहु | पू.षा. | धनि. | शत. | भर. | रोह. | मृग. | आर्द्रा | पुर्न | अश्ले. | पू.फा. | हस्त | चित्रा | स्वा. | ज्ये. | मूल |

***(i)* लत्तादोष**–ऊपर की प्रथम पंक्ति में लिखे गए विवाह-नक्षत्रों के नीचे जिस ग्रह का नक्षत्र आ जाए, तो उस ग्रह से सम्बन्धित लत्तादोष होगा। मान लीजिए आपने रोहिणी नक्षत्र के विवाह हेतु लत्तादोष देखना हो तो साथ दिए गए चक्र (तालिका) में सूर्य यदि पू.षा. में हो अथवा गुरु उ.भा. नक्षत्र में हो या राहु (या केतु) धनिष्ठा नक्षत्र में हों, तो उन्हीं ग्रहों का लत्तादोष माना जाएगा।

### ( 2 ) पातदोष चक्र

| विवाह नक्षत्र | अश्वि. | रोह. | मृग. | मघा | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वा. | अनु. | मूल | उ.षा. | श्रव. | धनि. | उ.भा. | रेव. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| –सूर्य नक्षत्र– | रेव. | आर्द्रा | मृग | अश्वि | कृति | भर. | रोहि | कृति. | अश्वि | रोह. | भर. | अश्वि | रेव. | भर. | अश्वि. |
| | श्ले. | पुर्न | आर्द्रा | मृग | आर्द्रा | मृग. | श्ले. | पुष्य | आर्द्रा | श्ले. | पुर्न. | आर्द्रा | मृग | पू.फा. | मघा |
| | मघा | पू.फा. | मघा | पुष्य | पू.फा. | मघा | चित्रा | हस्त | पू.फा. | ज्ये. | विशा. | स्वा. | चित्र | उ.फा. | पू.फा. |
| | चित्रा | चित्रा | हस्त | हस्त | विशा | स्वा. | धनि | श्रव. | पू.षा. | मूल | अनु. | विशा. | स्वा. | विशा. | स्वा. |
| | अनु. | मूल | ज्ये. | ज्ये. | पू.भा. | शत. | शत. | धनि. | उ.षा. | धनि | उ.षा. | पू.षा. | मूल | मूल | ज्ये. |
| | श्रव. | शत. | धनि. | रेव. | उ.भा. | पू.भा. | अश्वि. | रेव | पू.भा. | उ.भा. | शत. | धनि. | श्रव. | शत. | धनि. |

***(ii)* पातदोष**–विवाह नक्षत्रों के नीचे विवाह-काल में सूर्य निम्न नक्षत्रों पर हो, तो पातदोष होता है। **उदाहरण**–विवाह-नक्षत्र यदि श्रवण हो, तो सूर्य-अश्वि, आर्द्रा, स्वा., विशाखा, पू.षा. एवं धनि. आदि नक्षत्र में हो, तो पातदोष होगा। **विशेष**–हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतीपात, गण्ड और शूल योगों का अन्त जिस विवाह नक्षत्र में हो, वह भी पात-दूषित हो जाता है। विवाह नक्षत्र में शूल योग हो या उसका अन्त हो, तो **'भुजंग'** नामक पातदोष होता है, जोकि सर्वत्र त्याज्य माना जाता है। **नोट**–वैधृति-व्यतिपात की सम्पूर्ण घड़ियां, शूल-योग की प्रथम 5 घड़ियां, गण्ड की प्रथम 6 घड़ियां विशेषतः त्याज्य हैं। हर्षण, साध्य को पूज्य माना गया है।

**( 3 ) युति दोष**–जिस नक्षत्र का विवाह निकाल रहे हों, यदि उसी नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष माना जाता है। 'श्रीपति' अनुसार पापग्रहों की युति विशेषतया त्याज्य मानी जाती है। जबकि शुभ ग्रह की युति शुभ मानी जाती है। परन्तु चन्द्रमा यदि अपनी (स्व) राशि, उच्च या मित्रग्रह की राशि में हों, तो युति दोष नही होता, अपितु वर-वधू का कल्याण करने वाला होता है। यथा–चन्द्रमा वृष, मिथुन, सिंह, कन्या राशि में हो, तो क्रूर ग्रह की युति का परिहार माना जाता है।

**( 4 ) वेध दोष**–पंचशलाका चक्र अनुसार विवाह नक्षत्र यदि किसी अन्य क्रूर आदि ग्रह से विद्ध हो जाएं, तो उस नक्षत्र का विवाह सर्वथा त्याज्य माना जाता है। वेध नक्षत्र ज्ञान के लिए पंचशलाका एवं सप्त-शलाका चक्रों का आश्रय लिया जाता है। वधू-प्रवेश, दान, वर-कन्या का वरण एवं

### ( 4 ) वेध दोष चक्र–पञ्चशलाका वेध

| वेधक नक्षत्र | अश्वि | रोहि. | मृग. | मघा | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वा. | अनु. | मूल | उ.षा. | श्रव. | धनि. | उ.भा. | रेव. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वेध्य नक्षत्र | पू.फा. | अभि. | उ.षा. | श्रव. | रेव. | उ.भा. | पू.भा. | शत. | भर. | पुर्न | मृग. | मघा | आश्ले | हस्त | उ.फा. |

विवाहादि शुभ कार्यों में 'पंचशलाका' चक्र का तथा अन्य मंगल कार्यों में सप्तशलाका चक्र के द्वारा विचार करना चाहिए। विवाह पटल अनुसार सूर्यवेध से वैधव्य, भौमवेध से पुत्रशोक बुधवेध से वन्ध्या योग, गुरुवेध से प्रव्रज्या, शुक्रवेध से केवल कन्या सन्तति तथा शनि, राहु-केतु वेध से दारिद्रय योग होता है।

ज्योतिर्निबन्धानुसार सौम्य ग्रह से विद्ध नक्षत्र का चरण ही त्याज्य होता है, परन्तु क्रूर ग्रह से कोई भी चरण विद्ध होने पर पूर्ण नक्षत्र त्याज्य माना जाता है। यथा-बुध, गुरु, शुक्रादि शुभ ग्रह का केवल चरण वेध (प्रथम-चतुर्थ, द्वितीय-तृतीय) का विचार करें। जबकि सूर्य, मंगल, शनि, राहु आदि क्रूर ग्रहों के सभी चरण त्याज्य होंगे। अर्थात् वेधदोष होगा।

## (5) यामित्रदोष–

विवाह नक्षत्र के नीचे वाले नक्षत्रों पर स्थित कोई भी ग्रह उस नक्षत्र में होने पर यामित्रदोष होता है। चक्र में ऊपर प्रत्येक विवाह नक्षत्र और नीचे के कोष्ठक में उससे 14वाँ नक्षत्र है, जिस पर कोई भी ग्रह होने पर वह ऊपरी खाने के विवाह-नक्षत्र को यामित्र--दोष से दूषित करेगा। पापी या क्रूर ग्रह का यामित्र दोष पूज्य होता है। **नोट**–(*i*) यामित्रदोष वाले ग्रह को शुभ ग्रह देखते हों, तो यह दोष नहीं रहता। (*ii*) सप्तम भाव में चंद्र-गुरु स्वगृही, उच्चस्थ या मित्रक्षेत्री हो तो यामित्रदोष नहीं रहता।

### (5) यामित्र दोष चक्र

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्वि | रोहि. | मृग. | मघा | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वा. | अनु. | मूल | उ.षा. | श्रव. | धनि. | उ.भा. | रेव. |
| चित्रा | अनु. | ज्ये. | धनि. | पू.भा. | उ.भा. | रेव. | अश्वि | कृति. | मृग. | पुन. | पुष्य | अश्ले | उ.फा. | हस्त |

## (6) बाणदोष–

रोगादि पाँच बाणों का सम्बन्ध सूर्य के विशेष अंशों से है, चाहे वह किसी राशि का हो। प्रत्येक राशि के जिन अंशों का सम्बन्ध जिस बाण से है, उससे पहले के अंश (गतांश) उस बाण के सामने चक्र में दिए गए हैं, क्योंकि पंचांग में दैनिक सूर्यस्पष्ट के गत राश्यंश के साथ अग्रिमांश की भुक्त कला-विकला दी जाती है। अतः आप सरलतापूर्वक दैनिक सूर्य-गति निकालकर सूर्यस्पष्ट के समय में (1° अंश की) जमा-घटा देने से बाणारम्भ-काल तथा समाप्तिकाल जान सकते हैं। यों तो पाँच-बाणों के विशेष समय व वारानुसार त्याज्य माने गए हैं। परन्तु मुहूर्त्त-शोधन में इन सभी बाणों को प्रत्येक वार में सभी कालों में वर्ज्य करने की परम्परा है। अपि च, प्रचलित परम्परानुसार पंचांगदिवाकर में केवल 1° से 1°-30′ अर्थात् 30′ कला तक ही अशुभ प्रभाव को समाप्तिकाल मानकर मुहूर्त्त-लग्न लगाए जाते हैं।

### (6) बाणदोष चक्र

| नाम बाण | सूर्य के गतांश | वर्ज्य कर्म | वर्ज्य वार | वर्ज्य काल |
|---|---|---|---|---|
| रोग | 8°-17°-26° | उपनयन | रविवार | रात्रि |
| अग्नि | 2°-11°-20°-29° | गृहारम्भ | मंगलवार | सदैव |
| नृप | 4°-13°-22° | राजसेवा | शनिवार | दिवाकाल |
| चोर | 6°-15°-24° | यात्रा | मंगलवार | रात्रि |
| मृत्यु | 1°-10°-19°-28° | विवाह | बुधवार | संध्या |

**(7) एकार्गल दोष**–विवाह नक्षत्र के समय यदि सूर्य अधिष्ठित नक्षत्र साभिजित गिनने पर विषम हो, तो एकार्गल दोष होता है, परन्तु उस समय व्याघात, गण्ड, व्यतीपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड–इन अशुभ योगों की विद्यमानता अनिवार्य है। अतः चक्र में प्रत्येक वैवाहिक नक्षत्र से विषम संख्यक नक्षत्रों को उस नक्षत्र के नीचे वाले कोष्ठकों में दिया गया है। जिनमें से किसी नक्षत्र पर सूर्य के होने से उस कोष्ठक का विवाह-नक्षत्र एकार्गल दोष से दूषित होता है। यह कश्मीर में विशेषतः वर्जित है। **परिहार**–ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त-गणपति अनुसार अशुभ योगों में कुछ विशेष घड़ियां ही विशेष रूप से त्याज्य मानी गई हैं–विष्कम्भ की प्रथम 3 घड़ियां, व्याघात और वज्र की प्रथम 9 घड़ियां, परिघ योग का पूर्वार्द्ध (7½ घटि) भाग, शूल योग की प्रथम 5 घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड की प्रथम 6 घड़ियां, वैधृति-व्यतीपात योग सम्पूर्णतया त्याज्य होंगे।

| विवाह नक्षत्र→ | अश्वि. | रोह. | मृग. | मघा | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वा. | अनु. | मूल | उ.षा. | श्रव. | धनि. | उ.भा. | रेव. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| —सूर्य अधिष्ठित नक्षत्र— | अश्वि | पू.भा. | शत | पू.षा. | ज्ये. | अनु | विशा | स्वा | हस्त | पू.फा. | अश्ले | मृग. | धनि. | कृति | भर. |
| | कृति | रेव | उ.भा. | अभि | पू.षा. | मूल | ज्ये. | अनु | स्वा | हस्त | पू.फा. | पुर्न | पू.भा. | मृग | रोहि |
| | मृग | भर | अश्वि | धनि. | अभि | उ.षा. | पू.षा. | मूल | अनु | स्वा. | हस्त | श्ले. | रेव | पुर्न | आर्द्रा |
| | पुर्न | रोह. | कृति | पू.भा. | धनि | श्रवण | अभि. | उ.षा. | मूल | अनु | स्वा | पू.फा. | भर | अश्ले | पुष्य |
| | अश्ले | आर्द्रा | मृग. | रेव. | पू.भा. | शत. | धनि | श्रव | उ.षा. | मूल | अनु | हस्त | रोहि | पू.फा. | मघा |
| | पू.फा. | पुष्य | पुर्न | भर. | रेव | उ.भा. | पू.भा. | शत. | श्रव | उ.षा. | मूल | स्वा | आर्द्रा | हस्त | उ.फा. |
| | हस्त | मघा | अश्ले | रोहि. | भर. | अश्वि | रेव | उ.भा. | शत | श्रव. | उ.षा. | अनु. | पुष्य | स्वा. | चित्रा |
| | स्वा. | उ.फा. | पू.फा. | आर्द्रा | रोहि. | कृति | भर. | अश्वि | उ.भा. | शत | श्रव. | मूल | मघा | अनु. | विशा. |
| | अनु. | चित्रा | हस्त | पुष्य | आर्द्रा | मृग. | रोहि. | कृति. | अश्वि | उ.भा. | शत | उ.षा. | उ.फा. | मूल | ज्ये. |
| | मूल | विशा | स्वा. | मघा | पुष्य | पुर्न | आर्द्रा | मृग. | कृति | अश्वि | उ.भा. | श्रव | चित्रा | उ.षा. | पू.षा. |
| | उ.षा. | ज्ये. | अनु. | उ.फा. | मघा | अश्ले | पुष्य | पुर्न | मृग. | कृति | अश्वि | शत | विशा | श्रव | अभि. |
| | श्रव. | पू.षा. | मूला | चित्रा | उ.फा. | पू.फा. | मघा | अश्ले | पुर्न | मृग | कृति | उ.भा. | ज्ये. | शत. | धनि |
| | शत | अभि. | उ.षा. | विशा. | चित्रा | हस्त | उ.फा. | पू.फा. | अश्ले | पुर्न | मृग | अश्वि | पू.षा. | उ.भा. | पू.भा. |
| | उ.भा. | धनि. | श्रव. | ज्ये. | विशा. | स्वा. | चित्रा | हस्त | पू.फा. | अश्ले | पुर्न | कृति | अभि | अश्वि | रेव. |

**(8) उपग्रह दोष**–विवाह-नक्षत्र के समय सूर्य जिस नक्षत्र में हो, तो उसे 5वें, 7वें, 8वें, 10वें, 14वें, 15वें, 18वें, 19वें, 21वें, 22वें, 23वें, 24वें, 25वें नक्षत्र पर यदि वहीं विवाह-नक्षत्र हो, तो उपग्रह दोष होता है। **उदाहरणार्थ**–यदि अश्विनी नक्षत्र हो, तो सूर्य यदि शत., श्रव., उ.षा. आदि नक्षत्रों में होगा तो उपग्रह दोष होगा। यह दोष कुरु देश (दिल्ली के समीप) और वाहि्लक (कश्मीर के पश्चिम) क्षेत्रों में विशेषतः अशुभ होता है। अन्यत्र नहीं।

| विवाह नक्षत्र | अश्वि. | रोह. | मृग. | मघा | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वा. | अनु. | मूल | उ.षा. | श्रव. | धनि. | उ.भा. | रेव. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| —सूर्य नक्षत्र— | शत. | रेव. | अश्वि | आर्द्रा | पुष्य | आश्ले | मघा | पू.फा. | हस्त | स्वा. | अनु. | ज्ये. | मूल | श्रव. | धनि. |
| | श्रव. | पू.भा. | उ.भा. | रोहि | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले | पू.फा. | हस्त | स्वा. | विशा. | अनु. | पू.षा. | उ.षा. |
| | उ.षा. | शत. | पू.भा. | कृति | मृग | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | मघा | उ.फा. | चित्रा | स्वा. | विशा. | मूल | पू.षा. |
| | मूल | श्रव. | धनि. | अश्वि. | कृति | रोहि. | मृग | आर्द्रा | पुष्य | मघा | उ.फा. | हस्त | चित्रा | अनु. | ज्ये. |
| | स्वा. | ज्ये. | मूल | शत. | उ.भा. | रेव. | अश्वि. | भर. | रोहि. | आर्द्रा | पुष्य | आश्ले | मघा | हस्त | चित्रा |
| | चित्रा | अनु. | ज्ये. | धनि. | पू.भा. | उ.भा. | रेव | अश्वि. | कृति. | मृग. | पुन. | पुष्य | आश्ले. | उ.फा. | हस्त |
| | पू.फा. | चित्रा | स्वा. | पू.षा. | श्रव. | धनि. | शत. | पू.भा. | रेव. | भर. | रोहि. | मृग. | आर्द्रा | आश्ले | मघा |
| | मघा | हस्त | चित्रा | मूल | उ.षा. | श्रव. | धनि. | शत. | उ.भा. | अश्वि. | कृति | रोहि. | मृग. | पुष्य | आश्ले |
| | पुष्य | पू.फा. | उ.फा. | अनु. | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रव. | शत. | उ.भा. | अश्वि | भर. | कृति | आर्द्रा | पुन. |
| | पुन. | मघा | पू.फा. | विशा. | ज्ये. | मूल | पू.षा. | उ.षा. | धनि. | पूभा. | रेव | अश्वि. | भर. | मृग. | आर्द्रा |
| | आर्द्रा | आश्ले | मघा | स्वा. | अनु. | ज्ये. | मूल | पू.षा. | श्रव. | शत. | उ.भा. | रेव. | अश्वि. | रोहि. | मृग. |
| | मृग. | पुष्य | आश्ले | चित्रा | विशा. | अनु. | ज्ये. | मूल | उ.षा. | धनि. | पूभा | उ.भा. | रेव. | कृति | रोहि. |
| | रोहि. | पुन. | पुष्य | हस्त | स्वा. | विशा | अनु. | ज्ये. | पू.षा. | श्रव. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | भर. | कृति. |

## ( 9 ) स्थूल क्रान्तिसाम्य दोषः–

| सूर्य | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चि. | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चन्द्र | सिंह | मकर | धनु | वृश्चि. | मेष | मीन | कुम्भ | कर्क | मिथुन | वृष | तुला | कन्या |

चक्र के ऊपरी बॉक्स में क्रमशः द्वादश राशियां सूर्य की दी गई हैं। उनमें से जिस राशि पर सूर्य हो उस बॉक्स की नीचे वाली राशि पर चन्द्रमा के होने से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। क्रान्तिसाम्य सर्वत्र त्याज्य है। परन्तु उपर्युक्त प्रकार का क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है। महापात गणित द्वारा प्रणीत क्रान्तिसाम्य दोष ही विवाह-मुहूर्त्त शोधन में वर्जित होता है।

## ( 10 ) दग्धातिथि दोष चक्र–

| सूर्य राशि | मेष (वेशा.) | वृष (ज्ये.) | मिथुन (आषा.) | कर्क (श्राव.) | सिंह (भाद्र.) | कन्या (आश्वि.) | तुला (कार्ति.) | वृश्चि. (मार्ग.) | धनु (पौष) | मकर (माघ) | कुम्भ (फाल्गु.) | मीन चैत्र) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दग्धा तिथि | ६ | ४ | ८ | ६ | १० | ८ | १२ | १० | २ | १२ | ४ | २ |

जब सूर्य मेष (वैशाख), वृष (ज्येष्ठ), मिथुन (आषाढ़) आदि में हो तब क्रमशः ६, ४, ८ आदि तिथियां दग्धा तिथियां कहलाती हैं। **अपवाद**–मास में दग्धा तिथियां केवल मध्य देश में ही वर्जित होती हैं। सर्वत्र नहीं।

## १२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय वा मुहूर्त्त पर आरम्भ न करें। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

| राशयः | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| घातमास | कार्तिक | मार्ग | आषाढ़ | पौष | ज्येष्ठ | भाद्रपद | माघ | आश्विन | श्रावण | वैशाख | चैत्र | फाल्गुन |
| घात तिथि | १-६-११ | ५-१०-१५ | २-७-१२ | २-७-१२ | ३-८-१३ | ५-१०-१५ | ४-९-१४ | १-६-११ | ३-८-१३ | ४-९-१४ | ३-८-१३ | ५-१०-१५ |
| घात वार | रवि | शनि | चन्द्र | बुध | शनि | शनि | गुरु | शुक्र | शुक्र | मंगल | गुरु | शुक्र |
| घात नक्षत्र | मघा | हस्त | स्वाति | अनुराधा | मूल | श्रवण | शत. | रेवती | भरणी | रोहिणी | आर्द्रा | आश्लेषा |
| घात योग | विष्कुम्भ | सुकर्मा | परिघ | धृति | प्रीति | सुकर्मा | अतिगंड | ब्रह्म | वैधृति | गंड | व्याघात | वज्र |
| घात करण | बव | शकुनि | कौलव | नाग | बालव | कौलव | तैतिल | गर | तैतिल | शकुनि | किंस्तुभ | चतुष्पाद |
| घात लग्न | १ | २ | ४ | ७ | १० | १२ | ६ | ८ | ९ | ११ | ३ | ५ |
| घात प्रहर | प्रथम | चतुर्थ | तृतीय | प्रथम | प्रथम | प्रथम | चतुर्थ | प्रथम | प्रथम | चतुर्थ | तृतीय | चतुर्थ |
| पु. घा. चंद्र | मेष | कन्या | कुम्भ | सिंह | मकर | मिथुन | धनु | वृष | मीन | सिंह | धनु | कुम्भ |
| स्त्री घा. चंद्र | मेष | धनु | धनु | मिथुन | वृश्चिक | वृश्चिक | मीन | धनु | कन्या | वृश्चिक | मिथुन | मेष |

## ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

| ग्रह | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मित्र | चंद्र<br>मंगल<br>गुरु | सूर्य<br>बुध | सूर्य<br>चंद्र<br>गुरु | सूर्य<br>शुक्र | सूर्य<br>चंद्र<br>मंगल | बुध<br>शनि | बुध<br>शुक्र | शुक्र<br>बुध<br>शनि | बुध<br>गुरु |
| सम | बुध | मंगल<br>गुरु<br>शुक्र<br>शनि | शुक्र<br>शनि | मंगल<br>गुरु<br>शनि | शनि | मंगल<br>गुरु | गुरु | गुरु<br>केतु | मंग.<br>राहु<br>शुक्र |
| शत्रु | शुक्र<br>शनि | ००<br>०० | बुध<br>राहु | चंद्र | बुध<br>शुक्र | सूर्य<br>चंद्र | सूर्य<br>मंगल<br>चंद्र | सूर्य<br>चंद्र<br>मंगल | सूर्य<br>चंद्र<br>शनि |
| उच्चांश | मेष १० | वृषे ३ | म. २८ | कं. १५ | कर्क ५ | मी. २७ | तु. २० | वृ. १५° | |
| नीचांश | तु. १० | वृश्चि ३ | क. २८ | मी १५ | म. ५ | कं. २७ | मे.२०° | वृ. १५° | |

## नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

| नक्षत्र | चरणाक्षर | राशि | वश्य | योनि | महावैर योनि | राशि स्वामी | गण | नाड़ी | मुख | तत्त्व हंसका | नाम (संज्ञा) | नक्षत्र देवता | तारे | पंचशला का वेध |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी | चू. चे. चो. ला. | मेष | चतुष्पद | अश्व | महिष | मंगल | देव | आदि | तिर्य | अग्नि | क्षिप्र | अश्वि कु. | ३ | पू. फा. |
| भरणी | ली. लू. ले. लो. | मेष | चतुष्पद | गज | सिंह | मंगल | मनुष्य | मध्य | अधो | अग्नि | उग्र | यम | ३ | अनु |
| कृत्तिका | अ. इ. उ. ए. | मे.१ वृष ३ | चतुष्पद | मेढ़ा | वानर | मं.१ शु.३ | राक्षस | अन्त्य | अधो | अ.१ पृ.३ | मिश्र | अग्नि | ६ | विशा |
| रोहिणी | ओ. वा. वी. वू. | वृष | चतुष्पद | सर्प | न्योला | शुक्र | मनुष्य | अन्त्य | ऊर्ध्व | पृथ्वी | ध्रुव | ब्रह्मा | ५ | अभि |
| मृगशिर | वे. वो. का. की. | वृ.२ मि.२ | च.२ नर२ | सर्प | न्योला | शु.२ बु.२ | देव | मध्य | तिर्य | पृ.२ वा.२ | मृदु | चन्द्रमा | ५ | उ.षा. |
| आर्द्रा | कु. घ. ङ. छ. | मिथुन | नर (मनुष्य) | श्वान | मृग | बुध | मनुष्य | आदि | ऊर्ध्व | वायु | तीक्ष्ण | शिव | १ | पू.षा. |
| पुनर्वसु | के. को. हा. ही. | मि.३ क.१ | न.३ ज.१ | मार्जार | मूषक | बु.३ चं.१ | देव | आदि | तीर्य | वा.३ ज.१ | चर | अदिति | ४ | मूल |
| पुष्य | हू. हे. हो. डा. | कर्क | जलचर | मेढ़ा | वानर | चंद्र | देव | मध्य | ऊर्ध्व | जल | क्षिप्र | गुरु | ३ | ज्ये. |
| आश्लेषा | डी. डू. डे. डो. | कर्क | जलचर | मार्जा. | मूषक | चंद्र | राक्षस | अन्त्य | अधो | जल | तीक्ष्ण | सर्प | ५ | धनि |
| मघा | मा. मी. मू. मे. | सिंह | वनचर | मूषक | बिडाल | सूर्य | राक्षस | अन्त्य | अधो | अग्नि | उग्र | पितर | ५ | श्रव |
| पू.फा. | मो. टा.टी. टू. | सिंह | वनचर | मूषक | बिडाल | सूर्य | मनुष्य | मध्य | अधो | अग्नि | उग्र | भग, सूर्य | २ | अश्वि |
| उ.फा. | टे. टो. पा. पी. | सिं.१ कं.३ | व.१ न.३ | गौ | व्याघ्र | सू.१ बु.३ | मनुष्य | आदि | ऊर्ध्व | अ.१ पृ.३ | ध्रुव | अर्यमा | २ | रेव |
| हस्त | पू. ष. ण. ठ. | कन्या | नर | महिष | अश्व | बुध | देव | आदि | तिर्य | पृथ्वी | क्षिप्र | सूर्य | ५ | उ.भा. |
| चित्रा | पे. पो. रा. री. | के.२ तु.२ | नर | व्याघ्र | गौ | बु.२ शु.२ | राक्षस | मध्य | तिर्य | पृ.२ वा.२ | मृदु | विश्वकर्मा | १ | पू.भा. |
| स्वाती | रू. रे. रो. ता. | तुला | नर | महिष | अश्व | शुक्र | देव | अन्त्य | तिर्य | वायु | चर | वायु | १ | शत |
| विशाखा | ती. तू. ते. तो. | तु.३ वृ.१ | न.३ की.१ | व्याघ्र | गौ | शु.३ मं.१ | राक्षस | अन्त्य | अधो | वा.३ ज.१ | मिश्र | इंद्राग्नि | ४ | कृति |
| अनुराधा | ना. नी. नू. ने. | वृश्चिक | कीट | मृग | श्वान | मंगल | देव | मध्य | तिर्य | जल | मृदु | मित्र | ४ | भर |
| ज्येष्ठा | नो. या. यी. यू. | वृश्चिक | कीट | मृग | श्वान | मंगल | राक्षस | आदि | तिर्य | जल | तीक्ष्ण | इन्द्र | ३ | पुष्य |
| मूल | ये. यो. भा. भी. | धनु | नर | श्वान | मृग | गुरु | राक्षस | आदि | अधो | अग्नि | तीक्ष्ण | राक्षस | ११ | पुन |
| पूर्वाषाढ़ा | भू. ध. फ. ढ. | धनु | न ॥ चतु ३ | वानर | मेंढ़ा | गुरु | मनुष्य | मध्य | अधो | अग्नि | उग्र | जल | २ | आर्द्रा |
| उत्तराषाढ़ा | भे. भो. जा. जी. | ध.१ मं.३ | चतुष्पद | नकुल | सर्प | गु.१ श.३ | मनुष्य | अन्त्य | ऊर्ध्व | अ.१ पृ.३ | ध्रुव | विश्वेदेव | २ | मृग |
| अभिजित | जु. जे. जो. ख. | मकर | — | नकुल | सर्प | शनि | — | — | ०० | पृथ्वी | क्षिप्र | ब्रह्मा | ३ | रोह |
| श्रवण | खी. खू. खे. खो. | मकर | चतु.१ ॥ज२ | वानर | मेढ़ा | शनि | देव | अन्त्य | ऊर्ध्व | पृथ्वी | चर | विष्णु | ३ | कृति |
| धनिष्ठा | गा. गी. गू. गे. | म.२ कुं.२ | ज.२ न.२ | सिंह | गज | शनि | राक्षस | मध्य | ऊर्ध्व | पृ.२ वा.२ | चर | वसु | ४ | विशा |
| शतभिषा | गो. सा. सी. सू. | कुम्भ | नर | अश्व | महिष | शनि | राक्षस | आदि | ऊर्ध्व | वायु | चर | वरुण | १०० | स्वा |
| पूर्वाभाद्रपद | से. सो. दा. दी. | कुं.३ मी.१ | न.३ ज.१ | सिंह | गज | श.३ गु.१ | मनुष्य | आदि | अधो | वा.३ ज.१ | उग्र | अजैकपाद | २ | चित्रा |
| उ. भाद्रपद | दू. थ. झ. ञ. | मीन | जलचर | गौ | व्याघ्र | गुरु | मनुष्य | मध्य | ऊर्ध्व | जल | ध्रुव | अहिर्बुध्न्य | २ | हस्त |
| रेवती | दे. दो. चा. ची. | मीन | जलचर | गज | सिंह | गुरु | देव | अन्त्य | तिर्य | जल | मृदु | पूषा | ३२ | उ.फा. |

### नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र ( अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए )

| अ ई उ ए | क ख ग घ ङ | च छ ज झ ञ | ट ठ ड ढ ण | त थ द ध न | प फ ब भ म | य र ल व | श ष स ह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गरुड़ | बिडाल | सिंह | श्वान | सर्प | मूषक | हरिण | मेढ़ा |

### वर्ण ज्ञान चक्र

| वर्ण | ब्राह्मण | क्षत्रिय | वैश्य | शूद्र |
|---|---|---|---|---|
| राशि | १२/४/८ | १/५/९ | २/६/१० | ३/७/११ |

### ग्रह मैत्री चक्र

| ग्रहाः | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मित्राणि | चं मं गु | सू बु | सू चं गुरु | सू शु | सू चं मं. | बु श | शु बु |
| समाः | बुधः | मं गु शु श | शु श | मं गु श | श | मं गु | गु. |
| शत्रव | शु श | ० ० | बुध | चं | बु शु | सू चं | सू चं मं |
| उच्चांश | मे १० | वृष ३ | म २८ | क १५ | कर्क ५ | मी २७ | तु २० |
| नीचांश | तु १० | वृ ३ | क २८ | मी १५ | म ५ | क २७ | मे २० |

| मित्र नवपंचम चक्र | | | | | | | | शत्रु नवपंचम चक्र | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ५ | ७ | ८ | ९ | १० | १२ | ११ | ६ | ४ |
| ५ | ६ | ७ | ९ | ११ | १२ | १ | २ | ४ | ३ | १० | ८ |

| मित्रषडाष्टक चक्र | | | | | | शत्रुषडाष्टक चक्र | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ |
| ८ | ७ | १० | ९ | १२ | ११ | ६ | ८ | १० | १२ | २ | ४ |

| मित्रद्विर्द्वादश चक्र | | | | | | शत्रुद्विर्द्वादश चक्र | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२ | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ |
| १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १२ |

**नवपंचम दोष**—कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पत्ति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन-कर्क, कर्क-वृश्चिक, कुम्भ-मिथुन, कन्या-मकर विशेषतः त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव-पंचम दोष अचिन्तनीय है।

**षडाष्टक दोष**—लड़के और लड़की की राशियां परस्पर छठे-आठवें हों तो षडाष्टक यथा-सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषतः त्याज्य माना जाता है।

*विस्तृत विवेचन के लिए देखें आगामी पृष्ठ 215*

# वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के माध्यम से मनुष्य, देव, ऋषि एवं पितृ आदि ऋण त्रय से उद्धृण होकर परम कल्याण को प्राप्त कर सकता है। तद् हेतु उत्तम लक्षणों जैसे–सुन्दर, सुशीला, मधुरभाषिणी एवं पतिव्रता कन्या तथा कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह सम्बन्ध शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल–गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, स्वास्थ्य (शरीर) और आयु–इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर **मंगलीक आदि अरिष्ट** योगों तथा वर्ग, **स्त्रीदूर, कर्तरि एवं वर्णादि अष्टकूटों** का विचार करना चाहिए।

मेलापक प्रक्रिया में **मंगलीक और अष्टकूट** तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति–पत्नी के वैवाहिक जीवन में–विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती है। **मंगलीक दोष** का विशेष विवरण इसी पंचाँग के गत पृष्ठ पर दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :–

**(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा (८) नाड़ी** –ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक है। वर्णादि अष्टकूटों में **गुणों का योग ३६** होता है। इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाड़ी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिएं।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

**एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।**
**विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥** —मु० गणपति

## वर्णादि अष्टकूट

**(1) वर्णकूट विचार**–समाज में प्रचलित वर्णों की भान्ति राशियों में भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्ण होते हैं। ४, ८, १२ राशियों का ब्राह्मण ; १, ५, ९ का क्षत्रिय ; २, ६, १० वैश्य तथा ३, ७, ११ राशियों का शूद्रवर्ण होता है। वर का वर्ष कन्या के वर्ण से उच्चस्तरीय अथवा समान होने पर एक गुण प्राप्त होता है, अन्यथा शून्य प्राप्त होता है।

**परिहार**–(*i*) राशीश मैत्री–यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से हीन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है। अथवा वर-कन्या के राशिस्वामी परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हो।

सूर्य-मंगल का वर्ण क्षत्रिय, चन्द्रमा का वैश्य, बुध-शनि का शूद्र तथा गुरु-शुक्र का ब्राह्मण है।

**वर्ण गुण चक्र**

| वर→ कन्या↓ | ब्राह्मण | क्षत्रिय | वैश्य | शूद्र |
|---|---|---|---|---|
| ब्राह्मण | 1 | 0 | 0 | 0 |
| क्षत्रिय | 1 | 1 | 0 | 0 |
| वैश्य | 1 | 1 | 1 | 0 |
| शूद्र | 1 | 1 | 1 | 1 |

(*ii*) **राशीश एकता**–वर-कन्या का एक ही राशीश।

(*iii*) **नवमांशेश मैत्री**–वर-कन्या के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र अथवा मित्र-सम हों।

(*iv*) **नवमांशेश एकता**–वर-कन्या का एक ही नवमांशेश हो।

**(2) वश्यकूट विचार**–'वैश्य' का अर्थ है–वश में करने योग्य। सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ पुरुष (नर) राशियों के वश में हैं। जल राशियाँ (४, १० उ./१२)–नर राशियों (३, ६, ७, ९ पूर्वार्ध, ११) का भक्ष्य है। वृश्चिक राशि को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वश्य हैं। चतुष्पद, मानव, जलचर, वनचर तथा कीट आदि वश्य-पंचक–राशियों के अनुसार निम्न चक्र से ज्ञातव्य हैं–

| वश्य | वर–कन्या राशि |
|---|---|
| चतुष्पद | मेष, वृष, धनु का उत्तरार्द्ध, मकर–पूर्वार्ध |
| मानव | मिथुन, कन्या, तुला, धनु का पूर्वार्ध, कुम्भ |
| जलचर | कर्क, मकर–उत्तरार्ध, मीन |
| वनचर | सिंह |
| कीट | वृश्चिक |

**गुण-विभाग**–वश्य-विचार के अन्तर्गत वश्यों के परस्पर मैत्री, वैर, भक्ष्य और वश्य आदि 4 मूल तत्त्व हैं। एक समान वश्य अथवा मैत्री होने पर 2 गुण ; एक वश्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण ; एक वश्य और एक भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होने पर शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा–जैसा–द्विपद (मानव) राशियों का जलचर राशियों से वश्य-भक्ष्य, सिंह (वन) से वैर-भक्ष्य, चतुष्पदों से वश्य-शत्रु सम्बन्ध है।

**वश्य गुण चक्र**

| वर→ कन्या↓ | चतुष्पद | मानव | जल | वन | कीट |
|---|---|---|---|---|---|
| चतुष्पद | 2 | 1 | 1 | 0 | 1 |
| मानव | 1 | 2 | 1/2 | 0 | 1 |
| जल | 1 | 1/2 | 2 | 1 | 1 |
| वन | 0 | 0 | 1 | 2 | 0 |
| कीट | 1 | 0 | 1 | 0 | 2 |

## वश्यकूट परिहार

(*i*) **राशीश मैत्री**–वर-कन्या के राशिस्वामी परस्पर मित्र-मित्र अथवा मित्र-सम हों।

(*ii*) **राशीश एकता**–दोनों का एक ही राशीश हो।

(*iii*) **नवामांशेश-मैत्री**–दोनों (वर-कन्या) के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम।

(*iv*) **नवमांशेश-एकता**–दोनों का ही नवमांशेश हो।

(*v*) **योनि-मैत्री**–वर-कन्या में परस्पर योनि-मैत्री होने पर भी वश्य दोष का परिहार हो जाता है।

### तारा गुण चक्र

| शेषांक | | वर | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ० |
| कन्या | १ | 3 | 3 | 1.5 | 3 | 1.5 | 3 | 1.5 | 3 | 3 |
| | २ | 3 | 3 | 1.5 | 3 | 1.5 | 3 | 1.5 | 3 | 3 |
| | ३ | 1.5 | 1.5 | 0 | 1.5 | 0 | 1.5 | 0 | 1.5 | 1.5 |
| | ४ | 3 | 3 | 1.5 | 3 | 1.5 | 3 | 1.5 | 3 | 3 |
| | ५ | 1.5 | 1.5 | 0 | 1.5 | 0 | 1.5 | 0 | 1.5 | 1.5 |
| | ६ | 3 | 3 | 1.5 | 3 | 1.5 | 3 | 1.5 | 3 | 3 |
| | ७ | 1.5 | 1.5 | 0 | 1.5 | 0 | 1.5 | 0 | 1.5 | 1.5 |
| | ८ | 3 | 3 | 1.5 | 3 | 1.5 | 3 | 1.5 | 3 | 3 |
| | ० | 3 | 3 | 1.5 | 3 | 1.5 | 3 | 1.5 | 3 | 3 |

**( 3 ) ताराकूट विचार**–ताराकूट का सम्बन्ध नक्षत्रों से है। जन्मनक्षत्र से गिरने पर तारा का ज्ञान होता है। जन्म, सम्पद्, विपद्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र, अतिमैत्र–ये नक्षत्र ही ताराएं होती है। ये शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के हैं। कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के जन्म नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक गिनकर दोनों तारा संख्याओं को अलग-अलग 9 द्वारा भाग देने पर यदि शेष 3, 5, 7 बचे तों '**अशुभ-तारा**' होती है, अन्यथा '**शुभतारा**' होगी।

यदि दोनों प्रकार से (वर-कन्या) शुभ तारा प्राप्त हो, तो समझना चाहिए कि ताराकूट दोष का अभाव है अर्थात् 3 गुण होंगे। यदि एक प्रकार से शुभतारा और दूसरे प्रकार से अशुभतारा मिले तो डेढ़ (1.5') गुण होंगे। यदि दोनों ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण होगा। **ध्यान रहे,** दोनों प्रकार से अशुभतारा कभी भी प्राप्त नहीं होती। **जैसे**–वर के नक्षत्र अश्विनी से कन्या के नक्षत्र मृगशिर तक गिनने पर 5वीं तारा (प्रत्यरि) होती है तथा कन्या के नक्षत्र मृगशिर से वर के नक्षत्र अश्विनी तक की नक्षत्र संख्या 24 हुई।

**तारादोष परिहार**–(*i*) **राशीश मैत्री**–दोनों (वर-कन्या) के राशिस्वामी परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों।

(*ii*) **राशीश एकता**–दोनों (वर-कन्या) का राशीस्वामी एक हो।

(*iii*) **नवमांशेश मैत्री**–दोनों के नवमांशेश मित्र-मित्र या मित्र-सम हों।

(*iv*) **नवमांशेश एकता**–दोनों के नवमांशेश एक हों।

**( 4 ) योनिकूट विचार**–अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे–गौ और व्याघ्र में, सिंह और गज, न्यौला और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेष में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर (शत्रुता) है।

इसी प्रकार वर-वधू की योनियों में शत्रु-मित्रादि के सम्बन्धों के आधार पर गुणों की व्यवस्था की गई है।

### योनि–बोधक चक्र

| योनि | अश्व | गज | मेष | सर्प | श्वान | मार्जार | मूषक | गौ | महिष | व्याघ्र | मृग | वानर | नकुल | सिंह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | अश्वि,<br>शत | भर,<br>रेव. | कृति,<br>पुष्य | रोहि,<br>मृग | आर्द्रा<br>मूल | पुन,<br>आश्ले. | मघा,<br>पू.फा. | उ.फा.,<br>उ.भा. | हस्त<br>स्वाती | चित्रा,<br>विशा. | अनु<br>ज्ये. | पू.षा.,<br>श्रव. | उ.षा.<br>अभि. | धनि.,<br>पू.भा. |

**गुणविभाग** –वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्रता हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति (उदासीनता) समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता (महावैर) हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

### योनि-गुण चक्र

| योनि | अश्व | गज | मेष | सर्प | श्वान | मार्जार | मूषक | गौ | महिष | व्याघ्र | मृग | वानर | नकुल | सिंह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्व | 4 | 2 | 3 | 2 | 2 | 3 | 3 | 3 | 0 | 1 | 3 | 2 | 2 | 1 |
| गज | 2 | 4 | 3 | 2 | 2 | 3 | 3 | 3 | 3 | 1 | 2 | 2 | 2 | 0 |
| मेष | 3 | 3 | 4 | 2 | 2 | 3 | 2 | 3 | 3 | 1 | 3 | 0 | 3 | 1 |
| सर्प | 2 | 2 | 2 | 4 | 2 | 2 | 1 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 0 | 2 |
| श्वान | 2 | 2 | 2 | 2 | 4 | 1 | 1 | 2 | 2 | 1 | 0 | 2 | 2 | 1 |
| मार्जार | 3 | 3 | 3 | 1 | 1 | 4 | 0 | 3 | 3 | 2 | 3 | 2 | 2 | 1 |
| मूषक | 3 | 3 | 2 | 1 | 2 | 0 | 4 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 1 | 2 |
| गौ | 3 | 2 | 3 | 2 | 2 | 2 | 2 | 4 | 3 | 0 | 3 | 2 | 3 | 1 |
| महिष | 0 | 3 | 3 | 2 | 2 | 2 | 2 | 3 | 4 | 1 | 2 | 2 | 2 | 1 |
| व्याघ्र | 1 | 1 | 1 | 2 | 1 | 1 | 2 | 0 | 1 | 4 | 2 | 1 | 2 | 2 |
| मृग | 3 | 3 | 3 | 2 | 0 | 2 | 2 | 3 | 2 | 1 | 4 | 2 | 2 | 1 |
| वानर | 2 | 2 | 0 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 1 | 2 | 4 | 2 | 1 |
| नकुल | 2 | 2 | 2 | 0 | 2 | 2 | 1 | 3 | 2 | 2 | 2 | 2 | 4 | 2 |
| सिंह | 1 | 0 | 1 | 2 | 1 | 2 | 2 | 1 | 1 | 2 | 1 | 1 | 2 | 4 |

| ग्रह | मित्र | सम | शत्रु |
|---|---|---|---|
| मित्र | अति मित्रता | सामान्य मित्रता | सामान्य समता |
| सम | सामान्य मित्रता | समता | सामान्य शत्रुता |
| शत्रु | सामान्य समता | सामान्य शत्रुता | अतिशत्रुता |

**( 5 ) ग्रह मैत्री**–ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का एक्य अथवा मैत्री भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी तथा नैसर्गिक '**मैत्री-चक्र**' का

विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि

*विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।*

ग्रह-सम्बन्धों से अन्ततः 5 प्रकार बन जाते हैं। यथा-दोनों मित्र हो तो 'अधिमित्र', दोनों शत्रु हों तो 'अधिशत्रु' और दोनों में समभाव हो तो 'सम' कहलाते हैं। स्पष्टता चक्र से प्राप्य है-

**गुण विभाजन**-वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर 5 गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो 4 गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो 3 गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो 1 गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियां परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है।

**ग्रह मैत्री गुण बोधक चक्र**

| कन्या \ वर | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 5 | 5 | 5 | 4 | 5 | 0 | 0 |
| चन्द्र | 5 | 5 | 4 | 1 | 4 | ½ | ½ |
| मंगल | 5 | 4 | 5 | ½ | 5 | 3 | ½ |
| बुध | 4 | 1 | ½ | 5 | ½ | 5 | 4 |
| गुरु | 5 | 4 | 5 | ½ | 5 | ½ | 3 |
| शुक्र | 0 | ½ | 3 | 5 | ½ | 5 | 5 |
| शनि | 0 | ½ | ½ | 4 | 3 | 5 | 5 |

**अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री** को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और षडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा-

**गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।**
**चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥**

**-बृहज्जयोतिः सार**

**अपवाद**-वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हो, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा-

**राशिनाथे विरूद्धेऽपि सबल नवांशकाधिपौ।**
**तन्मैत्रेऽपि च कर्त्तव्य, दम्पज्योः शुभमिच्छता॥**

**(6) गण विचार**-अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वा., अनु., श्रव., रेवती नक्षत्रों का **देवता गण,** तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का **मनुष्यगण,** कृति., अश्ले, मघा, चित्रा, विशा., ज्ये., मूल, धनि. और शत. का **राक्षसगण।**

वर-कन्या का **एक ही गण** होने पर विवाह **उत्तम,** देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

**गुण विभाजन**-वर-कन्या का एक ही गण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्यगण हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

**मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र**

| | वर | | | |
|---|---|---|---|---|
| | गुण | देव | मनुष्य | राक्षस |
| कन्या | देव | 6 | 5 | 1 |
| | मनुष्य | 6 | 6 | 0 |
| | राक्षस | 0 | 0 | 6 |

**गण दोष परिहार**-

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनवांशपति में मित्रता हो, तो गणदोष नहीं रहता।

**ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनितं दूषणंस्याद विरोधदम्॥**

**गर्ग-मु. चिन्तामणि च**

(ख) ग्रहमैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता।

**-पीयूषधारा**

(ग) इसी भान्ति तारा, वश्य, योनि ग्रहमैत्री तथा भकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपत्ति नहीं होती।

**-मुहूर्त्त मार्त्तण्ड**

**(7) भकूट विचार**-इसे 'राशिकूट' भी कहते हैं। भकूट का तात्पर्य वर एवं कन्या की राशियों के परस्पर अन्तर से है। यह छह प्रकार का होता है-प्रथम-सप्तक (समसप्तक), तृतीय एकादश, द्वितीय-द्वादश, चतुर्थ-दशम, पंचम-नवम (नवपंचम) तथा षडाष्टक (6-8).

इनमें द्विर्द्वादश, नवपंचम तथा षडाष्टक अशुभ भकूट हैं। तथा शेष (1-7), (3-11) तथा (4-10) शुभ भकूट होते हैं। भकूट को जानने की सरल विधि यह है कि वर की राशि से कन्या की राशि तक तथा कन्या की राशि से वर की राशि तक गणना करनी चाहिए। यदि दोनों की राशि आपस में दूसरी-बारहवीं हो तो द्विर्द्वादश भकूट होता है। तदनुसार गुण-विभाजन किया जाता है। स्पष्टता के लिए आगामी पृष्ठ पर चक्र देखें-

वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छठे एवं आठवें हो, तो **षडाष्टक दोष** होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पांचवीं-नौवीं हो, तो **नव पंचम दोष,** यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो **द्विद्वादश दोष** कहलाता है। **षडाष्टक दोष** (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। **नवपंचम दोष** की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा **द्विद्वादश दोष** (शत्रुकूट) होने पर वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

**षडाष्टक परिहार**-(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह- मीन तथा कन्या-कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है। यथा-१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुगत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

## भकूट गुण चक्र

| | वर→ | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चि. | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कन्या की राशि | मेष | 7 | 0 | 7 | 7 | 0 | 0 | 7 | 0 | 0 | 7 | 7 | 0 |
| | वृष | 0 | 7 | 0 | 7 | 7 | 0 | 0 | 7 | 0 | 0 | 7 | 7 |
| | मिथुन | 7 | 0 | 7 | 0 | 7 | 7 | 0 | 0 | 7 | 0 | 0 | 7 |
| | कर्क | 7 | 7 | 0 | 7 | 0 | 7 | 7 | 0 | 0 | 7 | 0 | 0 |
| | सिंह | 0 | 7 | 7 | 0 | 7 | 0 | 7 | 7 | 0 | 0 | 7 | 0 |
| | कन्या | 0 | 0 | 7 | 7 | 0 | 7 | 0 | 7 | 7 | 0 | 0 | 7 |
| | तुला | 7 | 0 | 0 | 7 | 7 | 0 | 7 | 0 | 7 | 7 | 0 | 0 |
| | वृश्चि. | 0 | 7 | 0 | 0 | 7 | 7 | 0 | 7 | 0 | 7 | 7 | 0 |
| | धनु | 0 | 0 | 7 | 0 | 0 | 7 | 7 | 0 | 7 | 0 | 7 | 7 |
| | मकर. | 7 | 0 | 0 | 7 | 0 | 0 | 7 | 7 | 0 | 7 | 0 | 7 |
| | कुम्भ | 7 | 7 | 0 | 0 | 7 | 0 | 0 | 7 | 7 | 0 | 7 | 0 |
| | मीन | 0 | 7 | 7 | 0 | 0 | 7 | 0 | 0 | 7 | 7 | 0 | 7 |

(ii) परन्तु परिहारस्वरूप **तारा-शुद्धि, राशीश-मैत्री, राशिवश्यैक्य,** अथवा **राशि स्वामी ग्रह समान** होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा–

**न वर्गवर्णौ न गणो: न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडाष्टके वा।**
**तारा विरुद्धे नव पंचमे वा मैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाह:॥** –बृ. ज्योतिस्सार

### नव पंचम परिहार–

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह नव-पंचम शुभ होता है–

**वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवर:। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यां पुत्रपौत्र सुखावहम्॥**
–बृहज्योतिष: सार:

(ii) **मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर**–ये चार नवपंचम विशेषतया त्याज्य माने जाते हैं।

**मीनालिम्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवजचमे॥**–शार्गंधर

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्री हों, तो नवपंचम अविचारणीय है।

### द्वि-द्वादश दोष का परिहार–

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह धनवती और पतिप्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश एवं च अनिष्टकर मानते हैं।

(iii) मतान्तर में **सिंह और कन्या** द्वि-द्वादश ग्राह्य है। **–मुहूर्त्तमार्त्तण्ड**

इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है। जैसे-वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिरेकादश) होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम ( **समसप्तक** ) होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु **अपवाद** रूप में, कर्क-मकर का तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया–

**मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।**
**परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥** –ज्योतिनिबन्ध

**(८) नाड़ी दोष विचार**–अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है। 36 गुणों में से इसके 8 गुण होते हैं। भिन्न नाड़ी के आठ गुण तथा नाड़ी समान होने पर गुणाभाव अर्थात् शून्य गुण होता है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है–आदि, मध्य और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

### नाड़ी चक्र

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **आदि नाड़ी** | अश्वि | आर्द्रा | पुन | उ.फा. | हस्त | ज्ये. | मूल | शत | पू.भा. |
| **मध्य नाड़ी** | भर | मृग | पुष्य | पू.फा. | चित्रा | अनु. | पूषा | धनि | उ.भा. |
| **अन्त्य नाड़ी** | कृति | रोह | श्ले. | मघा | स्वा | विशा | उ.षा. | श्रव | रेव |

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की **आदि ( प्रथम )** नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, **मध्य नाड़ी** हो, तो दोनों की हानि तथा **अन्त्य** नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दु:ख होता है।**–बृहज्योतिषसार**

वर-कन्या के नक्षत्र एक ही नाड़ी वाले हों, तो नाड़ी दोष माना जाता है। एक समान नाड़ी वाले वर-कन्या को ज्योतिषाचार्यों ने बहुत अशुभ माना है।

विवाह में नाड़ी दोष का आचार्यों द्वारा विशेष महत्त्व दिया गया है। नारद ऋषि अनुसार–

**एक नाडी विवाहश्च गुणै: सर्वे समन्वित:।**
**वर्जनीय: प्रयत्नेन दम्पत्यो: निधनं यत:॥** (नारद)

अर्थात् विवाह मिलान में चाहे सब गुण मिल रहे हों, परन्तु वर-कन्या की एक ही नाड़ी का प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए। यह दोष दम्पति के लिए अनिष्टकर/घातक माना जाता है।

प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए। यह दोष दम्पत्ति के लिए अनिष्टकर/घातक माना जाता है। नाड़ी दोष में एक ही नक्षत्र और समान नक्षत्र चरण होने पर भी सभी आचार्यों ने एकमत से अनिष्टकारी कहा है।

## नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार–

(i) वर-कन्या की एक ही राशि हो, परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हों।

(ii) वर-कन्या दोनों का जन्म नक्षत्र एक हो, परन्तु राशियाँ भिन्न-भिन्न हों, तो नाड़ी दोष अविचारणीय है। (विवाह वृन्दावन)

(iii) वर-कन्या, दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरण भिन्न-भिन्न हों।

(iv) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है–

**नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पाद्जान्॥**

**ध्यान रहे,** ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नित्तान्तः उपेक्षनीय नहीं होता॥

हमारे मतानुसार नाड़ी दोष का विचार सभी जाति के वर-कन्याओं के मिलान के सम्बन्ध में समान रूप से करना चाहिए। विशेष रूप से कर्क, वृश्चिक तथा मीन (४, ८, १२) राशियों के सन्दर्भ में।

(v) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एवं गण दोष नहीं होता–अर्थात् शुभ होता है।

**राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।**
**नाड़ी दोषों नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥–मुहूर्त्त संग्रह दर्पण**

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वेध* हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा–

**एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यर्क्षनाड़ीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥**
**–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश**

अन्यत्र भी कहा गया है– **दम्पत्योरेक नक्षत्र भिन्नपादे शुभावहम्।**
**दम्पत्योरेकपादे तु वर्षान्ते मरणं ध्रुवम्॥** (का. नि.)

पराशरानुसार भी यही अभिमत है–

**पराशरः प्राह नवांशभेदाद एकनक्षत्र राशचोरपि सौमनस्यम्॥**

*नोट–ध्यान रहे, किसी नक्षत्र के प्रथम पाद और चतुर्थ पाद तथा दूसरे एवं तीसरे पाद में परस्पर वेध होना भी पाद-वेध कहलाता है।

(vi) 'नरपतिजचर्या' अनुसार वर कन्या के नक्षत्र चरणों के I & IV, II & III तथा IV & I, III & II चरणों के मध्य ही पादवेध चरणों का विचार करना अनिवार्य होता है। इसके अतिरिक्त अन्य नक्षत्र चरणों के वेध जैसे I & III, II & IV नक्षत्र चरणों में वेधाभाव होने के कारण स्वल्पदोष रह जाता है। (मुहूर्त्त-चिन्तामणि)-पीयूषधारा–

**आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन चादिमम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्॥**
**ययो भांशव्यधश्चैवं जायते वर कन्ययोः। तयो मृत्युर्न सन्देहः शेषांशाः स्वल्पदोषदाः॥**

**(vii) 'ज्योतिष चिन्तामणि'** अनुसार रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद–इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

**रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।**
**अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ –ज्यो० चिन्तामणि**

नाड़ी आदि दोषों का परिहार होने की स्थिति में उनसे सम्बन्धित आधे गुणों को जोड़ (जमा कर) देने का भी विधान है।

## उपयुक्त उपायों से परिहार–

हमारे मतानुसार गण, योनि, षडाष्टक, द्विद्वादश, नाड़ी आदि अष्टकूटों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करवा लेना चाहिए।

**'बृहस्पति संहिता'** के अनुसार नाड़ी दोष की शान्ति के लिए **श्रीमृत्युञ्जय मन्त्र** का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गौ, वस्त्र, अनाज, घृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिण आदि से सन्तुष्ट करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है–

अन्यत्र भी लिखा है–श्री महामृत्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त–

**षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कास्यं सरूप्यं नवपंचमेच।**
**नाड्यां सुवर्णान्नमथो सुधेनुं द्विद्वादशे ब्राह्मणतपर्णं च॥**

अर्थात् शत्रु षडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), नवपंचम में चांदी-कांसे का बर्तन, **नाड़ी दोष** में गाय, अन्न, सुवर्ण-वस्त्र का दान तथा **द्विद्वादश** में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा सन्तुष्ट करने से मिलान सम्बन्धी **अष्टकूट दोषों** की शान्ति हो जाती है।

वर-कन्या की कुण्डली में नाड़ी-दोष हो, परन्तु अत्यन्त आवश्यक परिस्थितिवश विवाह करना आवश्यक हो, तो उस स्थिति में वर/कन्या का अर्क/कुम्भ विवाह, महामृत्युजंय जप, सुवर्ण, रत्न, चांदी, अनाजादि के दान, ब्राह्मण भोजन आदि के पश्चात् ही विवाह कार्य करना प्रशस्त होगा– **हेमाज्यरत्नगोदानं मृत्युञ्जयजपस्तथा।**
**कुर्यादवश्यमुद्वाहे नाडीदोषाऽपनुत्तये॥** (मुहूर्त्त गणपति)

# शुद्ध वर-कन्या मेलापक सारिणी (भाग-१)

| वर/नक्षत्र → | | मेष | | | वृष | | | मिथुन | | | कर्क | | | सिंह | | | कन्या | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कन्या | नक्षत्र ↓ | अश्वि<br>1 से 4 | भर.<br>1 से 4 | कृति<br>1 | कृति<br>2,3,4 | रोह<br>1 से 4 | मृग<br>1,2 | मृग<br>3,4 | आर्द्रा<br>1 से 4 | पुर्न<br>1,2,3 | पुर्न<br>4 | पुष्य<br>1 से 4 | श्ले<br>1 से 4 | मघा<br>1 से 4 | पू.फा.<br>1 से 4 | उ.फा.<br>1 | उ.फा.<br>2,3,4 | हस्त<br>1 से 4 | चित्रा<br>1,2 |
| मेष | अश्वि<br>1 से 4 | २८<br>8 | ३३<br>4 | २८<br>3,6 | १८ ॥<br>1236 | २१ ॥<br>1,2,3 | २२ ॥<br>1,2,3 | २६<br>1,3,5 | १७<br>1,5,8 | १९<br>1358 | २३ ॥<br>3,8 | ३१ ॥<br>3 | २८<br>6 | २१<br>6,9,व | २५<br>9,व | १५<br>389व | ११<br>3578 | ९<br>14578 | १३ ॥<br>14567 |
| | भर<br>1 से 4 | ३४<br>4 | २८<br>8 | २९<br>6 | १९<br>1,2,6 | २३<br>1,2,3 | १४ ॥<br>1238 | १८<br>1358 | २६ ॥<br>1,3,5 | २७<br>1,3,5 | ३१ ॥<br>3 | २३ ॥<br>3,8 | २५<br>3,6 | २०<br>6,9,व | १८ ॥<br>8,9व | २६<br>9,व | २१ ॥<br>1,5,7 | २०<br>1357 | ५<br>13578 |
| | कृति<br>1 चरण | २७ ॥<br>3,6 | २९<br>6 | २८<br>8 | १८<br>1,2,8 | १०<br>1268 | १६ ॥<br>1236 | २०<br>1356 | २० ॥<br>1356 | २१<br>1356 | २५ ॥<br>3,6 | २६ ॥<br>3,6 | २३ ॥<br>3,8 | १७<br>389व | २०<br>6,9व | २०<br>6,9व | १५ ॥<br>1567 | १६<br>1567 | १८<br>1357 |
| वृष | कृति<br>2,3,4 | १९<br>2,3,6 | २०<br>2,6 | १९<br>2,8 | २८<br>8 | २०<br>6,8 | २६ ॥<br>3,6 | १७ ॥<br>2,3,6 | १७ ॥<br>2,3,6 | १८ ॥<br>2,3,6 | २२<br>3,5,6 | २३<br>3,5,6 | २०<br>3,5,8 | १९<br>358व | २२<br>5,6व | २२<br>5,6व | २१<br>6,9 | २१<br>6,9 | २३ ॥<br>3,9 |
| | रोह<br>1 से 4 | २४<br>2,3 | २३ ॥<br>2,3 | ११<br>2,6,8 | २०<br>6,8 | २८<br>8 | ३६ | २७<br>1,2 | २४<br>1,2,3 | २३<br>1234 | २६<br>3,4,5 | २७<br>3,5 | १२ ॥<br>3468 | १० ॥<br>3568 | २४ ॥<br>3,5व | २७<br>5,व | २६<br>4,9 | २६<br>4,9 | २०<br>4,6,9 |
| | मृग<br>1-2 | २३ ॥<br>2,3 | १५<br>2,3,8 | १९<br>2,3,6 | २७ ॥<br>3,6 | ३५<br>- | २८<br>8 | १९ ॥<br>1,2,8 | २४ ॥<br>1,2,4 | २३<br>1234 | २६<br>3,4,5 | १९<br>3,5,8 | २१<br>3,5,6 | १९ ॥<br>456व | १५<br>3458 | २४ ॥<br>3,5व | २४<br>3,9 | २६<br>4,9 | १३<br>6,8,9 |
| मिथुन | मृग<br>3-4 | २७<br>3,5 | १८<br>3,5,8 | २२<br>3,5,6 | २०<br>2,3,6 | २७ ॥<br>2,व | २०<br>2,8,व | २८<br>8 | ३३<br>4 | ३१ ॥<br>3,4 | १९ ॥<br>2,4,5 | १२<br>2358 | १४ ॥<br>2356 | २४<br>3,4,6 | २०<br>348व | २८ ॥<br>3,व | ३१ ॥<br>3 | ३४<br>4 | २१<br>4,6,8 |
| | आर्द्रा<br>1 से 4 | १९ ॥<br>3,5,8 | २७ ॥<br>3,5 | २१ ॥<br>3,5,6 | १९<br>2,3,6 | २५<br>2,3,4 | २६<br>2,4 | ३४<br>- | २८<br>8 | २५<br>4,8 | १३<br>24568 | २० ॥<br>235व | १३<br>2356 | २४<br>3,6,व | २९ ॥<br>3,4व | २१ ॥<br>3,4,8 | २४ ॥<br>3,4,8 | २५<br>3,4,8 | २७ ॥<br>4,6 |
| | पुन.<br>1,2,3 | २०<br>3,5,8 | २७<br>3,5 | २३ ॥<br>3,5,6 | २० ॥<br>2,3,6 | २३<br>2,3,4 | २४<br>2,3,4 | ३१ ॥<br>3,4 | २४<br>4,8 | २८<br>8 | १६<br>258व | २३<br>2,5,व | १७<br>235व | २३<br>346व | २७<br>3,4व | २२<br>3,8व | २५<br>3,8 | २६<br>3,8 | २७ ॥<br>3,6 |
| कर्क | पुन.<br>4 | २३<br>1,3,8 | २९ ॥<br>1,3 | २५ ॥<br>1,3,6 | २२<br>1356 | २४<br>1345 | २५<br>1345 | १८<br>1245 | १०<br>12568 | १५<br>1258 | २८<br>8 | ३५<br>- | २९ ॥<br>3,6 | १६ ॥<br>1246 | २० ॥<br>1234 | १५ ॥<br>1238 | १८<br>1358 | १९ ॥<br>1358 | २१<br>1356 |
| | पुष्य<br>1 से 4 | ३० ॥<br>1,3 | २१ ॥<br>1,3,8 | २७<br>1,3,6 | २३<br>1356 | २५<br>1,3,5 | १८<br>1358 | ११ ॥<br>12358 | १८ ॥<br>1235 | २२<br>125व | ३५<br>- | २८<br>8 | ३०<br>6 | २०<br>1236 | १५ ॥<br>1238 | २३ ॥<br>1,2,3 | २६<br>1,3,5 | २७<br>1,3,5 | १२ ॥<br>14568 |
| | श्ले.<br>1 से 4 | २६<br>1,6 | २५<br>1,3,6 | २३<br>1,3,8 | १९<br>1358 | ११ ॥<br>14568 | १९<br>1456 | १३<br>12456 | १२<br>12456 | १५ ॥<br>12356व | २८<br>3,6 | २९<br>6 | २८<br>8 | १५<br>1248 | १५ ॥<br>1246 | १८ ॥<br>1236 | २१ ॥<br>1356 | २१<br>1356 | २६<br>1,3,5 |
| सिंह | मघा<br>1 से 4 | २०<br>6,9,व | २०<br>6,9,व | १६ ॥<br>8,9,व | १७ ॥<br>158व | ९ ॥<br>1568व | १७ ॥<br>156व | २१ ॥<br>146व | २२ ॥<br>136व | २१<br>1346व | १६ ॥<br>2,4,6 | २०<br>2,3,6 | १६ ॥<br>2,4,8 | २८<br>8 | ३०<br>6 | २७<br>3,6 | १६<br>1236 | १६ ॥<br>1236 | २१ ॥<br>123व |
| | पू.फा.<br>1 से 4 | २६<br>9,व | १८ ॥<br>8,9,व | २०<br>6,9,व | २१<br>156व | २३ ॥<br>145व | १५ ॥<br>1458 | २०<br>148व | २८ ॥<br>1,3,व | २६<br>1,4,व | २२ ॥<br>2,3,4 | १७ ॥<br>2,3,8 | १६ ॥<br>2346 | ३०<br>6 | २८<br>8 | ३५ | २४<br>1,2व | २३<br>123व | ७ ॥<br>1268 |
| | उ.फा.<br>1 | १७<br>8,9,व | २६<br>9,व | २१<br>6,9,व | २१<br>156व | २६<br>1,5,व | २५<br>135व | २८ ॥<br>1,3व | २१<br>1,3,8 | २१ ॥<br>1,3,8 | १७ ॥<br>2,3,8 | २५ ॥<br>2,3 | २०<br>2,3,6 | २७ ॥<br>3,6 | ३५<br>- | २८<br>8 | १७<br>128व | १६ ॥<br>128व | १३ ॥<br>1236 |
| कन्या | उ.फा.<br>2,3,4 | १३<br>3578 | २२ ॥<br>5,7 | १६<br>5,6,7 | २१<br>6,9 | २६<br>4,9 | २४ ॥<br>3,9 | ३१ ॥<br>1,3 | २३ ॥<br>1,3,8 | २४ ॥<br>1,3,8 | २०<br>3,5,8 | २८<br>3,5 | २२ ॥<br>3,5,6 | १८<br>2,6,व | २५<br>2,व | १८<br>2,8व | २८<br>8 | २७ ॥<br>8 | २५<br>3,4,6 |
| | हस्त<br>1 से 4 | १०<br>34578 | २०<br>3,5,7 | १७ ॥<br>5,6,7 | २२<br>6,9 | २५<br>9 | २६<br>9 | ३३<br>1,4 | २२ ॥<br>1,3,8 | २४<br>1,3,8 | २०<br>358व | २८<br>3,5व | २३<br>3,5,6 | १८ ॥<br>236व | २२ ॥<br>2,3व | १६<br>2,8व | २६<br>8 | २८<br>8 | २८<br>4,6 |
| | चित्रा<br>1,2 | १३<br>3567 | ४ ॥<br>45678 | १९<br>3,5,7 | २४<br>3,4,9 | २०<br>6,9 | १२ ॥<br>6,8,9 | १९<br>1,6,8 | २६<br>1,4,6 | २५ ॥<br>1,3,6 | २१ ॥<br>356व | १२ ॥<br>3568व | २७<br>35,व | २२ ॥<br>2,3,व | ८ ॥<br>2368व | १४ ॥<br>2346व | २४ ॥<br>3,4,6 | २७ ॥<br>4,6 | २८<br>8 |

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1 ,2 ,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

# वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-२)

| वर/नक्षत्र → | | मेष | | | वृष | | | मिथुन | | | कर्क | | | सिंह | | | कन्या | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कन्या | नक्षत्र ↓ | अश्वि 1 से 4 | भर. 1 से 4 | कृति 1 | कृति 2,3,4 | रोह 1 से 4 | मृग 1,2 | मृग 3,4 | आर्द्रा 1 से 4 | पुर्न 1,2,3 | पुर्न 4 | पुष्य 1 से 4 | श्ले 1 से 4 | मघा 1 से 4 | पू.फा. 1 से 4 | उ.फा. 1 | उ.फा. 2,3,4 | हस्त 1 से 4 | चित्रा 1,2 |
| तुला | चित्रा 3,4 | २२ ॥<br>3,4,6 | १४<br>3468 | २८ ॥<br>3,4 | २४<br>3,7 | २० ॥<br>4,6,7 | १२<br>6,7,8 | १३<br>6,8,9 | २१<br>4,6,9 | १९ ॥<br>3,6,9 | २० ॥<br>3,5,6 | ११<br>3568 | २६ ॥<br>3,5,व | २५ ॥<br>3,5,व | ११ ॥<br>3568 | १७ ॥<br>456व | १७ ॥<br>2346 | २०<br>2,4,6 | २१<br>2,8 |
| | स्वा. 1 से 4 | २७ ॥<br>3,4 | २९ ॥<br>3 | १७ ॥<br>3,6,8 | १३<br>3678 | १५ ॥<br>3,7,8 | २६<br>4,7 | २७<br>9 | २६ ॥<br>4,9 | २८<br>9 | २९<br>5,व | २७<br>3,5 | १४<br>व3568 | १३<br>3568 | २५ ॥<br>3,5व | २५ ॥<br>3,5व | २६<br>2,3 | २७ ॥<br>2,3 | २१<br>2,4,6 |
| | विशा 1,2,3 | २२ ॥<br>3,4,6 | २३<br>3,4,6 | २० ॥<br>3,4,8 | १५ ॥<br>3478 | १० ॥<br>3678 | १८ ॥<br>3,6,7 | २०<br>3,6,9 | २०<br>4,6,9 | २१<br>4,6,9 | २२<br>56,व | २१ ॥<br>4,5,6 | १८ ॥<br>3,5,8 | १७ ॥<br>358,व | १९ ॥<br>356व | १७ ॥<br>व3456 | १७ ॥<br>2346 | १९<br>2346 | २७ ॥<br>2,3 |
| वृश्चिक | विशा 4 | १७<br>1467 | १७<br>1467 | १४ ॥<br>1478 | १९ ॥<br>1,4,8 | १४ ॥<br>1368 | २२ ॥<br>1,3,6 | १२ ॥<br>1567 | १३<br>1567 | १३ ॥<br>1567 | १९ ॥<br>4,6,9 | १८ ॥<br>4,6,9 | १५ ॥<br>3,8,9 | २२<br>1,3,8 | २३ ॥<br>136व | २१ ॥<br>146व | १७ ॥<br>1456 | १८<br>1456 | २७<br>135व |
| | अनु. 1 से 4 | २५<br>1,3,7 | १५ ॥<br>1378 | २०<br>1367 | २४ ॥<br>1,3,6 | २७ ॥<br>1,3,4 | २० ॥<br>1,3,8 | १०<br>13578 | १५<br>13457 | २० ॥<br>1,5,7 | २६ ॥<br>9 | १८ ॥<br>8,9 | २१<br>6,9 | २५<br>1,3,6 | २१<br>138व | २१ ॥<br>1,3व | २५<br>135व | २६<br>135व | ११ ॥<br>1358 |
| | ज्ये. 1 से 4 | १२<br>1678 | १८ ॥<br>1367 | २५<br>1,3,7 | २१ ॥<br>1,3 | २२ ॥<br>1,3,6 | २२ ॥<br>1,3,6 | १३<br>13567 | ३<br>134578 | ५ ॥<br>135678 | १० ॥<br>3689 | २०<br>6,9 | २६<br>9 | ३१<br>1 व | २४<br>136व | १७<br>1368 | १३<br>13568 | १३<br>1568व | २४ ॥<br>1व345 |
| धनु | मूल 1 से 4 | १२<br>4689 | २१<br>6,9 | २५<br>3,9 | १९ ॥<br>1,5,7 | १३<br>1567 | १३ ॥<br>1567 | २१<br>1356 | १५<br>1568 | १२<br>14568 | ७ ॥<br>4678 | १७ ॥<br>3,6,7 | २४<br>4,7 | २५<br>9,व | २०<br>6,9व | ९ ॥<br>689व | १३<br>1568 | १३<br>1568 | २६<br>1,4,5 |
| | पू.षा. 1 से 4 | २६<br>9 | १८ ॥<br>8,9 | १८ ॥<br>4,6,9 | १२ ॥<br>14567 | १८ ॥<br>1457 | ११<br>14578 | १८ ॥<br>1458 | २७<br>1,3,5 | २७<br>1,3,5 | २३ ॥<br>37,व | १३<br>3478 | १७ ॥<br>3,6,7 | १९<br>6,9,व | १७ ॥<br>8,9व | २५<br>9,व | २८ ॥<br>1,5 | २७<br>1,3,5 | १३ ॥<br>13568 |
| | उ.षा. 1 | २५<br>3,9 | २६<br>4,9 | १२<br>4689 | ६<br>15678 | १०<br>14578 | १७<br>1457 | २५<br>1,4,5 | २७<br>1,3,5 | २७ ॥<br>1,3,5 | २३ ॥<br>37,व | २३ ॥<br>3,7,व | ८ ॥<br>678व | ८ ॥<br>4689 | २४<br>4,9व | २५<br>9,व | २८ ॥<br>1,5 | २८ ॥<br>1,5 | २१<br>1,5,6 |
| मकर | उ.षा. 2,3,4 | २७<br>3,5 | २८ ॥<br>4,5 | १४ ॥<br>4568 | १२<br>4689 | १६<br>4,8,9 | २३<br>3,4,9 | २१<br>1347 | २२<br>1,3,7 | २२ ॥<br>1,3,7 | २८<br>3,5 | २८<br>3,5 | १४<br>3568 | ४ ॥<br>45678 | २०<br>4,5,7 | २१<br>4,5,7 | २४ ॥<br>9,व | २५<br>9,व | १७ ॥<br>4,6,9 |
| | श्रव 1234 | २७<br>3,5 | २६ ॥<br>3,4,5 | १४<br>4568 | १२<br>4689 | १६<br>4,8,9 | २६<br>4,9 | २३<br>147व | २१<br>1,3,7 | २२<br>1,4,7 | २८<br>4,5 | २६<br>4,5 | १५<br>4568 | ६ ॥<br>5678 | १८ ॥<br>4,5,7 | २०<br>4,57 | २४<br>4,9व | २४ ॥<br>4,9व | १९ ॥<br>4,6,9 |
| | धनि 1,2 | २०<br>3456 | ११ ॥<br>34568 | २६<br>3,4,5 | २४<br>3,4,9 | २० ॥<br>4,6,9 | १२<br>4689 | ९<br>1678 | १६<br>1467 | १६<br>1467 | २२<br>4,5,6 | १३<br>4568 | २८<br>4,5 | १९ ॥<br>4,5,7 | ५ ॥<br>5678 | १२ ॥<br>4567 | १६<br>469व | १८<br>469व | १५<br>489व |
| कुंभ | धनि 3,4 | २०<br>4,5,6 | १० ॥<br>4568 | २६<br>3,4,5 | ३० ॥<br>3,4 | २७<br>4,6 | १९ ॥<br>4,6,8 | १२<br>4,8,9 | १९<br>4,6,9 | १८ ॥<br>3469 | १३<br>4567 | ४ ॥<br>45678 | १९ ॥<br>357व | २५ ॥<br>3,5,व | ११<br>568व | १८ ॥<br>456व | १८<br>4,6,7 | १९<br>4,6,7 | १७<br>4,7,8 |
| | शत 1 से 4 | १५<br>3568 | २१<br>3,5,6 | २८<br>3,5 | ३२ ॥<br>3 | २५ ॥<br>3,4,6 | २७<br>4,6 | २०<br>4,6,9 | १२<br>4698 | १३<br>6,9,8 | ८<br>5678व | १४<br>567व | २१<br>5,7,व | २६ ॥<br>3,5,व | २० ॥<br>356व | १२ ॥<br>568व | ११ ॥<br>3678 | ९<br>4678 | २५<br>4,7 |
| | पू.भा. 1,2,3 | १८<br>4,5,8 | २५<br>3,4,5 | २०<br>4,5,6 | २५<br>3,4,6 | ३१ ॥<br>3,4 | ३१ ॥<br>3 | २५<br>3,4,9 | १७ ॥<br>4,8,9 | १८ ॥<br>4,8,9 | १३ ॥<br>4578व | २०<br>457व | १३<br>3567व | १९ ॥<br>5,6,व | २५ ॥<br>4,5व | १६ ॥<br>458व | १५ ॥<br>4,7,8 | १५ ॥<br>3478 | १७ ॥<br>3467 |
| मीन | पू.भा. 4 | १४ ॥<br>1248 | २२<br>1234 | १६ ॥<br>1246 | १९<br>1456 | २६<br>1345 | २६<br>1345 | २६<br>145व | १८ ॥<br>1व458 | १९<br>1458 | १८<br>4,8,9 | २५<br>4,9 | १९<br>4,6,9 | १८<br>1467 | २३ ॥<br>1347 | १४ ॥<br>1478 | १६<br>1458व | १७<br>1458 | १८ ॥<br>1456 |
| | उ.भा. 1 से 4 | २५<br>1,2,3 | १७<br>1238 | १९<br>1236 | २१<br>1356 | २६<br>135 | १८<br>1358 | १७ ॥<br>1358 | २५<br>135व | २८<br>1,5,व | २७ ॥<br>9 | १९ ॥<br>8,9 | २१ ॥<br>6,9 | १९<br>1367 | १७<br>1378 | २६<br>1,3,7 | २७ ॥<br>135व | २७<br>135व | १०<br>14568 |
| | रेव 1 से 4 | २५<br>1,2,4 | २४ ॥<br>1,2,3 | ११<br>1268 | १४<br>1568 | १७ ॥<br>1358 | २६<br>1,3,5 | २५<br>135व | २४ ॥<br>135व | २६<br>1,3,5 | २६<br>3,9 | २७ ॥<br>9 | १४<br>6,8,9 | १३<br>1687 | २३ ॥<br>1,3,7 | २४<br>1,3,7 | २६<br>135व | २७<br>135व | १९ ॥<br>1456 |

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

# वर-कन्या मैलापक सारिणी –(भाग-३)

| वर/नक्षत्र → | | तुला | | | बृश्चिक | | | धनु | | | मकर | | | कुम्भ | | | मीन | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कन्या | नक्षत्र ↓ | चित्रा 3,4 | स्वा. 1 से 4 | विशा 1,2,3 | विशा 4 | अनु 1 से 4 | ज्ये 1 से 4 | मूल 1 से 4 | पू.षा. 1 से 4 | उ.षा. 1 चरण | उ.षा. 2,3,4 | श्रव 1 से 4 | धनि 1,2 | धनि 3,4 | शत 1 से 4 | पू.भा. 1,2,3 | पू.भा. 4 | उ.भा. 1 से 4 | रेव 1 से 4 |
| मेष | अश्वि 1 से 4 | २२ ॥<br>1346 | २६ ॥<br>1,3,4 | २२ ॥<br>1346 | १८ ॥<br>3467 | २५ ॥<br>3,7 | १४ ॥<br>6,7,8 | १३<br>6,8,9 | २५<br>4,9 | २३ ॥<br>1,3,9 | २५<br>1,3,5 | २६<br>1,3,5 | २०<br>1456 | २० ॥<br>1456 | १५<br>1358 | १६<br>1358 | १५<br>2348 | २५<br>2,3 | २६<br>2,4 |
| | भर 1 से 4 | १३ ॥<br>1368 | २९<br>1,3 | २१ ॥<br>1,3,6 | १७ ॥<br>3467 | १७ ॥<br>378 | २०<br>3,6,7 | २०<br>6,9 | १८ ॥<br>8,9 | २६<br>9 | २७ ॥<br>1,5 | २६<br>1,3,5 | १०<br>14568 | ९ ॥<br>14568 | २०<br>1356 | २४<br>1345 | २३<br>2,3,4 | १७ ॥<br>2,3,8 | २७<br>2,3 |
| | कृति 1 चरण | २७ ॥<br>1,3,4 | १५<br>1368 | १९ ॥<br>1348 | १५ ॥<br>3478 | १९ ॥<br>3,6,7 | २५ ॥<br>3,7 | २५<br>3,9 | १८ ॥<br>4,6,9 | १२ ॥<br>6,8,9 | १३ ॥<br>1568 | १२<br>14568 | २५<br>1,3,5 | २५ ॥<br>1,3,5 | २७<br>1,3,5 | १९ ॥<br>1356 | १७ ॥<br>2346 | १९ ॥<br>2,3,6 | १२<br>2368 |
| वृष | कृति 2,3,4 | २३<br>1347 | ११<br>13678 | १४ ॥<br>1378 | २० ॥<br>3,4,8 | २४ ॥<br>3,6 | ३० ॥<br>3 | २०<br>3,5,7 | १४<br>4567 | ७<br>5678 | १२<br>6,9,8 | १० ॥<br>4689 | २४<br>3,4,9 | २९ ॥<br>1,3,4 | ३१ ॥<br>1,3 | २३ ॥<br>1346 | २०<br>3456 | २२<br>3,5,6 | १४<br>3568 |
| | रोह 1 से 4 | १९ ॥<br>1,6,7 | १५ ॥<br>1378 | ९ ॥<br>1678 | १५<br>1368 | २९ ॥<br>3,4 | २४<br>3,6 | १४ ॥<br>3567 | १९ ॥<br>3,5,7 | ११ ॥<br>4578 | १६<br>4,8,9 | १७ ॥<br>4,8,9 | २० ॥<br>4,6,9 | २६<br>1,4,6 | २५<br>1,3,6 | ३१<br>1,3 | २७<br>3,4,5 | २७<br>3,4,5 | ११<br>3,5,8 |
| | मृग 1-2 | १२<br>1678 | २५ ॥<br>1,7 | १९<br>1367 | २५<br>3,6 | २१ ॥<br>3,5,8 | २४ ॥<br>3,6 | १५<br>3567 | १० ॥<br>3578 | १७ ॥<br>3457 | २२<br>3,4,9 | २५ ॥<br>4,9 | १३<br>4689 | १९ ॥<br>1468 | २७<br>1,4,6 | २९ ॥<br>1,3,4 | २६<br>3,5 | १८<br>3,5,8 | २७<br>3,5 |
| मिथुन | मृग 3-4 | १४<br>6,8,9 | २७<br>4,9 | २१<br>3,6,9 | १४<br>3567 | ११<br>3578 | १४<br>3567 | २३<br>3,5,6 | १८ ॥<br>3458 | २५<br>3,4,5 | २० ॥<br>347व | २४<br>4,7,व | ११<br>678व | १३<br>6,8,9 | २१ ॥<br>6,9 | २४<br>3,9 | २५ ॥<br>3,5,व | १७ ॥<br>3,5,8 | २६ ॥<br>3,5,व |
| | आर्द्रा 1 से 4 | २१<br>4,6,9 | २७<br>9 | २० ॥<br>4,6,9 | १३<br>4567 | १७ ॥<br>व3457 | ३<br>345678 | १६<br>3568 | २८<br>3,5 | २८<br>3,5 | २३ ॥<br>3,7व | २३ ॥<br>3,7,व | १८<br>467व | १९ ॥<br>4,6,9 | १२ ॥<br>689 | १७ ॥<br>4,8,9 | १९<br>5,8,व | २६ ॥<br>3,5व | २७<br>3,5,व |
| | पुन. 1,2,3 | २१<br>3,6,9 | २८<br>9 | २२<br>6,9 | १५<br>5,7व | २२<br>5,7व | ७<br>35678 | १४<br>34568 | २७<br>3,5 | २७<br>3,5 | २२ ॥<br>3,7व | २३ ॥<br>3,7,व | १७ ॥<br>3467 | १९<br>3469 | १४<br>6,8,9 | १६<br>4,8,9 | १८ ॥<br>4,8,9 | २८<br>5,व | २७ ॥<br>3,5,व |
| कर्क | पुन. 4 | २१<br>1356 | २८<br>1,5व | २२<br>156व | २०<br>6,9 | २६<br>9 | १२<br>3689 | ८ ॥<br>14678 | २१<br>147व | २१ ॥<br>147व | २६<br>1,3,5 | २७<br>1,3,5 | २१<br>1456 | १२<br>14567 | ८ ॥<br>1567 | १० ॥<br>14578 | १६ ॥<br>4,8,9 | २६ ॥<br>9 | २६<br>3,9 |
| | पुष्य 1 से 4 | ११<br>14568 | २६ ॥<br>1व35 | २१ ॥<br>1456 | १९ ॥<br>4,6,9 | १८ ॥<br>8,9 | २१<br>6,9 | १७ ॥<br>1367 | ११ ॥<br>1478 | २१ ॥<br>1347 | २६<br>1,3,5 | २५<br>1345 | १३<br>13568 | ४ ॥<br>145678 | १४<br>13567 | १८ ॥<br>1457 | २४<br>4,9 | १८ ॥<br>8,9 | २७<br>9 |
| | श्ले. 1 से 4 | २५ ॥<br>1,3,5 | १२<br>1568 | १७ ॥<br>1,5,8 | १५<br>3,8,9 | २० ॥<br>6,9 | २६<br>9 | २३<br>व<br>1,4,7 | १६<br>1367 | ७ ॥<br>3678 | १३<br>4568 | १३<br>13568 | २६<br>1,4,5 | १७ ॥<br>1457 | २०<br>1357 | ११<br>14567 | १८<br>4,6,9 | २१<br>6,9 | १३<br>6,8,9 |
| सिंह | मघा 1 से 4 | २४ ॥<br>1,3,5 | ११ ॥<br>13568 | १६ ॥<br>1358व | २२ ॥<br>3,8व | २६<br>3,6व | ३३<br>व | २५<br>9,व | १९ ॥<br>6,9व | ८ ॥<br>689व | ३ ॥<br>15678 | ४ ॥<br>15678 | १८ ॥<br>1,5,7 | २४ ॥<br>1,5,व | २५ ॥<br>135 व | १८ ॥<br>156व | १९<br>3,6,7 | २०<br>3,6,7 | १३ ॥<br>6,7,8 |
| | पू.फा. 1 से 4 | १० ॥<br>1568 | २५ ॥<br>135व | १८ ॥<br>156व | २४<br>3,6व | २३ ॥<br>3,8व | २५ ॥<br>3,6व | २०<br>6,9व | १७ ॥<br>8,9,व | २४<br>4,9व | १९<br>1,5,7 | १८ ॥<br>1,5,7 | ४ ॥<br>15678 | ११<br>1568 | १९ ॥<br>1356व | २४ ॥<br>135व | २५<br>3,7 | १७ ॥<br>3,7,8 | २६<br>3,7 |
| | उ.फा. 1 | १७<br>13456 | २५ ॥<br>1,3,5 | १६ ॥<br>13456 | २२ ॥<br>3,4,6 | ३१ ॥<br>3,व | १७ ॥<br>3,6,8 | ९ ॥<br>3689 | २५<br>9,व | २५ ॥<br>9,व | २०<br>1,5,7 | २०<br>1,5,7 | ११ ॥<br>1567 | १७ ॥<br>1356 | ११<br>3568 | १५ ॥<br>358व | १६<br>3478 | २६ ॥<br>3,7 | २६<br>3,7 |
| कन्या | उ.फा. 2,3,4 | १६ ॥<br>1246 | २५ ॥<br>1,2,3 | १७<br>1246 | १८<br>456व | २७ ॥<br>3,5व | १३ ॥<br>568व | १४<br>3568 | २९ ॥<br>5 | २९ ॥<br>5 | २४ ॥<br>9,व | २५<br>9,व | १७<br>3,6,9 | १६ ॥<br>1367 | १० ॥<br>3678 | १४ ॥<br>1378 | १७ ॥<br>3,5,8 | २८<br>3,5व | २७ ॥<br>3,5,व |
| | हस्त 1 से 4 | २०<br>1246 | २६ ॥<br>1,2,3 | १८ ॥<br>1236 | २०<br>3456 | २६<br>3,5व | १३ ॥<br>3568व | १५<br>3568 | २७<br>3,5 | २८ ॥<br>5 | २४<br>9,व | २४<br>9,व | १९<br>4,6,9 | १९<br>1467 | ८ ॥<br>34678 | १३ ॥<br>1378 | १६ ॥<br>3458 | २६ ॥<br>3,5व | २७ ॥<br>3,5,व |
| | चित्रा 1,2 | २०<br>1,2,8 | १९<br>1246 | २६ ॥<br>1,2,3 | २८ ॥<br>3,5व | ११<br>3568 | २५<br>345व | २७<br>3,4,5 | १४<br>3568 | २२<br>3,5,6 | १७ ॥<br>3,6,9 | १९<br>6,9,व | १५ ॥<br>4,8,9 | १६<br>1478 | २४<br>1,4,7 | १६ ॥<br>1467 | १९ ॥<br>3456 | १०<br>34568 | १९ ॥<br>3456 |

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1 ,2 ,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

# वर-कन्या मेलापक सारिणी – ( भाग-४ )

| वर/नक्षत्र → | | तुला | | | बृश्चिक | | | धनु | | | मकर | | | कुम्भ | | | मीन | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कन्या | नक्षत्र ↓ | चित्रा<br>3,4 | स्वा.<br>1 से 4 | विशा<br>1,2,3 | विशा<br>4 | अनु<br>1 से 4 | ज्ये<br>1 से 4 | मूल<br>1 से 4 | पू.षा.<br>1 से 4 | उ.षा.<br>1 चरण | उ.षा.<br>2,3,4 | श्रव<br>1 से 4 | धनि<br>1,2 | धनि<br>3,4 | शत<br>1 से 4 | पू.भा.<br>1,2,3 | पू.भा.<br>4 | उ.भा.<br>1 से 4 | रेव<br>1 से 4 |
| तुला | चित्रा<br>3,4 | २८<br>8 | २७<br>4,6 | ३४<br>3 | २३ ॥<br>2,3व | ६<br>2348व | २१<br>234व | २७ ॥<br>3,4,5 | १४<br>3568 | २२<br>3,5,6 | २५<br>3,6,व | २७<br>6,व | २३ ॥<br>4,8,व | १८ ॥<br>4,8,9 | २६<br>4,9 | १९<br>3469 | १२<br>4567 | ३<br>345678 | १२<br>व34578 |
| | स्वा.<br>1 से 4 | २८<br>4,6 | २८<br>8 | २०<br>4,6,8 | १०<br>248व | २१ ॥<br>2,3व | १६ ॥<br>236व | २३<br>3,5,6 | २७<br>3,5 | १९<br>3,5,8 | २२<br>3,8,व | २३<br>3,8,व | २७<br>4,6 | २१<br>4,6,9 | २०<br>4,6,9 | २५<br>4,9 | १९<br>457,व | १९ ॥<br>357,व | १२<br>3578 |
| | विशा<br>1,2,3 | ३४ ॥<br>3 | १९<br>4,6,8 | २८<br>8 | १७ ॥<br>2,8व | १६<br>246व | २१ ॥<br>234व | २७ ॥<br>3,4,5 | २२<br>3,5,6 | १४<br>3568 | १७<br>368व | १७ ॥<br>368व | ३० ॥<br>3,4,व | २५<br>3,4,9 | २६<br>4,9 | २०<br>4,6,9 | १४<br>4567 | १३ ॥<br>4567 | ४<br>45678 |
| बृश्चिक | विशा<br>4 | २३<br>123व | ७<br>12468व | १६ ॥<br>128व | २८<br>8 | २७ ॥<br>4,6 | ३१ ॥<br>3,4 | २२<br>1234 | १७ ॥<br>1362व | ९<br>12368 | १२ ॥<br>13568 | १२ ॥<br>13568 | २५<br>1345 | २४<br>1345 | २६<br>145,व | २०<br>1456 | १९ ॥<br>4,6,9 | १८ ॥<br>4,6,9 | ९ ॥<br>4689 |
| | अनु.<br>1 से 4 | ६ ॥<br>12व68 | २२<br>123व | १६<br>1246 | २८<br>4,6 | २८<br>8 | ३१<br>6 | १५<br>12346 | १३ ॥<br>1238व | २२<br>123व | २५<br>1,3,5 | २६<br>1,3,5 | १२<br>13568 | ११<br>1358 | २१<br>1356 | २४ ॥<br>145व | २४<br>4,9 | १८ ॥<br>8,9 | २७ ॥<br>9 |
| | ज्ये.<br>1 से 4 | १९ ॥<br>1234 | १५<br>126व | १९ ॥<br>1234 | ३१ ॥<br>3,4 | ३०<br>6 | २८<br>8 | १४ ॥<br>1248 | १७ ॥<br>1236 | १७ ॥<br>1व236 | २०<br>1356 | २०<br>1356 | २५<br>1,3,5 | २४<br>1345व | १८<br>1व358 | १०<br>13568 | ९ ॥<br>3689 | २१ ॥<br>6,9 | २१<br>6,9 |
| धनु | मूल<br>1 से 4 | २६<br>1,4,5 | २१<br>1356 | २६<br>1,4,5 | २३<br>1234 | १५ ॥<br>व2346 | १५<br>व248 | २८<br>8 | २८<br>4,6 | २६ ॥<br>3,6 | १५ ॥<br>1236 | १५ ॥<br>1236 | २० ॥<br>1234 | २८ ॥<br>1,3,4 | २१ ॥<br>1,3,8 | १४ ॥<br>1468 | १६ ॥<br>3468 | २५<br>6,व | २७<br>6,व |
| | पू.षा.<br>1 से 4 | १३<br>1568 | २७<br>1,3,5 | २१<br>1356 | १८<br>246व | १५ ॥<br>238व | १८<br>246व | २८<br>4,6 | २८<br>8 | ३४<br>- | २३<br>124व | २३ ॥<br>1,2,व | ५ ॥<br>1268 | १४ ॥<br>1468 | २३ ॥<br>1,4,6 | २८ ॥<br>1,4 | ३० ॥<br>4,व | २३ ॥<br>8,व | ३१<br>3,व |
| | उ.षा.<br>1 | २१<br>1,5,6 | १९<br>1,5,8 | १३<br>1568 | ९ ॥<br>268व | २४<br>2,3व | १८ ॥<br>2,3,6 | २६ ॥<br>3,4,6 | ३४<br>- | २८<br>8 | १६ ॥<br>128व | १५<br>1248व | १५ ॥<br>1236व | २३ ॥<br>1,3,6 | २३ ॥<br>1,3,6 | २९ ॥<br>1,3,4 | ३१<br>3,व | ३१<br>3,व | २३<br>3,8,व |
| मकर | उ.षा.<br>2,3,4 | २४<br>1,3,6 | २२ ॥<br>1,3,8 | १५ ॥<br>1368 | १३<br>4568 | २७<br>4,5 | २१<br>4,5,6 | १६<br>246व | २४<br>2,4व | १७ ॥<br>2,8व | २८<br>8 | २६<br>4,8 | २६ ॥<br>4,6 | १७ ॥<br>126व | १७ ॥<br>1236व | २३ ॥<br>1234 | ३० ॥<br>3 | ३१<br>3 | २२ ॥<br>3, 8 |
| | श्रव<br>1234 | २७<br>146व | २२ ॥<br>148व | १७ ॥<br>1468 | १४<br>3568 | २७<br>3,4,5 | २२<br>3456 | १७ ॥<br>246व | २३ ॥<br>2,3व | १५<br>248व | २५<br>4,8 | २८<br>8 | २८<br>4,6 | १९<br>1246 | १८<br>1व236 | २१ ॥<br>124व | २८ ॥<br>3,4 | २९ ॥<br>3 | २२ ॥<br>3,8 |
| | धनि<br>1,2 | २३<br>148व | २४ ॥<br>146व | २९<br>1,4व | २६<br>3,4,5 | १२<br>4568 | २६<br>3,4,5 | २१<br>234व | ७ ॥<br>2468व | १६<br>2346 | २७<br>3,4,6 | २७ ॥<br>4,6 | २८<br>8 | १८ ॥<br>128व | २४<br>124व | २०<br>126व | २६ ॥<br>3,6 | १५ ॥<br>4,6,8 | २२ ॥<br>3,4,6 |
| कुम्भ | धनि<br>3,4 | १८ ॥<br>4,8,9 | २०<br>4,6,9 | २५<br>3,4,9 | २५<br>4,5व | ११<br>4568 | २५<br>4,5व | २९ ॥<br>3,4 | १५ ॥<br>3468 | २४ ॥<br>3,6 | १८<br>236व | १९<br>246व | २०<br>2,8,व | २८<br>8 | ३३<br>4 | २८ ॥<br>3,6 | १८<br>236व | ७<br>2468व | १४ ॥<br>246व |
| | शत<br>1 से 4 | २६<br>4,9 | १९ ॥<br>4,6,9 | २६<br>4,9 | २६ ॥<br>4,5व | २१<br>356व | १९<br>358व | २२ ॥<br>3,4,8 | २४ ॥<br>3,4,6 | २४ ॥<br>3,4,6 | १८ ॥<br>236व | १८ ॥<br>236व | २५<br>2,4,व | ३३<br>4 | २८<br>8 | १९ ॥<br>4,6,8 | ८ ॥<br>2468व | १७ ॥<br>236व | १६<br>236व |
| | पू.भा.<br>1,2,3 | १९<br>3469 | २६<br>4,9 | २०<br>4,6,9 | २० ॥<br>456व | २६ ॥<br>4,5व | ११<br>4568व | १५<br>3468 | २९ ॥<br>3,4 | ३० ॥<br>3,4 | २४ ॥<br>234व | २३ ॥<br>234व | २० ॥<br>236व | २८ ॥<br>3,6 | १९<br>4,6,8 | २८<br>8 | १७ ॥<br>2,8,व | २२ ॥<br>2,4,व | २० ॥<br>234व |
| मीन | पू.भा.<br>4 | १२<br>14567 | १९ ॥<br>1457 | १३ ॥<br>14567 | १९ ॥<br>4,6,9 | २५<br>4,9 | ९<br>4689 | १५ ॥<br>1468 | २९<br>134व | ३०<br>1,3व | २९ ॥<br>1,3,4 | २८ ॥<br>1,3,4 | २५ ॥<br>1,3,6 | १७<br>1236व | ८<br>12468 | १७<br>128व | २८<br>8 | ३३<br>4 | ३० ॥<br>3,4 |
| | उ.भा.<br>1 से 4 | ३<br>145678 | १९ ॥<br>1357 | १२ ॥<br>14567 | १८ ॥<br>4,6,9 | १९ ॥<br>8,9 | २१ ॥<br>6,9 | २४ ॥<br>136व | २२ ॥<br>1,8व | ३०<br>134व | २९ ॥<br>1,3,4 | २९ ॥<br>1,3 | १४ ॥<br>1468 | ५ ॥<br>12468 | १६ ॥<br>1236व | २२<br>124व | ३३<br>4 | २८<br>8 | ३५<br>- |
| | रेव<br>1 से 4 | १३<br>14567 | ११<br>1578व | ४ ॥<br>145678 | १० ॥<br>4689 | २७ ॥<br>9 | २२ ॥<br>6,9 | २७<br>146व | २९ ॥<br>1,3व | २१ ॥<br>138व | २१<br>1348 | २१ ॥<br>1348 | २३<br>1346 | १४ ॥<br>1246व | १६ ॥<br>1236व | १८ ॥<br>124व | ३०<br>3,4 | ३४<br>- | २८<br>8 |

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

# मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं मंगलीक दोष पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यतः निम्न श्लोक माना जाता है।

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तृविनाशाय भर्त्ता कन्या विनाशदः।**

**–मु. संग्रहदर्पण**

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भान्ति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या को हानिकारक होता है। इसी भांति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

**अपवाद–(1) मंगल दोष** वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है–

**कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥**

**मंगलीक सम्बन्धी** उपरोक्त श्लोक के परिहारस्वरूप मुहूर्त्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं। यथा–

(2) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता–

**शनिः भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।**
**तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥–फलित संग्रह** **अन्येऽपि–**

**भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥**

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि पाप ग्रह होने से मंगलीक दोष का प्रभाव क्षीण होकर विवाह में शुभ होता है।

**यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते॥**

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

**(3) मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशिस्थ मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष क्षीण हो जाता है। यथोक्तम्–**

**अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।**
**द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥** **–मुहूर्त्त पारिजात**

**प्रकारान्तर से**, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता। **"द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते"** **–मुहूर्त्त चिंतामणि**

(4) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष क्षीण हो जाता है–

**न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।**
**न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥** **–मुहूर्त्त दीपक**

(5) बलान्वित गुरु वा शुक्र लग्न में हो, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त दुष्ट स्थानों में होने पर भी भौम दोष नहीं होता–

**सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवाभौमे।**
**वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुजदोषः॥** **–मुहूर्त्त दीपक**

(6) इसी भांति केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा ३, ६, ११वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोषकारक एवं अनिष्टकारक नहीं होता–

**"केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।**
**तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥"** **–मुहूर्त्त चिंतामणि**

(7) यद्यपि १, २, ४, ७, ८, ११ और १२वें भावों में स्थित मंगल वर-वधू के वैवाहिक जीवन में विघटन उत्पन्न करता है, परन्तु यदि मंगल अपने घर (१, ८) का हो, **उच्चस्थ** (मकर) का **किंवा मित्र क्षेत्री** मंगल दोष कारक नहीं होता–

**तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।**
**विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा॥** **–मु. चिंतामणि**

(8) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, 27 गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष अविचारणीय है। **'मुहूर्त्त दीपक'** नामक ग्रन्थानुसार–

**राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥**

**विवेचन**–उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुहूर्त्त संग्रह दर्पण में दिए गए मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक ("लग्ने व्यये पाताले–") के परिहारस्वरूप कुछ अर्वाचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध वाक्यता भी मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन सैद्धान्तिक एवं प्रतिष्ठित मुहूर्त्त ग्रंथों जैसे–विवाह वृन्दावन, मुहूर्त्त मार्तण्ड, सारावली, मु. चिन्तामणि (प्राचीन संस्करण), ज्योतिर्निबन्ध आदि) में मंगलीक सम्बन्धी उपर्युक्त श्लोक एवं तत्सम्बन्ध विभिन्न परिहार वाक्यों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता।

वर-कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष एवं उसके परिहार का निर्णय अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। **केवल** १, ४, ७, ८ आदि भावों में मंगल को देखकर दाम्पत्य जीवन के सुख-दुःख का निर्णय कर देना उपयुक्त नहीं। मंगलीक वाले स्थानों (भावों) में मंगल के अतिरिक्त कोई अन्य क्रूर ग्रह भी १, २, ७ एवं १२वें स्थानों में हो, तो वह भी परिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के लिए अनिष्टकारी होता है। **यथा–**

**लग्ने क्रूरा व्यये क्रूरा धने क्रूराः कुजस्तथा।**
**सप्तमे भवने क्रूराः परिवार क्षयंकराः॥**

**–मु. संग्रह दर्पण**

**मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात् ही करना चाहिए।** मिलान करते समय केवल मंगल या मंगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी अन्य तत्त्वों का भी सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करना चाहिए। **जैसे**–चलित भाव कुण्डली, सप्तमेश की उच्च-नीच स्थिति, सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि आदि तत्त्वों का सम्यक विचार किसी विद्वान ज्योतिषी जी से करवाना चाहिए।

# ★★★तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार★★★

**(1) अश्विनी नक्षत्र**—मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्राय: संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में **प्रथम चरण** में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, **दूसरे चरण** में फिजूलखर्ची, **तीसरे चरण** में भ्रमणशील तथा **चतुर्थ नक्षत्र** में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

**(2) आश्लेषा नक्षत्र**—कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्राय: चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। **प्रथम चरण** में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, **दूसरे चरण** में पैतृक धन की हानि, **तीसरे चरण** में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा **चतुर्थ चरण** में पिता के लिए अनिष्टकारी है–

**आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यातंधनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥**

**(3) मघा नक्षत्र**—सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। **प्रथम चरण** में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, **दूसरे चरण** में पिता को परेशानी, **तीसरे चरण** में जन्म हो तो शुभ फलदायक, **चतुर्थ चरण** में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

**(4) ज्येष्ठा नक्षत्र**—मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम पाद** (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, **दूसरे चरण** में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, **तीसरे चरण** में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि **चतुर्थ चरण** में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

**ज्येष्ठाद्यपादेऽग्रजमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कनिष्ठम्।**
**तृतीयपादे पितरं निहन्ति स्वयं चतुर्थे मृतिमेति जातः॥** (जातक-पारिजात)

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

**(5) अभुक्त मूल नक्षत्र**—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूल नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ–कुल चार घड़ियाँ **अभुक्त मूल** गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

**अभुक्त मूलं गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।**
**जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत्॥**

**अभुक्त मूल**—नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। यथा–नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ठ के अनुसार २ घड़ियाँ तथा बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला, धनवान् एवं सम्पत्तिवान होता है।

**मूल नक्षत्र**—केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूल के **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। **दूसरे चरण** में माता की हानि, **तीसरे चरण** में धन का नाश तथा **चौथा चरण** शुभ होता है। नक्षत्र की विधिपूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

**मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद् द्वितीयके मातरमांशु हन्ति।**
**तृतीयजो वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम्॥** (जातक-पारिजात)

मूल नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है–

**भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम्॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत्॥**

## मूल नक्षत्र फल का अन्य प्रकार

मूल नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को 15 द्वारा भाग देकर 15 खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। **प्रथम भाग** हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, **दूसरे में** चाचा की हानि, **तीसरे में** बहनोई की हानि, **चौथे में** पितामह (दादा) की हानि, **आठवें में** चाची के लिए अनिष्टकर, **नवमे में** सबके लिए अनिष्टकर, **दसवें अंश में** पशु का नाश, **ग्यारहवें में** नौकर का नाश होता है। **बारहवें अंश में** स्वयं जातक का नाश होता है। **तेरहवें अंश में** हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, **चौदहवें अंश में** जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर **पन्द्रहवें में** हो तो नाना को कष्ट (अनिष्ट) होता है।

**उदाहरणार्थ** यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८ ।४५ है। ४ ।१७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८ ।३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८ ।४५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

**(6) रेवती नक्षत्र**—बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के **प्रथम चरण** में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, **दूसरे में** मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, **तीसरे में** जन्म होने से धनवान तथा **चतुर्थ में** जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

**दिवाजातस्तु पितरं रात्रौ तु जननीं तथा। आत्मानं संध्ययोर्हन्ति ततो गण्डं विवर्जयेत्॥**

गण्डमूल नक्षत्र शान्ति के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित **'सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र-शान्ति प्रयोग'** पुस्तक मंगवा लेवें। मूल्य-100 रुपए।

# भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व

## (मुख्य-मुख्य मुहूर्त्तों का निर्णय स्वयं करें)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि कर्म तक **षोडश-संस्कारों** के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अबोध होता है, परन्तु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है। जैसे, शास्त्र में कहा गया है–

**जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।**
**वेद पाठात् भवेद् विप्रः, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥**

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, धनी, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है॥

**षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं–**

**(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्न प्राशन (८) चूडाकरण (मुण्डन), (९) यज्ञोपवीत (१०) से (१३) तक चतुर्वेदीय व्रत, (१४) समानवर्त्तन (१५) विवाह (१६) अन्त्येष्टि।**

☞ **(१) गर्भाधान संस्कार**–यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला) स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्या के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। **रजोदर्शन** के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त्त दिनों का विचार किया जाता है।

### (१) गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

**शुभतिथियां**–१ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)

**शुभ वार**–सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

**शुभ नक्षत्र**–रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, अनु, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

**शुभ लग्न**–लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त **पुत्रार्थी** विषम लग्न राशि एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम लग्न राशि में स्त्री संग करें।

**गर्भ-धारण** के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

**गर्भाधान के लिए त्याज्य काल**–रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा-अश्ले आदि तीनों गण्डांत, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिघ का पूर्वार्ध, संक्रान्ति, व्यतीपात, ग्रहण, सन्ध्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लग्न, दीवाली, दशहरा, नवरात्र आदि पर्व दिनों को स्त्री संसर्ग में त्याग करना चाहिए।

**गर्भ मासों के अधिपति**

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

| **मास** | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **स्वामी** | शुक्र | मंगल | गुरु | सूर्य | चंद्र | शनि | बुध | आधानकालिक लग्नेश | चंद्र | सूर्य |

☞ **(२) पुंसवन संस्कार मुहूर्त्त**–यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त्त इस प्रकार से हैं।

**शुभवार**–रवि, चंद्र, मंग, बुध, गुरु व शुक्र। **मंगल व बुध वारों में** मं. बु. उदित होने चाहिएं।

**शुभ तिथियां**–१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

**शुभ नक्षत्र**–रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अनु एवं रेवती नक्षत्र। विद्ध नक्षत्र त्याज्य हैं।

☞ **(३) सीमन्त संस्कार**–यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भ धारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। **शुभवार**–रवि, मंगल, एवं गुरु।

**शुभ तिथियां**–२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

**नक्षत्र**–मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूल, श्रवण:

**लग्न**–१, ३, ५, ७, ९ आदि विषम लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों॥

**(३) (क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त्त**–यह पूजा गर्भाधान से आठवें मास गर्भरक्षा के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमयी प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिधान सहित, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

**शुभ तिथियां**–२, ७, १२

**शुभ वार**–चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र।

**शुभ नक्षत्र**–रोहिणी, पुष्य और श्रवण।

☞ **(४) जातकर्म संस्कार**–कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालछेदन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नरघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

कुछ लोग परम्परानुसार ११वें अथवा १२वें दिन कर लेते हैं।

**शुभ तिथियां**–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.)
शुभ वार = चं., बु,, गु., शु.

**नक्षत्र**–अश्वि. रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव., धनि, शत, रेव।

☞ **मेघा-जनन संस्कार**–जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोधृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमशः **"ॐ भूस्त्वपि धथामि।" ॐ भुस्त्वपि दधामि।" तथा ॐ भूर्भुवस्वः सर्वत्वपि दधामि। मंत्रों का उच्चारण करें।** इसके साथ ही कुछ घृत-मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्तनपान के पूर्व ही कुछ चूसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।

☞ **(५) स्तनपान का मुहूर्त्त**–जन्मान्तर ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर निम्न शुभ मुहूर्त्त माता संतान को प्रथम बार स्तनपान कराए।

**शुभ तिथि**–१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.), १५,

**शुभ नक्षत्र**–रोह., मृग. ,पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु, श्रव. धनि, व रेवती॥

**शुभ वार**–चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र।

**शुभ लग्न**–२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि लग्न।

**सूतिका पथ्य** में भी उपरोक्त मुहूर्त्त ग्राह्य है।

☞ **(६) षष्ठी पूजन**–*जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। इसी प्रकार छेठे दिन रात्रि में षष्ठी*

**पूजन, कात्यायनी देवी'** का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पूजन करना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोष आपत्ति नहीं होती। देशाचारानुसार कोई २१वें या ३१वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

☞ **( ७ ) प्रसूता स्नान मुहूर्त्त**—सूतिका स्नान बच्चे के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

**शुभ तिथियां**—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

**शुभ वार**—रवि, मंगल, गुरू, शुभ हैं। सोम एवं शुक्रवार मध्यम हैं।

**शुभ नक्षत्र**—अश्वि., रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु., रेव.।

**शुभ लग्न**—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

☞ **( ८ ) नामकरण संस्कार**—यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है–

**"नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतुः।**
**नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥"**

**गृहारम्भ**—प्रवेश, युद्ध व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी–सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि वांछनीय है।

☞ **नामकरण**—सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २०वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता–पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

**शुभ तिथियाँ**—१ (कृष्ण), २,३,७,१०,११,१२,१३ (शुक्ल)।

**शुभ वार**—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

**शुभ नक्षत्र**—अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

**शुभ लग्न**—१,४,६,७,९,१२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों। भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

## बालक के दाँत निकलने का फल

यदि पहले मास में बालक के दाँत निकल आएं तो स्वयं अपनी आयु के लिए अरिष्टकारक, दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए विशेष कष्टकारी होता है, **छटे मास में दाँत निकलें** तो अत्यन्त सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में देह की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी की प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो **अति सौख्य**, १२वें मांस में निकलें तो विपुल धन–प्राप्ति होती है। यदि गर्भ से ही दाँतों सहित उत्पन्न हुआ हो वह माता–पिता के सुख से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दाँत पहलें निकले तो भी माता–पिता तथा नानके पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मृत्युज्जय का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अरिष्ट की शान्ति हो जाती है।

| मास | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फल | स्वयं को अरिष्ट | भ्रातृ कष्ट | बहिन को कष्ट | मातृ कष्ट | ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट | सुख | पिता से सुख | देह सुख | धन प्राप्ति | सौख्य प्राप्ति | अति सौख्य | विपुल धन |

☞ **( ९ ) झूला आरोहन मुहूर्त्त**—बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूले में सुलाना चाहिए। झूले में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूले में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

**शुभ तिथियां**—१ (कृ), २,३,५,७,१०,११,१३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

**शुभ वार**—सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

**ग्राह्य नक्षत्र**—अश्वि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा तथा अनुराधा।

☞ **( १० ) निष्क्रमण मुहूर्त्त**—जन्म से ३,४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निष्क्रमण लिखा गया है।

**शुभ तिथियां**—१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१२ (शु.) एवं १५।

**शुभ वार**—सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

**शुभ नक्षत्र**—अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रव, धनि।

**शुभ लग्न**—२,३,४,५,६,७,९,१०,११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करवा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत–वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभाशीष दें तथा मन्दिर की परिक्रमा करके स्वगृह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावे। पुनः गृहागमन के समय दीर्घायु संज्ञक आशीर्वचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निष्क्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य–दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र–दर्शन करवाना चाहिए।

☞ **( ११ ) भुम्युपवेशन-मुहूर्त्त**—जन्म से पंचम मास में मंगल के बलान्वित होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त्त–

**शुभ तिथियां**—१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

**शुभ वार**—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

**शुभ नक्षत्र**—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उतरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

**शुभ लग्न**—२,५,८,११ राशि लग्न।

☞ **( १२ ) जीविका परीक्षा**—'भूम्युपवशन' के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र–शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), वस्त्र, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा–रेडियों, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेज़ी, संस्कृतादि साहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी आजीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं–कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

☞ **( १३ )अन्न–प्राशन का मुहूर्त्त**—जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५,७,९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपयुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना **अन्न प्राशन** में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १,३,५,७,१० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

**नक्षत्र**—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म–नक्षत्र 'सप्तश्लाका चक्र' द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २,३,४,५,६,७,९,१०,११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १,४,७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वार दृष्ट हो।

**विशेष**—अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

☞ **( १४ )कर्ण वेध का मुहूर्त्त**—बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६,७,८वें मास में अथवा ३,५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

**ग्राह्य मास**—चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन।

**तिथियां**—४,९,१४ (रिक्ता तिथियां) छोड़कर सभी तिथियां।

**वार**—चं, बु., गु., शु, वारों में अश्वि, मृग, आ. पुन, पुष्य हस्त, चित्रा, अनु, अभि, श्रव, धनि, रेव। विद्ध तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

**शुभ लग्न**—२,३,४,६,७,९,१२।

**विशेष**—बोलक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्ठान्न दें तथा पुत्र के बाएं कान को तथा पुत्री के दाएं कान को सुवर्ण या चाँदी की श्लाका से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

☞ **कन्या की नासिका छेदन**—हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहूर्त्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल पक्ष की तिथियाँ शुभ होती हैं-२, ३ ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

# जन्म दिन कृत्य

सामान्यत: लोग अंग्रेज़ी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिद्धान्त: एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टों के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के अवसर पर प्रात: उठकर गंगाजल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवाकर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरांत भगवान् सूर्यदेव को अर्घ्य, ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चावल, दूध, चीनी आदि से बनी क्षीर तथा वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

# *अथ अशौच व्यवस्था*

**अशौच दो प्रकार का होता है–( १ ) जनना शौच जिसे सूतक और ( २ ) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।**

### गर्भास्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्त्राव' कहते हैं। पांचवें, छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

### जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हों, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

### मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

### मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दाँत आने से पहिले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

### कन्या शौच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है।

### मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना की ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १ ॥ दिन का पातक होता है।

### सास-ससुर तथा जामातृ पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १ ॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

### बन्धुत्रय-विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

## अशौच-संपात पर निर्णय

10 दिन के अशौच में यदि 5 दिन के भीतर दूसरा 10 दिन का या इससे कम दिन का मृत-अशौच प्राप्त हो जाए तो पहले के साथ ही दूसरे अशौच की शुद्धि हो जाती है। 5 दिन के बाद 9 दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ ही दूसरे आशौच की भी शुद्धि हो जाती है, यदि दसवें दिन की रात्री में दूसरा अशौच हो जाये तो 2 दिन अशौच और बढ़ जाता है। 10 दिनों के मृताशौच में 10 दिन अथवा 3 दिन वाला जननाशौच आ पड़े तो मृताशौच की समाप्ति पर ही जननाशौच की भी समाप्ति या शुद्धि हो जाती है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

*अधिक जानकारी के लिए धर्मसिन्धु, निर्णयसिन्धु आदि ग्रन्थों का अवलोकन करना चाहिए।*

# अथ प्रसूति लग्नादि का विचार

***मेष***—बालक के जन्म समय मेष लग्न हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसूतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जानें, मुख की कांति लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

***वृष***—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरपूर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँव से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

***मिथुन***—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुराना, गृह का द्वार पश्चिम की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रूदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

***कर्क***—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोपरान्त बालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३९, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

***सिंह***—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

***कन्या***—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियां ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

***तुला***—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

***वृश्चिक***—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण भूरे नेत्र, शीर्षोदय, तेज़ स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहनें हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २,६,११,२७,५८वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

***धनु***—रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियां, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

***मकर***—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

***कुम्भ***—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रूदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

***मीन***—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियां हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

## एक ही नक्षत्र में जन्म का फल

यदि एक ही परिवार में, एक ही माता-पिता और उनकी सन्तानों में से किन्हीं दो का जन्म एक ही नक्षत्र में हुआ हो, तो वह अत्यन्त अनिष्टकारी होता है। यह अनिष्ट दोनों में से किसी एक को होता है। यदि भाई-भाई, भाई-बहन, पिता-पुत्र या माता-पुत्र या माता-पुत्री अथवा पिता-पुत्री का जन्म एक ही नक्षत्र में हो, तो वह मृत्यु-तुल्य कष्टदायक होता है। इसकी शान्ति अवश्य करनी चाहिए।

**पिगोश्च जन्मनक्षत्रे जातस्तु पितृमातृहा।**
**जन्मक्षाँशे च तल्लग्ने जातः सद्योमृतिप्रदः।(वसिष्ठ)**

एक नक्षत्र जनन की शान्ति संक्षिप्त रूप से इस प्रकार से वर्णित की गई है—अग्नि (हवनकुण्ड) के ईशानकोण में कलश के ऊपर जिस नक्षत्र का जन्म हो, उस नक्षत्र के देवता के स्वरूप की नक्षत्र प्रतिमा बनवाकर स्थापित करें। उस नक्षत्र के मन्त्र से कलश के ऊपर उस नक्षत्र की पूजा करनी चाहिए। कलश को दो लाल रंग के वस्त्रों से लपेट देना चाहिए। फिर वैदिक पद्धति के अनुसार समिधा द्वारा होम आदि विधान करना चाहिए। प्रत्येक समिधा को घी में डुबोकर हवन करना चाहिए।

इस प्रकार प्रायश्चित होम करने के बाद जातक और उसके माता-पिता का अभिषेक भी आचार्य को करना चाहिए। कर्म समाप्ति के बाद यजमान (पूजा कराने वाला जातक) आचार्य पण्डित जी को भोजन, गोदान, वस्त्र दक्षिणा आदि से सम्मानित करें।

## –त्रिखल जन्म फल एवं शान्ति–

तीन कन्याओं के पश्चात् लड़का उत्पन्न होना तथा तीन लड़कों के पश्चात् कन्या की उत्पत्ति त्रिखल दोषकारक मानी जाती है। इसके कारण लड़का पिता, नानके पक्ष को हानि तथा कन्या माता के लिए कष्टप्रद होते हैं। त्रिखल शान्ति करवा लेने से गृह में सुख शान्ति रहती है। शान्ति हेतु सूतकादि के उपरान्त किसी शुभ मुहूर्त्त में पत्नी सहित शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख होकर संकल्पपूर्वक श्रीगणपति-पूजन व नवग्रहादि पूजनोपरान्त कलश स्थापन करते हुए उसके ऊपर ताम्र पात्र रखकर उसमें श्री विष्णु भगवान् की स्वर्णमयी मूर्त्ति (उसके अभाव में ताम्र की) पूजा करके रखें। फिर विधिपूर्वक त्रिखलशान्ति कर्म किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवा लेनी चाहिए। यदि किसी कारणवश आप पूजा न कर पाए हों तो फिर बच्चे के जन्मदिन के आसपास किसी मुहूर्त्त में त्रिखल पूजा करवा लेनी कल्याणकारी होगी। दान में तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चाँदी, ताँबा) तथा साथ में गुड़, एक लाल परना व नारियल दक्षिणा सहित संकल्पपूर्वक बच्चे व उसकी माता का हाथ लगवाकर मन्दिर में या ब्राह्मण को दान करें।

# पंचाँग-परिवर्तन करना

**'पंचांगदिवाकर'** में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी तथा राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु **पंचांगदिवाकर** में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करे। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

**उदाहरण**—मान लीजिए 13 अप्रै., 2024 ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से 6/02 सू.उ. प्राप्त ('तिथ्यादि पंचांग के घण्टे मिनटों वाले' पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (6/06) से 4 मिनट पूर्व (पहले) है। अत: घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में 4 मिनट के घटी पल 10 पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। **ध्यान रहे**, सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

**13 अप्रैल, 2024 ई. को जालन्धर का पंचांग–13 अप्रैल, 2024 ई. को दिल्ली का पंचांग**

| घटी पल | घटी पल |
|---|---|
| **तिथि** – १४/४८ (समाप्ति काल) | **तिथि** – १४/५८ (समाप्ति काल) |
| **नक्षत्र** – ४६/४८ | **नक्षत्र** – ४६/५८ |
| **योग** – ४६/१० | **योग** – ४६/२० |

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

## *लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि*

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म **सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

**उदाहरण**—मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०८१ मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में चैत्र शुक्ल षष्ठी, प्रविष्टे २ वैशाख, तदनुसार 14 अप्रै., 2024 ई. को दोपहर 2 बजकर 24 मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ५५ पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ०/००°/४२'/२९" होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई ३२° अक्षांश की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जाएगी। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मेष राशि के सामने और ०° अंश के नीचे कोष्ठक में अनुपातिक विधि द्वारा हमें २/४४ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/५५ में जमा कर देने से कुल जोड़ २३/३९ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुन: लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २३/३६ सिंह (४) राशि के सामने और ४ अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २३/३९ से केवल ३ पल कम है। अब अनुपातिक विधि द्वारा १ पल के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। **जैसे** यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो ३ पल के पीछे १५ कला का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/५५ घट्यादि) ४ गत राशि अर्थात् सिंह लग्न, ४ अंश, १५ कला पर लग्न स्पष्ट होगा। *(लग्न स्पष्ट ४/०४°/१५'/०१")। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक **'ज्योतिष तत्त्व'** का अध्ययन करें।*

**उत्तर पलभा १५/०//५०** **लग्न सारणी लंदन ( अक्षांश ५१/३० )** **चरखण्ड १५१/१२०/५१**

उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे–लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

| अंश | | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० मेष | घ. | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| | प. | ४६ | ५० | ५५ | ५९ | ४ | ९ | १४ | १९ | २४ | २९ | ३५ | ४० | ४६ | ५२ | ५८ | ३ | ९ | १५ | २१ | २७ | ३२ | ३८ | ४४ | ५० | ५७ | २ | ८ | १२ | १८ | २४ |
| १ वृष | घ. | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ |
| | प. | ३० | ३५ | ४१ | ४७ | ५३ | ५९ | ५ | ११ | २० | ३० | ३९ | ४८ | ५७ | ६ | १५ | २४ | ३३ | ४२ | ५१ | ०० | ०७ | १५ | २३ | ३२ | ४१ | ५० | ५९ | ८ | १७ | २६ |
| २ मिथुन | घ. | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ |
| | प. | ३५ | ४४ | ५३ | ०२ | ११ | २० | ३१ | ४२ | ५३ | ०२ | १५ | २८ | ४१ | ५४ | ०७ | २० | ३३ | ४६ | ५९ | १२ | २४ | ३७ | ५० | ०३ | १६ | २९ | ४२ | ५५ | ०७ | १९ |
| ३ कर्क | घ. | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ |
| | प. | २९ | ४२ | ५५ | ०८ | २० | ३३ | ४६ | ५९ | १३ | २७ | ४१ | ५५ | ०९ | २३ | ३७ | ५२ | ०७ | २१ | ३५ | ५० | ०४ | १८ | ३२ | ४६ | ०० | १३ | २७ | ४१ | ५५ | ०९ |
| ४ सिंह | घ. | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ |
| | प. | २३ | ३७ | ५२ | ०६ | २० | ३४ | ४८ | ०३ | १७ | ३१ | ४५ | ५९ | १३ | २७ | ४१ | ५५ | ०९ | २३ | ३७ | ५१ | १८ | १८ | ३२ | ४६ | ०० | १४ | २८ | ४२ | ५६ | १० |
| ५ कन्या | घ. | २८ | २८ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ |
| | प. | २४ | ३८ | ५२ | ०७ | २१ | ३५ | ५० | ०२ | १६ | ३० | ४५ | ५९ | १३ | २७ | ४२ | ५६ | १० | २३ | ३७ | ५१ | ५ | १९ | ३३ | ४७ | ०१ | १५ | २९ | ४३ | ५७ | ११ |
| ६ तुला | घ. | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ |
| | प. | २५ | ३९ | ५३ | ०७ | २२ | ३७ | ५१ | ०५ | २० | ३४ | ४८ | ०२ | १६ | ३१ | ४५ | ०० | १३ | २७ | ४१ | ५५ | ९ | २३ | ३७ | ४१ | ५५ | ०९ | २३ | ३७ | ५१ | ०५ |
| ७ वृश्चिक | घ. | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ |
| | प. | ३० | ४४ | ५८ | १२ | २६ | ४१ | ५६ | १० | २३ | ३५ | ४७ | ५८ | १२ | २६ | ३८ | ५० | ०२ | १६ | २८ | ४२ | ५४ | ०६ | १९ | ३१ | ४४ | ५६ | ०८ | २० | ३२ | ४४ |
| ८ धनु | घ. | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ |
| | प. | ५९ | ११ | २४ | ३७ | ४९ | ०२ | १५ | २७ | ३८ | ४७ | ५५ | ०४ | १३ | २२ | ३१ | ४० | ४९ | ५८ | ०६ | १५ | २४ | ३३ | ४२ | ५१ | ०० | ०८ | १७ | २६ | ३५ | ४४ |
| ९ मकर | घ. | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ |
| | प. | ५२ | ०१ | १० | १९ | २८ | ३७ | ४६ | ५५ | ०० | ०६ | १२ | १७ | २३ | २९ | ३४ | ४० | ४६ | ५२ | ५८ | ०४ | १० | १६ | २२ | २८ | ३४ | ३९ | ४५ | ५१ | ५७ | ०३ |
| १० कुम्भ | घ. | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ |
| | प. | ०८ | १३ | १९ | २५ | ३० | ३५ | ४१ | ४७ | ५२ | ५७ | ०१ | ०५ | ०९ | १४ | १९ | २३ | २८ | ३३ | ३७ | ४१ | ४५ | ५० | ५५ | ०० | ०४ | ०८ | १३ | १७ | २२ | २७ |
| ११ मीन | घ. | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| | प. | ३१ | ३५ | ३९ | ४४ | ४८ | ५२ | ५७ | ०२ | ७ | ११ | १५ | २० | २४ | २८ | ३३ | ३७ | ४१ | ४५ | ४९ | ५३ | ५८ | ०३ | ०८ | १३ | १८ | २२ | २७ | ३२ | ३७ | ४२ |

**अक्षांश १९°** **पलभा ४/७/५५**

**मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए**

| अंश | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० मेष | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ |
| | ६ | १४ | २१ | २९ | ३७ | ४५ | ५३ | १ | १० | १९ | २८ | ३६ | ४५ | ५४ | ३ | १२ | २१ | ३० | ३८ | ४७ | ५६ | ५ | १४ | २३ | ३२ | ४१ | ४९ | ५८ | ७ | १६ | २५ |
| १ वृष | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ |
| | २५ | ३४ | ४३ | ५१ | ० | ९ | १८ | २७ | ३७ | ४८ | ५८ | ८ | १९ | २९ | ३९ | ५० | ०० | १० | २० | ३० | ४१ | ५२ | २ | १२ | २३ | ३३ | ४३ | ५४ | ४ | १४ | २५ |
| २ मिथुन | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | २४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ |
| | २५ | ३५ | ४५ | ५६ | ६ | १६ | २७ | ३७ | ४८ | ५९ | १० | २२ | ३३ | ४४ | ५५ | ७ | १८ | २९ | ४० | ५१ | ३ | १४ | २५ | ३६ | ४८ | ५८ | १० | २१ | ३२ | ४३ | ५५ |
| ३ कर्क | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २३ | २३ | २३ |
| | ५५ | ६ | १७ | २८ | ३९ | ५१ | २ | १३ | २४ | ३५ | ४६ | ५७ | ८ | १९ | ३० | ४१ | ५२ | ४ | १५ | २६ | ३७ | ४८ | ५९ | १० | २१ | ३२ | ४३ | ५४ | ५ | १६ | २७ |
| ४ सिंह | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| | २७ | ३९ | ५० | १ | १२ | २३ | ३४ | ४५ | ५६ | ६ | १७ | २७ | ३८ | ४९ | ५९ | १० | २१ | ३१ | ४२ | ५३ | ३ | १४ | २४ | ३५ | ४६ | ५६ | ६ | १७ | २८ | ३९ | ५० |
| ५ कन्या | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ |
| | ५० | ० | ११ | २१ | ३२ | ४३ | ५३ | ४ | १५ | २५ | ३६ | ४६ | ५७ | ८ | १८ | २९ | ४० | ५० | १ | १२ | २२ | ३३ | ४३ | ५४ | ५ | १५ | २६ | ३७ | ४७ | ५८ | ०९ |
| ६ तुला | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ |
| | ९ | १९ | ३० | ४० | ५१ | ०२ | १२ | २३ | ३४ | ४५ | ४६ | ७ | १८ | २९ | ४० | ५१ | ३ | १४ | २५ | ३६ | ४७ | ५८ | ९ | २० | ३१ | ४२ | ५३ | ४ | १५ | २६ | ३७ |
| ७ वृश्चिक | ३९ | ३९ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ |
| | ३७ | ४९ | ०० | ११ | २२ | ३३ | ४४ | ५५ | ६ | १७ | २९ | ४० | ५१ | २ | १३ | २५ | ३६ | ४७ | ५८ | ९ | २२ | ३२ | ४२ | ५४ | ५ | १६ | २७ | ३९ | ५० | १ | १३ |
| ८ धनु | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० |
| | १३ | २४ | ३५ | ४६ | ४७ | ९ | २० | ३१ | ४१ | ५२ | २ | १२ | २३ | ३३ | ४२ | ५४ | ४ | १४ | २५ | ३५ | ४५ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३७ | ४७ | ५७ | ८ | १८ | २९ |
| ९ मकर | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ |
| | २९ | ३९ | ४९ | ०० | १० | २० | ३१ | ४१ | ५० | ५९ | ८ | १६ | २५ | ३४ | ४३ | ५२ | १ | १० | १८ | २७ | ३६ | ४५ | ५४ | ३ | १२ | २१ | २९ | ३८ | ४७ | ५६ | ५ |
| १० कुम्भ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ |
| | ५ | १४ | २३ | ३१ | ४० | ४९ | ५८ | ७ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४६ | ५४ | २ | १० | १८ | २९ | ३४ | ४२ | ५० | ५८ | ५ | १३ | २१ | २९ | ३७ | ४५ | ५३ | १ | ९ |
| ११ मीन | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ |
| | ९ | १७ | २४ | ३२ | ४० | ४८ | ५६ | ४ | १२ | २० | २८ | ३६ | ४३ | ५१ | ५९ | ७ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४७ | ५५ | २ | १० | १८ | २६ | ३४ | ४२ | ५० | ५८ | ६ |

## अक्षांश २३°

**पलभा ५/५/३८**

कोलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

| अंश | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०<br>मेष | २<br>५९ | ३<br>६ | ३<br>१४ | ३<br>२१ | ३<br>२९ | ३<br>३७ | ३<br>४४ | ३<br>५२ | ४<br>० | ४<br>९ | ४<br>१८ | ४<br>२६ | ४<br>३५ | ४<br>४४ | ४<br>५२ | ५<br>१ | ५<br>१० | ५<br>१८ | ५<br>२७ | ५<br>३५ | ५<br>४४ | ५<br>५३ | ६<br>१ | ६<br>१० | ६<br>१९ | ६<br>२७ | ६<br>३६ | ६<br>४४ | ६<br>५३ | ७<br>२ | ७<br>१० |
| १<br>वृष | ७<br>१० | ७<br>१९ | ७<br>२८ | ७<br>३६ | ७<br>४५ | ७<br>५४ | ८<br>२ | ८<br>११ | ८<br>२१ | ८<br>३१ | ८<br>४२ | ८<br>५२ | ९<br>२ | ९<br>१२ | ९<br>२८ | ९<br>३३ | ९<br>४३ | ९<br>५३ | १०<br>४ | १०<br>१४ | १०<br>२४ | १०<br>३५ | १०<br>४५ | १०<br>५५ | ११<br>५ | ११<br>१६ | ११<br>२६ | ११<br>३६ | ११<br>४६ | ११<br>५७ | १२<br>७ |
| २<br>मिथुन | १२<br>७ | १२<br>१७ | १२<br>२७ | १२<br>३७ | १२<br>४८ | १२<br>५८ | १३<br>९ | १३<br>१९ | १३<br>३० | १३<br>४१ | १३<br>५३ | १४<br>४ | १४<br>१५ | १४<br>२६ | १४<br>३८ | १४<br>४९ | १५<br>० | १५<br>११ | १५<br>२३ | १५<br>३४ | १५<br>४५ | १५<br>५६ | १६<br>८ | १६<br>१९ | १६<br>३० | १६<br>४२ | १६<br>५३ | १७<br>४ | १७<br>१५ | १७<br>२७ | १७<br>३८ |
| ३<br>कर्क | १७<br>३८ | १७<br>४९ | १८<br>० | १८<br>१२ | १८<br>२३ | १८<br>३४ | १८<br>४६ | १८<br>५७ | १९<br>८ | १९<br>१९ | १९<br>३१ | १९<br>४२ | १९<br>५३ | २०<br>५ | २०<br>१६ | २०<br>२७ | २०<br>३९ | २०<br>५० | २१<br>१ | २१<br>१२ | २१<br>२४ | २१<br>३५ | २१<br>४६ | २१<br>५८ | २२<br>९ | २२<br>२० | २२<br>३२ | २२<br>४३ | २२<br>५४ | २३<br>५ | २३<br>१७ |
| ४<br>सिंह | २३<br>१७ | २३<br>२८ | २३<br>३९ | २३<br>५१ | २४<br>२ | २४<br>१३ | २४<br>२५ | २४<br>३६ | २४<br>४७ | २४<br>५८ | २५<br>९ | २५<br>२० | २५<br>३० | २५<br>४१ | २५<br>५२ | २६<br>३ | २६<br>१४ | २६<br>२५ | २६<br>३६ | २६<br>४७ | २६<br>५८ | २७<br>९ | २७<br>२० | २७<br>३१ | २७<br>४२ | २७<br>५३ | २८<br>४ | २८<br>१४ | २८<br>२५ | २८<br>३६ | २८<br>४७ |
| ५<br>कन्या | २८<br>४७ | २८<br>५८ | २९<br>९ | २९<br>२० | २९<br>३१ | २९<br>४२ | २९<br>५३ | ३०<br>४ | ३०<br>१५ | ३०<br>२६ | ३०<br>३७ | ३०<br>४८ | ३०<br>५८ | ३१<br>९ | ३१<br>२० | ३१<br>३१ | ३१<br>४२ | ३१<br>५३ | ३२<br>४ | ३२<br>१५ | ३२<br>२६ | ३२<br>३७ | ३२<br>४८ | ३२<br>५९ | ३३<br>१० | ३३<br>२१ | ३३<br>३२ | ३३<br>४२ | ३३<br>५३ | ३४<br>४ | ३४<br>१५ |
| ६<br>तुला | ३४<br>१५ | ३४<br>२६ | ३४<br>३७ | ३४<br>४८ | ३४<br>५९ | ३५<br>१० | ३५<br>२० | ३५<br>३२ | ३५<br>४३ | ३५<br>५४ | ३६<br>६ | ३६<br>१७ | ३६<br>२८ | ३६<br>४० | ३६<br>५१ | ३७<br>२ | ३७<br>१४ | ३७<br>२५ | ३७<br>३६ | ३७<br>४७ | ३७<br>५९ | ३८<br>१० | ३८<br>२१ | ३८<br>३३ | ३८<br>४४ | ३८<br>५५ | ३९<br>७ | ३९<br>१८ | ३९<br>२९ | ३९<br>४० | ३९<br>५२ |
| ७<br>वृश्चिक | ३९<br>५२ | ४०<br>३ | ४०<br>१४ | ४०<br>२६ | ४०<br>३७ | ४०<br>४८ | ४०<br>५९ | ४१<br>११ | ४१<br>२२ | ४१<br>३३ | ४१<br>४५ | ४१<br>५६ | ४२<br>७ | ४२<br>१८ | ४२<br>३० | ४२<br>४१ | ४२<br>५२ | ४३<br>३ | ४३<br>१५ | ४३<br>२६ | ४३<br>३७ | ४३<br>४९ | ४४<br>०० | ४४<br>११ | ४४<br>२२ | ४४<br>३४ | ४४<br>४५ | ४४<br>५६ | ४५<br>७ | ४५<br>१९ | ४५<br>३० |
| ८<br>धनु | ४५<br>३० | ४५<br>४१ | ४५<br>५२ | ४६<br>४ | ४६<br>१५ | ४६<br>२६ | ४६<br>३८ | ४६<br>४९ | ४६<br>५९ | ४७<br>९ | ४७<br>२० | ४७<br>३० | ४७<br>४० | ४७<br>५० | ४८<br>१ | ४८<br>११ | ४८<br>२१ | ४८<br>३१ | ४८<br>४२ | ४८<br>५२ | ४९<br>२ | ४९<br>१३ | ४९<br>२३ | ४९<br>३३ | ४९<br>४३ | ४९<br>५४ | ५०<br>४ | ५०<br>१४ | ५०<br>२४ | ५०<br>३५ | ५०<br>४५ |
| ९<br>मकर | ५०<br>४५ | ५०<br>५५ | ५१<br>५ | ५१<br>१६ | ५१<br>२६ | ५१<br>३६ | ५१<br>४६ | ५१<br>५७ | ५२<br>५ | ५२<br>१४ | ५२<br>२३ | ५२<br>३१ | ५२<br>४० | ४२<br>४९ | ५२<br>५७ | ५३<br>६ | ५३<br>१४ | ५३<br>२३ | ५३<br>३२ | ५३<br>४० | ५३<br>४९ | ५३<br>५८ | ५४<br>६ | ५४<br>१५ | ५४<br>२४ | ५४<br>३२ | ५४<br>४१ | ५४<br>४९ | ५४<br>५८ | ५५<br>७ | ५५<br>१५ |
| १०<br>कुम्भ | ५५<br>१५ | ५५<br>२४ | ५५<br>३३ | ५५<br>४१ | ५५<br>५० | ५५<br>५९ | ५६<br>७ | ५६<br>१६ | ५६<br>२३ | ५६<br>३१ | ५६<br>३९ | ५६<br>४६ | ५६<br>५४ | ५७<br>१ | ५७<br>९ | ५७<br>१७ | ५७<br>२४ | ५७<br>३२ | ५७<br>३९ | ५७<br>४७ | ५७<br>५५ | ५८<br>२ | ५८<br>१० | ५८<br>१७ | ५८<br>२५ | ५८<br>३३ | ४८<br>४१ | ५८<br>४७ | ५८<br>५५ | ५९<br>३ | ५९<br>११ |
| ११<br>मीन | ५९<br>११ | ५९<br>१८ | ५९<br>२६ | ५९<br>३३ | ५९<br>४१ | ५९<br>४९ | ५९<br>५६ | ०<br>४ | ०<br>११ | ०<br>१९ | ०<br>२७ | ०<br>३४ | ०<br>४२ | ०<br>४९ | ०<br>५७ | १<br>५ | १<br>१२ | १<br>२० | १<br>२७ | १<br>३५ | १<br>४३ | १<br>५० | १<br>५८ | २<br>५ | २<br>१३ | २<br>२१ | २<br>२८ | २<br>३६ | २<br>४३ | २<br>५१ | २<br>५९ |

## अक्षांश २७°

**पलभा ६/६/५०**

जयपुर, आगरा, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, कन्नौज, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, इटावा, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रूखाबाद, भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

| अंश | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०<br>मेष | २<br>५० | २<br>५७ | ३<br>४ | ३<br>१२ | ३<br>१९ | ३<br>२६ | ३<br>३३ | ३<br>४१ | ३<br>४९ | ३<br>५७ | ४<br>६ | ४<br>१४ | ४<br>२२ | ४<br>३१ | ४<br>३९ | ४<br>४७ | ४<br>५६ | ५<br>४ | ५<br>१२ | ५<br>२१ | ५<br>२९ | ५<br>३७ | ५<br>४६ | ५<br>५४ | ६<br>२ | ६<br>११ | ६<br>१९ | ६<br>२७ | ६<br>३६ | ६<br>४४ | ६<br>५२ |
| १<br>वृष | ६<br>५२ | ७<br>१ | ७<br>९ | ७<br>१७ | ७<br>२६ | ७<br>३४ | ७<br>४२ | ७<br>५१ | ८<br>१ | ८<br>११ | ८<br>२१ | ८<br>३१ | ८<br>४१ | ८<br>५१ | ९<br>१ | ९<br>११ | ९<br>२२ | ९<br>३२ | ९<br>४२ | ९<br>५२ | १०<br>२ | १०<br>१२ | १०<br>२२ | १०<br>३२ | १०<br>४२ | १०<br>५२ | ११<br>३ | ११<br>१३ | ११<br>२३ | ११<br>३३ | ११<br>४३ |
| २<br>मिथुन | ११<br>४३ | ११<br>५३ | १२<br>३ | १२<br>१३ | १२<br>२३ | १२<br>३३ | १२<br>४४ | १२<br>५४ | १३<br>५ | १३<br>१६ | १३<br>२८ | १३<br>३९ | १३<br>५१ | १४<br>२ | १४<br>१४ | १४<br>२५ | १४<br>३६ | १४<br>४८ | १४<br>५९ | १५<br>११ | १५<br>२२ | १५<br>३४ | १५<br>४५ | १५<br>५७ | १६<br>८ | १६<br>१९ | १६<br>३१ | १६<br>४२ | १६<br>५४ | १७<br>५ | १७<br>१७ |
| ३<br>कर्क | १७<br>१७ | १७<br>२८ | १७<br>३९ | १७<br>५१ | १८<br>२ | १८<br>१४ | १८<br>२५ | १८<br>३७ | १८<br>४८ | १९<br>०० | १९<br>११ | १९<br>२३ | १९<br>३५ | १९<br>४६ | १९<br>५८ | २०<br>९ | २०<br>२१ | २०<br>३३ | २०<br>४४ | २०<br>५६ | २१<br>७ | २१<br>१९ | २१<br>३१ | २१<br>४२ | २१<br>५४ | २२<br>५ | २२<br>१७ | २२<br>२९ | २२<br>४० | २२<br>५२ | २३<br>३ |
| ४<br>सिंह | २३<br>३ | २३<br>१५ | २३<br>२७ | २३<br>३८ | २३<br>५० | २४<br>१ | २४<br>१३ | २४<br>२५ | २४<br>३६ | २४<br>४७ | २४<br>५९ | २५<br>१० | २५<br>२१ | २५<br>३२ | २५<br>४४ | २५<br>५५ | २६<br>६ | २६<br>१८ | २६<br>२९ | २६<br>४० | २६<br>५२ | २७<br>३ | २७<br>१४ | २७<br>२५ | २७<br>३७ | २७<br>४८ | २७<br>५९ | २८<br>११ | २८<br>२२ | २८<br>३३ | २८<br>४५ |
| ५<br>कन्या | २८<br>४५ | २८<br>५६ | २९<br>७ | २९<br>१८ | २९<br>३० | २९<br>४१ | २९<br>५२ | ३०<br>०४ | ३०<br>१५ | ३०<br>२६ | ३०<br>३८ | ३०<br>४९ | ३१<br>०० | ३१<br>११ | ३१<br>२३ | ३१<br>३४ | ३१<br>४५ | ३१<br>५७ | ३२<br>८ | ३२<br>१९ | ३२<br>३१ | ३२<br>४२ | ३२<br>५३ | ३३<br>४ | ३३<br>१६ | ३३<br>२७ | ३३<br>३८ | ३३<br>५० | ३४<br>१ | ३४<br>१२ | ३४<br>२४ |
| ६<br>तुला | ३४<br>२४ | ३४<br>३५ | ३४<br>४६ | ३४<br>५७ | ३५<br>९ | ३५<br>२० | ३५<br>३१ | ३५<br>४३ | ३५<br>५४ | ३६<br>६ | ३६<br>१७ | ३६<br>२९ | ३६<br>४१ | ३६<br>५२ | ३७<br>०४ | ३७<br>१५ | ३७<br>२७ | ३७<br>३९ | ३७<br>५० | ३८<br>२ | ३८<br>१३ | ३८<br>२५ | ३८<br>३७ | ३८<br>४८ | ३९<br>०० | ३९<br>११ | ३९<br>२३ | ३९<br>३५ | ३९<br>४६ | ३९<br>५८ | ४०<br>०९ |
| ७<br>वृश्चिक | ४०<br>९ | ४०<br>२१ | ४०<br>३३ | ४०<br>४४ | ४०<br>५६ | ४१<br>७ | ४१<br>१९ | ४१<br>३१ | ४१<br>४२ | ४१<br>५३ | ४२<br>५ | ४२<br>१६ | ४२<br>२८ | ४२<br>३९ | ४२<br>५१ | ४३<br>२ | ४३<br>१४ | ४३<br>२५ | ४३<br>३६ | ४३<br>४८ | ४३<br>५९ | ४४<br>११ | ४४<br>२२ | ४४<br>३४ | ४४<br>४५ | ४४<br>५६ | ४५<br>०८ | ४५<br>१९ | ४५<br>३१ | ४५<br>४२ | ४५<br>५४ |
| ८<br>धनु | ४५<br>५४ | ४६<br>५ | ४६<br>१६ | ४६<br>२८ | ४६<br>३९ | ४६<br>५१ | ४७<br>२ | ४७<br>१४ | ४७<br>२४ | ४७<br>३४ | ४७<br>४४ | ४७<br>५४ | ४८<br>४ | ४८<br>१४ | ४८<br>२४ | ४८<br>३४ | ४८<br>४५ | ४८<br>५५ | ४९<br>५ | ४९<br>१५ | ४९<br>२५ | ४९<br>३६ | ४९<br>४५ | ४९<br>५५ | ५०<br>५ | ५०<br>१५ | ५०<br>२६ | ५०<br>३६ | ५०<br>४६ | ५०<br>५६ | ५१<br>०६ |
| ९<br>मकर | ५१<br>६ | ५१<br>१६ | ५१<br>२६ | ५१<br>३६ | ५१<br>४६ | ५१<br>५६ | ५२<br>०७ | ५२<br>१७ | ५२<br>२५ | ५२<br>३३ | ५२<br>४२ | ५२<br>५० | ५२<br>५८ | ५३<br>७ | ५३<br>१५ | ५३<br>२३ | ४३<br>३२ | ५३<br>४० | ५३<br>४८ | ५३<br>५७ | ५४<br>५ | ५४<br>१३ | ५४<br>२२ | ५४<br>३० | ५४<br>३८ | ५४<br>४७ | ५४<br>५५ | ५५<br>३ | ५५<br>१२ | ५५<br>२० | ५५<br>२८ |
| १०<br>कुम्भ | ५५<br>२८ | ५५<br>३७ | ५५<br>४५ | ५५<br>५३ | ५६<br>२ | ५६<br>१० | ५६<br>१८ | ५६<br>२७ | ५६<br>३४ | ५६<br>४१ | ५६<br>४८ | ५६<br>५६ | ५७<br>०३ | ५७<br>१० | ५७<br>१७ | ५७<br>२४ | ५७<br>३२ | ५७<br>३९ | ५७<br>४६ | ५७<br>५३ | ५८<br>१ | ५८<br>८ | ५८<br>१५ | ५८<br>२२ | ५८<br>३० | ५८<br>३७ | ५८<br>४४ | ५८<br>५१ | ५८<br>५९ | ५९<br>६ | ५९<br>१३ |
| ११<br>मीन | ५९<br>१३ | ५९<br>२० | ५९<br>२७ | ५९<br>३५ | ५९<br>४२ | ५९<br>४९ | ५९<br>५६ | ०<br>४ | ०<br>११ | ०<br>१८ | ०<br>२५ | ०<br>३३ | ०<br>४० | ०<br>४७ | ०<br>५४ | १<br>१ | १<br>९ | १<br>१६ | १<br>२३ | १<br>३० | १<br>३८ | १<br>४५ | १<br>५२ | १<br>५९ | २<br>७ | २<br>१४ | २<br>२१ | २<br>२८ | २<br>३६ | २<br>४३ | २<br>५० |

## लग्न सारिणी ( अक्षांश– २८° )

( अलीगढ़, बरेली, बुलन्दशहर, वृन्दावन, चुरू, नारनौल, झुंझुनूं, बीकानेर, रामगढ़, फरीदाबाद नगरों के लिए )

| अंश | | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० मेष | घ. | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| | प. | ४८ | ५६ | ०३ | १० | १७ | २४ | ३१ | ३९ | ४७ | ५५ | ०३ | १२ | २० | २८ | ३६ | ४४ | ५३ | ०१ | १० | १८ | २६ | ३४ | ४३ | ५१ | ५९ | ०७ | १६ | २४ | ३३ | ४० |
| १ वृष | घ. | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ |
| | प. | ४९ | ५७ | ०५ | १४ | २२ | ३० | ३८ | ४७ | ५५ | ०७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०८ | १८ | २८ | ३८ | ४८ | ५८ | ०८ | १८ | २८ |
| २ मिथुन | घ. | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ |
| | प. | ३८ | ४८ | ५८ | ०८ | १८ | २८ | ३९ | ४९ | ० | १२ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ०९ | २० | ३२ | ४३ | ५५ | ०६ | १८ | २९ | ४१ | ५२ | ०३ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | ०१ |
| ३ कर्क | घ. | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| | प. | १२ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २१ | ३३ | ४४ | ५६ | ०८ | १९ | ३१ | ४३ | ५४ | ०६ | १८ | २९ | ४१ | ५३ | ०४ | १६ | २८ | ३९ | ५१ | ०३ | १४ | २६ | ३८ | ४९ |
| ४ सिंह | घ. | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ |
| | प. | ०१ | १३ | २४ | ३६ | ४८ | ५९ | ११ | २३ | ३४ | ४५ | ५७ | ०८ | १९ | ३१ | ४२ | ५४ | ०५ | १६ | २८ | ३९ | ५० | ०२ | १३ | २४ | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २१ | ३३ |
| ५ कन्या | घ. | २८ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ |
| | प. | ४४ | ५५ | ०७ | १८ | २९ | ४१ | ५२ | ०४ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | ० | १२ | २३ | ३५ | ४६ | ५७ | ०९ | २० | ३१ | ४३ | ५४ | ०५ | २० | २८ | ४० | ५१ | ०२ | १४ |
| ६ तुला | घ. | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० |
| | प. | २५ | ३६ | ४८ | ५९ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ०८ | २० | ३१ | ४३ | ५५ | ०६ | १८ | ३० | ४१ | ५३ | ०५ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ०३ | १५ | २६ | ३८ | ५० | ०१ |
| ७ वृश्चिक | घ. | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ |
| | प. | १३ | २५ | ३६ | ४८ | ० | ११ | २३ | ३५ | ४६ | ५८ | ०९ | २० | ३२ | ४३ | ५५ | ०६ | १८ | २९ | ४१ | ५२ | ०४ | १५ | २७ | ३८ | ५० | ०१ | १२ | २४ | ३५ | ४७ |
| ८ धनु | घ. | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ |
| | प. | ५८ | १० | २१ | ३३ | ४४ | ५६ | ०७ | १८ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ०९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ० | ११ | २९ | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० |
| ९ मकर | घ. | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ |
| | प. | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० | ११ | २१ | २९ | ३७ | ४५ | ५४ | ०२ | १० | १८ | २७ | ३५ | ४३ | ५२ | ० | ०८ | १६ | २५ | ३३ | ४१ | ४९ | ५८ | ०६ | १४ | २२ |
| १० कुम्भ | घ. | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ |
| | प. | ३१ | ३९ | ४७ | ५६ | ०४ | १२ | २० | २९ | ३६ | ४३ | ५० | ५८ | ०४ | १२ | १९ | २६ | ३३ | ४० | ४७ | ५५ | ०२ | ०९ | १६ | २३ | ३० | ३८ | ४५ | ५२ | ० | ०६ |
| ११ मीन | घ. | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| | प. | १३ | २१ | २८ | ३५ | ४२ | ४९ | ५६ | ०४ | ११ | १८ | २५ | ३२ | ३९ | ४७ | ५४ | ०१ | ०८ | १५ | २२ | ३० | ३७ | ४४ | ५१ | ५८ | ०५ | १३ | २० | २७ | ३४ | ४१ |

## लग्न सारणी अक्षांश २९° उत्तर पलभा ( ६/३९/०५ )

दिल्ली, अमरोहा, रोहतक, जीन्द, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाज़ियाबाद आदि के लिए उपयोगी

| अंश | | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० मेष | घ. | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| | प. | ४८ | ५५ | २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ३८ | ४६ | ५४ | २ | ११ | १९ | २७ | ३५ | ४४ | ५२ | ० | ९ | १७ | २५ | ३३ | ४२ | ५० | ५८ | ६ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४८ |
| १ वृष | घ. | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ |
| | प. | ४८ | ५६ | ४ | १३ | २१ | २९ | ३७ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ |
| २ मिथुन | घ. | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ | १७ |
| | प. | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३८ | ४८ | ५९ | ११ | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ८ | १९ | ३१ | ४२ | ५४ | ५ | १७ | २८ | ४० | ५१ | ३ | १४ | २५ | ३७ | ४८ | ० | ११ |
| ३ कर्क | घ. | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २३ |
| | प. | ११ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४३ | ५५ | ७ | १८ | ३० | ४२ | ५३ | ५ | १७ | २८ | ४० | ५२ | ३ | १५ | २७ | ३८ | ५० | २ | १३ | २५ | ३७ | ४८ | ० |
| ४ सिंह | घ. | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २५ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| | प. | ० | १२ | २३ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३० | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २७ | ३८ | ५० | १ | १३ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २१ | ३२ | ४४ |
| ५ कन्या | घ. | २८ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ |
| | प. | ४४ | ५५ | ७ | १८ | २९ | ४१ | ५२ | ४ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | १ | १२ | २३ | ३५ | ४६ | ५८ | ९ | २० | ३२ | ४३ | ५५ | ६ | १७ | २९ | ४० | ५२ | ३ | १४ | २६ |
| ६ तुला | घ. | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० |
| | प. | २६ | ३७ | ४९ | ० | ११ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ९ | २१ | ३२ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३१ | ४२ | ५४ | ६ | १७ | २९ | ४१ | ५२ | ४ | १६ | २७ | ३९ | ५१ | २ | १४ |
| ७ वृश्चिक | घ. | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ |
| | प. | १४ | २६ | ३७ | ४९ | १ | १२ | २४ | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २१ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३० | ४२ | ५३ | ५ | १६ | २८ | ३९ | ५० | २ | १३ | २५ | ३६ | ४८ | ५९ |
| ८ धनु | घ. | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ |
| | प. | ५९ | ११ | २२ | ३४ | ४५ | ५७ | ८ | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ |
| ९ मकर | घ. | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ |
| | प. | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २२ | ३० | ३८ | ४६ | ५५ | ३ | ११ | १९ | २८ | ३६ | ४४ | ५२ | १ | ९ | १७ | २६ | ३४ | ४२ | ५० | ५९ | ७ | १५ | २३ | ३२ |
| १० कुम्भ | घ. | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ |
| | प. | ३२ | ४० | ४८ | ५६ | ५ | १३ | २१ | ३० | ३७ | ४४ | ५१ | ५८ | ५ | १२ | १९ | २७ | ३४ | ४१ | ४८ | ५५ | २ | ९ | १७ | २४ | ३१ | ३८ | ४५ | ५२ | ५९ | ६ | १४ |
| ११ मीन | घ. | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| | प. | १४ | २१ | २८ | ३५ | ४२ | ४९ | ५६ | ४ | ११ | १८ | २५ | ३२ | ३९ | ४६ | ५३ | १ | ८ | १५ | २२ | २९ | ३६ | ४३ | ५१ | ५८ | ५ | १२ | १९ | २६ | ३३ | ४१ | ४८ |

## लग्न सारणी अक्षांश ( ३०० ) पलभा ६/५५/४३

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, कुराली, खन्ना, देहरादून, नाभा, नाहन, पटियाला, भटिण्डा, रोपड़, फाज़िल्का, सहारनपुर, फरीदकोट इत्यादि

| अंश | | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०<br>मेष | घ. | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| | प. | ४४ | ५१ | ५८ | ५ | १२ | १९ | २६ | ३२ | ४१ | ४९ | ५७ | ५ | १३ | २१ | २९ | ३८ | ४६ | ५४ | २ | १० | १८ | २६ | ३४ | ४३ | ५१ | ५९ | ७ | १५ | २३ | ३१ | ४० |
| १<br>वृष | घ. | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ |
| | प. | ४० | ४८ | ५६ | ४ | १२ | २० | २८ | ३६ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २६ |
| २<br>मिथुन | घ. | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ |
| | प. | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३६ | ४८ | ०० | ११ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४३ | ५५ | ६ | १८ | २९ | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २७ | ३९ | ५० | २ |
| ३<br>कर्क | घ. | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| | प. | २ | १३ | २५ | ३६ | ४८ | ५९ | ११ | २२ | ३४ | ४६ | ५८ | १० | २१ | ३३ | ४५ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४४ | ५६ | ८ | १९ | ३१ | ४३ | ५५ | ७ | १८ | ३० | ४२ | ५४ |
| ४<br>सिंह | घ. | २२ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| | प. | ५४ | ६ | १७ | २९ | ४१ | ५३ | ५ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ३ | १४ | २६ | ३७ | ४९ | १ | १२ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ८ | १९ | ३१ | ४३ |
| ५<br>कन्या | घ. | २८ | २८ | २९ | २९ | २१ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ |
| | प. | ४३ | ५४ | ६ | १७ | २९ | ४० | ५२ | ३ | १५ | २७ | ३८ | ५० | १ | १३ | २४ | ३६ | ४८ | ५९ | ११ | २२ | ३४ | ४५ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४३ | ५५ | ६ | १८ | ३० |
| ६<br>तुला | घ. | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० |
| | प. | ३० | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २७ | ३९ | ५० | २ | १४ | २६ | ३८ | ४९ | १ | १३ | २५ | ३७ | ४८ | ० | १२ | २४ | ३६ | ४७ | ५९ | ११ | २३ | ३५ | ४६ | ५८ | १० | २२ |
| ७<br>वृश्चिक | घ. | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ |
| | प. | २२ | ३४ | ४५ | ५७ | ९ | २१ | ३३ | ४४ | ५६ | ८ | १९ | ३१ | ४२ | ५४ | ५ | १७ | २८ | ४० | ५१ | ३ | १४ | २६ | ३७ | ४९ | १ | १२ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | १० |
| ८<br>धनु | घ. | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ |
| | प. | १० | २१ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० |
| ९<br>मकर | घ. | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ |
| | प. | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ३९ | ४७ | ५५ | ३ | ११ | १९ | २७ | ३६ | ४४ | ५२ | ०० | ८ | १६ | २४ | ३२ | ४१ | ४९ | ५७ | ५ | १३ | २१ | २९ | ३८ |
| १०<br>कुम्भ | घ. | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ | ५९ |
| | प. | ३८ | ४६ | ५४ | २ | १० | १८ | २६ | ३४ | ४१ | ४८ | ५५ | २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ३७ | ४४ | ५१ | ५८ | ५ | १२ | १९ | २६ | ३३ | ४० | ४७ | ५४ | १ | ८ | १५ |
| ११<br>मीन | घ. | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| | प. | १५ | २२ | २९ | ३६ | ४३ | ५० | ५७ | ३ | १० | १७ | २४ | ३१ | ३८ | ४५ | ५२ | ५९ | ६ | १३ | २० | २७ | ३४ | ४१ | ४८ | ५५ | २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ३७ | ४४ |

## लग्न सारणी अक्षांश ३१ ।२० उत्तर पलभा ( ७ ।१७ ।२१ )

जालन्धर, लुधियाना, चण्डीगढ़, रोपड़, फगवाड़ा, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोज़पुर, शिमला, मण्डी, हमीरपुर, ऊना आदि के लिए

| अंश | | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०<br>मेष | घ. | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| | प. | ४१ | ४८ | ५५ | २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ३८ | ४६ | ५४ | २ | १० | १८ | २६ | ३४ | ४२ | ५० | ५८ | ६ | १४ | २२ | ३० | ३८ | ४६ | ५४ | २ | १० | १८ | २६ | ३४ |
| १<br>वृष | घ. | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ |
| | प. | ३४ | ४२ | ५० | ५८ | ६ | १४ | २३ | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ०० | १० | २० |
| २<br>मिथुन | घ. | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ |
| | प. | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४१ | ५३ | ५ | १६ | २७ | ३८ | ५० | ३ | १४ | २५ | ३७ | ४८ | ० | ११ | २३ | ३४ | ४६ | ५८ | ०९ | २१ | ३२ | ४४ | ५५ |
| ३<br>कर्क | घ. | १६ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| | प. | ५५ | ०७ | १९ | ३१ | ४३ | ५४ | ०६ | १७ | २९ | ४१ | ५३ | ५ | १७ | २९ | ४० | ५२ | ४ | १६ | २८ | ४० | ५२ | ०३ | १५ | २७ | ३९ | ५१ | ०३ | १५ | २७ | ३८ | ५० |
| ४<br>सिंह | घ. | २२ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| | प. | ५० | २ | १४ | २६ | ३८ | ५० | २ | १३ | २५ | ३७ | ४८ | ०० | १२ | २३ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ०८ | २० | ३२ | ४३ | ५५ | ७ | १८ | ३० | ४२ |
| ५<br>कन्या | घ. | २८ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ |
| | प. | ४२ | ५३ | ०५ | १७ | २८ | ४० | ५२ | ०३ | १५ | २७ | ३८ | ५० | ०२ | १३ | २५ | ३७ | ४८ | ० | १२ | २३ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३४ | ४६ | ५८ | ०९ | २१ | ३३ |
| ६<br>तुला | घ. | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० | ४० |
| | प. | ३३ | ४४ | ५६ | ०८ | १९ | ३१ | ४३ | ५४ | ६ | १८ | २९ | ४२ | ५४ | ०६ | १७ | २९ | ४१ | ५३ | ०५ | १७ | २९ | ४१ | ५३ | ५ | १७ | २९ | ४१ | ५३ | ०५ | १६ | २८ |
| ७<br>वृश्चिक | घ. | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ |
| | प. | २८ | ४० | ५२ | ०४ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ०३ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | ०१ | १२ | २४ | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ०८ | २० | ३२ | ४४ | ५५ | ०७ | १८ |
| ८<br>धनु | घ. | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ |
| | प. | १८ | ३० | ४२ | ५३ | ०५ | १६ | २८ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ |
| ९<br>मकर | घ. | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ |
| | प. | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १८ | २८ | ३८ | ४७ | ५५ | ०३ | ११ | १९ | २७ | ३४ | ४३ | ५१ | ५९ | ७ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४७ | ५५ | ३ | ११ | १९ | २७ | ३५ | ४३ |
| १०<br>कुम्भ | घ. | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ | ५९ |
| | प. | ४३ | ५१ | ५९ | ७ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४६ | ५३ | ०० | ७ | १४ | २० | २७ | ३४ | ४१ | ४७ | ५४ | ०१ | ८ | १५ | २१ | २८ | ३५ | ४१ | ४८ | ५५ | ०२ | ९ | १६ |
| ११<br>मीन | घ. | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| | प. | १६ | २३ | २९ | ३६ | ४३ | ५० | ५७ | ३ | १० | १७ | २४ | ३१ | ३८ | ४४ | ५१ | ५८ | ५ | १२ | १९ | २६ | ३३ | ४० | ४६ | ५३ | ० | ६ | १३ | २० | २७ | ३४ | ४१ |

## लग्न सारिणी ( अक्षांश– ३२° )

( अमृतसर, कठुआ, कुल्लू, गुरदासपुर, जोगिन्द्रनगर ( हि.प्र. ), दीनानगर, धर्मशाला, सुन्दरनगर, कांगड़ा, सरकाघाट आदि नगरों के लिए )

| अंश | | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० मेष | घ. | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ |
| | प. | ४० | ४७ | ५३ | ० | ०७ | १४ | २१ | २७ | ३५ | ४३ | ५१ | ५९ | ०७ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४७ | ५५ | ०३ | ११ | १९ | २७ | ३५ | ४३ | ५१ | ५९ | ०७ | १५ | २३ |
| १ वृष | घ. | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ |
| | प. | ३१ | ३९ | ४७ | ५५ | ०३ | ११ | १९ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०७ |
| २ मिथुन | घ. | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ |
| | प. | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०६ | १६ | २६ | ३८ | ५० | ०१ | १३ | २४ | ३६ | ४७ | ५९ | ११ | २२ | ३४ | ४५ | ५७ | ०८ | २० | ३१ | ४३ | ५५ | ०६ | १८ | २९ | ४१ |
| ३ कर्क | घ. | १६ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| | प. | ५२ | ०४ | १६ | २७ | ३९ | ५० | ०३ | १३ | २५ | ३७ | ४९ | ०१ | १३ | २५ | ३७ | ४९ | ०१ | १३ | २५ | ३७ | ४९ | ० | १२ | २४ | ३६ | ४८ | ० | १२ | २४ | ३६ |
| ४ सिंह | घ. | २२ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ |
| | प. | ४८ | ० | १२ | २४ | ३६ | ४८ | ० | ११ | २३ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३४ | ४६ | ५७ | ०९ | २० | ३२ | ४४ | ५६ | ०७ | १९ | ३१ | ४३ | ५५ | ०६ | १८ | ३० |
| ५ कन्या | घ. | २८ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ |
| | प. | ४१ | ५३ | ०५ | १६ | २८ | ४० | ५२ | ०३ | १५ | २७ | ३९ | ५० | ०२ | १४ | २६ | ३७ | ४९ | ०१ | १२ | २४ | ३६ | ४८ | ५९ | ११ | २३ | ३५ | ४६ | ५८ | १० | २२ |
| ६ तुला | घ. | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० |
| | प. | ३३ | ४५ | ५७ | ०८ | २० | ३२ | ४४ | ५५ | ०७ | १९ | ३१ | ४३ | ५५ | ०७ | १९ | ३१ | ४३ | ५५ | ०७ | १९ | ३१ | ४२ | ५४ | ०६ | १८ | ३० | ४२ | ५४ | ०६ | १८ |
| ७ वृश्चिक | घ. | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ |
| | प. | ३० | ४२ | ५४ | ०६ | १८ | ३० | ४१ | ५३ | ०५ | १७ | २८ | ४० | ५१ | ०३ | १४ | २६ | ३८ | ४९ | ०१ | १२ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ०८ |
| ८ धनु | घ. | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ |
| | प. | १९ | ३१ | ४३ | ५४ | ०६ | १७ | २९ | ४१ | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० |
| ९ मकर | घ. | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ |
| | प. | ३० | ४० | ५० | ० | १० | १९ | २९ | ३९ | ४७ | ५५ | ०३ | ११ | १९ | २७ | ३५ | ४३ | ५१ | ० | ०७ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४७ | ५५ | ०३ | ११ | १९ | २७ | ३५ |
| १० कुम्भ | घ. | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ |
| | प. | ४३ | ५१ | ५९ | ०७ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४६ | ५३ | ०० | ०७ | १३ | २० | २७ | ३४ | ४१ | ४७ | ५४ | ०१ | ०८ | १५ | २१ | २८ | ३५ | ४२ | ४९ | ५५ | ०२ | ०९ |
| ११ मीन | घ. | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| | प. | १६ | २३ | २९ | ३७ | ४३ | ५० | ५७ | ०३ | १० | १७ | २४ | ३१ | ३७ | ४४ | ५१ | ५८ | ०५ | ११ | १८ | २५ | ३२ | ३९ | ४५ | ५२ | ० | ६ | १२ | १९ | २६ | ३३ |

## लग्न सारणी ( अक्षांश ३३° ) पलभा ७।४८।३०

अखनूर, जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डोडा, रामबन, डल्हौज़ी आदि

| अंश | | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० मेष | घ. | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| | प. | ३७ | ४४ | ५१ | ५८ | ४ | ११ | १८ | २४ | ३२ | ४० | ४८ | ५६ | ४ | १२ | २० | २८ | ३५ | ४३ | ५१ | ५९ | ७ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४७ | ५४ | २ | १० | १८ | २६ |
| १ वृष | घ. | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ |
| | प. | २६ | ३४ | ४२ | ५० | ५८ | ६ | १३ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ०० | १० |
| २ मिथुन | घ. | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ |
| | प. | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ५९ | ९ | १९ | ३१ | ४३ | ५४ | ६ | १७ | २९ | ४१ | ५२ | ४ | १५ | २७ | ३९ | ५० | २ | १३ | २५ | ३७ | ४८ | ०० | ११ | २३ | ३५ | ४६ |
| ३ कर्क | घ. | १६ | १६ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| | प. | ४६ | ५८ | ९ | २१ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३१ | ४३ | ५५ | ८ | २० | ३२ | ४४ | ५६ | ८ | २० | ३२ | ४४ | ५६ | ८ | २० | ३२ | ४४ | ५६ | ८ | २० | ३२ | ४४ |
| ४ सिंह | घ. | २२ | २२ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| | प. | ४४ | ५६ | ८ | २० | ३२ | ४४ | ५६ | ८ | २० | ३२ | ४४ | ५६ | ८ | १९ | ३० | ४३ | ५५ | ७ | १९ | ३० | ४२ | ५४ | ६ | १८ | ३० | ४१ | ५३ | ५ | १७ | २९ | ४१ |
| ५ कन्या | घ. | २८ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ |
| | प. | ४१ | ५२ | ४ | १६ | २८ | ४० | ५२ | ३ | १५ | २७ | ३९ | ५१ | ३ | १४ | २६ | ३८ | ५० | २ | १४ | २५ | ३७ | ४९ | १ | १३ | २५ | ३६ | ४८ | ० | १२ | २४ | ३६ |
| ६ तुला | घ. | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० | ४० |
| | प. | ३६ | ४७ | ५९ | ११ | २३ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३४ | ४६ | ५९ | ११ | २३ | ३५ | ४७ | ५९ | ११ | २३ | ३५ | ४७ | ५९ | ११ | २३ | ३५ | ४७ | ५९ | ११ | २३ | ३५ |
| ७ वृश्चिक | घ. | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ |
| | प. | ३५ | ४७ | ५९ | ११ | २३ | ३५ | ४७ | ५९ | ११ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ९ | २१ | ३२ | ४४ | ५५ | ७ | १९ | ३० | ४२ | ५३ | ५ | १७ | २८ | ४० | ५१ | ३ | १५ | २६ |
| ८ धनु | घ. | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ |
| | प. | २६ | ३८ | ४९ | १ | १३ | २४ | ३६ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३६ |
| ९ मकर | घ. | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ |
| | प. | ३६ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २५ | ३५ | ४५ | ५३ | १ | ९ | १७ | २५ | ३३ | ४१ | ४९ | ५६ | ४ | १२ | २० | २८ | ३६ | ४४ | ५२ | ०० | ८ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४७ |
| १० कुम्भ | घ. | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ | ५९ |
| | प. | ४७ | ५५ | ३ | ११ | १९ | २७ | ३४ | ४२ | ४९ | ५६ | २ | ९ | १६ | २३ | २९ | ३६ | ४३ | ४९ | ५६ | ३ | ९ | १६ | २३ | ३० | ३६ | ४३ | ५० | ५६ | ३ | १० | १६ |
| ११ मीन | घ. | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| | प. | १६ | २३ | ३० | ३७ | ४३ | ५० | ५७ | ३ | १० | १७ | २३ | ३० | ३७ | ४४ | ५० | ५७ | ४ | १० | १७ | २४ | ३० | ३७ | ४४ | ५१ | ५७ | ४ | ११ | १७ | २४ | ३१ | ३७ |

## दशमलग्न सारणी

**( सर्वत्र उपयोगी )** **लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३**

| अंश | ०० | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०<br>मेष | १८<br>३३ | १८<br>४२ | १८<br>५२ | १९<br>१ | १९<br>१० | १९<br>१९ | १९<br>२८ | १९<br>३८ | १९<br>४८ | १९<br>५८ | २०<br>८ | २०<br>१८ | २०<br>२८ | २०<br>३८ | २०<br>४८ | २०<br>५८ | २१<br>८ | २१<br>१८ | २१<br>२८ | २१<br>३८ | २१<br>४८ | २१<br>५८ | २२<br>८ | २२<br>१७ | २२<br>२७ | २२<br>३७ | २२<br>४७ | २२<br>५७ | २३<br>७ | २३<br>१७ | २३<br>२७ |
| १<br>वृष | २३<br>२७ | २३<br>३७ | २३<br>४७ | २३<br>५७ | २४<br>७ | २४<br>१७ | २४<br>२७ | २४<br>३७ | २४<br>४८ | २४<br>५८ | २५<br>९ | २५<br>२० | २५<br>३१ | २५<br>४२ | २५<br>५२ | २६<br>३ | २६<br>१४ | २६<br>२५ | २६<br>३५ | २६<br>४६ | २६<br>५७ | २७<br>८ | २७<br>१८ | २७<br>२९ | २७<br>४० | २७<br>५१ | २८<br>२ | २८<br>१२ | २८<br>२३ | २८<br>३४ | २८<br>४५ |
| २<br>मिथुन | २८<br>४५ | २८<br>५५ | २९<br>०६ | २९<br>१७ | २९<br>२८ | २९<br>३८ | २९<br>४९ | ३०<br>० | ३०<br>११ | ३०<br>२२ | ३०<br>३२ | ३०<br>४३ | ३०<br>५४ | ३१<br>५ | ३१<br>१५ | ३१<br>२६ | ३१<br>३७ | ३१<br>४८ | ३१<br>५८ | ३२<br>९ | ३२<br>१९ | ३२<br>३० | ३२<br>४१ | ३२<br>५२ | ३३<br>३ | ३३<br>१४ | ३३<br>२५ | ३३<br>३५ | ३३<br>४३ | ३३<br>५७ | ३४<br>८ |
| ३<br>कर्क | ३४<br>८ | ३४<br>१८ | ३४<br>२९ | ३४<br>४० | ३४<br>५१ | ३५<br>१ | ३५<br>१२ | ३५<br>२३ | ३५<br>३३ | ३५<br>४३ | ३५<br>५३ | ३६<br>३ | ३६<br>१३ | ३६<br>२३ | ३६<br>३३ | ३६<br>४३ | ३६<br>५३ | ३७<br>३ | ३७<br>१३ | ३७<br>२३ | ३७<br>३३ | ३७<br>४३ | ३७<br>५३ | ३८<br>२ | ३८<br>१२ | ३८<br>२२ | ३८<br>३२ | ३८<br>४२ | ३८<br>५२ | ३९<br>२ | ३९<br>१२ |
| ४<br>सिंह | ३९<br>१२ | ३९<br>२२ | ३९<br>३२ | ३९<br>४२ | ३९<br>५२ | ४०<br>२ | ४०<br>१२ | ४०<br>२२ | ४०<br>३१ | ४०<br>४१ | ४०<br>५० | ४०<br>५९ | ४१<br>८ | ४१<br>१८ | ४१<br>२७ | ४१<br>३६ | ४१<br>४५ | ४१<br>५५ | ४२<br>४ | ४२<br>१३ | ४२<br>२२ | ४२<br>३२ | ४२<br>४१ | ४२<br>५० | ४२<br>५९ | ४३<br>९ | ४३<br>१८ | ४३<br>२७ | ४३<br>३७ | ४३<br>४६ | ४३<br>५५ |
| ५<br>कन्या | ४३<br>५५ | ४४<br>४ | ४४<br>१४ | ४४<br>२३ | ४४<br>३२ | ४४<br>४१ | ४४<br>५१ | ४५<br>०० | ४५<br>१० | ४५<br>१९ | ४५<br>२८ | ४५<br>३७ | ४५<br>४६ | ४५<br>५६ | ४६<br>५ | ४६<br>१४ | ४६<br>२३ | ४६<br>३३ | ४६<br>४२ | ४६<br>५१ | ४७<br>० | ४७<br>१० | ४७<br>१९ | ४७<br>२८ | ४७<br>३८ | ४७<br>४७ | ४७<br>५६ | ४८<br>५ | ४८<br>१५ | ४८<br>२४ | ४८<br>३३ |
| ६<br>तुला | ४८<br>३३ | ४८<br>४२ | ४८<br>५२ | ४९<br>१ | ४९<br>१० | ४९<br>१९ | ४९<br>२९ | ४९<br>३८ | ४९<br>४८ | ४९<br>५८ | ५०<br>८ | ५०<br>१८ | ५०<br>२८ | ५०<br>३८ | ५०<br>४८ | ५०<br>५८ | ५१<br>८ | ५१<br>१८ | ५१<br>२८ | ५१<br>३८ | ५१<br>४८ | ५१<br>५८ | ५२<br>७ | ५२<br>१७ | ५२<br>२७ | ५२<br>३७ | ५२<br>४७ | ५२<br>५७ | ५३<br>७ | ५३<br>१७ | ५३<br>२७ |
| ७<br>वृश्चिक | ५३<br>२७ | ५३<br>३७ | ५३<br>४७ | ५३<br>५७ | ५४<br>७ | ५४<br>१७ | ५४<br>२७ | ५४<br>३७ | ५४<br>४७ | ५४<br>५८ | ५५<br>९ | ५५<br>२० | ५५<br>३१ | ५५<br>४२ | ५५<br>५२ | ५६<br>३ | ५६<br>१४ | ५६<br>२५ | ५६<br>३४ | ५६<br>४६ | ५६<br>५७ | ५७<br>८ | ५७<br>१८ | ५७<br>२९ | ५७<br>४० | ५७<br>५१ | ५८<br>२ | ५८<br>१२ | ५८<br>२३ | ५८<br>३४ | ५८<br>४५ |
| ८<br>धनु | ५८<br>४५ | ५८<br>५५ | ५९<br>६ | ५९<br>१७ | ५९<br>२८ | ५९<br>३८ | ५९<br>४९ | ०<br>० | ०<br>११ | ०<br>२२ | ०<br>३२ | ०<br>४३ | ०<br>५४ | १<br>५ | १<br>१५ | १<br>२६ | १<br>३७ | १<br>४८ | १<br>५८ | २<br>९ | २<br>२० | २<br>३१ | २<br>४१ | २<br>५२ | ३<br>३ | ३<br>१४ | ३<br>२५ | ३<br>३५ | ३<br>४६ | ३<br>५७ | ४<br>८ |
| ९<br>मकर | ४<br>८ | ४<br>१८ | ४<br>२९ | ४<br>४० | ४<br>५१ | ५<br>१ | ५<br>१२ | ५<br>२३ | ५<br>३३ | ५<br>४३ | ५<br>५३ | ६<br>३ | ६<br>१३ | ६<br>२३ | ६<br>३३ | ६<br>४३ | ६<br>५३ | ७<br>३ | ७<br>१३ | ७<br>२३ | ७<br>३३ | ७<br>४३ | ७<br>५३ | ८<br>२ | ८<br>१२ | ८<br>२२ | ८<br>३२ | ८<br>४२ | ८<br>५२ | ९<br>२ | ९<br>१२ |
| १०<br>कुम्भ | ९<br>१२ | ९<br>२२ | ९<br>३२ | ९<br>४२ | ९<br>५२ | १०<br>२ | १०<br>१२ | १०<br>२२ | १०<br>३१ | १०<br>४१ | १०<br>५० | १०<br>५९ | ११<br>८ | ११<br>१८ | ११<br>२७ | ११<br>३६ | ११<br>४५ | ११<br>५५ | १२<br>४ | १२<br>१३ | १२<br>२२ | १२<br>३२ | १२<br>४१ | १३<br>५० | १३<br>० | १३<br>९ | १३<br>१८ | १३<br>२७ | १३<br>३७ | १३<br>४६ | १३<br>५५ |
| ११<br>मीन | १३<br>५५ | १४<br>४ | १४<br>१३ | १४<br>२३ | १४<br>३२ | १४<br>४१ | १४<br>५१ | १५<br>० | १५<br>९ | १५<br>१९ | १५<br>२८ | १५<br>३७ | १५<br>४६ | १५<br>५६ | १६<br>५ | १६<br>१४ | १६<br>२३ | १६<br>३३ | १६<br>४२ | १६<br>५१ | १७<br>० | १७<br>१० | १७<br>१९ | १७<br>२८ | १७<br>३८ | १७<br>४७ | १७<br>५६ | १८<br>५ | १८<br>१५ | १८<br>२४ | १८<br>३३ |

## ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**–जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**–बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**–रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**–शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**–मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृक् बल**–शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

## दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम् लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है ॥ **विधि इस प्रकार है।**– **लग्न स्पष्ट** करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो **योगफल** मिले उसको **दशम लग्न सारिणी** के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

**भाव स्पष्ट का उदाहरण**–मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २० ।४५ घट्यादि है तथा **जालंधर लग्न सा० से सूर्य स्पष्ट** ( ० ।१२ ।७) द्वारा प्राप्तांक ४ ।९ है, और लग्न स्पष्ट ४ । १० ।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४ ।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगाकों को **दशम् लग्न सारिणी** में देखने पर हमें **दशम् भाव स्पष्ट** १ ।८ ।३६ प्राप्त हुआ। **दशभाव स्प.** में ६ राशि जोड़ने से **चतुर्थ भाव** तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह **षष्ठांश** कहलाता है। **षष्ठांश** को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। **द्वितीय भाव में षष्ठांश** जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से **तृतीय भाव** होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से **३रे भाव की सन्धि,** और इस सन्धि में **षष्ठांश** जोड़ने से **चतुर्थ भाव** प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से **पंचम भाव** होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से ***अष्टम, नवम, दशम, एकादश आदि भाव एवं सन्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।***

***–पं० विवेक शर्मा ज्यो.***

# षट्वर्ग सारणी चक्रम्

| भाग | | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अंशादि | | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | १० | १२ | १२ | १२ | १३ | १५ | १६ | १७ | १७ | १८ | २० | २१ | २२ | २३ | २५ | २५ | २६ | २७ | ३० |
| रा. षट् | | ३० | २० | १७ | ० | ४० | ३० | ३४ | ० | ० | ३० | ५१ | २० | ० | ४० | ८ | ३० | ० | ० | २५ | ३० | २० | ० | ४२ | ४० | ३० | ० |
| | | ० | ० | ८॥ | ० | ० | ० | १७ | ० | ० | ० | २६ | ० | ० | ० | ३४ | ० | ० | ० | ४२ | ० | ० | ० | ५१ | ० | ० | ० |
| ० मेष | हो | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| | द्रे. | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| | सं | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ |
| | न. | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ |
| | द्वा | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ |
| | त्रि | १ | १ | १ | १ | ११ | ११ | ११ | ११ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| १ वृष | हो | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | द्रे. | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| | सं | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ |
| | नं | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ |
| | द्वा | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १ |
| | त्रि | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १० | १० | १० | १० | ८ | ८ | ८ | ८ |
| २ मिथुन | हो | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| | द्रे. | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ |
| | सं | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ |
| | न. | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ |
| | द्वा | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १ | १ | १ | २ |
| | त्रि | १ | १ | १ | १ | ११ | ११ | ११ | ११ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ३ कर्क | हो | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | द्रे. | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ |
| | सं | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ |
| | न. | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ |
| | द्वा | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ |
| | त्रि | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १० | १० | १० | १० | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ४ सिंह | हो | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| | द्रे. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| | सं | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ |
| | न. | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ |
| | द्वा | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ |
| | त्रि | १ | १ | १ | १ | ११ | ११ | ११ | ११ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ५ कन्या | हो | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | द्रे. | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| | सं | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ |
| | न | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ |
| | द्वा | ६ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ |
| | त्रि | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १० | १० | १० | १० | ८ | ८ | ८ | ८ |

| | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | १० | १२ | १२ | १२ | १३ | १५ | १६ | १७ | १७ | १८ | २० | २१ | २२ | २३ | २५ | २५ | २६ | २७ | ३० |
| | ३० | २० | १७ | ० | ४० | ३० | ३४ | ० | ० | ३० | ५१ | २० | ० | ४० | ८ | ३० | ० | ० | २५ | ३० | २० | ० | ४२ | ४० | ३० | ० |
| | ० | ० | ८॥ | ० | ० | ० | १७ | ० | ० | ० | २६ | ० | ० | ० | ३४ | ० | ० | ० | ४२ | ० | ० | ० | ५१ | ० | ० | ० |
| ६ तुला | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ |
| | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ |
| | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ |
| | १ | १ | १ | १ | ११ | ११ | ११ | ११ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ७ वृश्चिक | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ |
| | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ |
| | ८ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ |
| | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १० | १० | १० | १० | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ८ धनु | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ |
| | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ |
| | ९ | १० | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ८ |
| | १ | १ | १ | १ | ११ | ११ | ११ | ११ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ९ मकर | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० |
| | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ |
| | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ |
| | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १० | १० | १० | १० | ८ | ८ | ८ | ८ |
| १० कुंभ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ |
| | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ |
| | ११ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | १० |
| | १ | १ | १ | १ | ११ | ११ | ११ | ११ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ११ मीन | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ |
| | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ |
| | १२ | १ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | १० | ११ |
| | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १० | १० | १० | १० | ८ | ८ | ८ | ८ |

# भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैं. अन्तर

नोट—जिस शहर के आगे (–) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश से उतने मिनट पश्चिम में है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए जिन नगरों का स्टै. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त जाने के लिए जिन नगरों का स्टैं. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (–) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. – सू. अ. में (–) ऋण करें। स्पष्टीकरण = (पं.) = पंजाब ; (आं. प्र.) = आधांप्रदेश ; (अरु) = अरुणांचल प्रदेश ; (आसा) = आसाम ; (उत्तरा.) = उत्तराखण्ड ; (उ.प्र.) = उत्तप्रदेश ; (छ. ग.) = छत्तीसगढ़ ; (गुज.) = गुजरात ; (राज.) = राजस्थान ; (हरि.) = हरियाणा ; (बिहा.) = बिहार ; (हि. प्र.) = हिमाचल प्रदेश ; (महा.) = महाराष्ट्र ; (म. प्र.) = मध्यप्रदेश ; (ज. का.) = जम्मू–काश्मीर।

| नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| **अण्डेमान एवं निकोबार** | | | |
| पोर्टब्लेअर | 11 40 | 92 45 | +41 00 |
| **अरुणांचल प्रदेश** | | | |
| ईटानगर | 27 08 | 93 37 | +44 28 |
| तवांग | 27 33 | 91 48 | +37 12 |
| **आंधा प्रदेश** | | | |
| अनन्तपुर | 14 41 | 77 36 | –19 36 |
| Cuddapah | 14 28 | 78 49 | –14 44 |
| Guntur | 16 18 | 80 27 | –08 12 |
| Kurnool | 15 50 | 78 03 | –17 48 |
| Vizianagaram | 18 07 | 83 25 | +03 40 |
| विजयवाड़ा | 16 31 | 80 39 | –07 24 |
| विशाखापट्टनम् | 17 42 | 83 18 | +03 12 |
| गोलकुण्डा(आं. प्र.) | 17 24 | 78 23 | –16 28 |
| तिरुपति(आंध्र.) | 13 40 | 79 24 | –12 24 |
| **आसाम** | | | |
| उ.लखीमपुर | 27 14 | 94 07 | +46 28 |
| गुवाहाटी | 26 11 | 91 44 | +36 56 |
| जोरहाट | 26 45 | 94 13 | +46 52 |
| तेजपुर | 26 38 | 92 49 | +41 16 |
| डिब्रूगढ़ | 27 29 | 94 54 | +49 36 |
| डिगबोई | 27 23 | 95 38 | +52 32 |
| लखीमपुर | 27 14 | 94 15 | +47 00 |

| नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| **उड़ीसा** | | | |
| कटक | 20 30 | 85 50 | +13 20 |
| पुरी | 19 48 | 85 52 | +13 28 |
| बालासोर | 21 30 | 86 56 | +17 44 |
| बहरामपुर | 19 21 | 84 51 | +09 24 |
| भुवनेश्वर | 20 14 | 85 50 | +13 20 |
| **उत्तरप्रदेश** | | | |
| अलीगढ़ | 27 53 | 78 05 | –17 40 |
| अमरोहा | 28 55 | 78 28 | –16 08 |
| अमेठी | 26 08 | 81 50 | –02 40 |
| अयोध्या | 26 48 | 82 14 | –01 04 |
| अकबरपुर | 26 25 | 82 33 | +00 12 |
| अगोरी | 24 34 | 82 56 | +01 44 |
| अच्छनेरा | 27 11 | 77 46 | –18 56 |
| अम्बाह | 26 44 | 78 15 | –17 00 |
| अतरौली | 28 00 | 78 16 | –16 48 |
| अलीगंज | 27 30 | 79 11 | –13 16 |
| आजमगढ़ | 26 04 | 83 11 | + 02 44 |
| आगरा | 27 11 | 78 01 | –17 56 |
| इलाहाबाद | 25 28 | 81 54 | –02 24 |
| इटावा | 26 46 | 79 02 | –13 52 |
| इटवा | 27 20 | 82 42 | +00 48 |
| उन्नाव | 26 33 | 80 31 | –07 56 |
| उरई | 25 58 | 79 27 | –12 12 |
| उस्का | 27 08 | 83 12 | +02 48 |
| एटा | 27 38 | 78 40 | –15 20 |

| उत्तर प्रदेश के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| ऐत | 25 56 | 79 12 | –13 12 |
| औरैया | 26 26 | 79 32 | –11 52 |
| औरंगाबाद | 24 44 | 84 22 | +07 28 |
| कदौरा | 26 00 | 79 50 | –10 40 |
| कन्नौज | 27 03 | 79 58 | –10 08 |
| **कानपुर** | **26 28** | **80 21** | **–08 36** |
| कादीपुर | 26 11 | 82 24 | –00 24 |
| कान्धला | 29 20 | 77 15 | –21 00 |
| काल्पी | 26 06 | 79 44 | –11 04 |
| कासगंज | 27 50 | 78 40 | –15 20 |
| कैसरगंज | 27 20 | 81 34 | –03 44 |
| कैमगंज | 27 35 | 79 20 | –12 40 |
| कोरा | 26 06 | 80 27 | –08 12 |
| कोरियालाघाट | 28 20 | 81 04 | –05 44 |
| कोसी | 27 50 | 77 26 | –20 16 |
| खतौली | 29 18 | 77 43 | –19 08 |
| खागा | 25 48 | 81 07 | –05 32 |
| खिलचीपुर | 24 00 | 76 34 | –23 44 |
| खुर्जा | 28 15 | 77 50 | –18 40 |
| खेड़ी | 27 55 | 80 49 | –06 44 |
| खैर | 27 57 | 77 50 | –18 40 |
| खैरागढ़ | 26 58 | 77 53 | –18 28 |
| खैराबाद | 27 31 | 80 45 | –07 00 |
| गंगोह (सहार.) | 29 45 | 77 16 | –20 56 |
| गढ़मुक्तेश्वर | 28 49 | 77 05 | –17 40 |
| गरौठा | 25 35 | 79 19 | –12 44 |
| गाज़ियाबाद | 28 40 | 77 26 | –20 16 |
| गाजीपुर | 25 34 | 83 35 | +04 20 |

| उत्तर प्रदेश के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| गुन्नौर | 28 15 | 78 27 | –16 12 |
| गोण्डा | 27 08 | 82 01 | –01 56 |
| गोरखपुर | 26 45 | 83 24 | +03 36 |
| गोलागोकर्णनाथ | 28 06 | 80 30 | –08 00 |
| गोवर्धन | 27 32 | 77 28 | –20 08 |
| चकला | 25 02 | 83 12 | + 02 48 |
| चन्दौसी | 28 28 | 78 48 | –14 48 |
| चरखाड़ी | 25 25 | 79 46 | –10 56 |
| चित्रकूटधाम | 25 12 | 80 52 | –06 32 |
| चिरगांव | 25 36 | 78 50 | –14 40 |
| छतरपुर | 24 56 | 79 38 | –11 28 |
| छपरा | 24 39 | 76 48 | –22 48 |
| जगदीशपुर | 25 30 | 84 26 | +07 44 |
| जलालाबाद | 27 44 | 79 40 | –11 20 |
| जलेसर | 27 29 | 78 20 | –16 36 |
| जसरा | 25 17 | 81 48 | –02 48 |
| जसराना | 27 15 | 78 42 | –15 12 |
| जसवन्तनगर | 26 52 | 78 56 | –14 16 |
| जहानाबाद | 25 12 | 84 58 | +09 52 |
| जानसठ (मु.) | 29 20 | 77 52 | –18 32 |
| जालौन | 26 10 | 79 20 | –12 40 |
| जिगनी | 25 46 | 79 26 | –12 16 |
| जौनपुर | 25 45 | 82 40 | +00 40 |
| झाँसी | 25 27 | 78 37 | –15 32 |
| टाण्डा | 28 56 | 78 59 | –14 04 |
| ठाकुरद्धारा | 29 10 | 78 50 | –14 40 |
| डेरापुर | 26 28 | 79 48 | –10 48 |
| ताजपुर | 29 08 | 78 30 | –16 00 |

# भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

| उत्तर प्रदेश के नगर | अक्षांश (उत्तर) |  | रेखांश (पूर्व) |  | स्टैण्डर्ड अन्तर |  |
|---|---|---|---|---|---|---|
|  | अं. | क. | अं. | क. | मिं. | सैं. |
| दानापुर | 25 | 40 | 85 | 02 | +10 | 08 |
| दालमऊ | 26 | 02 | 81 | 02 | —05 | 52 |
| दूधी | 24 | 13 | 83 | 15 | +03 | 00 |
| देवगांव | 25 | 24 | 83 | 01 | +02 | 04 |
| देवबन्द | 29 | 42 | 77 | 41 | —19 | 16 |
| देवरिया | 26 | 32 | 83 | 45 | +05 | 00 |
| देहरी | 24 | 52 | 84 | 11 | +06 | 44 |
| धामपुर | 29 | 19 | 78 | 31 | —15 | 56 |
| नगीना | 29 | 27 | 78 | 27 | —16 | 12 |
| नजीबाबाद | 29 | 38 | 78 | 20 | —16 | 40 |
| नरैनी | 25 | 11 | 80 | 29 | —08 | 04 |
| नवाबगंज | 28 | 33 | 79 | 38 | —11 | 28 |
| नवाबगंज | 26 | 52 | 82 | 08 | —01 | 28 |
| नानपाड़ा | 27 | 52 | 81 | 30 | —04 | 00 |
| नोएडा | 28 | 35 | 77 | 20 | —20 | 40 |
| पट्टी | 25 | 55 | 82 | 12 | —01 | 12 |
| पयागपुर | 27 | 25 | 81 | 48 | 02 | 48 |
| पवायां | 28 | 04 | 80 | 06 | —09 | 36 |
| पिलखुआं | 28 | 43 | 77 | 39 | —19 | 24 |
| पिहानी | 27 | 38 | 80 | 12 | —09 | 12 |
| पीलीभीत | 28 | 38 | 79 | 48 | —10 | 48 |
| पुरवा | 26 | 28 | 80 | 50 | —06 | 40 |
| प्रतापगढ़ | 25 | 50 | 81 | 59 | — 2 | 04 |
| फतेहपुर | 25 | 56 | 80 | 48 | —06 | 48 |
| फतेहपुरसीकरी | 27 | 06 | 77 | 40 | —19 | 20 |
| फतेहाबाद | 27 | 01 | 78 | 19 | —16 | 44 |
| फरीदनगर | 28 | 46 | 77 | 37 | —19 | 32 |
| फरीदपुर | 28 | 13 | 79 | 33 | —11 | 48 |
| फर्रूखाबाद | 27 | 24 | 79 | 34 | —11 | 44 |
| फिरोज़ाबाद | 27 | 09 | 78 | 25 | —16 | 20 |
| फैज़ाबाद | 26 | 47 | 82 | 08 | —01 | 28 |
| बक्सर | 25 | 35 | 83 | 59 | +05 | 56 |
| बदायूँ | 28 | 02 | 79 | 07 | —13 | 32 |
| बनारस(वाराणसी) | 25 | 20 | 83 | 00 | +02 | 00 |
| बहराइच | 27 | 35 | 81 | 36 | —03 | 36 |
| बड़ौत | 29 | 06 | 77 | 16 | —20 | 56 |
| बलिया | 25 | 45 | 84 | 10 | +06 | 40 |
| बरेली | 28 | 21 | 79 | 25 | —12 | 20 |
| बलरामपुर | 27 | 26 | 82 | 11 | —01 | 16 |
| बस्ती | 26 | 48 | 82 | 43 | +00 | 52 |
| बागपत | 28 | 57 | 77 | 13 | —21 | 08 |
| बाड़ी | 26 | 39 | 77 | 36 | —19 | 36 |
| बान्दा | 25 | 29 | 80 | 20 | —08 | 40 |
| बाराबंकी | 26 | 55 | 81 | 12 | —05 | 12 |
| बांसी | 27 | 11 | 82 | 56 | +01 | 44 |
| बिजनौर | 29 | 22 | 78 | 08 | —17 | 28 |
| बिलसी | 28 | 08 | 78 | 55 | —14 | 20 |
| बिलारी | 28 | 38 | 78 | 48 | —14 | 48 |
| बिलासपुर | 28 | 53 | 79 | 16 | —12 | 56 |
| बीसलपुर | 28 | 18 | 79 | 48 | —10 | 48 |
| बुलन्दशहर | 28 | 24 | 77 | 51 | —18 | 36 |
| बुढ़ाना | 29 | 17 | 77 | 28 | —20 | 08 |
| भदोही | 25 | 25 | 82 | 34 | +00 | 16 |
| भोनगांव | 27 | 15 | 79 | 11 | —13 | 16 |
| भोवाली | 29 | 23 | 79 | 31 | —11 | 56 |
| मन्दावर | 29 | 30 | 78 | 08 | —17 | 28 |
| मऊ | 25 | 17 | 81 | 23 | —04 | 28 |
| मऊ-ऐम्मा | 25 | 42 | 81 | 55 | —02 | 20 |
| मऊनाथभंजन | 25 | 57 | 83 | 33 | +04 | 12 |
| मऊरानीपुर | 25 | 15 | 79 | 08 | —13 | 28 |
| मथुरा | 27 | 30 | 77 | 41 | —19 | 16 |
| मवाना | 29 | 06 | 77 | 55 | —18 | 20 |
| मलीहाबाद | 26 | 55 | 80 | 43 | —07 | 08 |
| महमूदाबाद | 27 | 18 | 81 | 07 | —05 | 32 |
| महरौली | 24 | 35 | 78 | 43 | —15 | 08 |
| महाराजगंज | 27 | 09 | 83 | 34 | +04 | 16 |
| महरोनी | 24 | 35 | 78 | 43 | —15 | 08 |
| महोवा | 25 | 17 | 79 | 52 | —10 | 32 |
| मिर्ज़ापुर | 25 | 09 | 82 | 35 | —00 | 20 |
| मुज़फ्फरनगर | 29 | 28 | 77 | 41 | —19 | 16 |
| मुगलसराय | 25 | 18 | 83 | 07 | +02 | 28 |
| मुबारकपुर | 26 | 05 | 83 | 18 | +03 | 12 |
| मुरादाबाद | 28 | 51 | 78 | 49 | —14 | 44 |
| मुरादनगर(गा.) | 28 | 47 | 77 | 30 | —20 | 00 |
| मेरठ | 28 | 59 | 77 | 42 | —19 | 12 |
| मैनपुरी | 27 | 14 | 79 | 01 | —13 | 56 |
| राजाखेड़ा | 26 | 55 | 78 | 11 | —17 | 16 |
| राबर्ट्सगंज | 24 | 42 | 83 | 04 | +02 | 16 |
| रामनगर | 25 | 17 | 83 | 02 | +02 | 08 |
| रायबरेली | 26 | 13 | 81 | 14 | —05 | 04 |
| रूदौली | 26 | 45 | 81 | 45 | —03 | 00 |
| लखनऊ | 26 | 51 | 80 | 55 | —06 | 20 |
| लखीमपुर | 27 | 57 | 80 | 46 | —06 | 56 |
| ललितपुर | 24 | 41 | 78 | 25 | —16 | 20 |
| शामली | 29 | 27 | 77 | 19 | —20 | 44 |
| शाहजहाँपुर | 27 | 53 | 79 | 55 | —10 | 20 |
| शिकोहाबाद | 27 | 06 | 78 | 36 | —15 | 36 |
| सम्भल | 28 | 35 | 78 | 33 | —15 | 48 |
| सरधना | 29 | 09 | 77 | 37 | —19 | 32 |
| सहसवां | 28 | 05 | 78 | 45 | —15 | 00 |
| सहारनपुर | 29 | 58 | 77 | 33 | —19 | 48 |
| सिधौली | 27 | 17 | 80 | 50 | —06 | 40 |
| सिरसागंज | 27 | 03 | 78 | 42 | —15 | 12 |
| सीतापुर | 27 | 34 | 80 | 41 | —07 | 16 |
| सुल्तानपुर | 26 | 16 | 82 | 04 | —01 | 44 |
| सैदपुर | 25 | 33 | 83 | 11 | +02 | 44 |
| हमीरपुर | 25 | 57 | 80 | 09 | —09 | 24 |
| हरदोई | 27 | 25 | 80 | 07 | —09 | 32 |
| हाजीपुर | 25 | 41 | 85 | 13 | +10 | 52 |
| हाथरस | 27 | 36 | 78 | 03 | —17 | 48 |
| हापुड़ | 28 | 43 | 77 | 47 | —18 | 52 |

## उत्तराखण्ड

| उत्तर प्रदेश के नगर | अक्षांश (उत्तर) |  | रेखांश (पूर्व) |  | स्टैण्डर्ड अन्तर |  |
|---|---|---|---|---|---|---|
|  | अं. | क. | अं. | क. | मिं. | सैं. |
| अल्मोड़ा | 29 | 37 | 79 | 40 | —11 | 20 |
| आमपाटा | 30 | 17 | 78 | 37 | —15 | 32 |
| आदिबद्री | 30 | 10 | 79 | 12 | —13 | 12 |
| उत्तरकाशी | 30 | 44 | 78 | 27 | —16 | 12 |
| उरवीमठ | 30 | 31 | 79 | 07 | —13 | 32 |
| ऋषिकेश | 30 | 07 | 78 | 18 | —15 | 12 |
| कर्णप्रयाग | 30 | 15 | 79 | 16 | —12 | 56 |
| कपकोट | 29 | 58 | 79 | 54 | —10 | 54 |
| काठगोदाम | 29 | 16 | 79 | 32 | —11 | 52 |
| काशीपुर | 29 | 13 | 78 | 57 | —14 | 12 |
| काण्डी | 29 | 56 | 78 | 25 | —16 | 20 |
| केदारनाथ | 30 | 44 | 79 | 04 | —13 | 44 |
| केनूर | 30 | 03 | 79 | 01 | —13 | 56 |
| कोटद्वार | 29 | 45 | 78 | 32 | —15 | 52 |
| खानपुर | 29 | 36 | 78 | 07 | —17 | 32 |
| खाती | 30 | 08 | 79 | 54 | —10 | 54 |
| गरजिया | 29 | 29 | 79 | 06 | —13 | 36 |
| गंगनाणी | 30 | 55 | 78 | 42 | —15 | 12 |
| गंगोत्तरी | 30 | 39 | 79 | 02 | —13 | 52 |
| गंगापुर | 26 | 30 | 76 | 44 | —23 | 04 |
| घरमघर | 29 | 52 | 80 | 01 | —09 | 56 |
| घनस्याली | 30 | 27 | 78 | 13 | —17 | 08 |
| चकराता(देह.) | 30 | 42 | 77 | 51 | —18 | 36 |
| चम्बा | 30 | 18 | 78 | 25 | —16 | 20 |
| चमौली | 30 | 24 | 79 | 21 | —12 | 36 |
| चन्दौसी | 28 | 27 | 78 | 46 | —14 | 56 |
| चम्पावत | 29 | 20 | 80 | 06 | —09 | 36 |
| चुरानी | 29 | 47 | 78 | 55 | —14 | 20 |
| जमनोत्री | 31 | 01 | 78 | 27 | —16 | 12 |

# भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

| उत्तराखण्ड के नगर | अक्षांश (उत्तर) |  | रेखांश (पूर्व) |  | स्टैण्डर्ड अन्तर |  |
|---|---|---|---|---|---|---|
|  | अं. | क. | अं. | क. | मिं. | सैं. |
| जोशीमठ | 30 | 34 | 79 | 34 | −11 | 44 |
| टनकपुर | 29 | 02 | 80 | 08 | −09 | 28 |
| टिहरी | 30 | 32 | 78 | 31 | −15 | 56 |
| डाण्डा | 29 | 10 | 79 | 55 | −10 | 20 |
| डीडीहाट | 29 | 48 | 80 | 12 | −09 | 12 |
| तेजम | 29 | 56 | 80 | 10 | −09 | 20 |
| **देहरादून** | 30 | 19 | 78 | 02 | −17 | 52 |
| देवप्रयाग | 30 | 09 | 78 | 37 | −15 | 32 |
| धनोलटी | 30 | 25 | 78 | 19 | −16 | 44 |
| नरेन्द्रनगर | 30 | 10 | 78 | 18 | −16 | 48 |
| नन्द्रप्रयाग | 30 | 19 | 79 | 24 | −12 | 24 |
| **नैनीताल** | 29 | 23 | 79 | 27 | −12 | 12 |
| **पिथौरागढ़** | 29 | 35 | 80 | 13 | −09 | 08 |
| पीपलकोटी | 30 | 26 | 79 | 27 | −12 | 12 |
| पौड़ीगढ़वाल | 30 | 09 | 78 | 47 | −14 | 52 |
| बद्रीनाथ | 30 | 44 | 79 | 29 | −12 | 04 |
| बाजपुर | 29 | 09 | 79 | 07 | −13 | 32 |
| भगवानपुर | 29 | 59 | 77 | 56 | −18 | 16 |
| भटवाड़ी | 30 | 49 | 78 | 36 | −15 | 36 |
| मनेरी | 30 | 41 | 78 | 30 | −16 | 00 |
| मंसूरी | 30 | 27 | 78 | 05 | −17 | 40 |
| रालम | 30 | 16 | 80 | 12 | −09 | 12 |
| रानीखेत | 29 | 39 | 79 | 25 | −12 | 20 |
| राजगढ़ी | 30 | 52 | 78 | 49 | −14 | 44 |
| रामनगर | 29 | 24 | 79 | 07 | −13 | 32 |
| राजपुर | 30 | 25 | 78 | 06 | −17 | 36 |
| रामपुर | 28 | 49 | 79 | 02 | −13 | 52 |
| रायपुर | 30 | 19 | 78 | 06 | −17 | 36 |
| रूद्रपुर | 30 | 26 | 77 | 59 | −18 | 04 |
| रूद्रप्रयाग | 30 | 16 | 78 | 59 | −14 | 04 |
| रूड़की | 29 | 52 | 77 | 53 | −18 | 28 |
| लक्सर | 29 | 49 | 78 | 02 | −17 | 52 |
| लम्बगाँव | 30 | 29 | 78 | 31 | −15 | 56 |

| उत्तराखण्ड के नगर | अक्षांश (उत्तर) |  | रेखांश (पूर्व) |  | स्टैण्डर्ड अन्तर |  |
|---|---|---|---|---|---|---|
|  | अं. | क. | अं. | क. | मिं. | सैं. |
| लालकुआं | 29 | 06 | 79 | 32 | −11 | 52 |
| लिसकोट | 29 | 46 | 79 | 01 | −13 | 56 |
| लैंसडाऊन | 29 | 50 | 78 | 41 | −15 | 16 |
| विकासनगर | 30 | 29 | 77 | 50 | −18 | 40 |
| श्रीनगर (गढ़वा) | 30 | 13 | 78 | 47 | −14 | 52 |
| सहसपुर (देह.) | 30 | 24 | 77 | 58 | −18 | 08 |
| **हरिद्वार** | 29 | 58 | 78 | 10 | −17 | 20 |
| हरकीदून | 30 | 58 | 78 | 24 | −16 | 24 |
| हल्द्वानी | 29 | 13 | 79 | 31 | −11 | 56 |

## कर्नाटक

|  |  |  |  |  |  |  |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **बैंगलुरु** | 12 | 59 | 77 | 35 | −19 | 40 |
| गुलबर्गा | 17 | 20 | 76 | 50 | −22 | 40 |
| मैसूर | 12 | 18 | 76 | 39 | −23 | 24 |
| हुबली | 15 | 20 | 75 | 14 | −29 | 04 |

## केरला

|  |  |  |  |  |  |  |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कोचीन | 09 | 58 | 76 | 14 | −25 | 04 |
| तिरुवन्तपुरम् | 8 | 31 | 76 | 56 | −22 | 16 |
| कन्नूर | 11 | 52 | 75 | 25 | −28 | 20 |
| त्रिवेन्द्रम | 08 | 29 | 76 | 57 | −22 | 12 |

## गुजरात

|  |  |  |  |  |  |  |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अंकलेश्वर | 21 | 36 | 73 | 00 | −38 | 00 |
| अंजार | 23 | 08 | 70 | 01 | −49 | 56 |
| अमरापुर | 21 | 45 | 70 | 02 | −49 | 52 |
| अमरेली | 21 | 37 | 71 | 14 | −45 | 04 |
| अमोद | 21 | 59 | 72 | 54 | −38 | 24 |
| **अहमदाबाद** | 23 | 02 | 72 | 40 | −39 | 20 |
| आनन्द | 22 | 34 | 72 | 56 | −38 | 16 |
| आनन्दपुर | 22 | 10 | 71 | 08 | −45 | 28 |
| उपलेटा | 21 | 44 | 70 | 17 | −48 | 52 |
| ओलपाड़ | 21 | 20 | 72 | 49 | −38 | 44 |
| कच्छ (भुज) | 22 | 50 | 70 | 25 | −48 | 20 |

| गुजरात के नगर | अक्षांश (उत्तर) |  | रेखांश (पूर्व) |  | स्टैण्डर्ड अन्तर |  |
|---|---|---|---|---|---|---|
|  | अं. | क. | अं. | क. | मिं. | सैं. |
| कटाना | 22 | 18 | 72 | 49 | −38 | 44 |
| कलोल(महेसाणा) | 23 | 15 | 72 | 29 | −40 | 04 |
| कांडला | 23 | 03 | 70 | 11 | −49 | 16 |
| कुटियाना | 21 | 39 | 71 | 04 | −45 | 44 |
| कोरल | 21 | 53 | 73 | 10 | −37 | 20 |
| खम्भात | 22 | 20 | 72 | 38 | −39 | 28 |
| खम्भालिया | 22 | 12 | 69 | 39 | −51 | 24 |
| खावड़ा | 23 | 51 | 69 | 43 | −51 | 08 |
| गांधीधाम | 23 | 06 | 70 | 08 | −49 | 28 |
| गोधरा | 22 | 45 | 73 | 38 | −35 | 28 |
| जखाऊ | 23 | 13 | 68 | 43 | −55 | 08 |
| जसदान | 22 | 02 | 71 | 12 | −45 | 12 |
| जाफराबाद | 20 | 52 | 71 | 22 | −44 | 32 |
| जामनंगर | 22 | 28 | 70 | 04 | −49 | 44 |
| जारोद | 22 | 26 | 73 | 20 | −36 | 40 |
| जूनागढ़ | 21 | 31 | 70 | 28 | −48 | 08 |
| तालाला(जूना.) | 21 | 02 | 70 | 32 | −47 | 48 |
| तालाजा | 21 | 21 | 72 | 03 | −41 | 48 |
| दभोई | 22 | 11 | 73 | 26 | −36 | 16 |
| दासदा | 23 | 19 | 71 | 50 | −42 | 40 |
| देहज | 21 | 42 | 72 | 35 | −39 | 40 |
| देवदार | 24 | 07 | 71 | 50 | −42 | 40 |
| दोहाद | 22 | 47 | 74 | 18 | −32 | 48 |
| द्वारिका | 22 | 14 | 68 | 58 | −54 | 08 |
| धर्मपुर | 20 | 32 | 73 | 11 | −37 | 16 |
| धारी | 21 | 20 | 71 | 01 | −45 | 56 |
| धुले | 20 | 54 | 74 | 47 | −30 | 52 |
| धोराजी | 21 | 44 | 70 | 27 | −48 | 12 |
| नडियाद | 22 | 41 | 72 | 55 | −38 | 20 |
| नवसारी | 20 | 51 | 72 | 55 | −38 | 20 |
| नालिया | 23 | 18 | 68 | 50 | −54 | 40 |
| पड़ाना | 22 | 21 | 69 | 52 | −50 | 16 |
| पाटन | 23 | 50 | 72 | 07 | −41 | 16 |

| गुजरात के नगर | अक्षांश (उत्तर) |  | रेखांश (पूर्व) |  | स्टैण्डर्ड अन्तर |  |
|---|---|---|---|---|---|---|
|  | अं. | क. | अं. | क. | मिं. | सैं. |
| पाटरी | 23 | 08 | 71 | 10 | −45 | 20 |
| पालनपुर | 24 | 10 | 72 | 26 | −40 | 16 |
| पोरबन्दर | 21 | 38 | 69 | 36 | −51 | 36 |
| बगासरा | 20 | 58 | 70 | 56 | −46 | 16 |
| बजाना | 23 | 04 | 71 | 45 | −43 | 00 |
| बरूच | 21 | 38 | 72 | 56 | −38 | 16 |
| बुलसार | 20 | 38 | 72 | 56 | −38 | 16 |
| बोताड़ | 22 | 10 | 71 | 40 | −43 | 20 |
| भंगोर | 22 | 02 | 69 | 55 | −50 | 20 |
| भरूच | 21 | 40 | 72 | 58 | −38 | 08 |
| भावनगर | 21 | 46 | 72 | 09 | −41 | 24 |
| भुज | 23 | 16 | 69 | 40 | −51 | 20 |
| महेसाणा | 23 | 37 | 72 | 28 | −40 | 08 |
| महुआ | 21 | 05 | 71 | 48 | −42 | 48 |
| माधवपुर | 21 | 18 | 70 | 01 | −49 | 56 |
| रतनपुर | 21 | 44 | 73 | 16 | −36 | 56 |
| राजकोट | 22 | 18 | 70 | 47 | −46 | 52 |
| लखपत | 23 | 49 | 68 | 47 | −54 | 52 |
| लूनावाड़ा | 23 | 08 | 73 | 37 | −35 | 32 |
| वड़ोदरा | 22 | 18 | 73 | 12 | −37 | 12 |
| वलसाड़ | 20 | 40 | 72 | 55 | −38 | 20 |
| वादनगर | 23 | 47 | 72 | 38 | −39 | 28 |
| वीजापुर | 23 | 34 | 72 | 45 | −39 | 00 |
| सुरेन्द्रनगर | 22 | 42 | 71 | 41 | −43 | 16 |
| सूरत | 21 | 10 | 72 | 50 | −38 | 40 |
| सिहोर | 21 | 42 | 71 | 58 | −42 | 08 |
| सोनगढ़ | 20 | 59 | 70 | 29 | −48 | 04 |
| सोमनाथ | 21 | 00 | 70 | 30 | −48 | 00 |
| हडोल | 23 | 55 | 73 | 13 | −37 | 08 |
| हिम्मतनगर | 23 | 36 | 72 | 57 | −38 | 12 |

## गोवा

|  |  |  |  |  |  |  |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पंजिम | 15 | 29 | 73 | 50 | −34 | 40 |
| मडगांव | 15 | 18 | 73 | 57 | −34 | 12 |

# भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

| जम्मू-कश्मीर के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| **जम्मू–कश्मीर** | | | |
| अनन्तनाग | 33 43 | 75 12 | –29 12 |
| अखनूर | 32 54 | 74 45 | –31 00 |
| अवन्तीपूरा | 33 56 | 75 03 | –29 48 |
| अमरनाथगुफा | 34 13 | 75 33 | –27 48 |
| उड़ी | 34 04 | 74 02 | –33 52 |
| ऊधमपुर | 32 55 | 75 08 | –29 28 |
| कठुआ | 32 22 | 75 31 | –27 56 |
| कटरा | 33 01 | 74 58 | –30 08 |
| कारगिल | 34 30 | 76 13 | –25 08 |
| किश्तवाड़ | 33 19 | 75 48 | –26 48 |
| कुलगाम | 33 42 | 75 02 | –29 52 |
| केरन | 34 40 | 73 59 | –34 04 |
| कोटली | 33 30 | 73 53 | –34 12 |
| खयालू | 35 10 | 76 20 | –24 40 |
| गिलगित | 35 55 | 74 22 | –32 32 |
| गुलमर्ग | 34 05 | 74 25 | –32 20 |
| गुरयास | 34 38 | 74 56 | –30 16 |
| चिनेनी | 33 01 | 75 20 | –28 40 |
| चिलास | 35 27 | 74 06 | –33 36 |
| चुशूल | 33 35 | 78 39 | –15 24 |
| छम्ब | 32 51 | 74 23 | –32 28 |
| **जम्मू** | **32 43** | **74 54** | **–30 24** |
| जंगला | 33 40 | 77 00 | –22 00 |
| जास्कार | 33 20 | 77 00 | –22 00 |
| डोडा | 33 10 | 75 35 | –27 40 |
| द्रास | 34 22 | 75 50 | –26 40 |
| नवांशहर | 32 30 | 74 46 | –30 56 |
| नागिर | 36 17 | 74 45 | –31 00 |
| नौशेहरा | 33 11 | 74 17 | –32 52 |
| पहलगांव | 34 01 | 75 24 | –28 24 |

| जम्मू-कश्मीर के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| पुंछ | 33 51 | 74 08 | –33 28 |
| बनिहाल | 33 32 | 75 19 | –28 44 |
| बटोटी | 33 06 | 75 19 | –28 44 |
| बटोत | 33 06 | 75 19 | –28 44 |
| बड़गाम | 34 00 | 74 44 | –31 04 |
| बसौली | 32 30 | 75 49 | –26 24 |
| बारामूला | 34 10 | 74 20 | –32 40 |
| बिशनाह | 32 36 | 74 51 | –30 36 |
| भद्रवाह | 32 59 | 75 43 | –27 08 |
| मनावर | 32 50 | 74 25 | –32 20 |
| मार्तण्ड | 33 48 | 75 18 | –28 48 |
| मुज़फ्फराबाद | 34 22 | 73 31 | –35 56 |
| रामनगर | 32 50 | 75 22 | –28 32 |
| राजौरी | 33 23 | 74 18 | –32 48 |
| रामबन | 33 14 | 75 15 | –29 00 |
| रियासी | 33 04 | 74 53 | –30 28 |
| लद्दाख (रेंज) | 32 00 | 80 00 | –10 00 |
| वैष्णोदेवी | 33 03 | 74 56 | –30 16 |
| शेरकिला | 36 05 | 74 04 | –33 44 |
| श्रीनगर | 34 06 | 74 50 | –30 40 |
| साम्बा | 32 33 | 75 07 | –29 32 |
| सोपूर | 34 19 | 74 30 | –32 00 |
| सोनामर्ग | 34 19 | 75 20 | –28 40 |
| सोन्दर | 33 29 | 75 57 | –26 12 |
| सुन्दरबनी | 33 02 | 74 29 | –32 04 |
| लद्दाख (रेंज) | 32 00 | 80 00 | –10 00 |
| **झारखण्ड** | | | |
| धनबाद | 23 47 | 86 30 | +16 00 |
| हज़ारीबाग | 23 59 | 85 25 | +11 40 |
| जमशेदपुर | 22 50 | 86 10 | +14 40 |
| राँची | 23 23 | 85 23 | +11 32 |
| **तामिलनाडू** | | | |
| चेन्नई | 13 05 | 80 17 | –08 52 |
| कांचीपुरम् | 12 50 | 79 44 | –11 04 |

| तामिलनाडू के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| मदुरै | 9 58 | 78 10 | –17 20 |
| रामेश्वरम् | 09 17 | 79 22 | –12 32 |
| **तेलंगाना** | | | |
| करनूल | 15 50 | 78 03 | –17 48 |
| हैदराबाद | 17 24 | 78 30 | –16 00 |
| **त्रिपुरा** | | | |
| अगरतला | 23 49 | 91 18 | +35 12 |
| **दादर–नगर–हवेली** | | | |
| सिल्वासा | 20 17 | 73 00 | –38 00 |
| **डमन एण्ड डियू** | | | |
| डामन | 20 25 | 72 51 | –38 36 |
| डियू (Diu) | 20 42 | 70 59 | –46 04 |
| **दिल्ली** | | | |
| पु. दिल्ली | 28 39 | 77 12 | –21 12 |
| शाहदरा | 28 40 | 77 19 | –20 44 |
| न्यू दिल्ली | 28 40 | 77 13 | –21 08 |
| शकरपुर | 28 41 | 77 09 | –21 24 |
| **नागालैण्ड** | | | |
| कोहिमा | 25 41 | 94 07 | +46 28 |
| दीमापुर | 25 44 | 93 43 | +44 52 |
| **प. बंगाल** | | | |
| आसनसोल | 23 42 | 87 01 | +18 04 |
| कोलकाता | 22 34 | 88 24 | +23 36 |
| दार्जिलिंग | 27 03 | 88 18 | +23 12 |
| पुरुलिया | 23 20 | 86 24 | +15 36 |
| दुर्गापुर | 23 30 | 87 20 | +19 20 |
| सिलीगुड़ी | 26 42 | 88 26 | +23 44 |
| हावड़ा | 22 25 | 88 20 | +23 20 |

| पंजाब के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| **पंजाब** | | | |
| **अमृतसर** | 31 37 | 74 55 | –30 20 |
| अजनाला | 31 51 | 74 48 | –30 48 |
| अटारी | 31 37 | 74 36 | –31 36 |
| अमलोह | 30 37 | 76 15 | –25 00 |
| अहमदगढ़ | 30 41 | 75 51 | –26 36 |
| अबोहर | 30 09 | 74 11 | –33 16 |
| अकालगढ़ | 29 50 | 75 54 | –26 24 |
| अमरगढ़ | 30 28 | 76 01 | –25 56 |
| अलावलपुर | 31 26 | 75 39 | –27 24 |
| आनन्दपुर सा. | 31 15 | 76 32 | –23 52 |
| आदमपुर | 31 25 | 75 43 | –27 08 |
| उरमर–टाण्डा | 31 40 | 75 41 | –27 16 |
| कपूरथला | 31 23 | 75 23 | –28 28 |
| करतारपुर | 31 27 | 75 30 | –28 00 |
| कादियां | 31 49 | 75 23 | –28 28 |
| कीतरपुर साहिब | 31 11 | 76 34 | –23 44 |
| कुराली | 30 50 | 76 35 | –23 40 |
| कोटकपूरा | 30 34 | 74 52 | –30 32 |
| खन्ना | 30 42 | 76 13 | –25 08 |
| खरड़ | 30 45 | 76 38 | –23 28 |
| खेमकरण | 31 08 | 74 35 | –31 40 |
| गड़दीवाल | 31 44 | 75 45 | –27 00 |
| गढ़शंकर | 31 13 | 76 08 | –25 28 |
| गिद्दड़बाहा | 30–12 | 74–40 | –31 20 |
| गुरदासपुर | 32 02 | 75 27 | –28 12 |
| गुरुहरसहाय | 30 43 | 74 25 | –32 20 |
| गोईन्दवाल सा. | 31 22 | 75 08 | –29 28 |
| गोराया | 31 06 | 75 47 | –26 52 |
| गोबिन्दगढ़ मण्डी | 30 41 | 76 18 | –24 28 |
| घनौर | 30 21 | 76 37 | –23 32 |
| चमकौर साहि. | 30 55 | 76 24 | –24 24 |

# भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

| पंजाब के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| छहरटा | 31 16 | 74 53 | −30 28 |
| जगरांव | 30 48 | 75 30 | −28 00 |
| जलालाबाद | 30 37 | 74 15 | −33 00 |
| जण्डियालागुरु | 31 34 | 75 01 | −29 56 |
| जाखल | 29 48 | 75 41 | −26 36 |
| जालन्धर | 31 19 | 75 34 | −27 44 |
| जालन्धर कैंट | 31 20 | 75 26 | −28 16 |
| जीरा | 30 57 | 74 59 | −30 04 |
| जैतों | 30 28 | 74 53 | −30 28 |
| जैजों | 31 21 | 76 09 | −25 24 |
| डबवाली मण्डी | 29 59 | 74 42 | −31 12 |
| ढिलवां | 31 25 | 75 19 | −28 44 |
| तपा मण्डी | 30 19 | 75 21 | −28 36 |
| तरनतारन | 31 28 | 74 58 | −30 08 |
| तलवाड़ा | 31 56 | 75 53 | −26 28 |
| तलवंडी साबो | 29 59 | 74 59 | −30 04 |
| दतारपुर | 31 53 | 75 45 | −27 00 |
| दसूहा | 31 49 | 75 38 | −27 28 |
| दमदमा साहिब | 30 50 | 76 04 | −25 44 |
| दीनानगर | 32 08 | 75 28 | −28 08 |
| दोराहा मण्डी | 30 49 | 76 01 | −25 56 |
| दौलतपुर | 31 58 | 75 38 | −27 28 |
| धर्मकोट | 30 53 | 75 14 | −29 04 |
| धारीवाल | 31 57 | 75 19 | −28 44 |
| धूरी | 30 22 | 75 52 | −26 32 |
| नकोदर | 31 07 | 75 29 | −28 04 |
| नवांशहर | 31 07 | 76 08 | −25 28 |
| नंगल | 31 23 | 76 23 | −24 28 |
| नाभा | 30 25 | 76 09 | −25 24 |
| नूरमहल | 31 05 | 75 35 | −27 40 |
| नूरपुर बेदी | 31 09 | 76 29 | −24 04 |
| पटियाला | 30 20 | 76 25 | −24 20 |

| पंजाब के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| पट्टी | 31 17 | 74 51 | −30 36 |
| पठानकोट | 32 17 | 75 42 | −27 12 |
| फरीदकोट | 30 40 | 74 45 | −31 00 |
| फगवाड़ा | 31 14 | 75 46 | −26 56 |
| फतेहगढ़ सा. | 30 39 | 76 22 | −24 32 |
| फतेहगढ़ | 31 03 | 75 03 | −29 48 |
| फाज़िल्का | 30 24 | 74 04 | −33 44 |
| फिल्लौर | 31 01 | 75 48 | −26 48 |
| फिरोजपुर | 30 55 | 74 40 | −31 20 |
| बरनाला | 30 23 | 75 33 | −27 48 |
| बनूड़(मोहाली) | 30 34 | 76 43 | −23 08 |
| बस्सी | 30 35 | 76 50 | −22 40 |
| बसी-पठाना | 30 40 | 76 23 | −24 28 |
| बटाला | 31 48 | 75 12 | −29 12 |
| बंगा | 31 11 | 75 59 | −26 04 |
| बलाचौर | 31 03 | 76 19 | −24 44 |
| बाबा बकाला | 31 33 | 75 15 | −29 00 |
| बाघा पुराना | 30 41 | 75 06 | −29 36 |
| बिलगा | 31 02 | 75 26 | −28 16 |
| बुढलाडा | 29 56 | 75 34 | −27 44 |
| बेला | 30 56 | 76 24 | −24 24 |
| ब्यास | 31 32 | 75 18 | −28 48 |
| भटिण्डा | 30 11 | 75 00 | −30 00 |
| भवानीगढ़ | 30 16 | 76 01 | −25 56 |
| भुलत्थ | 31 32 | 75 32 | −27 32 |
| भुच्चो (मण्डी) | 30 13 | 75 06 | −29 36 |
| भोगपुर | 31 33 | 75 38 | −27 28 |
| मजीठा | 31 46 | 74 57 | −30 12 |
| मलोट | 30 13 | 74 29 | −32 04 |
| मलेरकोटला | 30 31 | 75 53 | −26 28 |
| मानसा | 29 59 | 75 23 | −28 28 |
| मुकेरिया | 31 57 | 75 37 | −27 32 |
| मुबारिकपुर | 30 37 | 76 51 | −22 36 |

| पंजाब के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| मुक्तसर | 30 29 | 74 31 | −31 56 |
| मोगा | 30 48 | 75 10 | −29 20 |
| मोरांवली | 31 18 | 76 01 | −25 56 |
| मोरिण्डा | 30 48 | 76 30 | −24 00 |
| मोहाली | 30 42 | 76 42 | −23 12 |
| राजपुरा | 30 29 | 76 36 | −23 36 |
| रामपुरा फूल | 30 17 | 75 14 | −29 04 |
| रायकोट | 30 41 | 75 36 | −27 36 |
| राहों | 31 03 | 76 07 | −25 32 |
| रोपड़ (रूपनगर) | 30 57 | 76 32 | −23 52 |
| लुधियाना | 30 55 | 75 54 | −26 24 |
| लोहियांखास | 31 08 | 75 28 | −28 04 |
| शाहकोट | 31 03 | 75 19 | −28 44 |
| शाहपुर | 32 17 | 75 46 | −26 56 |
| संगरूर | 30 14 | 75 50 | −26 40 |
| सरहिन्द | 30 38 | 76 23 | −24 28 |
| समराला | 30 51 | 76 11 | −25 16 |
| सनौर | 30 18 | 76 30 | −24 00 |
| समाना | 30 09 | 76 12 | −25 12 |
| सुजानपुर | 32 19 | 75 26 | −28 16 |
| सुल्तानपुर लोधी | 31 13 | 75 11 | −29 16 |
| सुनाम | 30 08 | 75 48 | −26 48 |
| सोहाणां | 30 42 | 76 42 | −23 12 |
| हमीरा | 31 27 | 75 19 | −28 44 |
| हरयाणा | 31 36 | 75 48 | −26 48 |
| हरीके पत्तन | 31 30 | 74 57 | −30 12 |
| हाजीपुर टा. | 31 59 | 75 45 | −27 00 |
| होशियारपुर | 31 32 | 75 57 | −26 12 |
| **पाण्डिचेरी** | | | |
| पांडिचेरी | 11 56 | 79 53 | −10 28 |
| महे (Mahe) | 11 42 | 75 32 | −27 52 |

| बिहार के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| **बिहार** | | | |
| कटिहार | 25 31 | 87 34 | +20 16 |
| किशनगंज | 26 06 | 87 56 | +21 44 |
| गया | 24 49 | 85 01 | +10 04 |
| छपरा | 25 47 | 84 45 | +09 00 |
| दरभंगा | 26 10 | 85 57 | +13 48 |
| सीतामढ़ी | 26 35 | 85 32 | +12 08 |
| सीवां | 26 12 | 84 23 | +07 32 |
| पटना | 25 37 | 85 10 | +10 40 |
| झरिया | 23 50 | 86 24 | +15 36 |
| समस्तीपुर | 25 55 | 85 50 | +13 20 |
| धनबाद | 23 47 | 86 30 | +16 00 |
| बांकीपुर | 25 40 | 85 12 | +10 48 |
| बेगुसराय | 25 25 | 86 08 | +14 32 |
| भागलपुर | 25 15 | 87 00 | +18 00 |
| मधुबनी | 26 22 | 86 05 | +14 20 |
| **मणिपुर** | | | |
| इम्फाल | 24 46 | 93 58 | +45 52 |
| उखरूल | 25 05 | 94 21 | +47 24 |
| **मध्यप्रदेश** | | | |
| अगर | 23 42 | 76 01 | −25 56 |
| अजयगढ़ | 24 53 | 80 13 | −09 08 |
| अमरकंटक | 22 40 | 81 45 | −03 00 |
| अमला | 21 56 | 78 07 | −17 32 |
| अम्बाह | 26 43 | 78 14 | −17 04 |
| अन्नूपुर | 22 40 | 81 48 | −05 18 |
| अलिराजपुर | 22 19 | 74 21 | −32 36 |
| अशोकनगर | 24 34 | 77 43 | −19 08 |
| इच्छापुर | 21 05 | 76 09 | −25 24 |
| इच्छावर | 23 01 | 77 01 | −21 56 |
| इटारसी | 22 37 | 77 45 | −19 00 |
| इटावा | 24 05 | 78 12 | −17 12 |
| इन्दौर | 22 43 | 75 50 | −26 40 |
| उज्जैन | 23 11 | 75 46 | −26 56 |

# भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

| मध्यप्रदेश के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| उमरिया | 23 32 | 80 50 | —06 40 |
| उमरिया (बा.गढ़) | 23 48 | 80 56 | —06 16 |
| ओरछा | 25 21 | 78 39 | —15 24 |
| कटनी | 23 51 | 80 24 | —08 24 |
| कुकशी | 22 12 | 74 45 | —31 00 |
| कोठी | 24 45 | 80 45 | —07 00 |
| कोरवई | 24 08 | 78 03 | —17 48 |
| क्षिप्रा | 22 54 | 78 00 | —26 00 |
| खजुराहो | 24 50 | 79 58 | —10 08 |
| खण्डवा | 21 50 | 76 20 | —24 40 |
| खेतिया | 21 40 | 74 35 | —31 40 |
| खुरई | 24 03 | 78 19 | —16 44 |
| गुना | 24 39 | 77 19 | —20 44 |
| गोहद | 26 26 | 78 27 | —16 12 |
| ग्वालियर | 26 13 | 78 10 | —17 20 |
| चन्दला | 25 05 | 80 12 | —09 12 |
| चन्देरी | 24 43 | 78 08 | —17 28 |
| चाचोरा | 24 10 | 76 59 | —22 04 |
| चापरा | 22 44 | 76 20 | —24 40 |
| छतरपुर | 24 55 | 79 36 | —11 36 |
| छिन्दवाड़ा | 22 04 | 78 56 | —14 16 |
| छोटा छिन्दवाड़ा | 23 03 | 79 29 | —12 04 |
| जबलपुर | 23 10 | 79 57 | —10 12 |
| झाबुआ | 22 46 | 74 36 | —31 36 |
| टीकमगढ़ | 24 46 | 78 53 | —14 28 |
| तिरोदी | 21 41 | 79 42 | —11 12 |
| दतिया | 25 40 | 78 28 | —16 08 |
| दमोह | 23 50 | 79 27 | —12 12 |
| देवास | 22 58 | 76 04 | —25 44 |
| धार | 22 36 | 75 18 | —28 48 |
| नयागाँव | 25 54 | 77 10 | —21 20 |
| नरसिंहपुर | 22 57 | 79 12 | —13 12 |
| नीमच | 24 28 | 74 52 | —30 32 |

| मध्यप्रदेश के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| पंचमढ़ी | 22 30 | 78 26 | —16 16 |
| पठारिया | 23 54 | 79 12 | —13 12 |
| पन्ना | 24 43 | 80 12 | —09 12 |
| पाटन | 23 18 | 79 42 | —11 12 |
| पांधुरना | 21 36 | 78 31 | —15 56 |
| पिछोर (ग्वा.) | 25 58 | 78 24 | —16 24 |
| पिपारिया | 22 45 | 78 21 | —16 36 |
| प्रतापगढ़ | 24 02 | 74 47 | —30 52 |
| बन्दा | 24 03 | 78 57 | —14 12 |
| बरनगर | 23 03 | 75 22 | —28 32 |
| बालाघाट | 21 48 | 80 11 | —09 16 |
| बासोदा | 23 51 | 77 56 | —18 16 |
| बीना (इटावा) | 24 11 | 78 11 | —17 16 |
| बुरहानपुर | 21 18 | 76 14 | —25 04 |
| बैतूल | 21 55 | 77 54 | —18 24 |
| भिण्ड | 26 34 | 78 48 | —14 48 |
| भोपाल | 23 16 | 77 24 | —20 24 |
| मऊगंज | 24 41 | 81 53 | —02 28 |
| मण्डला | 22 36 | 80 23 | —08 28 |
| मनावर | 22 14 | 75 05 | —29 40 |
| मन्दसौर | 24 04 | 75 04 | —29 44 |
| महाराजपुर | 25 01 | 79 44 | —11 04 |
| महेश्वर | 22 11 | 75 35 | —27 40 |
| मानपुर | 23 46 | 81 08 | —05 28 |
| मुरैना | 26 30 | 78 09 | —17 24 |
| मुलतई | 21 46 | 78 15 | —17 00 |
| मैहर | 24 16 | 80 45 | —07 00 |
| रतलाम | 23 19 | 75 04 | —29 44 |
| राजगढ़ | 23 56 | 76 58 | —22 08 |
| राजपुर | 25 23 | 81 09 | —05 24 |
| रामनगर | 22 13 | 80 47 | —06 52 |
| रामपुरा | 24 28 | 75 26 | —28 16 |

| मध्यप्रदेश के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| रायसेन | 23 20 | 77 48 | —18 48 |
| राहतगढ़ | 23 47 | 78 22 | —16 32 |
| रीवा | 24 32 | 81 18 | —04 48 |
| रेहली | 23 38 | 79 05 | —13 40 |
| लखनादोन | 22 36 | 79 36 | —11 36 |
| लखेड़ी | 25 40 | 76 10 | —25 20 |
| लामटा | 22 08 | 80 07 | —09 32 |
| विदिशा | 23 32 | 77 49 | —18 44 |
| वैधन | 24 04 | 82 20 | —00 40 |
| शहडोल | 23 20 | 81 21 | —04 36 |
| शाजापुर | 23 26 | 76 16 | —24 56 |
| शाहपुरा | 23 11 | 80 42 | —07 12 |
| शिवपुरी | 25 26 | 77 39 | —19 24 |
| श्योपुर | 25 40 | 76 42 | —23 12 |
| सतना | 24 35 | 80 50 | —06 40 |
| सनावद | 22 11 | 76 04 | —25 44 |
| सबलगढ़ | 26 15 | 77 24 | —20 24 |
| सरदारपुर | 22 39 | 74 59 | —30 04 |
| सागर | 23 50 | 78 43 | —15 08 |
| सांची | 23 29 | 77 44 | —19 04 |
| सारंगपुर | 23 34 | 76 28 | —24 08 |
| सिरोंज | 24 06 | 77 42 | —19 12 |
| सिहोरा | 23 29 | 80 07 | —09 32 |
| सिहोर | 23 12 | 77 05 | —21 40 |
| सीधी | 24 25 | 81 53 | —02 28 |
| सेओनी | 22 05 | 79 32 | —11 52 |
| सेओनीमालवा | 22 27 | 77 28 | —20 08 |
| सेंधवा | 21 41 | 75 06 | —29 36 |
| सोहागपुर | 22 42 | 78 12 | —17 12 |
| हट्टा | 24 07 | 79 36 | —11 36 |
| हरदा | 22 20 | 77 06 | —21 36 |
| होशंगाबाद | 22 45 | 77 44 | —19 04 |

| छत्तीसगढ़ के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| | **छत्तीसगढ़** | | |
| अम्बिकापुर | 23 07 | 83 12 | +02 48 |
| आरंग | 21 12 | 81 58 | —02 08 |
| कवर्धा | 22 00 | 81 15 | —05 00 |
| कांकेर | 20 17 | 81 29 | —04 04 |
| काठघोरा | 22 30 | 82 33 | +00 12 |
| कुतरू | 19 05 | 80 48 | —06 48 |
| कुरसेकोडी | 20 12 | 80 48 | —06 48 |
| कोंगूर | 19 53 | 81 27 | —04 12 |
| कोण्डागांव | 19 36 | 81 40 | —03 20 |
| कोरबा | 22 21 | 82 41 | +00 44 |
| जगदलपुर | 19 04 | 82 02 | —01 52 |
| जशपुरनगर | 22 54 | 84 09 | +06 36 |
| दन्तेवाड़ा | 18 54 | 81 21 | —04 36 |
| दुर्ग | 21 11 | 81 17 | —04 52 |
| धमतरी | 20 41 | 81 34 | —03 44 |
| धर्मजयगढ़ | 22 28 | 83 13 | +02 52 |
| धर्मावरम | 18 16 | 80 55 | —06 20 |
| नवापाड़ा | 20 58 | 81 53 | —02 28 |
| पण्डारिया | 22 14 | 81 25 | —04 20 |
| बलोदाबाज़ार | 21 40 | 82 10 | —01 20 |
| बस्तर | 19 12 | 81 57 | —02 12 |
| बिलासपुर | 22 05 | 82 09 | —01 24 |
| बैकुण्ठपुर | 23 15 | 82 33 | +00 12 |
| भरतपुर | 23 44 | 81 45 | —03 00 |
| भाटपाड़ा | 21 44 | 81 56 | —02 16 |
| भिलई | 21 13 | 81 26 | —04 16 |
| महासमुन्द | 21 06 | 82 06 | —01 36 |
| राजनान्दगांव | 21 06 | 81 02 | —05 52 |
| रामानुजगंज | 23 48 | 83 42 | +04 48 |
| रायगढ़ | 21 55 | 83 26 | +03 44 |
| रायपुर | 21 14 | 81 38 | —03 28 |

# भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

| छत्तीसगढ़ के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| सक्ति | 22 02 | 82 58 | +01 52 |
| सारनगढ़ | 21 36 | 83 05 | +02 20 |
| सेओरी नारायण | 21 44 | 82 35 | +00 20 |
| **महाराष्ट्र** | | | |
| अकलकोट | 17 32 | 76 13 | −25 08 |
| अकोला(मुम्ब.) | 20 44 | 77 00 | −22 00 |
| अकोट | 21 11 | 77 04 | −21 44 |
| अचलपुर | 21 16 | 77 31 | −19 56 |
| अमरावती | 20 56 | 77 45 | −19 00 |
| अम्बजोगई | 18 44 | 76 23 | −24 28 |
| अरमोरी | 20 28 | 79 59 | −10 04 |
| अरवी | 20 59 | 78 14 | −17 04 |
| अलीपुर | 20 34 | 78 41 | −15 16 |
| अहमदनगर | 19 05 | 74 44 | −31 04 |
| उल्हासनगर | 19 13 | 73 07 | −37 32 |
| एलोरा | 20 01 | 75 10 | −29 20 |
| ओस्मानाबाद | 18 10 | 76 02 | −25 52 |
| औरंगाबाद | 19 53 | 75 20 | −28 40 |
| कतोल | 21 16 | 78 35 | −15 40 |
| कराड़ | 17 17 | 74 12 | −33 12 |
| कल्याण | 19 15 | 73 09 | −37 24 |
| कामथी | 21 14 | 79 12 | −13 12 |
| किरकी | 18 34 | 73 52 | −34 32 |
| कोल्हापुर | 16 42 | 74 13 | −33 08 |
| खमगांव | 20 41 | 76 34 | −23 44 |
| खेड़ (रत्नागिरी) | 17 43 | 73 23 | −36 28 |
| गंगापुर | 19 41 | 75 01 | −29 56 |
| गोंडिया(मुम्बई) | 21 27 | 80 12 | −09 12 |
| घाटकोपर (मुम्बई) | 19 05 | 72 54 | −38 24 |
| चन्द्रापुर | 19 57 | 79 18 | −12 48 |
| चालिसगांव | 20 28 | 75 01 | −29 56 |
| चिखली | 20 21 | 76 15 | −25 00 |

| महाराष्ट्र के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| चिपलून | 17 32 | 73 31 | −35 56 |
| चोपड़ा | 21 15 | 75 18 | −28 48 |
| जलगांव | 21 01 | 75 34 | −27 44 |
| जलगांव (अकोला) | 21 03 | 76 32 | −23 52 |
| जालना | 19 50 | 75 53 | −26 28 |
| जुन्नार | 19 12 | 73 53 | −34 28 |
| तासगांव | 17 02 | 74 36 | −31 36 |
| थाने | 19 12 | 72 58 | −38 08 |
| दरवाहा | 20 19 | 77 46 | −18 56 |
| दिगरस | 20 06 | 77 43 | −19 08 |
| दिगलूर | 18 33 | 77 36 | −19 36 |
| देवलाली | 19 57 | 73 50 | −34 40 |
| धुलिया | 20 54 | 74 47 | −30 52 |
| नन्दगांव | 20 19 | 74 39 | −31 24 |
| नागपुर | 21 09 | 79 06 | −13 36 |
| नान्देड़ | 19 09 | 77 20 | −20 40 |
| नासिक | 19 59 | 73 48 | −34 48 |
| नेवी-मुम्बई | 19 02 | 73 02 | −37 52 |
| पंढरपुर | 17 40 | 75 20 | −28 40 |
| पनवेल | 18 59 | 73 06 | −37 36 |
| पाचोरा | 20 40 | 75 21 | −28 36 |
| पाटन(महेसाणा) | 23 50 | 72 07 | −41 32 |
| पातुर | 20 27 | 76 56 | −22 16 |
| पुणे | 18 32 | 73 52 | −34 44 |
| पुलगांव | 20 44 | 78 20 | −16 40 |
| बारसी | 18 14 | 75 42 | −27 12 |
| बारामती | 18 09 | 74 35 | −21 40 |
| बालापुर | 20 40 | 76 46 | −22 56 |
| बासमत | 19 19 | 77 10 | −21 20 |
| बीड़ | 18 59 | 75 46 | −26 56 |
| भण्डारा | 21 10 | 79 39 | −11 24 |
| भिवंडी | 19 18 | 73 04 | −37 44 |
| भुसावल | 21 03 | 75 46 | −26 56 |
| भोकरदान | 20 16 | 75 46 | −26 56 |

| महाराष्ट्र के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| मनवात | 19 18 | 76 30 | −24 00 |
| मल्कापुर(बुल्डाना) | 20 53 | 76 12 | −25 12 |
| महाद | 18 05 | 73 25 | −36 20 |
| महाबलेश्वर | 17 55 | 73 40 | −35 20 |
| मालवान | 16 04 | 73 28 | −36 08 |
| मालेगांव (ना.) | 20 33 | 74 32 | −31 52 |
| **मुम्बई** | **18 58** | **72 50** | **−38 40** |
| मुम्ब्रा (थाना) | 19 10 | 73 03 | −37 48 |
| मुरुद | 18 19 | 72 58 | −38 08 |
| यवतमाल | 20 24 | 78 08 | −17 28 |
| रत्नागिरि | 16 59 | 73 18 | −36 48 |
| रामटेक | 21 24 | 79 20 | −12 40 |
| लाटूर | 18 24 | 76 34 | −23 44 |
| वर्धा | 20 45 | 78 37 | −15 32 |
| वसाई | 19 21 | 72 48 | −38 48 |
| वाशिम | 20 06 | 77 09 | −21 24 |
| वाशी | 19 13 | 73 10 | −37 20 |
| वाई | 17 56 | 73 54 | −34 24 |
| वैजापुर | 19 55 | 74 44 | −31 12 |
| शिरपुर | 21 21 | 74 53 | −30 28 |
| शोलापुर | 17 41 | 75 55 | −26 20 |
| श्रीवर्धन | 18 02 | 73 01 | −37 56 |
| सकोली | 21 05 | 79 59 | −10 04 |
| संगोला | 17 26 | 75 12 | −29 12 |
| सतना | 20 35 | 74 12 | −33 12 |
| सतारा | 17 41 | 73 59 | −34 04 |
| सांगली | 16 52 | 74 34 | −31 44 |
| सिन्नार | 19 51 | 74 00 | −34 00 |
| हरनाई | 17 48 | 73 06 | −37 36 |
| हिंगोली | 19 43 | 77 09 | −21 24 |
| **मिज़ोरम** | | | |
| ऐज़वाल | 23 43 | 92 44 | +40 56 |

| राजस्थान के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| **मेघालय** | | | |
| शिलांग | 25 34 | 91 56 | +37 44 |
| **राजस्थान** | | | |
| अजमेर | 26 27 | 74 42 | −31 12 |
| अनूपगढ़ | 29 07 | 73 06 | −37 36 |
| अलवर | 27 34 | 76 38 | −23 28 |
| असोप | 26 48 | 73 44 | −35 04 |
| अलीगढ़ | 25 58 | 76 07 | −25 30 |
| अमेट | 25 20 | 73 59 | −34 04 |
| आबू | 24 40 | 72 45 | −39 00 |
| आमेर | 26 59 | 75 52 | −26 32 |
| उदयपुर | 24 35 | 73 41 | −35 16 |
| एकलिंगजी | 24 44 | 73 46 | −34 56 |
| करौली | 26 30 | 77 01 | −21 56 |
| कांकरोली | 25 02 | 73 54 | −34 24 |
| किशनगढ़ | 26 33 | 74 52 | −30 32 |
| केकड़ी | 25 55 | 75 10 | −29 20 |
| कोटा | 25 10 | 75 52 | −26 32 |
| खण्डेला | 27 37 | 75 32 | −27 52 |
| गोगुण्डा | 24 46 | 73 34 | −35 44 |
| घोटारू | 27 18 | 70 04 | −49 44 |
| चात्सू | 26 36 | 75 59 | −26 04 |
| चितौड़गढ़ | 24 54 | 74 42 | −31 12 |
| चूरू | 28 19 | 75 01 | −29 56 |
| चोमू | 27 08 | 75 47 | −26 52 |
| चोटां | 25 28 | 71 06 | −45 36 |
| छाबरा | 24 40 | 76 54 | −22 24 |
| छोटीसदड़ी | 24 24 | 74 36 | −31 36 |
| जयपुर | 26 55 | 75 52 | −26 32 |
| जसवंतपुरा | 24 48 | 72 30 | −40 00 |
| जालौर | 25 22 | 72 38 | −39 28 |

# भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

| राजस्थान के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| जैसलमेर | 26 55 | 70 54 | −46 24 |
| जोधपुर | 26 18 | 73 04 | −37 44 |
| जोधासर | 28 07 | 73 50 | −34 40 |
| झालावाड़ | 24 36 | 76 09 | −25 24 |
| झुंझुनू | 28 06 | 75 25 | −28 20 |
| टोडारायसिंह | 26 00 | 75 29 | −28 04 |
| टोंक | 26 11 | 75 50 | −26 40 |
| डीडवाना | 27 17 | 74 25 | −32 20 |
| डूँगरपुर | 23 50 | 73 43 | −35 08 |
| तिजारा | 27 55 | 76 50 | −22 40 |
| थानागाजी | 27 25 | 76 19 | −24 44 |
| देओरा | 26 30 | 70 42 | −47 12 |
| देचू | 26 47 | 72 20 | −40 40 |
| देओरा | 26 30 | 70 42 | −47 12 |
| दौसा | 26 51 | 76 21 | −24 36 |
| धौलपुर | 26 42 | 77 53 | −18 28 |
| नवलगढ़ | 27 51 | 75 18 | −28 48 |
| नसीराबाद | 26 18 | 74 46 | −30 56 |
| नागौर | 27 11 | 73 40 | −35 20 |
| नाचना | 27 29 | 71 45 | −43 00 |
| नाथद्वारा | 24 56 | 73 50 | −34 40 |
| नीम का थाना | 27 44 | 75 48 | −26 48 |
| नोखा | 27 35 | 73 29 | −36 04 |
| नौहर | 29 11 | 74 46 | −30 56 |
| पचपदरा | 25 55 | 72 21 | −40 36 |
| परबतसर | 26 53 | 74 47 | −30 52 |
| पाली | 25 46 | 73 25 | −36 20 |
| पिलानी | 28 23 | 75 35 | −27 40 |
| पुष्कर | 26 30 | 74 34 | −31 44 |
| पोखरन | 26 56 | 71 55 | −42 20 |
| फतेहपुर | 28 00 | 75 00 | −30 00 |
| फलौदी | 27 09 | 72 22 | −40 32 |

| राजस्थान के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| फुलेरा | 26 52 | 75 16 | −28 56 |
| बड़ी सादड़ी | 24 25 | 74 28 | −32 08 |
| बयाना | 26 55 | 77 17 | −20 52 |
| बाड़मेर | 25 46 | 71 25 | −44 20 |
| बांदीकुई | 27 02 | 76 34 | −23 44 |
| बाप | 27 24 | 72 22 | −40 32 |
| बाराँ | 25 07 | 76 30 | −24 00 |
| बांसवाड़ा | 23 30 | 74 24 | −32 24 |
| बालोतरा | 25 50 | 72 14 | −41 04 |
| बिलाड़ा | 26 11 | 73 42 | −35 12 |
| बीकानेर | 28 01 | 73 22 | −36 32 |
| बून्दी | 25 27 | 75 40 | −27 20 |
| भरतपुर | 27 05 | 77 30 | −20 00 |
| भादरा | 29 15 | 75 20 | −28 40 |
| भीलवाड़ा | 25 21 | 74 40 | −31 20 |
| भीनमाल | 25 01 | 72 19 | −40 44 |
| मकराना | 27 04 | 74 43 | −31 08 |
| महाजन | 28 49 | 73 56 | −34 16 |
| मांगरोल | 25 21 | 76 30 | −24 00 |
| मावली | 24 48 | 73 58 | −34 08 |
| मुकन्दबाड़ा | 24 49 | 76 01 | −25 56 |
| मेड़ता सिटी | 26 40 | 74 06 | −33 36 |
| मेड़ता रोड़ | 26 44 | 73 55 | −34 20 |
| मोहनगढ़ | 27 17 | 71 18 | −44 48 |
| रतनगढ़ | 28 05 | 74 39 | −31 24 |
| रानीवाड़ा | 24 46 | 72 13 | −41 08 |
| रायसिंहनगर | 29 32 | 73 27 | −36 12 |
| लछमनगढ़ | 27 45 | 75 04 | −29 44 |
| लाठी | 27 03 | 71 30 | −44 00 |
| शाहगढ़ | 27 08 | 69 58 | −50 08 |
| श्रीगंगानगर | 29 49 | 73 50 | −34 40 |
| श्रीमाधोपुर | 27 25 | 75 32 | −27 52 |

| राजस्थान के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| श्रीमोहनगढ़ | 27 17 | 71 12 | −45 12 |
| समदड़ी | 25 49 | 72 35 | −39 40 |
| सरदारशहर | 28 27 | 74 30 | −32 00 |
| सरूपसर | 29 22 | 73 37 | −35 32 |
| सवाईमाधोपुर | 25 59 | 76 30 | −24 00 |
| सांगानेर | 26 49 | 75 52 | −26 32 |
| सांचोर | 24 41 | 71 50 | −42 40 |
| साम्भर | 26 55 | 75 10 | −29 20 |
| सादूलपुर | 28 39 | 75 24 | −28 24 |
| सिरोही | 24 54 | 72 55 | −38 20 |
| सिवाना | 25 37 | 72 27 | −40 12 |
| सिरोही | 24 53 | 72 54 | −38 24 |
| सीकर | 27 36 | 75 09 | −29 24 |
| सुजानगढ़ | 27 42 | 74 30 | −32 00 |
| सूरतगढ़ | 29 19 | 73 57 | −34 12 |
| हनुमानगढ़ | 29 35 | 74 21 | −32 36 |
| रामगढ़ (जयपुर) | 27 14 | 75 10 | −29 20 |
| शाहपुरा (जयपुर) | 27 22 | 75 58 | −26 08 |
| शाहपुरा (भीलवाड़ा) | 25 40 | 74 50 | −30 40 |
| शेरगढ़ (जोधपुर) | 26 24 | 72 21 | −40 36 |
| शेरगढ़ (झालावाड़) | 24 41 | 76 32 | −23 52 |
| हनुमानगढ़ | 29 35 | 74 21 | −32 36 |

## सिक्किम

| | | | |
|---|---|---|---|
| गंगटोक | 27 22 | 88 36 | +24 24 |

## हरियाणा

| | | | |
|---|---|---|---|
| **अम्बाला कैंट** | 30 21 | 76 52 | −22 32 |
| अम्बाला शहर | 30 22 | 76 46 | −22 56 |
| अगरोहा | 29 20 | 75 38 | −27 88 |
| **करनाल** | 29 42 | 77 02 | −21 52 |
| कलानौर | 28 52 | 76 23 | −24 28 |
| कालका | 30 50 | 76 56 | −22 16 |

| हरियाणा के नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं. |
|---|---|---|---|
| **कुरुक्षेत्र** | 29 59 | 76 51 | −22 36 |
| केसरी | 30 15 | 76 53 | −26 28 |
| कैथल | 29 48 | 76 26 | −24 16 |
| खतौली | 30 37 | 76 58 | −22 08 |
| गुरुग्राम | 28 28 | 77 04 | −21 44 |
| गोहाना | 29 09 | 76 41 | −23 16 |
| घरौण्डा | 29 34 | 76 58 | −22 08 |
| चरखी-दादरी | 28 36 | 76 16 | −24 56 |
| जगाधरी | 30 10 | 77 16 | −20 56 |
| जाखल | 29 48 | 75 50 | −26 40 |
| जीन्द | 29 19 | 76 19 | −24 44 |
| झज्जर | 28 37 | 76 39 | −23 24 |
| टोहाना | 29 42 | 75 54 | −26 24 |
| थानेसर | 29 58 | 76 56 | −22 16 |
| दादरी | 28 33 | 77 32 | −19 52 |
| नरवाणा | 29 36 | 76 08 | −25 28 |
| नारनौल | 28 02 | 76 14 | −25 04 |
| नारायणगढ़ | 30 30 | 77 09 | −21 24 |
| नाहर | 28 23 | 76 23 | −24 28 |
| नीलोखेड़ी | 29 52 | 76 54 | −22 24 |
| पंचकूला | 30 42 | 76 52 | −22 32 |
| पटौदी | 28 19 | 76 48 | −22 48 |
| पलवर | 28 10 | 77 19 | −20 44 |
| **पानीपत** | 29 23 | 76 59 | −22 04 |
| पिंजौर | 30 49 | 76 55 | −22 20 |
| पिपली | 29 59 | 76 52 | −22 32 |
| पिहोवा | 29 58 | 76 35 | −23 40 |
| फतेहाबाद | 29 31 | 75 27 | −28 12 |
| फरीदाबाद | 28 26 | 77 19 | −20 44 |
| बल्लभगढ़ | 28 21 | 77 19 | −20 44 |
| बहादुरगढ़ | 28 42 | 76 55 | −22 20 |
| बरवाला | 29 23 | 75 55 | −26 20 |
| बालसमन्द | 29 05 | 75 29 | −28 04 |

# भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

| हरियाणा के नगर | अक्षांश (उत्तर) | | रेखांश (पूर्व) | | स्टैण्डर्ड अन्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | अं. | क. | अं. | क. | मिं. | सैं. |
| भादसों | 29 | 56 | 76 | 56 | —22 | 16 |
| भिवानी | 28 | 47 | 76 | 08 | —25 | 48 |
| मनसादेवी | 30 | 44 | 76 | 52 | —22 | 32 |
| मनीमाजरा | 30 | 42 | 76 | 52 | —22 | 32 |
| महेन्द्रगढ़ | 28 | 17 | 76 | 09 | —25 | 24 |
| मोहाना | 29 | 04 | 76 | 50 | —22 | 40 |
| यमुनानगर | 30 | 07 | 77 | 18 | —20 | 48 |
| रादौर | 30 | 02 | 77 | 06 | —21 | 36 |
| रिवाड़ी | 28 | 12 | 76 | 38 | —23 | 28 |
| रैना | 29 | 28 | 74 | 54 | —30 | 24 |
| रोडी | 29 | 44 | 75 | 15 | —29 | 00 |
| रोहतक | 28 | 54 | 76 | 38 | —23 | 28 |
| लाडवा | 29 | 59 | 77 | 05 | —21 | 40 |
| शाहाबाद | 30 | 10 | 76 | 55 | —22 | 20 |
| सिरसा | 29 | 32 | 75 | 01 | —29 | 56 |
| सिवानी | 28 | 55 | 75 | 37 | —27 | 32 |
| **सोनीपत** | 28 | 59 | 77 | 01 | —21 | 56 |
| हसनपुर | 27 | 59 | 77 | 29 | —20 | 04 |
| हांसी | 29 | 06 | 76 | 00 | —26 | 00 |
| हिसार | 29 | 10 | 75 | 46 | —26 | 56 |

## हिमाचल–प्रदेश

| हि.प्र. के नगर | अक्षांश (उत्तर) | | रेखांश (पूर्व) | | स्टैण्डर्ड अन्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | अं. | क. | अं. | क. | मिं. | सैं. |
| अम्ब | 31 | 43 | 76 | 06 | —25 | 36 |
| अर्की | 31 | 09 | 76 | 59 | —22 | 04 |
| आनी | 31 | 26 | 77 | 25 | —20 | 20 |
| आलमपुर | 31 | 54 | 76 | 30 | —24 | 00 |
| इन्दौरा | 32 | 06 | 75 | 41 | —27 | 16 |
| ऊना | 31 | 29 | 76 | 17 | —24 | 52 |
| करसोग | 31 | 23 | 77 | 13 | —21 | 08 |
| कसौली | 30 | 55 | 76 | 57 | —22 | 12 |
| कथला | 31 | 59 | 76 | 47 | —22 | 52 |
| कल्पा | 31 | 34 | 78 | 16 | —16 | 56 |
| कण्डाघाट | 30 | 57 | 77 | 08 | —21 | 28 |
| काला अम्ब | 30 | 29 | 77 | 13 | —21 | 08 |
| **काँगड़ा** | **32** | **05** | **76** | **18** | **—24** | **48** |
| किन्नौर | 31 | 32 | 78 | 20 | —16 | 40 |
| कुफरी | 31 | 07 | 77 | 12 | —21 | 12 |
| कुम्हारहट्टी | 30 | 52 | 77 | 03 | —21 | 48 |
| कुल्लू | 31 | 58 | 77 | 06 | —21 | 36 |
| कुमारसेन | 31 | 18 | 77 | 37 | —19 | 32 |
| कुनिहार | 30 | 58 | 77 | 10 | —21 | 20 |
| केलांग | 32 | 37 | 77 | 05 | —21 | 40 |
| कोटखाई | 31 | 08 | 77 | 36 | —19 | 36 |
| कोटगढ़ | 31 | 19 | 77 | 29 | —20 | 04 |
| कोटला | 32 | 17 | 76 | 02 | —25 | 52 |
| खजियार | 32 | 31 | 76 | 03 | —25 | 40 |
| गर्ली(परागपुर) | 31 | 48 | 76 | 18 | —24 | 48 |
| गगरेट | 31 | 41 | 76 | 04 | —25 | 44 |
| गोहर | 31 | 32 | 77 | 02 | —21 | 52 |
| घुमारवीं | 31 | 28 | 76 | 42 | —23 | 12 |
| **चम्बा** | **32** | **34** | **76** | **08** | **—25** | **28** |
| चच्योट | 31 | 36 | 77 | 04 | —21 | 44 |
| चामुण्डा देवी | 32 | 08 | 76 | 22 | —24 | 32 |
| चायल | 31 | 03 | 77 | 14 | —21 | 04 |
| चिन्तपूरणी | 31 | 47 | 76 | 04 | —25 | 44 |
| जस्सूर | 32 | 17 | 75 | 55 | —26 | 20 |
| जतोग | 31 | 06 | 77 | 07 | —21 | 32 |
| जोगिन्द्रनगर | 31 | 59 | 76 | 46 | —22 | 56 |
| ज्वाली | 32 | 08 | 76 | 01 | —25 | 56 |
| ज्वालामुखी | 31 | 53 | 76 | 20 | —24 | 40 |
| ठयोग | 31 | 08 | 77 | 33 | —19 | 48 |
| डमटाल | 32 | 13 | 75 | 41 | —27 | 16 |
| डगशाई | 30 | 53 | 77 | 06 | —21 | 36 |
| डल्हौज़ी | 32 | 31 | 76 | 00 | —26 | 00 |
| ढलियारा | 31 | 52 | 76 | 11 | —25 | 16 |
| तारादेवी | 31 | 04 | 77 | 10 | —21 | 20 |
| त्रिलोकनाथ | 32 | 43 | 76 | 39 | —23 | 24 |
| त्रिलोकपुर | 30 | 34 | 77 | 09 | —21 | 24 |
| ददाहू(रेणुका) | 30 | 37 | 77 | 26 | —20 | 16 |
| देहरा गोपीपुर | 31 | 55 | 76 | 14 | —25 | .04 |
| दौलतपुर | 31 | 46 | 75 | 58 | —26 | 08 |
| धनेटा | 31 | 38 | 76 | 29 | —24 | 04 |
| धर्मशाला | 32 | 16 | 76 | 23 | —24 | 48 |
| धर्मपुर | 30 | 54 | 77 | 04 | —21 | 44 |
| धौलाकुआं | 30 | 30 | 77 | 29 | —20 | 04 |
| नगर | 32 | 07 | 77 | 10 | —21 | 20 |
| नगरोंटा बगवां | 32 | 06 | 76 | 22 | —24 | 32 |
| नगरोटा | 32 | 07 | 76 | 23 | —24 | 28 |
| नादौन | 31 | 47 | 76 | 21 | —24 | 36 |
| नाहन | 30 | 33 | 77 | 18 | —20 | 48 |
| नालागढ़ | 31 | 03 | 76 | 42 | —23 | 12 |
| नारकण्डा | 31 | 15 | 77 | 28 | —20 | 08 |
| निरमण्ड | 31 | 28 | 77 | 34 | —19 | 44 |
| नूरपुर | 32 | 18 | 75 | 54 | —26 | 24 |
| नैनादेवी | 31 | 19 | 76 | 31 | —23 | 56 |
| पच्छाद | 31 | 47 | 77 | 08 | —21 | 28 |
| पण्डोह | 31 | 41 | 77 | 07 | —21 | 32 |
| पपरोला | 32 | 04 | 76 | 34 | —23 | 44 |
| परवाणू | 30 | 50 | 76 | 57 | —22 | 12 |
| पाओंटा साहिब | 30 | 27 | 77 | 37 | —19 | 32 |
| पालमपुर | 32 | 07 | 76 | 33 | —23 | 48 |
| बरसर (भोटा) | 31 | 34 | 76 | 28 | —24 | 08 |
| बसौली | 31 | 34 | 76 | 23 | —24 | 28 |
| बंगाना तै. | 31 | 33 | 76 | 27 | —24 | 16 |
| बड़ागांव | 31 | 20 | 77 | 15 | —21 | 00 |
| बंजार | 31 | 40 | 77 | 20 | —20 | 40 |
| बनीखेत | 32 | 32 | 75 | 58 | —26 | 08 |
| बकलोह | 32 | 27 | 75 | 59 | —26 | 04 |
| बिलासपुर | 31 | 20 | 76 | 45 | —23 | 00 |
| बैजनाथ | 32 | 03 | 76 | 38 | —23 | 28 |
| भरवाईं | 31 | 47 | 76 | 07 | —25 | 36 |
| भरमौर | 32 | 27 | 76 | 32 | —23 | 52 |
| भाखड़ा | 31 | 20 | 76 | 30 | —24 | 00 |
| भुन्तर | 31 | 54 | 77 | 09 | —21 | 24 |
| **मण्डी** | **31** | **43** | **76** | **58** | **—22** | **08** |
| मनाली | 32 | 16 | 77 | 10 | —21 | 20 |
| मनीकरण | 32 | 01 | 77 | 20 | —20 | 40 |
| मशोबरा | 31 | 07 | 77 | 14 | —21 | 04 |
| मंगवाल | 32 | 03 | 76 | 05 | —25 | 40 |
| महासू | 31 | 05 | 77 | 13 | —21 | 08 |
| राजगढ़ | 30 | 52 | 77 | 22 | —20 | 32 |
| रामपुरबुशहर | 31 | 27 | 77 | 38 | —19 | 28 |
| रोहड़ | 31 | 12 | 77 | 45 | —19 | 00 |
| लाहौल स्पीति | 31 | 28 | 77 | 39 | —19 | 24 |
| शाहपुर | 32 | 13 | 76 | 11 | —25 | 16 |
| **शिमला** | **31** | **06** | **77** | **10** | **—21** | **20** |
| शेरपुर | 32 | 34 | 75 | 59 | —26 | 04 |
| सुबाथू | 30 | 59 | 76 | 59 | —22 | 04 |
| सरकाघाट | 31 | 42 | 76 | 45 | —23 | 00 |
| सन्धोल | 31 | 59 | 76 | 45 | —22 | 56 |
| संतोखगढ़ | 31 | 21 | 76 | 20 | —24 | 40 |
| सिरमौर | 30 | 45 | 77 | 30 | —20 | 00 |
| **सुन्दरनगर** | **31** | **32** | **76** | **53** | **—22** | **28** |
| सुजानपुरटिहरा | 31 | 50 | 76 | 30 | —24 | 00 |
| सोलन | 30 | 55 | 77 | 09 | —21 | 24 |
| हमीरपुर | 31 | 41 | 76 | 31 | —23 | 56 |
| हड़सर | 32 | 21 | 76 | 33 | —23 | 48 |
| हरिपुर | 32 | 39 | 76 | 11 | —25 | 16 |
| हरिपुरधार | 30 | 53 | 77 | 28 | —20 | 08 |
| हाटकोटी | 31 | 09 | 77 | 45 | —19 | 00 |

## अन्य केन्द्रीय प्रदेश

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| चण्डीगढ़ | 30 | 44 | 76 | 52 | —22 | 32 |

# विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैं. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (–) चिन्ह वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इंग्लैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंग्लैंड में प्रातः के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भान्ति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। ज्ञातव्य रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय अलग–अलग स्टैण्डर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। **जैसे–एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टर्न टाईम (Eastern Time), सैंटर्ल टाईम (Central Time), माऊंटेन टाईम, पैसेफिक टाईम इत्यादि।** यह सब स्टै. टाईम अलग–अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम 75° रेखांश, सैंट्रल टाईम 90° रेखांश पर, माऊंटेन टाईम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनेडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमरीका, कैनेडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्रायः अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनेडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है।

इसी प्रकार Australia (आस्ट्रेलिया) (दक्षिणी ध्रुवीय देशों) में अक्तूबर के अन्तिम रविवार से मार्च के अन्तिम रविवार तक ग्रीष्मकालीन समय (D.S.T.) प्रयोग में लाया जाता है। ध्यान रहे, Western Australia तथा Queensland आदि कुछ क्षेत्रों में D.S.T. प्रयोग में नहीं लाया जाता। इसी प्रकार न्यूज़ीलैण्ड (New-Zealand) में अक्तू. के प्रथम सप्ताह के रविवार से मार्च के तृतीय सप्ताह के रविवार तक ग्रीष्मकालीन (D.S.T.) समय प्रयोग में लाया जाता है।

| नगर | अक्षांश उ.=North द.=South अं. क. | रेखांश पू.=East प..=West अं. क. | स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै. | स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क. | भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|
| **(1) AMERICA [UNITED-STATES]** [ यह देश पाँच कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है। ] | | | | | |
| Abilen, Texas | 30 27 उ. | 99 44 प. | –38 56 | 90 00 प. | +11 30 |
| Albany, N.Y. | 42 39 उ. | 73 45 प. | +05 00 | 75 00 प. | +10 30 |
| Abotsford | 49 00 उ. | 122 30 प. | –10 00 | 120 00 प. | +13 30 |
| Anderson, Indiana | 40 06 उ. | 85 41 प. | –42 44 | 75 00 प. | +10 30 |
| Athens, Georgia | 33 57 उ. | 83 23 प. | –33 32 | 75 00 प. | +10 30 |
| Atlanta, Georgia | 33 45 उ. | 84 23 प. | –37 32 | 75 00 प. | +10 30 |
| Atlantic City, N.J. | 39 22 उ. | 74 25 प. | +02 20 | 75 00 प. | +10 30 |
| Auburn, N.Y. | 42 56 उ. | 76 34 प. | –06 16 | 75 00 प. | +10 30 |
| Austin, Taxas | 30 16 उ. | 97 45 प. | –31 00 | 90 00 प. | +11 30 |
| Asbury Park (N.J.) | 40 13 उ. | 74 01 प. | +03 56 | 75 00 प. | +10 30 |
| Bakersfield, Califo. | 35 22 उ. | 119 01 प. | +03 56 | 120 00 प. | +13 30 |
| Bay City, Michigan | 43 36 उ. | 83 53 प. | –35 32 | 75 00 प. | +10 30 |
| Bay Town, Texas | 29 44 उ. | 94 59 प. | –19 56 | 90 00 प. | +11 30 |
| Boston, Massa. | 42 21 उ. | 71 04 प. | +15 44 | 75 00 प. | +10 30 |
| Buffalo, N. York | 42 53 उ. | 78 53 प. | –15 32 | 75 00 प. | +10 30 |
| Cambridge, Massa. | 42 22 उ. | 71 06 प. | +15 36 | 75 00 प. | +10 30 |
| Chicago, Illinois | 41 51 उ. | 87 39 प. | +09 24 | 90 00 प. | +11 30 |
| Cincinnati, Ohio | 39 10 उ. | 84 27 प. | –37 48 | 75 00 प. | +10 30 |
| Californiacity (Cal.) | 35 08 उ. | 117 59 प. | +08 04 | 120 00 प. | +13 30 |
| Columbia, Missouri | 38 57 उ. | 92 20 प. | –09 20 | 90 00 प. | +11 30 |
| Columbus, Georgia | 32 28 उ. | 84 59 प. | –39 56 | 75 00 प. | +10 30 |
| Dales, Texas | 29 56 उ. | 97 34 प. | –30 16 | 90 00 प. | +11 30 |
| Detriot, Michi. | 42 20 उ. | 83 03 प. | –32 12 | 75 00 प. | +10 30 |
| Edison, N. Jersey | 41 04 उ. | 74 34 प. | +01 44 | 75 00 प. | +10 30 |
| Essex, Maryland | 39 19 उ. | 76 29 प. | – 05 56 | 75 00 प. | +10 30 |
| Florida City, FL | 25 27 उ. | 80 29 प. | –21 56 | 75 00 प. | +10 30 |
| Frederick (D.M.) | 39 38 उ. | 78 31 प. | –14 04 | 75 00 प. | +10 30 |
| Frankfort, Kentucky | 38 12 उ. | 84 52 प. | –39 28 | 75 00 प. | +10 30 |
| Greenville, Missi | 33 25 उ. | 91 04 प. | –04 16 | 90 00 प. | +11 30 |
| Hamilton, Ohio | 39 24 उ. | 84 34 प. | –38 16 | 75 00 प. | +10 30 |
| Houston, Texas | 29 46 उ. | 95 22 प. | –21 28 | 90 00 प. | +11 30 |
| Irving, Texas | 32 49 उ. | 96 57 प. | –27 48 | 90 00 प. | +11 30 |
| Jersey City, N.J. | 40 44 उ. | 74 05 प. | +03 20 | 75 00 प. | +10 30 |
| Johnson City, Tenne. | 36 19 उ. | 82 21 प. | +30 36 | 90 00 प. | +11 30 |
| Kingston, N.Y. | 41 56 उ. | 74 00 प. | +04 00 | 75 00 प. | +10 30 |
| Lockport, N.Y. | 43 10 उ. | 78 41 प. | –14 44 | 75 00 प. | +10 30 |
| Los Angeles, Calif. | 34 03 उ. | 118 15 प. | +07 00 | 120 00 प. | +13 30 |

| नगर | अक्षांश उ.=North द.=South अं. क. | रेखांश पू.=East प..=West अं. क. | स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै. | स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क. | भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|
| Manchester, N. Hamp. | 43 00 उ. | 71 27 प. | +14 54 | 75 00 प. | +10 30 |
| Meridian, Missi | 32 22 उ. | 88 42 प. | +05 12 | 90 00 प. | +11 30 |
| Michigan City, Indiana | 41 42 उ. | 86 54 प. | –47 36 | 75 00 प. | +10 30 |
| Midland, Texas | 32 00 उ. | 102 05 प. | –48 20 | 90 00 प. | +11 30 |
| Milwankee, Wiscon. | 43 02 उ. | 87 54 प. | +08 24 | 90 00 प. | +11 30 |
| Montgomery, Alabama | 32 22 उ. | 86 18 प. | +14 48 | 90 00 प. | +11 30 |
| New Bedford, Massa | 41 38 उ. | 70 56 प. | + 16 16 | 75 00 प. | +10 30 |
| New Castle, P.A. | 40 44 उ. | 76 13 प. | –04 52 | 75 00 प. | +10 30 |
| Newton, Massa | 42 20 उ. | 71 13 प. | +15 10 | 75 00 प. | +10 30 |
| New York, N.Y. | 40 43 उ. | 74 00 प. | +04 00 | 75 00 प. | +10 30 |
| Ontario, Calif | 34 04 उ. | 117 39 प. | +11 24 | 120 00 प. | +13 30 |
| Oxford, Alabama | 33 37 उ. | 85 50 प. | +16 40 | 90 00 प. | +11 30 |
| Redlands, California | 34 04 उ. | 117 11 प. | +11 16 | 120 00 प. | +13 30 |
| Reston, Virginia | 38 58 उ. | 77 20 प. | –09 20 | 75 00 प. | +10 30 |
| Richfield, Minnesota | 44 53 उ. | 93 17 प. | –13 08 | 90 00 प. | +11 30 |
| Richmond, Calif | 37 56 उ. | 122 21 प. | –09 24 | 120 00 प. | +13 30 |
| Sacramento, Calif | 38 35 उ. | 121 30 प. | –06 00 | 120 00 प. | +13 30 |
| St. Louis Park, Minne | 44 57 उ. | 93 21 प. | –13 24 | 90 00 प. | +11 30 |
| San Francisco, Calif | 37 47 उ. | 122 25 प. | –09 40 | 120 00 प. | +13 30 |
| Santa Rosa, Calif | 38 27 उ. | 122 43 प. | –10 52 | 120 00 प. | +13 30 |
| Seattle, Washington | 47 36 उ. | 122 20 प. | –09 20 | 120 00 प. | +13 30 |
| Texas City, Texa | 29 23 उ. | 94 54 प. | –19 36 | 90 00 प. | +11 30 |
| Washington, D.C. | 38 55 उ. | 77 02 प. | –08 08 | 75 00 प. | +10 30 |
| Yuba City, Calif | 39 08 उ. | 121 37 प. | –06 28 | 120 00 प. | +13 30 |
| **(2) AFGANISTAN** (Standard Meridian—67-30 पू.) | | | | | |
| Daulatabad | 36 25 उ. | 64 55 पू. | –10 20 | 67 30 पू. | +01 00 |
| Kabul | 34 31 उ. | 69 12 पू. | +06 48 | 67 30 पू. | +01 00 |
| Kandhar | 31 32 उ. | 65 30 पू. | –08 00 | 67 30 पू. | +01 00 |
| **(3) ARGENTINA** [ यह देश दो कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है। ] (St. Meridian-45-00 प.) | | | | | |
| Rofaela | 31 16 द. | 61 29 प. | –05 56 | 60 00 प. | +08 30 |
| San Francisco | 31 26 द. | 62 05 प. | –08 20 | 60 00 प. | +08 30 |
| **(4) AUSTRALIA** [ यह देश तीन कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है। ] | | | | | |
| Adelaide | 34 55 द. | 138 35 पू. | –15 40 | 142 30 पू. | –04 00 |
| Brisbane | 27 28 द. | 153 02 पू. | +12 08 | 150 00 पू. | –04 30 |
| Canberra | 35 17 द. | 149 08 पू. | –03 28 | 150 00 पू. | –04 30 |
| Hobart | 42 53 द. | 147 19 पू. | –10 44 | 150 00 पू. | –04 30 |

| नगर | अक्षांश उ.=North द.=South अं. क. | रेखांश पू.=East प..=West अं. क. | स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै. | स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क. | भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|
| Liverpool | 33 54 द. | 150 56 पू. | +03 44 | 150 00 पू. | –04 30 |
| Melbourne | 37 50 द. | 144 58 पू. | –20 08 | 150 00 पू. | –04 30 |
| Perth | 31 56 द. | 115 50 पू. | –16 40 | 120 00 पू. | –02 30 |
| Sydney | 33 52 द. | 151 12 पू. | +04 48 | 150 00 पू. | –04 30 |
| **(5) Austria (Standard Meridian – 15-00 पू. )** | | | | | |
| Graz | 47 05 उ. | 15 27 पू. | –01 48 | 15 00 पू. | –04 30 |
| **(6) Bangladesh** | | | | | |
| Chittagong | 22 20 उ. | 91 50 पू. | +07 20 | 90 00 पू. | –00 30 |
| Dhaka | 22 43 उ. | 90 25 पू. | +01 40 | 90 00 पू. | –00 30 |
| **(7) Bhutan** | | | | | |
| Thimbu | 27 28 उ. | 89 39 पू. | –01 24 | 90 00 पू. | –00 30 |
| **(8) BRAZIL** [ कुछ क्षेत्रों में ही ग्रीष्मकालीन समय प्रयोग में लाया जाता है। ][ चार कालक्षेत्र में आबंटित है। ] | | | | | |
| Brasilia | 15 47 द. | 47 55 प. | –11 40 | 45 00 प. | +08 30 |
| Maringa | 23 25 द. | 51 55 प. | –27 40 | 45 00 प. | +08 30 |
| Rio Branco | 9 58 द. | 67 48 प. | +28 48 | 75 00 प. | +10 30 |
| Rio Claro | 22 24 द. | 47 33 प. | –10 12 | 45 00 प. | +08 30 |
| Rio de Janeiro | 22 54 द. | 43 14 प. | +07 04 | 45 00 प. | +08 30 |
| **(9) BURMA (MYANMAR)** | | | | | |
| Rangoon | 16 47 उ. | 96 10 पू. | –05 20 | 97 30 पू. | –01 00 |
| **(10) CANADA** [ इस देश में भी छ: कालक्षेत्र प्रचलित हैं। ] | | | | | |
| Brampton, Ontario | 43 41 उ. | 79 46 प. | –19 04 | 75 00 प. | +10 30 |
| Calgary, Alberta | 51 03 उ. | 114 05 प. | –36 20 | 105 00 प. | +12 30 |
| Edmonton, Alberta | 53 33 उ. | 113 30 प. | –34 00 | 105 00 प. | +12 30 |
| Kingston, Ontario | 44 14 उ. | 76 30 प. | –06 00 | 75 00 प. | +10 30 |
| Mississauga, Ontario | 43 35 उ. | 79 37 प. | –18 28 | 75 00 प. | +10 30 |
| Montreal, Quebec | 45 31 उ. | 73 34 प. | +05 44 | 75 00 प. | +10 30 |
| Niagara Falls, Ontario | 43 06 उ. | 79 04 प. | –16 16 | 75 00 प. | +10 30 |
| North York, Ontario | 43 46 उ. | 79 25 प. | –17 40 | 75 00 प. | +10 30 |
| Ottawa, Ontario | 45 25 उ. | 75 42 प. | –02 48 | 75 00 प. | +10 30 |
| Prince George, B.C. | 53 55 उ. | 122 46 प. | –11 04 | 120 00 प. | +13 30 |
| Prince Rupert, B.C. | 54 19 उ. | 130 19 प. | –41 16 | 120 00 प. | +13 30 |
| Quebec, Quebec | 46 49 उ. | 71 14 प. | +15 04 | 75 00 प. | +10 30 |
| Richmond, British Col. | 49 10 उ. | 123 10 प. | –12 40 | 120 00 प. | +13 30 |
| Saint John's- -New Foundland | 47 33 उ. | 52 40 प. | –00 40 | 52 30 प. | +09 00 |
| Toronto, Ontario | 43 39 उ. | 79 23 प. | –17 32 | 75 00 प. | +10 30 |

| नगर | अक्षांश उ.=North द.=South अं. क. | रेखांश पू.=East प..=West अं. क. | स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै. | स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क. | भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|
| Vancouver- (B.C.) | 49 16 उ. | 123 07 प. | –12 28 | 120 00 प. | +13 30 |
| Victoria-B.C. | 48 25 उ. | 123 21 प. | –13 24 | 120 00 प. | +13 30 |
| Winnipeg, Manitoba | 49 53 उ. | 97 09 प. | –28 36 | 90 00 प. | +11 30 |
| Windsor, Ontario | 42 18 उ. | 83 01 प. | –32 04 | 75 00 प. | +10 30 |
| **(11) CHINA** (ZHONGGUO) | | | | | |
| Beijing (Peking) | 39 55 उ. | 116 25 पू. | –14 20 | 120 00 पू. | –02 30 |
| Fushun | 29 11 उ. | 105 00 पू. | –60 00 | 120 00 पू. | –02 30 |
| Huainan | 32 40 उ. | 117 00 पू. | –12 00 | 120 00 पू. | –02 30 |
| Ji'an | 41 06 उ. | 126 08 पू. | +24 32 | 120 00 पू. | –02 30 |
| Shanghai | 31 14 उ. | 121 28 पू. | +05 52 | 120 00 पू. | –02 30 |
| **(12) ENGLAND (UNITED-KINGDOM) U.K. [D.S.T.—मार्च के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक ] [Starting Time—01:00 A:M, Ending Time 2:00 A:M]** | | | | | |
| Adenberg | 55 52 उ. | 03 12 प. | –12 48 | 00 00 | +05 30 |
| Bedford | 52 08 उ. | 00 29 प. | –01 56 | 00 00 | +05 30 |
| Birmingham | 52 28 उ. | 01 54 प. | –07 36 | 00 00 | +05 30 |
| Bradford | 53 48 उ. | 01 45 प. | –07 00 | 00 00 | +05 30 |
| Bristol | 51 27 उ. | 02 35 प. | –10 20 | 00 00 | +05 30 |
| Cambridge | 52 13 उ. | 00 08 पू. | +00 32 | 00 00 | +05 30 |
| Coventry | 52 25 उ. | 01 30 प. | –06 00 | 00 00 | +05 30 |
| Derby | 52 55 उ. | 01 29 प. | –05 56 | 00 00 | +05 30 |
| Glasgow, Scotla | 55 53 उ. | 04 15 प. | –17 00 | 00 00 | +05 30 |
| Hamilton, Scotla | 55 47 उ. | 04 03 प. | –16 12 | 00 00 | +05 30 |
| Kingswood | 51 27 उ. | 02 31 प. | –10 04 | 00 00 | +05 30 |
| Leeds | 53 50 उ. | 01 35 प. | –06 20 | 00 00 | +05 30 |
| Leicester | 52 38 उ. | 01 05 प. | –04 20 | 00 00 | +05 30 |
| Liverpool | 53 25 उ. | 02 58 प. | –11 52 | 00 00 | +05 30 |
| London | 51 32 उ. | 00 05 प. | –00 20 | 00 00 | +05 30 |
| Manchester | 53 30 उ. | 02 13 प. | –08 52 | 00 00 | +05 30 |
| New-Castle | 52 26 उ. | 03 06 प. | –12 24 | 00 00 | +05 30 |
| Northampton | 52 14 उ. | 00 54 प. | –03 36 | 00 00 | +05 30 |
| Nottingham | 52 58 उ. | 01 10 प. | –04 40 | 00 00 | +05 30 |
| Slough | 51 31 उ. | 00 36 प. | –02 24 | 00 00 | +05 30 |
| Southampton | 50 55 उ. | 01 25 प. | –05 40 | 00 00 | +05 30 |
| Walsall | 52 35 उ. | 01 58 प. | –07 52 | 00 00 | +05 30 |
| Wolverhampton | 52 36 उ. | 02 08 प. | –08 32 | 00 00 | +05 30 |

| नगर | अक्षांश उ.=North द.=South अं. क. | रेखांश पू.=East प..=West अं. क. | स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै. | स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क. | भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|
| **(13) FIJI** [ ग्रीष्मकालीन समय ग्रहण किया जाता है। ] ( नवम्बर के प्रथम सप्ताह के रविवार से फरवरी के अन्तिम रविवार तक ) | | | | | |
| Kandavu Island | 19 03 द. | 178 13 पू. | –05 58 | 180 00 पू. | –06 30 |
| Lau Group | 18 20 द. | 178 30 पू. | –06 00 | 180 00 पू. | –06 30 |
| ONO-I-LAU | 20 39 द. | 178 42 पू. | –05 12 | 180 00 पू. | –06 30 |
| Rotuma Island | 12 30 द. | 177 05 पू. | –11 40 | 180 00 पू. | –06 30 |
| Taveuni | 16 51 द. | 179 58 प. | –00 08 | 180 00 पू. | –06 30 |
| Vanua Levu | 16 33 द. | 179 15 पू. | –03 00 | 180 00 पू. | –06 30 |
| Vitina | 16 19 द. | 179 43 पू. | –01 08 | 180 00 पू. | –06 30 |
| **(14) FRANCE** | | | | | |
| Lyon | 45 45 उ. | 04 51 पू. | –40 36 | 15 00 पू. | +04 30 |
| Paris | 48 52 उ. | 02 20 पू. | –50 40 | 15 00 पू. | +04 30 |
| **(15) Germany** | | | | | |
| Berlin | 52 32 उ. | 13 25 पू. | –06 20 | 15 00पू. | +04 30 |
| Bonn | 50 44 उ. | 07 05 पू. | –31 40 | 15 00पू. | +04 30 |
| **(16) GREECE** | | | | | |
| Piraievs (Piraeus) | 37 57 उ. | 23 38 पू. | –25 28 | 30 00पू. | +03 30 |
| **(17) HONGKONG** (CHINA का भाग) | | | | | |
| Kwun Tong | 22 19 उ. | 114 12 पू. | –23 12 | 120 00 पू. | –02 30 |
| Tai Tong | 22 25 उ. | 114 01 पू. | –23 56 | 120 00 पू. | –02 30 |
| **(18) Indonesia** [ यह देश तीन कालक्षेत्रों में विभाजित है ] [105°-00 पू., 120°-00 पू., 135°-00 पू.,] | | | | | |
| Jambi | 01 42 द. | 103 34 पू. | –05 44 | 105 00 पू. | –01 30 |
| Jakarta | 06 10 द. | 106 48 पू. | +07 12 | 105 00 पू. | –01 30 |
| **(19) IRAN** | | | | | |
| Tehran | 35 40 उ. | 51 26 पू. | –04 16 | 52 30 पू. | +02 00 |
| **(20) IRAQ** | | | | | |
| Baghdad | 33 21 उ. | 44 25 पू. | –02 20 | 45 00 पू. | +02 30 |
| **(21) IRELAND** | | | | | |
| Dublin | 53 20 उ. | 06 15 प. | –25 00 | 00 00 | +05 30 |
| **(22) ITALY** | | | | | |
| Brescia | 45 33 उ. | 10 15 पू. | –19 00 | 15 00 पू. | +04 30 |
| Monza | 45 35 उ. | 09 16 पू. | –22 56 | 15 00 पू. | +04 30 |
| Lucca | 43 50 उ. | 10 29 पू. | –18 04 | 15 00 पू. | +04 30 |
| Milano (Milan) | 45 28 उ. | 09 12 पू. | –23 12 | 15 00 पू. | +04 30 |
| Rho | 45 32 उ. | 09 02 पू. | –23 52 | 15 00 पू. | +04 30 |
| Rome | 41 54 उ. | 12 29 पू. | –10 04 | 15 00 पू. | +04 30 |

| नगर | अक्षांश<br>उ.=North<br>द.=South<br>अं. क. | रेखांश<br>पू.=East<br>प..=West<br>अं. क. | स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै. | स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क. | भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|
| **(23) JAPAN** | | | | | |
| Tokyo | 35 42 उ. | 139 46 पू. | +19 04 | 135 00 पू. | –03 30 |
| **(24) KENYA** | | | | | |
| Mombasa | 04 03 द. | 39 40 पू. | –21 20 | 45 00 पू. | +02 30 |
| Nairobi | 01 17 द. | 36 49 पू. | –32 44 | 45 00 पू. | +02 30 |
| **(25) KOREA (South)** | | | | | |
| Seoul | 37 33 उ. | 126 58 पू. | –32 08 | 135 00 पू. | –03 30 |
| **(26) KUWAIT** | | | | | |
| AL-Kuwayt | 29 20 उ. | 47 59 पू. | +11 56 | 45 00 पू. | +02 30 |
| AL-Jahrah | 29 20 उ. | 47 40 पू. | +10 40 | 45 00 पू. | +02 30 |
| **(27) MALAYSIA** | | | | | |
| Kualalumpur | 03 10 उ. | 101 42 पू. | –73 12 | 120 00 पू. | –02 30 |
| **(28) MAURITIUS** | | | | | |
| Port Louis | 20 10 द. | 57 30 पू. | –10 00 | 60 00 पू. | +01 30 |
| **(29) NEPAL** | | | | | |
| Kathmandu | 27 43 उ. | 85 19 पू. | –03 44 | 86 15 पू. | –00 15 |
| **(30) NETHERLANDS (HOLLAND)** | | | | | |
| Amsterdam | 52 22 उ. | 04 54 पू. | –40 24 | 15 00 पू. | +04 30 |
| **(31) NEW-ZEALAND** | | | | | |
| Auckland | 36 52 द. | 174 46 पू. | –20 56 | 180 00 पू. | –06 30 |
| Christchurch | 43 32 द. | 172 38 पू. | –29 28 | 180 00 पू. | –06 30 |
| Hamilton | 37 47 द. | 175 17 पू. | –18 52 | 180 00 पू. | –06 30 |
| Napier | 39 29 द. | 176 55 पू. | –12 20 | 180 00 पू. | –06 30 |
| Wellington | 41 18 द. | 174 47 पू. | –20 52 | 180 00 पू. | –06 30 |
| **(32) NORWAY** | | | | | |
| Drammen | 59 44 उ. | 10 15 पू. | –19 00 | 15 00 पू. | +04 30 |
| Oslo | 59 55 उ. | 10 45 पू. | –18 00 | 15 00 पू. | +04 30 |
| **(33) OMAN** | | | | | |
| Muscat | 23 37 उ. | 58 35 पू. | –05 40 | 60 00 पू. | +01 30 |
| **(34) PAKISTAN** | | | | | |
| Islamabad | 33 42 उ. | 73 10 पू. | –07 20 | 75 00 पू. | +00 30 |
| Karachi | 24 52 उ. | 67 03 पू. | –31 48 | 75 00 पू. | +00 30 |
| Lahore | 31 35 उ. | 74 18 पू. | –02 48 | 75 00 पू. | +00 30 |
| Multan | 30 11 उ. | 71 29 पू. | –14 04 | 75 00 पू. | +00 30 |
| Sialkot | 32 30 उ. | 74 31 पू. | –01 56 | 75 00 पू. | +00 30 |
| **(35) PHILIPPINES** | | | | | |
| Manila | 14 35 उ. | 121 00 पू. | +04 00 | 120 00 पू. | –02 30 |
| Olongapo | 14 50 उ. | 120 16 पू. | +01 04 | 120 00 पू. | –02 30 |

| नगर | अक्षांश<br>उ.=North<br>द.=South<br>अं. क. | रेखांश<br>पू.=East<br>प..=West<br>अं. क. | स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै. | स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क. | भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं. |
|---|---|---|---|---|---|
| **(36) PORTUGAL** [Standard Meridian—G.M.T.—0°-00′] | | | | | |
| Lisbon | 38 43 उ. | 09 08 प. | –36 32 | 00 00 पू. | +05 30 |
| **(37) QATAR** | | | | | |
| Doha | 25 17 उ. | 51 32 पू. | +26 08 | 45 00 पू. | +02 30 |
| **(38) RUSSIA** [यह देश भी अलग-अलग कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।] | | | | | |
| Moscow | 55 45 उ. | 37 35 पू. | –29 40 | 45 00 पू. | +02 30 |
| **(39) SAUDI-ARABIA** | | | | | |
| Al-Mubarraz | 22 17 उ. | 46 44 पू. | +06 56 | 45 00 पू. | +02 30 |
| Riyadh | 24 38 उ. | 46 43 पू. | +06 52 | 45 00 पू. | +02 30 |
| Jiddah | 21 30 उ. | 39 12 पू. | –23 12 | 45 00 पू. | +02 30 |
| **(40) SINGAPORE** | | | | | |
| Singapore | 01 17 उ. | 103 51 पू. | –64 36 | 120 00 पू. | –02 30 |
| **(41) SOUTH-AFRICA** | | | | | |
| Cape Town | 33 55 द. | 18 22 पू. | –46 32 | 30 00 पू. | +03 30 |
| Durban | 29 55 द. | 30 56 पू. | +03 44 | 30 00 पू. | +03 30 |
| East London | 33 00 द. | 27 55 पू. | –08 20 | 30 00 पू. | +03 30 |
| Johannesburg | 26 15 द. | 28 00 पू. | –08 00 | 30 00 पू. | +03 30 |
| Port-Elizabeth | 33 58 द. | 25 40 पू. | –17 20 | 30 00 पू. | +03 30 |
| **(42) SPAIN** | | | | | |
| Barcelona | 41 23 उ. | 02 11 पू. | –51 16 | 15 00 पू. | +04 30 |
| Madrid | 40 24 उ. | 03 41 प. | –74 44 | 15 00 पू. | +04 30 |
| Manresa | 41 44 उ. | 01 50 प. | –67 20 | 15 00 पू. | +04 30 |
| Salamanca | 40 58 उ. | 05 39 प. | –82 26 | 15 00 पू. | +04 30 |
| San Fernando | 36 28 उ. | 06 12 प. | –84 48 | 15 00 पू. | +04 30 |
| **(43) SRI-LANKA** | | | | | |
| Colombo | 06 56 उ. | 79 51 पू. | –40 36 | 90 00 पू. | –00 30 |
| Jaffna | 09 40 उ. | 80 00 पू. | –40 00 | 90 00 पू. | –00 00 |
| Kandy | 07 18 उ. | 80 38 पू. | –37 28 | 90 00 पू. | –00 00 |
| **(44) Switzerland** | | | | | |
| Berne | 46 57 उ. | 07 26 पू. | –30 16 | 15 00 पू. | +04 30 |
| Geneva | 46 12 उ. | 06 09 पू. | –35 24 | 15 00 पू. | +04 30 |
| **(45) UNITED-ARAB-EMIRATES** | | | | | |
| Abudhabi | 24 28 उ. | 54 22 पू. | –22 32 | 60 00 पू. | +01 30 |
| Sharjah | 25 22 उ. | 55 23 पू. | –18 28 | 60 00 पू. | +01 30 |
| Dubai | 25 18 उ. | 55 18 पू. | –18 48 | 60 00 पू. | +01 30 |
| **(46) ZIMBABWE** | | | | | |
| Harare | 17 50 द. | 31 03 पू. | +04 08 | 30 00 पू. | +03 30 |
| **(47) Zambia** | | | | | |
| Lusaka | 15 25 द. | 28 17 पू. | –06 52 | 30 00 पू. | +03 30 |

# मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश 82/30′ पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश 23/11′ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२/३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिंट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (−) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर 82°/30 रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (−) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर 82°/30′ के पूर्व में पड़ेंगे, वहां का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्राय: सभी नगर 82°/30′ पू० **रेखांश से पश्चिम** में स्थित होने के कारण, **उनका रेखांतर** (स्टैण्डर्ड अन्तर) ऋण (−) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिंट/सैकिंडज़ का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। **इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग ३ मिंट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।**

उदाहरण—मान लो, आपको 2 फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश 28/58, रेखांश 77°/01′ तथा स्टैं. अन्तर −21/56 मिं. सै. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. 6/49 प्राप्त हुआ। इसमें स्टैं. अन्तर ($-21^{\text{मिं.}}-56^{\text{सैं.}}$) अर्थात् २२ मिनट जमा करने (क्योंकि स्टैं. अन्तर ऋण है अथवा यूं कहिए सोनीपत ८२°/३० रेखांश के पश्चिम में है) से सूर्योदय 7/11 प्राप्त हुए। इसमें ३ मिनट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् 7/14

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे—इंग्लैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

**ध्यान रहे, भारत के अधिकांश नगरों के अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं।**

–शुभचिन्तक पं. विवेक शर्मा गणितकर्त्ता

**नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर + या − करने से स्टै. टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।**

| अक्षांश | अक्षांश 10° उ. | | अक्षांश 20° उ. | | अक्षांश 25° उ. | | अक्षांश 30° उ. | | अक्षांश 35° उ. | | अक्षांश 40° उ. | | अक्षांश 45° उ. | | अक्षांश 50° उ. | | अक्षांश 52° उ. | | अक्षांश 54° उ. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तारीख | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. |
| जनवरी | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 1 जन | 6 17 | 17 49 | 6 35 | 17 31 | 6 45 | 17 21 | 6 56 | 17 10 | 7 08 | 16 58 | 7 22 | 16 44 | 7 39 | 16 28 | 7 59 | 16 08 | 8 08 | 15 58 | 8 19 | 15 47 |
| 3 ,, | 6 18 | 17 51 | 6 36 | 17 33 | 6 46 | 17 24 | 6 56 | 17 13 | 7 08 | 17 00 | 7 22 | 16 46 | 7 39 | 16 31 | 7 59 | 16 11 | 8 08 | 16 01 | 8 19 | 15 50 |
| 5 ,, | 6 18 | 17 52 | 6 36 | 17 34 | 6 46 | 17 25 | 6 57 | 17 14 | 7 09 | 17 02 | 7 22 | 16 49 | 7 38 | 16 33 | 7 59 | 16 13 | 8 08 | 16 04 | 8 19 | 15 53 |
| 7 ,, | 6 19 | 17 53 | 6 37 | 17 35 | 6 47 | 17 27 | 6 57 | 17 16 | 7 09 | 17 04 | 7 22 | 16 51 | 7 38 | 16 35 | 7 58 | 16 16 | 8 07 | 16 07 | 8 18 | 15 56 |
| 9 ,, | 6 20 | 17 54 | 6 37 | 17 36 | 6 47 | 17 28 | 6 57 | 17 17 | 7 09 | 17 05 | 7 22 | 16 53 | 7 38 | 16 37 | 7 58 | 16 18 | 8 06 | 16 09 | 8 17 | 15 59 |
| 11 ,, | 6 20 | 17 55 | 6 38 | 17 38 | 6 47 | 17 29 | 6 57 | 17 18 | 7 09 | 17 07 | 7 22 | 16 55 | 7 37 | 16 40 | 7 57 | 16 21 | 8 05 | 16 11 | 8 15 | 16 02 |
| 13 ,, | 6 21 | 17 56 | 6 38 | 17 39 | 6 47 | 17 30 | 6 57 | 17 20 | 7 08 | 17 09 | 7 21 | 16 57 | 7 37 | 16 42 | 7 56 | 16 23 | 8 04 | 16 14 | 8 14 | 16 04 |
| 15 ,, | 6 22 | 17 58 | 6 38 | 17 40 | 6 47 | 17 31 | 6 57 | 17 22 | 7 08 | 17 11 | 7 21 | 16 59 | 7 36 | 16 44 | 7 55 | 16 26 | 8 03 | 16 17 | 8 12 | 16 08 |
| 17 ,, | 6 22 | 17 59 | 6 38 | 17 41 | 6 47 | 17 33 | 6 57 | 17 24 | 7 08 | 17 13 | 7 20 | 17 01 | 7 35 | 16 47 | 7 54 | 16 29 | 8 01 | 16 21 | 8 10 | 16 12 |
| 19 ,, | 6 23 | 18 00 | 6 38 | 17 42 | 6 47 | 17 34 | 6 56 | 17 25 | 7 07 | 17 15 | 7 19 | 17 03 | 7 33 | 16 50 | 7 52 | 16 32 | 7 59 | 16 24 | 8 08 | 16 15 |
| 21 ,, | 6 23 | 18 01 | 6 38 | 17 43 | 6 47 | 17 35 | 6 56 | 17 27 | 7 06 | 17 17 | 7 18 | 17 06 | 7 32 | 16 52 | 7 50 | 16 35 | 7 57 | 16 27 | 8 06 | 16 19 |
| 23 ,, | 6 23 | 18 02 | 6 38 | 17 44 | 6 46 | 17 38 | 6 55 | 17 29 | 7 05 | 17 19 | 7 17 | 17 08 | 7 30 | 16 55 | 7 48 | 16 39 | 7 54 | 16 30 | 8 04 | 16 23 |
| 25 ,, | 6 23 | 18 03 | 6 37 | 17 46 | 6 46 | 17 40 | 6 55 | 17 31 | 7 04 | 17 21 | 7 16 | 17 10 | 7 29 | 16 58 | 7 45 | 16 42 | 7 52 | 16 34 | 8 00 | 16 27 |
| 27 ,, | 6 23 | 18 04 | 6 37 | 17 48 | 6 45 | 17 42 | 6 54 | 17 33 | 7 03 | 17 23 | 7 14 | 17 13 | 7 27 | 16 01 | 7 42 | 16 45 | 7 49 | 16 38 | 7 57 | 16 31 |
| 29 ,, | 6 23 | 18 05 | 6 37 | 17 49 | 6 45 | 17 43 | 6 53 | 17 34 | 7 02 | 17 25 | 7 13 | 17 15 | 7 25 | 16 04 | 7 40 | 16 48 | 7 47 | 16 42 | 7 54 | 16 35 |
| 31 ,, | 6 23 | 18 05 | 6 37 | 17 51 | 6 44 | 17 44 | 6 52 | 17 36 | 7 01 | 17 27 | 7 11 | 17 18 | 7 23 | 16 07 | 7 37 | 16 52 | 7 44 | 16 46 | 7 51 | 16 39 |

| अक्षांश | अक्षांश 10° उ. | | अक्षांश 20° उ. | | अक्षांश 25° उ. | | अक्षांश 30° उ. | | अक्षांश 35° उ. | | अक्षांश 40° उ. | | अक्षांश 45° उ. | | अक्षांश 50° उ. | | अक्षांश 52° उ. | | अक्षांश 54° उ. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तारीख | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. |
| फरवरी | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 2 फर | 6 23 | 18 06 | 6 36 | 17 52 | 6 43 | 17 45 | 6 50 | 17 37 | 6 59 | 17 29 | 7 09 | 17 20 | 7 21 | 17 09 | 7 34 | 16 56 | 7 41 | 16 50 | 7 48 | 16 43 |
| 4 ,, | 6 22 | 18 06 | 6 35 | 17 53 | 6 41 | 17 47 | 6 49 | 17 39 | 6 58 | 17 31 | 7 07 | 17 23 | 7 18 | 17 12 | 7 32 | 17 00 | 7 38 | 16 54 | 7 44 | 16 47 |
| 6 ,, | 6 22 | 18 07 | 6 34 | 17 54 | 6 40 | 17 49 | 6 48 | 17 41 | 6 56 | 17 33 | 7 05 | 17 25 | 7 16 | 17 15 | 7 28 | 17 03 | 7 34 | 16 57 | 7 41 | 16 51 |
| 8 ,, | 6 22 | 18 07 | 6 34 | 17 55 | 6 39 | 17 50 | 6 47 | 17 42 | 6 54 | 17 35 | 7 03 | 17 27 | 7 13 | 17 17 | 7 25 | 17 07 | 7 31 | 17 01 | 7 37 | 16 55 |
| 10 ,, | 6 21 | 18 08 | 6 33 | 17 56 | 6 38 | 17 50 | 6 45 | 17 44 | 6 52 | 17 37 | 7 01 | 17 30 | 7 10 | 17 20 | 7 22 | 17 10 | 7 27 | 17 05 | 7 33 | 16 59 |
| 12 ,, | 6 21 | 18 08 | 6 32 | 17 57 | 6 36 | 17 52 | 6 44 | 17 46 | 6 50 | 17 39 | 6 58 | 17 32 | 7 08 | 17 23 | 7 18 | 17 13 | 7 24 | 17 08 | 7 29 | 17 03 |
| 14 ,, | 6 20 | 18 08 | 6 31 | 17 58 | 6 36 | 17 53 | 6 42 | 17 47 | 6 48 | 17 41 | 6 56 | 17 34 | 7 05 | 17 26 | 7 15 | 17 16 | 7 20 | 17 12 | 7 25 | 17 07 |
| 16 ,, | 6 20 | 18 09 | 6 30 | 17 59 | 6 34 | 17 55 | 6 40 | 17 49 | 6 46 | 17 43 | 6 53 | 17 36 | 7 02 | 17 29 | 7 11 | 17 20 | 7 16 | 17 15 | 7 21 | 17 11 |
| 18 ,, | 6 19 | 18 09 | 6 28 | 18 00 | 6 33 | 17 56 | 6 38 | 17 50 | 6 43 | 17 45 | 6 51 | 17 39 | 6 58 | 17 32 | 7 08 | 17 23 | 7 12 | 17 19 | 7 17 | 17 15 |
| 20 ,, | 6 19 | 18 09 | 6 27 | 18 01 | 6 31 | 17 57 | 6 36 | 17 52 | 6 41 | 17 47 | 6 48 | 17 42 | 6 55 | 17 35 | 7 04 | 17 26 | 7 08 | 17 23 | 7 12 | 17 19 |
| 22 ,, | 6 18 | 18 10 | 6 26 | 18 02 | 6 30 | 17 58 | 6 35 | 17 53 | 6 39 | 17 49 | 6 45 | 17 44 | 6 52 | 17 38 | 7 00 | 17 29 | 7 04 | 17 27 | 7 08 | 17 23 |
| 24 ,, | 6 17 | 18 10 | 6 24 | 18 03 | 6 27 | 17 59 | 6 33 | 17 55 | 6 36 | 17 51 | 6 43 | 17 46 | 6 49 | 17 41 | 6 56 | 17 33 | 7 00 | 17 30 | 7 03 | 17 27 |
| 26 ,, | 6 16 | 18 10 | 6 23 | 18 03 | 6 26 | 18 00 | 6 30 | 17 56 | 6 34 | 17 53 | 6 40 | 17 48 | 6 46 | 17 43 | 6 52 | 17 36 | 6 55 | 17 33 | 6 59 | 17 31 |
| 28 ,, | 6 15 | 18 10 | 6 22 | 18 04 | 6 24 | 18 01 | 6 28 | 17 58 | 6 32 | 17 54 | 6 38 | 17 50 | 6 42 | 17 45 | 6 48 | 17 39 | 6 51 | 17 36 | 6 54 | 17 34 |
| 1 मार्च | 6 15 | 18 10 | 6 20 | 18 05 | 6 23 | 18 02 | 6 26 | 17 59 | 6 30 | 17 55 | 6 34 | 17 52 | 6 39 | 17 47 | 6 44 | 17 42 | 6 47 | 17 39 | 6 50 | 17 38 |
| 3 ,, | 6 14 | 18 11 | 6 19 | 18 05 | 6 22 | 18 03 | 6 24 | 18 00 | 6 28 | 17 57 | 6 31 | 17 54 | 6 35 | 17 49 | 6 40 | 17 45 | 6 42 | 17 43 | 6 45 | 17 41 |
| 5 ,, | 6 13 | 18 11 | 6 17 | 18 06 | 6 20 | 18 04 | 6 22 | 18 02 | 6 24 | 17 59 | 6 28 | 17 56 | 6 32 | 17 52 | 6 36 | 17 48 | 6 38 | 17 47 | 6 40 | 17 44 |
| 7 ,, | 6 12 | 18 11 | 6 15 | 18 07 | 6 18 | 18 05 | 6 20 | 18 03 | 6 22 | 18 01 | 6 25 | 17 58 | 6 28 | 17 55 | 6 32 | 17 51 | 6 33 | 17 50 | 6 35 | 17 48 |
| 9 ,, | 6 11 | 18 11 | 6 14 | 18 08 | 6 16 | 18 06 | 6 18 | 18 04 | 6 20 | 18 02 | 6 22 | 18 00 | 6 26 | 17 58 | 6 28 | 17 55 | 6 29 | 17 54 | 6 30 | 17 52 |
| 11 ,, | 6 10 | 18 11 | 6 12 | 18 08 | 6 14 | 18 07 | 6 15 | 18 05 | 6 17 | 18 04 | 6 19 | 18 03 | 6 21 | 18 00 | 6 23 | 17 58 | 6 24 | 17 57 | 6 26 | 17 56 |
| 13 ,, | 6 08 | 18 11 | 6 11 | 18 09 | 6 12 | 18 08 | 6 13 | 18 07 | 6 14 | 18 06 | 6 16 | 18 05 | 6 17 | 18 03 | 6 19 | 18 01 | 6 20 | 18 01 | 6 21 | 18 00 |
| 15 ,, | 6 07 | 18 11 | 6 09 | 18 10 | 6 10 | 18 09 | 6 10 | 18 08 | 6 11 | 18 07 | 6 12 | 18 08 | 6 13 | 18 07 | 6 15 | 18 05 | 6 15 | 18 04 | 6 16 | 18 03 |
| 17 ,, | 6 06 | 18 11 | 6 08 | 18 10 | 6 08 | 18 10 | 6 08 | 18 09 | 6 09 | 18 09 | 6 09 | 18 09 | 6 10 | 18 08 | 6 10 | 18 08 | 6 11 | 18 08 | 6 12 | 18 07 |
| 19 ,, | 6 05 | 18 11 | 6 05 | 18 11 | 6 06 | 18 10 | 6 06 | 18 10 | 6 06 | 18 10 | 6 06 | 18 11 | 6 06 | 18 10 | 6 06 | 18 11 | 6 06 | 18 11 | 6 06 | 18 11 |
| 21 ,, | 6 04 | 18 11 | 6 04 | 18 11 | 6 04 | 18 11 | 6 03 | 18 12 | 6 02 | 18 12 | 6 02 | 18 13 | 6 02 | 18 13 | 6 02 | 18 14 | 6 01 | 18 15 | 6 01 | 18 15 |
| 23 ,, | 6 03 | 18 11 | 6 03 | 18 12 | 6 02 | 18 12 | 6 01 | 18 13 | 5 59 | 18 14 | 5 59 | 18 15 | 5 58 | 18 16 | 5 57 | 18 17 | 5 57 | 18 18 | 5 56 | 18 19 |
| 25 ,, | 6 02 | 18 11 | 6 02 | 18 12 | 6 00 | 18 13 | 5 58 | 18 14 | 5 56 | 18 15 | 5 56 | 18 17 | 5 55 | 18 19 | 5 53 | 18 21 | 5 52 | 18 21 | 5 51 | 18 22 |
| 27 ,, | 6 00 | 18 11 | 6 00 | 18 12 | 5 57 | 18 14 | 5 56 | 18 15 | 5 53 | 18 16 | 5 53 | 18 19 | 5 51 | 18 21 | 5 48 | 18 24 | 5 47 | 18 24 | 5 46 | 18 26 |
| 29 ,, | 5 59 | 18 11 | 5 57 | 18 13 | 5 55 | 18 15 | 5 53 | 18 17 | 5 50 | 18 18 | 5 50 | 18 21 | 5 47 | 18 24 | 5 44 | 18 27 | 5 43 | 18 28 | 5 41 | 18 30 |
| 31 ,, | 5 58 | 18 10 | 5 55 | 18 13 | 5 53 | 18 16 | 5 51 | 18 18 | 5 46 | 18 20 | 5 46 | 18 23 | 5 43 | 18 26 | 5 42 | 18 30 | 5 39 | 18 31 | 5 34 | 18 33 |
| 2 अप्रै | 5 57 | 18 10 | 5 53 | 18 14 | 5 51 | 18 17 | 5 49 | 18 19 | 5 45 | 18 22 | 5 43 | 18 25 | 5 40 | 18 29 | 5 40 | 18 33 | 5 34 | 18 31 | 5 31 | 18 37 |
| 4 ,, | 5 56 | 19 10 | 5 51 | 18 14 | 5 49 | 18 17 | 5 46 | 18 20 | 5 43 | 18 23 | 5 40 | 18 27 | 5 36 | 18 31 | 5 36 | 18 36 | 5 29 | 18 38 | 5 26 | 18 41 |
| 6 ,, | 5 55 | 18 10 | 5 50 | 18 15 | 5 47 | 18 18 | 5 44 | 18 21 | 5 41 | 18 25 | 5 37 | 18 29 | 5 32 | 18 34 | 5 32 | 18 39 | 5 26 | 18 42 | 5 22 | 18 45 |
| 8 ,, | 5 54 | 18 10 | 5 48 | 18 16 | 5 45 | 18 19 | 5 42 | 18 22 | 5 38 | 18 26 | 5 34 | 18 31 | 5 29 | 18 36 | 5 29 | 18 42 | 5 19 | 18 45 | 5 17 | 18 48 |
| 10 ,, | 5 52 | 18 10 | 5 46 | 18 17 | 5 43 | 18 20 | 5 40 | 18 24 | 5 35 | 18 28 | 5 31 | 18 33 | 5 25 | 18 39 | 5 25 | 18 46 | 5 14 | 18 49 | 5 12 | 18 52 |
| 12 ,, | 5 51 | 18 10 | 5 45 | 18 17 | 5 41 | 18 21 | 5 38 | 18 25 | 5 33 | 18 29 | 5 28 | 18 35 | 5 21 | 18 41 | 5 21 | 18 49 | 5 11 | 18 52 | 5 07 | 18 56 |
| 14 ,, | 5 50 | 18 10 | 5 43 | 18 18 | 5 39 | 18 22 | 5 35 | 18 26 | 5 30 | 18 31 | 5 24 | 18 37 | 5 18 | 18 44 | 5 18 | 18 52 | 5 06 | 18 56 | 5 02 | 19 00 |
| 16 ,, | 5 49 | 18 10 | 5 41 | 18 18 | 5 37 | 18 23 | 5 33 | 18 27 | 5 27 | 18 32 | 5 21 | 18 39 | 5 14 | 18 46 | 5 14 | 18 55 | 5 02 | 18 59 | 4 58 | 19 04 |
| 18 ,, | 5 48 | 18 10 | 5 40 | 18 19 | 5 36 | 18 24 | 5 30 | 18 29 | 5 25 | 18 34 | 5 18 | 18 41 | 5 12 | 18 49 | 5 12 | 18 58 | 4 58 | 19 02 | 4 53 | 19 07 |
| 20 ,, | 5 47 | 18 11 | 5 39 | 18 19 | 5 34 | 18 24 | 5 28 | 18 30 | 5 22 | 18 36 | 5 16 | 18 43 | 5 08 | 18 51 | 5 08 | 19 01 | 4 53 | 19 04 | 4 48 | 19 11 |
| 22 ,, | 5 46 | 18 11 | 5 37 | 18 20 | 5 32 | 18 25 | 5 26 | 18 31 | 5 20 | 18 38 | 5 13 | 18 45 | 5 04 | 18 54 | 5 04 | 19 04 | 4 49 | 19 09 | 4 44 | 19 15 |
| 24 ,, | 5 45 | 18 11 | 5 36 | 18 20 | 5 31 | 18 26 | 5 24 | 18 32 | 5 17 | 18 39 | 5 10 | 18 47 | 5 01 | 18 56 | 5 01 | 19 07 | 4 45 | 19 13 | 4 39 | 19 18 |

| अक्षांश | अक्षांश 10° उ. | | अक्षांश 20° उ. | | अक्षांश 25° उ. | | अक्षांश 30° उ. | | अक्षांश 35° उ. | | अक्षांश 40° उ. | | अक्षांश 45° उ. | | अक्षांश 50° उ. | | अक्षांश 52° उ. | | अक्षांश 54° उ. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तारीख | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. |
| अप्रैल | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 26 अप्रै | 5 45 | 18 11 | 5 34 | 18 21 | 5 29 | 18 27 | 5 22 | 18 34 | 5 15 | 18 41 | 5 08 | 18 49 | 4 58 | 18 59 | 4 58 | 19 11 | 4 41 | 19 16 | 4 35 | 19 22 |
| 28 ,, | 5 44 | 18 11 | 5 33 | 18 22 | 5 27 | 18 28 | 5 20 | 18 35 | 5 13 | 18 43 | 5 04 | 18 51 | 4 54 | 19 01 | 4 54 | 19 14 | 4 37 | 19 19 | 4 31 | 19 25 |
| 30 ,, | 5 43 | 18 11 | 5 32 | 18 23 | 5 26 | 18 29 | 5 18 | 18 36 | 5 11 | 18 44 | 5 02 | 18 53 | 4 51 | 19 04 | 4 51 | 19 17 | 4 33 | 19 23 | 4 26 | 19 29 |
| 2 मई | 5 42 | 18 12 | 5 30 | 18 23 | 5 24 | 18 30 | 5 16 | 18 38 | 5 09 | 18 46 | 4 59 | 18 55 | 4 48 | 19 06 | 4 35 | 19 20 | 4 29 | 19 26 | 4 22 | 19 33 |
| 4 ,, | 5 42 | 18 12 | 5 29 | 18 24 | 5 23 | 18 31 | 5 15 | 18 39 | 5 07 | 18 47 | 4 57 | 18 57 | 4 45 | 19 09 | 4 32 | 19 23 | 4 25 | 19 29 | 4 18 | 19 37 |
| 6 ,, | 5 41 | 18 12 | 5 28 | 18 25 | 5 21 | 18 32 | 5 13 | 18 40 | 5 05 | 18 49 | 4 54 | 18 59 | 4 43 | 19 11 | 4 28 | 19 26 | 4 22 | 19 32 | 4 14 | 19 40 |
| 8 ,, | 5 40 | 18 12 | 5 27 | 18 26 | 5 20 | 18 33 | 5 12 | 18 41 | 5 03 | 18 51 | 4 52 | 19 01 | 4 40 | 19 14 | 4 25 | 19 29 | 4 18 | 19 36 | 4 10 | 19 44 |
| 10 ,, | 5 40 | 18 13 | 5 26 | 18 26 | 5 19 | 18 34 | 5 11 | 18 42 | 5 01 | 18 53 | 4 50 | 19 03 | 4 37 | 19 16 | 4 20 | 19 32 | 4 15 | 19 39 | 4 06 | 19 47 |
| 12 ,, | 5 40 | 18 13 | 5 25 | 18 27 | 5 18 | 18 35 | 5 09 | 18 44 | 4 59 | 18 54 | 4 48 | 19 05 | 4 35 | 19 19 | 4 17 | 19 35 | 4 11 | 19 42 | 4 03 | 19 51 |
| 14 ,, | 5 39 | 18 14 | 5 24 | 18 28 | 5 17 | 18 36 | 5 07 | 18 46 | 4 57 | 18 56 | 4 46 | 19 07 | 4 32 | 19 21 | 4 14 | 19 37 | 4 08 | 19 45 | 3 59 | 19 54 |
| 16 ,, | 5 39 | 18 14 | 5 24 | 18 29 | 5 16 | 18 37 | 5 06 | 18 47 | 4 56 | 18 57 | 4 44 | 19 09 | 4 30 | 19 24 | 4 12 | 19 40 | 4 05 | 19 49 | 3 56 | 19 58 |
| 18 ,, | 5 38 | 18 14 | 5 23 | 18 30 | 5 15 | 18 38 | 5 05 | 18 48 | 4 54 | 18 59 | 4 42 | 19 11 | 4 28 | 19 26 | 4 09 | 19 43 | 4 02 | 19 52 | 3 53 | 20 01 |
| 20 ,, | 5 38 | 18 15 | 5 22 | 18 31 | 5 14 | 18 39 | 5 04 | 18 49 | 4 53 | 19 00 | 4 41 | 19 13 | 4 26 | 19 28 | 4 07 | 19 46 | 3 59 | 19 55 | 3 50 | 20 04 |
| 22 ,, | 5 38 | 18 15 | 5 22 | 18 31 | 5 13 | 18 40 | 5 03 | 18 50 | 4 52 | 19 02 | 4 39 | 19 15 | 4 24 | 19 30 | 4 04 | 19 48 | 3 57 | 19 58 | 3 47 | 20 07 |
| 24 ,, | 5 38 | 18 16 | 5 21 | 18 32 | 5 12 | 18 41 | 5 02 | 18 51 | 4 51 | 19 03 | 4 38 | 19 16 | 4 22 | 19 32 | 4 02 | 19 51 | 3 54 | 20 00 | 3 44 | 20 10 |
| 26 ,, | 5 38 | 18 16 | 5 21 | 18 33 | 5 11 | 18 42 | 5 01 | 18 52 | 4 50 | 19 05 | 4 36 | 19 18 | 4 21 | 19 34 | 4 01 | 19 53 | 3 52 | 20 03 | 3 42 | 20 13 |
| 28 ,, | 5 38 | 18 17 | 5 20 | 18 34 | 5 11 | 18 43 | 5 00 | 18 54 | 4 49 | 19 06 | 4 35 | 19 19 | 4 19 | 19 36 | 3 59 | 19 56 | 3 50 | 20 05 | 3 39 | 20 16 |
| 30 ,, | 5 38 | 18 17 | 5 20 | 18 34 | 5 11 | 18 44 | 5 00 | 18 55 | 4 48 | 19 07 | 4 34 | 19 20 | 4 18 | 19 38 | 3 58 | 19 58 | 3 48 | 20 08 | 3 37 | 20 18 |
| 1 जून | 5 38 | 18 18 | 5 20 | 18 35 | 5 10 | 18 45 | 4 59 | 18 56 | 4 47 | 19 08 | 4 33 | 19 22 | 4 17 | 19 39 | 3 56 | 20 00 | 3 46 | 20 10 | 3 35 | 20 21 |
| 3 ,, | 5 38 | 18 18 | 5 20 | 18 36 | 5 10 | 18 46 | 4 59 | 18 57 | 4 47 | 19 09 | 4 32 | 19 24 | 4 16 | 19 41 | 3 55 | 20 02 | 3 45 | 20 12 | 3 33 | 20 23 |
| 5 ,, | 5 38 | 18 19 | 5 20 | 18 37 | 5 10 | 18 47 | 4 58 | 18 58 | 4 46 | 19 10 | 4 32 | 19 25 | 4 15 | 19 42 | 3 53 | 20 04 | 3 43 | 20 14 | 3 32 | 20 26 |
| 7 ,, | 5 38 | 18 19 | 5 20 | 18 37 | 5 10 | 18 48 | 4 58 | 18 59 | 4 46 | 19 11 | 4 31 | 19 27 | 4 14 | 19 44 | 3 52 | 20 06 | 3 42 | 20 16 | 3 30 | 20 28 |
| 9 ,, | 5 39 | 18 20 | 5 20 | 18 38 | 5 10 | 18 49 | 4 58 | 19 00 | 4 46 | 19 12 | 4 31 | 19 28 | 4 14 | 19 45 | 3 52 | 20 07 | 3 41 | 20 18 | 3 29 | 20 30 |
| 11 ,, | 5 39 | 18 20 | 5 20 | 18 39 | 5 10 | 18 50 | 4 58 | 19 01 | 4 45 | 19 13 | 4 30 | 19 29 | 4 13 | 19 46 | 3 51 | 20 08 | 3 41 | 20 20 | 3 28 | 20 31 |
| 13 ,, | 5 39 | 18 21 | 5 20 | 18 40 | 5 10 | 18 51 | 4 58 | 19 01 | 4 45 | 19 14 | 4 30 | 19 30 | 4 12 | 19 48 | 3 50 | 20 10 | 3 40 | 20 22 | 3 27 | 20 34 |
| 15 ,, | 5 39 | 18 21 | 5 20 | 18 40 | 5 10 | 18 51 | 4 59 | 19 02 | 4 46 | 19 15 | 4 30 | 19 31 | 4 12 | 19 49 | 3 50 | 20 11 | 3 39 | 20 22 | 3 27 | 20 35 |
| 17 ,, | 5 39 | 18 22 | 5 21 | 18 41 | 5 10 | 18 51 | 4 59 | 19 03 | 4 46 | 19 16 | 4 31 | 19 31 | 4 13 | 19 49 | 3 50 | 20 12 | 3 39 | 20 23 | 3 27 | 20 36 |
| 19 ,, | 5 40 | 18 22 | 5 21 | 18 41 | 5 11 | 18 52 | 4 59 | 19 03 | 4 46 | 19 16 | 4 31 | 19 32 | 4 13 | 19 50 | 3 50 | 20 12 | 3 39 | 20 23 | 3 27 | 20 36 |
| 21 ,, | 5 40 | 18 23 | 5 22 | 18 42 | 5 11 | 18 52 | 5 00 | 19 04 | 4 47 | 19 17 | 4 31 | 19 32 | 4 13 | 19 50 | 3 51 | 20 13 | 3 40 | 20 23 | 3 27 | 20 36 |
| 23 ,, | 5 41 | 18 23 | 5 22 | 18 42 | 5 12 | 18 53 | 5 00 | 19 04 | 4 47 | 19 17 | 4 33 | 19 33 | 4 14 | 19 51 | 3 52 | 20 13 | 3 41 | 20 24 | 3 28 | 20 36 |
| 25 ,, | 5 41 | 18 24 | 5 23 | 18 43 | 5 12 | 18 53 | 5 01 | 19 05 | 4 48 | 19 17 | 4 33 | 19 33 | 4 15 | 19 51 | 3 53 | 20 13 | 3 41 | 20 24 | 3 29 | 20 36 |
| 27 ,, | 5 42 | 18 24 | 5 23 | 18 43 | 5 13 | 18 53 | 5 01 | 19 05 | 4 48 | 19 18 | 4 34 | 19 33 | 4 16 | 19 51 | 3 54 | 20 13 | 3 43 | 20 24 | 3 29 | 20 36 |
| 29 ,, | 5 42 | 18 24 | 5 24 | 18 43 | 5 13 | 18 53 | 5 02 | 19 05 | 4 49 | 19 18 | 4 34 | 19 33 | 4 17 | 19 51 | 3 54 | 20 13 | 3 43 | 20 24 | 3 32 | 20 36 |
| 1 जुला | 5 42 | 18 24 | 5 24 | 18 43 | 5 14 | 18 53 | 5 02 | 19 05 | 4 49 | 19 18 | 4 34 | 19 32 | 4 17 | 19 50 | 3 54 | 20 12 | 3 44 | 20 23 | 3 32 | 20 35 |
| 3 ,, | 5 43 | 18 25 | 5 24 | 18 43 | 5 15 | 18 54 | 5 03 | 19 05 | 4 50 | 19 17 | 4 35 | 19 32 | 4 18 | 19 50 | 3 56 | 20 12 | 3 45 | 20 22 | 3 33 | 20 34 |
| 5 ,, | 5 44 | 18 25 | 5 25 | 18 43 | 5 15 | 18 53 | 5 04 | 19 05 | 4 51 | 19 17 | 4 37 | 19 31 | 4 19 | 19 49 | 3 58 | 20 11 | 3 47 | 20 21 | 3 35 | 20 33 |
| 7 ,, | 5 44 | 18 25 | 5 26 | 18 43 | 5 16 | 18 53 | 5 05 | 19 04 | 4 52 | 19 17 | 4 38 | 19 31 | 4 20 | 19 49 | 4 00 | 20 10 | 3 49 | 20 20 | 3 37 | 20 32 |
| 9 ,, | 5 45 | 10 25 | 5 27 | 18 43 | 5 17 | 18 53 | 5 06 | 19 04 | 4 53 | 19 16 | 4 39 | 19 31 | 4 22 | 19 48 | 4 02 | 20 09 | 3 51 | 20 14 | 3 40 | 20 30 |
| 11 ,, | 5 45 | 18 25 | 5 27 | 18 43 | 5 18 | 18 53 | 5 07 | 19 04 | 4 54 | 19 16 | 4 40 | 19 30 | 4 24 | 19 47 | 4 04 | 20 07 | 3 53 | 20 17 | 3 42 | 20 28 |
| 13 ,, | 5 46 | 18 25 | 5 28 | 18 43 | 5 19 | 18 53 | 5 08 | 19 03 | 4 56 | 19 15 | 4 42 | 19 29 | 4 25 | 19 45 | 4 06 | 20 05 | 3 55 | 20 16 | 3 44 | 20 26 |
| 15 ,, | 5 46 | 18 25 | 5 29 | 18 43 | 5 20 | 18 52 | 5 09 | 19 02 | 4 57 | 19 14 | 4 43 | 19 28 | 4 27 | 19 44 | 4 08 | 20 04 | 3 57 | 20 14 | 3 47 | 20 24 |
| 17 ,, | 5 47 | 18 25 | 5 29 | 18 42 | 5 21 | 18 52 | 5 10 | 19 01 | 4 58 | 19 13 | 4 45 | 19 27 | 4 29 | 19 42 | 4 10 | 20 02 | 4 00 | 20 12 | 3 50 | 20 22 |

| अक्षांश | अक्षांश 10° उ. | | अक्षांश 20° उ. | | अक्षांश 25° उ. | | अक्षांश 30° उ. | | अक्षांश 35° उ. | | अक्षांश 40° उ. | | अक्षांश 45° उ. | | अक्षांश 50° उ. | | अक्षांश 52° उ. | | अक्षांश 54° उ. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तारीख जुलाई | सू. उ. घं. मिं. | सू. अ. घं. मिं. | सू. उ. घं. मिं. | सू. अ. घं. मिं. | सू. उ. घं. मिं. | सू. अ. घं. मिं. | सू. उ. घं. मिं. | सू. अ. घं. मिं. | सू. उ. घं. मिं. | सू. अ. घं. मिं. | सू. उ. घं. मिं. | सू. अ. घं. मिं. | सू. उ. घं. मिं. | सू. अ. घं. मिं. | सू. उ. घं. मिं. | सू. अ. घं. मिं. | सू. उ. घं. मिं. | सू. अ. घं. मिं. | सू. उ. घं. मिं. | सू. अ. घं. मिं. |
| 19जुला | 5 47 | 18 25 | 5 30 | 18 42 | 5 22 | 18 51 | 5 11 | 19 01 | 4 59 | 19 12 | 4 46 | 19 25 | 4 31 | 19 41 | 4 12 | 20 00 | 4 03 | 20 09 | 3 52 | 20 19 |
| 21 ,, | 5 47 | 18 25 | 5 31 | 18 41 | 5 22 | 18 50 | 5 12 | 19 00 | 5 01 | 19 11 | 4 48 | 19 24 | 4 33 | 19 39 | 4 14 | 19 57 | 4 06 | 20 07 | 3 55 | 20 17 |
| 23 ,, | 5 47 | 18 25 | 5 32 | 18 41 | 5 23 | 18 49 | 5 13 | 18 59 | 5 02 | 19 10 | 4 50 | 19 22 | 4 35 | 19 37 | 4 16 | 19 55 | 4 08 | 20 04 | 3 58 | 20 14 |
| 25 ,, | 5 48 | 18 24 | 5 32 | 18 40 | 5 24 | 18 48 | 5 14 | 18 58 | 5 04 | 19 08 | 4 51 | 19 21 | 4 37 | 19 35 | 4 19 | 19 53 | 4 11 | 20 01 | 4 01 | 20 11 |
| 27 ,, | 5 48 | 18 24 | 5 33 | 18 39 | 5 25 | 18 47 | 5 15 | 18 57 | 5 05 | 19 07 | 4 53 | 19 19 | 4 39 | 19 33 | 4 22 | 19 50 | 4 14 | 19 58 | 4 04 | 20 07 |
| 29 ,, | 5 49 | 18 23 | 5 34 | 18 38 | 5 26 | 18 46 | 5 17 | 18 55 | 5 07 | 19 05 | 4 55 | 19 17 | 4 41 | 19 31 | 4 24 | 19 47 | 4 17 | 19 55 | 4 07 | 20 04 |
| 31 ,, | 5 49 | 18 23 | 5 35 | 18 37 | 5 27 | 18 45 | 5 17 | 18 54 | 5 08 | 19 04 | 4 57 | 19 15 | 4 44 | 19 28 | 4 27 | 19 44 | 4 20 | 19 52 | 4 11 | 20 01 |
| 2 अग | 5 50 | 18 22 | 5 35 | 18 36 | 5 28 | 18 44 | 5 19 | 18 52 | 5 09 | 19 02 | 4 59 | 19 13 | 4 46 | 19 25 | 4 30 | 19 41 | 4 23 | 19 48 | 4 14 | 19 57 |
| 4 ,, | 5 50 | 18 22 | 5 36 | 18 35 | 5 29 | 18 43 | 5 20 | 18 51 | 5 11 | 19 00 | 5 00 | 19 11 | 4 48 | 19 23 | 4 33 | 19 38 | 4 26 | 19 45 | 4 18 | 19 53 |
| 6 ,, | 5 50 | 18 21 | 5 36 | 18 34 | 5 30 | 18 42 | 5 22 | 18 50 | 5 12 | 18 58 | 5 02 | 19 08 | 4 50 | 19 20 | 4 36 | 19 34 | 4 28 | 19 42 | 4 21 | 19 49 |
| 8 ,, | 5 50 | 18 21 | 5 37 | 18 33 | 5 31 | 18 40 | 5 23 | 18 48 | 5 14 | 18 56 | 5 04 | 19 06 | 4 53 | 19 18 | 4 39 | 19 31 | 4 32 | 19 38 | 4 25 | 19 45 |
| 10 ,, | 5 50 | 18 20 | 5 38 | 18 32 | 5 32 | 18 39 | 5 25 | 18 46 | 5 16 | 18 54 | 5 06 | 19 03 | 4 55 | 19 15 | 4 42 | 19 28 | 4 35 | 19 34 | 4 28 | 19 45 |
| 12 ,, | 5 51 | 18 19 | 5 39 | 18 31 | 5 33 | 18 37 | 5 26 | 18 44 | 5 17 | 18 52 | 5 08 | 19 01 | 4 57 | 19 12 | 4 45 | 19 24 | 4 38 | 19 30 | 4 32 | 19 37 |
| 14 ,, | 5 51 | 18 18 | 5 39 | 18 30 | 5 33 | 18 35 | 5 27 | 18 42 | 5 19 | 18 49 | 5 10 | 18 58 | 5 00 | 19 08 | 4 47 | 19 21 | 4 42 | 19 26 | 4 35 | 19 32 |
| 16 ,, | 5 51 | 18 17 | 5 40 | 18 28 | 5 34 | 18 34 | 5 28 | 18 40 | 5 20 | 18 47 | 5 12 | 18 56 | 5 02 | 19 05 | 4 51 | 19 17 | 4 45 | 19 22 | 4 39 | 19 28 |
| 18 ,, | 5 51 | 18 16 | 5 41 | 18 26 | 5 35 | 18 32 | 5 29 | 18 38 | 5 22 | 18 45 | 5 14 | 18 23 | 5 04 | 19 02 | 4 53 | 19 13 | 4 48 | 19 18 | 4 42 | 19 23 |
| 20 ,, | 5 51 | 18 15 | 5 41 | 18 25 | 5 36 | 18 30 | 5 30 | 18 36 | 5 23 | 18 43 | 5 16 | 18 50 | 5 07 | 18 59 | 4 57 | 19 09 | 4 51 | 19 14 | 4 46 | 19 19 |
| 22 ,, | 5 51 | 18 14 | 5 42 | 18 23 | 5 37 | 18 28 | 5 32 | 18 34 | 5 25 | 18 40 | 5 18 | 18 47 | 5 09 | 18 56 | 4 59 | 19 05 | 4 55 | 10 10 | 4 49 | 19 15 |
| 24 ,, | 5 51 | 18 13 | 4 42 | 18 22 | 5 38 | 18 27 | 5 33 | 18 32 | 5 26 | 18 37 | 5 19 | 18 44 | 5 12 | 18 52 | 5 02 | 19 01 | 4 58 | 19 06 | 4 53 | 19 10 |
| 26 ,, | 5 51 | 18 12 | 5 43 | 18 20 | 5 39 | 18 25 | 5 34 | 18 29 | 5 28 | 18 34 | 5 21 | 18 41 | 5 14 | 18 49 | 5 05 | 18 57 | 5 01 | 19 02 | 4 57 | 19 05 |
| 28 ,, | 5 51 | 18 11 | 5 43 | 18 19 | 5 39 | 18 23 | 5 35 | 18 27 | 5 29 | 18 32 | 5 23 | 18 38 | 5 16 | 18 45 | 5 08 | 18 53 | 5 04 | 18 57 | 5 00 | 19 01 |
| 30 ,, | 5 51 | 18 10 | 5 44 | 18 17 | 5 40 | 18 21 | 5 36 | 18 25 | 5 31 | 18 29 | 5 25 | 18 35 | 5 19 | 18 41 | 5 11 | 18 49 | 5 08 | 18 53 | 5 04 | 18 56 |
| 1 सितं | 5 51 | 19 09 | 5 44 | 18 15 | 5 41 | 18 19 | 5 37 | 18 23 | 5 32 | 18 27 | 5 27 | 18 32 | 5 22 | 18 38 | 5 14 | 18 45 | 5 11 | 18 48 | 5 08 | 18 51 |
| 3 ,, | 5 51 | 18 08 | 5 45 | 18 13 | 5 42 | 18 17 | 5 38 | 18 20 | 5 34 | 18 24 | 5 29 | 18 29 | 5 24 | 18 34 | 5 16 | 18 41 | 5 14 | 18 43 | 5 11 | 18 47 |
| 5 ,, | 5 51 | 18 07 | 5 46 | 18 12 | 5 42 | 18 15 | 5 39 | 18 18 | 5 35 | 18 21 | 5 31 | 18 26 | 5 26 | 18 30 | 5 20 | 18 36 | 5 17 | 18 39 | 5 15 | 18 42 |
| 7 ,, | 5 50 | 18 06 | 5 46 | 18 10 | 5 43 | 18 12 | 5 40 | 18 15 | 5 37 | 18 18 | 5 33 | 18 23 | 5 28 | 18 27 | 5 23 | 18 31 | 5 21 | 18 34 | 5 18 | 18 37 |
| 9 ,, | 5 50 | 18 04 | 5 46 | 18 08 | 5 44 | 18 10 | 5 41 | 18 13 | 5 38 | 18 16 | 5 35 | 18 11 | 5 31 | 18 23 | 5 26 | 18 27 | 5 24 | 18 29 | 5 22 | 18 32 |
| 11 ,, | 5 50 | 18 03 | 5 46 | 18 07 | 5 44 | 18 08 | 5 42 | 18 10 | 5 39 | 18 13 | 5 37 | 18 16 | 5 33 | 18 19 | 5 29 | 18 23 | 5 27 | 18 24 | 5 25 | 18 27 |
| 13 ,, | 5 50 | 18 02 | 5 47 | 18 05 | 5 45 | 18 06 | 5 43 | 18 08 | 5 41 | 18 10 | 5 39 | 18 13 | 5 36 | 18 15 | 5 32 | 18 19 | 5 30 | 18 20 | 5 29 | 18 22 |
| 15 ,, | 5 50 | 18 00 | 5 47 | 18 03 | 5 46 | 18 04 | 5 44 | 18 05 | 5 42 | 18 07 | 5 40 | 18 10 | 5 38 | 18 11 | 5 34 | 18 14 | 5 34 | 18 16 | 5 32 | 18 17 |
| 17 ,, | 5 50 | 17 59 | 5 48 | 18 01 | 5 47 | 18 02 | 5 45 | 18 03 | 5 44 | 18 04 | 5 42 | 18 06 | 5 41 | 18 08 | 5 38 | 18 10 | 5 37 | 18 11 | 5 36 | 18 12 |
| 19 ,, | 5 49 | 17 58 | 5 48 | 17 59 | 5 47 | 18 00 | 5 46 | 18 01 | 5 45 | 18 02 | 5 44 | 18 03 | 5 43 | 18 04 | 5 41 | 18 06 | 5 41 | 18 06 | 5 40 | 18 07 |
| 21 ,, | 5 49 | 17 57 | 5 48 | 17 57 | 5 48 | 17 58 | 5 47 | 17 58 | 5 47 | 17 59 | 5 46 | 17 59 | 5 45 | 18 00 | 5 44 | 18 01 | 5 44 | 18 01 | 5 43 | 18 02 |
| 23 ,, | 5 49 | 17 55 | 5 49 | 17 55 | 5 49 | 17 55 | 5 49 | 17 56 | 5 48 | 17 56 | 5 48 | 17 56 | 5 48 | 17 56 | 5 47 | 17 56 | 5 47 | 17 56 | 5 47 | 17 57 |
| 25 ,, | 5 49 | 17 54 | 5 49 | 17 54 | 5 50 | 17 53 | 5 50 | 17 53 | 5 50 | 17 53 | 5 50 | 17 53 | 5 50 | 17 52 | 5 50 | 17 52 | 5 50 | 17 52 | 5 50 | 17 52 |
| 27 ,, | 5 49 | 17 53 | 5 50 | 17 52 | 5 51 | 17 51 | 5 51 | 17 50 | 5 51 | 17 50 | 5 52 | 17 50 | 5 52 | 17 48 | 5 53 | 17 48 | 5 53 | 17 48 | 5 54 | 17 47 |
| 29 ,, | 5 49 | 17 52 | 5 51 | 17 50 | 5 51 | 17 49 | 5 52 | 17 48 | 5 53 | 17 47 | 5 54 | 17 46 | 5 55 | 17 45 | 5 56 | 17 43 | 5 57 | 17 43 | 5 58 | 17 42 |
| 1 अक्टू | 5 49 | 17 51 | 5 51 | 17 48 | 5 52 | 17 47 | 5 53 | 17 46 | 5 54 | 17 44 | 5 56 | 17 43 | 5 57 | 17 41 | 5 59 | 17 38 | 6 00 | 17 39 | 6 01 | 17 37 |
| 3 ,, | 5 49 | 17 49 | 5 51 | 17 46 | 5 53 | 17 45 | 5 54 | 17 43 | 5 56 | 17 41 | 5 58 | 17 40 | 6 00 | 17 37 | 6 03 | 17 35 | 6 03 | 17 34 | 6 05 | 17 32 |
| 5 ,, | 5 48 | 17 48 | 5 52 | 17 44 | 5 54 | 17 43 | 5 55 | 17 40 | 5 57 | 17 38 | 6 00 | 17 37 | 6 02 | 17 33 | 6 06 | 17 30 | 6 07 | 17 29 | 6 08 | 17 27 |
| 7 ,, | 5 48 | 17 47 | 5 52 | 17 43 | 5 55 | 17 41 | 5 57 | 17 38 | 5 59 | 17 36 | 6 02 | 17 33 | 6 05 | 17 30 | 6 09 | 17 26 | 6 10 | 17 24 | 6 12 | 17 22 |
| 9 ,, | 5 48 | 17 46 | 5 53 | 17 42 | 5 55 | 17 39 | 5 58 | 17 36 | 6 01 | 17 33 | 6 04 | 17 30 | 6 07 | 17 27 | 6 12 | 17 22 | 6 14 | 17 19 | 6 16 | 17 17 |

| अक्षांश | अक्षांश 10° उ. | | अक्षांश 20° उ. | | अक्षांश 25° उ. | | अक्षांश 30° उ. | | अक्षांश 35° उ. | | अक्षांश 40° उ. | | अक्षांश 45° उ. | | अक्षांश 50° उ. | | अक्षांश 52° उ. | | अक्षांश 54° उ. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तारीख | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. |
| अक्तूबर | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 11 अक्तू | 5 48 | 17 45 | 5 53 | 17 40 | 5 56 | 17 37 | 5 59 | 17 34 | 6 02 | 17 31 | 6 06 | 17 27 | 6 10 | 17 23 | 6 15 | 17 18 | 6 17 | 17 15 | 6 20 | 17 13 |
| 13 ,, | 5 48 | 17 44 | 5 54 | 17 38 | 5 57 | 17 35 | 6 00 | 17 31 | 6 04 | 17 28 | 6 08 | 17 24 | 6 12 | 17 20 | 6 18 | 17 14 | 6 21 | 17 11 | 6 23 | 17 08 |
| 15 ,, | 5 49 | 17 43 | 5 55 | 17 37 | 5 58 | 17 33 | 6 02 | 17 29 | 6 06 | 17 25 | 6 10 | 17 21 | 6 15 | 17 16 | 6 21 | 17 10 | 6 24 | 17 07 | 6 27 | 17 03 |
| 17 ,, | 5 49 | 17 42 | 5 55 | 17 35 | 5 59 | 17 31 | 6 03 | 17 27 | 6 07 | 17 23 | 6 12 | 17 18 | 6 18 | 17 12 | 6 24 | 17 06 | 6 28 | 17 02 | 6 31 | 16 59 |
| 19 ,, | 5 49 | 17 41 | 5 56 | 17 34 | 6 00 | 17 30 | 6 05 | 17 25 | 6 09 | 17 20 | 6 14 | 17 15 | 6 20 | 17 09 | 6 28 | 17 02 | 6 31 | 16 58 | 6 35 | 16 54 |
| 21 ,, | 5 49 | 17 40 | 5 57 | 17 32 | 6 01 | 17 28 | 6 06 | 17 23 | 6 11 | 17 18 | 6 16 | 17 13 | 6 23 | 17 05 | 6 31 | 16 58 | 6 35 | 16 54 | 6 39 | 16 49 |
| 23 ,, | 5 49 | 17 39 | 5 58 | 17 31 | 6 02 | 17 26 | 6 07 | 17 21 | 6 12 | 17 15 | 6 18 | 17 10 | 6 26 | 17 02 | 6 34 | 16 54 | 6 38 | 16 50 | 6 43 | 16 45 |
| 25 ,, | 5 49 | 17 39 | 5 58 | 17 29 | 6 03 | 17 24 | 6 08 | 17 19 | 6 14 | 17 13 | 6 20 | 17 03 | 6 28 | 16 59 | 6 38 | 16 50 | 6 42 | 16 46 | 6 46 | 16 41 |
| 27 ,, | 5 50 | 17 38 | 5 59 | 17 28 | 6 05 | 17 23 | 6 10 | 17 17 | 6 16 | 17 11 | 6 22 | 17 04 | 6 31 | 16 56 | 6 41 | 16 46 | 6 46 | 16 42 | 6 50 | 16 37 |
| 29 ,, | 5 50 | 17 38 | 6 00 | 17 27 | 6 06 | 17 21 | 6 12 | 17 15 | 6 18 | 17 09 | 6 24 | 17 02 | 6 34 | 16 53 | 6 45 | 16 42 | 6 49 | 16 38 | 6 54 | 16 32 |
| 31 ,, | 5 50 | 17 37 | 6 00 | 17 26 | 6 07 | 17 20 | 6 13 | 17 14 | 6 20 | 17 07 | 6 27 | 16 59 | 6 37 | 16 50 | 6 48 | 16 39 | 6 52 | 16 34 | 6 58 | 18 28 |
| 2 नवं. | 5 51 | 17 37 | 6 02 | 17 24 | 6 08 | 17 11 | 6 14 | 17 12 | 6 22 | 17 05 | 6 30 | 16 56 | 6 39 | 16 47 | 6 51 | 16 35 | 6 56 | 16 30 | 7 02 | 16 24 |
| 4 ,, | 5 51 | 17 36 | 6 03 | 17 23 | 6 09 | 17 18 | 6 16 | 17 11 | 6 23 | 17 03 | 6 32 | 16 54 | 6 42 | 16 45 | 6 54 | 16 32 | 7 00 | 16 27 | 7 06 | 16 21 |
| 6 ,, | 5 52 | 17 36 | 6 04 | 17 23 | 6 10 | 17 17 | 6 18 | 17 09 | 6 25 | 17 01 | 6 34 | 16 52 | 6 45 | 16 42 | 6 57 | 16 29 | 7 03 | 16 23 | 7 10 | 16 17 |
| 8 ,, | 5 52 | 17 35 | 6 05 | 17 22 | 6 12 | 17 16 | 6 19 | 17 08 | 6 27 | 16 59 | 6 37 | 16 50 | 6 48 | 16 39 | 7 01 | 16 26 | 7 07 | 16 20 | 7 14 | 16 13 |
| 10 ,, | 5 53 | 17 35 | 6 06 | 17 22 | 6 13 | 17 15 | 6 21 | 17 06 | 6 29 | 16 57 | 6 39 | 16 48 | 6 50 | 16 37 | 7 04 | 16 23 | 7 10 | 16 17 | 7 17 | 16 09 |
| 12 ,, | 5 54 | 17 35 | 6 07 | 17 21 | 6 15 | 17 14 | 6 22 | 17 05 | 6 31 | 16 56 | 6 41 | 16 47 | 6 53 | 16 35 | 7 07 | 16 20 | 7 14 | 16 14 | 7 21 | 16 06 |
| 14 ,, | 5 54 | 17 35 | 6 08 | 17 21 | 6 16 | 17 13 | 6 24 | 17 04 | 6 33 | 16 55 | 6 44 | 16 45 | 6 56 | 16 33 | 7 11 | 16 17 | 7 18 | 16 11 | 7 25 | 16 03 |
| 16 ,, | 5 55 | 17 34 | 6 09 | 17 20 | 6 17 | 17 12 | 6 26 | 17 03 | 6 35 | 16 54 | 6 46 | 16 43 | 6 59 | 16 31 | 7 14 | 16 15 | 7 21 | 16 08 | 7 29 | 16 00 |
| 18 ,, | 5 56 | 17 34 | 6 11 | 17 20 | 6 18 | 17 12 | 6 27 | 17 03 | 6 37 | 16 53 | 6 48 | 16 41 | 7 01 | 16 29 | 7 17 | 16 12 | 7 25 | 16 05 | 7 33 | 15 57 |
| 20 ,, | 5 57 | 17 35 | 6 12 | 17 19 | 6 20 | 17 11 | 6 29 | 17 02 | 6 39 | 16 52 | 6 51 | 16 40 | 7 04 | 16 27 | 7 20 | 16 10 | 7 28 | 16 03 | 7 36 | 15 54 |
| 22 ,, | 5 58 | 17 35 | 6 13 | 17 19 | 6 21 | 17 11 | 6 31 | 17 01 | 6 41 | 16 51 | 6 53 | 16 39 | 7 07 | 16 25 | 7 23 | 16 08 | 7 31 | 16 00 | 7 40 | 15 51 |
| 24 ,, | 5 58 | 17 35 | 6 14 | 17 19 | 6 23 | 17 10 | 6 32 | 17 01 | 6 43 | 16 50 | 6 55 | 16 38 | 7 09 | 16 24 | 7 26 | 16 06 | 7 35 | 15 58 | 7 44 | 15 49 |
| 26 ,, | 5 59 | 17 35 | 6 15 | 17 19 | 6 24 | 17 10 | 6 34 | 17 00 | 6 45 | 16 50 | 6 57 | 16 37 | 7 12 | 16 22 | 7 29 | 16 04 | 7 38 | 15 56 | 7 47 | 15 47 |
| 28 ,, | 6 00 | 17 36 | 6 17 | 17 19 | 6 26 | 17 10 | 6 36 | 17 00 | 6 47 | 16 49 | 6 59 | 16 36 | 7 14 | 16 21 | 7 32 | 16 03 | 7 41 | 15 55 | 7 50 | 15 45 |
| 30 ,, | 6 01 | 17 36 | 6 18 | 17 19 | 6 28 | 17 10 | 6 37 | 17 00 | 6 49 | 16 49 | 7 01 | 16 36 | 7 17 | 16 21 | 7 35 | 16 02 | 7 44 | 15 53 | 7 54 | 15 43 |
| 2 दिसं. | 6 02 | 17 37 | 6 19 | 17 19 | 6 29 | 17 10 | 6 39 | 17 00 | 6 51 | 16 58 | 7 03 | 16 35 | 7 19 | 16 20 | 7 38 | 16 01 | 7 47 | 15 52 | 7 57 | 15 42 |
| 4 ,, | 6 03 | 17 37 | 6 21 | 17 20 | 6 30 | 17 10 | 6 41 | 17 00 | 6 52 | 16 48 | 7 05 | 16 35 | 7 21 | 16 20 | 7 40 | 16 00 | 7 49 | 15 51 | 8 01 | 15 41 |
| 6 ,, | 6 04 | 17 38 | 6 22 | 17 20 | 6 32 | 17 10 | 6 42 | 17 00 | 6 54 | 16 48 | 7 07 | 16 35 | 7 23 | 16 19 | 7 43 | 15 59 | 7 52 | 15 50 | 8 04 | 15 39 |
| 8 ,, | 6 05 | 17 38 | 6 23 | 17 20 | 6 33 | 17 10 | 6 44 | 17 00 | 6 55 | 16 48 | 7 09 | 16 35 | 7 25 | 16 19 | 7 45 | 15 59 | 7 54 | 15 50 | 8 06 | 15 39 |
| 10 ,, | 6 06 | 17 39 | 6 24 | 17 21 | 6 34 | 17 11 | 6 45 | 17 00 | 6 57 | 16 48 | 7 11 | 16 35 | 7 27 | 16 18 | 7 47 | 15 58 | 7 57 | 15 49 | 8 09 | 15 38 |
| 12 ,, | 6 07 | 17 40 | 6 25 | 17 22 | 6 35 | 17 11 | 6 46 | 17 01 | 6 58 | 16 48 | 7 13 | 16 35 | 7 29 | 16 17 | 7 49 | 15 58 | 7 59 | 15 48 | 8 11 | 15 37 |
| 14 ,, | 6 08 | 17 41 | 6 27 | 17 23 | 6 37 | 17 12 | 6 48 | 17 01 | 7 0 | 16 49 | 7 14 | 16 35 | 7 31 | 16 19 | 7 51 | 15 58 | 8 1 | 15 48 | 8 13 | 15 37 |
| 16 ,, | 6 09 | 17 42 | 6 28 | 17 23 | 6 38 | 17 13 | 6 49 | 17 02 | 7 1 | 16 49 | 7 15 | 16 36 | 7 32 | 16 19 | 7 53 | 15 59 | 8 3 | 15 48 | 8 14 | 15 38 |
| 18 ,, | 6 10 | 17 43 | 6 29 | 17 24 | 6 39 | 17 14 | 6 50 | 17 03 | 7 2 | 16 50 | 7 17 | 16 36 | 7 33 | 16 20 | 7 54 | 15 59 | 8 4 | 15 49 | 8 16 | 15 38 |
| 20 ,, | 6 11 | 17 44 | 6 30 | 17 25 | 6 40 | 17 15 | 6 51 | 17 04 | 7 4 | 16 51 | 7 18 | 16 37 | 7 35 | 16 21 | 7 55 | 16 00 | 8 5 | 15 50 | 8 17 | 15 39 |
| 22 ,, | 6 12 | 17 45 | 6 31 | 17 26 | 6 41 | 17 16 | 6 52 | 17 05 | 7 5 | 16 52 | 7 19 | 16 38 | 7 36 | 16 21 | 7 56 | 16 00 | 8 6 | 15 51 | 8 18 | 15 39 |
| 24 ,, | 6 13 | 17 46 | 6 32 | 17 27 | 6 42 | 17 17 | 6 53 | 17 06 | 7 6 | 16 54 | 7 20 | 16 39 | 7 37 | 16 23 | 7 57 | 16 02 | 8 7 | 15 52 | 8 19 | 15 41 |
| 26 ,, | 6 14 | 17 47 | 6 33 | 17 28 | 6 43 | 17 18 | 6 54 | 17 07 | 7 6 | 16 55 | 7 21 | 16 41 | 7 37 | 16 24 | 7 58 | 16 03 | 8 8 | 15 53 | 8 19 | 15 42 |
| 28 ,, | 6 15 | 17 48 | 6 34 | 17 29 | 6 44 | 17 20 | 6 55 | 17 09 | 7 7 | 16 56 | 7 21 | 16 42 | 7 38 | 16 25 | 7 58 | 16 05 | 8 8 | 15 55 | 8 19 | 15 44 |
| 30 ,, | 6 16 | 17 49 | 6 34 | 17 30 | 6 45 | 17 21 | 6 56 | 17 10 | 7 8 | 16 57 | 7 22 | 16 44 | 7 38 | 16 26 | 7 59 | 16 07 | 8 8 | 15 57 | 8 19 | 15 46 |
| 31 ,, | 6 17 | 17 50 | 6 34 | 17 31 | 6 45 | 17 23 | 6 56 | 17 10 | 7 8 | 16 58 | 7 22 | 16 44 | 7 38 | 16 27 | 7 59 | 16 08 | 8 8 | 15 58 | 8 19 | 15 47 |

# हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त–सन् 2024 ई. ( भा. स्टै. टा. )

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण–वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग 4 मिनट घटाने तथा अस्त में 4 मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय–सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

**उदाहरण**–मान लीजिए करसोग में 11 अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें ज़िला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय 6 घण्टे 1 मिनट तथा सूर्यास्त 18 घण्टे 44 मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू. उ. व सू. अ. में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार–1 घण्टे 04 मिनट घटाने से हमें 5 घण्टे 59 मिनट 56 सैकेण्ड और 18 घण्टे 42 मिनट 26 सैकेण्ड में प्राप्त हुए। ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय (जन्मपत्री निर्माण हेतु) सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

| नगर | काँगड़ा | | हमीरपुर | | ऊना | | बिलासपुर | | मण्डी | | सरकाघाट | | शिमला | | सोलन | | चम्बा | | नाहन | | रामपुर बुशैहर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तारीख | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त |
| जनवरी | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 1 | 7 30 | 17 27 | 7 28 | 17 27 | 7 28 | 17 28 | 7 26 | 17 27 | 7 26 | 17 25 | 7 27 | 17 26 | 7 24 | 17 26 | 7 23 | 17 26 | 7 31 | 17 26 | 7 22 | 17 26 | 7 23 | 17 23 |
| 4 | 7 30 | 17 29 | 7 28 | 17 29 | 7 29 | 17 30 | 7 26 | 17 29 | 7 27 | 17 27 | 7 27 | 17 28 | 7 24 | 17 28 | 7 24 | 17 28 | 7 32 | 17 29 | 7 22 | 17 28 | 7 23 | 17 25 |
| 7 | 7 30 | 17 31 | 7 29 | 17 31 | 7 29 | 17 33 | 7 27 | 17 31 | 7 27 | 17 30 | 7 28 | 17 30 | 7 25 | 17 30 | 7 24 | 17 31 | 7 32 | 17 31 | 7 23 | 17 31 | 7 24 | 17 27 |
| 10 | 7 31 | 17 34 | 7 29 | 17 34 | 7 29 | 17 35 | 7 27 | 17 34 | 7 27 | 17 32 | 7 28 | 17 33 | 7 25 | 17 33 | 7 25 | 17 33 | 7 32 | 17 33 | 7 23 | 17 33 | 7 24 | 17 30 |
| 13 | 7 30 | 17 36 | 7 28 | 17 36 | 7 29 | 17 38 | 7 27 | 17 36 | 7 27 | 17 35 | 7 28 | 17 36 | 7 25 | 17 35 | 7 24 | 17 36 | 7 32 | 17 36 | 7 23 | 17 36 | 7 23 | 17 32 |
| 16 | 7 30 | 17 39 | 7 28 | 17 39 | 7 29 | 17 40 | 7 26 | 17 39 | 7 26 | 17 37 | 7 27 | 17 38 | 7 24 | 17 38 | 7 24 | 17 38 | 7 32 | 17 39 | 7 23 | 17 38 | 7 23 | 17 35 |
| 19 | 7 29 | 17 42 | 7 27 | 17 42 | 7 28 | 17 43 | 7 26 | 17 41 | 7 26 | 17 40 | 7 27 | 17 41 | 7 24 | 17 40 | 7 23 | 17 41 | 7 31 | 17 42 | 7 22 | 17 41 | 7 22 | 17 38 |
| 22 | 7 28 | 17 45 | 7 26 | 17 44 | 7 27 | 17 46 | 7 25 | 17 44 | 7 25 | 17 43 | 7 26 | 17 44 | 7 23 | 17 43 | 7 23 | 17 44 | 7 30 | 17 44 | 7 21 | 17 44 | 7 21 | 17 40 |
| 25 | 7 27 | 17 47 | 7 25 | 17 47 | 7 26 | 17 49 | 7 24 | 17 47 | 7 24 | 17 45 | 7 24 | 17 46 | 7 22 | 17 46 | 7 21 | 17 46 | 7 29 | 17 47 | 7 20 | 17 47 | 7 20 | 17 43 |
| 28 | 7 26 | 17 50 | 7 24 | 17 50 | 7 24 | 17 51 | 7 22 | 17 50 | 7 22 | 17 48 | 7 23 | 17 50 | 7 20 | 17 48 | 7 20 | 17 49 | 7 27 | 17 50 | 7 19 | 17 49 | 7 19 | 17 46 |
| 31 | 7 24 | 17 53 | 7 22 | 17 53 | 7 23 | 17 54 | 7 21 | 17 52 | 7 20 | 17 51 | 7 21 | 17 52 | 7 18 | 17 51 | 7 18 | 17 52 | 7 25 | 17 53 | 7 17 | 17 51 | 7 17 | 17 49 |
| 3 फर. | 7 22 | 17 56 | 7 20 | 17 55 | 7 21 | 17 57 | 7 19 | 17 55 | 7 19 | 17 54 | 7 19 | 17 55 | 7 17 | 17 54 | 7 17 | 17 54 | 7 23 | 17 56 | 7 15 | 17 54 | 7 15 | 17 51 |
| 6 | 7 19 | 17 59 | 7 18 | 17 58 | 7 19 | 18 00 | 7 17 | 17 58 | 7 16 | 17 56 | 7 17 | 17 57 | 7 15 | 17 56 | 7 15 | 17 57 | 7 21 | 17 58 | 7 13 | 17 57 | 7 13 | 17 54 |
| 9 | 7 17 | 18 01 | 7 16 | 18 01 | 7 16 | 18 02 | 7 14 | 18 00 | 7 14 | 17 59 | 7 15 | 18 00 | 7 12 | 17 59 | 7 12 | 18 00 | 7 19 | 18 01 | 7 11 | 17 59 | 7 11 | 17 57 |
| 12 | 7 15 | 18 04 | 7 13 | 18 03 | 7 14 | 18 05 | 7 12 | 18 03 | 7 12 | 18 02 | 7 12 | 18 03 | 7 10 | 18 02 | 7 10 | 18 02 | 7 16 | 18 04 | 7 09 | 18 02 | 7 08 | 17 59 |
| 15 | 7 12 | 18 06 | 7 11 | 18 06 | 7 11 | 18 07 | 7 09 | 18 05 | 7 09 | 18 04 | 7 10 | 18 05 | 7 07 | 18 04 | 7 07 | 18 05 | 7 13 | 18 07 | 7 06 | 18 04 | 7 06 | 18 02 |
| 18 | 7 09 | 18 09 | 7 08 | 18 08 | 7 08 | 18 10 | 7 06 | 18 08 | 7 06 | 18 07 | 7 07 | 18 08 | 7 04 | 18 07 | 7 05 | 18 07 | 7 10 | 18 09 | 7 03 | 18 07 | 7 03 | 18 04 |
| 21 | 7 06 | 18 12 | 7 05 | 18 11 | 7 05 | 18 12 | 7 03 | 18 10 | 7 03 | 18 09 | 7 04 | 18 10 | 7 01 | 18 09 | 7 02 | 18 09 | 7 07 | 18 12 | 7 00 | 18 09 | 7 00 | 18 07 |
| 24 | 7 03 | 18 14 | 7 02 | 18 13 | 7 02 | 18 15 | 7 00 | 18 13 | 7 00 | 18 12 | 7 01 | 18 12 | 6 58 | 18 11 | 6 58 | 18 12 | 7 04 | 18 14 | 6 57 | 18 11 | 6 57 | 18 09 |
| 27 | 7 00 | 18 16 | 6 57 | 18 16 | 6 59 | 18 17 | 6 57 | 18 15 | 6 57 | 18 14 | 6 57 | 18 15 | 6 55 | 18 14 | 6 55 | 18 14 | 7 01 | 18 17 | 6 54 | 18 13 | 6 54 | 18 11 |
| 2 मार्च | 6 55 | 18 19 | 6 54 | 18 19 | 6 55 | 18 20 | 6 53 | 18 18 | 6 52 | 18 17 | 6 53 | 18 18 | 6 51 | 18 17 | 6 51 | 18 17 | 6 56 | 18 20 | 6 50 | 18 16 | 6 49 | 18 14 |
| 5 | 6 51 | 18 22 | 6 50 | 18 21 | 6 51 | 18 22 | 6 49 | 18 20 | 6 48 | 18 19 | 6 49 | 18 20 | 6 47 | 18 19 | 6 47 | 18 19 | 6 52 | 18 22 | 6 46 | 18 18 | 6 46 | 18 17 |
| 8 | 6 48 | 18 24 | 6 47 | 18 23 | 6 47 | 18 24 | 6 45 | 18 22 | 6 45 | 18 21 | 6 46 | 18 22 | 6 44 | 18 21 | 6 44 | 18 21 | 6 49 | 18 24 | 6 43 | 18 20 | 6 42 | 18 19 |
| 11 | 6 44 | 18 26 | 6 43 | 18 25 | 6 44 | 18 26 | 6 42 | 18 24 | 6 41 | 18 24 | 6 42 | 18 24 | 6 40 | 18 23 | 6 40 | 18 23 | 6 45 | 18 27 | 6 39 | 18 22 | 6 38 | 18 21 |
| 14 | 6 40 | 18 28 | 6 39 | 18 27 | 6 40 | 18 28 | 6 38 | 18 26 | 6 37 | 18 26 | 6 38 | 18 27 | 6 36 | 18 25 | 6 37 | 18 25 | 6 41 | 18 29 | 6 36 | 18 24 | 6 35 | 18 23 |
| 17 | 6 36 | 18 30 | 6 35 | 18 29 | 6 36 | 18 30 | 6 34 | 18 28 | 6 34 | 18 28 | 6 35 | 18 29 | 6 33 | 18 27 | 6 33 | 18 27 | 6 37 | 18 31 | 6 32 | 18 26 | 6 31 | 18 25 |
| 20 | 6 32 | 18 33 | 6 32 | 18 31 | 6 33 | 18 32 | 6 31 | 18 31 | 6 30 | 18 30 | 6 31 | 18 31 | 6 29 | 18 29 | 6 29 | 18 29 | 6 33 | 18 33 | 6 28 | 18 28 | 6 27 | 18 27 |

| नगर | काँगड़ा | | हमीरपुर | | ऊना | | बिलासपुर | | मण्डी | | सरकाघाट | | शिमला | | सोलन | | चम्बा | | नाहन | | रामपुर बुशैहर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तारीख | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त |
| मार्च | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 23 | 6 29 | 18 35 | 6 28 | 18 34 | 6 29 | 18 34 | 6 27 | 18 32 | 6 26 | 18 32 | 6 27 | 18 33 | 6 25 | 18 31 | 6 26 | 18 31 | 6 29 | 18 35 | 6 25 | 18 30 | 6 23 | 18 29 |
| 26 | 6 25 | 18 37 | 6 24 | 18 36 | 6 25 | 18 36 | 6 23 | 18 34 | 6 22 | 18 34 | 6 23 | 18 35 | 6 21 | 18 33 | 6 22 | 18 33 | 6 25 | 18 37 | 6 21 | 18 32 | 6 20 | 18 31 |
| 29 | 6 21 | 18 39 | 6 20 | 18 38 | 6 21 | 18 38 | 6 19 | 18 36 | 6 18 | 18 36 | 6 19 | 18 37 | 6 18 | 18 35 | 6 18 | 18 35 | 6 21 | 18 39 | 6 17 | 18 34 | 6 16 | 18 33 |
| 2 अप्रै. | 6 16 | 18 41 | 6 15 | 18 40 | 6 16 | 18 41 | 6 14 | 18 39 | 6 13 | 18 39 | 6 14 | 18 39 | 6 13 | 18 37 | 6 14 | 18 37 | 6 16 | 18 42 | 6 13 | 18 36 | 6 11 | 18 36 |
| 5 | 6 13 | 18 44 | 6 12 | 18 42 | 6 12 | 18 43 | 6 11 | 18 41 | 6 10 | 18 41 | 6 10 | 18 41 | 6 09 | 18 39 | 6 09 | 18 39 | 6 12 | 18 44 | 6 09 | 18 38 | 6 07 | 18 38 |
| 8 | 6 08 | 18 46 | 6 08 | 18 44 | 6 09 | 18 45 | 6 07 | 18 43 | 6 06 | 18 43 | 6 07 | 18 43 | 6 05 | 18 41 | 6 06 | 18 41 | 6 09 | 18 47 | 6 05 | 18 40 | 6 03 | 18 40 |
| 11 | 6 05 | 18 48 | 6 04 | 18 46 | 6 05 | 18 47 | 6 03 | 18 45 | 6 02 | 18 45 | 6 03 | 18 45 | 6 02 | 18 43 | 6 02 | 18 43 | 6 05 | 18 49 | 6 02 | 18 42 | 6 00 | 18 42 |
| 14 | 6 01 | 18 50 | 6 01 | 18 48 | 6 02 | 18 49 | 6 00 | 18 47 | 5 59 | 18 47 | 6 00 | 18 47 | 5 58 | 18 45 | 5 59 | 18 45 | 6 01 | 18 51 | 5 58 | 18 44 | 5 56 | 18 44 |
| 17 | 5 58 | 18 52 | 5 57 | 18 50 | 5 58 | 18 51 | 5 56 | 18 49 | 5 55 | 18 49 | 5 56 | 18 49 | 5 55 | 18 47 | 5 56 | 18 47 | 5 58 | 18 53 | 5 55 | 18 46 | 5 53 | 18 46 |
| 20 | 5 54 | 18 54 | 5 54 | 18 52 | 5 55 | 18 53 | 5 53 | 18 51 | 5 52 | 18 51 | 5 53 | 18 52 | 5 52 | 18 49 | 5 52 | 18 49 | 5 54 | 18 55 | 5 52 | 18 48 | 5 49 | 18 48 |
| 23 | 5 51 | 18 56 | 5 51 | 18 54 | 5 52 | 18 55 | 5 50 | 18 53 | 5 49 | 18 53 | 5 50 | 18 54 | 5 49 | 18 51 | 5 49 | 18 51 | 5 51 | 18 57 | 5 49 | 18 50 | 5 46 | 18 50 |
| 26 | 5 48 | 18 58 | 5 47 | 18 57 | 5 49 | 18 57 | 5 47 | 18 55 | 5 46 | 18 55 | 5 46 | 18 56 | 5 45 | 18 53 | 5 46 | 18 53 | 5 48 | 18 59 | 5 46 | 18 52 | 5 43 | 18 52 |
| 29 | 5 45 | 19 00 | 5 45 | 18 59 | 5 46 | 18 59 | 5 44 | 18 57 | 5 43 | 18 57 | 5 43 | 18 58 | 5 43 | 18 55 | 5 43 | 18 55 | 5 45 | 19 02 | 5 43 | 18 54 | 5 40 | 18 54 |
| 2 मई | 5 42 | 19 02 | 5 41 | 19 01 | 5 43 | 19 01 | 5 41 | 18 59 | 5 40 | 18 59 | 5 41 | 19 00 | 5 40 | 18 57 | 5 40 | 18 57 | 5 42 | 19 04 | 5 40 | 18 56 | 5 37 | 18 56 |
| 4 | 5 40 | 19 04 | 5 40 | 19 02 | 5 41 | 19 03 | 5 38 | 19 01 | 5 38 | 19 00 | 5 39 | 19 01 | 5 38 | 18 59 | 5 39 | 18 58 | 5 40 | 19 05 | 5 38 | 18 57 | 5 36 | 18 57 |
| 7 | 5 37 | 19 06 | 5 37 | 19 04 | 5 38 | 19 05 | 5 36 | 19 03 | 5 35 | 19 03 | 5 36 | 19 03 | 5 35 | 19 01 | 5 36 | 19 01 | 5 37 | 19 07 | 5 36 | 18 59 | 5 33 | 18 59 |
| 10 | 5 35 | 19 08 | 5 35 | 19 06 | 5 36 | 19 07 | 5 34 | 19 05 | 5 33 | 19 05 | 5 34 | 19 05 | 5 33 | 19 03 | 5 34 | 19 03 | 5 35 | 19 10 | 5 34 | 19 01 | 5 31 | 19 01 |
| 13 | 5 33 | 19 10 | 5 33 | 19 08 | 5 34 | 19 09 | 5 32 | 19 07 | 5 31 | 19 07 | 5 32 | 19 08 | 5 31 | 19 05 | 5 32 | 19 05 | 5 32 | 19 12 | 5 32 | 19 03 | 5 29 | 19 03 |
| 16 | 5 31 | 19 12 | 5 31 | 19 10 | 5 32 | 19 11 | 5 30 | 19 09 | 5 29 | 19 09 | 5 30 | 19 10 | 5 29 | 19 07 | 5 30 | 19 07 | 5 30 | 19 14 | 5 30 | 19 05 | 5 27 | 19 06 |
| 19 | 5 29 | 19 14 | 5 29 | 19 12 | 5 30 | 19 13 | 5 28 | 19 11 | 5 27 | 19 11 | 5 28 | 19 12 | 5 27 | 19 09 | 5 28 | 19 09 | 5 28 | 19 16 | 5 28 | 19 07 | 5 25 | 19 08 |
| 22 | 5 27 | 19 16 | 5 27 | 19 14 | 5 29 | 19 15 | 5 27 | 19 13 | 5 25 | 19 13 | 5 26 | 19 14 | 5 26 | 19 11 | 5 26 | 19 10 | 5 27 | 19 18 | 5 26 | 19 09 | 5 23 | 19 09 |
| 25 | 5 26 | 19 18 | 5 26 | 19 16 | 5 27 | 19 17 | 5 26 | 19 15 | 5 24 | 19 15 | 5 25 | 19 16 | 5 24 | 19 12 | 5 25 | 19 12 | 5 25 | 19 20 | 5 25 | 19 11 | 5 22 | 19 11 |
| 28 | 5 25 | 19 20 | 5 25 | 19 18 | 5 26 | 19 19 | 5 24 | 19 16 | 5 23 | 19 17 | 5 24 | 19 17 | 5 23 | 19 14 | 5 24 | 19 14 | 5 24 | 19 22 | 5 24 | 19 12 | 5 21 | 19 13 |
| 31 | 5 24 | 19 22 | 5 24 | 19 20 | 5 25 | 19 20 | 5 23 | 19 18 | 5 22 | 19 18 | 5 23 | 19 19 | 5 22 | 19 16 | 5 23 | 19 16 | 5 23 | 19 24 | 5 23 | 19 14 | 5 20 | 19 15 |
| 3 जून | 5 23 | 19 24 | 5 23 | 19 22 | 5 24 | 19 22 | 5 23 | 19 20 | 5 21 | 19 20 | 5 22 | 19 21 | 5 22 | 19 18 | 5 22 | 19 17 | 5 22 | 19 25 | 5 22 | 19 16 | 5 19 | 19 17 |
| 6 | 5 22 | 19 25 | 5 22 | 19 23 | 5 24 | 19 24 | 5 22 | 19 23 | 5 21 | 19 21 | 5 22 | 19 22 | 5 21 | 19 19 | 5 22 | 19 19 | 5 22 | 19 27 | 5 22 | 19 17 | 5 19 | 19 18 |
| 9 | 5 22 | 19 27 | 5 22 | 19 24 | 5 24 | 19 25 | 5 22 | 19 22 | 5 20 | 19 23 | 5 21 | 19 24 | 5 21 | 19 20 | 5 22 | 19 20 | 5 22 | 19 28 | 5 22 | 19 19 | 5 18 | 19 19 |
| 12 | 5 22 | 19 28 | 5 22 | 19 26 | 5 24 | 19 26 | 5 22 | 19 24 | 5 20 | 19 24 | 5 21 | 19 25 | 5 21 | 19 22 | 5 22 | 19 21 | 5 21 | 19 30 | 5 22 | 19 20 | 5 18 | 19 21 |
| 15 | 5 22 | 19 29 | 5 22 | 19 27 | 5 24 | 19 27 | 5 22 | 19 25 | 5 21 | 19 25 | 5 21 | 19 26 | 5 21 | 19 23 | 5 22 | 19 22 | 5 22 | 19 31 | 5 22 | 19 21 | 5 18 | 19 22 |
| 18 | 5 23 | 19 30 | 5 23 | 19 28 | 5 24 | 19 28 | 5 23 | 19 26 | 5 21 | 19 26 | 5 22 | 19 27 | 5 22 | 19 24 | 5 22 | 19 23 | 5 22 | 19 32 | 5 22 | 19 22 | 5 19 | 19 23 |
| 21 | 5 23 | 19 30 | 5 23 | 19 28 | 5 25 | 19 29 | 5 23 | 19 27 | 5 21 | 19 27 | 5 22 | 19 28 | 5 22 | 19 24 | 5 23 | 19 24 | 5 24 | 19 32 | 5 23 | 19 22 | 5 19 | 19 23 |
| 24 | 5 24 | 19 31 | 5 24 | 19 29 | 5 25 | 19 29 | 5 24 | 19 27 | 5 22 | 19 27 | 5 23 | 19 28 | 5 23 | 19 25 | 5 24 | 19 25 | 5 25 | 19 33 | 5 24 | 19 23 | 5 20 | 19 24 |
| 27 | 5 25 | 19 31 | 5 25 | 19 29 | 5 26 | 19 30 | 5 25 | 19 27 | 5 23 | 19 28 | 5 24 | 19 28 | 5 24 | 19 25 | 5 24 | 19 25 | 5 25 | 19 33 | 5 25 | 19 23 | 5 21 | 19 24 |
| 30 | 5 26 | 19 31 | 5 26 | 19 29 | 5 27 | 19 30 | 5 26 | 19 27 | 5 24 | 19 28 | 5 25 | 19 28 | 5 25 | 19 25 | 5 26 | 19 25 | 5 25 | 19 33 | 5 26 | 19 23 | 5 22 | 19 24 |
| 3 जुला | 5 27 | 19 31 | 5 27 | 19 29 | 5 29 | 19 30 | 5 27 | 19 27 | 5 25 | 19 27 | 5 26 | 19 28 | 5 26 | 19 25 | 5 27 | 19 25 | 5 25 | 19 33 | 5 27 | 19 23 | 5 23 | 19 24 |
| 6 | 5 29 | 19 31 | 5 29 | 19 29 | 5 30 | 19 29 | 5 28 | 19 27 | 5 27 | 19 27 | 5 28 | 19 28 | 5 27 | 19 25 | 5 28 | 19 25 | 5 25 | 19 32 | 5 28 | 19 23 | 5 25 | 19 24 |
| 9 | 5 30 | 19 30 | 5 30 | 19 28 | 5 32 | 19 29 | 5 30 | 19 26 | 5 28 | 19 27 | 5 29 | 19 27 | 5 29 | 19 24 | 5 30 | 19 24 | 5 24 | 19 32 | 5 30 | 19 22 | 5 26 | 19 23 |
| 12 | 5 32 | 19 29 | 5 32 | 19 27 | 5 33 | 19 28 | 5 31 | 19 26 | 5 30 | 19 26 | 5 31 | 19 26 | 5 30 | 19 23 | 5 31 | 19 23 | 5 23 | 19 31 | 5 31 | 19 22 | 5 28 | 19 22 |

| नगर | काँगड़ा | | हमीरपुर | | ऊना | | बिलासपुर | | मण्डी | | सरकाघाट | | शिमला | | सोलन | | चम्बा | | नाहन | | रामपुर बुशैहर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तारीख | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त |
| जुलाई | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 15 | 5 33 | 19 28 | 5 33 | 19 26 | 5 35 | 19 27 | 5 33 | 19 25 | 5 32 | 19 25 | 5 32 | 19 25 | 5 32 | 19 22 | 5 33 | 19 22 | 5 33 | 19 30 | 5 33 | 19 21 | 5 29 | 19 21 |
| 18 | 5 35 | 19 27 | 5 35 | 19 25 | 5 36 | 19 25 | 5 35 | 19 23 | 5 33 | 19 23 | 5 34 | 19 24 | 5 34 | 19 21 | 5 34 | 19 21 | 5 35 | 19 29 | 5 34 | 19 19 | 5 31 | 19 20 |
| 21 | 5 37 | 19 25 | 5 37 | 19 23 | 5 38 | 19 24 | 5 37 | 19 22 | 5 35 | 19 22 | 5 36 | 19 23 | 5 36 | 19 20 | 5 36 | 19 19 | 5 37 | 19 27 | 5 36 | 19 18 | 5 33 | 19 19 |
| 24 | 5 39 | 19 24 | 5 39 | 19 22 | 5 40 | 19 22 | 5 39 | 19 20 | 5 37 | 19 20 | 5 38 | 19 21 | 5 37 | 19 18 | 5 38 | 19 18 | 5 39 | 19 25 | 5 38 | 19 16 | 5 35 | 19 17 |
| 27 | 5 41 | 19 22 | 5 41 | 19 20 | 5 42 | 19 20 | 5 40 | 19 18 | 5 38 | 19 18 | 5 40 | 19 19 | 5 39 | 19 16 | 5 40 | 19 16 | 5 41 | 19 23 | 5 40 | 19 14 | 5 37 | 19 15 |
| 30 | 5 43 | 19 19 | 5 43 | 19 18 | 5 44 | 19 18 | 5 42 | 19 16 | 5 41 | 19 16 | 5 42 | 19 17 | 5 41 | 19 14 | 5 42 | 19 14 | 5 43 | 19 21 | 5 42 | 19 12 | 5 39 | 19 13 |
| 2 अग. | 5 45 | 19 17 | 5 45 | 19 15 | 5 46 | 19 16 | 5 44 | 19 14 | 5 43 | 19 14 | 5 44 | 19 15 | 5 43 | 19 12 | 5 44 | 19 12 | 5 45 | 19 19 | 5 43 | 19 10 | 5 41 | 19 10 |
| 5 | 5 47 | 19 15 | 5 47 | 19 13 | 5 48 | 19 13 | 5 46 | 19 11 | 5 44 | 19 11 | 5 46 | 19 12 | 5 45 | 19 09 | 5 46 | 19 09 | 5 47 | 19 16 | 5 45 | 19 08 | 5 42 | 19 08 |
| 8 | 5 49 | 19 12 | 5 48 | 19 10 | 5 50 | 19 11 | 5 48 | 19 09 | 5 47 | 19 18 | 5 48 | 19 09 | 5 47 | 19 07 | 5 47 | 19 07 | 5 49 | 19 13 | 5 47 | 19 05 | 5 44 | 19 05 |
| 11 | 5 51 | 19 09 | 5 50 | 19 07 | 5 52 | 19 08 | 5 50 | 19 06 | 5 49 | 19 06 | 5 50 | 19 06 | 5 49 | 19 04 | 5 49 | 19 04 | 5 51 | 19 10 | 5 49 | 19 02 | 5 46 | 19 02 |
| 14 | 5 53 | 19 06 | 5 52 | 19 04 | 5 54 | 19 05 | 5 52 | 19 03 | 5 51 | 19 03 | 5 51 | 19 03 | 5 51 | 19 01 | 5 51 | 19 01 | 5 53 | 19 07 | 5 51 | 19 00 | 5 48 | 18 59 |
| 17 | 5 55 | 19 03 | 5 54 | 19 01 | 5 55 | 19 02 | 5 54 | 19 00 | 5 53 | 18 59 | 5 53 | 19 00 | 5 53 | 18 58 | 5 53 | 18 58 | 5 55 | 19 04 | 5 53 | 18 56 | 5 50 | 18 56 |
| 20 | 5 57 | 18 59 | 5 56 | 18 58 | 5 57 | 19 00 | 5 56 | 18 56 | 5 54 | 18 56 | 5 55 | 18 57 | 5 54 | 18 54 | 5 55 | 18 55 | 5 57 | 19 01 | 5 54 | 18 53 | 5 52 | 18 53 |
| 23 | 5 59 | 18 56 | 5 58 | 18 54 | 5 59 | 18 55 | 5 57 | 18 53 | 5 56 | 18 53 | 5 57 | 18 54 | 5 56 | 18 51 | 5 57 | 18 51 | 5 59 | 18 57 | 5 56 | 18 50 | 5 54 | 18 50 |
| 26 | 6 01 | 18 52 | 6 00 | 18 51 | 6 01 | 18 52 | 5 59 | 18 50 | 5 58 | 18 49 | 5 59 | 18 50 | 5 58 | 18 48 | 5 58 | 18 48 | 6 01 | 18 53 | 5 58 | 18 47 | 5 56 | 18 46 |
| 29 | 6 02 | 18 49 | 6 02 | 18 47 | 6 03 | 18 48 | 6 01 | 18 46 | 6 00 | 18 46 | 6 01 | 18 46 | 6 00 | 18 44 | 6 00 | 18 44 | 6 03 | 18 50 | 6 00 | 18 43 | 5 58 | 18 43 |
| 1 सितं. | 6 04 | 18 45 | 6 03 | 18 44 | 6 05 | 18 44 | 6 03 | 18 42 | 6 02 | 18 42 | 6 03 | 18 43 | 6 02 | 18 40 | 6 02 | 18 41 | 6 04 | 18 46 | 6 01 | 18 40 | 5 59 | 18 39 |
| 4 | 6 06 | 18 41 | 6 05 | 18 40 | 6 06 | 18 41 | 6 05 | 18 39 | 6 04 | 18 38 | 6 05 | 18 39 | 6 03 | 18 37 | 6 04 | 18 37 | 6 06 | 18 42 | 6 03 | 18 36 | 6 01 | 18 35 |
| 7 | 6 08 | 18 37 | 6 07 | 18 36 | 6 08 | 18 37 | 6 06 | 18 35 | 6 06 | 18 34 | 6 06 | 18 35 | 6 05 | 18 33 | 6 05 | 18 33 | 6 08 | 18 38 | 6 05 | 18 32 | 6 03 | 18 31 |
| 10 | 6 10 | 18 33 | 6 09 | 18 32 | 6 10 | 18 33 | 6 08 | 18 31 | 6 07 | 18 30 | 6 08 | 18 31 | 6 07 | 18 29 | 6 07 | 18 29 | 6 10 | 18 34 | 6 06 | 18 28 | 6 05 | 18 28 |
| 13 | 6 12 | 18 29 | 6 11 | 18 28 | 6 12 | 18 29 | 6 10 | 18 27 | 6 09 | 18 27 | 6 10 | 18 27 | 6 08 | 18 25 | 6 09 | 18 26 | 6 12 | 18 30 | 6 08 | 18 25 | 6 06 | 18 24 |
| 16 | 6 14 | 18 25 | 6 13 | 18 26 | 6 14 | 18 25 | 6 12 | 18 23 | 6 11 | 18 23 | 6 12 | 18 23 | 6 10 | 18 22 | 6 10 | 18 22 | 6 14 | 18 26 | 6 10 | 18 21 | 6 08 | 18 20 |
| 19 | 6 15 | 18 21 | 6 14 | 18 20 | 6 15 | 18 21 | 6 14 | 18 19 | 6 13 | 18 19 | 6 14 | 18 20 | 6 12 | 18 18 | 6 12 | 18 18 | 6 16 | 18 22 | 6 11 | 18 17 | 6 10 | 18 16 |
| 22 | 6 17 | 18 17 | 6 16 | 18 16 | 6 17 | 18 17 | 6 15 | 18 15 | 6 15 | 18 15 | 6 15 | 18 16 | 6 14 | 18 14 | 6 14 | 18 14 | 6 18 | 18 18 | 6 13 | 18 13 | 6 12 | 18 12 |
| 25 | 6 19 | 18 13 | 6 18 | 18 12 | 6 19 | 18 13 | 6 17 | 18 12 | 6 16 | 18 11 | 6 17 | 18 12 | 6 15 | 18 10 | 6 16 | 18 10 | 6 20 | 18 14 | 6 15 | 18 09 | 6 14 | 18 08 |
| 28 | 6 21 | 18 09 | 6 20 | 18 09 | 6 21 | 18 10 | 6 19 | 18 08 | 6 18 | 18 07 | 6 19 | 18 08 | 6 17 | 18 06 | 6 17 | 18 06 | 6 22 | 18 10 | 6 17 | 18 06 | 6 15 | 18 04 |
| 1 अक्तू | 6 23 | 18 06 | 6 22 | 18 05 | 6 23 | 18 06 | 6 21 | 18 04 | 6 20 | 18 03 | 6 21 | 18 04 | 6 19 | 18 02 | 6 19 | 18 03 | 6 24 | 18 06 | 6 18 | 18 02 | 6 17 | 18 00 |
| 4 | 6 25 | 18 02 | 6 24 | 18 01 | 6 25 | 18 02 | 6 23 | 18 00 | 6 22 | 17 59 | 6 23 | 18 00 | 6 21 | 17 59 | 6 21 | 18 00 | 6 26 | 18 02 | 6 20 | 17 58 | 6 19 | 17 57 |
| 7 | 6 27 | 17 58 | 6 26 | 17 57 | 6 27 | 17 58 | 6 25 | 17 56 | 6 24 | 17 55 | 6 25 | 17 56 | 6 23 | 17 55 | 6 23 | 17 55 | 6 28 | 17 58 | 6 22 | 17 55 | 6 21 | 17 53 |
| 10 | 6 29 | 17 54 | 6 28 | 17 54 | 6 29 | 17 55 | 6 27 | 17 53 | 6 26 | 17 52 | 6 27 | 17 53 | 6 25 | 17 51 | 6 25 | 17 52 | 6 30 | 17 55 | 6 24 | 17 51 | 6 23 | 17 49 |
| 13 | 6 31 | 17 51 | 6 30 | 17 50 | 6 31 | 17 51 | 6 29 | 17 50 | 6 28 | 17 48 | 6 29 | 17 49 | 6 27 | 17 48 | 6 27 | 17 48 | 6 32 | 17 51 | 6 26 | 17 48 | 6 25 | 17 46 |
| 16 | 6 33 | 17 47 | 6 32 | 17 46 | 6 33 | 17 48 | 6 31 | 17 45 | 6 30 | 17 45 | 6 31 | 17 46 | 6 29 | 17 44 | 6 29 | 17 45 | 6 34 | 17 47 | 6 28 | 17 44 | 6 27 | 17 42 |
| 19 | 6 35 | 17 44 | 6 34 | 17 43 | 6 35 | 17 44 | 6 33 | 17 42 | 6 32 | 17 41 | 6 33 | 17 42 | 6 31 | 17 41 | 6 31 | 17 42 | 6 36 | 17 46 | 6 30 | 17 41 | 6 29 | 17 39 |
| 22 | 6 38 | 17 40 | 6 36 | 17 40 | 6 37 | 17 41 | 6 35 | 17 39 | 6 35 | 17 38 | 6 35 | 17 39 | 6 33 | 17 38 | 6 33 | 17 38 | 6 39 | 17 41 | 6 32 | 17 38 | 6 32 | 17 36 |
| 25 | 6 40 | 17 37 | 6 39 | 17 37 | 6 39 | 17 38 | 6 37 | 17 36 | 6 37 | 17 35 | 6 38 | 17 36 | 6 35 | 17 35 | 6 35 | 17 35 | 6 41 | 17 37 | 6 34 | 17 35 | 6 34 | 17 33 |
| 28 | 6 42 | 17 34 | 6 41 | 17 34 | 6 42 | 17 35 | 6 40 | 17 33 | 6 39 | 17 32 | 6 40 | 17 33 | 6 38 | 17 32 | 6 38 | 17 33 | 6 44 | 17 34 | 6 36 | 17 32 | 6 36 | 17 30 |
| 31 | 6 45 | 17 32 | 6 43 | 17 31 | 6 44 | 17 32 | 6 42 | 17 31 | 6 42 | 17 30 | 6 42 | 17 30 | 6 40 | 17 29 | 6 40 | 17 30 | 6 46 | 17 32 | 6 39 | 17 30 | 6 39 | 17 27 |
| 3 नवं. | 6 47 | 17 29 | 6 46 | 17 29 | 6 46 | 17 30 | 6 44 | 17 28 | 6 44 | 17 27 | 6 45 | 17 28 | 6 42 | 17 27 | 6 42 | 17 27 | 6 49 | 17 29 | 6 41 | 17 27 | 6 41 | 17 25 |

| नगर | काँगड़ा | | हमीरपुर | | ऊना | | बिलासपुर | | मण्डी | | सरकाघाट | | शिमला | | सोलन | | चम्बा | | नाहन | | रामपुर बुशैहर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तारीख | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त |
| नवंबर | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 6 | 6 50 | 17 27 | 6 48 | 17 26 | 6 49 | 17 28 | 6 47 | 17 26 | 6 47 | 17 25 | 6 47 | 17 25 | 6 45 | 17 25 | 6 45 | 17 25 | 6 51 | 17 27 | 6 43 | 17 25 | 6 43 | 17 22 |
| 9 | 6 53 | 17 24 | 6 51 | 17 24 | 6 51 | 17 25 | 6 49 | 17 24 | 6 49 | 17 23 | 6 50 | 17 23 | 6 47 | 17 23 | 6 47 | 17 23 | 6 54 | 17 24 | 6 46 | 17 23 | 6 46 | 17 20 |
| 12 | 6 55 | 17 23 | 6 53 | 17 22 | 6 54 | 17 24 | 6 52 | 17 22 | 6 52 | 17 21 | 6 53 | 17 21 | 6 50 | 17 21 | 6 50 | 17 21 | 6 57 | 17 22 | 6 48 | 17 21 | 6 49 | 17 18 |
| 15 | 6 58 | 17 21 | 6 56 | 17 21 | 6 57 | 17 22 | 6 54 | 17 20 | 6 54 | 17 19 | 6 55 | 17 20 | 6 52 | 17 19 | 6 52 | 17 20 | 6 59 | 17 21 | 6 51 | 17 20 | 6 51 | 17 17 |
| 18 | 7 01 | 17 19 | 6 59 | 17 19 | 6 59 | 17 21 | 6 57 | 17 19 | 6 57 | 17 17 | 6 58 | 17 18 | 6 55 | 17 18 | 6 55 | 17 18 | 7 02 | 17 19 | 6 53 | 17 18 | 6 54 | 17 15 |
| 21 | 7 03 | 17 18 | 7 01 | 17 18 | 7 02 | 17 19 | 7 00 | 17 18 | 7 00 | 17 16 | 7 01 | 17 17 | 6 58 | 17 17 | 6 57 | 17 17 | 7 05 | 17 18 | 6 56 | 17 17 | 6 56 | 17 14 |
| 24 | 7 06 | 17 17 | 7 04 | 17 17 | 7 05 | 17 18 | 7 02 | 17 17 | 7 02 | 17 15 | 7 03 | 17 16 | 7 00 | 17 16 | 7 00 | 17 16 | 7 07 | 17 17 | 6 59 | 17 16 | 6 59 | 17 13 |
| 27 | 7 08 | 17 17 | 7 07 | 17 16 | 7 09 | 17 18 | 7 05 | 17 16 | 7 05 | 17 15 | 7 06 | 17 16 | 7 03 | 17 15 | 7 03 | 17 16 | 7 10 | 17 16 | 7 01 | 17 16 | 7 02 | 17 12 |
| 30 | 7 11 | 17 16 | 7 09 | 17 16 | 7 10 | 17 17 | 7 07 | 17 16 | 7 07 | 17 14 | 7 08 | 17 15 | 7 05 | 17 15 | 7 05 | 17 15 | 7 13 | 17 16 | 7 04 | 17 15 | 7 04 | 17 12 |
| 3 दिसं | 7 14 | 17 16 | 7 11 | 17 16 | 7 12 | 17 17 | 7 10 | 17 16 | 7 10 | 17 14 | 7 11 | 17 15 | 7 08 | 17 15 | 7 07 | 17 15 | 7 15 | 17 16 | 7 06 | 17 15 | 7 07 | 17 12 |
| 6 | 7 16 | 17 16 | 7 14 | 17 16 | 7 14 | 17 17 | 7 12 | 17 16 | 7 12 | 17 14 | 7 13 | 17 15 | 7 10 | 17 15 | 7 10 | 17 15 | 7 18 | 17 16 | 7 08 | 17 15 | 7 09 | 17 12 |
| 9 | 7 18 | 17 16 | 7 16 | 17 16 | 7 17 | 17 18 | 7 14 | 17 16 | 7 15 | 17 15 | 7 15 | 17 16 | 7 12 | 17 15 | 7 12 | 17 16 | 7 20 | 17 16 | 7 10 | 17 16 | 7 11 | 17 13 |
| 12 | 7 20 | 17 17 | 7 18 | 17 17 | 7 19 | 17 19 | 7 17 | 17 17 | 7 17 | 17 15 | 7 17 | 17 16 | 7 14 | 17 16 | 7 14 | 17 17 | 7 22 | 17 17 | 7 13 | 17 17 | 7 13 | 17 13 |
| 15 | 7 22 | 17 18 | 7 20 | 17 18 | 7 21 | 17 19 | 7 18 | 17 18 | 7 19 | 17 16 | 7 19 | 17 17 | 7 16 | 17 17 | 7 16 | 17 18 | 7 24 | 17 17 | 7 14 | 17 18 | 7 15 | 17 14 |
| 18 | 7 24 | 17 19 | 7 22 | 17 19 | 7 23 | 17 21 | 7 20 | 17 19 | 7 20 | 17 17 | 7 21 | 17 18 | 7 18 | 17 18 | 7 18 | 17 19 | 7 26 | 17 19 | 7 16 | 17 19 | 7 17 | 17 15 |
| 21 | 7 26 | 17 21 | 7 24 | 17 21 | 7 24 | 17 22 | 7 22 | 17 20 | 7 22 | 17 19 | 7 23 | 17 20 | 7 20 | 17 19 | 7 19 | 17 20 | 7 27 | 17 20 | 7 18 | 17 20 | 7 19 | 17 17 |
| 24 | 7 27 | 17 22 | 7 25 | 17 22 | 7 26 | 17 24 | 7 23 | 17 22 | 7 23 | 17 20 | 7 24 | 17 21 | 7 21 | 17 21 | 7 21 | 17 22 | 7 29 | 17 22 | 7 19 | 17 22 | 7 20 | 17 18 |
| 27 | 7 28 | 17 24 | 7 26 | 17 24 | 7 27 | 17 25 | 7 24 | 17 24 | 7 25 | 17 22 | 7 25 | 17 23 | 7 22 | 17 23 | 7 22 | 17 23 | 7 30 | 17 23 | 7 20 | 17 23 | 7 21 | 17 20 |
| 30 | 7 29 | 17 26 | 7 27 | 17 26 | 7 28 | 17 27 | 7 25 | 17 25 | 7 26 | 17 24 | 7 26 | 17 25 | 7 23 | 17 25 | 7 23 | 17 26 | 7 31 | 17 26 | 7 21 | 17 25 | 7 22 | 17 22 |

## हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

### काँगड़ा

| नगर | संस्कार |
|---|---|
| | मिं. सैं. |
| धर्मशाला | + ० २० |
| नूरपुर | + १ २८ |
| नगरोटा | + ० ०४ |
| खजियार | + १ १२ |
| ज्वालामुखी | + ० १२ |
| सरकाघाट | + ० ०४ |
| पालमपुर | – ० ४० |
| भुन्तर | – ३ ०४ |
| बैजनाथ | – ० ५२ |

### हमीरपुर

| नगर | संस्कार |
|---|---|
| | मिं. सैं. |
| नादौन | + ० ३२ |
| सुजानपुरटिहरी | + ० ०४ |

### ऊना

| | |
|---|---|
| गगरेट | + १ ०० |
| अम्ब | + ० ४८ |
| दौलतपुर | + १ २० |
| चिन्तपूर्णी | + ० ५६ |

### बिलासपुर

| नगर | संस्कार |
|---|---|
| | मिं. सैं. |
| घुमारवीं | + ० ३६ |
| भाखड़ा | + १ २० |
| नैना देवी | + १ १६ |

### मण्डी

| | |
|---|---|
| जोगिन्द्रनगर | + ० ५२ |
| सुन्दरनगर | + ० २० |
| करसोग | – १ ०४ |
| किन्नौर | – ५ २८ |
| कुल्लू | – ० ३२ |

### मण्डी

| नगर | संस्कार |
|---|---|
| | मिं. सैं. |
| मनाली | – १ २४ |
| बंजार | – १ २८ |
| अनी | – ० ५६ |
| निरमण्ड | – २ २४ |

### शिमला

| | |
|---|---|
| तारादेवी | + ० १२ |
| नारकण्डा | – १ ०० |
| कुमारसेन | – १ ३६ |

### शिमला

| नगर | संस्कार |
|---|---|
| | मिं. सैं. |
| कोटखाई | – १ ३२ |
| रोहड़ू | – २ ०४ |

### सोलन

| | |
|---|---|
| सपाटू | + ० ३२ |
| परवाणू | + ० १६ |
| कसौली | + ० २८ |
| अर्की | + ० ४० |
| नालागढ़ | + ३ ०८ |

### चम्बा

| नगर | संस्कार |
|---|---|
| | मिं. सैं. |
| बनीखेत | + ० ४८ |
| डलहौज़ी | – ० ४० |
| लाहौल स्पीति | – ३ २४ |
| त्रिलोकनाथ | –३ ३४ |

### नाहन

| | |
|---|---|
| पौंटा साहिब | + १ ०८ |
| राजगढ़ | – ० १२ |

# दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

| अप्रैल | वैशाख प्रवि. | वैशाख (अप्रैल-मई) | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
| | | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 13 | १ | ७ ३५ | ९ २९ | ११ ४३ | १४ ०६ | १६ २५ | १८ ४३ | २१ ०५ | २३ २५ | १ ३० | ३ १० | ४ ३५ | ५ ५८ |
| 14 | २ | ७ ३१ | ९ २५ | ११ ३९ | १४ ०२ | १६ २१ | १८ ३९ | २१ ०१ | २३ २१ | १ २६ | ३ ०७ | ४ ३२ | ५ ५४ |
| 15 | ३ | ७ २७ | ९ २१ | ११ ३६ | १३ ५८ | १६ १७ | १८ ३५ | २० ५७ | २३ १७ | १ २२ | ३ ०३ | ४ २८ | ५ ५० |
| 16 | ४ | ७ २३ | ९ १७ | ११ ३२ | १३ ५४ | १६ १३ | १८ ३१ | २० ५३ | २३ १३ | १ १८ | २ ५९ | ४ २४ | ५ ४६ |
| 17 | ५ | ७ १९ | ९ १३ | ११ २८ | १३ ५१ | १६ १० | १८ २७ | २० ४९ | २३ ०९ | १ १४ | २ ५५ | ४ २० | ५ ४२ |
| 18 | ६ | ७ १५ | ९ १० | ११ २४ | १३ ४७ | १६ ०६ | १८ २४ | २० ४५ | २३ ०५ | १ १० | २ ५१ | ४ १६ | ५ ३८ |
| 19 | ७ | ७ ११ | ९ ०६ | ११ २० | १३ ४३ | १६ ०२ | १८ २० | २० ४१ | २३ ०१ | १ ०६ | २ ४७ | ४ १२ | ५ ३४ |
| 20 | ८ | ७ ०७ | ९ ०२ | ११ १६ | १३ ३९ | १५ ५८ | १८ १६ | २० ३७ | २२ ५७ | १ ०२ | २ ४३ | ४ ०८ | ५ ३० |
| 21 | ९ | ७ ०३ | ८ ५८ | ११ १२ | १३ ३५ | १५ ५४ | १८ १२ | २० ३३ | २२ ५४ | ० ५८ | २ ३९ | ४ ०४ | ५ २६ |
| 22 | १० | ६ ५९ | ८ ५४ | ११ ०९ | १३ ३१ | १५ ५० | १८ ०८ | २० २९ | २२ ५० | ० ५४ | २ ३५ | ४ ०० | ५ २२ |
| 23 | ११ | ६ ५५ | ८ ५० | ११ ०५ | १३ २७ | १५ ४६ | १८ ०४ | २० २६ | २२ ४६ | ० ५० | २ ३१ | ३ ५६ | ५ १८ |
| 24 | १२ | ६ ५१ | ८ ४६ | ११ ०१ | १३ २३ | १५ ४३ | १८ ०० | २० २२ | २२ ४२ | ० ४६ | २ २७ | ३ ५२ | ५ १५ |
| 25 | १३ | ६ ४७ | ८ ४२ | १० ५७ | १३ १९ | १५ ३९ | १७ ५६ | २० १८ | २२ ३८ | ० ४२ | २ २३ | ३ ४८ | ५ ११ |
| 26 | १४ | ६ ४३ | ८ ३८ | १० ५३ | १३ १५ | १५ ३५ | १७ ५२ | २० १४ | २२ ३४ | ० ३८ | २ २० | ३ ४४ | ५ ०७ |
| 27 | १५ | ६ ४० | ८ ३४ | १० ४९ | १३ ११ | १५ ३१ | १७ ४८ | २० १० | २२ ३० | ० ३४ | २ १६ | ३ ४० | ५ ०३ |
| 28 | १६ | ६ ३६ | ८ ३० | १० ४५ | १३ ०८ | १५ २८ | १७ ४४ | २० ०६ | २२ २६ | ० ३० | २ १२ | ३ ३६ | ४ ५९ |
| 29 | १७ | ६ ३२ | ८ २६ | १० ४१ | १३ ०४ | १५ २४ | १७ ४० | २० ०२ | २२ २२ | ० २६ | २ ०८ | ३ ३२ | ४ ५५ |
| 30 | १८ | ६ २८ | ८ २२ | १० ३७ | १३ ०० | १५ २० | १७ ३७ | १९ ५८ | २२ १८ | ० २२ | २ ०४ | ३ २८ | ४ ५१ |
| मई | १९ | ६ २४ | ८ १८ | १० ३३ | १२ ५६ | १५ १६ | १७ ३३ | १९ ५४ | २२ १४ | ० १८ | २ ०० | ३ २५ | ४ ४७ |
| 2 | २० | ६ २० | ८ १४ | १० २९ | १२ ५२ | १५ १२ | १७ २९ | १९ ५० | २२ १० | ० १४ | १ ५६ | ३ २१ | ४ ४४ |
| 3 | २१ | ६ १६ | ८ १० | १० २५ | १२ ४८ | १५ ०८ | १७ २५ | १९ ४६ | २२ ०६ | ० ११ | १ ५२ | ३ १७ | ४ ४० |
| 4 | २२ | ६ १२ | ८ ०६ | १० २१ | १२ ४४ | १५ ०४ | १७ २१ | १९ ४२ | २२ ०२ | ० ०७ | १ ४८ | ३ १३ | ४ ३६ |
| 5 | २३ | ६ ०८ | ८ ०२ | १० १७ | १२ ४० | १५ ०० | १७ १७ | १९ ३८ | २१ ५८ | ० ०३ | १ ४४ | ३ ०९ | ४ ३२ |
| 6 | २४ | ६ ०४ | ७ ५८ | १० १३ | १२ ३६ | १४ ५६ | १७ १३ | १९ ३४ | २१ ५४ | २३ ५९ | १ ४० | ३ ०५ | ४ २८ |
| 7 | २५ | ६ ०० | ७ ५४ | १० ०९ | १२ ३२ | १४ ५२ | १७ ०९ | १९ ३० | २१ ५० | २३ ५५ | १ ३६ | ३ ०१ | ४ २४ |
| 8 | २६ | ५ ५६ | ७ ५० | १० ०५ | १२ २८ | १४ ४८ | १७ ०५ | १९ २६ | २१ ४६ | २३ ५१ | १ ३२ | २ ५७ | ४ २० |
| 9 | २७ | ५ ५२ | ७ ४६ | १० ०१ | १२ २४ | १४ ४४ | १७ ०१ | १९ २२ | २१ ४२ | २३ ४७ | १ २८ | २ ५३ | ४ १६ |
| 10 | २८ | ५ ४८ | ७ ४२ | ९ ५७ | १२ २० | १४ ४० | १६ ५७ | १९ १८ | २१ ३८ | २३ ४३ | १ २४ | २ ४९ | ४ १२ |
| 11 | २९ | ५ ४४ | ७ ३९ | ९ ५३ | १२ १६ | १४ ३६ | १६ ५३ | १९ १४ | २१ ३४ | २३ ३९ | १ २० | २ ४५ | ४ ०८ |
| 12 | ३० | ५ ४० | ७ ३५ | ९ ४९ | १२ १२ | १४ ३२ | १६ ४९ | १९ १० | २१ ३० | २३ ३५ | १ १६ | २ ४१ | ४ ०४ |
| 13 | ३१ | ५ ३६ | ७ ३२ | ९ ४५ | १२ ०९ | १४ २८ | १६ ४५ | १९ ०६ | २१ २६ | २३ ३१ | १ १२ | २ ३७ | ४ ०० |
| 14 | ज्ये. | ५ ३३ | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – |

| मई | ज्येष्ठ प्रवि. | ज्येष्ठ (मई-जून) | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष |
| | | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 14 | १ | ७ २७ | ९ ४२ | १२ ०५ | १४ २४ | १६ ४२ | १९ ०३ | २१ २३ | २३ २७ | १ ०८ | २ ३३ | ३ ५६ | ५ २९ |
| 15 | २ | ७ २३ | ९ ३८ | १२ ०१ | १४ २० | १६ ३८ | १८ ५९ | २१ १९ | २३ २३ | १ ०४ | २ २९ | ३ ५२ | ५ २५ |
| 16 | ३ | ७ १९ | ९ ३४ | ११ ५७ | १४ १६ | १६ ३४ | १८ ५५ | २१ १५ | २३ १९ | १ ०० | २ २५ | ३ ४८ | ५ २१ |
| 17 | ४ | ७ १६ | ९ ३० | ११ ५३ | १४ १२ | १६ ३० | १८ ५१ | २१ ११ | २३ १५ | ० ५६ | २ २१ | ३ ४४ | ५ १७ |
| 18 | ५ | ७ १२ | ९ २६ | ११ ४९ | १४ ०८ | १६ २६ | १८ ४७ | २१ ०७ | २३ ११ | ० ५२ | २ १७ | ३ ४० | ५ १३ |
| 19 | ६ | ७ ०८ | ९ २२ | ११ ४५ | १४ ०४ | १६ २२ | १८ ४३ | २१ ०३ | २३ ०८ | ० ४९ | २ १३ | ३ ३६ | ५ ०९ |
| 20 | ७ | ७ ०४ | ९ १८ | ११ ४१ | १४ ०० | १६ १८ | १८ ३९ | २० ५९ | २३ ०४ | ० ४५ | २ १० | ३ ३२ | ५ ०५ |
| 21 | ८ | ७ ०० | ९ १४ | ११ ३७ | १३ ५६ | १६ १४ | १८ ३५ | २० ५५ | २३ ०० | ० ४१ | २ ०६ | ३ २८ | ५ ०१ |
| 22 | ९ | ६ ५६ | ९ १० | ११ ३३ | १३ ५२ | १६ १० | १८ ३१ | २० ५१ | २२ ५६ | ० ३७ | २ ०२ | ३ २४ | ४ ५७ |
| 23 | १० | ६ ५३ | ९ ०७ | ११ ३० | १३ ४९ | १६ ०७ | १८ २८ | २० ४८ | २२ ५३ | ० ३४ | १ ५८ | ३ २१ | ४ ५४ |
| 24 | ११ | ६ ४९ | ९ ०३ | ११ २६ | १३ ४५ | १६ ०३ | १८ २४ | २० ४४ | २२ ४९ | ० ३० | १ ५५ | ३ १७ | ४ ५० |
| 25 | १२ | ६ ४५ | ८ ५९ | ११ २२ | १३ ४१ | १५ ५९ | १८ २० | २० ४० | २२ ४५ | ० २६ | १ ५१ | ३ १३ | ४ ४६ |
| 26 | १३ | ६ ४१ | ८ ५५ | ११ १८ | १३ ३७ | १५ ५५ | १८ १६ | २० ३६ | २२ ४१ | ० २२ | १ ४७ | ३ ०९ | ४ ४२ |
| 27 | १४ | ६ ३७ | ८ ५१ | ११ १४ | १३ ३३ | १५ ५१ | १८ १२ | २० ३२ | २२ ३७ | ० १८ | १ ४३ | ३ ०५ | ४ ३८ |
| 28 | १५ | ६ ३३ | ८ ४७ | ११ १० | १३ २९ | १५ ४७ | १८ ०८ | २० २८ | २२ ३३ | ० १४ | १ ३९ | ३ ०१ | ४ ३४ |
| 29 | १६ | ६ २९ | ८ ४३ | ११ ०६ | १३ २५ | १५ ४३ | १८ ०४ | २० २४ | २२ २९ | ० १० | १ ३५ | २ ५७ | ४ ३० |
| 30 | १७ | ६ २५ | ८ ३९ | ११ ०२ | १३ २१ | १५ ३९ | १८ ०० | २० २० | २२ २५ | ० ०६ | १ ३१ | २ ५३ | ४ २६ |
| 31 | १८ | ६ २१ | ८ ३५ | १० ५८ | १३ १७ | १५ ३५ | १७ ५६ | २० १६ | २२ २१ | ० ०२ | १ २७ | २ ४९ | ४ २२ |
| जून | १९ | ६ १७ | ८ ३१ | १० ५४ | १३ १३ | १५ ३१ | १७ ५२ | २० १२ | २२ १७ | २३ ५८ | १ २३ | २ ४५ | ४ १८ |
| 2 | २० | ६ १३ | ८ २७ | १० ५० | १३ ०९ | १५ २७ | १७ ४८ | २० ०८ | २२ १३ | २३ ५४ | १ १९ | २ ४१ | ४ १४ |
| 3 | २१ | ६ ०९ | ८ २३ | १० ४६ | १३ ०५ | १५ २३ | १७ ४४ | २० ०४ | २२ ०९ | २३ ५० | १ १५ | २ ३६ | ४ १० |
| 4 | २२ | ६ ०५ | ८ १९ | १० ४२ | १३ ०१ | १५ १९ | १७ ४० | २० ०० | २२ ०५ | २३ ४६ | १ ११ | २ ३३ | ४ ०६ |
| 5 | २३ | ६ ०१ | ८ १५ | १० ३८ | १२ ५७ | १५ १५ | १७ ३६ | १९ ५६ | २२ ०१ | २३ ४२ | १ ०७ | २ २९ | ४ ०२ |
| 6 | २४ | ५ ५७ | ८ १२ | १० ३५ | १२ ५४ | १५ १२ | १७ ३३ | १९ ५३ | २१ ५८ | २३ ३९ | १ ०३ | २ २६ | ३ ५८ |
| 7 | २५ | ५ ५३ | ८ ०८ | १० ३१ | १२ ५० | १५ ०८ | १७ २९ | १९ ४९ | २१ ५४ | २३ ३५ | ० ५९ | २ २२ | ३ ५५ |
| 8 | २६ | ५ ४९ | ८ ०४ | १० २७ | १२ ४६ | १५ ०४ | १७ २५ | १९ ४५ | २१ ५० | २३ ३१ | ० ५५ | २ १८ | ३ ५१ |
| 9 | २७ | ५ ४५ | ८ ०० | १० २३ | १२ ४२ | १५ ०० | १७ २१ | १९ ४१ | २१ ४६ | २३ २७ | ० ५१ | २ १४ | ३ ४७ |
| 10 | २८ | ५ ४१ | ७ ५६ | १० १९ | १२ ३८ | १४ ५६ | १७ १७ | १९ ३७ | २१ ४२ | २३ २३ | ० ४७ | २ १० | ३ ४३ |
| 11 | २९ | ५ ३७ | ७ ५२ | १० १५ | १२ ३४ | १४ ५२ | १७ १३ | १९ ३३ | २१ ३८ | २३ १९ | ० ४३ | २ ०६ | ३ ३९ |
| 12 | ३० | ५ ३३ | ७ ४८ | १० ११ | १२ ३० | १४ ४८ | १७ ०९ | १९ २९ | २१ ३४ | २३ १५ | ० ३९ | २ ०२ | ३ ३५ |
| 13 | ३१ | ५ २९ | ७ ४४ | १० ०७ | १२ २६ | १४ ४४ | १७ ०५ | १९ २५ | २१ ३० | २३ ११ | ० ३५ | १ ५८ | ३ ३१ |
| 14 | आ. | ५ २५ | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – |

# दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

## आषाढ़ (जून-जुलाई)

| जून | आषा. | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 14 | १ | ७ ४० | १० ०३ | १२ २२ | १४ ४० | १७ ०१ | १९ २१ | २१ २६ | २३ ०७ | ० ३१ | १ ५४ | ३ २७ | ५ २१ |
| 15 | २ | ७ ३६ | ९ ५९ | १२ १८ | १४ ३६ | १६ ५७ | १९ १७ | २१ २२ | २३ ०३ | ० २८ | १ ५० | ३ २३ | ५ १८ |
| 16 | ३ | ७ ३२ | ९ ५५ | १२ १४ | १४ ३२ | १६ ५३ | १९ १३ | २१ १८ | २२ ५९ | ० २४ | १ ४६ | ३ १९ | ५ १४ |
| 17 | ४ | ७ २८ | ९ ५१ | १२ १० | १४ २८ | १६ ४९ | १९ ०९ | २१ १४ | २२ ५५ | ० २० | १ ४२ | ३ १५ | ५ १० |
| 18 | ५ | ७ २४ | ९ ४७ | १२ ०६ | १४ २४ | १६ ४५ | १९ ०५ | २१ १० | २२ ५१ | ० १६ | १ ३८ | ३ ११ | ५ ०६ |
| 19 | ६ | ७ २० | ९ ४३ | १२ ०२ | १४ २० | १६ ४१ | १९ ०१ | २१ ०६ | २२ ४७ | ० १२ | १ ३४ | ३ ०७ | ५ ०२ |
| 20 | ७ | ७ १६ | ९ ३९ | ११ ५८ | १४ १६ | १६ ३७ | १८ ५७ | २१ ०२ | २२ ४३ | ० ०८ | १ ३० | ३ ०३ | ४ ५८ |
| 21 | ८ | ७ १२ | ९ ३५ | ११ ५४ | १४ १२ | १६ ३३ | १८ ५३ | २० ५८ | २२ ३९ | ० ०४ | १ २६ | २ ५९ | ४ ५४ |
| 22 | ९ | ७ ०९ | ९ ३१ | ११ ५० | १४ ०८ | १६ २९ | १८ ४९ | २० ५४ | २२ ३५ | ० ०० | १ २२ | २ ५५ | ४ ५० |
| 23 | १० | ७ ०५ | ९ २७ | ११ ४६ | १४ ०४ | १६ २५ | १८ ४५ | २० ५० | २२ ३१ | २३ ५६ | १ १८ | २ ५१ | ४ ४६ |
| 24 | ११ | ७ ०१ | ९ २३ | ११ ४२ | १४ ०० | १६ २१ | १८ ४१ | २० ४६ | २२ २७ | २३ ५२ | १ १४ | २ ४७ | ४ ४२ |
| 25 | १२ | ६ ५७ | ९ १९ | ११ ३८ | १३ ५६ | १६ १७ | १८ ३७ | २० ४२ | २२ २३ | २३ ४८ | १ १० | २ ४३ | ४ ३८ |
| 26 | १३ | ६ ५३ | ९ १५ | ११ ३४ | १३ ५२ | १६ १३ | १८ ३३ | २० ३८ | २२ १९ | २३ ४४ | १ ०६ | २ ३९ | ४ ३४ |
| 27 | १४ | ६ ४९ | ९ १२ | ११ ३१ | १३ ४९ | १६ १० | १८ ३० | २० ३५ | २२ १६ | २३ ४१ | १ ०३ | २ ३६ | ४ ३१ |
| 28 | १५ | ६ ४५ | ९ ०८ | ११ २८ | १३ ४५ | १६ ०६ | १८ २६ | २० ३१ | २२ १२ | २३ ३७ | ० ५९ | २ ३२ | ४ २७ |
| 29 | १६ | ६ ४१ | ९ ०४ | ११ २३ | १३ ४१ | १६ ०२ | १८ २२ | २० २७ | २२ ०८ | २३ ३३ | ० ५५ | २ २८ | ४ २३ |
| 30 | १७ | ६ ३७ | ९ ०० | ११ १९ | १३ ३७ | १५ ५८ | १८ १८ | २० २३ | २२ ०४ | २३ २९ | ० ५१ | २ २४ | ४ १९ |
| जुला | १८ | ६ ३३ | ८ ५६ | ११ १५ | १३ ३३ | १५ ५४ | १८ १४ | २० १९ | २२ ०० | २३ २५ | ० ४७ | २ २० | ४ १५ |
| 2 | १९ | ६ २९ | ८ ५२ | ११ ११ | १३ २९ | १५ ५० | १८ १० | २० १५ | २१ ५६ | २३ २१ | ० ४३ | २ १६ | ४ ११ |
| 3 | २० | ६ २५ | ८ ४८ | ११ ०७ | १३ २५ | १५ ४६ | १८ ०६ | २० ११ | २१ ५२ | २३ १७ | ० ३९ | २ १२ | ४ ०७ |
| 4 | २१ | ६ २१ | ८ ४४ | ११ ०३ | १३ २१ | १५ ४२ | १८ ०२ | २० ०७ | २१ ४८ | २३ १३ | ० ३५ | २ ०८ | ४ ०३ |
| 5 | २२ | ६ १७ | ८ ४० | १० ५९ | १३ १७ | १५ ३८ | १७ ५८ | २० ०३ | २१ ४४ | २३ ०९ | ० ३२ | २ ०५ | ३ ५९ |
| 6 | २३ | ६ १३ | ८ ३६ | १० ५५ | १३ १३ | १५ ३४ | १७ ५४ | १९ ५९ | २१ ४० | २३ ०५ | ० २८ | २ ०१ | ३ ५५ |
| 7 | २४ | ६ १० | ८ ३३ | १० ५२ | १३ १० | १५ ३१ | १७ ५१ | १९ ५६ | २१ ३७ | २३ ०२ | ० २५ | १ ५८ | ३ ५२ |
| 8 | २५ | ६ ०६ | ८ २९ | १० ४८ | १३ ०६ | १५ २७ | १७ ४७ | १९ ५२ | २१ ३३ | २२ ५८ | ० २१ | १ ५४ | ३ ४८ |
| 9 | २६ | ६ ०२ | ८ २५ | १० ४४ | १३ ०२ | १५ २३ | १७ ४३ | १९ ४८ | २१ २९ | २२ ५४ | ० १७ | १ ५० | ३ ४४ |
| 10 | २७ | ५ ५८ | ८ २१ | १० ४० | १२ ५८ | १५ १९ | १७ ३९ | १९ ४४ | २१ २५ | २२ ५० | ० १३ | १ ४६ | ३ ४० |
| 11 | २८ | ५ ५४ | ८ १७ | १० ३६ | १२ ५४ | १५ १५ | १७ ३५ | १९ ४० | २१ २१ | २२ ४६ | ० ०९ | १ ४२ | ३ ३६ |
| 12 | २९ | ५ ५० | ८ १३ | १० ३२ | १२ ५० | १५ ११ | १७ ३१ | १९ ३६ | २१ १७ | २२ ४२ | ० ०५ | १ ३८ | ३ ३२ |
| 13 | ३० | ५ ४६ | ८ ०९ | १० २८ | १२ ४६ | १५ ०७ | १७ २७ | १९ ३२ | २१ १३ | २२ ३८ | ० ०१ | १ ३४ | ३ २८ |
| 14 | ३१ | ५ ४२ | ८ ०५ | १० २४ | १२ ४२ | १५ ०३ | १७ २३ | १९ २८ | २१ ०९ | २२ ३४ | २३ ५७ | १ ३० | ३ २४ |
| 15 | ३२ | ५ ३८ | ८ ०१ | १० २० | १२ ३८ | १४ ५९ | १७ १९ | १९ २४ | २१ ०५ | २२ ३० | २३ ५३ | १ २६ | ३ २० |
| 16 | श्रा. | ५ ३४ | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – |

## श्रावण (जुलाई-अगस्त)

| जुलाई | श्रावण | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 16 | १ | ७ ५७ | १० १६ | १२ ३४ | १४ ५५ | १७ १५ | १९ २० | २१ ०१ | २२ २६ | २३ ४९ | १ २२ | ३ १६ | ५ ३० |
| 17 | २ | ७ ५३ | १० १२ | १२ ३० | १४ ५१ | १७ ११ | १९ १६ | २० ५७ | २२ २२ | २३ ४५ | १ १८ | ३ १२ | ५ २६ |
| 18 | ३ | ७ ४९ | १० ०८ | १२ २६ | १४ ४७ | १७ ०७ | १९ १२ | २० ५३ | २२ १८ | २३ ४१ | १ १४ | ३ ०८ | ५ २२ |
| 19 | ४ | ७ ४६ | १० ०५ | १२ २३ | १४ ४४ | १७ ०४ | १९ ०९ | २० ४९ | २२ १५ | २३ ३८ | १ ११ | ३ ०४ | ५ १८ |
| 20 | ५ | ७ ४२ | १० ०१ | १२ १९ | १४ ४० | १७ ०० | १९ ०५ | २० ४५ | २२ ११ | २३ ३४ | १ ०७ | ३ ०० | ५ १४ |
| 21 | ६ | ७ ३८ | ९ ५७ | १२ १५ | १४ ३६ | १६ ५६ | १९ ०१ | २० ४१ | २२ ०७ | २३ ३० | १ ०३ | २ ५६ | ५ १० |
| 22 | ७ | ७ ३४ | ९ ५३ | १२ ११ | १४ ३२ | १६ ५२ | १८ ५७ | २० ३७ | २२ ०३ | २३ २६ | ० ५९ | २ ५२ | ५ ०६ |
| 23 | ८ | ७ ३० | ९ ४९ | १२ ०७ | १४ २८ | १६ ४८ | १८ ५३ | २० ३३ | २१ ५९ | २३ २२ | ० ५५ | २ ४८ | ५ ०२ |
| 24 | ९ | ७ २६ | ९ ४५ | १२ ०३ | १४ २४ | १६ ४४ | १८ ४९ | २० २९ | २१ ५५ | २३ १८ | ० ५१ | २ ४४ | ४ ५८ |
| 25 | १० | ७ २२ | ९ ४१ | ११ ५९ | १४ २० | १६ ४० | १८ ४५ | २० २५ | २१ ५१ | २३ १४ | ० ४७ | २ ४० | ४ ५४ |
| 26 | ११ | ७ १८ | ९ ३७ | ११ ५५ | १४ १७ | १६ ३७ | १८ ४१ | २० २२ | २१ ४७ | २३ १० | ० ४३ | २ ३६ | ४ ५० |
| 27 | १२ | ७ १४ | ९ ३३ | ११ ५१ | १४ १३ | १६ ३३ | १८ ३७ | २० १८ | २१ ४३ | २३ ०६ | ० ३९ | २ ३२ | ४ ४६ |
| 28 | १३ | ७ १० | ९ २९ | ११ ४८ | १४ ०९ | १६ २९ | १८ ३३ | २० १४ | २१ ३९ | २३ ०२ | ० ३५ | २ २८ | ४ ४३ |
| 29 | १४ | ७ ०६ | ९ २५ | ११ ४४ | १४ ०५ | १६ २५ | १८ २९ | २० १० | २१ ३५ | २२ ५८ | ० ३१ | २ २४ | ४ ३९ |
| 30 | १५ | ७ ०२ | ९ २१ | ११ ४० | १४ ०१ | १६ २१ | १८ २५ | २० ०६ | २१ ३१ | २२ ५४ | ० २७ | २ २१ | ४ ३५ |
| 31 | १६ | ६ ५८ | ९ १७ | ११ ३६ | १३ ५७ | १६ १८ | १८ २१ | २० ०२ | २१ २७ | २२ ५० | ० २३ | २ १७ | ४ ३१ |
| अग | १७ | ६ ५४ | ९ १३ | ११ ३२ | १३ ५३ | १६ १४ | १८ १७ | १९ ५८ | २१ २३ | २२ ४६ | ० १९ | २ १३ | ४ २७ |
| 2 | १८ | ६ ५० | ९ ०९ | ११ २८ | १३ ४९ | १६ १० | १८ १३ | १९ ५४ | २१ १९ | २२ ४२ | ० १५ | २ ०९ | ४ २३ |
| 3 | १९ | ६ ४६ | ९ ०५ | ११ २४ | १३ ४५ | १६ ०६ | १८ ०९ | १९ ५० | २१ १५ | २२ ३८ | ० ११ | २ ०५ | ४ १९ |
| 4 | २० | ६ ४२ | ९ ०२ | ११ २० | १३ ४१ | १६ ०२ | १८ ०५ | १९ ४६ | २१ ११ | २२ ३५ | ० ०७ | २ ०१ | ४ १५ |
| 5 | २१ | ६ ३८ | ८ ५८ | ११ १७ | १३ ३८ | १५ ५८ | १८ ०२ | १९ ४३ | २१ ०७ | २२ ३२ | ० ०४ | १ ५८ | ४ ११ |
| 6 | २२ | ६ ३४ | ८ ५४ | ११ १३ | १३ ३४ | १५ ५४ | १७ ५८ | १९ ३९ | २१ ०४ | २२ २८ | ० ०० | १ ५४ | ४ ०८ |
| 7 | २३ | ६ ३१ | ८ ५० | ११ ०९ | १३ ३० | १५ ५० | १७ ५४ | १९ ३५ | २१ ०० | २२ २४ | २३ ५६ | १ ५० | ४ ०४ |
| 8 | २४ | ६ २७ | ८ ४६ | ११ ०५ | १३ २६ | १५ ४७ | १७ ५० | १९ ३२ | २० ५६ | २२ २० | २३ ५२ | १ ४६ | ४ ०० |
| 9 | २५ | ६ २३ | ८ ४२ | ११ ०१ | १३ २२ | १५ ४३ | १७ ४६ | १९ २८ | २० ५२ | २२ १६ | २३ ४८ | १ ४२ | ३ ५६ |
| 10 | २६ | ६ १९ | ८ ३८ | १० ५७ | १३ १८ | १५ ३९ | १७ ४२ | १९ २४ | २० ४८ | २२ १२ | २३ ४४ | १ ३८ | ३ ५२ |
| 11 | २७ | ६ १५ | ८ ३४ | १० ५३ | १३ १४ | १५ ३५ | १७ ३८ | १९ २० | २० ४४ | २२ ०८ | २३ ४० | १ ३४ | ३ ४८ |
| 12 | २८ | ६ ११ | ८ ३० | १० ४९ | १३ १० | १५ ३१ | १७ ३४ | १९ १६ | २० ४१ | २२ ०४ | २३ ३६ | १ ३१ | ३ ४४ |
| 13 | २९ | ६ ०७ | ८ २६ | १० ४५ | १३ ०६ | १५ २७ | १७ ३० | १९ १२ | २० ३७ | २२ ०० | २३ ३२ | १ २७ | ३ ४१ |
| 14 | ३० | ६ ०३ | ८ २२ | १० ४१ | १३ ०२ | १५ २३ | १७ २६ | १९ ०८ | २० ३३ | २१ ५६ | २३ २८ | १ २३ | ३ ३७ |
| 15 | ३१ | ५ ५९ | ८ १८ | १० ३७ | १२ ५८ | १५ १९ | १७ २२ | १९ ०४ | २० २९ | २१ ५२ | २३ २४ | १ १९ | ३ ३३ |
| 16 | भा | ५ ५५ | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – |

# दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

| अगस्त | भाद्रपद | भाद्रपद (अगस्त-सितम्बर) | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क |
| | | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 16 | १ | ८ १४ | १० ३३ | १२ ५४ | १५ १५ | १७ १८ | १९ ०० | २० २५ | २१ ४८ | २३ २० | १ १५ | ३ २९ | ५ ५१ |
| 17 | २ | ८ १० | १० २९ | १२ ५० | १५ ११ | १७ १४ | १८ ५६ | २० २१ | २१ ४४ | २३ १६ | १ ११ | ३ २५ | ५ ४७ |
| 18 | ३ | ८ ०६ | १० २६ | १२ ४६ | १५ ०७ | १७ १० | १८ ५२ | २० १७ | २१ ४० | २३ १२ | १ ०७ | ३ २१ | ५ ४३ |
| 19 | ४ | ८ ०२ | १० २२ | १२ ४२ | १५ ०३ | १७ ०६ | १८ ४८ | २० १३ | २१ ३६ | २३ ०८ | १ ०३ | ३ १७ | ५ ३९ |
| 20 | ५ | ७ ५९ | १० १८ | १२ ३९ | १४ ५९ | १७ ०२ | १८ ४४ | २० ०९ | २१ ३२ | २३ ०४ | ० ५९ | ३ १३ | ५ ३५ |
| 21 | ६ | ७ ५५ | १० १४ | १२ ३५ | १४ ५५ | १६ ५९ | १८ ४० | २० ०५ | २१ २८ | २३ ०१ | ० ५५ | ३ ०९ | ५ ३१ |
| 22 | ७ | ७ ५१ | १० १० | १२ ३१ | १४ ५१ | १६ ५५ | १८ ३७ | २० ०१ | २१ २४ | २२ ५७ | ० ५१ | ३ ०५ | ५ २७ |
| 23 | ८ | ७ ४७ | १० ०६ | १२ २७ | १४ ४७ | १६ ५१ | १८ ३३ | १९ ५७ | २१ २० | २२ ५३ | ० ४७ | ३ ०१ | ५ २३ |
| 24 | ९ | ७ ४३ | १० ०२ | १२ २३ | १४ ४३ | १६ ४७ | १८ २९ | १९ ५४ | २१ १६ | २२ ४९ | ० ४४ | २ ५७ | ५ १९ |
| 25 | १० | ७ ३९ | ९ ५८ | १२ १९ | १४ ३९ | १६ ४३ | १८ २५ | १९ ५० | २१ १३ | २२ ४५ | ० ४० | २ ५४ | ५ १६ |
| 26 | ११ | ७ ३५ | ९ ५४ | १२ १६ | १४ ३६ | १६ ३९ | १८ २१ | १९ ४६ | २१ ०९ | २२ ४१ | ० ३६ | २ ५० | ५ १२ |
| 27 | १२ | ७ ३१ | ९ ५० | १२ १२ | १४ ३२ | १६ ३६ | १८ १७ | १९ ४२ | २१ ०५ | २२ ३७ | ० ३२ | २ ४६ | ५ ०८ |
| 28 | १३ | ७ २७ | ९ ४६ | १२ ०८ | १४ २८ | १६ ३२ | १८ १३ | १९ ३८ | २१ ०१ | २२ ३३ | ० २८ | २ ४२ | ५ ०४ |
| 29 | १४ | ७ २३ | ९ ४२ | १२ ०४ | १४ २४ | १६ २८ | १८ ०९ | १९ ३४ | २० ५७ | २२ २९ | ० २४ | २ ३८ | ५ ०० |
| 30 | १५ | ७ १९ | ९ ३८ | १२ ०० | १४ २० | १६ २४ | १८ ०५ | १९ ३० | २० ५३ | २२ २५ | ० २० | २ ३४ | ४ ५६ |
| 31 | १६ | ७ १५ | ९ ३४ | ११ ५६ | १४ १६ | १६ २० | १८ ०१ | १९ २६ | २० ४९ | २२ २१ | ० १६ | २ ३० | ४ ५२ |
| सितं | १७ | ७ ११ | ९ ३० | ११ ५२ | १४ १२ | १६ १६ | १७ ५७ | १९ २२ | २० ४५ | २२ १७ | ० १२ | २ २६ | ४ ४८ |
| 2 | १८ | ७ ०७ | ९ २७ | ११ ४८ | १४ ०८ | १६ १२ | १७ ५३ | १९ १८ | २० ४१ | २२ १३ | ० ०८ | २ २२ | ४ ४४ |
| 3 | १९ | ७ ०३ | ९ २३ | ११ ४४ | १४ ०४ | १६ ०८ | १७ ४९ | १९ १४ | २० ३७ | २२ १० | ० ०४ | २ १८ | ४ ४० |
| 4 | २० | ६ ५९ | ९ १९ | ११ ४० | १४ ०० | १६ ०४ | १७ ४५ | १९ १० | २० ३३ | २२ ०६ | ० ०० | २ १४ | ४ ३६ |
| 5 | २१ | ६ ५५ | ९ १५ | ११ ३६ | १३ ५६ | १६ ०० | १७ ४१ | १९ ०६ | २० २९ | २२ ०२ | २३ ५६ | २ १० | ४ ३२ |
| 6 | २२ | ६ ५२ | ९ ११ | ११ ३२ | १३ ५२ | १५ ५६ | १७ ३७ | १९ ०२ | २० २५ | २१ ५८ | २३ ५२ | २ ०६ | ४ २८ |
| 7 | २३ | ६ ४८ | ९ ०७ | ११ २८ | १३ ४८ | १५ ५२ | १७ ३३ | १८ ५८ | २० २१ | २१ ५४ | २३ ४८ | २ ०२ | ४ २४ |
| 8 | २४ | ६ ४४ | ९ ०३ | ११ २४ | १३ ४४ | १५ ४८ | १७ २९ | १८ ५४ | २० १७ | २१ ५० | २३ ४४ | १ ५८ | ४ २० |
| 9 | २५ | ६ ४० | ८ ५९ | ११ २० | १३ ४० | १५ ४४ | १७ २५ | १८ ५० | २० १३ | २१ ४६ | २३ ४० | १ ५४ | ४ १६ |
| 10 | २६ | ६ ३६ | ८ ५५ | ११ १६ | १३ ३६ | १५ ४० | १७ २१ | १८ ४६ | २० ०९ | २१ ४२ | २३ ३६ | १ ५० | ४ १२ |
| 11 | २७ | ६ ३२ | ८ ५१ | ११ १२ | १३ ३२ | १५ ३६ | १७ १७ | १८ ४२ | २० ०५ | २१ ३८ | २३ ३२ | १ ४६ | ४ ०८ |
| 12 | २८ | ६ २८ | ८ ४७ | ११ ०८ | १३ २८ | १५ ३२ | १७ १३ | १८ ३८ | २० ०१ | २१ ३४ | २३ २८ | १ ४२ | ४ ०४ |
| 13 | २९ | ६ २४ | ८ ४३ | ११ ०४ | १३ २४ | १५ २८ | १७ ०९ | १८ ३४ | १९ ५७ | २१ ३० | २३ २४ | १ ३८ | ४ ०० |
| 14 | ३० | ६ २० | ८ ३९ | ११ ०० | १३ २० | १५ २४ | १७ ०५ | १८ ३० | १९ ५३ | २१ २६ | २३ २० | १ ३४ | ३ ५६ |
| 15 | ३१ | ६ १६ | ८ ३५ | १० ५६ | १३ १६ | १५ २० | १७ ०१ | १८ २६ | १९ ४९ | २१ २२ | २३ १६ | १ ३० | ३ ५२ |
| 16 | आ. | ६ १२ | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – |

| सितंबर | आश्विन प्र. | आश्विन (सितम्बर-अक्तूबर) | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह |
| | | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 16 | १ | ८ ३१ | १० ५२ | १३ १२ | १५ १६ | १६ ५७ | १८ २२ | १९ ४५ | २१ १८ | २३ १२ | १ २६ | ३ ४८ | ६ ०८ |
| 17 | २ | ८ २७ | १० ४८ | १३ ०८ | १५ १२ | १६ ५३ | १८ १८ | १९ ४१ | २१ १४ | २३ ०८ | १ २२ | ३ ४५ | ६ ०५ |
| 18 | ३ | ८ २३ | १० ४४ | १३ ०४ | १५ ०८ | १६ ४९ | १८ १४ | १९ ३७ | २१ १० | २३ ०४ | १ १८ | ३ ४१ | ६ ०१ |
| 19 | ४ | ८ १९ | १० ४० | १३ ०० | १५ ०४ | १६ ४५ | १८ १० | १९ ३३ | २१ ०६ | २३ ०० | १ १४ | ३ ३७ | ५ ५७ |
| 20 | ५ | ८ १५ | १० ३६ | १२ ५६ | १५ ०० | १६ ४१ | १८ ०६ | १९ २९ | २१ ०२ | २२ ५६ | १ १० | ३ ३३ | ५ ५३ |
| 21 | ६ | ८ ११ | १० ३२ | १२ ५२ | १४ ५६ | १६ ३७ | १८ ०२ | १९ २५ | २० ५८ | २२ ५२ | १ ०६ | ३ २९ | ५ ४९ |
| 22 | ७ | ८ ०७ | १० २८ | १२ ४८ | १४ ५२ | १६ ३३ | १७ ५८ | १९ २१ | २० ५४ | २२ ४८ | १ ०२ | ३ २५ | ५ ४५ |
| 23 | ८ | ८ ०३ | १० २४ | १२ ४४ | १४ ४८ | १६ २९ | १७ ५४ | १९ १७ | २० ५० | २२ ४४ | ० ५८ | ३ २१ | ५ ४१ |
| 24 | ९ | ७ ५९ | १० २० | १२ ४० | १४ ४४ | १६ २५ | १७ ५० | १९ १३ | २० ४६ | २२ ४० | ० ५४ | ३ १७ | ५ ३७ |
| 25 | १० | ७ ५५ | १० १६ | १२ ३६ | १४ ४० | १६ २१ | १७ ४६ | १९ ०९ | २० ४२ | २२ ३६ | ० ५१ | ३ १३ | ५ ३३ |
| 26 | ११ | ७ ५१ | १० १३ | १२ ३३ | १४ ३७ | १६ १८ | १७ ४३ | १९ ०६ | २० ३८ | २२ ३२ | ० ४७ | ३ ०९ | ५ २९ |
| 27 | १२ | ७ ४७ | १० ०९ | १२ २९ | १४ ३३ | १६ १४ | १७ ३९ | १९ ०२ | २० ३४ | २२ २९ | ० ४३ | ३ ०५ | ५ २५ |
| 28 | १३ | ७ ४३ | १० ०५ | १२ २५ | १४ २९ | १६ १० | १७ ३५ | १८ ५८ | २० ३० | २२ २५ | ० ३९ | ३ ०१ | ५ २१ |
| 29 | १४ | ७ ३९ | १० ०१ | १२ २१ | १४ २५ | १६ ०६ | १७ ३१ | १८ ५४ | २० २६ | २२ २१ | ० ३५ | २ ५७ | ५ १७ |
| 30 | १५ | ७ ३५ | ९ ५७ | १२ १७ | १४ २१ | १६ ०२ | १७ २७ | १८ ५० | २० २२ | २२ १७ | ० ३१ | २ ५३ | ५ १३ |
| अक्तू | १६ | ७ ३१ | ९ ५३ | १२ १३ | १४ १७ | १५ ५८ | १७ २३ | १८ ४६ | २० १८ | २२ १३ | ० २७ | २ ४९ | ५ ०९ |
| 2 | १७ | ७ २७ | ९ ४९ | १२ ०९ | १४ १३ | १५ ५४ | १७ १९ | १८ ४२ | २० १५ | २२ ०९ | ० २३ | २ ४५ | ५ ०५ |
| 3 | १८ | ७ २३ | ९ ४५ | १२ ०५ | १४ ०९ | १५ ५० | १७ १५ | १८ ३८ | २० ११ | २२ ०५ | ० १९ | २ ४२ | ५ ०१ |
| 4 | १९ | ७ १९ | ९ ४१ | १२ ०१ | १४ ०५ | १५ ४६ | १७ ११ | १८ ३४ | २० ०७ | २२ ०१ | ० १५ | २ ३८ | ४ ५७ |
| 5 | २० | ७ १५ | ९ ३७ | ११ ५७ | १४ ०१ | १५ ४२ | १७ ०७ | १८ ३० | २० ०३ | २१ ५७ | ० ११ | २ ३४ | ४ ५४ |
| 6 | २१ | ७ ११ | ९ ३३ | ११ ५३ | १३ ५७ | १५ ३८ | १७ ०३ | १८ २६ | १९ ५९ | २१ ५३ | ० ०७ | २ ३० | ४ ५० |
| 7 | २२ | ७ ०७ | ९ २९ | ११ ४९ | १३ ५३ | १५ ३४ | १६ ५९ | १८ २२ | १९ ५५ | २१ ४९ | ० ०३ | २ २७ | ४ ४६ |
| 8 | २३ | ७ ०३ | ९ २५ | ११ ४५ | १३ ४९ | १५ ३० | १६ ५५ | १८ १८ | १९ ५१ | २१ ४५ | २३ ५९ | २ २३ | ४ ४२ |
| 9 | २४ | ६ ५९ | ९ २१ | ११ ४१ | १३ ४५ | १५ २६ | १६ ५१ | १८ १४ | १९ ४७ | २१ ४१ | २३ ५५ | २ १९ | ४ ३८ |
| 10 | २५ | ६ ५६ | ९ १८ | ११ ३८ | १३ ४२ | १५ २३ | १६ ४८ | १८ ११ | १९ ४३ | २१ ३७ | २३ ५२ | २ १५ | ४ ३५ |
| 11 | २६ | ६ ५२ | ९ १४ | ११ ३४ | १३ ३८ | १५ १९ | १६ ४४ | १८ ०७ | १९ ३९ | २१ ३४ | २३ ४८ | २ ११ | ४ ३१ |
| 12 | २७ | ६ ४८ | ९ १० | ११ ३० | १३ ३४ | १५ १५ | १६ ४० | १८ ०३ | १९ ३५ | २१ ३० | २३ ४४ | २ ०७ | ४ २७ |
| 13 | २८ | ६ ४४ | ९ ०६ | ११ २६ | १३ ३० | १५ ११ | १६ ३६ | १७ ५९ | १९ ३१ | २१ २६ | २३ ४० | २ ०३ | ४ २३ |
| 14 | २९ | ६ ४० | ९ ०२ | ११ २२ | १३ २६ | १५ ०७ | १६ ३२ | १७ ५५ | १९ २७ | २१ २२ | २३ ३६ | १ ५९ | ४ १९ |
| 15 | ३० | ६ ३६ | ८ ५८ | ११ १८ | १३ २२ | १५ ०३ | १६ २८ | १७ ५१ | १९ २३ | २१ १८ | २३ ३२ | १ ५५ | ४ १५ |
| 16 | ३१ | ६ ३२ | ८ ५४ | ११ १४ | १३ १८ | १४ ५९ | १६ २४ | १७ ४७ | १९ १९ | २१ १४ | २३ २८ | १ ५१ | ४ ११ |
| 17 | का. | ६ २८ | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – |

# दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

| अक्तू. | कार्तिक | कार्तिक (अक्तूबर-नवम्बर) | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या |
| | | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 17 | १ | ८ ५० | ११ १० | १३ १४ | १४ ५५ | १६ २० | १७ ४३ | १९ १५ | २१ १० | २३ २४ | १ ४७ | ४ ०६ | ६ २४ |
| 18 | २ | ८ ४६ | ११ ०६ | १३ १० | १४ ५१ | १६ १६ | १७ ३९ | १९ ११ | २१ ०६ | २३ २० | १ ४३ | ४ ०३ | ६ २० |
| 19 | ३ | ८ ४२ | ११ ०२ | १३ ०६ | १४ ४७ | १६ १२ | १७ ३५ | १९ ०७ | २१ ०२ | २३ १६ | १ ३९ | ३ ५८ | ६ १६ |
| 20 | ४ | ८ ३८ | १० ५८ | १३ ०२ | १४ ४३ | १६ ०८ | १७ ३१ | १९ ०३ | २० ५८ | २३ १२ | १ ३५ | ३ ५४ | ६ १२ |
| 21 | ५ | ८ ३४ | १० ५४ | १२ ५८ | १४ ३९ | १६ ०४ | १७ २७ | १८ ५९ | २० ५४ | २३ ०८ | १ ३१ | ३ ५० | ६ ०८ |
| 22 | ६ | ८ ३० | १० ५० | १२ ५४ | १४ ३५ | १६ ०० | १७ २३ | १८ ५५ | २० ५० | २३ ०४ | १ २७ | ३ ४६ | ६ ०४ |
| 23 | ७ | ८ २६ | १० ४६ | १२ ५० | १४ ३१ | १५ ५६ | १७ १९ | १८ ५१ | २० ४६ | २३ ०१ | १ २३ | ३ ४३ | ६ ०० |
| 24 | ८ | ८ २२ | १० ४२ | १२ ४६ | १४ २७ | १५ ५२ | १७ १५ | १८ ४७ | २० ४२ | २२ ५७ | १ १९ | ३ ३९ | ५ ५७ |
| 25 | ९ | ८ १९ | १० ३९ | १२ ४३ | १४ २३ | १५ ४८ | १७ १२ | १८ ४४ | २० ३८ | २२ ५३ | १ १६ | ३ ३५ | ५ ५३ |
| 26 | १० | ८ १५ | १० ३५ | १२ ३९ | १४ २० | १५ ४५ | १७ ०८ | १८ ४० | २० ३५ | २२ ४९ | १ १२ | ३ ३२ | ५ ४९ |
| 27 | ११ | ८ ११ | १० ३१ | १२ ३५ | १४ १६ | १५ ४१ | १७ ०४ | १८ ३६ | २० ३१ | २२ ४५ | १ ०८ | ३ २८ | ५ ४५ |
| 28 | १२ | ८ ०७ | १० २७ | १२ ३१ | १४ १२ | १५ ३७ | १७ ०० | १८ ३२ | २० २७ | २२ ४१ | १ ०४ | ३ २४ | ५ ४१ |
| 29 | १३ | ८ ०३ | १० २३ | १२ २७ | १४ ०८ | १५ ३३ | १६ ५६ | १८ २८ | २० २३ | २२ ३७ | १ ०० | ३ २० | ५ ३७ |
| 30 | १४ | ७ ५९ | १० १९ | १२ २३ | १४ ०४ | १५ २९ | १६ ५२ | १८ २४ | २० १९ | २२ ३३ | ० ५६ | ३ १६ | ५ ३४ |
| 31 | १५ | ७ ५५ | १० १५ | १२ १९ | १४ ०० | १५ २५ | १६ ४८ | १८ २० | २० १५ | २२ २९ | ० ५२ | ३ १२ | ५ ३० |
| नवं. | १६ | ७ ५१ | १० ११ | १२ १५ | १३ ५६ | १५ २१ | १६ ४४ | १८ १६ | २० ११ | २२ २५ | ० ४८ | ३ ०८ | ५ २६ |
| 2 | १७ | ७ ४७ | १० ०७ | १२ ११ | १३ ५२ | १५ १७ | १६ ४० | १८ १२ | २० ०७ | २२ २१ | ० ४४ | ३ ०४ | ५ २२ |
| 3 | १८ | ७ ४३ | १० ०३ | १२ ०७ | १३ ४८ | १५ १३ | १६ ३६ | १८ ०९ | २० ०३ | २२ १७ | ० ४० | ३ ०० | ५ १८ |
| 4 | १९ | ७ ३९ | ९ ५९ | १२ ०३ | १३ ४४ | १५ ०९ | १६ ३२ | १८ ०५ | १९ ५९ | २२ १३ | ० ३६ | २ ५६ | ५ १४ |
| 5 | २० | ७ ३५ | ९ ५५ | ११ ५९ | १३ ४० | १५ ०५ | १६ २८ | १८ ०१ | १९ ५५ | २२ ०९ | ० ३२ | २ ५२ | ५ १० |
| 6 | २१ | ७ ३१ | ९ ५१ | ११ ५५ | १३ ३६ | १५ ०१ | १६ २४ | १७ ५७ | १९ ५१ | २२ ०५ | ० २८ | २ ४८ | ५ ०६ |
| 7 | २२ | ७ २८ | ९ ४७ | ११ ५१ | १३ ३२ | १४ ५७ | १६ २० | १७ ५३ | १९ ४७ | २२ ०१ | ० २४ | २ ४४ | ५ ०२ |
| 8 | २३ | ७ २४ | ९ ४३ | ११ ४७ | १३ २८ | १४ ५३ | १६ १६ | १७ ४९ | १९ ४३ | २१ ५७ | ० २० | २ ४० | ४ ५८ |
| 9 | २४ | ७ २० | ९ ३१ | ११ ४३ | १३ २४ | १४ ४९ | १६ १२ | १७ ४५ | १९ ३९ | २१ ५३ | ० १६ | २ ३६ | ४ ५४ |
| 10 | २५ | ७ १६ | ९ ३५ | ११ ३९ | १३ २० | १४ ४५ | १६ ०८ | १७ ४१ | १९ ३५ | २१ ५० | ० १२ | २ ३२ | ४ ५० |
| 11 | २६ | ७ १२ | ९ ३१ | ११ ३५ | १३ १७ | १४ ४२ | १६ ०५ | १७ ३७ | १९ ३२ | २१ ४६ | ० ०८ | २ २८ | ४ ४६ |
| 12 | २७ | ७ ०८ | ९ २७ | ११ ३२ | १३ १३ | १४ ३८ | १६ ०१ | १७ ३३ | १९ २८ | २१ ४२ | ० ०५ | २ २४ | ४ ४२ |
| 13 | २८ | ७ ०४ | ९ २४ | ११ २८ | १३ ०९ | १४ ३४ | १५ ५७ | १७ २९ | १९ २४ | २१ ३८ | ० ०१ | २ २० | ४ ३८ |
| 14 | २९ | ७ ०० | ९ २० | ११ २४ | १३ ०५ | १४ ३० | १५ ५३ | १७ २५ | १९ २० | २१ ३४ | २३ ५७ | २ १६ | ४ ३४ |
| 15 | ३० | ६ ५६ | ९ १६ | ११ २० | १३ ०१ | १४ २६ | १५ ४९ | १७ २१ | १९ १६ | २१ ३० | २३ ५३ | २ १२ | ४ ३० |
| 16 | मा | ६ ५२ | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - |

| नवम्बर | मार्गशीर्ष | मार्गशीर्ष (नवम्बर-दिसम्बर) | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला |
| | | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 16 | १ | ९ १२ | ११ १६ | १२ ५७ | १४ २२ | १५ ४५ | १७ १७ | १९ १२ | २१ २६ | २३ ४९ | २ ०८ | ४ २६ | ६ ४८ |
| 17 | २ | ९ ०८ | ११ १२ | १२ ५३ | १४ १८ | १५ ४१ | १७ १३ | १९ ०८ | २१ २२ | २३ ४५ | २ ०४ | ४ २२ | ६ ४४ |
| 18 | ३ | ९ ०४ | ११ ०८ | १२ ४९ | १४ १४ | १५ ३७ | १७ ०९ | १९ ०४ | २१ १८ | २३ ४१ | २ ०० | ४ १८ | ६ ४० |
| 19 | ४ | ९ ०० | ११ ०४ | १२ ४५ | १४ १० | १५ ३३ | १७ ०५ | १९ ०० | २१ १४ | २३ ३७ | १ ५६ | ४ १४ | ६ ३६ |
| 20 | ५ | ८ ५६ | ११ ०० | १२ ४१ | १४ ०६ | १५ २९ | १७ ०१ | १८ ५६ | २१ १० | २३ ३३ | १ ५२ | ४ १० | ६ ३२ |
| 21 | ६ | ८ ५२ | १० ५६ | १२ ३७ | १४ ०२ | १५ २५ | १६ ५७ | १८ ५२ | २१ ०६ | २३ २९ | १ ४८ | ४ ०६ | ६ २८ |
| 22 | ७ | ८ ४८ | १० ५२ | १२ ३३ | १३ ५८ | १५ २१ | १६ ५४ | १८ ४९ | २१ ०३ | २३ २५ | १ ४५ | ४ ०३ | ६ २५ |
| 23 | ८ | ८ ४४ | १० ४८ | १२ २९ | १३ ५४ | १५ १७ | १६ ५० | १८ ४५ | २० ५९ | २३ २१ | १ ४१ | ३ ५९ | ६ २१ |
| 24 | ९ | ८ ४० | १० ४४ | १२ २५ | १३ ५० | १५ १३ | १६ ४६ | १८ ४१ | २० ५५ | २३ १७ | १ ३७ | ३ ५५ | ६ १७ |
| 25 | १० | ८ ३७ | १० ४१ | १२ २२ | १३ ४७ | १५ १० | १६ ४२ | १८ ३७ | २० ५१ | २३ १३ | १ ३३ | ३ ५१ | ६ १३ |
| 26 | ११ | ८ ३३ | १० ३७ | १२ १८ | १३ ४३ | १५ ०६ | १६ ३८ | १८ ३३ | २० ४७ | २३ १० | १ २९ | ३ ४७ | ६ ०९ |
| 27 | १२ | ८ २९ | १० ३३ | १२ १४ | १३ ३९ | १५ ०२ | १६ ३४ | १८ २९ | २० ४३ | २३ ०६ | १ २५ | ३ ४३ | ६ ०५ |
| 28 | १३ | ८ २५ | १० २९ | १२ १० | १३ ३५ | १४ ५८ | १६ ३० | १८ २५ | २० ३९ | २३ ०२ | १ २१ | ३ ३९ | ६ ०१ |
| 29 | १४ | ८ २१ | १० २५ | १२ ०६ | १३ ३१ | १४ ५४ | १६ २७ | १८ २१ | २० ३५ | २२ ५९ | १ १८ | ३ ३६ | ५ ५७ |
| 30 | १५ | ८ १७ | १० २१ | १२ ०२ | १३ २७ | १४ ५० | १६ २३ | १८ १७ | २० ३१ | २२ ५५ | १ १४ | ३ ३२ | ५ ५३ |
| दिसं | १६ | ८ १३ | १० १७ | ११ ५८ | १३ २३ | १४ ४६ | १६ १९ | १८ १३ | २० २७ | २२ ५१ | १ १० | ३ २८ | ५ ४९ |
| 2 | १७ | ८ ०९ | १० १३ | ११ ५४ | १३ १९ | १४ ४२ | १६ १५ | १८ ०९ | २० २३ | २२ ४७ | १ ०६ | ३ २४ | ५ ४५ |
| 3 | १८ | ८ ०५ | १० ०९ | ११ ५० | १३ १५ | १४ ३८ | १६ ११ | १८ ०५ | २० १९ | २२ ४३ | १ ०२ | ३ २० | ५ ४१ |
| 4 | १९ | ८ ०१ | १० ०५ | ११ ४६ | १३ ११ | १४ ३४ | १६ ०७ | १८ ०१ | २० १५ | २२ ३९ | ० ५८ | ३ १६ | ५ ३७ |
| 5 | २० | ७ ५७ | १० ०१ | ११ ४२ | १३ ०७ | १४ ३० | १६ ०३ | १७ ५७ | २० ११ | २२ ३५ | ० ५४ | ३ १२ | ५ ३३ |
| 6 | २१ | ७ ५३ | ९ ५७ | ११ ३८ | १३ ०३ | १४ २६ | १५ ५९ | १७ ५३ | २० ०७ | २२ ३१ | ० ५० | ३ ०८ | ५ २९ |
| 7 | २२ | ७ ४९ | ९ ५३ | ११ ३४ | १२ ५९ | १४ २२ | १५ ५५ | १७ ४९ | २० ०३ | २२ २७ | ० ४६ | ३ ०४ | ५ २५ |
| 8 | २३ | ७ ४५ | ९ ४९ | ११ ३० | १२ ५५ | १४ १८ | १५ ५१ | १७ ४५ | १९ ५९ | २२ २३ | ० ४२ | ३ ०० | ५ २१ |
| 9 | २४ | ७ ४१ | ९ ४५ | ११ २६ | १२ ५१ | १४ १४ | १५ ४७ | १७ ४१ | १९ ५५ | २२ १९ | ० ३८ | २ ५६ | ५ १७ |
| 10 | २५ | ७ ३८ | ९ ४२ | ११ २३ | १२ ४८ | १४ ११ | १५ ४४ | १७ ३८ | १९ ५२ | २२ १६ | ० ३५ | २ ५३ | ५ १४ |
| 11 | २६ | ७ ३४ | ९ ३८ | ११ १९ | १२ ४४ | १४ ०७ | १५ ४० | १७ ३४ | १९ ४८ | २२ १२ | ० ३१ | २ ४९ | ५ १० |
| 12 | २७ | ७ ३० | ९ ३४ | ११ १५ | १२ ४० | १४ ०३ | १५ ३६ | १७ ३० | १९ ४४ | २२ ०८ | ० २७ | २ ४५ | ५ ०६ |
| 13 | २८ | ७ २६ | ९ ३० | ११ ११ | १२ ३६ | १३ ५९ | १५ ३२ | १७ २६ | १९ ४० | २२ ०४ | ० २३ | २ ४१ | ५ ०३ |
| 14 | २९ | ७ २२ | ९ २६ | ११ ०७ | १२ ३२ | १३ ५५ | १५ २८ | १७ २२ | १९ ३६ | २२ ०० | ० १९ | २ ३७ | ४ ५९ |
| 15 | पौ. | ७ १८ | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - |

# दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

## पौष (दिसम्बर-जनवरी)

| दिसंबर | पौष प्रवि | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 15 | १ | ९ २२ | ११ ०३ | १२ २८ | १३ ५१ | १५ २४ | १७ १८ | १९ ३२ | २१ ५६ | ० २५ | २ ३३ | ४ ५५ | ७ १० |
| 16 | २ | ९ १८ | १० ५९ | १२ २४ | १३ ४७ | १५ २० | १७ १४ | १९ २८ | २१ ५२ | ० ११ | २ २९ | ४ ५० | ७ १० |
| 17 | ३ | ९ १४ | १० ५५ | १२ २१ | १३ ४३ | १५ १६ | १७ १० | १९ २४ | २१ ४८ | ० ०७ | २ २५ | ४ ४६ | ७ ०६ |
| 18 | ४ | ९ १० | १० ५२ | १२ १७ | १३ ३९ | १५ १२ | १७ ०६ | १९ २० | २१ ४४ | ० ०३ | २ २१ | ४ ४२ | ७ ०२ |
| 19 | ५ | ९ ०६ | १० ४८ | १२ १३ | १३ ३५ | १५ ०८ | १७ ०२ | १९ १६ | २१ ४० | २३ ५९ | २ १७ | ४ ३८ | ६ ५८ |
| 20 | ६ | ९ ०२ | १० ४४ | १२ ०९ | १३ ३१ | १५ ०४ | १६ ५८ | १९ १२ | २१ ३६ | २३ ५५ | २ १३ | ४ ३४ | ६ ५४ |
| 21 | ७ | ८ ५८ | १० ४० | १२ ०५ | १३ २७ | १५ ०० | १६ ५४ | १९ ०८ | २१ ३२ | २३ ५१ | २ १० | ४ ३० | ६ ५० |
| 22 | ८ | ८ ५४ | १० ३६ | १२ ०१ | १३ २३ | १४ ५६ | १६ ५० | १९ ०५ | २१ २८ | २३ ४७ | २ ०६ | ४ २६ | ६ ४६ |
| 23 | ९ | ८ ५० | १० ३२ | ११ ५७ | १३ १९ | १४ ५२ | १६ ४६ | १९ ०१ | २१ २४ | २३ ४३ | २ ०२ | ४ २२ | ६ ४२ |
| 24 | १० | ८ ४७ | १० २८ | ११ ५३ | १३ १५ | १४ ४८ | १६ ४३ | १८ ५७ | २१ २० | २३ ३९ | १ ५८ | ४ १८ | ६ ३८ |
| 25 | ११ | ८ ४३ | १० २४ | ११ ४९ | १३ ११ | १४ ४४ | १६ ३९ | १८ ५३ | २१ १६ | २३ ३५ | १ ५४ | ४ १४ | ६ ३५ |
| 26 | १२ | ८ ३९ | १० २० | ११ ४५ | १३ ०८ | १४ ४० | १६ ३५ | १८ ४९ | २१ १२ | २३ ३१ | १ ५० | ४ १० | ६ ३१ |
| 27 | १३ | ८ ३५ | १० १६ | ११ ४१ | १३ ०४ | १४ ३७ | १६ ३१ | १८ ४५ | २१ ०८ | २३ २७ | १ ४६ | ४ ०७ | ६ २७ |
| 28 | १४ | ८ ३१ | १० १२ | ११ ३७ | १३ ०० | १४ ३३ | १६ २७ | १८ ४१ | २१ ०४ | २३ २३ | १ ४२ | ४ ०३ | ६ २३ |
| 29 | १५ | ८ २७ | १० ०८ | ११ ३३ | १२ ५६ | १४ २९ | १६ २३ | १८ ३७ | २१ ०० | २३ १९ | १ ३८ | ३ ५९ | ६ १९ |
| 30 | १६ | ८ २३ | १० ०४ | ११ २९ | १२ ५२ | १४ २५ | १६ १९ | १८ ३३ | २० ५६ | २३ १५ | १ ३४ | ३ ५५ | ६ १५ |
| 31 | १७ | ८ १९ | १० ०० | ११ २५ | १२ ४८ | १४ २१ | १६ १५ | १८ २९ | २० ५२ | २३ ११ | १ ३० | ३ ५१ | ६ ११ |
| जन. | १८ | ८ १५ | ९ ५६ | ११ २१ | १२ ४४ | १४ १७ | १६ ११ | १८ २५ | २० ४८ | २३ ०७ | १ २६ | ३ ४७ | ६ ७ |
| 2 | १९ | ८ ११ | ९ ५२ | ११ १७ | १२ ४० | १४ १३ | १६ ०७ | १८ २१ | २० ४४ | २३ ०३ | १ २२ | ३ ४३ | ६ ३ |
| 3 | २० | ८ ०७ | ९ ४८ | ११ १३ | १२ ३६ | १४ ०९ | १६ ०३ | १८ १७ | २० ४० | २२ ५९ | १ १८ | ३ ३९ | ५ ५९ |
| 4 | २१ | ८ ०३ | ९ ४४ | ११ ०९ | १२ ३२ | १४ ०५ | १५ ५९ | १८ १३ | २० ३६ | २२ ५५ | १ १४ | ३ ३५ | ५ ५५ |
| 5 | २२ | ७ ५९ | ९ ४० | ११ ०५ | १२ २८ | १४ ०१ | १५ ५५ | १८ ०९ | २० ३२ | २२ ५१ | १ १० | ३ ३१ | ५ ५१ |
| 6 | २३ | ७ ५५ | ९ ३६ | ११ ०१ | १२ २४ | १३ ५७ | १५ ५१ | १८ ०५ | २० २८ | २२ ४७ | १ ०६ | ३ २७ | ५ ४७ |
| 7 | २४ | ७ ५१ | ९ ३२ | १० ५७ | १२ २० | १३ ५३ | १५ ४७ | १८ ०१ | २० २४ | २२ ४३ | १ ०२ | ३ २३ | ५ ४३ |
| 8 | २५ | ७ ४७ | ९ २८ | १० ५३ | १२ १६ | १३ ४९ | १५ ४३ | १७ ५७ | २० २० | २२ ३९ | ० ५८ | ३ १९ | ५ ३९ |
| 9 | २६ | ७ ४३ | ९ २४ | १० ४९ | १२ १२ | १३ ४५ | १५ ३९ | १७ ५३ | २० १६ | २२ ३५ | ० ५४ | ३ १५ | ५ ३५ |
| 10 | २७ | ७ ३९ | ९ २० | १० ४५ | १२ ०८ | १३ ४१ | १५ ३५ | १७ ४९ | २० १२ | २२ ३१ | ० ५० | ३ ११ | ५ ३१ |
| 11 | २८ | ७ ३५ | ९ १६ | १० ४१ | १२ ०४ | १३ ३७ | १५ ३१ | १७ ४५ | २० ०८ | २२ २७ | ० ४६ | ३ ०७ | ५ २७ |
| 12 | २९ | ७ ३१ | ९ १२ | १० ३७ | १२ ०० | १३ ३३ | १५ २७ | १७ ४१ | २० ०४ | २२ २३ | ० ४२ | ३ ०३ | ५ २३ |
| 13 | ३० | ७ २७ | ९ ०८ | १० ३३ | ११ ५६ | १३ २९ | १५ २३ | १७ ३७ | २० ०० | २२ १९ | ० ३८ | २ ५९ | ५ १९ |
| 14 | मा. | ७ २३ | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – |

## माघ (जनवरी-फरवरी)

| जनवरी | माघ प्रवि | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 14 | १ | ९ ०४ | १० २९ | ११ ५२ | १३ २५ | १५ १९ | १७ ३३ | १९ ५६ | २२ १५ | ० ३४ | २ ५५ | ५ १५ | ७ १९ |
| 15 | २ | ९ ०० | १० २५ | ११ ४८ | १३ २१ | १५ १५ | १७ २९ | १९ ५२ | २२ ११ | ० ३० | २ ५१ | ५ ११ | ७ १५ |
| 16 | ३ | ८ ५७ | १० २२ | ११ ४५ | १३ १८ | १५ १२ | १७ २५ | १९ ४९ | २२ ८ | ० २७ | २ ४७ | ५ ७ | ७ ११ |
| 17 | ४ | ८ ५३ | १० १८ | ११ ४१ | १३ १४ | १५ ८ | १७ २१ | १९ ४५ | २२ ४ | ० २३ | २ ४३ | ५ ३ | ७ ७ |
| 18 | ५ | ८ ४९ | १० १४ | ११ ३७ | १३ १० | १५ ४ | १७ १८ | १९ ४१ | २२ ० | ० १९ | २ ३९ | ४ ५९ | ७ ३ |
| 19 | ६ | ८ ४५ | १० १० | ११ ३३ | १३ ६ | १५ ०० | १७ १४ | १९ ३७ | २१ ५६ | ० १५ | २ ३५ | ४ ५६ | ६ ५९ |
| 20 | ७ | ८ ४१ | १० ०६ | ११ २९ | १३ २ | १४ ५६ | १७ १० | १९ ३३ | २१ ५२ | ० ११ | २ ३१ | ४ ५२ | ६ ५५ |
| 21 | ८ | ८ ३७ | १० २ | ११ २५ | १२ ५८ | १४ ५२ | १७ ९ | १९ २९ | २१ ४८ | ० ७ | २ २७ | ४ ५७ | ६ ५२ |
| 22 | ९ | ८ ३३ | ९ ५८ | ११ २१ | १२ ५४ | १४ ४८ | १७ २ | १९ २५ | २१ ४४ | ० ३ | २ २३ | ४ ४४ | ६ ४८ |
| 23 | १० | ८ २९ | ९ ५४ | ११ १७ | १२ ५० | १४ ४४ | १६ ५८ | १९ २१ | २१ ४० | २३ ५९ | २ १९ | ४ ४० | ६ ४४ |
| 24 | ११ | ८ २५ | ९ ५० | ११ १३ | १२ ४६ | १४ ४० | १६ ५४ | १९ १८ | २१ ३६ | २३ ५५ | २ १६ | ४ ३६ | ६ ४० |
| 25 | १२ | ८ २१ | ९ ४६ | ११ ९ | १२ ४२ | १४ ३६ | १६ ५० | १९ १४ | २१ ३२ | २३ ५१ | २ १२ | ४ ३२ | ६ ३६ |
| 26 | १३ | ८ १८ | ९ ४३ | ११ ६ | १२ ३९ | १४ ३३ | १६ ४७ | १९ १० | २१ २९ | २३ ४८ | २ ८ | ४ २८ | ६ ३२ |
| 27 | १४ | ८ १४ | ९ ३९ | ११ २ | १२ ३५ | १४ २९ | १६ ४३ | १९ ६ | २१ २५ | २३ ४४ | २ ४ | ४ २४ | ६ २८ |
| 28 | १५ | ८ १० | ९ ३५ | १० ५८ | १२ ३१ | १४ २५ | १६ ३९ | १९ २ | २१ २१ | २३ ४० | २ ० | ४ २० | ६ २४ |
| 29 | १६ | ८ ०६ | ९ ३१ | १० ५४ | १२ २७ | १४ २१ | १६ ३५ | १८ ५८ | २१ १७ | २३ ३६ | १ ५६ | ४ १६ | ६ २० |
| 30 | १७ | ८ २ | ९ २७ | १० ५० | १२ २३ | १४ १७ | १६ ३१ | १८ ५४ | २१ १३ | २३ ३२ | १ ५२ | ४ १३ | ६ १७ |
| 31 | १८ | ७ ५८ | ९ २३ | १० ४६ | १२ १९ | १४ १३ | १६ २७ | १८ ५० | २१ ९ | २३ २८ | १ ४८ | ४ ९ | ६ १३ |
| फर | १९ | ७ ५४ | ९ १९ | १० ४२ | १२ १५ | १४ ९ | १६ २३ | १८ ४६ | २१ ५ | २३ २४ | १ ४४ | ४ ५ | ६ ९ |
| 2 | २० | ७ ५० | ९ १५ | १० ३८ | १२ ११ | १४ ५ | १६ १९ | १८ ४२ | २१ १ | २३ २० | १ ४० | ४ १ | ६ ५ |
| 3 | २१ | ७ ४६ | ९ ११ | १० ३४ | १२ ७ | १४ १ | १६ १५ | १८ ३८ | २० ५७ | २३ १६ | १ ३६ | ३ ५७ | ६ १ |
| 4 | २२ | ७ ४२ | ९ ७ | १० ३० | १२ ३ | १३ ५७ | १६ ११ | १८ ३४ | २० ५३ | २३ १२ | १ ३२ | ३ ५३ | ५ ५७ |
| 5 | २३ | ७ ३८ | ९ ३ | १० २६ | ११ ५९ | १३ ५३ | १६ ७ | १८ ३० | २० ५० | २३ ८ | १ २८ | ३ ४९ | ५ ५३ |
| 6 | २४ | ७ ३४ | ८ ५९ | १० २२ | ११ ५५ | १३ ४९ | १६ ३ | १८ २६ | २० ४६ | २३ ४ | १ २५ | ३ ४५ | ५ ४९ |
| 7 | २५ | ७ ३० | ८ ५५ | १० १८ | ११ ५१ | १३ ४५ | १५ ५९ | १८ २२ | २० ४२ | २३ ० | १ २१ | ३ ४१ | ५ ४५ |
| 8 | २६ | ७ २६ | ८ ५१ | १० १४ | ११ ४७ | १३ ४१ | १५ ५५ | १८ १८ | २० ३८ | २२ ५६ | १ १७ | ३ ३७ | ५ ४१ |
| 9 | २७ | ७ २२ | ८ ४७ | १० १० | ११ ४३ | १३ ३७ | १५ ५१ | १८ १५ | २० ३४ | २२ ५२ | १ १३ | ३ ३३ | ५ ३७ |
| 10 | २८ | ७ १८ | ८ ४३ | १० ६ | ११ ३९ | १३ ३३ | १५ ४७ | १८ ११ | २० ३० | २२ ४८ | १ ९ | ३ २९ | ५ ३३ |
| 11 | २९ | ७ १४ | ८ ३९ | १० २ | ११ ३५ | १३ २९ | १५ ४३ | १८ ७ | २० २६ | २२ ४४ | १ ५ | ३ २५ | ५ २९ |
| 12 | फा. | ७ १० | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – |

# दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

## फाल्गुन (फरवरी-मार्च)

| फरवरी | फाल्गुन | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 12 | १ | ८ ३५ | ९ ५८ | ११ ३१ | १३ २५ | १५ ३९ | १८ ०३ | २० २२ | २२ ४० | १ ०१ | ३ २१ | ५ २५ | ७ ०७ |
| 13 | २ | ८ ३१ | ९ ५४ | ११ २७ | १३ २१ | १५ ३५ | १७ ५९ | २० १८ | २२ ३६ | ० ५७ | ३ १७ | ५ २१ | ७ ३ |
| 14 | ३ | ८ २७ | ९ ५० | ११ २३ | १३ १७ | १५ ३१ | १७ ५५ | २० १४ | २२ ३२ | ० ५३ | ३ १३ | ५ १७ | ६ ५९ |
| 15 | ४ | ८ २३ | ९ ४६ | ११ १९ | १३ १३ | १५ २७ | १७ ५१ | २० १० | २२ २८ | ० ४९ | ३ ९ | ५ १३ | ६ ५५ |
| 16 | ५ | ८ १९ | ९ ४२ | ११ १५ | १३ ९ | १५ २३ | १७ ४७ | २० ६ | २२ २४ | ० ४५ | ३ ५ | ५ ९ | ६ ५१ |
| 17 | ६ | ८ १५ | ९ ३८ | ११ ११ | १३ ५ | १५ १९ | १७ ४३ | २० २ | २२ २० | ० ४१ | ३ १ | ५ ६ | ६ ४७ |
| 18 | ७ | ८ ११ | ९ ३४ | ११ ७ | १३ १ | १५ १५ | १७ ३९ | १९ ५८ | २२ १६ | ० ३७ | २ ५७ | ५ २ | ६ ४३ |
| 19 | ८ | ८ ७ | ९ ३० | ११ ३ | १२ ५७ | १५ ११ | १७ ३५ | १९ ५४ | २२ १२ | ० ३३ | २ ५३ | ४ ५८ | ६ ३९ |
| 20 | ९ | ८ ४ | ९ २७ | ११ ० | १२ ५३ | १५ ७ | १७ ३१ | १९ ५० | २२ ८ | ० २९ | २ ४९ | ४ ५४ | ६ ३५ |
| 21 | १० | ८ ० | ९ २३ | १० ५६ | १२ ५० | १५ ४ | १७ २७ | १९ ४६ | २२ ४ | ० २५ | २ ४६ | ४ ५० | ६ ३१ |
| 22 | ११ | ७ ५६ | ९ १९ | १० ५२ | १२ ४६ | १५ ० | १७ २३ | १९ ४२ | २२ ० | ० २१ | २ ४२ | ४ ४६ | ६ २७ |
| 23 | १२ | ७ ५२ | ९ १४ | १० ४८ | १२ ४२ | १४ ५६ | १७ १९ | १९ ३८ | २१ ५६ | ० १८ | २ ३८ | ४ ४२ | ६ २३ |
| 24 | १३ | ७ ४८ | ९ १० | १० ४४ | १२ ३८ | १४ ५२ | १७ १५ | १९ ३४ | २१ ५२ | ० १४ | २ ३४ | ४ ३८ | ६ १९ |
| 25 | १४ | ७ ४४ | ९ ०६ | १० ४० | १२ ३४ | १४ ४८ | १७ ११ | १९ ३० | २१ ४८ | ० १० | २ ३० | ४ ३४ | ६ १५ |
| 26 | १५ | ७ ४० | ९ ०२ | १० ३६ | १२ ३० | १४ ४४ | १७ ०७ | १९ २६ | २१ ४४ | ० ०६ | २ २६ | ४ ३० | ६ ११ |
| 27 | १६ | ७ ३६ | ८ ५८ | १० ३२ | १२ २६ | १४ ४० | १७ ०३ | १९ २२ | २१ ४० | ० ०२ | २ २२ | ४ २६ | ६ ०७ |
| 28 | १७ | ७ ३२ | ८ ५४ | १० २८ | १२ २२ | १४ ३६ | १६ ५९ | १९ १८ | २१ ३६ | २३ ५८ | २ १८ | ४ २२ | ६ ०३ |
| मार्च | १८ | ७ २८ | ८ ५१ | १० २४ | १२ १८ | १४ ३२ | १६ ५५ | १९ १४ | २१ ३२ | २३ ५४ | २ १४ | ४ १८ | ६ ० |
| 2 | १९ | ७ २४ | ८ ४७ | १० २० | १२ १४ | १४ २८ | १६ ५१ | १९ १० | २१ २८ | २३ ५० | २ १० | ४ १४ | ५ ५६ |
| 3 | २० | ७ २१ | ८ ४४ | १० १७ | १२ ११ | १४ २५ | १६ ४७ | १९ ६ | २१ २४ | २३ ४६ | २ ६ | ४ १० | ५ ५२ |
| 4 | २१ | ७ १७ | ८ ४० | १० १३ | १२ ७ | १४ २१ | १६ ४३ | १९ २ | २१ २० | २३ ४२ | २ २ | ४ ६ | ५ ४८ |
| 5 | २२ | ७ १३ | ८ ३६ | १० ९ | १२ ३ | १४ १७ | १६ ३९ | १८ ५८ | २१ १६ | २३ ३९ | १ ५८ | ४ ३ | ५ ४४ |
| 6 | २३ | ७ ९ | ८ ३२ | १० ५ | ११ ५९ | १४ १३ | १६ ३५ | १८ ५४ | २१ १२ | २३ ३५ | १ ५४ | ३ ५९ | ५ ४० |
| 7 | २४ | ७ ५ | ८ २८ | १० १ | ११ ५५ | १४ ९ | १६ ३१ | १८ ५० | २१ ९ | २३ ३१ | १ ५० | ३ ५५ | ५ ३६ |
| 8 | २५ | ७ १ | ८ २४ | ९ ५७ | ११ ५१ | १४ ५ | १६ २७ | १८ ४६ | २१ ५ | २३ २७ | १ ४६ | ३ ५१ | ५ ३२ |
| 9 | २६ | ६ ५७ | ८ २० | ९ ५३ | ११ ४७ | १४ १ | १६ २४ | १८ ४३ | २१ १ | २३ २३ | १ ४३ | ३ ४७ | ५ २८ |
| 10 | २७ | ६ ५३ | ८ १६ | ९ ४९ | ११ ४३ | १३ ५७ | १६ २० | १८ ३९ | २० ५७ | २३ १९ | १ ३९ | ३ ४३ | ५ २४ |
| 11 | २८ | ६ ४९ | ८ १२ | ९ ४५ | ११ ३९ | १३ ५३ | १६ १७ | १८ ३५ | २० ५३ | २३ १५ | १ ३५ | ३ ३९ | ५ २० |
| 12 | २९ | ६ ४५ | ८ ८ | ९ ४१ | ११ ३५ | १३ ४९ | १६ १३ | १८ ३२ | २० ४९ | २३ १२ | १ ३१ | ३ ३५ | ५ १७ |
| 13 | ३० | ६ ४१ | ८ ४ | ९ ३७ | ११ ३१ | १३ ४५ | १६ ९ | १८ २८ | २० ४५ | २३ ८ | १ २८ | ३ ३२ | ५ १३ |
| 14 | चैत्र | ६ ३७ | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - |

## चैत्र (मार्च-अप्रैल)

| मार्च | चैत्र प्रवि | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 14 | १ | ८ ०० | ९ ३३ | ११ २७ | १३ ४१ | १६ ५ | १८ २४ | २० ४१ | २३ ७ | १ २४ | ३ २८ | ५ ९ | ६ ३३ |
| 15 | २ | ७ ५६ | ९ २९ | ११ २३ | १३ ३७ | १६ १ | १८ २० | २० ३७ | २३ ० | १ २० | ३ २४ | ५ ५ | ६ २९ |
| 16 | ३ | ७ ५२ | ९ २५ | ११ १९ | १३ ३३ | १५ ५७ | १८ १६ | २० ३३ | २२ ५६ | १ १६ | ३ २० | ५ १ | ६ २५ |
| 17 | ४ | ७ ४८ | ९ २१ | ११ १५ | १३ २९ | १५ ५३ | १८ १२ | २० २९ | २२ ५२ | १ १२ | ३ १६ | ४ ५७ | ६ २१ |
| 18 | ५ | ७ ४४ | ९ १७ | ११ ११ | १३ २५ | १५ ४९ | १८ ८ | २० २५ | २२ ४८ | १ ८ | ३ १२ | ४ ५३ | ६ १७ |
| 19 | ६ | ७ ४० | ९ १३ | ११ ७ | १३ २१ | १५ ४५ | १८ ४ | २० २१ | २२ ४४ | १ ४ | ३ ८ | ४ ४९ | ६ १३ |
| 20 | ७ | ७ ३६ | ९ ९ | ११ ३ | १३ १८ | १५ ४१ | १८ ० | २० १७ | २२ ४० | १ ० | ३ ४ | ४ ४५ | ६ ९ |
| 21 | ८ | ७ ३२ | ९ ५ | १० ५९ | १३ १४ | १५ ३७ | १७ ५६ | २० १३ | २२ ३६ | ० ५६ | ३ ०० | ४ ४१ | ६ ५ |
| 22 | ९ | ७ २८ | ९ १ | १० ५५ | १३ १० | १५ ३३ | १७ ५२ | २० ९ | २२ ३२ | ० ५२ | २ ५६ | ४ ३७ | ६ १ |
| 23 | १० | ७ २५ | ८ ५७ | १० ५२ | १३ ६ | १५ २९ | १७ ४८ | २० ५ | २२ २८ | ० ४८ | २ ५२ | ४ ३३ | ५ ५७ |
| 24 | ११ | ७ २१ | ८ ५३ | १० ४८ | १३ २ | १५ २५ | १७ ४४ | २० १ | २२ २४ | ० ४४ | २ ४८ | ४ ३० | ५ ५३ |
| 25 | १२ | ७ १७ | ८ ४९ | १० ४४ | १२ ५८ | १५ २१ | १७ ४० | १९ ५७ | २२ २० | ० ४० | २ ४४ | ४ २६ | ५ ४९ |
| 26 | १३ | ७ १३ | ८ ४५ | १० ४० | १२ ५४ | १५ १७ | १७ ३६ | १९ ५४ | २२ १६ | ० ३६ | २ ४० | ४ २२ | ५ ४५ |
| 27 | १४ | ७ ९ | ८ ४२ | १० ३६ | १२ ५० | १५ १३ | १७ ३२ | १९ ५० | २२ १२ | ० ३२ | २ ३६ | ४ १८ | ५ ४१ |
| 28 | १५ | ७ ५ | ८ ३८ | १० ३२ | १२ ४६ | १५ ९ | १७ २८ | १९ ४६ | २२ ८ | ० २८ | २ ३३ | ४ १४ | ५ ३७ |
| 29 | १६ | ७ १ | ८ ३४ | १० २८ | १२ ४२ | १५ ५ | १७ २४ | १९ ४२ | २२ ४ | ० २४ | २ २९ | ४ १० | ५ ३४ |
| 30 | १७ | ६ ५७ | ८ ३० | १० २४ | १२ ३९ | १५ १ | १७ २० | १९ ३८ | २२ ० | ० २० | २ २५ | ४ ६ | ५ ३० |
| 31 | १८ | ६ ५३ | ८ २६ | १० २० | १२ ३५ | १४ ५७ | १७ १६ | १९ ३४ | २१ ५६ | ० १६ | २ २१ | ४ २ | ५ २६ |
| अप्रै | १९ | ६ ४९ | ८ २२ | १० १६ | १२ ३१ | १४ ५३ | १७ १२ | १९ ३० | २१ ५२ | ० १२ | २ १७ | ३ ५८ | ५ २२ |
| 2 | २० | ६ ४५ | ८ १८ | १० १२ | १२ २७ | १४ ४९ | १७ ८ | १९ २६ | २१ ४८ | ० ८ | २ १३ | ३ ५४ | ५ १८ |
| 3 | २१ | ६ ४१ | ८ १४ | १० ८ | १२ २३ | १४ ४५ | १७ ४ | १९ २२ | २१ ४४ | ० ४ | २ ९ | ३ ५० | ५ १४ |
| 4 | २२ | ६ ३७ | ८ १० | १० ४ | १२ १९ | १४ ४१ | १७ ० | १९ १९ | २१ ४० | २४ ०० | २ ५ | ३ ४६ | ५ १० |
| 5 | २३ | ६ ३३ | ८ ०६ | १० ० | १२ १५ | १४ ३७ | १६ ५६ | १९ १५ | २१ ३७ | २३ ५७ | २ १ | ३ ४२ | ५ ६ |
| 6 | २४ | ६ ३० | ८ ३ | ९ ५६ | १२ ११ | १४ ३३ | १६ ५२ | १९ ११ | २१ ३३ | २३ ५३ | १ ५७ | ३ ३८ | ५ २ |
| 7 | २५ | ६ २६ | ७ ५९ | ९ ५३ | १२ ७ | १४ २९ | १६ ४९ | १९ ७ | २१ २९ | २३ ४९ | १ ५३ | ३ ३४ | ४ ५८ |
| 8 | २६ | ६ २२ | ७ ५५ | ९ ४९ | १२ ३ | १४ २५ | १६ ४५ | १९ ३ | २१ २५ | २३ ४५ | १ ४९ | ३ ३० | ४ ५४ |
| 9 | २७ | ६ १८ | ७ ५१ | ९ ४५ | ११ ५९ | १४ २१ | १६ ४१ | १८ ५९ | २१ २१ | २३ ४१ | १ ४५ | ३ २६ | ४ ५१ |
| 10 | २८ | ६ १४ | ७ ४७ | ९ ४१ | ११ ५५ | १४ १७ | १६ ३७ | १८ ५५ | २१ १७ | २३ ३७ | १ ४१ | ३ २२ | ४ ४७ |
| 11 | २९ | ६ १० | ७ ४३ | ९ ३७ | ११ ५१ | १४ १४ | १६ ३३ | १८ ५१ | २१ १३ | २३ ३३ | १ ३७ | ३ १८ | ४ ४३ |
| 12 | ३० | ६ ६ | ७ ३९ | ९ ३३ | ११ ४७ | १४ १० | १६ २९ | १८ ४७ | २१ ९ | २३ २९ | १ ३४ | ३ १४ | ४ ३९ |
| 13 | वै. | ६ २ | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - | - - |

# चन्द्रमा-स्पष्ट द्वारा विंशोतरी दशा का भोग्य काल जानना

नीचे चन्द्रमा के अंश-कला की तालिका के सामने चन्द्र संचार की मेषादि बारह राशियों की तालिका तथा उनके द्वारा केतु, सूर्य, भौमादि ग्रहों द्वारा भोग्य दशा वर्षों की सारिणी लिख रहे हैं। ध्यान रहे, आपके द्वारा किया गया चन्द्र स्पष्ट नितान्त शुद्ध होना चाहिए। चन्द्र स्पष्ट निकालने की सरल विधि हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व का अवलोकन करे॥

## सारिणी नं० I ( क )

| चंद्र स्पष्ट | | चन्द्र राशि | | | | चन्द्र राशि | | | | चन्द्र राशि | | | | चन्द्र राशि | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | मेष-सिंह-धनु | | | | वृष-कन्या-मकर | | | | मिथुन-तुला-कुम्भ | | | | कर्क-वृश्चिक-मीन | | | |
| अंश-कला | | भोग्य | वर्ष | मास | दिन | भोग्य | वर्ष | मास | दिन | भोग्य | वर्ष | मास | दिन | भोग्य | वर्ष | मास | दिन |
| ०० | ०० | केतु | ७ | ० | ० | सूर्य | ४ | ६ | ० | मंग | ३ | ६ | ० | गुरु | ४ | ० | ० |
| ० | १० | | ६ | १० | २९ | | ४ | ५ | ३ | | ३ | ४ | २८ | | ३ | ९ | १८ |
| ० | २० | | ६ | ९ | २७ | | ४ | ४ | ६ | | ३ | ३ | २७ | | ३ | ७ | ६ |
| ० | ३० | | ६ | ८ | २६ | | ४ | ३ | ९ | | ३ | २ | २५ | | ३ | ४ | २४ |
| ० | ४० | | ६ | ७ | २४ | | ४ | २ | १२ | | ३ | १ | २४ | | ३ | २ | १२ |
| ० | ५० | | ६ | ६ | २३ | | ४ | १ | १५ | | ३ | ० | २२ | | ३ | ० | ० |
| १ | ०० | | ६ | ५ | २१ | | ४ | ० | १८ | | २ | ११ | २१ | | २ | ९ | १८ |
| १ | १० | | ६ | ४ | २० | | ३ | ११ | २१ | | २ | १० | १९ | | २ | ७ | ६ |
| १ | २० | | ६ | ३ | १८ | | ३ | १० | २४ | | २ | ९ | १८ | | २ | ४ | २४ |
| १ | ३० | | ६ | २ | १७ | | ३ | ९ | २७ | | २ | ८ | १६ | | २ | २ | १२ |
| १ | ४० | | ६ | १ | १५ | * | ३ | ९ | ० | | २ | ७ | १५ | | २ | ० | ० |
| १ | ५० | | ६ | ० | १४ | | ३ | ८ | ३ | | २ | ६ | १३ | | १ | ९ | १८ |
| २ | ०० | | ५ | ११ | १२ | | ३ | ७ | ६ | | २ | ५ | १२ | | १ | ७ | ६ |
| २ | १० | | ५ | १० | ११ | | ३ | ६ | ९ | | २ | ४ | १० | | १ | ४ | २४ |
| २ | २० | | ५ | ९ | ९ | | ३ | ५ | १२ | | २ | ३ | ९ | | १ | २ | १२ |
| २ | ३० | | ५ | ८ | ८ | | ३ | ४ | १५ | | २ | २ | ७ | | १ | ० | ० |
| २ | ४० | | ५ | ७ | ६ | | ३ | ३ | १८ | | २ | १ | ६ | | ० | ९ | १८ |
| २ | ५० | | ५ | ६ | ५ | | ३ | २ | २१ | | २ | ० | ४ | | ० | ७ | ६ |
| ३ | ०० | | ५ | ५ | ३ | | ३ | १ | २४ | | १ | ११ | ३ | | ० | ४ | २४ |
| ३ | १० | | ५ | ४ | २ | | ३ | ० | २७ | | १ | १० | १ | गुरु | ० | २ | १२ |
| ३ | २० | | ५ | ३ | ०० | | ३ | ० | ० | | १ | ९ | ० | शनि | १९ | ० | ० |
| ३ | ३० | | ५ | १ | २९ | | २ | ११ | ३ | | १ | ७ | २८ | | १८ | ९ | ४ |
| ३ | ४० | | ५ | ० | २७ | | २ | १० | ६ | | १ | ६ | २७ | | १८ | ६ | ९ |
| ३ | ५० | | ४ | ११ | २६ | | २ | ९ | ९ | | १ | ५ | २५ | | १८ | ३ | १३ |
| ४ | ०० | | ४ | १० | २४ | | २ | ८ | १२ | | १ | ४ | २४ | | १८ | ० | १८ |
| ४ | १० | | ४ | ९ | २३ | | २ | ७ | १५ | | १ | ३ | २२ | | १७ | ९ | २२ |
| ४ | २० | | ४ | ८ | २१ | | २ | ६ | १८ | | १ | २ | २१ | | १७ | ६ | २७ |
| ४ | ३० | | ४ | ७ | २० | | २ | ५ | २१ | | १ | १ | १९ | | १७ | ४ | १ |
| ४ | ४० | | ४ | ६ | १८ | | २ | ४ | २४ | | १ | ० | १८ | | १७ | १ | ६ |
| ४ | ५० | | ४ | ५ | १७ | | २ | ३ | २७ | | ० | ११ | १६ | | १६ | १० | १० |
| ५ | ०० | | ४ | ४ | १५ | | २ | ३ | ० | | ० | १० | १५ | | १६ | ७ | १५ |
| ५ | १० | | ४ | ३ | १४ | | २ | २ | ३ | | ० | ९ | १३ | | १६ | ४ | १९ |
| ५ | २० | | ४ | २ | १२ | | २ | १ | ६ | | ० | ८ | १२ | | १६ | १ | २४ |
| ५ | ३० | | ४ | १ | ११ | | २ | ० | ९ | | ० | ७ | १० | | १५ | १० | २८ |
| ५ | ४० | | ४ | ० | ९ | | १ | ११ | १२ | | ० | ६ | ९ | | १५ | ८ | ३ |
| ५ | ५० | | ३ | ११ | ८ | | १ | १० | १५ | | ० | ५ | ७ | | १५ | ५ | ७ |
| ६ | ० | | ३ | १० | ६ | | १ | ९ | १८ | | ० | ४ | ६ | | १५ | २ | १२ |
| ६ | १० | | ३ | ९ | ५ | | १ | ८ | २१ | | ० | ३ | ४ | | १४ | ११ | १६ |
| ६ | २० | | ३ | ८ | ३ | | १ | ७ | २४ | | ० | २ | ३ | | १४ | ८ | २१ |
| ६ | ३० | | ३ | ७ | २ | | १ | ६ | २७ | मंग | ० | १ | १ | | १४ | ५ | २५ |
| ६ | ४० | | ३ | ६ | ० | | १ | ६ | ० | राहु | १८ | ० | ० | | १४ | ३ | ० |
| ६ | ५० | | ३ | ४ | २९ | | १ | ५ | ३ | | १७ | ९ | ९ | | १४ | ० | ४ |
| ७ | ०० | | ३ | ३ | २७ | | १ | ४ | ६ | | १७ | ६ | १८ | | १३ | ९ | ९ |
| ७ | १० | | ३ | २ | २६ | | १ | ३ | ९ | | १७ | ३ | २७ | | १३ | ६ | १३ |
| ७ | २० | | ३ | १ | २४ | | १ | २ | १२ | | १७ | १ | ६ | | १३ | ३ | १८ |
| ७ | ३० | केतु | ३ | ० | २३ | सूर्य | १ | १ | १५ | राहु | १६ | १० | १५ | शनि | १३ | ० | २२ |

| चंद्र स्पष्ट | | चन्द्र राशि | | | | चन्द्र राशि | | | | चन्द्र राशि | | | | चन्द्र राशि | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | मेष-सिंह-धनु | | | | वृष-कन्या-मकर | | | | मिथुन-तुला-कुम्भ | | | | कर्क-वृश्चिक-मीन | | | |
| अंश-कला | | भोग्य | वर्ष | मास | दिन | भोग्य | वर्ष | मास | दिन | भोग्य | वर्ष | मास | दिन | भोग्य | वर्ष | मास | दिन |
| ७ | ४० | केतु | २ | ११ | २१ | सूर्य | १ | ० | १८ | राहु | १६ | ७ | २४ | शनि | १२ | ९ | २७ |
| ७ | ५० | | २ | १० | २० | | ० | ११ | २१ | | १६ | ५ | ३ | | १२ | ७ | १ |
| ८ | ०० | | २ | ९ | १८ | | ० | १० | २४ | | १६ | २ | १२ | | १२ | ४ | ६ |
| ८ | १० | | २ | ८ | १७ | | ० | ९ | २७ | | १५ | ११ | २१ | | १२ | १ | १० |
| ८ | २० | | २ | ७ | १५ | | ० | ९ | ० | | १५ | ९ | ० | | ११ | १० | १५ |
| ८ | ३० | | २ | ६ | १४ | | ० | ८ | ३ | | १५ | ६ | ९ | | ११ | ७ | १९ |
| ८ | ४० | | २ | ५ | १२ | | ० | ७ | ६ | | १५ | ३ | १८ | | ११ | ४ | २४ |
| ८ | ५० | | २ | ४ | ११ | | ० | ६ | ९ | | १५ | ० | २७ | | ११ | १ | २८ |
| ९ | ० | | २ | ३ | ९ | | ० | ५ | १२ | | १४ | १० | ६ | | १० | ११ | ३ |
| ९ | १० | | २ | २ | ८ | | ० | ४ | १५ | | १४ | ७ | १५ | | १० | ८ | ७ |
| ९ | २० | | २ | १ | ६ | | ० | ३ | १८ | | १४ | ४ | २४ | | १० | ५ | १२ |
| ९ | ३० | | २ | ० | ५ | | ० | २ | २१ | | १४ | २ | ३ | | १० | २ | १६ |
| ९ | ४० | | १ | ११ | ३ | | ० | १ | २४ | | १३ | ११ | १२ | | ९ | ११ | २१ |
| ९ | ५० | | १ | १० | २ | सूर्य | ० | ० | २७ | | १३ | ८ | २१ | | ९ | ८ | २५ |
| १० | ० | | १ | ९ | ० | चंद्र | १० | ० | ० | | १३ | ६ | ० | | ९ | ६ | ० |
| १० | १० | | १ | ७ | २९ | | ९ | १० | १५ | | १३ | ३ | ९ | | ९ | ३ | ४ |
| १० | २० | | १ | ६ | २७ | | ९ | ९ | ० | | १३ | ० | १८ | | ९ | ० | ९ |
| १० | ३० | | १ | ५ | २६ | | ९ | ७ | १५ | | १२ | ९ | २७ | | ८ | ९ | १३ |
| १० | ४० | | १ | ४ | २४ | | ९ | ६ | ० | | १२ | ७ | ६ | | ८ | ६ | १८ |
| १० | ५० | | १ | ३ | २३ | | ९ | ४ | १५ | | १२ | ४ | १५ | | ८ | ३ | २२ |
| ११ | ०० | | १ | २ | २१ | | ९ | ३ | ० | | १२ | १ | २४ | | ८ | ० | २७ |
| ११ | १० | | १ | १ | २० | | ९ | १ | १५ | | ११ | ११ | ३ | | ७ | १० | १ |
| ११ | २० | | १ | ० | १८ | | ९ | ० | ० | | ११ | ८ | १२ | | ७ | ७ | ६ |
| ११ | ३० | | ० | ११ | १७ | | ८ | १० | १५ | | ११ | ५ | २१ | | ७ | ४ | १० |
| ११ | ४० | | ० | १० | १५ | | ८ | ९ | ० | | ११ | ३ | ० | | ७ | १ | १५ |
| ११ | ५० | | ० | ९ | १४ | | ८ | ७ | १५ | | ११ | ० | ९ | | ६ | १० | १९ |
| १२ | ०० | | ० | ८ | १२ | | ८ | ६ | ० | | १० | ९ | १८ | | ६ | ७ | २४ |
| १२ | १० | | ० | ७ | ११ | | ८ | ४ | १५ | | १० | ६ | २७ | | ६ | ४ | २८ |
| १२ | २० | | ० | ६ | ९ | | ८ | ३ | ० | | १० | ४ | ६ | | ६ | २ | ३ |
| १२ | ३० | | ० | ५ | ८ | | ८ | १ | १५ | | १० | १ | १५ | | ५ | ११ | ७ |
| १२ | ४० | | ० | ४ | ६ | | ८ | ० | ० | | ९ | १० | २४ | | ५ | ८ | १२ |
| १२ | ५० | | ० | ३ | ५ | | ७ | १० | १५ | | ९ | ८ | ३ | | ५ | ५ | १६ |
| १३ | ० | | ० | २ | ३ | | ७ | ९ | ० | | ९ | ५ | १२ | | ५ | २ | २१ |
| १३ | १० | केतु | ० | १ | २ | | ७ | ७ | १५ | | ९ | २ | २१ | | ४ | ११ | २५ |
| १३ | २० | शुक्र | २० | ० | ० | | ७ | ६ | ० | | ९ | ० | ० | | ४ | ९ | ० |
| १३ | ३० | | १९ | ९ | ० | | ७ | ४ | १५ | | ८ | ९ | ९ | | ४ | ६ | ४ |
| १३ | ४० | | १९ | ६ | ० | | ७ | ३ | ० | | ८ | ६ | १८ | | ४ | ३ | ९ |
| १३ | ५० | | १९ | ३ | ० | | ७ | १ | १५ | | ८ | ३ | २७ | | ४ | ० | १३ |
| १४ | ०० | | १९ | ० | ० | | ७ | ० | ० | | ८ | १ | ६ | | ३ | ९ | १८ |
| १४ | १० | | १८ | ९ | ० | | ६ | १० | १५ | | ७ | १० | १५ | | ३ | ६ | २२ |
| १४ | २० | | १८ | ६ | ० | | ६ | ९ | ० | | ७ | ७ | २४ | | ३ | ३ | २७ |
| १४ | ३० | | १८ | ३ | ० | | ६ | ७ | १५ | | ७ | ५ | ३ | | ३ | १ | १ |
| १४ | ४० | | १८ | ० | ० | | ६ | ६ | ० | | ७ | २ | १२ | | २ | १० | ६ |
| १४ | ५० | | १७ | ९ | ० | | ६ | ४ | १५ | | ६ | ११ | २१ | | २ | ७ | १० |
| १५ | ०० | | १७ | ६ | ० | | ६ | ३ | ० | | ६ | ९ | ० | | २ | ४ | १५ |
| १५ | १० | शुक्र | १७ | ३ | ० | चंद्र | ६ | १ | १५ | राहु | ६ | ६ | ९ | शनि | २ | १ | १९ |

| चंद्र स्पष्ट | | चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु | | | | चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर | | | | चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ | | | | चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अंश-कला | | भोग्य | वर्ष | मास | दिन | भोग्य | वर्ष | मास | दिन | भोग्य | वर्ष | मास | दिन | भोग्य | वर्ष | मास | दिन |
| १५ | २० | शुक्र | १७ | ० | ० | चन्द्र | ६ | ० | ० | राहु | ६ | ३ | १८ | शनि | १ | १० | २४ |
| १५ | ३० | | १६ | ९ | ० | | ५ | १० | १५ | | ६ | ० | २७ | | १ | ७ | २८ |
| १५ | ४० | | १६ | ६ | ० | | ५ | ९ | ० | | ५ | १० | ६ | | १ | ५ | ३ |
| १५ | ५० | | १६ | ३ | ० | | ५ | ७ | १५ | | ५ | ७ | १५ | | १ | २ | ७ |
| १६ | ० | | १६ | ० | ० | | ५ | ६ | ० | | ५ | ४ | २४ | | ० | ११ | १२ |
| १६ | १० | | १५ | ९ | ० | | ५ | ४ | १५ | | ५ | २ | ३ | | ० | ८ | १६ |
| १६ | २० | | १५ | ६ | ० | | ५ | ३ | ० | | ४ | ११ | १२ | | ० | ५ | २१ |
| १६ | ३० | | १५ | ३ | ० | | ५ | १ | १५ | | ४ | ८ | २१ | शनि | ० | २ | २६ |
| १६ | ४० | | १५ | ० | ० | | ५ | ० | ० | | ४ | ६ | ० | बुध | १७ | ० | ० |
| १६ | ५० | | १४ | ९ | ० | | ४ | १० | १५ | | ४ | ३ | ९ | | १६ | ९ | १३ |
| १७ | ० | | १४ | ६ | ० | | ४ | ९ | ० | | ४ | ० | १८ | | १६ | ६ | २७ |
| १७ | १० | | १४ | ३ | ० | | ४ | ७ | १५ | | ३ | ९ | २७ | | १६ | ४ | १० |
| १७ | २० | | १४ | ० | ० | | ४ | ६ | ० | | ३ | ७ | ६ | | १६ | १ | २४ |
| १७ | ३० | | १३ | ९ | ० | | ४ | ४ | १५ | | ३ | ४ | १५ | | १५ | ११ | ७ |
| १७ | ४० | | १३ | ६ | ० | | ४ | ३ | ० | | ३ | १ | २४ | | १५ | ८ | २१ |
| १७ | ५० | | १३ | ३ | ० | | ४ | १ | १५ | | २ | ११ | ३ | | १५ | ६ | ४ |
| १८ | ० | | १३ | ० | ० | | ४ | ० | ० | | २ | ८ | १२ | | १५ | ३ | १८ |
| १८ | १० | | १२ | ९ | ० | | ३ | १० | १५ | | २ | ५ | २१ | | १५ | १ | १ |
| १८ | २० | | १२ | ६ | ० | | ३ | ९ | ० | | २ | ३ | ० | | १४ | १० | १५ |
| १८ | ३० | | १२ | ३ | ० | | ३ | ७ | १५ | | २ | ० | ९ | | १४ | ७ | २८ |
| १८ | ४० | | १२ | ० | ० | | ३ | ६ | ० | | १ | ९ | १८ | | १४ | ५ | १२ |
| १८ | ५० | | ११ | ९ | ० | | ३ | ४ | १५ | | १ | ६ | २७ | | १४ | २ | २५ |
| १९ | ० | | ११ | ६ | ० | | ३ | ३ | ० | | १ | ४ | ६ | | १४ | ० | ९ |
| १९ | १० | | ११ | ३ | ०० | | ३ | १ | १५ | | १ | १ | १५ | | १३ | ९ | २२ |
| १९ | २० | | ११ | ० | ० | | ३ | ० | ० | | ० | १० | २४ | | १३ | ७ | ६ |
| १९ | ३० | | १० | ९ | ० | | २ | १० | १५ | | ० | ८ | ३ | | १३ | ४ | १९ |
| १९ | ४० | | १० | ६ | ० | | २ | ९ | ० | | ० | ५ | १२ | | १३ | २ | ३ |
| १९ | ५० | | १० | ३ | ० | | २ | ७ | १५ | राहु | ० | २ | २१ | | १२ | ११ | १६ |
| २० | ० | | १० | ० | ० | | २ | ६ | ० | गुरु | १६ | ० | ० | | १२ | ९ | ० |
| २० | १० | | ९ | ९ | ० | | २ | ४ | १५ | | १५ | ९ | १८ | | १२ | ६ | १३ |
| २० | २० | | ९ | ६ | ० | | २ | ३ | ० | | १५ | ७ | ६ | | १२ | ३ | २७ |
| २० | ३० | | ९ | ३ | ० | | २ | १ | १५ | | १५ | ४ | २४ | | १२ | १ | १० |
| २० | ४० | | ९ | ० | ० | | २ | ० | ० | | १५ | २ | १२ | | ११ | १० | २४ |
| २० | ५० | | ८ | ९ | ० | | १ | १० | १५ | | १५ | ० | ० | | ११ | ८ | ७ |
| २१ | ० | | ८ | ६ | ० | | १ | ९ | ० | | १४ | ९ | १८ | | ११ | ५ | २१ |
| २१ | १० | | ८ | ३ | ० | | १ | ७ | १५ | | १४ | ७ | ६ | | ११ | ३ | ४ |
| २१ | २० | | ८ | ० | ० | | १ | ६ | ० | | १४ | ४ | २४ | | ११ | ० | १८ |
| २१ | ३० | | ७ | ९ | ० | | १ | ४ | १५ | | १४ | २ | १२ | | १० | १० | १ |
| २१ | ४० | | ७ | ६ | ० | | १ | ३ | ० | | १४ | ० | ० | | १० | ७ | १५ |
| २१ | ५० | | ७ | ३ | ० | | १ | १ | १५ | | १३ | ९ | १८ | | १० | ४ | २८ |
| २२ | ० | | ७ | ० | ० | | १ | ० | ० | | १३ | ७ | ६ | | १० | २ | १२ |
| २२ | १० | | ६ | ९ | ० | | ० | १० | १५ | | १३ | ४ | २४ | | ९ | ११ | २५ |
| २२ | २० | | ६ | ६ | ० | | ० | ९ | ० | | १३ | २ | १२ | | ९ | ९ | ९ |
| २२ | ३० | | ६ | ३ | ० | | ० | ७ | १५ | | १३ | ० | ० | | ९ | ६ | २२ |
| २२ | ४० | | ६ | ० | ० | | ० | ६ | ० | | १२ | ९ | १८ | | ९ | ४ | ६ |
| २२ | ५० | | ५ | ९ | ० | | ० | ४ | १५ | | १२ | ७ | ६ | | ९ | १ | १९ |
| २३ | ० | | ५ | ६ | ० | | ० | ३ | ० | | १२ | ४ | २४ | | ८ | ११ | ३ |
| २३ | १० | | ५ | ३ | ० | चंद्र | ० | १ | १५ | | १२ | २ | १२ | | ८ | ८ | १६ |
| २३ | २० | | ५ | ० | ० | मंग | ७ | ० | ० | | १२ | ० | ० | | ८ | ६ | ० |
| २३ | ३० | | ४ | ९ | ० | | ६ | १० | २९ | | ११ | ९ | १८ | | ८ | ३ | १३ |
| २३ | ४० | | ४ | ६ | ० | | ६ | ९ | २७ | | ११ | ७ | ६ | | ८ | ० | २७ |
| २३ | ५० | | ४ | ३ | ० | | ६ | ८ | २६ | | ११ | ४ | २४ | | ७ | १० | १० |
| २४ | ० | | ४ | ० | ० | | ६ | ७ | २४ | | ११ | २ | १२ | | ७ | ७ | २४ |
| २४ | १० | | ३ | ९ | ० | | ६ | ६ | २३ | | ११ | ० | ० | | ७ | ५ | ०७ |
| २४ | २० | शुक्र | ३ | ६ | ० | मंग | ६ | ५ | २१ | गुरु | १० | ९ | १८ | बुध | ७ | २ | २१ |

| चंद्र स्पष्ट | | चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु | | | | चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर | | | | चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ | | | | चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अंश-कला | | भोग्य | वर्ष | मास | दिन | भोग्य | वर्ष | मास | दिन | भोग्य | वर्ष | मास | दिन | भोग्य | वर्ष | मास | दिन |
| २४ | ३० | शुक्र | ३ | ३ | ० | मंग | ६ | ४ | २० | गुरु | १० | ७ | ६ | बुध | ७ | ० | ४ |
| २४ | ४० | | ३ | ० | ० | | ६ | ३ | १८ | | १० | ४ | २४ | | ६ | ९ | १८ |
| २४ | ५० | | २ | ९ | ० | | ६ | २ | १७ | | १० | २ | १२ | | ६ | ७ | १ |
| २५ | ० | | २ | ६ | ० | | ६ | १ | १५ | | १० | ० | ० | | ६ | ४ | १५ |
| २५ | १० | | २ | ३ | ० | | ६ | ० | १४ | | ९ | ९ | १८ | | ६ | १ | २८ |
| २५ | २० | | २ | ० | ० | | ५ | ११ | १२ | | ९ | ७ | ६ | | ५ | ११ | १२ |
| २५ | ३० | | १ | ९ | ० | | ५ | १० | ११ | | ९ | ४ | २४ | | ५ | ८ | २५ |
| २५ | ४० | | १ | ६ | ० | | ५ | ९ | ९ | | ९ | २ | १२ | | ५ | ६ | ९ |
| २५ | ५० | | १ | ३ | ० | | ५ | ८ | ८ | | ९ | ० | ० | | ५ | ३ | २२ |
| २६ | ० | | १ | ० | ० | | ५ | ७ | ६ | | ८ | ९ | १८ | | ५ | १ | ६ |
| २६ | १० | | ० | ९ | ० | | ५ | ६ | ५ | | ८ | ७ | ६ | | ४ | १० | १९ |
| २६ | २० | | ० | ६ | ० | | ५ | ५ | ३ | | ८ | ४ | २४ | | ४ | ८ | ३ |
| २६ | ३० | शुक्र | ० | ३ | ० | | ५ | ४ | २ | | ८ | २ | १२ | | ४ | ५ | १६ |
| २६ | ४० | सूर्य | ६ | ० | ० | | ५ | ३ | ० | | ८ | ० | ० | | ४ | ३ | ० |
| २६ | ५० | | ५ | ११ | ३ | | ५ | १ | २९ | | ७ | ९ | १८ | | ४ | ० | १३ |
| २७ | ०० | | ५ | १० | ६ | | ५ | ० | २७ | | ७ | ७ | ६ | | ३ | ९ | २७ |
| २७ | १० | | ५ | ९ | ९ | | ४ | ११ | २६ | | ७ | ४ | २४ | | ३ | ७ | १० |
| २७ | २० | | ५ | ८ | १२ | | ४ | १० | २४ | | ७ | २ | १२ | | ३ | ४ | २४ |
| २७ | ३० | | ५ | ७ | १५ | | ४ | ९ | २३ | | ७ | ० | ० | | ३ | २ | ७ |
| २७ | ४० | | ५ | ६ | १८ | | ४ | ८ | २१ | | ६ | ९ | १८ | | २ | ११ | २१ |
| २७ | ५० | | ५ | ५ | २१ | | ४ | ७ | २० | | ६ | ७ | ६ | | २ | ९ | ४ |
| २८ | ० | | ५ | ४ | २४ | | ४ | ६ | १८ | | ६ | ४ | २४ | | २ | ६ | १८ |
| २८ | १० | | ५ | ३ | २७ | | ४ | ५ | १७ | | ६ | २ | १२ | | २ | ४ | १ |
| २८ | २० | | ५ | ३ | ० | | ४ | ४ | १५ | | ६ | ० | ० | | २ | १ | १५ |
| २८ | ३० | | ५ | २ | ३ | | ४ | ३ | १४ | | ५ | ९ | १८ | | १ | १० | २८ |
| २८ | ४० | | ५ | १ | ६ | | ४ | २ | १२ | | ५ | ७ | ६ | | १ | ८ | १२ |
| २८ | ५० | | ५ | ० | ९ | | ४ | १ | ११ | | ५ | ४ | २४ | | १ | ५ | २५ |
| २९ | ० | | ४ | ११ | १२ | | ४ | ० | ९ | | ५ | २ | १२ | | १ | ३ | ९ |
| २९ | १० | | ४ | १० | १५ | | ३ | ११ | ८ | | ५ | ० | ० | | १ | ० | २२ |
| २९ | २० | | ४ | ९ | १८ | | ३ | १० | ६ | | ४ | ९ | १८ | | ० | १० | ०६ |
| २९ | ३० | | ४ | ८ | २१ | | ३ | ९ | ५ | | ४ | ७ | ६ | | ० | ७ | १९ |
| २९ | ४० | | ४ | ७ | २४ | | ३ | ८ | ३ | | ४ | ४ | २४ | | ० | ५ | ०३ |
| २९ | ५० | | ४ | ६ | २७ | | ३ | ७ | २ | | ४ | २ | १२ | | ० | २ | १७ |
| ३० | ० | सूर्य | ४ | ६ | ० | मंग | ३ | ६ | ० | गुरु | ४ | ० | ० | बुध | ० | ० | ० |

## सारिणी नं० II (ख)

### अनुपातिक चन्द्र कलाओं के अनुसार शेष भोग्य दशा

| कला | केतु | शुक्र | सूर्य | चन्द्र | मंगल | राहु | गुरु | शनि | बुध | कला |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | मा. दि. | मा. दि. | मा. दि. | मा. दि. | मा. दि. | मा. दि. | मा. दि. | मा. दि. | मा. दि. | |
| १ | ० ०३ | ० ०९ | ० ०३ | ० ०५ | ० ०३ | ० ०८ | ० ०७ | ० ०९ | ० ०८ | १ |
| २ | ० ०६ | ० १८ | ० ०५ | ० ०९ | ० ०६ | ० १६ | ० १४ | ० १७ | ० १५ | २ |
| ३ | ० ०९ | ० २७ | ० ०८ | ० १४ | ० ०९ | ० २४ | ० २२ | ० २६ | ० २३ | ३ |
| ४ | ० १३ | १ ०६ | ० ११ | ० १८ | ० १३ | १ ०२ | ० २९ | १ ०४ | १ ०१ | ४ |
| ५ | ० १६ | १ १५ | ० १४ | ० २३ | ० १६ | १ ११ | १ ०६ | १ १३ | १ ०८ | ५ |
| ६ | ० १९ | १ २४ | ० १६ | ० २७ | ० १९ | १ १९ | १ १३ | १ २१ | १ १६ | ६ |
| ७ | ० २२ | २ ०३ | ० १९ | १ ०२ | ० २२ | १ २७ | १ २० | २ ०० | १ २४ | ७ |
| ८ | ० २५ | २ १२ | ० २२ | १ ०६ | ० २५ | २ ०५ | १ २८ | २ ०८ | २ ०१ | ८ |
| ९ | ० २८ | २ २१ | ० २४ | १ ११ | ० २८ | २ १३ | २ ०५ | २ १७ | २ ०९ | ९ |
| १० | १ ०१ | ३ ०० | ० २७ | १ १५ | १ ०१ | २ २१ | २ १२ | २ २६ | २ १७ | १० |

# ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र देखें। जिस ग्रह के नीचे जन्मनक्षत्र होगा, उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं। दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान–जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा कर दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को 12 से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को 30 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा। अधिक सूक्ष्म रूप से दशाऽन्तरदशा का ज्ञान करने के लिए हमारे कार्यालय से 'ज्योतिष तत्त्व' पुस्तक मंगवाकर पढ़ें। मूल्य 225 रु.

| सूर्यदशावर्ष ६ | | | | चन्द्रदशावर्ष १० | | | | भौमदशावर्ष ७ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कृति उ.फा. उ.षा. | | | | रोहि. हस्त श्रवण | | | | मृग. चित्रा. धनि. | | | |
| ग्रह | वर्ष | मा. | दि. | ग्रह | वर्ष | मा. | दि. | ग्रह | वर्ष | मा. | दि. |
| सू. | ० | ३ | १८ | चं. | ० | १० | ० | मं. | ० | ४ | २७ |
| चं. | ० | ६ | ० | मं. | ० | ७ | ० | रा. | १ | ० | १८ |
| मं. | ० | ४ | ६ | रा. | १ | ६ | ० | बृ. | ० | ११ | ६ |
| रा. | ० | १० | २४ | बृ. | १ | ४ | ० | श. | १ | १ | ९ |
| गु. | ० | ९ | १८ | श. | १ | ७ | ० | बु. | ० | ११ | २७ |
| श. | ० | ११ | १२ | बु. | १ | ५ | ० | के. | ० | ४ | २७ |
| बु. | ० | १० | ६ | के. | ० | ७ | ० | शु. | १ | २ | ० |
| के. | ० | ४ | ६ | शु. | १ | ८ | ० | सू. | ० | ४ | ६ |
| शु. | १ | ० | ० | सू. | ० | ६ | ० | चं. | ० | ७ | ० |

| राहुदशावर्ष १८ | | | | गुरुदशावर्ष १६ | | | | शनिदशावर्ष १९ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आर्द्रा. स्वा. शत. | | | | पुन. विशा. पू.भा. | | | | पुष्य. अनु. उ. भा. | | | |
| ग्रह | वर्ष | मा. | दि. | ग्रह | वर्ष | मा. | दि. | ग्रह | वर्ष | मा. | दि. |
| रा. | २ | ८ | १२ | गु. | २ | १ | १८ | श. | ३ | ० | ३ |
| बृ. | २ | ४ | २४ | श. | २ | ६ | १२ | बु. | २ | ८ | ९ |
| श. | २ | १० | ६ | बु. | २ | ३ | ६ | के. | १ | १ | ९ |
| बु. | २ | ६ | १८ | के. | ० | ११ | ६ | शु. | ३ | २ | ० |
| के. | १ | ० | १८ | शु. | २ | ८ | ० | सू. | ० | ११ | १२ |
| शु. | ३ | ० | ० | सू. | ० | ९ | १८ | चं. | १ | ७ | ० |
| सू. | ० | १० | २४ | चं. | १ | ४ | ० | मं. | १ | १ | ९ |
| चं. | १ | ६ | ० | मं. | ० | ११ | ६ | रा. | २ | १० | ६ |
| मं. | १ | ० | १८ | रा. | २ | ४ | २४ | बृ. | २ | ६ | १२ |

| बुधदशावर्ष १७ | | | | केतुदशावर्ष ७ | | | | शुक्रदशावर्ष २० | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| श्ले. ज्ये. रेवती | | | | मघा. मूल. अश्वि | | | | पू. फा. पू. षा. भर. | | | |
| ग्रह | वर्ष | मा. | दि. | ग्रह | वर्ष | मा. | दि. | ग्रह | वर्ष | मा. | दि. |
| बु. | २ | ४ | २७ | के. | ० | ४ | २७ | शु. | ३ | ४ | ० |
| के. | ० | ११ | २७ | शु. | १ | २ | ० | सू. | १ | ० | ० |
| शु. | २ | १० | ० | सू. | ० | ४ | ६ | चं. | १ | ८ | ० |
| सू. | ० | १० | ६ | चं. | ० | ७ | ० | मं. | १ | २ | ० |
| चं. | १ | ५ | ० | मं. | ० | ४ | २७ | रा. | ३ | ० | ० |
| मं. | ० | ११ | २७ | रा. | १ | ० | १८ | बृ. | २ | ८ | ० |
| रा. | २ | ६ | १८ | बृ. | ० | ११ | ६ | श. | ३ | २ | ० |
| बृ. | २ | ३ | ६ | श. | १ | १ | ९ | बु. | २ | १० | ० |
| श. | २ | ८ | ९ | बु. | ० | ११ | २७ | के. | १ | २ | ० |

## योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

| मंगला १ | | | पिंगला २ | | | धान्या ३ | | | भ्रामरी ४ | | | भ्रद्रिका ५ | | | उल्का ६ | | | सिद्धा ७ | | | संकटा ८ | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मा. | १२ | चं. | मा. | २४ | सू. | मा. | ३६ | बृ. | मा. | ४८ | मं. | मा. | ६० | बु. | मा. | ७२ | श. | मा. | ८४ | शु. | मा. | ९६ | के. |
| मं. | ० | १० | पिं. | १ | १० | धा. | ३ | ० | भ्रा. | ५ | १० | भ. | ८ | १० | उ. | १२ | ० | सि. | १६ | १० | सं. | २१ | १० |
| पिं. | ० | २० | धा. | २ | ० | भ्रा. | ४ | ० | भ. | ६ | २० | उ. | १० | ० | सि. | १४ | ० | सं. | १८ | २० | मं. | २ | २० |
| धा. | १ | ० | भ्रा. | २ | २० | भ. | ५ | ० | उ. | ८ | ० | सि. | ११ | २० | सं. | १६ | ० | मं. | २ | १० | पिं. | ५ | १० |
| भा. | १ | १० | भ. | ३ | १० | उ. | ६ | ० | सि. | ९ | १० | सं. | १३ | १० | मं. | २ | ० | पिं. | ४ | २० | धा. | ८ | ० |
| भ. | १ | २० | उ. | ४ | ० | सि. | ७ | ० | सं. | १० | २० | मं. | १ | २० | पि. | ४ | ० | धा. | ७ | ० | भ्रा. | १० | २० |
| उ. | २ | ० | सि. | ४ | २० | सं. | ८ | ० | मं. | १ | १० | पि. | ३ | १० | धा. | ६ | ० | भ्रा. | ९ | १० | भ. | १३ | १० |
| सि. | २ | १० | सं. | ५ | १० | मं. | १ | ० | पि. | २ | २० | धा. | ५ | ० | भ्रा. | ८ | ० | भ. | ११ | २० | उ. | १६ | ० |
| सं. | २ | २० | मं. | ० | २० | पिं. | २ | ० | धा. | ४ | ० | भ्रा. | ६ | २० | भ. | १० | ० | उ. | १४ | ० | सि. | १८ | २० |
| श्रवण,आर्द्रा चित्रा | | | पुन. स्वा. धनि. | | | पुष्य, विशा शत. | | | श्ले. अनु. पू.भा. अश्वि | | | मघा. ज्ये. उ.भा. भर. | | | पू.फा. मूल रेव, कृति | | | उ.फा. पू.षा. रोह | | | हस्त उ.षा. मृग | | |

**योगिनी दशा विचार**–योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा–ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार 1+2+3+4+5+6+7+8=36 वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

**योगिनी दशा की विधि**–अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ–यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा–अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त-भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशामासादि शुभ दशा–मंगला, धा. भ. सि., नेष्टदशा–पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा।

**अन्तर्दशा निकालने की विधि**–जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को *पृथक २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।*

# ग्रहों की अन्तरदशा से प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करना

भारतीय ज्योतिष में फलित कथन के लिए विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन प्रकार की दशाओं का प्रचलन मिलता है। **विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा और अष्टोतरी** दशा। अष्टोत्तरी दशा की अवधि 108 वर्ष की होती है। योगिनी दशा की एक आवृत्ति 36 वर्ष की ओर विंशोत्तरी दशा का कुल मान **120 वर्षों** का होता है। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि में, **योगिनी दशाओं** का प्रचलन उत्तर भारत–विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में अधिक पाया जाता है, जबकि **विंशोतरी दशा** पद्धति का प्रचलन समस्त भारत वर्ष में पाया जाता है। प्रस्तुत चक्रों में विंशोत्तरी में प्रत्येक ग्रह की अन्तर–दशा में प्रत्यन्तर दशाएँ निकालने की प्रक्रिया बतलाई गई है। किसी ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकल आने से फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। दशाऽन्तरदशाओं के फलादेश का वर्णन आप हमारी पुस्तक **ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग ( दो )** में पढ़ सकते हैं। विंशोतरी दशा पद्धति के अन्तर्गत ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशाओं के चक्र गत पृष्ठों में लिख चुके हैं। यहाँ पर पुनरावलोकन कर सकते हैं–

| ग्रह | सूर्य | चन्द्र | मंग. | राहु | गुरू | शनि | बुध | केतु | शुक्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | 6 | 10 | 7 | 18 | 16 | 19 | 17 | 7 | 20 |

### सूर्यान्तर दशा चक्र–6 वर्ष

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 |
| मास | 3 | 6 | 4 | 10 | 9 | 11 | 10 | 4 | 0 |
| दिन | 18 | 0 | 6 | 24 | 18 | 12 | 6 | 6 | 0 |

### सूर्य मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 5 | 9 | 6 | 16 | 14 | 17 | 15 | 6 | 18 |
| घंटे | 9 | 0 | 7 | 4 | 9 | 2 | 7 | 7 | 00 |
| मिन्ट | 36 | 0 | 12 | 48 | 36 | 24 | 12 | 12 | 00 |

### सूर्य मध्ये चन्द्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 15 | 10 | 27 | 24 | 28 | 25 | 10 | 0 | 9 |
| घंटे | 0 | 12 | 0 | 0 | 12 | 12 | 12 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### सूर्य मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

| ग्रह | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 7 | 18 | 16 | 19 | 17 | 7 | 21 | 6 | 10 |
| घंटे | 8 | 21 | 19 | 22 | 20 | 8 | 0 | 7 | 12 |
| मिन्ट | 24 | 36 | 12 | 48 | 24 | 24 | 0 | 12 | 0 |

### सूर्य मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 18 | 13 | 21 | 15 | 18 | 24 | 16 | 27 | 18 |
| घंटे | 14 | 4 | 7 | 21 | 21 | 0 | 4 | 0 | 21 |
| मिन्ट | 24 | 48 | 12 | 36 | 36 | 0 | 48 | 0 | 36 |

### सूर्य मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 |
| दिन | 8 | 15 | 10 | 16 | 18 | 14 | 24 | 16 | 13 |
| घंटे | 9 | 14 | 19 | 19 | 0 | 9 | 0 | 19 | 4 |
| मिन्ट | 36 | 24 | 12 | 12 | 0 | 36 | 0 | 12 | 48 |

### सूर्य मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 |
| दिन | 24 | 18 | 19 | 27 | 17 | 28 | 19 | 21 | 15 |
| घंटे | 3 | 10 | 22 | 0 | 2 | 12 | 22 | 7 | 14 |
| मिन्ट | 36 | 48 | 48 | 0 | 24 | 0 | 48 | 12 | 24 |

### सूर्य मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 |
| दिन | 13 | 17 | 21 | 15 | 25 | 17 | 15 | 10 | 18 |
| घंटे | 8 | 20 | 0 | 7 | 12 | 20 | 21 | 19 | 10 |
| मिन्ट | 24 | 24 | 0 | 12 | 0 | 24 | 36 | 12 | 48 |

### सूर्य मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 7 | 21 | 6 | 10 | 7 | 18 | 16 | 19 | 17 |
| घंटे | 8 | 0 | 7 | 12 | 8 | 21 | 19 | 22 | 20 |
| मिन्ट | 24 | 0 | 12 | 0 | 24 | 36 | 12 | 48 | 24 |

### सूर्य मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 2 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 |
| दिन | 0 | 18 | 0 | 21 | 24 | 18 | 27 | 21 | 21 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### चंद्र की अन्तर्दशाएँ ( 10 वर्ष )

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ | ० |
| मास | १० | ७ | ६ | ४ | ७ | ५ | ७ | ८ | ६ |
| दिन | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### चंद्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 25 | 17 | 15 | 10 | 17 | 12 | 17 | 20 | 15 |
| घंटे | 0 | 12 | 0 | 0 | 12 | 12 | 12 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### चंद्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

| ग्रह | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 |
| दिन | 12 | 1 | 28 | 3 | 29 | 12 | 5 | 10 | 17 |
| घंटे | 6 | 12 | 0 | 6 | 18 | 6 | 0 | 12 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### चंद्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 2 | 2 | 2 | 2 | 1 | 3 | 0 | 1 | 1 |
| दिन | 21 | 12 | 25 | 16 | 1 | 0 | 27 | 15 | 1 |
| घंटे | 0 | 0 | 12 | 12 | 12 | 0 | 0 | 0 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### चंद्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 2 | 2 | 2 | 0 | 2 | 0 | 1 | 0 | 2 |
| दिन | 4 | 16 | 8 | 28 | 20 | 24 | 10 | 28 | 12 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### चंद्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 3 | 2 | 1 | 3 | 0 | 1 | 1 | 2 | 2 |
| दिन | 0 | 20 | 3 | 5 | 28 | 17 | 3 | 25 | 16 |
| घंटे | 6 | 18 | 6 | 0 | 12 | 12 | 6 | 12 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### चंद्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 2 | 0 | 2 | 0 | 1 | 0 | 2 | 2 | 2 |
| दिन | 12 | 29 | 25 | 25 | 12 | 29 | 16 | 8 | 20 |
| घंटे | 6 | 18 | 0 | 12 | 12 | 18 | 12 | 0 | 18 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### चंद्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 12 | 5 | 10 | 17 | 12 | 1 | 28 | 3 | 29 |
| घंटे | 6 | 0 | 12 | 12 | 6 | 12 | 0 | 6 | 18 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### चंद्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 3 | 1 | 1 | 1 | 3 | 2 | 3 | 2 | 1 |
| दिन | 10 | 0 | 20 | 5 | 0 | 20 | 5 | 25 | 5 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### चंद्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 |
| दिन | 9 | 15 | 10 | 27 | 24 | 28 | 25 | 10 | 0 |
| घंटे | 0 | 0 | 12 | 0 | 0 | 12 | 12 | 12 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### मंगल की अन्तर्दशाएँ ( 7 वर्ष )

| ग्रह | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | ० | १ | ० | १ | ० | ० | १ | ० | ० |
| मास | ४ | ० | ११ | १ | ११ | ४ | २ | ४ | ७ |
| दिन | २७ | १८ | ६ | ९ | २७ | २७ | ० | ६ | ० |

### मंगल मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

| ग्रह | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 8 | 22 | 19 | 23 | 20 | 8 | 24 | 7 | 12 |
| घंटे | 13 | 1 | 14 | 36 | 19 | 13 | 12 | 8 | 6 |
| मिन्ट | 48 | 12 | 24 | 36 | 48 | 48 | 0 | 24 | 0 |

### मंगल मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 2 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 26 | 20 | 29 | 23 | 22 | 3 | 18 | 1 | 22 |
| घंटे | 16 | 9 | 20 | 13 | 1 | 0 | 21 | 12 | 1 |
| मिन्ट | 48 | 36 | 24 | 12 | 12 | 0 | 36 | 0 | 12 |

### मंगल मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 |
| दिन | 14 | 23 | 17 | 19 | 26 | 16 | 28 | 19 | 20 |
| घंटे | 19 | 4 | 14 | 14 | 0 | 19 | 0 | 14 | 9 |
| मिन्ट | 12 | 48 | 24 | 24 | 0 | 12 | 0 | 24 | 36 |

### मंगल मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 2 | 1 | 0 | 2 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 |
| दिन | 3 | 26 | 23 | 6 | 19 | 3 | 23 | 29 | 23 |
| घंटे | 4 | 12 | 6 | 12 | 22 | 6 | 6 | 20 | 4 |
| मिन्ट | 12 | 36 | 36 | 00 | 48 | 0 | 36 | 24 | 48 |

### मंगल मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 |
| दिन | 20 | 20 | 29 | 17 | 29 | 20 | 23 | 17 | 26 |
| घंटे | 13 | 19 | 12 | 20 | 18 | 19 | 13 | 14 | 12 |
| मिन्ट | 48 | 48 | 0 | 24 | 00 | 48 | 12 | 24 | 36 |

### मंगल मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 8 | 24 | 7 | 12 | 8 | 22 | 19 | 23 | 20 |
| घंटे | 13 | 12 | 8 | 6 | 13 | 1 | 14 | 6 | 19 |
| मिन्ट | 48 | 00 | 24 | 0 | 48 | 12 | 24 | 36 | 48 |

### मंगल मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 2 | 0 | 1 | 0 | 2 | 1 | 2 | 1 | 0 |
| दिन | 10 | 21 | 5 | 24 | 3 | 26 | 6 | 29 | 24 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 12 | 0 | 0 | 12 | 12 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 6 | 10 | 7 | 18 | 16 | 19 | 17 | 7 | 21 |
| घंटे | 7 | 12 | 8 | 21 | 19 | 22 | 20 | 8 | 0 |
| मिन्ट | 12 | 0 | 24 | 36 | 12 | 48 | 24 | 24 | 0 |

### मंगल मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 17 | 12 | 1 | 28 | 3 | 29 | 12 | 5 | 10 |
| घंटे | 12 | 6 | 12 | 0 | 6 | 18 | 6 | 0 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### राहु की अन्तर्दशाएँ ( 18 वर्ष )

| ग्रह | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | २ | २ | २ | २ | १ | ३ | ० | १ | .१ |
| मास | ८ | ४ | १० | ६ | ० | ० | १० | ६ | ० |
| दिन | १२ | २४ | ६ | १८ | १८ | ० | २४ | ० | १८ |

### राहु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 4 | 4 | 5 | 4 | 1 | 5 | 1 | 2 | 1 |
| दिन | 25 | 9 | 3 | 17 | 26 | 12 | 18 | 21 | 26 |
| घंटे | 19 | 14 | 21 | 16 | 16 | 0 | 14 | 0 | 16 |
| मिन्ट | 12 | 24 | 36 | 48 | 48 | 0 | 24 | 0 | 48 |

### राहु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 3 | 4 | 4 | 1 | 4 | 1 | 2 | 1 | 4 |
| दिन | 25 | 16 | 2 | 20 | 24 | 13 | 12 | 20 | 9 |
| घंटे | 4 | 19 | 9 | 9 | 0 | 4 | 0 | 9 | 14 |
| मिन्ट | 48 | 12 | 36 | 36 | 0 | 48 | 0 | 36 | 24 |

### राहु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 5 | 4 | 1 | 5 | 1 | 2 | 1 | 5 | 4 |
| दिन | 12 | 25 | 29 | 21 | 21 | 25 | 29 | 3 | 16 |
| घंटे | 10 | 8 | 20 | 0 | 7 | 12 | 20 | 21 | 19 |
| मिन्ट | 48 | 24 | 24 | 0 | 12 | 0 | 24 | 36 | 12 |

### राहु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 4 | 1 | 5 | 1 | 2 | 1 | 4 | 4 | 4 |
| दिन | 10 | 23 | 3 | 15 | 16 | 23 | 17 | 2 | 25 |
| घंटे | 1 | 13 | 0 | 21 | 12 | 13 | 16 | 9 | 8 |
| मिन्ट | 12 | 12 | 0 | 36 | 0 | 12 | 48 | 36 | 24 |

### राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 2 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 |
| दिन | 22 | 3 | 18 | 1 | 22 | 26 | 20 | 29 | 23 |
| घंटे | 1 | 0 | 21 | 12 | 1 | 16 | 9 | 20 | 13 |
| मिन्ट | 12 | 0 | 36 | 00 | 12 | 48 | 36 | 24 | 12 |

### राहु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 6 | 1 | 3 | 2 | 5 | 4 | 5 | 5 | 2 |
| दिन | 0 | 24 | 0 | 3 | 12 | 24 | 21 | 3 | 3 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### राहु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 |
| दिन | 16 | 27 | 18 | 18 | 13 | 21 | 15 | 18 | 24 |
| घंटे | 4 | 0 | 21 | 14 | 4 | 7 | 21 | 21 | 0 |
| मिन्ट | 48 | 0 | 36 | 24 | 48 | 12 | 36 | 36 | 0 |

### राहु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 1 | 1 | 2 | 2 | 2 | 2 | 1 | 3 | 0 |
| दिन | 15 | 1 | 21 | 12 | 25 | 16 | 1 | 0 | 27 |
| घंटे | 0 | 12 | 0 | 0 | 12 | 12 | 12 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### राहु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

| ग्रह | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 2 | 0 | 1 |
| दिन | 22 | 26 | 20 | 29 | 23 | 22 | 3 | 18 | 1 |
| घंटे | 1 | 16 | 9 | 20 | 13 | 1 | 0 | 21 | 12 |
| मिन्ट | 12 | 48 | 36 | 24 | 12 | 12 | 0 | 36 | 0 |

### गुरु की अन्तर्दशाएँ ( 16 वर्ष )

| ग्रह | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | 2 | 2 | 2 | 0 | 2 | 0 | 1 | 0 | 2 |
| मास | 1 | 6 | 3 | 11 | 8 | 9 | 4 | 11 | 4 |
| दिन | 18 | 12 | 6 | 6 | 0 | 18 | 0 | 6 | 24 |

### गुरु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 3 | 4 | 3 | 1 | 4 | 1 | 2 | 1 | 3 |
| दिन | 12 | 1 | 18 | 14 | 8 | 8 | 4 | 14 | 25 |
| घंटे | 9 | 14 | 19 | 19 | 0 | 9 | 0 | 19 | 4 |
| मिन्ट | 36 | 24 | 12 | 12 | 0 | 36 | 0 | 12 | 48 |

### गुरु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 4 | 4 | 1 | 5 | 1 | 2 | 1 | 4 | 4 |
| दिन | 24 | 9 | 23 | 2 | 15 | 16 | 23 | 16 | 1 |
| घंटे | 9 | 4 | 4 | 0 | 14 | 0 | 4 | 19 | 14 |
| मिन्ट | 36 | 48 | 48 | 0 | 24 | 0 | 48 | 12 | 24 |

### गुरु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 3 | 1 | 4 | 1 | 2 | 1 | 4 | 3 | 4 |
| दिन | 25 | 17 | 16 | 10 | 8 | 17 | 2 | 18 | 9 |
| घंटे | 14 | 14 | 0 | 19 | 0 | 14 | 9 | 19 | 4 |
| मिन्ट | 24 | 24 | 0 | 12 | 0 | 24 | 36 | 12 | 48 |

### गुरु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 |
| दिन | 19 | 26 | 16 | 28 | 19 | 20 | 14 | 23 | 17 |
| घंटे | 14 | 0 | 19 | 0 | 14 | 9 | 19 | 4 | 14 |
| मिन्ट | 24 | 0 | 12 | 0 | 24 | 36 | 12 | 48 | 24 |

### गुरु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 5 | 1 | 2 | 1 | 4 | 4 | 5 | 4 | 1 |
| दिन | 10 | 18 | 20 | 26 | 24 | 8 | 2 | 16 | 26 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### गुरु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 |
| दिन | 14 | 24 | 16 | 13 | 8 | 15 | 10 | 16 | 18 |
| घंटे | 9 | 0 | 19 | 4 | 9 | 14 | 19 | 19 | 0 |
| मिन्ट | 36 | 0 | 12 | 48 | 36 | 24 | 12 | 12 | 0 |

### गुरु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 1 | 0 | 2 | 2 | 2 | 2 | 0 | 2 | 0 |
| दिन | 10 | 28 | 12 | 4 | 16 | 8 | 28 | 20 | 24 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### गुरु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

| ग्रह | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 |
| दिन | 16 | 20 | 14 | 23 | 17 | 19 | 26 | 16 | 28 |
| घंटे | 14 | 9 | 19 | 4 | 14 | 14 | 0 | 19 | 0 |
| मिन्ट | 24 | 36 | 12 | 48 | 24 | 24 | 0 | 12 | 0 |

### गुरु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 4 | 3 | 4 | 4 | 1 | 4 | 1 | 2 | 1 |
| दिन | 9 | 25 | 16 | 2 | 20 | 24 | 13 | 12 | 20 |
| घंटे | 14 | 4 | 19 | 9 | 9 | 0 | 4 | 0 | 9 |
| मिन्ट | 24 | 48 | 12 | 36 | 36 | 0 | 48 | 0 | 36 |

### शनि की अन्तर्दशाएँ ( 19 वर्ष )

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | ३ | २ | १ | ३ | ० | १ | १ | २ | २ |
| मास | ० | ८ | १ | २ | ११ | ७ | १ | १० | ६ |
| दिन | ३ | ९ | ९ | ० | १२ | ० | ९ | ६ | १२ |

### शनि मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 5 | 5 | 2 | 6 | 1 | 3 | 2 | 5 | 4 |
| दिन | 21 | 3 | 3 | 0 | 24 | 0 | 3 | 12 | 24 |
| घंटे | 11 | 10 | 4 | 12 | 3 | 6 | 4 | 10 | 9 |
| मिन्ट | 24 | 12 | 12 | 0 | 36 | 0 | 12 | 48 | 36 |

### शनि मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 4 | 1 | 5 | 1 | 2 | 1 | 4 | 4 | 5 |
| दिन | 17 | 26 | 11 | 18 | 20 | 26 | 25 | 9 | 3 |
| घंटे | 6 | 12 | 12 | 10 | 18 | 12 | 8 | 4 | 10 |
| मिन्ट | 36 | 36 | 0 | 48 | 0 | 36 | 24 | 48 | 12 |

### शनि मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 2 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 2 | 1 |
| दिन | 23 | 6 | 19 | 3 | 23 | 29 | 23 | 3 | 26 |
| घंटे | 6 | 12 | 22 | 6 | 6 | 20 | 4 | 4 | 12 |
| मिन्ट | 36 | 0 | 48 | 0 | 36 | 24 | 48 | 12 | 36 |

### शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 6 | 1 | 3 | 2 | 5 | 5 | 6 | 5 | 2 |
| दिन | 10 | 27 | 5 | 6 | 21 | 2 | 0 | 11 | 6 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 12 | 0 | 0 | 12 | 12 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### शनि मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 |
| दिन | 17 | 28 | 19 | 21 | 15 | 24 | 18 | 19 | 27 |
| घंटे | 2 | 12 | 22 | 7 | 14 | 3 | 10 | 22 | 0 |
| मिन्ट | 24 | 0 | 48 | 12 | 24 | 36 | 48 | 48 | 0 |

### शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 1 | 1 | 2 | 2 | 3 | 2 | 1 | 3 | 0 |
| दिन | 17 | 3 | 25 | 16 | 0 | 20 | 3 | 5 | 28 |
| घंटे | 12 | 6 | 12 | 0 | 6 | 18 | 6 | 0 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### शनि मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

| ग्रह | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 1 | 1 | 2 | 1 | 0 | 2 | 0 | 1 |
| दिन | 23 | 29 | 23 | 3 | 26 | 23 | 6 | 19 | 3 |
| घंटे | 6 | 20 | 4 | 4 | 12 | 6 | 12 | 22 | 6 |
| मिन्ट | 36 | 24 | 48 | 12 | 36 | 36 | 0 | 48 | 0 |

### शनि मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 5 | 4 | 5 | 4 | 1 | 5 | 1 | 2 | 1 |
| दिन | 3 | 16 | 12 | 25 | 29 | 21 | 21 | 25 | 29 |
| घंटे | 21 | 19 | 10 | 8 | 20 | 0 | 7 | 12 | 20 |
| मिन्ट | 36 | 12 | 48 | 24 | 24 | 0 | 12 | 0 | 24 |

### शनि मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 4 | 4 | 4 | 1 | 5 | 1 | 2 | 1 | 4 |
| दिन | 1 | 24 | 9 | 23 | 2 | 15 | 16 | 23 | 16 |
| घंटे | 14 | 9 | 4 | 4 | 0 | 14 | 0 | 4 | 19 |
| मिन्ट | 24 | 36 | 48 | 48 | 0 | 24 | 0 | 48 | 12 |

### बुध की अन्तर्दशाएँ ( 17 वर्ष )

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | २ | ० | २ | ० | १ | ० | २ | २ | २ |
| मास | ४ | ११ | १० | १० | ५ | ११ | ६ | ३ | ८ |
| दिन | २७ | २७ | ० | ६ | ० | २७ | १८ | ६ | ९ |

### बुध मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 4 | 1 | 4 | 1 | 2 | 1 | 4 | 3 | 4 |
| दिन | 2 | 20 | 24 | 13 | 12 | 20 | 10 | 25 | 17 |
| घंटे | 19 | 13 | 12 | 8 | 6 | 13 | 1 | 14 | 6 |
| मिन्ट | 48 | 48 | 0 | 24 | 0 | 48 | 12 | 24 | 36 |

### बुध मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 5 | 1 |
| दिन | 20 | 29 | 17 | 29 | 20 | 23 | 17 | 26 | 20 |
| घंटे | 19 | 12 | 20 | 18 | 19 | 13 | 14 | 12 | 13 |
| मिन्ट | 48 | 0 | 24 | 0 | 48 | 12 | 24 | 36 | 48 |

### बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

### केतु की अन्तर्दशाएँ ( 7 वर्ष )

### बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 5 | 1 | 2 | 1 | 5 | 4 | 5 | 4 | 1 |
| दिन | 20 | 21 | 25 | 29 | 3 | 16 | 11 | 24 | 29 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 12 | 0 | 0 | 12 | 12 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### बुध मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 |
| दिन | 15 | 25 | 17 | 15 | 10 | 18 | 13 | 17 | 21 |
| घंटे | 7 | 12 | 20 | 21 | 19 | 10 | 8 | 20 | 0 |
| मिन्ट | 12 | 0 | 24 | 36 | 12 | 48 | 24 | 24 | 0 |

### बुध मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 1 | 0 | 2 | 2 | 2 | 2 | 0 | 2 | 0 |
| दिन | 12 | 29 | 16 | 8 | 20 | 12 | 29 | 25 | 25 |
| घंटे | 12 | 18 | 12 | 0 | 18 | 6 | 18 | 0 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### बुध मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

| ग्रह | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 |
| दिन | 20 | 23 | 17 | 26 | 20 | 20 | 29 | 17 | 29 |
| घंटे | 19 | 13 | 14 | 12 | 13 | 19 | 12 | 20 | 18 |
| मिन्ट | 48 | 12 | 24 | 36 | 48 | 48 | 0 | 24 | 0 |

### बुध मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 4 | 4 | 4 | 4 | 1 | 5 | 1 | 2 | 1 |
| दिन | 17 | 2 | 25 | 10 | 23 | 3 | 15 | 16 | 23 |
| घंटे | 16 | 9 | 8 | 01 | 13 | 0 | 21 | 12 | 13 |
| मिन्ट | 48 | 36 | 24 | 12 | 12 | 0 | 36 | 0 | 12 |

### बुध मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 3 | 4 | 3 | 1 | 4 | 1 | 2 | 1 | 4 |
| दिन | 18 | 9 | 25 | 17 | 16 | 10 | 8 | 17 | 2 |
| घंटे | 19 | 4 | 14 | 14 | 0 | 19 | 0 | 14 | 9 |
| मिन्ट | 12 | 48 | 24 | 24 | 0 | 12 | 0 | 24 | 36 |

### बुध मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 5 | 4 | 1 | 5 | 1 | 2 | 1 | 4 | 4 |
| दिन | 3 | 17 | 26 | 11 | 18 | 20 | 26 | 25 | 9 |
| घंटे | 10 | 6 | 12 | 12 | 10 | 18 | 12 | 8 | 4 |
| मिन्ट | 12 | 36 | 36 | 0 | 48 | 0 | 24 | 36 | 48 |

### केतु की अन्तर्दशाएँ ( [illegible] वर्ष )

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 |
| मास | 4 | 2 | 4 | 7 | 4 | 0 | 11 | 1 | 11 |
| दिन | 27 | 0 | 6 | 0 | 27 | 18 | 6 | 9 | 27 |

### केतु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 8 | 24 | 7 | 12 | 8 | 22 | 19 | 23 | 20 |
| घंटे | 13 | 12 | 8 | 6 | 13 | 1 | 14 | 6 | 19 |
| मिन्ट | 48 | 0 | 24 | 0 | 48 | 12 | 24 | 36 | 48 |

### केतु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 2 | 0 | 1 | 0 | 2 | 1 | 2 | 1 | 0 |
| दिन | 10 | 21 | 5 | 24 | 3 | 26 | 6 | 29 | 24 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 12 | 0 | 0 | 12 | 12 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### केतु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 6 | 10 | 7 | 18 | 16 | 19 | 17 | 7 | 21 |
| घंटे | 7 | 12 | 8 | 21 | 48 | 22 | 20 | 8 | 0 |
| मिन्ट | 12 | 0 | 24 | 36 | 0 | 48 | 24 | 24 | 0 |

### केतु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 17 | 12 | 1 | 28 | 3 | 29 | 12 | 5 | 10 |
| घंटे | 12 | 6 | 12 | 0 | 6 | 18 | 6 | 0 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### केतु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

| ग्रह | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 8 | 22 | 19 | 23 | 20 | 8 | 24 | 7 | 12 |
| घंटे | 13 | 1 | 14 | 6 | 19 | 13 | 12 | 8 | 6 |
| मिन्ट | 48 | 12 | 24 | 36 | 48 | 48 | 0 | 24 | 0 |

### केतु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 2 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 26 | 20 | 29 | 23 | 22 | 3 | 18 | 1 | 22 |
| घंटे | 16 | 9 | 20 | 13 | 1 | 0 | 21 | 12 | 1 |
| मिन्ट | 48 | 36 | 24 | 12 | 12 | 0 | 36 | 0 | 12 |

### केतु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 |
| दिन | 14 | 23 | 17 | 19 | 26 | 16 | 28 | 19 | 20 |
| घंटे | 19 | 4 | 14 | 14 | 0 | 19 | 0 | 14 | 9 |
| मिन्ट | 12 | 48 | 24 | 24 | 0 | 12 | 0 | 24 | 36 |

### केतु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 2 | 1 | 0 | 2 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 |
| दिन | 3 | 6 | 23 | 6 | 19 | 3 | 23 | 29 | 23 |
| घंटे | 4 | 12 | 6 | 12 | 22 | 6 | 6 | 20 | 4 |
| मिन्ट | 12 | 36 | 36 | 0 | 48 | 0 | 36 | 24 | 48 |

### केतु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 |
| दिन | 20 | 20 | 29 | 17 | 29 | 20 | 23 | 17 | 26 |
| घंटे | 13 | 19 | 12 | 20 | 18 | 19 | 13 | 14 | 12 |
| मिन्ट | 48 | 48 | 0 | 24 | 0 | 48 | 12 | 24 | 36 |

### शुक्र की अन्तर्दशाएँ ( 20 वर्ष )

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | ३ | १ | १ | १ | ३ | २ | ३ | २ | १ |
| मास | ४ | ० | ८ | २ | ० | ८ | २ | १० | २ |
| दिन | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### शुक्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 6 | 2 | 3 | 2 | 6 | 5 | 6 | 5 | 2 |
| दिन | 20 | 0 | 10 | 10 | 0 | 10 | 10 | 20 | 10 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### शुक्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 2 |
| दिन | 18 | 0 | 21 | 24 | 18 | 27 | 21 | 21 | 0 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### शुक्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 1 | 1 | 3 | 2 | 3 | 2 | 1 | 3 | 1 |
| दिन | 20 | 5 | 0 | 20 | 5 | 25 | 5 | 10 | 0 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### शुक्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

| ग्रह | मं. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 2 | 1 | 2 | 1 | 0 | 2 | 0 | 1 |
| दिन | 24 | 3 | 26 | 6 | 29 | 24 | 10 | 21 | 5 |
| घंटे | 12 | 0 | 0 | 12 | 12 | 12 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### शुक्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 5 | 4 | 5 | 5 | 2 | 6 | 1 | 3 | 2 |
| दिन | 12 | 24 | 21 | 3 | 3 | 0 | 24 | 0 | 3 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### शुक्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | गु. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 4 | 5 | 4 | 1 | 5 | 1 | 2 | 1 | 4 |
| दिन | 8 | 2 | 16 | 26 | 10 | 18 | 20 | 26 | 24 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### शुक्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 6 | 5 | 2 | 6 | 1 | 3 | 2 | 5 | 5 |
| दिन | 0 | 11 | 6 | 10 | 27 | 5 | 6 | 21 | 2 |
| घंटे | 12 | 12 | 12 | 0 | 0 | 0 | 12 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### शुक्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 4 | 1 | 5 | 1 | 2 | 1 | 5 | 4 | 5 |
| दिन | 24 | 29 | 20 | 21 | 25 | 29 | 3 | 16 | 11 |
| घंटे | 12 | 12 | 0 | 0 | 0 | 12 | 0 | 0 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

### शुक्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | गु. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | 0 | 2 | 0 | 1 | 0 | 2 | 1 | 2 | 1 |
| दिन | 24 | 10 | 21 | 5 | 24 | 3 | 26 | 6 | 29 |
| घंटे | 12 | 0 | 0 | 0 | 12 | 0 | 0 | 12 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

## शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

| अंग | फल |
|---|---|
| माथे पर तिल | धनवान होवे |
| माथे के दाहिने ओर | मान प्रतिष्ठा में वृद्धि |
| दोनों भौंह के मध्य में | यात्रा कारक है |
| बायीं आंख पर | औरत से कलह |
| दाहिनी आँख पर | औरत से विशेष प्यार रहे |
| ठोडी पर तिल हो | औरत से प्यार कम हो |
| बायें गाल पर | धन का अपव्यय |
| दाहिने गाल पर | धन की बढ़ोतरी हो |
| ऊपर के होंठ पर | विषयवासना में रत रहे |
| नीचे के होंठ पर | धन की कमी रहे |
| कान पर तिल हो | आयु मध्यम रहे |
| गर्दन पर तिल हो | आराम प्राप्त हो |
| दाहिनी भुजा पर हो | मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो |
| नाक पर तिल हो | यात्रा कारक है |
| बायीं भुजा पर हो | झगड़ा होवे |
| बायीं छाती पर हो | औरत से झगड़ा हो |
| दाहिनी छाती पर हो | औरत से प्यार रहे |
| दोनों छातियों के मध्य | जीवन सुखमय रहे |
| हृदय पर हो | बुद्धिमान हो |
| पसली पर तिल हो | डरपोक स्वभाव हो |
| पीठ पर तिल हो | यात्रा में रहा करे |
| पेट पर तिल हो | श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे |
| बगल में तिल हो | दूसरों को हानि पहुंचावे |
| कमर पर तिल हो | मन अशान्त रहे |
| बायें हाथ की पीठ पर | व्यय अधिक हो |
| दाहिनी हथेली पर | धनवान् हो |
| बायीं हथेली पर | व्यय कारक है |
| दाहिने पैर में तिल हो | यात्रा कारक है |
| बायें पैर पर | अपव्यय कारक |
| पाँव के तलुवे में | यात्रा अधिक |

# ॥ अथ नक्षत्रकष्टावलीय ॥

| नक्षत्र चरण | चरण | | | | कष्ट लक्षणानि | देवता | दानद्रव्याणि | जप संख्या | जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि | बलिदान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | | | | | | |
| अश्विनी<br>१ | रोग दिन संख्या<br>०९ | ११ | १० | २० | अर्ध गात्र पीड़ा<br>वातज्वर निद्राभंग | अश्विनी<br>देवता | घृत कुंभ सुवर्ण<br>ब्राह्मण भोजन | ५<br>हजार | ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः। | कुमकुम, श्वेत चंदन, चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवेद्य गुड़, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल दीपः |
| भरणी<br>२ | दि<br>०० | दि<br>८० | दि<br>४० | दि<br>११ | छर्दरोग तीव्रज्वर<br>तंद्रा अनेक रोग | यम<br>देवता | शर्करा घृत अजा गौ<br>महिषी, छायापात्र | १०<br>हजार | ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥ | अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवैद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा |
| कृतिका<br>३ | दि<br>०० | दि<br>११ | दि<br>१६ | दि<br>२८ | रक्तनेत्र उरु शूल<br>नेत्र पीड़ा अतिदाह | अग्नि<br>देवता | सुवर्ण गौदान<br>ग्रह शांति | १०<br>हजार | ॐ अयमग्नि सहस्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कवोरयीणाम् ॥ ३ ॥ अग्नये नमः॥ | चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुडोदन पायस नैवेद्य, दशांग |
| रोहिणी<br>४ | दि<br>०७ | दि<br>०९ | दि<br>१८ | दि<br>३० | शिर दर्द ज्वर पीड़ा<br>कुक्षिशूल प्रलाप | प्रजापति<br>देवता | सप्तधान्य सुवर्ण<br>कृष्ण गौदुग्घखड | ५<br>हजार | ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सूरुचोवेन आवः सवुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्रचयोनिमसतश्चविधः ॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥ | चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य अष्टगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप, दशांग |
| मृगशिर<br>५ | दि<br>०९ | दि<br>०५ | दि<br>०७ | दि<br>१० | अर्ध शरीर पीड़ा<br>महाघोर कष्ट | सोम देवता | दधितडुलगोवत्सा<br>दान ब्राह्मण भोजन | १०<br>हजार | ॐ सोमोधनु Ω सोमाअवन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रमसे नमः ।५॥ | चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग |
| आर्द्रा<br>६ | दि<br>०० | दि<br>१८ | दि<br>०० | दि<br>०० | ज्वर सर्वांगपीड़ा<br>निद्रानाश त्रिदोष | रुद्र<br>देवता | कृष्ण वृषभादि दान<br>कृष्ण वस्त्रादि | १०<br>हजार | ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः॥६॥ ॐ रुद्राय नमः॥ | हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिष्ठान्न दशांग |
| पुनर्वसु<br>७ | दि<br>०७ | दि<br>१४ | दि<br>०२ | दि<br>२१ | अर्ध शरीर पीड़ा<br>शिर पीड़ा ज्वर | अदिति<br>देवता | सुवर्ण कमलदान ५<br>कन्याभोजनवस्त्र | १०<br>हजार | ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिरर्जनित्वम् ॥७॥ ॐ आदित्याय नमः॥ | कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़बलि पीत वर्णान्न |
| पुष्य<br>८ | दि<br>०७ | दि<br>०७ | दि<br>१० | दि<br>२१ | ज्वर पीड़ा शूल<br>अतिकठिन रोग | बृहस्पति<br>देवता | पीत वस्त्र सुवर्ण<br>गौदान पक्कान्नदान | १०<br>हजार | ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्ञनेषु। यदी दयच्छ वसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥ | कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शक्कर बलिदानम् |
| आश्लेषा<br>९ | दि<br>०० | दि<br>०० | दि<br>११ | दि<br>०० | सर्व गात्र पीड़ा<br>मृत्युतुल्य कष्ट | सर्प देवता | कुलमातृ योगिनी<br>पूजा गोशय्यादान | १०<br>हजार | ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः | चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्टान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि कुंकुम, |
| मघा<br>१० | दि<br>१५ | दि<br>०७ | दि<br>१७ | दि<br>२० | अर्धगात्र पीड़ा<br>शीत जन्यरोगभय<br>शिर पीड़ा | पितर<br>देवता | तिल तंडुलमाष<br>वस्त्रदान | १०<br>हजार | ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्तः पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ पितरेभ्ये नमः॥ | चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि |
| पूर्वाफाल<br>गुणी ११ | दि<br>०० | दि<br>१५ | दि<br>०० | दि<br>३० | सर्वगात्रे पीड़ा ज्वर<br>अर्धशिररोग | भग देवता | पित्तल पात्र यव<br>माष गोस्वर्णदान | १०<br>हजार | ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ॥११॥ ॐ भगाय नमः॥ | चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व |
| उत्तरा<br>फाल्गु. १२ | दि<br>०० | दि<br>१४ | दि<br>०७ | दि<br>६० | शिर रोग महाज्वर<br>कुक्षिशूलरोग | अर्यमा<br>देवता | सुवर्णरजत अन्न गो<br>वस्त्र दान | ५<br>हजार | ॐ दैव्या वद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेतं प्रत्लया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ ॐ अर्यमणे नमः॥ | कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध |
| हस्त<br>१३ | दि<br>१५ | दि<br>१७ | दि<br>१५ | दि<br>०० | सर्वाङ्ग पीड़ा उदर<br>शूल प्रस्वेद अफारा | सविता<br>देवता | गोदानछाया पात्र<br>रक्तवस्त्र सुवर्ण | ५<br>हजार | ॐ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ॥ ॐ सावित्रे नमः॥ | कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर |
| चित्रा<br>१४ | दि<br>११ | दि<br>०९ | दि<br>०९ | दि<br>१६ | विविधरोग भय<br>महादारुण कष्ट | त्वष्टा<br>देवता | विचित्रवृषभ गुड़<br>तिल छाया पात्र | ५<br>हजार | ॐ त्वष्टातुरीयो अद्धुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः च्छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रेनमः ॥ ॐ विश्व कर्मणे नमः॥ | कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नंहविनैवेद्य, केशर |

| नक्षत्र चरण | चरण | | | | कष्ट लक्षणानि | देवता | दानद्रव्याणि | जप संख्या | जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि | बलिदान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | | | | | | |
| | रोग दिन संख्या | | | | | | | | | |
| स्वाती १५ | ६० | १७ | ३० | ०० | अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट | वायु देवता | लाल गो सुवर्ण पक्कात्र दान | ५ हजार | ॐ वायरन्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्थ्या निचक्रुः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः॥ | चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य। |
| विशाखा १६ | दि १५ | दि ०० | दि ०४ | दि १३ | कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा | इन्द्राग्नी देवता | रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान | १० हजार | ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियोषिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्याँ नमः॥ | श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपधृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर। |
| अनुराधा १७ | दि ६० | दि १२ | दि ३६ | दि ३० | तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा | मित्र देवता | अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र | १० हजार | ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः॥ | कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध। |
| ज्येष्ठा १८ | दि ५९ | दि ०९ | दि ०६ | दि ०४ | पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता | इन्द्र देवता | सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान | ५ हजार | ॐ त्रातारभिंद्रमवितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरुहूतभिंद्र Ω स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥ | चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल। |
| मूल १९ | दि ०० | दि ०९ | दि १५ | दि ०६ | ज्वरशूलसन्निपात महाकठिन रोग | निर्ऋति देवता | सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र | ५ हजार | ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत। ॐ निऋतये नमः॥ | कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठान्नहवि माष नैवेद्य। |
| पूर्वाषाढ़ा २० | दि ०० | दि १५ | दि २४ | दि १० | शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट | जल देवता | श्वेतवस्त्रतंडुलसुवर्णजलकुंभ | ५ हजार | ॐअपाघ मम कील्वषम पकृल्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्य–सुवः ॥२०॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥ | चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य। |
| उत्तराषाढ़ा २१ | दि ३० | दि २४ | दि २६ | दि १६ | कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त | विश्वेदेवा देवता | ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान | १० हजार | ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्नयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै॥२१॥ | चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य। |
| श्रवण २२ | दि ६० | दि २४ | दि ०६ | दि ०९ | वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी | गोविन्द देवता | सुवर्गगेदानब्राह्मणभोजनछायापात्र | १० हजार | ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः॥ | चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरम नैवेद्य। |
| धनिष्ठा २३ | दि १५ | दि २ | दि २० | दि २१ | मूत्रकृच्छ ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग | वसु देवता | छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान | १० हजार | ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेऽशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः॥ | अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र बर्तन। |
| शतभिषा २४ | दि ०० | दि ४५ | दि ०३ | दि २२ | वायु रोग से भय सन्निपातज्वरपीडा | वरुण देवता | तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान | १० हजार | ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरूणाय नमः॥ | कुकम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य। |
| पूर्वाभाद्रपद २५ | दि ०० | दि १२ | दि २१ | दि १९ | सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता | ऽजेकपाद देवता | सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र धृत दुग्ध | ५ हजार | ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥ | कंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य। |
| उत्तराभाद्रपद २६ | दि १० | दि २० | दि ०९ | दि १५ | कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम | अहिर्बुध्न देवता | रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान | १ हजार | ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्वाय ॥२६॥) ॐ अहिबुर्धाय नमः॥ | कपूरचन्दनगन्ध पद्य पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य। |
| रेवती २७ | दि १८ | दि १० | दि ०९ | दि २० | वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीडा | पूषा देवता | पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र | १० हजार | ॐ पूषन् तव व्रते वयं नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ॥२७॥ ॐ पूष्णेनमः॥ | रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गल धूप घृत पायस नैवेद्य। |

## रोग-त्रिनाड़ी चक्र

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आर्द्रा | पू.फा. | उ.फा. | अनु | ज्ये० | धनि | शत० | भरणी | कृत्ति |
| पुर्न | मघा | हस्त | विशा | मूल | श्रव० | पू.भा. | अश्वि. | रोहि |
| पुष्य | आश्ले. | चित्रा | स्वाती | पू.षा. | उ.षा. | उ.भा. | रेवती | मृग. |

मंगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४।९।१४ तिथि–आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि–भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या पर काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।

# ।। अथ बालकष्टावली पूतना विधान ।।

मंत्र को २१ बार पढ़कर सात बार रूग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरस्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवे॥

| जन्म से | | | पूतना नाम | ग्रसित लक्षण | मूर्तिद्रव्य | बलि द्रव्य तथा समय | धूप | मन्त्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दि<br>०१ | मा<br>१ | व<br>०१ | १ योगिनी<br>२ मातृका<br>३ नंदिनी | ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर उदर पीड़ा | नदी का मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान | उबले चावल सफेद चंदन का लेप सफेदफूल ध्वजा ५ चिलिड़ियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रात: समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे। | सरसों बालछड़ आक बिल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप | ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा |
| दि<br>०२ | मा<br>०२ | व<br>०२ | १ सुनंदिनी<br>२ योगिनी<br>३ स्तनदा | ज्वर हाथ पांव संकोचदांतो का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना | सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन दिन विधान | उबले चावल सेर पर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे। | पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना | ॐ नमो भगवती स्वाहा |
| दि<br>०३ | मा<br>०३ | व<br>०३ | १ पूतना | ज्वर कम्प न प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच | पूर्ववत मूर्ति | लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे। | गोश्रृङ्ग और सांप को कांचली का धूप देना | ॐनमो भगवती स्वाहा |
| दि<br>०४ | मा<br>०४ | व<br>०४ | १ मुखमंडिका<br>२ आकाशयोगिनी | ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना | चावल के चूर्ण का पुतला विल्व के कांटे से रेखा | सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवें। | लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गोघृत धूप देना। | ॐ नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालंकमुचंसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत् |
| दि<br>०५ | मा<br>०५ | व<br>०५ | विडालिका | ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा | सेर भरचावलों की पीठी का पुतला | उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपरान्ह के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे। | पूर्ववत धूप देना | ॐ सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शांति शिशो: स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि |
| दि<br>०६ | मा<br>०६ | व<br>०६ | शकुनी | ज्वर गात्र, संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई, उदर पीड़ा | सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना | कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे को पूड़े अपरान्ह पश्चिमदिशा में तीन दिन बलि देवे | कूठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गोघृत धूप देना। | ॐ राक्षसि त्वं महाभागे बालमुंच शुभानने। क्षेम कुरु जगत्य स्मिन् शोभावान वरं कुरु |
| दि<br>०७ | मा<br>०७ | व<br>०७ | शुष्करेवती | ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना | पूर्ववत मूर्ति | सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे। | गोश्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत धूप देना। | ॐ नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि बन शिव। सगृहाँ बलि माषञ्व बाले मुँच सुशोभने। |
| दि<br>०८ | मा<br>०८ | व<br>०८ | विडालिका | ज्वर गात्र संकोच आँखें मीचना रोना जिव्हाशोष शिर पीड़ा अरुचि | पूर्ववत मूर्ति | पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्यान्ह व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे | गुग्गुल में घृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना। | ॐ नमो सर्व भूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुंच बालकम् |
| दि<br>०९ | मा<br>०९ | व<br>०९ | मनोन्मत्ता | ज्वर वमन तृष्णा श्र्वास अफारा देह संकोच उदर शूल | पूर्ववत मूर्ति | उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे। | गोश्रृङ्ग को घृत में घिसकर पूर्ववत धूप देना | ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा। |
| दि<br>१० | मा<br>१० | व<br>१० | रेवती | ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा | पूर्ववत मूर्ति | गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३ दिन बलिदेवे | गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना। | ॐ नमो भगवते वासुदेवाय फट स्वाहा। |
| दि<br>११ | मा<br>११ | व<br>११ | सुदर्शना | ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन | माष उड़द की पीठी | उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे। | पूर्ववत धूप देना | ॐ नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ॐ हुं फट स्वाहा। |
| दि<br>१२ | मा<br>१२ | व<br>१२ | अद्भुता | ज्वर रोदन पसीना आँखें दुखना सन्ताप रोमांच, शरीर पीड़ा | सेर चावल की पीठी का पुतला | ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे | गोश्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत धूप देना। | ॐनमो नारायणाय प्रज्वल २ ताप हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान् हुं फट स्वाहा |

# वर्षफल बनाने की सारिणी ( सूर्य सिद्धान्तीय )

| वर्ष | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०० | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०६ | ०० | ०१ | ०२ | ०४ | ०५ | ०६ | ०० | ०२ | ०३ |
| घड़ी | १५ | ३१ | ४६ | ०२ | १७ | ३३ | ४८ | ०४ | १९ | ३५ | ५० | ०६ | २१ | ३७ | ५२ | ०८ | २३ | ३९ | ५४ | १० | २६ | ४१ | ५७ | १२ | २८ |
| पल | ३१ | ०३ | ३४ | ०६ | ३७ | ०९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५२ | २४ | ५५ | २७ | ५८ | ३० | ०१ | ३३ | ०४ | ३६ | ०७ |
| विपल | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० |

| वर्ष | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ०४ | ०५ | ०० | ०१ | ०२ | ०४ | ०५ | ०६ | ०० | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०० | ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०० | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ |
| घड़ी | ४३ | ५९ | १४ | ३० | ४५ | ०१ | १६ | ३२ | ४७ | ०३ | १८ | ३४ | ४९ | ०५ | २१ | ३६ | ५२ | ०७ | २३ | ३८ | ५४ | ०९ | २५ | ४० | ५६ |
| पल | ३९ | १० | ४२ | १३ | ४५ | १६ | ४८ | १९ | ५१ | २२ | ५४ | २५ | ५७ | २८ | ०० | ३१ | ०३ | ३४ | ०६ | ३७ | ०९ | ४० | १३ | ४३ | १५ |
| विपल | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० |

| वर्ष | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०६ | ०० | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०६ | ०० | ०१ | ०२ | ०४ | ०५ | ०६ | ०० | ०२ | ०३ |
| घड़ी | ११ | २७ | ४२ | ५८ | १३ | २९ | ४४ | ०० | १५ | ३१ | ४७ | ०२ | १८ | ३३ | ४९ | ०४ | २० | ३५ | ५१ | ०६ | २२ | ३७ | ५३ | ०८ | २४ |
| पल | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५२ | २४ | ५५ | २७ | ५८ | ३० | ०१ | ३३ | ०४ | ३६ | ०७ | ३९ | १० | ४२ | १३ | ४५ | १६ | ४८ | १९ | ५१ | २२ |
| विपल | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० |

| वर्ष | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ०४ | ०५ | ०० | ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०० | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०० | ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०० | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ |
| घड़ी | ३९ | ५५ | १० | २६ | ४२ | ५७ | १३ | २८ | ४४ | ५९ | १५ | ३० | ४६ | ४३ | १७ | ३२ | ४८ | ०३ | १९ | ३४ | ५० | ०५ | २१ | ३६ | ५२ |
| पल | ५४ | २५ | ५७ | २८ | ०० | ३१ | ०३ | ३४ | ०६ | ३७ | ०९ | ४० | १२ | ३० | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५२ | २४ | ५५ | २७ | ५८ | ३० |
| विपल | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० |

## वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह गतवर्ष होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षेष्ट अनुसार ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

**मुन्था**—जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। **मुन्था** जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

**त्रिपताकी चक्र**—त्रिपताकी का चन्द्रमा निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

**मुद्दा दशा निकालना**—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो **सूर्य** की, २ बचें तो **चन्द्रमा**, ३ बचें तो **मंगल**, ४ से **राहु**, ५ बचें तो **गुरु**, ६ बचें तो **शनि**, ७ से **बुध**, ८ से **केतु**, ९ अथवा ० बचे तो **शुक्र** की दशा जाननी चाहिएं।

**मुद्दा दशा के दिनादि**—सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल के २१ दिन, राहु के ५४ दिन, गुरु के ४८ दिन, शनि के ५७ दिन, बुध के ५१ दिन, केतु के २१ दिन तथा शुक्र के ६० दिन मुद्दा दशा में होते हैं।

**स्थानबल**—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

**स्वभोच्चबल**—सूर्य १।५, चन्द्रमा २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६, बृहस्पति १२।४, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७—इन राशियों में ५ बल देते हैं।

**पुरुष-स्त्री ग्रहः**—स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७।८।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४।५।६।१०।११।१२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

## त्रिराशिपति चक्र

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | राशि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सू. | शु. | श. | शु. | बृ. | चं. | बु. | मं. | श. | मं. | बृ. | चं. | दिनपति |
| बृ. | चं. | बु. | मं. | सू. | शु. | श. | शु. | श. | मं. | बृ. | चं. | रात्रिपति |

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

## वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रत्यक्ष मित्र | ५—९ | ५—९ | ५—९ | ५—९ | ५—९ | ५—९ | ५—९ |
| गुप्त मित्र | ३—११ | ३—११ | ३—११ | ३—११ | ३—११ | ३—११ | ३—११ |
| प्रत्यक्ष शत्रु | १—७ | १—७ | १—७ | १—७ | १—७ | १—७ | १—७ |
| गुप्त शत्रु | ४—१० | ४—१० | ४—१० | ४—१० | ४—१० | ४—१० | ४—१० |

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

### दृष्टि फल

**प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि**—इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

**गुप्त शत्रु दृष्टि**—यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

**गुप्त मित्र दृष्टि**—इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

**प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि**—इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन-मुटाव इत्यादि हैं।

# वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी ( घण्टा-मिनटों में )

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में-**अर्थात्** 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकिंडों में सूर्य पुनः उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुनः उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैकिंड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकिंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्षमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अंतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारणी से एक/दो लग्नों का अतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्पयूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सरिणी का ही अनुमोदन किया जाता है। गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेद्ध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी घण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। **वर्ष-लग्न** निकालने के लिए इसका प्रयोग **और भी अधिक सरल** है।

| | वार | घंटे | मिनट |
|---|---|---|---|
| **जन्म वार समयादि** | 4 | 5 | 30 |
| **सारिणी से प्राप्त संख्या** | + 6 | 19 | 38 |
| | 10 | 25 | 08 |
| **अर्थात् ( बुधवार )** | 4 वार | 01 | 08 |

**प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि**—आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम **गताब्द** अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देने से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार एवं घण्टा-मिनट भा. स्टैं. टाईम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। **ध्यान रहे**, सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घटा दें, तथा 1 वार जमा कर लेवें। वार की गणना रविवार से की जाती है।

**उदाहरण**—मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर, 1974 ई० में, बुधवार की प्रातः साढ़े पाँच (5/30)बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2024 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2024 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 50 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दी गई वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 50 के सामने हमें 6 वार, 19 घण्टे एवं 38 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (5/30) में जमा कर देने से हमें 10 वार, 25 घण्टे, 08 मिनट प्राप्त हुए। हमें 11 वार अर्थात् 7 वार ऋण करने पर हमें बुधवार की रात्रि 01 बजकर, 08 मिनट प्राप्त हुए।

जन्त्री/पंचाँग में दी गई दै. लग्न सारिणी से देखने पर 1 अक्तू., मंगल/बुधवार की मध्यरात्रि 25$^{\text{घं.}}$–08$^{\text{मिं.}}$ पर हमें **'कर्क' वर्ष लग्न** प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न कर्क में सं. २०८१ की पंचांग से 1 अक्तूबर, 2024 ई. की मंगल/बुध की मध्य रात्रि 25$^{\text{घं.}}$–08$^{\text{मिं.}}$ स्टै. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर **मुंथा** स्थापित की जाती है।

**वर्ष लग्न** के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित **'वर्षफल चन्द्रिका'** पुस्तक का अध्ययन करें। मूल्य केवल 150 रु.।

| गत वर्ष | वार | घंटे | मिंट | गत वर्ष | वार | घंटे | मिंट | गत वर्ष | वार | घंटे | मिंट | गत वर्ष | वार | घंटे | मिंट |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 1 | 6 | 9 | 26 | 4 | 15 | 58 | 51 | 1 | 01 | 47 | 76 | 4 | 11 | 36 |
| 2 | 2 | 12 | 18 | 27 | 5 | 22 | 07 | 52 | 2 | 07 | 57 | 77 | 5 | 17 | 46 |
| 3 | 3 | 18 | 27 | 28 | 0 | 04 | 17 | 53 | 3 | 14 | 06 | 78 | 6 | 23 | 55 |
| 4 | 5 | 00 | 37 | 29 | 1 | 10 | 26 | 54 | 4 | 20 | 15 | 79 | 1 | 06 | 04 |
| 5 | 6 | 6 | 46 | 30 | 2 | 16 | 35 | 55 | 6 | 02 | 24 | 80 | 2 | 12 | 13 |
| 6 | 0 | 12 | 55 | 31 | 3 | 22 | 44 | 56 | 0 | 08 | 33 | 81 | 3 | 18 | 22 |
| 7 | 1 | 19 | 04 | 32 | 5 | 04 | 53 | 57 | 1 | 14 | 42 | 82 | 5 | 00 | 31 |
| 8 | 3 | 01 | 13 | 33 | 6 | 11 | 02 | 58 | 2 | 20 | 51 | 83 | 6 | 06 | 41 |
| 9 | 4 | 07 | 23 | 34 | 0 | 17 | 32 | 59 | 4 | 03 | 01 | 84 | 0 | 12 | 50 |
| 10 | 5 | 13 | 32 | 35 | 1 | 23 | 21 | 60 | 5 | 09 | 10 | 85 | 1 | 18 | 59 |
| 11 | 6 | 19 | 41 | 36 | 3 | 05 | 30 | 61 | 6 | 15 | 19 | 86 | 3 | 01 | 08 |
| 12 | 1 | 01 | 50 | 37 | 4 | 11 | 39 | 62 | 0 | 21 | 28 | 87 | 4 | 07 | 17 |
| 13 | 2 | 07 | 59 | 38 | 5 | 17 | 48 | 63 | 2 | 03 | 37 | 88 | 5 | 13 | 26 |
| 14 | 3 | 14 | 08 | 39 | 6 | 23 | 57 | 64 | 3 | 06 | 43 | 89 | 6 | 19 | 36 |
| 15 | 4 | 20 | 17 | 40 | 1 | 06 | 07 | 65 | 4 | 15 | 56 | 90 | 1 | 01 | 45 |
| 16 | 6 | 02 | 27 | 41 | 2 | 12 | 16 | 66 | 5 | 22 | 05 | 91 | 2 | 07 | 54 |
| 17 | 0 | 08 | 36 | 42 | 3 | 18 | 25 | 67 | 0 | 04 | 14 | 92 | 3 | 14 | 03 |
| 18 | 1 | 14 | 45 | 43 | 5 | 00 | 34 | 68 | 1 | 10 | 23 | 93 | 4 | 20 | 12 |
| 19 | 2 | 20 | 54 | 44 | 6 | 06 | 43 | 69 | 2 | 16 | 32 | 94 | 6 | 02 | 21 |
| 20 | 4 | 03 | 03 | 45 | 0 | 12 | 42 | 70 | 3 | 22 | 41 | 95 | 0 | 08 | 30 |
| 21 | 5 | 9 | 12 | 46 | 1 | 19 | 02 | 71 | 5 | 04 | 51 | 96 | 1 | 14 | 40 |
| 22 | 6 | 15 | 22 | 47 | 3 | 01 | 11 | 72 | 6 | 11 | 00 | 97 | 2 | 20 | 49 |
| 23 | 0 | 21 | 31 | 48 | 4 | 07 | 20 | 73 | 0 | 17 | 09 | 98 | 4 | 20 | 58 |
| 24 | 2 | 03 | 40 | 49 | 5 | 13 | 29 | 74 | 1 | 23 | 18 | 99 | 5 | 09 | 07 |
| 25 | 3 | 09 | 49 | 50 | 6 | 19 | 38 | 75 | 3 | 05 | 27 | 100 | 6 | 15 | 16 |

## दैनिक लग्न सारणी जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

| जनवरी | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं.मिं. | घं. मिं. |
| 1 | 8 10 | 9 53 | 11 21 | 12 45 | 14 21 | 16 16 | 18 30 | 20 50 | 23 09 | 1 25 | 3 43 | 6 02 |
| 2 | 8 06 | 9 49 | 11 17 | 12 41 | 14 17 | 16 12 | 18 26 | 20 47 | 23 05 | 1 21 | 3 39 | 5 58 |
| 3 | 8 02 | 9 45 | 11 13 | 12 37 | 14 13 | 16 08 | 18 22 | 20 43 | 23 01 | 1 17 | 3 35 | 5 54 |
| 4 | 7 58 | 9 41 | 11 09 | 12 33 | 14 09 | 16 04 | 18 18 | 20 39 | 22 57 | 1 13 | 3 31 | 5 50 |
| 5 | 7 54 | 9 37 | 11 05 | 12 29 | 14 05 | 16 00 | 18 14 | 20 35 | 22 53 | 1 09 | 3 27 | 5 46 |
| 6 | 7 50 | 9 33 | 11 01 | 12 25 | 14 01 | 15 56 | 18 10 | 20 31 | 22 49 | 1 05 | 3 23 | 5 42 |
| 7 | 7 46 | 9 29 | 10 57 | 12 21 | 13 57 | 15 52 | 18 06 | 20 27 | 22 45 | 1 01 | 3 19 | 5 38 |
| 8 | 7 42 | 9 25 | 10 53 | 12 17 | 13 53 | 15 48 | 18 02 | 20 23 | 22 41 | 0 57 | 3 15 | 5 34 |
| 9 | 7 38 | 9 21 | 10 49 | 12 13 | 13 49 | 15 44 | 17 58 | 20 18 | 22 37 | 0 53 | 3 11 | 5 30 |
| 10 | 7 34 | 9 17 | 10 45 | 12 09 | 13 45 | 15 40 | 17 54 | 20 15 | 22 33 | 0 49 | 3 07 | 5 26 |
| 11 | 7 30 | 9 13 | 10 41 | 12 05 | 13 41 | 15 36 | 17 50 | 20 11 | 22 29 | 0 45 | 3 03 | 5 22 |
| 12 | 7 26 | 9 09 | 10 37 | 12 01 | 13 37 | 15 32 | 17 46 | 20 07 | 22 25 | 0 41 | 2 59 | 5 18 |
| 13 | 7 22 | 9 05 | 10 33 | 11 57 | 13 33 | 15 28 | 17 42 | 20 04 | 22 22 | 0 37 | 2 55 | 5 14 |
| 14 | 7 18 | 9 01 | 10 29 | 11 53 | 13 29 | 15 24 | 17 38 | 20 00 | 22 18 | 0 33 | 2 51 | 5 10 |
| 15 | 7 14 | 8 57 | 10 25 | 11 49 | 13 25 | 15 20 | 17 34 | 19 56 | 22 14 | 0 29 | 2 47 | 5 6 |
| 16 | 7 10 | 8 54 | 10 22 | 11 46 | 13 22 | 15 17 | 17 31 | 19 52 | 22 10 | 0 26 | 2 43 | 5 2 |
| 17 | 7 06 | 8 50 | 10 18 | 11 42 | 13 18 | 15 13 | 17 27 | 19 48 | 22 06 | 0 22 | 2 39 | 4 58 |
| 18 | 7 02 | 8 46 | 10 14 | 11 38 | 13 14 | 15 09 | 17 23 | 19 44 | 22 02 | 0 18 | 2 35 | 4 54 |
| 19 | 6 58 | 8 42 | 10 10 | 11 34 | 13 10 | 15 05 | 17 19 | 19 40 | 21 58 | 0 14 | 2 31 | 4 51 |
| 20 | 6 54 | 8 38 | 10 06 | 11 30 | 13 06 | 15 01 | 17 15 | 19 36 | 21 54 | 0 10 | 2 27 | 4 47 |
| 21 | 6 50 | 8 34 | 10 02 | 11 26 | 13 02 | 14 57 | 17 11 | 19 32 | 21 50 | 0 6 | 2 23 | 4 43 |
| 22 | 6 47 | 8 30 | 9 58 | 11 22 | 12 58 | 14 53 | 17 07 | 19 28 | 21 46 | 0 2 | 2 19 | 4 39 |
| 23 | 6 43 | 8 26 | 9 54 | 11 18 | 12 54 | 14 49 | 17 03 | 19 24 | 21 42 | 23 58 | 2 15 | 4 35 |
| 24 | 6 39 | 8 22 | 9 50 | 11 14 | 12 50 | 14 45 | 16 59 | 19 20 | 21 38 | 23 54 | 2 12 | 4 31 |
| 25 | 6 35 | 8 18 | 9 46 | 11 10 | 12 46 | 14 41 | 16 55 | 19 16 | 21 34 | 23 50 | 2 08 | 4 27 |
| 26 | 6 31 | 8 15 | 9 43 | 11 07 | 12 43 | 14 38 | 16 52 | 19 13 | 21 31 | 23 47 | 2 04 | 4 23 |
| 27 | 6 27 | 8 11 | 9 39 | 11 03 | 12 39 | 14 34 | 16 48 | 19 09 | 21 27 | 23 43 | 2 00 | 4 19 |
| 28 | 6 23 | 8 07 | 9 35 | 10 59 | 12 35 | 14 30 | 16 44 | 19 05 | 21 23 | 23 39 | 1 56 | 4 16 |
| 29 | 6 19 | 8 03 | 9 31 | 10 55 | 12 31 | 14 26 | 16 40 | 19 01 | 21 19 | 23 35 | 1 52 | 4 12 |
| 30 | 6 15 | 7 59 | 9 27 | 10 51 | 12 27 | 14 22 | 16 36 | 18 57 | 21 15 | 23 31 | 1 48 | 4 08 |
| 31 | 6 12 | 7 55 | 9 23 | 10 47 | 12 23 | 14 18 | 16 32 | 18 53 | 21 11 | 23 27 | 1 44 | 4 04 |
| फर | 6 08 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — |

## दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

| फरवरी | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं.मिं. | घं. मिं. |
| 1 | 7 51 | 9 19 | 10 43 | 12 19 | 14 14 | 16 28 | 18 49 | 21 07 | 23 23 | 1 40 | 4 00 | 6 04 |
| 2 | 7 47 | 9 15 | 10 39 | 12 15 | 14 10 | 16 24 | 18 45 | 21 03 | 23 19 | 1 36 | 3 56 | 6 00 |
| 3 | 7 43 | 9 11 | 10 35 | 12 11 | 14 06 | 16 20 | 18 41 | 20 59 | 23 15 | 1 32 | 3 52 | 5 56 |
| 4 | 7 39 | 9 07 | 10 31 | 12 07 | 14 02 | 16 16 | 18 37 | 20 55 | 23 11 | 1 28 | 3 48 | 5 52 |
| 5 | 7 35 | 9 03 | 10 27 | 12 03 | 13 58 | 16 12 | 18 33 | 20 52 | 23 07 | 1 24 | 3 44 | 5 48 |
| 6 | 7 31 | 8 59 | 10 23 | 11 59 | 13 54 | 16 08 | 18 29 | 20 48 | 23 03 | 1 21 | 3 40 | 5 44 |
| 7 | 7 27 | 8 55 | 10 19 | 11 55 | 13 50 | 16 04 | 18 25 | 20 44 | 22 59 | 1 17 | 3 36 | 5 40 |
| 8 | 7 23 | 8 51 | 10 15 | 11 51 | 13 46 | 16 00 | 18 21 | 20 40 | 22 55 | 1 13 | 3 32 | 5 36 |
| 9 | 7 19 | 8 47 | 10 11 | 11 47 | 13 42 | 15 56 | 18 18 | 20 36 | 22 51 | 1 09 | 3 28 | 5 32 |
| 10 | 7 15 | 8 43 | 10 07 | 11 43 | 13 38 | 15 52 | 18 14 | 20 32 | 22 47 | 1 05 | 3 24 | 5 28 |
| 11 | 7 11 | 8 39 | 10 03 | 11 39 | 13 34 | 15 48 | 18 10 | 20 28 | 22 43 | 1 01 | 3 20 | 5 24 |
| 12 | 7 07 | 8 35 | 9 59 | 11 35 | 13 30 | 15 44 | 18 06 | 20 24 | 22 39 | 24 57 | 3 16 | 5 20 |
| 13 | 7 04 | 8 31 | 9 55 | 11 31 | 13 26 | 15 40 | 18 02 | 20 20 | 22 35 | 24 53 | 3 12 | 5 16 |
| 14 | 7 00 | 8 27 | 9 51 | 11 27 | 13 22 | 15 36 | 17 58 | 20 16 | 22 31 | 24 49 | 3 08 | 5 12 |
| 15 | 6 56 | 8 23 | 9 47 | 11 23 | 13 18 | 15 32 | 17 54 | 20 12 | 22 27 | 24 45 | 3 04 | 5 08 |
| 16 | 6 52 | 8 19 | 9 43 | 11 19 | 13 14 | 15 28 | 17 50 | 20 08 | 22 23 | 24 41 | 3 00 | 5 04 |
| 17 | 6 48 | 8 15 | 9 39 | 11 15 | 13 10 | 15 24 | 17 46 | 20 04 | 22 19 | 24 37 | 2 56 | 5 01 |
| 18 | 6 44 | 8 11 | 9 35 | 11 11 | 13 06 | 15 20 | 17 42 | 20 00 | 22 15 | 24 33 | 2 52 | 4 57 |
| 19 | 6 40 | 8 07 | 9 31 | 11 07 | 13 02 | 15 16 | 17 38 | 19 56 | 22 11 | 24 29 | 2 48 | 4 53 |
| 20 | 6 36 | 8 04 | 9 28 | 11 04 | 12 58 | 15 13 | 17 34 | 19 52 | 22 07 | 24 25 | 2 44 | 4 49 |
| 21 | 6 32 | 8 00 | 9 24 | 11 00 | 12 55 | 15 09 | 17 30 | 19 48 | 22 03 | 24 21 | 2 41 | 4 45 |
| 22 | 6 28 | 7 56 | 9 20 | 10 56 | 12 51 | 15 05 | 17 26 | 19 44 | 21 59 | 24 17 | 2 37 | 4 41 |
| 23 | 6 24 | 7 52 | 9 16 | 10 52 | 12 47 | 15 01 | 17 22 | 19 40 | 21 55 | 24 14 | 2 33 | 4 37 |
| 24 | 6 21 | 7 49 | 9 13 | 10 49 | 12 44 | 14 58 | 17 19 | 19 37 | 21 52 | 24 11 | 2 30 | 4 34 |
| 25 | 6 18 | 7 46 | 9 10 | 10 46 | 12 41 | 14 55 | 17 16 | 19 34 | 21 49 | 24 08 | 2 27 | 4 31 |
| 26 | 6 14 | 7 42 | 9 06 | 10 42 | 12 37 | 14 51 | 17 12 | 19 30 | 21 45 | 24 04 | 2 23 | 4 27 |
| 27 | 6 11 | 7 39 | 9 03 | 10 39 | 12 34 | 14 48 | 17 09 | 19 27 | 21 42 | 24 01 | 2 20 | 4 24 |
| 28 | 6 08 | 7 36 | 9 00 | 10 36 | 12 31 | 14 45 | 17 06 | 19 24 | 21 39 | 23 58 | 2 17 | 4 21 |
| 29 | 6 04 | 7 32 | 8 56 | 10 32 | 12 27 | 14 41 | 17 02 | 19 20 | 21 35 | 23 54 | 2 13 | 4 17 |
| मार्च | 6 00 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — |

## दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

| मार्च | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं | घं.मिं. | घं. मिं. |
| 1 | 7 28 | 8 53 | 10 28 | 12 23 | 14 37 | 16 58 | 19 16 | 21 31 | 23 50 | 2 09 | 4 13 | 5 57 |
| 2 | 7 24 | 8 49 | 10 24 | 12 19 | 14 33 | 16 54 | 19 12 | 21 27 | 23 46 | 2 05 | 4 09 | 5 53 |
| 3 | 7 21 | 8 45 | 10 21 | 12 16 | 14 30 | 16 50 | 19 08 | 21 23 | 23 42 | 2 01 | 4 05 | 5 49 |
| 4 | 7 17 | 8 41 | 10 17 | 12 12 | 14 26 | 16 46 | 19 04 | 21 19 | 23 38 | 1 57 | 4 01 | 5 45 |
| 5 | 7 13 | 8 37 | 10 13 | 12 08 | 14 22 | 16 42 | 19 00 | 21 15 | 23 35 | 1 53 | 3 58 | 5 41 |
| 6 | 7 09 | 8 33 | 10 09 | 12 04 | 14 18 | 16 38 | 18 56 | 21 11 | 23 31 | 1 49 | 3 54 | 5 37 |
| 7 | 7 05 | 8 29 | 10 05 | 12 00 | 14 14 | 16 34 | 18 52 | 21 08 | 23 27 | 1 45 | 3 50 | 5 33 |
| 8 | 7 01 | 8 25 | 10 01 | 11 56 | 14 10 | 16 30 | 18 48 | 21 04 | 23 23 | 1 41 | 3 46 | 5 29 |
| 9 | 6 57 | 8 21 | 9 57 | 11 52 | 14 06 | 16 27 | 18 45 | 21 00 | 23 19 | 1 38 | 3 42 | 5 25 |
| 10 | 6 53 | 8 17 | 9 53 | 11 48 | 14 02 | 16 23 | 18 41 | 20 56 | 23 15 | 1 34 | 3 38 | 5 21 |
| 11 | 6 49 | 8 13 | 9 49 | 11 44 | 13 58 | 16 19 | 18 37 | 20 52 | 23 11 | 1 30 | 3 34 | 5 17 |
| 12 | 6 45 | 8 09 | 9 45 | 11 40 | 13 54 | 16 15 | 18 33 | 20 48 | 23 08 | 1 26 | 3 30 | 5 14 |
| 13 | 6 41 | 8 05 | 9 41 | 11 36 | 13 50 | 16 11 | 18 29 | 20 44 | 23 04 | 1 23 | 3 27 | 5 10 |
| 14 | 6 37 | 8 01 | 9 37 | 11 32 | 13 46 | 16 07 | 18 25 | 20 40 | 23 00 | 1 19 | 3 23 | 5 06 |
| 15 | 6 33 | 7 57 | 9 33 | 11 28 | 13 42 | 16 03 | 18 21 | 20 36 | 22 56 | 1 15 | 3 19 | 5 02 |
| 16 | 6 29 | 7 53 | 9 29 | 11 24 | 13 38 | 15 59 | 18 17 | 20 32 | 22 52 | 1 11 | 3 15 | 4 58 |
| 17 | 6 25 | 7 49 | 9 25 | 11 20 | 13 34 | 15 55 | 18 13 | 20 28 | 22 48 | 1 07 | 3 11 | 4 54 |
| 18 | 6 21 | 7 45 | 9 21 | 11 16 | 13 30 | 15 51 | 18 09 | 20 24 | 22 44 | 1 03 | 3 07 | 4 50 |
| 19 | 6 17 | 7 41 | 9 17 | 11 12 | 13 26 | 15 47 | 18 05 | 20 20 | 22 40 | 0 59 | 3 03 | 4 46 |
| 20 | 6 13 | 7 37 | 9 13 | 11 08 | 13 23 | 15 43 | 18 01 | 20 16 | 22 36 | 0 55 | 2 59 | 4 42 |
| 21 | 6 09 | 7 33 | 9 09 | 11 04 | 13 19 | 15 39 | 17 57 | 20 12 | 22 32 | 0 51 | 2 55 | 4 38 |
| 22 | 6 05 | 7 29 | 9 05 | 11 00 | 13 15 | 15 35 | 17 53 | 20 08 | 22 28 | 0 47 | 2 51 | 4 34 |
| 23 | 6 01 | 7 26 | 9 01 | 10 56 | 13 11 | 15 31 | 17 49 | 20 04 | 22 24 | 0 43 | 2 47 | 4 30 |
| 24 | 5 57 | 7 22 | 8 57 | 10 53 | 13 07 | 15 27 | 17 45 | 20 00 | 22 20 | 0 39 | 2 43 | 4 27 |
| 25 | 5 53 | 7 18 | 8 53 | 10 49 | 13 03 | 15 23 | 17 41 | 19 56 | 22 16 | 0 35 | 2 39 | 4 23 |
| 26 | 5 49 | 7 14 | 8 49 | 10 45 | 12 59 | 15 19 | 17 37 | 19 53 | 22 12 | 0 31 | 2 35 | 4 19 |
| 27 | 5 45 | 7 10 | 8 46 | 10 41 | 12 55 | 15 15 | 17 33 | 19 49 | 22 08 | 0 27 | 2 31 | 4 15 |
| 28 | 5 41 | 7 06 | 8 42 | 10 37 | 12 51 | 15 11 | 17 29 | 19 45 | 22 04 | 0 23 | 2 28 | 4 11 |
| 29 | 5 37 | 7 02 | 8 38 | 10 33 | 12 47 | 15 07 | 17 25 | 19 41 | 22 00 | 0 19 | 2 24 | 4 07 |
| 30 | 5 34 | 6 58 | 8 34 | 10 29 | 12 44 | 15 03 | 17 21 | 19 37 | 21 56 | 0 15 | 2 20 | 4 03 |
| 31 | 5 30 | 6 54 | 8 30 | 10 25 | 12 40 | 14 59 | 17 17 | 19 33 | 21 52 | 0 11 | 2 16 | 3 59 |
| अप्रै | 5 26 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — |

## दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

| अप्रैल | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं.मिं. | घं. मिं. |
| 1 | 6 50 | 8 26 | 10 21 | 12 36 | 14 55 | 17 13 | 19 29 | 21 48 | 0 07 | 2 12 | 3 55 | 5 22 |
| 2 | 6 46 | 8 22 | 10 17 | 12 32 | 14 51 | 17 09 | 19 25 | 21 44 | 0 03 | 2 08 | 3 51 | 5 18 |
| 3 | 6 42 | 8 18 | 10 13 | 12 28 | 14 47 | 17 05 | 19 21 | 21 40 | 23 59 | 2 04 | 3 47 | 5 14 |
| 4 | 6 38 | 8 14 | 10 09 | 12 24 | 14 43 | 17 01 | 19 18 | 21 36 | 23 55 | 2 00 | 3 43 | 5 10 |
| 5 | 6 34 | 8 10 | 10 05 | 12 20 | 14 39 | 16 57 | 19 14 | 21 33 | 23 52 | 1 56 | 3 39 | 5 06 |
| 6 | 6 31 | 8 07 | 10 01 | 12 16 | 14 35 | 16 53 | 19 10 | 21 29 | 23 48 | 1 52 | 3 35 | 5 02 |
| 7 | 6 27 | 8 03 | 9 58 | 12 12 | 14 31 | 16 49 | 19 06 | 21 25 | 23 44 | 1 48 | 3 31 | 4 58 |
| 8 | 6 23 | 7 59 | 9 54 | 12 08 | 14 27 | 16 46 | 19 02 | 21 21 | 23 40 | 1 44 | 3 27 | 4 54 |
| 9 | 6 19 | 7 55 | 9 50 | 12 04 | 14 23 | 16 42 | 18 58 | 21 17 | 23 36 | 1 40 | 3 23 | 4 51 |
| 10 | 6 15 | 7 51 | 9 46 | 12 00 | 14 20 | 16 38 | 18 54 | 21 13 | 23 32 | 1 36 | 3 19 | 4 47 |
| 11 | 6 11 | 7 47 | 9 42 | 11 56 | 14 16 | 16 34 | 18 50 | 21 09 | 23 28 | 1 32 | 3 15 | 4 43 |
| 12 | 6 07 | 7 43 | 9 38 | 11 52 | 14 12 | 16 30 | 18 46 | 21 05 | 23 24 | 1 28 | 3 11 | 4 39 |
| 13 | 6 03 | 7 39 | 9 34 | 11 48 | 14 08 | 16 26 | 18 42 | 21 01 | 23 20 | 1 24 | 3 07 | 4 35 |
| 14 | 5 59 | 7 35 | 9 30 | 11 44 | 14 04 | 16 22 | 18 38 | 20 57 | 23 16 | 1 20 | 3 03 | 4 31 |
| 15 | 5 55 | 7 31 | 9 26 | 11 41 | 14 00 | 16 18 | 18 34 | 20 53 | 23 12 | 1 16 | 2 59 | 4 27 |
| 16 | 5 51 | 7 27 | 9 22 | 11 37 | 13 56 | 16 14 | 18 30 | 20 49 | 23 08 | 1 12 | 2 55 | 4 23 |
| 17 | 5 47 | 7 23 | 9 18 | 11 33 | 13 52 | 16 10 | 18 26 | 20 45 | 23 04 | 1 08 | 2 51 | 4 19 |
| 18 | 5 43 | 7 19 | 9 15 | 11 29 | 13 49 | 16 06 | 18 23 | 20 41 | 23 00 | 1 04 | 2 47 | 4 15 |
| 19 | 5 39 | 7 15 | 9 11 | 11 25 | 13 45 | 16 02 | 18 19 | 20 37 | 22 56 | 1 00 | 2 43 | 4 11 |
| 20 | 5 35 | 7 11 | 9 07 | 11 21 | 13 41 | 15 58 | 18 15 | 20 33 | 22 52 | 0 56 | 2 39 | 4 07 |
| 21 | 5 31 | 7 07 | 9 03 | 11 17 | 13 37 | 15 54 | 18 11 | 20 29 | 22 49 | 0 52 | 2 35 | 4 03 |
| 22 | 5 27 | 7 03 | 8 59 | 11 13 | 13 33 | 15 50 | 18 07 | 20 25 | 22 45 | 0 48 | 2 31 | 3 59 |
| 23 | 5 23 | 6 59 | 8 55 | 11 09 | 13 29 | 15 46 | 18 03 | 20 22 | 22 41 | 0 44 | 2 27 | 3 55 |
| 24 | 5 19 | 6 55 | 8 51 | 11 05 | 13 25 | 15 42 | 17 59 | 20 18 | 22 37 | 0 40 | 2 23 | 3 51 |
| 25 | 5 15 | 6 51 | 8 47 | 11 01 | 13 21 | 15 38 | 17 55 | 20 14 | 22 33 | 0 36 | 2 19 | 3 47 |
| 26 | 5 11 | 6 47 | 8 43 | 10 57 | 13 17 | 15 34 | 17 51 | 20 10 | 22 29 | 0 32 | 2 15 | 3 43 |
| 27 | 5 07 | 6 44 | 8 39 | 10 53 | 13 13 | 15 30 | 17 47 | 20 06 | 22 25 | 0 28 | 2 11 | 3 39 |
| 28 | 5 03 | 6 40 | 8 35 | 10 49 | 13 10 | 15 26 | 17 43 | 20 02 | 22 21 | 0 24 | 2 07 | 3 35 |
| 29 | 4 59 | 6 36 | 8 31 | 10 45 | 13 06 | 15 22 | 17 39 | 19 58 | 22 17 | 0 20 | 2 03 | 3 31 |
| 30 | 4 55 | 6 32 | 8 27 | 10 41 | 13 02 | 15 19 | 17 35 | 19 54 | 22 13 | 0 17 | 1 59 | 3 27 |
| मई | 4 51 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — |

## दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

| मई | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं.मिं. | घं. मिं. |
| 1 | 6 28 | 8 23 | 10 37 | 12 58 | 15 15 | 17 31 | 19 50 | 22 09 | 00 13 | 1 56 | 3 23 | 4 47 |
| 2 | 6 24 | 8 19 | 10 33 | 12 54 | 15 11 | 17 27 | 19 46 | 22 05 | 00 09 | 1 52 | 3 19 | 4 44 |
| 3 | 6 20 | 8 15 | 10 29 | 12 50 | 15 7 | 17 24 | 19 42 | 22 01 | 00 05 | 1 48 | 3 16 | 4 40 |
| 4 | 6 16 | 8 11 | 10 25 | 12 46 | 15 3 | 17 20 | 19 38 | 21 57 | 00 01 | 1 44 | 3 12 | 4 36 |
| 5 | 6 12 | 8 07 | 10 21 | 12 42 | 14 59 | 17 16 | 19 34 | 21 53 | 23 57 | 1 40 | 3 08 | 4 32 |
| 6 | 6 08 | 8 03 | 10 17 | 12 38 | 14 55 | 17 12 | 19 30 | 21 49 | 23 53 | 1 36 | 3 04 | 4 28 |
| 7 | 6 04 | 7 59 | 10 13 | 12 34 | 14 51 | 17 08 | 19 26 | 21 45 | 23 49 | 1 32 | 3 00 | 4 24 |
| 8 | 6 00 | 7 55 | 10 09 | 12 30 | 14 47 | 17 04 | 19 22 | 21 41 | 23 45 | 1 28 | 2 56 | 4 20 |
| 9 | 5 56 | 7 51 | 10 05 | 12 26 | 14 43 | 17 00 | 19 18 | 21 37 | 23 41 | 1 24 | 2 52 | 4 16 |
| 10 | 5 52 | 7 47 | 10 01 | 12 22 | 14 39 | 16 56 | 19 14 | 21 33 | 23 37 | 1 20 | 2 48 | 4 12 |
| 11 | 5 48 | 7 44 | 9 57 | 12 18 | 14 35 | 16 52 | 19 10 | 21 29 | 23 33 | 1 16 | 2 44 | 4 08 |
| 12 | 5 44 | 7 40 | 9 53 | 12 14 | 14 31 | 16 48 | 19 06 | 21 25 | 23 29 | 1 12 | 2 40 | 4 04 |
| 13 | 5 40 | 7 36 | 9 49 | 12 10 | 14 28 | 16 44 | 19 02 | 21 21 | 23 25 | 1 08 | 2 36 | 4 00 |
| 14 | 5 36 | 7 32 | 9 45 | 12 06 | 14 24 | 16 40 | 18 58 | 21 17 | 23 21 | 1 04 | 2 32 | 3 56 |
| 15 | 5 32 | 7 28 | 9 41 | 12 02 | 14 20 | 16 36 | 18 54 | 21 13 | 23 17 | 1 00 | 2 28 | 3 52 |
| 16 | 5 28 | 7 24 | 9 37 | 11 58 | 14 16 | 16 32 | 18 50 | 21 09 | 23 13 | 24 56 | 2 24 | 3 48 |
| 17 | 5 24 | 7 20 | 9 33 | 11 54 | 14 12 | 16 28 | 18 46 | 21 05 | 23 09 | 24 52 | 2 20 | 3 44 |
| 18 | 5 20 | 7 16 | 9 29 | 11 50 | 14 08 | 16 24 | 18 42 | 21 01 | 23 05 | 24 48 | 2 16 | 3 40 |
| 19 | 5 16 | 7 12 | 9 25 | 11 46 | 14 04 | 16 20 | 18 38 | 20 57 | 23 01 | 24 44 | 2 12 | 3 36 |
| 20 | 5 12 | 7 08 | 9 21 | 11 42 | 14 00 | 16 16 | 18 34 | 20 53 | 22 57 | 24 40 | 2 09 | 3 32 |
| 21 | 5 08 | 7 04 | 9 17 | 11 38 | 13 56 | 16 12 | 18 30 | 20 49 | 22 53 | 24 36 | 2 05 | 3 28 |
| 22 | 5 04 | 7 00 | 9 13 | 11 34 | 13 52 | 16 08 | 18 26 | 20 45 | 22 49 | 24 32 | 2 01 | 3 24 |
| 23 | 5 00 | 6 56 | 9 09 | 11 30 | 13 48 | 16 04 | 18 22 | 20 41 | 22 45 | 24 28 | 1 57 | 3 20 |
| 24 | 4 56 | 6 52 | 9 05 | 11 26 | 13 44 | 16 01 | 18 19 | 20 38 | 22 42 | 24 25 | 1 53 | 3 16 |
| 25 | 4 52 | 6 48 | 9 01 | 11 22 | 13 40 | 15 57 | 18 15 | 20 34 | 22 38 | 24 21 | 1 49 | 3 12 |
| 26 | 4 48 | 6 44 | 8 58 | 11 18 | 13 36 | 15 53 | 18 11 | 20 30 | 22 34 | 24 17 | 1 45 | 3 08 |
| 27 | 4 44 | 6 40 | 8 54 | 11 14 | 13 32 | 15 49 | 18 07 | 20 26 | 22 30 | 24 13 | 1 41 | 3 04 |
| 28 | 4 40 | 6 36 | 8 50 | 11 10 | 13 28 | 15 45 | 18 03 | 20 22 | 22 26 | 24 09 | 1 37 | 3 01 |
| 29 | 4 36 | 6 32 | 8 46 | 11 06 | 13 24 | 15 41 | 17 59 | 20 18 | 22 22 | 24 05 | 1 33 | 2 57 |
| 30 | 4 33 | 6 28 | 8 42 | 11 02 | 13 20 | 15 37 | 17 55 | 20 14 | 22 18 | 24 01 | 1 29 | 2 53 |
| 31 | 4 29 | 6 24 | 8 38 | 10 58 | 13 16 | 15 33 | 17 51 | 20 10 | 22 14 | 23 57 | 1 25 | 2 49 |
| जून | 4 25 | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— |

## दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

| जून | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं.मिं. | घं. मिं. |
| 1 | 6 20 | 8 35 | 10 54 | 13 12 | 15 29 | 17 47 | 20 06 | 22 10 | 23 53 | 1 21 | 2 45 | 4 21 |
| 2 | 6 16 | 8 31 | 10 50 | 13 08 | 15 25 | 17 43 | 20 02 | 22 06 | 23 49 | 1 17 | 2 41 | 4 17 |
| 3 | 6 12 | 8 27 | 10 46 | 13 04 | 15 21 | 17 39 | 19 58 | 22 02 | 23 45 | 1 13 | 2 37 | 4 13 |
| 4 | 6 08 | 8 23 | 10 42 | 13 00 | 15 17 | 17 35 | 19 54 | 21 58 | 23 41 | 1 09 | 2 33 | 4 09 |
| 5 | 6 04 | 8 19 | 10 38 | 12 56 | 15 13 | 17 31 | 19 50 | 21 54 | 23 37 | 1 05 | 2 29 | 4 05 |
| 6 | 6 00 | 8 15 | 10 34 | 12 52 | 15 09 | 17 27 | 19 46 | 21 50 | 23 33 | 1 01 | 2 25 | 4 01 |
| 7 | 5 57 | 8 11 | 10 31 | 12 48 | 15 05 | 17 23 | 19 42 | 21 46 | 23 29 | 24 57 | 2 21 | 3 58 |
| 8 | 5 53 | 8 07 | 10 27 | 12 44 | 15 01 | 17 19 | 19 39 | 21 43 | 23 26 | 24 53 | 2 17 | 3 54 |
| 9 | 5 49 | 8 03 | 10 23 | 12 40 | 14 58 | 17 16 | 19 35 | 21 39 | 23 22 | 24 49 | 2 13 | 3 50 |
| 10 | 5 45 | 7 59 | 10 19 | 12 37 | 14 54 | 17 12 | 19 31 | 21 35 | 23 18 | 24 46 | 2 09 | 3 46 |
| 11 | 5 41 | 7 55 | 10 15 | 12 33 | 14 50 | 17 08 | 19 27 | 21 31 | 23 14 | 24 42 | 2 05 | 3 42 |
| 12 | 5 37 | 7 51 | 10 11 | 12 29 | 14 46 | 17 04 | 19 23 | 21 27 | 23 10 | 24 38 | 2 02 | 3 38 |
| 13 | 5 33 | 7 47 | 10 07 | 12 25 | 14 42 | 17 00 | 19 19 | 21 23 | 23 06 | 24 34 | 1 58 | 3 34 |
| 14 | 5 29 | 7 43 | 10 03 | 12 21 | 14 38 | 16 56 | 19 15 | 21 19 | 23 02 | 24 30 | 1 54 | 3 30 |
| 15 | 5 25 | 7 39 | 9 59 | 12 17 | 14 34 | 16 52 | 19 11 | 21 15 | 22 58 | 24 26 | 1 50 | 3 26 |
| 16 | 5 21 | 7 35 | 9 55 | 12 13 | 14 30 | 16 48 | 19 07 | 21 11 | 22 54 | 24 22 | 1 46 | 3 22 |
| 17 | 5 17 | 7 31 | 9 51 | 12 09 | 14 26 | 16 44 | 19 03 | 21 07 | 22 50 | 24 18 | 1 42 | 3 18 |
| 18 | 5 13 | 7 27 | 9 47 | 12 05 | 14 22 | 16 40 | 18 59 | 21 03 | 22 46 | 24 14 | 1 38 | 3 14 |
| 19 | 5 09 | 7 23 | 9 43 | 12 02 | 14 18 | 16 36 | 18 55 | 20 59 | 22 42 | 24 10 | 1 34 | 3 10 |
| 20 | 5 05 | 7 19 | 9 39 | 11 58 | 14 14 | 16 32 | 18 51 | 20 55 | 22 38 | 24 06 | 1 30 | 3 06 |
| 21 | 5 01 | 7 15 | 9 36 | 11 54 | 14 10 | 16 28 | 18 47 | 20 51 | 22 34 | 24 02 | 1 26 | 3 02 |
| 22 | 4 57 | 7 11 | 9 32 | 11 50 | 14 06 | 16 24 | 18 43 | 20 47 | 22 30 | 23 58 | 1 22 | 2 58 |
| 23 | 4 53 | 7 07 | 9 28 | 11 46 | 14 02 | 16 20 | 18 39 | 20 43 | 22 26 | 23 54 | 1 18 | 2 54 |
| 24 | 4 49 | 7 03 | 9 24 | 11 42 | 13 58 | 16 16 | 18 36 | 20 39 | 22 22 | 23 51 | 1 15 | 2 50 |
| 25 | 4 46 | 6 59 | 9 20 | 11 38 | 13 54 | 16 13 | 18 32 | 20 35 | 22 18 | 23 47 | 1 11 | 2 46 |
| 26 | 4 42 | 6 55 | 9 16 | 1 134 | 13 50 | 16 09 | 18 28 | 20 31 | 22 14 | 23 43 | 1 07 | 2 43 |
| 27 | 4 38 | 6 51 | 9 12 | 11 30 | 13 46 | 16 05 | 18 24 | 20 27 | 22 10 | 23 39 | 1 03 | 2 39 |
| 28 | 4 34 | 6 47 | 9 09 | 11 26 | 13 43 | 16 01 | 18 20 | 20 23 | 22 06 | 23 35 | 24 59 | 2 35 |
| 29 | 4 30 | 6 43 | 9 05 | 11 23 | 13 39 | 15 57 | 18 16 | 20 20 | 22 02 | 23 31 | 24 55 | 2 31 |
| 30 | 4 26 | 6 39 | 9 01 | 11 19 | 13 35 | 15 54 | 18 13 | 20 16 | 21 59 | 23 28 | 24 52 | 2 28 |
| जुला | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— |

## दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

| जुलाई | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं.मिं. | घं. मिं. |
| 1 | 6 35 | 8 57 | 11 15 | 13 31 | 15 50 | 18 09 | 20 13 | 21 56 | 23 24 | 24 48 | 2 24 | 4 18 |
| 2 | 6 31 | 8 53 | 11 11 | 13 27 | 15 46 | 18 05 | 20 9 | 21 52 | 23 20 | 24 44 | 2 20 | 4 14 |
| 3 | 6 27 | 8 49 | 11 07 | 13 23 | 15 42 | 18 01 | 20 5 | 21 48 | 23 16 | 24 40 | 2 16 | 4 10 |
| 4 | 6 24 | 8 46 | 11 04 | 13 19 | 15 38 | 17 57 | 20 01 | 21 44 | 23 12 | 24 36 | 2 12 | 4 06 |
| 5 | 6 20 | 8 42 | 11 00 | 13 15 | 15 34 | 17 53 | 19 57 | 21 40 | 23 08 | 24 32 | 2 08 | 4 02 |
| 6 | 6 16 | 8 38 | 10 56 | 13 11 | 15 30 | 17 49 | 19 53 | 21 36 | 23 04 | 24 28 | 2 04 | 3 58 |
| 7 | 6 12 | 8 34 | 10 52 | 13 07 | 15 26 | 17 46 | 19 49 | 21 32 | 23 00 | 24 24 | 2 00 | 3 55 |
| 8 | 6 09 | 8 30 | 10 48 | 13 04 | 15 22 | 17 42 | 19 46 | 21 28 | 22 56 | 24 21 | 1 56 | 3 51 |
| 9 | 6 05 | 8 26 | 10 44 | 13 00 | 15 18 | 17 38 | 19 42 | 21 24 | 22 53 | 24 17 | 1 53 | 3 47 |
| 10 | 6 01 | 8 22 | 10 40 | 12 56 | 15 15 | 17 34 | 19 38 | 21 21 | 22 49 | 24 13 | 1 49 | 3 43 |
| 11 | 5 57 | 8 18 | 10 36 | 12 52 | 15 11 | 17 30 | 19 34 | 21 17 | 22 45 | 24 09 | 1 45 | 3 39 |
| 12 | 5 53 | 8 14 | 10 32 | 12 48 | 15 07 | 17 26 | 19 30 | 21 13 | 22 41 | 24 05 | 1 41 | 3 36 |
| 13 | 5 49 | 8 10 | 10 28 | 12 45 | 15 03 | 17 22 | 19 26 | 21 09 | 22 37 | 24 01 | 1 37 | 3 32 |
| 14 | 5 45 | 8 06 | 10 25 | 12 41 | 14 59 | 17 18 | 19 22 | 21 05 | 22 34 | 23 57 | 1 33 | 3 28 |
| 15 | 5 41 | 8 03 | 10 21 | 12 37 | 14 55 | 17 14 | 19 19 | 21 02 | 22 30 | 23 54 | 1 30 | 3 24 |
| 16 | 5 37 | 7 59 | 10 17 | 12 33 | 14 51 | 17 10 | 19 15 | 20 58 | 22 26 | 23 50 | 1 26 | 3 20 |
| 17 | 5 34 | 7 55 | 10 13 | 12 29 | 14 47 | 17 06 | 19 11 | 20 54 | 22 22 | 23 46 | 1 22 | 3 16 |
| 18 | 5 30 | 7 51 | 10 09 | 12 25 | 14 43 | 17 02 | 19 07 | 20 50 | 22 18 | 23 42 | 1 18 | 3 12 |
| 19 | 5 26 | 7 47 | 10 05 | 12 21 | 14 40 | 16 58 | 19 03 | 20 46 | 22 14 | 23 38 | 1 14 | 3 08 |
| 20 | 5 22 | 7 43 | 10 02 | 12 17 | 14 36 | 16 54 | 18 59 | 20 42 | 22 10 | 23 34 | 1 10 | 3 04 |
| 21 | 5 18 | 7 39 | 9 58 | 12 13 | 14 32 | 16 51 | 18 55 | 20 38 | 22 06 | 23 30 | 1 06 | 3 00 |
| 22 | 5 15 | 7 35 | 9 54 | 12 09 | 14 28 | 16 47 | 18 51 | 20 34 | 22 02 | 23 26 | 1 02 | 2 56 |
| 23 | 5 11 | 7 32 | 9 50 | 12 05 | 14 24 | 16 43 | 18 47 | 20 30 | 21 58 | 23 22 | 2458 | 2 53 |
| 24 | 5 07 | 7 28 | 9 46 | 12 01 | 14 20 | 16 39 | 18 43 | 20 26 | 21 55 | 23 18 | 2454 | 2 49 |
| 25 | 5 03 | 7 24 | 9 42 | 11 58 | 14 16 | 16 35 | 18 40 | 20 23 | 21 51 | 23 14 | 2450 | 2 45 |
| 26 | 5 00 | 7 20 | 9 38 | 11 54 | 14 12 | 16 31 | 18 36 | 20 19 | 21 47 | 23 10 | 2446 | 2 41 |
| 27 | 4 56 | 7 16 | 9 34 | 11 50 | 14 08 | 16 27 | 18 32 | 20 15 | 21 43 | 23 06 | 2442 | 2 37 |
| 28 | 4 52 | 7 12 | 9 30 | 11 46 | 14 04 | 16 23 | 18 28 | 20 11 | 21 39 | 23 02 | 2438 | 2 34 |
| 29 | 4 48 | 7 08 | 9 27 | 11 42 | 14 00 | 16 19 | 18 24 | 20 07 | 21 35 | 22 58 | 2435 | 2 30 |
| 30 | 4 44 | 7 04 | 9 23 | 11 38 | 13 56 | 16 15 | 18 20 | 20 03 | 21 31 | 22 54 | 2431 | 2 26 |
| 31 | 4 40 | 7 00 | 9 19 | 11 34 | 13 53 | 1612 | 18 16 | 19 59 | 21 27 | 22 50 | 2427 | 2 22 |
| अग | 4 36 | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— |

## दैनिक लग्न सारणी अगस्त भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

| अगस्त | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं.मिं. | घं. मिं. |
| 1 | 6 56 | 9 15 | 11 31 | 13 49 | 16 08 | 18 12 | 19 55 | 21 23 | 22 47 | 24 23 | 2 18 | 4 32 |
| 2 | 6 52 | 9 11 | 11 27 | 13 45 | 16 05 | 18 09 | 19 51 | 21 19 | 22 43 | 24 19 | 2 14 | 4 28 |
| 3 | 6 48 | 9 07 | 11 23 | 13 42 | 16 01 | 18 05 | 19 47 | 21 15 | 22 39 | 24 15 | 2 10 | 4 24 |
| 4 | 6 44 | 9 03 | 11 19 | 13 38 | 15 57 | 18 01 | 19 44 | 21 11 | 22 35 | 24 11 | 2 06 | 4 20 |
| 5 | 6 40 | 9 00 | 11 15 | 13 34 | 15 53 | 17 57 | 19 40 | 21 08 | 22 31 | 24 08 | 2 02 | 4 16 |
| 6 | 6 36 | 8 56 | 11 12 | 13 30 | 15 49 | 17 53 | 19 36 | 21 04 | 22 28 | 24 04 | 1 58 | 4 13 |
| 7 | 6 32 | 8 52 | 11 08 | 13 26 | 15 45 | 17 49 | 19 32 | 21 00 | 22 24 | 24 00 | 1 54 | 4 09 |
| 8 | 6 29 | 8 48 | 11 04 | 13 22 | 15 41 | 17 45 | 19 28 | 20 56 | 22 20 | 23 56 | 1 50 | 4 05 |
| 9 | 6 25 | 8 44 | 11 00 | 13 18 | 15 37 | 17 42 | 19 24 | 20 52 | 22 16 | 23 52 | 1 46 | 4 01 |
| 10 | 6 21 | 8 41 | 10 56 | 13 14 | 15 33 | 17 38 | 19 21 | 20 48 | 22 12 | 23 48 | 1 43 | 3 57 |
| 11 | 6 17 | 8 37 | 10 53 | 13 10 | 15 29 | 17 34 | 19 17 | 20 44 | 22 08 | 23 44 | 1 39 | 3 54 |
| 12 | 6 13 | 8 33 | 10 49 | 13 06 | 15 25 | 17 30 | 19 13 | 20 40 | 22 04 | 23 40 | 1 35 | 3 50 |
| 13 | 6 09 | 8 29 | 10 45 | 13 02 | 15 21 | 17 26 | 19 09 | 20 36 | 22 00 | 23 36 | 1 32 | 3 46 |
| 14 | 6 05 | 8 25 | 10 41 | 12 59 | 15 17 | 17 22 | 19 05 | 20 33 | 21 56 | 23 32 | 1 28 | 3 42 |
| 15 | 6 01 | 8 21 | 10 37 | 12 55 | 15 14 | 17 18 | 19 01 | 20 29 | 21 53 | 23 29 | 1 24 | 3 38 |
| 16 | 5 57 | 8 17 | 10 33 | 12 51 | 15 10 | 17 14 | 18 57 | 20 25 | 21 49 | 23 25 | 1 20 | 3 34 |
| 17 | 5 54 | 8 13 | 10 29 | 12 47 | 15 06 | 17 10 | 18 53 | 20 21 | 21 45 | 23 21 | 1 16 | 3 30 |
| 18 | 5 50 | 8 09 | 10 25 | 12 43 | 15 02 | 17 06 | 18 49 | 20 17 | 21 41 | 23 17 | 1 12 | 3 26 |
| 19 | 5 46 | 8 05 | 10 21 | 12 39 | 14 58 | 17 02 | 18 45 | 2013 | 21 37 | 23 13 | 1 08 | 3 22 |
| 20 | 5 42 | 8 02 | 10 17 | 12 35 | 14 54 | 16 58 | 18 41 | 20 09 | 21 33 | 23 09 | 1 04 | 3 18 |
| 21 | 5 39 | 7 58 | 10 13 | 12 31 | 14 50 | 16 54 | 18 37 | 20 05 | 21 29 | 23 05 | 1 00 | 3 14 |
| 22 | 5 35 | 7 54 | 10 09 | 12 27 | 14 46 | 16 50 | 18 33 | 20 01 | 21 25 | 23 01 | 0 56 | 3 10 |
| 23 | 5 31 | 7 50 | 10 05 | 12 23 | 14 42 | 16 46 | 18 21 | 19 57 | 21 21 | 22 57 | 0 52 | 3 06 |
| 24 | 5 27 | 7 46 | 10 02 | 12 19 | 14 38 | 16 42 | 18 25 | 19 53 | 21 17 | 22 53 | 0 48 | 3 02 |
| 25 | 5 23 | 7 42 | 9 58 | 12 15 | 14 34 | 16 38 | 18 21 | 19 49 | 21 13 | 22 49 | 0 44 | 2 58 |
| 26 | 5 19 | 7 38 | 9 45 | 12 11 | 14 30 | 16 34 | 18 17 | 19 45 | 21 09 | 22 45 | 0 41 | 2 54 |
| 27 | 5 15 | 7 34 | 9 50 | 12 08 | 14 27 | 16 31 | 18 14 | 19 42 | 21 06 | 22 42 | 0 37 | 2 50 |
| 28 | 5 11 | 7 30 | 9 46 | 12 04 | 14 23 | 16 27 | 18 10 | 19 38 | 21 02 | 22 38 | 0 33 | 2 46 |
| 29 | 5 07 | 7 26 | 9 42 | 12 00 | 14 19 | 16 23 | 18 06 | 19 34 | 20 58 | 22 34 | 0 29 | 2 42 |
| 30 | 5 03 | 7 22 | 9 38 | 11 56 | 14 15 | 16 19 | 18 02 | 19 30 | 20 54 | 22 30 | 0 25 | 2 38 |
| 31 | 4 59 | 7 18 | 9 34 | 11 52 | 14 11 | 16 15 | 17 58 | 19 26 | 20 50 | 22 26 | 0 21 | 2 34 |
| सितं | 4 55 | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— |

## दैनिक लग्न सारणी सितंबर भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

| सितंबर | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं.मिं. | घं. मिं. |
| 1 | 7 14 | 9 30 | 11 48 | 14 07 | 16 11 | 17 54 | 19 22 | 20 46 | 22 22 | 0 17 | 2 31 | 4 52 |
| 2 | 7 10 | 9 26 | 11 44 | 14 03 | 16 07 | 17 50 | 19 18 | 20 42 | 22 18 | 0 13 | 2 27 | 4 48 |
| 3 | 7 06 | 9 22 | 11 40 | 13 59 | 16 03 | 17 46 | 19 14 | 20 38 | 22 14 | 0 09 | 2 23 | 4 44 |
| 4 | 7 02 | 9 18 | 11 36 | 13 55 | 15 59 | 17 42 | 19 10 | 20 34 | 22 10 | 0 05 | 2 19 | 4 40 |
| 5 | 6 58 | 9 14 | 11 32 | 13 51 | 15 55 | 17 38 | 19 06 | 20 30 | 22 06 | 0 01 | 2 15 | 4 36 |
| 6 | 6 54 | 9 10 | 11 28 | 13 47 | 15 51 | 17 34 | 19 02 | 20 26 | 22 02 | 23 57 | 2 11 | 4 32 |
| 7 | 6 50 | 9 06 | 11 24 | 13 43 | 15 47 | 17 30 | 18 58 | 20 22 | 21 58 | 23 53 | 2 07 | 4 28 |
| 8 | 6 46 | 9 02 | 11 20 | 13 39 | 15 43 | 17 26 | 18 54 | 20 18 | 21 54 | 23 49 | 2 03 | 4 24 |
| 9 | 6 42 | 8 58 | 11 16 | 13 35 | 15 39 | 17 22 | 18 50 | 20 14 | 21 50 | 23 45 | 1 59 | 4 20 |
| 10 | 6 38 | 8 54 | 11 12 | 13 31 | 15 35 | 17 18 | 18 46 | 20 10 | 21 46 | 23 41 | 1 55 | 4 16 |
| 11 | 6 34 | 8 50 | 11 08 | 13 27 | 15 31 | 17 14 | 18 42 | 20 06 | 21 42 | 23 37 | 1 51 | 4 12 |
| 12 | 6 30 | 8 46 | 11 04 | 13 23 | 15 27 | 17 10 | 18 38 | 20 02 | 21 38 | 23 33 | 1 47 | 4 08 |
| 13 | 6 26 | 8 42 | 11 00 | 13 19 | 15 23 | 17 06 | 18 34 | 19 58 | 21 34 | 23 29 | 1 43 | 4 04 |
| 14 | 6 22 | 8 38 | 10 56 | 13 15 | 15 19 | 17 02 | 18 30 | 19 54 | 21 30 | 23 25 | 1 39 | 4 00 |
| 15 | 6 18 | 8 34 | 10 52 | 13 11 | 15 15 | 16 58 | 18 26 | 19 50 | 21 26 | 23 21 | 1 35 | 3 56 |
| 16 | 6 14 | 8 30 | 10 48 | 13 07 | 15 11 | 16 54 | 18 22 | 19 46 | 21 22 | 23 17 | 1 31 | 3 52 |
| 17 | 6 10 | 8 26 | 10 44 | 13 03 | 15 07 | 16 50 | 18 18 | 19 42 | 21 18 | 23 13 | 1 27 | 3 48 |
| 18 | 6 06 | 8 22 | 10 40 | 12 59 | 15 03 | 16 46 | 18 14 | 19 38 | 21 14 | 23 09 | 1 23 | 3 44 |
| 19 | 6 02 | 8 18 | 10 36 | 12 55 | 14 59 | 16 42 | 18 10 | 19 34 | 21 10 | 23 05 | 1 19 | 3 40 |
| 20 | 5 58 | 8 14 | 10 32 | 12 51 | 14 55 | 16 38 | 18 06 | 19 30 | 21 06 | 23 01 | 1 15 | 3 36 |
| 21 | 5 54 | 8 10 | 10 28 | 12 47 | 14 51 | 16 34 | 18 02 | 19 26 | 21 02 | 22 57 | 1 11 | 3 32 |
| 22 | 5 50 | 8 06 | 10 24 | 12 43 | 14 47 | 16 30 | 17 58 | 19 22 | 20 58 | 22 53 | 1 07 | 3 28 |
| 23 | 5 46 | 8 02 | 10 20 | 12 39 | 14 43 | 16 26 | 17 54 | 19 18 | 20 54 | 22 49 | 1 03 | 3 24 |
| 24 | 5 42 | 7 58 | 10 16 | 12 35 | 14 39 | 16 22 | 17 50 | 19 14 | 20 50 | 22 45 | 0 59 | 3 20 |
| 25 | 5 38 | 7 54 | 10 12 | 12 31 | 14 35 | 16 18 | 17 46 | 19 10 | 20 46 | 22 41 | 0 55 | 3 16 |
| 26 | 5 34 | 7 50 | 10 08 | 12 27 | 14 31 | 16 14 | 17 42 | 19 06 | 20 42 | 22 37 | 0 51 | 3 12 |
| 27 | 5 30 | 7 46 | 10 04 | 12 23 | 14 27 | 16 10 | 17 38 | 19 02 | 20 38 | 22 33 | 0 47 | 3 08 |
| 28 | 5 26 | 7 42 | 10 00 | 12 19 | 14 23 | 16 06 | 17 34 | 18 58 | 20 34 | 22 29 | 0 43 | 3 04 |
| 29 | 5 22 | 7 38 | 9 56 | 12 15 | 14 19 | 16 02 | 17 30 | 18 54 | 20 30 | 22 25 | 0 39 | 3 00 |
| 30 | 5 18 | 7 34 | 9 53 | 12 12 | 14 16 | 15 59 | 17 27 | 18 51 | 20 27 | 22 22 | 0 36 | 2 57 |
| अक्तू | 5 15 | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— |

## दैनिक लग्न सारणी अक्तूबर भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

| अक्तूबर | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं.मिं. | घं. मिं. |
| 1 | 7 30 | 9 49 | 12 08 | 14 12 | 15 55 | 17 23 | 18 47 | 20 23 | 22 18 | 0 32 | 2 53 | 5 11 |
| 2 | 7 26 | 9 45 | 12 04 | 14 08 | 15 51 | 17 19 | 18 43 | 20 19 | 22 14 | 0 28 | 2 49 | 5 07 |
| 3 | 7 23 | 9 42 | 12 00 | 14 04 | 15 47 | 17 15 | 18 39 | 20 15 | 22 10 | 0 24 | 2 45 | 5 03 |
| 4 | 7 19 | 9 38 | 11 56 | 14 00 | 15 43 | 17 11 | 18 35 | 20 11 | 22 06 | 0 20 | 2 41 | 4 59 |
| 5 | 7 15 | 9 34 | 11 52 | 13 56 | 15 39 | 17 07 | 18 31 | 20 07 | 22 02 | 0 16 | 2 37 | 4 55 |
| 6 | 7 11 | 9 30 | 11 48 | 13 52 | 15 35 | 17 03 | 18 27 | 20 03 | 21 58 | 0 12 | 2 33 | 4 51 |
| 7 | 7 07 | 9 26 | 11 44 | 13 48 | 15 31 | 16 59 | 18 23 | 19 59 | 21 54 | 0 08 | 2 29 | 4 47 |
| 8 | 7 03 | 9 22 | 11 40 | 13 44 | 15 27 | 16 55 | 18 19 | 19 55 | 21 50 | 0 04 | 2 25 | 4 43 |
| 9 | 6 59 | 9 18 | 11 36 | 13 40 | 15 23 | 16 51 | 18 15 | 19 51 | 21 46 | 24 00 | 2 21 | 4 39 |
| 10 | 6 55 | 9 14 | 11 32 | 13 36 | 15 19 | 16 47 | 18 11 | 19 47 | 21 42 | 23 56 | 2 17 | 4 35 |
| 11 | 6 51 | 9 10 | 11 28 | 13 32 | 15 15 | 16 43 | 18 07 | 19 43 | 21 38 | 23 52 | 2 13 | 4 31 |
| 12 | 6 47 | 9 06 | 11 24 | 13 28 | 15 11 | 16 39 | 18 03 | 19 39 | 21 34 | 23 48 | 2 09 | 4 27 |
| 13 | 6 43 | 9 02 | 11 20 | 13 24 | 15 07 | 16 35 | 17 59 | 19 35 | 21 30 | 23 44 | 2 05 | 4 23 |
| 14 | 6 39 | 8 58 | 11 16 | 13 20 | 15 03 | 16 31 | 17 55 | 19 31 | 21 26 | 23 40 | 2 01 | 4 19 |
| 15 | 6 35 | 8 54 | 11 12 | 13 16 | 14 59 | 16 27 | 17 51 | 19 27 | 21 22 | 23 36 | 1 57 | 4 15 |
| 16 | 6 31 | 8 50 | 11 08 | 13 12 | 14 55 | 16 23 | 17 47 | 19 23 | 21 18 | 23 32 | 1 53 | 4 11 |
| 17 | 6 27 | 8 46 | 11 04 | 13 08 | 14 51 | 16 19 | 17 43 | 19 19 | 21 14 | 23 28 | 1 49 | 4 07 |
| 18 | 6 23 | 8 42 | 11 00 | 13 04 | 14 47 | 16 15 | 17 39 | 19 15 | 21 10 | 23 24 | 1 45 | 4 03 |
| 19 | 6 19 | 8 38 | 10 56 | 13 00 | 14 43 | 16 11 | 17 35 | 19 11 | 21 06 | 23 20 | 1 41 | 3 59 |
| 20 | 6 15 | 8 34 | 10 52 | 12 56 | 14 39 | 16 07 | 17 31 | 19 07 | 21 02 | 23 16 | 1 37 | 3 55 |
| 21 | 6 11 | 8 30 | 10 48 | 12 52 | 14 35 | 16 03 | 17 27 | 19 03 | 20 58 | 23 12 | 1 33 | 3 51 |
| 22 | 6 07 | 8 26 | 10 44 | 12 48 | 14 31 | 15 59 | 17 23 | 18 59 | 20 54 | 23 08 | 1 29 | 3 47 |
| 23 | 6 03 | 8 22 | 10 40 | 12 44 | 14 27 | 15 55 | 17 19 | 18 55 | 20 50 | 23 04 | 1 25 | 3 43 |
| 24 | 5 59 | 8 18 | 10 36 | 12 40 | 14 23 | 15 51 | 17 15 | 18 51 | 20 46 | 23 00 | 1 21 | 3 39 |
| 25 | 5 56 | 8 15 | 10 33 | 12 37 | 14 20 | 15 48 | 17 12 | 18 48 | 20 43 | 22 57 | 1 17 | 3 36 |
| 26 | 5 52 | 8 11 | 10 29 | 12 33 | 14 16 | 15 44 | 17 08 | 18 44 | 20 39 | 22 53 | 1 13 | 3 32 |
| 27 | 5 48 | 8 07 | 10 25 | 12 29 | 14 12 | 15 40 | 17 04 | 18 40 | 20 35 | 22 49 | 1 09 | 3 28 |
| 28 | 5 44 | 8 03 | 10 21 | 12 25 | 14 08 | 15 36 | 17 00 | 18 36 | 20 31 | 22 45 | 1 06 | 3 24 |
| 29 | 5 40 | 7 59 | 10 17 | 12 21 | 14 04 | 15 32 | 16 56 | 18 32 | 20 27 | 22 41 | 1 02 | 3 20 |
| 30 | 5 36 | 7 55 | 10 13 | 12 17 | 14 00 | 15 28 | 16 52 | 18 28 | 20 23 | 22 37 | 2458 | 3 16 |
| 31 | 5 33 | 7 51 | 10 09 | 12 13 | 13 56 | 15 24 | 16 48 | 18 24 | 20 19 | 22 33 | 2454 | 3 12 |
| नवं. | 5 29 | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— | —— |

## दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

| नवंबर | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 1 | 7 47 | 10 6 | 12 10 | 13 53 | 15 21 | 16 44 | 18 20 | 20 15 | 22 29 | 0 50 | 3 08 | 5 25 |
| 2 | 7 43 | 10 2 | 12 06 | 13 49 | 15 17 | 16 40 | 18 16 | 20 11 | 22 25 | 0 46 | 3 04 | 5 21 |
| 3 | 7 39 | 9 58 | 12 02 | 13 45 | 15 13 | 16 37 | 18 13 | 20 08 | 22 22 | 0 43 | 3 00 | 5 17 |
| 4 | 7 35 | 9 54 | 11 58 | 13 41 | 15 09 | 16 33 | 18 09 | 20 04 | 22 18 | 0 39 | 2 56 | 5 13 |
| 5 | 7 31 | 9 50 | 11 54 | 13 37 | 15 05 | 16 29 | 18 05 | 20 00 | 22 15 | 0 35 | 2 52 | 5 09 |
| 6 | 7 27 | 9 46 | 11 50 | 13 33 | 15 01 | 16 25 | 18 01 | 19 56 | 22 10 | 0 31 | 2 48 | 5 05 |
| 7 | 7 24 | 9 42 | 11 46 | 13 29 | 14 57 | 16 21 | 17 57 | 19 52 | 22 06 | 0 27 | 2 45 | 5 01 |
| 8 | 7 20 | 9 38 | 11 42 | 13 25 | 14 53 | 16 17 | 17 53 | 19 48 | 22 02 | 0 23 | 2 41 | 4 57 |
| 9 | 7 16 | 9 34 | 11 38 | 13 21 | 14 49 | 16 13 | 17 49 | 19 44 | 21 58 | 0 19 | 2 37 | 4 53 |
| 10 | 7 12 | 9 30 | 11 34 | 13 17 | 14 45 | 16 09 | 17 45 | 19 40 | 21 54 | 0 15 | 2 33 | 4 49 |
| 11 | 7 08 | 9 26 | 11 30 | 13 13 | 14 41 | 16 05 | 17 41 | 19 36 | 21 50 | 0 11 | 2 29 | 4 45 |
| 12 | 7 04 | 9 22 | 11 26 | 13 09 | 14 37 | 16 01 | 17 37 | 19 32 | 21 46 | 0 07 | 2 25 | 4 41 |
| 13 | 7 00 | 9 18 | 11 22 | 13 05 | 14 33 | 15 57 | 17 33 | 19 28 | 21 42 | 0 03 | 2 21 | 4 37 |
| 14 | 6 56 | 9 14 | 11 28 | 13 01 | 14 29 | 15 53 | 17 29 | 19 24 | 21 38 | 23 59 | 2 17 | 4 33 |
| 15 | 6 52 | 9 10 | 11 14 | 12 57 | 14 25 | 15 49 | 17 25 | 19 20 | 21 34 | 23 55 | 2 13 | 4 29 |
| 16 | 6 48 | 9 06 | 11 10 | 12 53 | 14 21 | 15 45 | 17 21 | 19 16 | 21 30 | 23 51 | 2 09 | 4 25 |
| 17 | 6 43 | 9 02 | 11 06 | 12 49 | 14 17 | 15 41 | 17 17 | 19 12 | 21 26 | 23 47 | 2 05 | 4 21 |
| 18 | 6 39 | 8 58 | 11 02 | 12 45 | 14 13 | 15 37 | 17 23 | 19 08 | 21 22 | 23 43 | 2 01 | 4 17 |
| 19 | 6 35 | 8 54 | 10 58 | 12 41 | 14 09 | 15 33 | 17 09 | 19 04 | 21 18 | 23 39 | 1 57 | 4 13 |
| 20 | 6 31 | 8 50 | 10 54 | 12 37 | 14 05 | 15 29 | 17 05 | 19 00 | 21 14 | 23 35 | 1 53 | 4 09 |
| 21 | 6 27 | 8 46 | 10 50 | 12 33 | 14 01 | 15 25 | 17 01 | 18 56 | 21 10 | 23 31 | 1 49 | 4 05 |
| 22 | 6 23 | 8 43 | 10 47 | 12 30 | 13 58 | 15 22 | 16 58 | 18 53 | 21 07 | 23 28 | 1 46 | 4 02 |
| 23 | 6 20 | 8 39 | 10 43 | 12 26 | 13 54 | 15 18 | 16 54 | 18 49 | 21 03 | 23 24 | 1 42 | 3 58 |
| 24 | 6 16 | 8 35 | 10 39 | 12 22 | 13 50 | 15 14 | 16 50 | 18 45 | 20 59 | 23 20 | 1 38 | 3 54 |
| 25 | 6 12 | 8 31 | 10 35 | 12 18 | 13 46 | 15 10 | 16 46 | 18 41 | 20 55 | 23 16 | 1 34 | 3 50 |
| 26 | 6 08 | 8 28 | 10 31 | 12 14 | 13 42 | 15 06 | 16 42 | 18 37 | 20 51 | 23 12 | 1 30 | 3 46 |
| 27 | 6 04 | 8 23 | 10 27 | 12 10 | 13 38 | 15 02 | 16 38 | 18 33 | 20 47 | 23 08 | 1 26 | 3 42 |
| 28 | 6 00 | 8 19 | 10 23 | 12 06 | 13 34 | 14 58 | 16 34 | 18 29 | 20 43 | 23 04 | 1 22 | 3 38 |
| 29 | 5 56 | 8 16 | 10 20 | 12 03 | 13 31 | 14 55 | 16 31 | 18 26 | 20 40 | 23 01 | 1 19 | 3 35 |
| 30 | 5 53 | 8 12 | 10 16 | 11 59 | 13 27 | 14 51 | 16 27 | 18 22 | 20 36 | 22 57 | 1 15 | 3 31 |
| दिसं | 5 49 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — |

## दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

| दिसंबर | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 1 | 8 08 | 1012 | 11 55 | 13 23 | 14 47 | 16 23 | 18 18 | 20 32 | 22 53 | 1 11 | 3 27 | 5 45 |
| 2 | 8 04 | 10 08 | 11 51 | 13 19 | 14 43 | 16 19 | 18 14 | 20 28 | 22 49 | 1 07 | 3 23 | 5 41 |
| 3 | 8 00 | 10 04 | 11 47 | 13 15 | 14 39 | 16 15 | 18 10 | 20 24 | 22 45 | 1 03 | 3 19 | 5 37 |
| 4 | 7 56 | 10 00 | 11 43 | 13 11 | 14 35 | 16 11 | 18 06 | 20 20 | 22 41 | 0 59 | 3 15 | 5 33 |
| 5 | 7 52 | 9 56 | 11 39 | 13 07 | 14 31 | 16 07 | 18 02 | 20 16 | 22 37 | 0 55 | 3 11 | 5 29 |
| 6 | 7 48 | 9 52 | 11 35 | 13 03 | 14 27 | 16 03 | 17 58 | 20 12 | 22 33 | 0 51 | 3 07 | 5 25 |
| 7 | 7 44 | 9 48 | 11 31 | 12 59 | 14 23 | 15 59 | 17 54 | 20 08 | 22 29 | 0 47 | 3 03 | 5 21 |
| 8 | 7 40 | 9 44 | 11 27 | 12 55 | 14 19 | 15 55 | 17 50 | 20 04 | 22 25 | 0 43 | 2 59 | 5 17 |
| 9 | 7 36 | 9 40 | 11 23 | 12 51 | 14 15 | 15 51 | 17 46 | 20 00 | 22 21 | 0 39 | 2 55 | 5 13 |
| 10 | 7 33 | 9 37 | 11 20 | 12 48 | 14 12 | 15 48 | 17 43 | 19 57 | 22 18 | 0 36 | 2 52 | 5 10 |
| 11 | 7 29 | 9 33 | 11 16 | 12 44 | 14 08 | 15 44 | 17 39 | 19 53 | 22 14 | 0 32 | 2 48 | 5 06 |
| 12 | 7 25 | 9 29 | 11 12 | 12 40 | 14 04 | 15 40 | 17 35 | 19 49 | 22 10 | 0 28 | 2 44 | 5 02 |
| 13 | 7 21 | 9 25 | 11 08 | 12 36 | 14 01 | 15 36 | 17 31 | 19 45 | 22 06 | 0 24 | 2 40 | 4 58 |
| 14 | 7 17 | 9 21 | 11 04 | 12 32 | 13 56 | 15 32 | 17 27 | 19 41 | 22 02 | 0 20 | 2 36 | 4 54 |
| 15 | 7 13 | 9 17 | 11 00 | 12 28 | 13 52 | 15 28 | 17 23 | 19 37 | 21 58 | 0 16 | 2 32 | 4 50 |
| 16 | 7 09 | 9 13 | 10 56 | 12 24 | 13 48 | 15 24 | 17 19 | 19 33 | 21 54 | 0 12 | 2 28 | 4 46 |
| 17 | 7 05 | 9 09 | 10 52 | 12 21 | 13 44 | 15 20 | 17 15 | 19 29 | 21 50 | 0 08 | 2 24 | 4 42 |
| 18 | 7 11 | 9 05 | 10 49 | 12 17 | 13 41 | 15 16 | 17 11 | 19 25 | 21 46 | 0 04 | 2 20 | 4 38 |
| 19 | 6 58 | 9 01 | 10 45 | 12 13 | 13 36 | 15 12 | 17 07 | 19 21 | 21 42 | 0 00 | 2 16 | 4 34 |
| 20 | 6 53 | 8 57 | 10 41 | 12 09 | 13 32 | 15 08 | 17 03 | 19 17 | 21 38 | 23 56 | 2 12 | 4 30 |
| 21 | 6 49 | 8 53 | 10 37 | 12 05 | 13 28 | 15 04 | 16 59 | 19 13 | 21 34 | 23 52 | 2 09 | 4 26 |
| 22 | 6 45 | 8 49 | 10 33 | 12 01 | 13 24 | 15 00 | 16 55 | 19 10 | 21 30 | 23 49 | 2 05 | 4 22 |
| 23 | 6 41 | 8 45 | 10 29 | 11 57 | 13 20 | 14 56 | 16 51 | 19 06 | 21 26 | 23 45 | 2 01 | 4 18 |
| 24 | 6 37 | 8 42 | 10 25 | 11 53 | 13 16 | 14 52 | 16 48 | 19 02 | 21 23 | 23 41 | 1 57 | 4 14 |
| 25 | 6 33 | 8 38 | 10 21 | 11 49 | 13 12 | 14 48 | 16 44 | 18 58 | 21 19 | 23 37 | 1 53 | 4 10 |
| 26 | 6 30 | 8 34 | 10 17 | 11 45 | 13 09 | 14 44 | 16 40 | 18 54 | 21 15 | 23 33 | 1 49 | 4 06 |
| 27 | 6 26 | 8 30 | 10 13 | 11 41 | 13 05 | 14 41 | 16 36 | 18 50 | 21 11 | 23 29 | 1 45 | 4 03 |
| 28 | 6 22 | 8 26 | 10 09 | 11 37 | 13 01 | 14 37 | 16 32 | 18 46 | 21 07 | 23 25 | 1 41 | 3 59 |
| 29 | 6 18 | 8 22 | 10 05 | 11 33 | 12 57 | 14 33 | 16 28 | 18 42 | 21 03 | 23 21 | 1 37 | 3 55 |
| 30 | 6 14 | 8 18 | 10 01 | 11 29 | 12 53 | 14 29 | 16 24 | 18 38 | 20 59 | 23 17 | 1 33 | 3 51 |
| 31 | 6 10 | 8 14 | 9 57 | 11 25 | 12 49 | 14 25 | 16 20 | 18 34 | 20 55 | 23 13 | 1 29 | 3 47 |
| जन. | 6 06 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — |

# अनुकूल कार्य सिद्धि के लिए होरा ज्ञान चक्र ( मुहूर्त्त ) और फल ज्ञान

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा**–टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने–देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्रमा की होरा**–सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**-युद्ध, यात्रा, कर्ज़ देने, सभा–सोसाईटी में आना–जाना और मुक़द्मा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**–में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**–विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**–यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**–भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी है, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। **जैसे**–पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार को सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, ११, १८ घण्टे बाद के एक–एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

| वार | होरा १ | होरा २ | होरा ३ | होरा ४ | होरा ५ | होरा ६ | होरा ७ | होरा ८ | होरा ९ | होरा १० | होरा ११ | होरा १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि. | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि |
| सोम. | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि |
| मंगल | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम |
| बुध | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल |
| गुरु | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध |
| शुक्र | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु |
| शनि | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र |

| वार | होरा १३ | होरा १४ | होरा १५ | होरा १६ | होरा १७ | होरा १८ | होरा १९ | होरा २० | होरा २१ | होरा २२ | होरा २३ | होरा २४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि. | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध |
| सोम. | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु |
| मंगल | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र |
| बुध | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि |
| गुरु | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि |
| शुक्र | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम |
| शनि | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध | सोम | शनि | गुरु | मंगल |

## ॥ चौघड़ियां मुहूर्त्त ॥

### दिन की चौघड़ियां

| रवि | चन्द्र | मंगल | बुध | बृह | शुक्र | शनि | समय |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | 6:00 |
| चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | 7:30 |
| लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | 9:00 |
| अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | 10:30 |
| काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | 12:00 |
| शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | 13:30 |
| रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | 15:00 |
| उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | 16:30 |

## ।चौघड़ियां मुहूर्त्त ॥

### रात्रि की चौघड़ियां

| रवि | चन्द्र | मंगल | बुध | बृह | शुक्र | शनि | समय |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | 18:00 |
| अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | 19:30 |
| चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | 21:00 |
| रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | 22:30 |
| काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | 24:00 |
| लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | 25:30 |
| उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | 27:00 |
| शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | 28:30 |

शीघ्रता में कोई मुहूर्त्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघड़ियां मुहूर्त्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ–आठ बराबर भाग करने से एक–एक चौघड़ियां मुहूर्त्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् 12 घण्टे का दिन तथा 12 घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघड़ियां मुहूर्त्त 1½ घण्टे अर्थात् पौने चार घटी का होगा। इसलिए इसका नाम चौघड़ियां मुहूर्त्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते–बढ़ते रहते है। परन्तु 'वार सदैव' 24 घण्टा अर्थात् 60 घटी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को 60 घटी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टष्मांश घटी पल का घण्टा मिन्ट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँ तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी–पल का घण्टा मिन्ट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमाशः रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघड़ियां के सामने तालिका में देखें। **टिप्पणी**–सदैव चर, लाभ, अमृत एवं शुभ चौघड़ियों में ही शुभ कार्य का आरम्भ करना श्रेष्ठ रहता है।

## किसी ग्रह के अंश कलादि स्पष्ट के द्वारा नक्षत्र-पाद (चरण) आरम्भ ज्ञात करना (प्रारम्भ काल)

सूर्य चन्द्रादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रांतिवृत्त (Zodiac = 360°) को पूरा परिभ्रमण करने में अलग-अलग समय लेते हैं। ३६० अंश को२७ द्वारा भाग देने से प्रति नक्षत्र का मध्यम मान 13 अंश 20 कला बनता है तथा एक नक्षत्र के चार चरण (पाद) होने से प्रत्येक नक्षत्र पाद को भोग्य मान 13°–20′ (अंश कला) होगा (13°–20′) ÷ 4 = 3°–20′ शून्य से प्रारम्भ होकर प्रत्येक ग्रह इसी भान्ति क्रमानुसार नक्षत्र चरण राशि आदि परिवर्तन करता है। अधिक व्याख्या हेतु देखें ज्योतिष तत्त्व।

| रा. अं. क. | नक्षत्रपाद राशि | रा. अं. क. | नक्षत्रपाद राशि | रा. अं. क. | नक्षत्रपाद राशि |
|---|---|---|---|---|---|
| ०-००-०० | अश्विनी (१) मेषे | ४-००-०० | मघा (१) सिंहे | ८-००-०० | मूल (१) धनु |
| ०-०३-२० | .. (२) .. | ४-०३-२० | .. (२) .. | ८-०३-२० | .. (२) .. |
| ०-०६-४० | .. (३) .. | ४-०६-४० | .. (३) .. | ८-०६-४० | .. (३) .. |
| ०-१०-०० | .. (४) .. | ४-१०-०० | .. (४) .. | ८-१०-०० | .. (४) .. |
| ०-१३-२० | भरणी (१) .. | ४-१३-२० | पू.फा. (१) .. | ८-१३-२० | पू.षा. (१) .. |
| ०-१६-४० | .. (२) .. | ४-१६-४० | .. (२) .. | ८-१६-४० | .. (२) .. |
| ०-२०-०० | .. (३) .. | ४-२०-०० | .. (३) .. | ८-२०-०० | .. (३) .. |
| ०-२३-२० | .. (४) .. | ४-२३-२० | .. (४) .. | ८-२३-२० | .. (४) .. |
| ०-२६-४० | कृतिका (१) मेषें | ४-२६-४० | उ.फा. (१) .. | ८-२६-४० | उ.षा. (१) .. |
| १-००-०० | .. (२) वृषे | ५-००-०० | .. (२) कन्या | ९-००-०० | उषा (२) मक |
| १-०३-२० | .. (३) .. | ५-०३-२० | .. (३) .. | ९-०३-२० | .. (३) .. |
| १-०६-४० | .. (४) .. | ५-०६-४० | .. (४) .. | ९-०६-४० | .. (४) .. |
| १-१०-०० | रोहिंणी (१) .. | ५-१०-०० | हस्ते (१) .. | ९-१०-०० | श्रव (१) .. |
| १-१३-२० | .. (२) .. | ५-१३-२० | .. (२) .. | ९-१३-२० | .. (२) .. |
| १-१६-४० | .. (३) .. | ५-१६-४० | .. (३) .. | ९-१६-४० | .. (३) .. |
| १-२०-०० | .. (४) .. | ५-२०-०० | .. (४) .. | ९-२०-०० | .. (४) .. |
| १-२३-२० | मृगशिर (१) .. | ५-२३-२० | चित्रा (१) .. | ९-२३-२० | धनि (१) .. |
| १-२६-४० | .. (२) .. | ५-२६-४० | .. (२) .. | ९-२६-४० | .. (२) .. |
| २-००-०० | .. (३) मिथुन | ६-००-०० | चित्रा (३) तुला | १०-००-०० | .. (३) कुंभे |
| २-०३-२० | .. (४) .. | ६-०३-२० | .. (४) .. | १०-०३-२० | .. (४) .. |
| २-०६-४० | आर्द्रा (१) .. | ६-०६-४० | स्वाती (१) .. | १०-०६-४० | शतभिषा (१).. |
| २-१०-०० | .. (२) .. | ६-१०-०० | .. (२) .. | १०-१०-०० | .. (२) .. |
| २-१३-२० | .. (३) .. | ६-१३-२० | .. (३) .. | १०-१३-२० | .. (३) .. |
| २-१६-४० | .. (४) .. | ६-१६-४० | .. (४) .. | १०-१६-४० | .. (४) .. |
| २-२०-०० | पुनर्वसु (१) .. | ६-२०-०० | विशाखा (१) .. | १०-२०-०० | पू.भा. (१) .. |
| २-२३-२० | .. (२) .. | ६-२३-२० | .. (२) .. | १०-२३-२० | .. (२) .. |
| २-२६-४० | .. (३) .. | ६-२६-४० | .. (३) .. | १०-२६-४० | .. (३) .. |
| ३-००-०० | पुनर्वसु (४) कर्के | ७-००-०० | .. (४) वृश्चिके | ११-००-०० | पूभा (४) मीने |
| ३-०३-२० | पुष्ये (१) .. | ७-०३-२० | अनुराधा (१) .. | ११-०३-२० | उ.भा. (१) .. |
| ३-०६-४० | .. (२) .. | ७-०६-४० | .. (२) .. | ११-०६-४० | .. (२) .. |
| ३-१०-०० | .. (३) .. | ७-१०-०० | .. (३) .. | ११-१०-०० | .. (३) .. |
| ३-१३-२० | .. (४) .. | ७-१३-२० | .. (४) .. | ११-१३-२० | उ.भा. (४) .. |
| ३-१६-४० | आश्ले (१) .. | ७-१६-४० | ज्ये. (१) .. | ११-१६-४० | रेवती (१) .. |
| ३-२०-०० | .. (२) .. | ७-२०-०० | .. (२) .. | ११-२०-०० | .. (२) .. |
| ३-२३-२० | .. (३) .. | ७-२३-२० | .. (३) .. | ११-२३-२० | .. (३) .. |
| ३-२६-४० | .. (४) .. | ७-२६-४० | .. (४) .. | ११-२६-४० | रेवती (४) .. |
| | | | | ००-००-०० | अश्वि (१) मेषे |

## दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्न सारणी 31°-19′ अक्षांश जालन्धर, एवं 24°-08′ अयनांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल अंग्रेज़ी तारीखों के मुताबक, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्नों के प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल का आधार मुख्यतः अंग्रेज़ी तारीखें ली गई हैं। चूंकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षों के पश्चात् हर चौथे वर्ष **लीप वर्ष** (अर्थात् **फरवरी मास** के दिन 28 की अपेक्षा 29 होते हैं) होने के कारण लग्नों के मान में प्रति वर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सारणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या –) करने से अभीष्ट सन् एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लग्न समाप्तिकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सारणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन् ईसवी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की 1 तारीख से 28 फरवरी तक के लिए जाने तथा जिस सन् के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग **1 मार्च से 31 दिसंबर** तक की अवधि के लिए करें।

**29 फरवरी** के लग्न मान के लिए 28 फरवरी के प्रत्येक लग्न (कुम्भ से मकर तक) समा. काल में से २/२ मिनट हीन (कम) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के आगे कोई निशान नहीं दिया गया उस **संस्कार** तालिका का प्रयोग **१ जनवरी से ३१ दिसंबर** तक के महीनों के लिए करें। **उदाहरणार्थ**–ता. 16 अप्रैल, 2022 को मेष लग्न समाप्ति देखना है तो सारिणी में ता. 16 अप्रैल को 7/29 पर मेष लग्न समाप्त हुआ। अब इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें +1 मिनट प्राप्त हुए।

अतः सन् 2022 में **मेष लग्न** 7/30 पर समाप्त होगा।

## दैनिक लग्न सारिणी में वार्षिक संस्कार तालिका

| सन् ई. | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2009 | +० | +० | +० | +० | +० | +० | +० | +० | +० | +० | +० | +० |
| 2010 | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ |
| 2011 | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ |
| $2012^{A}$ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ |
| $2012^{B}$ | –१ | –१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | +० | –१ | –१ |
| 2013 | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| 2014 | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ |
| 2015 | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ |
| $2016^{A}$ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ |
| $2016^{B}$ | –१ | –१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | –१ | –१ | –१ |
| 2017 | +० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| 2018 | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ |
| 2019 | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ |
| $2020^{A}$ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ |
| $2020^{B}$ | –१ | –१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | –१ | –१ | –१ |
| 2021 | +० | +० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| 2022 | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ |
| 2023 | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ |
| $2024^{A}$ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ |
| $2024^{B}$ | –१ | –१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | –१ | –१ | –१ |
| 2025 | +० | +० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

## दैनिक लग्न सारणी (अप्रैल–मई ( वैशाख )) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

| अप्रैल | वैशाख | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. |
| 13 | १ | ७ ४१ | ९ ३५ | ११ ४९ | १४ १२ | १६ ३२ | १८ ५० | २१ १२ | २३ ३२ | १ ३७ | ३ १८ | ४ ४३ | ६ ०४ |
| 14 | २ | ७ ३७ | ९ ३१ | ११ ४५ | १४ ०८ | १६ २८ | १८ ४६ | २१ ०८ | २३ २८ | १ ३३ | ३ १४ | ४ ३९ | ६ ०० |
| 15 | ३ | ७ ३३ | ९ २७ | ११ ४२ | १४ ०४ | १६ २४ | १८ ४२ | २१ ०४ | २३ २४ | १ २९ | ३ १० | ४ ३५ | ५ ५६ |
| 16 | ४ | ७ २९ | ९ २३ | ११ ३८ | १४ ०० | १६ २० | १८ ३८ | २१ ०० | २३ २० | १ २५ | ३ ०६ | ४ ३१ | ५ ५२ |
| 17 | ५ | ७ २५ | ९ १९ | ११ ३४ | १३ ५७ | १६ १७ | १८ ३४ | २० ५६ | २३ १६ | १ २१ | ३ ०२ | ४ २७ | ५ ४८ |
| 18 | ६ | ७ २१ | ९ १६ | ११ ३० | १३ ५३ | १६ १३ | १८ ३१ | २० ५२ | २३ १२ | १ १७ | २ ५८ | ४ २३ | ५ ४४ |
| 19 | ७ | ७ १७ | ९ १२ | ११ २६ | १३ ४९ | १६ ०९ | १८ २७ | २० ४८ | २३ ०८ | १ १३ | २ ५४ | ४ १९ | ५ ४० |
| 20 | ८ | ७ १३ | ९ ०८ | ११ २२ | १३ ४५ | १६ ०५ | १८ २३ | २० ४४ | २३ ०४ | १ ०९ | २ ५० | ४ १५ | ५ ३६ |
| 21 | ९ | ७ ०९ | ९ ०४ | ११ १८ | १३ ४१ | १६ ०१ | १८ १९ | २० ४० | २३ ०१ | १ ०५ | २ ४६ | ४ ११ | ५ ३२ |
| 22 | १० | ७ ०५ | ९ ०० | ११ १५ | १३ ३७ | १५ ५७ | १८ १५ | २० ३६ | २२ ५७ | १ ०१ | २ ४२ | ४ ०७ | ५ २८ |
| 23 | ११ | ७ ०१ | ८ ५६ | ११ ११ | १३ ३३ | १५ ५३ | १८ ११ | २० ३३ | २२ ५३ | ०० ५७ | २ ३८ | ४ ०३ | ५ २४ |
| 24 | १२ | ६ ५७ | ८ ५२ | ११ ०७ | १३ २९ | १५ ५० | १८ ०७ | २० २९ | २२ ४९ | ०० ५३ | २ ३४ | ३ ५९ | ५ २१ |
| 25 | १३ | ६ ५३ | ८ ४८ | ११ ०३ | १३ २५ | १५ ४६ | १८ ०३ | २० २५ | २२ ४५ | ०० ४९ | २ ३० | ३ ५५ | ५ १७ |
| 26 | १४ | ६ ४९ | ८ ४४ | १० ५९ | १३ २१ | १५ ४२ | १७ ५९ | २० २१ | २२ ४१ | ०० ४५ | २ २७ | ३ ५१ | ५ १३ |
| 27 | १५ | ६ ४६ | ८ ४० | १० ५५ | १३ १७ | १५ ३८ | १७ ५५ | २० १७ | २२ ३७ | ०० ४१ | २ २३ | ३ ४७ | ५ ०९ |
| 28 | १६ | ६ ४२ | ८ ३६ | १० ५१ | १३ १४ | १५ ३५ | १७ ५१ | २० १३ | २२ ३३ | ०० ३७ | २ १९ | ३ ४३ | ५ ०५ |
| 29 | १७ | ६ ३८ | ८ ३२ | १० ४७ | १३ १० | १५ ३१ | १७ ४७ | २० ०९ | २२ २९ | ०० ३३ | २ १५ | ३ ३९ | ५ ०१ |
| 30 | १८ | ६ ३४ | ८ २८ | १० ४३ | १३ ०६ | १५ २७ | १७ ४४ | २० ०५ | २२ २५ | ०० २९ | २ ११ | ३ ३५ | ४ ५७ |
| मई | १९ | ६ ३० | ८ २४ | १० ३९ | १३ ०२ | १५ २३ | १७ ४० | २० ०१ | २२ २१ | ०० २५ | २ ०७ | ३ ३२ | ४ ५३ |
| 2 | २० | ६ २६ | ८ २० | १० ३५ | १२ ५८ | १५ १९ | १७ ३६ | १९ ५७ | २२ १७ | ०० २१ | २ ०३ | ३ २८ | ४ ५० |
| 3 | २१ | ६ २२ | ८ १६ | १० ३१ | १२ ५४ | १५ १५ | १७ ३२ | १९ ५३ | २२ १३ | ०० १८ | १ ५९ | ३ २४ | ४ ४६ |
| 4 | २२ | ६ १८ | ८ १२ | १० २७ | १२ ५० | १५ ११ | १७ २८ | १९ ४९ | २२ ०९ | ०० १४ | १ ५५ | ३ २० | ४ ४२ |
| 5 | २३ | ६ १४ | ८ ०८ | १० २३ | १२ ४६ | १५ ०७ | १७ २४ | १९ ४५ | २२ ०५ | ०० १० | १ ५१ | ३ १६ | ४ ३८ |
| 6 | २४ | ६ १० | ८ ०४ | १० १९ | १२ ४२ | १५ ०३ | १७ २० | १९ ४१ | २२ ०१ | ०० ०६ | १ ४७ | ३ १२ | ४ ३४ |
| 7 | २५ | ६ ६ | ८ ०० | १० १५ | १२ ३८ | १४ ५९ | १७ १६ | १९ ३७ | २१ ५७ | ०० ०२ | १ ४३ | ३ ०८ | ४ ३० |
| 8 | २६ | ६ २ | ७ ५६ | १० ११ | १२ ३४ | १४ ५५ | १७ १२ | १९ ३३ | २१ ५३ | २३ ५८ | १ ३९ | ३ ०४ | ४ २६ |
| 9 | २७ | ५ ५८ | ७ ५२ | १० ०७ | १२ ३० | १४ ५१ | १७ ०८ | १९ २९ | २१ ४९ | २३ ५४ | १ ३५ | ३ ०० | ४ २२ |
| 10 | २८ | ५ ५४ | ७ ४८ | १० ०३ | १२ २६ | १४ ४७ | १७ ०४ | १९ २५ | २१ ४५ | २३ ५० | १ ३१ | २ ५६ | ४ १८ |
| 11 | २९ | ५ ५० | ७ ४५ | ९ ५९ | १२ २२ | १४ ४३ | १७ ०० | १९ २१ | २१ ४१ | २३ ४६ | १ २७ | २ ५२ | ४ १४ |
| 12 | ३० | ५ ४६ | ७ ४१ | ९ ५५ | १२ १८ | १४ ३९ | १६ ५६ | १९ १७ | २१ ३७ | २३ ४२ | १ २३ | २ ४८ | ४ १० |
| 13 | ३१ | ५ ४२ | ७ ३७ | ९ ५१ | १२ १५ | १४ ३५ | १६ ५२ | १९ १३ | २१ ३३ | २३ ३८ | १ १९ | २ ४४ | ४ ०६ |
| 14 | ज्ये | ५ ३९ | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — |

## दैनिक लग्न सारणी (मई–जून ( ज्येष्ठ )) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

| मई | ज्येष्ठ | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. |
| 14 | १ | ७ ३३ | ९ ४८ | १२ ११ | १४ ३१ | १६ ४९ | १९ १० | २१ ३० | २३ ३४ | ०१ १५ | २ ४० | ४ ०२ | ५ ३५ |
| 15 | २ | ७ २९ | ९ ४४ | १२ ०७ | १४ २७ | १६ ४५ | १९ ०६ | २१ २६ | २३ ३० | ०१ ११ | २ ३६ | ३ ५८ | ५ ३१ |
| 16 | ३ | ७ २५ | ९ ४० | १२ ०३ | १४ २३ | १६ ४१ | १९ ०२ | २१ २२ | २३ २६ | ०१ ०७ | २ ३२ | ३ ५४ | ५ २७ |
| 17 | ४ | ७ २२ | ९ ३६ | ११ ५९ | १४ १९ | १६ ३७ | १८ ५८ | २१ १८ | २३ २२ | ०१ ०३ | २ २८ | ३ ५० | ५ २३ |
| 18 | ५ | ७ १८ | ९ ३२ | ११ ५५ | १४ १५ | १६ ३३ | १८ ५४ | २१ १४ | २३ १८ | ०० ५९ | २ २४ | ३ ४६ | ५ १९ |
| 19 | ६ | ७ १४ | ९ २८ | ११ ५१ | १४ ११ | १६ २९ | १८ ५० | २१ १० | २३ १५ | ०० ५६ | २ २० | ३ ४२ | ५ १५ |
| 20 | ७ | ७ १० | ९ २४ | ११ ४७ | १४ ०७ | १६ २५ | १८ ४६ | २१ ०६ | २३ ११ | ०० ५२ | २ १७ | ३ ३८ | ५ ११ |
| 21 | ८ | ७ ०६ | ९ २० | ११ ४३ | १४ ०३ | १६ २१ | १८ ४२ | २१ ०२ | २३ ०७ | ०० ४८ | २ १३ | ३ ३४ | ५ ०७ |
| 22 | ९ | ७ ०२ | ९ १६ | ११ ३९ | १३ ५९ | १६ १७ | १८ ३८ | २० ५८ | २३ ०३ | ०० ४४ | २ ०९ | ३ ३० | ५ ०३ |
| 23 | १० | ६ ५९ | ९ १३ | ११ ३६ | १३ ५६ | १६ १४ | १८ ३५ | २० ५५ | २३ ०० | ०० ४१ | २ ०५ | ३ २७ | ५ ०० |
| 24 | ११ | ६ ५५ | ९ ०९ | ११ ३२ | १३ ५२ | १६ १० | १८ ३१ | २० ५१ | २२ ५६ | ०० ३७ | २ ०२ | ३ २३ | ४ ५६ |
| 25 | १२ | ६ ५१ | ९ ०५ | ११ २८ | १३ ४८ | १६ ०६ | १८ २७ | २० ४७ | २२ ५२ | ०० ३३ | १ ५८ | ३ १९ | ४ ५२ |
| 26 | १३ | ६ ४७ | ९ ०१ | ११ २४ | १३ ४४ | १६ ०२ | १८ २३ | २० ४३ | २२ ४८ | ०० २९ | १ ५४ | ३ १५ | ४ ४८ |
| 27 | १४ | ६ ४३ | ८ ५७ | ११ २० | १३ ४० | १५ ५८ | १८ १९ | २० ३९ | २२ ४४ | ०० २५ | १ ५० | ३ ११ | ४ ४४ |
| 28 | १५ | ६ ३९ | ८ ५३ | ११ १६ | १३ ३६ | १५ ५४ | १८ १५ | २० ३५ | २२ ४० | ०० २१ | १ ४६ | ३ ०७ | ४ ४० |
| 29 | १६ | ६ ३५ | ८ ४९ | ११ १२ | १३ ३२ | १५ ५० | १८ ११ | २० ३१ | २२ ३६ | ०० १७ | १ ४२ | ३ ०३ | ४ ३६ |
| 30 | १७ | ६ ३१ | ८ ४५ | ११ ०८ | १३ २८ | १५ ४६ | १८ ०७ | २० २७ | २२ ३२ | ०० १३ | १ ३८ | २ ५९ | ४ ३२ |
| 31 | १८ | ६ २७ | ८ ४१ | ११ ०४ | १३ २४ | १५ ४२ | १८ ०३ | २० २३ | २२ २८ | ०० ०९ | १ ३४ | २ ५५ | ४ २८ |
| जून | १९ | ६ २३ | ८ ३७ | ११ ०० | १३ २० | १५ ३८ | १७ ५९ | २० १९ | २२ २४ | ०० ०५ | १ ३० | २ ५१ | ४ २४ |
| 2 | २० | ६ १९ | ८ ३३ | १० ५६ | १३ १६ | १५ ३४ | १७ ५५ | २० १५ | २२ २० | ०० ०१ | १ २६ | २ ४७ | ४ २० |
| 3 | २१ | ६ १५ | ८ २९ | १० ५२ | १३ १२ | १५ ३० | १७ ५१ | २० ११ | २२ १६ | २३ ५७ | १ २२ | २ ४३ | ४ १६ |
| 4 | २२ | ६ ११ | ८ २५ | १० ४८ | १३ ०८ | १५ २६ | १७ ४७ | २० ०७ | २२ १२ | २३ ५३ | १ १८ | २ ३९ | ४ १२ |
| 5 | २३ | ६ ०७ | ८ २१ | १० ४४ | १३ ०४ | १५ २२ | १७ ४३ | २० ०३ | २२ ०८ | २३ ४९ | १ १४ | २ ३५ | ४ ०८ |
| 6 | २४ | ६ ०३ | ८ १८ | १० ४१ | १३ ०१ | १५ १९ | १७ ४० | २० ०० | २२ ०५ | २३ ४६ | १ १० | २ ३२ | ४ ०४ |
| 7 | २५ | ५ ५९ | ८ १४ | १० ३७ | १२ ५७ | १५ १५ | १७ ३६ | १९ ५६ | २२ ०१ | २३ ४२ | १ ०६ | २ २८ | ४ ०१ |
| 8 | २६ | ५ ५५ | ८ १० | १० ३३ | १२ ५३ | १५ ११ | १७ ३२ | १९ ५२ | २१ ५७ | २३ ३८ | १ ०२ | २ २४ | ३ ५७ |
| 9 | २७ | ५ ५१ | ८ ०६ | १० २९ | १२ ४९ | १५ ०७ | १७ २८ | १९ ४८ | २१ ५३ | २३ ३४ | ०० ५८ | २ २० | ३ ५३ |
| 10 | २८ | ५ ४७ | ८ ०२ | १० २५ | १२ ४५ | १५ ०३ | १७ २४ | १९ ४४ | २१ ४९ | २३ ३० | ०० ५४ | २ १६ | ३ ४९ |
| 11 | २९ | ५ ४३ | ७ ५८ | १० २१ | १२ ४१ | १४ ५९ | १७ २० | १९ ४० | २१ ४५ | २३ २६ | ०० ५० | २ १२ | ३ ४५ |
| 12 | ३० | ५ ३९ | ७ ५४ | १० १७ | १२ ३७ | १४ ५५ | १७ १६ | १९ ३६ | २१ ४१ | २३ २२ | ०० ४६ | २ ०८ | ३ ४१ |
| 13 | ३१ | ५ ३५ | ७ ५० | १० १३ | १२ ३३ | १४ ५१ | १७ १२ | १९ ३२ | २१ ३७ | २३ १८ | ०० ४२ | २ ०४ | ३ ३७ |
| 14 | आ | ५ ३१ | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — |

## दैनिक लग्न सारणी जून-जुलाई (आषाढ़) भा.स्टैं.टा. समापितकाल, जालन्धर

| जून | आषाढ़ | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. |
| 14 | १ | ७ ४६ | १० ०९ | १२ २९ | १४ ४७ | १७ ०८ | १९ २८ | २१ ३३ | २३ १४ | ०० ३९ | २ ०० | ३ ३३ | ५ २८ |
| 15 | २ | ७ ४२ | १० ०५ | १२ २५ | १४ ४३ | १७ ०४ | १९ २४ | २१ २९ | २३ १० | ०० ३५ | १ ५६ | ३ २९ | ५ २४ |
| 16 | ३ | ७ ३८ | १० ०१ | १२ २१ | १४ ३९ | १७ ०० | १९ २० | २१ २५ | २३ ०६ | ०० ३१ | १ ५२ | ३ २५ | ५ २० |
| 17 | ४ | ७ ३४ | ९ ५७ | १२ १७ | १४ ३५ | १६ ५६ | १९ १६ | २१ २१ | २३ ०२ | ०० २७ | १ ४८ | ३ २१ | ५ १६ |
| 18 | ५ | ७ ३० | ९ ५३ | १२ १३ | १४ ३१ | १६ ५२ | १९ १२ | २१ १७ | २२ ५८ | ०० २३ | १ ४४ | ३ १७ | ५ १२ |
| 19 | ६ | ७ २६ | ९ ४९ | १२ ०९ | १४ २७ | १६ ४८ | १९ ०८ | २१ १३ | २२ ५४ | ०० १९ | १ ४० | ३ १३ | ५ ०८ |
| 20 | ७ | ७ २२ | ९ ४५ | १२ ०५ | १४ २३ | १६ ४४ | १९ ०४ | २१ ०९ | २२ ५० | ०० १५ | १ ३६ | ३ ०९ | ५ ०४ |
| 21 | ८ | ७ १८ | ९ ४१ | १२ ०१ | १४ १९ | १६ ४० | १९ ०० | २१ ०५ | २२ ४६ | ०० ११ | १ ३२ | ३ ०५ | ५ ०० |
| 22 | ९ | ७ १५ | ९ ३७ | ११ ५७ | १४ १५ | १६ ३६ | १८ ५६ | २१ ०१ | २२ ४२ | ०० ०७ | १ २८ | ३ ०१ | ४ ५६ |
| 23 | १० | ७ ११ | ९ ३३ | ११ ५३ | १४ ११ | १६ ३२ | १८ ५२ | २० ५७ | २२ ३८ | ०० ०३ | १ २४ | २ ५७ | ४ ५२ |
| 24 | ११ | ७ ०७ | ९ २९ | ११ ४९ | १४ ०७ | १६ २८ | १८ ४८ | २० ५३ | २२ ३४ | २३ ५९ | १ २० | २ ५३ | ४ ४८ |
| 25 | १२ | ७ ०३ | ९ २५ | ११ ४५ | १४ ०३ | १६ २४ | १८ ४४ | २० ४९ | २२ ३० | २३ ५५ | १ १६ | २ ४९ | ४ ४४ |
| 26 | १३ | ६ ५९ | ९ २१ | ११ ४१ | १३ ५९ | १६ २० | १८ ४० | २० ४५ | २२ २६ | २३ ५१ | १ १२ | २ ४५ | ४ ४० |
| 27 | १४ | ६ ५५ | ९ १८ | ११ ३८ | १३ ५६ | १६ १७ | १८ ३७ | २० ४२ | २२ २३ | २३ ४८ | १ ०९ | २ ४२ | ४ ३७ |
| 28 | १५ | ६ ५१ | ९ १४ | ११ ३४ | १३ ५२ | १६ १३ | १८ ३३ | २० ३८ | २२ १९ | २३ ४४ | १ ०५ | २ ३८ | ४ ३३ |
| 29 | १६ | ६ ४७ | ९ १० | ११ ३० | १३ ४८ | १६ ०९ | १८ २९ | २० ३४ | २२ १५ | २३ ४० | १ ०१ | २ ३४ | ४ २९ |
| 30 | १७ | ६ ४३ | ९ ०६ | ११ २६ | १३ ४४ | १६ ०५ | १८ २५ | २० ३० | २२ ११ | २३ ३६ | ०० ५७ | २ ३० | ४ २५ |
| जुला. | १८ | ६ ३९ | ९ ०२ | ११ २२ | १३ ४० | १६ ०१ | १८ २१ | २० २६ | २२ ०७ | २३ ३२ | ०० ५३ | २ २६ | ४ २१ |
| 2 | १९ | ६ ३५ | ८ ५८ | ११ १८ | १३ ३६ | १५ ५७ | १८ १७ | २० २२ | २२ ०३ | २३ २८ | ०० ४९ | २ २२ | ४ १७ |
| 3 | २० | ६ ३१ | ८ ५४ | ११ १४ | १३ ३२ | १५ ५३ | १८ १३ | २० १८ | २१ ५९ | २३ २४ | ०० ४५ | २ १८ | ४ १३ |
| 4 | २१ | ६ २७ | ८ ५० | ११ १० | १३ २८ | १५ ४९ | १८ ०९ | २० १४ | २१ ५५ | २३ २० | ०० ४१ | २ १४ | ४ ०९ |
| 5 | २२ | ६ २३ | ८ ४६ | ११ ०६ | १३ २४ | १५ ४५ | १८ ०५ | २० १० | २१ ५१ | २३ १६ | ०० ३८ | २ ११ | ४ ०५ |
| 6 | २३ | ६ १९ | ८ ४२ | ११ ०२ | १३ २० | १५ ४१ | १८ ०१ | २० ०६ | २१ ४७ | २३ १२ | ०० ३४ | २ ०७ | ४ ०१ |
| 7 | २४ | ६ १६ | ८ ३९ | १० ५९ | १३ १७ | १५ ३८ | १७ ५८ | २० ०३ | २१ ४४ | २३ ०९ | ०० ३१ | २ ०४ | ३ ५८ |
| 8 | २५ | ६ १२ | ८ ३५ | १० ५५ | १३ १३ | १५ ३४ | १७ ५४ | १९ ५९ | २१ ४० | २३ ०५ | ०० २७ | २ ०० | ३ ५४ |
| 9 | २६ | ६ ०८ | ८ ३१ | १० ५१ | १३ ०९ | १५ ३० | १७ ५० | १९ ५५ | २१ ३६ | २३ ०१ | ०० २३ | १ ५६ | ३ ५० |
| 10 | २७ | ६ ०४ | ८ २७ | १० ४७ | १३ ०५ | १५ २६ | १७ ४६ | १९ ५१ | २१ ३२ | २२ ५७ | ०० १९ | १ ५२ | ३ ४६ |
| 11 | २८ | ६ ०० | ८ २३ | १० ४३ | १३ ०१ | १५ २२ | १७ ४२ | १९ ४७ | २१ २८ | २२ ५३ | ०० १५ | १ ४८ | ३ ४२ |
| 12 | २९ | ५ ५६ | ८ १९ | १० ३९ | १२ ५७ | १५ १८ | १७ ३८ | १९ ४३ | २१ २४ | २२ ४९ | ०० ११ | १ ४४ | ३ ३८ |
| 13 | ३० | ५ ५२ | ८ १५ | १० ३५ | १२ ५३ | १५ १४ | १७ ३४ | १९ ३९ | २१ २० | २२ ४५ | ०० ०७ | १ ४० | ३ ३४ |
| 14 | ३१ | ५ ४८ | ८ ११ | १० ३१ | १२ ४९ | १५ १० | १७ ३० | १९ ३५ | २१ १६ | २२ ४१ | ०० ०३ | १ ३६ | ३ ३० |
| 15 | ३२ | ५ ४४ | ८ ०७ | १० २७ | १२ ४५ | १५ ०६ | १७ २६ | १९ ३१ | २१ १२ | २२ ३७ | २३ ५९ | १ ३२ | ३ २६ |
| 16 | श्रा. | ५ ४० | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — |

## दैनिक लग्न सारणी जुला.-अग. (श्रावण) भा.स्टैं.टा. समापितकाल, जालन्धर

| जुलाई | श्रावण | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. |
| 16 | १ | ८ ०३ | १० २३ | १२ ४१ | १५ ०२ | १७ २२ | १९ २७ | २१ ०८ | २२ ३३ | २३ ५५ | १ २८ | ३ २२ | ५ ३६ |
| 17 | २ | ७ ५९ | १० १९ | १२ ३७ | १४ ५८ | १७ १८ | १९ २३ | २१ ०४ | २२ २९ | २३ ५१ | १ २४ | ३ १८ | ५ ३२ |
| 18 | ३ | ७ ५५ | १० १५ | १२ ३३ | १४ ५४ | १७ १४ | १९ १९ | २१ ०० | २२ २५ | २३ ४७ | १ २० | ३ १४ | ५ २८ |
| 19 | ४ | ७ ५२ | १० १२ | १२ ३० | १४ ५१ | १७ ११ | १९ १६ | २० ५६ | २२ २१ | २३ ४३ | १ १७ | ३ १० | ५ २४ |
| 20 | ५ | ७ ४८ | १० ०८ | १२ २६ | १४ ४७ | १७ ०७ | १९ १२ | २० ५२ | २२ १८ | २३ ४० | १ १३ | ३ ६ | ५ २० |
| 21 | ६ | ७ ४४ | १० ०४ | १२ २२ | १४ ४३ | १७ ०३ | १९ ८ | २० ४८ | २२ १४ | २३ ३६ | १ ०९ | ३ ०२ | ५ १६ |
| 22 | ७ | ७ ४० | १० ०० | १२ १८ | १४ ३९ | १६ ५९ | १९ ०४ | २० ४४ | २२ १० | २३ ३२ | १ ०५ | २ ५८ | ५ १२ |
| 23 | ८ | ७ ३६ | ९ ५६ | १२ १४ | १४ ३५ | १६ ५५ | १९ ०० | २० ४० | २२ ०६ | २३ २८ | १ ०१ | २ ५४ | ५ ०८ |
| 24 | ९ | ७ ३२ | ९ ५२ | १२ १० | १४ ३१ | १६ ५१ | १८ ५६ | २० ३६ | २२ ०२ | २३ २४ | ० ५७ | २ ५० | ५ ०४ |
| 25 | १० | ७ २८ | ९ ४८ | १२ ६ | १४ २७ | १६ ४७ | १८ ५२ | २० ३२ | २१ ५८ | २३ २० | ० ५३ | २ ४६ | ५ ०० |
| 26 | ११ | ७ २४ | ९ ४४ | १२ ०२ | १४ २४ | १६ ४४ | १८ ४८ | २० २९ | २१ ५४ | २३ १६ | ० ४९ | २ ४२ | ४ ५६ |
| 27 | १२ | ७ २० | ९ ४० | ११ ५८ | १४ २० | १६ ४० | १८ ४४ | २० २५ | २१ ५० | २३ १२ | ० ४५ | २ ३८ | ४ ५२ |
| 28 | १३ | ७ १६ | ९ ३६ | ११ ५५ | १४ १६ | १६ ३६ | १८ ४० | २० २१ | २१ ४६ | २३ ०८ | ० ४१ | २ ३४ | ४ ४९ |
| 29 | १४ | ७ १२ | ९ ३२ | ११ ५१ | १४ १२ | १६ ३२ | १८ ३६ | २० १७ | २१ ४२ | २३ ०४ | ० ३७ | २ ३० | ४ ४५ |
| 30 | १५ | ७ ०८ | ९ २८ | ११ ४७ | १४ ८ | १६ २८ | १८ ३२ | २० १३ | २१ ३८ | २३ ०० | ० ३३ | २ २७ | ४ ४१ |
| 31 | १६ | ७ ०४ | ९ २४ | ११ ४३ | १४ ०४ | १६ २५ | १८ २८ | २० ९ | २१ ३४ | २२ ५६ | ० २९ | २ २३ | ४ ३७ |
| अग. | १७ | ७ ०० | ९ २० | ११ ३९ | १४ ०० | १६ २१ | १८ २४ | २० ०५ | २१ ३० | २२ ५२ | ० २५ | २ १९ | ४ ३३ |
| 2 | १८ | ६ ५६ | ९ १६ | ११ ३५ | १३ ५६ | १६ १७ | १८ २० | २० ०१ | २१ २६ | २२ ४८ | ० २१ | २ १५ | ४ २९ |
| 3 | १९ | ६ ५२ | ९ १२ | ११ ३१ | १३ ५२ | १६ १३ | १८ १६ | १९ ५७ | २१ २२ | २२ ४४ | ० १७ | २ ११ | ४ २५ |
| 4 | २० | ६ ४८ | ९ ०९ | ११ २७ | १३ ४८ | १६ ९ | १८ १२ | १९ ५३ | २१ १८ | २२ ४१ | ० १३ | २ ०७ | ४ २१ |
| 5 | २१ | ६ ४४ | ९ ०५ | ११ २४ | १३ ४५ | १६ ५ | १८ ९ | १९ ५० | २१ १४ | २२ ३८ | ० १० | २ ०४ | ४ १७ |
| 6 | २२ | ६ ४० | ९ ०१ | ११ २० | १३ ४१ | १६ ०१ | १८ ५ | १९ ४६ | २१ ११ | २२ ३४ | ० ०६ | २ ०० | ४ १४ |
| 7 | २३ | ६ ३७ | ८ ५७ | ११ १६ | १३ ३७ | १५ ५७ | १८ ०१ | १९ ४२ | २१ ७ | २२ ३० | ० ०२ | १ ५६ | ४ १० |
| 8 | २४ | ६ ३३ | ८ ५३ | ११ १२ | १३ ३३ | १५ ५४ | १७ ५७ | १९ ३९ | २१ ०३ | २२ २६ | २३ ५८ | १ ५२ | ४ ०६ |
| 9 | २५ | ६ २९ | ८ ४९ | ११ ८ | १३ २९ | १५ ५० | १७ ५३ | १९ ३५ | २० ५९ | २२ २२ | २३ ५४ | १ ४८ | ४ ०२ |
| 10 | २६ | ६ २५ | ८ ४५ | ११ ४ | १३ २५ | १५ ४६ | १७ ४९ | १९ ३१ | २० ५५ | २२ १८ | २३ ५० | १ ४४ | ३ ५८ |
| 11 | २७ | ६ २१ | ८ ४१ | ११ ०० | १३ २१ | १५ ४२ | १७ ४५ | १९ २७ | २० ५१ | २२ १४ | २३ ४६ | १ ४० | ३ ५४ |
| 12 | २८ | ६ १७ | ८ ३७ | १० ५६ | १३ १७ | १५ ३८ | १७ ४१ | १९ २३ | २० ४८ | २२ १० | २३ ४२ | १ ३७ | ३ ५० |
| 13 | २९ | ६ १३ | ८ ३३ | १० ५२ | १३ १३ | १५ ३४ | १७ ३७ | १९ १९ | २० ४४ | २२ ०६ | २३ ३८ | १ ३३ | ३ ४७ |
| 14 | ३० | ६ ०९ | ८ २९ | १० ४८ | १३ ०९ | १५ ३० | १७ ३३ | १९ १५ | २० ४० | २२ ०२ | २३ ३४ | १ २९ | ३ ४३ |
| 15 | ३१ | ६ ०५ | ८ २५ | १० ४४ | १३ ०५ | १५ २६ | १७ २९ | १९ ११ | २० ३६ | २१ ५८ | २३ ३० | १ २५ | ३ ३९ |
| 16 | भाद्र | ६ ०१ | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — |

## दैनिक लग्न सारणी (अग.-सितं. (भाद्रपद)) भा.स्टै.टा. समापितकाल, जालन्धर

| अगस्त | भाद्रपद | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
|  |  | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 16 | १ | ८ २१ | १० ४० | १३ ०१ | १५ २२ | १७ २५ | १९ ०७ | २० ३२ | २१ ५४ | २३ २६ | १ २१ | ३ ३५ | ५ ५७ |
| 17 | २ | ८ १७ | १० ३६ | १२ ५७ | १५ १८ | १७ २१ | १९ ०३ | २० २८ | २१ ५० | २३ २२ | १ १७ | ३ ३१ | ५ ५३ |
| 18 | ३ | ८ १३ | १० ३३ | १२ ५३ | १५ १४ | १७ १७ | १८ ५९ | २० २४ | २१ ४६ | २३ १८ | १ १३ | ३ २७ | ५ ४९ |
| 19 | ४ | ८ ९ | १० २९ | १२ ४९ | १५ १० | १७ १३ | १८ ५५ | २० २० | २१ ४२ | २३ १४ | १ ०९ | ३ २३ | ५ ४५ |
| 20 | ५ | ८ ६ | १० २५ | १२ ४६ | १५ ०६ | १७ ०९ | १८ ५१ | २० १६ | २१ ३८ | २३ १० | १ ०५ | ३ १९ | ५ ४१ |
| 21 | ६ | ८ ०२ | १० २१ | १२ ४२ | १५ ०२ | १७ ०६ | १८ ४७ | २० १२ | २१ ३४ | २३ ०७ | १ ०१ | ३ १५ | ५ ३७ |
| 22 | ७ | ७ ५८ | १० १७ | १२ ३८ | १४ ५८ | १७ ०२ | १८ ४४ | २० ८ | २१ ३० | २३ ०३ | ० ५७ | ३ ११ | ५ ३३ |
| 23 | ८ | ७ ५४ | १० १३ | १२ ३४ | १४ ५४ | १६ ५८ | १८ ४० | २० ४ | २१ २६ | २२ ५९ | ० ५३ | ३ ०७ | ५ २९ |
| 24 | ९ | ७ ५० | १० ०९ | १२ ३० | १४ ५० | १६ ५४ | १८ ३६ | २० ०१ | २१ २२ | २२ ५५ | ० ५० | ३ ०३ | ५ २५ |
| 25 | १० | ७ ४६ | १० ५ | १२ २६ | १४ ४६ | १६ ५० | १८ ३२ | १९ ५७ | २१ १९ | २२ ५१ | ० ४६ | ३ ०० | ५ २२ |
| 26 | ११ | ७ ४२ | १० ०१ | १२ २३ | १४ ४३ | १६ ४६ | १८ २८ | १९ ५३ | २१ १५ | २२ ४७ | ० ४२ | २ ५६ | ५ १८ |
| 27 | १२ | ७ ३८ | ९ ५७ | १२ १९ | १४ ३९ | १६ ४३ | १८ २४ | १९ ४९ | २१ ११ | २२ ४३ | ० ३८ | २ ५२ | ५ १४ |
| 28 | १३ | ७ ३४ | ९ ५३ | १२ १५ | १४ ३५ | १६ ३९ | १८ २० | १९ ४५ | २१ ७ | २२ ३९ | ० ३४ | २ ४८ | ५ १० |
| 29 | १४ | ७ ३० | ९ ४९ | १२ ११ | १४ ३१ | १६ ३५ | १८ १६ | १९ ४१ | २१ ०३ | २२ ३५ | ० ३० | २ ४४ | ५ ६ |
| 30 | १५ | ७ २६ | ९ ४५ | १२ ०७ | १४ २७ | १६ ३१ | १८ १२ | १९ ३७ | २० ५९ | २२ ३१ | ० २६ | २ ४० | ५ ०२ |
| 31 | १६ | ७ २२ | ९ ४१ | १२ ०३ | १४ २३ | १६ २७ | १८ ०८ | १९ ३३ | २० ५५ | २२ २७ | ० २२ | २ ३६ | ४ ५८ |
| सितं. | १७ | ७ १८ | ९ ३७ | ११ ५९ | १४ १९ | १६ २३ | १८ ०४ | १९ २९ | २० ५१ | २२ २३ | ० १८ | २ ३२ | ४ ५४ |
| 2 | १८ | ७ १४ | ९ ३४ | ११ ५५ | १४ १५ | १६ १९ | १८ ०० | १९ २५ | २० ४७ | २२ १९ | ० १४ | २ २८ | ४ ५० |
| 3 | १९ | ७ १० | ९ ३० | ११ ५१ | १४ ११ | १६ १५ | १७ ५६ | १९ २१ | २० ४३ | २२ १६ | ० १० | २ २४ | ४ ४६ |
| 4 | २० | ७ ०६ | ९ २६ | ११ ४७ | १४ ०७ | १६ ११ | १७ ५२ | १९ १७ | २० ३९ | २२ १२ | ० ६ | २ २० | ४ ४२ |
| 5 | २१ | ७ ०२ | ९ २२ | ११ ४३ | १४ ०३ | १६ ०७ | १७ ४८ | १९ १३ | २० ३५ | २२ ८ | ० ०२ | २ १६ | ४ ३८ |
| 6 | २२ | ६ ५९ | ९ १८ | ११ ३९ | १३ ५९ | १६ ०३ | १७ ४४ | १९ ९ | २० ३१ | २२ ०४ | २३ ५८ | २ १२ | ४ ३४ |
| 7 | २३ | ६ ५५ | ९ १४ | ११ ३५ | १३ ५५ | १५ ५९ | १७ ४० | १९ ५ | २० २७ | २२ ०० | २३ ५४ | २ ०८ | ४ ३० |
| 8 | २४ | ६ ५१ | ९ १० | ११ ३१ | १३ ५१ | १५ ५५ | १७ ३६ | १९ ०१ | २० २३ | २१ ५६ | २३ ५० | २ ०४ | ४ २६ |
| 9 | २५ | ६ ४७ | ९ ०६ | ११ २७ | १३ ४७ | १५ ५१ | १७ ३२ | १८ ५७ | २० १९ | २१ ५२ | २३ ४६ | २ ०० | ४ २२ |
| 10 | २६ | ६ ४३ | ९ ०२ | ११ २३ | १३ ४३ | १५ ४७ | १७ २८ | १८ ५३ | २० १५ | २१ ४८ | २३ ४२ | १ ५६ | ४ १८ |
| 11 | २७ | ६ ३९ | ८ ५८ | ११ १९ | १३ ३९ | १५ ४३ | १७ २४ | १८ ४९ | २० ११ | २१ ४४ | २३ ३८ | १ ५२ | ४ १४ |
| 12 | २८ | ६ ३५ | ८ ५४ | ११ १५ | १३ ३५ | १५ ३९ | १७ २० | १८ ४५ | २० ७ | २१ ४० | २३ ३४ | १ ४८ | ४ १० |
| 13 | २९ | ६ ३१ | ८ ५० | ११ ११ | १३ ३१ | १५ ३५ | १७ १६ | १८ ४१ | २० ०३ | २१ ३६ | २३ ३० | १ ४४ | ४ ६ |
| 14 | ३० | ६ २७ | ८ ४६ | ११ ७ | १३ २७ | १५ ३१ | १७ १२ | १८ ३७ | १९ ५९ | २१ ३२ | २३ २६ | १ ४० | ४ ०२ |
| 15 | ३१ | ६ २३ | ८ ४२ | ११ ०३ | २३ १३ | १५ २७ | १७ ०८ | १८ ३३ | १९ ५५ | २१ २८ | २३ २२ | १ ३६ | ३ ५८ |
| 16 | आ | ६ १९ | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — |

## दैनिक लग्न सारणी (सितं.-अक्तू. (आश्विन)) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

| सितंबर | आश्विन | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
|  |  | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 16 | १ | ८ ३८ | १० ५९ | १३ १९ | १५ २३ | १७ ०४ | १८ २९ | १९ ५१ | २१ २४ | २३ १८ | १ ३२ | ३ ५५ | ६ १५ |
| 17 | २ | ८ ३४ | १० ५५ | १३ १५ | १५ १९ | १७ ०० | १८ २५ | १९ ४७ | २१ २० | २३ १४ | १ २८ | ३ ५१ | ६ ११ |
| 18 | ३ | ८ ३० | १० ५१ | १३ ११ | १५ १५ | १६ ५६ | १८ २१ | १९ ४३ | २१ १६ | २३ १० | १ २४ | ३ ४७ | ६ ०७ |
| 19 | ४ | ८ २६ | १० ४७ | १३ ०७ | १५ ११ | १६ ५२ | १८ १७ | १९ ३९ | २१ १२ | २३ ०६ | १ २० | ३ ४३ | ६ ०३ |
| 20 | ५ | ८ २२ | १० ४३ | १३ ०३ | १५ ०७ | १६ ४८ | १८ १३ | १९ ३५ | २१ ०८ | २३ ०२ | १ १६ | ३ ३९ | ५ ५९ |
| 21 | ६ | ८ १८ | १० ३९ | १२ ५९ | १५ ०३ | १६ ४४ | १८ ०९ | १९ ३१ | २१ ०४ | २२ ५८ | १ १२ | ३ ३५ | ५ ५५ |
| 22 | ७ | ८ १४ | १० ३५ | १२ ५५ | १४ ५९ | १६ ४० | १८ ०५ | १९ २७ | २१ ०० | २२ ५४ | १ ०८ | ३ ३१ | ५ ५१ |
| 23 | ८ | ८ १० | १० ३१ | १२ ५१ | १४ ५५ | १६ ३६ | १८ ०१ | १९ २३ | २० ५६ | २२ ५० | १ ०४ | ३ २७ | ५ ४७ |
| 24 | ९ | ८ ६ | १० २७ | १२ ४७ | १४ ५१ | १६ ३२ | १७ ५७ | १९ १९ | २० ५२ | २२ ४६ | १ ०० | ३ २३ | ५ ४३ |
| 25 | १० | ८ ०२ | १० २३ | १२ ४३ | १४ ४७ | १६ २८ | १७ ५३ | १९ १५ | २० ४८ | २२ ४२ | ०० ५७ | ३ १९ | ५ ३९ |
| 26 | ११ | ७ ५८ | १० २० | १२ ४० | १४ ४४ | १६ २५ | १७ ५० | १९ १२ | २० ४४ | २२ ३८ | ०० ५३ | ३ १५ | ५ ३५ |
| 27 | १२ | ७ ५४ | १० १६ | १२ ३६ | १४ ४० | १६ २१ | १७ ४६ | १९ ८ | २० ४० | २२ ३५ | ०० ४९ | ३ ११ | ५ ३१ |
| 28 | १३ | ७ ५० | १० १२ | १२ ३२ | १४ ३६ | १६ १७ | १७ ४२ | १९ ०४ | २० ३६ | २२ ३१ | ०० ४५ | ३ ०७ | ५ २७ |
| 29 | १४ | ७ ४६ | १० ०८ | १२ २८ | १४ ३२ | १६ १३ | १७ ३८ | १९ ०० | २० ३२ | २२ २७ | ०० ४१ | ३ ०३ | ५ २३ |
| 30 | १५ | ७ ४२ | १० ०४ | १२ २४ | १४ २८ | १६ ०९ | १७ ३४ | १८ ५६ | २० २८ | २२ २३ | ०० ३७ | २ ५९ | ५ १९ |
| अक्तू. | १६ | ७ ३८ | १० ० | १२ २० | १४ २४ | १६ ०५ | १७ ३० | १८ ५२ | २० २४ | २२ १९ | ०० ३३ | २ ५५ | ५ १५ |
| 2 | १७ | ७ ३४ | ९ ५६ | १२ १६ | १४ २० | १६ ०१ | १७ २६ | १८ ४८ | २० २१ | २२ १५ | ०० २९ | २ ५२ | ५ ११ |
| 3 | १८ | ७ ३० | ९ ५२ | १२ १२ | १४ १६ | १५ ५७ | १७ २२ | १८ ४४ | २० १७ | २२ ११ | ०० २५ | २ ४८ | ५ ०७ |
| 4 | १९ | ७ २६ | ९ ४८ | १२ ०८ | १४ १२ | १५ ५३ | १७ १८ | १८ ४० | २० १३ | २२ ०७ | ०० २१ | २ ४४ | ५ ०३ |
| 5 | २० | ७ २२ | ९ ४४ | १२ ०४ | १४ ८ | १५ ४९ | १७ १४ | १८ ३६ | २० ०९ | २२ ०३ | ०० १७ | २ ४० | ५ ०० |
| 6 | २१ | ७ १८ | ९ ४० | १२ ०० | १४ ४ | १५ ४५ | १७ १० | १८ ३२ | २० ०५ | २१ ५९ | ०० १३ | २ ३६ | ४ ५६ |
| 7 | २२ | ७ १४ | ९ ३६ | ११ ५६ | १४ ०० | १५ ४१ | १७ ०६ | १८ २८ | २० ०१ | २१ ५५ | ०० ०९ | २ ३३ | ४ ५२ |
| 8 | २३ | ७ १० | ९ ३२ | ११ ५२ | १३ ५६ | १५ ३७ | १७ ०२ | १८ २४ | १९ ५७ | २१ ५१ | ०० ०५ | २ २९ | ४ ४८ |
| 9 | २४ | ७ ०६ | ९ २८ | ११ ४८ | १३ ५२ | १५ ३३ | १६ ५८ | १८ २० | १९ ५३ | २१ ४७ | ०० ०१ | २ २५ | ४ ४४ |
| 10 | २५ | ७ ०३ | ९ २५ | ११ ४५ | १३ ४९ | १५ ३० | १६ ५५ | १८ १७ | १९ ४९ | २१ ४४ | २३ ५८ | २ २१ | ४ ४१ |
| 11 | २६ | ६ ५९ | ९ २१ | ११ ४१ | १३ ४५ | १५ २६ | १६ ५१ | १८ १३ | १९ ४५ | २१ ४० | २३ ५४ | २ १७ | ४ ३७ |
| 12 | २७ | ६ ५५ | ९ १७ | ११ ३७ | १३ ४१ | १५ २२ | १६ ४७ | १८ ९ | १९ ४१ | २१ ३६ | २३ ५० | २ १३ | ४ ३३ |
| 13 | २८ | ६ ५१ | ९ १३ | ११ ३३ | १३ ३७ | १५ १८ | १६ ४३ | १८ ०५ | १९ ३७ | २१ ३२ | २३ ४६ | २ ०९ | ४ २९ |
| 14 | २९ | ६ ४७ | ९ ०९ | ११ २९ | १३ ३३ | १५ १४ | १६ ३९ | १८ ०१ | १९ ३३ | २१ २८ | २३ ४२ | २ ०५ | ४ २५ |
| 15 | ३० | ६ ४३ | ९ ०५ | ११ २५ | १३ २९ | १५ १० | १६ ३५ | १७ ५७ | १९ २९ | २१ २४ | २३ ३८ | २ ०१ | ४ २१ |
| 16 | ३१ | ६ ३९ | ९ ०१ | ११ २१ | १३ २५ | १५ ०६ | १६ ३१ | १७ ५३ | १९ २५ | २१ २० | २३ ३४ | १ ५७ | ४ १७ |
| 17 | का. | ६ ३५ | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — |

## दैनिक लग्न सारणी अक्तू.-नवं. ( कार्तिक ) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

| अक्तूबर | कार्तिक | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 17 | १ | ८ ५७ | ११ १७ | १३ २१ | १५ ०२ | १६ २७ | १७ ४९ | १९ २१ | २१ १६ | २३ ३० | १ ५३ | ४ १३ | ६ ३१ |
| 18 | २ | ८ ५३ | ११ १३ | १३ १७ | १४ ५८ | १६ २३ | १७ ४५ | १९ १७ | २१ १२ | २३ २६ | १ ४९ | ४ ०९ | ६ २७ |
| 19 | ३ | ८ ४९ | ११ ०९ | १३ १३ | १४ ५४ | १६ १९ | १७ ४१ | १९ १३ | २१ ०८ | २३ २२ | १ ४५ | ४ ०५ | ६ २३ |
| 20 | ४ | ८ ४५ | ११ ०५ | १३ ०९ | १४ ५० | १६ १५ | १७ ३७ | १९ ०९ | २१ ०४ | २३ १८ | १ ४१ | ४ ०१ | ६ १९ |
| 21 | ५ | ८ ४१ | ११ ०१ | १३ ०५ | १४ ४६ | १६ ११ | १७ ३३ | १९ ०५ | २१ ०० | २३ १४ | १ ३७ | ३ ५७ | ६ १५ |
| 22 | ६ | ८ ३७ | १० ५७ | १३ ०१ | १४ ४२ | १६ ०७ | १७ २९ | १९ ०१ | २० ५६ | २३ १० | १ ३३ | ३ ५३ | ६ ११ |
| 23 | ७ | ८ ३३ | १० ५३ | १२ ५७ | १४ ३८ | १६ ०३ | १७ २५ | १८ ५७ | २० ५२ | २३ ०७ | १ २९ | ३ ५० | ६ ७ |
| 24 | ८ | ८ २९ | १० ४९ | १२ ५३ | १४ ३४ | १५ ५९ | १७ २१ | १८ ५३ | २० ४८ | २३ ०३ | १ २५ | ३ ४६ | ६ ४ |
| 25 | ९ | ८ २६ | १० ४६ | १२ ५० | १४ ३० | १५ ५५ | १७ १८ | १८ ५० | २० ४४ | २२ ५९ | १ २२ | ३ ४२ | ६ ०० |
| 26 | १० | ८ २२ | १० ४२ | १२ ४६ | १४ २७ | १५ ५२ | १७ १४ | १८ ४६ | २० ४१ | २२ ५५ | १ १८ | ३ ३९ | ५ ५६ |
| 27 | ११ | ८ १८ | १० ३८ | १२ ४२ | १४ २३ | १५ ४८ | १७ १० | १८ ४२ | २० ३७ | २२ ५१ | १ १४ | ३ ३५ | ५ ५२ |
| 28 | १२ | ८ १४ | १० ३४ | १२ ३८ | १४ १९ | १५ ४४ | १७ ०६ | १८ ३८ | २० ३३ | २२ ४७ | १ १० | ३ ३१ | ५ ४८ |
| 29 | १३ | ८ १० | १० ३० | १२ ३४ | १४ १५ | १५ ४० | १७ ०२ | १८ ३४ | २० २९ | २२ ४३ | १ ०६ | ३ २७ | ५ ४४ |
| 30 | १४ | ८ ०६ | १० २६ | १२ ३० | १४ ११ | १५ ३६ | १६ ५८ | १८ ३० | २० २५ | २२ ३९ | १ ०२ | ३ २३ | ५ ४१ |
| 31 | १५ | ८ ०२ | १० २२ | १२ २६ | १४ ०७ | १५ ३२ | १६ ५४ | १८ २६ | २० २१ | २२ ३५ | ० ५८ | ३ १९ | ५ ३७ |
| नवं. | १६ | ७ ५८ | १० १८ | १२ २२ | १४ ०३ | १५ २८ | १६ ५० | १८ २२ | २० १७ | २२ ३१ | ० ५४ | ३ १५ | ५ ३३ |
| 2 | १७ | ७ ५४ | १० १४ | १२ १८ | १३ ५९ | १५ २४ | १६ ४६ | १८ १८ | २० १३ | २२ २७ | ० ५० | ३ ११ | ५ २९ |
| 3 | १८ | ७ ५० | १० १० | १२ १४ | १३ ५५ | १५ २० | १६ ४२ | १८ १५ | २० ०९ | २२ २३ | ० ४६ | ३ ०७ | ५ २५ |
| 4 | १९ | ७ ४६ | १० ०६ | १२ १० | १३ ५१ | १५ १६ | १६ ३८ | १८ ११ | २० ०५ | २२ १९ | ० ४२ | ३ ०३ | ५ २१ |
| 5 | २० | ७ ४२ | १० ०२ | १२ ०६ | १३ ४७ | १५ १२ | १६ ३४ | १८ ०७ | २० ०१ | २२ १५ | ० ३८ | २ ५९ | ५ १७ |
| 6 | २१ | ७ ३८ | ९ ५८ | १२ ०२ | १३ ४३ | १५ ०८ | १६ ३० | १८ ०३ | १९ ५७ | २२ ११ | ० ३४ | २ ५५ | ५ १३ |
| 7 | २२ | ७ ३५ | ९ ५४ | ११ ५८ | १३ ३९ | १५ ०४ | १६ २६ | १७ ५९ | १९ ५३ | २२ ०७ | ० ३० | २ ५१ | ५ ९ |
| 8 | २३ | ७ ३१ | ९ ५० | ११ ५४ | १३ ३५ | १५ ०० | १६ २२ | १७ ५५ | १९ ४९ | २२ ०३ | ० २६ | २ ४७ | ५ ५ |
| 9 | २४ | ७ २७ | ९ ४६ | ११ ५० | १३ ३१ | १४ ५६ | १६ १८ | १७ ५१ | १९ ४५ | २१ ५९ | ० २२ | २ ४३ | ५ ०१ |
| 10 | २५ | ७ २३ | ९ ४२ | ११ ४६ | १३ २७ | १४ ५२ | १६ १४ | १७ ४७ | १९ ४२ | २१ ५६ | ० १८ | २ ३९ | ४ ५७ |
| 11 | २६ | ७ १९ | ९ ३८ | ११ ४२ | १३ २४ | १४ ४९ | १६ ११ | १७ ४३ | १९ ३८ | २१ ५२ | ० १४ | २ ३५ | ४ ५३ |
| 12 | २७ | ७ १५ | ९ ३४ | ११ ३९ | १३ २० | १४ ४५ | १६ ०७ | १७ ३९ | १९ ३४ | २१ ४८ | ० ११ | २ ३१ | ४ ४९ |
| 13 | २८ | ७ ११ | ९ ३१ | ११ ३५ | १३ १६ | १४ ४१ | १६ ०३ | १७ ३५ | १९ ३० | २१ ४४ | ० ०७ | २ २७ | ४ ४५ |
| 14 | २९ | ७ ०७ | ९ २७ | ११ ३१ | १३ १२ | १४ ३७ | १५ ५९ | १७ ३१ | १९ २६ | २१ ४० | ० ०३ | २ २३ | ४ ४१ |
| 15 | ३० | ७ ०३ | ९ २३ | ११ २७ | १३ ०८ | १४ ३३ | १५ ५५ | १७ २७ | १९ २२ | २१ ३६ | २३ ५९ | २ १९ | ४ ३७ |
| 16 | मा. | ६ ५९ | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — |

## दैनिक लग्न सारणी नवं.-दिसं. ( मार्गशीर्ष ) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

| नवम्बर | मार्ग. | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 16 | १ | ९ १९ | ११ २३ | १३ ०४ | १४ २९ | १५ ५१ | १७ २३ | १९ १८ | २१ ३२ | २३ ५५ | २ १५ | ४ ३३ | ६ ५५ |
| 17 | २ | ९ १५ | ११ १९ | १३ ०० | १४ २५ | १५ ४७ | १७ १९ | १९ १४ | २१ २८ | २३ ५१ | २ ११ | ४ २९ | ६ ५१ |
| 18 | ३ | ९ ११ | ११ १५ | १२ ५६ | १४ २१ | १५ ४३ | १७ १५ | १९ १० | २१ २४ | २३ ४७ | २ ०७ | ४ २५ | ६ ४७ |
| 19 | ४ | ९ ०७ | ११ ११ | १२ ५२ | १४ १७ | १५ ३९ | १७ ११ | १९ ०६ | २१ २० | २३ ४३ | २ ०३ | ४ २१ | ६ ४३ |
| 20 | ५ | ९ ०३ | ११ ०७ | १२ ४८ | १४ १३ | १५ ३५ | १७ ०७ | १९ ०२ | २१ १६ | २३ ३९ | १ ५९ | ४ १७ | ६ ३९ |
| 21 | ६ | ८ ५९ | ११ ०३ | १२ ४४ | १४ ०९ | १५ ३१ | १७ ०३ | १८ ५८ | २१ १२ | २३ ३५ | १ ५५ | ४ १३ | ६ ३५ |
| 22 | ७ | ८ ५५ | १० ५९ | १२ ४० | १४ ०५ | १५ २७ | १७ ०० | १८ ५५ | २१ ०९ | २३ ३१ | १ ५२ | ४ १० | ६ ३२ |
| 23 | ८ | ८ ५१ | १० ५५ | १२ ३६ | १४ ०१ | १५ २३ | १६ ५६ | १८ ५१ | २१ ०५ | २३ २७ | १ ४८ | ४ ६ | ६ २८ |
| 24 | ९ | ८ ४७ | १० ५१ | १२ ३२ | १३ ५७ | १५ १९ | १६ ५२ | १८ ४७ | २१ ०१ | २३ २३ | १ ४४ | ४ ०२ | ६ २४ |
| 25 | १० | ८ ४४ | १० ४८ | १२ २९ | १३ ५४ | १५ १६ | १६ ४८ | १८ ४३ | २० ५७ | २३ १९ | १ ४० | ३ ५८ | ६ २० |
| 26 | ११ | ८ ४० | १० ४४ | १२ २५ | १३ ५० | १५ १२ | १६ ४४ | १८ ३९ | २० ५३ | २३ १६ | १ ३६ | ३ ५४ | ६ १६ |
| 27 | १२ | ८ ३६ | १० ४० | १२ २१ | १३ ४६ | १५ ०८ | १६ ४० | १८ ३५ | २० ४९ | २३ १२ | १ ३२ | ३ ५० | ६ १२ |
| 28 | १३ | ८ ३२ | १० ३६ | १२ १७ | १३ ४२ | १५ ०४ | १६ ३६ | १८ ३१ | २० ४५ | २३ ०८ | १ २८ | ३ ४६ | ६ ०८ |
| 29 | १४ | ८ २८ | १० ३२ | १२ १३ | १३ ३८ | १५ ०० | १६ ३३ | १८ २७ | २० ४१ | २३ ०५ | १ २५ | ३ ४३ | ६ ०४ |
| 30 | १५ | ८ २४ | १० २८ | १२ ०९ | १३ ३४ | १४ ५६ | १६ २९ | १८ २३ | २० ३७ | २३ ०१ | १ २१ | ३ ३९ | ६ ०० |
| दिसं | १६ | ८ २० | १० २४ | १२ ०५ | १३ ३० | १४ ५२ | १६ २५ | १८ १९ | २० ३३ | २२ ५७ | १ १७ | ३ ३५ | ५ ५६ |
| 2 | १७ | ८ १६ | १० २० | १२ ०१ | १३ २६ | १४ ४८ | १६ २१ | १८ १५ | २० २९ | २२ ५३ | १ १३ | ३ ३१ | ५ ५२ |
| 3 | १८ | ८ १२ | १० १६ | ११ ५७ | १३ २२ | १४ ४४ | १६ १७ | १८ ११ | २० २५ | २२ ४९ | १ ०९ | ३ २७ | ५ ४८ |
| 4 | १९ | ८ ०८ | १० १२ | ११ ५३ | १३ १८ | १४ ४० | १६ १३ | १८ ०७ | २० २१ | २२ ४५ | १ ०५ | ३ २३ | ५ ४४ |
| 5 | २० | ८ ०४ | १० ०८ | ११ ४९ | १३ १४ | १४ ३६ | १६ ०९ | १८ ०३ | २० १७ | २२ ४१ | १ ०१ | ३ १९ | ५ ४० |
| 6 | २१ | ८ ०० | १० ०४ | ११ ४५ | १३ १० | १४ ३२ | १६ ०५ | १७ ५९ | २० १३ | २२ ३७ | ०० ५७ | ३ १५ | ५ ३६ |
| 7 | २२ | ७ ५६ | १० ०० | ११ ४१ | १३ ०६ | १४ २८ | १६ ०१ | १७ ५५ | २० ०९ | २२ ३३ | ०० ५३ | ३ ११ | ५ ३२ |
| 8 | २३ | ७ ५२ | ९ ५६ | ११ ३७ | १३ ०२ | १४ २४ | १५ ५७ | १७ ५१ | २० ०५ | २२ २९ | ०० ४९ | ३ ७ | ५ २८ |
| 9 | २४ | ७ ४८ | ९ ५२ | ११ ३३ | १२ ५८ | १४ २० | १५ ५३ | १७ ४७ | २० ०१ | २२ २५ | ०० ४५ | ३ ०३ | ५ २४ |
| 10 | २५ | ७ ४५ | ९ ४९ | ११ ३० | १२ ५५ | १४ १७ | १५ ५० | १७ ४४ | १९ ५८ | २२ २२ | ०० ४२ | ३ ०० | ५ २१ |
| 11 | २६ | ७ ४१ | ९ ४५ | ११ २६ | १२ ५१ | १४ १३ | १५ ४६ | १७ ४० | १९ ५४ | २२ १८ | ०० ३८ | २ ५६ | ५ १७ |
| 12 | २७ | ७ ३७ | ९ ४१ | ११ २२ | १२ ४७ | १४ ०९ | १५ ४२ | १७ ३६ | १९ ५० | २२ १४ | ०० ३४ | २ ५२ | ५ १३ |
| 13 | २८ | ७ ३३ | ९ ३७ | ११ १८ | १२ ४३ | १४ ०५ | १५ ३८ | १७ ३२ | १९ ४६ | २२ १० | ०० ३० | २ ४८ | ५ ९ |
| 14 | २९ | ७ २९ | ९ ३३ | ११ १४ | १२ ३९ | १४ ०१ | १५ ३४ | १७ २८ | १९ ४२ | २२ ०६ | ०० २६ | २ ४४ | ५ ०५ |
| 15 | पौ. | ७ २५ | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — |

## दैनिक लग्न सारणी दिसं.-जन. ( पौष ) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

| दिसम्बर | पौष | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. |
| 15 | १ | ९ २९ | ११ १० | १२ ३५ | १३ ५७ | १५ ३० | १७ २४ | १९ ३८ | २२ ०२ | ०० २२ | २ ४० | ५ ०१ | ७ २१ |
| 16 | २ | ९ २५ | ११ ०६ | १२ ३१ | १३ ५३ | १५ २६ | १७ २० | १९ ३४ | २१ ५८ | ०० १८ | २ ३६ | ४ ५७ | ७ १७ |
| 17 | ३ | ९ २१ | ११ २ | १२ २८ | १३ ४९ | १५ २२ | १७ १६ | १९ ३० | २१ ५४ | ००१४ | २ ३२ | ४ ५३ | ७ १३ |
| 18 | ४ | ९ १७ | १० ५९ | १२ २४ | १३ ४५ | १५ १८ | १७ १२ | १९ २६ | २१ ५० | ०० १० | २ २८ | ४ ४९ | ७ ९ |
| 19 | ५ | ९ १३ | १० ५५ | १२ २० | १३ ४१ | १५ १४ | १७ ८ | १९ २२ | २१ ४६ | ०० ०६ | २ २४ | ४ ४५ | ७ ५ |
| 20 | ६ | ९ ९ | १० ५१ | १२ १६ | १३ ३७ | १५ १० | १७ ४ | १९ १८ | २१ ४२ | ०० ०२ | २ २० | ४ ४१ | ७ १ |
| 21 | ७ | ९ ५ | १० ४७ | १२ १२ | १३ ३३ | १५ ६ | १७ ०० | १९ १४ | २१ ३८ | २३ ५८ | २ १७ | ४ ३७ | ६ ५७ |
| 22 | ८ | ९ ०१ | १० ४३ | १२ ८ | १३ २९ | १५ २ | १६ ५६ | १९ ११ | २१ ३४ | २३ ५४ | २ १३ | ४ ३३ | ६ ५३ |
| 23 | ९ | ८ ५७ | १० ३९ | १२ ४ | १३ २५ | १४ ५८ | १६ ५२ | १९ ०७ | २१ ३० | २३ ५० | २ ९ | ४ २९ | ६ ४९ |
| 24 | १० | ८ ५४ | १० ३५ | १२ ०० | १३ २१ | १४ ५४ | १६ ४९ | १९ ३ | २१ २६ | २३ ४६ | २ ५ | ४ २५ | ६ ४५ |
| 25 | ११ | ८ ५० | १० ३१ | ११ ५६ | १३ १७ | १४ ५० | १६ ४५ | १८ ५९ | २१ २२ | २३ ४२ | २ १ | ४ २१ | ६ ४२ |
| 26 | १२ | ८ ४६ | १० २७ | ११ ५२ | १३ १४ | १४ ४६ | १६ ४१ | १८ ५५ | २१ १८ | २३ ३८ | १ ५७ | ४ १७ | ६ ३८ |
| 27 | १३ | ८ ४२ | १० २३ | ११ ४८ | १३ १० | १४ ४३ | १६ ३७ | १८ ५१ | २१ १४ | २३ ३४ | १ ५३ | ४ १४ | ६ ३४ |
| 28 | १४ | ८ ३८ | १० १९ | ११ ४४ | १३ ६ | १४ ३९ | १६ ३३ | १८ ४७ | २१ १० | २३ ३० | १ ४९ | ४ १० | ६ ३० |
| 29 | १५ | ८ ३४ | १० १५ | ११ ४० | १३ २ | १४ ३५ | १६ २९ | १८ ४३ | २१ ० ६ | २३ २६ | १ ४५ | ४ ६ | ६ २६ |
| 30 | १६ | ८ ३० | १० ११ | ११ ३६ | १२ ५८ | १४ ३१ | १६ २५ | १८ ३९ | २१ ० २ | २३ २२ | १ ४१ | ४ २ | ६ २२ |
| 31 | १७ | ८ २६ | १० ०७ | ११ ३२ | १२ ५४ | १४ २७ | १६ २१ | १८ ३५ | २० ५८ | २३ १८ | १ ३७ | ३ ५८ | ६ १८ |
| जन. | १८ | ८ २२ | १० ०३ | ११ २८ | १२ ५० | १४ २३ | १६ १७ | १८ ३१ | २० ५४ | २३ १४ | १ ३३ | ३ ५४ | ६ १४ |
| 2 | १९ | ८ १८ | ९ ५९ | ११ २४ | १२ ४६ | १४ १९ | १६ १३ | १८ २७ | २० ५० | २३ १० | १ २९ | ३ ५० | ६ १० |
| 3 | २० | ८ १४ | ९ ५५ | ११ २० | १२ ४२ | १४ १५ | १६ ९ | १८ २३ | २० ४६ | २३ ०६ | १ २५ | ३ ४६ | ६ ६ |
| 4 | २१ | ८ १० | ९ ५१ | ११ १६ | १२ ३८ | १४ ११ | १६ ५ | १८ १९ | २० ४२ | २३ ०२ | १ २१ | ३ ४२ | ६ २ |
| 5 | २२ | ८ ६ | ९ ४७ | ११ १२ | १२ ३४ | १४ ०७ | १६ १ | १८ १५ | २० ३८ | २२ ५८ | १ १७ | ३ ३८ | ५ ५८ |
| 6 | २३ | ८ ०२ | ९ ४३ | ११ ८ | १२ ३० | १४ ०३ | १५ ५७ | १८ ११ | २० ३४ | २२ ५४ | १ १३ | ३ ३४ | ५ ५४ |
| 7 | २४ | ७ ५८ | ९ ३९ | ११ ४ | १२ २६ | १३ ५९ | १५ ५३ | १८ ७ | २० ३० | २२ ५० | १ ९ | ३ ३० | ५ ५० |
| 8 | २५ | ७ ५४ | ९ ३५ | ११ ०० | १२ २२ | १३ ५५ | १५ ४९ | १८ ३ | २० २६ | २२ ४६ | १ ५ | ३ २६ | ५ ४६ |
| 9 | २६ | ७ ५० | ९ ३१ | १० ५६ | १२ १८ | १३ ५१ | १५ ४५ | १७ ५९ | २० २२ | २२ ४२ | १ ०१ | ३ २२ | ५ ४२ |
| 10 | २७ | ७ ४६ | ९ २७ | १० ५२ | १२ १४ | १३ ४७ | १५ ४१ | १७ ५५ | २० १८ | २२ ३८ | ०० ५७ | ३ १८ | ५ ३८ |
| 11 | २८ | ७ ४२ | ९ २३ | १० ४८ | १२ १० | १३ ४३ | १५ ३७ | १७ ५१ | २० १४ | २२ ३४ | ०० ५३ | ३ १४ | ५ ३४ |
| 12 | २९ | ७ ३८ | ९ १९ | १० ४४ | १२ ०६ | १३ ३९ | १५ ३३ | १७ ४७ | २० १० | २२ ३० | ०० ४९ | ३ १० | ५ ३० |
| 13 | ३० | ७ ३४ | ९ १५ | १० ४० | १२ ०२ | १३ ३५ | १५ २९ | १७ ४३ | २० ०६ | २२ २६ | ०० ४५ | ३ ०६ | ५ २६ |
| 14 | मा. | ७ ३० | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – |

## दैनिक लग्न सारणी जन.-फर. ( माघ ) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

| जनवरी | माघ | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. |
| 14 | १ | ९ ११ | १० ३६ | ११ ५८ | १३ ३१ | १५ २५ | १७ ३९ | २० ०२ | २२ २२ | ०० ४१ | ३ ०२ | ५ २२ | ७ २६ |
| 15 | २ | ९ ०७ | १० ३२ | ११ ५४ | १३ २७ | १५ २१ | १७ ३५ | १९ ५८ | २२ १८ | ०० ३७ | २ ५८ | ५ १८ | ७ २२ |
| 16 | ३ | ९ ०४ | १० २९ | ११ ५१ | १३ २४ | १५ १८ | १७ ३२ | १९ ५५ | २२ १५ | ०० ३४ | २ ५४ | ५ १४ | ७ १८ |
| 17 | ४ | ९ ०० | १० २५ | ११ ४७ | १३ २० | १५ १४ | १७ २८ | १९ ५१ | २२ ११ | ०० ३० | २ ५० | ५ १० | ७ १४ |
| 18 | ५ | ८ ५६ | १० २१ | ११ ४३ | १३ १६ | १५ १० | १७ २४ | १९ ४७ | २२ ०७ | ०० २६ | २ ४६ | ५ ०६ | ७ १० |
| 19 | ६ | ८ ५२ | १० १७ | ११ ३९ | १३ १२ | १५ ६ | १७ २० | १९ ४३ | २२ ०३ | ०० २२ | २ ४२ | ५ ०३ | ७ ०६ |
| 20 | ७ | ८ ४८ | १० १३ | ११ ३५ | १३ ८ | १५ २ | १७ १६ | १९ ३९ | २१ ५९ | ०० १८ | २ ३८ | ४ ५९ | ७ ०२ |
| 21 | ८ | ८ ४४ | १० ९ | ११ ३१ | १३ ४ | १४ ५८ | १७ १२ | १९ ३५ | २१ ५५ | ०० १४ | २ ३४ | ४ ५५ | ६ ५९ |
| 22 | ९ | ८ ४० | १० ०५ | ११ २७ | १३ ०० | १४ ५४ | १७ ०८ | १९ ३१ | २१ ५१ | ०० १० | २ ३० | ४ ५१ | ६ ५५ |
| 23 | १० | ८ ३६ | १० ०१ | ११ २३ | १२ ५६ | १४ ५० | १७ ४ | १९ २७ | २१ ४७ | ०० ०६ | २ २६ | ४ ४७ | ६ ५१ |
| 24 | ११ | ८ ३२ | ९ ५७ | ११ १९ | १२ ५२ | १४ ४६ | १७ ०० | १९ २४ | २१ ४३ | ०० ०२ | २ २३ | ४ ४३ | ६ ४७ |
| 25 | १२ | ८ २८ | ९ ५३ | ११ १५ | १२ ४८ | १४ ४२ | १६ ५६ | १९ २० | २१ ३९ | २३ ५८ | २ १९ | ४ ३९ | ६ ४३ |
| 26 | १३ | ८ २५ | ९ ५० | ११ १२ | १२ ४५ | १४ ३९ | १६ ५३ | १९ १६ | २१ ३६ | २३ ५५ | २ १५ | ४ ३५ | ६ ३९ |
| 27 | १४ | ८ २१ | ९ ४६ | ११ ०८ | १२ ४१ | १४ ३५ | १६ ४९ | १९ १२ | २१ ३२ | २३ ५१ | २ ११ | ४ ३१ | ६ ३५ |
| 28 | १५ | ८ १७ | ९ ४२ | ११ ०४ | १२ ३७ | १४ ३१ | १६ ४५ | १९ ०८ | २१ २८ | २३ ४७ | २ ०७ | ४ २७ | ६ ३१ |
| 29 | १६ | ८ १३ | ९ ३८ | ११ ०० | १२ ३३ | १४ २७ | १६ ४१ | १९ ०४ | २१ २४ | २३ ४३ | २ ०३ | ४ २३ | ६ २७ |
| 30 | १७ | ८ ०९ | ९ ३४ | १० ५६ | १२ २९ | १४ २३ | १६ ३७ | १९ ०० | २१ २० | २३ ३९ | १ ५९ | ४ २० | ६ २४ |
| 31 | १८ | ८ ५ | ९ ३० | १० ५२ | १२ २५ | १४ १९ | १६ ३३ | १८ ५६ | २१ १६ | २३ ३५ | १ ५५ | ४ १६ | ६ २० |
| फर. | १९ | ८ १ | ९ २६ | १० ४८ | १२ २१ | १४ १५ | १६ २९ | १८ ५२ | २१ १२ | २३ ३१ | १ ५१ | ४ १२ | ६ १६ |
| 2 | २० | ७ ५७ | ९ २२ | १० ४४ | १२ १७ | १४ ११ | १६ २५ | १८ ४८ | २१ ०८ | २३ २७ | १ ४७ | ४ ०८ | ६ १२ |
| 3 | २१ | ७ ५३ | ९ १८ | १० ४० | १२ १३ | १४ ०७ | १६ २१ | १८ ४४ | २१ ०४ | २३ २३ | १ ४३ | ४ ०४ | ६ ८ |
| 4 | २२ | ७ ४९ | ९ १४ | १० ३६ | १२ ०९ | १४ ०३ | १६ १७ | १८ ४० | २१ ०० | २३ १९ | १ ३९ | ४ ०० | ६ ०४ |
| 5 | २३ | ७ ४५ | ९ १० | १० ३२ | १२ ०५ | १३ ५९ | १६ १३ | १८ ३६ | २० ५७ | २३ १५ | १ ३५ | ३ ५६ | ६ ०० |
| 6 | २४ | ७ ४१ | ९ ०६ | १० २८ | १२ ०१ | १३ ५५ | १६ ०९ | १८ ३२ | २० ५३ | २३ ११ | १ ३२ | ३ ५२ | ५ ५६ |
| 7 | २५ | ७ ३७ | ९ ०२ | १० २४ | ११ ५७ | १३ ५१ | १६ ०५ | १८ २८ | २० ४९ | २३ ७ | १ २८ | ३ ४८ | ५ ५२ |
| 8 | २६ | ७ ३३ | ८ ५८ | १० २० | ११ ५३ | १३ ४७ | १६ ०१ | १८ २४ | २० ४५ | २३ ०३ | १ २४ | ३ ४४ | ५ ४८ |
| 9 | २७ | ७ २९ | ८ ५४ | १० १६ | ११ ४९ | १३ ४३ | १५ ५७ | १८ २१ | २० ४१ | २२ ५९ | १ २० | ३ ४० | ५ ४४ |
| 10 | २८ | ७ २५ | ८ ५० | १० १२ | ११ ४५ | १३ ३९ | १५ ५३ | १८ १७ | २० ३७ | २२ ५५ | १ १६ | ३ ३६ | ५ ४० |
| 11 | २९ | ७ २१ | ८ ४६ | १० ०८ | ११ ४१ | १३ ३५ | १५ ४९ | १८ १३ | २० ३३ | २२ ५१ | १ १२ | ३ ३२ | ५ ३६ |
| 12 | फा. | ७ २७ | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – | – – |

सूर्य संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशी प्रविष्टे एवं अंग्रेज़ी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेज़ी तारीखानुसार करें।

## दैनिक लग्न सारणी फर.-मार्च ( फाल्गुन ) भा.स्टैं.टा. समापितकाल, जालन्धर

| फरवरी | फाल्गुन | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. |
| 12 | १ | ८ ४२ | १० ०४ | ११ ३७ | १३ ३१ | १५ ४५ | १८ ०९ | २० २९ | २२ ४७ | १ ०८ | ३ २८ | ५ ३२ | ७ १४ |
| 13 | २ | ८ ३८ | १० ०० | ११ ३३ | १३ २७ | १५ ४१ | १८ ०५ | २० २५ | २२ ४३ | १ ०४ | ३ २४ | ५ २८ | ७ १० |
| 14 | ३ | ८ ३४ | ९ ५६ | ११ २९ | १३ २३ | १५ ३७ | १८ ०१ | २० २१ | २२ ३९ | १ ०० | ३ २० | ५ २४ | ७ ०६ |
| 15 | ४ | ८ ३० | ९ ५२ | ११ २५ | १३ १९ | १५ ३३ | १७ ५७ | २० १७ | २२ ३५ | ० ५६ | ३ १६ | ५ २० | ७ ०२ |
| 16 | ५ | ८ २६ | ९ ४८ | ११ २१ | १३ १५ | १५ २९ | १७ ५३ | २० १३ | २२ ३१ | ० ५२ | ३ १२ | ५ १६ | ६ ५८ |
| 17 | ६ | ८ २२ | ९ ४४ | ११ १७ | १३ ११ | १५ २५ | १७ ४९ | २० ०९ | २२ २७ | ० ४८ | ३ ०८ | ५ १३ | ६ ५४ |
| 18 | ७ | ८ १८ | ९ ४० | ११ १३ | १३ ०७ | १५ २१ | १७ ४५ | २० ०५ | २२ २३ | ० ४४ | ३ ०४ | ५ ०९ | ६ ५० |
| 19 | ८ | ८ १४ | ९ ३६ | ११ ०९ | १३ ०३ | १५ १७ | १७ ४१ | २० ०१ | २२ १९ | ० ४० | ३ ०० | ५ ०५ | ६ ४६ |
| 20 | ९ | ८ ११ | ९ ३३ | ११ ०६ | १२ ५९ | १५ १४ | १७ ३७ | १९ ५७ | २२ १५ | ० ३६ | २ ५६ | ५ ०१ | ६ ४२ |
| 21 | १० | ८ ०७ | ९ २९ | ११ ०२ | १२ ५६ | १५ १० | १७ ३३ | १९ ५३ | २२ ११ | ० ३२ | २ ५३ | ४ ५७ | ६ ३८ |
| 22 | ११ | ८ ०३ | ९ २५ | १० ५८ | १२ ५२ | १५ ०६ | १७ २९ | १९ ४९ | २२ ०७ | ० २८ | २ ४९ | ४ ५३ | ६ ३४ |
| 23 | १२ | ७ ५९ | ९ २१ | १० ५४ | १२ ४८ | १५ ०२ | १७ २५ | १९ ४५ | २२ ०३ | ० २५ | २ ४५ | ४ ४९ | ६ ३० |
| 24 | १३ | ७ ५५ | ९ १७ | १० ५० | १२ ४४ | १४ ५८ | १७ २१ | १९ ४१ | २१ ५९ | ० २१ | २ ४१ | ४ ४५ | ६ २६ |
| 25 | १४ | ७ ५१ | ९ १३ | १० ४६ | १२ ४० | १४ ५४ | १७ १७ | १९ ३७ | २१ ५५ | ० १७ | २ ३७ | ४ ४१ | ६ १२ |
| 26 | १५ | ७ ४७ | ९ ०९ | १० ४२ | १२ ३६ | १४ ५० | १७ १३ | १९ ३३ | २१ ५१ | ० १३ | २ ३३ | ४ ३७ | ६ १८ |
| 27 | १६ | ७ ४३ | ९ ०५ | १० ३८ | १२ ३२ | १४ ४६ | १७ ०९ | १९ २९ | २१ ४७ | ० ०९ | २ २९ | ४ ३३ | ६ १४ |
| 28 | १७ | ७ ३९ | ९ ०१ | १० ३४ | १२ २८ | १४ ४२ | १७ ०५ | १९ २५ | २१ ४३ | ० ०५ | २ २५ | ४ २९ | ६ १० |
| मार्च | १८ | ७ ३५ | ८ ५७ | १० ३० | १२ २४ | १४ ३८ | १७ ०१ | १९ २१ | २१ ३९ | ० ०१ | २ २१ | ४ २५ | ६ ०७ |
| 2 | १९ | ७ ३१ | ८ ५३ | १० २६ | १२ २० | १४ ३४ | १६ ५७ | १९ १७ | २१ ३५ | २३ ५७ | २ १७ | ४ २१ | ६ ०३ |
| 3 | २० | ७ २८ | ८ ५० | १० २३ | १२ १७ | १४ ३१ | १६ ५३ | १९ १३ | २१ ३१ | २३ ५३ | २ १३ | ४ १७ | ५ ५९ |
| 4 | २१ | ७ २४ | ८ ४६ | १० १९ | १२ १३ | १४ २७ | १६ ४९ | १९ ०९ | २१ २७ | २३ ४९ | २ ०९ | ४ १३ | ५ ५५ |
| 5 | २२ | ७ २० | ८ ४२ | १० १५ | १२ ०९ | १४ २३ | १६ ४५ | १९ ०५ | २१ २३ | २३ ४६ | २ ०५ | ४ १० | ५ ५१ |
| 6 | २३ | ७ १६ | ८ ३८ | १० ११ | १२ ०५ | १४ १९ | १६ ४१ | १९ ०१ | २१ १९ | २३ ४२ | २ ०१ | ४ ६ | ५ ४७ |
| 7 | २४ | ७ १२ | ८ ३४ | १० ०७ | १२ ०१ | १४ १५ | १६ ३७ | १८ ५७ | २१ १६ | २३ ३८ | १ ५७ | ४ २ | ५ ४३ |
| 8 | २५ | ७ ०८ | ८ ३० | १० ०३ | ११ ५७ | १४ ११ | १६ ३३ | १८ ५३ | २१ १२ | २३ ३४ | १ ५३ | ३ ५८ | ५ ३९ |
| 9 | २६ | ७ ०४ | ८ २६ | ९ ५९ | ११ ५३ | १४ ०७ | १६ ३० | १८ ५० | २१ ०८ | २३ ३० | १ ५० | ३ ५४ | ५ ३५ |
| 10 | २७ | ७ ०० | ८ २२ | ९ ५५ | ११ ४९ | १४ ०३ | १६ २६ | १८ ४६ | २१ ०४ | २३ २६ | १ ४६ | ३ ५० | ५ ३१ |
| 11 | २८ | ६ ५६ | ८ १८ | ९ ५१ | ११ ४५ | १३ ५९ | १६ २३ | १८ ४२ | २१ ०० | २३ २२ | १ ४२ | ३ ४६ | ५ २७ |
| 12 | २९ | ६ ५२ | ८ १४ | ९ ४७ | ११ ४१ | १३ ५५ | १६ १९ | १८ ३९ | २० ५६ | २३ १९ | १ ३८ | ३ ४२ | ५ २४ |
| 13 | ३० | ६ ४८ | ८ १० | ९ ४३ | ११ ३७ | १३ ५१ | १६ १५ | १८ ३५ | २० ५२ | २३ १५ | १ ३५ | ३ ३९ | ५ २० |
| 14 | चैत्र | ६ ४४ | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — |

## दैनिक लग्न सारणी मार्च-अप्रैल ( चैत्र ) भा.स्टैं.टा. समापितकाल, जालन्धर

| मार्च | चैत्र | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. | घं.मिं. |
| 14 | १ | ८ ०६ | ९ ३९ | ११ ३३ | १३ ४७ | १६ ११ | १८ ३१ | २० ४८ | २३ ११ | १ ३१ | ३ ३५ | ५ १६ | ६ ४० |
| 15 | २ | ८ ०२ | ९ ३५ | ११ २९ | १३ ४३ | १६ ०७ | १८ २७ | २० ४४ | २३ ०७ | १ २७ | ३ ३१ | ५ १२ | ६ ३६ |
| 16 | ३ | ७ ५८ | ९ ३१ | ११ २५ | १३ ३९ | १६ ०३ | १८ २३ | २० ४० | २३ ०३ | १ २३ | ३ २७ | ५ ०८ | ६ ३२ |
| 17 | ४ | ७ ५४ | ९ २७ | ११ २१ | १३ ३५ | १५ ५९ | १८ १९ | २० ३६ | २२ ५९ | १ १९ | ३ २३ | ५ ०४ | ६ २८ |
| 18 | ५ | ७ ५० | ९ २३ | ११ १७ | १३ ३१ | १५ ५५ | १८ १५ | २० ३२ | २२ ५५ | १ १५ | ३ १९ | ५ ०० | ६ २४ |
| 19 | ६ | ७ ४६ | ९ १९ | ११ १३ | १३ २७ | १५ ५१ | १८ ११ | २० २८ | २२ ५१ | १ ११ | ३ १५ | ४ ५६ | ६ २० |
| 20 | ७ | ७ ४२ | ९ १५ | ११ ०९ | १३ २४ | १५ ४७ | १८ ०७ | २० २४ | २२ ४७ | १ ०७ | ३ ११ | ४ ५२ | ६ १६ |
| 21 | ८ | ७ ३८ | ९ ११ | ११ ०५ | १३ २० | १५ ४३ | १८ ०३ | २० २० | २२ ४३ | १ ०३ | ३ ०७ | ४ ४८ | ६ १२ |
| 22 | ९ | ७ ३४ | ९ ०७ | ११ ०१ | १३ १६ | १५ ३९ | १७ ५९ | २० १६ | २२ ३९ | ०० ५९ | ३ ०३ | ४ ४४ | ६ ०८ |
| 23 | १० | ७ ३१ | ९ ०३ | १० ५८ | १३ १२ | १५ ३५ | १७ ५५ | २० १२ | २२ ३५ | ०० ५५ | २ ५९ | ४ ४० | ६ ४ |
| 24 | ११ | ७ २७ | ८ ५९ | १० ५४ | १३ ८ | १५ ३१ | १७ ५१ | २० ०८ | २२ ३१ | ०० ५१ | २ ५५ | ४ ३७ | ६ ०० |
| 25 | १२ | ७ २३ | ८ ५५ | १० ५० | १३ ४ | १५ २७ | १७ ४७ | २० ०४ | २२ २७ | ०० ४७ | २ ५१ | ४ ३३ | ५ ५६ |
| 26 | १३ | ७ १९ | ८ ५१ | १० ४६ | १३ ० | १५ २३ | १७ ४३ | २० ०१ | २२ २३ | ०० ४३ | २ ४७ | ४ २९ | ५ ५२ |
| 27 | १४ | ७ १५ | ८ ४८ | १० ४२ | १२ ५६ | १५ १९ | १७ ३९ | १९ ५७ | २२ १९ | ०० ३९ | २ ४३ | ४ २५ | ५ ४८ |
| 28 | १५ | ७ ११ | ८ ४४ | १० ३८ | १२ ५२ | १५ १५ | १७ ३५ | १९ ५३ | २२ १५ | ०० ३५ | २ ४० | ४ २१ | ५ ४४ |
| 29 | १६ | ७ ०७ | ८ ४० | १० ३४ | १२ ४८ | १५ ११ | १७ ३१ | १९ ४९ | २२ ११ | ०० ३१ | २ ३६ | ४ १७ | ५ ४१ |
| 30 | १७ | ७ ०३ | ८ ३६ | १० ३० | १२ ४५ | १५ ०७ | १७ २७ | १९ ४५ | २२ ७ | ०० २७ | २ ३२ | ४ १३ | ५ ३७ |
| 31 | १८ | ६ ५९ | ८ ३२ | १० २६ | १२ ४१ | १५ ०३ | १७ २३ | १९ ४१ | २२ ०३ | ०० २३ | २ २८ | ४ ०९ | ५ ३३ |
| अप्रै. | १९ | ६ ५५ | ८ २८ | १० २२ | १२ ३७ | १४ ५९ | १७ १९ | १९ ३७ | २१ ५९ | ०० १९ | २ २४ | ४ ०५ | ५ २९ |
| 2 | २० | ६ ५१ | ८ २४ | १० १८ | १२ ३३ | १४ ५५ | १७ १५ | १९ ३३ | २१ ५५ | ०० १५ | २ २० | ४ ०१ | ५ २५ |
| 3 | २१ | ६ ४७ | ८ २० | १० १४ | १२ २९ | १४ ५१ | १७ ११ | १९ २९ | २१ ५१ | ०० ११ | २ १६ | ३ ५७ | ५ २१ |
| 4 | २२ | ६ ४३ | ८ १६ | १० १० | १२ २५ | १४ ४७ | १७ ०७ | १९ २६ | २१ ४७ | ०० ०७ | २ १२ | ३ ५३ | ५ १७ |
| 5 | २३ | ६ ३९ | ८ १२ | १० ०६ | १२ २१ | १४ ४३ | १७ ०३ | १९ २२ | २१ ४४ | ०० ०४ | २ ०८ | ३ ४९ | ५ १३ |
| 6 | २४ | ६ ३६ | ८ ०९ | १० ०२ | १२ १७ | १४ ३९ | १६ ५९ | १९ १८ | २१ ४० | २४ ०० | २ ०४ | ३ ४५ | ५ ०९ |
| 7 | २५ | ६ ३२ | ८ ०५ | ९ ५९ | १२ १३ | १४ ३५ | १६ ५६ | १९ १४ | २१ ३६ | २३ ५६ | २ ०० | ३ ४१ | ५ ०५ |
| 8 | २६ | ६ २८ | ८ ०१ | ९ ५५ | १२ ०९ | १४ ३१ | १६ ५२ | १९ १० | २१ ३२ | २३ ५२ | १ ५६ | ३ ३७ | ५ ०१ |
| 9 | २७ | ६ २४ | ७ ५७ | ९ ५१ | १२ ०५ | १४ २७ | १६ ४८ | १९ ०६ | २१ २८ | २३ ४८ | १ ५२ | ३ ३३ | ४ ५८ |
| 10 | २८ | ६ २० | ७ ५३ | ९ ४७ | १२ ०१ | १४ २४ | १६ ४४ | १९ ०२ | २१ २४ | २३ ४४ | १ ४८ | ३ २९ | ४ ५४ |
| 11 | २९ | ६ १६ | ७ ४९ | ९ ४३ | ११ ५७ | १४ २० | १६ ४० | १८ ५८ | २१ २० | २३ ४० | १ ४४ | ३ २५ | ४ ५० |
| 12 | ३० | ६ १२ | ७ ४५ | ९ ३९ | ११ ५३ | १४ १६ | १६ ३६ | १८ ५४ | २१ १६ | २३ ३६ | १ ४१ | ३ २१ | ४ ४६ |
| 13 | वै. | ६ ०८ | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — | — — |

# भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश 31°–19′ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (–) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। **उदाहरणस्वरूप**–मान लो आपने 16 जुलाई, 2024 ई. को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें 16 जुलाई को कन्या लग्न १२।४१ पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में **हिसार** के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें –२ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें **१२।३९ (घं. मिं.)** पर **कन्या लग्न** समाप्ति काल प्राप्त हुआ। **कन्या लग्न** का समाप्ति काल ही तुला लग्न का **प्रारम्भकाल** होगा। **नोट**–नीचे **लग्न संस्कार तालिका** में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। पं. विवेक शर्मा.

| नाम शहर | मेष मिन्ट | वृष मिन्ट | मिथु. मिन्ट | कर्क मिन्ट | सिंह मिन्ट | कन्या मिन्ट | तुला मिन्ट | वृश्चि. मिन्ट | धनु मिन्ट | मकर मिन्ट | कुम्भ मिन्ट | मीन मिन्ट |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अमृतसर | +२ | +२ | +२ | +२ | +३ | +२ | +३ | +३ | +३ | +३ | +२ | +२ |
| अम्बाला | –५ | –५ | –५ | –३ | –३ | –६ | –५ | –५ | –४ | –५ | –५ | –५ |
| अजमेर | +१२ | +१२ | +१३ | +१० | +६ | +४ | –१ | –३ | –४ | –१ | +६ | +१० |
| अबोहर | +५ | +५ | +५ | +६ | +५ | +५ | +६ | +६ | +६ | +६ | +५ | +५ |
| अहमदाबाद | +२६ | +३० | +३० | +२५ | +१७ | +७ | –१ | –५ | –४ | +२ | +११ | +१८ |
| अलाहाबाद | –१५ | –१२ | –१३ | –१५ | –२१ | –२९ | –३४ | –३७ | –३६ | –३२ | –२६ | –२० |
| अलीगढ़ | –४ | –३ | –४ | –६ | –१० | –१४ | –१७ | –१८ | –१८ | –१५ | –१२ | –७ |
| अयोध्या | –१८ | –१८ | –१५ | –१९ | –२१ | –२५ | –२८ | –३० | –२८ | –२७ | –२४ | –१६ |
| अलवर | +२ | +३ | +३ | +० | +१ | –४ | –६ | –७ | –७ | –४ | +१ | +४ |
| अल्मोड़ा (उ.खण्ड) | –१५ | –१५ | –१५ | –१६ | –१७ | –१७ | –१९ | –१९ | –१९ | –१८ | –१८ | –१६ |
| आगरा | –४ | –२ | –३ | –६ | –१० | –१४ | –१७ | –१९ | –१९ | –१५ | –१२ | –७ |
| अगरतला | –५० | –४७ | –४६ | –५३ | –६० | –६७ | –७५ | –७८ | –७६ | –७३ | –६४ | –५३ |
| अल्मोड़ा | –१५ | –१५ | –१५ | –१६ | –१७ | –१७ | –१९ | –१९ | –१९ | –१८ | –१८ | –१६ |
| इन्दौर | +१३ | +१७ | +१५ | +१० | –१ | –९ | –१६ | –२१ | –१९ | –१२ | –३ | +५ |
| ऊना (हि. प्र.) | –३ | –३ | –३ | –३ | –२ | –२ | –२ | –२ | –२ | –२ | –२ | –३ |
| उधमपुर | –२ | –२ | –२ | +११ | +३ | +४ | +७ | +७ | +७ | +६ | +५ | +२ |
| उज्जैन | +७ | +१६ | +१४ | +८ | +० | –७ | –१४ | –१९ | –१७ | –१० | –२ | +६ |
| उदयपुर | +१९ | +२१ | +२० | +१५ | +७ | +२ | –४ | –८ | –६ | –१ | +६ | +१३ |
| उत्तरकाशी | –११ | –११ | –११ | –११ | –१२ | –१२ | –१२ | –१२ | –१२ | –१२ | –१२ | –११ |
| करनाल | –५ | –५ | –५ | –५ | –५ | –६ | –६ | –७ | –७ | –५ | –४ | –३ |
| कालका | –५ | –५ | –५ | –४ | –४ | –५ | –६ | –६ | –७ | –७ | –४ | –३ |
| कुरुक्षेत्र | –४ | –३ | –३ | –४ | –५ | –६ | –६ | –७ | –७ | –५ | –३ | –३ |
| करतारपुर | +१ | +१ | +० | +० | –१ | –१ | +१ | –० | –० | –० | –० | –१ |
| कोटखाई | –७ | –७ | –७ | –७ | –७ | –८ | –७ | –७ | –७ | –६ | –६ | –७ |
| कोटा (राज.) | +९ | +११ | +१० | +५ | –१ | –६ | –११ | –१४ | –१३ | –८ | –२ | +४ |
| कपूरथला | +१ | +१ | +० | –० | –० | –१ | +० | –० | –० | –० | –० | –१ |
| काठमण्डू | –३२ | –३१ | –३१ | –३० | –३३ | –३८ | –४० | –४२ | –४२ | –४० | –३६ | –३३ |
| कोलकत्ता | –३७ | –३२ | –३५ | –४० | –४९ | –५८ | –६४ | –६९ | –६८ | –६१ | –५३ | –४४ |
| कानपुर | –११ | –१० | –१० | –१४ | –१८ | –२२ | –२८ | –३० | –२९ | –२५ | –२१ | –१६ |
| कांगड़ा | –५ | –५ | –५ | –५ | –५ | –५ | –५ | –५ | –४ | –४ | –४ | –४ |

| नाम शहर | मेष मिन्ट | वृष मिन्ट | मिथु. मिन्ट | कर्क मिन्ट | सिंह मिन्ट | कन्या मिन्ट | तुला मिन्ट | वृश्चि. मिन्ट | धनु मिन्ट | मकर मिन्ट | कुम्भ मिन्ट | मीन मिन्ट |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुल्लू | –७ | –७ | –७ | –६ | –६ | –६ | –५ | –४ | –४ | –४ | –५ | –५ |
| कठुआ | –२ | –२ | –२ | –१ | –० | +१ | +२ | +२ | +२ | +२ | +२ | +१ |
| कटड़ा | +३ | +३ | +२ | +४ | +६ | +७ | +७ | +७ | +७ | +६ | +६ | +३ |
| किश्तवाड़ | –१ | –१ | –१ | –० | +१ | +१ | +१ | +२ | +२ | +२ | +१ | +१ |
| खन्ना (पंजा.) | –२ | –३ | –३ | –२ | –२ | –३ | –३ | –३ | –३ | –२ | –२ | –३ |
| ग्वालियर | –२ | +१ | –१ | –५ | –१० | –१५ | –१९ | –२२ | –२१ | –१७ | –१२ | –७ |
| गुरदासपुर | –१ | –१ | –१ | +० | +१ | +० | +१ | +१ | +१ | +१ | +१ | +० |
| गोरखपुर | –२३ | –२१ | –२२ | –२४ | –२७ | –३२ | –३५ | –३७ | –३६ | –३२ | –२७ | –२४ |
| गुड़गांव | –१ | –१ | –१ | –३ | –३ | –७ | –१० | –११ | –११ | –९ | –६ | –४ |
| गुवाहाटी | –५५ | –४८ | –५३ | –५५ | –६१ | –६८ | –७२ | –७५ | –७३ | –६९ | –६४ | –६० |
| गाज़ियाबाद | –२ | –२ | –३ | –५ | –८ | –१० | –१२ | –१३ | –१३ | –११ | –०९ | –६ |
| गंगानगर | +६ | +६ | +६ | +७ | +७ | +६ | +६ | +६ | +६ | +७ | +७ | +६ |
| गया (बिहार) | –२६ | –१८ | –२३ | –२७ | –३३ | –४२ | –४७ | –५१ | –४१ | –४४ | –३७ | –३२ |
| चण्डीगढ़ | –५ | –५ | –५ | –५ | –६ | –६ | –६ | –६ | –६ | –६ | –६ | –५ |
| चिन्तपूर्णी | –२ | –१ | –२ | –२ | –३ | –३ | –३ | –२ | –२ | –२ | –२ | –१ |
| चम्बा | –६ | –६ | –६ | –५ | –४ | –२ | +१ | +२ | +१ | +० | +३ | –४ |
| जयपुर | +७ | +८ | +७ | +३ | +२ | –३ | –७ | –९ | –९ | –७ | –२ | +३ |
| ज्वालामुखी | –५ | –५ | –६ | –५ | –५ | –५ | –५ | –५ | –४ | –४ | –४ | –४ |
| जम्मू | –१ | –२ | –१ | –१ | +१ | +४ | +६ | +७ | +६ | +५ | +२ | +१ |
| जोधपुर | +१९ | +२१ | +२० | +१५ | +१० | +५ | +१ | –२ | –१ | +४ | +९ | +१३ |
| जीन्द | +० | +२ | +१ | –१ | –३ | –५ | –६ | –७ | –७ | –५ | –४ | –१ |
| जैसलमेर | +२६ | +२८ | +२७ | +२३ | +१८ | +१४ | +१० | +९ | +१० | +१३ | +१७ | +२२ |
| झाँसी | –२ | +१ | +० | –६ | –११ | –१७ | –२२ | –२५ | –२३ | –१८ | –१३ | –७ |
| जगन्नाथपुरी | –२२ | –१६ | –१३ | –२६ | –३७ | –४९ | –५९ | –६४ | –६३ | –५५ | –४४ | –३२ |
| दिल्ली | –२ | –१ | –१ | –४ | –४ | –८ | –११ | –१२ | –१२ | –१० | –७ | –५ |
| दुर्ग (छ्त्तीसगढ़) | –६ | –० | –२ | –१० | –१९ | –२७ | –३७ | –४२ | –४२ | –३१ | –२१ | –१४ |
| देहरादून | –१० | –१० | –९ | –१० | –११ | –११ | –१२ | –१२ | –१२ | –११ | –११ | –१० |
| धर्मशाला | –५ | –५ | –६ | –५ | –५ | –५ | –५ | –५ | –४ | –४ | –४ | –४ |

| नाम शहर | मेष मिन्ट | वृष मिन्ट | मिथु. मिन्ट | कर्क मिन्ट | सिंह मिन्ट | कन्या मिन्ट | तुला मिन्ट | वृश्चि. मिन्ट | धनु मिन्ट | मकर मिन्ट | कुम्भ मिन्ट | मीन मिन्ट |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाहन(हि.प्र.) | -६ | -६ | -६ | -५ | -५ | -६ | -६ | -७ | -७ | -५ | -५ | -६ |
| नंगल (पंजा.) | -३ | -३ | -३ | -४ | -४ | -४ | -४ | -४ | -३ | -३ | -३ | -३ |
| नैनीताल | -१३ | -१२ | -१३ | -१४ | -१६ | -१७ | -१८ | -२० | -१९ | -१७ | -१७ | -१४ |
| नवलगढ़ | +७ | +९ | +९ | +८ | +६ | +३ | +१ | +२ | -२ | -१ | +४ | +४ |
| नवांशहर | -२ | -२ | -२ | -२ | -३ | -३ | -२ | -२ | -३ | -३ | -२ | -२ |
| नागपुर | +३ | +७ | +५ | +४ | -१४ | -२३ | -३२ | -३५ | -३३ | -२७ | -७ | -६ |
| नदौन(हि.प्र.) | -३ | -३ | -३ | -४ | -४ | -४ | -४ | -३ | -३ | -३ | -३ | -३ |
| नाभा (पंजा.) | -२ | -२ | -२ | -२ | -२ | -२ | -३ | -३ | -२ | -२ | -२ | -२ |
| पटियाला | -३ | -३ | -३ | -४ | -३ | -३ | -५ | -५ | -४ | -३ | -३ | -३ |
| पानीपत | -६ | -६ | -६ | -६ | -६ | -७ | -७ | -७ | -६ | -६ | -६ | -५ |
| पठानकोट | -४ | -३ | -३ | -२ | -२ | -२ | -२ | -२ | -१ | -१ | -१ | -१ |
| पुंछ | -१ | -२ | -१ | +१ | +४ | +८ | +१२ | +१४ | +१२ | +९ | +६ | +३ |
| प्रयाग | -१६ | -१४ | -१५ | -२० | -२४ | -३० | -३५ | -३७ | -३७ | -३१ | -२७ | -२१ |
| पूना (महा.) | +२८ | +३५ | +३७ | +२४ | +११ | -२ | -१३ | -१९ | -१७ | -९ | +३ | +१७ |
| पंचकूला | -५ | -५ | -५ | -४ | -४ | -६ | -६ | -६ | -५ | -५ | -५ | -५ |
| पटना | -२९ | -२६ | -२३ | -३० | -३५ | -४२ | -४७ | -४९ | -४९ | -४६ | -४० | -३३ |
| पालमपुर | -६ | -६ | -६ | -५ | -५ | -५ | -६ | -६ | -५ | -५ | -५ | -५ |
| फरीदकोट | +३ | +४ | +४ | +३ | +३ | +२ | +४ | +३ | +३ | +३ | +२ | +२ |
| फगवाड़ा | -१ | -१ | -१ | -१ | -२ | -२ | -२ | -१ | -१ | -१ | -१ | -१ |
| फाजिल्का | +५ | +५ | +६ | +६ | +५ | +५ | +६ | +६ | +६ | +६ | +५ | +५ |
| फिरोज़पुर | +४ | +४ | +५ | +४ | +३ | +३ | +४ | +४ | +४ | +४ | +३ | +३ |
| फरीदाबाद | -३ | -३ | -२ | -५ | -८ | -९ | -१२ | -१३ | -१३ | -११ | -१० | -६ |
| बटाला | +१ | +१ | +१ | +२ | +१ | +१ | +२ | +२ | +२ | +२ | +१ | +१ |
| वाराणसी | -२० | -१८ | -१९ | -२३ | -३० | -३४ | -३९ | -४२ | -४१ | -३७ | -३१ | -२५ |
| बिलासपुर | -५ | -५ | -५ | -४ | -४ | -५ | -४ | -४ | -४ | -३ | -३ | -४ |
| बंगलौर | +२१ | +२९ | +२७ | +१३ | -१ | -२१ | -३६ | -४४ | -४१ | -२८ | -११ | +६ |
| बरेली | -११ | -११ | -११ | -१३ | -१६ | -१८ | -२० | -२१ | -२१ | -१९ | -१८ | -१४ |
| बीकानेर | +१३ | +१५ | +१५ | +१४ | +१३ | +९ | +८ | +६ | +६ | +८ | +११ | +१४ |
| बड़ौदा | +२६ | +३० | +२९ | +२३ | +१६ | +७ | +२ | -५ | -५ | +१ | +११ | +११ |
| बुलन्दशहर | -५ | -५ | -५ | -७ | -९ | -१२ | -१४ | -१५ | -१५ | -१३ | -१२ | -८ |
| बरनाला | -१ | -१ | -२ | -१ | -१ | -१ | -१ | -१ | -० | -० | -० | -० |
| विशाखापटनम | -९ | -१ | +१ | -१३ | -२६ | -४० | -५२ | -५८ | -५६ | -४७ | -३४ | -२० |
| भटिण्डा | +३ | +३ | +३ | +३ | +३ | +२ | +४ | +३ | +३ | +३ | +२ | +२ |
| भुवनेश्वर | -२३ | -१८ | -२० | -२८ | -३६ | -४९ | -५८ | -६३ | -६२ | -५४ | -४३ | -३२ |
| भरतपुर | -२ | +० | +० | -५ | -८ | -१२ | -१५ | -१७ | -१७ | -१२ | -१० | -५ |
| भोपाल | +६ | +१० | +७ | +१ | -६ | -१३ | -२० | -२६ | -२४ | -१७ | -९ | -१ |
| मेरठ(उ.प्र.) | -६ | -५ | -६ | -७ | -९ | -११ | -१२ | -१२ | -१२ | -१० | -९ | -७ |

| नाम शहर | मेष मिन्ट | वृष मिन्ट | मिथु. मिन्ट | कर्क मिन्ट | सिंह मिन्ट | कन्या मिन्ट | तुला मिन्ट | वृश्चि. मिन्ट | धनु मिन्ट | मकर मिन्ट | कुम्भ मिन्ट | मीन मिन्ट |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुज़फ्फरनगर | -६ | -५ | -६ | -७ | -९ | -११ | -१२ | -१३ | -१३ | -११ | -१० | -७ |
| मुरादाबाद | -१० | -९ | -१० | -११ | -१४ | -१५ | -१६ | -१८ | -१८ | -१६ | -१३ | -१२ |
| मण्डी(हि.प्र.) | -७ | -७ | -७ | -७ | -७ | -६ | -४ | -४ | -४ | -६ | -६ | -६ |
| मोगा | +१ | +१ | +१ | +२ | +१ | +१ | +२ | +२ | +२ | +२ | +१ | +१ |
| मथुरा | -२ | -१ | -२ | -४ | -८ | -१२ | -१५ | -१६ | -१६ | -१३ | -१० | -५ |
| मद्रास | +१० | +१८ | +१६ | +१ | -१३ | -३१ | -४६ | -५५ | -५२ | -४० | -२३ | -०५ |
| मैसूर | +२६ | +३६ | +३७ | +१९ | +२ | -१७ | -३३ | -४१ | -३९ | -२६ | -९ | +१० |
| मुक्तसर | +४ | +४ | +३ | +४ | +४ | +३ | +५ | +४ | +४ | +४ | +३ | +३ |
| मलेरकोटला | -१ | -१ | -१ | -१ | -१ | -२ | +० | -१ | -१ | -१ | -२ | -२ |
| मुम्बई | +३१ | +३७ | +३५ | +२५ | +१७ | +३ | -८ | -१४ | -१२ | -३ | +९ | +२१ |
| रोपड़ | -४ | -३ | -३ | -४ | -३ | -४ | -४ | -४ | -४ | -४ | -४ | -३ |
| राँची | -२५ | -२१ | -२३ | -२८ | -३६ | -४५ | -५१ | -५७ | -५५ | -४८ | -३९ | -३१ |
| रायपुर (छत्ती.) | -८ | -२ | -४ | -१२ | -२१ | -२९ | -३९ | -४४ | -४४ | -३४ | -२३ | -१६ |
| रोहतक | -१ | +१ | +१ | -२ | -२ | -६ | -९ | -१० | -१० | -८ | -५ | -३ |
| रूड़की | -७ | -७ | -७ | -८ | -९ | -१० | -११ | -११ | -११ | -१० | -१० | -८ |
| लुधियाना | -२ | -२ | -१ | -२ | -१ | -२ | -२ | -२ | -२ | -१ | -१ | -२ |
| लखनऊ | -१४ | -१२ | -१४ | -१६ | -२१ | -२४ | -२९ | -३० | -३० | -२६ | -२३ | -१८ |
| शिलांग | -५५ | -४९ | -५२ | -५५ | -६१ | -६९ | -७४ | -७६ | -७५ | -७१ | -६५ | -६१ |
| श्रीनगर | -३ | -३ | -३ | -१ | +२ | +८ | +११ | +१२ | +११ | +७ | +४ | +१ |
| शिमला | -६ | -६ | -६ | -६ | -७ | -७ | -७ | -७ | -७ | -७ | -७ | -६ |
| सोलन | -६ | -५ | -६ | -६ | -६ | -६ | -५ | -५ | -६ | -६ | -६ | -६ |
| सोनीपत | -२ | -२ | -२ | -२ | -३ | -७ | -१० | -११ | -११ | -९ | -७ | -५ |
| सहारनपुर | -६ | -६ | -५ | -७ | -८ | -९ | -१० | -१० | -१० | -९ | -९ | -७ |
| सागर(म.प्र.) | -१ | -२ | +० | -५ | -१३ | -१८ | -२५ | -२९ | -२८ | -२२ | -१५ | -७ |
| सुन्दरनगर | -६ | -६ | -६ | -५ | -४ | -४ | -४ | -४ | -४ | -४ | -४ | -५ |
| सूरत | +२८ | +३३ | +३१ | +२४ | +१५ | +४ | -४ | -९ | -८ | +१ | +१२ | +२१ |
| शहडोल(म.प्र.) | -१० | -७ | -९ | -१५ | -२३ | -३० | -३७ | -४२ | -४० | -३२ | -२५ | -१६ |
| शाहपुर | -४ | -४ | -५ | -५ | -४ | -४ | -४ | -४ | -३ | -३ | -३ | -३ |
| हरिद्वार | -८ | -८ | -८ | -९ | -९ | -१२ | -१३ | -१३ | -१३ | -१२ | -१२ | -१० |
| हैदराबाद | +११ | +१८ | +१५ | +४ | -७ | -२१ | -३३ | -३९ | -३७ | -२८ | -१५ | -१ |
| होशियारपुर | -३ | -४ | -३ | -३ | -२ | -२ | -१ | -१ | -१ | -१ | -२ | -३ |
| हमीरपुर(हि.प्र.) | -५ | -५ | -४ | -४ | -३ | -३ | -२ | -२ | -२ | -२ | -२ | -४ |
| हाँसी | +२ | +२ | +३ | +२ | +० | -४ | -५ | -७ | -५ | -४ | -१ | +२ |
| हिसार | +२ | +३ | +२ | +१ | +० | -२ | -३ | -४ | -४ | -२ | -२ | +१ |

# श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली को **सिद्ध यन्त्र 32 ( बत्तीसा )** के आधार पर तैयार किया गया है। निम्नांकित किसी भी इच्छित प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इसे प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रश्नावली में मुख्य-मुख्य बत्तीस प्रश्न दिये गये हैं। कोई भी पाठक साधारण (धन अथवा ऋण) गणित द्वारा अपने प्रश्न का उत्तर पा सकता है। व्यर्थ में किंवा सत्यता की परख करने से प्रश्नावली का उत्तर सही नहीं आयेगा। तीन प्रश्न (एक बार में) से अधिक प्रश्नों के उत्तर भी संदेहपूर्ण होंगे, अत: उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं परमावश्यक है।

प्रश्नावली से उत्तर जानने की विधि यह है कि दिये **बत्तीसा यन्त्र** के किसी भी कोष्ठक में प्रच्छक (प्रश्न पूछने वाला) अपने दाहिने (दक्षिण) हाथ की **मध्यमा अंगुली** रखने से पूर्व **"ॐ नमो भैरवाय"** मन्त्र को तीन बार जप ले। आगे प्रश्न संख्या दोनों का योग कर ले तथा इस योग में से 1 घटा दें, शेष जो संख्या बचे उसे संख्या वाले प्रश्न के सामने देवता का नाम देख लें। जिस देवता का नाम लिखा है, उसके नीचे यन्त्र कोष्ठक संख्या के आगे उत्तर देख लें–

मान लो कोई प्रश्न पूछना चाहता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं तो यह प्रश्न संख्या हुई 12 (बारह) यन्त्र के कोष्ठक की संख्या है 15 (पन्द्रह) दोनों का योग आया 27 (सत्ताईस)। इस में से 1 (एक) घटाया तो शेष रहे 26 (छब्बीस) 26वीं संख्या का देवता है केतु। अत: केतु के नीचे 15वीं संख्या का उत्तर आया अर्थात् विवाह उपाय से होगा।

जब प्रश्न संख्या और यंत्र कोष्ठक संख्या का योग एक घटाने से भी 32 से अधिक आये तो इसमें से 32 घटा कर तब उपर्युक्त से विधि उत्तर देखना चाहिये जैसे प्रच्छक का प्रश्न है मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी। प्रश्न संख्या है 29, यन्त्र के कोष्ठक (जिसमें अंगुली रखी है) की संख्या है 15–इन का योग किया तो आया 44. इसमें 1 ऋण किया शेष रहा 43, वह बत्तीस की संख्या से अधिक है। अत: इसमें से 32 की संख्या घटाई शेष रहे 11. अब पूर्व विधि से 11 की संख्या का देवता देखा तो ज्ञात हुआ "इन्द्र" और देवता इन्द्र की 11वीं संख्या का उत्तर मिला **"पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी"** इसी प्रकार सभी प्रश्नों के उत्तर ज्ञात कर लें।

## 32 बत्तीसा यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| 8 | 15 | 2 | 7 |
| 6 | 3 | 12 | 11 |
| 14 | 9 | 8 | 1 |
| 4 | 5 | 10 | 13 |

| प्रश्न सं० | प्रश्न | अधिपति देवता |
|---|---|---|
| 1. | मुझे सन्तान सुख मिलेगा या नहीं ? | श्री भैरव |
| 2. | मेरी मुकद्दमे में हार होगी अथवा विजय ? | शिव |
| 3. | मेरा भाग्योदय कब होगा ? | कृष्ण |
| 4. | मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं ? | राम |
| 5. | मुझे उन्नति के अवसर मिलेंगे या नहीं ? | सीता |
| 6. | खेती से मुझे लाभ मिलेगा या हानि ? | राधा |
| 7. | मैं अपना मकान बना सकूंगा या नहीं ? | लक्ष्मी |
| 8. | क्या मुझे परीक्षा में सफलता मिलेगी ? | विष्णु |
| 9. | मेरे लिए विद्या प्राप्ति के योग हैं अथवा नहीं ? | नारायण |
| 10. | मैं इस जीवन में सफलता पा सकूंगा या नहीं ? | दामोदर |
| 11. | क्या मुझे भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव है ? | इन्द्र |
| 12. | मेरा विवाह होगा अथवा नहीं ? | गणेश |
| 13. | अमुक रोगी रोग मुक्त होगा या नहीं ? | अग्नि |
| 14. | मेरे स्वप्न का फल कैसा है ? | वायु |
| 15. | क्या मेरा स्थानान्तरण हो जायेगा ? | वरुण |
| 16. | मुझे व्यापार में लाभ मिलेगा अथवा हानि ? | यम |
| 17. | क्या मेरी चिन्ता दूर हो जायेगी ? | कुबेर |
| 18. | मित्र के साथ मित्रता कैसी रहेगी ? | सूर्य |
| 19. | मुझे कर्ज मिलेगा या नहीं ? | चन्द्र |
| 20. | मेरी खोई हुई वस्तु मिलेगी अथवा नहीं ? | मंगल |
| 21. | प्रवासी (परदेश गया हुआ) कब लौटेगा ? | बुध |
| 22. | क्या मुझे यात्रा में लाभ मिलेगा ? | बृहस्पति |
| 23. | मेरी भाईयों से कैसी निभेगी ? | शुक्र |
| 24. | क्या मैं कुआं बनवा सकूंगा या नहीं ? | शनि |
| 25. | मेरे लिए यह वर्ष कैसा है ? | राहु |
| 26. | मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा ? | केतु |
| 27. | अमुक स्त्री को पुत्रोत्पन्न होगा या पुत्री ? | मित्र |
| 28. | क्या मेरी इच्छा पूर्ण होगी ? | पृथ्वी |
| 29. | मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी ? | काल |
| 30. | क्या मेरा सम्बन्धी धोखा देगा ? | शेष |
| 31. | प्रेमिका/प्रेमी का प्रेम शुद्ध है या नहीं ? | यक्ष |
| 32. | मैं विदेश यात्रा करूंगा अथवा नहीं ? | तक्षक |

### ( 1 ) श्री भैरव

1. सन्तान सुख मिलेगा।
2. विदेश यात्रा में विघ्न पड़ेगा तथा लाभदायक नहीं रहेगी।
3. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम पवित्र है।
4. सम्बन्धी धोखा दे सकता है सावधान रहे।
5. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
6. इच्छा पूरी होने में अभी समय है।
7. पुत्रोत्तपत्ति का हर्ष होगा।
8. यह दिन शुभ नहीं है।
9. वर्तमान वर्ष मध्यम रहेगा।
10. कुआं अभी बनवाना सम्भव नहीं है।
11. भाईयों से प्रेम बना रहेगा।
12. यात्रा में हानि होने की आशंका अधिक है।
13. प्रवासी शीघ्र लौटेगा।
14. खोई वस्तु शीघ्र मिल जायेगी।
15. कर्ज मिलने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

### ( 2 ) शिव

1. मुकद्दमे में विजय होगी।
2. सन्तान सुख गृह देवता की पूजा से मिलेगा।
3. विदेश यात्रा की इच्छा पूर्ण हो जायेगी।
4. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम नहीं करता/करती।

5. सम्बन्धी धोखा देगा, सावधान !
6. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
7. अभी इच्छा पूरी नहीं होगी।
8. कन्या सन्तान उत्पन्न होगी।
9. आज का दिन शुभ रहेगा।
10. यह वर्ष उत्तम नहीं है।
11. कुआं बनवाने की इच्छा पूर्ण होगी।
12. भाईयों से तनाव एवं अनबन रहेगी।
13. यात्रा लाभकारी रहेगी।
14. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का इच्छुक नहीं है।
15. नष्ट वस्तु (खोई) नहीं मिलेगी।

### (3) कृष्ण

1. आप का भाग्योदय शीघ्र होगा।
2. मुकद्दमा जीतने में संदेह है।
3. सन्तान सुख मिलेगा किन्तु उपाय से।
4. विदेश यात्रा की इच्छा पूरी नहीं होगी।
5. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
6. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
7. पत्नी उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
8. निकट भविष्य में इच्छा पूर्ण नहीं होगी।
9. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
10. आज का दिन मानसिक परेशानी वाला रहेगा।
11. यह वर्ष अत्यधिक लाभप्रद रहेगा।
12. कुआं नहीं बनवा सकोगे।
13. भाईयों से तकरार होने का भय है।
14. यात्रा में लाभ मिलना कठिन है।
15. चिन्ता न करें, प्रवासी कुछ दिनों में लौट आयेगा।

### (4) राम

1. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
2. भाग्योदय होने में अभी देर है।
3. यह मुकद्दमा आप हार जायेंगे अथवा हानि अधिक होगी।
4. सन्तान प्राप्ति की इच्छा पूरी हो जायेगी।
5. विदेश यात्रा होने में संदेह है। कोई धोखा दे सकता है।
6. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम करता/करती है।
7. सम्बन्धी धोखा दे सकता है सावधान रहें।
8. पत्नी के स्वभाव से मेल खा जायेगा।
9. इच्छा अवश्य पूरी होगी।
10. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
11. यह दिन शुभ ही बीतेगा।
12. यह वर्ष कष्टमय बीतेगा।
13. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी हो जायेगी।
14. भाईयों से अनबन रहेगी।
15. यात्रा करना लाभप्रद रहेगा।

### (5) सीता

1. उन्नति (प्रमोशन) मिलने का समय आ गया है।
2. नौकरी मिल जायेगी किन्तु अत्याधिक प्रयत्न से।
3. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
4. चिन्ता न करें, मुकद्दमा जीत जाओगे।
5. सन्तान सुख के लिये पुत्रेष्टि यज्ञ करायें।
6. विदेश यात्रा पर अवश्य जाओगे।
7. प्रेमी/प्रेमिका का दिखावटी प्रेम है।
8. सम्बन्धी गुप्त चाल चलेगा सावधानी से रहें।
9. पत्नी उत्तम स्वभाव वाली मिलेगी।
10. इच्छा पूरी हो इसमें संदेह है।
11. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
12. आज का दिन विशेष शुभ नहीं है।
13. यह वर्ष आपके लिए चुनौतियों से भरा होगा।
14. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी होने में देरी है।
15. भाईयों से मेल मिलाप रहेगा।

### (6) राधा

1. खेती से लाभ मिलेगा।
2. उन्नति (प्रमोशन) में अभी देरी है, धैर्य रखें।
3. नौकरी मिलने में अत्याधिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा।
4. भाग्योदय शीघ्र होगा।
5. मुकद्दमे में जीत हो, ऐसी सम्भावना कम ही है।
6. सन्तान सुख अभी देर से मिलेगा।
7. विदेश यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
8. प्रेमी/प्रेमिका मात्र प्रेम का दिखावा करता/करती है।
9. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
10. पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
11. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
12. पुत्र सन्तान जन्म लेगी।
13. यह दिन उत्तम प्रकार से व्यतीत होगा।
14. यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा।
15. कुआं बन जायेगा।

### (7) लक्ष्मी

1. स्वयं के मकान की इच्छा पूरी हो जायेगी।
2. खेती से लाभ कम मिलेगा।
3. प्रमोशन हो जाये ऐसा सम्भव नहीं दिखता।
4. नौकरी अथक प्रयत्न करने पर मिलेगी।
5. निकट भविष्य में ही भाग्योदय होने वाला है।
6. मुकद्दमे में जीतना कठिन है।
7. सन्तान सुख मिल जायेगा।
8. विदेश यात्रा पर जाने में विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
9. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
10. सम्बन्धी धोखा देने से नहीं चूकेगा।
11. इच्छा पूरी हो जायेगी।
12. पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की मिलेगी।
13. कन्या रत्न उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल है।
14. आज का दिन अच्छा नहीं है।
15. यह वर्ष मध्यम फलप्रद रहेगा।

### (8) विष्णु

1. परीक्षा में सफलता मिलेगी।
2. मकान निकट भविष्य में नहीं बना पाओगे।
3. खेती मत करो, लाभ की आशा कम है।
4. प्रमोशन शीघ्र ही मिलने वाला है।
5. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
6. भाग्योदय होगा किन्तु थोड़ा समय धैर्य रखें।
7. मुकद्दमे में जीत जाओगे।
8. सन्तान सुख के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
9. विदेश यात्रा सकुशल तथा लाभप्रद होगी।
10. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम छल है।
11. सम्बन्धी धोखा दे, ऐसा नहीं दिख रहा।
12. पत्नी का स्वभाव अच्छा होगा।
13. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
14. पुत्र सन्तान जन्म ले ऐसे योग हैं।
15. यह दिन शुभ रहेगा।

### (9) नारायण

1. विद्या प्राप्त कर लोगे, विश्वास करो।
2. परीक्षा में पास होने में सन्देह है। रुकावट उत्पन्न होगी।
3. मकान नहीं बन सकेगा।
4. खेती करने से लाभ मिलेगा।
5. प्रमोशन अभी मिलना सम्भव नहीं है।
6. नौकरी शीघ्र मिल जाएगी।
7. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
8. मुकद्दमा जीतने में संदेह है।
9. सन्तान सुख अभी देरी से मिलेगा, धैर्य रखें।
10. विदेश यात्रा करने का अवसर नहीं मिलेगा।
11. प्रेम का चक्कर हानिकर है, सावधान रहें।
12. सम्बन्धी धोखा अवश्य देगा सावधान।
13. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
14. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
15. कन्या का जन्म होगा।

### (10) दामोदर

1. जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।
2. अल्प विद्या प्राप्ति के योग हैं।
3. परीक्षा में असफलता हाथ लगेगी।
4. मकान बनाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
5. खेती से अल्प लाभ की आशा रखें।
6. प्रमोशन के योग बन रहे हैं।
7. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
8. भाग्योदय निकट भविष्य में हो जायेगा।
9. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।
10. सन्तान सुख थोड़ा देरी से मिलेगा।
11. विदेश यात्रा जाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
12. प्रेमी/प्रेमिका मन से प्रेम करता/करती है।
13. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
14. पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी।
15. इच्छा पूर्ण हो जायेगी।

### (11) इन्द्र

1. भूमिगत धन की प्राप्ति हो जायेगी।
2. जीवन में सफलता प्राप्त होगी, ऐसे योग हैं।
3. परीक्षा में आशानुकूल सफलता प्राप्त हो।
4. परीक्षा उत्तीर्ण कर लोगे।
5. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
6. खेती से लाभ नहीं होगा।
7. प्रमोशन हो, इसमें संदेह है।
8. नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
9. भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।
10. मुकद्दमे में जीत जाने के अवसर क्षीण हैं।
11. सन्तान सुख मिलेगा लेकिन उपाय से।
12. विदेश यात्रा में विघ्नों के बाद सफलता होगी।
13. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम झूठा है, बच कर रहें।
14. सम्बन्धी धोखा देने की योजना बना रहा है।
15. पत्नी अति नम्र और स्नेहशील होगी।

### (12) गणेश

1. विवाह हो जायेगा, चिन्ता न करें।
2. भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव नहीं है।
3. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
4. विद्या में सफलता प्राप्त कर लोगे।
5. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के चांस नहीं है।
6. मकान अभी देर से बनेगा।
7. खेती से लाभ मिलेगा।
8. उन्नति (प्रमोशन) अभी नहीं होगी। देर है।
9. नौकरी मिल जायेगी।
10. भाग्य का सितारा चमकने वाला है।
11. ऐसे आसार है कि मुकद्दमा हार जाओगे।
12. सन्तान सुख मिल जायेगा।

13. विदेश यात्रा को नहीं जा सकोगे।
14. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम नहीं है।
15. सम्बन्धी गुप्त रूप से सहायता करेगा।

## ( 13 ) अग्नि

1. बीमार अच्छा हो जायेगा।
2. विवाह में अनेक प्रकार की बाधाएँ आएंगी। मंगला गौरी का व्रत रखें।
3. गढ़ा धन मिलेगा, गृह देवता की पूजा करें।
4. जीवन में सफलता मिलेगी।
5. विद्या प्राप्त कर लोगे।
6. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
7. मकान शीघ्र ही बन जायेगा।
8. खेती से लाभ मिलेगा।
9. फिलहाल तरक्की मिलना कठिन है।
10. नौकरी मिलने के आसार नहीं है।
11. भाग्योदय शीघ्र होगा।
12. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
13. सन्तान सुख मिल जायेगा।
14. विदेश यात्रा करने की इच्छा पूर्ण होगी।
15. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम है।

## ( 14 ) वायु

1. स्वप्न का फल उत्तम फलप्रद है।
2. रोगी के रोगमुक्त होने में अभी देरी है।
3. विवाह सम्बन्ध के लिए उपाय करना।
4. भूमिगत धन मिलने की सम्भावना है।
5. जीवन में सफलता मिलने में संदेह है।
6. विद्या प्राप्त हो जायेगी शिवार्चन करें।
7. परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन है।
8. मकान बनाने में कठिनाइयां आयेंगी।
9. खेती में लाभ होने की आशा है।
10. प्रमोशन होने में अभी समय लगेगा।
11. नौकरी निकट भविष्य में नहीं मिलेगी।
12. भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
13. मुकद्दमे में जीत निश्चित मिलेगी।
14. सन्तान सुख पाने के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
15. विदेश यात्रा नहीं हो सकेगी। रुकावटें उत्पन्न होंगी।

## ( 15 ) वरुण

1. स्थानांतरण शीघ्र ही हो जायेगा।
2. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
3. बीमार के ठीक होने के आसार नहीं हैं।
4. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
5. गढ़ा धन मिल जायेगा, लेकिन उपाय से।
6. जीवन में अधिक सफलता की आशा कम है।
7. विद्या प्राप्ति में विघ्नों का सामना करना पड़ेगा।
8. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए गायत्री जाप करें।
9. मकान बन जायेगा।
10. खेती से लाभ की आशा रखना निर्मूल है।
11. उन्नति शीघ्र मिल जायेगी।
12. नौकरी निकट भविष्य में मिल जायेगी।
13. भाग्योदय अभी नहीं हो रहा देरी लगेगी।
14. मुकद्दमा जीतना कठिन होगा।
15. सन्तान सुख भाग्य में नहीं है।

## ( 16 ) यम

1. व्यापार में लाभ मिलेगा परन्तु सावधानी आवश्यक है।
2. तबादले के योग बन रहे हैं।
3. स्वप्न का फल अच्छा है।
4. बीमार अच्छा हो जायेगा।
5. विवाह के लिए 'मंगला गौरी' का पाठ करें।
6. गढ़ा धन मिल जायेगा।
7. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
8. उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए गायत्री मन्त्र जपें।
9. परीक्षा में पास हो जाओगे।
10. मकान बनाने में देर लगेगी।
11. खेती से लाभ हो इसमें संदेह है।
12. प्रमोशन कठिनाई से मिलेगी।
13. नौकरी मिलने में संदेह है।
14. भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
15. मुकद्दमे में जीत निश्चित है परन्तु बगुलामुखी मन्त्र का पाठ अवश्य करें।

## ( 17 ) कुबेर

1. चिन्ता अभी देर से दूर होगी।
2. व्यापार में लाभ मिलेगा।
3. स्थानातरण अभी नहीं होगा।
4. स्वप्न शुभ फलप्रद है।
5. बीमार के अच्छा होने की सम्भावना कम है।
6. विवाह होने की सम्भावना नहीं है।
7. गड़े धन प्राप्ति के लिए तांत्रिक सिद्धि करें।
8. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
9. विद्या प्राप्त कर लोगे।
10. उत्तीर्ण होने के लिए सरस्वती उपासना करें।
11. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
12. खेती से लाभ नहीं मिलेगा।
13. तरक्की मिल जाये ऐसे योग नहीं हैं।
14. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
15. भाग्योदय होने के लिए स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र का जप करें।

## ( 18 ) सूर्य

1. मित्र धोखा दे सकता है सावधान रहें।
2. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।
3. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
4. तबादला हो जायेगा।
5. स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
6. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
7. विवाह शीघ्र ही हो जाये।
8. गड़ा धन भाग्य में नहीं है।
9. विशेष प्रयास करने पर ही सफलता प्राप्त होगी।
10. विद्या प्राप्ति नहीं हो सकेगी।
11. परीक्षा में पास होने में संदेह है, मन लगा कर पढ़ो।
12. मकान शीघ्र बन जायेगा।
13. खेती से लाभ मिलेगा।
14. प्रमोशन के योग प्रयत्न साध्य हैं।
15. नौकरी देर से मिलेगी।

## ( 19 ) चन्द्र

1. कर्जा मिलने में विघ्न-बाधायें आयेंगी।
2. मित्र कपट करेगा सावधानी बरतें।
3. चिन्ता मिट जायेगी ईश्वर की अराधना करें।
4. व्यापार से लाभ रहेगा।
5. तबादला होकर रुक जायेगा।
6. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है।
7. रोगी स्वास्थ्य लाभ कर लेगा।
8. विवाह हेतु विस्वासुमन्त्र का अनुष्ठान करें।
9. गढ़ा धन पितृ पूजन करने से मिलेगा।
10. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
11. विद्या प्राप्ति हेतु कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
12. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
13. मकान बन जायें इसमें संदेह है।
14. खेती से अधिक लाभ नहीं मिलेगा।
15. उन्नति होने के योग क्षीण हैं।

## ( 20 ) मंगल

1. खोई वस्तु मिल जायेगी प्रयत्न करें।
2. कर्जा मिल जायेगा।
3. मित्र के साथ निभ जाये ऐसा नहीं लगता।
4. चिन्ता शीघ्र दूर हो जायेगी।
5. व्यापार में हानि होने के योग हैं।
6. ट्रांसफर नहीं हो सकेगा।
7. स्वप्न का फल उत्तम है।
8. बीमार के अच्छे होने की सम्भावना नहीं है।
9. विवाह अभी देर से होगा।
10. गड़ा धन मिलने में संदेह है।
11. जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
12. विद्या प्राप्त कर लोगे।
13. पास होना कठिन है।
14. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
15. खेती से लाभ रहेगा।

## ( 21 ) बुध

1. प्रवासी लौट कर आ रहा है।
2. खोई वस्तु मिल जायेगी।
3. कर्जा इस समय नहीं मिलेगा।
4. मित्र के साथ मित्रता बनी रहेगी।
5. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
6. व्यापार से लाभ रहेगा।
7. तबादला हो जायेगा।
8. स्वप्न का फल मध्यम है।
9. बीमार अच्छा हो जायेगा।
10. विवाह हो जायेगा।
11. गढ़ा धन मिल जायेगा।
12. जीवन में सफलता प्राप्त करना असम्भव है।
13. विद्या प्राप्ति के योग नहीं हैं।
14. उत्तीर्ण होने के लिए परिश्रम एवं हनुमन्त्र जपें।
15. मकान रुकावटों-विघ्नों के पश्चात् बनेगा।

## ( 22 ) बृहस्पति

1. यात्रा लाभदायक रहेगी।
2. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
3. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
4. कर्ज़ा विलम्ब से मिलेगा।
5. मित्र के साथ नहीं निभ सकेगी।
6. चिन्ता दूर हो जायेगी।
7. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
8. तबादला हो जायेगा आश्वस्त रहें।
9. स्वप्न का फल अशुभ है।
10. बीमार अच्छा नहीं होगा।
11. गढ़ा धन मिलना सम्भव नहीं है।

12. जीवन में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर लोगे।
13. विद्या प्राप्ति के योग हैं।
14. परीक्षा में पास हो जाओगे चिन्ता न करो।

### ( 23 ) शुभ

1. भाईयों से अनबन रहेगी।
2. यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
3. परदेसी शीघ्र लौट आयेगा।
4. खोई वस्तु बहुत जल्दी मिल जायेगी।
5. कर्जा नहीं मिलेगा।
6. मित्र के साथ अच्छा मेल-मिलाप रहेगा।
7. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
8. व्यापार से लाभ मिलेगा।
9. तबादले के योग बन रहे हैं।
10. स्वप्न का फल शुभ है।
11. रोगी रोग मुक्त हो जाएगा।
12. विवाह के लिए उपाय करें।
13. भूमिगत धन शीघ्र मिलेगा।
14. जीवन में सफलता पाना कठिन है।
15. विद्या प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना करें।

### ( 24 ) शनि

1. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी होगी।
2. भाईयों से बन जाएगी।
3. यात्रा लाभकारी रहेगी।
4. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का विचार नहीं कर रहा।
5. खोई वस्तु प्रयत्न करने पर मिल सकती है।
6. कर्ज़ मिल जाएगा।
7. मित्र से अनबन होने की सम्भावना है।
8. चिन्ता मिट जाएगी श्री बटुक भैरवार्चन करें।
9. व्यापार में लाभ मिलने की आशा क्षीण है।
10. तबादला प्रयत्न करने पर हो सकता है।
11. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
12. बीमार का स्वास्थ्य लाभ लेना असम्भव है।
13. विवाह हो जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
14. गढ़ा धन नहीं मिलेगा।
15. जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।

### ( 25 ) राहु

1. यह वर्ष मध्यम रहेगा।
2. कुआं बन जाएगा आश्वस्त रहें।
3. भाईयों से नहीं बनेगी।
4. यात्रा से लाभ मिलेगा।
5. परदेसी शीघ्र ही लौट आएगा।
6. नष्ट वस्तु मिल जाएगी।
7. कर्ज़ मिल जाएगा।
8. मित्र धोखा देगा सावधान !
9. चिन्ता मिट जाएगी।
10. व्यापार में लाभ रहेगा।
11. तबादला हो जाएगा।
12. स्वप्न का फल शुभ है।
13. बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
14. विवाह हो जाएगा लेकिन उपाय से।
15. गढ़ा धन इष्ट देव के पूजन से मिलेगा।

### ( 26 ) केतु

1. यह दिन शुभ नहीं है।
2. यह वर्ष अच्छा रहेगा।
3. कुआं नहीं बन सकेगा।
4. भाईयों के साथ प्रेम रहेगा।
5. यात्रा से कोई लाभ नहीं मिलेगा।
6. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा बीमार है।
7. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
8. कर्ज़ देरी से मिलेगा।
9. मित्र कपटी है अतः उसका त्याग करें।
10. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
11. व्यापार में लाभ की सम्भावना नहीं है।
12. तबादला नहीं होगा।
13. स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
14. रोगी रोग मुक्त हो जाएगा।
15. विवाह उपाय से होना सम्भव है।

### ( 27 ) मित्र

1. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
2. यह दिन शुभ है।
3. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
4. कुआं बन जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
5. भाईयों से अनबन व तकरार रहेगा।
6. यात्रा से लाभ मध्यम रहेगा।
7. प्रवासी आने के लिए चल चुका है।
8. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
9. कर्ज़ कठिनाई से मिलेगा।
10. मित्र के साथ अच्छी पट जाएगी।
11. चिन्ता शीघ्र ही कम हो जाएगी।
12. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
13. तबादला हो जाएगा।
14. स्वप्न का फल उत्तम है।
15. रोगी के स्वस्थ्य होने में संदेह है।

### ( 28 ) पृथ्वी

1. इच्छा पूरी होने में देरी है।
2. कन्या सन्तति की प्राप्ति होगी।
3. यह दिन मध्यम रहेगा।
4. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
5. कुआं बनने में बाधाएं हैं।
6. भाईयों से मिलाप रहेगा।
7. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
8. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
9. कर्ज़ नहीं मिलेगा।
10. मित्र के साथ बनने की संभावना नहीं है।
11. चिन्ता बढ़ सकती है।
12. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
13. तबादले की सम्भावना क्षीण है।
14. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।

### ( 29 ) काल

1. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
2. इच्छा पूरी होगी।
3. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
4. यह दिन शुभ है।
5. यह वर्ष मध्यम रहेगा।
6. कुआं बन जाएगा।
7. भाईयों से अनबन रहेगी।
8. यात्रा में लाभ प्राप्त करना असम्भव है।
9. परदेसी निकट भविष्य में नहीं लौटे रहा है।
10. खोई वस्तु शीघ्र नहीं मिलेगी।
11. कर्ज़ देर से मिलेगा।
12. मित्र के साथ नहीं बनेगी।
13. चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
14. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
15. तबादला हो जाएगा।

### ( 30 ) शेष

1. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
2. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
3. इच्छा पूरी होने में देरी है।
4. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
5. यह दिन मध्यम रहेगा।
6. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
7. कुआं बनने में आकस्मिक बाधा आएगी।
8. भाईयों से बनना मुश्किल है।
9. यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
10. परदेसी शीघ्र लौट कर आने वाला है।
11. खोई वस्तु मिलना कठिन है।
12. कर्ज़ अभी नहीं मिलेगा।
13. मित्र के साथ मेल-जोल रहेगा।
14. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
15. व्यापार से लाभ मिलेगा।

### ( 31 ) यक्ष

1. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
2. सम्बन्धी से धोखे की आशा नहीं है।
3. पत्नी का स्वभाव सरल होगा।
4. इच्छा देरी से पूरी होगी।
5. पुत्रोत्पत्ति होगी।
6. दिन शुभ रहेगा।
7. यह वर्ष मध्यम शुभ प्रद है।
8. गृह-निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
9. भाईयों से साधारण मेल रहेगा।
10. यात्रा से लाभ मिलेगा।
11. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा।
12. खोई वस्तु मिल जाएगी।
13. कर्ज़ मिल जाएगा।
14. मित्र के साथ नहीं निभेगी।
15. चिन्ता शीघ्र मिट जाएगी।

### ( 32 ) तक्षक

1. विदेश यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
2. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
3. सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
4. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं होगी।
5. इच्छा पूरी होने में देरी है।
6. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
7. दिन शुभ रहेगा।
8. यह वर्ष अरिष्टप्रद होगा।
9. कुआं देर से बनेगा।
10. भाईयों से मेल कम रहेगा।
11. यात्रा से लाभ नहीं होगा।
12. प्रवासी नहीं लौटेगा।
13. खोई वस्तु मिलना सम्भव नहीं है।
14. कर्ज़ मिलने में सन्देह है।
15. मित्र का साथ बना रहेगा।

# अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग) एवं उपरत्न

**लेखक–पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी (M.A., LLB.)**

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, **अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती है।** उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का संक्षिप्त विवरण लिख रहे हैं–

## सूर्य रत्न माणक (RUBY)

**संस्कृत** में इसे माणिक्य, पद्यमराग, हिन्दी में माणक, **मानिक, अंग्रेज़ी** में रूबी कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिष्ठाता सूर्यदेव है।

**पहचान विधि**–(1) असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध-कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वज़न लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वज़न का अनुभव होता है। (2) **कांच के पात्र** में रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती दिखाई देंगी। (3) **गाय के दूध** में असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखलाई देगा।

**धारण विधि**–माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों, **रविपुष्य योग में सोने अथवा ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ५ ७ अथवा ९ रत्ति के क्रम से होना चाहिए।**

**सूर्य बीज मन्त्र–ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः**

धारण करने के पश्चात् गायत्री मन्त्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं **सूर्य भगवान को** विधिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

**विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धिकारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी होता है।**

**मेष, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक** एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

## चन्द्र-रत्न मोती (PEARL)

**चन्द्र-रत्न मोती को संस्कृत** में मौक्तिक, चन्द्रमणि इत्यादि, **हिन्दी-पंजाबी** में मोती एवं **अंग्रेज़ी में पर्ल (Pearl) कहा जाता है। मोती या मुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है।**

**पहचान**–शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना,चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

**परीक्षा**–(1) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें, यदि वह अखण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (2) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखलाई पड़ें, तो मोती असली जानें। सुच्चा मोती के अभाव में **चन्द्रकान्त मणि** अथवा **सफेद पुखराज** धारण किया जा सकता है।

असली शुद्ध मोती धारण करने से **मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।**

**रोग शान्ति**–चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या मुक्ता भस्म का उपयोग मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप, उदर-विकार, पत्थरी, दन्तरोगादि में।

**धारण विधि**–मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व पाण्डुलादि में डूबोते हुए **'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः'** के बीजमन्त्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरान्त चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रत्ति का कनिष्ठका अंगुली में **हस्त, रोहिणी अथवा श्रवण** नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त्त में धारण करना चाहिए। **मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि/लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।**

**चन्द्रमा का उपरत्न–चन्द्रकान्त मणि** (Moon Light Stone)–यह उपरत्न चाँदनी जैसे चमक लिए हुए चन्द्रमा का 'उपरत्न' (मोती का पूरक) माना जाता है। इसको हिलाने से, इस पर एक दुधिया जैसी प्रकाश रेखा चमकती है। यह रत्न भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा प्रेम में सफलता प्रदान करता है। लाभ की दृष्टि से चन्द्रकान्त मणि मलाई के रंग का (सफेद और पीले के बीच का) उत्तम माना जाता है। **इसे चाँदी में ही धारण करना चाहिए।**

## मंगल-रत्न मूंगा (CORAL)

इसे **संस्कृत** में अंगारकमणि तथा **अंग्रेज़ी में कोरल** (Coral) कहते हैं।

गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वज़नी, सिन्धूरी से मिलते-जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका **स्वामी ग्रह मंगल** है।

**परीक्षा**–(१) **असली मूंगे को** खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) **असली मूंगा** यदि गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से **भूमि, पुत्र एवं भ्रातृ सुख, नीरोगता** आदि की प्राप्ति होती है। इसके **अतिरिक्त रक्त-विकार, भूत-प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय-रोग, वायु-कफादि विकार, पेट विकारादि में मूंगे की भस्म अथवा मिट्टी** का प्रयोग किया जाता है। **मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि एवं लग्न वालों** को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करना लाभप्रद होगा।

**धारण विधि**–शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा

नक्षत्र में सोने या तांबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में ६, ८, १० या १२ रत्ति के वज़न में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

**भौम बीज मन्त्र–ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः**

शारीरिक स्वास्थ्य एवं कुं. में मंगल नीच राशिस्थ हो तो सफेद मूँगा भी धारण किया जाता है।

## बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

"पन्ना" बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत** में मरकतमणि, फारसी में जमरूद व अंग्रेज़ी में इमराल्ड (Emerald)। पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व चमकदार होता है।

**परीक्षा**–(1) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (2) शुद्ध पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आँखों को शीतलता प्रदान करता है।

**गुण**–'पन्ना' धारण करने से **बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है**। विद्या, बुद्धि, धन एवं व्यापार में वृद्धि के लिए लाभप्रद माना जाता है। पन्ना सुख एवं **आरोग्यकारक** भी है। यह रत्न **जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।**

**धारण विधि**–यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली में बुधग्रह के बीजमन्त्र से अभिमंत्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वज़न ३, ६, ७ रत्ति होना चाहिए।

**बुध बीज मन्त्र–ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः**

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

## गुरु–रत्न पुखराज (TOPAZ)

**पुखराज** गुरु (बृहस्पति) ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत में** इसे पुष्प राजा, **हिन्दी में पुखराज**, व अंग्रेज़ी में टोपाज (Topaz) कहते हैं।

**पहचान विधि**–जो **पुखराज** स्पर्श में **चिकना, हाथ में लेने पर कुछ भारी लगे, पारदर्शी, प्राकृतिक चमक से युक्त** हो वह **उत्तम कोटि का** माना जाता है।

**परीक्षा**–(i) जहां किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, वहां पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (ii) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा। इत्यादि।

**गुण**–पुखराज धारण करने से **बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु** की वृद्धि होती है। **वैवाहिक सुख, पुत्र सन्तान कारक एवं धर्म-कर्म** में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के **विवाहसुख की बाधा को दूर करने में** सहायक होता है।

**औषधी प्रयोग**–इसको वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से **पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि** में लाभदायक होता है।

**धारण विधि**–पुखराज रत्न ३, ५, ७, ९ या १२ रत्ति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगाजल, पीले पुष्पों से एवं "**ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः**" के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिए। मन्त्र संख्या १९ हजार।

यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

**पुखराज** धनु, मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरू से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

**गुरु का उपरत्न–सुनैला**–इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है। पुखराज मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके पूरक के रूप में धारण किया जा सकता है। श्रेष्ठ सुनैला हल्के पीले रंग (सरसों के जैसा पीलापन) का होता है। कई बार पुखराज से अधिक पीलापन लिए होता है तथा आंशिक मात्रा में पुखराज के समान ही उपयोगी होता है। धारण विधि पुखराज के समान ही होगी।

## शुक्र–रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व **'हीरा'** है।

**संस्कृत** में इसे वज्रमणि, हिन्दी में हीरा तथा अंग्रेज़ी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा अत्यन्त चमकदार प्रायः श्वेत वर्ण का होता है।

**पहचान**–अत्यन्त चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

**परीक्षा**–(i) धूप में यदि हीरा रख दिया जाये तो उसमें से इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (ii) तोतले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (iii) अन्धेरे में जुगनू की भान्ति चमकता है।

**गुण**–हीरे में **वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है**। इसके पहनने से **वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य** में लाभ होता है। **वैवाहिक** सुख में भी वृद्धिकारक माना जाता है।

**औषधीय गुण**–हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे–दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमज़ोरी इत्यादि।

**धारण विधि**–शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, **भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र**, एक रत्ति या इससे अधिक वज़न का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मन्त्र (**ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**) का 16 हज़ार की संख्या में जाप करके शुभ मुहूर्त्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए।

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। **हीरा वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों को लाभदायक रहता है।**

**शुक्र के उपरत्न–(i) फिरोज़ा**–नीले आकाशीय रंग जैसा यह नग शुक्र का उपरत्न माना गया है। यह रत्न भूत, प्रेत, दैवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इस रत्न को कोई भेंटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली रहेगा। हल्के-प्रखर चमकदार रंग वाला रत्न उत्तम होता है। कोई भी कष्ट या रोग आने से पहले यह रत्न अपना रंग बदल लेता है। नेत्र रोग, सौन्दर्य, सिर दर्द, विषादि रोगों में विशेष लाभकारी रहता है।

**(ii) ओपल (Opel)**–यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसको धारण करने से

**(ii) ओपल (Opel)**–यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसको धारण करने से सदाचार, सदचिन्तन तथा धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहती है। अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्र के अन्य भी बहुत से उपरत्न प्रचलित हैं।

## शनि रत्न नीलम (SAPHIRE)

**नीलम** शनिग्रह का मुख्य रत्न है। हिन्दी में नीलम तथा अंग्रेज़ी में सैफायर (Saphire) कहते हैं।

**पहचान**–असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होगा।

**परीक्षा**–(i) **असली नीलम को गाय के दूध में डाल दिया जाए तो** दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने **से नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी।**

**गुण**–नीलम धारण करने से **धन–धान्य, यश–कीर्ति, बुद्धि चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।**

**ध्यान रहे**, बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूलन न बैठे तो भारी नुक्सान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आएं, रोग–उत्पन्न हो या चेहरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम मत पहनें।

**रोग शान्ति**–नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में लाभकारी है।

**धारण विधि**–नीलम ५, ७, ९, १२ अथवा अधिक रत्ति के वजन का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं **पुष्य, उ.भा., चित्रा, स्वा, धनि या शतभिषा नक्षत्रों** में शनि के **बीज मन्त्र ॐ प्रां. प्रीं. प्रौं. सः शनये नमः** मन्त्र से २३००० की **संख्या में अभिमन्त्रित** करके धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

## राहु रत्न–गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेज़ी झिरकन (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है।

**पहचान विधि**–सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, दल रहित अर्थात् जो परतदार न हों, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा।

**धारण विधि**–गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ५, ७, ९ रत्ती का होना चाहिए।

**राहु बीज मन्त्र–"ॐ भ्रां भ्रीं, भ्रौं सः राहवे नमः"**

धारण करने के पश्चात् बीजमन्त्र का पाठ हवन एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन–सम्पत्ति–सुख, सन्तान वृद्धि, वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु–नाश हेतु भी इसका प्रयोग प्रभावी रहता है।

जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लग्न वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

## केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु–रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेज़ी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नग अन्धेरे में बिल्ली की आंखों के समान चमकता है। लहसनिया चार रंगों में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, वह वैदूर्य ही उत्तम होता है।

**पहचान**–(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर–पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में ढाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर–उधर घूमते हिलते रहते हैं।

**धारण विधि**–लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में कनिष्ठका अंगुली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रत्ती से कम वज़न का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

**केतु बीज मन्त्र–"ॐ स्त्रां स्त्रीं, स्त्रौं, सः केतवे नमः"**

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूर्मवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य (अलग–अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। सन्तान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहाँ 'आपका भाग्यरत्न' पुस्तक 100 रु० भेजकर मंगवा सकते हैं। **सम्पूर्ण रत्न विज्ञान, मूल्य 200 रुपये, जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।**

**घर बैठे ही अपना भविष्य जानें**

**(सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से निर्मित शुद्ध जन्मपत्री है।)**

**जन्म कुण्डली टेवा :** संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए अपनी जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गौत्र लिखें भेजें जिसकी फीस 901 रुपए होगी।

**वर्षफल :** आपके लिए यह वर्ष कैसा रहेगा। यह जानने के लिए जन्म कुण्डली की नकल अवश्य भेजें। यदि जन्म कुण्डली नहीं है तो पत्र लिखने का समय अंग्रेज़ी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूलका नाम भी लिखें। विस्तारपूर्वक फलादेश के लिए फीस 900 रुपए होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 31 पौंड अथवा 51 डालर होंगे।

**वृहद् जन्मपत्री :** इसमें आपके जीवन में होने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से विवरण दिया जाएगा जिसकी फीस 1800) रुपए होगी। जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गौत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता का नाम, दादा का नाम लिख भेजें। विदेश में पैदा होने वाले सज्जनों के लिए फीस 3100 रुपए होगी। कृपया पूरी राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 51 पौंड अथवा 75 डालर होंगे। डाक व्यय अलग होगा।

**पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर-8 (पंजाब) ☎ 83600-62581**

# द्वादश लग्नों एवं राशियों का फल [ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) से उद्धृत]

**मेष लग्न**–मेष लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। जातक का मध्यम कद, मुख का वर्ण लाल अथवा गेहुँआ होगा। राशिपति मंगल की स्थिति शुभ होने से रक्तवर्ण नेत्रों वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, अत्यन्त साहसी, सतर्क एवं महत्वाकांक्षी होगा। जातक उद्यमी, तीव्र बुद्धि, स्वतन्त्र विचारों वाला, अस्थिर किन्तु तेज़ स्मरण शक्ति वाला, अत्यधिक उत्साही, स्पष्टवादी एवं भ्रमणप्रिय व्यक्ति होगा। प्रायः अपने परिश्रम के बल पर आय एवं धन के साधन जुटा लेगा। सगे सम्बन्धियों की ओर से सहायता व सुख कम होगा। यह राशि चर और अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण मेष राशि (लग्न) का जातक परिवर्तनशील प्रकृति, अस्थिर स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला एवं शीघ्र ही मान जावे। व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। जायदाद एवं व्यवसाय में कई प्रकार के झंझट (उलझनें) आती हैं और इन्हीं कामों के द्वारा लाभ भी होता रहता है। पित्त, कफ, सिर दर्द, रक्त विकार, नेत्र विकार, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। मंगल शुभ होने पर जातक को खेल-कूद व संगीतादि में भी विशेष शौक रहता है। सामान्यतः मूंगा मेष लग्न वालों के लिए शुभ रहता है, परन्तु योग्य ज्योतिषी से परामर्श के बाद धारण करना चाहिए। भाग्योदयकारक वर्ष १६, २२, २८, ३२, ३६वें होंगे।

**वृष लग्न**–वृष लग्न का स्वामी शुक्र है। यदि शुक्र शुभ हो तो जातक सुन्दर, सुगठित शरीर व मध्यम कद वाला होगा। गोल, बड़ी व चमकदार आँखें, सुन्दर वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक परिश्रमी, हँसमुख एवं सौम्य प्रकृत्ति वाला, धीर, शान्त एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। जातक उदारहृदय, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्ति होगा। स्वावलम्बी, उच्चाभिलाषी तथा भौतिक सुखों के लिए कठोर परिश्रम से भी पीछे नहीं हटेगा। जातक मधुरभाषी, सौन्दर्य प्रेमी, संगीत कला-साहित्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला होगा। घर-दफ्तर आदि स्थानों पर सजावट रखेगा तथा ऐश्वर्य साधनों में निरन्तर वृद्धि करते रहने का प्रयास करेगा। जातक प्रायः अपनी इच्छानुसार ही कार्य करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त जीवनयापन का इच्छुक, विपरीत योनि वालों के साथ मैत्री करने का आकांक्षी, व्यवहार कुशल तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपना कार्य निकालने में कुशल होगा। जातक प्रायः चन्द्र-बुध की स्थिति शुभ होने पर कामर्स, गणित, बैंकिंग, एक्टिग, वस्त्र उद्योग, क्रय-विक्रय (Trading) आदि में सफलता प्राप्त कर लेता है। शुभ नग हीरा है। भाग्योदायकारक वर्ष २८, ३६, ४२ एवं ४८वें होंगे।

**मिथुन लग्न**–मिथुन लग्न (राशि) का स्वामी बुध है। मिथुन लग्न वाला जातक, गौरवर्ण, चंचल आँखों वाला, सामान्य एवं ऊँचे कद वाला होगा। जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, तीव्र बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों को हर प्रकार से सहायक तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, दूर-दूर के स्थानों की यात्राएँ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। जातक में बुद्धि तत्त्व एवं भाव तत्त्व दोनों प्रबल होने के कारण पठन्न-पाठन, कानूनी कार्य, व्यापार सम्बन्धी और लेखन सम्बन्धी कार्यों को बड़ी गम्भीरता से करेगा, मज़बूत हृदय वाला परन्तु नर्म स्वभाव होने के कारण कमज़ोर समझा जाता है। द्विस्वभाव होने से एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरू करने की प्रवृत्ति रहेगी, अपने कार्य-क्षेत्र (व्यवसाय) में प्रायः परिवर्तन करता रहता है तथा प्रायः अपने परिश्रम, बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेगा। नए-नए मित्र बनाने में कुशल, बातचीत करने की कला में निपुण होगा। क्रय-विक्रय, पुस्तक-लेखन, लेखाकार (Accounts), बैंक, वकालत, अध्यापन, इंजीनियरिंग, कल-पुर्जों के कार्य-व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती है। शुभ नग पन्ना है, स्त्रियों के लिए पुखराज भी अच्छा होगा। भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे।

**कर्क लग्न**–कर्क लग्न (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। चन्द्र-मंगल शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, नयायप्रिय व दयालु स्वभाव वाला होगा। सामान्यतः परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं (Liquids) का प्रिय, उच्च कल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला-संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितिनुसार ढल जाने वाला, प्यार सम्बन्धों में सच्चा, ईमानदार और सहृदय दयालु प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दिल से जिस काम को करना चाहे कर ही लेता है। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों को मकर, बृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। शुभ नग सुच्चा मोती तथा सफेद पुखराज है। भाग्योदयकारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

**सिंह लग्न**–सिंह लग्न (राशि) का स्वामी सूर्य है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर-पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि-चातुर्य से स्थिति को सम्भाल लेने वाला होगा। छोटी-छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाला होगा तथा बड़े-बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने से तत्पर हों जाएगा। भाई-बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रत्येक कार्य-व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन-यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढ़कर भी खर्च कर डालते हैं। इस लग्न वाले जातक का बाह्य रूप में आकर्षक रूप एवं अच्छा स्वास्थ्य रहता है। शुभ नग माणिक्य है। **सिंह लग्न ( राशि ) वालों को सूर्य उपासना करनी चाहिए।** भाग्योन्नति वर्ष १६, २२, २४, २६, २८, ३२ होते हैं।

**कन्या लग्न**–कन्या लग्न (राशि) वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज़ और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जाशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील (Senstivie) स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक यात्राएँ एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। बुध-शुक्र का शुभ योग होने से लेखा-गणित (Account), संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय-विक्रय आदि की ओर विशेष झुकाव रहेगा तथा सफलता भी होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। शुभ नग पन्ना है। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, ३२ *तथा* ३५, ३६, ४२ वें वर्ष होते हैं.

**तुला लग्न**–तुला लग्न (राशि) का स्वामी शुक्र है। तुला लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौंदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहन-सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। **चन्द्र-शुक्र** शुभ हों, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मज़बूत दिल से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश-विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान्, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि (Sex) के प्रति विशेष झुकाव रखे। इनको **हीरा** (Diamond) अथवा **श्वेत मोती शुभ नग है** जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करने चाहिएं। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ एवं ४७वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

**वृश्चिक लग्न**–वृश्चिक लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर ही भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। **मंगल** शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करने का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्त्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। **शुभ नग मूँगा है**। शुभ रंग लाल, संतरी, पीला, हल्का गुलाबी (Pink) है। अपनी आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

**धनु लग्न**–धनु लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा हो सकता है। **गुरु-बुध** की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृत्ति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा-दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस लग्न (राशि) प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की प्रबलता के साथ-साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाए और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक क्रोधित रहते हैं। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि-जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। **मंगल-गुरु** शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या के योग है। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य-डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। **शुभ नग पुखराज है**। अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

**मकर लग्न**–मकर लग्न (राशि) का स्वामी शनि है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाले जातक का मध्यम कद, नयन नक्श तीखे, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गम्भीर, भावुक, हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। बुध व शुक्र शुभ होने पर व्यवहार-कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते है। क्षमाशील प्राय: कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। चर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। **गुरु-शनि** शुभ हो तो, जातक नर्म स्वभाव (विनम्र), विनयशील, व्यवहार-कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली-बुरी बात की पेहचान करने में कुशल, विश्वसनीय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान (Selective) तथा ईमानदार होंगे। तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध बात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। **शुभ नग नीलम** है। भाग्योन्नति वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२, ४६ होते हैं।

**कुम्भ लग्न**–लग्नेश (राशिपति) शनि शुभ अवस्था में हो तो जातक मध्यम अथवा ऊँचे कद वाला, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्त्व होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृत्ति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक होगा। व्यावहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में तत्पर होगा। जातक स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए-नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटेगा। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश-विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न-बाधाओं व कठिनाइयों के होने पर भी जीवन में उच्च स्थिति, धन पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ लग्न में यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय-विक्रय, प्रोफेसर, जज-वकील अथवा उच्च एवं धनी-व्यापारी होगा, प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष होगा। आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। **शुभ नग नीलम** हैं। **स्त्रियों के लिए पुखराज नग शुभ होगा।**

**मीन लग्न**–मीन लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। मीन लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, ईमानदार, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म-कर्म एवं फिलास्फी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरुचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान-मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए सहायक होगा। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। देव तुल्य प्रकृति होती है। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भान्ति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल-चित्र, व्यवसाय, खाने-पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। **शुभ नग पुखराज** है। शुभ वैवाहिक जीवन के लिए **पन्ना रत्न** धारण करें। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८, ४५ वर्ष होते हैं।

---

***ज्योतिष तत्त्व***–(लेखक पं. पन्ना लाल ज्योतिषी) इसमें भारतीय ज्योतिष के प्रारम्भिक इतिहास से लेकर ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान-सम्पूर्ण बड़ी जन्म पत्री निर्माण शैली, ग्रहों के सप्तवर्गी बलाबल निकालना। भावों, राशियों एवं ग्रहों तथा फलादेश सम्बन्धी मूलभूत सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। नवीन संशोधित संस्करण (मूल्य 225 रुपये)

***वर्षफल चन्द्रिका***–(नवीन संशोधित संस्करण) इसमें अब प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय वर्ष सारणी के अतिरिक्त नवीन वेध सिद्ध सारिणी का भी समावेश किया गया है। जातक फल, प्रश्नफल एवं गोचर फल कथन की विशेष रीतियों का विशद वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त वर्षफल बनाने और वर्ष भर की सटीक फलादेश कहने के लिए उत्तम पुस्तक है। **( मूल्य 160 रुपये )**

**ज्योतिष तत्त्व फलित** (दो खण्डों में) द्वादश लग्नों में ग्रहों के राशिगत एवं भाव सम्बन्धी विस्तृत फलादेश दिए गए हैं। विशोंत्तरी दशाओं के फलादेश, दो-तीन-चतुर्ग्रही एवं पंचग्रही योगों के फल इत्यादि अनेक विषयों का समावेश किया गया है। इन दो खण्डों के पास होने से आप एक सफल ज्योतिषी बन सकते हैं।

**( मूल्य 400 रु.प्रत्येक )**

# पुस्तकों के महासागर में से मोती रूप पुस्तकें वी. पी. द्वारा मंगवाएँ

## कुछ उपयोगी ग्रन्थ

| | |
|---|---|
| श्रीमद्देवी भागवत पुराण | 500/- |
| श्री विष्णु पुराण | 400/- |
| श्री विश्वकर्मा महापुराण | 300/- |
| धर्मसिन्धु (भाषा टीका) | 800/- |
| निर्णयसिन्धु (भाषा टीका) | 1200/- |
| निर्णयसिन्धु (भा.टी.) | 900/- |
| **कर्मठगुरु (भा.टी.)** | 600/- |
| मंत्र महोदधि | 750/- |
| रामचरितमानस | 700/- |
| मन्त्र सागर | 200/- |
| योग वशिष्ठ महारामायण | 350/- |
| **सामुद्रिक शास्त्र (दो भाग)** | 740/- |
| भृगु संहिता (फलित प्रकाश) | 480/- |
| **चन्द्र हस्त विज्ञान** | 695/- |
| **विवाहपद्धति देवीदयालु** | 100/- |
| **दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)** | 120/- |
| सूर्य पुराण भाषा | 300/- |
| रामायण तर्ज राधेश्याम | 500/- |
| दुर्गार्चन रहस्यम् | 250/- |
| श्रीगणेश महापुराण | 400/- |
| मनुस्मृति | 350/- |
| शिवमहापुराण | 700/- |
| भजन सरोवर | 150/- |
| शिव मंत्रावली | 250/- |

## चारों वेद (भा. टी.)

ऋग्वेद-4 खण्डों में, यजुर्वेद-1 खण्ड, अर्थर्ववेद-2 खण्ड, सामवेद-1 खण्ड में उपलब्ध हैं जिसमें संस्कृत भाषा के साथ हिन्दी में भी विस्तार से समझाया गया है। जिसे प्रत्येक भारतीय को अवश्य पढ़ना चाहिए। आज ही मंगवाएँ। मूल्य सम्पूर्ण सैट-2000 रु.। सम्पूर्ण चार

## सम्पूर्ण 'कार्तिक माहात्म्य'

पं. पन्ना लाल ज्यो. द्वारा संकलित प्रस्तुत पुस्तक में कार्तिक मास में व्रत, स्नान, पूजन आदि के विशेष नियम, तुलसी एवं श्रीगङ्गा की उत्पत्ति, तुलसी, आँवला, पीपल, करवा-चौथ, अहोई व्रत तथा कार्तिक मास में दीप दान एवं मार्जन का महत्त्व, मुख्य पर्वों जैसे-एकादशी, धन, त्र्योदशी, दीपावली, अन्नकूट, भाई-दूज, भीष्मपंचक, कार्तिक व्रत उद्यापन, तुलसी विवाह विधि, तुलसी स्तोत्र एवं आरती और भगवान की आरतियां संग्रहीत हैं। (हिन्दी) मूल्य-80 रु.

## चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें

| | |
|---|---|
| एलोपेथिक चिकि. (कोकचा) | 650 रु. |
| वृहद् होम्योपैथिक चिकित्सा | 600 रु. |
| आरोग्य प्रकाश | 350 रुपए |
| माधवनिदान | 600 रुपए |
| स्वदेशी चिकित्सा सार | 175 रुपए |
| घर का वैद्य | 100 रुपए |
| रसराज महोदधि | 400 रुपए |
| आयुर्वेदिक गाईड | 460 रुपए |
| अनुपम आयुर्वेदिक गाईड | 200 रुपए |
| एलोपैथिक मैडी. गाईड | 350 रुपए |
| होम्योपैथी द्वारा ईलाज | 150 रुपए |
| योगासन एवं साधना | 200 रुपए |
| उपयोगी जड़ी बूटियाँ | 300 रुपए |
| जड़ी-बूटियाँ | 200 रुपए |
| आयुर्वेद सार संग्रह (वैद्यनाथ) | 425 रु. |
| ईलाजुलगुर्बा | 120 रु. |
| दादी माँ के नुस्खे | 100 रु. |
| भोजन द्वारा चिकित्सा | 150 रु. |
| महत्त्वपूर्ण जड़ी-बूटियां | 300 रु. |
| रसेन्द्र सार संग्रह | 295 रु. |
| होम्योपैथिक चिकित्सा | 120 रु. |
| भावप्रकाश निघन्टु | 295 रु. |
| घरेलू इलाज | 100 रु. |
| चरक संहिता (सम्पूर्ण) | 750 रु. |
| आयुर्वेद भास्कर | 400 रु. |
| योगासन व स्वास्थ्य | 100 रु. |

## यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र

| | |
|---|---|
| काली किताब | 700 रु. |
| काली किताब (छोटी) | 300 रु. |
| महाइन्द्रजाल | 600 रु. |
| असली प्राचीन इन्द्रजाल | 250 रु. |
| शाबर मंत्र विद्या | 120 रु. |
| तंत्र-मंत्र-यंत्र रहस्य | 300 रु. |
| यंत्र-मंत्र-तंत्र महाशास्त्र | 1000 रु. |
| काला ईल्म | 120 रु. |
| इस्लामी तंत्र शास्त्र | 125 रु. |
| नृसिंह रहस्य | 450 रु. |
| ईस्लामी शाबर मंत्र | 450 रु. |
| अनुभूत यंत्र तंत्र ओर टोटके | 250 रु. |
| बगुलामुखी रहस्यम् | 200 रु. |
| कालिका सिद्धि | 350 रु. |
| सिद्ध शाबर मन्त्र | 200 रु. |
| तांत्रिक सिद्धियां | 200 रु. |
| काली तंत्र शास्त्र | 180 रु. |
| तारा तन्त्रम् | 500 रु. |
| मुद्राएं और रोग नाश | 200 रु. |
| यंत्र-मंत्र-तंत्र टोटके | 100 रु. |
| सिद्ध गोरख शाबर | 400 रु. |
| महाकाल संहिता | 600 रु. |
| 5001 गंडे ताबीज़ और टोटके | 400 रु. |
| अप्सरा साधना | 250 रु. |
| यंत्र विधान | 280 रु. |
| यंत्र विद्या के 121 प्रयोग | 200 रु. |
| धन प्रदायक साधनाएं | 100 रु. |
| स्वरसंहिता | 400 रु. |
| तंत्र द्वारा मनोकामना सिद्धि | 80 रु. |
| वशीकरण सिद्धियां, साधना | 120 रु. |
| कामाख्या सिद्धि | 400 रु. |
| रुद्रायमल तंत्र (बड़ा) | 200 रु. |

## कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें

| | |
|---|---|
| गण्डमूल नक्षत्र शांति प्रयोग | 100 रु. |
| कार्तिक स्त्री प्रसूता शांति | 50 रु. |
| जन्मदिन पूजा पद्धति | 50 रु. |
| दुर्गार्चन रहस्य | 250 रु. |
| सर्वदेव प्रतिष्ठा रहस्यम | 300 रु. |
| **शिवरात्रि व्रत कथा** (भा.टी.) | **40 रु.** |
| पौरोहित्यक कर्म-विधि | 500 रु. |
| दुर्गा सप्तशती (भा. टी.) हवन सहित | 120 रु. |
| नित्यपूजा (क्यों और कैसे ?) | 150 रु. |
| कर्मकाण्ड भास्कर | 280 रु. |
| कर्मकाण्ड भारती | 200 रु. |
| पूजा रहस्यम् | 100 रु. |
| पूजा भास्कर | 120 रु. |
| हवन रहस्यम् | 150 रु. |
| नवग्रह पूजा विधान (नवग्रह उपायों सहित) | 80 रु. |
| नित्यकर्म व देवपूजा पद्धति | 220 रु. |
| रुद्राष्टाध्यायी भा. टी. | 120 रु. |
| श्रीसूक्तम् व कनकधारा | 40 रु. |
| सन्तान गोपाल स्तोत्र | 35 रु. |
| गरुड़ पुराण (भाषा टीका) | 200 रु. |
| गरुड़ पुराण (भाषा) बड़ा | 250 रु. |
| षोडश संस्कार रहस्य | 220 रु. |
| श्राद्ध विवेक | 200 रु. |
| नित्यकर्म पद्धति | 200 रु. |
| कालसर्प दोष शान्ति | 250 रु. |
| सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश | 350 रु. |
| सम्पूर्ण हवन विधि | 200 रु. |
| वशिष्ठी हवन पद्धति | 50 रु. |
| आदित्य हृदय स्तोत्र (भा.टी.) | 40 रु. |
| अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम् | 100 रु. |
| सर्व व्रतोद्यापन रहस्यम् | 250 रु. |
| **नित्यकर्म पूजा प्रकाश** | 240 रु. |
| दुर्गार्चन पद्धति | 300 रु. |

## 'वार्षिक एवं चातुवार्षिक' श्राद्ध पद्धति

**[ देवर्षि, तर्पण, शय्या-दान, गोदान, बलिवैश्वदेव विधि, पितृ-स्तोत्र, पितृसूक्त आदि सहित ]**

लेखक : पं. विवेक शर्मा (पंचांगकर्त्ता)

**मूल्य : 80 रु.**

## शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.) शिवरात्रि पूजन कैसे करें ?

श्रीमहाशिवरात्रि का व्रत सब व्रतों में उत्तम एवं कल्याणकारी है। जैसे गंगा जी के समान कोई तीर्थ नहीं है। भगवान् शंकर के समान कोई दूसरा देवता नहीं है तथा शिवरात्रि से बढ़कर दूसरा कोई व्रत एवं तप नहीं है।

इस महाशिवरात्रि व्रत कथा में **माहात्म्य, आध्यात्मिक रहस्य एवं सम्पूर्ण पूजन विधि**, उद्यापन, व्रत कथा, रुद्राष्टक, शिव पंचाक्षर, शिव चालीसा, शिव षड्क्षर स्तोत्र, शिवमानस पूजा, आरती सहित बहुत सरल एवं सुबोधगम्य ढंग से प्रस्तुत की गई है जिससे शिव भगत स्वयं शिवरात्रि पूजन कर पुण्य लाभ ले सकें।

पुस्तक खरीदते समय व्याख्याकार **पं. पन्ना लाल ज्योतिषी** का नाम तथा **जनरल बुक डिपो का पता** अवश्य देख लें। मूल्य 40/-

**अपने आर्डर के साथ 100/-रु. पेशगी अवश्य भेजें। वी.पी. द्वारा मंगवाने का पता-**

**जनरल बुक डिपो**

**अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।**

# 'पं. देवी दयालु' संस्थान के कुछ अमूल्य प्रकाशन

## ''सुतभाव प्रकाश''

( अर्थात् ज्योतिष एवं सन्तान-योग )-पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

भारतीय समाज में पुत्र जन्म को एक उत्सव के रूप में ग्रहण किया जाता है। भारतीय धर्म मान्यताओं के अनुसार देव-ऋषि, पितृ आदि ऋणों से मुक्ति हेतु तथा वंश परम्परा को चलाने के लिए पुत्रोत्पत्ति आवश्यक मानी जाती है। पुत्र प्राप्ति के लिए हमारे प्राचीन ज्योतिष एवं आयुर्वेदाचार्यों ने अपने आवश्यक-नियमों एवं उपायों का वर्णन किया है, जिनका उल्लेख पुस्तक के भीतर किया गया है, जैसे- **वृतोवासों द्वारा पुत्र सन्तति प्राप्त करना, मन्त्र जाप से पुत्र प्राप्ति,** जपनीय मंत्र, **श्री दुर्गासप्तशती पाठ** से पुत्र सन्तति सुख, पितृ-मातृ **आदिशाप** की शान्ति एवं **कालसर्प** आदि दोषों के लिए उपाय, गर्भदोष निवारक उपाय, **हरिवंश, भागवतादि सद्ग्रंथों के पाठ से पुत्र लाभ,** यन्त्र धारण द्वारा एवं ज़ड़ी/बूटी धारण एवं स्नान से संतान सुख तथा स्तोत्र पाठ से पुत्र संतान सुख लाभ होने की विधि लिखी गई है। आशा है हमारे द्वारा उल्लिखित शास्त्रीय उपाय ज़रूरतमंद दम्पत्तियों तथा ज्योतिषीयों के लिए लाभप्रद होंगे। मूल्य-200/- रु.

## गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग (भा.टी.)

व्याख्याकार :-पं. पन्ना लाल ज्यो.

गण्डमूल नक्षत्रों की शान्ति करवाने का प्रचलन प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है। फलित दृष्टि से भी ज्येष्ठा, मूलादि गण्डमूलक षड्-नक्षत्रों के अरिष्ट प्रभाव का उल्लेख फलित ग्रन्थों में सर्वत्र मिलता है।

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा-मूल एवं रेवती-सभी छः गण्डमूलक नक्षत्रों पर छपी अत्यन्त उपयोगी पुस्तक जिसमें नक्षत्र, ग्रहों के आवाहन, पूजन, हवन, दान आदि की व्याख्या शास्त्र विधि-विधान के साथ एवं हिन्दी व्याख्या सहित दी गई है। गण्डमूल के सभी छः नक्षत्रों पर ऐसी उपयोगी पुस्तक पहिले आपने नहीं देखी होगी। कर्मकाण्डी पण्डितों एवं नव-विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभदायक पुस्तक है।

मूल्य 100 रुपये।

## विवाह पद्धति
## (भाषा—टीका)

व्याख्याकार पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी द्वारा संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण जिसमें पारस्कर गृह सूत्रों के आधार पर वैदिक मन्त्रों की हिन्दी टीका एवं भारतीय शिष्टाचार की सरल व्याख्या की गई है। विवाह कार्य में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दावली तथा वाग्दान, सगाई, सैंत कर्म, कात्यायनी शान्ति, पति पत्नी के कर्त्तव्य, शान्तिपाठ, कुम्भ विवाहादि विवाह सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण कृत्यों का भी समावेश किया गया है। जिससे विवाहादि कार्य के नवीन कर्मकाण्डी विद्यार्थी के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। मूल्य-100 रु.

## जन्मदिन पूजा पद्धति

(जन्मदिन संस्कार सम्बन्धी शास्त्र प्रामाणिक उपयोगी पुस्तक)

इस पुस्तक में जन्मदिन पूजन का शास्त्रीय विधान, प्रातः स्मरणीय मंत्र, औषधि-स्नान, स्वस्तीवाचन, श्रीगणेश-अम्बिका, षोडश मातृकाएँ, नवग्रह शान्ति, कलश-पूजन, सप्तर्षि-अष्टचिरंजीवी एवं षष्ठी देवी पूजन और षष्ठी देवी महिमा कथासार, षष्ठीदेवी स्तोत्र तथा संक्षिप्त हवन प्रक्रिया दी गई है। मूल्य 50 रु.

## शिव-मन्त्रावली

लेखक—पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

(भगवान् शिव व अन्य प्रमुख देवी—देवताओं के मन्त्र—यन्त्रादि साधना में दुर्लभ पुस्तक)

अनेक वर्षों से दुर्लभ एवं अप्राप्य शिव—मन्त्रावली नामक पुस्तक अब हमारे कार्यालय से छपकर तैयार है। इसमें भगवान् शिव तथा अन्य देवी—देवताओं से सम्बन्धित अनेक प्राचीन एवं दुर्लभ मन्त्रों का विनियोग सहित वर्णन तथा उन्हें सिद्ध करने की विधियां दी गई हैं। मन्त्र—जपानुष्ठान के अतिरिक्त मन्त्र शास्त्र का सैद्धान्तिक एवं शास्त्रीय विवेचन भी दिया गया है, जिसके अन्तर्गत शिवलिङ्ग प्राकट्य, सृष्टिक्रम का रहस्य, कुण्डलिनी आदि षड्चक्रों का ज्ञान, भगवान् शिव का सत्यं, शिवं—सुन्दरम् स्वरूप तथा शिव—शक्ति का रूप, कलियुग में शिव नाम का महत्त्व, मन्त्रानुष्ठान के शुभ मुहूर्त्त, मन्त्र सिद्धि न होने के कारण, मन्त्र उत्कीलन स्तोत्र, ईश्वर में श्रद्धा और प्रेम रखना, नाम राशि व मन्त्र राशि में अनुकूलता, मन्त्रों के दस संस्कार, मन्त्र—जप सम्बन्धी आवश्यक सावधानियाँ, जप—पूजन में प्राणायाम का महत्त्व, शिवलिङ्ग एवं शिव पूजन विधान, जपादि अनुष्ठान में विभिन्न मालाओं का प्रयोग, रूद्राक्ष का महत्त्व, भगवान् शिव के विविध कल्याणकारी मन्त्र, महामृत्युञ्जय मन्त्रों एवं यन्त्रों के विभिन्न स्वरूप, मन्त्र हवन प्रयोग, मन्त्रों में विनियोग, अङ्गन्यास आदि का महत्त्व, बीजाक्षरों का महत्त्व, पूजन में मुद्राओं का प्रयोग, उपांशु, मानस आदि जप का महत्त्व, वशीकरण, यक्षिणी—सिद्धि प्रयोग, यन्त्र रचना एवं प्राण प्रतिष्ठा, भगवान् शिव के रहस्यपूर्ण प्रतीक चिह्न, जैसे—अर्धनारीश्वर रूप, गङ्गा, त्रिनेत्र, त्रिशूल, सर्प, डमरू आदि। मूल्य : 250/-

## श्री दुर्गा सप्तशती
## (हिन्दी भाषा में)

श्री दुर्गासप्तशती मात्र धर्मग्रन्थ ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध ग्रंथ है। पं. पन्ना लाल ज्योतिषी द्वारा प्रणीत श्री दुर्गा-सप्तशती के प्रस्तुत सरल हिन्दी संस्करण में अनेक उपयोगी विषयों का समावेश किया गया है। इस पुस्तक में श्री दुर्गा यन्त्र, संक्षिप्त पाठ एवं संकल्प विधि, श्रीदेवी कवच, श्री अर्गलास्तोत्र, श्री कीलक स्तोत्र, रात्रिसूक्त, नवार्णमन्त्र, 13 पाठ अध्याय, श्री चण्डी पूजा एवं स्तोत्र, एवं आरतियों सहित वर्णन किया है।

**ध्यान रहे**—बिना संकल्प विधि के किया जप-पाठ एवं कोई भी अनुष्ठान पूर्ण फल नहीं देता। मार्कीट में बिकने वाली अधिकांश हिन्दी भाषी सप्तशतियों में संकल्पविधि, पूजन विधि आदि आवश्यक विषयों का अभाव मिलता है। श्रद्धापूर्वक सही विधि द्वारा श्री दुर्गा जी के चरित्रों का विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्यों के पाप नष्ट होकर उन्हें धन-धान्य, सौभाग्यादि की प्राप्ति एवं मनोवांछित कामनाओं की सहज पूर्ति होती है। **भेंट—125 रु०**

**नोट**—आज ही स्थानीय पुस्तक विक्रेता से खरीदें अथवा पत्र लिखकर वी.पी. द्वारा मंगवाकर एवं पाठ कर लाभान्वित हों।

**पता-जनरल बुक डिपो**
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।
मो. 94172-91325, 97799-13583

# ज्योतिष सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तकें वी० पी० द्वारा मंगवाएँ

## पं० देवी दयालु ज्यो०, जालन्धर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

| | |
|---|---|
| श्री अर्द्धशताब्दी पंचांग | 1000 रु. |
| श्रीदशवर्षीय पंचांग (1994-04 ई.) | 360 रु. |
| दशवर्षीय पंचांग (2004-14 ई.) | 500 रु. |
| दशवर्षीय पंचांग (2014-2024 ई.) | 560 रु. |
| **मुफीद आलम जन्त्री** (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी) | 115 रु. |
| वर्षफल चन्द्रिका | 150 रु. |
| ज्योतिष तत्त्व (गणित खंड) | 225 रु. |
| ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-I) | 400 रु. |
| ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-II) | 400 रु. |
| सुतभाव (सन्तान) प्रकाश | 200 रु. |
| **शिव मन्त्रावली** | 250 रु. |
| अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय-टोटके | 250 रु. |
| विवाह पद्धति | 100 रु. |
| दुर्गा सप्तशती (हिन्दी-भाषा) | 125 रु. |
| श्री दुर्गासप्तशती (भा.टी.) | 120 रु. |
| **गण्डमूल शान्ति प्रयोग** | 100 रु. |
| कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्ति | 50 रु. |
| नवग्रह पूजा विधान | 80 रु. |
| जन्मदिन पूजा पद्धति | 50 रु. |
| श्री सूक्तम्-कनकधारा स्तोत्र भा.टी. | 40 रु. |
| **कार्तिक माहात्म्य (भाषा)** | 80 रु. |
| 55 चालीसा आरती संग्रह(जिल्द) | 110 रु. |
| **लघु पंचांग दिवाकर** | 50 रु. |
| शिवरात्रि व्रत कथा-भा.टी. | 40 रु. |
| षड्वर्गीय जन्मपत्रिका (28 पृ.) | 18 रु. |
| जन्माङ्ग पत्रिका (16 पृ.) | 12 रु. |
| जन्माङ्ग पत्रिका (12 पृ.) | 10 रु. |
| टेवा फार्म छपा/प्लेन | 300 रु. सैंकड़ा |
| सरल पूजा संग्रह | 80 रु. |
| लाल किताब (पंजाबी) | 160 रु. |
| फलित ज्योतिष (पंजाबी) | 550 रु. |
| **राशिफल सन् 2024 ई.** | 80 रु. |

## अन्य प्रकाशनों की ज्योतिष सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तकें

| | |
|---|---|
| प्रारंभिक फलित ज्यो. | 400 रु. |
| योग-पारिजात (धन योग) | 400 रु. |
| योग-पारिजात (भाग्य योग) | 450 रु. |
| योग-पारिजात (राज-योग) | 450 रु. |
| योग-पारिजात (अनुपम योग) | 450 रु. |
| गणेश होरा शास्त्रम् | 600 रु. |
| राशिफल विचार | 200 रु. |
| परमायु दशा | 150 रु. |
| आयु आकलन | 500 रु. |
| आयु निर्णय | 300 रु. |
| शनि और साढ़ेसाती | 100 रु. |
| मंगलीक योग-भ्रान्ति निदान | 135 रु. |
| पुत्रेष्टि अनुष्ठान | 395 रु. |
| ज्यो. और रोग (2 भाग) | 300 रु. |
| षड्वर्ग फलम् | 250 रु. |
| भारतीय ज्यो.-नेमिचंद शास्त्री | 420 रु. |
| भृगु संहिता | 500 रु. |
| बुद्धि विद्या विचार | 400 रु. |
| भावफल विचार (2 भाग) | 400 रु. |
| षड्बल रहस्य | 150 रु. |
| आजीविका विचार (2 भाग) | 700 रु. |
| जैमिनी ज्योतिष | 250 रु. |
| राहु-केतु | 250 रु. |
| ज्योतिष और दाम्पत्य जीवन | 200 रु. |
| पूर्व कालामृत | 200 रु. |
| उत्तर-कालामृत | 300 रु. |
| फलित सूत्रम् | 300 रु. |
| प्रश्न दर्पण | 120 रु. |
| प्रश्न रहस्य | 120 रु. |
| ग्रहफल विचार | 250 रु. |
| अष्टकवर्ग सिद्धान्त-प्रयोग | 150 रु. |
| ज्यो. में नवांश का महत्त्व | 350 रु. |
| भावार्थ रत्नाकर | 200 रु. |
| सत्यजातकम् | 180 रु. |
| ग्रह-युति फल दर्पण | 350 रु. |

| | |
|---|---|
| गोचर फल दर्पण | 200 रु. |
| शनि संहिता | 400 रु. |
| प्रश्न नवनीतम | 300 रु. |
| संतानसुख विचार | 200 रु. |
| वैवाहिक सुख में शनि प्रमुख | 400 रु. |
| जातक सारावली (प्रथम2 भाव) | 400 रु. |
| जातक सारावली (द्वितीय भाव) | 400 रु. |
| जातक सारावली (सप्तम भाव) | 400 रु. |
| जातक सारावली (दशम भाव) | 400 रु. |
| परिणय निर्णय (वैवाहिक) | 400 रु. |
| परिणय निर्णय (मुहूर्त मीमांसा) | 400 रु. |
| परिणय निर्णय (मंगली दोष) | 400 रु. |
| परिणय निर्णय (विवाह समय) | 500 रु. |
| शिशु चिन्तन | 450 रु. |
| कुण्डली मिलान | 150 रु. |
| नक्षत्र विचार | 300 रु. |
| मृत्युंजय मन्त्र संकलन | 400 रु. |
| शनि दशा दिग्दर्शन | 180 रु. |
| भारतीय कुण्डली दर्पण | 300 रु. |
| **मानसागरी** | 300 रु. |
| मुहूर्त-चिन्तामणि | 140 रु. |
| मुहूर्त-मार्तण्ड | 295 रु. |
| शक्ति-कुंज | 350 रु. |
| सत्य जातकम् | 180 रु. |
| होरा-रत्नम (2 भाग) | 800 रु. |
| व्यवहारिक अंक ज्यो. | 200 रु. |
| व्याधि-वीथिका (स्वस्थ जीवन) | 400 रु. |
| मंगल दशा फलदीपिका | 500 रु. |
| सर्वार्थ चिंतामणी | 600 रु. |
| सारावली | 400 रु. |
| बृहज्जातकम् | 395 रु. |
| वृद्ध यवनजातकम् (2 भाग) | 600 रु. |
| ग्रहयोग-संक्षेपिका | 400 रु. |
| दशाफल बोध | 250 रु. |
| आर्थिक ज्योतिष | 140 रु. |

| | |
|---|---|
| समृद्धि सुधा | 500 रु. |
| वैवाहिक विलम्ब आयाम व मंत्र | 395 रु. |
| समृद्धि सूत्र (2 भाग) | 925 रु. |
| वृहत्पराशर होराशास्त्र (2 भाग) | 800 रु. |
| जातक पारिजात (2 भाग) | 850 रु. |
| ज्योतिष रत्नाकर | 595 रु. |
| फलदीपिका | 300 रु. |
| मुहूर्त चिन्तामणि (पीयूषधारा) | 425 रु. |
| शनि शमन (दो भाग) | 600 रु. |
| शत्रुशमन | 295 रु. |
| कालसर्प योग कारणनिवारण | 300 रु. |
| ज्योतिष सर्वस्व | 500 रु. |
| प्राचीन सामुद्रिक शास्त्र (2 भाग) | 740 रु. |
| भाग्य चिंतामणि | 295 रु. |
| चमत्कार चिंतामणी | 500 रु. |
| लाल किताब (वृहद्) | 2500 रु. |
| लाल किताब (बड़ी) | 800 रु. |
| लाल किताब टोटके व उपाय | 250 रु. |
| रावण संहिता (वृहद्) | 2500 रु. |
| रावण संहिता (बड़ी) | 800 रु. |
| पितृदोष कारण-निवारण | 175 रु. |
| मंगलीदोष कारण-निवारण | 150 रु. |
| जातक निर्णय (दो भाग) | 490 रु. |
| गोचर विचार | 150 रु. |
| जातकालंकार | 150 रु. |
| प्रश्न मार्ग (दो-खण्ड) | 450 रु. |
| शनि दशा फलदीपिका | 550 रु. |
| दशाफल विचार | 250 रु. |
| विशोंत्तरी दशा तरंगिणी | 200 रु. |
| नक्षत्र जातकम् | 150 रु. |
| मेदिनी ज्योतिष | 300 रु. |
| वैदिक उपचारीय ज्यो. | 160 रु. |
| ताजिक नीलकंठी | 350 रु. |
| गीता मंत्र गंगोत्री | 380 रु. |
| अनिष्ट ग्रह उपचार | 350 रु. |
| व्यावसायिका | 450 रु. |

| | |
|---|---|
| वर्ग कुण्डली रहस्य | 350 रु. |
| ग्रहफल निर्णय (दो भाग) | 600 रु. |
| ज्योतिष प्रकाश (सूक्ष्म दशाएं) | 300 रु. |
| रत्न ज्योतिष | 100 रु. |
| लघु पराशरी | 200 रु. |
| रत्न प्रदीप | 200 रु. |
| सम्पूर्ण रत्न विज्ञान | 200 रु. |
| रत्नों का रहस्यमय संसार | 250 रु. |
| आपका भाग्यरत्न | 100 रु. |
| अंकों में छिपा भविष्य | 150 रु. |
| अंकों का अद्भुत संसार | 250 रु० |
| अंक ज्योतिष (कीरो) | 150 रु. |

## वास्तुशास्त्र विज्ञान पर

| | |
|---|---|
| सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र | 250 रु. |
| बिना तोड़-फोड़ वास्तुशास्त्र | 200 रु. |
| रेमिडियल वास्तुशास्त्र | 250 रु. |
| व्यावहारिक वास्तुशास्त्र | 100 रु. |
| वास्तुकला और भवन निर्माण | 250 रु. |
| वास्तुशास्त्र के रहस्य(दो भाग) | 600 रु. |
| फेंगशुई 151 स्वर्णिम सूत्र | 150 रु. |
| गृह वास्तु संहिता-2 भाग | 580 रु. |

### ज्योतिष की दुर्लभ

### "लाल किताब"

(उर्दू भाषा में फोटोस्टेट) असली अब उपलब्ध है। मूल्य 3000 रु.

(डाक व्यय सहित)

अग्रिम राशि मनीआर्डर द्वारा भेजना अनिवार्य है।

पुस्तकें मंगवाने का पता :

**जनरल बुक डिपो**

अड्डा होशियारपुर चौंक,
जालन्धर शहर (पंजाब)
फोन:-94172-91325, 97799-13583

**स्थापित**
**सन्**
**1875 ई०**

सर्वप्राचीन प्रतिष्ठित मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान

# पंचाँगदिवाकर ज्योतिष कार्यालय के नियम

**गौरवमयी वर्ष**
**प्रवेश**
**149 वाँ**

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से उत्तरी भारत में सर्वप्राचीन एवं सुप्रतिष्ठित मशहूर पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान से छपने वाली सुप्रसिद्ध पंचाँग दिवाकर व मुफीद-आलम जन्त्री, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी एवं अन्य ज्योतिष व धार्मिक प्रकाशनों को, पंचाँग प्रवर्तक पं० देवी दयाल (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो ख्याति प्राप्त हुई है, वह हमारे सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं।

हमारे ज्योतिष कार्यालय में प्रामाणिक जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि शुद्ध गणित द्वारा तैयार किए जाते हैं जिससे आप घर बैठे ही अपना भविष्य जान सकते हैं। **ध्यान रहे,** सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से बनी शुद्ध जन्मपत्री है। जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे विद्या में सफलता, व्यवसाय एवं कैरियर सम्बन्धी प्रश्न, भाग्योदय, विवाह-सन्तानादि, पारिवारिक सुख, विदेश गमन योग इत्यादि प्रश्नों के उत्तर जन्मपत्री एवं ग्रहों के आधार पर अनुशीलन करके भेजे जाते हैं। यदि ग्रहों सम्बन्धी कोई विघ्न बाधाएं हों, तो अनिष्ट ग्रहों के उपाय भी शास्त्रोक्त विधि पर आधारित बतलाए जाते हैं।

**मध्यम जन्मपत्री**–संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र आदि लिखें। जिसकी फीस 901/- रु. होगी। विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री के लिए 2500/- रु.

**वृहद् जन्मपत्री**–आपके जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे–नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विशेष रूप से विवरण तथा हस्तलिखित उपाये दिए जाते हैं। बड़ी हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता तथा माता का नाम, दादा का नाम, वर्तमान व्यवसाय आदि लिख भेजें। **वृहद् जन्मपत्री की फीस 1800/- रु. होगी।** विदेश में उत्पन्न जातक के लिए फीस 3100/- रु. अथवा 31 पौंड होगी। डाक व्यय अलग। वृहद् सप्तवर्गी (40 पृष्ठ) जन्मपत्री की फीस 3100/- रु. होगी जिसमें कैरियर सम्बंधी विशेष मार्गदर्शन एवं विशिष्ट उपायों का विवरण होगा।

**वर्षफल**–आपके लिए आगामी वर्ष कैसा रहेगा? इसके लिए जन्म कुण्डली की फोटो कापी अवश्य साथ भेजें। यदि जन्मपत्री नहीं है, तो जन्म समय, तारीख, सन् ई०, व्यवसाय अंग्रेज़ी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश के लिए फीस 900/- रुपए अग्रिम भेजनी होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 21 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

***मिलान-निर्णय :*** यदि आप विगह से पूर्व (पहिले) लड़का-लड़की (वर-वधू) का मिलान निर्णय तथा यथासम्भव उपाय जानना चाहते हैं, तो नीचे लिखे मोबाईल पर लड़का-लड़की की जन्म तारीख, समय, स्थान लिखकर What's app कर दें। फीस–1100 रु।

**मोबाईल–94172-91325**

## वायदा एवं शेयर व्यापारियों के लिए विशेष सूचना

वायदा व हाजिर व्यापारियों के लिए रुई, सोना, चाँदी, कापर, बिनौले, खल, सरसों, गुड़, चने आदि के लिए दैनिक चाँस की एडवांस (Advance) रूप में अर्थात् आने वाले महीने की खास मासिक रिपोर्ट तैयार की जाती है। **एक मास की प्रति ( एक ) जिन्स की फीस 1000/- रु. होगी।** जोकि मनीआर्डर या ड्राफ्ट आने पर लिखित रूप में एक महीने की एडवांस रिपोर्ट भेजी जाएगी।

जो सज्जन/व्यापारी प्रतिदिन रिपोर्ट के अतिरिक्त फोन पर भी बातचीत कर किसी जिन्स या शेयर बाज़ार का रूख जानना चाहते हैं, उनके लिए फीस 2500/-रु. मासिक होगी। फीस (Advance) आने पर ही आगामी मास की रिपोर्ट भेजी जाएगी।

**नोट : गुरुवार और रविवार को अवकाश रहता है। अतः दूर से आने वाले सज्जन फोन द्वारा पहले सम्पर्क करके समय निश्चित कर लें।**

**M.O./ ड्राफ्ट भेजने के लिए पता : पं. विवेक शर्मा (गणितकर्त्ता) सुपुत्र स्व. पं. पन्ना लाल ज्योतिषी**
**पंचांगदिवाकर ज्योतिष कार्यालय ( पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ ), चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पंजाब)–पिन 144008, मोबाईल-94172-91325**

## पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान द्वारा ज्योतिषियों एवं ज्योतिष में रूचि रखने वालों के लिए आवश्यक संग्रहणीय ग्रन्थ

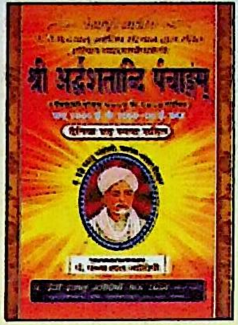

पं. देवीदयालु ज्योतिष संस्थान द्वारा प्रकाशित पुरातन पंचांगों (संवत् २००१ से २०७० तक) के प्रामाणिक संग्रह ग्रन्थ है। इसमें तिथि, नक्षत्र, योग आदि घड़ी-पलों के साथ-साथ सभी ग्रहों के राशि-परिवर्तनों का विवरण अलग-से घण्टा-मिनटों में दिया गया है। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश-रेखांश, विश्व के सभी स्थलों के सूर्योदयास्त जानने की मध्यम सूर्यादयास्त सारणियाँ आदि अनेक उपयोगी विषयों का समावेश किया गया है।

### अर्द्धशताब्दि पंचांग ( दैनिक ग्रह स्पष्ट सहित )

वि. संवत् २००१ से २०५० तक

( अर्थात् सन् 1944 से 1993-94 ई. तक ) मूल्य 1000/- रु.

### दशवर्षीय पंचांग ( दैनिक ग्रहस्पष्ट सहित )

वि. संवत् २०५१ से २०६० तक

( अर्थात् सन् 1994 से 2003-04 ई. तक ) मूल्य 360/- रु.

### दशवर्षीय पंचांग ( दैनिक ग्रह स्पष्ट सहित )

वि. संवत् २०६१ से २०७० तक

( अर्थात् सन् 2004 से 2013-14 ई. तक ) मूल्य 500/- रु.

### दशवर्षीय पंचांग ( दैनिक ग्रहस्पष्ट सहित )

वि. संवत् २०७१ से २०८० तक

( अर्थात् सन् 2014 से 2023-24 ई. तक )

मूल्य 560/-रु.

2 वर्षों के विवाह मुहूर्तों तथा ज्योतिष सम्बन्धी महत्वपूर्ण विषयों से सुसज्जित

श्री दशवर्षीय पंचाङ्गम्

## पं देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ की अनुपम प्रस्तुति

## 'देवीदयालु कालदर्शक शुद्ध पंचांग' (बहुरंगी)

## एवं 'दिवाकर' शुद्ध कालदर्शक पंचांग ( दो रंगी )

पण्डित देवी दयालु
जनवरी 2024

इस कालदर्शक कैलेण्डर में मुख्य अंग्रेज़ी तारीख के अतिरिक्त दैनिक तिथि ◆देशी प्रविष्टे ◆पूर्णिमा, अमावस, एकादशी, संक्रांति तथा सभी व्रत, गुरुपर्व, त्यौहार, छुट्टियां इत्यादि की प्रामाणिक जानकारी ◆तिथि-नक्षत्र-योगों का समाप्ति काल ◆जम्मू-दिल्ली-चण्डीगढ़-मुम्बई के दैनिक सूर्योदयास्त ◆ग्रह-संचार एवं ग्रहों के उदय-अस्त ◆गण्डमूल एवं पंचक विचार ◆विवाह मुहूर्त्त ◆मुण्डन, गृह-प्रवेश, गृहारम्भ (नींव) मुहूर्त्त, व्यवसाय शुरु करने के लिए मुहूर्त्त ◆सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृतसिद्धि योग ◆द्वि एवं त्रिपुष्कर योग आदि ◆राशिफल ◆दूध-अखबार हिसाब का कोष्टक ◆देवी-देवताओं के बहुरंगी चित्र, ◆सूर्य-चन्द्र ग्रहण विवरण ◆व्रत, उपायों से सम्बन्धित संक्षिप्त जानकारी आदि अनेक उपयोगी सामग्री व विषयों से सुसज्जित है। मूल्य-50 ₹

◆ बढ़िया सफेद कागज़ पर छपा ◆ बहुरंगी पृष्ठ ◆ साइज-28×44 से.मी.

आज ही अपने स्थानीय बुकसेलर से मांग करें।

## श्री दुर्गा सप्तशती सम्पूर्ण (हिन्दी भाषा में)

श्री दुर्गा सप्तशती मात्र धर्म-ग्रंथ नहीं, अपितु कल्याणकारी सिद्धग्रंथ है। यह सप्तशती हमारी पूर्वत: छपी संस्कृत-हिन्दी ( भा. टी. ) का संशोधित हिन्दी संस्करण है। इसमें श्री दुर्गा पाठ के ( १३ अध्यायों की ) संकल्प विधि ( जो कि नवरात्र-दुर्गा पाठ में आवश्यक होती है), सप्तश्लोकी दुर्गा, देवी कवच, नव दुर्गा महिमा, देवी सूक्त, कुजिंका स्तोत्र, सिद्ध मन्त्रों व स्तोत्रों सहित सरल हिन्दी भाषा में प्रस्तुत की गई है। मूल्य- 125 ₹

मंगवाने का पता :- **जनरल बुक डिपो (पब्लिशर्ज़)**

चौक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर ( पिन-144008 ) ( पंजाब )

फोन : 0181-2457959, Mobile : 94172-91325 & 97799-13583